# पद्मपुराण भाषा

## द्वितीयभूमिखण्ड

जिसको

श्रीयुत महाशय श्रीमान् मुन्शी नवलकिशोरजी ने बारहबंकी प्रदेशान्तर्गत गोमत्युत्तर तटस्थ धनावली ग्रामनिवासि पण्डित महेशदत्तशुक्ल जी से संस्कृत पद्मपुराणद्वारा प्रतिश्लोकका अनुवाद हिन्दीसरलभाषामें बनवाया–

अब इसद्वितीयबार उन्नामप्रदेशान्तर्गत तारगांवनिवासि पं० रामबिहारीजीसे संस्कृत श्लोकोंसे उसअनुवादका पुनः संशोधन कराया गया ॥

भगवद्भक्ति भूषित दोषादूषित पितृभक्ति मातृभक्ति गुरुभक्ति भार्य्यातीर्थ पुत्रतीर्थादि नानाप्रकारके धर्मोंके जिज्ञासुओं के अनुमोदन के लिये अतिशुद्धतापूर्वक

द्वितीयबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपा

सितम्बर सन् १९०९ ई० ॥

इस पुस्तक की रजिस्ट्री २६४ नंबर पर हुई है

# भूमिका ॥

उस परमशक्तिमान् करुणावान् को असंख्यधन्यवाद धन्यवादहै जिसने सर्व्वो-पकारक दीनप्रजोद्धारक शुद्धधर्म्मप्रचारक विधर्म्मनिवारक परमप्रकाश व्यास जीका अवतारलेकर वेदोंके भागोंको अवलोडितकर अल्पज्ञलोगोंके उपकारके लिये अष्टादशपुराण व इतनेही उपपुराण बनाये जिनमें ढूँढ़ २ वेही कथायें लिखी हैं जिनको सुनकर धर्म्मकरनेमें रुचि व अधर्म करनेमें अरुचि तुरन्तही होजातीहै उन पुराणों में सब से संख्यामें स्कन्दपुराण बड़ाहै उससे नीचे यह पद्मपुराण पचपनसहस्र श्लोकोंका है उसका यह द्वितीयभूमिखण्ड है इसमें प्रथम माता पिताकी भक्ति व सेवा पुत्रको कैसे करनी चाहिये इस विषयमें शिवशर्म्माकी अतिविचित्र कथा बड़ीयुक्तिसे निरूपितहै फिर उसके चार पितृ-भक्त पुत्रोंकी कैसी विचित्रकथा व सुव्रतचरित व दुष्टता करने से अवश्य दण्ड मिलताहै चाहे कैसाही बलवत्तर क्यों न हो इसविषयमें वृत्रासुरकेवधकी कथा कही है कैसाही पापी व दुष्टपुरुषहो पर सुपुत्रके होनेसे तरहीजाताहै इस वि-षय में राजावेन व उनके पुत्र महाराजाधिराज पृथुजीका परमपावन चरित्र कहागया है फिर वेनकी माता सुनीथा का वृत्तान्त इसलिये कहागया है कि चाहे कैसे प्रतिष्ठित व सर्व्वोपरि गरिष्ठकी सन्तति क्यों न हो पर महात्माओंका अपकार करनेसे उसे अवश्य दुःख भोगने पड़तेहैं पतिव्रतास्त्रीके समान अन्य कोई प्रधान धर्म्म नहीं होता इसविषयमें सुकलाकी अत्यद्भुत कथाकहीहै फिर ऐसी पतिव्रताको छोड़कर अकेले तीर्थादि करनेजानेसे धर्म्मकाफल नहीं होता इसविषयमें अपूर्व्वही धर्म्मका आख्यान वर्णित है पुत्रको पिताके वचन अ-वश्यही करने चाहियें इसविषयमें राजानहुष की कथा है फिर ययातिजी की कथा है जिसमें गुरुलोगही तीर्थहैं इसका निरूपणहै फिर राजाका व जैमिनि उनके पुरोहित का महाअपूर्व्व संवाद है फिर अशोकसुन्दरी की कथा इस विषयमें है कि पतिव्रता का पातिव्रत जो भंगकरना चाहता है वह आप भंग होजाता है जैसे हुण्डदैत्य मारागया व इसीविषय में उससे भी अद्भुत कामो-

दाख्यानहै जिसमें पतिव्रतासेही दुष्टता करनेकेकारण विहुण्ड दैत्यका वधहुआ फिर अद्भुतज्ञानके विषयमें कुञ्जलनामशुक व महात्माच्यवनजी का अतिविचित्र संवादहै फिर एकसिद्धका अतीव विचित्र आख्यानहै बस ऐसीही नाना प्रकारके धर्म्मों के उपकारोंकी कथायें इसभूमिखण्डमें हैं यदि व्यासजी वर्णन न करते तो प्राणियों का निस्तार इसअपार संसारसे कैसे होता व फिर भाषानुवाद न होता तो बेचारे हमारे प्यारे संस्कृतानभिज्ञ इसअभिप्रायके विज्ञ कैसे होते इससे लालसाहै कि लोग इसे आदरपूर्व्वक ग्रहणकरके यह कहें कि ॥

दो० सुखकारक दुखियानके मुन्शी नवलकिशोर ॥
यशतनुसों युगयुग जियो कियो हमैं सुखओर १

इसके सिवाय इस यंत्रालयमें औरभी बहुत से ग्रंथ प्रत्येक विषयके उल्था होकर मुद्रितहुयेहैं वह संपूर्ण महाशयों की विज्ञप्तिके लिये निम्नलिखितहैं ॥

पुराणोंमें–श्रीमद्भागवत,श्रीमहाभारत,शिवपुराण,विष्णुपुराण,लिंगपुराण, मार्कंडेयपुराण,भविष्यपुराण,नृसिंहपुराण,वामनपुराण, वाराहपुराण, जैमिनिपुराण, गणेशपुराण और आदिब्रह्मपुराण सुंदरदेशभाषाके लालित्यपदोंमें हैं ॥

काव्यमें–रघुवंश, कुमारसंभव ॥

धर्म्मशास्त्रमें–मिताक्षरा तीनोंकाण्ड और मनुस्मृति इनकी उत्तमता देखने से विदित होगी ॥

वैद्यकमें–निघण्टरत्नाकर,भावप्रकाश,सुश्रुत,भैषज्यरत्नावली, रसरत्नाकर ॥

वेदान्तमें–योगवाशिष्ठ औरश्रीमद्भगवद्गीता शंकरभाष्यादि इनग्रंथोंको जो विद्वज्जन अवलोकन करेंगे वह प्रसन्नतापूर्वक स्वीकारकरेंगे–और ग्रंथकर्त्ता तथा यंत्रालयाध्यक्षको धन्यवाददेंगे ॥

महेशदत्तशर्म्मा ॥

# पद्मपुराण भाषा द्वितीय भूमिखण्ड का सूचीपत्र ॥

इति ॥

# पद्मपुराण भाषा ॥

## द्वितीय भूमिखण्ड ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ॥

जानक्याप्रिययासमंस्वसदनेसौधेसरय्वास्तटे ।
पर्य्यङ्केमणिनिर्म्मितेस्थितमहन्ध्यात्वाकुजेशम्प्रभुम् ॥
कुर्व्वेपद्मपुराणभूमिशकलस्यप्रीतयेश्रीमता ।
प्रोक्तोनूलकिशोरनामसुधियाभाषानुवादंसताम् १

दो० जनकसुता दशरथ तनय सनय विनयकरि आज ॥
भूमिखण्ड भाषा रचत पुरवहिं लघुरघुराज १
कहब प्रथम अध्याय महँ शिवशर्म्मा की गाथ ॥
जासु पञ्चसुत पितु चरण सेवा पाय सनाथ २

सृष्टिखण्डकी कथा सुनकर ऋषिलोग सूतजी से बोले कि हे महाभाग! व सब शास्त्रों के निश्चय के जाननेवाले विद्वान् सूतजी ब्राह्मण लोग बड़े सन्देहको प्राप्तहुये हैं इससे उनकी बुद्धिकी कुछ न्यूनता होगई है १ क्योंकि कोई कोई तो द्विजोत्तम ऐसा कहते हैं कि पुराणों में लिखाहै कि प्रह्लादजीकी जब पांचही वर्षकी अवस्था

थी तभी उन्होंने केशवभगवान् को सन्तुष्ट किया २ व कोई कहते हैं कि देवासुर संग्राम में प्रह्लाद व श्रीहरिका युद्धहुआ उसमें श्रीवासुदेवजी ने उनको मारडाला इससे वे श्रीविष्णुजी के शरीरमें प्रविष्ट होगये ३ यह सुनकर सूतजी बोले कि यही प्रश्न पूर्वकाल में धीमान् श्रीव्यासजीने ब्रह्माजीसे किया था तब ब्रह्माजी ने अपने आप व्यासजी के आगे इसका उत्तर दियाथा ४ सो हे ब्राह्मण लोगो! वही हम आप लोगोंके आगे कहेंगे जिसप्रकार व्यासजी को संदेह हुआ व ब्रह्माजी ने उसका निवारण किया ५ श्रीवेदव्यासजी सूतजी से बोले कि हे महाभाग सूत! प्रह्लादजी का जो वृत्तान्त पुराण में तुमने अन्य प्रकार से सुनाहै वह हम ब्रह्माजी का कहा हुआ तुमसे कहते हैं सुनो ६ भगवद्दासों में श्रेष्ठ देवताओं से भी पूजित प्रह्लादजी उत्पन्न होतेही महावैष्णवभावको आश्रितहुये ७ व अपने पुत्र-केसाथ श्रीविष्णुजी के सङ्ग युद्धकरने केलिये समर में गये इससे श्रीविष्णुजी के हाथोंसे मारेगये व विष्णुके शरीर में प्रवेश करगये ८ अब तुम इन महात्मा प्रह्लादजीकी प्रथम हमसे उत्पत्तिसुनो फिर जैसे वीर्य्यवान् वे महात्मा विष्णुभगवान् से समरमें लड़े ९ व अपने तेजसे श्रीविष्णुजीके तेजमें प्रह्लादजी प्रविष्टहुये सबसुनो पूर्वकल्प में जिसप्रकार वीर्य्यवान् प्रह्लादजी उत्पन्नहुयेथे १० वह वृत्तान्त संक्षेप रीतिसे तुमसे कहेंगे पश्चिमदिशा में समुद्र के मध्य में सब ऋषियों से युक्त व सब सिद्धियों से समन्वित द्वारका नाम पुरी है उसमें वेदशास्त्र के अर्थों के जानने में महापण्डित व योग योगाङ्गों के जानने में अतिविद्वान् शिवशर्म्मा इस नामसे प्रसिद्ध एक ब्राह्मण रहताथा उसके पांचपुत्र हुये व सबके सब शास्त्रों के पढ़ने से बड़े पण्डित हुये ११ । १२ एकका यज्ञशर्म्मा दूसरेका वेदशर्म्मा तीसरे का धर्म्मशर्म्मा चौथेका विष्णुशर्म्मा नामथा यह महाभाग विशेष धर्म्मकर्म्म करने में चतुरथा १४ पांचवें का सोम शर्म्मा नाम था यह अपने पिताकी भक्तिमें रात्रिदिन लगारहता था क्योंकि पिताकी भक्तिको छोड़ अन्य कोई धर्म्मही वह नहीं कहता था १५ इससे वे सबके सब अपने पिताकी भक्तिमें तत्पर होगये उन सबोंकी

पितृभक्ति देख द्विजोंमें उत्तम शिवशर्म्माजीने १६ उन सबोंकी परीक्षा लेनेके लिये अपने मनमें चिन्तनाकी पिताकी भक्ति करने में इन लोगोंके मनमें जैसा भाव टिकाहै वैसा जानने के लिये हम बुद्धिपूर्व्वक कुछ विचार करके जानें तो अच्छा है क्योंकि श्रीविष्णुजी के प्रसाद से हम सब प्रकार से सिद्धहैं योंभी इनका भाव जानते हैं तथापि विचारपूर्व्वक इनके हृदयका अच्छा भाव पूजा करने के विषयका जानना चाहिये कि कैसे भक्तहैं १७। १८ यह विचारांशकर अपने तप व तेजके प्रभाव से सब उपाय जाननेवाले उस ब्राह्मण श्रेष्ठ व वेदवादियों में उत्तम ने माया से यह उपाय किया कि उन अपने पुत्रोंके आगे शिवशर्म्मा ने यह वार्त्ता प्रकटकर दिखाई २० कि तुम्हारी माता बड़े ज्वरके रोगसे देखो मृतक होगई वे लोग माताको मरीहुई देख अपने पितासे बोले २१ कि हे महाभाग ! जिन्होंने हम लोगोंको प्रथम गर्भ में धारण करके बढ़ाया वे शरीर छोड़ अब हम सबोंको त्यागकर आप नाशको प्राप्तहुई हे तात ! अब हमलोग क्याकहें यह सुन उनके पिता शिवशर्म्मा सबोंसे बड़े यज्ञशर्म्मा नाम अपने पुत्रको बुलाकर उससे बोले कि अतितीक्ष्ण व चोखेशस्त्र से २२। २४ इस अपनी माताके सब अङ्ग काटडालो व दूर कहीं फेंक आओ यह वचन जैसेही पिताके मुखसे सुना कि वैसेही आज्ञाके अनुसार उस पुत्रने सबकिया २५ व फिर पीछे पिता के आगे आकर यह वचन बोला कि हे तात ! जैसी आपकी आज्ञा हुई हमने वैसा सब किया २६ अब और जो कुछकार्य्य हो उसके करने की आज्ञा दीजिये हे पिताजी ! चाहे बहुत दुर्गम व दुर्लभ कार्य्य होगा पर हम सब करेंगे २७ उस महाभाग्यवाले को निस्सन्देह पिताका भक्तजानकर पिताने दूसरे पुत्रका परम निश्चय जानने केलिये चिन्तनाकी २८ व दूसरे वेदशर्म्मा नाम पुत्रको बुलाकर उससे कहा कि तुम हमारी आज्ञासे जाकर कहीं से एक स्त्री लाओ क्योंकि कन्दर्प्प से मोहित होनेके कारण हम विना स्त्री के नहीं जी सक्ते २९ यह कह उस अपने पुत्रको उन्होंने सब सुन्दरता व सौभाग्यता युक्त मायासे एक स्त्री बनाकर दिखाई व कहा कि पुत्र नि-

श्चय करके हमारेलिये यही स्त्री आनदो ३० यह सुन उस पुत्रने कहा बहुत अच्छा ऐसाही होगा तुम्हारा प्रिय करेंगे फिर पिताके प्रणामकर वह पुत्रजाकर उस स्त्री से बोला कि ३१ हे देवि ! कामके बाणोंसे व्याकुल व पीड़ित वृद्धावस्थाको प्राप्तहमारे पिताजी तुम्हारी प्रार्थना करते हैं इससे प्रसन्नहो उनके सम्मुख चलो ३२ व हे सर्व्वाङ्गसुन्दरि ! हमारे पिताको भजो यह सुन वह शिवशर्म्माकी मायासे बनीहुई स्त्री बोली कि ३३ वृद्धता से पीड़ित श्लेष्मा मुखमें भरेहुये व नानाप्रकार की व्याधियों से युक्त तुम्हारे पिताके पास हम कभी न जायँगी ३४ क्योंकि अब वे बनाय शिथिल होगयेहैं व बनाय वृद्धहोगये हैं उनकी कोई इन्द्रिय भोगके योग्य नहीं है हां तुम्हारे संग भोगकरना चाहती हैं तुम चाहो तो तुम्हारा प्रिय अच्छीतरह करें ३५ क्योंकि तुम रूप सौभाग्य गुण व रत्नादिकों से भूषित हो व सब तुम्हारे दिव्य लक्षण हैं व दिव्यही रूप है व बड़ेपराक्रमी हो ३६ हे मानद ! उस वृद्ध अपने पिताको क्याकरोगे हमारा वचन सुनो हमारे अङ्गोंके भोग के भावसे सब दुर्लभ पदार्थ पाओगे ३७ हे विप्र! जो तुम चाहोगे हम सब देंगी इसमें कुछभी सन्देह नहीं है यहअप्रिय व पापयुक्त उस स्त्रीका वचन सुन वेदशर्म्मा ब्राह्मण बोला कि ३८ तुम्हारा यह वाक्य धर्म्मयुक्त नहीं है व पापसे मिलेहुये के कारण बहुत ही अयोग्य है जो कि हे देवि ! निरपराध पिताकेभक्त हमारे तुल्य पुरुष से तुमने कहा ३९ हे शुभे ! हमने पिताके अर्थ आकर तुमसे प्रार्थनाकी है इससे अब और बात न मुखसे निकालना हे शुभे ! चलकर हमारे पिताजीको भजो ४० हे देवि ! सचराचर तीनोंलोकों में जिस वस्तुकी इच्छाकरोगी वह सब हम तुमको देंगे चाहे इन्द्रादिकों के राज्य सेभी अधिक हो इसमें सन्देह नहीं है ४१ यह सुनकर फिर स्त्री बोली कि जो आप पिताके अर्थ इस प्रकार सब कुछ हमको देनेमें समर्थ हैं तो हमको इस समय इन्द्रादि सब बड़े बड़े देवताओं को दिखाओ ४२ क्योंकि ऐसे दुर्लभ पदार्थों के देनेमें अपने को समर्थ समझतेहो तो हे महाभाग ! तुम्हारे कौनसा बलहै अपना बल हमको दिखाओ तो ४३ वेदशर्म्मा

बोला कि हे देवि ! हमारे तपका प्रभाव देखो देखो अभी हमारे बुलाये हुये इन्द्रादि सब देवश्रेष्ठ यहीं आते हैं ४४ इतना कहतेही वेदशर्म्मा के स्मरण करने से इन्द्रादि देव वहां आकर बोले कि हे द्विजोत्तम ! कहो हमलोग क्याकरें हे विप्र ! जिस वस्तुकी इच्छाहो वह हमलोग दें इसमें सन्देह न करना ४५ यह सुन वेदशर्म्माजी बोले कि हे देवताओ ! यदि प्रसन्नहो व हमारे ऊपर सुमुखहो तो पिताजी के चरणों में हमको निर्मलभक्ति दो वस और कुछ हम नहीं चाहते ४६ ऐसा हीहो ऐसा कहकर सब देवगण अपने २ स्थानों को चलेगये तब हर्षित हो वह स्त्री वेदशर्म्मा से बोली कि तुम्हारे तपका बल हमने देखा ४७ परन्तु देवताओंके आने से हमारा कुछभी कार्य्य नहींहै जो तुम पिताके अर्थ सब कुछ हमको देसक्ते हो तो जो हम कहें वह हमारा प्रिय करो ४८ हे विप्र ! अपना शिर अपनेही हाथसे काटकर हमको दो यह सुन वेदशर्म्मा बोले कि हम धन्यहैं जो आजही तीनों ऋणों से छूटेजाते हैं ४९ केवल शिरही के देनेसे जब पिताका कार्य्य सिद्ध होता है तो हे शुभे ! शिरग्रहण करो ग्रहणकरो इतनाकह तीक्ष्णधारवाले बड़े चोखेशस्त्र से उस ब्राह्मण श्रेष्ठने ५० अपना शिरकाट हँसतेहुये उस स्त्रीको देदिया व रुधिर टपकताहुआ वह शिर लेकर वह स्त्री वेदशर्म्मादिकों के पिता शिवशर्म्मा मुनिके पासगई ५१ व बोली कि ॥

चौ० तव हित वेदशर्म्म सुत वाडव । पठवा हमें यहां मतिपाटव ॥
पिताभक्त उन निज शिरकाटा । हमें दीन मनखोलि कपाटा ५२
हे द्विज हम आईं तव हेतू । करहु भोग मम सँग करिचेतू ॥
वेदशर्म्म साहसलखि ताके । सकल सहोदर रहे सटाके ५३
थर थर कांपत सकल सुअंगा । कहें परस्पर वचन सुढंगा ॥
धर्म्मवती मम सत्यसुबानी । जननीमरी कृपाकी खानी ५४
महाभाग यह धर्म्मधुरन्धर । पितुहित मरो सुभग पण्डितवर ॥
धन्य २ यह धन्य सुपावा । पितुप्रियकीन सकलविधि भावा ५५
इमिसब भाइन कहा निहोरी । पुण्यकारिता सुयश बहोरी ॥
बोले सूत सुनहु मुनिराया । वेदशर्म्म यश यह हम गाया ५६

निजसुत प्रेरित यह शिरलेहू । नारी कह्यो सुनो मुनियेहू ॥
जानिपुत्र की भक्ति विशेखी । बोल्यहु द्विज ताके गुण देखी ५७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेशिवशर्मचरिते
प्रथमोऽध्यायः १ ॥

## दूसरा अध्याय ॥

दो० कहब द्वितीयाध्याय महँ धर्म्म शर्म्म की गाथ ॥
वेदशर्म्मजीवन कियो जो निज तपके साथ १

सूतजी ऋषियों से बोले कि जब वेदशर्म्मा ने अपना शिर इस तरह काटडाला तब उसके पिता शिवशर्म्माजी अपने तीसरे पुत्र धर्म्मशर्म्मा को बुलाकर उससे बोले कि हे पुत्र! यह शिर तुम ग्रहण करो व जैसा करने से यह हमारा बच्चाजीवै हे तात! वैसाकरो उस शिरको लेकर वह महात्मा धर्म्मशर्म्मा अतिवेग से वहां से चल खड़ाहुआ व पिताकी भक्तिसे तप करने सत्य बोलने सरलता रखने से धर्म्मशर्म्मा ने धर्म्मके खींचने की इच्छाकी उस धीमान् के तपोबलसे खिंचेहुये धर्म्मजी १ । २ वहां आकर धर्म्मशर्म्मा से यह वचन बोले कि हे धर्म्मशर्म्मन्! तुमने हमको क्यों बुलाया है वह कार्य्य हम से तुम कहो हम करें इसमें कुछ सन्देह नहीं है तब धर्म्मशर्म्मा बोला कि हे सुव्रत! जो हमारे पिताकी सेवाहो निष्ठा और अचल तपस्या हो तो ३ । ४ तिस सत्यता से वेदशर्म्मा फिर जीउठे तब धर्म्मने कहा कि हे सुव्रत! तुम्हारे दम शौच सत्य तपस्या और पिता की भक्तिसे तुम्हारा भाई वेदशर्म्मा महात्मा फिर जी उठेगा ५।६ हे-महामते! हम तुम्हारे तपसे व पितृभक्ति से बहुत प्रसन्नहुये हैं इस से कोई और वर मांगो जो सब ब्रह्मवादियों में उत्तम लोगों को भी दुर्लभ हो तुम्हारा कल्याण हो ७ जब धर्म्मशर्म्मा ने इस प्रकारका सुन्दर वाक्यसुना तो महात्मा धर्म्मराज जीसे वह महायशस्वी बोला ८ कि हमको पिताजी के चरणारविन्दों में अचल भक्ति दीजिये व यदि प्रसन्नहुये होतो फिर धर्म्म कर्म्म करने में हमारी प्रीतिहो व मोक्षमिले ९ यह सुनके धर्म्मराजजीबोले कि हमारे प्रसादसे ये सब

कार्य्य तुम्हारे होंगे यह कह धर्म्मतो चलेगये व वेदशर्म्मा उठखड़े हुये १० मानो शयनही करते थे व उठतेही उस महाबुद्धिमान् ने धर्म्मशर्म्मा अपने भाईसे कहा कि हे भ्रातः ! वह देवी कहां है व हमारे पिताजी इस समय कहांहोंगे ११ यहसुन धर्म्मशर्म्मा ने संक्षेप रीतिसे सब वृत्तान्त कहा जैसे कि पिताने वेदशर्म्मा के जिलाने के लिये आज्ञादीथी उस बातको जान वेदशर्म्मा अतिहर्षित होके धर्म्मशर्म्मासे बोला कि १२ हे महाभाग ! हमारे शिरके जीआने से आजहमारे पिताजी सुखीहोंगे इससे पृथ्वीपर आजहमारे समान और कौनहै १३ पिताके समीप को जानेमें उत्सुक अपने भाई धर्म्मशर्म्मा से ऐसा कहकर धर्म्मशर्म्मा भाईकेसङ्ग वेदशर्म्मा अपने घरको चला १४ इस प्रकार देखनेकी इच्छा कियेहुये अपने पिताके समीप वे दोनों गये व पहुँचतेही शिवशर्म्मा से १५ धर्म्मशर्म्मा यह वचन बोला कि हे विप्रेन्द्र ! आपके तेज से यमराज के गृहसे इन वेदशर्म्मा को हमलाये अब अपने पुत्रको ग्रहण करो धर्म्मशर्म्मा की ऐसी भक्तिजान शिवशर्म्माजी कुछनहीं बोले व फिर चिन्ता करने लगे व आगे हाथजोड़े खड़ेहुये अपने चौथेपुत्र महामति १६।१८ विष्णुशर्म्मा से बोले कि हे वत्स ! तुम हमारा यह वचन करो आज ही इन्द्रलोक को जाओ व वहांसे अभी अमृतलाओ १९ हम इस स्त्रीके साथ पानकिया चाहते हैं हे सुव्रत ! जो कि सागर से उत्पन्न हुआहै वह सब व्याधि नाशनेवाला अमृतलाओ २० जिससे अभी हमारी वृद्धावस्था नष्टहोजाय व हम नीरोग होजावें हे पुत्र ! यदि हमारे भक्तहो तो ऐसाही करो सोभी शीघ्रता के साथ नहीं तो यह स्त्री हमको छोड़कर और के पास चलीजायगी २१ क्योंकि हमको वृद्धजानकर यह स्वरूपिणी व थोड़ी अवस्था की स्त्री हमें नहीं मानती २२ इससे हे तात ! जिससे प्यारी स्त्रीके सङ्ग हम तीनों लोकोंमें निर्दोष व व्याधि रहित होकर सुखभोगें २३ अपने महात्मा पिताके ऐसे वचन सुनकर प्रकाशित तेजवाले अपने पितासे विष्णुशर्म्मा बोला २४ कि आपके उत्तम सुखके लिये हम यह सब कार्य्य करेंगे ऐसा पितासे कह महामति विष्णुशर्म्मा २५ ॥

चौ० तातहिकीन्ह प्रणामबहोरी । कीन्ह प्रदक्षिणसहित निहोरी ॥
बलतप नियम बहुरिमन सेती । सबविधिदृढ़ह्वै चल्यहुसचेती २६
अन्तरिक्ष उड़िगयहु तुरन्ता । वायु वेगसों सो बलवन्ता ॥
तुरत महेंद्र भवन नगिचाना । महामहात्मा अरुधीमाना २७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेशिवशर्मचरिते द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

## तीसरा अध्याय ॥

दो० कही तृतीयाध्याय महँ विष्णुशर्म्म की गाथ ॥
तदनुसहोदर चारि हरि पुरगे भये सनाथ १

सूतजी शौनकादि ऋषियों से बोले कि विष्णुशर्म्मा अन्तरिक्ष के मार्ग होकर जाय बनाय इन्द्रपुरी के समीप पहुँचे उन्हें सहस्र नेत्रवाले बुद्धिमान् इन्द्रजी ने आतेहुये देखा १ व उनका उद्यम जानकर देवराजजी ने बड़ा विघ्नकिया मेनका नाम अप्सरा से बोले कि हमारी आज्ञासे तू जा २ व हे सुमध्यमे! जाकर शीघ्रही इस शिवशर्म्मा के पुत्र विप्रश्रेष्ठका ऐसा विघ्नकर ३ कि जिससे वह हमारे गृहमें न आवे ऐसा वचन सुनकर मेनका शीघ्रही आकाश को गई ४ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि रूप उदारतादि गुणों से युक्त व सब भूषणों से भूषित हो एक उड़नखटोले पर चढ़ नन्दन वनके समीप ५ वीणा बजाकर गातेहुये पुरुषोंके अच्छे रागके समान गाती हुई उस विशालनयनी चतुर व मनोहर कटाक्ष करनेवाली को उन महात्मा विष्णुशर्म्मा ने देखा ६ व उसका व्यवसाय भी जाना कि यह इन्द्रकी भेजीहुई हमारा विघ्न करनेके लिये यहांपर उपस्थित है ७ परन्तु वे द्विजोत्तमजी उसको छोड़ बड़े वेगसे आगे बढ़े तब उन ज्ञानात्मा से उसने कहा कि तुम कहां जातेहो हे महामतिवाले! ८ तब उस कामचारिणी मेनकासे विष्णुशर्म्मा बोले कि हम अपने पिताके अर्थ बहुत शीघ्रता के साथ इन्द्रलोक को जाते हैं ९ यह सुन मेनका विष्णुशर्म्मा से फिर अतिप्रिय वचन बोली कि मैं काम के बाणोंसे व्याकुलहूं इस से तुम्हारे शरण में आईहूं १० हे द्विज

शाहूँ न! जो इसको धर्म जानतेहो तो मेरी रक्षाकरो हे विप्र! जैसेही मैंने तुमको देखाहै कि मेरा चित्त कामसे व्याकुल होगया ११ व सब मेरे अङ्ग कामसे जलनेलगे इससे प्रसन्न व सुमुखहोश्रो जब तक मेरेसङ्ग मैथुन न करोगे तब तक मैं कामाग्नि से जलाकरूंगी इसमें कुछभी संदेह नहींहै १२ यह सुन विष्णुशर्म्मा बोले कि हे वरानने! हे शुभे! हम देवराजका चरित जानते हैं व आपका भी चरित बहुत अच्छी तरह जानते हैं हम ऐसे नहींहैं जैसा तुम चाहतीहो १३ हे शोभने! आपके रूप व तेजमें विश्वामित्रादिक अन्य मुनिलोग मोहित होते हैं हम शिवशर्म्माजी के पुत्रहैं १४ जो कि योगसे सिद्धहैं व तपस्या से भी सिद्धहैं व कामादि दोषोंको उन्होंने पहिलेही जीतलिया है इससे उनमें वे रहितहैं १५ इससे हे विशालनेत्रवाली! और किसीको जाकर भज हम तो इन्द्रलोकको जाते हैं ऐसा मेनकासे कह वे ब्राह्मणश्रेष्ठ अपने उसी वायुवेगसे चलखड़ेहुये १६ तब निष्फलहो मेनका इन्द्रके समीप पहुँची व उन्होंने जाना कि इसका किया वहां कुछ नहीं हुआ इससे इन्द्रने विष्णुशर्म्मा को नानाप्रकार की भयंकर विभीषिकायें दिखाईं १७ हे द्विजो! जैसे अग्नि से जलनेपर तृणों के ढेर के ढेर एक क्षणमें भस्म होजाते हैं वैसेही इन्द्रकी कीहुई सब बिभीषिकायें नष्ट होगईं १८ पिताके परमभक्त उन ब्राह्मण के तेज से बड़ी २ दारुण व घोर व भयंकर जितनी इन्द्रकी कीहुई बिभीषिकायें थीं सब क्षणमात्रमें भस्म होगईं १९ क्योंकि महातेजस्वी व यशस्वी ब्राह्मणलोग अपने तेजसे क्या २ नहीं नष्ट करडालते इस प्रकार महात्मा इन्द्र के बार २ कियेहुये बहुत से विघ्न उन मेधावी विष्णुशर्म्माजीने अपने तेजसे नष्ट करदिये २० । २१ जब वे सब बड़े २ दारुण विघ्न नष्ट होगये व उन सब दारुण आकृतिवाले दारुण विघ्नोंको एक दूसरेके पीछे इन्द्रके कियेहुये जाना तब २२ महातेजस्वी द्विजोत्तम विष्णुशर्म्माजीने लालनेत्र करके इन्द्र के ऊपर बड़ा भारी कोपकिया २३ सूतजी बोले कि अपने धर्ममें रत पुरुष का जो कोई विघ्नकरे तो उसको अवश्य दण्ड देना चाहिये क्योंकि उसके दण्डदेनेमें देनेवाला दोषी नहीं होता द्विजोत्तम विष्णुशर्म्माजी

ने अपने मनमें यह विचार किया कि बस अब हम इन्द्रको इन्द्र लोकसे नीचे गिरादेंगे अन्यथा इन्द्र न मानेंगे व देवताओंके पालने के लिये दूसरा इन्द्र बनावेंगे २४।२५ ऐसा विचारांश करके वे ब्राह्मणदेव इन्द्रके नाशकरनेपर उद्यतहुये तबतक इन्द्रजी वहां आये व नम्रतापूर्व्वक विष्णुशर्म्मा से बोले २६ कि हे महाप्राज्ञ विप्रजी! तुम्हारे तपसे व नियमसे व इन्द्रियों के दमन करने से व शौचाचार करने से तुम्हारे समान अन्य कोई नहींहै २७ व तुम्हारी इस पिताकी अपूर्व भक्तिसे सब देवताओं समेत हम जीत लियेगये हे सत्तम! इससे हमारे सब अपराध आप क्षमाकरें २८ व जो मनमें हो वह वरमांगे तुम्हारा कल्याणहो चाहे बहुतही दुर्लभ होगा पर आपको अवश्य देंगे तब आयेहुये देवराज से विष्णुशर्म्मा बोले २९ कि हे इन्द्र! ब्राह्मणोंका तेज बड़ा रौद्र होताहै उसे देवता व दैत्य बड़ेदुःखसे सह सक्तेहैं उसमें भी जो ब्राह्मण अपने पिताका भक्त होताहै उसका तेज तो बहुतही दुस्सह होताहै ३० इससे अब आजसे महात्मा ब्राह्मणों के तेज को कभी न भंगकरना क्योंकि जब उत्तम ब्राह्मण कभी रुष्टहोते हैं तो तेज हरनेवाले को पुत्र पौत्रसमेत नाश करदेते हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहींहै यदि इससमय आप न आये होते तो यह तुम्हारा उत्तम राज्य ३१। ३२ अपने तपके प्रभाव से किसी अन्य महात्मा को अनुराग से पूर्णचित्त होके हमने देनेकी इच्छा की थी ३३ पर आप यहां आगये व वर देना चाहते हैं तो हे इन्द्र! हमको थोड़ासा अमृत दीजिये व पितामें अचल भक्ति दीजिये ३४ हे देवराज! यदि संतुष्ट हुयेहो तो ऐसाही वर दीजिये यह सुन इन्द्रजीने कहा कि बहुत अच्छा तुमको अमृत भी देंगे व पितामें अचल भक्ति भी देंगे ३५ ऐसा उन ब्राह्मणोत्तम से कह इन्द्रने अपने हाथसे लेआकर अमृत दिया सो भी ऐसे प्रसन्न हुये कि एक घड़ेका घड़ा उठाकर देदिया ३६ व कहा कि पितामें तुम्हारी सदैव अचल भक्ति होगी ऐसा कह कर इन्द्रजीने उन ब्राह्मणदेव को बिदाकिया ३७ और ब्राह्मण के अत्यन्त दुस्सह तेजको देखकर प्रसन्न हुये व विष्णुशर्म्मा वहांसे आय अपने पिता से बोले कि ३८ व्याधिनाश करनेवाला अमृत

हम इन्द्रसे लाये हे महाभागपिताजी ! इससे अब सदाके लिये रोग रहित होजाइये ३९ व इस अमृतको पानकर परमतृप्ति को प्राप्त हूजिये पुत्रका यह पूज्य वचन सुनकर शिवशर्म्माजी ४० बड़े प्रसन्न चित्तहो सब अपने पुत्रोंको बुलाकर उनसे बोले कि तुम सब लोग पिताकी भक्तिमें तत्परहो व हमारे वचनका परिपालन सदा करतेहो ४१ हे पुत्रो ! अब जो पृथ्वीतलपर दुर्लभहो वह वर हमसेमांगो ऐसा पिताका वचन सुन सबोंने सम्मतकिया ४२ व विचार करके सब अपने पितासे बोले कि हम लोगोंकी माता जोकि यमराज के मन्दिर को चलीगईहै हे सुव्रत ! वह अब फिर तुम्हारे प्रसाद से जीकर रोग रहित होजावे व जन्म जन्मान्तरमें आप पिता व ये माता हम लोगों की होतीरहैं ४३ । ४४ व हम लोगों की सदा पिता मातामें अचल भक्ति बनीरहै बस और कुछ वर हमलोग नहीं चाहते इतना सुन शिवशर्म्मा बोले कि आजही पुत्रोंके ऊपर करुणा करनेवाली तुम लोगोंकी माता ४५ जीकर अतिहर्षित होकर आवेगी इसमें कुछभी सन्देह नहींहै जब शिवशर्म्मा ऋषिने ऐसा शुभवाक्य कहा ४६ कि वैसेही उन लोगोंकी माता अतिहर्षितहो वहां आकर बोली कि इसी लिये सुन्दर वीर्य्यवाले श्रेष्ठ कुल व वंशके तारनेवाले पुत्रके उत्पन्न होनेकी इच्छा मनुष्य व महाभाग्यवती व पुण्य करने में प्रीति करनेवाली स्त्रियां करती हैं ४७ । ४८ कि हमारे सर्व्वाङ्ग पुण्य अंगों से युक्त व पुण्यकरने का साधक पुत्र उत्पन्नहो क्योंकि जिसके गर्भ में पुण्यात्मा पुत्र आताहै उसका गर्भ पुण्यों से सुखसे बढ़ताहै ४९ व वह पुण्यभागिनी स्त्री विना कष्टहीके आनन्द से पुण्य पुत्रोंको उत्पन्न करती है सो कुलका आचार व कुलहीके आधारका व पिता माता के तारनेवाला ५० उत्तम पुत्र विना बहुत पुण्यों के कैसे कोई स्त्री पासक्ती है हम नहीं जानतीं किन २ पुण्यों से ये महापुण्यात्मा भर्त्ता हमको मिलेहैं ५१ जिनका वीर्य्य धर्म्मयुक्तहै व आप धर्म्मात्मा व धर्म्मवत्सल हैं जिनके वीर्य्यसे महातपस्वी तुम लोगोंको हमने पुत्र पाया ५२ व पुण्य करने में अत्यन्त प्रीति करनेवाले तुम लोग ऐसे प्रभाव से युक्त हुये व हमारे तुम सब पुत्र पिताकी भक्तिमें ५३ । ५४

हुये ५३ देखो लोकों में बहुत पुण्योंकरके अच्छा पुत्र मिलताहै व हमने तो एक दूसरे से अधिक महायशवाले पांचपुत्र पाये ५४ जो कि सब यज्ञों के करने में निपुण व सब अपने स्वभावही से पुण्यात्मा व सब तप तेज व पराक्रम से युक्त इस प्रकार उनकी माताने बार २ अपने पुत्रोंको बढ़ाया ५५ व वे बड़े भाग्य हर्षसे युक्त होकर प्रणाम करके अपनी मातासे बोले कि हे माताजी ! बड़े सुन्दर पुण्यों से अच्छी माता व अच्छे पिता मिलते हैं ५६ सो हम लोगोंके बड़े भाग्यों से महापुण्यवती अच्छी माता आप मिली हैं व जिनके गर्भमें प्राप्तहोके हम लोग उत्पन्न हुये व पुण्य करते हुये अच्छीतरह बढ़ाये गये ५७ अब यही चाहते हैं कि जन्म २ में तुम तो माता होओ व ये हमारे पिता हों यह सुन उन लोगोंका पिता बोला कि हे हमारे पुत्रो ! तुम लोग सुनो हम पुण्यदायक सुन्दर वर देते हैं ५८ कि हमारे सन्तुष्ट होनेसे अक्षयभोग बहुत दिनोंतक भोगो यह सुन पुत्र बोले कि हे तात ! यदि आप प्रसन्नहैं व वर देना चाहतेहैं ५९ तो हम लोगोंको तुम तापरहित श्रीविष्णु के लोक गोलोक को भेजो यह सुन उन लोगोंका पिता फिर बोला कि हे पुत्रो ! निश्छल पिताकी भक्तिसे व तप करने से व हमारे प्रसाद से पापरहित तुम लोग श्रीविष्णुजी के लोकको शीघ्रही जाओ जब शिवशर्म्मा ऋषिने ऐसे सुवचन अपने पुत्रों से कहे ६० । ६१ तो शंख चक्र गदा हाथोंमें धारणकिये व गरुड़पर आरूढ़ श्रीविष्णुभगवान् आप वहां आये व पुत्रों सहित शिवशर्म्मा ऋषिसे बार २ बोले ६२ कि हे ब्राह्मण ! पुत्रों समेत तुमने भक्तिसे हमको जीतलिया इससे पुण्यकारी इन चारों पुत्रों समेत व पतिकी इच्छा कियेहुई इस पुण्यरूपिणी अपनी भार्य्या के साथ तुम आओ हमारे संग चलो तब शिवशर्म्मा ऋषि फिर बोले कि ये हमारे चारोंपुत्र उत्तम वैष्णवलोकको तबतक जायँ ६३ । ६४ व हम अभी कुछ कालतक इस पृथ्वीपर अपनी इस स्त्री के साथ व इस अच्छे अपने अन्तवाले पांचवें पुत्र सोमशर्म्मा के संग रहेंगे ६५ जब सत्यभाषण करनेवाले उन ऋषिने ऐसा शुभ वाक्य कहा तो ॥

चौ० देवकेवहरिशिवशर्म्मांके । चारिसुतनसोंशुभधर्म्मांके ॥

बोलेचलहु आज गतशोका । प्रलयरहितमोश्चसमलोका ६६
इमिसुनि सत्यतेज द्विजचारी । विष्णुरूपधरि बहुत सुखारी ॥
इन्द्रनीलमणि श्याम शरीरा । गदाचक्रदरधर वर वीरा ६७
सर्व्व त्रिभूषण भूषित अंगा । विष्णुरूप अति तेज प्रसंगा ॥
कंकणहार रत्नकी माला । तासों शोभितरूप विशाला ६८
सूर्य्यप्रकाशभाससम भासित । तेजज्वाल आवृत अतिकाशित ॥
विष्णु काय महँ धायनु पैठे । शिवशर्म्मा रह देखत बैठे ६९
जिमि दीपकमहँ दीपक दूसर । जाय मिले यकहोत सुसूधर ॥
तिमिभेलीन सकल हरिमाहीं । करि पितुभक्ति विप्रनरताहीं ७०
वैष्णव धामगये इमि चारी । उत्तम द्विज पितृभक्त करारी ॥
सोमशर्म्मकर विशदप्रभावा । अ.गेकहब न अबहिं बतावा ७१

इति श्रीपाद्म्येमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेशिवशर्मोपाख्याने तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

## चौथा अध्याय ॥

दो० सोमशर्म्म कर विशद यश पितुसेवा सों जौन ॥
चौथे महँ कह सूतजू त्यहिसम करिहै कौन १

जब शिवशर्म्माजी के चार पुत्र श्रीहरिके रूपमें मिलके वैकुण्ठ को चलेगये तो वे अपने पांचयें पुत्र सोमशर्म्मा को बुलाकर उससे बोले १ कि हे महाप्राज्ञ पुत्र! तुम यह अमृत का कलश रखाना क्योंकि तुम भी तो हमारे भक्तहो २ हम इस अपनी भार्य्यासमेत तीर्थयात्रा करनेको जायँगे सोमशर्म्माने कहा एवमस्तु हम इस अमृत के घड़ेकी रक्षा करेंगे ३ बस वे बुद्धिमान् शिवशर्म्माजी महात्मा पुत्रके हाथमें अमृतका कुम्भदे चलेगये व दशवर्ष तक निरन्तर तप करतेरहे ४ व यहां धर्म्मात्मा सोमशर्म्मा निरालस होके रात्रि दिन अमृतघटकी रक्षा करतारहा दशवर्ष के पीछे महायशस्वी शिवशर्म्माजी फिर आये ५ परन्तु वे महाप्राज्ञ ऐसी माया करके पुत्रके समीप आये कि स्त्री समेत कुष्ठरोग से अतीव ग्रसित होके दिखाई दिये ६ यहांतक कि दोनों केवल मांसके पिण्डही रहगयेथे कर चर-

णादि बनाय गलकर फूटगये थे ऐसे उस सोमशर्मा के माता पिता होगयेथे ७ जब इस रूपसे अतिदुःखित आयेहुये महायशस्वी सोमशर्माजीने अपने परमगुरु माता पिता को देखा तो परम कृपायुक्त होकर ८ बड़ी भक्तिसे शिरझुँकाकर दोनों जनोंके चरणोंपर आगिरे व पितासे बोले कि तपसे आपके तुल्य हम और किसीको नहीं देखते ९ व सुन्दर पुण्यवाले गुणभावों से भी तुम्हारे तुल्य और किसी को नहीं देखते परन्तु नहीं जानते यह आपमें क्या होगया सब देवगण सदैव तुम्हारे दासोंके तुल्यहैं १० जैसेही आपकी आज्ञा पाते हैं वैसेही आपके तेजसे खिंचेहुये चलेआतेहैं पर नहीं जानते किस पापसे तुम्हारे अंगमें यह रोग होगया ११ हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! इसरोग के होनेका कारण हमसे कहो व ये हमारी माता अति पुण्यवती पतिव्रता हैं १२ जोकि पतिके प्रभावसे तीनों लोकोंको तरसक्ती हैं इनको दुःख कैसे मिला क्या इनमें तपका प्रभाव नहींहै १३ जोकि राग व अप्रीति छोड़के कर्म्मणा मनसा वाचा तीनों प्रकारके कर्म्मों से अपने पतिकी सेवा करती हैं वे ऐसा दुःख कैसेपावें जो गुरुवत्सला पतिको सदा देवताही के समान पूजती हैं वे कैसे दुःखपावें दुःखों में भी कुष्ठरोगका महादुःख यह सुन शिवशर्म्माजी बोले कि हे महाभाग्यवाले! तुम शोच न करो कर्म्मका फल सब को भोगना पड़ता है १४। १५ व मनुष्यका शरीर सदा पाप पुण्य दोनों से युक्त होताहै इससे जो तुम पुण्य चाहो तो हम दोनोंकी शुश्रूषाकरो अन्य कुछ इसमें विचार न करो विचार करने से अच्छा नहीं है जब शिवशर्मा मुनि ने ऐसा शुभ वचन कहा तो महायशस्वी सोमशर्म्मा बोले १६। १७ कि पुण्ययुक्त तुम दोनों जनोंकी शुश्रूषा हम अवश्य करेंगे जो हमने माता पिता की पूजा न की तो फिर मुझ पापी दुष्ट कृपण को और कौनसा पुण्यकर्म्म करना चाहिये ऐसा कहकर व उन दोनों के दुःख से दुःखितहो सोमशर्म्मा १८। १९ अपने कोढ़ी माता पिता का थूँक खँखार व मल मूत्र अपने हाथों से उठानेलगे व अपनेही हाथों से दोनों जनों के पैरधोवें व रात्रिमें उनके चरण दाबें व और भी अंगमींज दाब दियाकरें २० व भक्तिसे उन दोनों को स्नान

कराते उत्तम २ पदार्थ भोजन के लिये देते व महायशस्वी सोम-
शर्म्मा अपने उन परमगुरु माता पिताको २१ धर्म्म के लिये अपने
कन्धे पर चढ़ाकर तीर्थादिकों में स्नान कराने को लेजाया करें
व दोनों को अपने हाथ से अच्छेप्रकार स्नान कराकर चन्दनादि
सुगन्धित वस्तु उनके अंगोंमें लगावें स्नानभी वेदके मन्त्रोंसे जैसा
लिखा है वैसाही करावें क्योंकि वे तो सब वेद शास्त्र अच्छी तरह
पढ़ेथे व दोनोंजनों से नित्य देवताओं ऋषियों व पितरोंका तर्प्पण
व पूजन करावें व होम अपने हाथों से अग्निमें करें व उत्तम भोजन
भी अपने ही हाथों से बनावें २२ । २४ फिर बड़ी प्रीति के साथ
अपनेही हाथसे दोनों जनों को भोजन करावें फिर सुन्दर शय्या व
आसन पर उठाकर उनदोनों को बैठादें शयनके समय लपटादें २५
वस्त्र पुष्पादिक सब उन दोनोंको नित्य अपने हाथसे दें बहुत सुगन्धसे
युक्त ताम्बूल दोनों को खिलावें २६ तब महाभाग सोमशर्म्मा उनकी
पूजा करें मूल दुग्ध दधि आदि सुन्दर भक्षण करने के पदार्थ उन
दोनों को यशस्वी सोमशर्म्मा नित्य देकर व जो २ उनको वाञ्छित
हो बराबर दिया किया करें इसरीति से नित्य पूजाकरके सोमशर्म्मा
अपने माता पिताको प्रसन्न कियाकरे व उसके पिताजी सोमशर्म्मा
को बुलाकर निष्ठुर हो प्रतिदिन उसकी निन्दा करें २७ । २९ व
निष्ठुर वचन कह २ कर बकते झकते रहें जब कोई कार्य्य व पुण्य
कर्म्म पुत्र करे तो पिता निन्दाही करते रहें व कहें ३० कि हे कुल
नाशनेवाले ! तूने हमारा प्रिय कुछ नहीं किया इसप्रकार नानाप्र-
कारके दुःखदायक निष्ठुर वचन कहकर ३१ दण्ड लाठी आदि से
आतुर हो शिवशर्म्मा अपने पुत्रको मारा करें ऐसा करनेपर भी वह
धर्म्मात्मा सोमशर्म्मा कभी रोष न करे बरन सन्तुष्ट ही बनारहे ३२
सो मनसे वचन से व कर्म्म से सदा सन्तुष्ट ही रहे व सदा पिताकी
पूजाही करता रहै ३३ व उसी प्रकार प्रतिदिन माताकी भी पूजा
सोमशर्म्मा करता रहै जिसको जानकर शिवशर्म्मा अपना चरित
देखे ३४ कि हमारे लिये विष्णुशर्म्मा अमृत लाया था व सदा पु-
ण्ययुक्त हो वह धर्म्मात्मा पितृभक्तिमें तत्पर रहा इस तरह से

रतेहुये सौदिन बीतगये तब पुत्रकी भक्तिदेख शिवशर्म्मा भी अपने मनमें चिन्तना करके कहने लगे ३५। ३६ कि हमने प्रथम अपने पुत्र यज्ञशर्म्मा से कहा कि हे पुत्र! अपनी माता के शरीर के ये खण्ड जहां तहां बड़ीदूर फेंकआओ ३७ सो हमारा वचन उसने किया माता के ऊपर कृपा नहीं की फिर उससे भी अधिक दुःख वेद शर्म्माने किया जिसने उस माया की स्त्रीके आगे हमारे लिये अपना शिरही समर्प्पण करदिया उसने तत्कालही बड़ाभारी साहस किया तीसरे ने अपने तपके प्रभाव से हमारे कहने से उसे जिवाय ही दिया चौथे ने ज्ञानों अपने तपके प्रभाव से इन्द्रपुरी से अमृत ही ले आनदिया ३८। ४० परन्तु यह सोमशर्म्मा सबसे अधिक ठहरा क्योंकि इसकी परीक्षा नानाप्रकार के दुःख दे हमने ही करली ४१ ऐसी भक्ति इसने की कि नानाप्रकारके दुःखोंसे जानो यह पुत्र यहीं मृतकही होजायगा व हम ने माया से अपने अंगों में कुष्ठरोग भी दिखाया ४२ तो भी खँखार मूत्र मलकी घिनघिनी कुछ भी इसने न की व यह महा यशस्वी नित्य विष्ठा अपने हाथों से ही उठाकर अलग बहाता है ४३ सब अङ्ग अपने ही हाथों से मींजता रहताहै व शौच भी अपने ही हाथों से कराता है व हमारा दुस्सह महादारुण वचन नित्य सहता है ४४ नानाप्रकार की निन्दा व ताड़न सहता हुआ यह पुत्र सर्व्वत्र अपने कन्धोंपर चढ़ाकर हमको पहुँचाता है इस प्रकार के दुःखके सहने के समाचार इस महाबुद्धिमान् मेरे पुत्रकेहैं ४५ कहांतक कहें नाना प्रकारके क्लेशों से दुःखों के समुद्र में यह पुत्र पतित है परन्तु अब श्रीविष्णु भगवान् के प्रभाव से इस के सब दुःख हम दूर करेंगे ४६ ऐसा बहुत समयतक अपने मनमें चिन्तना कर महामति शिवशर्म्माजी ने फिर यह माया की कि कहीं उस घड़ेसे अमृतही उड़ा दिया ४७ व पीछे सोमशर्म्मा को बुलाकर उससे यह वचन कहा कि तुम्हारे हाथपर व्याधिनाशक अमृत हमने दिया था ४८ वह हमको शीघ्रही दो कि हम उस को पीवें व विष्णुशर्म्मा के प्रसाद से नीरोग हों ४९ जब शिवशर्म्मा आपने ऐसा वचन कहा तो सोमशर्म्मा बड़ी शीघ्रतासे उठे व उस

अमृतपात्र के पासगये ५० देखा तो वह घड़ा अमृत से खाली था बिन्दुमात्र भी उसमें अमृत न था कहनेलगे कि किस पापीका यह कर्म्म है किस ने यह हमारा विप्रिय किया ५१ इसप्रकार चिन्ता में तत्पर हो सोमशर्म्मा अतिदुःखित हुये व अपने मनमें कहने लगे कि जो हमजाकर पिताजीके आगे यह वृत्तांत कहेंगे ५२ तो व्याधि से पीड़ित हमारे पिताजी बड़ा कोप करेंगे इसप्रकार बड़ी देरतक चिन्ताकर महामति सोमशर्म्माजी यह अपने मन में कहनेलगे ५३ कि यदि सत्य २ निश्छल होके हमने अपने गुरु माता पिताकी सेवा की हो व पूर्व्व समयमें जो हमने शुद्धचित्त होके तपकियाहो ५४ व इन्द्रियों के दमन करने व शौचादि नियमों से सत्य २ धर्म्म हीका पालन कियाहो तो यह घड़ा अभी अमृत से पूर्णहोजाय इस में कुछभी संशय न हो ५५ उन महाभागने जैसेही ऐसी चिन्तना करके घड़ेको देखा कि वैसेही फिर वह घट अमृत से पूर्ण होगया ५६ उसे देख महायशस्वी सोमशर्म्माजी अतिहर्षितहुये ॥

चौ० गुरुपहँजाय कीन्ह परनामा । लै घट कलमहँ युतसबसामा ॥
कह लीजे यहघट पीयूषा । पूर्ण भलीविधि तनिक न शूषा ॥
करियहि पान रोग बिनहोऊ । महाभाग तुम सम नहिं कोऊ ॥
सत्यधर्म्मयुत यह त्यहिवचना । सुनिप्रसन्नभे मुनि लखिरचना ॥
शिवशर्म्मासुत माधुरबानी । सुनिनिजमनअतिशयसुखमानी ॥
हर्षित ह्वै बोले मृदुवचना । लखतप्रशंसततनयसुरचना५७।५९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादे
शिवशर्म्मोपाख्यानेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

## पांचवाँ अध्याय ॥

दो० कह पँचयें अध्याय महँ सोमशर्म्म तप फेरि ॥
इन्द्रजन्म प्रस्ताव सब अदिति तपस्या हेरि १

शिवशर्म्माजी अपने पुत्रसे बोले कि हे पुत्र! आज हम तुम्हारे तप दम शौच गुरुशुश्रूषा व भक्तिसे सन्तुष्टहुये १ अब हमसे उत्तम विष्णुमन्त्र ग्रहणकरो व सुख पाओ यह पुत्र से कह ब्राह्मण

देवताने अपना प्रथमवाला शरीर दिखाया २ जैसे प्रथम थे वैसे ही अपने माता पिताको पुत्रने देखा दोनों दीप्तिमान् महातेजस्वी सूर्य्य के बिम्बके समान प्रकाशित देखपड़े ३ तब बड़ीभक्तिसे पुत्र ने दोनोंके चरणोंमें प्रणामकिया व बड़े हर्षसे उनके पिताने विष्णु-सूक्त ग्रहणकराया ४ व श्रीविष्णुजी के प्रसाद से अपनी भार्य्या समेत धर्म्मात्मा शिवशर्म्माजी तो अपने पुण्य व योगाभ्याससे विष्णु को प्राप्त होगये ५ श्रीविष्णु भगवान्के तेज में लीन होगये जोकि मुनियोंको भी दुर्लभहै जो न यज्ञोंसे मिलता है न तपोंसे न पुण्यों से उस अक्षय तेजको शिवशर्म्माजी गये ६ क्योंकि जैसे विष्णुके ध्यानसे प्राणी उनके लोकको जाताहै वैसे दान तीर्थयात्रा व स्तोत्रादिकों के पाठ करने से दुर्लभ परमपदको नहीं जाता ७ जिस प्रकार वह ब्राह्मण विष्णुके ध्यानसे वैष्णवी शरीरमें प्रवेश करगया वैसा तो यज्ञ पुण्य योगाभ्यास व दान करनेसे कोई नहीं प्राप्तहोते ८ सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि पिता माताके वैकुण्ठवासी होजाने के पीछे मिट्टीका ढीला पत्थर व सुवर्णको समान समझते हुये ९ आहारको जीत उनधर्म्मात्मा सोमशर्म्माने निद्राको भी जीतलिया व नानाप्रकारके विषयोंको छोड़ एकान्तकी सेवा करनेलगे १० केवल योगासनपर आरूढ़हो भोजनरहित होके सब पदार्थ उन्होंने छोड़ दिये इस प्रकार तप करते २ सोमशर्म्मा के मरणका समय आया उसी समयमें वहां एक दानवों की सेना आई जब उस ऋषियों के मान बढ़ानेवाले शालग्राम नाम महाक्षेत्र में सोमशर्म्मा मरनेपर उद्यतहुये कि वैसेही वे दैत्य आपहुँचे थे कोई २ दानव तो कहतेथे मारो २ कोई २ दैत्य कहते थे निकालो निकालो ११ । १३ इस प्रकारका महाशब्द मरण समय में सोमशर्म्माके कानोंमें पड़ा तब विप्रों में श्रेष्ठ सोमशर्म्माजीका १४ ज्ञान ध्यान जातारहा व उनके चित्तमें दैत्योंका भय पैठगया इससे उनके प्राण दैत्यरूप होगये व उन महात्मा के प्राण तुरन्त निकलगये बस वे दैत्यभाव को प्राप्तहो मृत्युके वशीभूत हुये १५ । १६ इसीसे वे आकर हिरण्यकशिपु नाम दैत्य के गृहमें हिरण्यकशिपुके पुत्र उत्पन्नहुये व देवा-

सुर नाम महायुद्ध में श्रीविष्णु भगवान् के हाथसे मारेगये १७ जब सोमशर्म्मा दैत्यहुये तो उनका प्रह्लाद नाम हुआ सो जब महात्मा प्रह्लाद विष्णुजी से युद्धकरनेलगे तो उन्होंने विश्वरूपसमन्वित भगवान् वासुदेवजीको देखा १८ तब पूर्व योगाभ्याससे उन महात्माको ज्ञान होआया जिससे कि पूर्व्वजन्मके शिवशर्म्मा नाम पिताका सब चरित स्मरण होआया १९ व विचारा कि हम वेही सोमशर्म्मा हैं अब दानवी शरीरको प्राप्तहुये हैं अब इस शरीरको छोड़ कब केवल पुण्यधामको प्राप्तहोंगे २० सोभी मोक्षदायक ज्ञानोंसेही यों नहीं जब समरमें मरनेलगे तो महात्मा प्रह्लादजीने ऐसी चिन्ताकी यह सर्व्व सन्देह नाशन वृत्तान्त तुमसे हमने वर्णन किया अब और कथा श्रवणकिया चाहते हो सो पूँछो २१।२२ सूतजी फिर शौनकादिकोंसे बोले कि जब इसप्रकार प्रह्लादको देवदेव वासुदेवजी ने मारा तब पुत्रनाश होनेवाली कमला रोतीभई २३ प्रह्लाद की माता हिरण्यकशिपु की भार्य्या प्रह्लादके महाशोकों से दिन रात्रि शोच किया करतीथी २४ बड़ी पतिव्रता व भाग्यवतीथी कमला उसका नामथा सो बड़ी दुःखितहो दिन रात्रि जब रोदनही कियाकरे तो नारदजी आकर उससे बोले कि २५ हे महाभाग्यवाली व पुण्यवाली! तू पुत्रके अर्थ शोच न कर जिस तेरे पुत्र को वासुदेवजी ने मारडाला है वह फिर तेरे यहां जन्मलेगा २६ उसीतरह का रूप व लक्षण उसका होगा व तेरेही उदर से उत्पन्न होगा व फिर भी उस महाबुद्धिमान् लड़के का प्रह्लादही नामहोगा २७ पर उसका आसुरभाव कुछभी न होगा पूरे सब वैष्णवीभाव उस में होंगे व वह इन्द्रत्व को भोगकरेगा तब सब देवगण उसके नमस्कार करेंगे २८ हे महाभाग्यवाली! उस पुत्रसे सदा सुखिनीहो परन्तु हे देवि! यह वार्त्ता तू किसी से न कहना २९ इसको अपने ज्ञानभावसे सदा गुप्तही रखना ऐसा कह मुनियों में श्रेष्ठ श्रीनारदमुनि चलेगये ३० फिर उसी कमला के उदरमें उन्हीं प्रह्लादका उत्तम जन्म हुआ व उन महात्माका फिर भी प्रह्लादही नामहुआ ३१ वे बाल्यावस्थाही से कृष्णचन्द्रही का स्मरण कियाकरें इसी से नरसिंहजी के प्रसाद से

वे देवताओं के राजा इन्द्रहोगये ३२ इससे उत्तम इन्द्रपद भोगते हुये वेभी देवरूपही होगये व महाज्ञानी होकर फिर वे महात्मा मोक्ष को प्राप्तहोंगे ३३ हे महाभागो! सृष्टि असंख्यप्रकारकीहै इससे ज्ञानवान् महात्माओं को कभी मोह न करना चाहिये ३४ हे द्विजोत्तमो! यह तुम्हारे प्रश्नका उत्तर हमने दिया हे महाभागो! अब और कुछ पूँछो तुम्हारे सन्देहको हम काटेंगे ३५ देवताओं का विजय व दानवोंका महानाश श्रीविष्णु भगवान् करके तीनोंलोकों को स्थापित करते हैं ३६ इतना सुन ऋषिलोग फिर सूतजी से बोले कि प्रह्लाद देवताओं के इन्द्र जैसे हुये वह कथा हमलोगों से विस्तारसहित आप कहें ३७ सूतजी बोले कि हे ब्राह्मणो ! जिसप्रकार से उन अत्यन्त सज्जन पुण्यात्मा ने इन्द्रता पाई वह हम विस्तारसहित वर्णन करेंगे ३८ जब महात्मा श्रीगोविन्दजीने उन सब महादैत्योंको उस महादेवासुर संग्राम में मारडाला तो सब पापी बनाय नष्ट होगये ३९ तब सब देवता गन्धर्व नाग विद्याधरादि सब देवयोनि हाथजोड़ श्रीमाधवजी से बोले कि ४० हे भगवन् ! हे देवदेवेश हृषीकेश ! तुम्हारे नमस्कार है जो कुछ हमलोग तुमसे जनाते हैं उसे विचार कीजिये ४१ हे केशव! अब हमलोगोंका शासन करनेवाला ऐसा कोई इन्द्र बनाइये जो पुण्यात्माहो व हमलोगोंकी रक्षा अच्छे प्रकारकरे ४२ ऐसा पुण्यात्मा राजा इन्द्रहो कि तीनोंलोकोंकी प्रजा जिसका आश्रयण करके अत्यन्त सुखीहो यह सुन श्रीभगवान् वासुदेवजी बोले कि हे महाभाग्यवालो! हमारे लोकमें आजकल वैष्णव तेजसे युक्त एक ब्राह्मण बहुत दिनों से निवास करता है व उस महात्माका काल हमारे लोक में बसने का पूर्ण होचुका है ४३ । ४४ हे देवसत्तमो ! वह विप्र हमारा बड़ा भक्त है सो वैष्णव तेजसे वह तुमलोगोंका पालक होगा ४५ क्योंकि बड़ा धर्म्मात्मा व धर्म्मों का अनुरंजन करनेवाला होगा वह ब्राह्मणसत्तम तुमलोगों का पालक व धारकहोगा ४६ व तुमलोगों की सदा रक्षा बड़े धर्म्म के साथ कियाकरेगा वह अदितिका पुत्रहोगा सुव्रत उसका नामहोगा ४७ महाबली व महावीर्य्यवान् होगा बस वही इन्द्रहोगा सूतजी शौ-

नकादिकों से बोले कि इसप्रकार सब देवताओं को वरदे ४८ श्री विष्णु भगवान् विजय करनेवाले सब देवताओंको संगले पिता कश्यप व माता अदितिके देखने को गये ४९ व वहां जाकर उन महात्मा देवताओंने सुखपूर्वक आसनपर बैठेहुये दोनोंके प्रणामकिया व सबके सब बड़े आनन्द से युक्त हाथ जोड़के बोले ५० कि तुम दोनोंजनों के प्रसादसे हमलोग देवत्व को प्राप्त हुये तब बड़े आनन्दयुक्त कश्यपजी देवताओं से बोले ५१ कि तुमलोग सदा सत्य धर्म से वर्तमान रहना इससे हम दोनोंके प्रसाद से व तपके प्रभाव से ५२ अब अक्षयपद देवत्व को प्राप्तहोओगे यह व और भी वर तुमलोगों को देते हैं कि तुमलोग बहुत प्रीति से युक्त ५३ अमर व निर्ज्जर होओगे अर्थात् न कभी मरोगे न वृद्ध होओगे व तुमलोगों के सब काम अर्थ सिद्धहोंगे व सबसिद्धियां तुम्हारे आगे खड़ी रहेंगी ५४ सो तुम्हीं को यह वर नहीं देते सब नाग गन्धर्व भी हमारे प्रसादसे बड़ेदेव होंगे जब देवताओं से कश्यपजीने ऐसा कहा तब श्रीविष्णुभगवान् अदितिजी से बोले कि हे यशस्विनि देवताओं की माता अदितिजी! तुम्हारा कल्याणहो हमसे वरमांगो ५५ जो तुमको मनसे वाञ्छित होगा वह हम सब देंगे यह निश्चय करके कहते हैं यह सुन अदितिजी बोलीं कि हे माधव! तुम्हारे प्रसादसे हम पूर्वकाल में पुत्रवती हुईथीं ५६ व हमारे सबपुत्र अमर व निर्ज्जर हुये और सबके सब पुण्य करने में वत्सल हुये हे मधुसूदन! सुनिये ये पुत्र हमने पायेहैं ५७ और हे गोविन्द! आप सदैव सबकाम समृद्धिके देनेवाले हमारे गर्भमें होकर हमारे पुत्रहों ५८ कि जिसमें हे केशव! आपको पुत्रपाय हम नित्य आनन्दितरहें हे नाथ! इस प्रकारका महोदययुक्त हमारा मनोरथ आप पूर्णकरें ५९ यह सुन श्रीभगवान्जी बोले कि देवकार्य्यके लिये मनुष्य देहमें जाना योग्य होगा तब हम तुम्हारे गर्भमें निश्चय वासकरेंगे ६० हे देवि! बारहईं चौयुगी के त्रेता में पृथ्वी का भार हरनेके लिये जमदग्नि जीके पुत्रहो सब ब्राह्मणों में उत्तम होकर प्रताप व तेजसे युक्तहो सब दुष्ट क्षत्रियों के मारनेके लिये रामनाम से प्रसिद्धहो सब २

धारियोंमें श्रेष्ठ तुम्हारे पुत्र हम होंगे ६१ । ६२ फिर एक कल्प में सत्ताइसईं चौयुगी के त्रेतायुग की सन्ध्या में श्रीरामचन्द्र के नामसे प्रसिद्ध होकर तुम पतिव्रता के हम पुत्र होंगे ६३ इसके पीछे फिर भी पुण्यबुद्धि तुम्हारे हम पुत्रहोंगे उसको सुनो बताते हैं अट्ठाइसईं चौयुगी के द्वापरके अन्त में हम तुम्हारे पुत्र होंगे उसमें सब दैत्यों को मारेंगे व पृथ्वीका भारउतारेंगे क्षत्रियवसुदेवके यहां उत्पन्नहोनेसे वासुदेवके नामसे प्रसिद्ध तुम्हारेपुत्रहोंगे इसमें सन्देहनहींहै६४।६५ हे कल्याणि! हे सब देनेवाली ! हे देवि ! इस समय अब हमारा धर्म्म युक्त यह वचनकरो कि सर्व्व लक्षणसम्पन्न सत्यधर्म्मयुक्त सर्व्वज्ञ एक सुन्दरपुत्र उत्पन्नकरो उसको हम इन्द्रत्व देंगे इससे वह इन्द्रहोगा ६६।६७ ऐसा सुनकर कि देवदेव श्रीविष्णुजीके प्रसादसे हमारा पुत्र इन्द्र होगा अदितिजी अत्यन्त हर्षित हुईं ६८ व श्रीहरि से बोलीं कि हे महाभाग ! बहुत अच्छा ऐसाही हो हम तुम्हारा वचनकरेंगी पुत्र उत्पन्न करेंगी इसके पीछे सब देवगण अपने २ स्थानोंको चलेगये ६९ व श्रीहरि भी उन्हीं के संग चलेगये देवगण इस बात से अत्यन्त प्रसन्नहुये व सब कहीं से निर्भय होगये सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि जब मनस्विनी अदितिजीने ऋतुस्नान किया तो वे अपने पति कश्यपजी से बोलीं ७० कि हे भगवन् ! तुम हम को इन्द्रपद भोगनेवाला पुत्र अबकी दो इस बात को सुनकर एक क्षणभर चिन्तनाकर कश्यपजी अतिमनस्विनी अदितिजी से बोले ७१ कि हे महाभागे ! ऐसाही हो तुम्हारे पुत्रहोगा जोकि तीनोंलोकोंका कर्ता व यज्ञोंके भोगनेवाला होगा ७२ ऐसा कह व अदिति के शिरके ऊपर अपना हाथ रखकर द्विजों में श्रेष्ठतम तेजस्वी कश्यपजी सत्यधर्म्मयुक्त होकर जाय तप करनेलगे ७३ तब जो महा तेजस्वी सुव्रत नाम ब्राह्मणोत्तम श्रीविष्णुलोक में सदा निवास करताथा उसका पुण्य विष्णुलोक से क्षय होगयाथा ७४ इससे कर्म्म के वश से उस सुव्रत द्विजोत्तमका वहांसे पातहुआ व वही महातपस्वी ब्राह्मण आकर अदितिके पुण्यगर्भमें आया ७५ कि जिससे सत्य पुण्यके कर्म्म से इन्द्रत्व का भोगकरे तब पुण्यों से व तपके प्रभाव

से अदितिजी ने गर्भ को धारणकिया ७६ व निरालस हो वन में जाकर वे तप करनेलगीं तप करते करते उनको देवताओं के सौवर्ष बीतगये ७७ उसमें ऐसा तीव्र तप अदितिने किया जो देवता और असुरों को भी बड़े दुःखसे करने के योग्य था उन के उस तेजसे व तपके प्रभावसे बड़ी प्रभा से युक्त ७८ व सूर्य्यके तेजके समान प्रकाशित मानों दूसरे भास्करही के तुल्य तेजसे वे अदितिजी ध्यान करतीहुई अतिदीप्तिसे शोभित हुईं ७९ व तप और तेजके कारण रूप में औरभी अधिक होगईं बस वे तपध्यान में युक्त हो केवल वायु पानकरके रहती थीं ८० इस कारण दक्षकी कन्या देवी अदितिजी अधिक शोभितहुईं उस तप करने के समय में सब महाभाग्यवाले सिद्धऋषि महापराक्रमी सब देवगण ८१ उन महाभाग्यवती की रक्षाकिया करते थे व सब स्तुतिभी करते थे जब तप करते २ पूर्ण दिव्य सौवर्ष बीतगये तो श्रीविष्णुभगवान् वहां आये ८२ व तप करतीहुई महाभाग्यवती उन अदितिजी से बोले कि हे देवि ! गर्भ अब बनाय अच्छे प्रकार पूर्णहोगया व प्रसूतिका समय आगया है ८३ व तुम्हारेही तप से और तेजसे पुष्टहुआ व बढ़ाभी है इससे हे यशस्विनि ! अब आजही इस गर्भको छोड़ो ८४ ऐसा कह देवेश श्रीविष्णुभगवान् अपने स्थानको चलेगये अदितिजीने जब महोदयवाला सुन्दर काल आया तो दूसरे सूर्य्यही के समान तेजस्वी महादीप्तिमान् पुत्रको उत्पन्नकिया उस पुत्रके सुन्दर तो भुज थे व सब अंग मनोहर सब शुभ लक्षणों से युक्त ८५।८६ चारभुजा बड़ाभारी शरीर था इसीसे वह तीनोंलोकों का नाथ व देवताओंका ईश्वरहुआ तेजकी ज्वालासे घिराथा चक्र पद्म हाथोंमें लियेथा ८७ मुख उसका चन्द्रबिम्बका अनुकरण करताथा व वह महाप्राज्ञ वैष्णव तेज से प्रकाशित होताथा ८८ अन्यभी सब दिव्य लक्षण व भावों से युक्त था सब लक्षणों से सम्पूर्ण चन्द्रवदन कमलसम नयनथा ८९ जब ऐसा पुत्र अदितिजी ने उत्पन्न किया तब वहां सब देवतालोग व वेदवेदाङ्गपारगामी ऋषिलोग आये गन्धर्व्व नाग सिद्ध विद्याधर ९० व सात देवर्षिलोग व बड़े २ तेजस्वी पूर्व्व के

आचार्य्य बृहस्पत्यादि सब आये औरभी पुण्य मंगल देनेवाले पुण्य रूप मुनिलोग आये ९१ सबके सब जो वहां आये अत्यन्त हर्ष से सबों के मन भरेहुये थे भाग्यवान् महापराक्रमी उस पुत्र के उत्पन्न होने पर ९२ सब देवगण व सब पर्व्वतलोगभी देवरूप धारण करके वहां आये व सब तपस्वीलोग व क्षीरादि सातोसमुद्र देवरूप धारण किये व सब विमल जलवाली नदियां भी दिव्यमूर्त्तियों से आईं ९३ व अन्य भी जो चर व अचर जो कोई थे सब सुन्दर मूर्त्ति धारणकिये वहां आये व सबोंने आकर वहां बड़ाभारी मंगल महोत्सव किया ९४ अप्सरादि सबस्त्रियां नाचनेलगीं व गन्धर्व्वलोग ललित गानेलगे व वेदपारगामी ब्राह्मणदेव वेदमंत्र पढ़ २ कर ९५ कश्यपजी के उन महात्मापुत्रकी स्तुति करनेलगे ब्रह्मा विष्णु रुद्र व साङ्गोपाङ्ग सब वेद उन महात्मा महापराक्रमी के उत्पन्न होने पर आये व हे सत्तम ! तीनोंलोकों में जितने पुण्यरूप प्राणी थे ९६।९७ उन महापराक्रमी के उत्पन्न होनेपर सब वहां आये व सबों ने पुण्यगीतों से तथा महोत्सवों से अतिमङ्गल किया ९८ व मारे हर्षके आनन्दित सबों ने उनकी पूजाकी ब्रह्माजी श्रीविष्णुजी व महादेवजी कश्यप व बृहस्पतिजी ९९ इनलोगोंने उन महाप्रतापी पुत्र के नामकर्म्म किये कहा कि वसुदेने के कारण एक तुम्हारा वसुदत्तनामहोगा व दूसरा वसुदनाम होगा १०० तीसरा आखण्डल नाम फिर चौथा मरुत्वान्नाम पांचवां मघवान् व मघवा छठां विडौजाः सातवां पाकशासन १०१ आठवां शक्र व नववां इन्द्रनाम होगा हे अदितिजी ! बस ये तुम्हारे पुत्रके सब नाम होंगे सब येनाम इन्हीं महात्मा के हैं १०२ तब हर्षित होके सब देवताओंने उस पुत्र को स्नानकरा फिर अन्य संस्कार कराया १०३ विश्वकर्म्मा को बुलाकर उनसे उस महात्मा पुत्रको नाना प्रकारके दिव्यभूषण दिलाये १०४ इसप्रकार जब महात्मा देवराज उत्पन्नहुये तो महापराक्रमी सब देवगण इसरीति से अतिहर्षितहुये १०५ व जब पुण्य तिथि शुभमुहूर्त्त व लग्नआया तब माङ्गलिक पदार्त्थों से स्नान कराय देवताओंने इन्द्रजीको इन्द्रपदवीपर स्थापित किया १०६ ॥

चौ० इमि श्रीहरिप्रसादसों नीके । इन्द्र इन्द्रपद लह्यहु सुठीके ॥
तब वसुदत्तकीन्ह तपजाई । अतिविचित्रजोसबसुखदाई १०७
वज्रपाश अंकुशकर लीन्हें । उग्रतेज युत वरमति कीन्हें ॥
नानाविधितपकीन्हअपारा । वर्णनहार कौन संसारा ॥
बोलेसूत सुनहु मुनिराजहु । इन्द्रतपस्यासुनि भृगुआजहु ॥
निजपुरमहँइमिवचनउचारा। को वसुदत्त तुल्य संसारा १०८।१०९
विष्णु प्रसाद तपोबल पाई । ऐन्द्रपदहि पायहु हरषाई ॥
यहिसमानलोकनमहँआना । तपप्रभाव नहिंअपरमहाना ११०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादे देवासुरेन्द्राभिषेकोनाम पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

## छठवां अध्याय ॥

दो० छठयें महँ सुतवध निरखि सौतिपुत्र कर राज ॥
लखिदनुकह्यदितिसोंविलपि दितिकश्यपसोंकाज १

सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि इन्द्रके देवराज होने की वार्त्ता सुनकर कश्यप मुनिकी अति प्रिय भार्य्या परम तपस्विनी दनुनाम अपने पुत्रोंके शोकसे सन्तप्तहो दितिके मन्दिरमें पहुँची १ व रोदन करतीहुई बड़े दुःखसे चिघड़तीहुई मानो मरीहीजाती थी दितिके चरणकमलोंके प्रणामकर फिर चरणोंपर गिरपड़ी उसको इसप्रकार दुःखितदेख दिति उसकी दूसरीसपत्नी समझातीहुई बोली २ कि हे महा भाग्यवाली! तुम्हारे रोदन करनेका क्याकारणहै लोकमें एकपुत्र के होनेसे स्त्रियां पुत्रवती कहाती हैं ३ हे भामिनि! हे कल्याणि! तुम्हारे बड़े महात्मा गुणी शुम्भादि पुत्रहैं इससे ऐसे पुत्रों की माता कहाती हो ४ फिर तुमको किससे दुःख मिला इसका कारण हमसे कहो इसके विशेष महात्मा महाबली हमारे पुत्र हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष राजा हैं तुमको किससे दुःख हुआ हे सखि! अपने दुःखका कारण अवश्य हमसे कहो इस प्रकार महा दुःखित उस दनुसे दितिने बार २ ऐसा कहा ५ । ६ कि हे देवि ! तुम रोती हो अपने रोनेका कारण सब हमसे विस्तार सहित कहो

दनुसे कह परम तपस्विनी दिति विश्राम कररही ७ तब दनु बोली कि हे महा भाग्यवाली ! देखो २ देवदेव श्रीविष्णु ने हमारी तुम्हारी सबसे बड़ी सौति अदिति का मनोरथ कैसे पूर्ण कियाहै ८ हे देवि ! जिसप्रकार पूर्व्व समयमें अदितिको उन्होंने वरदियाहै उसका वृत्तान्त कहती हैं सुनो जैसे वरदियाथा वैसेही इससमय वसुदत्तनाम पुत्रभी अदिति को दिया ९ वह पुत्र कश्यपजी से अदिति में जो हुआहै तीनों लोकों का पालक नियत किया गया व उसको तुम्हारे पुत्रों से छीनकर इन्द्रत्व दियाहै १० इससे अदिति अपने मनोरथोंसे अच्छी तरह परिपूर्णहुई व सब सुखोंसे बढ़ी क्योंकि उसका सबसे छोटा वसुदत्तनाम पुत्र आजकल ११ इन्द्रपद भोगता है जो कि बड़े बड़े दुःखोंसे नहीं मिलता परन्तु वह सब देवताओंके संग वसुदत्त भोगताहै तब दितिबोली कि हमारा महा बुद्धिमान् पुत्र कैसे पदसे भ्रष्टहुआ १२ अन्य दानवोंके तेजोभ्रष्ट होनेका कारण हमसे विस्तारसे कहो १३ इतना दनुसे कहकर परम दुःखित होकर दिति चुप होरही तब दनु बोली देवता व सब हमारे तुम्हारे पुत्र दानव दैत्य क्रोध युक्तहोकर संग्राम करनेको गयेथे १४ वहां दैत्यके नाश करनेवाला बड़ा युद्ध हुआ देवदेव श्रीविष्णुजी ने समर में आकर हमारे पुत्रोंको मारडाला १५ जैसे सिंह वनमें गजोंको मारडालताहै वैसेही चक्रपाणिने तुम्हारे सब पुत्रोंको मारडाला १६ कालनेमिआदि जितने सैन्यकेस्वामीथे जिनको देवता दैत्य कोई भी नहीं जीतसक्तेथे १७ उनको नाशित मर्दित व द्रावितकरके विकलकरदिया बचे बचाये इधरउधर भागगये जैसे अपनी इच्छाहीसे अग्निवनमें तृणोंको जलादेताहै १८ वैसेही ये केशव दैत्यगणोंको भस्मकरडालते हैं हे देवि ! बहुतसे हमारेपुत्र मारेगये व बहुतसे तुम्हारेमारेगये १९ जैसे अग्निकोपाकर सब शलभ भस्महोजाते हैं वैसेही सब दानव दैत्य हरिकोपाकर क्षयकोप्राप्तहुये २० इसप्रकार का दारुण वृत्तान्त सुन कर बहुत व्याकुलहो दितिबोली कि हे भद्रे ! यह वज्रपातके समान वचन तुमने हमसे कैसेकहा २१ इतनाकह दिति मूर्च्छितहो पृथ्वीपर गिरपड़ी तब बड़ाभारी हाहाकार शब्दहुआ जो कि बहुतदुःख और

तापकारक था २२ पुत्रशोकसे दुःखितहो दिति बड़े ऊंचे स्वरसे विलाप करनेलगी तिसको देखकर मुनियों में श्रेष्ठ कश्यपजी यह शुभ वचन बोले कि २३ हे महाभागे ! रोदन न करो तुम्हारा कल्याण हो तुम्हारे ऐसे लोग शोच नहीं करते जो लोग सत्त्ववान् होते हैं वे लोभ मोहसे बाहर रहते हैं २४ हे देवि ! संसार में किसके पुत्र व किसके बान्धव लोग हे प्रिये ! सुनो किसीका किसी के साथ कुछभी सम्बन्ध नहीं है २५ तुम सबजनी दक्षकी कन्याहो व सहोदर भगिनियां हो नाम केवल तुम लोगों के और २ हैं व तुम सबोंके भरण पोषण और कामना पूर्ण करनेवाले भर्त्ता हमहैं २६ हे वरानने ! सो पोषण पालन व रक्षाकरनेके लिये अबभी उद्यतहैं तुम्हें पुत्रोंसे क्या प्रयोजनहै फिर उन दुष्ट अजितेन्द्रिय अशान्तात्माओंने क्यों देवताओंसे वैर किया २७ व हे महाभागे ! हे शुभे ! तुम्हारे सब पुत्र सत्य धर्म्म से रहित थे उस दोषसे व तुम्हारे भी दोष से २८ वासुदेव भगवान् जी ने मारडाला व देवताओंसे भी बहुतोंको मरवाडाला इससे अब शोक न करो क्योंकि शोक करनेसे सत्य और मोक्ष का नाश होता है २९ शोक पुण्यको नाश करडालता है व पुण्य के नाशसे प्राणी आप नष्टहोजाता है इससे हे वरानने ! विघ्न रूप इस शोकको छोड़ आनन्दित होओ ३० ॥

चौ० आतमदोषसों सबदानवगण । मृतकभये सबजायएकक्षण ॥
देव निमित्तमात्र तिन केरे । निजकर्म्महिं सों मरे घनेरे ३१
इमिगुनिमनमहँकरहुविचारा । शान्त चित्त लहुसुख संसारा ॥
वृथा मरहु जनिकरिबहुशोका । सुमिरिवचनममहोहुअशोका ॥
इमि दुःखिनी प्रियासोंभाषी । महायोगनिधिमुनिगुणलाषी ॥
भयहु विषादनिवृत्त तुरन्ता । महाबुद्धि पूजित भगवन्ता ३२

इति श्री पाद्मे महापुराणे भूमिखण्डे भाषानुवादे
देवासुरे दिति विलापोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

# सातवां अध्याय ॥

दो० सतयें महँ कश्यप कह्यो दिति सों आत्मज्ञान ॥
पञ्चभूत की कहि कथा समुझायहु विज्ञान १

कश्यपजी के ऐसे वचन सुन दिति बोली कि हे नाथ! तुमने सब सत्य कहा इस में कुछ भी सन्देह नहींहै परन्तु तुम्हारी भक्तिको छोड़ अब हमको सपत्नी अर्थात् सौतिकी भक्तिकरनी पड़ेगी १ हे सत्तम! अबतक हम अपने अभिमान में बैठीरहती थीं सो अब मानभङ्ग होनेके दुःखसे महादुःखपाकर अपने प्राणछोड़देंगी २ यह सुन कश्यप जी बोले कि सुनो जैसे तुम्हारी शान्तिहोगी वैसा हम तुमसे कहेंगे हे शुभे! कोई किसीका पुत्र नहीं होता न कोई किसी की माता न कोई किसी का पिता होता है ३ न कोई किसी का भ्राता न बान्धव न कोई किसी का स्वजन यह संसार का सम्बन्ध केवल माया मोह से युक्त है ४ हे देवि! आपही अपना पिताहै व आपही माता आपही बान्धव व आपही स्वजनवर्ग व आपही सनातन धर्म्म ५ हेदेवि! आचारकरने से मनुष्य सुख को प्राप्तहोता है व अनाचार व पापके करनेसे नष्टताको प्राप्तहोताहै ६ हे देवि! ऐसेही अनाचारादि करने से मनुष्य क्रूरयोनिको प्राप्तहोजाता है इसमें कुछभी संशयनहींहै व सत्यहीन महापापकर्म्म से मोहितहो ७ मनुष्य औरोंसे शत्रुता करने लगता है व मनुष्यों से महावैर करनेलगताहै फिर जिन के सङ्ग वह वैरकरताहै उसके सङ्ग वे भी वैरकरनेलगते हैं इसमें सन्देहनहीं है ८ हे भामिनि! हे प्रिये! हे शुभे! जोलोक में सब के सङ्ग मैत्री करताहै उसके सब मित्रहीहोतेहैं कहीं कोई उसका वैरीही नहीं दिखाईदेता ९ हे देवि! जैसे किसान लोग जिसखेतमें जैसा बीजबोते हैं वैसाहीफलभी पाते हैं १० सो तुमने व तुम्हारे पुत्रोंने साधु देवगणों केसाथ निष्प्रयोजन वैर किया उसकर्म्म का यह फल हुआ उसे भोगो जो जैसा करता है वह वैसा भोगताही है ११ हे महाभागे! तुम्हारे सब पुत्र तप व शांति सेहीनथे उसीपापसे सब बड़ेभारी इन्द्रपदवी के अधिकार परसे गिरपड़े १२ ऐसा जानकर शान्तहोओ दुःखछोड़ो

सुखको प्राप्तहोओ कौन किसकेपुत्र व कौन किसके मित्र कौन किस के स्वजन बांधव १३ सब जीव अपने कर्म्म के अनुसारसे फलको भोगते हैं हे देवि ! तत्त्वज्ञानसे पण्डित महात्मा लोग पराये अर्थ चिन्ता व्यर्थ नहीं करते इस में सन्देह नहीं है यह शरीर केवल पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश पांचतत्त्वों से बनाहै पर महाजर्ज्ज-रहै इसमें कुछ शक्ति नहीं है १४ । १५ सुखकी आशासे आत्मा इसमें आजाताहै वही इसकामित्रहै जिसका आत्मा नाम है वह महापुण्यहै व सब जगह जाताहै सब को देखताहै १६ सब प्रकारसे सिद्ध है व सर्व्वात्मा सत्त्वगुणी व सर्व्वसिद्धिदायकहै इसप्रकार सर्व्वमय अकेला माया रहित आत्मा भ्रमण कियाकरता है १७ व निर्जन में भ्रमतेहुये उसआत्मा ने मूर्त्तिमान् चार ब्राह्मणोत्तम देखे जोकि बड़े तेजस्वी उत्तम मूर्त्तियोंको धारणकिये थे १८ उनमें पांचवां पवन सम्मत करने के लिये आमिला तब ज्ञानको सङ्गलेकर आत्मा वहां आया १९ उनसबों को एकत्रदेख महात्मा आत्मा ज्ञानसे बोला कि हे ज्ञान ! देखो ये पांचोपरस्पर सम्मत करतेहैं २० जाकर तुम इनसे पूछो कि तुम लोग कौनहो जब तिसमहात्मा आत्माका ऐसा श्रेष्ठ वचन सुना २१ तो ज्ञान आत्मासे बोला कि इन पांचो से पूँछने से आपका क्या प्रयोजनहै हे देव ! निश्चयकरके यह बात हमसे कहो तुम सदा शुद्धहौ २२ आत्मा बोला कि इनके पूँछने से यह प्रयोजन है कि देखो ये पांच महाभाग रूपवान् और मनस्वी हैं परस्पर मिलापकरने के लिये आये हैं वैरकरने के लिये नहीं आये इससे हे ज्ञान ! तुम हमारे दूत बनकर उनके पासजाओ क्योंकि तुम दूतताके कर्म्म में बड़े कुशल हो २३ । २४ यह सुन ज्ञान बोला कि हे आत्माजी ! हम सत्य कहते हैं हमारा वाक्य सुनो हे तात ! इनकी सङ्गति तुम कभी न करना २५ हे शुद्धात्मन् ! इस से शुभकी इच्छा करनेवाले आपका इनपांचों से कुछ प्रयोजन नहीं है हे महामतिवाले ! यह केवल आपका मोहमात्रहै जो इनके संग मैत्री कियाचाहते हो २६ यह सुन आत्माबोला कि इनलोगों की संगति को ज्ञानआप क्यों रोकते हैं हे पण्डित ! इसका कारण हमसे तुम

यथातथ्य बताओ २७ तब ज्ञान बोला कि हे तात ! इनसबों के सङ्गसे तुम बड़ेदुःखी होगे क्योंकि ये पांचो दुःखकेमूल व शोक सन्तापके करनेवालेहैं २८ तब आत्माने कहा कि अच्छा हे महाप्राज्ञ! हम तुम्हारा वचन करेंगे इनकासंग न करेंगे ऐसा कहकर आत्माध्यानके संग रहगया २९ कश्यपजी यहीकथा दितिसे कहनेलगे कि जब आत्मा व ध्यान दोनों एकत्ररहे उन पञ्चमहाभूत पृथिव्यादिकों के समीप न गये तो उन पांचोने अपनेआप आत्माका ध्यानकिया व बुद्धिको अपने समीप बुलाकर उससे उन्हों ने कहा कि तुम आत्मा के पासजावो ३० हे कल्याणि! हमलोगों के व आत्माके मध्यकी दूतता तुम करो हम पांचोतत्त्वहैं व महात्माहैं तथा सब विश्वभरके सुन्दर आधारहैं ३१ व आपसे मैत्री कियाचाहते हैं इसप्रकार महामति से कहकर फिर कहा कि हे बुद्धे! बस आपजाकर हमलोगोंका यह कार्य्यकरें यहां से जायँ ३२ तब महाबुद्धिने कहा कि बहुत अच्छा ऐसाही होगा तुमलोगोंका वचन हम करेंगी ऐसा उन सबों से कहकर वह आत्मा के समीपजाकर बोली कि ३३ हे महाभाग ! मैं बुद्धिहूँ आप के निकट दूतता करनेकेलिये आईहूँ जिनकीओर से आईहूँ उनके वचनसुनो ३४ अग्निआदि पंचमहाभूत तुम्हारेसाथ नाशरहित मैत्री किया चाहतेहैं इससे हे महाप्राज्ञ ! उनकेसंग आप मैत्री करें ध्यानको दूरसे त्यागकरदीजिये ३५ यहसुन ध्यानबोला कि हे आत्मन् ! तुम इनकासंग न करना इनके संसर्ग मात्र से बड़ादुःख होगा ३६ क्योंकि हम ज्ञान के विना कौन कर्म्मोंको करेगा यह ऐसा है तुम इसका वचन न करो हमारा वचनसुनो ३७ जैसेही आप हमको छोड़ उनकेसमीप जायँगे वैसेही वे आपको गर्भवास करावेंगे व मुझ ज्ञानसेहीन हो आप अज्ञानी होजायँगे यह निश्चयहै ३८ ज्ञान आत्माजी से ऐसा कह चुपहोगये तब आत्माजी बहुत विचारपूर्वक बुद्धिसे यह वचन बोले कि ३९ हे बुद्धे ! ज्ञान और ध्यान महात्मा हमारे सुन्दर मंत्री हैं वहांका जाना हमको उचित नहीं है हम क्याकरें ४० ऐसा सुन परमयशस्विनी बुद्धि उन पृथिव्यादिकों के पासगई व ज्ञान आत्मा दोनोंका कहाहुआ सब उन-

लोगों से उसने कहा ४१ तब वे पांचोमिलकर आप आत्माके पास गये व बोले कि हमलोग सदा आपसे मैत्री किया चाहते हैं ४२ परन्तु जिस्से कि आप शुद्धहैं हे लोकेश ! इससे हमलोग तुम्हारे पासआये हैं अब आपही अपने विचारकरके हमलोगोंको उत्तरदें ४३ यह सुन आत्माजी बोले कि तुमलोग पांचही हमारे पास मैत्री करने के लिये आयेहो अब अपने गुण प्रभावभी हमारे आगे तुम लोगकहो ४४ यह सुन उन पंचमहाभूतों में से भूमिबोली कि सर्व्व कार्य्यों का संस्थान चर्म्म मांस अस्थि इनसबोंका दृढ़ता नख लोम ४५ येसब पदार्थ शरीरमें हमारे प्रभावसे होतेहैं नासिका नाभि गुद इनकीद्वारा हमारे पदार्थोंका मल सदा निकला करता है ४६ फिर आकाशबोला किहे परब्रह्मजी!हम आकाशहैं व शरीरमें हमाराप्रभाव सुनो सब आपसे कहतेहैं ४७ बाहर वा भीतर जितने शून्यस्थानहैं वहां हम बसतेहैं व शरीरमें हमारे मन्त्री कान हैं जो कि सब कुछ सुननेके लिये वहां रहतेहैं ४८ फिर वायु बोला कि हे आत्मन्! हमारा गुण सुनो हम शरीरमें पांच स्थानों में प्राण अपान उदानादि के नामोंसे प्रसिद्ध होकर बसतेहैं व शुभ अशुभ कर्म्मों को करते हैं४९ फिर तेजबोला कि हम शरीरमें टिकेहुये सदा नाना प्रकारके पदार्थ प्राणी को दिखाया करते हैं व भीतर बाहर देखी बिनादेखी वस्तु हमारे प्रभावसे दिखाई देती है ५० फिर जल बोला कि वीर्य्य मज्जा लाल इनसबस्थानों में हम शरीरमें बसतेहैं और रक्तको पहुँचायाकरते हैं ५१ व शरीरमें हमारे मन्त्री नेत्रहैं वे हमारे द्रव्य लब्धिके साधक हैं यह अपना व्यापार हमने आपके आगेकहा५२हेप्रिये! अमृतरूप होकर जिलातेहैं यह हमारा व्यापार और कोई नहीं करता हम अपने आप करते हैं ५३ रसके स्वादु करनेवाली श्रेष्ठ जीभको मंत्री जानो फिर नासिकाबोली कि हम सुगन्धसे शरीरकी परम पुष्टि करा-ती हैं ५४ व दुर्गन्धिको छोड़ शरीर में सुगन्ध दिखाती रहतीहैं व बुद्धिके साथ युक्तहो स्वामी के कार्य्य के लिये इस शरीर में निश्चल होकर सदा टिकी रहती हैं जो दोप्रकार का सुगन्धहै वह हमारा गुण जानो ५५।५६ फिर दोनों कान बोले कि हम दोनों जने कार्य्य

अकार्य्यके लिये शुभ वा अशुभ लोगोंके कहेहुये वचन सत्य असत्य प्रिय अप्रिय सुना करते हैं ५७ शब्द हम लोगोंका गुणहै सो जब बुद्धि उस शब्दसे हम लोगोंको भरती है तो उसी शब्दसे अपना व्यापार करते हैं ५८ फिर त्वचा बोली कि पांच प्रकारका पवन इसशरीर में सदा भरा रहताहै ५९ उन पांचोंकी चेष्टा बाहर भीतर हम सदा जानती हैं शीत ऊष्ण घाम वर्षा वायु का लगना ६० अंगोंमें श्लेष्मा आदिका लग जाना हम सब स्पर्शमात्र से जानलेती हैं व स्पर्शही हमारा गुणहै यह सत्य कहती हैं ६१ इसप्रकार हमने अपना सब व्यापार आपसे कहा फिर नेत्रबोले कि हे सत्तम! संसारमें जितने उत्तम वा नष्टरूपहैं ६२ उनको जब बुद्धि प्रेरणा करती है तभी हमलोग देखते हैं यों नहीं हमलोगभी शरीरमें बसते हैं व रूप हम दोनोंका गुणहै ६३ हे महामतिवाले! इस प्रकार शरीरके मध्य में हम लोगों का व्यापारहै फिर जिह्वाबोली कि हे तात! बुद्धियुक्तहोनेसे हम सब रसों का बिचारकरती हैं ६४ क्षार खट्टा रसहीन व स्वादुयुक्त इन सबको बिचारती हैं बस इसी व्यापारसेयुक्त होकर नित्य मुखमें बसी रहती हैं ६५ व सब इन्द्रियों की नायिका केवल एकबुद्धिही है हे प्रिये! इस प्रकार पांचोइन्द्रियोंने आकर आत्मासे कहा ६६ सब इन्द्रियां अपना २ कर्म्म वार २ सदा आकर आत्मा से कहती हैं तब बुद्धिभी वहां आकर उन महामतिवाले आत्म जीसे बोली ६७ कि जब प्राणी विना हमारे के होजाता है तो तुरन्त नष्टहोजाता है इससे हे महामते! हममें टिककर आप वर्त्ताव करें ६८ इसके पीछे कर्म्मआकर आत्माजी से यह वचन बोला कि हे महाप्राज्ञ! मैं कर्म्म हूं तुम्हारे पास आयाहूं ६९ इससे तुमको जहां हम प्रेरणाकरें तुम वहीं जाओ इसप्रकार सबोंकी वार्त्ता सुन आत्मा उनसबोंसे बोले ७० कि सर्वसाधारण तुम पांचों एकत्र होकर क्यों नहीं कार्य्यकरलेते हमारीमित्रताकी इच्छा क्यों करते हो ७१ हमारे मिलने की इच्छा करने का कारण तुम लोगहमसे बताओ कि ठीक २ तुम लोगोंने क्या विचारा है यह सुन वे पांचो एकत्रहोकर बोले कि हम लोगोंके संगके प्रसङ्ग से अपने २ बलके अनुसार प्रक्षेपण करतेहैं तो एक पिण्ड होजाता

है ७२ उस पिंड में जब आपभी आकर बसते हैं तब आपके प्रसा-
दसे हमलोग भी उसमें अच्छे प्रकार ठहरसक्ते हैं ७३ इसीकारण
से नित्य आपकी मैत्रीचाहते हैं यह सुन आत्माजी फिर बोले कि हे
महाभाग्यवालो ! ऐसाही हो हम आपलोगों का प्रियकरेंगे ७४ व
प्रीति के कारण तुमलोगों की मैत्री करेंगे हे महाभागो ! यद्यपि हम
को महात्मा ज्ञान शंकताहै ७५ तथापि हम अपने ध्यानसे तिनका
संग करते हैं व उन पांचों से मोहित होके राग द्वेषादिकों से युक्त हो
७६ पञ्चतत्त्वों से मिलकर वह प्रभु आत्मा शरीरत्वको प्राप्तहोगया व
जब विष्ठा मूत्रसे पूरित गर्भ में प्रविष्टहुआ ७७ तब उन्हीं सबोंके
संग उस दुर्गति में आनपड़ा व अङ्ग से व्याकुल होकर उन पांचों
में मिलगया व सबों से कहनेलगा ७८ कि हे २ सब पंचात्मको !
हमारे वचन को सुनो आपलोगोंके संगके प्रभाव से हम महादुःखसे
मोहितहोकर इस महाभयरूप चीकने व घोरस्थान में आकर पतित
हुये ७९ यह सुन एक में मिलेहुये वे पांच महाभूत बोले ॥

चौ० महाराज तबलगयहँबसिये । जबलग गर्भपूर्ति ह्वै लसिये ॥
पीछे तब निष्क्रमण यहांते । होइहि संशय करत कहांते ॥
आप हमनके अरु सब केरे । हैं स्वामी तनु बसत सुनेरे ॥
राज्यकरहु सुख भोगक आपू । ह्वैहहु सत्य न मृषा अलापू ॥
तिनके सुनि इमिवचन अमाये । आत्मादुःखितभो अकुलाये ॥
चलनचह्योतहँसोंअतिव्याकुल।भयहुपत्लायनपरजिमिबातुल ८०।८२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेदेवासुरशरीर
कथनंनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

## आठवां अध्याय ॥

दो० कह अठयें महँ आत्मके गर्भवाससुख दुःख ॥
जिन्हें विचारत अजहुँ नर पावत सिगरे सुक्ख १

कश्यपजी दितिसे बोले कि आत्माजी दुःखसे आक्रांत व सर्व्वा-
ङ्गोंमें पीड़ायुक्तहो वे धर्म्मात्मा गर्भवास में व्याकुलहो प्रतिदिन चि-
न्ता करनेलगे १ क्योंकि गर्भ में नीचेको मुखकिये मोहजाल से

बँधेहुये आधि व्याधियोंसे व्याकुल मूर्च्छितहो हाहाकार करते थे २ कि जब बड़े २ दुःखों से आत्माजी पीड़ितहुये तो ज्ञानसे बोले कि हे महाप्राज्ञ! तुम्हारा वचन हमने उससमय नहीं किया ३ व ध्यान नेभी हमको रोंका था परन्तु हम आकर इस मोहके सङ्कटमें पतितही होगये अब हे महाप्राज्ञ! इस महादारुण गर्भवाससे हमारीरक्षा कीजिये ४ तब ज्ञान बोला कि हे आत्माजी! हमने आपको रोंका परन्तु आपने हमारा कहा न माना इन महाक्रूर पञ्चात्मक पृथिव्यादिकोंने गर्भके सङ्कट में आपको गिरादिया ५ अब इससमय तुम ध्यान के समीप जाओ उससे तुम सुख पावोगे व गर्भवास से तुम्हारी मुक्ति होजायगी इसमें सन्देह नहीं है ६ जब आत्माने ज्ञानके ऐसे वचन सुने तो ज्ञानकी तत्त्वता जानकर फिर ध्यानको बुलाकर कहा कि तुम हमारा वचन सुनो ७ हे ध्यान! अब हम तुम्हारे शरण हैं नित्य हमारी रक्षाकरो तब ध्यानने कहा कि हे महाप्राज्ञ! बहुत अच्छा ऐसाही करेंगे हमारे समीप आओ ८ इस वचन के सुनतेही आत्मा ध्यानके पास गये व ध्यानके साथ मोह रहितहो गर्भ में बसनेलगे ९ जब आत्मा ध्यानको प्राप्तहुये तब उनको गर्भ से उत्पन्नभय भूलगया अब ध्यानके साथ होजाने से आत्मा मोहरहित होगये १० व नित्य अपने सुखकी चिन्तना करनेलगे कि बस जैसे यहां से बाहरहोंगे हम यह अपना शरीर छोड़देंगे ११ इसप्रकार गर्भवास में प्राप्त वह प्रभु नित्य चिन्तना किया करताहै कि कब यहांसे निकलें व कब इस शरीर को छोड़ें ऐसा विचारते २ जब प्रजापति का नियमित प्रसूति होनेका काल प्राप्तहोताहै १२ तब बलवान् वायु व प्राणगर्भको चलायमान करता है उससमय योनि चौबीस अंगुलकी फैली होजाती है १३ व गर्भ भी चौबीसही अंगुल का उससमय होताहै इससे बाहर आने में दोनोंको पीड़ा होती है इससे सम्पीड्यमान होने के कारण गर्भ मूर्च्छितहो १४ ज्ञान व ध्यानके सङ्ग पृथ्वीपर गिरपड़ताहै प्राजापत्य दिव्यवायु से अलग होजाता है १५ भूमिके स्पर्शही मात्र से ज्ञान और ध्यान भूलजाते हैं संसार बन्धसे संदिग्ध

आत्मा प्रियता से स्थित होता है १६ फिर नानाप्रकारके गुण व दोषोंसे युक्तहो व महामोहसे भी युक्त होके प्रतिदिन माताके स्तन पानादिककी इच्छा करने लगताहै १७ इस प्रकार आत्माको पृथिव्यादि पंचमहाभूतों के संग पुष्ट होते हुये देखकर पापकारी सब इन्द्रियां उसको विषयोंका भोगकराने लगती हैं १८ बान्धवों के मोह से व भार्यादिकों के भी अतिमोहसे हे देवि ! प्रतिदिन वह आत्मा आकुल व्याकुल होता है १९ इस प्रकार महामोह से जलता हुआ आत्मा मोहजालमें ऐसा बँधजाताहै जैसे कहारके जालसे मछली बँधजाती है २० बस आत्मा ऐसा बँधजाताहै कि किसी प्रकार अपने को इस जाल से छुड़ायही नहीं सक्ता क्योंकि मोहके बड़े दृढ़ जालों के बन्धनों से आत्मा व पृथिव्यादि पांच महाभूत सब बँध जातेहैं इस प्रकार सर्व्वत्र व्यापक इस प्रपञ्च से आत्मा व्यापित होजाता है व राग द्वेषादिकों से हतहोकर ज्ञान विज्ञानसे भ्रष्ट होजाताहै २१ । २२ फिर काम क्रोध से पीड़ितहो प्रकृति व कर्म्म से ऐसा बँधजाताहै कि महामूढ़ होजाताहै २३ सूतजी बोले कि जब काम क्रोध के वशीभूतहो यह आत्मा ऐसा मूढ़ होजाताहै तो तृष्णा लोभ रागादि सबों से व्यापित होजाताहै २४ यह हमारी भार्य्या यह पुत्र यह मित्र व यह गृह ऐसा कहताहुआ संसारके जालमें महा मोहसे बन्धित होजाताहै २५ व पुत्रशोक आदिक नानाप्रकार के दुःखोंसे तिससमयमें व्याकुलहोजाताहै बुढ़ापा व आधि व्याधियोंसे होते २ ग्रसित होजाताहै २६ इसप्रकार दारुण दुःख मोहोंसे सन्तप्त आत्मा अभिमान व मानभङ्गादि नानाप्रकारके दुःखों से भलीभांति खण्डितहोताहै २७ हे देवि ! वृद्धताके कारण चलने फिरनेकी शक्ति न रहनेसे अत्यन्त पीड़ित होताहै व वृद्धता में और भी सब पदार्थों की चिन्तासे हाहाकार किया करताहै २८ रात्रिमें स्वप्नोंको देखताहै व दिनमें बनाय चैतन्यतासे रहितहोजाताहै हे देवि ! इसप्रकार अंगोंकी विकलतासे युक्तरहताहै २९ फिर कभी संसारमें घूमतेहुये एकनग्न निःशंक बन्धुहीन अत्यन्त शांत और प्रसन्न विरागीको देखकर वह आत्मा बोलताहै कि आप कौनहैं जो नग्नरूप से घूमते और मित्रों

से लज्जित नहीं होते ३० । ३१ जहां कि सब लोग वृद्ध स्त्रियां माता व अन्य स्त्रियां विद्यमानहैं इनसबोंके मध्य में आप नग्न नहीं डरते हैं ३२ यह सुन वह वीतराग बोला कि यहां कौन नङ्गा दिखाई देताहै हम तो कभी नङ्गे नहीं रहते हमको तो उसीके नग्न होनेमें सन्देह है जो वस्त्रादि धारणकिये रहताहै ३३ इससे हमतो कभी नहीं नग्न रहते आपही हमको नग्न दिखाई देते हैं जो कि इन्द्रियों के अर्थों के वशीभूतहैं व मर्य्यादासे रहित होगये हैं ३४ यह सुन आत्मा बोला कि हे सुव्रत ! हे महाप्राज्ञ ! पुरुषकी कौनसी मर्य्यादा है हम से तुम कहो सो यों नहीं यदि निश्चित होकर जानतेहो तो विस्तार पूर्व्वक कहो ३५ तब महाप्राज्ञ महामति वीतरागजी बोले कि म-र्य्यादा वह है कि चित्त जिसे स्वस्थहो भजे व सुख दुःख से सदा अलग रहे ३६ व सब भावों से चित्त आर्द्र बनारहै व सबभावोंको त्यागे किसी में लीन न हो अब लज्जा बताते हैं जिसमें मन अ-त्यन्त न प्रवेशकरे ३७ व वह गुप्तस्थानमेंभी कुकर्म्म करनेपर उसमें पैठजाती है व चित्तको पश्चात्ताप करनेसे लीन करलेती है वही ल-ज्जा कहातीहै ३८ सो लज्जा किसकी करे संसारमें दूसरा तो कोई है नहीं एक वही दिव्यपुरुष रहता है वह किसीको मारता है नहीं है ३९ अब लोग कहते हैं जिनको तुमनेही कहाथा जैसे कुम्हार चाकपर मिट्टीका पिण्ड स्थापित करताहै ४० व फिर दंड से उसको घुमाकर व सूत्रसे काट२कर नानाप्रकारके भेदकरताहै जिनसे सहस्रों प्रकार के पात्र अपनी मति व इच्छा से बनाताहै ४१ ऐसेही विधाता इस संसार में नानाप्रकार के रूप बनाताहै व फिर वे कालपाकर जिस किसी हेतुसे नष्ट होजाते हैं ४२ जो सदा बने रहते हैं वे सनातन लोक कहाते हैं व लज्जा उनकी करनी चाहिये जो वहां विद्यमान न हों ४३ आकाश वायु तेज पृथ्वी व जल बस इन्हीं पांचों को लोक कहते हैं सो ये सर्व्वत्र स्थित रहते हैं ४४ प्राणिमात्र के प्रत्येक अङ्गमें ये पांचों स्थित रहते हैं तो ये सब एकही हैं फिर लज्जा किसकी करे ४५ अब स्त्रियोंका रूप बताते हैं हे तात ! इससमय चित्तलगाकर सुनिये जैसे जलभरे हुये सहस्रों घड़ों में एकही च-

न्द्रमा पृथक् दिखाई देताहै वैसेही आप अकेले सब स्त्रियों में व पुरुषों में विराजमान हैं व मोहसे बँधे हुये अनेक जन्तुओं में वर्त्तमान रहते हैं ४६ । ४७ ऐसेही सब स्थावरों में व जङ्गमों में भी सदा आपही रहते हैं व पापरूप योनिके होनेसे जो एक मायामात्र है ४८ व दोकुच और नितम्बों के होनेसे जो कि अवस्था के कारण बड़े ऊँचे होआते हैं वास्तवमें त्वचा व मांसकी अधिक वृद्धि होजाने से वे बनजाते हैं इसमें सन्देह नहीं है ४९ सो उनको देख विधाताने सब लोगोंके गिराने के लिये एकमोहरूप दिखाया है बस जिसको तुम ने कहा था वह नारी नहीं है ५० केवल लीलामात्रके लिये विधाताने बनादिया है नहीं तो जैसे स्त्री वैसे पुरुष जीव सबमें विद्यमान है ५१ जो कुचों और योनिसे रहितहों वे सदैव जीवन्मुक्त हैं व नर पुरुष कहाता है नारी प्रकृति कहाती है ५२ बस उसी के सङ्ग क्रीड़ा किया करताहै मुक्त कभी नहींहोता सो आपही प्रकृतिसंयुक्तहोकर सब पुरुषों में दिखाईदेते हैं ५३ फिर कहो कौन किसकी लज्जा करे ऐसा जानकर सुखको प्राप्त होरहिये अब हम वृद्धा स्त्री सदा वृद्धा बताते हैं ५४ वे नहीं हैं जिनकी त्वचा बनायजर्ज्जर होजाती है व केश बनाय श्वेत होजाते हैं व सब अंगोंपरका चमड़ा सिकुर जाताहै ५५ व बलसे हीन दीन और बलिसे व्याप्त होजाती हैं ऐसी को वृद्ध नारी कहने लगते हैं पर वह वास्तवमें वृद्धानहीं कहीजाती अब हम वृद्धास्त्री के लक्षण कहते हैं सुनो जो ज्ञान से नित्य बढ़तीहुई जीवके पास जाकर उसी में मिलकर स्थित होती है ५६।५७ व सुमति उसका नामहै बस वृद्धा स्त्री उसका नामहै वह नारी पुरुषलोगोंमें सदा टिकीरहती है ५८ बस उसीकी लज्जा करनीचाहिये और भी तुमसे कहते हैं जोकि तुमने कहाथा कि माता यहां विद्यमानहै सो हम माता बताते हैं ५९ जो प्राणियों के सब अंगों में सदैव चेतनायुक्तरहै व परमउत्कृष्ट ज्ञानको देवे उसको प्रज्ञा कहते हैं ६० बस प्राणियों के पालन करनेके लिये यही प्रज्ञामाता है व सब लोगोंके पोषण करने तथा हितकरने के लिये स्थित रहती है ६१ व जो सुमति नाम कहाहै वहभी माताहै व जो संसारमें आनेके लिये द्वाररूप नित्य बहुतसी माता दिखाईदेतीहैं

ये सब तो बड़े दुःखों के दिखानेवालीहैं बस माताका भी रूप तुमसे हमनेकहा अब और क्याकहें ६२। ६३ यह सुन फिर आत्माबोला कि आप कौन हैं जो आकर हमारे सन्तापके नाशकहुये अब अपना स्वरूप विस्तारसे हमसे अपने आप कहो ६४ यह सुन वीतराग बोला कि जिससे निराश सब कामना होकर निवृत्त होजावें और दुष्टभाव से ये कर्म जिसको न देखें और प्रकार नहीं ६५ आशा जिसके पास कभी न आवे क्रोध लोभ और मोह जिसके भयसे नाशहोजावें ६६ ऐसा वीतराग मैंहूं तुम्हारा कल्याणहो विवेक हमारा भाई है तब आत्मा बोला कि यह विवेकनाम तुम्हारा भाई कैसाहै ६७ तिस अपने भाई के लक्षण आपकहें तब वीतराग बोला तिसका लक्षण व रूप हम अपने आप तुम्हारे आगे न कहेंगे ६८ हे महाभाग ! हम अपने भाई को बुलाते हैं यह कह बोले कि हे हमारे भाई विवेक ! हमारे वचनसुनो ६९ हे महाभाग ! हे महामते ! हमारेस्नेह से यहां आओ कश्यपजी दितिसे बोले कि वीतरागका वचन सुन क्षमा व शान्तिनाम अपनी स्त्रियोंसमेत विवेक वहां आया ७० जो कि सर्व्वदर्शी सर्व्वगामी सर्व्वत्रव्यापी व सर्व्वतत्त्व परायण है व जो सब सन्देहोंका पूरा वैरी व ज्ञानके ऊपर वत्सल है ७१ जिस महात्माकी धारणा व धी दो कन्याहैं जिसके ज्येष्ठपुत्रका योगनामहै व मोक्ष जिसका महागुरुहै ७२ व आप निर्म्मल अहंकाररहित निराश परिग्रहहीन सब समय में प्रसन्नात्मा सुख दुःखादि द्वन्द्वों से रहित महामति ७३ विवेक वहां इन गुणों से विभूषित आगया जिसके मंत्री महात्मा महामतिवाले धर्म्म व सत्यहैं ७४ व क्षमा शान्तिसे भी समेतही आया व वीतरागसे बोला कि तुम्हारे बुलायेहुये हमआये ७५ इससे हे भाई ! तुम हमारे आगे सब कारणकहो जिसलिये हमको तुमने यहां बुलाया है ७६ तब वीतराग बोला कि हे भाई ! महापाशों से बँधेहुये ये आगे आत्मा खड़े हैं ये मोह के बाण संसारके बन्धनों से बँधगये हैं ७७ हम सब संसारके व्यापक स्वामी ये आत्माहैं पंचमहाभूतों के वशमें पड़गये हैं व ज्ञान ध्यान को छोड़दियाहै ७८ आप तो तत्त्वोंके जानने में बड़े पण्डितहैं इससे इनसे पूँछें वीतरागके वचन सुन विवेक

यह वचन बोला कि ७९ हे देव आत्माजी ! हे विश्वके उत्पन्न करा-नेवाले ! आप सुखसे तो हैं संसार में आकर आपने क्या २ सुख व भोगकिया ८० यह सुन आत्माजी बोले कि हे महाप्राज्ञ ! ज्ञानसे हीनहोकर हमने इसगर्भवासमें सदैव दारुण असह्य महादुःख भोग किये ८१ अहो ज्ञान से भ्रष्ट होकर हम इस संसारमें अनेकप्रकारसे आये व बाल्यावस्था में हमने नानाप्रकारके करने न करने के योग्य कर्म्म किये ८२ फिर युवावस्था में क्रीड़ा की अनेक स्त्रियों के संग भोग किया फिर वृद्धताको प्राप्त होकर पुत्रादिकों के बहुत शोकों से सन्तप्तहुये ८३ व भार्य्यादिकों के वियोगों से रात्रि दिन बराबर जलतेरहे ऐसे अन्य सम्बन्धियों के अनेकदुःखों से प्रतिदिन सन्तप्त रहे ८४ हे महाप्राज्ञ ! दिनरात्रि कहीं न सुखपाया ऐसे दुःखों से पीड़ितहैं हे महामतिवाले ! अब हम क्याकरें ८५ वह उपाय हम से कहो जिससे सुखपावें इस संसारजाल समूहसे हमको छुड़ाओ हम बड़ेभारी बंधनों में बँधगये हैं ८६ तब विवेक बोला कि हे ज-गन्नाथ ! आप तो शुद्ध हैं सुख दुःखादि द्वन्द्वोंसे रहित व अपाप हैं अब सुखदेनेवाले इन महात्मा वीतरागको प्राप्त हों ८७ जिन्हें आ-पने नग्न आचारसे हीन और निःसंशय देखा था ये सुखके दिखला-नेवाले और सब संताप नाश करनेहारे हैं ८८ विवेक के ऐसे वचन सुन शुद्धात्मा आत्माजी फिर वीतरागके समीप गये व उनसे दीनहो-कर बोले कि हमारा वचन सुनो ८९ जिससे हम सुखपावें वह मार्ग्ग हमको दिखाओ यह सुन वीतरागने कहा हे महाप्राज्ञ ! अच्छा आप का वचन करेंगे ९० अब फिर आप विवेकके पासजायँ क्योंकि आप ने सुखकी वार्ता की है सुखमार्ग्गके बतानेवाले तुमको यही होंगे ९१ पुण्य वीतराग के भेजेहुये प्रभु आत्मा वहांगये व उन महात्मा शुद्धस-त्तम विवेक से बोले ९२ कि हमको सुख दिखाओ वीतराग ने तुम्हारे पास भेजाहै व आपके शरणमें आये हैं इससे इस संसार दारुण से हमारी रक्षाकरो ९३ तब विवेक बोला कि हे महाप्राज्ञ ! ज्ञान के पास जाओ वह आपसे सब कहेगा उसके कहने से आत्माजी वहांगये जहां ज्ञान स्थितथा ९४ जाकर कहा भो महातेजवाले व सब भावों के

दिखानेवाले ज्ञान ! हम तुम्हारे शरणमें आये हैं हमको सुखमार्ग्ग दिखाओ ९५ तब ज्ञानबोला कि हे लोकेश! मैं तो आपका सेवकहूँ हे सुव्रत! आप मुझको नहीं जानते मैंने व ध्यानने बार २ आपको रोंका था ९६ हाय इन पंचमहाभूतों के संगसे आप महाआपदाको प्राप्त हुये हे महाप्राज्ञ! अब आप ध्यान के पासजायँ वह आपको सुखदेगा ९७ ज्ञानके भेजने से आत्मा जाकर ध्यान के पास संस्थितहुये व बोले कि हे ध्यान! तुम हमको अत्यन्त सिद्ध सुखका मार्ग्ग दिखाओ ९८ हम आपके शरणहैं हमारी आप रक्षाकरें इसप्रकार आत्माका कहाहुआ वचन जब ध्यान ने सुना ९९ तब वह हर्षित होकर उन आत्माजी से बोला कि हे तात! सब कर्म्मों में आप हमें न छोड़ें जो कर्म करने लगें ध्यान करके विचारलें १०० सो तुम वीतराग व विवेक तीनों हम ध्यानको कभी न छोड़ो व ध्यानयुक्त होकर तुम आत्माको देखो १०१ व आत्मामें स्थिरहोके आतंकरहित व विकल्पना से रहित होजाओगे ॥ चौपाई ॥

जिमिनिवातथिरदीपकजोती। थिरह्वै कज्जलउगिलतहोती ॥
तिमिसब दोषधोय महराजा। लहिहहु पदनिर्व्वाणसुसाजा ॥
निराहार एकान्त विराजी। अमिताशनकरिगुणगतभ्राजी॥
शब्दहीन निर्द्वन्द्वाचलहू। थिरआसनकरिसब सुखलहहू ॥
आत्माकहँआत्मामें ध्यावहु। सुस्थिरमतिकरि अतिहर्षावहु ॥
पैहहु परमधाम थिर होई। विष्णु परमपद जो नहिं गोई १०२।१०५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखंडेभाषानुवादेऽध्यात्मवर्णनेऽष्टमोऽध्यायः८

## नवां अध्याय ॥

दो० नवयें महँ समझाय मुनि दितिहि प्रबोध्योनीक ॥
जासों सुस्थिर ह्वै बहुरि नहिं प्रलपी ह्वै ठीक १

कश्यपजी दितिसे बोले कि जब ध्यानादिकोंने आत्माको इस प्रकारसे समझाया तो उन बुद्धिमान् ने उन पञ्चमहाभूतों का सङ्ग छोड़ना चाहा १ वे सब प्रार्थनाही करतेरहे परन्तु उनके हेतुओंको देखकर हँसकर फिर उन्होंने शरीरकी ओर देखाही नहीं २ क्योंकि

जब एकही साथ बढ़ेहुये देह व प्राणहीका सदाके लिये कोई सम्बंध नहीं है तो धन पुत्र स्त्री के साथ किस हेतुसे सम्बन्ध होसक्ताहै ३ ऐसा जानकर हे सुप्रिये ! इस व्याकुलताको छोड़ो शान्तचित्त होओ यह आत्मा परब्रह्महै व यही सनातनहै ४ यही आत्मा अपने रूप से दैत्यों और देवों के देहों में टिकाहै व यही ब्रह्मा है यही रुद्रहै यही सनातन श्रीविष्णु है ५ यही आत्मा सब प्राणियों को उत्पन्न करताहै व यही सबोंको पालताहै व यही धर्मरूपी होकर सब का संहारकरता है क्योंकि धर्मरूपी श्रीजनार्दन भगवान् हैं ६ उन्हीं जनार्दनजी ने देवताओं को उत्पन्नकिया है व उन्हीं ने दानवोंको भी हे प्रिये ! परन्तु देवलोग धर्म्मयुक्त हैं व तुम्हारे पुत्र दानवलोग ध-र्म्महीन हैं ७ व धर्म्म श्रीविष्णुका अंगहै इसी से सब देवलोग धर्म्मका पालन करते हैं हे देवि ! इस से सदा धर्म्मही की चिन्तना व धर्म्मही का पालन जोकरै ८ तिसके ऊपर धर्म्मात्मा विष्णुभगवान् सदैव प्र-सन्न रहते हैं धर्म्म सत्य तप से देवता वर्त्तमान रहते हैं ९ बस जिससे वे लोग सदा धर्म्मकापालन करते हैं इससे विष्णु उनके ऊपर प्रसन्न रहते हैं विष्णुका शरीर धर्म्म है व सत्य उनका हृदयहै १० इससे जो कोई इनदोनों का पालन करता है उसके ऊपर श्रीविष्णु प्रसन्न होते हैं इसीप्रकार जो धर्म्म व सत्य को दूषित करता है वह पाप को पालन करता है ११ उसके ऊपर विष्णु कोप करतेहैं व उसकानाश करदेते हैं क्योंकि वे अतिवीर्य्यवान् हैं सो तप व सत्य में टिककर वैष्णवों ने धर्म्म का पालन किया है १२ इससे उनके ऊपर धर्मा-त्मा विष्णुजी भी प्रसन्नहैं इसलिये उनकी रक्षा करते हैं व तुम्हारे पुत्र दैत्य व दनुके पुत्र दानव सिंहिका के सुत सैंहिकेय ये सब १३ सदा अधर्म्म व पापही करते रहते हैं इससे उनका चित्त पापमय होगया था इसीसे वासुदेव चक्रपाणिजीने समर में उनको मारडा-ला १४ व जो आत्मा है जिसे हमने तुम्हारे आगे प्रथम कहा है वे विष्णुही हैं क्योंकि धर्मात्मा सर्व्वपालक हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है १५ दैत्यों के शरीर में स्थित उन आत्मा श्रीविष्णुने देख लिया कि ये सब सदा अधर्म्मही करतेहैं व दानव भी अधर्म्मही

करते हैं यह देख महामति श्रीविष्णु क्रुद्धहोगये १६ बस भीतर तो थेही बाहर भी होकर व बाहर भीतर दोनों ओर से जोर करके तुम्हारे पुत्रों को उन्हों ने मारडाला हे देवि ! जिनसे उत्पन्न हुये थे उन्हीं से नाशभी होगये १७ इससे अब तुम उन अपने पुत्रों का शोक न करो हमारा वचन सुनो जो पाप करताहै वही मरताहै १८ इससे मोहको छोड़ सदा धर्म्मका आश्रयणकरो यह सुन दितिने कहा हे महाभाग ! बहुत अच्छा हम तुम्हाराही वचन करेंगी १९ ॥

चौ० कश्यपसोंइमिकहिदितिरानी । दुःखितह्वैअतिशयअकुलानी ॥
समझावा मुनि बहुत प्रकारा । दुखतजि थिरह्वै रहीं अपारा २०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेदितिसंबोधनंनाम नवमोऽध्यायः ९ ॥

## दशवां अध्याय ॥

दो० दशयें महँ कश्यप बहुरि दैत्य सिखावन दीन ॥
जासों सबगे तपकरन तजि अधर्म्म मन खीन १

इतनी कथा सुन शौनकादि ऋषिलोग सूतजी से बोले कि हे महामतिवाले ! जब युद्ध से हारे व मारे से बचे उन हिरण्यकशिपु आदि दैत्य दानवों ने क्या उपाय किया १ उन लोगों का उत्तम वृत्तान्त हमसे विस्तार से कहिये हमलोग तुमसे इससमय सुनाचाहते हैं २ सूतजी बोले कि जब संग्राम से सब भागे तो बलहीन तो होही गये थे इस से अहङ्कारहीनहो अतिदुःखित सब दैत्य दानव अपने पिता कश्यपमुनिके पासगये ३ व भक्तिसे कश्यपजी के प्रणामकर सब बोले कि हे द्विजसत्तम ! आपही के वीर्य्य से देवताओं की व हमलोग दानवों की उत्पत्ति है उनमें हम सब दानव बलवीर्य्यपराक्रम से युक्त हुये ४ । ५ व उपाय नानाप्रकार के जानते हैं सुन्दर धीरहैं उद्यमसे युक्तहैं हे तात ! हमलोग बहुतहैं और देवता थोड़े हैं ६ इससे देवता कैसे जीतजातेहैं और बल और तेज से युक्त हम लोग संग्रामसे भग्न होजाते हैं इसका क्या कारणहै ७ हे महामते ! एक २ दैत्यके किरोड़ २ हाथियों का बल है ऐसा देवताओं में बल

नहीं है ८ परन्तु हे तात ! संग्राम में बहुधा जीत देवताओंकीही होतीहुई दिखाई देती है इस विषय में हमलोगोंको बड़ा सन्देह है आप निवारण करें ९ कश्यपजी बोले कि हे पुत्रो ! जयका कारण सबजने सुनो जिससे समर में बहुधा देवतालोगही विजय पाते हैं १० पिता बीजका बोनेवाला होताहै व माता खेतरूप होतीहै इससे धारण पालन पोषण करनेमें सदा लगी रहती है ११ परन्तु और कुछ पुत्र के साथ न माताही करसक्ती है न पिताही कुछ करसक्ता है इस विषय में कर्म्मकी प्रधानता है हमारी इसप्रकार आश्रित बुद्धिहै १२ पाप व पुण्यसे उत्पन्न होनेके कारण कर्म्मका सम्बन्ध दोप्रकार काहै व जो कर्म्म सत्यके आश्रयणासे कियाजाताहै वह उत्तम धर्म्म होताहै १३ व जो तप व ध्यानके साथ कियाजाताहै वह करनेवाले को तारता है व पापकर्म्म सदा पतितही होनेके लिये होताहै इस में कुछभी सन्देह नहींहै १४ हे पुत्रो ! बाल्यावस्था से अपने परि-वार व जातिके लोगोंके संग जो पुरुष पापही करता है उस पुण्य हीन पुरुष का सब बल विफल होजाता है कभी समयपर काम नहीं आता १५ जैसे पर्व्वतों के दुर्गम स्थानोंपर बड़ेपुष्ट व ऊँचेवृक्ष होते हैं पर पवनके वेगसे जड़सहित उखड़ पड़तेहैं १६ ऐसेही सत्यकर्म्म से हीन पुरुष यमराज के स्थानको जातेहैं इससे हे पुत्रो ! साधारण रीतिसे सब पुरुषोंका बल धर्म्महीहै १७ जिससे प्राणी यहांभी तरताहै व परलोक में भी जाकर उसीके बलसे तरता है सो तुमलोगों ने उस सत्यधर्म को छोड़दिया १८ व हे पुत्रो ! सत्यरहित अधर्म्मही करने लगे इसीसे सत्यधर्म और तपसे भ्रष्टहोगये व दुःखसागर में आ-पड़े १९ व देवतालोग सत्यसे सम्पन्न कल्याण संयुक्त व तप शांति दमसे युक्त सब पुण्य कर्म्म करने में तत्पर व पापरहितहैं २० बस जहां सत्य धर्म्म तप पुण्यहै व जहां श्रीविष्णु हैं वहां विजय सदा दिखाई देताहै २१ उन देवताओं के सहायक सदा भगवान् वासु-देव रहते हैं इसीसे व सत्यधर्मसे युक्त होनेके कारण सदा देवगणही जीततेहैं २२ व हे पुत्रो ! तुम लोगोंको सहायक बल व पौरुष से क्या होसक्ता है क्योंकि तप व सत्यसे तो रहितहो २३ धर्म्मवादी

लोगोंने यही निर्णय कररक्खा है कि जिसके सहायक विष्णुहैं व तपकाभी बलहै बस उसीकी जीति सदा होतीहै २४ तुमलोग धर्म से विहीन व तपस्या व सत्यसे रहितहो भला बल से कहीं कोई इन्द्र-पद पाताहै २५ विना तप किये विना धर्म्म यज्ञकिये हे पुत्रो ! बल अहङ्कारादि गुणोंसे कहीं इन्द्रपद मिलता है २६ इन्द्रपद पाकर भी तिससे भ्रष्टहोजाते हैं इससे पुत्रो तुमलोग विरोधरहित ज्ञान और ध्यानसे युक्तहो जाकर तपकरो व केशव भगवान्के संग वैरभी कभी न करो २७। २८ जब ऐसे पुण्यात्मा तुमलोग होगे तो धन्य होजा-वोगे और परमसिद्धि को पाओगे इसमें कुछ भी संशय नहीं है २९ जब महात्मा कश्यपजीने दैत्योंसे ऐसा कहा तो उनका वाक्य सुन-कर महापराक्रमी दानवलोग ३० शीघ्रतायुक्त उठकर बड़ीभक्तिसे कश्यपजी के प्रणाम करके सबोंने आपस में सम्मत किया ३१ फिर राजा हिरण्यकशिपु उन सब दानवोंसे बोला कि बस अब हम सब कार्य्योंका साधक तपही करेंगे ३२ फिर हिरण्याक्ष बोला कि हम भी अतिदारुण तप करेंगे व तपोबल से तीनोंलोक लीललेंगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं है ३३ संग्राममें विष्णु व उस पापी इन्द्रको जीत-कर व सब देवताओंको मारकर इन्द्रपदलेलेंगे ३४ तब बलिनामदैत्य बोले कि हे दानवेश्वरो ! तुम लोगोंको ऐसा करना योग्य नहीं है क्योंकि विष्णुके साथ जो वैरहै वह नाशका कारणही है ३५ दान धर्म पुण्य तप व यज्ञोंसे उन हृषीकेशजीकी आराधनाकरके मनुष्य सुखको प्राप्त होतेहैं ३६ तब हिरण्यकशिपु बोला कि हम ऐसा कभी न करेंगे कि हरिकी आराधनाकरें क्योंकि अपना भाव छोड़-कर इसमें शत्रुकी सेवा करनी पड़ेगी ३७ शत्रुकी सेवा मरणसे भी अधिक होतीहै यह पण्डितों ने कहाहै विष्णुकी सेवा न हमीं करेंगे न औरही कोई दानव करेंगे ३८ तब अपने महात्मा पितामह से बलि फिर बोले कि धर्मशास्त्रों में तत्त्वज्ञानी मुनियों ने जो देखा है ३९ उसमें यह लिखाहै कि शत्रुको जैसे बने साधलेना चाहिये यही राजनीतियुक्त मतहै अपने को हीन जान व शत्रुको बलीजा-नकर ४० उसके पास जाकर अपने जीतने के समयतक वहींरहना

चाहिये जैसे जब दीपक जलता है तो सब अन्धकार सदैव जाकर अपने शत्रुदीपक की छायामें होरहता है ४१ व दीपक के तेल का शत्रु बत्ती है पर जब बत्ती जलाईजाती है तो तेल अपनी वैरिणी बत्तीमें होकर उसे अतिवेगसे प्रकाशितकरके अन्तमें उसे जलायही देताहै ४२ ऐसेही शत्रुको स्नेहकरके प्रथम प्रसन्न करनाचाहिये फिर अपना कार्य्य होजानेपर अलग होजाना चाहिये इस से देवताओं के संग स्नेह करनेके लिये चलनाचाहिये व वहां पहुँचकर धर्म्मभाव दिखाना चाहिये ४३ व यही मन्त्र कश्यपमुनिने भी पहले कहाहै कि देवदेव विष्णुसे वैरभाव छोड़कर तपकरो बस जैसा उन्होंने सम्मत दियाहै हे राजेन्द्र ! उसी के अनुसार अपना कार्य्य करो बलिके ऐसे वचन सुन प्रतापी दैत्यराज बोला कि हे पौत्र ! हम ऐसा अपना मानभङ्ग कभी न करेंगे ४५ तब और सब हिरण्यकशिपु के बान्धव तिस नीतिमें पण्डित से बोले कि बलिने जो पुण्य कहीहै वह देवताओं को प्रियकरनेवाली है ४६ इन्द्र के मानकरने हारी और दानवोंको भयङ्कर है हां उत्तमतप हम सबभी करेंगे ४७ बस तपसे देवताओंको जीतकर आप ऐन्द्रपद लेलेंगे ऐसा सम्मतकर व बलिका निरादर करके सबके सब ४८ ॥

चौ० करिहरिसङ्ग वैर मनमाहीं । चलेसकल जिय संशय नाहीं ॥
गिरिकानन दुर्गमथल देखी । करनलगे दारुणतप पेखी ४९
कामक्रोध मद लोभ विहाई । निश्चल ह्वै दानव समुदाई ॥
ह्वै यकमनतप विविध प्रकारा । कीनभलीविधिसहित विचारा ५०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेतपश्चर्यावर्णनन्नाम दशमोऽध्यायः १० ॥

## ग्यारहवां अध्याय ॥

दो० ग्यारहयें महँ दम्पती सोमशर्म्म सुमनाउ ॥
न्यासाहारी सुतचरित दयिता पतिहिसुनाउ १

ऋषिलोग इतनी कथा सुनकर फिर सूतजी से बोले कि हे सूत ! दैत्यों व दानवों के संग्राम की कथा हमलोगोंसे सर्व्वज्ञ आपने कही

अब इस समय महात्मा सुव्रतका चरित सुनने की इच्छा है १ वह महाबुद्धिमान् किसके पुत्रहुये व किसके गोत्रमें उत्पन्नहुये तिस विप्रने क्या तपस्या की और कैसे हरिजीको आराधन किया २ तब सूतजी बोले कि हे विप्रो! बुद्धिके प्रभावसे पहले कथा जैसे सुनीहै तैसे सुव्रत महात्मा को चरित कहेंगे ३ यह चरित पावन दिव्य कल्याणदायक व वैष्णव है सो तुम्हारे आगे विष्णुभगवान् के प्रसादसे सब कहते हैं ४ हे महाभाग्यवालो! पूर्व्व के कल्प में पापनाशन सुन्दर क्षेत्र नर्म्मदानदी के पुण्य तटपर वामन संज्ञक तीर्थ में ५ कौशिक के कुलमें एक द्विजों में उत्तम सोमशर्म्मा नाम ब्राह्मण हुआ वह पुत्र से हीनहोने से बहुत दुःखोंसे युक्त रहता था ६ व दारिद्र्यके दुःखसे सदैव पीड़ित रहता इससे पुत्र व धनकेपाने का उपाय दिनरात्रि सोचाकरताथा ७ एक समय सुमनानाम उसकी पतिव्रता स्त्रीने अपने पतिको चिन्तायुक्त नीचेको मुखकिये लज्जितकिया ८ व अपने कान्त की ओर देखकर वह तपस्विनी उससे बोली कि असंख्य दुःखों के जालोंसे तुम्हाराचित्त व्याकुल दिखाई देता है ९ सो हे महामति वाले! इस मोहसे तुम बनाय मूढ़से होगये हो अब चिन्ता छोड़दो हमसे अपना दुःखकहो व स्वस्थ होकर सुखीहोओ १० क्योंकि शरीर सुखाने केलिये चिन्ताके समान और कोई दुःख नहीं है जो चिन्ता छोड़कर वर्तमान होता है वह पुरुष सुखपाय हर्षित होताहै ११ हे विप्र! चिन्ता का कारण हमारे आगे कहो अपनीप्रिया का वचन सुन सोमशर्म्माजी उससे बोले कि १२ हे भद्रे! जो तुमने चिन्तन किया सो हम अपनी चिन्ता व दुःखका सब कारण कहेंगे उसेसुन विचारपूर्व्वक धारणकरो १३ हे सुव्रते! नहीं जानते कि किसपापसे हम धनसे व पुत्रसे विहीन हैं बस यही हमारे दुःखका कारण है १४ यह सुन सुमना बोली कि सुनिये हम सब सन्देहनाशन वचन कहती हैं वह उपदेश का स्वरूप है व सब विज्ञानों को दिखाता है १५ लोभ पापका बीजहै व मोह उसका मूलहै असत्य उसका स्कन्ध व मायारूप बहुतसी शाखाओं से फैलाहै १६ दम्भ व कुटिलता उस वृक्षके पत्रहैं और कुबुद्धि से वह सदा फूला रहता

है मिथ्याबोलना उसका सुगन्ध है व अज्ञान फलहै १७ छल पाखण्ड चोरी ईर्षा क्रूर और कूट स्वभाव के सब पापी ये सब उस मोहवृ-क्षके पक्षी हैं वे मायाकी शाखाओं पर बैठे रहते हैं १८ अज्ञान जानों उसका अच्छा फलहै व उसफलका रस अधर्म्म है तृष्णारूप जलसे उसकीवृद्धि होती है हे प्रिय! उसकी अश्रद्धा द्रवहै १९ व अधर्म्म उसका सुन्दर रस है वह कहतेही मधुरसा विदित होताहै लोभवृक्ष भीहै २० इस वृक्षकी छायामें जाकर जो मनुष्य प्रसन्न होताहै और दिनदिन में तिसके अच्छेफलों को खाता है २१ वह फलोंके रस अधर्म्म से पालित सन्तुष्ट मनुष्य नरकको जाताहै २२ इससे पुरुष को चाहिये कि उसके फलोंको देखकर लोभ न करे व धन पुत्रकल-त्रादिकोंकी भी चिन्ता जो विद्वान्हो कभी न करे क्योंकि इनकी चि-न्ता करना मूर्खोंका मार्ग्गहै मूर्खही इस बातकी चिन्ता सदाकिया करता है कि हमारे धन कैसेहो २३ । २४ व सुन्दरी भार्य्या कैसे मिले व पुत्र कैसेपावें इसप्रकार विमोहितहो रात्रिदिन चिन्ता किया करता है २५ कभी कभी उसी चिन्ता में क्षणमात्र बड़ा सुखभी देखने लगता है फिर जैसेही चैतन्य हुआ महादुःखसे पी-ड़ितहोनेलगताहै २६ इससे द्विज! चिन्ता व मोहको छोड़कर वर्त्त-मानहो हे महामतिवाले! इससंसारमें किसीकेसाथ कुछ सम्बन्ध नहीं है २७ मित्र बान्धव पुत्र पिता माता नौकर व भार्य्या ये सब अपने सम्बन्ध से होतेहैं २८ यह सुन सोमशर्म्मा बोले कि हे भद्रे! वह सम्बन्ध कैसाहै जिससे सब धन पुत्रादि बान्धव उत्पन्न होतेहैं हम से विस्तार सहित कहो २९ तब सुमना बोली कि कोई २ तो ऋण सम्बन्धी होतेहैं व कोई अपनी धरोहर के हरलेजानेके सम्बन्धी तेहैं कोई लाभके देनेवाले व कोई उदासीन न प्रिय न शत्रु ३० स चारभेदोंसे पुत्र मित्र व स्त्रियां होती हैं भार्य्या पिता माता नौ-र स्वजन बान्धव ३१ ये सब भूतलपर अपने २ सम्बन्ध से त्पन्न होतेहैं जो कोई किसी का न्यास अर्थात् धरोहर पृथ्वीपर लेताहै ३२ न्यासका स्वामी गुणवान् रूपवान् पुत्रहोकर हरने लेके घरमें निस्सन्देह उत्पन्न होताहै ३३ व फिर न्यासापहारी

को दारुणदुःख देकर चलाजाताहै इसप्रकार न्यासका स्वामी न्यास हरनेवालेका सुपुत्रहोकर ३४ गुणवान् रूपवान् सबलक्षणयुक्त होता है व पुत्र होकर प्रति दिन उसको बड़ीभक्ति दिखाता है ३५ प्रिय व मधुर वचन कहकर अतिस्नेह दिखाता व रोगीहोता है फिर अपनाधन उससे ले व उत्तम प्रीति उत्पन्न कराके ३६ जैसे पूर्व्वजन्म में उसने अपना धन बड़े कष्ट से इकट्ठा करके उस के यहां न्यास स्थापित कियाथा व द्रव्यके उपार्ज्जन करने में प्राणनाशन दारुण दुःख उसे हुआ था ३७ वैसाही दुःख सुहृद्भावसे पुत्रहोकर वहअपने बड़े गुणों से उसे देता है थोड़ेही दिनों में मरजाता है ३८ इसप्रकारका दुःख बार २ देकर चलाजाताहै जब वह पुत्र २ कर के रोदन करने लगता है ३९ तब वह हँसता है कि कौन किस का सुपुत्र व कौन किसका कुपुत्र इसपापी ने हमारा उपकार करनेवाला न्यास हरलिया था ४० द्रव्य हरलेनेसे पूर्व्वसमयमें हमको महादुःख दियाथा जिस असह्य दुःखको हम किसी प्रकार नहीं सहसके थे महाव्याकुल होगये थे प्राण तो नहींगये थे ४१ सो वैसाही दुःख इसे देकर अपना उत्तम धन इससे लेकर हम चलदिये हम इसके कैसे पुत्रठहरे ४२ न यह पूर्व्वजन्ममें हमारा पिताथा न इसीजन्ममें है इस दुष्टात्माको हमने पिशाचता दी है ४३ ऐसा कहकर बार बार उसको जन्मलेकर ऐसाही करके चलाजाताहै व फिर इसीमार्ग्गहोकर दारुण दुःख बार २ देकर आताजाता रहता है ४४ हे कान्त ! इस प्रकार न्यासके सम्बन्ध से पुत्र होते हैं व संसार में नानाप्रकार के दुःख जहां तहां दिखाते हैं ४५ ॥

चौ० ऋणसम्बन्धीतनयबखानत । कान्त तुम्हारे सम्मुख भानत ।
सुनहुचित्तदै बहुरि विचारहु । तब तामहँ निजमन निरधारहु ४६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेसुव्रतोपाख्याने एकादशोऽध्यायः ११ ॥

# बारहवां अध्याय ॥

दो० बरहें महँ सुमना बहुरि सोमशर्म्म सों पुत्र ॥
ऋणसम्बन्धी आदि कह सुखद न यहां अमुत्र १
तैसे औरहु धर्म दम शौच नियम व्रत दान ॥
क्षमा दया मति शांति मुख की है कथा बखान २

सुमना अपने पति सोमशर्म्मा से बोली कि तुम्हारे आगे ऋण सम्बन्धी पुत्र कहती हैं जो जिसका ऋण लेकर मरजाताहै १ धनी पुत्र होकर वा भाई होकर वा पिता होकर वा स्त्री होकर ऊपर से तो वह मित्ररूप से दिखाई देता है पर अन्तःकरण से सदैव दुष्टही रहताहै २ वह गुण तो देखता नहीं सदा क्रूरस्वभाव व निष्ठुर अपनी आकृति बनाये रहताहै व स्वजनों से सदा निष्ठुरही वचन बोलता है ३ आप नित्य मीठे २ पदार्थ भोजन करता व और भी नानाप्रकार के नित्यही भोग भोगताहै जुवा खेलनेसे सदा निरत रहताहै व चोरी करने की सदा इच्छा रखता है ४ घर से द्रव्य जबरदस्ती लेजाता है व रोकने पर क्रोध करता है पिता व माताकी निन्दा प्रतिदिन किया करताहै ५ व ऐसे वचन कहताहै जिससे वे भागजायँ वा डरजायँ व महानिष्ठुर वचन सदा बकता बरबराता रहता है इस रीति से घर से सब धन खींच लेता है व सुखसे रहता है ६ प्रथम जातकर्म्मादिकों में भी बाल्यावस्थामें बहुतधन खर्च करादेताहै फिर विवाह यज्ञोपवीतादि नानाप्रकारके भेदोंसे अनेकबार द्रव्य उड़वाताहै इस तरह द्रव्य क्षीणकराता है व आप लेकर कुछ उसमें मिलाता नहीं घर खेत आदि सब हमारेही हैं और किसीके नहीं इसमें संदेह नहीं है ऐसा सदा कहा करताहै ७। ८ व पिता माताको प्रतिदिन मारता पीटता रहता है सोभी सुन्दर दण्डोंसे मूसलोंसे ताड़ित करताहै व ऐसे २ दारुणकर्म्म करताहै ९ कि पिता माताके मरजाने पर भी कुछ स्नेह नहीं प्रकट करता बरन महानिष्ठुरताको धारण करताहै सब कामोंमें सदा निष्ठुर व स्नेहरहितही रहता इसमें कुछभी संशय नहीं मानता १० पिताके लिये श्राद्ध दानादिकभी कुछ कभी क-

रताही नहीं ऐसे ऋणपुत्र पृथ्वीपर होते हैं ११ हे द्विजश्रेष्ठ ! अब तुम्हारे आगे शत्रु पुत्रका लक्षण कहती हैं वह बाल्यावस्थाही में सदा शत्रुता करता है १२ पिता माताको खेलताही हुआ मारता पीटता है और मारकर हँसताहुआ चलदेताहै फिर आकर मारकर भागजाताहै १३ व फिर पिता माताके पास डरताहुआ आताहै नित्यक्रोधयुक्तही बना रहताहै बारंबार मातापिताकी निन्दाही करताहै १४ इस रीतिसे सदा वैरही के कर्म्म किया करता है बार २ पिताको मारकर फिर माताकोमारताहै १५ व पूर्वके वैरके प्रभावसे इस प्रकार वह दुष्टात्मा फिर २ आय २ मारता पीटतारहताहै अब उस पुत्रका लक्षण बताती हैं जिससे मातापिताको कुछ प्रिय लाभ होताहै १६ ऐसा पुत्र उत्पन्न होतेही बाल्यावस्थाहीमें लाड़प्यार व खेलकूदहीसे अपने पिता माता का प्रिय करताहै फिर जब कुछ अधिक अवस्था होती है समझने बूझने लगताहै तो निरन्तर मातापिता का प्रियही करताहै १७ भक्ति से उनको नित्य सन्तुष्ट रखताहै व शारीरक सेवा उन दोनोंकी अपने हाथों से करताहै सदा स्नेह करने मधुर वचन बोलने प्रियवाणी कहने से उनकी आज्ञामें रहता व प्रसन्न कराता १८ जब उनको मृतक जानताहै तो स्नेहके मारे बार २ रोदन करता है व सब श्राद्ध कर्म्मादिक बड़ी भक्ति से करता पिण्डदानादि क्रियाओं में अधिक धन लगाताहै १९ उनकी क्रिया करनेके समय उनका स्मरणकरके बार २ दुःखित होताहै व उनके परलोक की यात्राके लिये नाना प्रकारके दान देता है व स्नेहसे माता पिताको तीनों ऋणों से छुड़ाता है २० हे कान्त ! हे महाप्राज्ञ ! जिस पुत्रसे कुछ लाभ होताहै वह इस रीतिसे देता है इस में संदेह नहीं है व पुत्र होकर सदा ऐसेही कार्य्य करताहै २१ हे प्रिय ! अब तुम्हारे आगे उदासीन पुत्रका सम्बन्ध व उसके लक्षण कहती हैं यह पुत्र सदा उदासीनतासे रहता है २२ न कभी कुछ माता पिता को दे न कुछ उनसे ले न कभी उन के लिये क्रोधकरे न सन्तुष्टही रहे न कभी माता पिताको छोड़ कहीं जाय न रहनेपर कुछ उनकी सेवाहीकरे न कुछ वैरभावही रक्खे २३ हे द्विजसत्तम ! तुम्हारे आगे हमने सब कहा पुत्रोंकी गति ऐसी है

जैसे पुत्र वैसीही भार्य्या वैसेही पिता माता व बान्धव लोग २४ वैसेही भृत्यवर्ग्ग व वैसेही घोड़े बैल आदि पशुगण हाथी भैंसे दासी दास सब ऋणसम्बन्धी होते हैं २५ सो हमारा तुम्हारा कुछ किसीने न पूर्व्व जन्ममें लियाहै न हम दोनों जनों नेही किसी का कुछ लियाहै न हम दोनोंने किसीके पास कुछ न्यास धराहै २६ न किसी का कुछ धरायाही है कि किसी का धन कुछ लिया हो व हे कान्त ! हम दोनोंने पूर्व्व जन्ममें वैरभी किसीके संग नहीं किया २७ न किसीका परित्यागही किया न और किसीका ग्रहणही किया ऐसा जानकर शान्त हूजिये व अनर्थकी इस चिंताको छोड़िये २८ किस के पुत्र प्यारी स्त्री और किसके स्वजन बांधव हैं उस जन्ममें तुमने न किसी का कुछ हरलिया न किसी को कुछ दिया २९ हे स्वामिन् ! फिर तुम्हारे धन कैसे आवे इस विषयमें विस्मय न करो हे द्विजो-त्तम ! जो धन मिलनेको होताहै वह मिलताही है ३० विना यत्नही किये हाथमें आजाताहै व जो जानेवाला धन होताहै मनुष्य उसकी रक्षा बड़ेही यत्नसे करे पर वह चलाही जाताहै रक्षा करनेवाले के पास नहीं ठहरता ॥

चौ० इमिमनजानि शान्तचितहोऊ । त्यागहुचिंतासंशयदोऊ ॥
काके सुत काकी प्रियनारी । काके स्वजन बन्धु हितकारी ॥
काहू कर कोई कहुँ नाहीं । समझि लेहु अपने मनमाहीं ॥
यह सम्बन्धरहित संसारा । देखिलेहु करि बहुत विचारा ॥
माया मोह मूढ़ नर सारे । पाप करत नित हाथ पसारे ॥
यह ममगृह यहपुत्रहमारो । यहभार्य्याइमिवचनउचारो ३१।३४
अन्तलखात कांतसंसारी । यह बन्धन हमकहतविचारी ॥
जनियामहँ चितदैदुखलेहू । ममवच गुनिये सहितसनेहू ॥
इमिसमझायहुप्राणपियारी । सोमशर्म्म कहँ बहुत विचारी ॥
तबबोल्यहु सोभाग्यापाहीं । वचनपरमप्रियज्यहिसमनाहीं ॥

जब इस प्रकार उनकी स्त्रीने समझाया तो ब्राह्मणोंमें उत्तम सो-मशर्म्मा ज्ञानवादिनी हितकरनेवाली अपनी भार्य्यासे फिर बोले कि हे भद्रे ! तुमने सत्य कहा व जो कहा सब सन्देहोंका नाशनेवालाही

रताही नहीं ऐसे ऋणपुत्र पृथ्वीपर होते हैं ११ हे द्विजश्रेष्ठ! अब तुम्हारे आगे शत्रु पुत्रका लक्षण कहती हैं वह बाल्यावस्थाही में सदा शत्रुता करता है १२ पिता माताको खेलताही हुआ मारता पीटता है और मारकर हँसताहुआ चलदेताहै फिर आकर मारकर भागजाताहै १३ व फिर पिता माताके पास डरताहुआ आताहै नित्यक्रोधयुक्तही बना रहताहै वारंवार मातापिताकी निन्दाही करताहै १४ इस रीतिसे सदा वैरही के कर्म्म किया करता है बार २ पिताको मारकर फिर माताकोमारताहै १५ व पूर्व्वके वैरके प्रभावसे इस प्रकार वह दुष्टात्मा फिर २ आय २ मारता पीटतारहताहै अब उस पुत्रका लक्षण बताती हैं जिससे मातापिताको कुछ प्रिय लाभ होताहै १६ ऐसा पुत्र उत्पन्न होतेही बाल्यावस्थाहीमें लाड़प्यार व खेलकूदहीसे अपने पिता माता का प्रिय करताहै फिर जब कुछ अधिक अवस्था होती है समझने बूझने लगताहै तो निरन्तर मातापिता का प्रियही करताहै १७ भक्ति से उनको नित्य सन्तुष्ट रखताहै व शारीरक सेवा उन दोनोंकी अपने हाथों से करताहै सदा स्नेह करने मधुर वचन बोलने प्रियवाणी कहने से उनकी आज्ञामें रहता व प्रसन्न कराता १८ जब उनको मृतक जानताहै तो स्नेहके मारे बार २ रोदन करता है व सब श्राद्ध कर्म्मादिक बड़ी भक्ति से करता पिण्डदानादि क्रियाओं में अधिक धन लगाताहै १९ उनकी क्रिया करनेके समय उनका स्मरणकरके बार २ दुःखित होताहै व उनके परलोक की यात्राके लिये नाना प्रकारके दान देता है व स्नेहसे माता पिताको तीनों ऋणों से छुड़ाता है २० हे कान्त! हे महाप्राज्ञ! जिस पुत्रसे कुछ लाभ होताहै वह इस रीतिसे देता है इस में संदेह नहीं है व पुत्र होकर सदा ऐसेही कार्य्य करताहै २१ हे प्रिय! अब तुम्हारे आगे उदासीन पुत्रका सम्बन्ध व उसके लक्षण कहती हैं यह पुत्र सदा उदासीनतासे रहता है २२ न कभी कुछ माता पिता को दे न कुछ उनसे ले न कभी उन के लिये क्रोधकरे न सन्तुष्टही रहे न कभी माता पिताको छोड़ कहीं जाय न रहनेपर कुछ उनकी सेवाहीकरे न कुछ वैरभावही रक्खे २३ हे द्विजसत्तम! तुम्हारे आगे हमने सब कहा पुत्रोंकी गति ऐसी है

जैसे पुत्र वैसीही भार्य्या वैसेही पिता माता व बान्धव लोग २४ वैसेही भृत्यवर्ग व वैसेही घोड़े बैल आदि पशुगण हाथी भैंसे दासी दास सब ऋणसम्बन्धी होते हैं २५ सो हमारा तुम्हारा कुछ किसीने न पूर्व्व जन्ममें लियाहै न हम दोनों जनों नेही किसी का कुछ लियाहै न हम दोनोंने किसीके पास कुछ न्यास धराहै २६ न किसी का कुछ धरायाही है कि किसी का धन कुछ लिया हो व हे कान्त ! हम दोनोंने पूर्व्व जन्ममें वैरभी किसीके संग नहीं किया २७ न किसीका परित्यागही किया न और किसीका ग्रहणही किया ऐसा जानकर शान्त हूजिये व अनर्थकी इस चिंताको छोड़िये २८ किस के पुत्र प्यारी स्त्री और किसके स्वजन बांधव हैं उस जन्ममें तुमने न किसी का कुछ हरलिया न किसी को कुछ दिया २९ हे स्वामिन्! फिर तुम्हारे धन कैसे आवे इस विषयमें विस्मय न करो हे द्विजो-त्तम! जो धन मिलनेको होताहै वह मिलताही है ३० विना यत्नही किये हाथमें आजाताहै व जो जानेवाला धन होताहै मनुष्य उसकी रक्षा बड़ेही यत्नसे करे पर वह चलाही जाताहै रक्षा करनेवाले के पास नहीं ठहरता ॥

चौ० इमिमनजानि शान्तचितहोऊ । त्यागहुचिंतासंशयदोऊ ॥
काके सुत काकी प्रियनारी । काके स्वजन बन्धु हितकारी ॥
काहू कर कोई कहुँ नाहीं । समझि लेहु अपने मनमाहीं ॥
यह सम्बन्धरहित संसारा । देखिलेहु करि बहुत विचारा ॥
माया मोह मूढ़ नर सारे । पाप करत नित हाथ पसारे ॥
यह ममगृह यहपुत्रहमारो । यहभार्य्याइमिवचनउचारो ३१।३४
अन्तलखात कांतसंसारी । यह बन्धन हमकहतविचारी ॥
जनियासहँ चितदैदुखलेहू । ममबच गुनिये सहितसनेहू ॥
इमिसमझायहुप्राणपियारी । सोमशर्म्म कहँ बहुत विचारी ॥
तबबोलयहु सोभार्य्यापाहीं । वचनपरमप्रियजग्यहिसमनाहीं ॥

जब इस प्रकार उनकी स्त्रीने समझाया तो ब्राह्मणों में उत्तम सो-मशर्म्मा ज्ञानवादिनी हितकरनेवाली अपनी भार्य्यासे फिर बोले कि हे भद्रे ! तुमने सत्य कहा व जो कहा सब सन्देहोंका नाशनेवालाही

रताही नहीं ऐसे ऋणपुत्र पृथ्वीपर होते हैं ११ हे द्विजश्रेष्ठ! अब तुम्हारे आगे शत्रु पुत्रका लक्षण कहती हैं वह बाल्यावस्थाही में सदा शत्रुता करता है १२ पिता माताको खेलताही हुआ मारता पीटता है और मारकर हँसताहुआ चलदेताहै फिर आकर मारकर भागजाताहै १३ व फिर पिता माताके पास डरताहुआ आताहै नित्यक्रोधयुक्तही बना रहताहै बारंबार मातापिताकी निन्दाही करताहै १४ इस रीतिसे सदा वैरही के कर्म्म क्रिया करता है बार २ पिताको मारकर फिर माताकोमारताहै १५ व पूर्वके वैरके प्रभावसे इस प्रकार वह दुष्टात्मा फिर २ अ.य २ मारता पीटतारहताहै अब उस पुत्रका लक्षण बताती हैं जिससे मातापिताको कुछ प्रिय लाभ होताहै १६ ऐसा पुत्र उत्पन्न होतेही बाल्यावस्थाहीमें लाड़प्यार व खेलकूदहीसे अपने पिता माता का प्रिय करताहै फिर जब कुछ अधिक अवस्था होती है समझने बूझने लगताहै तो निरन्तर मातापिता का प्रियही करताहै १७ भक्ति से उनको नित्य सन्तुष्ट रखताहै व शारीरक सेवा उन दोनोंकी अपने हाथों से करताहै सदा स्नेह करने मधुर वचन बोलने प्रियवाणी कहने से उनकी आज्ञामें रहता व प्रसन्न कराता १८ जब उनको मृतक जानताहै तो स्नेहके मारे बार २ रोदन करता है व सब श्राद्ध कर्म्मादिक बड़ी भक्ति से करता पिण्डदानादि क्रियाओं में अधिक धन लगाताहै १९ उनकी क्रिया करनेके समय उनका स्मरणकरके बार २ दुःखित होताहै व उनके परलोक की यात्राके लिये नाना प्रकारके दान देता है व स्नेहसे माता पिताको तीनों ऋणों से छुड़ाता है २० हे कान्त! हे महाप्राज्ञ! जिस पुत्रसे कुछ लाभ होताहै वह इस रीतिसे देता है इस में संदेह नहीं है व पुत्र होकर सदा ऐसेही कार्य्य करताहै २१ हे प्रिय! अब तुम्हारे आगे उदासीन पुत्रका सम्बन्ध व उसके लक्षण कहती हैं यह पुत्र सदा उदासीनतासे रहता है २२ न कभी कुछ माता पिता को दे न कुछ उनसे ले न कभी उन के लिये क्रोधकरे न सन्तुष्टही रहे न कभी माता पिताको छोड़ कहीं जाय न रहनेपर कुछ उनकी सेवाहीकरे न कुछ वैरभावही रक्खे २३ हे द्विजसत्तम! तुम्हारे आगे हमने सब कहा पुत्रोंकी गति ऐसी है

जैसे पुत्र वैसीही भार्य्या वैसेही पिता माता व बान्धव लोग २४ वैसेही भृत्यवर्ग व वैसेही घोड़े बैल आदि पशुगण हाथी भैंसे दासी दास सब ऋणसम्बन्धी होते हैं २५ सो हमारा तुम्हारा कुछ किसीने न पूर्व्व जन्ममें लियाहै न हम दोनों जनों नेही किसी का कुछ लियाहै न हम दोनोंने किसीके पास कुछ न्यास धराहै २६ न किसी का कुछ धरायाही है कि किसी का धन कुछ लिया हो व हे कान्त ! हम दोनोंने पूर्व्व जन्ममें वैरभी किसीके संग नहीं किया २७ न किसीका परित्यागही किया न और किसीका ग्रहणाही किया ऐसा जानकर शान्त हूजिये व अनर्थकी इस चिंताको छोड़िये २८ किसके पुत्र प्यारी स्त्री और किसके स्वजन बांधव हैं उस जन्ममें तुमने न किसी का कुछ हरलिया न किसी को कुछ दिया २९ हे स्वामिन् ! फिर तुम्हारे धन कैसे आवे इस विषयमें विस्मय न करो हे द्विजोत्तम ! जो धन मिलनेको होताहै वह मिलताही है ३० विना यत्नही किये हाथमें आजाताहै व जो जानेवाला धन होताहै मनुष्य उसकी रक्षा बड़ेही यत्नसे करे पर वह चलाही जाताहै रक्षा करनेवाले के पास नहीं ठहरता ॥

चौ० इमिमनजानि शान्तचितहोऊ । त्यागहुचिंतासंशयदोऊ ॥
काके सुत काकी प्रियनारी । काके स्वजन बन्धु हितकारी ॥
काहू कर कोई कहुँ नाहीं । समझि लेहु अपने मनमाहीं ॥
यह सम्बन्धरहित संसारा । देखिलेहु करि बहुत विचारा ॥
माया मोह मूढ़ नर सारे । पाप करत नित हाथ पसारे ॥
यह ममगृह यहपुत्रहमारो । यहभार्य्याइमिवचनउचारो३१।३४
अन्तलखात कांतसंसारी । यह बन्धन हमकहतविचारी ॥
जनियामहँ चितदेहुखलेहू । ममवच गुनिये सहितसनेहू ॥
इमिसमझायहुप्राणपियारी । सोमशर्म्म कहँ बहुत विचारी ॥
तबबोल्यहु सौभाग्यपाहीं । वचनपरमप्रियज्यहिसमनाहीं ॥

जब इस प्रकार उनकी स्त्रीने समझाया तो ब्राह्मणोंमें उत्तम सोमशर्म्मा ज्ञानवादिनी हितकरनेवाली अपनी भार्य्यासे फिर बोले कि हे भद्रे ! तुमने सत्य कहा व जो कहा सब सन्देहोंका नाशनेवालाही

वचन कहा ३५ । ३६ तथापि सत्य के पण्डित साधुलोग पुत्रकी इच्छा करते हैं हे प्रिये! जैसे हमको पुत्र की चिन्ताहै वैसी धनकी नहीं है ३७ इससे जिसी किसी उपायसे पुत्र हम अवश्य उत्पन्न करेंगे यह सुन सुमना फिर बोली कि पुत्रसे लोकों को जीतता है व पुत्र कुलको तारदेताहै ३८ हे महाभाग! सत्पुत्रसे पिता माता दोनों अच्छे प्रकार जीतेही बनेरहते हैं एक गुणवान् पुत्र श्रेष्ठ होताहै व निर्गुण बहुत पुत्रों से कुछ नहीं होताहै ३९ एक वंशको तारताहै व वे सन्ताप कराते हैं पूर्वकालमेंही हमने कहाथा कि अन्य पुत्र सम्बन्धभागी होते हैं ४० पुत्र पुण्यसे मिलताहै व पुण्यही से कुल मिलताहै व पुण्यहीसे सुन्दरगर्भ मिलताहै इससे पुण्य अच्छीतरह करो ४१ जो उत्पन्नहोताहै उसकी मृत्यु अवश्य होती है व जो मृतक होताहै उसका जन्मभी अवश्यही होताहै पुण्य करनेसे सुन्दर जन्म मिलताहै व पापसंचय करने से मरताहै ४२ व हे कान्त! पुण्यके कर्म्मोंसे धनका समूह मिलताहै यह सुन सोमशर्म्माबोले कि हे प्रिये! हे भद्रे! पुण्यका आचरण हमसे कहो व जन्मकाभी वृत्तान्त कहो सुपुण्य कैसा होताहै हमसे पुण्यका लक्षणकहो तब सुमना बोली कि जैसा हमने पूर्वसमय में सुनाहै प्रथम पुण्य कहती हैं ४३ । ४४ पुरुषहो वा स्त्री हो नीति से कार्य्य करने से कीर्त्ति प्रिय पुत्र धन ये सब पुण्योंसेही मिलते हैं ४५ हे कान्त! पुण्य का लक्षण सत्य २ कहती हैं ब्रह्मचर्य्य रहनेसे सत्य बोलनेसे नित्य तप करनेसे दान देने से नियम करने से क्षमा करने से व शौचसे रहने से अपनी शक्तिभर अहिंसा करनेसे व गुरु वेद पुराण शास्त्र ईश्वर को मानने से ४६ । ४७ इन दश अङ्गों से पूर्णपुण्य मिलता है इन सबों के करने से पुण्य सम्पूर्ण होता है जैसे दशअंगों से गर्भ पूर्ण होता है ४८ जो धर्म्मात्मा मन वचन व कर्म्म तीनों प्रकारसे धर्म्म करता है धर्म्म प्रसन्नहोकर उसको पुण्यको पहुँचाताहै ४९ व वह बुद्धिमान् प्राणी जिस जिस कामको चाहता वह वह दुर्लभभी पाताहै सोमशर्मा बोले कि हे भामिनि! धर्म्मकी कैसी मूर्त्तिहै व कैसे उसके अंग होते हैं ५० हे कान्ते! प्रीतिसे कहो हमारे सुननेकी श्रद्धाहै सुमना

बोली कि हे द्विजोत्तम ! लोकमें धर्म्मकी मूर्त्ति किसने देखी है ५१ सत्यात्मा धर्म्म अदृश्यहै उसे देवता दानव किसीने नहीं देखा अत्रि के वंश में उत्पन्न अनसूयाके पुत्र ५२ दत्तात्रेयके साथ हमने एकबार धर्म्मको देखाथा धर्म्म तप बलसे वर्त्तमान उत्तम तपकरतेहुये इन्द्र सेभी अधिक रूपवान् दत्तात्रेय व दुर्व्वासा दोनों महात्माओंको हमने देखाथा ५३ । ५४ दश सहस्र वर्षतक मनकी स्थिरताकरके निराहार केवल वायु पान करतेहुये शुभदर्शन देनेवाले दोनों जनोंने काल बिताया ५५ व अच्छेप्रकार आराधना की परन्तु धर्म्मके दर्शन न हुये उतने कालतक दोनों पंचाग्नि तापते रहे व त्रिकाल स्नान करते थे ५६ । ५७ जलके मध्य में एकसमय दोनों जने स्थितथे कि इतने में उनदोनोंमें से तप से दुर्ब्बल मुनियोंमें श्रेष्ठ धर्म्मात्मा दुर्व्वासाजीने ५८ धर्म्मके ऊपर क्रोध किया हे महाभाग ! जब मुनियोंमें श्रेष्ठ दुर्व्वासाजीने क्रोध किया ५९ तो धर्म्म विप्रका रूप धारण करके वहां आये ब्रह्मचर्य्यादि सब अङ्गोंसे वे बुद्धिमान् धर्म्मजीयुक्तथे ६० जैसे कि ब्राह्मणकेरूपसे सत्यको सङ्गलियेथे व ब्रह्मचर्य्यभी विप्रका रूपधारण किये उनकेसङ्गथा व तपभी विप्रमूर्त्ति धारण कियेथा बुद्धिमान् दम भी द्विजोत्तमही की मूर्त्तिधारण कियेथे ६१ महाप्राज्ञ दान व नियमभी विप्ररूपधारीथे व अग्निहोत्र भी ब्राह्मणही का रूप बनाये था इस प्रकार सब दत्तात्रेयजी व दुर्व्वासा के समीपआये ६२ हे द्विजोत्तम ! क्षमा शान्ति लज्जा अहिंसा व अकलहता ये सब स्त्री रूप धारण करके वहां आईं ६३ बुद्धि प्रज्ञा दया श्रद्धा सत्कृति शांति व पुण्य पञ्चाग्नि साङ्गोपाङ्ग वेद ६४ ये सब रूपधारण किये धर्म्म के संग आये व पुण्यात्मा स्वभाव अग्न्याधानादि और अश्वमेधादि यज्ञ सब ६५ अपने २ रूप व सुन्दरतासमेत सब भूषणों से भूषित दिव्य माला वस्त्रधारणकिये दिव्य चन्दनादि सुगन्धित पदार्थोंका अनुलेपनकिये ६६ किरीट और कुण्डलसे युक्त सुन्दर आभरणों से भूषित दीप्तिमान् सुन्दर रूपवाले व तेज की ज्वालाओं से घिरेहुये ६७ इन सबों के संग धर्म्म परिवार समेत वहां आये जहां काल के समान क्रोधी दुर्व्वासाजीथे आकर धर्म्म जी वचन बोले ६८ कि हे

विप्र! तपसेयुक्त होके तुमने कोप क्यों किया जिससे कि क्रोध कल्याण का नाशकरता है व तपका नाशकरताहै इसमें कुछसंशयनहींहै ६९ व क्रोध सब को विनाशताहै इससे क्रोध त्यागना चाहिये हे द्विज-श्रेष्ठ! स्वस्थ होकर तपका फलभोगो ७० तब दुर्व्वासाजी बोले कि आप इन द्विजवरोंकेसाथ कौन हैं जो आये हैं व तुम्हारेसाथ अति-रूपवती वअलंकारयुक्त ये सात स्त्रियां कौन हैं ७१ हे महामतिवाले! हमारे आगे तुम विस्तारसेकहो तब धर्म्म बोले कि ये ब्राह्मणका रूप धारणकिये सब तेजसे युक्त दण्ड हाथमें लिये सुप्रसन्नचित्त कमण्डलु हाथमें लिये तुम्हारे आगे ब्रह्मचर्य्य हैं आयेहैं इनकोदेखो ७२।७३ व और इन दीप्तिमान् द्विजोत्तम को देखो जो कपिलवर्ण पीले नेत्र के हैं ये सत्यहैं हे द्विजसत्तम! ७४ व हे धर्मात्मन्! उसी प्रकारके वैश्वदेवके समान प्रकाशित इनको देखो जो तप तुम सदा किया करतेहो ७५ वे यही हैं अपने पास आये हुये इन महाभाग्यवान् को देखो व प्रसन्नवाणीवाले दीप्ति संयुक्त सब जीवोंपर दया करने वाले ७६ ये दम आये हैं जो सदैव प्राणियों का पोषण करते हैं जटाधारे कर्कश स्वभाव पिङ्गलवर्ण अतितीव्र रूप महाप्रभ ७७ पापों के नाशक खड्ग हाथमें लिये अतिशान्त सदा पुण्य करनेवाले नित्य क्रियाओं से संयुक्त ७८ ये नियमहैं हे द्विजोत्तम! तुम्हारे पास आये हैं व अनिर्मुक्त महादीप्तिमान् शुद्ध स्फटिक मणि के समान ७९ जल का कमण्डलु हाथ में लिये व दन्तधावन करमें किये द्विज ये शौचहैं तुम्हारे पासआये हैं ८० व अतिसाधु महाभाग्यवाली सत्य भूषणों से भूषित सब आभरणों से शोभित अङ्गवाली यह शुश्रूषाहै तुम्हारे निकट आई है ८१ व अतिधीर स्वभाव प्रसन्नात्मा गौररंग की हँसती हुई कमल हाथमें लिये सब कुछ सहनेवाली कमलन-यनी पद्मिनी के रूपकी ८२ दिव्य भूषणोंसे भूषित हे द्विजोत्तम! यह क्षमा प्राप्त हुई है अतिशान्त सुन्दर प्रतिष्ठावाली बहुत मङ्गलों से युक्त ८३ दिव्य रत्न धारण किये दिव्य आभरणों से भूषित हे महा-प्राज्ञ! तुम्हारे समीप शान्ति आई है ज्ञानरूपिणी ८४ बहुत सत्य से समाकुल परोपकार करने में निरत सदा मित भाषण करनेवाली

यह अकलहता तुम्हारे पास आई है ८५ प्रसन्न क्षमायुक्त सब आभरणों से भूषित कमल आसनवाली स्वरूपवती यशस्विनी श्याम वर्णवाली ८६ महाभागा यह अहिंसा है आपके पास आई है व तपाये हुये पक्के सुवर्ण के रंगवाली रक्तवस्त्रविलासिनी ८७ सुप्रसन्नमुखी सुन्दर मन्त्र जपती हुई ज्ञानभाव से समाक्रान्त पुष्प हाथमें लिये तपस्विनी ८८ मोतियों से जटित भूषणोंकी शोभासे युक्त निर्मल सुन्दर हास करनेवाली हे महाभाग ! यह श्रद्धा है आई है देखो देखो व बहुत बुद्धिसे भरीहुई व बहुत ज्ञान से युक्त सुभोगमें रूप आसक्त किये सुन्दर प्रकारसे स्थित सुन्दर मङ्गलवाली ८९ । ९० सब इष्ट ध्यानोंसे युक्त लोककी माता महायशस्विनी सब आभरणों से शोभायुक्त पीनपयोधर पश्चाद्भागवाली ९१ गौरवर्ण माला और वस्त्रों से विभूषित हे महाप्राज्ञ ! ये मेधाजी हैं आई हैं सो तो तुम्हीं में टिकी रहती हैं ९२ हंस व चन्द्रमाके समान प्रकाशित मोतियों का हार पहिने सब आभरणों से भूषित सुप्रसन्न मनस्विनी ९३ सफेद वस्त्र से युक्त कमल के समाननेत्र युक्त पुस्तक हाथमें लिये कमलपर बैठी सदैव प्रकाशित ९४ यह प्रज्ञा भाग्यवान् तुम्हारे पास आई है व लाख के रसके रंगवाली सदा प्रसन्न चित्त ९५ पीले फूलों की माला पहिने हार नूपुर धारण किये मुँदरी व कंकणसेयुक्त कानों में कुण्डल धारणकिये ९६ व सदा पीनवस्त्र से प्रकाशिततीनों लोकों के उपकार और पोषण करनेमें अद्वितीय ९७ जिसका शील सदैव रहताहै हे द्विजश्रेष्ठ ! सो दया तुम्हारे पास आई हैं ९८ व हे महाप्राज्ञ ! ये वृद्धास्त्रीका रूप धारणकिये महादेवजी की भार्य्या जो महातपस्विनी हैं आई हैं व हे द्विजश्रेष्ठ ! ये हमारी माता हैं व हे सुव्रत ! हम धर्म्म हैं ९९ यह जानकर शान्त होवो व हमारा प्रतिपालनकरो तब दुर्व्वासाजी बोले कि यदि आप धर्म्म हैं व हमारे समीप इससमय आये हैं १०० तो आने का कारण कहिये व कौन कार्य्य तुम्हारा हम करें धर्म्म बोले कि हे विप्रेन्द्र ! तुमने क्रोध क्यों किया तुम्हारा किसने अप्रिय किया १०१ हे दुर्व्वासाजी जो मानो तो इसका कारण हमसे कहो तब दुर्व्वासाजी बोले कि हे देव ! जिस

से हम क्रुद्धहुये उसका कारण सुनो १०२ हमने दम शौचादि महा-
क्लेशों से अपना शरीर शुद्धकरडाला व लाख वर्षतक हमने तप किया
१०३ पर तुम्हारे दया न आई कि आकर दर्शनदेते हे देव! इसीसे
हमने क्रोध किया व तुमको शाप देनेपर उतारू हुये १०४ यहसुन
दुर्व्वासाजीसे महामति धर्म बोले कि हे महाप्राज्ञ! जब धर्म्म नष्टहो-
जायगा तो लोक नष्ट होगा १०५ दुःखके मूल तो हमीं हैं व सबको
कष्टदेकर उसके अंगों से पापोंको निकाला करते हैं यदि कष्ट पाकर
प्राणी सत्यको नहीं छोड़ता तो पीछे फिर हम उसे सुखदेते हैं १०६
पापकरने में सुख प्रथम बहुत मिलता है व पुण्य बड़े दुःखसे मिल-
ताहै पुण्यही करते २ प्राणी अपने प्राणतक छोड़देताहै १०७ तब
हम उसे परलोकमें महासुखदेते हैं इसमें संदेह नहींहै दुर्व्वासाजी बोले
कि जब मनुष्यको बहुत सुख मिलता है तो धर्म्म को छोड़ अधर्म्मा-
दि करने लगताहै १०८ उसको कल्याण तुम प्रथमही नहीं देदेतेहो
यही बड़ाभारी अन्याय करतेहो जिस शरीर से पुण्य वा पापकरे उसी
से उसका फलभी भोगना चाहिये १०९ । ११० व जो अन्य शरीर
ने किया व उसका फल अन्य शरीरको दियागया तो यह कौन सी
न्याय की वार्त्ता ठहरी यह तो महाअन्याय विदित होताहै १११ अ-
न्य शरीर से इस जन्म में जिसने तप आदिके क्लेश सहे उसे दूसरे
जन्ममें तुमने उसका फल दिया यह हमारे मतसे कल्याण की उत्तम
वार्त्ता नहींहै ११२ जिस शरीरसे श्रमकरके पुण्यकरे उसी से उसका
फलभी भोगना चाहिये यह नहीं कि अन्यका कियाहुआ पुण्य और
शरीरभोगे ११३ सुख तो उसी में होताहै कि जब आज एक ओर
पुण्य किया दूसरी ओर आजही पुण्यफल भोगनेको मिला ११४
बस ऐसेही जिस शरीरसे पापकरे उसीसे दुःख भोगने चाहिये सो
ऐसा नहीं होता पाप यहां इस शरीर से करता है दुःख उसे परलोक
में मिलता है जहां करनेवाला शरीर होताही नहीं ११५ यह जान
कर कोई हे धर्म्म! तुम्हारी ओर देखताही नहीं जैसे महापापी चोर
लोग अपना पाप भी जिस शरीरसे करते हैं तो दुःख भी उसी से
भोगकरते हैं ११६ उनको सदा दुःखही कठोर मिलता है सुख नहीं

मिलता ऐसेही यहीं पाप पुण्य करनेवालोंको दुःख सुख क्यों नहीं देदेतेहो धर्म्म बोले कि पापीलोग जिस शरीरसे जो पाप करते हैं ११७ उसीसे तो पीड़ा भी सहते हैं व पापका फलभी उसी से भोगते हैं पण्डितों ने धर्म्मशास्त्रों में दण्ड अलबत्ता दूसरे शरीर को लिखा है ११८ जब कि इस शरीर के पातक यहां के राजादिक को नहीं विदितहोते तो दूसरे शरीरको दण्ड दियाजाता है व यही हमारी भी आज्ञाहै दुर्व्वासा फिर बोले कि हे धर्म्म! यह हम न्याय नहीं मानते ११९ इससे क्रोधयुक्त हम तुम्हारे इसअन्यायके बदलेमें तीन शाप तुम्हें देंगे धर्म्म बोले कि हे विप्र! जो बहुतही क्रुद्धहो अब शापही दियाचाहतेहो क्षमा नहीं करते तो अच्छा ऐसा शाप दीजिये जिसमें हम दासीके पुत्रहों पर शाप देकर कहींका राजा बनाना व चाण्डाल बनाना १२० । १२१ क्योंकि प्रणतकेऊपर ब्राह्मणलोग प्रसन्न हो-कर सदैव प्रसाद करतेहैं तब क्रोधयुक्त दुर्व्वासा धर्मको शाप देतेहुये बोले कि धर्म्म तुम हमारे शापसे राजा दासीपुत्र व चाण्डाल भी अपनी इच्छासे जाकर होओ १२२।१२३ ॥

चौपाई ॥

इमिदै महाशाप मुनिराया । गमन कीन मन तनिक न दाया ॥
यहि प्रसङ्गसों पूरबकाला । धर्म्महि हम देखा तनुपाला १२४
सोमशर्म्म बोले कहु प्यारी । फिर सो धर्म्म कौन तनुधारी ॥
यदि जानततुमताकर जनमू । कहहु मोहिं करिकै बहुसनमू १२५
बोली सुमना भारतवंशी । भयहु युधिष्ठिर भूप प्रशंशी ॥
दासीपुत्र विदुर भे फेरी । दुइ भे धर्म्म शाप हियहेरी १२६
जब राजाहरिश्चन्द्रहि बाड़व । विश्वामित्र कीन अति ताड़व ॥
तब भे धर्म्म बहुरि चण्डाला । तीनजन्म की कथा रसाला १२७
धर्म्महु सकलकर्म्मफलभोगा । लहि दुर्व्वासा शाप सशोगा ॥
यहशुभचरितकहातव आगे । हमहूँयथामतिअतिअनुरागे १२८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेसोमशर्माख्याने सोमशर्मसुमनासंवादेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

# तेरहवां अध्याय ॥

दो० तेरहयें महँ धर्म्म दम ब्रह्मचर्य्य दानादि ॥
सबके लक्षण हैं कहे क्षमा शांति नियमादि १

इतनी कथा सुनकर सोमशर्म्मा ने फिर पूँछा कि ब्रह्मचर्य्य का लक्षण हमसे विस्तार से कहो यदि जानतीहो तो बतावो हे भामिनि! ब्रह्मचर्य्य कैसा होताहै १ सुमना बोली जो नित्य सत्यबोले पुण्यात्माहोकर स्वच्छरहे जब अपनी स्त्री रजोदर्शन के पीछे स्नानकरके शुद्ध हो तो उसके सङ्ग भोगकरे इससमय को छोड़ स्त्रियोंके दोषोंसे वर्ज्जितरहै २ अपने कुलका सदाचार कभी न छोड़े हे द्विजोत्तम! यह गृहस्थी में टिकेहुये ३ ब्रह्मचारीका लक्षण हमने तुमसे कहा व यही गृहस्थोंका भी लक्षणहै अब यतियोंका धर्म्म कहती हैं वह हमसे सुनो ४ इन्द्रियोंके दमन करने व सत्यबोलने में सदायुक्तरहैं पाप से सदा डरतेरहैं नारीका सङ्गबराकर ध्यानधरने व ज्ञानकरने में टिके रहैं ५ यह सन्यासियों का ब्रह्मचर्य्य तुमसे हमने कहा अब तपके लक्षण कहती हैं हमसेसुनो ६ आचारसे सदारहै काम क्रोधसे वर्ज्जितरहै प्राणियों के उपकारही के लिये जो कुछ उद्यमकरै सो करै ७ यह तप का लक्षण कहा अब सत्यका कहती हैं जिसको परधन व परस्त्री देखकर उसके लेनेकी चटपटी न लगे उसका सत्यनामहै अब दानका लक्षण कहती हैं जिससे मनुष्य जीते हैं ८।९ जो अपना सुख इस लोकमें व परलोक में चाहे तो अन्नका महादानकरै १० व भूँखेको अपने आगे के ग्रास में से भी देडाले क्योंकि देने पर महापुण्य होता व अन्तमें वह अमृतपान करनेको सदैव पाताहै ११ अपने विभवके अनुसार प्रतिदिन दान करतारहै तृण शय्या मधुर वचन अत्यन्त ठण्ढी घरकी छाया १२ भूमि जल अन्न प्रिय व उत्तम वाक्य आसन व कुटिलतारहित वार्त्ता करना १३ अपने जीने के लिये नित्य जो इतने दान करताहै व देवताओं पितरोंकी पूजाकरके जो इस प्रकार दान करताहै १४ वह इसलोकमें भी आनन्दकरताहै व परलोक में प्रमुदित होताहै जो दान व पढ़ने से दिनको सफल करता रहता

है १५ वह देवहै मनुष्य नहीं है इसमें संदेह नहीं है अब धर्मसा-
धनका उत्तम नियम कहती हैं १६ जो देवताओं व ब्राह्मणोंकी पूजा
में नित्यरत रहताहै व नित्यनियमसे दान व्रत १७ और उपकार करता
है व नियमही से पुण्यके कार्य्य करताहै बस इसीका नियम नामहै
हे द्विजसत्तम! अब क्षमाका रूप कहती हैं सुनो १८ जब कोई उसे ता-
ड़ितकरे वा उसकी निन्दाकरे तव न उसे लौटकर ताड़ितकरे न क्रोध
करे वैसेही सहले १९ व वह धर्म्मात्मा कुछ उससे अपना दुःख न
माने वह यहां वहां दोनों स्थानों में सुखही भोगताहै २० इस प्रकार
क्षमाका लक्षण कहा अब शौचका लक्षण कहती हैं बाहर व भीतर
से जो शुद्ध रहता है नानाप्रकारके रागोंसेरहित रहता २१ व स्नान
आचमन आदि के साथ सब भोजनादि के व्यवहार करता है इस
प्रकार शौचका लक्षण कहा अब अहिंसाका लक्षण कहती हैं २२
विनाकार्य्य तृणभी जानबूझकर न काटे व अन्य किसी प्राणीको तो
कभी मारे नहीं जैसे अपना शरीर समझे वैसेही औरों का बस इसी
का अहिंसा नामहै २३ अब शान्ति कहती हैं शान्तिही से सब सुख
मिलते हैं कोई अपने को कष्टभीदे पर आप शान्तिही करे २४ ऐश्व-
र्य्य देखकर कभी उफला न चले न वैरआदि दुःख देखकर घबरा
उठे बस इसीका शान्ति नामहै अब अस्तेय कहती हैं २५ पराया धन
कभी न हरे न पराई स्त्रीहरे सो न वचनसे न मनसे न शरीर से इन
दोनों को हरे इसीको अस्तेय अर्थात् अचोरी कहतेहैं २६ हे द्विज-
सत्तम! अब तुम्हारे आगे दमका लक्षण कहती हैं मनसे इन्द्रियों
का सदा दमन करतारहै २७ क्योंकि इन्द्रियां सबलहोने से उसके
आधे कर्म्मोंको तो करतेही करते नष्ट करदेती हैं इससे उनका दमन
अवश्य होना चाहिये अब जैसी धर्म्मशास्त्रों में शुश्रूषा लिखी है वैसी
कहती हैं पूर्वके आचार्यों ने जैसे कहा है वाणी देह और मनसे गुरु
कार्य्यको साधन करे २८। २९ और जहां पर दयाहो उसी का शु-
श्रूषा नामहै ॥ चौपाई ॥
साङ्गधर्म्म तुमसन द्विजसत्तम। हमभाषा विधिसोंगुनिनि-
अपर श्रवणकी है का इच्छा। हमसनकहिये करिकै २

जो नर करु इमि धर्म्म अचारा। निजवर्णाश्रम सहित विचारा॥
सो सबसों उत्तम संसारा। जिमितुमसन हमकीनप्रचारा॥
जो यह धर्म करत सो प्रानी। भवसागर तरिजात अमानी॥
यह गुनि धर्म करहु मतिमाना। जो हम तुमसन कीन बखाना॥
प्रियावचन इमि सुनिगुनिमनमें। सोमशर्म्म द्विजवरत्यहिछनमें॥
बहुत विचारि नैज चितकेरी। कही बात तासों हितकेरी ३०।३५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐन्द्रेसुमनो
पाख्यानेत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

## चौदहवां अध्याय॥

दो० चौदहयें महँ धर्म्मकृत पुरुष मरत ज्यहि भाँति॥
सो सुमनानिजस्वामिसों कह्यहुलह्यहुगुणपाँति१

सोमशर्म्मा इतनी कथा सुनकर अपनी स्त्री सुमना से बोले कि हे भद्रे! इस प्रकारका धर्म्मका उत्तम व्याख्यान तुम कैसे जानती हो व तुमने किससे सुनाहै १ सुमना बोली कि हे महामतिवाले! हमारे पिता भार्ग्गवों के कुलमें उत्पन्नहुये च्यवन उनका नामहै व सब शास्त्रों के जानने में विशारदहैं २ उन ऋषि के हम एकही प्यारी कन्याथीं जो कि प्राणों से भी प्यारीथीं इस से जहां कहीं वे तीर्थादिक को जाते थे हमभी उनके सङ्ग जाती थीं ३ मुनियोंकी सभाओंमें जाते थे वा देवताओं के मन्दिरों में जाते थे तब भी हम उन के सङ्ग खेलती सदैव चलीजाती थीं ४ कि कौशिक के वंशमें उत्पन्न हमारे पिताके मित्र बड़े बुद्धिमान् वेदशर्माजी भाग्य से घूमते हुये प्राप्त हुये ५ वे बड़े दुःख से वारंवार चिन्तना करते थे तब आये हुये महात्मासे हमारे पिता बोले ६ कि हे सुव्रत! आपको हम दुःख से तपे हुये जानते हैं आप दुःखी कैसे हैं तिससे कारण कहिये ७ ये महात्मा च्यवनके वचन सुनकर तिन महात्मा हमारे पिता से वह सुव्रत वेदशर्मा बोला कि हे महाप्राज्ञ! सब दुःखका कारण सुनिये मेरी स्त्री महासाध्वी और पातिव्रत्य में परायणहै ८।६ वह पुत्र हीन है मेरे वंश नहीं है जिससे कि आप ने पूंछा इसी से आप से

कारण मैंने कहा १० इसी समय हमारे पिता के स्थानपर एक सिद्ध आये उनकी हमारे पिता और वेदशर्मा ने उठकर ११ भक्तिपूर्वक उपहार भोजन के योग्य अन्न और मीठे वचनों से पूजाकी १२ और वेदशर्मा के प्रश्नको उन सिद्ध से पूछा तब मित्र वेदशर्म्मा समेत हमारे पितासे धर्मात्मा सिद्धजी १३ सब धर्मका कारण कहते भये जो कि मैंने आपसे कहा धर्म से पुत्र धन धान्य और स्त्रियां प्राप्त होती हैं १४ तब वेदशर्मा ने सम्पूर्ण धर्म किया तिस धर्म से पुत्र समेत बड़ा सुख उत्पन्न हुआ १५ तिसी संगके प्रसङ्गसे हमारे यह बुद्धि निश्चय हुई है हे कांत! मैंने जैसे बहुत शुभ आप से कहा १६ यह सब सन्देहनाशन मैंने तिस महासिद्ध से सुना है इससे हे विप्र! अब तुमभी सदैव ऐसाही धर्म्म करो सब तुम्हारे मनोरथ सिद्ध होंगे १७ यह सुन सोमशर्म्मा बोले कि धर्म्म करने से कैसी मृत्यु होती है व फिर जन्म कैसा होताहै हे कान्ते ! इन दोनों का लक्षण हम से कहो १८ सुमना बोली कि सत्य शौच क्षमा शान्ति तीर्थसेवा व पुण्यादिक धर्म्म जो करताहै उसकी मृत्युका लक्षण तुम से कहती हैं १९ मरणके समय न तो उसके रोग होताहै न उसके शरीर में कुछ पीड़ा होतीहै न कुछ उसको श्रम होता न ग्लानि होती है न पसीना उसके अङ्गों से आवे न उसके चित्तमें भ्रम होताहै २० व दिव्यरूप धारण करके वेदपाठी ब्राह्मण लोग व गन्धर्वगण वेद पढ़ २ व गीत गाय २ उसकी स्तुति करते हैं व वह अपने आसनपर स्वस्थचित्त बैठाहुआ वा लेटाहुआ उन लोगों की स्तुति व गान सुनकर आनन्दित होताहै व मरणसमय में देवपूजा करता हुआ रहताहै २१।२२ बहुधा किसी तीर्थ में जाकर धर्म में तत्पर होकर देह छोड़ताहै वा अग्निशाला में बैठकर प्राण छोड़ता अथवा गोशालामें वा किसी देवता के मन्दिरमें २३ वा पुष्पवाटिका में वा किसी तड़ाग के तटपर वा पिप्पल वटवृक्ष के नीचे वा ब्रह्मवृक्ष के नीचे वा बिल्वके नीचे अथवा तुलसी के समीप२४ वा अश्वशालामें अथवा गजशालामें स्थितहोकर प्राण छोड़ताहै अथवा अशोक आम्रवृक्षके नीचे २५ वा ब्राह्मणोंके समीप अथवा राजमन्दिरमें स्थित होकर वा उस रणभूमि

के भागपर प्राण छोड़ताहै जहां प्रथम मराहो २६ ये पुण्य मृत्युस्थान केवल धर्म्म करनेवालों कोही मिलते हैं अथवा धर्म्म करनेवाले की मृत्यु कहीं गौवों वा ब्राह्मणों के लिये समर करने में होती है २७ जो कोई धर्म्मवत्सल मनुष्य शुद्ध धर्म्म करता है वह मृत्यु के समय किसी न किसी युक्तिसे इन स्थानों पर पहुँच जाताहै २८ व उत्तम पुरुष अपनी माता व अपने पिता अपने इष्टमित्र बान्धवों को देखता हुआ सबों के सम्मुख आनन्द से प्राण छोड़ताहै २९ व पुण्यात्मा वन्दीजनों से वारंवार स्तुति किया गया पापियों को न देखता हुआ प्राण छोड़ताहै ३० गन्धर्व्वलोग गीत गाते हैं स्तुति करनेवाले स्तोत्रों से स्तुति करते हैं मन्त्र पाठों से ब्राह्मण लोग पूजित करते हैं व माता स्नेहसे पूजती है ३१ पिता व और भी स्वजन वर्ग्ग सब उस बड़े बुद्धिमान् धर्म्मात्माकी प्रशंसा उस समय करते हैं हे विभो! इस प्रकारके पुण्य स्थान तुमसे हमने कहे ३२ व प्रत्यक्षमें ऐसे स्थानों में प्राप्तहो स्नेहयुक्त हँसते हुये भगवद्दूतोंके दर्शन करते हैं न स्वप्नसे न मोहसे न पसीनेके साथ कभी वे प्राणी मरते हैं ३३ दूत जो आते हैं वे उस धर्म्मात्मासे कहते हैं कि आपको महाबुद्धिमान् धर्म्मराज बुलाते हैं इससे हे महाभाग! यहां आवो जहां धर्मराज हैं चलके वहां विराजो इसतरह वह आनन्द से जाता है ३४ न तो उसको मोहहो न भ्रान्तिहो न ग्लानिहो न स्मृतिविभ्रम हो कि किसी को न चीन्हे न कुछ उसे सन्देहहो वैसेही प्रसन्नात्मा स्थित रहता है ३५ ज्ञान विज्ञानसे सम्पन्न जनार्द्दन देवका स्मरण करता हुआ सन्तुष्ट व हर्षितमन उन दूतों के संग चला जाताहै ३६ एक शरीर में टिकाथा व एक शरीरको छोड़ दशयें द्वार अर्थात् ब्रह्माण्ड फोड़कर आत्मा निकलकर जाता है ३७ कि तो उसके चढ़ने के लिये पालकी आतीहै वा हंस वा विमान वा घोड़ा अथवा उत्तम हाथी ३८ उसके ऊपर छत्र लगा होता व चामर व्यजनादिकोंसे पवन संचार होताहै इस प्रकार सेवकलोग पवन करते ३९ व गाता हुआ व पण्डित लोग स्तुति करतेहैं वन्दीगण चारण व दिव्य वेदकेपारगामी ब्राह्मण ४० साधुलोग सब ओरसे यश गाय २ स्तुति करते

चले जाते हैं व दान करने के प्रभावसे पालकी आदिपर चढ़ाहुआ वह प्राणी वाटिका व पुष्पवाटिका के भीतरही भीतर होकर सुख से छायामेंही जाताहै व दिव्य अप्सरा मंगल वस्तु हाथों में लिये संग२ गाती चली जाती हैं ४१ ।४२ व देवता लोग स्तुति करते हैं इस प्रकार जाकर वह धर्म्मराजजी को देखता है व धर्म्म संयुत देवता लोग सम्मुख आके कहते हैं ४३ कि हे महाभाग ! यहां आवो व अपने मनमाने भोग भोगो ॥

चौपाई ॥

इमि सो सौम्य मूर्त्ति मतिमानहि । धर्म्मराजकहँ लखत अमानहि ॥
निज कृत पुण्य प्रभाव सुखारी । स्वर्ग भोग भोगत हितकारी ॥
भोग नाश पर पुनि सो प्रानी । जन्म लेत भूतल महँ आनी ॥
पुण्य शील ब्राह्मण के गेहा । क्षत्रियके गृह वा करि नेहा ॥
अथवा सधन वैश्य गृहमाहीं । जन्म लेत संशय कछु नाहीं ॥
धर्मकरतप्रमुदित तहँवासी । पुण्यकरतनितसुखीविलासी ४४ । ४७

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐंद्रेसुमनो
पाख्यानेचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

# पंद्रहवां अध्याय ॥

दो० पंद्रहयें महँ पापकृत पुरुष मरत ज्यहि रीति ॥
सो सुमना निजस्वामिसों कह्यो बहुतकरि प्रीति १

इतनी कथा सुनकर सोमशर्म्मा फिर अपनी पत्नी सुमनासे बोले कि हे भद्रे ! पापियोंका मरण किन लक्षणोंसे होताहै हे भामिनि ! यदि जानतीहो तो वह हमसे विस्तारसे कहो १ सुमना बोली कि सुनो हम कहेंगी जैसे कि हमने उस सिद्धके मुखसे पापियों के मरने के लक्षण सुने हैं २ महापापियोंके स्थान व मरणसमयकी चेष्टा कहती हैं विष्ठा मूत्र खँखार आदि अपवित्र वस्तुओंसे लिपीहुई पापयुक्त भूमिपर ३ पापी दुष्टात्मा प्राप्तहोकर बड़े दुःखों से प्राणोंको छोड़ता है व महाचाण्डाल भूमिको पाकर दुःखित होकर मरताहै ४ अथवा

जिसभूमिपर नित्य गर्दभ चरतेहैं बँधते हैं वहां मरताहै वा वेश्याके गृहमें जाकर मरताहै अथवा चमारके घरमें जाकर प्राणछोड़ताहै ५ वा हड्डी चमड़ा नख जहां बहुत पड़ाहोता अथवा अन्य पापके पदार्थ जहां होते वहां प्राप्तहो वह दुष्टात्मा पापी मरताहै यह निश्चितहै ६ वा अन्य पाप समाचारसे युक्त पृथ्वी पर पहुँचकर जैसे वेश्यादिकों के घरमें जाकर मरताहै अब पापियोंको लेनेकेलिये आयेहुये दूतों की चेष्टा तुमसे कहतीहैं सुनो ७ बड़े भैरव दारुणरूप महाघोर अतिकाले बड़े२ पेटवाले पीले नेत्रवाले वा नीले धूसररंगके नयनवाले वा अतिश्वेतरंगवाले वा बड़े पेटवाले ८ अतिऊँचे अतिविकराल सूखे मांस और चर्बीवाले भयानक डाढ़वाले कराल सिंहके मुख के समान मुखवाले हाथों में बड़े २ विषधर सर्प लिये ९ ऐसे दूतोंको देखकर वह पापी थरथर काँपने लगताहै व बार२ पसीना होआता है सियारी पर सवार मुखपसारे वे दूत १० आके उसके कान के नीचे सर्पोंको छोड़देते हैं फिर गले व कमर व पेटमें फांसीसे बांधते हैं ११ वह बार २ हाहाकार मचाताही रहता परन्तु वे ज़बरदस्ती खींच लेजाते हैं अब जब मरनेपर पापी होता है उसकी चेष्टा बतलाती हैं १२ जिन पापियों ने पराया धन हरलियाहै जिन्होंने पराई स्त्रीकी विडम्बना कराई है जिन पापियों ने ऋणलेकर लोभसे दिया नहीं अथवा किसीका सर्वधन हरलिया है इसीप्रकार अन्य महापाप कुदानलेना अन्त्यजोंकी धान्य भोजनकरना आदि जो पाप उसने किये हैं १३।१४ व जोई कोई पाप उससे पूर्व में कियेगये हैं वे सब उस महापापीके कण्ठमूल में आते हैं ये सब कफको गले में बढ़ाकर बड़ादुःख उत्पन्न कराते हैं व दारुण पीड़ाओंसे गला घुंघुराने लगता है व माता पिता भाई बन्धुओंकी ओर देख २ रोदन करता व काँपता है व भार्य्या पुत्र का स्मरण बार बार करताहै फिर पीड़ाके मारे मोहित होकर भूलजाताहै १५।१८ व उसके प्राण बहुतपीड़ासे युक्त नहीं निकलतेहैं गिरता कांपता और वारंवार मूर्च्छित होताहै१९

चौ० सुनहु कान्त पापीके प्राना। गुदमारग ह्वै करत पयाना॥
यासों दुर्गतिलहत न शङ्का। जिमि तिन कीन पापदै डङ्का॥

लोभ मोहयुत इमि खल प्रानी । यमपुर जात पाप तनु सानी ॥
जिमि यमदूत वहां पहुँचावत । सोउ सब अब हमतुम्हें सुनावत २०।२१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐंद्रेसुमनोपाख्यानेपापमरणाविवक्षानामपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

## सोलहवां अध्याय ॥

दो० सोलहयेंमहँ पापकृत पुरुष मार्ग्ग ज्यहिजात ॥
अरुतहँभोगतनरकजिमि कहसुमनायहबात १

सुमना फिर अपने पतिसे बोली कि उस दुष्टात्माको यमदूत उस मार्ग्ग में घसीटते हुये लेजाते हैं जिसमें अङ्गारों के ढेरके ढेर बिछे होते हैं इसीसे वह उसमें गिरता पड़ता उछलता बार बार छटपटाताहुआ जाता है १ व जिसमार्ग्ग में बारहो सूर्य्योंसे तपाया हुआ महातीव्र घाम लगताहै उस मार्ग्गहोकर सूर्य्यके किरणों से सन्तप्त उस पापीको लेजाते हैं २ व बीचमें छायाहीन नानाप्रकारके दुर्गम पर्व्वतोंपर चढ़ाते उतारते क्षुधा पिपासासे पीड़ित उस दुष्टमतिवाले पापीको लेजाते हैं ३ व दूतलोग गदा खड्गोंसे व लोहेके दण्डों से पीटते मारते हुये व फरसोंसे काटतेहुये उसकी निंदाभी करते जाते हैं ४ फिर इसप्रकार जलाकर ऐसे शीतल पवनयुक्त मार्ग्ग में होकर लेजाते हैं जहां अत्यन्त शीतकेमारे बनाय ठ्यँठुरजाताहै इससे अतिदुःख पाताहै इसमें संदेह नहीं है ५ फिर वहांसे खींचकर दूत नानाप्रकारके दुर्गम स्थानों में घसीटते हैं इसप्रकार देवताओं व ब्राह्मणोंकी निन्दा करनेवाला दुष्टात्मापापी ६ व और भी नानाप्रकारके पापोंके करनेवाला यमदूतों से इसप्रकार पहुँचाया जाता है व वह दुष्टात्मा काले अञ्जन के ढेरके समान बैठेहुये यमराजको देखता है ७ जिनका बड़ा उग्र दारुण भयङ्कररूप होताहै व भयङ्कर दूतोंके बीचमें बैठे होते हैं व चारोंओर आधि व्याधि आदि सब रोग देहधारणकिये खड़ेहोते हैं चित्रगुप्त सम्मुख खड़ेरहते हैं ८ यमराजकी मूर्त्ति महिषपर चढ़ीहुई दिखाई देती है जिसके बड़े बड़े दांत व बड़ीभारी चौहड़ी होती है व बड़ाभारी भयानक कालके स-

मान मुख होताहै ९ वस्त्र वे पीत ओढ़े पहिने होते गदा हाथमें लिये व लालचन्दन लगायेहोते हैं लालेही फूलोंकीमाला धारणकिये हाथ में गदा लिये महाभयङ्कर मूर्ति होते हैं १० इसप्रकारके बड़ेभारी शरीरवाले यमराजको वह दुर्बुद्धि देखता है सब धर्मोंसे बाहर किये हुये आयेहुये उसे देखकर ११ उस पापी धर्मकण्टक दुष्टको यमराज बड़ी कड़ी दृष्टिसे देखते हैं व देखतेही आज्ञादेते हैं कि नाना प्रकारकी पीड़ाओं से इसे महादुःख दो १२ बस सहस्रयुगपर्य्यन्त नानाप्रकारके नरकों में बार बार एकमें से निकालकर दूसरे में डालकर पचित किया जाता है १३ फिर वहां से यहां आकर नरककी योनि में उत्पन्न होता है फिर नानाप्रकार के कीटोंकी योनियों में जन्मता है व उसे अपवित्र पापी दुष्टलोग पकाकर खा भी लेते हैं व बार बार इसी प्रकार उस दुष्टात्मा का मरण होता है ऐसेही वह दुर्म्मति बार बार पापों को भोगता रहता है १४ । १५ फिर जिन २ योनियों में जन्म होताहै उनके नाम भी कहतीहैं सौ जन्मतक तो कुत्तेकी योनियों में जन्मलेकर पाप भोगता है १६ फिर वह दुष्टात्मा व्याघ्र होता फिर गधा होताहै फिर मार्ज्जारयोनि में जन्मपाता फिर शूकरकी में फिर सर्प्पकी योनिमें १७ इसप्रकार नानातरह की सब तिर्य्यक् योनिमें उत्पन्न होताहै फिर नानाप्रकार के कौवा गीध आदि पापी पक्षियों की योनियों में जन्म पाताहै १८ फिर डोम चमारआदि चाण्डाल जातियों में फिर भिल्ल पुलिन्दआदि वनवासियों की योनियोंमें ॥

चौ० यहतुमसनपापिनकेजनन् । कहाविचारिचित्तकरिमनन् ॥
मरण बहुरि चेष्टा तिनकेरी । तुमसन भाषी कौन न देरी ॥
पापपुण्य सब कहे निबेरी । दारुणदुखदसुन्यहुहियहेरी ॥
अपरश्रवणकरनेकोकाहा । हमसनकहहुकहबमनताहा ॥ १९ । २१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डे भाषानुवादेऐन्द्रेसुमनोपाख्याने पापपुण्यविवक्षानामषोड़शोध्यायः १६ ॥

---

# सत्रहवां अध्याय ॥

दो० कह्यो सत्रहें महँ सकल सोमशर्म्म द्विज केरि ॥
पूर्व्वजन्म वृत्तान्त सब मुनिवशिष्ठ हिय हेरि १

पूर्व्व अध्यायकी कथा सुनकर सोमशर्म्मा ब्राह्मण अपनी स्त्री सुमना से बोले कि हे देवि ! तुमने सब धर्म्मात्मा व पापात्माओं की गति व धर्म्मके लक्षण हमसे कहे अब यह कहो हम सर्व्वज्ञ व गुण युक्त पुत्र कैसे पावें १ हे महाभागे ! हे सुव्रते ! हे भद्रे ! यदि तुम जानतीहो तो परलोक और इस लोकमें जिस दान धर्म्मादिके करने से पुत्र मिले वह हमसे कहो उसको करें इसमें सन्देह नहीं है २ सुमना बोली कि तुम अब धर्म्मज्ञ वशिष्ठजीके निकटजाय उन महामुनिसे पूँछो उनसे तुम धर्म्मज्ञ व धर्म्मवत्सल पुत्र पावोगे ३ जब उसने ऐसा कहा तो द्विजोंमें उत्तम सोमशर्म्माने कहा कि हे कल्याणि ! तुम्हारा यह वचन हम करेंगे इसमें कुछ सन्देह नहींहै ४ ऐसा कहकर सोमशर्म्मा द्विजोंमें उत्तम सब कुछ जाननेवाले दिव्य व सब तप करनेवालोंमें श्रेष्ठ वशिष्ठजीके निकट शीघ्रगये ५ जो मुनिराज गंगाजी के तीरपर पुण्य आश्रम में स्थित थे व तेजकी ज्वाला से मानो दूसरे सूर्य्यही के समान प्रकाशित थे ६ इस प्रकार ब्रह्मतेज से दीप्तिमान् द्विजोत्तम विप्रोंके स्वामी वशिष्ठजी के भक्तिसे बार २ दण्डवत्प्रणाम करके ७ उन पापरहित ब्रह्माजीके पुत्रसे महातेजस्वी सोमशर्म्मा पुण्य आसनपर बैठकर बोले ८ उनका वचन सुनकर महामतिमान् वशिष्ठमुनि सोमशर्म्मा से बोले कि हे वत्स ! तुम्हारे गृहमें पुत्र स्त्री भृत्यवर्गोंका ९ क्षेम तो है व हे महाभाग ! तुम्हारे सब पुण्यकर्म्मों में व अग्नियों में कुशलहै व तुम्हारे सब अंगोंमें नीरोगताहै व सदा धर्म्मका पालन करते रहतेहो १० ऐसा कहकर उस महाबुद्धिमान् फिर सोमशर्म्मा से कहा कि हे द्विजोत्तम ! कहो तुम्हारा क्या प्रिय इस समय हम करें ११ ब्राह्मण से ऐसा कहकर कुम्भ से उत्पन्न वशिष्ठजी चुप होरहे तब उन महामुनि व ऋषियों में श्रेष्ठ वशिष्ठजी के थँभजाने पर १२ सोमशर्म्मा सब प्रकाशमानों में श्रेष्ठ

वशिष्ठजीसे बोले कि हे भगवन् ! सुप्रसन्नचित्तसे हमारा वचन सुनो १३ व यदि हमारा प्रिय आपको करना अङ्गीकार हो तो हमारे प्रश्न के अर्थ के सन्देह नाश करने में उद्यतहोवो १४ किस कारण से हमारे दरिद्रता सदा रहती है व पुत्रका सुख हमको क्यों नहीं होता हे तात ! यह हमको संशयहै किस पापसे ये दोनोंबातें हमारेहैं १५ हम महामोह से मूढ़ होगये थे तब हमारी स्त्रीने बहुत समझाया व उसीकी प्रेरणासे हम आपके पास आये हैं १६ सो सर्व्व सन्देहोंके नाशनेवाला वचन हमसे आप कहें इस संसारबन्धनसे आप हमको मुक्तिके दाताहों १७ यह सुन वशिष्ठजी बोले कि पुत्र मित्र भ्राता व और भी स्वजन बान्धव पांचभेदों से पुरुषके सम्बन्धसे होतेहैं १८ वे सम्बन्ध के भेद सुमनाने तुम्हारे आगे पूर्व्वही कहे हैं हे द्विजोत्तम ! वे सब पुत्र कुपुत्र ऋणसम्बन्धीहैं १९ अब पुण्यात्मा पुत्रके लक्षण तुमसे हम कहतेहैं जिसका आत्मा सदा पुण्य करने में लगारहताहो व सत्यधर्म्म में सदैव रतहो २० बुद्धिमान् ज्ञानसम्पन्न तपस्वी वाणी जाननेवालोंमें श्रेष्ठ सब कर्म्मोंमें धीर वेदअध्ययन करनेमें तत्पर २१ सब शास्त्रवेत्ता देव व ब्राह्मणोंका पूजक सबयज्ञोंका करनेवाला दाता त्यागी व प्रिय बोलनेवाला २२ विष्णुभगवान् के ध्यानमें नित्यपर शान्तचित्त इन्द्रियोंको दमन करनेवाला सदा सबका मित्र पिता माता की सेवा में नित्यपर व अपने सबजनों के ऊपर कृपाकरनेवाला २३ कुलका तारक विद्वान् अपने कुलकापालक ऐसे गुणों से सम्पन्न पुत्र सुखदायक होता है २४ अन्य सम्बन्धवाले पुत्र शोक सन्ताप के दायक होते हैं व फलहीन ऐसे पुत्र से जानो कुछ कार्य्यही नहीं चलता २५ वे सब सुदारुण ताप देकर आया जाया करतेहैं हे द्विज-सत्तम ! पुत्ररूप से सब ऋणादि सम्बन्धी संसार में आ जाकर दुःख देते हैं २६ व पूर्व्वजन्मका कियाहुआ पुण्य जो तुम्हारे है जिसका पालन तुमने आजतक किया है वह सब तुमसे कहते हैं उस अद्भुत को श्रवण करो २७ हे महाप्राज्ञ! पूर्व्वजन्म के आप शूद्र हैं इस में कुछ सन्देह नहीं है खेती का काज किया करते थे ज्ञान से हीन थे व महालोभी थे २८ एकही तुम्हारे स्त्री थी व वैर तुम

सब से रखते थे पुत्र बहुत से थे देते किसी को तुम एक कौड़ी भी न थे धर्म्म को जानतेही न थे सत्य कभी सुना भी नहीं २९ दान तुमने कुछ दियाही नहीं शास्त्र कभी किसी पण्डित के मुख से सुना नहीं तुमने कोई तीर्थ किया नहीं व न कभी कोई उत्तम स्थानकी यात्राही तुमने की ३० बस हे विप्र! एकज्ञानलगाये बार२ वही खेती किया करते थे व पशुओं का पालन तथा गौओं का पालन ३१ भैंसों का व घोड़ों का पालन बार २ करते थे हे द्विजसत्तम! पूर्व्व जन्ममें तुमने इसप्रकार बड़े लोभसे बहुतसा धन इकट्ठा कियाथा उसका खर्च तुमने सुपुण्यमें कभी नहीं किया३२।३३व बड़े दुर्बल सत्पात्र ब्राह्मणकोभी आयेहुये देखकृपाकर तुमने कुछभी दान नहीं किया ३४ बनगो महिषी आदि जो तुम्हारे बहुतसे पशु थे उन्हींमेंसे किसी को दिया सब पशुओं को बेंच २ बहुत धन संचय करलिया था ३५ मट्ठा घी दूध दही सब बेंच लेते थे इसप्रकार विष्णुभगवान् की माया से मोहितहो दुष्टता के साथ काल बिताते थे ३६ हे ब्राह्मणसत्तम! ऐसा बहुतधन होनेपरभी किसी को कभी कुछ नहीं दिया ऐसे निर्दयी तुम थे ३७ हे विप्र! देवताओंकी पूजा तो कभी आपने कीही नहीं पूर्णमासी अमावास्या व्यतीपातादि पुण्यपर्व्वों में भी तुमने ब्राह्मणों को दान नहीं दिया ३८ व श्राद्धसमय आजाने पर कभी श्रद्धापूर्व्वक श्राद्धभी तुमने नहीं किया तुम्हारी पतिव्रता स्त्री कहती भी थी कि आज अमुक पुण्यका दिन है ३९ व आज श्वशुर के श्राद्धका कालहै व आज श्वश्रूके श्राद्ध का काल आया है हे महामते! तुम उसका वचन सुनकर उस दिन घरछोड़ भागजाते थे ४० न तो धर्म्ममार्ग्ग तुमने कभी देखा न किसी का कहाहुआ कभी सुना तुम्हारे लोभही माता पिता भाई लोभही स्वजन लोभही बांधव थे ४१ इससे धर्म्मको छोड़ तुमने केवल एक लोभहीका पालन सदैव किया इसीसे आप दुःखीहुये व दरिद्रता से अत्यन्तपीड़ित हुये ४२ व प्रतिदिन तुम्हारे हृदय में बड़ीभारी तृष्णा बनी रहती थी जब २ तुम्हारे घरमें धनकी बढ़ती होती थी ४३ तब २ अग्निरूप तृष्णा से तुम और भस्म होतेजाते थे रात्रि भर सोते

भी नहींथे इसी चिन्ता में लगे रहतेथे कि औरभी धनहो तो अच्छा है ४४ फिर जब दिन होता था तो महामोहित होते थे कि सहस्र लक्ष कोटि अर्ब्बुद हमारे धनहो तो अच्छाहो ४५ व खर्व्व निखर्व्व हमारे घरमें कब धनहोगा इसप्रकार जब सहस्रलक्ष कोटि अर्ब्बुद ४६ खर्व्व निखर्व्व भी होगया तो भी तुम्हारी तृष्णा नहीं कम हुई इस प्रकार धीरे २ सब अवस्था बीतगई वृद्धता आनपहुँची ४७ न तो तुमने कुछ दान किया न होम किया न ब्राह्मणों को भोजन कराया न आपही कभी पेटभर तुमने खाया धनभी जो हुआ पृथ्वी खोद कर गाड़ते गये जहां कि पुत्र किसीप्रकार से न जान पावें ४८ व ऐसा कर द्रव्य आने के अन्य उपाय करने लगजाते थे व सदैव किया करते थे यद्यपि तुम बुद्धिमान् बड़ेथे पर धन बढ़नेका उपायलोगों से और भी पूँछा करते थे ४९ प्रथम पूँछते थे कि किसप्रकार रुपया गाड़े जो कोई जान न पावे फिर अन्यका धराहुआ धन कैसे जान लियाजाता है इसका विधान पूँछते थे इसप्रकार जिसी किसी से पूँछतेहुये भूँखेप्यासे भ्रमण कियाकरतेथे ५० रुपये सोने चाँदी को छूतेही परखने का उपाय सोचा करते थे व सिद्धिवाली कल्प रसायनादि विद्याओं का विचार किया करतेथे व विवरों का प्रवेश भी पूँछा करते कि कैसेही दुर्ग्गमस्थानमें कोई पदार्थ धराहो उसके निकालने का उपाय पूँछते थे ५१ इसप्रकार तृष्णारूप अग्नि से रात्रि दिन जलाकरते थे जिससे क्षणमात्र को भी कभी सुख नहीं मिलताथा तृष्णानल में जलकर मूर्च्छितहोकर अचेत हाहाकार मचाया करते थे ५२ हे विप्रेन्द्र ! इसप्रकार से मूढ़ताको प्राप्तहोथे कि कालके वशीभूत होगये तब तुम्हारी स्त्री पुत्रादिकों ने तुमसे पूँछा कि धन कहांहै ५३ पर तुमने न उनको दिया न उनसे बताया बस प्राणछोड़कर चलदिये व यमपुर का मार्ग्गलिया इस रीति से हमने सब तुम्हारा पूर्व्वजन्मका वृत्तान्त कहा ५४ ॥

चौ० यहीकर्म्मसों द्विजतुमभयऊ । निर्द्धनदरिद सकलदुखलह्यऊ ॥
यहि संसारमाहिं सुतजाके । भक्तिमान शुभगुणयुत ताके ५५
ज्ञानी शीलवान सचवादी । धर्म्मपरायण विगत विवादी ॥

भी नहींथे इसी चिन्ता में लगे रहतेथे कि औरभी धनहो तो अच्छा है ४४ फिर जब दिन होता था तो महामोहित होते थे कि सहस्र लक्ष कोटि अर्बुद हमारे धनहो तो अच्छाहो ४५ व खर्व निखर्व हमारे घरमें कब धनहोगा इसप्रकार जब सहस्रलक्ष कोटिअर्बुद ४६ खर्व निखर्व भी होगया तो भी तुम्हारी तृष्णा नहीं कम हुई इस प्रकार धीरे २ सब अवस्था बीतगई वृद्धता आनपहुँची ४७ न तो तुमने कुछ दान किया न होम किया न ब्राह्मणों को भोजन कराया न आपही कभी पेटभर तुमने खाया धनभी जो हुआ पृथ्वी खोद कर गाड़ते गये जहां कि पुत्र किसीप्रकार से न जान पावें ४८ व ऐसा कर द्रव्य आने के अन्य उपाय करने लगजाते थे व सदैव किया करते थे यद्यपि तुम बुद्धिमान् बड़ेथे पर धन बढ़नेका उपायलोगों से और भी पूँछा करते थे ४९ प्रथम पूँछते थे कि किसप्रकार रुप-या गाड़े जो कोई जान न पावे फिर अन्यका धराहुआ धन कैसे जान लियाजाता है इसका विधान पूँछते थे इसप्रकार जिसी किसी से पूँछतेहुये भूँखप्यासे भ्रमण कियाकरतेथे ५० रुपये सोने चाँदी को छूतेही परखने का उपाय सोचा करते थे व सिद्धिवाली कल्प रसायनादि विद्याओं का विचार किया करतेथे व विवरों का प्रवेश भी पूँछा करते कि कैसेही दुर्गमस्थानमें कोई पदार्थ धराहो उसके निकालने का उपाय पूँछते थे ५१ इसप्रकार तृष्णारूप अग्नि से रात्रि दिन जलाकरते थे जिससे क्षणमात्र को भी कभी सुख नहीं मिलताथा तृष्णानल में जलकर मूर्च्छितहोकर अचेत हाहाकार मचाया करते थे ५२ हे विप्रेन्द्र ! इसप्रकार से मूढ़ताको प्राप्तहीथे कि कालके वशीभूत होगये तब तुम्हारी स्त्री पुत्रादिकों ने तुमसे पूँछा कि धन कहांहै ५३ पर तुमने न उनको दिया न उनसे बताया बस प्राणछोड़कर चलदिये व यमपुर का मार्गलिया इस रीति से हमने सब तुम्हारा पूर्वजन्मका वृत्तान्त कहा ५४॥

चौ० यहीकर्मसों द्विजतुमभयऊ। निर्द्धनदरिद सकलदुखलह्यऊ॥
यहि संसारमाहिं सुतजाके। भक्तिमान शुभगुणयुत ताके ५५
ज्ञानी शीलवान सत्यवादी। धर्म्मपरायण विगत विवादी॥

मर्दित करके फिर अपनेही हाथों से उस विप्रके चरणभी मींजदिये फिर उसके चरण अच्छे शुद्धजलसे धोये उसी जलसे तुमने स्नान करलिया १० फिर तुरन्तका घृत दधि दुग्ध अन्न और माठा अलग२ पात्रों में लाकर उस ब्राह्मण को दिया आपने उस महात्मा वैष्णव ब्राह्मणकी ऐसी सेवाकी ११ इसप्रकार स्त्री पुत्रोंसहित तुमने उस ज्ञानमें पण्डित महाभाग ब्राह्मणको बनाय सन्तुष्ट किया १२ उसके प्रातःकाल अतिपुण्यदायक व शुभ आषाढ़मासके शुक्लपक्ष की पापनाशनी एकादशी तिथिथी १३ वह सबपातकनाशनी तिथि उस ब्राह्मणको तुम्हारे यहां आनपड़ी जिसमें देव श्रीविष्णुभगवान् योगनिद्राको ग्रहण करते हैं १४ उसदिन सब बुद्धिमान् पण्डितों ने अपने २ गृहोंका सब कार्य्य छोड़ दिया केवल सबके सब विष्णुके ध्यान में परायण होगये १५ व गाय २ बजायकर सबों ने बड़ा भारी मंगल किया ब्राह्मणों ने आकर वेद व स्तोत्र पढ़ २ कर बड़ी भारी स्तुतिकी १६ ऐसा महोत्सव उस तुम्हारे ग्राममें देखकर वह ब्राह्मणसत्तम उस दिन वहां रहगया क्योंकि वह व्रतकी तिथिथी इससे वहभी उपवास कररहा १७ व उस ब्राह्मणने विष्णुशयनी उस एकादशी का माहात्म्य बांचा व अपनी स्त्री पुत्रों समेत तुमने वह उत्तम धर्म्म श्रवण किया १८ उस कथाको सुनकर तुम्हारी स्त्री व पुत्रों ने तुमसे कहा कि तुमभी व्रत रहो सो उनके कहने से व उस ब्राह्मणके संसर्ग से उसदिन तुमभी एकादशी व्रत रहगये १९ फिर योंही नहीं उन सबोंका सब पुण्यदायक वचन सुनकर तुमने निश्चय करके संकल्पकिया कि आज हम व्रतकरेंगे २० फिर अपनी स्त्री पुत्रों के संग जाकर तुमने नदीमें स्नानकिया व बड़े हर्षित मनसे हे विप्र! मधुसूदन भगवान्जीकी पूजाकी २१ जैसा गन्ध धूपादि सब पुण्यकारी सामग्री से श्रीहरिके पूजनका विधान लिखा है वैसेही पूजन तुमने किया व नाच और गाते बजाते हुये तुमने रात्रिभर जागरण किया २२ व ब्राह्मण के साथ प्रातःकाल फिर तुमने नदी में स्नान किया व फिर धूप गन्धादिकों से देवदेवेश श्रीविष्णु भगवान्का पूजन किया २३ व भक्ति से श्रीहरिके प्रणामकर बार २ स्नानकराये

मर्दित करके फिर अपनेही हाथों से उस विप्रके चरणभी मींजदिये फिर उसके चरण अच्छे शुद्धजलसे धोये उसी जलसे तुमने स्नान करलिया १० फिर तुरन्तका घृत दधि दुग्ध अन्न और माठा अलग२ पात्रों में लाकर उस ब्राह्मण को दिया आपने उस महात्मा वैष्णव ब्राह्मणकी ऐसी सेवाकी ११ इसप्रकार स्त्री पुत्रोंसहित तुमने उस ज्ञानमें पण्डित महाभाग ब्राह्मणको बनाय सन्तुष्ट किया १२ उसके प्रातःकाल अतिपुण्यदायक व शुभ आषाढ़मासके शुक्लपक्ष की पापनाशनी एकादशी तिथिथी १३ वह सबपातकनाशनी तिथि उस ब्राह्मणको तुम्हारे यहां आनपड़ी जिसमें देव श्रीविष्णुभगवान् योगनिद्राको ग्रहण करते हैं १४ उसदिन सब बुद्धिमान् पण्डितों ने अपने २ गृहोंका सब कार्य्य छोड़ दिया केवल सबके सब विष्णुके ध्यान में परायण होगये १५ व गाय २ बजायकर सबों ने बड़ा भारी मंगल किया ब्राह्मणों ने आकर वेद व स्तोत्र पढ़ २ कर बड़ी भारी स्तुतिकी १६ ऐसा महोत्सव उस तुम्हारे ग्राममें देखकर वह ब्राह्मणसत्तम उस दिन वहां रहगया क्योंकि वह व्रतकी तिथिथी इससे वहभी उपवास कररहा १७ व उस ब्राह्मणने विष्णुशयनी उस एकादशी का माहात्म्य बांचा व अपनी स्त्री पुत्रों समेत तुमने वह उत्तम धर्म्म श्रवण किया १८ उस कथाको सुनकर तुम्हारी स्त्री व पुत्रों ने तुमसे कहा कि तुमभी व्रत रहो सो उनके कहने से व उस ब्राह्मणके संसर्ग से उसदिन तुमभी एकादशी व्रत रहगये १९ फिर योंही नहीं उन सबोंका सब पुण्यदायक वचन सुनकर तुमने निश्चय करके संकल्पकिया कि आज हम व्रतकरेंगे २० फिर अपनी स्त्री पुत्रों के संग जाकर तुमने नदीमें स्नानकिया व बड़े हर्षित मनसे हे विप्र ! मधुसूदन भगवान्जीकी पूजाकी २१ जैसा गन्ध धूपादि सब पुण्यकारी सामग्री से श्रीहरिके पूजनका विधान लिखा है वैसेही पूजन तुमने किया व नाच और गाते बजाते हुये तुमने रात्रिभर जागरण किया २२ व ब्राह्मण के साथ प्रातःकाल फिर तुमने नदी में स्नान किया व फिर धूप गन्धादिकों से देवदेवेश श्रीविष्णु भगवान्का पूजन किया २३ व भक्ति से श्रीहरिके प्रणामकर वार २ स्नानकराये

मर्दित करके फिर अपनेही हाथों से उस विप्रके चरणभी मींजदिये फिर उसके चरण अच्छे शुद्धजलसे धोये उसी जलसे तुमने स्नान करलिया १० फिर तुरन्तका घृत दधि दुग्ध अन्न और माठा अलग२ पात्रों में लाकर उस ब्राह्मण को दिया आपने उस महात्मा वैष्णव ब्राह्मणकी ऐसी सेवाकी ११ इसप्रकार स्त्री पुत्रोंसहित तुमने उस ज्ञानमें पण्डित महाभाग ब्राह्मणको बनाय सन्तुष्ट किया १२ उसके प्रातःकाल अतिपुण्यदायक व शुभ आषाढ़मासके शुक्लपक्ष की पापनाशनी एकादशी तिथिथी १३ वह सबपातकनाशनी तिथि उस ब्राह्मणको तुम्हारे यहां आनपड़ी जिसमें देव श्रीविष्णुभगवान् योगनिद्राको ग्रहण करते हैं १४ उसदिन सब बुद्धिमान् पण्डितों ने अपने २ गृहोंका सब कार्य्य छोड़ दिया केवल सबके सब विष्णुके ध्यान में परायण होगये १५ व गाय २ बजायकर सबों ने बड़ा भारी मंगल किया ब्राह्मणों ने आकर वेद व स्तोत्र पढ़ २ कर बड़ी भारी स्तुतिकी १६ ऐसा महोत्सव उस तुम्हारे ग्राममें देखकर वह ब्राह्मणसत्तम उस दिन वहां रहगया क्योंकि वह व्रतकी तिथिथी इससे वहभी उपवास कररहा १७ व उस ब्राह्मणने विष्णुशयनी उस एकादशी का माहात्म्य बांचा व अपनी स्त्री पुत्रों समेत तुमने वह उत्तम धर्म्म श्रवण किया १८ उस कथाको सुनकर तुम्हारी स्त्री व पुत्रों ने तुमसे कहा कि तुमभी व्रत रहो सो उनके कहने से व उस ब्राह्मणके संसर्ग से उसदिन तुमभी एकादशी व्रत रहगये १९ फिर योंही नहीं उन सबोंका सब पुण्यदायक वचन सुनकर तुमने निश्चय करके संकल्पकिया कि आज हम व्रतकरेंगे २० फिर अपनी स्त्री पुत्रों के संग जाकर तुमने नदीमें स्नानकिया व बड़े हर्षित मनसे हे विप्र! मधुसूदन भगवान्जीकी पूजाकी २१ जैसा गन्ध धूपादि सब पुण्यकारी सामग्री से श्रीहरिके पूजनका विधान लिखा है वैसेही पूजन तुमने किया व नाच और गाते बजाते हुये तुमने रात्रिभर जागरण किया २२ व ब्राह्मण के साथ प्रातःकाल फिर तुमने नदी में स्नान किया व फिर धूप गन्धादिकों से देवदेवेश श्रीविष्णु भगवान्का पूजन किया २३ व भक्ति से श्रीहरिके प्रणामकर बार २ स्नानकराये

व भगवान् को जो भोग लगाया वह उस महात्मा ब्राह्मण को देकर उसके भी प्रणाम किया व उस ब्राह्मणको भोजन कराके फिर दक्षिणाभी तुमने कुछदी तब अपनी भार्य्या पुत्रों के संग ब्राह्मण तुमने भी पारण किया २४।२५ यद्यपि तुमने अपनी स्त्री व पुत्रोंकी प्रेरणा से उन सहित व्रत किया परन्तु हे विप्र! व्रत का फल तुम्हींने पाया जैसा कि पाना चाहिये था २६ इससे ब्राह्मणकी संगति से व श्रीविष्णुजी के प्रसादसे तुम ब्राह्मणताको प्राप्तहुये उस में भी सत्यधर्म्म युक्तहुये २७ व उस व्रतके प्रभावसे ब्राह्मणके महाकुलमें उत्पन्नहुये जो यह ब्राह्मणों का कुल सत्यधर्म्मोंसे संयुक्त होताहै २८ व जोकि तुमने उस महात्मा वैष्णव ब्राह्मण को उस द्वादशी तिथिमें बनावनाया दिव्य भोजन करायाथा सोभी श्रद्धा व सद्भाव से २९ सो उस दानके प्रभावसे तुम को नानाप्रकार के मिष्टान्न भोगने को मिले व पूर्व्वजन्म के अन्य कर्म्मों के प्रभावसे महामोहसे युक्तहुये व सदा तृष्णा से व्याकुल मन बनारहताहै ३० व पूर्व्वजन्ममें तुमने इतना धन इकट्ठा कियाथा परन्तु न तो ब्राह्मणों को दिया न अन्यही दीनों को कुछ दिया ३१ व मारेलोभके मरते समय स्त्री पुत्रादिकों से भी नहीं बताया उस पापके प्रभावसे तुम दरिद्रहुये ३२ व पुत्रका लोभ व स्नेह तुमने छोड़दिया धन उनसे नहीं बताया इससे तुम इस जन्ममें पुत्रहीन हुये यह उसी पापका फलहै ३३ सुपुत्र सुकुल धन धान्य व श्रेष्ठस्त्रियां सुन्दरजन्म व अच्छी रीति से मरण सुभोग सुख ३४ राज्य स्वर्ग मोक्ष और जो जो दुर्लभ हैं ये सब पदार्थ महात्मा देव श्रीविष्णु भगवान्जी ही के प्रसादसे होते हैं ३५ इससे नारायण अनामय श्रीगोविन्दकी आराधना करके श्रीविष्णुके श्रेष्ठस्थान परमपद को पावोगे ३६ व सुपुत्र धन धान्य सुभोग व नानाप्रकार के सुख पावोगे पूर्व्वजन्म में जो कुछ तुमने किया था ३७ हे विप्र! वह सब हमने तुम्हारे आगे विचारपूर्व्वक कहा सो हे महाभाग! ऐसा जानकर अब तुम नारायणमें पर होवो ३८ ॥

चौपै० तब विधिसुतभाणी इमिवरवाणी सुनि भो विप्र प्रवीना ।
अतिहर्षितसोई अतिनतहोई मुनिहिप्रणामसुकीना ॥

करि भक्तिसुहावनि अतिमनभावनिजवबोधितभो आशू ।
तबमहाप्रभावा द्विजसुखपावा नयननमें भरिआंशू ३९
लै मुनि उपदेशा गो निजदेशा हर्षसहित मुनिराया ।
सुमनानिजप्यारी अतिहितकारी तासनसकलसुनाया ॥
भामिनितबनेहा बरमतिदेहा मुनिवशिष्ठ गुणखानी ।
तिनसकलसुनाई अतिहरषाई पूर्वजकथाबखानी ४०
नश्यहु सबमोहा समकरिछोहा मुनिवशिष्ठ विज्ञानी ।
सबपूर्व कहानी तिनममभानी जासों वे बड़ध्यानी ॥
अब हरिआराधी गतसबबाधी लहिहहुँ मोक्षअनूपा ।
अरु परपद पैहौं सुखसों जैहौं लखिहौं सुरसुरभूपा ४१
मुनिकै पतिबानी अतिसुखमानी हर्षितह्वै अतिप्यारी ।
निजपतिसों बोली बात अमोली तासुचरण शिरधारी ॥
तुमधनिधनिस्वामी मुनिअनुगामी भयहुसुकृतकेकारी ।
मुनिकरसमझावनबहुविधिपावनकरहुसुहृदयविचारो ४२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेपेन्द्रसुमनोपाख्यानेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

## उन्नीसवां अध्याय ॥

दो० उन्निसयें भार्य्यासहित सोमशर्म्म द्विजवर्य्य ॥
कीन तपस्यानेक विधि सोइ सूत कह अर्य्य १

सूत मुनियों से बोले कि महाप्राज्ञ सोमशर्म्माजी अपनी सुमना स्त्री समेत नर्म्मदानदी के पुण्यतटपर कपिलासङ्गमनाम पुण्यतीर्थमें १ स्नानकर शान्त आत्मा होकर देवताओं व पितरों का अच्छे प्रकार तर्प्पणकर कल्याणरूप श्रीनारायण का जप करतेहुये ब्राह्मण देव तप करनेलगे २ ध्यानयुक्त हो तिन देवदेव श्रीवासुदेवजी का द्वादशाक्षर मन्त्र जपने लगे ३ सदैव निश्चल होकर काम क्रोध से रहितहो आसन शयन सवारी और स्वप्नमें भी भगवान्हीं को देखताभया ४ व महासाध्वी पातिव्रतकर्म्म में परायण महाभाग्यवती उनकी स्त्री सुमना तप करतेहुये अपने पतिकी सेवा करनेलगी ५ जब

करि भक्तिसुहावनि अतिमनभावनि जब बोधितभो आशू ।
तबमहाप्रभावा द्विजसुखपावा नयननमें भरिआंशू ३९
लै मुनि उपदेशा गो निजदेशा हर्षसहित मुनिराया ।
सुमनानिजप्यारी अतिहितकारी तासनसकलसुनाया ॥
भामिनितवनेहा वरमतिदेहा मुनिवशिष्ठ गुणखानी ।
तिनसकलसुनाई अतिहरषाई पूर्वजकथाबखानी ४०
नाशयहु सबमोहा समकरिछोहा मुनिवशिष्ठ विज्ञानी ।
सबपूर्व कहानी तिनममभानी जासों वे बड़ध्यानी ॥
अब हरिआराधी गतसबबाधी लहिहहुँ मोक्षअनूपा ।
अरु परपद पैहों सुखसों जैहों लखिहों सुरसुरभूपा ४१
सुनिकै पतिबानी अतिसुखमानी हर्षितह्वै अतिप्यारी ।
निजपतिसों बोली बात अमोली तासुचरण शिरधारी ॥
तुमधनिधनिस्वामी मुनिअनुगामी भयहुसुकृतकेकारी ।
सुनिकरसमभावनबहुविधिपावनकह्युसुहृदयविचारी ४२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐन्द्रसुमनो-
पाख्यानेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

## उन्नीसवां अध्याय ॥

दो० उन्निसयें भार्य्यासहित सोमशर्म्म द्विजवर्य्य ॥
कीन तपस्यानेक विधि सोइ सूत कह अर्य्य १

सूत मुनियों से बोले कि महाप्राज्ञ सोमशर्म्माजी अपनी सुमना स्त्री समेत नर्म्मदानदी के पुण्यतटपर कपिलासङ्गमनाम पुण्यतीर्थमें १ स्नानकर शान्त आत्मा होकर देवताओं व पितरों का अच्छे प्रकार तर्प्पणकर कल्याणरूप श्रीनारायण का जप करतेहुये ब्राह्मण देव तप करनेलगे २ ध्यानयुक्त हो तिन देवदेव श्रीवासुदेवजी का द्वादशाक्षर मन्त्र जपने लगे ३ सदैव निश्चल होकर काम क्रोध से रहितहो आसन शयन सवारी और स्वप्नमें भी भगवान्‌हीको देखतामया ४ व महासाध्वी पातिव्रतकर्म्म में परायण महाभाग्यवती उनकी स्त्री सुमना तप करतेहुये अपने पतिकी सेवा करनेलगी ५ जब

इसप्रकार सोमशर्म्मा ध्यान करने लगे तो विघ्नों ने बहुत भय दिखाया बड़ेभारी विषधर काले सर्प तपकरते हुये उन महात्मा सोमशर्माके निकट आनेलगे सिंह व्याघ्र हाथीभी वहां आकर भय करने लगे ६।७ वेताल राक्षस भूत कूष्माण्ड प्रेत भैरव ये सब प्राणनाशन दारुण भय दिखानेलगे ८ व नाना प्रकारके भयङ्कर सिंह वहां आगये व अतिकराल दांतनिकाल २ वहां अतिभयङ्कर शब्दसे गर्जने लगे ९ परंतु महामति धर्म्मात्मा सोमशर्म्मा श्रीविष्णुजी के ध्यानसे चलायमान न हुये यद्यपि उन महारुद्र विघ्नोंसे घेरेभी गये १० परंतु द्विजोत्तम सोमशर्म्मा ध्यान करतेही रहे किंचिन्मात्रभी चलायमान न हुये बड़ेप्रचण्ड वर्षा के साथ पवन चलते जिन के कारण अतिशीत से पीड़ित होते पर अपने ध्यानहीमें तत्पररहे ११ और महाभयंकर गर्जता हुआ सिंहभी वहां आया उसको देखकर भयसे डरकर ब्राह्मण नृसिंहजीको स्मरण करनेलगे १२ जोकि इन्द्रनीलमणि के तुल्य श्याम स्वरूप पीताम्बरओढ़े महापराक्रमी शंख चक्र गदा कमल चारोंहाथोंमें धारण किये १३ व बड़े मोतियों का हार पहिने जो कि चन्द्रमाके तुल्य श्वेतथा व कौस्तुभ रत्नसे शोभित १४ दिव्य श्रीवत्ससे विराजमान हृदय से शोभित सब आभरणों की शोभासे शोभित कमलसम नेत्र १५ मन्द२ मुसुकाते हुये प्रसन्नमुख होनेसे रत्नों से अतिशोभित व अतिभ्राजमान श्रीहृषीकेशजी का ध्यान करतेरहे १६ व उन्हीं शरणागतवत्सल श्रीकृष्णचन्द्रजी का स्मरण करतेरहे व कहते थे कि देवदेव श्रीहरि के नमस्कार है हमारा भय क्याकरेगा हम आपहीकी शरण हैं १७ जिन महात्मा के उदर में तीनों लोक ये व सात नीचेवालेभी वर्त्तमान रहते हैं उन श्रीविष्णुजी के शरण में हैं हमारा भय क्या करेगा १८ जिनसे कृत्यादिक महाबलवान् भय वर्तमान होते हैं उन सब भयोंकेहर्त्ता श्रीहरिके हम शरण में हैं १९ व जो सब पापों से व दानवोंके महाभयों से विष्णु भक्तों की रक्षा सदा कियाकरते हैं हम उन्हींके शरणमें हैं २० जो सब देवता और महात्मा कृष्णभक्तोंकी जो गति हैं हम तिनकी शरण में प्राप्त हैं २१ जो भयों को नाश करके अभय करते हैं व जानकर

पापोंको नष्ट करते हैं व आप एक चन्द्रस्वरूपी शुद्धहैं हम उन्हींके शरणमें हैं २२ व जो विष्णुभगवान् व्याधियोंके नाशनेकेलिये औषध स्वरूपी हैं व आप रोगरहितहैं व सदा आनन्द से रहते हैं हम उन्हीं के शरणमें हैं २३ जो अचल होकर लोकों को चलायमान करते हैं और पापरहित होकर ज्ञानको देते हैं तिनकी मैं शरण में प्राप्तहूं भय हमारा क्या करेगा २४ और जो विश्वात्मा रोगरहित होकर सब साधुओंका पालन करतेहैं और संसारकी भी रक्षा करते हैं हम तिनकी शरण में प्राप्तहैं २५ जो सिंहरूपसे आगे भय दिखलाते हैं उन नृसिंहजीके शरणमें होकर उनके प्रणामकरते हैं २६ व जिनके शरण में मद से मत्त बड़ी देहवाला वनका हाथी आया व उसकी रक्षाकी उन गजकी परमगति शरणागतवत्सल श्रीहरिके शरणमें हैं २७ व गजका मुख धारण किये ज्ञानयुक्त पाश और अंकुश धारण किये काल के समान मुखवाले हाथीकीसी तुंडवाले श्रीविष्णुजी के शरण में हैं २८ व जिन्होंने शूकरावतार धारणकरके महाअसुर हिरण्याक्षको मारा उन शूकरजी के हम शरण हैं और शरणागतवत्सल वामनजी की हम शरणमें हैं २९ छोटे कूबरे प्रेत कूष्माण्डादिक करनेवाले श्रीवामनजी सब मृत्युरूप धारण किये हमको भय दिखाते हैं ३० व हम अमृतरूप श्रीहरिके शरणमें हैं तो भय हमारा क्या करेगा जो श्रीहरि ब्रह्मण्य ब्रह्म देनेवाले ब्रह्मा व ब्रह्म ज्ञानमय हैं ३१ उनके हम शरणहैं हमारा भय क्या करेगा भयके खण्डनकरनेवाले व दुष्टों को भय देनेवाले अभय श्रीविष्णुभगवान् के प्रपन्नहैं ३२ जिन्होंने भयरूप होकर अवतार लियाहै फिर भय हमारा क्या करेगा व जो सब लोकोंके तारकहैं व सब पापियों के मारकहैं ३३ उन धर्मरूप जनार्दनजी के हम शरणहैं जोकि रण में देवताओंको अभय देते और अद्भुत देह धारणकरते ३४ तिनकी हम शरण में हैं ये हमारी सदागति हैं यह बड़ा झञ्झारूप पवन सब ओर से महाशीत उत्पन्नकरके पीड़ित करताहै ३५ इसलिये उन पवनस्वरूप श्रीहरिके शरणमें हैं अतिशीत अतिवर्षा अतितापदायक घाम इन सबोंका रूपधारी जो हरिहै मैं उसके शरणहूं व ये सब

कालस्वरूपी भयदायक चंचलरूप सब हमको भयदेतेहैं ३६।३७ हरि स्वरूपी इन सबोंके भी शरणमें हमहैं ३८ जो सब देवोंका देव व हम सबोंका परमेश्वर केवल ज्ञानमय प्रदीपरूपहै व जो एक नारायणरूप आदिसिद्धस्वरूप है उस सिद्धेश्वर के हम शरणमें हैं ३९ इसप्रकार भक्तिसे क्लेशनाशन उन केशवभगवान्की नित्य स्तुतिकरते व ध्यान करतेहुये सोमशर्म्माने श्रीहरिको अपने हृदयमें स्थित करलिया ४० तब सोमशर्माका उद्यम व पराक्रम देखकर प्रकटहो अतिहर्षितहोकर श्रीहरि बोले कि ४१ हे महाप्राज्ञ सोमशर्म्माजी ! अपनी भार्य्यासहित हमारा वचन सुनो हम वासुदेव हैं प्राप्तहुये हैं इससे हे विप्रेन्द्र ! हे सुव्रत ! तुम हमसे वरमांगो ४२ जब श्रीहरिने ऐसा कहा तो नेत्र खोलकर सोमशर्म्माने देखा आगे घनश्याम विश्वेश्वर महोदययुक्त ४३ सब आभरणों की शोभा से युक्त सब आयुध धारण किये दिव्य लक्षणयुक्त कमल सदृश नेत्रवाले ४४ पीताम्बर धारण करनेसे विराजमान शंख चक्र गदा पद्म धारणकिये गरुड़पर आरूढ़ ४५ व महायशस्वी ब्रह्मादिकों के धारण करनेवाले व सब जगत् के धारक इस विश्वसे सदा अन्यत्र व रूपरहित जगत्के गुरु ४६ श्री हरिभगवान् खड़ेथे बस अतिहर्षितहो दण्डवत् प्रणामकर लक्ष्मीयुक्त कोटिसूर्य्यसम प्रकाशित श्रीहरिके ४७ हाथजोड़ अपनी भार्य्यासुमनासमेत स्तुतिकरनेलगे व जय२ हे मानद माधव ! जय२ यहकहा ४८॥

चौपाई ॥

जय योगीश जयाच्युत केशव । जय योगीन्द्र रमाधव मामव ॥
जय शाश्वत जय सर्व्वग देवा । जय मखमय करते तव सेवा ॥
जय सर्व्वेश्वर यज्ञ स्वरूपा । जय अनन्त नम करत अनूपा ॥
यज्ञ ज्ञान युत श्रेष्ठ जयाव्यय । ज्ञाननाथ जयजयमतिवरजय ॥
जय जय पाप विनाशन हारे । जय पुण्येश पुण्य प्रतिकारे ॥
ज्ञान स्वरूप ज्ञान गम तोरे । करत प्रणाम हरहु भय मोरे ॥
कमल नयन जय पंकजनाभा । करतप्रणाम लखत तवआभा ॥
जय गोविन्दरु जय गोपाला । शंख चक्रधर रूप विशाला ॥
गदापाणि जय नमत तुम्हारे । व्यक्ताव्यक्त स्वरूप उदारे ॥

पापोंको नष्ट करते हैं व आप एक चन्द्रस्वरूपी शुद्धहैं हम उन्हींके श-
रणमें हैं २२ व जो विष्णुभगवान् व्याधियोंके नाशनेकेलिये औषध
स्वरूपी हैं व आप रोगरहितहैं व सदा आनन्द से रहते हैं हम उन्हीं
के शरणमें हैं २३ जो अचल होकर लोकों को चलायमान करते हैं
और पापरहित होकर ज्ञानको देते हैं तिनकी मैं शरण में प्राप्तहूं
भय हमारा क्या करेगा २४ और जो विश्वात्मा रोगरहित होकर
सब साधुओंका पालन करतेहैं और संसारकी भी रक्षा करते हैं हम
तिनकी शरण में प्राप्तहैं २५ जो सिंहरूपसे आगे भय दिखलाते हैं
उन नृसिंहजीके शरणमें होकर उनके प्रणामकरते हैं २६ व जिनके
शरण में मद से मत्त बड़ी देहवाला वनका हाथी आया व उसकी
रक्षाकी उन गजकी परमगति शरणागतवत्सल श्रीहरिके शरणमें हैं
२७ व गजका मुख धारण किये ज्ञानयुक्त पाश और अंकुश धारण
किये काल के समान मुखवाले हाथीकीसी तुंडवाले श्रीविष्णुजी के
शरण में हैं २८ व जिन्होंने शूकरावतार धारणकरके महाअसुर
हिरण्याक्षको मारा उन शूकरजी के हम शरण हैं और शरणागत-
वत्सल वामनजी की हम शरणमें हैं २९ छोटे कूबरे प्रेत कूष्माण्डा-
दिक करनेवाले श्रीवामनजी सब मृत्युरूप धारण किये हमको भय
दिखाते हैं ३० व हम अमृतरूप श्रीहरिके शरणमें हैं तो भय ह-
मारा क्या करेगा जो श्रीहरि ब्रह्मण्य ब्रह्म देनेवाले ब्रह्मा व ब्रह्म
ज्ञानमय हैं ३१ उनके हम शरणहैं हमारा भय क्या करेगा भयके
खण्डनकरनेवाले व दुष्टों को भय देनेवाले अभय श्रीविष्णुभगवान्
के प्रपन्नहैं ३२ जिन्होंने भयरूप होकर अवतार लियाहै फिर भय
हमारा क्या करेगा व जो सब लोकोंके तारकहैं व सब पापियों के
मारकहैं ३३ उन धर्मरूप जनार्दनजी के हम शरणहैं जोकि रण में
देवताओंको अभय देते और अद्भुत देह धारणकरते ३४ तिनकी
हम शरण में हैं ये हमारी सदागति हैं यह बड़ा झञ्झारूप पवन
सब ओर से महाशीत उत्पन्नकरके पीड़ित करताहै ३५ इसलिये उन
पवनस्वरूप श्रीहरिके शरणमें हैं अतिशीत अतिवर्षा अतितापदा-
यक घाम इन सबोंका रूपधारी जो हरिहै मैं उसके शरणहूं व ये सब

कालस्वरूपी भयदायक चंचलरूप सब हमको भयदेतेहैं ३६।३७ हरि स्वरूपी इनसबोंके भी शरणमें हमहैं ३८ जो सब देवोंका देव व हम सबोंका परमेश्वर केवल ज्ञानमय प्रदीपरूपहै व जो एक नारायणरूप आदिसिद्धस्वरूप है उस सिद्धेश्वर के हम शरणमें हैं ३९ इसप्रकार भक्तिसे क्लेशनाशन उन केशवभगवान्‌की नित्य स्तुतिकरते व ध्यान करतेहुये सोमशर्म्माने श्रीहरिको अपने हृदयमें स्थित करलिया ४० तब सोमशर्माका उद्यम व पराक्रम देखकर प्रकटहो अतिहर्षितहोकर श्रीहरि बोले कि ४१ हे महाप्राज्ञ सोमशर्म्माजी ! अपनी भार्य्यासहित हमारा वचन सुनो हम वासुदेव हैं प्राप्तहुये हैं इससे हे विप्रेन्द्र ! हे सुव्रत ! तुम हमसे वरमांगो ४२ जब श्रीहरिने ऐसा कहा तो नेत्र खोलकर सोमशर्म्माने देखा आगे घनश्याम विश्वेश्वर महोदययुक्त ४३ सब आभरणों की शोभा से युक्त सब आयुध धारण किये दिव्य लक्षणयुक्त कमल सदृश नेत्रवाले ४४ पीताम्बर धारण करनेसे विराजमान शंख चक्र गदा पद्म धारणकिये गरुड़पर आरूढ़ ४५ व महायशस्वी ब्रह्मादिकों के धारण करनेवाले व सब जगत् के धारक इस विश्वसे सदा अन्यत्र व रूपरहित जगत्‌के गुरु ४६ श्री हरिभगवान् खड़ेथे बस अतिहर्षितहो दण्डवत् प्रणामकर लक्ष्मीयुक्त कोटिसूर्य्यसम प्रकाशित श्रीहरिके ४७ हाथजोड़ अपनी भार्य्यासुमनासमेत स्तुतिकरनेलगे व जय२ हे मानद माधव ! जय२ यहकहा ४८॥

चौपाई ॥

जय योगीश जयाच्युत केशव । जय योगीन्द्र रमाधव मामव ॥
जय शाश्वत जय सर्व्वग देवा । जय मखमय करते तव सेवा ॥
जय सर्व्वेश्वर यज्ञ स्वरूपा । जय अनन्त नम करत अनूपा ॥
यज्ञ ज्ञान युत श्रेष्ठ जयाव्यय । ज्ञाननाथजयजयमतिवरजय ॥
जय जय पाप विनाशन हारे । जय पुण्येश पुण्य प्रतिकारे ॥
ज्ञान स्वरूप ज्ञान गम तोरे । करत प्रणाम हरहु भय मोरे ॥
कमल नयन जय पंकजनाभा । करतप्रणाम लखत तवआभा ॥
जय गोविन्दरु जय गोपाला । शंख चक्रधर रूप विशाला ॥
गदापाणि जय नमत तुम्हारे । व्यक्ताव्यक्त स्वरूप उदारे ॥

जय विक्रम शोभांग मुरारे । विक्रम नायक हरु दुख सारे ॥
जय लक्ष्मी विलास जय देवा । नमो नमो करि करत सुसेवा ॥
जय विक्रम शोभा युत श्यामा । उद्यम नायक वरगुण धामा ॥
उद्यम करण जयाच्युत आजू । सकल कर्म्म उद्यत गुणभ्राजू ॥
उद्यम भोग्युद्यम त्रय धारक । नमत चरणयुग तवजनभारक ॥
युद्धोद्यम प्रवृत्त धर्म्माकर । धर्म्मरूप विनवत मतिसागर ॥
नमो हिरण्यरेत तेजोऽधिप । प्रणमत तव पद पाप दूरक्षिप ॥
अतितेजस्स्वरूप तेजोमय । दैत्यतेजनाशकरु रहित भय ॥
पाप तेजहर गोहितकारी । द्विजहितकरण सदा तनुधारी ॥
हुत भोक्ता परमात्मा स्वामी । अनल रूप विनवत वरधामी ॥
कव्य रूप नम स्वधा स्वरूपा । सदा नमत तव चरण अनूपा ॥
स्वाहा रूप यज्ञ वर रूपा । नमोनमो हम मति अनुरूपा ॥
करत शार्ङ्गधर हरि नम तोरे । पापहारि हरिये अघ मोरे ॥
सिंहविनाशन ज्ञान विलासी । विज्ञशिरोमणि सब गुणरासी ॥
पावन पुनि वेदान्त स्वरूपी । नमो नमो हम करत निरूपी ॥
नम हरिकेश क्लेशहर तेरे । केशव नमत हरहु दुख मेरे ॥
विश्वधारि पर पुरुष तुम्हारे । करत प्रणाम दहहु अघ सारे ॥
कृष्ण बुद्ध सब हर्ष स्वरूपा । आनँदमय तव रूप निरूपा ॥
नित्यशुद्ध केवल हरवन्दित । विधिपूजितसबकालविनन्दित ॥
इन्द्रादिक सुर नमित परात्मा । कृष्णनमत तवचरण दृढ़ात्मा ॥
अजित सुरेश अमृत भगवन्ता । करत प्रणाम निहोरि अनन्ता ॥
क्षीरजलधिवासी कमलाप्रिय । नम ॐकाररूप हरिकरि हिय ॥
व्यापी व्यापक व्यसनविनाशी । नमोनमो नित करत महाशी ॥
नमो वराहरु वामन रूपा । कूर्म्म नृसिंहरूप सुरभूपा ॥
सर्व्वक्षत्र नाशन द्विजरामा । करत युगलकरजोरि प्रणामा ॥
सर्व्वज्ञानमय मीन मुरारी । रावणनाशक जनभयहारी ॥
राम कृष्ण अरु बुद्ध स्वरूपा । म्लेच्छविनाशिकल्किअनुरूपा ॥
कपिलदेव हयकण्ठ तुम्हारे । व्यासदेव सब पाप सँहारे ॥
करत प्रणाम धाम निजदेहू । सदा करहु निजचरण सनेहू ॥

स्तुतिकरि पुनि कह करजोरी । जगन्नाथ जगदीश निहोरी ॥
तव अपार गुण पार न पावत । ब्रह्मा रहत सदा निन गावत ॥
रुद्र सहस्रनयन नहिं जानत । त गुण कहन हारिहियमानत॥
मैं किमि कहहुँ कहां मति पावहुँ । यासोंसवविधि विनयवतावहुँ ॥
निर्गुण सगुण कीन स्तुति तोरी । क्षमा करहु हौं दास निहोरी ॥
जन्म जन्म मोपर करु दाया । केशवहोय कबहुं नहिं माया ४१।७५

इति श्रीप॰ दोमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादेपेन्द्रेनुमनो
पाख्यानेएकोनविंशोऽध्यायः १६ ॥

## बीसवां अध्याय ॥

दो० विसयें महँ श्रीहरिकृपा सों पुत्रादिक पाय ॥
सोमशर्म्म सुख लहि कियो धर्म्म पुण्य बहु गाय १

श्रीविष्णुभगवान् सोमशर्म्माकी बड़ी स्तुति सुनकर बोले कि हे द्विज ! हम तुम्हारे तप पुण्य सत्य व इस पावन स्तोत्र से बहुत सन्तुष्ट हुये इससे जो चाहो वरमांगो १ चाहै बड़ा दुर्लभ भी वर तुम्हारे मनमें होगा पर हम देंगे जो कामना करोगे उसको हम पूरी करेंगे २ यह सुन सोमशर्म्मा बोले कि हे कृष्ण ! जो सुप्रसन्न मन से हमारे ऊपर आपकी दयाहुईहो तो प्रथम हमको यह वर मिले कि ३ जन्मजन्मान्तर को प्राप्तहोकर हम सदा आपकी भक्तिकरें व जिस लोकमें हमको आप रक्खेंगे वह मोक्षदायक अचल लोक दिखादें ४ व फिर अपने वंश का तारक दिव्य लक्षणयुत विष्णुभक्ति में तत्पर हमारे वंशका बढ़ानेवाला ५ सर्वज्ञ सब कुछ देनेवाला इन्द्रियोंको दमन करनेवाला तप व तेजसे युक्त देवता व ब्राह्मणलोगों का पालक व इन दोनों की पूजा सदैव करनेवाला ६ देवताओं का मित्र पुण्यभाव का दाता ज्ञानी पण्डित ऐसा पुत्र हमको दीजिये व हे केशव ! हमारा दारिद्य हरलीजिये ७ यह सब हमारेहो इस में सन्देह नहीं है बस यही आपसे वरमांगते हैं यह सुन श्रीभगवान् बोले कि हे द्विजश्रेष्ठ ! हमारे प्रसाद से तुम्हारे वंशके तारनेवाला पुत्र होगा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है व मनुष्यों के दुर्लभ सब

भोगों को तुम भोगोगे ८ । ९ व पुत्र उत्पन्न होनेका सुख देखते हुये सब सुख भोगोगे हे विप्र ! जब तक जीवोगे तब तक किसी प्रकार का दुःख न देखोगे १० व तुम नानाप्रकार के पदार्थ सब दोगे व आप सब पदार्थ भोगोगे व गुणों के बड़े ग्राहक होगे इसमें सन्देह नहीं है व सुन्दर किसी तीर्थ में मरकर परमगति पावोगे ११ स्त्रीसहित ब्राह्मण को ऐसा वरदेकर श्रीहरि अन्तर्द्धान होगये व स्वप्न सा सब दिखाई दिया १२ व अपनी सुमना स्त्रीके साथ ब्राह्मणोंमें उत्तम सोमशर्म्मा नर्म्मदाके तीर पुण्यदायक तीर्थ में १३ जिसका अमरकण्टक नाम है दान पुण्य करने लगे व बहुत दिनों तक ऐसा पुण्यदान करते हुये सोमशर्म्मा ने १४ अपने आगे कपिला व नर्म्मदाके सङ्गम में स्नान करके निकले हुये एक श्वेत रङ्गके हाथी को देखा १५ जो कि सुन्दर प्रकाशित दिव्य स्वरूप सुन्दर मदयुक्त गज लक्षणों से युक्त नाना प्रकारके भूषणों से भूषित बड़ी शोभासे युक्त १६ सिन्दूर कुंकुम उसके मस्तकमें लगाहुआ था व सुवर्णकी झूल उसके ऊपर पड़ी जिसमें नीलमणि बीच बीच में जटित थे व ऊपर पताका लगीथी १७ व उसके ऊपर अच्छी दीप्तिवाला सुन्दर लक्षणयुक्त सब आभरणों से भूषित सुन्दर माला और वस्त्र धारण किये सुन्दर चन्दन लगाये अत्यन्त सुन्दर पूर्ण चन्द्रमा के समान छत्र और चामर संयुक्त एक दिव्य पुरुष बैठाथा सिद्ध चारण और गन्धर्वों से स्तुति किये गये मंगलरूप हाथीपर चढ़े जाते हुये हाथी समेत सुन्दर दिव्य लक्षणयुक्त पुरुषको देख विस्मययुक्त सोमशर्म्मा ने विचारा कि सुन्दर अङ्गवाला अच्छा व्रतधारे राह में प्राप्तहोकर कौन पुरुष जाताहै यह ये चिन्तनाही करते थे कि वह उन्हीं के द्वार पर आया १८ । २२ व उनके गृहमें पैठने के समय दिव्यरूप होगया जैसा कि देवताओं का रूप होताहै तब बड़े हर्ष से युक्तहो द्विजों में उत्तम सोमशर्म्मा २३ धर्म्मात्मा अपने गृहको चले जैसे घरके द्वार पर आये फिर उस हाथी को उन्हों ने न देखा २४ केवल उसके ऊपर से अतिसुगन्धित कुछ पुष्प गिरपड़े थे उन्हें उन्हों ने देखा व गृह में जानेपर अपने आँगन में दिव्य वस्त्र नानाप्रकार के ठौर ठौर

पड़े धरेदेखा २५व देखा कि सब गृह चन्दन व कुंकुम और पुण्यकारी सुगन्धोंसे पुताहुआहै व आँगनमें दूब अक्षत बहुतसे पड़ेहुयेहैं २६ यह सब देख सोमशर्म्मा बड़ी चिन्ता से युक्त हुये व सुमनाको भी देखा तो दिव्य माङ्गलिक भूषणादिकों से भूषित बैठीथी उस से वि-स्मितहो अपनी स्त्री से बोले २७ कि ये दिव्य भूषण तुमको किसने दिये शृङ्गार व रूपकी सुन्दरता वस्त्र अलङ्कारादि किसने दिये २८ हे भद्रे! इसका कारण निश्शङ्क होकर हमसे कहो ऐसा अपनी भा-र्य्या से कह वे द्विजोत्तमजी विश्राम कररहे २९. त । सुमना बोली कि हे कान्त ! सुनो एक उत्तम ब्राह्मण दिव्यरूप धारण किये श्वेत गज पर चढ़ा दिव्य भूषणोंसे भूषित ३० दिव्य चन्दनादि गन्ध अङ्गों में लगाये दिव्य शोभासे युक्त नहीं जानती कि कोई देवथा जिस की सेवा सब गन्धर्व्वलोग करते थे ३१ व देवता गन्धर्व्व चारण लोग सब ओर से स्तुति करते थे सो वह हमारे गृहमें आया उसके सङ्ग पुण्यरूपवाली शृङ्गारसंयुक्त ३२सब भूषणोंसे भूषित पूर्णमनोरथ वाली बहुतसी स्त्रियां भी थीं सब सब आभरणोंसे युक्तथीं व सबों के पूर्णमनोरथये उनसबोंसे व उस महात्मा पुरुष से हम संयुतहुईं ३३ उन सबों ने एक अति दिव्य सब शोभासहित चौतरा रत्नोंसे ब-नाया उसके ऊपर एक दिव्य आसनपर हमको उसपर बैठाया व ब्राह्मणोंसे हमको हनवाया ३४ व सबोंने वस्त्र भूषणादि हमें दिये व पहिनाये फिर वेदोंके मङ्गल पाठपढ़े व पुण्यवाचन शास्त्रोंके भी माङ्ग-लिक स्तोत्रादि सुनाये व बहुत गाना बजाना३५व बलों से चारों ओर से घेरकर सबोंने अच्छीतरह हमको फिर हनवाया और सब अंतर्द्धान होगये फिर सबके सब हमसे आकर बोले ३६ कि हे कल्याणि! हमसब सदैव तुम्हारे घरमें बसेंगे तुम सर्वदा पति समेत पवित्र होवो ३७ ऐसाकर वेसब चलेगये यह हमने देखा सो तुमसे कहा उस अपनी स्त्री का कहा हुआसुन महामति सोमशर्म्मा ३८ फिर चिन्ता करनेलगे कि क्या यह सब किसी देवताने बना दिया ऐसा चिन्तवनकर व विचारांशकर महाशांतिवाले सोमशर्म्मा ३९ अपने धर्म्म कर्म्म करनेमें फिर लगगये व होते२ उनसे उनकी महा-

भागा पतिव्रता स्त्रीने गर्भ धारण किया ४० उस गर्भके धारण करनेसे वह देवीसुमना अधिक शोभित होनेलगी फिर समयपर उस तेजकी ज्वाला समेत स्त्री ने सुन्दर दीप्तिमान् देव समान पुत्र उत्पन्न किया उस पुत्रके होनेके समय अन्तरिक्ष में देवताओंके नगारे बाजे ४१।४२ व बड़े देवोंने शंख बजाये गन्धर्व लोगोंने ललितराग गाया व अप्सरा लोग सब मिलकर नाचने लगीं ४३ तब सब देवताओं को सङ्गलिये ब्रह्माजी वहां आये व उस पुत्र का नामकरण किया व कहा कि आपका सुव्रत नामहै ४४ इस प्रकार नाम धराकर सब बड़े तेजस्वी देवगण स्वर्ग्गको चलेगये जब सब देवगण चलेगये तो सोमशर्म्माने जातकर्म्मादि सब कर्म्म अपने पुत्र के किये जब देवताओंका बनाया हुआ सुव्रत नामपुत्र सोमशर्म्माके हुआ ४५।४६ तो उनके गृहमें महालक्ष्मीके वास करने से धन धान्य सब भरहुआ हाथी घोड़े महिषी धेनु सुवर्ण रत्न ४७ सब पदार्थ घरमें होगये इससे धनके संचयों से कुबेर कासा गृह शोभित होनेलगा सोमशर्म्माके गृहमें सारे धनके वही शोभा होगई जो कुबेरके गृहमें है ४८ इससे वे ब्राह्मणदेव ध्यान पुण्यादिक कर्म्म करनेलगे और अनेक प्रकारकी पुण्यसे युक्त होकर तीर्थयात्राको भी गये ४९ और ज्ञान पुण्य युक्त बुद्धिमान् श्रेष्ठ ब्राह्मण और भी पुण्य दान करतेभये ५० इस प्रकार बार २ धर्म्म करतेथे व पुत्रका पालन करते व पुत्रके जातकर्म्मादि समय २पर बराबर करते थे ५१ फिर बड़े हर्षसे पुत्र का विवाह कराया तब पुत्रके भी गुणवान् शुभ लक्षणके बहुतसे पुत्र हुये ५२ सब सत्य धर्म्म तप युक्त व दान धर्म्म में सदैव रतहुये सोमशर्म्मा ने उन सब अपने पौत्रों के भी जातकर्म्मादि किये कराये ५३ व उन पौत्रों के सुखसे महाभाग्यवाले सोमशर्म्मा अति हर्षित रहने लगे व सब सुखों के संयोगसे वृद्धता व कोई रोग उनको हुआही नहीं ५४ सूर्य के तेजके समान महामति सोमशर्म्मा का शरीर सदा पच्चीस वर्षकी अवस्थाका बनारहा व शोभित रहा ५५ व वह देवी सुमनाभी पुण्य मङ्गलोंसे वैसेही शोभित रही पुत्र पौत्रोंके साथ दान व्रत संयम करती रही ५६ व पातिव्रतादि धर्म्मों से वह

विशालनयनी अति शोभित होती थी सदा तरुण अवस्थासे युक्त बनीरही जैसे सोलह वर्षकी स्त्रियां होती हैं ५७ इससे वे दोनों स्त्री पुरुष सुन्दर सङ्कोंसे व सदा नवीन अवस्था बनीरहनेसे अत्यन्त मोद करतेथे व सदा वे पुण्यात्मा महाहर्षसे युक्तरहे ५८ ॥

चौ० इमिदोनोंके वृत्तसुहावन । पुण्यचरितयुत अतिमनभावन ॥
तुमसनकह्योसकलमुनिपुञ्जा । ज्याहिसुनिहोत पापसबलुञ्जा ॥
अवतासुतसुव्रतके चरिता । कहतभलीविधि सों आदरिता ॥
जिमिसोनारायणआराधन । करिकैभयहुरहितभवबाधन ५९।६०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेपन्द्रेसुमनोपाख्यानेसुव्रततपचरित्रविंशोऽध्यायः २० ॥

## इक्कीसवां अध्याय ॥

दो० इक्किसयें महँ बाल्यके सुव्रत चरित अनेक ॥
हरिपूजनवन्दनस्तवन आदिकहैकरिटेक १

सूतजी बोले कि एकसमय अत्यन्त विख्यात व्यासदेवजी जगत् के पति ब्रह्माजी से सुव्रतका सब चरित पूछते भये १ कि हे लोकात्मन् ! हे लोकविन्यास ! हे देवदेव ! हे महाप्रभो ! इससमय सुव्रत का चरित सुनने की इच्छा है २ तब ब्रह्माजी व्यासजी से बोले कि हे व्यासजी ! हे महाभाग्यवाले ! तपस्या सहित सुव्रत विप्र का उत्तमचरित हमसे सुनो ३ सुव्रतनाम मेधावी ने बाल्यावस्थाही से बड़ीउत्तम चिन्तनाकी व गर्भहीं में टिकेहुये उन्होंने पुरुषोत्तम नारायणजी के दर्शन किये ४ पूर्वजन्म के कर्म्मों के अभ्यास से गर्भ हीमें हरिका ध्यानकिया शंख चक्र धारण कियेहुये पद्मनाभ अतिपुण्य देनेवाले श्रीहरिका ५ ध्यान बड़ी चिन्ता से करते व मन में उनके चरित गाते मुख से स्तोत्र पढ़ते इस प्रकार श्रीहरिका ध्यान वे द्विजसत्तम सदैव करते थे ६ जब उत्पन्नहुये तो सब बालकों के सङ्ग उत्तम क्रीड़ा करनेलगे बालकों के व अपनानाम श्रीहरिके सम्बन्धके धरादिये ७ जिस मित्रको वे महामतिवाले पुकारें तो हरिही के नामसे पुकारें जो नाम उन्होंने धरायाथा इसप्रकार धर्म्मात्

पुण्यवत्सल वे सदा करते ८ भो केशव ! हे माधव ! हे चक्रधारिन् ! हे पुरुषोत्तम ! यहां आओ हमारे साथ खेलो ९ व हमारेसाथ चलो हे मधुसूदन ! इसीप्रकार वे ब्राह्मणदेव अपने मित्रोंको हरिही के नामोंसे पुकारते १० सो इसीतरह वे ब्राह्मणदेव क्रीड़ा करनेमें कभी पढ़नेमें हास्य करने में लेटजानेपर गीतगाने में व नृत्यआदि देखने में हरिही के नामों का कीर्त्तन करते वाहनपर चढ़ने के समय आसनपर बैठने में ध्यान करने में सलाह देनेमें ज्ञान बतानेमें व और भी सब सुकर्म्मों के करने में ११ इसीप्रकार जगन्नाथ जनार्दन जी को देखें व पुकारें भी व विश्वनाथ महेश्वर उन्हीं श्रीहरि अकेलेका ध्यानकरें १२ तृण काष्ठ पाषाण शुष्कहो वा आर्द्रहो सबमें केशव को ही देखते व वे धर्म्मात्मा सब कहीं कमलेक्षण गोविन्दही को पुकारते १३ आकाश में भूमिके मध्यमें पर्व्वतों पर वनों में जल में स्थलमें पत्थरमें व सब पश्वादि जीवोंमें भी १४ सुमनाकेपुत्र सुव्रत ब्राह्मण नृसिंहही को देखते बालक्रीड़ा को प्राप्त होके ऐसेही प्रतिदिन रमण कियाकरें १५ व सुन्दर रागों के गीतों से मधुरस्वर से कृष्णही का गानकरें लय तालोंसेयुक्त स्वरमूर्च्छादिकों समेत रागों से गावें १६ एकसमय सुव्रतजी बोले व यह गीत गानेलगे कि ॥

हरिगीतिका ॥

बेदवादी सकल बुधजन सततध्यावतजाहि को ।
ज्यहिअङ्गअङ्गसुरारिजीके बसतजगबहुताहिको ॥
सकलपाप कलाप नाशन योगपति भगवन्तके ।
हमहोत शरणविहाय औरनमधुदमन श्रीकंतके १७
सकल लोकन महँ विराजत जो चराचर पालई ।
ज्यहिमाहिंलोकअशेषराजत गुणनिधानकहावई ॥
सबदोषरहितपरेशअगजग बसतनिर्भयह्वैजहां ।
ताकेचरणयुग नमतहों नित और जाहुँ कहौंकहां १८
वेदान्तशुद्ध विशुद्धमति बुधजन हि नारायणकहैं ।
गुणधाम पूरणकाम रामनमामहम सबसुखलहैं ॥
संसारसागर अतिअपार उतारहित चितदैसही ।

हमकरतबहुतप्रणामकेशवद्रवहुसुनिसवमोकही १९
योगीन्द्र मानस है सरोवर राजहंस तहां हरी ।
अरुशुद्धरूपप्रभावजगमहँ नाहिंजानतइमिकरी ॥
ताकेचरणयुग शरणकौनित नमतहैं चितमें धरी ।
सोकरहु रक्षामेशहमरी चहत नित आदरकरी २०
जोशुद्धवेद अनन्तअद्वय सकलधर्म्मसमन्वितम् ।
सबलोगगुरुसुरईशकेशव अमितवीर्य्यसुसंयुतम् ॥
सुरगीतगीतअलापकरि श्रीरङ्गभुवनाधिपगुनी ।
गावतमनावतचरित तवनित कबहुँश्रवणपरेधुनी ॥
दुखअन्धकार पसार नाशनहेतु चन्द्रसमानहै ।
सबविश्वकरतप्रकाश दिननिशिप्रभुपरेशमहानहै ॥
सम्पूर्ण अमृतकला कलापन सोसदा सुविकाशहै ।
त्यहिशरण शरणागतकृपाकर सकलजगतप्रकाशहै ॥
शुभयोग युक्त विशेष इन्द्रिय गणनसों जग देखई ।
चरअचरजीव अजीवकहँ विधिसों निरन्तरपेखई ॥
नहिंलखतमखतसुपापिगणत्यहिकरतकोटिउपायहू ।
त्यहिशरणअशरणशरणजूकेजातविगतअपायहू २१ ।२४

इसप्रकार दोनों हाथोंसे ताड़ी बजाय ताल लगाय गाय २ श्री कृष्णजी को गीतोंसे रिझाय २ बालकों के संग प्रमोद करतेथे २५ इस तरह बालभाव से सदा क्रीड़ामें रतरहते थे सुमनाके पुत्र सुव्रतजी सदा विष्णु के ध्यान में परायण रहते २६ इसप्रकार खेलते हुये शुभलक्षण विचक्षण सुव्रतको आतेहुये देख सुमना कहती थी वत्स भोजनकरो तुमको क्षुधा पीड़ित करती होगी २७ तब वे परमप्राज्ञ अपनी माता सुमनासे फिर कहते थे कि हम श्रीहरिके ध्यान रसके महा अमृत से तृप्तहैं २८ फिर भोजनके आसन पर बैठकर मिष्टभोजन के पदार्त्थ देखकर कहते थे कि यह अन्न स्वयं विष्णु रूपहै व आत्मा अन्नमें स्थितहै २९ सो आत्मा के रूप इस अन्नसे श्रीविष्णुभगवान् तृप्तहों जिन विष्णुभगवान् का क्षीरसागर में सदा वास रहताहै ३० इस पुण्यजल से वे केशवभगवान् तृप्तहों व इन

मनोहर पुष्प ताम्बूल चन्दन सुगन्ध से आत्मरूप श्रीकेशव विष्णु तृप्तहों जब शयन करनेको जातेथे तब दिव्य शय्या देखकर विष्णु जीकी चिन्तना करते ३१ । ३२ कि इस शय्यापर शयन करतेहुये जलशायी भगवान् के हम शरणमें हैं इसप्रकार भोजन करने के समय वस्त्रधारण करने के आसनों पर बैठने के व शयन के समय ३३ सदा श्रीहरिका स्मरण करके उन्हींके निवेदन सब पदार्थोंको करते और धर्मात्माजी युवावस्था पाकर कामभोगों को छोड़कर ३४ फिर पवित्र पापनाशन जहां सिद्धेश्वर नाम लिङ्ग रुद्रजीका है व जहां अमरेश्वर व ॐकारेश्वर नाम लिंगहैं नर्म्मदाके दक्षिणतीरपर उत्तम वैडूर्यपर्वत में सिद्धेश्वरनाथ भी हैं वहीं जाकर सुव्रतजी तप करनेलगे ३५ । ३७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐन्द्रेसुमनो पाख्यानेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

## बाईसवां अध्याय ॥

दो० बाइसयें महँ पूर्वजनि सुव्रत कथा प्रसंग ।
तहँ धर्म्माङ्गद बहुरि रुक्मांगद चरितसुढंग १

इतनी कथा सुन व्यासजीने ब्रह्माजी से पूँछा कि हे महाभाग ! एक प्रश्न हम करते हैं आप उत्तरदें आपने पूर्वसमय में कहाथा कि सुव्रत ईश्वरहैं १ व पूर्वजन्म के अभ्यास से उन्होंने अनामय श्रीनारायणजी का ध्यानकिया सो अब कहिये कि पूर्वजन्म में सुव्रत किस जातिमें उत्पन्न हुयेथे २ वह हमसे इससमय कहो व उन्हों ने कैसे श्रीहरिकी आराधनाकी व इन्होंने कौन पुण्यकिया जिससे देवदेवेश श्रीविष्णु प्रसन्न हुये ३ यह सुन ब्रह्माजी बोले कि बहुत धन समृद्धियुक्त अतिपुण्य वैदिश नाम नगरमें महातेजस्वी अति बली ऋतध्वजका पुत्र राजा हुआ ४ उसके महाप्राज्ञ रुक्मांगद नाम अतिप्रसिद्ध पुत्रहुआ उसकी स्त्रीका सन्ध्यावली नामथा यह उसकी धर्म्मपत्नी बड़ी यशस्विनीथी ५ उसमें राजाने अपने तुल्य पुत्र उत्पन्नकरके उसका धर्म्माङ्गद नाम धराया ६ यह रुक्मांगदका

पुत्र सब लक्षणों से सम्पन्न पिताकी भक्तिमें परायण व हृषीकेशजी की भक्तिमें निरत हुआ ७ जिसने अपने पिताके सुखके लिये मोहिनी को अपना शिर देदिया था उसके वैष्णवधर्म्म में व पिताकी भक्ति से ८ हृषीकेश भगवान्‌ने प्रसन्न होकर सदेह उसे वैष्णवपदको भेज दियाथा व सब धर्म्मकरनेवाले उस वैष्णवको सब भागवतोंमें श्रेष्ठ समझाथा ९ उन महाप्राज्ञ प्रज्ञा व ज्ञानमें विशारद धर्म्मांगदजीको जब सशरीर श्रीहरिने वैष्णवलोक को भेजाथा वहां निवास करके धर्म्मभूषण महाधर्म्मवाले उन्होंने १० दिव्य नानाप्रकारके सुखभोग जब सहस्रयुग भोग करते२ बीते तो वे धर्म्मात्मा धर्म्मके भूषण ११ उस विष्णुपद से भ्रष्टहुये व विष्णुजी के प्रसादसे आकर सुमना के आनन्द बढ़ानेवाले सोमशर्म्माके पुत्र महाबुद्धिमान् सुव्रत के नाम से प्रसिद्धहुये व सब भागवतों में श्रेष्ठहुये व जाकर श्रीविष्णु में मन लगाकर तप करनेलगे १२।१३ काम क्रोधादि दोषों को उन द्विजोत्तम ने छोड़दिया व अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर निरन्तर तप करनेलगे १४ सिद्धेश्वर के समीप जो श्रेष्ठ वैडूर्य्य नाम पर्व्वत है उसीपर तप करने का प्रारम्भ उन्हों ने किया अपने मन को एकाग्रकर श्रीविष्णुजी के साथ मिला दिया १५ व सौ वर्षतक उन महात्मा श्रीहरिका ध्यान करते रहे तब शंख चक्र गदा धारण किये श्रीजगन्नाथजी ने अतिप्रसन्नहो १६ लक्ष्मी सहित वहां आकर उनको वर दिया कहा कि हे धर्म्मात्मा देवताओं में श्रेष्ठ सुव्रत! जागो २ समझो समझो १७ वर मांगो हम कृष्णहैं तुम्हारे समीप आये हैं ऐसा श्रीविष्णुजीका उत्तम वचन सुनकर १८ व जनार्दन जी को देखकर वे मेधावी सुव्रतजी बड़े हर्ष से युक्त हुये व दोनों हाथ जोड़कर उन्हों ने श्रीहरिके साष्टांग प्रणामकिया १९ व सुव्रत बोले भी कि हे जनार्दन! बड़े २ दुःख जालरूपी बड़ी २ लहरियों से युक्त व विविधप्रकारके मोहतरङ्गों से भरे व सब दोषगण बड़े २ मत्स्यों से युक्त इस संसारसागर में पड़ेहुये हम दीन का उद्धार करो २० व हे मधुसूदन! नानाप्रकार के कर्म्म मेघों के गर्ज्जते व वर्षते में पातकों के संचयोंसे व्याकुल व चलायमान व मोहान्धकार

परदों से नेत्र मूँदगयेहुये हम दीनका हाथ पकड़ो हमें कुछ दिखाई नहीं देता २१ हे कृष्ण! अति दुःखों से भरेहुये इस संसाररूप सघन वन में भूलेहुये व मोहमय सिंहों से व्याकुल व करुणारूप बहुतसी ज्वालाओं के बीच में बहुधा पड़जाने से डरेहुये हमारी रक्षाकरो २२ हे भगवन्! हे मुरारे! यह संसारवृक्ष बहुत पुराना व ऊँचा है माया इसकी जड़ें हैं दीनता व नानाप्रकारके दुःख शाखायें हैं व स्त्री आदि का संग इसके फलहैं ऐसे वृक्षपर चढ़कर नीचे गिरेहुये हमारी रक्षाकरो २३ हे कृष्ण! विविधप्रकारके मोहमय धूमों से युक्त दुःखों के अग्नि से जो कि शोक वियोग मरणादिकों के तुल्य है हम जले जाते हैं ज्ञानरूपी बादलों से स्नान करा के हमको सदैव मोक्ष देवो २४ हे केशव! घोर अन्धकार के परदे से ढँकेहुये इस बड़ेभारी संसार गढ़े में गिरेहुये व महाभय से आतुर हम दीन की रक्षाकरो क्योंकि तुम्हारी शरण में आये हैं २५ हे भगवन्! जो लोग निश्चलमानसभावसे युक्तहो ध्यानसे व ज्ञानयुक्त मनसे तुम्हारी पदवीको पाते हैं वे धन्यहैं क्योंकि तुम्हारे पादयुगलों का ध्यान सदा देव किन्नरगण कियाकरते हैं २६ सो ऐसेही हमारी इच्छा को पूरीकरो हम और देव को न कहैं न भजें और न चिन्तनकरैं तुम्हारे युगल चरणारविन्दों के निरन्तर प्रणाम करतेहैं व हमारे पाप के सब संचय दूरहों व जन्म२हमतुम्हारे दासोंके दास हों आपके चरणकमलोंको सदैव स्मरण करतेहैं२७।२८व हे कृष्ण! हे प्रभो! जो हमारे ऊपर प्रसन्नहुये हो तो हमको यह सुन्दर वरदो कि हमारे माता पिता को शरीर सहित अपनेधामको लेचलो २९ व हम कोभी सशरीर उन्हींके संग अपने धामको पहुंचाओ बस और कुछ भी वर हम नहींचाहते इसमें सन्देह नहीं है यह सुन श्रीकृष्ण जी बोले कि बहुत अच्छा ऐसाही हो यह तुम्हारा कार्य्य अवश्य होगा इस में कुछ संशय नहीं है ३० उन सुव्रतजी की भक्ति से हृषीकेश जी बहुत संतुष्टहुये व सोमशर्म्मा व सुमना दोनों उष्णता व नाश से रहित श्रीविष्णुजी के लोक को चलेगये ३१ व सुव्रतभी उन्हीं अपने पिता माता सोमशर्म्मा व सुमना के संग सदेहही श्रीहरि-

पुरको गये व जबतक दो कल्प बीते तबतक वे सुव्रत ब्राह्मण ३२ दिव्यलोक में नानाप्रकार के दिव्यभोग भोगतेरहे फिर स्वर्गलोक में देवताओं का कार्य्य करने के लिये कश्यपजी के गृह में फिर ३३ उन्हीं विष्णुभगवान् के कहने से उत्पन्न हुये व उन्हीं महात्मा विष्णु के प्रसाद से ऐन्द्रपद भोगनेलगे ३४ वहांउनका वसुदत्त नामहुआ व सब देवगण उनके नमस्कार करनेलगे क्योंकि इन्हीं वसुदत्तहीका दूसरानाम इन्द्रभी है सो जो आजकल ऐन्द्रपद को भोग करते हैं ३५ हे व्यास ! यह तुमसे सृष्टि के सम्बन्धका कारण हमने सुनाया और भी जो कुछ तुम पूछोगे सो सब कहेंगे ३६ व्यासजी बोले कि महाबुद्धिमान् बलवान् रुक्मांगद का पुत्र धर्मांगद प्रथमसत्ययुगमें सृष्टि समय में उत्पन्न होकर इन्द्रहुआ ३७ हे देवदेवेश ! वह कैसे पृथ्वी में और धर्मांगदहुआ और धर्म्मांगद राजा देवताओंका स्वामीथा ३८ इस बातमें हमको बड़ासन्देहहै उसे आप कहनेके योग्य हैं ब्रह्माजी बोले कि हम तुमसे सब सन्देहोंका नाशनेवाला वृत्तान्त कहेंगे ३९ यह सब देव श्रीविष्णुजीकी लीला देखने के लिये संसार बनाहै जैसे सूर्य्यादिवार शुक्ल व कृष्ण दोपक्ष बारहमास हेमन्तादि छःऋतु ४० संवत्सर मनु ये सब बने हैं इन्हीं के प्रमाणसे अयुतों युग बीतजाते हैं उनके पीछे कल्प होताहै तब हमजाकर जनार्दन जीमें लीनहोजाते हैं ४१ व हमसें सबचराचर यह विश्व लीन होजाता है फिर वह योगात्मा परमेश्वर श्रीविष्णु हमआदि सब विश्व की रचनाकरता है ४२ फिर हमहोते तदनन्तर वेद होते हैं फिर देवगणहोते हैं फिर और ब्राह्मणलोग उत्पन्न होते हैं व ऐसेही सब राजालोग भी प्रत्येककल्प में उत्पन्नहोकर अपने २ चरित करते हैं ४३ इस प्रकार सब होतेजाते रहते हैं हे महाभाग ! इसविषय में विद्वान्लोग मोहित नहींहोते पूर्व्वके कल्पमें जैसे महाभाग रुक्मांगदराजा हुआथा ४४ ऐसेही धर्म्माङ्गद महाख्यातिमान् द्विजहुआथा इसीप्रकार श्रीरामचन्द्रादिक महाराजाधिराज हुये व ययाति नहुषादि बहुतराजा हुये ४५ व महात्मा स्वायम्भुवादि मनुहुये व फिर नाश को भी प्राप्तहुये व इनमें ऐन्द्रपद वे धर्म्मात्मा राजा भोगते हैं

४६ जैसे कि महावीर धर्म्मांगद राजाने भोगाहै ऐसे ही वेद देवता पुराण व स्मृतियांभी सब ऐन्द्रपद अपनी २ पारीपर भोगती हैं ४७ हे द्विजश्रेष्ठ! यह सब तो प्रत्यक्ष तुम्हारे आगे सुव्रतका पुण्यकारी अच्छी गतिका देनेवाला चरित हमने कहा अब तुम्हारे आगे अप्रत्यक्ष समाचार कहेंगे सुनना ४८ । ४९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणे द्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेऐन्द्रेसुव्रतोपाख्यानं नामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

## तेईसवां अध्याय ॥

दो० तेइसयें महँ दैत्यवध लखि दितिभई उदास ॥
नियम सहित बलनामसुत उपजायहु सुरत्रास १
कीन महातप ताहिसुनि अदिति पुरन्दर पाहिं ॥
हसन कह्योत्यहिसोहत्यो यहकहगुनिमनमाहिं २

इतनीकथा सूतसे सुनकर ऋषिलोगोंने फिर सूतसे प्रश्नकिया कि तुमने धन्य पुण्य व यश फैलाने वाली यह बड़ी विचित्र कथा कही व सब पापहरनेवालीभी है क्योंकि आप कहनेवालोंमें बड़ेश्रेष्ठ हैं १ हे सूतनन्दन! जैसे पूर्व्व में सृष्टिका सम्बन्ध तुमने विस्तार से कहाथा वैसेही फिर हम तुमसे सृष्टिकासम्बन्ध सुनाचाहते हैं २ सूत जी बोले कि सृष्टिके संहार का कारण हम विस्तारसे कहेंगे जिसके केवल सुननेहीसे नर सर्व्वज्ञताको प्राप्त होजाता है ३ जब हिरण्यकशिपुने बलिकाकहा न मानकर श्रीहरिसे वैरबांध बड़ीभारीतपस्या की तो उसके तपसे तीनोंलोक व्याप्तहोगये व तपस्यासे ब्रह्माजी की आराधना करके उसने बड़ादुर्ल्लभ वरपाया ४ जिस में देवता गंधर्व्वादि ब्रह्माकी सृष्टिभरसे उसको अमरता मिलगई इससे देवताओंको स्वर्गसे निकाल तीनोंलोकों की इन्द्रता आपही भोगने लगा ५ तब देवता गन्धर्व्व वेदपारगामी मुनिलोग नाग किन्नर सिद्ध व यक्ष तथा और सब देवताओंकी जातियां ६ ब्रह्माजीको सङ्ग ले श्रीनारायण प्रभुके समीपगये जो कि क्षीरसागर में योगनिद्राको अपनी इच्छासे ग्रहणकरके शयन कररहेथे ७ उनको बड़े २ स्तोत्रों

से जगाकर सब देवगण हाथ जोड़ कर खड़ेहुये व उनके जागनेपर उस दुष्टात्मा हिरण्यकशिपुका सब वृत्तान्तकहा ८ व जगत्पति श्री नारायणने सुनकर नृसिंहका रूप धारणकरके उस हिरण्यकशिपु को मारडाला ९ व फिर वाराहरूप धारणकर महाबल हिरण्याक्षको भी विदारणकिया पुण्यकारी पृथ्वी को लेआये उसीमार्ग में उसअसुर कोभी माराथा १० व अन्यभी घोरदर्शन बहुतसे दानवोंको उन्होंने मारा इसप्रकार जब बड़े २ सब दानव नष्टहोगये ११ व और भी दुष्ट दितिके जब सबपुत्र नष्ट होगये व देवगण फिर अपने स्थान को प्राप्तहुये १२ यज्ञ व धर्म्म कर्म्म यथावस्थित ठौर २ होनेलगे व सबलोग अच्छेप्रकार स्वस्थ होगये तब दैत्योंकी मातादिति बड़े दुःखसे पीड़ितहुई १३ पुत्रों के शोकसे सन्तप्तहो हाहापुत्रो ! ऐसा कहकर मूर्च्छित होगई फिर कुछ चैतन्य होकर अपने सूर्य्य समान प्रकाशित तप और तेजयुक्त दाता और महात्मा कश्यपपतिसे बड़ी भक्तिसे प्रणामकरके हाथजोड़ उनमहातपस्वी महामतिकश्यपजी से बोली १४।१५ कि हे भगवन्! विष्णुने हमको बिनापुत्रों की करदिया दैत्यों व दानवोंको देवताओंसे मरवाडाला १६ हे मुनिसत्तम! अब हम पुत्रोंके शोकके अग्निसे सदाजलाकरतीहैं हे विभो! हमारे आनन्दके करनेवाला व सबका तेज हरनेवाला १७ सुबल सर्व्वांग सुन्दर देवताओंकी दीप्तिकेसमान दीप्तिवाला बुद्धिमान् सब कुछ जाननेवाला ज्ञाता व महापण्डित १८ तप तेजसमेत सुबली सुन्दर लक्षणवाला ब्रह्मण्य ज्ञानवेत्ता देव व ब्राह्मणोंकी पूजाकरनेवाला १९ व सब लोकों को जीतनेवाला व हमारे आनन्दके करनेवाला व सर्व्व शुभलक्षणों से युक्त पुत्र हमको दीजिये २० दितिका ऐसा उत्तम वचन सुनकर कश्यपमुनि उस दुःखित दितिके ऊपर कृपायुक्तहो बहुत सन्तुष्टहुये २१ व उस दीनमनवाली अतिदुःखित दितिसे उसके शिरपर अपना हाथ धरके भावमें तत्पर उससे बोले २२ कि हे महाभागे! जैसा पुत्र तू चाहती है वैसाही होगा यह कह वे तो सुमेरु पर तप करने चले गये २३ व वहां जाकर उन कश्यपजीने निरालंब होकर परम व्रत साधनकर बड़ी तपस्याकी व इस अन्तरमें दितिने बड़ा उत्तम

गर्भ धारणकिया २४ व सब धर्म जाननेवाली चारुकर्म करनेवाली परमयशस्विनी उस दितिने सौ वर्षतक गर्भ धारणकिया इससे उसका गर्भ बहुत पवित्र व प्रकाशित हुआ २५ उसका उत्पन्न किया हुआ पुत्र ब्रह्मतेज से युक्त हुआ तब बड़े हर्षसे युक्तहो कश्यपमुनि वहां आये २६ व उस पुत्रका महामेधावी कश्यपजीने बल नाम धराया जैसा उस पुत्रका बल नामथा उसी के तुल्य वह बलवान् भी एकही हुआ २७ इसप्रकार नामकरण करके फिर उसका यज्ञोपवीत भी कश्यपजीने किया फिर उससे कहा कि हे महा भाग्यवाले हमारे पुत्र ! अब तुम जाकर ब्रह्मचर्य साधनकरो २८ उसने कहा बहुत अच्छा द्विजोत्तम हम तुम्हारे वाक्य से ऐसाही करेंगे तब प्रथम उस बलने सब वेद पढ़े २९ तदनन्तर जाकर सौ वर्षतक बड़ी भारी तपस्या उसने की फिर तप और तेजयुक्त हो माताके पास आया ३० उसका ब्रह्मचर्य्य से अतितीव्र वीर्य्य देखकर दिति बड़े हर्ष से युक्त हुई मारे आनन्दके फूलीहुई अंगों में न समाती थी ३१ इससे एकदिन उस परमतपस्वी बलनाम पुत्रसे बोली जोकि बड़ा मेधावी महात्मा व प्रज्ञा ज्ञानसे युक्तथा ३२ कहा कि हे वत्स ! अब तुम्हारे जीनेमें हमारे सब पुत्र जीतेहैं जिन हिरण्यकशिपु आदिकों को विष्णुने मारडाला था ३३ इससे हे पुत्र ! अब वैरको सिद्धकरो संग्राम में देवताओंको मारडालो फिर उस महाबली बलनाम पुत्रसे दानवों की माता दनु आकर बोली कि ३४ हे पुत्रक ! प्रथम तो सब देवताओंके स्वामी इन्द्रको शीघ्र मारो फिर सब देवताओं को मारकर पीछे गरुड़पर चढ़नेवाले उन विष्णुको भी मारडालो ३५ इनदोनों दिति व दनु अपनी सौतियों के वचन सुन देवताओं की माता अदितिजी बहुत दुःखितहुईं व बड़े दुःखसे युक्तहो वे पतिव्रता अदितिजी अपने पुत्र इन्द्रसे बोलीं कि ३६ दितिका यह बल नाम पुत्र ब्रह्मतेजसे बढ़ते २ बड़े शरीरवाला होगयाहै व देवताओं के वधके अर्थ तप कररहाहै ३७ हे देवेश ! इस बातको जानो जिसमें तुम्हारा कल्याणहो वह करो माताका ऐसा वाक्य सुनकर इन्द्र ३८ बड़ीभारी चिन्ताको प्राप्त हुये व अतीव दुःखित हुये व महाभय से ऊबकर

उन्होंने अपने मनमें यह चिन्ताकी ३९ कि कैसे देवधर्म्म को दूषित करनेवाले इसको हम मारडालेंगे बलके मारडालने के विषयमें इन्द्र ने निश्चय करलिया ४० एक समय वह बल सन्ध्या करने के लिये समुद्र के तटपर पहुँचा व वहां मृगचर्म्म व दण्डकाठ लिये विराजमानहो ४१ अमल पुण्य व ब्रह्मचर्य्य के तेजसे प्रकाशित सागर के तीर उसे संध्याकरते ४२ व शान्तचित्त होकर मंत्र जपते हुये इन्द्र जीने देखा व जाकर वज्रसे उस दितिनन्दनको ताड़ितकिया ४३ कि प्राणरहितहो बल पृथ्वीपर गिरपड़ा उसको मृतक देखकर बड़े हर्ष से युक्तहो इन्द्र बड़े प्रमुदित हुये ४४ इस प्रकार दितिके पुत्र उस बल दैत्यको मारकर इन्द्र धर्म्मात्मा बड़े सुखसे राज्य करनेलगे ४५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेबलदैत्यवधोनामत्रयो विंशोऽध्यायः २३ ॥

## चौबीसवां अध्याय ॥

दो० चौबिसयें महँ वृत्रकी है उत्पत्ति विचित्र ॥
पुनि ता मैत्री इन्द्रसों यह कह चित्रचरित्र १

इतनी कथा सुनाकर सूतजी फिर ऋषियों से बोले कि सुन्दर बलवाले बलनाम पुत्रको मारगयाहुआ सुन दितिने हाहाकष्ट कह कर अत्यन्त रोदन किया व बड़ी दीनता प्रकटकी १ व बहुत दिनों तक उस परमतपस्विनी यशस्विनी दितिने अतिदीनताकर अपने पति कश्यप जी के पास जाकर कहा कि २ हे द्विज ! सुनो पापी तुम्हारे पुत्र इन्द्रने ब्रह्मलक्षण युक्त महातपस्वी हमारे पुत्र बल को सागरके समीप सन्ध्योपासन करतेहुये देख चुप्पे से जाकर वज्रसे मारडाला इस बातको सुनकर मरीचिजी के पुत्र कश्यपजी ने बड़ाही कोपकिया ३ । ४ व क्रोधकी ज्वाला से जल उठे महाक्रोधानलको प्रकटकिया फिर पवित्र अग्नि में एक अपनी जटा उखाड़ कर ५ कहा कि बस हम इन्द्र के बधके लिये पुत्र उत्पन्न करेंगे यह कह अग्नि में वह जटा डालदी इससे उस अग्निकुण्डसे अग्निसमान प्रज्वलित एक असुर उत्पन्न हुआ ६ जिसका काले अञ्जनके ढेरके

समान तो रंगथा व पीले २ नेत्र अतिभयङ्कर आकृति ऐसे कराल मुखवाले उसको जगत् भरको भय देनेवाले कश्यपजी ने देखा ७ वह महावीर्य्यवान् खड्ग चर्म्म धारणकिये मुनि के तेजसे प्रकाशित महामेघ के समान ऊँचा महाबलीथा ८ वह कश्यपजीसे बोला कि हे विप्र ! हमको आज्ञादीजिये हे विप्र ! आपने हमको क्यों उत्पन्न कियाहै इसका कारण कहिये ९ हे सुव्रत ! उसे हम आपके प्रसाद से सिद्धकरें यह सुन कश्यपमुनि बोले कि हे पुत्र ! दितिके पुत्र बल को इन्द्रने छलसे मारडालाहै इससे दितिका मनोरथ तुम पूराकरो १० हे महाप्राज्ञ ! अदिति के पुत्र दुरात्मा इन्द्रको मारडालो व देव-राजके मारजानेपर ऐन्द्रपदका राज्य भोगकरो ११ इसप्रकार कश्यप महात्माकी आज्ञापाकर वृत्रासुर ने इन्द्रके मारडालने का उपाय किया १२ प्रथम बड़े पौरुषसे धनुर्विद्या सीखने में अभ्यास किया फिर बल वीर्य्य तेज धैर्य्यादि क्षत्रियों के सब गुण व स्वभाव सीखे व धारण किये १३ वृत्रासुरका ऐसा व्यसनदेख इन्द्र अत्यन्त भय से आतुरहुये व उस दुरात्मा वृत्रासुरके लिये उन्होंने उपाय विचारा १४ उसके वधके अर्थ सब महामुनियोंको बुलाया व सप्तर्षियों को भी बुलाकर वृत्रासुरके पासको भेजा कि १५ आपलोग वहांजायँ जहां वह वृत्रासुर है उससे जाकर आपलोग हमारा मिलाप करादें १६ इसप्रकार इन्द्रके सम्मतसे वे सप्तर्षिलोग जाकर वृत्रा-सुरसे बोले १७ कि हे दैत्यश्रेष्ठ ! इन्द्र मित्रता करना चाहते हैं सो आप करैं यह सातों तत्त्वके जाननेवाले ऋषियों ने महाबली वृत्रा-सुरसे कहा १८ कि महाबुद्धिमान् जब इन्द्र आप मित्रता करना चाहते हैं तो तुम क्यों नहीं करते १९ बस इन्द्र से मैत्री करके हे वीर ! आधा ऐन्द्रपद सुखसे तुम भोगो व आधा इन्द्र भोगें ऐसा करनेसे दैत्य व देवता दोनों सुखसे रहेंगे व वैरभाव छूटजायगा इस बातको सुनकर वृत्रासुर बोला कि हे मुनिसत्तमो ! जो इन्द्र सत्यतापूर्वक मित्रता चाहते हैं २० । २१ तो हमभी सत्य २ मैत्री करेंगे इसमें कुछभी संशय नहीं है भला जो छल करके इन्द्र हमारे साथ द्रोहकरें २२ तो हे विप्रो ! फिर उसके लिये क्या प्रमाण ब-

तातेहो सो यह सुन ऋषियों ने जाकर इन्द्रसे पूँछा कि तुम दोनों के विषयमें इस अर्थ में कौनसी विश्वासकी वार्त्ताहै कि उसके होजाने पर सत्य २ मैत्री बनीरहै तब इन्द्रने सप्तर्षियों से कहा कि आप लोगों को बीचमें डालकर हम सत्यही का वर्ताव करेंगे छलका नहीं २३ । २४ यदि सत्य के विपरीत करें तो ब्रह्महत्यादि पाप हमको निःसन्देह लगें यह सुन सप्तर्षियों ने जाकर वृत्रासुर से कहा २५ कि इन्द्र ने कहा है कि जो तुम्हारे साथ हम छलकरें तो हमको ब्रह्महत्यादिक सब पापलगें इसमें सन्देह नहीं है २६ बस हे महामते ! इस विश्वास वचन से तुम इन्द्र के साथ मैत्री करो वृत्रासुर ने कहा कि आपलोगों के संग चलकर इन्द्र से मैत्री करेंगे तब वे ब्राह्मणश्रेष्ठ वृत्रासुरको इन्द्रके स्थानपर लेगये व वृत्रासुर को आते देख इन्द्र मैत्री करने के लिये उद्यतहुये व अपने सिंहासनपर से उठकर अर्घ लेकर बड़ी शीघ्रता से आधा सिंहासन वृत्रासुरको बैठने के लिये दिया व धर्मात्मा वृत्रासुर उसपर बैठा व इन्द्र भी आधे सिंहासन पर बैठे व वृत्रासुरसे कहा कि हे महाभाग ! आधा राज्य तुम भोगो आधा हम भोगें २७।३० व हम दोनों सुखसे आपस में वर्ताव करें इस प्रकार इन्द्रने वृत्रासुर को अच्छे प्रकार विश्वास दिया ३१ जब सब ऋषिलोग अपने २ स्थानों को चलेगये व कुछ दिन प्रीतिभावसे चले तब दुष्टात्मा इन्द्र वृत्रासुर के रात्रिदिन छिद्र देखनेलगे ३२ रात्रिदिन यही विचाराकरें कि कहीं कोई छिद्र मिले मैत्री तोड़डालें परन्तु उस महात्मा वृत्रासुर में कोई भी छिद्र इन्द्र को न दिखाई दिया ३३ तब इन्द्रने उसके वध के लिये उपाय विचारलिया व रम्भा नाम अप्सरा को उसके पास भेजा कि जाकर उस महासुर को मोहितकरो ३४ हे शुभे ! जिस किसी उपायसे बने इस दैत्यको महामोह में डालो जिसमें मारकर हम सुखको प्राप्तहों ३५ तब रम्भा जाकर महादिव्य पुण्य व पुण्यवृक्षों से शोभित बहुत पुष्पों से युक्त मृग व पक्षियों से समाकुल ३६ व दिव्य विमानमन्दिरों से सब ओरसे शोभित दिव्य गन्धर्व्वों के गीतों से युक्त भ्रमरोंकी गुञ्जार से सदैव आकुलित ३७ कोकिलाओंकी पुण्य कूकोंसे सर्व्वत्र

मधुर मोर हरिणादि पक्षिमृगों से सब कहीं समाकुल ३८ व सब ओरसे दिव्य चन्दन के वृक्षोंसे अलंकृत व जलसे पूर्ण मनोहर वापीकूप तड़ागादिकों से शोभित ३९ जिनमें कि कमल शतपत्रादि पुष्प फूलरहेथे उनसे विराजमान व देव गन्धर्व सिद्ध चारण किन्नर ४० व मुनियों से भरा दिव्य देवताओंकी पुष्पवाटिकाओं से शोभित व नाना प्रकार के कौतुक मंगल करनेवाली अप्सराओं के नृत्य से विराजमान ४१ सुवर्ण के घवरहरों से शोभित चामर छत्रादिकों से मण्डित कलशों व पताकाओं से सर्वत्र समलंकृत ४२ वेदध्वनि से समाकीर्ण व गीतध्वनि से समाकुल इस प्रकारके नन्दन वन में जाकर चारुहास करनेवाली वह रम्भा ४३ अप्सराओं के झुण्डों के साथ क्रीड़ा करनेलगी सूतजी शौनकादिकों से बोले कि एक दिन कालका खींचाहुआ वह वृत्रासुर कुछ दानवों को संगलिये आनन्द समेत उसी नन्दनवनको गया व इन्द्रभी अलक्षितहोकर उस महात्मा वृत्रासुर के पासहीपास घूमते चलेजातेथे क्योंकि वे शंकितचित्त होकर सदा उसके छिद्र ढूँढ़ा करतेथे व वह महाप्राज्ञ सब कर्म्मोंमें इन्द्र का विश्वास करताथा ४४।४६ इन्द्रको परममित्र जानकर कुछ उनकी ओरसे भय नहींकरताथा इधर उधर घूमताहुआ सब कहीं परमशुभ वनदेखता फिरताथा ४७ जो वन अतिरम्य नाना प्रकारके कौतूहलों से युक्त व उत्तम स्त्रीगणों से भराहुआ था देखा तो चन्दनकी पुण्यदायिनी शीतल छायामें बैठीहुई ४८ विशालाक्षी रम्भा नाम अप्सरा क्रीड़ा कर रही थी वह महाभाग्यवती यशस्विनी अपनी सखियों के साथ हिंडोलेपर चढ़ी ४९ सुस्वर से गीत गारहीथी जिस गीत को सुनकर विश्वभर मोहित होजाता ॥

चौपाई ॥

कामाकुलित ललितमन भयऊ । वृत्रासुर तहँ आयसुगयऊ ॥
दोलारूढ़ विलोकत रम्भा । कांप्यहु जिमि कदलीकर खम्भा ५०।५१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवृत्रवञ्चनं नामचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

## पच्चीसवां अध्याय ॥

दो० पचिसयें महँ मोहवश रम्भालिंगित वृत्र ॥
इन्द्रहत्योछलसोंऋपयकोपशान्तियहचित्र १

सूत जी शौनकादि ऋषियों से नैमिषारण्य में बोले कि रम्भा को देख कामाकुल हो वृत्रासुर अपने सङ्गी दानवों से बोला कि चारु लोचनवाली मनोहररूपिणी यह कौनसी स्त्री है गानकर रही है व अपने विलासभावों से सब विश्वको मोहित करती है व अत्यन्त शोभित सम्पूर्ण हावभावों से कामीजनों को अतिमोहित करतीहै १ व कमल के समान विशालनयनी पीनकुचवती कुंकुम अङ्गों में लगाये हुई कमलमुखी कामके मन्दिर के समान स्थित अतिचारु मनोहररूपिणी २ सम्पूर्ण भावों में व विलक्षण रूपसे युक्त कामांग शीलवती अतिशीलभाव किये हुई रम्भाको वनमें निकटमें देखकर कहनेलगा कि बस अब हम आज इसीके वशीभूत होंगे क्योंकि कामदेव ने इसीलिये हमको यहां भेजा है ३ इसप्रकार दैत्यों का ईश्वर बड़ी देरतक चिन्ता करता रहा व काममें मूढ़हो बहुत समय तक कुछ न बोला फिर अतीव आतुर हो अतिवेग से वहां गया व दीनमन हो उस सुलोचना से बोला ४ कि हे सुन्दरि ! तुम किसकी स्त्री हो व किसने तुमको यहां भेजा है व तुम्हारा पुण्यदायक क्या नाम है हम से कहो हे बाले ! महातेजस्वी तुम्हारे रूप से हम मूढ़ होगये हैं इस से तुम हमारे वशीभूत होओ ५ जब इसप्रकार वृत्रासुरने कहा तो वह विशालाक्षी रम्भा काम से अतिव्याकुल वृत्रासुरसे बोली कि हमारा रम्भा नामहै हे महाभाग ! यहां कामक्रीड़ा करने के लिये इस उत्तम वन में ६ सखियों के संग आई हूं देखते हो कि कैसा उत्तम नन्दन वन है तुम कौनहो व किसलिये हमारे पास आये हो ७ तब वृत्रासुर बोला कि हे बाले ! हे शुभे ! हम जो हैं व जिसके लिये यहां आयेहैं तुमसे कहतेहैं सुनो हम अग्नि से उत्पन्न हुये हैं व कश्यपजीके पुत्रहैं ८ व हे वरानने ! देवताओंके देव इन्द्र के भी हम सखाहैं व हे वरारोहे ! आधा ऐन्द्रपद हमारे भोगकरने

में आगया हूँ ९ हे देवि ! हे वरवर्णिनि ! मेरा वृत्रासुर नाम है मुझे इसप्रकार कैसे नहीं जानतीहो जिसके तीनों लोक वश में हैं १० सो हे प्रिये ! हे श्रेष्ठमुखवाली ! हे सुन्दर नेत्रोंवाली ! हम काम से बहुत व्याकुल हैं और तुम्हारी शरण में आयेहैं कामसे हमारी रक्षा करो हमारे संग भोग करो ११ तब रम्भा बोली कि हम अभी तुम्हारे वश में होंगी इस में कुछ सन्देह नहीं है परन्तु हे वीर ! जो २ कार्य्य हम कहेंगी सो २ तुमको करना होगा १२ वृत्रासुरने कहा हे महाभागे ! ऐसाहीहोगा जो जो तुम कहोगी सब हम करेंगे इस प्रकार की प्रतिज्ञा उसके संग कर महाबली १३ दानवश्रेष्ठ वृत्रासुर उस महापुण्य वन में रम्भा के गीतसे व नृत्यसे ललित हँसने से १४ व उसके सुरतसे महादैत्य अतिमूढ़ होगया तब उसमहाभाग दानव सत्तम वृत्रासुरसे रम्भा बोली १५ कि अब तुम मदिरापान करो व मधु माधवी लताका भी रस पानकरो तब उस विशाल नेत्रवाली और चन्द्रमाके समान मुखवाली रम्भा से वृत्रासुर बोला १६ कि हम ब्राह्मण के पुत्रहैं ववेदवेदाङ्ग पारगामी हैं इस सेहे भद्रे ! अति निन्दित मदिरापान कैसे करें १७ यह सुन उस देवी रम्भा ने बड़ी प्रीति के साथ हठ करके उसको मदिरादी तब उसकी चतुरता से उसने सुरापान करलिया १८ जब मदिरा से अति मत्तहोकर ज्ञान से भ्रष्टहोगया व सोगया सोतेहीमें इन्द्र ने वज्र से मारडाला १९ व वृत्र के मारने के कारण ब्रह्महत्यादि पापों से इन्द्र लिप्त होगये तब ब्राह्मण इन्द्रसे बोले कि हे इन्द्र ! तुमने पाप किया २० महा बलवान् वृत्र तुम्हारे विश्वासपर था तुमने विश्वासघात किया जो उसे मारा ऐसा पाप तुमने किया २१ इन्द्र बोले कि जिस किसी उपाय से हो शत्रुको सदैव मारही डालना चाहिये ॥

चौ० द्विज देवनको मारनहारा । यज्ञधर्म्म कण्टक श्रुतिन्यारा ॥
तीनलोक नायक खल दानव । हम मारा जो मारत मानव २२
तासु हेतु कोपहु तुम लोगा । यह नहिं न्याय बरनहै शोगा ॥
करहु विचार विप्र वर नीके । कहत वचन सबविधिहमठीके २३
सम अन्याय जानि पुनि पीछे । करहु कोप हमकहत अतीछे ॥

इमिकहि सुरपति द्विजनम्बोधा । जासों गणहु कछुक तिनक्रोधा २४
पुनि ब्रह्मादिक तिन समझावा । बहुनभांति करि वचन बनावा ॥
तबगे ऋषि निज आसन पाहीं । कर्महिंभक्तिनियोगकनाहीं २५।२६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवृत्रासुरवधोनाम

पञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

## छब्बीसवां अध्याय ॥

दो० छब्बीसयें महँ दितिज पवन भये उञ्चास ॥
जिन्हेंइन्द्रहति गर्व महँ तिनसँग भयेपचास १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि उस पुत्रको भी माराहुआ सुन दिति दुःखितहुई व हे द्विजसत्तमो ! पुत्र के शोकसे अतिभस्महुई १ व जाकर फिर महात्मा मुनिश्रेष्ठ कश्यपजीसे बोली कि हे द्विजसत्तम ! इन्द्र दुष्ट के वध के अर्थ २ ब्रह्मतेजोमय तीव्र सब देवताओं को दुःख से सहने के योग्य एकपुत्र हमको दो हे कान्त ! हे विभो ! जो हमभी आपकी प्रियाहों ३ कश्यपजी बोले कि दुष्टात्मा इन्द्र ने अधर्म्म का आश्रयणकर महाबली हमारे बल व वृत्र दोनों पुत्रोंको मारडाला ४ अच्छा अब उसके वध के लिये एक और पुत्र तुमको देंगे परन्तु हे यशस्विनि ! सौ वर्ष तक तुम पवित्रता से रहना ५ इतना कह उन योगेन्द्रजीने दितिके शिरपर अपना हाथरखदिया व दितिके साथ हीवे योगीन्द्रजी तपकरनेके लिये सुमेरु पर्वतपर चलेगये ६ व दिति भी तपोवनमें रहकर तप करनेलगी व पुत्रकेअर्थ सदा पवित्रादि नियमोंसे रहनेलगी ७ तब इन्द्रदेव दितिका ऐसाउद्यम जानकर उनके नियमोंमें विघ्नदेखनेलगे ८ यहांतक कि ब्राह्मणका शरीर धारणकर पच्चीसवर्षके होकर दैवतोपम इन्द्रजी उस महातपस्विनी अपनी मौसी व सौतेलीमाता दितिके समीपगये व धर्मात्माजी तप करती हुई उस अपनी सौतेलीमाताके प्रणाम करतेभये तब दितिने कहा कि हे द्विजसत्तम ! आप कौन हैं ९।१० इन्द्र उससे बोले कि हे भामिनि ! हे शोभने ! हम तुम्हारे पुत्रहैं व वेदशास्त्र जाननेवाले ब्राह्मणहैं सब धर्म्म जानतेहैं ११ इससे तुम्हारे तपमें सहायता [illegible]

इसमें कुछ सन्देह नहींहै यह कह तप करतीहुई उस अपनी माता की शुश्रूषा इन्द्र करने लगे १२ परन्तु वह दुष्टकारी इन इन्द्र को नहीं जानतीथी दिन २ सेवाकरने से धर्म्मपुत्र जानतीथी १३ इन्द्र उसके सब अङ्ग मींजदेतेथे व पैर धोदेतेथे वनसे मूल फल पत्र वल्कलाजिन आनदेते थे १४ व बड़ेप्रेमसे धर्म्मात्मा इन्द्र उस दिति को सदा सब पदार्थ दियाकरते इन्द्रकी भक्तिसे सन्तुष्टहो बड़ीप्रीति से दिति ब्राह्मणरूपी इन्द्रसे बोली कि १५ जब हम पुण्यपुत्र उत्पन्नकरेंगी व वह इन्द्र को मारडालेगा तो उसहमारे पुत्रके सङ्ग तुमभी राज्यसुख भोगना १६ यह सुन इन्द्रजीने कहा हे महाभागे ! अच्छा तुम्हारे प्रसादसे हमभी ऐन्द्रपदका सुखभोगेंगे यह कह इन्द्र उसके तप नियममें औरभी अन्तर विचारनेलगे १७ इसप्रकार कुछ कम सौवर्ष बीतगये इन्द्रने एकदिन यह अन्तर देखा कि विना पैरधोयेहुये दिति सोरही १८ व शिरके बारखोले उत्तरको शिरकिये अत्यन्त विह्वल दितिके उदरमें सूक्ष्मशरीर धारणकर इन्द्र पैठगये व तिनकी नींदको हरलिया और तीक्ष्णधारवाले वज्रसे उसगर्भके उन्होंने सातखण्ड करडाले १९।२० तब वे सातोंखण्ड रोदन करनेलगे फिर रोतेहुये उन गर्भके खण्डोंसे इन्द्रने बार २ कहा २१ कि रोदन न करो रोदन न करो जब उन्होंने रोना न बन्दकिया तो इन्द्र ने उन सातोंके सात २ और खण्ड करडाले इस प्रकार वे उञ्चास होगये व तब उन्होंने कहा अब हमको न मारो हम तुम्हारेभाई होंगे इन्द्रने कहा अच्छा तुम हमारेभाई उञ्चासपवन होओ इससे वे पवनहोगये इन्द्रके कहनेसे वे सब अतिवीर्य्यवाले व बड़े शरीरवाले महातेजस्वी पराक्रमी होगये २३।२४ व उञ्चासो देवताहोगये मरुत् उनका नामहुआ व इन्द्रहीके आश्रितहुये २५ व सब प्राणियों को ये पवन सदा सन्तुष्ट करते व प्रकाशित करतेरहतेहैं बस इसप्रकारसे सब समूहके समूहोंकी सृष्टि श्रीविष्णु भगवान् कश्यपादि प्रजापतियोंसे कराते हैं २६ व उस सृष्टिके राजा क्रमसे पृथु आदिको बनाते हैं वे देवदेव कृष्णचन्द्र सर्व्वव्यापी पुरुष पुराण जगत्के गुरुहैं २७ तप सब विष्णुरूपहैं व सब प्रजापति भी विष्णुस्वरूपी हैं मेघ अ-

गिन आदि सब पुण्यात्मा विष्णु रूपही हैं २८ व उन्हींका यह स्थावर जङ्गम सब जगतहै हे द्विजसत्तमो ! जो कोई यह प्राणियोंकी सृष्टि जानताहै २९ उसका फिर इस संसारमें आना नहींहोता फिर परलोकका भय कहां होसक्ताहै इस महापुण्य व सब पापहरनेवाली सृष्टिको ३० जो पुरुष भक्तिसे सुनताहै वह सब पापों से छूटजाता है वह धन्य होता व पुण्यात्मा होता व सत्यसंयुत होताहै ३१ ॥

चौ० जोयहसृष्टि सुनतनरकोई । लहत परमगति नहिं शकसोई ॥
सर्व्व पापगत शुद्धस्वरूपा । विष्णुलोक पावत नरभूपा ३२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेसष्ट्युत्पत्तिर्नामषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

# सत्ताईसवां अध्याय ॥

दो० सत्ताइसयें महँ कह्यो सब अधिपतिजिमिहोत ॥
ब्रह्माज्ञासों करतसुख पालत सबहिं निसोत १

सूतजी शौनकादि ऋषियोंसे बोले कि वे परमेश्वर सब लोकोंके ईश सब राज्य में वेन केपुत्र महाप्रभुपृथुजी को राज्याभिषेक करते भये १ ये पृथुजी महाबाहु महाकाय सुरेश्वरइन्द्र के समान थे २ सृष्टि की आदि में सबको उत्पन्न करके ब्रह्माजी जो जिसके योग्य होताहै उसे उसका राजा बनातेहैं जैसे मनुष्यों का राजा महात्मापृथुजी को नियत किया ऐसेही सब वृक्ष ब्राह्मण ग्रह ताराओं का राजा चन्द्रमा को नियतकिया व सब तप धर्म्म सबयज्ञ सबपुण्य व सब पुण्यतेजस्वियों का भी राज्य सोमही को दिया ३ । ४ व जलोंके मध्य में सबतीर्थोंका राज्य वरुणजीको दिया समुद्रमें जो रत्न हैं उनके भी स्वामी वरुणही हुये ५ व अन्य सब यक्षाओं के राजा कुबेरजी को बनाया व महा बुद्धिमान् विष्णु वामनजीको सब अदितिके पुत्र देवताओंका राजा बनाया ६ व सब पुण्यात्माजनोंके राजा सबोंके हितके लिये दक्षप्रजापतिजीको बनाया ७ क्योंकि वे सब धर्म्म जानते थे इससे सब प्रजाओं के अधिप किये गये व विष्णुके तेज से युक्त सबधर्मजाननेवाले प्रह्लादजीको ब्रह्माजीने सब दैत्यों व दान-

वोंके स्वामी नियत किया यम वैवस्वत धर्म्मराजजीको पितरोंके रा-
ज्यपर स्थापित किया ८।९ यक्ष राक्षस भूत पिशाच उरग सर्पसब
योगिनी सङ्गमा वेताल १० सब कंकाल सब कूष्माण्ड व सब
राजाओं के राजा शूलपाणि महादेवजी को बनाया ११ व सब
पर्व्वतोंके राजा महापर्व्वत हिमवान्‌को नियतकिया व सब नदियों
तड़ागों वापियों १२ कुण्डों व कूपोंके राज्यपर सर्वतीर्थ अत्युत्तम
पुण्यकारी समुद्रको स्थापितकिया १३ व सबगन्धर्व्वों तथा पुण्यजनों
के राज्यपर सुरेश्वर ब्रह्माजीने चित्ररथनाम गन्धर्व्वको नियुक्तकिया
१४ व पुण्यवीर्य्यवाले नागोंके राजा वासुकिनागको बनाया व सर्प्पों
के राज्यपर तक्षक नाम सर्प्पको नियोजितकिया १५ व सब हाथि-
योंका राजा ऐरावत नाम महागज नियतहुआ ऐसेही सबघोड़ोंका
राजा उच्चैःश्रवा नियतहुआ १६ व सबपक्षियोंकेराजा गरुड़ नियत
हुये व सब हरिणों का राजा सिंह बनायागया १७ व सबवृषभों व
धेनुओं के राजा नन्दीश्वर नियत हुये व सब वनस्पतियोंका राज
पिप्पल बनाया गया १८ इसप्रकार पुण्य राज्यों पर पुण्यात्मा राज
नियतकर ब्रह्माजीने सबदिशाओंमें दिक्पाल स्थापित किये १९ पूर्व्व
दिशामें वैराजके पुत्र सुधन्वा को राज्याभिषेककरके स्थापितकि-
या २० व दक्षिणदिशामें कर्द्दम प्रजापतिके पुत्र महात्मा शंखपदको
राजा नियतकिया २१ इनलोगोंने सप्तद्वीपवती पत्तनयुक्त इस सब
पृथ्वीको यथा भाग पालनकिया व अबभी ये सब धर्मसे पालनकर-
तेहैं २२ फिर पश्चिमदिशामें ब्रह्माजीने वरुण प्रजापतिके पुत्र पु-
ष्करनामको दिक्पालता पर नियत किया २३ व उत्तरदिशामें
ब्रह्माजीने नलकूबर को स्थापित किया इस प्रकार महापराक्रमियों
को सब राज्याधिकार में ब्रह्माजीने अभिषेक किया २४ महाभाग
पृथुको जानों प्रथम सब राजाओंका स्वामी बनायाहीथा फिर राज-
सूयादि सब महायज्ञों से ब्राह्मणोंके द्वारा विधि विधानसे उनका अ-
भिषेक किया कराया २५ इस प्रकार वेदके विधानसे महाराज पृथु
जीको राज्यपर स्थापितकिया इन पृथुजीको अत्यन्त पुण्यात्मा महा-
पराक्रमी महात्मा चाक्षुषनाम मन्वन्तरमें सबका राजा ब्रह्माजीने

बनायाथा २६ फिर उसके पीछे जब पुण्यरूप यह वैवस्वत मन्वन्तर आया तो इसमें जो राजा पृथु निमतहुआ उसकी विशेष कथा जो तुम्हारे सुननेकी इच्छाहोगी तो हम कहेंगे २७ । २८ ॥

चौ० पुण्यपुनीतदेवअभिषेका । अधिष्ठान सबके सविवेका ॥
तुमसनभाषे सकल सुपावन । सब पुराणमहँ भाषितसुहावन २९
पुण्ययशस्य स्वर्ग्य आयुषकर । शुभ अरु सौख्य सकलउत्तमतर ॥
धन्य पवित्र पुत्रप्रद येहू । वृद्धिदायि यामहँ न सँदेहू ३०
भाव ध्यानयुत जो नर कोई । पढ़त भक्तिसों प्रकट न गोई ॥
अश्वमेधफल सो जनपावत । नहिं संशय कछु सत्य बतावत ३१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेराज्याभिषेको नामसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

## अट्ठाईसवां अध्याय ॥

दो० अट्ठइसे महँ पृथुचरित कथनहेतु खल वेन ॥
के भाषे अवगुण बहुरि पृथुचरित्र सुख देन १

पूर्व्वके अध्यायकी कथा सुन ऋषियोंने सूतसे पूँछा कि हे महाभाग ! महात्मा पृथुजीका चरित विस्तारसहित कहो हम लोगों को फिर सुननेकी इच्छाहै १ जिस प्रकार उन महात्मा राजाने इस पृथ्वी को दुहा व फिर देवताओं पितरों व तत्त्व जाननेवाले मुनियोंने उसे दुहा २ व जैसे दैत्यों नागों यक्षों व वृक्षों ने दुहा फिर जैसे पर्व्वतों पिशाचों गन्धर्व्वोंने व पुण्य कर्म्म करनेवाले ब्राह्मणोंने दुहा जैसे सिद्धों राक्षसों व भीमपराक्रमी अन्य महात्मा लोगोंने भी दुहा ३।४ उन सबोंके पात्र विशेष वर्णनकरो व हे महामतिवाले ! दुग्धका भी विशेष विधान कहो ५ व महात्मा राजा वेन का हाथ पूर्व्व समय में ऋषियों ने मथा सो किस कारण से यह भी कहो ६ सोभी उन लोगों ने सुना कि क्रुद्ध होकर वेन का हाथ मथा था यह सब पापनाशिनी कथा पुण्यकारिणी और बड़ी विचित्रहै ७ हे महाभाग ! इससे हम लोगोंके सुननेकी इतनी इच्छाहै कि तृप्तिही नहीं होती यह सुनकर सूतजी बोले कि वेन व पृथु दोनों का चरित्र व जन्म

वीर्य्य क्षत्र पौरुष सब विस्तारपूर्व्वक कहते हैं व विशेषकर धीमान् पृथुका चरित कहते हैं ८ । ९ सो हे महाभाग द्विजसत्तमो ! हमसे श्रवणकरो व कभी यह चरित अभक्त श्रद्धाहीन शठसे न कहना १० व न अतिमूर्खसे न अतिमोहयुक्त से न अशिक्षितसे न थोड़ी श्रद्धावाले से न क्रूरसे न सब कुछ नाशकरने वाले से ११ क्योंकि जो इस चरितको अश्रद्धा आदिसे पढ़ता है वह नरकको जाताहै आप लोग भावसंयुक्त व सत्य धर्म्मपरायण हैं १२ इससे आपलोगोंके आगे पापनाशन यह चरित सम्पूर्ण कहते हैं श्रवणकरो १३ यह चरित स्वर्ग्ग देता यश आयुष् देताहै धन्यहै व सब वेदोंके सम्मत सेहै ऋषिलोगों ने इसे बहुत गुप्त सम्भाषण किया है पर हम तुम से कहेंगे हे द्विजोत्तमो ! सुनो १४ जो कोई वेनकेपुत्र पृथुजीका चरित विस्तारपूर्व्वक कहताहै वह ब्राह्मणों के नमस्कार करके किये हुये व विना कियेहुये का शोच नहीं करता सब उसे कियाही हुआ जानपड़ता है १५ सातजन्मका पाप केवल सुननेसे नष्ट होजाताहै ब्राह्मण जो इसे पढ़ताहै वेदज्ञ विद्वान् होता व क्षत्रिय विजयी होता १६ वैश्य धनवान् होता व शूद्र इसको सुनकर सुखी होताहै जो सुनता व पढ़ता है अपनी २ जातिके अनुसार ऐसा फलपाता है १७ पृथुका जन्म व वेनकाभी जन्म पवित्र पापनाशने वाला है धर्म्म के रक्षक महाप्राज्ञ वेद शास्त्र के अर्थ जानने में महा पण्डित १८ अत्रिवंश में उत्पन्न अत्रि के समान तेजस्वी पूर्व्वकाल में सब धर्म्मों के उत्पन्न करने वाले अङ्गनाम एक प्रजाओं के पति राजाहुये १९ वे धर्म्मकोछोड़ और कर्म्म कभी नहीं करतेथे तिन अङ्गके वेन नाम प्रजापति हुये २० राजा अङ्गजीका विवाह महाभाग्यवती मृत्युकी कन्या सुनीथा नाम के सङ्गहुआ २१ उस में जो पुत्रहुआ उसका वेननामहुआ यह बड़ा धर्म्मनाशक बालकहुआ अपने मातामह मृत्यु के दोषसे यह मृत्युकी पुत्रीका पुत्र हुआ २२ यह अपने धर्म्मको छोड़ अधर्म्म में निरतहुआ काम लोभ व महामोह से पापही सदा किया करे २३ वेदाचारके धर्म्मको छोड़ वह राजा मदसे मत्त व मोहितहो सदा पापों केहीकरने में निरतरहै २४ इससे उसके भयके मारे

अन्यजनभी वेदाध्ययन न करनेलगे उस राजाके राज्यमें स्वाहा स्व-
धा वषट्काररहित सब प्रजा प्रायः होगई २५ अब देवताओंकी प्रवृ-
त्तिही यज्ञोंसे जातीरही क्योंकि जो ब्राह्मण यज्ञ करनेभी लगे उनसे
वह दुष्ट ऐसा कहै २६ कि तुम लोग वेदादि न पढ़ो होम न करो
दान न दिया लिया करो यज्ञ न करो हवन कभी न करो यह हमारी
आज्ञाहै २७ राजाकी जब ऐसी आज्ञाहुई तो सबोंने जाना कि अब
इनका विनाश आगया है व यहभी राजाने ब्राह्मणोंसे कहा कि
यज्ञ हमारे लिये करना चाहिये क्योंकि उसके भोक्ता हमीं हैं व
यज्ञ करनेवाले भी हमीं हैं यज्ञ भी हम हैं २८ हमारेही विषय में
यज्ञ करो व हमारेही विषय में होम करो वेन ऐसाही सदा सबोंसे
कहै कि सनातनविष्णु हमीं हैं २९ हम ब्रह्मा हम रुद्र हम इन्द्र
हम पवन हैं व हमीं हव्य कव्य सबके भोक्ता हैं इसमें कुछभी संशय
नहीं है ३० यह सुनकर महाबलवान् मुनिलोग वेनके ऊपर बहुत
क्रुद्ध हुये व इकट्ठे होकर सबके सब जाकर उस पापी राजासे बोले
कि ३१ राजा पृथिवीका नाथ होताहै इससे सदा प्रजाओंको पाल-
ताहै व धर्म्मकी मूर्त्ति होताहै इससे सदा उसे चाहिये कि धर्म्म की
रक्षाकरे ३२ हमलोग दीक्षामें प्राप्तहोकर बारहवर्षतक यज्ञकरेंगे
[इ]ससे हे वेन ! उसे रोंककर अधर्म्म न करो क्योंकि यह सज्जनों का
[ध]र्म्म नहीं है ३३ हे महाराज ! तुमभी धर्म्म करो व सत्यपुण्य
[क]रो तुमने यह प्रतिज्ञाकीथी कि हम प्रजाओंको पालेंगे ३४ ऐसा
[क]हते हुये उन महर्षियोंसे निर्बुद्धि वेन यह निरर्थक अर्थ हँसकर
[ब]ोला कि ३५ धर्म्म बनानेवाला और कौनहै व हम अन्य किसका
[व]चन सुनें क्योंकि वेदाध्ययन पराक्रम तप व सत्यके करनेमें हमारे
[स]मान और पृथ्वी पर कौनहै ३६ हे मूढ़ो ! तुमलोग सब भूतों के
उत्पन्नहोने के स्थान व सब धर्म्मोंके उत्पन्न होनेके तो विशेषस्थान
हमको नहीं जानते ऐसे अचैतन्य होगयेहो ३७ हम इस पृथ्वीको
जब चाहें जलादें व जब चाहें समुद्रमें डुबादें पृथ्वी व अन्तरिक्षको
कहो तो रूँधलें इसमें कुछ विचार करने की बात नहीं है ३८ जब
मोह व गर्व्व से युक्त राजाकी दुष्टता न मिटसकी तब महर्षियोंने

राजा के ऊपर बड़ा क्रोधकिया ३९ व इधर उधर कूदते फांदतेहुये वेनको जबरदस्ती पकड़कर मारेक्रोधके वेनकी बाईं जंघा मथी ४० उसमेंसे काले अञ्जनके ढेरकेसमान काला बहुतही छोटेडीलका विलक्षण बड़ेभारी मुखका अतिविरूप नेत्रवाला नीलके रंगका ४१ बड़े लम्बेपेटका सिकुड़े कानोंका अतिभयङ्कर व बड़े दुःखसे भरने वाले पेटका एक पुरुष निकला व उसने कहा क्या करूं तब उन महात्माओंने देखकर कहा निषीद अर्थात् बैठजा ४२ उन लोगों का ऐसा वचन सुन भयसे आतुरहो वह बैठगया व इसीसे उसका निषाद नाम हुआ पर्व्वतों पर व वनोंमें उसको वसने की आज्ञाहुई ४३ उसी निषादके वंशसे निषाद किरात भिल्ल नाहलक भ्रमर पुलिन्द व और भी जो म्लेच्छोंकी जातें हैं ४४ वे सब पाप करनेवाले उसी वेनके अंगसे उत्पन्न हुयेथे फिर वे सब ऋषिलोग बड़े प्रसन्नमन हुये ४५ व उन्होंने नृपोत्तम वेनको अब पापरहित समझा इससे उस महात्मा वेनका दहिनाहाथ उन्होंने मथा ४६ उस हाथके मथने पर उसमें पसीना होआया तब उन विप्रोंने फिर वही दहिना हाथ मथा ४७ तब उस सुन्दरकरसे बारह सूर्य्यों के समान प्रकाशित एक पुरुष उत्पन्न हुआ उसके सब अंगोंका रङ्ग तपाये हुये पक्केसोनेका सा था व दिव्यमाला वस्त्र धारण कियेहुयेथा ४८ दिव्य आभरणों की शोभासे शोभित अंगथा व दिव्य गन्ध अंगोंमें लगेथे सूर्य्यसम चमकतेहुये मुकुटसे व कुण्डलोंसे विराजताथा ४९ बड़ाभारी शरीर था व बड़े बड़े बाहुथे व रूपमें पृथ्वीपर उसके समान दूसरा कोई न था खड्ग बाण धन्वा कवच धारण किये महाप्रभु था ५० सब लक्षणोंसे सम्पन्न व सब अलङ्कारोंसे भूषितथा तेज रूप वर्णोंसे युक्त महामति ५१ इन्द्र जैसे स्वर्ग्ग में शोभित होते हैं वैसेही पृथ्वीपर वह वेनकापुत्र शोभितहुआ उन महाभागके उत्पन्नहोने पर निर्म्मल देवताओं व ऋषियोंने ५२ वेनके पुत्र होनेका बड़ा भारी उत्सव किया उन्होंने अपने शरीरसे दीप्तिमान् होने से साक्षात् अग्निके समान प्रज्वलित होतेहुये ५३ आजगवधनुष् धारणकर जिसमें बड़ा भारी शब्दहोताथा दिव्य बाण व रक्षाके लिये बड़ी दीप्तिवाला क-

वच धारणकिया ५४ यह सब महाभाग महात्मा महावीर पृथुजीके उत्पन्न होतेही सब हुआ व सब प्राणी हर्षितहुये ५५ व सब तीर्थों के विविध प्रकारके पुण्यकारी जल उनके अभिषेकके लिये सब ब्राह्मण सब ओरसे लेकर आखड़े हुये ५६ व ब्रह्मादिक देव तथा और भी नानाप्रकार के प्राणी स्थावर जङ्गम सब अभिषेकके समय आये व आकर सबोंने अभिषेक किया ५७ इसप्रकार चरोंने व अचरोंने भी ऐसे महावीर पृथुजीको राजराजकरके अभिषेकित किया व वे सब प्रजाओंके पालक हुये ५८ जब देवताओं व सब ब्राह्मणों ने वेनके पुत्र महाराजाधिराज प्रतापी पृथुजी को राजसिंहासनपर स्थापित किया ५९ वैसेही उन्होंने सब प्रजाओंको अनुरञ्जित किया जिनको उनके पिताने कभी अनुरञ्जित नहीं कियाथा जब प्रजाओं में उन वीरने ऐसा अनुराग किया जिससे सब पृथ्वी राजन्वती हुई व समुद्र पार तक सप्तद्वीपवती धरणी के अकेले स्वामी हुये उन महात्माके भयसे समुद्र पर्य्यन्त के जल सब ठौर ठौर ठहरगये चलना बन्दहोगया व पर्व्वतों पर यद्यपि बहुधा दुर्ग्गम मार्ग्ग होतेहैं पर इनके होतेही सब पर्व्वतोंने मारे भयके अपने मार्ग्ग सुगम कर दिये ६० । ६२ इनके ध्वजाका भङ्ग किसी पर्व्वतने न किया सब कहीं सुगममार्ग्ग होगये व महाराज पृथुजीके राज्यमें पृथ्वीपर विना जोतेही अन्न होनेलगा ऐसेही धेनु जो इनके पिताके समयमें कुछ भी दुग्ध नहीं देतीथीं वे बहुत बहुत पय देनेलगीं ६३ मेघ प्रजाओं की इच्छा के अनुकूल जल बरसाने लगे सर्व्वत्र बड़े बड़े यज्ञ होने लगे ब्राह्मण व क्षत्रिय सब यज्ञ करने लगे ६४ व उन राजाके राज्य में सब कालों में वृक्षों से फल मिलने लगे दुर्भिक्ष उनके राज्य में कभी हुआही नहीं व्याधि अकाल मरण किसी प्राणी को कभी न हुये ६५ सब लोग धर्म्म में परायणहो सुखसे जीनेलगे जब ये राजराज दुर्धर्ष महात्मा इस प्रकारका राज्य कररहेथे ६६ उसी समयमें महाब्रह्मयज्ञ में सूतसूति में उत्पन्न हुये जब कि अच्छा सौम्य दिन आया ६७ व उसी यज्ञमें महाप्राज्ञ मागध लोग उत्पन्न हुये तब पृथुकी स्तुति करनेके लिये ऋषियों ने उनको बुलाया ६८ हे द्विजो-

त्तमो ! अब हम पुण्य सूतका लक्षण तुम लोगों से बताते हैं शिखा सूत्रसे संयुक्त व वेदके अध्ययन में तत्पर ६९ सब शास्त्रों के अर्थों का वेत्ता व नित्य अग्निहोत्रकी उपासना करे दान नित्य देता रहे पठन पाठनकरे ब्रह्मचर्य्यमें परायणहो ७० देवताओं व ब्राह्मणों की नित्य पूजाकरे व याजकों से सदा पुण्यकारी वेदमन्त्रों से यज्ञ करातारहे ७१ ब्राह्मणों का सा सदा आचारकरे सम्बन्धभी बहुत ब्राह्मणों केही साथ रक्खे बस यह सूतका लक्षणहै अब मागधका लक्षण कहते हैं वह अन्यकर्म तो करसक्राहै पर वेद नहीं पढ़सक्ता ७२ व वन्दीजन तथा सब चारण ब्राह्मणका कोई आचार नहीं कर सक्के व और भी जो बड़े भाग्यवाले स्तुति करनेवाले लोग होते हैं ७३ परन्तु स्तुति करने के लिये निपुण सूत व मागध येही दो ठीक ठीक उत्पन्न किये गये हैं इसलिये उन्हीं दोनोंसे सब ऋषियोंने कहा कि तुम दोनों इस राजाकी स्तुति करो ७४ जैसा राजा होना चाहिये उसके अनुरूप ये महाराज हुये हैं इससे इनकी स्तुति करनी चाहिये यह सुन वे वन्दी व मागध दोनों ऋषियों से बोले ७५ कि हम दोनों देवताओं व ऋषियोंको अपने कर्म्मों से तृप्तकरेंगे पर इन राजाके न हम कुछ कर्म्म जानें न यश न लक्षण ७६ कि जिस कर्म्म से इन महात्माकी स्तुतिकरें विना इनके गुण जाने हम स्तुतिमें क्या कहें ७७ तब ऋषियोंने उनदोनोंसे कहा कि हम इनके भविष्यगुण जानते हैं ये २ होंगे इससे तुम इन्हीं गुणों से इन महात्मा राजाकी स्तुतिकरो जो गुण उनमहायशस्वी पृथुमहाराजमेंथे ७८ सब गुणोंको उन महात्मा त्रिकालदर्शी ऋषियों ने सूत व मागध से कहे जैसे कि सत्यवान् ज्ञानसम्पन्न बुद्धिमान् अद्भुतविक्रम ७९ सदा शूर गुणग्राही पुण्यवान् दानी गुणी धार्म्मिक सत्यवादी यज्ञों के उत्तम याजक ८० प्रियवाक् सत्यवाक् धान्यवान् धनवान् अतिगुणी गुणज्ञ गुणग्राही धर्म्मज्ञ सत्यवत्सल ८१ सर्व्वगसर्व्ववेत्ता ब्रह्मण्य वेदवित् सुधी प्रज्ञावान् सुन्दर स्वरवाले वेदवेदाङ्गपारगामी ८२ धाता व प्रजाओं के गोप्ता समरभूमिविजयी व ये राजसत्तम राजसूयादि यज्ञोंके करनेवाले होंगे ८३ व भूतलपर सब धर्म्मयुक्त एकही होंगे येसबगुण इन

महात्मा के अङ्गों में होंगे ८४ जब ऋषियों ने ऐसे भावी गुण बताकर सूत व मागधको महाराजकी स्तुति करने के लिये नियुक्त किया तो उन महात्माके उन भविष्य गुणों से सूत मागधों ने बड़ी स्तुतिकी ८५ व तब से सब लोग उनकी स्तुतियों से प्रसन्न हुये जब सूतादिकों ने दिव्य स्तुति महाराजाधिराजकी की तो उनमें आश्चर्य को तो बहुतसा उत्तम धन महाराज ने दिया ८६।८७ व सूत मागध वन्दीगण इनको महोदय दिया जिससे सर्वत्र उनका मान होता रहे व चारणको तैलङ्ग उत्तम देश दिया ८८ पृथुजीके प्रसादसे इन लोगों को ये पदार्थ मिले व आपने हैहयदेश में नर्म्मदा नदी के तीर पर अपने नाम का एक नगर बसाया ८९ व वहां बस नानाप्रकार के यज्ञ करके ब्राह्मणों को बहुत धन दिया जब सर्व्वज्ञ सर्व्वदाता धर्म्म वीर्य्ययुक्त महाराज को ९० सबों ने देखा तो सब प्रजायें व तपसे निर्मल मुनिलोग परस्पर यह कहने लगे कि ये महाराज महामतिमान्हैं ९१ क्योंकि देवादिकों को वृत्ति देते हैं व हमलोगों को तो विशेष वृत्ति देते हैं व प्रजाओं के पालक व जीविका देनेवाले भी होंगे ९२ यह आपस में विचारकर सब प्रजायें महाराजसे बोलीं कि हे महाराज ! यह पृथ्वी आपके प्रथम बोये हुये बीज को ग्रसलेती थी इससे प्रजाओंकी जीविका नहीं चलती थी अब आप इस विषय में विचारांशकरें व हमलोगों की वृत्ति फिर नियत करें क्योंकि विना जीविका के हम सब मरेजाते हैं आप इन ब्राह्मणों से भी पूँछलें ९३।९४ सब हम लोगोंकी जीविका लीलकर पृथ्वी कुछभी अन्नादि नहीं उत्पन्न करती प्रजाओं का यह बड़ा भय श्रवणकर महाराज श्रेष्ठतमने ९५ महर्षियोंसे भी पूँछकर जब उन्होंने भी कहा कि सत्य ऐसाही है तो धन्वा बाणले बड़ा क्रोधकर पृथ्वीके ऊपर महाराज बड़े वेगसे दौड़े ९६ तब हाथीका रूप धारणकर राजाके भयसे व्याकुल पृथ्वी भागी व वनोंमें दुर्गम स्थानों में गुप्त होकर घूमनेलगी ९७ महाराज ने बहुत ढूँढ़ा परन्तु पृथ्वीका रूप उन्होंने न देखा तब सब ऋषियोंने कहा कि पृथ्वी तो हाथीकारूप धारण कियेहुये है ९८ तब कुञ्जररूप धारणकिये हुई पृथ्वी के पीछे राजा अतिवेगसे दौड़े दौ-

डने के समय राजाने योगबल से अपना सिंहकारूप धारण करलिया रोषके मारे लाल नेत्रवाले महाराजने बड़ाही क्रोधकिया व बड़े तीक्ष्ण घोर बाणों से जाकर पृथ्वी को मारा ९९। १०१ तब बाणों के घातसे युक्त गजरूप पृथ्वी बहुत आकुल व्याकुल होगई व महिष का रूप धारणकरके भागी हाथीका रूप छोड़दिया १०२ पर बाण हाथोंमें लिये राजा बड़े वेगसे उसके भी पीछे २ दौड़े तब तो वह महिषका रूप छोड़ गऊका रूप धारणकर निश्चय स्वर्ग को चलीगई १०३ व जाकर प्रथम ब्रह्माजीके शरण में पहुँची वहां अपनी रक्षा न देखकर महात्मा श्रीविष्णुजी के शरण में गई वहांसे भी भागी फिर रुद्रादि सब देवताओं के समीपगई पर रक्षाका स्थान कहीं न पाया १०४ तब अत्यन्त व्याकुलहो महाराज पृथुजीकेही शरण में आई बाणों के घातों से समाकुलहो उनके पास फिर आकर १०५ हाथ जोड़ उन्हीं महाराज पृथुजीसेही बोली कि हे राजेन्द्र! रक्षाकरो रक्षाकरो १०६ हे महाभाग! मैं सबकी आधारभूत पृथ्वीहूं हे राजेन्द्र! मेरे मारजाने पर सातोलोक मारजायँगे १०७ फिर भी दोनों हाथ जोड़कर राजासे बोली कि महाराज स्त्रीजाति सब किसी से सदैव अवध्य होतीहै १०८ क्योंकि स्त्रियोंके वधमें महर्षियोंने बड़े २ दोष दिखायेहैं व गौओं के वधमें भी द्विजोत्तमों ने बड़े २ पाप कहे हैं १०९ इसके विशेष हे महाराज! मेरे न रहनेपर आप प्रजाओंको कहां धारण करेंगे हे राजन्! जब मैं स्थिरहूं तभीतक ये चर अचर सब लोगहैं ११० क्योंकि जब मैं स्थिर रहती हूं तभी ये सब स्थिर रहते हैं अन्यथा नहीं मेरे न रहनेपर चराचर ये सब लोग विनष्ट होजायँगे १११ फिर मेरे होनेपर भी क्या होगा जब कि सब प्रजायें नष्ट होजायँगी सो हे राजन्! यह तो बतावो कि बिना मेरे आप प्रजाओं को कैसे धारण करेंगे ११२ मुझीपर सब लोग स्थिर रहते हैं व मैंही सब जगत् को धारण किये रहती हूँ व मेरे विनाश में सब प्रजायें नष्ट होजायँगी इसमें सन्देह नहीं है ११३ इससे यदि सबका कल्याण चाहतेहो तो मुझको मारने के योग्य नहींहो हे प्रजानाथ! हे पृथ्वीपाल! हे देव! मेरा वचन सुनो ११४ उपाय के करने

से लोग सिद्धि पाते हैं जिस उपायसे प्रजाओंका धारणहो वह उपाय देखिये ११५ मुझको मारकर आप इस उपाय से प्रजाओंका धारण पालन पोषण सदैव करेंगे मैं तो जानतीहूँ कि मेरे विनाश में आप का किया पालन पोषण न होगा ११६ अब कोपको छोड़ो हम जो उपाय बतावें उसे करो हम अब अन्नमयी होंगी व सब तुम्हारी प्रजा का धारण पोषण करेंगी ११७ न जो मारनाही चाहतेहो तो मैं स्त्री हूँ इसे मुझे मार तुमको प्रायश्चित्त करना पड़ेगा क्योंकि स्त्री अवध्य होतीहै सो मनुष्यही की स्त्री अवध्य नहीं होती वरन पशु पक्ष्यादिकों की भी स्त्री अवध्य होती है ११८ ऐसा विचारकरके हे महाराज ! आप धर्म्म छोड़ने के योग्य नहीं हैं ॥

चौपाई ॥

इमि नानाविध वचन बनाई । कहै धरणि नृपसों अकुलाई ॥
दारुण कोप तजहु महिपाला । जासों होवहुँ सुखित निहाला ॥
जब प्रसन्न ह्वैहहु भूपाला । तबै स्वस्थ हम होब कृपाला ॥
यासों होहु प्रसन्न महीपति । हौं तव शरण न है दूसरिगति ॥
वेन तनय पृथुराज प्रतापी । प्रजापाल सुनि धरणि अलापी ॥
बोले क्षितिसों वचन गँभीरा । प्रजानाथ वर पुण्य शरीरा ११९।१२१

इति श्रीपाद्मे महापुराणे द्वितीये भूमिखंडे भाषानुवादे पृथूपाख्याने ऽष्टाविंशोऽध्यायः

## उन्तीसवां अध्याय ॥

दो० उनतिस महँ पृथुकी कृपा सों निजपात्ररु वत्सु ॥
दोग्धाकरि महि सब दुही निज अभीष्ट पयसत्सु १

महाराज पृथुजी ने कहा कि महापापी व पापचारी एकके मार जानेपर जो पुण्यदर्शी साधुलोग सब आनन्दित व सुखीहों तो एकके मारनेमें कुछभी दोष राजाको नहीं होता १ इससे भूपति को चाहिये कि पापचेतन एक महापापिष्ठको मारडाले इससे सब प्राणियों के विनाश करनेवाली तुझको हम मारडालेंगे २ तू सब अन्न वृक्षादिकोंके सब बीज ग्रसितकरके बैठीहै इससे अब सब प्रजाओं को मारकर कहांजाती है ३ दुराचारी पापीके मारजानेपर साधुलोग

सुखपूर्व्वक जीते हैं इससे पापीको मार साधुकी रक्षा करनी चाहिये इसमें संशय नहींहै ४ इससे साधुओं का पालन बड़े यत्नसे करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने में धर्म्म होताहै तुमने बड़ाभारी पाप कियाहै जो सब प्रजाओंका संहार करना चाहा है ५ हां एकके लिये एकको न मारना चाहिये चाहे अपने लियेहो वा दूसरेके लिये व जिसने बहुतों की प्राणहत्या चाहीहो उसको अवश्यही मारडालना चाहिये ६ क्योंकि उस अकेलेके मारजाने पर बहुत लोग सुखपाके बढ़ते हैं इससे हे वसुधे! तेरे मारडालने से न पापहीहै न उपपा-पही है ७ प्रजाओं के निमित्त तुझको आज मारडालेंगे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है जो पुण्ययुक्त हमारा वचन तू न करेगी ८ तो सत्यही कहते हैं कि जगत्के हितके लिये तुझको इस पैने बाण से मारडालेंगे क्योंकि हमारे वचनसे तू पराङ्मुखीहै ९ व हमारे तेज से पुण्यरूपिणी त्रैलोक्यवासिनी और पृथ्वी स्थित होजायगी बस उसीपर सब प्रजाओंको स्थापित करके धर्म्मसे उनका पालनकरेंगे इसमें संशय नहीं है १० हे पृथिव! धर्मयुक्त हमारी आज्ञाको ग्रहण कर मेरीही आज्ञा से सदैव इन प्रजाओं की रक्षा करो ११ हे भद्रे! इस प्रकार हमारी आज्ञाको इससमय जब करोगी तो प्रसन्न होकर सदैव तुम्हारी रक्षाकरेंगे १२ इसमें सन्देह नहीं है अन्य भी राजा रक्षा करेंगे तब शरसे बिधीहुई धेनुरूपिणी पृथ्वी १३ वेनके पुत्र धर्म्मात्मा राजापृथुजी से बोली कि हे महाराज! सत्य पुण्य अर्थ युक्त तुम्हारी आज्ञा मैं अवश्य करूँगी १४ व यहभी मैंने जाना कि आपने प्रजाओंकी रक्षा के लिये ऐसा कियाहै इससे अब आप प्र-थम उपायकरें क्योंकि सब राजालोग उद्यमही से सिद्ध होते हैं व सब पुण्ययुक्तही कार्य्य व उपक्रम फलित होते हैं इससे आपभी उपायहीकरें जिससे सत्यवान् गिनेजायँ १५।१६व इनसब प्रजाओं का भी धारण पोषण करसकें हमारे अंगों में बाणरूप सब पर्व्वत व आपके शरभी लगेहैं १७हेराजन्! प्रथम ये दोनों शल्य हमारे अंगों से निकालिये फिर हमसे सब पदार्थ युक्तिसे दुह लीजिये १८ सूत जी शौनकादिकों से बोले कि इतना सुनतेही महाराजने पृथ्वी के

अंगों में प्रविष्ट नानाप्रकारके बड़े भारी पर्व्वतों को धन्वा के अग्र भाग से अलगकर व पीटकर चूर्णीभूत करके भूमिको समान कर दिया १९ तब फिर उसके अंगपर जहां तहां उपरको ऊँचे होगये फिर उसके अङ्गों से महाराजने अपने सब बाण निकाले २० प्रसन्न मनसे सब शर पृथ्वीके अंगों से निकाल वेनके पुत्र महाराजने गढ़े व कन्दरा आदि जो कहींथे सबको पाटकर समान करदिया व ऊँचे टीले आदिकों को पीटकर नीचा करदिया २१ इस रीति से सब पृथ्वीको समान करदिया व समान करके उसपर नगर ग्राम घोष खेरे आदि बसादिये २२ जिसप्रकारकी पृथ्वी राजास्वायम्भुवजीके समय में थी उसीतरहकी फिर करदी स्वायम्भुवमनुको छोड़ अन्य अतीत किसी मन्वन्तरमें वैसी भूमि न थी जैसी कि महाराज पृथुजीने चाक्षुषमन्वन्तरमें सुन्दरसमान करदीथी २३ जितने विषमस्थान ऊँचे नीचेथे सब समान होगये क्योंकि स्वायम्भुव मन्वन्तरके पीछे चाक्षुष मन्वन्तरतक ऐसी विषमधरणी होगईथी कि कहीं बड़े नगरादिकोंके बसने का स्थानही नहीं रहगयाथा २४। २५ इसीसे ग्रामपुर पत्तन देश खेत आदिकों की मर्यादा कहीं नहीं दिखाई देतीथी २६ न कहीं खेती होती थी न वाणिज्य होता न गउओं की रक्षाहोती पर हां कोई मनुष्य झूंठ नहीं बोलता था सब सत्य बोलते व लोभ और मत्सररहित २७ निरहङ्कारी होतेथे अभिमान कहीं न था न कोई कभी स्वप्न में भी पाप करता था व पृथुजी के प्रथम इतनीप्रजा इसभूमि पर न थी न इन प्रजाओं के लिये कहीं समस्थानही था जहांबसते इस से कहीं २ नदियों के किनारों पर वा पर्व्वतों के ऊपर एक घर यहां दूसरा वहां इसरीति से लोग बसतेथे कुञ्जों में तीर्थ स्थानों में समुद्रकी तराइयों में २८।३० सब प्रजा पुण्यसे निवास करती थी व भूमिपर कोई भी कहीं प्रायः नहीं बसता बसाता था कन्दमूल फलादि यही सब भोजन करते थे ३१ बड़े कष्ट से उन प्रजाओंको आहार मिलता था जो उस समय में थीं भी वही दशाथी जबपृथु जीका अवतारहुआ ३२ जब इसप्रकार उन्हों ने पृथ्वीको समान कर ग्राम नगरादि बसाये तो पृथ्वी बहुत प्रसन्नहुई उसे प्रसन्नदेख

स्वायम्भुवमनु राजाको बछड़ा कल्पितकर व अपने हाथों को पात्र कल्पित करके ३३ पृथुजीने प्रथम सब यज्ञ के लिये पुरोडासादि यज्ञकर्म्म दुहलिये व सब अन्नमय समर्थ दूध दुहलिया ३४ उसी पुण्यकारी अमृत सदृश अन्नमय दुग्ध से सब प्रजाओं की व देवताओं की तृप्तिहोनेलगी व उसी से प्रजा पितरों की तृप्तिकरनेलगीं ३५ व उन महाराजपृथुके प्रसादसे सब प्रजायें सुखसे जीने लगीं प्रजा देवता और पितरोंको अन्न देकर ३६ ब्राह्मण और अतिथियों को विशेषकर देकर पीछेसे सब प्रजा भोजन करतीथी ३७ यज्ञोंसे जनार्द्दनजीको लोग तृप्तकरनेलगे व उसी अन्नसे जनार्द्दनजी की पूजा करने से सब देवतालोग तृप्तहोने लगे ३८ व श्री माधवजी की प्रेरणा से मेघ वर्षा करने लगे उससे नानाप्रकारके अन्न व अन्य ओषधियां भी उत्पन्न होनेलगीं व उन सबों के प्रजाओं के पति वेनके पुत्र महाराज पृथुजी हुये तबसे उसी अन्नसे प्रजा अब भी सुख से अपनी प्राणयात्रा करतीहैं ३९ । ४० फिर सब ऋषियों ने मिलकर इस पृथ्वी को दुहा तदनन्तर अन्य साधारण विप्रों ने भी दुहा इन ऋषियों व ब्राह्मणों ने सत्य तप अमलता आ[illegible] पदार्थ दुहलिये ४१ फिर चन्द्रमाको बछड़ा कल्पितकर व बृहस्पति जी दुहनेवाले बनकर बल करनेवाला ऊर्ज्ज नाम दुग्ध दुहलिया जिस से देव गण अबभी जीतेहैं ४२ व उनके सत्य तथा पुण[illegible] से अन्य सब भूतलपरके जीव जीते हैं व ऋषिलोग भी वसुन्धर[illegible] को दुहकर अपने सत्य पुण्यादिकों से वर्त्ताव वर्त्तने लगे ४३ अ[illegible] वह विधान कहते हैं जिस विधि से पितरों ने इकट्ठे होकर इ[illegible] भूमिको अच्छेप्रकार से दुहा ४४ चांदी का सुन्दर पात्र बनाक[illegible] स्वधारूप दुग्ध यमराज को वत्स बनाकर अन्तक ने अपने आ[illegible] दुहलिया ४५ नागों व सर्प्पोंने तक्षकको बछड़ा बनाकर लौकीका पात्र ले विषरूप दुग्ध दुहलिया ४६ व नागों में प्रतापी धृतराष्ट्रनाम नाग दुहनेवाला बना बस उसी विषरूप क्षीर से अतुलसर्प्प व नाग जीनेलगे ४७ नाग और भयानक सर्प अत्यन्त घोर रूप विष से जीनेलगे ४८ ये नाग और सर्प बड़ेघोर बड़ी देह और महाबल

युक्तभये वही विषही उन लोगों का आहार है व वही आचार वही वीर्य्य वही पराक्रम है और कुछ नहीं ४९ अब यह कहते हैं जैसे असुरों और सब दानवों ने वसुन्धरा को दुहा हे द्विजोत्तमो ! असुरों ने व दानवों ने अपने योग्य लोहे का पात्र बनाया क्योंकि वह पात्र उनका सब काम देता है व सब शत्रुनाशन मायामय क्षीर उन्हों ने दुहा ५० । ५१ उन दैत्यों में महाप्रतापी विरोचन वत्स हुआ था द्विमूर्द्धा व महाबली मधु दो दुहनेवाले दैत्यों व दानवोंसे हुये ५२ इसी से अबभी दैत्य दानव सब मायासेही सब कार्य्य करते हैं ये दैत्य महाप्राज्ञ महाकाय होतेहैं परन्तु तेज व पराक्रम इनमें मायायुक्तही होता है ५३ व उन दानवों का वही बल व पौरुष भी होता है व उसी मायामय तेज से वे सदा जीते रहते हैं हे द्विजोत्तमो ! उसी माया से अबभी वे ५४ वर्त्ताव करते हैं इससे माया दैत्यों का महाबल है व वैसेही यक्षों ने सर्व्वाधारा मही को दुहा ५५ हे विप्रो ! यह हमने सुना है कि पूर्व्वकल्प में इसी प्रकार यक्षों ने पृथिवी दुही इन लोगों ने बड़ेभारी कच्चेपात्र में अन्तर्द्धान मय दुग्ध दुह लिया ५६ उन्हों ने महाप्राज्ञ कुबेरजी को बछड़ा कल्पित किया था व मणिधरका महापुण्यात्मा व बुद्धिमानोंसे बड़ा श्रेष्ठ पिता ५७ रजतनाभ नाम यक्ष दुहनेवाला हुआ यह महामतिमान् यक्षतथा सर्व्वज्ञ सर्व्वधर्म्मज्ञ व बली यक्षराज का पुत्रथा ५८ अष्टबाहु व महातेजस्वी द्विशीर्षभी दोहने के समय सहाय हुये थे सो हे द्विजोत्तमो ! यक्षलोग अबभी उसी अन्तर्द्धानही से अपने बहुधा सब कार्य्य करतेहैं ५९ तदनन्तर महाबली राक्षसों ने इस पृथ्वीकोदुहा उन्होंने भूतों पिशाचों व मनुष्यों के भक्षणकरनेवाले बहुतसे राक्षसोंको भी बछड़ा बनाया ६० व सड़ेहुये तथा फूलेहुये मुर्देको पात्रबनाया व चाहा कि इससे बहुतसे उत्तम २ पदार्थ हम लोग भोगकरेंगे ६१ उनमें महाबली रजतनाभ राक्षस दुहनेवाला बना व सुमाली राक्षस बछड़ा कल्पित कियागया व रुधिरमय दुग्ध दुहागया ६२ इससे राक्षस भूत प्रेत पिशाच व यक्ष तथा दारुण ब्रह्मराक्षस उसी रुधिरही से अब भी जीते हैं ६३ फिर गन्धर्व्व

व अप्सराओंने पृथिवीको दुहा उन लोगोंने चित्ररथ नाम बड़े वि-
द्वान् गन्धर्व्वको बछड़ाबनाया ६४ व गीतमें तत्पर गन्धर्व्वोंने गान
विद्यादुही उनमें सुरुचिनाम महाबुद्धिमान् गन्धर्व्व दुहनेवालाहुआ
इन सबोंने गीतके विशेष पवित्रता व तपोरूपभी क्षीर दुहा ६५।६६
इससे उसी गानविद्या व तपके बलसे गन्धर्व्व व अप्सरायें जीती
हैं फिर महापुण्यकारी पर्व्वतोंने इस वसुन्धरा को दुहा ६७ इन्होंने
विविध प्रकारके रत्न व औषधियांदुहीं जोकि अमृतके समान गुण
करती हैं पर्व्वतोंने महाभाग हिमवान्को बछड़ाबनाया ६८ व सुमेरु
पर्व्वतको दुहनेवाला व पात्र हरीघासयुक्त स्थानोंको बनाया उसदूध
से सब महापराक्रमी पर्वत बढ़े ६९ तदनन्तर पर्व्वतों के सम्बन्धसे
महावृक्षोंनेभी अपने मनका पदार्थ दुहलिया वृक्षोंमें कल्पद्रुमादि-
क सब इकट्ठेहुये थे व पालाशको तो उन्होंने पात्रबनाया व छिन्न
दग्धप्ररोहण नाम दुग्ध अर्थात् जहां काटेजायँ व जलजायँ वहीं
कल्ले निकलआवें यह दुग्धदुहा ७० उनमें सांखूकेवृक्षको तो दुहने
वाला बनाया व पाकरिके वृक्षको बछड़ा बनाया था इसप्रकार वृ-
क्षोंने दुहा फिर गुह्यक चारण सिद्ध विद्याधरादिकोंने ७१ इस सब
वसुंधराको दुहा क्योंकि यह तो सर्वकामप्रदायिनी ठहरी जोजो
चाहता दुहलेता जिस २ वस्तुकी इच्छा जिसनेकी उसने पात्रवत्स
व दोग्धा बनाकर अपने भावके तुल्य दुग्धदुहलिया यहपृथ्वी सब
के धारणकरनेवाली है व पालन पोषणभीकरतीहै व यही श्रेष्ठधनभी
धारणकरतीहै इसीसे इसका वसुन्धरा नामभीहै ७२ । ७३ सब
कामोंके दुहनेकी धेनुभी यही है व सब पुण्योंसेभी भूषितहै यह सब
से ज्येष्ठा व प्रतिष्ठाहै व यहीसृष्टि यहीप्रजाभीहै ७४ जितनी पृथ्
है सब पुण्य देनेवाली व पुण्यस्वरूपिणी है व सब अन्नोंको जमाती
है इसीसे चर व अचर सबके टिकनेका व उत्पत्तिका स्थानहै ७५
यही महालक्ष्मीहै व यही महाविद्याहै व सदासर्व विश्वमयीहै सब
कामोंको पूराकरती है व सबको दुहती है व सब बीजोंको जमाती है
७६ व सब कल्याणोंकी माताहै व यह सब लोगोंको अपने ऊपर
धारणकरतीहै व पाँचो तत्त्वोंका प्रकाश व रूप यहीहै ७७ क्योंकि यह

सबसे प्रथम व जलके पीछे बनाईगईहै इसीसे इसका मेदिनीभी नामहै विष्णु भगवान्ने मधु व कैटभनाम बड़ेभारी दैत्योंके मेदस् अर्थात् मज्जासे बनाया है इसीसे मेदिनी कहातीहै ७८ व इसीसे वेदवादी लोगभी इसदेवीको मेदिनी कहतेहैं वफिर इसीप्रकार जब वेनकेपुत्र महाप्रतापी पृथुजी हुये ७९ व उन्होंने इसे अपनी कन्या करके माना तबसे इस देवीका एक पृथ्वीभी नामहोगया हे द्विज श्रेष्ठो! उन महाराजने इसवसुन्धरा का पालनकिया ८० व उन्होंने ग्राम पुर पत्तनादिकों का आधार इसे बनाया व सब अन्नोंकी उत्पत्तिकी खानि इसको बनाया व सब धन धान्यादिकों से भरीपुरी बनाया व सर्व्वतीर्थमयीभी उन्होंने इसे किया ८१ इस प्रकार वसुमती देवी सदा सर्व्वलोक मयीहै हे राजन्! पुराणोंमें इसप्रकार के प्रभावसे युक्त यह पृथ्वी कहीजाती है ८२ वेनके पुत्र महाराज पृथुजी सब कर्म्मोंके प्रकाशकहुये जैसे ब्रह्मा विष्णु व रुद्र सनातन हैं ८३ व तीनों वेदवादी देवादिकोंमें नमस्कार करनेके योग्यहैं व इसीसे ब्राह्मण व ऋषि लोग इनके नमस्कार करते चलेआये हैं ८४ व वर्णों तथा आश्रमों के स्थापक व सबलोकोंके धारणकरने वाले राजालोगभी पृथ्वीके पालकहोकर इनतीनोंके प्रणामकरते चलेआयेहैं ऐसेही उनसबोंको महाराजाधिराज प्रतापी पृथुजीके भी नमस्कार करना चाहिये ८५ क्योंकि ये आदिराजा कहलातेहैं व सदैव जयकीइच्छा कियेहुये धनुर्वेदके अर्थियों कोभी चाहिये कि इनके नमस्कार करें व सब राजाओं को तो नित्य उन महाराजकेनमस्कारकरना चाहिये क्योंकि सबकी वृत्ति देनेवाले वही हैं हे द्विजोत्तमो! इसप्रकार सबोंने जिस २ को पात्र बनाकर पृथ्वी को दुहा हमने सब कहे ८६ । ८७ व बछड़ों व दुहनेवालों की विशेषता भी तुम्हारे आगे कही व क्षीरविशेष भी हे भूसुरो! तुमसे कहा यह सब जैसा पूर्व्वकालमें हुआथा सब तुमसे कहा ॥

चौ० धन्ययशस्य पुण्यनीरोगा । पाप प्रणाशन गत सब शोगा ॥
बेन तनय पृथुचरित अनूपा । जो यहिसुनिहिस्वमतिअनुरूपा ॥
भागीरथी स्नानफल तासू । प्रतिदिन होइहि पुण्य प्रकासू ॥

सर्व्व लोकमहँ शुद्ध पुनीता । ह्वैजाइहि हरिपुर श्रुतिगीता ८८ । ९१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डभाषानुवादे
पृथूपाख्यानएकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

## तीसवां अध्याय ॥

दो० तिसयेंके महँ वेनके पुनि पृथुके बहु वृत्त ॥
सूत ऋषिन सों कह्यहु यह कथा विचित्र सुवृत्त १

ऋषिलोगोंने सूतजीसे पूँछा कि पाप करनेमें प्रवृत्त वेनके दुराचार तुमने कुछ हमलोगोंसे कहेथे सो उसके पापकी कौनसी वृत्ति थी व क्याफल उसने पाया १ अब वेनके व वेनकेपुत्र महात्मा पृथु जीके भी चरित्र हमसे विस्तारपूर्व्वक कहो हमलोगों को सुनने की बड़ी इच्छाहै २ सूतजी बोले कि हमने जैसे पूर्व्वकालमें सुनाहै वह पुण्यदायक वृत्तान्त तुम लोगों से कहेंगे ३ जब महात्मा महाभाग पृथुनाम पुत्र राजावेनके अङ्गसे उत्पन्न हुये तो राजावेन विमलहोके फिर धर्म्मात्मा होगये ४ क्योंकि जैसे अधम पुरुष महापाप इकट्ठे करते हैं व तीर्थके प्रसङ्गसे सब नष्ट होजाते हैं ५ ऐसेही सज्जनों के सङ्गसे पुण्य उत्पन्न होताहै इसमें सन्देह नहीं है व पापियोंके प्रसङ्गसे पापही उत्पन्न होताहै ६ पापियोंके सङ्ग वार्त्ता करने से व उनके देखने से स्पर्श करने से उनके सङ्ग बैठने उठने से व उनकी पंक्तिमें बैठकर वा उनका बनाया भोजन करनेसे वा उनका संगम होनेसे पाप इकट्ठा होजाताहै ७ ऐसेही पुण्यात्माओंके सङ्गवार्त्तादि करनेसे पुण्यहोताहै व महातीर्थों के प्रसङ्ग से पापनष्ट होतेहैं अन्यथा नहीं नष्टहोते ८ व तीर्थोंके करनेसे व महात्माओं के सङ्गसे सब पापधोकर पुरुष पुण्यगति को पाते हैं इतनी कथा सुनकर ऋषिलोगों ने पूंछाकि पापी लोग कैसे सत्सङ्गसे परमसिद्धि को पहुँचते हैं ९ वह सब हमसे विस्तारसे कहो हम लोगोंको सुननेकी बड़ी इच्छा है १० सूतजी बोले कि देखो लुब्धक लोग दास धीवरादि महापापी होते हैं व वे बहुधा नर्मदा गंगा यमुना नदियोंकेही भीतर सदा स्थित रहते हैं ११ ज्ञान से वा अज्ञानसे सदा उन्हीं

नदियों में स्नान किया करते हैं व जलमें क्रीड़ा किया करते हैं सो महानदियोंके प्रसंग से वे परमगतिको पाते हैं १२ व दासत्व जोकि पापोंके समूहों से युक्त होताहै उसे परित्याग करके स्वर्गादि स्थानों को चलेजाते हैं जो पुण्यकारी जलमें स्नान करते हैं १३ सो इसीप्रकार महानदीके प्रसंगसे अन्य महापापी पापों से छूटजाते हैं इसमें कुछ संदेह नहीं कि महापुण्यात्माजनों के संगसे पापियोंके पाप नष्ट होतेहैं १४ महात्माओं के प्रसंगसे व दर्शनसे स्पर्श करनेसे पापियों के पाप छूटतेही हैं इस विषयमें विचारणा करनेकी कुछभी आवश्यकता नहीं है हे विप्रो ! इस विषयमें एक पापनाशन इतिहास कहते हैं सुनो वह वहुत पुण्य देता है एक महावन में सुलोभ नाम मृगव्याध रहताथा १५ । १६ वह कुत्तोंको संग लिये जाल व पांशी हाथोंमें किये धनुर्व्वाणों से नित्य मृगोंको माराकरे क्योंकि मांसके स्वादुमें वह वड़ा लम्पट होगया था १७एक समय धन्वावाण हाथों में लिये वह दुष्टात्मा कुत्तोंको संगलिये विन्ध्याचलके दुर्गम स्थानमें गया १८ व मृग रुरु वराह सूकरादि डरेहुए वहुत से जन्तुओं को उसने मारा व उसी समय नर्म्मदाके तीर से कोई मछली मारनेवाला धीवर १९ मछलियों को मार जलसे वाहर निकला व उसी समय सुलोभनाम मृगव्याध के भयसे डरीहुई एक मृगी २० अपने जीव की रक्षा करनेके लिये अति विह्वलहो जीभ निकालेहुई आपहुँची वह वड़े वेगसे दौड़ती हुई नर्म्मदाके तीर पर आई २१ उसके वाण भी लगाथा व पीछे से कुत्ते भी दौड़े चले आते थे व पवनके वेग से सुलोभ नाम मृगघातक भी दौड़ा आता था २२ इधर से मछली मारनेवाले उस धीवर ने भी उसे देख वाण हाथ में लिया व धनुषपर चढ़ाकर उस वेचारी मृगी को मारा इतने में सुलोभ नाम लुब्धकभी कुत्तों सहित वहां पहुँचा २३।२४ व उसने कहा कि इसे न मारना यह मृगी हमारी है क्योंकि हमारा वाण इसके लगाहुआहै यह सुन मांसके लोभी उस मछली मारनेवाले २५ महाबली दुष्टात्माने भी उसका कहा न मानकर मृगीके ऊपर एक वाण मारा व उधरसे मृगव्याधने भी तीक्ष्ण वाण उसके मारा २६

बस उन दोनों पापियों के बाणों के लगनेसे वह मृगी मृतकके समान होगई तब तक कुत्ते आकर नोचनेलगे तब तो वह मृगी उचकी व जाकर नर्म्मदानदी के भीतरगिरी व उसके संगही वे कुत्ते भी उस विमल नर्म्मदा के कुण्डमें कूदे २७।२८ तब मृगव्याध क्रोध से मूर्च्छित उस धीवरसे बोला कि हे दुष्ट ! यह मृगी तो हमारी थी तू ने बाणसे क्यों इसे मारा २९ तब मछलियों का मारनेवाला उस मृगघातकसे बोला कि नहीं यह मृगी हमारी है तू घमण्डके मारे अपनी कहताहै ३० बस ऐसा कहकर क्रोधमें व लोभमें आकर दोनों युद्धकरनेलगे यहां तक कि लड़ते २ वेभी दोनों उसी विमल नर्म्मदा जीके जलमें गिरे ३१ उस समयमें दैवयोगसे एक पर्व्वका योग था अमावास्या तिथि लगगईथी वह पर्व्व सर्व्वथा गतिदायक और महापुण्य फलका देनेवाला था ३२ उसी पर्व्वमें वे सबके सब जलमें गिरे यद्यपि वे सब जप ध्यान से हीन थे व भावसत्यसे वर्जित थे ३३ परन्तु तीर्थस्नानके प्रसंग से मृगी कुत्ते व लुब्धक सबके सब पापोंसे विनिर्म्मुक्तहो परमगति को चलेगये ३४ इससे हे ब्राह्मणो ! तीर्थों के प्रभाव से व सज्जनों के संग से पापियों के पापभी नष्ट होजाते हैं जैसे अग्निके संयोग से काष्ठ जलजाते हैं ३५ सूतजी बोले कि इसीप्रकार उन महात्मा ऋषियों के संसर्ग से व उनसे वार्त्तालाप करने व उनके दर्शन करनेसे व स्पर्श करने से उस पापी राजा वेन के भी पाप नष्ट होगये अत्युग्र पुण्यात्मा के संसर्ग से पापियों के पाप नष्टही होजाते हैं ३६। ३७ व अत्युग्र पापियों के संग से अल्प पुण्यवाले पुरुषों को पाप भी लग जाते हैं सो अपने नानाके पापके दोषसे वेन लिप्त होगयाथा ३८ इतना सुनकर ऋषिलोगोंने प्रश्न किया कि वेनके मातामह अर्थात् नानाके कौनदोषथा हमसे विस्तारसहित कहो वही मृत्यु वही काल वही यम व धर्म्मराज ३९ केवल वह उस अधिकारपर स्थित रहता है किसीका मारनेवाला नहीं स्थितहोसक्ता चर व अचर सबलोग अपने अपने कर्म्मके वशीभूतहोते हैं ४० इससे कर्म्मानुसारजीते मरते व सुख दुःखादि भोगते हैं पापी तिनके कर्म के विपाक से यमराजजी को

भयानक देखते हैं ४१ और पुण्यात्मा यमराजजी दिनदिनमें पापियों को उनके कर्म से सब नरकों में लेजाते और ताड़ना देते हैं ४२ और पुण्यात्माओं को सब पुण्यकर्म्मों में धर्मात्मा यमराजजी लगाते हैं पुण्यात्माका दोष नहीं देखते ४३ ऋषियोंने सूतजीसे पूंछा कि पापी वेन किस दोष से मृत्युको प्राप्तहुआ तब सूतजीने कहा कि दुष्ट चित्तवाले पापियोंको मृत्यु नित्यही शासन करती है ४४ काल रूपसे वर्तमान होती और पापियोंके कर्म देखती है जिसका पापकर्म होताहै उसको तिसी कर्मसे नाशकरती है ४५ तिसका पापजानकर यमराजजी उसको लेजाते हैं पुण्यात्मा पुण्यकर्म से स्वर्गको जाता है ४६ इन सबको दूतों की द्वारा मृत्यु युक्त करती है जो यहां बड़े २ दानपुण्य करते हैं व मंगलकर्म्म सदा करते रहतेहैं ४७ उनको मृत्यु नानाप्रकारके भोग भोगनेको देती है व दुष्ट पापियोंको वही मृत्यु लोहदंडादिकों से ताड़ित कराकर नानाप्रकारके कष्ट देती दिखाती है वस कर्महीसे मृत्युका व्यापार ऐसाहै मृत्युभी पाप व पुण्यहीसे प्रयोजन रखताहै ४८।४९ व महात्मा मृत्युके लोभ और पुण्यसे सुनीथानाम कन्या हुईथी व पिताके कर्म्म देखतीहुई सदा क्रीड़ा किया करतीथी व प्रजाओं को जिसप्रकार पाप पुण्यके अनुसार मृत्यु दुःख व सुख देताथा सब सुनीथाभी देखाकरती थी ५०।५१ मृत्यु की कन्या महाभाग्यवाली सुनीथा एकदिन खेलती २ अपनी सखियों के साथ एक वनको गई ५२ वहांपर उसने एक बड़े सुन्दर गन्धर्वके पुत्र सुशङ्ख को देखा व उसके गाने का कोलाहल सुनकर वहांगई ५३ व सर्वांग सुन्दर उस गन्धर्वकुमार को अच्छी तरह निकट से देखा वह गीतविद्याकी सिद्धि के लिये सरस्वती जीका ध्यान कररहाथा ५४ यह वहां रहकर उस गन्धर्व का विघ्न नित्यही आप करे वह विचारा गन्धर्व क्षमाकरे व नित्य कहे कि तू यहांसे चलीजा हमारे ध्यान में क्यों विघ्न डालती है पर यह उसके कहने से वहां से न हटी बार २ विघ्नही करतीरही तप करतेहुये उसको इसने उलटे ताड़ित भी किया कि तू क्यों तप करता है ५५।५६ तब वह सुशङ्ख नाम गन्धर्व इस सुनीथा नाम मृत्यु की

कन्या से अतिक्रुद्ध होकर बोला कि हे पापिनिदुष्टे ! तू क्यों हमारे तपमें बार २ विघ्नही करती चलीजाती है ५७ महात्मालोग मारने परभी उसके बदले में उसे नहीं मारते व न गालीआदि पाने से उलटकर गाली ही उसे देते हैं ५८ पर तूने तप करतेहुये निर्दोष हमको ताड़ित किया इतना पापिनी सुनीथासे कहकर वह धर्मात्मा गन्धर्व्व तो महाक्रोध से चुपहोरहा क्योंकि उसने विचारा कि यह स्त्री है व दुष्टता करती है पर यह मारे पाप मोहके व बाल्यावस्थाके कारण ५९।६० तपस्या करतेहुये महात्मा सुशंखसे बोली कि तीनों लोकों में जितने प्राणी बसते हैं उन सबों को हमाराही पिता मारताहै ६१ व दुष्टोंको सदा सन्तप्त करताहै और सज्जनों का पालन करता है तिनको दोष नहीं होता महापुण्य से बर्तता है ६२ यह सुशंख नाम गन्धर्व्व से कह जाकर अपने पिता से सुनीथा बोली कि हे तात ! हमने वनमें आज तप करतेहुये एक गन्धर्व्व के पुत्रको ताड़ित कियाहै ६३ वह काम क्रोधआदि से रहित था अपना मन लगाये सदा एकान्त में ध्यान करता था जब हमने उसे बहुतही दुःखित किया तब वह धर्म्मात्मा क्रोधयुक्त होकर हमसे बोला ६४ कि मारतेहुये को मारना न चाहिये न गाली देतेहुये को गाली देनी चाहिये हे तात ! उसने हमसे यह कहा सो आप हमसे इसका कारणकहें ६५ हे द्विजसत्तमो ! जब मृत्युसे सुनीथाने ऐसा कहा तो मृत्यु सुनीथा से कुछभी नहीं बोला क्योंकि वह तो धर्म्मात्मा है इस दुष्टा अपनी कन्या के वचनका क्या उत्तर देता ६६ तब एकदिन फिर सुनीथा वहां वनमें गई जहां वह सुशंख गन्धर्व्व तप करताथा व जातेही उसने तप करतेहुये उसको दुष्टतासे हाथसे मारा ६७ जब मृत्युकी कन्यासे वह सुशंख गन्धर्व्व व्यर्थ फिर ताड़ित हुआ तो क्रुद्धहोकर उस महातेजस्वी ने सुनीथा को शापदिया ६८ कि हे दुष्टे ! जिससे कि वनमें तप करतेहुये निर्दोष हमको तूने व्यर्थ ताड़ितकिया इस से हम तुझे शाप देते हैं ६९ सो सुन जब तू गृहस्थाश्रम को प्राप्तहोगी व अपने पतिके संग स्त्री पुरुषका व्यवहार करेगी तब पापाचारयुक्त देवता व ब्राह्मणों का निन्दक ७० सब पापोंके करने में

रत है दुष्टे! तेरे गर्भ से ऐसा पुत्र उत्पन्नहोगा ऐसा शापदेकर वह अन्यत्र जाकर तप करनेलगा ७१ व उसके वहां से चलेजाने पर सुनीथा अपने गृहमें आई व अपने महात्मा पितासे सब समाचार तप्तमन होकर उसने कहा ७२ जैसे कि उस गन्धर्व के पुत्रने शाप दिया था व वह सब उसका कहाहुआ मृत्युने सुना ७३ तब कहा कि दोषरहित तप करतेहुये उसे तूने क्यों ताड़ित किया हे पुत्रि ! जो तुमने उसको ताड़ित किया यह उचित नहीं किया ७४ ऐसा कहकर धर्म्मात्मा मृत्यु तिसकी भाग्यकी चिन्तना कर बहुत दुःखित हुआ ७५ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि अत्रिमुनि के पुत्र महातेजस्वी व प्रतापी अंगनाम मुनि एक समय नन्दनवनको गये ७६ वहां उन्हों ने देवराज पाकशासन इन्द्रजी को देखा तो अप्सराओं के गणोंसे व गन्धर्व किन्नरों के गणों से युक्तथे ७७ व सब ओरसे अप्सरादि पंखे से पवन कररही थीं व सुन्दर स्वरोंसे गानकरती थीं हंसगामिनी रूपवती स्त्रियां चामरों से सेवा कररहीथीं व हंसके समान उजले छत्रसे जोकि चन्द्रमा का अनुकरण करता था उसके ढुरने से ७८ । ७९ सब भूषणभूषित इन्द्र शोभित होते थे व काम क्रीड़ा कररहे थे ऐसे इन्द्र को जब देखा ८० व उनके समीप चारु मंगलवती महाभाग्यवती इन्द्राणीजी को भी विराजमान देखा जो कि रूपसे व तेजसे व तपसे महायशस्विनी थीं ८१ सौभाग्य व पाति व्रत धर्म्म से प्रकाशित होरही थीं उनके संग इन्द्र नन्दनवन में विहार करते थे ८२ इन्द्रकी लीला देख द्विजों में उत्तम अंगजी कहने लगे कि ये देवराज धन्यहैं जो ऐसे लोगोंके मध्यमें विराजमानहैं ८३ अहो इनके तपके वीर्य्य को है जिससे इन्होंने ऐसा महास्थान पाया है जो हमारे भी सब लोकों के धारण करनेवाला ऐसाही पुत्र होता ८४ तो हम भी बड़े सुखको पाते इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥

चौ० इमि चिन्तापर अंगमुनीशा । मनसुमिरतबहुविधिजगदीशा ॥
निजगृह गयहु भयहु अतिवेगी । चितसो चलकरनो सुतनेगी ८५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

# इकतीसवां अध्याय ॥

दो० इकतिसयें महँ अंगको अत्रि दीन उपदेश ॥
इन्द्रसदृशसुतहितकरन तपसोगयहुनगेश १

सूतजी शौनकादि ऋषियोंसे बोले कि महातेजस्वी अङ्गजी उन महात्मा इन्द्रजीकी लीला सम्पदा भोग विलास देखकर १ सोचने लगे कि इन्द्र के तुल्य पुत्र हमारे कैसे हो व धर्म्मात्मा भी एकही हो एक क्षणमात्र चिन्ता करके २ सत्यमें तत्पर अंगजी अपने घरमें आये और अपने पिता अत्रिजी से बड़ी नम्रता से प्रणाम करके पूंछा कि ३ किस पुण्य समाचारके करने से पुरुष इन्द्रत्व भोगता है व किस पुण्यकी बड़ी पुष्टता है कैसा कर्म कियाहै ४ व किस प्रकारका तप कियाहै और पूर्व समयमें किसका आराधना कियाहै हे सत्यवानोंमें श्रेष्ठ यह हमसे विस्तारसहित कहो ५ अत्रिजीबोले कि हे महाभाग! बहुत अच्छा २ जो हमसे ऐसा तुमने पूँछा हे वत्स! अब इन्द्रका चरित हम तुमसे कहतेहैं सुनो ६ पूर्व्वकालमें एक बड़े मेधावी सुव्रत नाम उत्तम ब्राह्मणहुये उन्होंने कृष्ण हृषीकेशजी को तपस्यासे सन्तुष्ट किया ७ इससे वे कश्यपजी के वीर्य्यसे अदिति जीके पुण्यगर्भ में प्राप्तहुये व उत्पन्न होकर श्रीविष्णुभगवान् के प्रसादसे देवराज होगये ८ यह सुन अंगजी बोले कि पिताको प्रिय इन्द्रके समान पुत्र हमारे कैसे उत्पन्न हो इसका उपाय आप हमसे कहें आप ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ हैं ९ यह सुन अत्रिजी बोले कि हे महामते अंग! संक्षेप रीति से महात्मा सुव्रतका सब पुण्यचरित सुनिये १० जिस प्रकारसे पूर्व्वकालमें मेधावी सुव्रतजीने श्रीहरिकी आराधनाकी थी व उनका भाव भक्ति व ध्यान ११ देख श्रीजगन्नाथ जीने उनको दूसरे जन्म में महापद दिया जिस पदके अधीन चराचर सब तीनों लोक हैं १२ व विष्णुके प्रसाद से जैसे इन्द्र उसे भोगते हैं इस प्रकार इन्द्र का कियाहुआ सब तुम से कहा १३ कि हे सत्तम! श्रीहरि भक्तिसे भावसहित ध्यान करनेसे संतुष्ट होते हैं व जिसकी भक्तिसे श्रीहरि सन्तुष्टहोते हैं उसे सब कुछ देदेते हैं १४

इससे सब कुछ देनेवाले सर्व्व संभव सर्व्वज्ञ सब जाननेवाले श्रेष्ठ पुरुष श्रीगोविन्दजी की आराधना करो १५ हे पुत्र! उनसे जिस जिस पदार्थकी इच्छा करोगे सब पाओगे १६ ॥

चौपै० वरसुखकेदाता धर्मविधाता अरुसबमोक्ष प्रदाता ।
सबजगके नाथा दीनसनाथा हैं हरिसुनु यह बाता ॥
तासों सुतताही करिमनमाहीं आराधहु विधिनीके ।
तुम इन्द्रसमाना अतिबलवाना पैहहुपुत्र सुठीके १७
परमारथसमेता धर्म्मोपेता सुनि निजपितुके वचना ।
मनसोंगहिनीकेअरुकरिठीके करिप्रणाममुनिचरना ॥
शाश्वतहितकारी वरदसुरारी मनमहँकरिहितजानी ।
सोमुनिविज्ञानी पितुकीबानी मानी सब गुणखानी १८
लहिजनकनिदेशाचल्यहुविदेशा करनहेतुतपभारी ।
वरअंग मुनीशा धरिपदशीशा निजपितुकेअघहारी ॥
गिरिराज सुमेरू जहँ सुरफेरू सदा करत मनलाये ।
तहँ गो तपहेतू सुस्थिरचेतू करिहरिपद शिरनाये १९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादे
वेनोपाख्यानेएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

## बत्तीसवां अध्याय ॥

दो० बत्तिसयें महँ मेरुगिरि वर्णन अरु तप अंग ॥
हरिसोंवर वाञ्छितलह्यहु मुनियहकहो प्रसंग १

सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि नानारत्नों से अच्छेप्रकार सर्व्वत्र प्रकाशित व सबकहीं सुवर्ण से युक्त वह सुमेरुपर्व्वतराज ऐसा शोभित होताथा जैसे किरणोंसे सूर्य्य भगवान् शोभितहोते हैं १ जिस पर अतिशीतल अशोक वृक्षोंकी छायाओंमें दृढ़ आसन मारे बैठेहुये योगीलोग श्रीहरिका ध्यान कररहेथे २ कहीं २ मुनिलोग तप करते व कहीं किन्नरलोग गाते व कहीं २ ऋषि व गन्धर्व्वलोग सन्तुष्ट बैठे वीणा तालबजाते ३ व गन्धर्व्वलोग तालमान लयमें लीनहो निषाद

ऋषभ गान्धार षड्ज मध्यम धैवत व पंचम इन सातो स्वरोंसे गा
कररहे थे मूर्च्छना रतिआदि से संयुत स्पष्ट मनोहर गीतें गातेथे ४
उस पर्व्वत श्रेष्ठपर चन्दनों की छायाओं में बैठेहुये गीतके सब भे
तालस्वर जाननेवाले गन्धर्व्वलोग तत्पर हो गान करते थे ५ व उ
पर्वतोत्तम में देवों की स्त्रियां नाचतीं व पापनाशन पुण्यदायी दि
सुन्दर कल्याण देनेवाला ६ मधुर वेदका शब्द सुनाई देता व चन्द
अशोक पुन्नाग शाल ताल तमाल ७ वटके बड़े २ वृक्षोंसे वह पर्व्व
तोत्तम शोभित था सन्तानक कल्पवृक्ष केलाआदि के वृक्षोंसे विरा
जमान था ८ व सुन्दर फूलेहुये स्वर्ग के वृक्षोंसे सब ओर शोभि
था अनेक प्रकार की धातुओं से युक्त और अनेक प्रकारके रत्नसमू
वाला था ९ अनेक प्रकारके कौतुक और मंगल संयुक्त था व दे
समूह तथा अप्सराओं के झुंडों से संकुल था १० ऋषियों मुनियं
सिद्धों व गन्धर्व्वों से सब ओरसे प्रकाशित था पर्व्वताकार गजो
से व सिंहोंके नादोंसे विराजित था ११ शरभ मतवाले शार्दूल व
मृग शशक लोमड़ीआदि से युक्त था विमल जलोंसे सम्पूर्ण वापी
कूप तड़ागादिकों से अलंकृतथा १२ जिनमें कि हंस कारण्डवआदि
पक्षी कूजते थे उनसे शोभित था व उनमें सुवर्ण के पुष्प व कमल
कह्लार उत्पल शतपत्रादि कमलकी नानाजातियों के पुष्प लगे थे
इससे शोभित था १३ ठौर २ नदियों की धारायें बहती थीं झरने
झरते नाना प्रकारकी चित्र विचित्र शिलाओं से विराजता था १४
व बड़ी २ लम्बी चौड़ी सुवर्णकी शिलाओं से जोकि सूर्य्य व अग्नि
के समान चमकती थीं उनसे वह शैलराज शोभितथा १५ व देवता-
ओंके विमानों से तथा पर्व्वताकार देवताओं के धवरहरों से व हंस
और चन्द्रमा के समान सुवर्ण के दण्डोंसे अलंकृत था १६ धवरहरों
पर सुवर्णमय कलश विराजित थे व नानाप्रकार के गुणोंसे युक्त दे-
वगणों से शोभितथा १७ व अनेकप्रकार के देवसमूह गन्धर्व्व चा-
रणोंसे सब ओरसे पुण्यात्मा पर्वतों में उत्तम मेरुपर्वत शोभितथा
१८ व उसी पर्व्वतपरसे महापुण्य जलवती गंगानाम महानदी सब
पुण्यरूप तीर्थों से युक्त कमलोंसे शोभित हंसों से युक्त बहती १९

जिसकी सेवा मुनि व ऋषिसमूह कियाकरते इस प्रकारके गुणों से युक्त पुण्य कौतुक मंगल संयुक्त उस सुमेरुपर्व्वतपर २० अत्रि मुनिके पुत्र पुण्यात्मा अंगजी पहुँचे व जाकर गङ्गाजी के तीर एक पुण्यरूप कन्दरा में एकान्त २१ बैठकर वे मेधावी काम क्रोध से वर्जित होकर व सब इन्द्रियों को अपने वशमें करके हृषीकेश भगवान्को मनमें करके २२ व क्लेशनाशन श्रीकृष्णजी को ध्यान करते हुये सोते बैठे जागते मनसे सदा सर्व्वत्र देखनेलगे २३ व नित्य योगाभ्यास से संयतेन्द्रिय होकर अनन्यमन होगये व चर अचर सब जीवोंमें केशव भगवान् को देखनेलगे २४ चाहे गीले पदार्थहों वा सूखेहों सबों में श्रीहरिकोही देखते इस प्रकार तप करतेहुये सौवर्ष बीतगये २५ तब इस प्रकार तप करतेहुये उन ब्राह्मणोत्तम अंगजी को देखकर जगन्नाथ चक्रपाणिजीने नित्य बहुत घोर विघ्न मुनिको दिखाये २६ परन्तु उन्हीं महात्मा श्रीनृसिंहजी के तेजसे वह धर्म्मात्मा ब्राह्मण उन विघ्नोंको ऐसा भस्म करता गया जैसे अग्नि इन्धनों को भस्म करताहै २७ व नानाप्रकार के नियमों के करनेसे व अन्य संयम उपवासादिकों के विधान से वह ब्राह्मण शरीर से तो अतिदुर्ब्बल होगया परन्तु अपने तेज से अतिदीप्तिमान् होतारहा २८ व सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशित दिखाई देनेलगा इस प्रकार तपस्या में निरत जनार्दनजीका ध्यान करते अंगजी को २९ श्रीभगवान्जीने आकर दर्शन दिया और अंगजी से बोले कि हे मानद! वर मांगिये उन्हें देख परमनिर्वृत ३० प्रसन्न बुद्धियुक्त अंगजी नम्र होकर बोले कि ३१ ॥

चौ० तुमगतिसबजनकेजगपावन। भूतभव्य भवके हौ भावन ॥
सर्व्वभूतपति सब गुण तोरे। भूतरूप विनवत करजोरे ॥
गुणरूपी गुणगम्य गुणार्णव। गुह्यवृत्त प्रणमत सुखमार्णव ॥
शंख चक्रदर धर भगवाना। नमो नमोहै सहित विधाना ॥
सत्यभाव अरु सत्य स्वरूपा। सर्व्व सत्यमय वेद निरूपा ॥
माया मोह विनाशनहारे। सब माया कर नमत तुम्हारे ॥
मायाधर मायाधृत देहा। मायारूप न रूप न गेहा ॥

सर्व्व मूर्त्तिधर शङ्कररूपा। करत प्रणामस्वमतिअनुरूपा॥
सर्व्वधाम प्रणमत हौं तोहीं। धर्म्मधारि पालहु अब मोहीं॥
तुम आकाश प्रकाशनहारे। वह्निरूप नम करत तुम्हारे॥
शुद्धरूप स्वाहा तनुधारी। अरु अव्यक्त महात्मकरारी॥
व्यासरूप जगव्यासस्वरूपा। नमोनमो हम करत अनूपा॥
वासुदेव विश्वेश मुरारी। अनलरूप सर्व्वत्र प्रचारी॥
हुतभोक्ता हुत आहुतिरूपा। करतप्रणामस्वमति अनुरूपा॥
वामन कपिलदेव हरिनामा। करत प्रणाम सुनाम सुधामा॥
नमो नृसिंहदेव भगवाना। सत्त्वपाल बलपाल महाना॥
एकाक्षर गोविन्द गुपाला। नमोनमो हम करत कृपाला॥
सर्व्वाक्षर अरु हंस स्वरूपा। लेहु प्रणाम सकल सुरभूपा॥
पञ्चतत्त्व त्रयतत्त्व स्वरूपा। नमत चरण तव हे जगरूपा॥
पञ्चविंश तत्त्वात्मक देवा। दत्ताधार करत तव सेवा॥
कृष्ण कृष्णरूपी भगवन्ता। लक्ष्मीनाथ अघौघ निहन्ता॥
पद्मपलाश नयननम तोरे। आनँददानि हरहु दुख मोरे॥
विश्वम्भर ममपाप विनाशन। नमोनमो हमकरत प्रकाशन॥
शाश्वतअव्ययअनघअनामय। लेहुप्रणति तव होयसदाजय॥
पद्मनाभ केशव कमलाप्रिय। वासुदेव सर्व्वेश भक्त हिय॥
आनँद कन्द पादयुग तोरे। मधुसूदन बिनवत करजोरे॥
देहु दास्य तव चरणनमामी। केशव जन्मजन्म अनुगामी॥
शङ्खपाणि शङ्करहु हमारो। शान्ति देहुयशजपत तिहारो॥
भवदारुणहुत अशनज तापा। शोकमोह बहुविधि तनुव्यापा॥
दै अवज्ञान हरहु दुखसारे। विश्वनाथ हम शरण तुम्हारे ३२।५

इस प्रकार की स्तुति अङ्गनाम महात्माकी सुनकर व घनश्या निज महापराक्रमी रूप दिखाकर ५५ भगवान् प्रसन्न हुये वह रू शंख चक्र गदा पद्मको धारणकिये गरुड़पर आरूढ़ प्रकाशित दि दिया ५६ सब भूषणोंकी शोभा से युक्त हार कुण्डल कङ्कण धार किये व परमदिव्यरूप वनमालासे विराजमान ५७ अङ्गमुनि आगे हृषीकेशजी ने अपना ऐसा रूप दिखाया जो कि पुण्यका

भृगुलता और कौस्तुभमणिसे शोभितथा ५८ सर्व्वदेवमय हरिजी ने अपनी देहदिखाकर ऋषिश्रेष्ठ महात्मा अङ्गजी से यह वचन कहा ५९ भो भो महाभाग विप्र हमारा परमवचन सुनो यह वचन मेघके नादके समान सुनाकर कहा ६० कि हम तुम्हारे तप से सन्तुष्ट हुये अब अच्छावर हम से मांगो ऐसा कहतेहुये सन्तुष्ट विश्वरूप जनेश्वर दीप्तिमान् कमलापति हृषीकेशजी को देखकर उनके युगलचरणकमलोंके बार बार प्रणाम करके ६१।६२ बड़े हर्षसे युक्तहो उन जनार्दनजीसे अङ्गजी बोले कि हे देवोंके स्वामी ! हे शंख चक्र गदाधरजी ! मैं तुम्हारा दासहूँ ६३ जो मुझको वरदिया चाहते हो तो ऐसा उत्तमपुत्र दीजिये कि जैसे सब तेजों से युक्त स्वर्ग में इन्द्र प्रकाशित होते हैं वैसेही मेरापुत्र सदा प्रकाशितरहे ६४ बस वैसाही पुत्र दीजिये कि इन्द्रहीके समान तीनों लोकोंकी रक्षा करे व सब देवताओं को प्रियहो ब्रह्मण्य धर्म्मपण्डित ६५ दाता ज्ञानी धर्म्म तेजसे समन्वितहो तीनों लोकों का रक्षक व श्रीकृष्णचन्द्रजी के धर्मोंका पालकहो ६६ व सब यज्ञों के करने में एकही मुख्यहो शूर व तीनों लोकों का भूषणहो वेदके माननेवाला वा चार वेदों का पूरा पण्डितहो सत्यप्रतिज्ञ जितेन्द्रिय ६७ सब से अजित सबको जीतनेवाला विष्णुजी के तेजसे युक्तहो वैष्णव पुण्यकर्त्ता पुण्य से उत्पन्न पुण्यलक्षण ६८ शान्तस्वभाव तपस्वी सब शास्त्रों में विशारदहो वेदज्ञ योगियों में श्रेष्ठ व आपके सब गुणों के समान हो ६९ बस जो वर दिया चाहते हो तो इसी प्रकारका पुत्र हमको दीजिये यह सुन श्रीभगवान् विष्णुजी बोले कि बहुत अच्छा इन्हीं गुणों से युक्त तुम्हारे पुत्रहोगा ७० वह अत्रिकेवंशकाभी धर्त्ताहोगा व इस विश्वभरको भी धारण करेगा तेज व यशसे अपने पिताका उद्धारकरेगा ७१ व सत्यों से अपने पिता तथा पितामह दोनों का उद्धारकरेगा व आप विष्णु के परमपद हमारे स्थान को प्राप्तहोंगे ७२ अब किसी पुण्यवीर्यकी पुण्यकारिणी कन्या से विवाहकर ७३ तिस में शुभ पुण्यात्मा पुत्र को उत्पन्न करो हे महामते ! हमारे प्रसाद से वह धर्मात्मा होगा ७४ और सर्वज्ञ सर्ववेत्ता जैसा तुमने

वाञ्छा किया है ऐसा पुत्र होगा ऐसा वरदेकर श्री हरिभगवान् अन्तर्द्धान होगये ७५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेअंगवरप्रदानंनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

## तैंतीसवां अध्याय ॥

दो० तैंतिसयें महँ पितु गिरा सुनी सुनीथा फेर ॥
वनहिंगई सखियनकह्यो चिन्तातजन सुटेर १

ऋषियोंने इतनीकथा श्रवणकर सूतजी से पूछा कि हे सूतजी! जब सुशंख नाम महात्मा गन्धर्व्व के पुत्र ने शाप दिया तो उस पाप से वह सुनीथा कैसी हुई व क्या क्या कर्म्म उसने किया १ व उस शापसे उसने कैसा पुत्रपाया इत्यादि सुनीथा का चरित हमसे विस्तारसहित कहो २ सूतजी बोले कि जब सुशंख ने उस तनुमध्यमा सुनीथाको शापदिया तो वह दुःखसे पीड़ितहो अपने पिताके स्थान पर गई ३ व पितासे अपना सब चरित्र उसने प्रकाशित किया सत्यवानों में श्रेष्ठ धर्मात्मा मृत्युने उसका चरित सुनकर ४ उस महात्मा से शापित अपनी कन्या सुनीथासे बोले कि तुमने धर्म्म तेजके नाशनेवाला बड़ाभारी पापकिया ५ हे महभागे! तुमने क्यों सुशंखको ताड़ित किया यह तुमने सब लोगोंके विरुद्ध कामकिया ६ जो कि काम क्रोध विहीन सुशान्तरूप धर्म्मवत्सल तपमार्गमें विलीन परब्रह्ममें स्थित ७ ऐसे पुरुषको जो ताड़ित करताहै उसके पाप का फल सुनो हे पुत्रि! उसके पापात्मा पुत्र होता है व बड़ेपापको भोगता है ८ व मारतेहुये को जो मारता है व गालीआदि कुवाच्यकहने वाले को जो कुवाच्य कहताहै वह उस मारनेवाले वा गालीदेनेवाले के पापका फल भोगताहै इसमें सन्देह नहीं है ९ वही शान्तहै व वही जितात्मा है जो ताड़न करतेहुये को नहीं ताड़ितकरता व जो कोई निर्दोषके साथ पाप करते हैं १० वे तो मोहसे महापाप करते हैं व जो दोष करनेवालेके सङ्ग दोषकरते हैं तो दोषीके दोष उनके ऊपर आजातेहैं ऐसेही जो कोई निर्दोष पुरुष किसी पापी को ताड़ित

करताहै तो उस पापीका पाप उस निर्दोषके ऊपर चलाजाताहै इसी से ज्ञानवान् पुरुष ताड़न करतेहुये को भी कभी ताड़ित नहीं करता 11 । 14 हे पुत्रि ! तुमने बड़े पापका पालन कियाहै यद्यपि उसने उसके बदले में तुमको शापदेदियाहै तथापि अब तुम पुण्यको 15 वह पुण्य सज्जनोंके सङ्गसे होताहै इससे सदैव सत्सङ्गति करो व योग ध्यान ज्ञान से अब अपना समय बिताओ 16 क्योंकि सज्जनों का संग महापुण्यदायक व कल्याण करनेवाला होताहै हे बाले ! तुमने बड़ी दुष्टताका काम कियाहै अब सत्संगका गुण देखो 17 जलके स्पर्शकरने व पीने व स्नानकरने से महात्मा मुनिलोग सिद्धियों को पातेहैं व भीतर बाहरके सब मल उनके दूरहोजाते हैं 18 मुनियों के विशेष और भी सब चराचरलोग जलके स्पर्श स्नानादिकोंसे सदा शुद्ध होते हैं हे पुत्रि ! जल शान्तहोता व सुशीतलहोता व सबका प्रियहोता है 19 निर्म्मल रसयुक्त पुण्यवीर्य मलनाशक होताहै इससे उसीके समान सबको शान्त रहना चाहिये व उसीके तुल्य सबको सुख देना चाहिये इसके अन्यथा न करना चाहिये 20 जैसे अग्निके प्रसंगसे सुवर्ण मलको छोड़देताहै वैसेही सज्जनों के संसर्ग से मनुष्य पापको छोड़ताहै 21 व वह अग्निके तुल्य प्रकाशित रहताहै व पुण्यके तेजसे प्रज्वलित रहताहै ऐसेही सत्यरूप दीपसे सज्जनलोग प्रकाशित रहते हैं व ज्ञान से अतिनिर्म्मल रहते हैं 22 व ध्यान भावसे अतिउष्ण रहते हैं इसीसे पापीनर सज्जनरूप अग्नि का स्पर्श नहीं करसके परन्तु सज्जन अग्निके प्रसंगसे पाप सब भस्म होजाताहै 23 इससे तुम सज्जनों का संग करो इसके विपरीत न करो पापके भारको छोड़ केवल पुण्यके आश्रित होओ 24 सूतजी बोले कि जब दुःखित सुनीथाको पिताने इसरीतिसे समझाया तो वह अपने पिताके चरणोंको प्रणामकर निर्ज्जन वनको चलीगई 25 व काम क्रोध तथा बाल्यभाव को छोड़ तप करने लगी मोह द्रोह व मायाको छोड़ एकान्तमें स्थितहुई 26 उसके पीछे उसकी सखियांभी खेलने व उसका लाड़प्यार करनेके लिये वहां गईं व दुःखभागिनी उस सुनीथाको उन्होंने देखा 27 लोकि

ध्यानकररहीथी व चिन्ताके पासको नहीं जातीथी इससे उससे चिन्ता युक्त सब बोलीं कि हे भद्रे ! तुम यहां एकान्तमें बैठीहुई क्यों चिन्ता करतीहो २८ इसका कारण हमलोगोंसे कहो क्योंकि चिन्ता दुःख को देतीहै हां चिन्ता एकही सात्थेक होतीहै जोकि धर्म्मके अर्थ कीजातीहै २९ व दूसरी वह चिन्ता सार्थका होतीहै जो योगियोंको आनन्द बढ़ाती है अन्य सब चिन्ता निरर्थक होतीहै इससे चिन्ता न करनी चाहिये ३० चिन्ता शरीरका नाशकरतीहै व बल तेजका तो प्रणाशनहीं करतीहै सब सुखोंको नाशती है रूपकी हानि दिखा-तीहै ३१ तृष्णा मोह लोभको भी यह चिन्ता प्राप्तकरातीहै व प्रति दिन चिन्ता कीगईहुई पापको उत्पन्न करातीहै ३२ चिन्ता व्याधि का जब प्रकाश होताहै तब वह नरकको पहुँचाताहै इससे हे शोभने ! चिन्ताको छोड़ अपनी पूर्वप्रकृतिके समान कार्य्यकरो ३३ मनुष्य जो पूर्व समयमें कर्म्म करने से इकट्ठा करताहै उसीको भोगताहै इससे ज्ञानीलोग किसी वस्तुकी चिन्ता नहींकरते ३४ इससे चिन्ता को छोड़ अपना सुख दुःखादिक कहो उन सबोंका वचन सुनकर सुनीथा बोली ३५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेसुनीथा चरितंनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

# चौंतीसवां अध्याय ॥

दो० चौंतिसयें महँ सखिन कह सब देवनमहँ दोष ॥
पुनि पतिमोहिनिकी कही विद्या जासों पोष १

सूतजी शौनकादिक ऋषियों से बोले कि सुनीथाने सखियों से जैसे महात्मा सुशंख गन्धर्व्वने पूर्वसमय में शाप दियाथा वह वृत्तान्त सब अपनी सखियोंसे कहा १ व उसीदुःखसे अपनेको पीड़ित बताया व सखियोंसे फिर कहा हे सखियो ! और भी कुछ चिन्ता का कारण कहती हैं सुनो २ हमारे गुण रूपकी सम्पत्तिका ढेर देखकर हमारे कारण हमारे पिताजीने बड़ीचिन्ता की ३ व देवताओं व मु-नियोंको हमको देनाचाहा हाथमें हमको ग्रहणकर सबसे बोले ४

कि यह सुन्दर नेत्रवाली सोलहवर्ष की हमारीकन्या सब गुणोंसे युक्तहै इसे तुमलोगोंमें जो अधिक गुणवान् व महात्मा हो उसको दियाचाहते हैं ५ मृत्युका ऐसा वाक्य देवताओं व सब ऋषियोंने सुना तब वैसा कहतेहुये मृत्युसे इन्द्रादि देवगण बोले कि ६ हां तुम्हारी यह कन्या सब गुणोंसे युक्तहै व शीलोंकी तो परमनिधि है परन्तु एकबड़ेभारी दोषसे युक्तहै जोकि इसे उस तपस्वी ऋषिने शापदियाहै ७ इससे इसमें जिस पुरुषके वीर्य्यसे पुत्र उत्पन्नहोगा वह पुत्र महापापी व पुण्यवंशका नाशक होगा ८ इससे यह गंगाजल से भरेहुये कलशके तुल्य दिखाईदेतीहै पर जैसे वह मदिरा स्पर्शकियेहुये हाथके स्पर्शसे मद्यहीका कुम्भ होजाता है गंगाजलका घटनहीं समझाजाता ९ ऐसेही यह तुम्हारी कन्याहै पापके संसर्गसे कुलपापी होजाता है जैसे सिरका का एकबूंदभी जो दूधमें पड़जाताहै १० वह पीछेसे दुग्धको नाशकरके अपनेही रूपका प्रकाश करताहै वैसेही पापीपुत्र वंशका नाशक होताहै इसमें कुछभी संशयनहीं है ११ बस इसदोषसे तुम्हारीकन्या पापभागिनीहै इससे इसे और किसीकोदो यह हमारे पितासे देवताओंने कहा १२ सो देव गन्धर्व व महात्मा सब ऋषियोंनेभी ऐसेही कहा जब उन सबोंने हमारा लेना अंगीकार न किया तो हमारे पिता दुःखसे बहुत पीड़ितहुये १३ सो यह सब हमाराही दोषहै जो सज्जनों ने हमको अंगीकार न किया क्योंकि हमींने तो पूर्व्वसमयमें ऐसा पापकर्म्म कियाथा १४ सो इस दुःखके शोकसे सन्तप्तहो हम इस निर्जनवन को चलीआईं यहांपर देहका सुखानेवाला तपहीकरेंगी १५ जो तुम लोगोंने हमारी चिन्ताका कारण पूछा वह हमने तुमलोगोंसे प्रकाशितकिया १६ मृत्युकी कन्या दुःखसे पीड़ित यशस्विनी सुनीथा ऐसाकहकर चुपहोरही फिर सखियोंसे कछु न बोली १७ तब सखियांबोलीं कि हे महाभागे ! शरीरनाशक इस दुःख को छोड़दो क्योंकि ऐसाकौनहै जिसके कुलमें कुछदोष नहींहै सब देवोंने पाप किया है १८ ब्रह्माजी ने पूर्व्वकाल में महादेवजीके समीप झूंठकहा था इसीसे ब्रह्मा अपूज्यहोजायँ यह देवताओंने कहदिया १९ इन्द्र

को देखो ब्रह्महत्यासे युक्तहैं परन्तु बड़े भाग्यवान् देवताओं के साथ तीनोंलोकों का राज्य भोगते हैं २० फिर ब्रह्महत्याके सिवाय गौतम मुनिकी प्रिया भार्य्या अहल्याके संग उन्होंने भोग कियाथा सो पर स्त्रीगामी होकरभी देव क्या देवराज कहाते हैं २१ महादेवजीने भी ब्रह्महत्याकीहै इससे अबभी उनके हाथमें ब्रह्माका शिर लपटारहता है पर देवता व वेदपारगामी सब ऋषिलोग उनके प्रणाम करतेहैं सूर्य्यदेव कुष्ठरोग से संयुक्तहैं परन्तु तीनों लोकोंको प्रकाशितकरते हैं २२।२३ उनकेइन्द्रादि चरअचर सबलोग नमस्कार करते हैं विष्णु भगवान् भृगुमुनि के शापसे दशबारतक पृथ्वी पर जन्मलेकर दुःखादि भोगते हैं २४ चन्द्रमाने अपने गुरु बृहस्पतिजी की स्त्री ताराके संग भोगकिया इससे उनके क्षयीरोग होगया व प्रतापवान् महातेजस्वी राजा २५ पाण्डुके पुत्र महाप्राज्ञ धर्म्मात्मा धर्म्मके अवतार युधिष्ठिर राजा होंगे अपने गुरु द्रोणाचार्य्य के वध के अर्थ मिथ्या बोलेंगे २६ इतने महात्माओंमें महापाप विद्यमान है विगुणता किसमें नहीं है व विनालाञ्छनका कौनहै २७ हे वरानने! आप तो थोड़ेही दोषसे लिप्त हैं हे श्रेष्ठरङ्गवाली ! हमलोग तुम्हारा उपकारकरेंगी २८ हे शुभे ! तुम्हारे अङ्गोंमें जो सज्जन स्त्रियोंके गुणहैं हे चारुलोचने ! वे गुण हमलोग अन्यत्र नहीं देखतीं २९ स्त्रियोंका भूषण सबसे प्रथमरूप है दूसरा भूषण शील है व तीसरा सत्यबोलना ३० चौथा अच्छेप्रकार शृङ्गार किये रहना पांचवांधर्म्म करना छठां मधुर बोलना हे वरानने ! ३१ सातवां भूषण अन्तःकरण व बाहरसे शुद्धरहना आठवां पिताका भावरखना नववां पति की सेवाकरनी ३२ दशवां सहनशीलता रतिमें कुशलता ग्यारहवां भूषणहै व पातिव्रतत्व बारहवां भूषणहै हे वरवर्णिनि! ३३ हे बाले ! हे वरानने ! इन बारहगुणों से तुम युक्तहो जिस उपाय से सुधर्म्म करनेवाला तुम्हारा पतिहोगा ३४ वही उपाय हमलोग करेंगी इस विषयमें हमलोग प्रयत्नकरेंगी यह सखियोंने सुनीथासे कहा व यह भी कि हम सब यत्न करतीहैं तुम साहस न करो साहस करनेसे होताहुआ भी कार्य्य नष्टहोजाताहै ३५ सूतजी शौनकादिकोंसे बोले

कि जब सखियोंने सुनीथासे ऐसा कहा तो वह सखियोंसे बोली कि जिस उपायसे धर्म्मात्मापति हमको मिले वह उपाय हमसे तुम सब कहो ३६ यह सुन रम्भादिक उसकी सखियां उससे बोलीं कि आप रूप मधुरतासे युक्त व ऐश्वर्य्यके बढ़ानेवाली हैं ३७ ब्राह्मणके शाप से डरके कुछ भयभीतहोगई हैं इससे हमलोग यहां आई हैं यह सुन्दर नेत्रवाली मृत्युकी कन्यासे कहा कि ३८ आपको एक ऐसी विद्या देंगी जिससे पति मोहित होजाताहै व सब मायावी पुरुषोंको भी सब कल्याण देनेवाली है ३९ यह कह सबोंने सुनीथा को सुख देनेवाली पति मोहिनी विद्या दी व कहा कि हे भद्रे ! जिस २ देवादिकको तुमको मोहित करना अभीष्टहोगा ४० उस २ को देखकर यह विद्या पढ़ना वह आप तुम्हारे पास आजायगा जब वह विद्या पाकर सुनीथाने उसे सिद्धकिया तब वह परमानन्दित हुई ४१ व अपनी सखियोंकेसङ्ग पुरुषोंके देखनेकेलिये घूमनेलगी घूमते २ पुण्य उत्तम नन्दनवन को गई ४२ वहां गङ्गाजीके तीरपर एक उत्तमपुरुष ब्राह्मणको देखा जो सब लक्षणोंसे सम्पन्न सूर्य्यके तेजके समान तेजस्वीथा ४३ लोकमें रूपमें अद्वितीयथा मानों दूसरा कामहीथा देवरूपसे महा भागवान् व भाग्यवान् और भाग्यदेनेवाला था ४४ उपमारहितथा क्योंकि विष्णुके तेजके समान उसके तेजकी प्रभा थी वैष्णव वहथा भी इसीसे विष्णुके तुल्य पराक्रमीथा ४५ ॥

चौ० कामक्रोधमोहादिविहीना । वंशविभूषण मन्त्र प्रवीना ॥
ऐसे पुरुषहि देखि लुभानी । सखिसों बोली परमसयानी ४६
को यह पुरुष रूप गुणखानी । तपप्रवीणयुत भाव सुबानी ॥
कहु रम्भे यह बात विचारी । दीखतपुरुष महाहितकारी ४७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

## पैंतीसवां अध्याय ॥

दो० पैंतिसयें महँ अंगमुनि चरितकहे संक्षेप ॥
ताहिबनावनपतिकह्यो रम्भासखिसोंऽवेप १

सुनीथा का वचन सुन रम्भानाम उसकी सखी बोली कि परमे श्वर से ब्रह्माजी उत्पन्नहुये व उनसे प्रजाओंकेपति महामनस्वी धर्म्मात्मा अत्रिजी हुये १ उनके पुत्र अंगनामहुये ये एकबार इन्द्र के नन्दनवनको गये वहां उनकी लीला व तेज आदि देखकर इन्होंने चाहा कि हमारे भी यदि इन्द्रके समान पुत्र होता तो बहुत उत्तम बातथी व ऐसाही धर्म्मात्मा भी होता २ तो यश कीर्तियुत मेरा कल्याण समेत जन्महोता यह विचार अपने पिताके उपदे से इन्होंने तपों व नियमोंसे श्रीविष्णु भगवान्‌जीकी आराधनाकी जब हृषीकेशजी सुप्रसन्नहुये तो इन्होंने यह वरमांगा कि इन्द्र तुल्य विष्णुकेतेज व पराक्रमसे युक्त वैष्णव सर्व्व पापनाशक पु हमको मधुसूदनजी दीजिये तब उन्होंने कहा कि अच्छा जैसा तु चाहतेहो वैसा पुत्र हमने तुमको दिया ५ । ६ तबसे ये विप्रेन्द्र पुण्य वती कन्याको देखतेहैं कि आवे तो उसके संग विवाहकरें जैसे तु सुन्दर सब अंगवाली हो तैसीहीको ये देखतेहैं ७ इससे हे वरारोहे इनके पास जाओ इनसे तुम में पुण्यात्मा पुण्यधर्म्म जाननेवाल विष्णुके समान तेजस्वी और पराक्रमी पुत्र होगा ८ हमसे जो तुम पूँछा था वह सब तुमसे हमने कहा व हे देवि ! ये तुम्हारे भर्त्ताहों इसमें कुछ सन्देह नहीं है ९ व हे देवि ! सुशंखका शापभी वृथ होजायगा इसमें भी संशय नहीं है व हे महाभागे ! इनसे जो पु उत्पन्नहोगा वह धर्मकाप्रचार करनेवाला होगा १० हे भद्रे ! यह हम तुम से सत्य २ कहती हैं तुम सुखी होगी जैसे किसान अच्छे खेत में जैसा बीजबोता है ११ वैसाही उसबीजका फलभी भो गताहै उसके विपरीत नहीं होता ऐसेही जैसे पुरुषके वीर्य्यसे पुत्र होता है वैसाही होता है १२ ये महाभाग तपस्वी व पुण्य वीर्य्य वान् हैं इससे इनके वीर्य्य से जो उत्पन्नहोगा वह इन्हीं के गुण का होगा १३ बस योग्य महातेजस्वी सब देहधारण करनेवालों में श्रेष्ठ पुत्र होगा महाभाग्यवाला व योगतत्त्वादिकों का वेत्ताहोगा १४॥

चौ० रम्भाकी वाणी विधिसों भाणी सुनि बाला हरषानी ।
जोसबसुखदायकअरुचितभायकहतीसकलशुभखानी॥

सेनमाहिं सुनीथा ताहि गुनीथा है सच मृषा न होई।
यासों यह कारज किये न हारज सुनि प्रसन्न सबकोई १५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादे
वेनोपाख्यानेपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

## छत्तीसवां अध्याय ॥

दो० छत्तिसयें महँ अङ्गमुनि और सुनीथा व्याह ॥
तासुतवेनसुराज्यकर वर्णन किय ऋषिनाह १

यहसुन सुनीथा अपनी सखी रम्भासे बोली कि हे भद्रे ! तुमने सत्य कहा हम ऐसाही करेंगी इस विद्यासे इन ब्राह्मणदेवको मोहित करेंगी इसमें अन्तर न पड़ेगा १ अब हमको पुण्य सहाय दो जिससे इनके समीपको जावें यह सुन देवोंकी नारी रम्भाने उस मनस्विनी सुनीथा से कहा कि २ हे भामिनि ! कैसी सहायता करें सो तुम हमसे कहो सुनीथा ने कहा कि प्रथम इन विप्रजीके समीप तुम दूती बन कर जावो ३ जब सुन्दर नेत्रवाली रम्भासे सुनीथाने ऐसा कहा तो वह बोली कि बहुत अच्छा ऐसाही करेंगी ४ हम तुम्हारी सहायता करेंगी अब जो तुमको कहनाहो हमसे कहो यहसुनकर उसने कहा कि कहना क्याहै जिसमें हमको ये ग्रहणकरें वह युक्ति करो यह सुनतेही वह दिव्यरूप तो थीही और भी अपना उसने दिव्यरूप बनाया सुन्दर बड़े २ नेत्र रूपयौवनयुक्तहो मायासे अत्यन्त दिव्यरूप धारण किया यहांतक रूपमें उत्तम उससमय होगई कि तीनों लोकोंमें जोई देखता मोहित होजाता ५ । ६ सो वह महापुण्य सुन्दर कन्दराओंसे युक्त नानाप्रकारके धातुओंसे मण्डित नानाप्रकारके रत्नोंकी राशियोंसे शोभित ७ देववृक्षोंसे समाकीर्णबहुत पुष्पोंसे उपशोभित देवसमूहोंसे समाकीर्ण गन्धर्व व अप्सराओं से सेवित ८ मनोहर सुरम्य शीत छायाओंसे समाकुल चन्दन अशोकादि वृक्षोंके झुण्डोंसे सघन उस सुमेरुपर्वतके शिखरपर ९ सब शृङ्गार किये जाकर हिंडोले पर झूलनेलगी नीलरङ्गके रेशमी सूक्ष्म वस्त्र धारण करलिये १० इससे अतीव शोभितहोनेलगी दुपहरीके

फूलके रङ्गकी चोलीपहिने सब अङ्गोंसे सुन्दरी वह बाला हाथमें वी-
णाले बजानेलगी ११ व सुन्दर स्वरसे विश्वभरके मोहनेवाला गान
गानेलगी उन अपनी सब सखियोंकोभी सङ्ग लियेथी १२ यह तो
ऐसा करनेलगी व महात्मा अङ्गजी पुण्यकन्दरामें एकांत में ध्यान
कररहे थे काम क्रोधसे रहितहो जनार्द्दनजी का स्मरण करतेथे १३
उन्होंने मधुर मनोहर तालमानलयक्रियाओंसे युक्त सब प्राणियोंको
खींचलेनेवाला सुन्दर स्वरसुना १४ यद्यपि महातेजस्वीथे परन्तु उस
मायागीतसे मोहितहो ध्यानसे चलायमान होगये आसनपरसे उठ
कर बारबार उसी ओर देखने लगे १५ व मायासे मोहित होने के
कारण बड़े वेगसे वहां गये व देखा तो वह हिंडोलेपर चढ़ीहुई वी-
णा हाथमें लिये बजारहीथी १६ कुछ हँसतीजाती व पूर्ण चन्द्र के
समान प्रकाशित मुखसे गाती जाती उसके उस गीतसे व रूप से वे
महायशस्वी मोहित होगये १७ उसकी सुन्दरताके भावसे काम बाण
से पीड़ितहुयेव ऋषिपुत्र द्विजोत्तम वे आकुल व्याकुल ज्ञान हुये १८
मोहसे अनर्थ वचन कहनेलगेव फिर २ जँभाईलेनेलगे व क्षणमात्र में
उनके सब अंगोंमें पसीना होआथा थर २ कांपने लगे देहमें सन्ताप हो
आया १९ महामोहोंसे मोहित होनेलगे व मन चलायमान होगय
व कांपतेहुये अंगजी बनाय उसके निकट चलेगये २० व उसे तो छोड़
उसीके निकट मृत्युकी कन्या विशालाक्षी यशस्विनी सुनीथाको देख
मन्द २ मुसुकातीहुई सुनीथासे वे महात्माजी बोले २१ कि हे क
रोहे ! तुम कौनहो व किसकीहो व सखियोंके बीचमें किस कार्य्य
यहां आई हो व तुमको इस वनमें किसने भेजाहै २२ तुम्हारे स
सुन्दर अंग इस महावनमें शोभित होतेहैं हमसे कहो व हमारे ऊप
प्रसन्न होके सुसुखी होवो २३ माया के मोह से मुनिने न जान
कि यह इसीका कर्म्म है क्योंकि वे तो कामके बाणोंसे विद्ध होगये
थे २४ मुनि का इस प्रकार का महावाक्य सुनकर अपनी सखी
मुखकी ओर देखकर उन ब्राह्मण देव से सुनीथा कुछभी न बोली
२५ व अपने सङ्केतसे रम्भाको प्रेरितकिया कि तुम इनसे वृत्तान्त
कहो यह जान रम्भा उन द्विजोत्तम से आदरसमेत बोली कि २६

यह महाभाग महात्मा मृत्युकी कन्याहै व सवगुणोंसे सम्पन्नहै सुनीथा इसका नामहै २७ यह बाला धर्म्मवान् तपोनिधि शान्तस्वभाव जितेन्द्रिय महाप्राज्ञ वेदविद्यामें विशारद पति चाहतीहै २८ यह सुन अप्सराओंमें श्रेष्ठ उस रम्भासे अङ्गमुनि बोले कि हमने सर्व्वविश्वमय श्रीविष्णुजी की आराधना कीहै उन्होंने हमको वर दियाहै कि तुम्हारे सब से उत्तम पुत्र होगा २९।३० उसके लिये हम बहुत दिनों से चाहते हैं कि किसी महात्मा पुण्यात्माकी कन्या मिले तो उसके सङ्ग अपना विवाहकरैं परन्तु आजतक हमने अपनी इच्छाके अनुकूल कोई कन्या नहीं देखी पर यह धर्मकी कन्या है व धर्म्माचारमें परायण है रूपभी इसका अद्भुतहै३१।३२सो यदि यहपतिकी इच्छा करतीहो तो हमींको क्यों नहीं भजतीहै जो २ यह बाला चाहेगी हमसो २ इसे देंगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं है ३३ इसके संग से अदेयभी वस्तु हम इसे देंगे ऐसा कोई पदार्थ संसारमें नहीं जो हम इसकी प्रार्थना से इसे न दें ३४ जब ब्राह्मणने ऐसा कहा तो रम्भा उनसे बोली कि हे विप्रेन्द्र! सुनो यह तुम्हारीही धर्म्मपत्नी होगी इसमें सन्देह नहीं बस तुम यही करना कि चाहे यह कुछ अपराध भी करे पर इसका परित्याग न करना ३५ व इसके गुण दोषकी ओर दृष्टि न देना बस इस अर्थकी तुम प्रतिज्ञा करलो व कुछ विश्वास भी दिखावो ३६ सो और कुछ नहीं विश्वासके लिये अपना हाथ दो यह सुन विप्रजीने कहा कि बहुत अच्छा हम अपना हाथ इसको पकड़ाते हैं इसमें सन्देह नहींहै ३७ बस ऐसा कह दोनोंकी हाथ पकड़ी पकड़ा होगई बस गान्धर्व्वविवाह की रीतिसे अङ्गजीने सुनीथा का विवाह कर लिया ३८ उनको सुनीथा को देकर रम्भा बहुत हर्षितहुई व उन दोनों से बिदाहोकर रम्भा अपने स्थानको चलीगई ३९ व सब और सखियांभी अपने २ स्थानोंको चलीगई जब वे सब चलीगई तब द्विजोंमें उत्तम ४० अङ्गजी उस अपनी प्रियभार्याके साथ विहारकरनेलगे व उसमें सब लक्षणयुत एक पुत्र उत्पन्नकरके ४१ उसका वेन नामधराया व महातेजस्वी सुनीथाका पुत्र बढ़नेलगा ४२ वेद शास्त्रपढ़के उस वेनने धनुर्व्वेदपढ़ा फिर वह

मेधावी सब विद्याओंका पारगामी हुआ ४३ इससे अङ्गका पुत्र वेन बड़े शिष्टाचार से बर्ताव करनेलगा यद्यपि वह वेन ब्राह्मणों में श्रेष्ठथा परन्तु धनुर्विद्या अधिक पढ़नेसे क्षत्रियोंके आचरणमें तत्पर हुआ ४४ जैसे इन्द्र सब तेजसे युक्तहोनेके कारण स्वर्गमें शोभित होते हैं वैसेही वहभी शोभित होनेलगा बल व पराक्रमोंसे वह महाप्राज्ञ इन्द्रहीके तुल्य हुआ ४५ तब चाक्षुष मन्वन्तरके बीचमें व वैवस्वत मन्वन्तर के आनेके पूर्व्वमें विना प्रजापालके लोकमें सदैव प्रजा कष्ट पातेहैं ४६ यह तपस्वी धर्म्मतत्त्वके जाननेवाले ऋषि प्रजाओंके कारण धर्म्म जाननेवाला सत्यमें पण्डित राजा चिन्तनाकरते भये ४७ तब सब लक्षणों से युक्त वेनको देखतेभये और उनको प्रजाओंका पालक नियतकरके राजसिंहासन पर स्थापितकिया ४८ महाभाग अंगके पुत्रके अभिषेक होने में सब प्रजापति लोग तप करनेके लिये वनको चलेगये उन सब महात्माओं के चलेजाने पर वेनराजा प्रजाओंका पालन यथावस्थित करनेलगे सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि सुनीथा वेनकी माता अपने पुत्रको विधिवत् राज्य करतेहुये देख ४९।५० उस सुशंखके शापका स्मरणकर बहुत शंकित चित्तहुई कि यह कैसेहुआ शाप तो यों था कि तेरे बड़ा दुराचारी पुत्रहोगा परन्तु उसके विपरीत यह तो बड़ा महात्मा तनय हुआ यह नित्य विचाराकरे जब सब धर्म्मही के अंग पुत्रमें देखे पापका कहीं लेशमात्र भी न देखे तब अत्यानंदित हो रहते २ वेन कुछ २ पापभी करने लगा जैसेही पाप करते जाने वैसेही सत्य धर्म्मादि गुणों को वेनके आगे प्रकाशित करके दिखावे व यह कहै कि हे वत्स! मैं धर्म्मकी कन्याहूं ५१।५२ व तुम्हारे पिताजी धर्म्मतत्त्व अच्छे प्रकार जानते हैं इससे तुम धर्म्महीका आचरणकरो इस प्रकार वह पतिव्रता सुनीथा अपने पुत्रको नित्य समझायाकरे ५४ तब माता व पिताके भी वचनके अनुकूल प्रजाओंका पालन अच्छेप्रकार करनेलगे इसप्रकार प्रजापाल होकर वेन पृथ्वीमण्डलभरका राज्य करनेलगा ५५॥

चौ० प्रजासकलसुखसोंनिजजीवन। कराहिंधराहिंधर्महिंमनहींमन॥

वेन सदा अनुरञ्जन करई । देय न दुख काहुहि हित चरई ५६
वेन महात्मा के वर राजा । इमि प्रभाव भो सकल समाजा ॥
बढ़ेहु धर्म पालत स्यहि धरणी । अपरसुयशहमकथहिविधिवरणी५७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनो
पाख्यानेषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

## सैंतीसवां अध्याय ॥

दो० सैंतिसयें महँ वेनकहँ पापरूप यक आय ॥
वेदधर्म्मतजि जैनमत करन कह्यो यह गाय १

इतनी कथा सुनकर ऋषिलोगोंने सूतसे पूँछा कि जब महात्मा वेनकी राज्य व धर्म्म करने में ऐसी रीतिथी तो फिर धर्म्मछोड़कर अधर्म्म कैसे करनेलगे जिससे पीछे सुना है कि ब्राह्मणों ने कोप किया १ सूतजी बोले कि ज्ञानविज्ञानसम्पन्न व तत्त्व जाननेवाले मुनिलोग शुभ वा अशुभ जो कुछ कहते हैं वह मिथ्या नहीं होता२ इससे तपकरतेहुये उनमहात्मा सुशंखने जो सुनीथा को शाप दिया था कि तेरापुत्र बड़ा अधर्म्मात्मा व दुराचारी होगा वह अन्यथा कैसे होसके ३ उस शापके कारणसे वेनके सब दुराचार तुम लोगों से कहतेहैं जब धर्म्मज्ञ महात्मा वेन राज्य करनेलगे तो ४ एक पुरुष कपटवेषधारण किये वहां आया उसका बड़ाउग्ररूपथा व महाकायथा शिरमुँड़ायेहुये बड़ातेजस्वी दिखाईदेताथा ५ एकमार्ज्जनी काँखमेंदबाये था व हाथमें एक नारियल का बड़ाभारी पानपात्र लिये था ६ व वेदधर्म्म की निन्दा करताहुआ असत् शास्त्र पढ़ता था जहां महाराज वेनजी थे वहां बड़ेवेग से आ पहुँचा ७ व वह पापी महाराज वेनकी सभामें पैठआया उसको सम्मुख आया देख राजावेन ने पूंछा कि ८ आप कौनहैं जो ऐसा रूप धारण कियेहुये हमारीसभामें चलेआये अपने आनेका कारण हमसे कहो९ तुम्हारा वेष नाम क्याहै व क्या धर्म्म क्या तुम्हाराकर्म्महै किस देवताकी उपासना करतेहो आचार तुम्हारा क्याहै तप कैसा करतेहो व तुम्हारी भावना कैसी है १० व तुम्हारा क्या ज्ञान क्या प्रभाव क्या

धर्म्मका लक्षणहै वह सब हमारे आगे तुम सत्य२ कहो ११ वेनका ऐसा वाक्य सुन वह पापरूप बोला कि तुम इसप्रकारसे राज्य करते हो सब वृथाहै महामूढ़हो इसमें कुछभी संशय नहीं है १२ हम धर्म्म के सर्व्वधन हैं हम सब देवोंसे पूजितहैं हम ज्ञान हम सत्य व हम सनातन हैं इससे सबको धारणकरतेहैं १३ हम धर्म्म हम मोक्ष हम सर्वदेवमयहैं ब्रह्मदेह से उत्पन्न व सत्यप्रतिज्ञहैं भ्रष्टप्रतिज्ञ नहीं १४ हमको सत्यधर्म्मके शरीर जिनरूप जानो ज्ञानतत्पर सब योगी लोग सदा हमाराही ध्यान करते हैं और किसीका नहीं १५ यह सुन राजा वेन बोले कि तुम्हारा कैसा कर्म्म है व तुम्हारा शास्त्र कैसाहै व तुम आचार कौन करतेहो यह जब राजाने कहा तो १६ पापरूप वह बोला कि जहां अहिंसा तो देवताहो व कुशकी गांठियोंकी मालाधारणकिये गुरुदिखाईदे व दयाकरना परमधर्म्म हो बस वहां मोक्ष दिखाई देताहै १७ इस शास्त्रमें कुछ सन्देह नहीं है अब आचार तुमसे कहतेहैं यज्ञकरना व कराना व वेदोंका पढ़ना हमारे आचारमें नहीं है १८ न सन्ध्या तप दान स्वधा स्वाहा होम का करनाहै हव्य कव्यादिक नहींहैं न यज्ञादिक कोई क्रियायें उस मेंहैं १९ पितरोंका तर्प्पण नहींहै अतिथिका पूजन व बलिवैश्वदेव करनाभी नहींहै क्षपणक अर्थात् शिर मुण्डोंकी पूजा व अर्हन् का ध्यान उसमेंहै २० यह जैनमार्ग्गका धर्म्म समाचारहै बस यही सब जिनधर्म्मका लक्षणहै जोकि हमने तुम से कहा २१ यह सुन राजा वेन बोले कि हमतो जानते हैं कि जो वेदमें कहाहै जिसमें यज्ञादिकक्रियायें हैं पितरों का तर्पण व बलिवैश्वदेवादिकर्म हैं वही धर्म है २२ पर जिसमें ये एक भी नहीं हैं न तप दानादिकहैं वह धर्म्म कैसा है हम से उसप्रकार का धर्म्म कहो २३ पातक बोला कि यह सब का देह पृथ्वी जल वायु तेज व आकाश इन पांच तत्त्वोंसे बना है उस में आत्मा वायु के स्वरूप से रहता है बस इसमें यज्ञादि क्रियाओं की प्रसङ्गता नहींहै२४ जैसे जलों में बुल्लों का समागम होता है व जाता है ऐसेही इन पृथिव्यादिकों में प्राणियों का सङ्गमहै२५ पृथ्वी और जल वहीं स्थित हैं तेज इसमें विद्यमान दिखाई देता

है तब वायु उनको प्रेरित करता है २६ फिर उसको आकाश आच्छादित करता है तब बुद्बुद अर्थात् बुल्ला होजाताहै तब जलके बीच में वह तेज गोलाकार होकर दिखाई देता है २७ सो क्षणमात्र दिखाई देता क्षणमात्र में फिर नहीं दिखाई देता ऐसेही प्राणियों का समायोग सर्व्वत्र दिखाई देता है २८ अन्तकाल में आत्मा अलग चला जाता है व पृथिव्यादि पांचों पांचों में मिलजाते हैं इस से मोहकी बुद्धिसे मनुष्य परस्पर मिलकर एक दूसरे की सहायता के लिये मोहही से श्राद्धकरते मोहही से ब्याह व पितरों का तर्पण करतेहैं हे नृपोत्तम ! मरजाने पर वह कहां रहता व किस रूप से रहता है जो श्राद्धादि के पिण्डादि खाताहै २९ । ३० उसका ज्ञान कैसा होता व शरीर कैसा होता व उसे किसने देखा है हमसे कहो हां श्राद्धादि में मिष्टान्न भोजन करके ब्राह्मण तृप्त होकर चले जाते हैं ३१ और श्राद्ध किसको दियाजाता है इस से श्राद्ध में विश्वास करना निरर्थक है और अब वेदोंके दारुण कर्म्म तुम से कहतेहैं ३२ कि जब अतिथि गृहमें आवे तो प्रथम एक बड़ाभारी बैल उसको दे अथवा हे राजराजेन्द्र ! उसे एक छाग दे तबतक अतिथि भोजनकरै बस इसको तो अतिथि का भोजनकराना लिखाहै३३ इसीप्रकार अश्वमेधयज्ञमें अश्वका बलिप्रदान करना पवित्र लिखा है ऐसेही गोमेधमें बैलका बलिदान पुरुषमेध में मनुष्य का बलिदान व वाजपेय यज्ञ में छागका ३४ व हे महाराज ! राजसूययज्ञमें जानो बहुत से प्राणियों का घातन लिखा है पुण्डरीक यज्ञ में गज को मारे व गजमेध में भी हाथी मारे ३५ सौत्रामण्यपशुमेध में मेष अर्थात् मेढ़े का वध लिखा है हे नृपनन्दन ! इसीप्रकार नानाप्रकारके यज्ञ लिखेहैं ३६ व उन में नानारूप के पशुओं का वधकरना लिखा है फिर जहां पश्वादिकही बलिदान दियेजाते हैं तो उनका लक्षण व फल क्या होगा ३७ व वह अन्नजूंठा होताहै जहां कि बहुत लोग एकत्र बैठकर भोजन करते हैं व वेदोंमें बार २ बहुतों को एकत्र भोजन देना लिखा है व यह भी लिखा है कि महायज्ञ में जो पशुको मारता है व वह पशुभी महादोषों से हीन होजाता

है ३८ फिर हे राजन् ! ऐसे यज्ञों के करने से कौन धर्म्म दिखाई देता है व क्या फल जिन यज्ञों में वेदवाले पण्डितों ने पशुओंका मरण दिखाया है ३९ इस से उनमें न कोई धर्म्मही है न मोक्षदायक पुण्यही है क्योंकि विना दया का जो धर्म्म होताहै वह विफल समझा जाता है ४० व जहां जीवों का पालन होता है वहां धर्म्म है इसमें कुछ संशय नहीं है व हे नृपोत्तम ! स्वाहाकार स्वधाकार तप सत्य ये सब ४१ दयाहीन विफल होतेहैं व उत्तम धर्म्म उनमें कुछ भी नहीं होता व ये वेद अवेदहैं जिनमें कहीं दयाका नाम नहीं है ४२ बस दया दानमें नित्यपर हो जीवों की रक्षाही करे जो जीवों की रक्षाकरे वह चाण्डालहो वा शूद्रहो वही ब्राह्मण कहा जाता है ४३ व जो ब्राह्मण होकर दयाहीन हो पशुओं के घात में परायण होता है वह दयाहीन पापी कठिन क्रूरचित्त है ४४वञ्चकों ने तो कहदिया है कि वेद ज्ञानदेनेवालेहैं परन्तुहैं वे ज्ञानवर्ज्जित बस जहां नित्यज्ञान हो वहीं वेदको स्थित जानो ४५ हे महामते ! दयाहीन वेदों में व दयारहित विप्रों में न सत्यहै न वेद वा वेदक्रिया है ४६ हे राजेन्द्र ! वेद वेदान्त वा ब्राह्मण ये सब सत्यरहितहैं व दान का भी कुछ फल नहीं है इससे दान न देना चाहिये ४७जैसे श्राद्ध का चिह्नहै वैसाही दानका भी लक्षण है इस से भुक्ति मुक्तिदायक जिनका धर्म्म ४८ बहुत पुण्यका देनेवाला तुम्हारे आगे कहताहूं प्रथम शांतचित्त से सब प्राणियों पर दया करे ४९ फिर हृदय से जिनदेव की आराधना करे जिसमें कि चराचर सब लोग विद्यमान रहते हैं व शुद्धभाव मनसे केवल एक जिनकी पूजा करे ५० बस नमस्कार भी उन्हीं देवदेव जिनके करे अन्य किसीके कभी न करे व माता पिताके पादोंकी वन्दना तो कभी न करे ५१ हे राजसत्तम ! फिर औरोंकी कौनसी बातहै इतना सुन वेन बोले कि ये सब विप्रलोग व सब आचार्य्यलोग गंगादि नदियों को ५२ पुण्यतीर्थ बहुत पुण्यके देनेवाले कहते हैं सो बतावो सत्य है कि मिथ्याही कहते हैं यदि इनमें कुछ धर्म्म तुम जानतेहोवो तो हमसे कहो ५३ तब वह पातक पुरुष बोला कि हे महाराज ! आकाश से मेघ जब

बरसतेहैं तब भूमि और पर्वतोंमें सबओर जल गिरता है ५४ वही वहां स्थित रहता है और नदियों में तो सब मैला कुचैला पापयुक्त जल बहताहै फिर उनमें तीर्थत्व कैसे होसक्ताहै ५५ व हे महाराज ! ऐसेही तड़ाग सागरादि सब जलाशयहैं व पर्व्वत सब पत्थरोंके ढेर हैं ५६ इससे इनके ऊपरभी कोई तीर्थ नहीं न कहींके जलही में कोई तीर्थ है जलसे मेघ उत्पन्नहैं यदि इन तीर्थोंमें स्नान करने से पुण्यहै तो उनमें सदा मछलियां रहती हैं क्यों नहीं तरतीं ५७ जो स्नान करने से कुछभी सिद्धिहोती तो मछलियां अवश्यही तरतीं कुछभी अन्तर न पड़ता बस जहां जिन वहां सनातनधर्म्म व वहीं सब तीर्थ ५८ व वहीं तपोदानादि सब पुण्य प्रतिष्ठित रहते हैं ५९ ॥

चौ० यासोंनृप जिन सुरमय होई । उन्हें छोड़ि नहिं धर्म्मकहोई ॥
परम पवित्र लोक महँ ओई । उन समान नहिं है सुर कोई ॥
यासों ताहि अराधहु भूपा । पैहहु सबसुख मन अनुरूपा ॥
यामहँ नहिं संशय क्यहुभांती । सदा जपहु जिन गुणगणपांती ॥
सकल धर्म्ममख वेद सुदाना । पुण्य सत्यव्रत तीर्थ पुराना ॥
इनसबकी कीन्हीं अतिनिन्दा । कह्यहु अपूज्य सकलसुरवृन्दा ॥
पाप भावसों अंग तनूजा । बोधित भयहु त्यागि सबपूजा ॥
पूर्व्वज शाप प्रभावज पापी । समझायहुसबनृपाअलापी६०।६१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

## अड़तीसवां अध्याय ॥

दो० अड़तीसयें महँ कह्यो वेन केर दुष्कर्म्म ॥
पुनि जिमिऋषि समझाय त्यहि अंगमथे कियधर्म्म १

सूतजी बोले कि जब उस पापीने पापभावसे राजा वेनको इस प्रकार समझाया तो वेन पापभावको प्राप्त हुआ व उस पुरुष ने बनाय पापभावसे दृढ़ करदिया १ तब झट उस दुष्टात्माके पैरोंपर राजा गिरपड़ा व वेद धर्म्म पुण्य यज्ञ क्रियाओंका करना छोड़दिया २ सुन्दर यज्ञोंकी व वेदोंकी निवृत्ति होगई व पुण्यदायक धर्म्मशास्त्र

है ३८ फिर हे राजन्! ऐसे यज्ञों के करने से कौन धर्म्म दिखाई देता है व क्या फल जिन यज्ञों में वेदवाले पण्डितों ने पशुओंक मरण दिखाया है ३९ इस से उनमें न कोई धर्म्मही है न मोक्षदायक पुण्यही है क्योंकि विना दया का जो धर्म्म होताहै वह विफल समझा जाता है ४० व जहां जीवों का पालन होता है वहां धर्म्म है इसमें कुछ संशय नहीं है व हे नृपोत्तम! स्वाहाकार स्वधाकार तप सत्य ये सब ४१ दयाहीन विफल होतेहैं व उत्तम धर्म्म उनमें कुछ भी नहीं होता व ये वेद अवेदहैं जिनमें कहीं दयाका नाम नहीं है ४२ बस दया दानमें नित्यपर हो जीवों की रक्षाही करे जो जीवों की रक्षाकरे वह चाण्डालहो वा शूद्रहो वही ब्राह्मण कहा जाता है ४३ व जो ब्राह्मण होकर दयाहीन हो पशुओं के घात में परायण होता है वह दयाहीन पापी कठिन क्रूरचित्त है ४४वञ्चकों ने तो कहदिया है कि वेद ज्ञानदेनेवाले हैं परन्तुहैं वे ज्ञानवर्ज्जित बस जहां नित्यज्ञान हो वहीं वेदको स्थित जानो ४५ हे महामते! दयाहीन वेदों में व दयारहित विप्रों में न सत्यहै न वेद वा वेदक्रिया है ४६ हे राजेन्द्र! वेद वेदान्त वा ब्राह्मण ये सब सत्यरहितहैं व दान का भी कुछ फल नहीं है इससे दान न देना चाहिये ४७जैसे श्राद्ध का चिह्नहै वैसाही दानका भी लक्षण है इस से भुक्ति मुक्तिदायक जिनका धर्म्म ४८ बहुत पुण्यका देनेवाला तुम्हारे आगे कहताहूं प्रथम शांतचित्त से सब प्राणियों पर दया करे ४९ फिर हृदय से जिनदेव की आराधना करे जिसमें कि चराचर सब लोग विद्यमान रहते हैं व शुद्धभाव मनसे केवल एक जिनकी पूजा करे ५० बस नमस्कार भी उन्हीं देवदेव जिनके करे अन्य किसीके कभी न करे व माता पिताके पादोंकी वन्दना तो कभी न करे ५१ हे राजसत्तम! फिर औरोंकी कौनसी बातहै इतना सुन वेन बोले कि ये सब विप्रलोग व सब आचार्य्यलोग गंगादि नदियों को ५२ पुण्यतीर्थ बहुत पुण्यके देनेवाले कहते हैं सो बतावो सत्य है कि मिथ्याही कहते हैं यदि इनमें कुछ धर्म्म तुम जानतेहोवो तो हमसे कहो ५३ तब वह पातक पुरुष बोला कि हे महाराज! आकाश से मेघ जब

बरसतेहैं तब भूमि और पर्वतोंमें सबओर जल गिरता है ५४ वही वहां स्थित रहता है और नदियों में तो सब मैला कुचैला पापयुक्त जल बहताहै फिर उनमें तीर्थत्व कैसे होसक्ताहै ५५ व हे महाराज! ऐसेही तड़ाग सागरादि सब जलाशयहैं व पर्व्वत सब पत्थरोंके ढेर हैं ५६ इससे इनके ऊपरभी कोई तीर्थ नहीं न कहींके जलही में कोई तीर्थ है जलसे मेघ उत्तमहैं यदि इन तीर्थोंमें स्नान करने से पुण्यहै तो उनमें सदा मछलियां रहती हैं क्यों नहीं तरतीं ५७ जो स्नान करने से कुछभी सिद्धिहोती तो मछलियां अवश्यही तरतीं कुछभी अन्तर न पड़ता बस जहां जिन वहां सनातनधर्म्म व वहीं सब तीर्थ ५८ व वहीं तपोदानादि सब पुण्य प्रतिष्ठित रहते हैं ५९॥

चौ० यासोंनृप जिन सुरमय होई। उन्हें छोड़ि नहिं धर्म्म कहोई॥
परम पवित्र लोक महँ ओई। उन समान नहिं है सुर कोई॥
यासों ताहि अराधहु भूपा। पैहहु सबसुख मन अनुरूपा॥
यामहँ नहिं संशय क्यहु भांती। सदा जपहु जिन गुणगणपांती॥
सकल धर्म्मसख वेद सुजाना। पुण्य सत्यव्रत तीर्थ पुराना॥
इनसबकी कीन्हीं अतिनिन्दा। कह्यहु अपूज्य सकलसुरवृन्दा॥
पाप भावसों अंग तनूजा। बोधित भयहु त्यागि सबपूजा॥
पूर्व्वज शाप प्रभावज पापी। समझायहुसबनृपाअलापी६०।६१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

## अड़तीसवां अध्याय॥

दो० अड़तीसयें महँ कह्यो वेन केर दुष्कर्म्म॥
पुनि जिमिऋषि समझाय त्यहि अंगसथे कियधर्म्म १

सूतजी बोले कि जब उस पापीने पापभावसे राजा वेनको इस प्रकार समझाया तो वेन पापभावको प्राप्त हुआ व उस पुरुष ने बनाय पापभावसे दृढ़ करदिया १ तब झट उस दुष्टात्माके पैरोंपर राजा गिरपड़ा व वेद धर्म्म पुण्य यज्ञ क्रियाओंका करना छोड़दिया २ सुन्दर यज्ञोंकी व वेदोंकी निवृत्ति होगई व पुण्यदायक धर्म्मशास्त्र

व पुराणोंका धर्म्म सब नष्ट होगया ३ व उसकी आज्ञासे सबलोग पापमय होगये न कोई यज्ञ करता न वेद पढ़ता न उत्तम धर्म्मशास्त्र ४ व पुराण कोई पढ़ने पाता ब्राह्मणलोग उसके राज्यमें दानदेना लेना व किसी वेद शास्त्रादिका अध्ययन नहीं करनेपाते ऐसा करने से धर्म्मका लोप होगया व महापाप प्रवृत्त होगया ५ अंगजी रोंकते थे पर उनके कहने के विपरीतही वह करे क्योंकि उस पापीने तो शिक्षाहीदीथी कि माता पिताकी आज्ञा न माननी चाहिये न उनकी पूजाही करनी चाहिये इससे वह दुरात्मा राजा न कभी पिताके चरणोंके प्रणाम करे न माताके ६ व न किसी ब्राह्मणही के प्रणाम करे ऐसा प्रतापी बन बैठा पिता व माताके विचारेहुये ७ शुभकर्म्म वह दुरात्मा एकभी न करनेलगा व न पुण्य तीर्थ दानादि कोई शुभ कर्म्मही करे ८ अब अंगमुनि बार २ विचारांश करें कि न तो हमने कोई अशुभकर्म्म किया न कुमुहूर्त्त कुसमय में रतिकी फिर यह पुत्र ऐसा दुराचारी कैसे होगया प्रजाओं के पति हम अंगके वंशमें लाञ्छन लगगया ऐसा विचारकर ९ फिर उन धर्म्मात्माने महात्मा मृत्युकी कन्या सुनीथासे पूँछा कि हे प्यारी ! हमसे सत्य कहो यह किसके दोषसे दुष्ट पुत्र हुआ क्या तुमने तो कोई पाप कभी नहीं किया १० सुनीथा बोली व उसने पूर्व्वका अपना सब वृत्तान्त पति से कहा कि यह पुत्र मेरे दोषसे दुष्ट हुआहै ११ बाल्यावस्थामें मैंने तपस्यामें स्थित सुशंख महात्माको ताड़ित कियाहै और कुछ मैंने नहीं कियाहै १२ तब कोपकर सुशंखजीने शापदिया कि तेरी सन्तान दुष्टहोवे हे महाभाग ! यह मैं जानतीहूं तिसीसे यह दुष्ट हुआहै १३ इस बातको सुनकर महातेजस्वी अंगजी सुनीथाको संगले वनको चलेगये जब भार्य्यासहित वे महाभाग वनको चलेगये १४ तब सप्तऋषिलोग उस दुष्ट वेनकेपास आये व बुलाकर अंगके पुत्र वेनसे बोले कि हे वेन ! साहस न करो आप इस समय प्रजापाल हैं व तुमको चाहिये कि चराचर तीनोंलोकों को धर्म्म सिखाओ व तुमभी करो १६ हे महाराज ! धर्म्ममें सब प्रतिष्ठित रहते हैं व पाप से नष्ट होते हैं इससे पाप छोड़ धर्म्मकरो १७ जब ऋषियोंने ऐसा

कहा तो बहुत हँसताहुआ वेन वचन बोला कि बस यही परमधर्म्म है जो हम करते हैं व यही सनातनधर्म्म है १८ हम सबको अपने बलसे धारणकरते हैं व हम सबके रक्षक हैं व हमीं वेदोंके अर्थ हैं व हमीं महापुण्यधर्म्महैं व हमीं सनातन जैनधर्म हैं १९ और कोई भी धर्म्म ठीक नहीं है हे ब्राह्मणो! कर्मसे धर्मरूपी हमको भजो यह सुन ऋषिलोग बोले कि ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्य ये तीनोंवर्ण द्विजाति कहातेहैं २० सो इन तीनोंवर्णोंके लिये यह सनातनी श्रुतिहै कि जो वेदके आचारपर चलते हैं वेही जन्तु जीते कहाते हैं २१ व ब्राह्मण से उत्पन्नहोनेके कारण आप ब्राह्मणहैं फिर पीछे से पृथ्वी के राजा होगये हैं इससे विक्रमसे विख्यातहोगयेहैं २२ हे राजेन्द्र! राजाही के पुण्यसे ब्राह्मणलोग सुखसे जीते हैं व राजाहीके पापसे सब ब्राह्मणादि नष्ट होजाते हैं इससे पुण्यकरो २३ हे नराधिप! जो सत्ययुग का धर्म्महै उसको करो फिर जैसा सत्ययुगमें धर्म्मथा वैसा त्रेतामें नहीं रहगयाथा व जैसा त्रेतामें था वैसा द्वापर में नहीं २४ व जैसा द्वापरमें होताहै वैसा कलियुगके प्रवेशमें नहीं रहता इससे जिसजैन धर्म्मकी तुम प्रशंसा करतेहो उसे कलियुगमें बहुधालोग करेंगे व इसी जैनधर्म्म पापरूपके करनेसे सब मोहित होजायँगे २५ व वेदाचारको छोड़कर सब मनुष्य पापकरनेलगेंगे क्योंकि यह जैनधर्म्म पापकामूलहै इसमें कुछभी संशय नहीं है २६ हे राजेन्द्र! जैनधर्मसे युक्त मनुष्य महा मोहसे गिरायेजाते हैं पापी होते हैं तिनके नाशके लिये २७ सब पापके नाशकरनेवाले गोविन्दजी होंगे वे अपनी इच्छासे रूपधारणकर पापसे नाशकरेंगे २८ पापयुक्तहोने में म्लेच्छ नाशके लिये कल्किदेव निस्सन्देह होंगे २९ इससे अब कलियुगका व्यवहार छोड़ो व पुण्यकर्म्म करो सत्यसे वर्त्ताव करो व प्रजापाल होओ ३० यह सुन वेनराजा बोला कि हम ज्ञानवानों में श्रेष्ठहैं इससे इस विषय में सब हमाराजाना हुआ है जो और तरह से वर्तताहै वह निश्चय दण्ड देनेयोग्य होताहै ३१ ऐसा कह जब वह पापीराजा और भी बहुत बकनेलगा तो ब्रह्माजीके सातोंपुत्र वे महात्मा ऋषिलोग अत्यन्त कुपितहुये ३२ जब उन सब महात्मा-

ओंने कोपकिया तो राजावेन उन लोगों के शापके भयसे वामी वा व्यसौर में घुसगया ३३ वे मुनिलोग सबओर वेनको कुपित होकर देखनेलगे कि वह दुष्ट कहांगया तब उन्होंने जाना कि राजा वामी में पैठाहुआ है ३४ बलसे ब्राह्मणोंने उसक्रूरपापी राजाको वामीसे खींचलिया तब इधर उधर कूदने फांदनेलगा ३५ परन्तु उन लोगोंने जबरदस्ती पकड़ अतिक्रोधकर उसकी वामजानु मथा उससे एक नीलवर्णका बहुतछोटा भयंकर पुरुष उत्पन्नहुआ ३६ रक्तकेसमान लाल २ तो उसके नेत्रथे व धनुर्बाण हाथों में लिये हुये था वह सब पापोंका रूपथा ३७ व म्लेच्छोंका पालक विशेष रीति से होनेवाला था उसपापकर्म्मवाले को देख ऋषियोंने जाना कि अब इसके देहसे पाप निकलगया ३८ इससे उन्होंने फिर वेन महात्मा का दहिनाहाथ मथा उससे फिर वे महात्मा पृथुजी उत्पन्न हुये जिन्होंने पृथ्वीको दुहा ३९ ॥

चौ० राजराजबलवानमहाना । पृथुसमानमहिभयहुनआना ॥
जासुप्रसाद वेन समपापी । हरिपुरगयहुअलोकअलापी ४०
अरु पृथुहरिप्रसाद सों नीके । चक्रवर्त्ति पद भोगि सुठीके ॥
गयहुविष्णुपदजोअतिपावन । अरुसबभांति सुहावनभावन ४१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादे
वेनोपाख्यानेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

## उन्तालीसवां अध्याय ॥

दो० उन्तालिसे महँ वेन तप हरिदर्शन वरदान ॥
दानकाल सत्पात्र अरु लक्षण तीर्थ बखान १

इतनी कथासुन ऋषियोंने सूतजीसे पूँछा कि हे सत्यवानों मे श्रेष्ठ सूतजी ! सब पापोंको दूरसे त्यागकर वेन कैसे स्वर्गको गये यह हमसे विस्तारसहित कहो १ सूतजी बोले कि ऋषियोंके पुण्य संसर्गसे व उनके सम्भाषणसे व शरीरके मथनेसे वेनके शरीरसे सबपाप जातेरहे २ पीछे पुण्यात्मा वेनने निरन्तर उत्तम ज्ञानपाया व नर्म्मदाके दक्षिणतटपर उन पुण्यात्मा ने बड़ाभारी तपकिया ३

जहां कि सब पापनाशन तृणबिन्दु मुनिका आश्रम था वहीं तप किया वहां पर काम क्रोधसे रहितहो कुछ अधिक सौवर्षतक तप कियाथा ४ उनके उग्र उग्रतपसे शंख चक्र गदाधारी श्रीविष्णुदेव प्रसन्नहोकर उनसे बोले कि वरमांगो तब राजा वेन बोले कि हे देवदेव! जो हमारे ऊपर प्रसन्न हो तो यह उत्तम वर हमको दो ५।६ हम इसी अपने शरीरसे व अपने पिता माता सहित तुम्हारे तेजसे युक्तहो श्रीविष्णु तुम्हारेही परमपदको जायँ पर माता पिता भी इसी देहसे चलें ७ तब श्री वासुदेवजी बोले कि हे राजन्! महा-मोह कहांगया जिसमें तुम मोहित हुए और लोभ मोह युक्तहोकर तमोमार्ग में गिरायेगये ८ तब वेन बोले कि हे विभो! जो हमने पूर्व समय में पाप किया है तिसी से मोहित हुयेहैं इससे आप हम को इस घोर पाप से उद्धार कीजिये ९ और कृपा करके जपने और पढ़ने के योग्य भी बताइये तब भगवान् बोले कि हे महाभागरा-जन्! तुमने अच्छा प्रश्न किया तुम्हारे पाप नाशहोगये १० तप-स्या से तुम शुद्धहो अब हम पुण्य को कहते हैं जैसे आपने पूछा ऐसेही पूर्वसमयमें ब्रह्माजी ने पूछा था ११ तब ब्रह्माजीसे जो कहा वह सब हम तुमसे कहते हैं एकसमय ब्रह्माजी नाभिकमलमें ध्यानमें स्थित थे १२ तब हम ब्रह्माजीके वर देने के लिये प्रकट होगये तो उन्हों ने बड़ा पुण्यकारी पापनाशनेवाला स्तोत्र पूछा १३ जिसका वासु-देवस्तोत्र नाम है इच्छा करनेवालों को अच्छी गति देता है स्तोत्रों में श्रेष्ठ है बड़ाभारीहै १४ पढ़ने और जपनेवाले मनुष्योंको सदैव सब सुख देनेवाला है ऐसे विष्णुजीके प्रीति करने वाले श्रेष्ठ स्तोत्र को उपदेश करते भये १५ फिर भगवान् बोले कि अव्यक्त मूर्त्ति मुझसे यह सब संसार व्याप्तहै इस से विष्णुमें परायणमुनि हमको विष्णु कहते हैं १६ जहां प्राणी बसतेहैं और इन में जो विभु बस-ता है वह आदर से विद्वानों ने वासुदेव नाम जाना है १७ जिस से विभु अव्यक्त के लिये अन्त में प्रजाओं को खींचता है तिससे श-रणागतों ने संकर्षण नाम जाना है १८ इंगितमें कामरूप हम बहुत होंगे इस कामना से पुत्रकी इच्छाकरनेवाले विद्वानों ने प्रद्युम्न नाम

ओंने कोपकिया तो राजावेन उन लोगों के शापके भयसे बामी वा व्यमौर में घुसगया ३३ वे मुनिलोग सबओर वेनको कुपित होकर देखनेलगे कि वह दुष्ट कहांगया तब उन्होंने जाना कि राजा बामी में पैठाहुआ है ३४ बलसे ब्राह्मणोंने उसक्रूरपापी राजाको बामीसे खींचलिया तब इधर उधर कूदने फांदनेलगा ३५ परन्तु उन लोगोंने जबरदस्ती पकड़ अतिक्रोधकर उसकी वामजानु मथा उससे एक नीलवर्णका बहुतछोटा भयंकर पुरुष उत्पन्नहुआ ३६ रक्तकेसमान लाल २ तो उसके नेत्रथे व धनुर्बाण हाथों में लिये हुये था वह सब पापोंका रूपथा ३७ व म्लेच्छोंका पालक विशेष रीति से होनेवाला था उसपापकर्म्मवाले को देख ऋषियोंने जाना कि अब इसके देहसे पाप निकलगया ३८ इससे उन्होंने फिर वेन महात्मा का दहिनाहाथ मथा उससे फिर वे महात्मा पृथुजी उत्पन्न हुये जिन्होंने पृथ्वीको दुहा ३९ ॥

चौ० राजराजबलवानमहाना । पृथुसमानमहिभयहुनआना ॥
जासुप्रसाद वेन समपापी । हरिपुरगयहुअलीकअलापी ४०
अरु पृथुहरिप्रसाद सों नीके । चक्रवर्त्ति पद्भोगि सुठीके ॥
गयहुविष्णुपदजोअतिपावन । अरुसबभांति सुहावनभावन ४१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादे
वेनोपाख्यानेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः३८ ॥

## उन्तालीसवां अध्याय ॥

दो० उन्तालिसे महँ वेन तप हरिदर्शन वरदान ॥
दानकाल सत्पात्र अरु लक्षण तीर्थ बखान १

इतनी कथासुन ऋषियोंने सूतजीसे पूँछा कि हे सत्यवानों में श्रेष्ठ सूतजी ! सब पापोंको दूरसे त्यागकर वेन कैसे स्वर्गको गये यह हमसे विस्तारसहित कहो १ सूतजी बोले कि ऋषियोंके पुण्य संसर्गसे व उनके सम्भाषणसे व शरीरके मथनेसे वेनके शरीरसे सबपाप जातेरहे २ पीछे पुण्यात्मा वेनने निरन्तर उत्तम ज्ञानपाया व नर्म्मदाके दक्षिणतटपर उन पुण्यात्मा ने बड़ाभारी तपकिया ३

जहां कि सब पापनाशन तृणविन्दु मुनिका आश्रम था वहीं तप किया वहां पर काम क्रोधसे रहितहो कुछ अधिक सौवर्षतक तप कियाथा ४ उनके उग्र उग्रतपसे शंख चक्र गदाधारी श्रीविष्णुदेव प्रसन्नहोकर उनसे बोले कि वरमांगो तब राजा वेन बोले कि हे देवदेव! जो हमारे ऊपर प्रसन्न हो तो यह उत्तम वर हमको दो ५।६ हम इसी अपने शरीरसे व अपने पिता माता सहित तुम्हारे तेजसे युक्तहो श्रीविष्णु तुम्हारेही परमपदको जायँ पर माता पिता भी इसी देहसे चलें ७ तब श्री वासुदेवजी बोले कि हे राजन्! महा-मोह कहांगया जिसमें तुम मोहित हुए और लोग मोह युक्तहोकर तमोमार्ग में गिरायेगये ८ तब वेन बोले कि हे विभो! जो हमने पूर्व समय में पाप किया है तिसी से मोहित हुयेहैं इससे आप हम को इस घोर पाप से उद्धार कीजिये ९ और कृपा करके जपने और पढ़ने के योग्य भी बताइये तब भगवान् बोले कि हे महाभागरा-जन्! तुमने अच्छा प्रश्न किया तुम्हारे पाप नाशहोगये १० तप-स्या से तुम शुद्धहो अब हम पुण्य को कहते हैं जैसे आपने पूंछा ऐसेही पूर्वसमयमें ब्रह्माजी ने पूंछा था ११ तब ब्रह्माजीसे जो कहा वह सब हम तुम से कहते हैं एकसमय ब्रह्माजी नाभिकमलमें ध्यानसे स्थित थे १२ तब हम ब्रह्माजीके वर देने के लिये प्रकट होगये तो उन्हों ने बड़ा पुण्यकारी पापनाशनेवाला स्तोत्र पूंछा १३ जिसका वासु-देवस्तोत्र नाम है इच्छा करनेवालों को अच्छी गति देता है स्तोत्रों में श्रेष्ठ है बड़ाभारीहै १४ पढ़ने और जपनेवाले मनुष्योंको सदैव सब सुख देनेवाला है ऐसे विष्णुजीके प्रीति करने वाले श्रेष्ठ स्तोत्र को उपदेश करते भये १५ फिर भगवान् बोले कि अव्यक्त मूर्त्ति मुझसे यह सब संसार व्याप्तहै इस से विष्णुमें परायणमुनि हमको विष्णु कहते हैं १६ जहां प्राणी बसतेहैं और इन में जो विभु बस-ता है वह आदर से विद्वानों ने वासुदेव नाम जाना है १७ जिस से विभु अव्यक्त के लिये अन्त में प्रजाओं को खींचता है तिससे श-रणागतों ने संकर्षण नाम जाना है १८ इंगितमें कामरूप हम बहुत होंगे इस कामना से पुत्रकी इच्छाकरनेवाले विद्वानों ने प्रद्युम्न ना

हमको जानाहै १९ इस लोकमें सब के स्वामी महादेव और केशव जीहैं योगबल से हम किसी से अनिरुद्धकी नाईं रोंके नहींगये२० ज्ञान विज्ञान संयुक्त संसारमें हम विश्वनाम से हैं जाग्रत् अवस्था में चिन्तायुक्त अहामिति अभिमानी हैं २१ तैजस जगच्चेष्टामय इन्द्रियरूप युक्त ज्ञानकर्म समेत स्वप्नावस्था को प्राप्तहैं २२ बुद्धिमान् अधिदैवात्मा संसार केअधिष्ठान गोचर सुषुप्तावस्थाको प्राप्त लोक से उदासीन विकल्पयुक्त २३ तुरीय विकाररहित गुणावस्था से वर्जित साक्षी की नाईं निर्लिप्त संसारमें प्रतिबिंबयुक्त शरीर२४ चिदाभास चिदानन्द चिन्मय चित्स्वरूपयुक्त नित्य अक्षर ब्रह्मरूप हे ब्रह्मन्! इसप्रकारसे हमको जानिये २५ ऐसा पूर्वसमय में ब्रह्मासे विष्णुजी कहकर अपने रूपको अन्तर्द्धान करतेभये और ब्रह्माजी क्षणमात्रमें संसारकी व्याप्ति जानकर कृतार्थ होगये २६ हे अच्छे व्रत करनेवाले राजन्! पृथुकेजन्म से तुमभी शुद्धात्मा होगये तिस परभी इसस्तोत्रसे भगवान् की आराधना करो २७ और प्रसन्नहुये विष्णुजी राजासे यहभी कहतेभये कि हे मानदेनेवाले राजन्! वर मांगिये तब वेन बोले कि हे विष्णुजी! अच्छी गति हमको दीजिये औरपापों से तारिये २८ आपकी शरणमें हम प्राप्तहैं अब अच्छी गति का कारणकहिये तबश्रीभगवान्जी बोले कि हे महाभाग!पूर्व्वसमयम- हात्मा अङ्गजीनेभी २९ हमारी आराधना की थी तब उनकोभी हमने वर दियाथा कि हे महाभाग! तुम अपने इन शुभ कर्म्मोंसे उत्तम वै- ष्णवलोकको जाओगे ३० सो हे नृपनन्दन! हे महाभाग! वे तो अपने ही पुण्य कर्म्म से वहां जायँगे अब तुम अपने लिये कोई और वर मांगो ३१ और पहलेके वृत्तान्त को सुनो पूर्वसमयमें तुम्हारी माता सुनीथा को बाल्यावस्था में महात्मा सुशंखजीने कोपितहोकर शाप दियाथा तब शापजानकर तुम्हारे उद्धारकरनेकी कामनासे अंगकोहम नेवरदिया कि तुम्हारे अच्छा पुत्रहोगा ऐसा तुम्हारेपिता से कहा ३२ ।३४ अब तुम्हारे अंगसे उत्पन्न होकर हमलोकका पालनकरेंगे और स्वर्गमें जैसे इन्द्र शोभित होतेहैं तैसे हम पृथ्वी में स्थित होंगे ३५ और पुत्रआत्माही उत्पन्न होताहै यह सत्यवती श्रुतिहै इससे हमारे

वर से तुम अच्छी गतिको प्राप्त होगे ३६ और हे राजन्! अपनीगति के लिये एक दानही दीजिये क्योंकि सुनीथाको सुशंखजी ने शाप दियाथा कि तेरेदुष्टपुत्रहोगा और हमने तुम्हारे पिता अंगको वर दियाथा कि तुम्हारे उत्तम पुत्रहोगा इससे विधि और निषेध मैंहीहूं कर्मके अनुरूप फलदाताहूं बुद्धिसे अतीत और गुणोंका ग्रहण करने वालाहूं ३७।३९ दान परमश्रेष्ठ है व दानही सब धर्म्मों को उत्पन्न कराताहै इससे अब तप छोड़कर तुम दानदो क्योंकि दानहीसे पुण्य होताहै ४० व दानसे पाप नष्ट होते इससे दान अवश्यकरो व हे नृपसत्तम! अश्वमेधादि यज्ञोंसे हमारी पूजा करो ४१ व भूमिदानादिक महादान ब्राह्मणोंकोदो क्योंकि सुदानहीसे भोग मिलतेहैं व सुदानहीसे यश मिलताहै ४२ सुदानहीसे कीर्तिमिलती है सुदानसे सुखमिलतेहैं दानहीसे स्वर्ग मिलता है व स्वर्गका फल दानहीसे प्राणीभोगताहै ४३ व दानभी जो श्रद्धापूर्वक दियाजाता है वह सफल होताहै कालपाकर तीर्थको जावे पुण्यकाफलयहीहै ४४ श्रद्धासेपवित्रचित्तसे सुपात्रब्राह्मणको जो हममें भावकरके महादान देताहै ४५ वह जो२मनसेचाहताहैहम सब उसे देतेहैं वेन यहसुनकर बोले कि दानका काल हमसे कहो कालका लक्षण कैसा होताहै ४६ व तीर्थ और पात्रकाभी लक्षण हमसे कहो व हे जगन्नाथ! दानकाभी सब लक्षण विस्तारसेकहो ४७ सो भी जो हमारेऊपर दया हो तो प्रसन्नतापूर्वक सबके लक्षणकहो श्रीवासुदेवजीबोले कि हेनृप! नित्य व नैमित्तिक दोनों दानोंकेकालों के लक्षणकहतेहैं ४८ सूर्य्योदयकी बेलामें सब पाप नष्टहोतेहैं व अन्धकारादिक सबघोररूप मनुष्योंके नाशकहैं इसीसे स्वर्गमें अपनेअंश तेजकेनिधि सूर्य्यको हमने कल्पित किया है ४९ । ५० इससे उनके तेजसे भस्महोकर सब पाप नष्ट होते हैं उदयहोते हमारे अंश सूर्य्यको देखकर जो जलभी देताहै ५१ हे राजन्! तिसका क्या कहना है नित्यही पुण्य बढ़ती है तिस अच्छी बेलाके प्राप्तहोनेमें पुण्यकर्त्ता मनुष्य ५२ स्नानकर जो कोई देवताओं व पितरोंका तर्पण करके फिर श्रद्धासे पवित्र चित्तसे दानदेताहै सो दान दाताकी शक्तिके अनुसार होताहै

व अन्न दुग्ध फल पुष्प वस्त्र ताम्बूल भूषण व सुवर्ण रत्न आदिक जोदे तो उसका फल अनंत होवे ५४ हे राजन् ! ऐसेही मध्याह्न में व पराह्णमेंभी जो कुछदे वह हमारेही उद्देशसेदे तोभी उसका फल अनंतही होवे ५५ खानेपीनेके मीठे पदार्थ व कुंकुमादि लेपकरनेके ऐसेही कर्पूरादि सुगन्धित वस्तु वस्त्र तथा नानाप्रकारकेभूषण५६ देवे तो भोग और सुखको पावे यह दानपूजा के अर्थियों का शुभ नित्यकाल मैंनेकहा ५७ अब उत्तम नैमित्तिकको कहतेहैं तीनोंकालों में निस्सन्देह दानदेनाचाहिये ५८ आत्मा के हितकी इच्छा करने वालेको दानसे शून्य दिन न करना चाहिये हे राजन् ! जिस काल में कुछ दानदियाजाताहै ५९ तो दानके प्रभावसे महाबुद्धिमान् बहुत सामर्थ्यसंयुक्त धनाढ्य गुणवान् बुद्धिमान् वपण्डित निपुणहोताहै६० जो कोई पक्षभर वा मासभर लगातार दान पुण्य नहीं करता है उस उत्तमभी पुरुष को हम भोजनसे हीनकरदेते हैं ६१ व जो कोई बिना उत्तमभी दानकिये कुछपदार्थ आप अकेले भोजनकरताहैहम ऐसारोग उत्पन्नकरदेते हैं जिससे सब भोगों का निवारण होजाताहै ६२ उसके शरीर में सदा पीड़ाबनीरहती है इससे कुछ खाने पीनेकी इच्छाही नहींरहती उसे मन्दाग्निसे युक्त करदेतेहैं वा ज्वर से पीड़ित करदेतेहैं ६३ जो लोग तीनकालों में एकमें भी कुछ दान नहीं करते कि ब्राह्मणदेवताओं को खिलावें पिलावें व आप मीठे पदार्थ खाते पीते रहते हैं वे लोग महापाप करते हैं ६४ उनको चाहिये कि बड़ाउग्र प्रायश्चित्तकरें हे महाराज ! बहुत उपवासादि करनेसे उन्हें अपना शरीर दुर्व्बल करनाचाहिये ६५ जैसे निर्घृणहोकर चर्मकार कुण्ड के ऊपर चमड़े को खड़ाकरके उसके शुद्धहोनेकेलिये अनेकखराबवस्तु भरताहै पर उसे शुद्धकरलेताहै ६६ वैसेही हम उस पापकर्त्ता को शुद्धकरते हैं इसमें कुछभी संशय नहीं है ओषधियों के सुयोगों से व कडुये काथोंसे ६७ उष्णजलोंके सन्तापोंसे वैद्यरूप धारणकर उसे हम शोधते हैं इसमें अन्तर नहीं पड़ने पाता और लोग उसीके आगे नानाप्रकार के उत्तम मनोवाञ्छित भोगोंको भोगतेहैं व वह बैठादेखताहै ६८ क्या करे दानदेने

में समर्थथा पर उत्तम दान तो दियानहीं फिर भोग कैसे भोगनेपावे बस हम उसे किसी बड़े पापरूपसे तापयुक्त करदेते हैं ६९ हे राज-राजेन्द्र ! ये सब नित्यकालके दान हैं जिनने श्रद्धासे पवित्र चित्तक-रके अपने लिये दान न किया ७० उनको हम वैसेही दारुण उपायों से जलाते हैं श्रीभगवान्‌जीने कहा कि अब नैमित्तिक पुण्यकाल तुम्हारे आगे कहते हैं ७१ हे नरश्रेष्ठ ! अच्छी बुद्धिसे तत्परहोकर सुनो हे महाराज ! हे नरेश्वर ! जब अमावास्या पूर्णमासी संक्रान्ति व व्यतीपातयोग होताहै व वैधृतियोग तथा एकादशीहो ७२।७३ व माघकी पूर्णमासी व आषाढ़की पूर्णमासी वैशाखी पूर्णिमा तथा कार्त्ति-की व सोमवती अमावास्या मन्वादिक व युगादिक सब तिथियां ७४ गजच्छाया मघानक्षत्र ये सब नैमित्तिक पुण्यकालहैं जो तुम्हारे आगे कहेगये हैं ७५ इनमें जो दान कियाजाताहै उसका जो फलहोताहै वह फल कहते हैं हे नृपसत्तम ! सुनो ७६ हमारे उद्देशसे जो पुरुष भक्तिसे ब्राह्मण को देताहै उसको हम निश्चय करके देते हैं इसमें संशयनहीं है ७७ गृह सौख्य स्वर्गवास मोक्षादिक सब कुछ देते हैं अब दान का फलदायक काम्यकाम तुमसे कहेंगे ७८ सब व्रतों के व सब देवताओं के दानका पुण्यकाल जो २ द्विजोत्तमों ने कहे हैं ७९ व आभ्युदयिक का काल उन सब यज्ञोंमें विवाह यज्ञ सब में उत्तम है ८० फिर पुत्रके जन्मका काल तथा चूड़ाकर्म्म का व व्रत-बन्ध का समय देवताओं के मन्दिरादि बनवाने व ध्वजादि चढ़ाने का समय व इन मन्दिरोंकी प्रतिष्ठा का काल ८१ वापी कूप तड़ा-गादिकों के उत्सर्ग्ग का काल व नवीन गृह बनवाकर वास्त्वर्च्चन विधान का काल व आभ्युदयिक श्राद्धका काल जहां माताओं का पूजन होताहै ८२ उस कालमें सब सिद्धिका देनेवाला दान देवे हे नृपोत्तम ! यह आभ्युदयिक काल कहाता है ८३ हे नरोत्तम ! और पाप पीड़ा निवारण काल कहते हैं मृत्युकाल प्राप्त होनेमें नाश जा-नकर ८४ यममार्ग के सुख देनेवाले दानदेने योग्यहैं हे महाराज ! नित्य नैमित्तिक काम्य आभ्युदयिक ८५ और अन्त्यकाल तुम्हारे आगे कहा ये कहेहुये काल अपने कर्म के फल देनेवाले हैं ८६

राजन् ! अब तीर्थके लक्षण तुम्हारे आगे कहते हैं अच्छे तीर्थों में
ये गंगा शोभित हैं और पुण्यकारिणी सरस्वती ८७ नर्मदा यमुना
तापती चर्मण्वती सरयू घाघरा सब पाप नाश करनेवाली वेणा ८८
कावेरी कपिला विश्वतारणी विशाला और हे नरोत्तम ! गोदावरी तुं-
गभद्रा नदी हैं ८९ अब पापपीड़ा निवारण करने के लिये अन्य
काल कहते हैं सब पापों को नित्यही भय देनेवाली भीमरथी नाम
नदी है व देविका कृष्णगंगा आदि सब महानदियां उत्तम कालोंमें
हैं ९० इन सबोंके पुण्यकालों में अनेक तीर्थ रहते हैं चाहे ग्राममें
हों चाहे वनमें हों नदियां सर्व्वत्र पावन होती हैं ९१ इससे जहां
कहीं नदियांहों वहां स्नान दानादिक क्रियायें करने के योग्यहैं जब
उन नदियों के तीर्थोंका नाम न जानाहो तो हे राजसत्तम ! ९२ हे
राजन् ! उस तीर्थ को हमारा तीर्थ अर्थात् विष्णुतीर्थ कहनाचा-
हिये व उस तीर्थ के देव भी हमीं हैं इसमें कुछ संशय नहींहै ९३
जो साधकलोग सब तीर्थोंमें व सब देवोंमें हमाराही उच्चारण करते
हैं हे नृपनन्दन ! उनके पुण्यका फल हमारे नामसे होजाता है ९४
हे नृपश्रेष्ठ ! जितने अज्ञात तीर्थोंके व देवताओं के नामहैं वे स[ब]
हमारे नाम से स्नान दानमें पुकारने चाहियें ९५ हे राजेन्द्र ! य[ह]
ब्रह्माजीने तीर्थों की माला करीहै पृथ्वी में सब ओर स्थित समु[द्र]
सब महापुण्यकारी हैं ९६ हे नृप ! इनमें जहां कहीं स्नान दानादि[क]
कियाजाताहै वह सुन्दर तीर्थों के प्रसादसे अक्षय होजाताहै ९७ [व]
सातोसागर भी महातीर्थरूपहैं व हे राजन् ! ऐसेही मानसादि सब
सर भी तीर्थरूपहैं ९८ झरने पल्वल कहातेहैं ये भी निस्संदेह तीर्थ
रूपहैं हे महाराज ! छोटी नदियोंमें भी तीर्थ स्थितहैं ९९ सब खातों
में कुयेंको छोड़कर ऐसेही सुमेरु आदि सब पर्व्वत भी तीर्थरूपही
पृथ्वीतल परहैं १०० यज्ञभूमि व अग्निहोत्र यज्ञभूमि श्राद्ध करनेकी
भूमि ये भी सब तीर्थरूप हैं व जितने देवमन्दिर हैं सब तीर्थरूपहैं
१०१ ऐसेही होम करनेकी शाला व वेदाध्ययनकी शाला येभी सब
तीर्थरूपही हैं व अपने गृहके भीतर गोशाला उत्तम तीर्थ होता है
१०२ व जहां सोमयज्ञ करनेवाला यजमान बसताहो वहां भी तीर्थ

सदा प्रतिष्ठित रहताहै व जहां पुण्यरूप पुष्पवाटिका वा साधारण वाटिकाहोतीहै वहां भी तीर्थवासकरताहै ऐसे खालीभूमिकी अपेक्षा जहां कोईभी वृक्षलगाहो मुख्यकर पिप्पल वट व आम्रका वृक्ष जहां हो वह भी तीर्थही है १०३।१०४ ये सब स्थावरतीर्थ तुम से कहे व पिता माता जंगमतीर्थ महापवित्र हैं व जहां कोई पुराण एकवार भी पढ़ागया हो वा पढ़ाजाता हो व जहां अपना गुरु रहता हो १०५ व जहां पतिव्रता स्त्री रहती हो वह स्थान व अच्छा पुत्र जहां रहताहो १०६ ये भी सब उत्तमतीर्थ गिनेजाते हैं व राजाका गृह भी तीर्थही गिनाजाता है ये सब तीर्थ हमने तुम से कहे यह सुन राजावेन बोले कि हे देवोत्तम! अब हमसे पात्रका लक्षण बताइये जिसे दान देना चाहिये १०७ हे माधव ! प्रसन्नतापूर्वक कृपा करके हम से निरूपण करो श्रीभगवान्जी बोले कि हे महाप्राज्ञ राजन्! पात्रका भी लक्षण सुनो १०८ जिसको पवित्र होकर श्रद्धासे महात्माओं को दानदेना चाहिये ब्राह्मण उसमें भी कुलीन फिर वेद शास्त्र पढ़ने में तत्पर १०९ शान्तचित्त इन्द्रियों को दमन कियेहुये तपस्यासे युक्त उसमें भी उज्ज्वल फिर बुद्धिमान् ज्ञानवान् देवताओं के पूजनमें तत्पर ११० सत्यवान् महापुण्य उसमें भी वैष्णव व ज्ञान से भी पण्डित व धर्म्मज्ञ चञ्चलतारहित पाखण्डोंसे विवर्जित १११ बस दान देनेके योग्य ऐसाही ब्राह्मण सत्पात्र समझा जाता है अब और भी सत्पात्र बताते हैं ऐसेही इन्हीं गुणोंसेयुक्त जो कहीं भगिनी का पुत्रहो तो मनुष्योंमें उत्तमहै ११२ इसको भी सुपात्र जानिये ऐसे ही कन्याका पुत्र सत्पात्र होताहै व हे महाराज! इन्हीं भावोंसे संयुक्त जामाता सत्पात्र होताहै ११३ व जिससे मन्त्रसुने वह गुरु व यज्ञकरानेवाला गुरु महासत्पात्र होताहै हे सत्तम ! दानके योग्य इतने सुपात्र हमने बताये ११४ वेदाचारसे युक्तहों सब सत्पात्रही हैं अब दान देनेके व यज्ञ कराने के अयोग्य विप्र बतातेहैं काने व धूर्तको त्यागना चाहिये ११५ अतिकाले ब्राह्मण को दान न देना चाहिये व कपिल रंगवालेको भी न देना चाहिये ब्राह्मणों में एककटारे गोत्रोंके होतेहैं उन्हें भी न देना चाहिये अत्यन्त नीलवर्णवाला

वर्जित है जिसके कालेदन्तहों वह भी त्याज्य है ११६ व जिसके नील वा पीलेदन्त हों वह भी वर्जित है गोवध करनेवाला व अत्यन्त कालेदन्तवाला व दाढ़ी रखानेवाला भी वर्जित है ११७ जो किसी अंगसे हीनहो वा किसी अंगसे अधिकहो वा कुष्ठीहो वा जिसके नखों में अपरसआदि कोई रोगहो व जिसके मुख से बहुत लार वहा करतीहो व जिसके शिरकेबाल खौड़ाहोनेसे बिलकुल गिरगयेहों ११८ व जिस किसी विप्रकी स्त्री अन्यके संग भोग करवाती हो तिसको जो ब्रह्माके समान भीहो तोभी दान देना अनुचितहै ११९ हे महाबुद्धियुक्त राजन्! स्त्रीजित अपनी शाखाको छोड़कर और की शाखा के कर्मकर्त्ता रोगी और मृतक के यहां भोजन करनेवाले को भी न देना चाहिये १२० व चोर ब्राह्मण को दान कभी न देना चाहिये चाहे वह अत्रिमुनि के समान भी तेजस्वीहो जो कभी वस्तु पाकर तृप्तही न होताहो उसे भी न देना चाहिये व जो शूद्रादिकों के मुर्दे वा उनकेहाड़ ढोताहो उसे भी न देना चाहिये १२१ अत्यन्त स्तब्ध और विशेषकर मूर्खको भी दान देना योग्य नहींहै व जो वेद शास्त्रसे तो युक्तहो पर सदाचारसे हीनहो वह भी ब्राह्मण दानदेने के योग्य नहीं होता १२२ हे राजेन्द्र! ऐसेको श्राद्धके निकट आने में व दान देनेमें सदा त्यागना चाहिये ॥

चौ० पुण्यदायिफलयुक्तमहाना । दानकहततुमसनश्रुतिभाना ॥
कालतीर्थमहँ पायसुपात्रा । श्रद्धायुत देइय करियात्रा ॥
श्रद्धासम नहिं पुण्यअपारा । नहिं श्रद्धासम सुखसंसारा ॥
श्रद्धासम तीरथ जगनाहीं । संसारिनकहँकतहुँ लखाहीं ॥
यासों श्रद्धा भाव समेता । सुमिरत हमें दान जो देता ॥
पात्र हाथ महँ थोड़उ कोई । होतअनन्ततनिकनहिंगोई ॥
यहिविधिदानकेरफलभूपा । होत अनन्त सुवेद निरूपा ॥
ममप्रसादपावतसुखदानी॥वसतस्वर्गनहिंलहतगलानी १२३।१२७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

# चालीसवां अध्याय ॥

दो० चालिसयें के महँकहे नैमित्तिक अरु नित्य ॥
सकलदानभूपालसों श्रीहरिबहुत बिचिन्त्य १

इसप्रकार दानपात्रोंका विवेक सुन राजा वेनने पूँछा कि हे भगवन्! हमने पहिले नित्यदानका फल तो आप से सुनाथा अब नैमित्तिकदान देनेका भी फल जो होताहै १ वहभी प्रसन्न होकर यत्न पूर्व्वक हमसे कहिये हमको अभी तृप्तिनहींहुई वरन अभी सुननेकी श्रद्धा बढ़ती जातीहै २ यह सुन श्रीविष्णु भगवान् बोले कि हे नृपोत्तम! अब नैमित्तिकदान तुमसे कहते हैं महापर्व्व पड़नेपर जिसने श्रद्धा से दान ३ सुपात्रों को दिये तिसके पुण्यफल को सुनिये हाथी रथ और घोड़का देनेवाला ४ नौकरों समेत पुण्य देशमें हमारेप्रसाद से निस्सन्देह उत्तम राजा होता है ५ जोकि धर्मात्मा ज्ञानवान् बलवान् बुद्धिमान् सब प्राणियों के नहीं जीतने योग्य और महातेजस्वी होताहै ६ महापर्वही के प्राप्त होने में जो कोई भूमिदान देताहै अथवा हे महाराज! गोदान देताहै वह सर्व्व भोगोंका पति होताहै ७ दान पुण्यात्मा ब्राह्मणको बड़े यत्नसे देनाचाहिये जोकोई पात्रका जाननेवाला तीर्थमें पर्व्व में जाकर महादान देताहै ८ तिनके चिह्न कहतेहैं वह भूमिका पति होताहै पर्व प्राप्त होनेमें तीर्थ में जो गुप्त दान देताहै ९ उसको शीघ्र निधियों की नाशरहित प्राप्ति होती है और महापर्व प्राप्त होने में तीर्थों में ब्राह्मण को १० सुन्दर वस्त्र सोनायुक्त महादान देताहै हेराजन्! तिस दान का पुण्यफल कहतेहैं सुगुणवान् वेदपारगामी आयुष्मान् प्रजावान् यश व पुण्यसमन्वित बहुत पुत्रहोतेहैं ११। १२ व विपुल धनधान्य समन्वित लक्ष्मी उसके होती है सौख्य पुण्यपाता है व धर्म्मवान्भी होता है १३ महापर्व्व में जो कोई तीर्थ में जाकर यत्न से सुवर्ण की धेनुबनवाकर महात्मा ब्राह्मणको देताहै १४ हे महामते! उसके दानके पुण्यकाफलकहतेहैं हे महाराज! गोदान करनेसे वह प्राणी प्रथम तो यावज्जीव सब सुख भोगताहै १५ व अन्तावस्था में मरकर ब्रह्माकी आयुर्दायके समान

ब्रह्मलोक में निवास करताहै व जो किसी महापर्व्वमें धेनुको वस्
भूषणादिकोंसे भूषितकरके व कुछ सुवर्णसहित किसी सत्पात्रको देत
है हे राजेन्द्र ! उसके दानका फल व भोगकाफल कहते हैं १६।१७
उसकेगृहमें दान व भोगयुक्त विपुल लक्ष्मी होती है व वह सब वि
द्याओं का पतिहोकर विष्णुकी भक्तिसेयुक्तहोताहै १८ व अन्तमें वह
मनुष्य तबतक जाकर विष्णुलोकमें निवासकरताहै कि जबतक यह
पृथ्वी रहेगी व तीर्थमें जाकर जो कोई ब्राह्मणको भूषण देताहै १६
वह इन्द्रलोकमें जाकर उनके संग विपुलभोग भोगताहै व जो कोई
श्रद्धायुक्त किसी महापर्व्व में सुपात्र ब्राह्मणको वस्त्रदेताहै व अन्नस
हित भूमिदेताहै वह विष्णुके तुल्य पराक्रमपाकर वैकुण्ठमें जाकर
प्रमोदकरताहै २०।२१ व वस्त्रसहित सुवर्ण ब्राह्मणकोदेकर सुखीहो
अपनी इच्छा से अग्नि के समान वैकुण्ठमें निवासकरताहै २२ व
जो कोई सुवर्ण के कुम्भमें घीभरकर व ऊपरसे चांदीके ढकनेसे बन्द
कर ऊपरसे वस्त्र व हारसे अलंकृतकरके २३ पुष्पोंकी मालापहि-
नाय व यज्ञोपवीतभी कुम्भकेगलेमें डाल वेदमंत्रों से उसकी प्रतिष्ठा
कर व पञ्चोपचारसे पूजनकर २४ अथवा पवित्र षोडशोपचारोंसे
पूजन करके वस्त्र आभूषणादिसे भूषित कर महात्मा ब्राह्मण को देता
है २५ व फिर उसीके सङ्गही कांस्यपात्रके दोहनपात्र और वस्त्रसमेत
सोलहधेनु वा कांस्यके दोहनपात्र समेत चारधेनु सोनेकी दक्षिणा
समेत २६ वा वस्त्रालंकार से भूषित उसीप्रकारकेदोहनपात्रोंसे युक्त
करके द्वादशधेनु किसी सत्पात्र ब्राह्मणको निस्सन्देह देनी चाहिये
२७ हे नृपनन्दन ! इसीप्रकारके और भी बहुतसे दान हैं वे तीर्थ व
कालको पाकर देने चाहियें परन्तु जो दियाजाय श्रद्धा व भावसे युक्त
ही होकर दियाजाय क्योंकि श्रद्धापूर्व्वक देनेसे बहुत पुण्य होताहै
श्रीभगवान्जी बोले कि जो दान व्रतके उद्देशसे किसीकामनाके लिये
कियाजाता है उसे काम्यदान कहते हैं २८।२९ उस दानके भावसे
भावनासे परिभावित होकर तैसेही फल को मनुष्य पाता है इसमें
संशय नहीं है ३० आभ्युदयिक दान कहतेहैं जो यज्ञोंमें कियाजाता
है हे द्विजोत्तम ! वह दान आभ्युदयिक श्रद्धाद्वारा होताहै ३१ इस

दानके करनेसे बुद्धिकी वृद्धि होतीहै व करनेवालेको दुःख नहीं होता व करनेवाला धर्मात्मा जबतक जीतारहताहै नानाप्रकारके भोग भोगताहै ३२ और इन्द्र के भोग भोगताहै व दाता मरनेपर दिव्यगति भी पाताहै और अपने कुलको हजार कल्पतक स्वर्ग लेजाताहै ३३ इस प्रकार आभ्युदयिकदान तुमसे कहा अब प्राप्तदान कहतेहैं जब प्राणी जाने कि वृद्धता से युक्त हुयेहैं अब शरीर का नाशहोगा ३४ उसको तब दान अपने लिये करने चाहियें इसमें पुत्र पौत्रादिकों की आशा न करनी चाहिये कि हमारे मरजाने पर हमारे पुत्र व और स्वजन बान्धव ३५ विना धनके कैसे जीवेंगे व विना हमारे ये सब सुहृद् कैसे निर्वाह करेंगे इस मोह से मूढ़होकर ऐसा न हो कि कुछ भी न दानकरे ३६ व मृतक होजाय तो दुःखसे पीड़ित सब मायामोह से पीड़ायुक्त बन्धुवर्ग बैठकर रोदन करनेलगें ३७ दानों को कोई संकल्प और मोक्षकी चिन्तना करतेहैं परन्तु तिसके मरने से माया मोहमें प्राप्त होकर ३८ लोभी मनुष्य दानोंको बिसरा डालतेहैं नहीं देतेहैं और जो मरताहै वह हे महाराज! यमराज के मार्गमें अत्यन्त दुःखित होता है ३९ प्यास और भूख से व्याकुल बहुत दुःखों से पीडित होताहै तिससे निस्संदेह सब दान अपनेही हाथों से करडाले ४० हे नृपोत्तम! किसके पुत्र किसके पौत्र किसकी भार्या संसार में कोई किसी का नहीं है इससे दान देना चाहिये ४१ जब तक अपना ज्ञान अच्छा ठीक बनारहे तभीतक अपनेही हाथों से निस्संदेह दान देना चाहिये उसमें अन्न नानाप्रकारके पान करनेके शर्बतादि पदार्थ ताम्बूल जल सुवर्ण ४२ दोवस्त्र छत्र भूमिकेफल अनेक जलपात्र जलसमेत ४३ विचित्र घोड़े गजआदि वाहन व पालकी नालकीआदि यान नानाप्रकारके चन्दन कर्पूरादि सुगन्धित पदार्थ व यममार्गके सुखदायक पदार्थ ४४ व जो बहुत सुखचाहे तो उपानत् अर्थात् जूता खराऊँ उस समय में दानकरे ॥

चौ० इतने दान सुनहु महिपाला । सत्पात्रनको देयविशाला ॥
सुखसों जाय धर्म्मपुरप्रानी । मारगमहँनहिंहोयगलानी ॥
यमदूतन सों भूषित सोई । सकलपापयकक्षणमहँखोई ॥

सुखितलहैस्वग्गीदि अनूप॥ जबविचलैतबहोयसुभूप॥४५॥४६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने चत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

# इकतालीसवां अध्याय॥

दो० इकतालिसे महँ कह कृकल सुकलादम्पति गाथ॥
जहां पतिव्रतधर्म्म सब सुकला वर्णि सनाथ १

इतनीबातेंसुन राजावेन फिर बोले कि पुत्र व भार्य्या कैसे तीर्थ होते हैं व माता पिता और गुरु कैसे तीर्थ होते हैं यह हमसे विस्तारसे कहिये १ श्रीभगवान् बोले कि गङ्गाके तीरपर सुन्दर गङ्गा युक्त वाराणसी महापुरीहै उसमें एक कृकलनाम वैश्य बसताथा २ उसकी भार्य्या महासाध्वी व पतिव्रत में परायणथी धर्म्माचारमें नित्य पर रहती व पतिकी सेवामें परायणरहती ३ उसका सुकलानाम था सुरूप युक्त सब उसके अङ्गथे सुन्दरपुत्रभी उसकेथे व चारु मङ्गल युक्तरहती सत्यवचन सदाबोलती शुद्धचित्त रहती उसकासब आकार प्रियथा व अपने पतिको परमप्रियथी ४ ऐसे शुभगुणोंसे युक्तथी व ऐश्वर्य्यवतीथी सबकार्य्य सुन्दरही करती व वह कृकलभी सब वैश्यों में उत्तम अनेक प्रकारके धर्म्म जाननेवाला ज्ञानवान् व गुणीथा ५ पुराणोंके सुनने में सदैव तत्पर श्रोताथा व तीर्थयात्राके प्रसंगसे बहुतसे पुण्य कियेथे ६ व फिर भी एक समय पुण्यमङ्गलकारी तीर्थ यात्रा करनेके लिये श्रद्धासे निकला व वहां ब्राह्मणोंका संगहुआ इससे उनके साथ कुछ वार्त्तालापहुआ ७ फिर धर्म्ममार्ग्गपर वह वैश्य चलनेपर हुआ उसकी पतिव्रता स्त्री उससे बोली सो पतिके स्नेहसेयुक्त उसने कहा कि ८ हे प्रिय! मैं तुम्हारी पुण्य करनेवाली धर्म्मपत्नीहूँ व पतिके मार्गको देखतीहूँ व पतिही की पूजा करतीहूँ ९ व कभी आपको संग नहीं छोड़ केवल तुम्हारी छाया का आश्रयण करके उत्तम धर्म करतीहूँ १० जोकि पातिव्रत धर्म्म नारियोंके लिये पापनाशनेवाला व गतिदायक है व लोक में वह पुण्य स्त्री कहाती है जो पतिकी सेवा में परायण रहती है ११ पतिको छोड़

युवतियों को अलग और कोई तीर्थ नहीं शोभित होता है बस स्त्रीके लिये पतिही स्वर्ग्ग मोक्ष देनेवाला तीर्थ है १२ पतिका वामपाद स्त्री के लिये प्रयाग तीर्थ है व दक्षिणचरण उसके लिये पुष्कर है १३ सो स्त्री अपने पतिके चरणधोकर उसी से स्नान करे क्योंकि स्त्रियोंके लिये पतिके चरणोंका जल प्रयाग व पुष्कर इन दोनों तीर्थों के समान है इस में कुछ भी संशय नहीं है १४ सर्व्व तीर्थमय भर्त्ता होताहै व सर्व्वपुण्यमय पतिहोता है बहुत से यज्ञोंके करनेवाले यजमानको जो पुण्य होताहै १५ वह पुण्य पतिकी सेवा से स्त्री पाती है गयादिक तीर्थोंकी यात्रा करने से जो फल होताहै १६ वह फल पतिकी शुश्रूषा करने से स्त्री को मिलता है अब संक्षेपरीति से कहती हैं सुनो १७ इन स्त्रियों को पतिसेवा को छोड़ और कोई धर्म्मही नहीं है इससे हे कान्त! तुम्हारे सङ्गही सङ्ग सहाय करने में मैं सुखभागिनीहूँ १८ अब जहां जहां तुम तीर्थ करने जाओगे संग संग मैं भी चलूँगी इस में अन्तर न पड़ेगा विष्णुजी बोले कि यह सुनकर कृकल वैश्यने सुकुमारता विचारा कि इसका रूप शील गुण भक्ति व नवीन अवस्था तो गृहसे बाहर जाने के योग्यहै नहीं क्योंकि जो इसे हम बड़े दुर्गम पर्व्वतोंपर व वनों में तीर्थयात्रा के लिये संग लेजायँगे तो शीत व घाम आदिक के लगने से, व मार्ग्ग के श्रम से इसके रूपका नाशहोजायगा क्योंकि इसके सब अंग कमलके गर्भ के समान चमकते हैं १९। २१ वे शीत झञ्झा पवन से काले होजायँगे मार्ग्ग अतिकर्क्कश व चरण इसके अतिकोमल २२ इससे इसको बड़ी पीड़ा होगी व मार्ग्गपर चलने न पावेगी फिर भूख व प्यास से पीड़ित हो नहीं जानते यह कैसी होजायगी २३ यह हमारे सुखका स्थानहै व नित्य हमारे प्राणके समान प्यारी व धर्मका आश्रयहै २४ कदाचित् यह हमारी स्त्री नष्ट होगई तो हमारा भी नाशही होजायगा यही हमारी नित्य जीविका है व यही नित्य हमारे प्राणोंकी ईश्वरी है २५ इससे इसको तीर्थ कराने के लिये वनको न लेजायँ केवल हम अकेलेही चलेजायँ एक क्षणमात्रतक वह महात्मा इसीप्रकार चिन्ता करते

रहा २६ उसको चिन्ता करते देख उसने समझलिया कि ये हमको संग नहीं लेजाया चाहते हैं इससे चलनेपर उद्यत अपने स्वामी से वह महाभाग्यवती फिर बोली २७ कि हे महानुभाव ! पुरुषों को पापहीन स्त्री स्वतन्त्र न छोड़नी चाहिये यह पुरुष के धर्म्मका ऐसा मूलहै २८ यह जानकर हे महाभाग ! हमको इससमय अपने संग लेतेचलो श्रीविष्णु भगवान् राजावेनसे बोले कि अपनी प्राणप्रिया के युक्तिपूर्व्वक सब वचन सुन २९ हँसकर कृकलवैश्य फिर उससे बोला कि हे प्रिये ! हम तुमको कभी नहीं त्यागसक्ते क्योंकि बड़े धर्म्म से हमने तुम ऐसी प्राणप्रिया भार्य्याको पाया है ३० जिसने धर्मचारिणी पतिव्रता स्त्रीको छोड़दिया हे श्रेष्ठमुखवाली ! उसने द शाङ्ग धर्म्म भी छोड़दिया ३१ हे प्रिये ! तुम्हारा कल्याण हो तिसी से हम तुमको कभी नहीं त्याग करेंगे विष्णुजी बोले कि इसप्रकार बारबार अपनी भार्य्या सुकला से कहकर व समझाकर ३२ उससे विनाबताये रात्रिही में उठकर अकेला चलागया जब पुण्यकारी महाभाग कृकल चलागया तो ३३ प्रातःकाल देवकर्म के समय जब वह शुभ मुखवाली उठी तो अपने पतिको अपने मन्दिरभरमें कहीं न देखकर व्याकुल हुई ३४ व इधर उधर देख रुदन करती हुई अतिदुःखित हुई व दुःख शोकसे पीड़ितहो पति के संगियोंसे पूँछनेलगी ३५ कि आपलोग हमारे भाई बान्धवहैं जो हमारे प्राणनाथ कृकलजी को कहीं आपलोगोंने देखाहो तो हमसे कहो क्योंकि हमारे भर्त्ता पुण्यकर्त्ता व सत्य पण्डित व सब जाननेवाले हैं ३६।३७ उन महामति को जो कहीं देखाहो तो बताओ उसका ऐसा भाषित सुन वे महात्मा लोग उस महामतिवाली सुकलासे बोले ३८ कि हे शुभे ! हे सुव्रते ! धर्म्मयात्रा के प्रसङ्गसे तुम्हारे कृकल स्वामी तीर्थयात्रा करनेगये हैं तुम क्यों शोच करतीहो ३९ महातीर्थको करके फिर लौट आवेंगे इस प्रकार उन हितकारी पुरुषोंने जबबहुत समझाया ४० तो मनोहर बोलनेवाली सुकला फिर अपने घरको चलीगई व घरमें जाकर करुणा पूर्व्वक बड़े दुःखसे रोदन करनेलगी क्योंकि वह नित्य पतिकी पूजामें परायणथी इससे उसने यह निचारांशकिया कि जबतक हमारे स्वामी न

आवेंगे तबतक हम भूमिपर ऐसेही कुछ विना बिछायेहुये सोवेंगी घृत व तैल कुछ न भोजन करेंगी व न दही दूध खायँगी ४१।४२ व लवण ताम्बूलभी उसने छोड़दिया व हे राजन्! गुड़ शर्करादि मीठे पदार्थ उसने छोड़दिये ४३ व एकबार खाकर व विना खायेही रहजायाकरे बस उसने कहा कि जबतक हमारा स्वामी आवेगा तबतक निस्सन्देह ऐसेही रहूँगी ४४ भोग विलासोंकी आवश्यकता नहीं इसप्रकारके दुःखसे युक्तहो शिरके केशोंमें तैल न लगानेसे एक वेणी बँधगई वही चोली जो उस दिन धारण किये थी बराबर पहिनेरही इससे अतिमैली होगई ४५ व एकही मलिनवस्त्रभी तबतक पहिने रही व दिनरात्रि मारेदुःखसे हाहाकार मचाती रही ४६ वियोग के अग्नि से जलकर काली होगई ऐसे दुःख समाचारों से युक्त होकर अतिदुर्बल व विह्वल होगई ४७ व रात्रि दिन रोतीही रहै इससे निद्रा कभी उसे आईही नहीं व हे राजन्! क्षुधाभी उसे न लगे व दुःखसे बनाय मलिन होगई ४८ तब उसकी सखियों ने आकर सुकलासे पूँछा कि हे सुकले! सुन्दर सर्व्वाङ्गवाली! तू आजकल रोती क्यों है ४९ इससे हे वरानने! इस दुःखका कारण हमलोगों से कह सुकला बोली कि धर्म्ममें तत्पर हमारे भर्त्ता धर्म्म के अर्त्थ तीर्त्थयात्रा के प्रसङ्ग से कहीं घूमते हैं व हमको यहीं छोड़गये यद्यपि हम निर्दोष पापवर्जित हैं तथापि हमारे स्वामी हमको छोड़गये ५०।५१ हम साध्वी हैं व सदाचारयुक्त पुण्य पतिव्रताहैं परन्तु हमको त्याग हमारे भर्त्ता तीर्त्थ सेवन में तत्पर होकर चलेगये ५२ हे सखियो! इसी से हम दुःखित हैं व पति के वियोग से पीड़ित रहती हैं जीव का नाश श्रेष्ठ है व विष खाना श्रेष्ठहै ५३ अग्नि में प्रवेश करना उत्तमहै व शरीर नाश होना भलाहै पर क्याकरें कोई भर्त्ता ऐसा निष्ठुर होताहै कि नारी को छोड़कर चलाजाताहै ५४ परन्तु पति के त्याग से प्राणोंका त्याग अच्छा होता है अब हम नित्यका दारुण वियोग नहीं सहसकीं ५५ हे सखियो! इसी दारुण वियोगसे नित्यही दुःखित रहती हैं यह सुन सखियां बोलीं कि तीर्त्थयात्रा को तुम्हारे पति गये हैं फिर आवेंगे ५६ इससे तुम वृथा

थे डालतीहो व वृथा शोक करतीहो व हे बाले! वृथा तुम ताप करती हो व वृथा भोगों को छोड़तीहो ५७ पीनेवाली वस्तुओंको पानकरो भोजन करनेवाली भोजनकरो जो पूर्व्वजन्ममें तुमने दे रक्खेहैं वे सब पदार्थ भोग के लिये प्राप्तहैं उनको भोगो किसका भर्त्ता किसके पुत्र व किसके स्वजन बान्धव ५८ कोई किसी का संसार में नहीं है न किसी का किसी के साथ कोई सम्बन्ध है पूर्व्वजन्मका फल संसार में सब भोगताहै ५९ जब प्राणी मृतक होजाताहै तो कौन भोजन करताहै व कौन फल देखताहै बस जबतक जीता है प्राणी तभी तक सब संसारी पदार्थोंको खातापीताहै ६० सुकला बोली कि जो आपलोगों ने कहा वह वेदका सम्मत नहीं है क्योंकि जो स्त्री अपने पति से अलग सदा रहती है ६१ वह नारी पापरूप होजातीहै व सज्जनलोग उसको नहीं मानते हे सखियो ! वेदों में यही लिखा देखाहै कि स्त्री सदा अपने पति के संगरहै ६२ पर ऐसा सम्बन्ध पुण्यके संसर्ग से होताहै इसमें सन्देह नहीं है शास्त्रों में स्त्रियों क तीर्थ पतिही पढ़ाहै ६३ इससे स्त्रीको चाहिये कि कर्म मन व वचन से उसी अपने पतिकी सेवाकरे व सत्य भावयुक्त मनसे नित्य उसकी पूजा करे ६४ पतिका दाहिना अंग सदैव महातीर्थ है जो गृह की स्त्री तिसी का आश्रय करके रहती है ६५ दान पुण्यों से पूजन करती है तिस दानका जो फल होताहै कि काशी गङ्गाजी पुष्कर ६६ द्वारका अवन्ती केदार और शशिभूषण तीर्थ में उतना फल स्त्री सदैव नहीं पाती है ६७ हे सखि ! कभी तैसे फल को नहीं पाती अच्छे मुखवाले पुत्र सौभाग्य स्नान दान गहना ६८ वस्त्र अलंकार सौभाग्य रूप तेज यश कीर्त्ति और गुणको पाती है ६९ स्वामी के प्रसाद से सब पाती है इसमें कुछ संशय नहीं है व पतिकी विद्यमानतामें जो स्त्री अन्य तीर्थ व्रतादि करती है ७० उसका सब निष्फल होताहै व पुँश्चली कहाती है स्त्रियोंका रूप यौवनहै ७१ व उस यौवनके लिये स्त्री को पृथ्वीमण्डलमें अकेला अपना पतिहै जो नारी पतिकी सेवा करती है वह सुपुत्रवती होती है उसीका यश सदैव संसारमें होताहै ७२ व जिस स्त्रीके ऊपर उसका पति सदा सन्तुष्ट रहताहै वह संसारमें दर्शन करने

के योग्यहै इसमें कुछ भी संशय नहीं है व जो स्त्री अपने पतिसे विरुद्ध रहती है पृथ्वी पर ७३ उसको सुख, रूप व यश कहां मिलसक्ते हैं व पुत्र कीर्त्ति कहां मिलसक्ते हैं क्योंकि वह सदैव दुःखही भोगती है संसारमें कुछभी सुख उसे नहीं मिलसक्ता व सब पापोंकी भागिनी होती है व सब दुःखही दुःख भोगती है ७४ ॥

दो० जा नारीसों तासु पति तुष्ट रहत दिन रैन ।
सब सुर तापर तुष्टही रहत लहत सुखचैन ॥
ऋषि मानव सब तुष्टही पतिहि देखि सन्तुष्ट ।
होत नारिसों त्यहि विना ऋष्यादिक सबरुष्ट ॥
भर्त्ता गुरुपति नाथअरु हैं सब देव महान ।
पति तीरथ युवतीन कहँ और नहीं है आन ॥
रूपवर्ण शृङ्गार अरु भूषण लेप सुगन्ध ।
पर्व्व छोड़िपतिहित सदा करें युवति शुभबन्ध ॥
भूषण अरुशृङ्गार बिन कबहुँ न पतिहि दिखाहिं ।
जो नारी सुखधर्म्म नित चाहें निज मनमाहिं ॥
स्वामि प्रीति सुखदायिनी पापकरी अप्रीति ।
यासों शाश्वत धर्म्म यह करहिं नारिपति प्रीति ॥
इमिजानत हो धर्म्म सब किमित्यागहु निजस्वामि ।
सुनहु सखिहु इतिहास यहि विषयकहत सबकामि ॥
वसुदेवाकर चरित जहँ पुण्यरु पापाहारि ।
कहत विचारिप्रचारिबहु करिताकर निरधारि ७५ । ८४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेसुकलाचरितेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

## बयालीसवां अध्याय ॥

दो० बयालीसयें महँ कह्यो शूकर दम्पति गाथ ॥
नृपइक्ष्वाकुशिकारयुत सुकलासखियनसाथ १

यह सुन सुकलाकी सखियां उससे बोलीं कि हे महाभाग्यवाली! तुमने जिसके वसुदेवा व सुदेवा दो नामहैं उसमें कौनसे आचारदेखे

थे हमसे सत्य कहो १ सुकला बोली कि अयोध्यापुरी में धर्म्म करने में बड़े पण्डित महाभाग सब धर्म्म अर्थ में तत्पर महाराज वैवस्वत मनु के पुत्र २ सर्व्वज्ञ देव ब्राह्मणों के पूजक इक्ष्वाकु नाम महाराजाधिराज हुये उनकी सदा पुण्यकर्म्म में परायण पातिव्रत धर्म्म में निरत ३ सुदेवा नाम भार्य्याथी उसके सङ्ग महाराज ने यज्ञ और विविध प्रकार के तीर्थ किये वह काशी के राजा महात्मा वेदराज वीरकी कन्याथी ४ सत्य आचार में परायणथी उसके संग महाराज का विवाह हुआ ५ इसके सब अंग मनोहर थे और वह सत्यव्रत में परायणथी उस प्रियाके संग मनुष्यों के पुण्यनायक राजाओं में श्रेष्ठ महाराज नित्य विहार करते थे एक समय महाराज उस साथ वनको गये ६ । ७ व गङ्गाजी के निकट वनमें पहुँचकर सत मृगया खेलने लगे सिंहों वराहों महिषों व गजों को मार ८ क्रीड़ा करते थे तो उनके सम्मुख अपने पुत्र पौत्रादिकों के साथ एक शूकर आया ९ व उसके पास एक उसकी प्राणप्रिया शूकरीभी थी व वह वाराह बहुतसे शूकरों से घिरा हुआ था १० व स्त्री समेत पुत्र पौत्र गुरु बालकों संयुक्त पर्वत के नीचे अपने पराक्रमसे एकही स्थितथा उस ने दुःखसे जीतनेवाले शिकार में रत राजराजेन्द्रको देखकर और तिन मृगों का नाश जानकर ११ । १२ पुत्र पुत्र और स्त्री से कहा अयोध्या के महाराज महाबली वीर मनुजी के पुत्र इक्ष्वाकुजी इस वनमें १३ शिकार खेलते हैं व देखो बहुत से मृगोंको मारचुके हैं जैसेही हमको देखेंगे महाराज अवश्य आवेंगे इसमें संशय नहीं है १४ अन्य व्याधाओं का तो हमको रंचकभी भय नहीं है परन्तु हमारारूप देखकर महाराज क्षमा न करेंगे १५ बड़े हर्ष से युक्तहो धन्वा बाण लिये हुये हैं उन के संग बहुतसे कुत्ते हैं व अन्य बहुत मृगों के मारने वाले लुब्धकहैं १६ इस से हे प्रिये ! हमारा नाश करडालेंगे इसमें संशय नहीं है १७ यह सुन उसकी पत्नी शूकरी बोली कि जब बहुत से लुब्धक व कुत्ते वनमें दिखाई देने लगें तब हे कान्त ! हमारे इन पुत्र पौत्रादिकों समेत भागकर दूर चले चलना १८ हे स्वामिन् ! अब धैर्य्य व बल छोड़ करके यद्यपि भय

युक्तहो तथापि भागचलो क्योंकि जब वनाय समीप राजाको आये हुये देखोगे तब कौन पौरुष करसकोगे इसका कारण कहिये १९ उसका ऐसा वचन सुन वह शूकरों का राजा अपनी शूकरीसे बोला कि हां भागना तो अच्छाही है क्योंकि नहीं तो इनपापी लुब्धकों के हाथों से मरना पड़ेगा क्योंकि जो बड़े दुराचारी दुष्ट पापी होते हैं वेही मरनेपर इन पर्वतोंपर लुब्धकों के वंशमें उत्पन्न होते हैं २० । २१ इससे हम इन पापियों के हाथों से मरने से डरते हैं क्योंकि जब पापियों के हाथों से मरेंगे तो फिर ऐसीही किसी पाप-योनि में जन्म पावेंगे इसीसे हे कान्ते ! अपमृत्युसे डरकर किसी पर्वत की कन्दरामें दूरजाकर लुकेंगे २२ जब पुण्यात्मा विश्वभरके स्वामी विष्णु भगवान्‌के तेजसे उत्पन्न ये महाराज उस कन्दराके समीप जायँगे तो इनके संग अपने पराक्रम व बलसे हम युद्धकरेंगे २३ यदि अपने तेज से महाराज इक्ष्वाकुजीको जीतलेंगे तो पृथ्वीपर अतुल कीर्त्तिको भोगेंगे कदाचित् हारकर संग्राम में इनपुण्यात्मा के हाथसे मारेजायँगे तो विष्णुलोक में जावेंगे २४ व हमारे अङ्गों से निकलीहुई मज्जासे व मांससे पृथ्वीनाथ महाराज तृप्तहोंगे व उन के तृप्तहोने से सबलोग व देवतालोगभी तृप्तहोंगे इससे महाराज चलेआते हैं २५ हे सुन्दरि ! जो इन्हीं के हाथों से मरणहो तो बड़ा लाभहो व कीर्त्तिभी उत्तमहो तीनोंलोकों में भी यशहो व मधुसूदन भगवान् के लोकको जायँ २६ हम मृत्युके भयसे पर्वतकी कन्दरा में भागजाना नहीं चाहते थे किन्तु पापियों के हाथसे मरनेके भयसे भागना चाहतेथे पर अब पुण्यात्मा महाराजको देखकर फिर स्थिर होगये २७ यह नहीं जानते कि पूर्व जन्ममें हमने कौनसा बड़ाभारी पापकियाहै जिससे इस महानिन्द्य शूकरी योनि में उत्पन्नहुये हैं २८ सो अब महाराजके घोर व तीक्ष्ण सैकड़ों बाणजलों से पूर्वसञ्चित पापको धोडालेंगे २९ अबपुत्र पौत्र व कन्या कुटुम्बके बालकोंको लेकर तुम पर्वतकी कन्दरा में चलीजाओ व हमारा मोह छोड़दो ३० व हमारे ऊपर स्नेहछोड़दो राजाका रूपधारणकिये ये हरिही आगये हैं इससे इनके हाथसे मरकर विष्णुजीके परमपदको जायँगे ३१ दैवने

आज हमारेलिये उत्तम स्वर्ग के द्वारके किवाड़ खोल दिये हैं इससे चलेजायँगे ३२ सुकला बोली कि हे सखियो! तिसमहात्मा शूकरके वचनसुन क्लेशयुक्त उसकी प्यारी ३३ शूकरी बोली कि जिस यूथमें पुत्र पौत्र मित्र भाई व और स्वजन बांधवोंसे शोभित आप स्वामी अबतक रहे ३४ इससे आप से भूषित वह यूथ अत्यन्त शोभित होताथा सो हे महाभाग! विना तुम्हारे वह कैसा होजायगा ३५ हे कान्त! तुम्हारे ही बलसे गर्ज्जतेहुये सब शूकर व हमारे पुत्र कन्या पौत्रादि पर्व्वत व वनमें निश्शङ्क विचरते थे ३६ व तुम्हारेही तेजसे निर्भयहो कन्दमूल खाते थे व दुर्गम पर्व्वतोंपर कुंजों में नगरों व ग्रामों में ३७ किसी मनुष्यादिकों से भय नहीं करतेथे व पर्व्वतपर सिंहोंसे भी नहीं डरते थे व तुम्हारे तेजसे पालित थे ३८ अब जब तुम इनको छोड़कर चलेजाओगे तब हमारे ये सब लड़के लड़कियां जोकि अभी बहुधा बालकहैं वे बेचारे दीन व्याकुल होजायँगे व विचेतन भी होजायँगे ३९ ये बालक सदा तुमको देख २ सुखही भोगते थे पर अब जैसे पतिहीन नारी नहीं शोभित होती ४० चाहे अनेक दिव्य रत्न भूषण सुवर्ण वस्त्रादिकों से भूषितहो व अन्यभी नानाप्रकारके परिच्छदोंसे तथा पिता माता भाई बन्धुओं से थी शोभितहो ४१ व सास श्वशुर के पक्षवालों से भी सबसे युक्तहो पर पतिहीनहो तो नहीं शोभित होती व जैसे विना चन्द्रमा की रात्रि नहीं शोभितहोती व विना पुत्र के कुल नहीं शोभितहोता ४२ जैसे विना दीपकके मन्दिर कभी नहीं शोभित होता वैसेही विना तुम्हारे यह शूकरोंका झुण्ड न शोभित होगा ४३ आचार के विना मनुष्य ज्ञानहीन संन्यासी मंत्रहीन राजा जैसे नहीं शोभित होते तैसेही यह शूकर समूह न शोभित होगा ४४ जैसे अन्य सब जन धन धान्य से युक्तभीहो पर विना मल्लाह के समुद्र में नौका नहीं शोभितहोती ऐसेही यह झुण्ड विना तुम्हारे न शोभितहोगा ४५ जैसे विना सेनापति के सैन्य नहीं शोभितहोता वैसेही हे महामते! तुम्हारे विना यह शूकरोंका यूथ न शोभितहोगा ४६ जैसे वेदसे हीन ब्राह्मण दुःखी होताहै ऐसेही विना तुम्हारे शूकर झुण्ड दुःखितहोगा कुटुम्बका भार हमारे ऊपर धरके जातेहो ४७

मरण को सुलभ समझा ऐसी प्रतिज्ञा कैसी होगी हे प्रियेश्वर! विना तुम्हारे अपने हम प्राणही नहीं धारण करसक्तीं ४८ हे महामते! तुम्हारेही सङ्ग स्वर्गभूमि व नरक सबके सुख वा दुःख भोगेंगी यह हम आपसे सत्यही कहती हैं ४९ इस से हे यूथेश! हम दोनों इस शूकर के झुण्डको लेकर पर्वत के दुर्गम स्थान में चलेचलें ५० जीवन छोड़कर लड़नेको जातेहो मरने में तुमने कौनसा लाभ देखाहै यह हम से इस समय बताओ ५१ इतना सुन वह शूकर-राज बोला कि तुम वीरोंका सुन्दर धर्म्म नहीं जानती हो अब हमसे सुनो जब कोई वीर युद्ध करने के लिये किसी वीरके समीप जाकर याचना करताहै ५२ कि हमको युद्धदो क्योंकि समरमें तुम्हारेसाथ हम युद्ध करनेके अर्थ आयेहैं इस प्रकार दूसरे से याचित होनेपर जो नर युद्धदान नहीं करता ५३ सो चाहे कामसे लोभसे वा भयसे अथवा मोहसे जो युद्ध नहीं करता वह सहस्र युगतक कुम्भीपाक नरक में पड़ा रहता है ५४ क्षत्रियों को युद्धदेना परमधर्म्म है इसमें कुछभी सन्देह नहीं है जब किसी के मांगनेपर कोई युद्धदान करता है ५५ वह शत्रुको जीत कीर्त्ति व यश भोगता है व यदि युद्धकरने में मारागया पर पौरुष से निर्भय होकर लड़ा ५६ वह दिव्य वीर-लोकों को पाकर दिव्य भोग विलास करता है जबतक बीस सहस्रवर्ष नहीं बीतते तबतक दिव्यभोग भोगा करताहै ५७ व उस वीरलोक में देवताओं से पूजित होताहै सो ये वीरशिरोमणि मनुजी के पुत्र यहां हमसे युद्ध मांगनेकी इच्छासेही आये हैंइसमें कुछ संशय नहीं है इससे निश्चय हमें इनको युद्ध देना चाहिये क्योंकि ये सनातन विष्णुरूप युद्धके अतिथि होकर आये हैं ५८। ५९ इस से इनका सत्कार युद्धरूप से हमको करना चाहिये तब शूकरी बोली कि जो महात्मा राजाको तुम्हें युद्ध देनाहै ६० तो हे कान्त! हमभी तुम्हारा पौरुष देखेंगी कि कैसाहै यहपतिसे कहकर शीघ्रतासे अपने पुत्रों पौत्रों कोबुलाकर ६१ बोली कि हे पुत्र पौत्रादिको! हमारे वचन सुनो युद्धके अतिथि सनातन विष्णुरूप आये हैं६२ इस से जहां शूकर जावेंगे वहां पर हमकोभी जानाचाहिये अभी जबतक तुमलोगों के स्वामी ये

हैं ६३ तबतक तुमलोग पर्व्वतकी किसी गुहामें दूर चलेजाओ व हे हमारे वत्सो ! लुब्धकोंसे सदा बचातेहुये सुखसे जीतेरहो ६४ हमको वहां जाना चाहिये जहां ये जायँगे व तुमलोगोंके ये बड़ेभाई सब यूथकी रक्षाकरेंगे ६५ व ये आपलोगों के चचालोग आपलोगों की रक्षा सदा करते रहेंगे इससे हे पुत्रो ! तुम सब हमको छोड़कर दूर चले जाओ ६६ वे सब यह सुनकर बोले कि इस पर्व्वत श्रेष्ठपर बहुत कन्द मूल फल जल हैं व यहां किसी का भय नहीं है इससे सुखसे जीवन होता है ६७ सो आप दोनोंजनोंने अकस्मात् भयंकर कहा सो हे मातः! इस का सत्य सत्य कारण हम से कहो क्या है ६८ तब शूकरी बोली कि ये महारौद्ररूप राजा कालरूप यहां आकर प्राप्तहुये हैं व शिकारके लोभसे बहुत से मृगोंको मार वनमें क्रीड़ा करते हैं ६९ ये मनुके पुत्र महाबली व दुर्द्धर्ष हैं और इक्ष्वाकु इनका नामहै बस ये काल-रूपही हैं तुम सबोंको मारडालेंगे इससे हे पुत्रो ! दूर भागजाओ ७० तब वे पुत्र बोले कि माता पिताको छोड़कर जो भाग जाताहै वह महा-पापी कहाता है व महाघोर नरकमें जाताहै ७१ ॥

चौ० मातुपवित्र दुग्धकरिपाना । पुष्टहोत अरु बहु बलवाना ॥
निर्दयह्वै तजि जननी तातहि । चलाजात जो लहतसुघातहि ॥
जाय नरकमहँ शोणित पूया । पीवतकृमि दुर्गन्ध ससूया ॥
यासों जननि मातु पितु त्यागी । हम न जावनहिं होव अभागी ॥
धर्म्म अर्त्थयुत कहि इमिबानी । सकल भये उद्यत बड़मानी ॥
बल अरु तेजसहित करिव्यूहा । स्थिरभे समरणकी करि ऊहा ॥
साहस अरु उत्साह समेता । सब देखहिं भूपहि अगलेता ॥
नादकरत क्रीड़तवनमाहीं । पौरुषयुक्त तनिक भय नाहीं ७२ । ७३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रे द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

## तैंतालीसवां अध्याय ॥

दो० तैंतालिसें महँ शूकरी शूकर लुब्धकयुद्ध ॥
वीरधर्म्म कहि युवतिसों नृपहतिहित भो क्रुद्ध १

सुकला बोली कि इस प्रकार वे सब शूकर युद्ध करने के लिये उप-स्थित हुये और लुब्धकलोग राजाके आगे खड़ेहुये १ हे राजेन्द्र ! बड़ा शूकरभी पहाड़की कन्दरामें बड़ा यूथकर व्यूहकर खड़ाहुआ २ यह शूकर कपिल रंगवाला स्थूल पीन अंगयुक्त बड़ीडाढ़ें और बड़े मुखवाला दुःसह था और अत्यन्त भयानक गर्ज्जता था ३ तिन शाल व तालके वनमें खड़ेहुओं को महाराजने देखा उनशूकरोंका वचन सुन मनुके पुत्र प्रतापी महाराज ने ४ कहा कि सुनो सबलोगो बलसे दर्पित इस शूरवाराह को पकड़ो व मारो ऐसा उन वीरों से कहकर मनुके पुत्र महाप्रतापी राजा खड़ेहोगये ५ व मृगयाके मदसे मोहित उनके वीर लुब्धकलोग अपने कवच बखतरआदि सुधारकर कुत्तों समेत तैयार होगये६ तब महाबली महाराज बड़ेहर्षसेयुक्तहुये व घोड़े पर चढ़ेहुये चतुरंगिणी सेना संगलिये ७ गंगाके तीरपर गिरिवरों में उत्तम सुमेरुनाम पर्व्वत के नानाप्रकार के रत्नोंसे जटित व धातु-ओंसे मण्डित नानाप्रकारके वृक्षोंसे अलंकृत शृंगपर खड़ेहो शोभित होनेलगे ८ सुकला अपनी सखियोंसे बोली कि वह पर्व्वतराज बल का धाम किरणों के समूहयुक्त बहुत ऊंचा आकाश को प्राप्त अनेक पर्वतों से शोभित प्रकाशितथा ९ और बहुत योजनोंतक निर्मल गङ्गा जीकी धारामें लहरें मोतीके सदृश निर्मल जल के कणों समेत उठ-तीथीं सब ओर शिलातल धोजाकर स्वच्छथे ऐसा पर्वतश्रेष्ठ अच्छी शोभासे युक्तथा १० उस समय देवता चारण किन्नर गन्धर्व्व विद्या-धर सिद्ध व अप्सराओं की शोभासे शोभित होरहा था व नानाप्र-कारके मुनिगण व हाथियों से व चन्दन के बहुत वृक्षोंसे शोभितथा व वैसेही देवदारु शाल ताल तमाल कृतमाल के प्रवालों से शोभित था व नानाप्रकार के अन्य वृक्षों से व कल्पद्रुमादिकों से विभूषित था ११ नाना प्रकार की धातुओं से विचित्र था अनेक प्रकार के रत्नोंसे विचित्रित विमान जिनमें सोनेके दण्डथे ऐसा पर्वत स्त्रियोंसे शोभितथा १२ नारियल के सुन्दर वन व सुपारी के वृक्षोंसे शोभित था दिव्य पुन्नाग बकुल व कदली के खण्डों से मण्डित था १३ पुष्प सहित चम्पा पाटल व केतकी के वृक्षोंसे मण्डितथा नानाप्रकार की

वल्लियों के प्रतानों से व पद्मके वृक्षोंसे शोभित था १४ नानाप्रकार के पुष्पोंसे पुष्पित वृक्षोंसे अलंकृत था स्फटिकमणि की शिलाओं पर जमे दिव्यवृक्षों से विराजमान १५ व कन्दराओं में योगीन्द्र व योगिराजों के बसने से आनन्दयुक्त होरहाथा नानाप्रकार के झरनों के चलनेसे अतिमनोहर व नदियों के प्रवाहों से अतिरम्य १६ व नदी के प्रवाह से प्रसन्न संगमों से शोभित व निर्मल जल भरेहुये हृद कुण्ड व अल्प जलाशयों से शोभित था १७ व नानाप्रकार के ऐसे शृंगोंसे वह गिरिराज उस समय शोभित होरहा था शल्लकी शार्दूल व मृगोंके यूथोंसे अलंकृत १८ महामत्त मातङ्गोंसे महिषों व रुरुओं से उपशोभित था ऐसेही अनेक भावोंसे गिरिराज विभासितथा १९ सो मनुके पुत्र महावीर इक्ष्वाकुजी ऐसे पर्वत पर उस अपनी स्त्री व चतुरंगिणी सेनासमेत २० व आगे २ कुत्तोंको उनके पीछे लुब्धकों को कियेहुये जहां वह बली शूकर अपनी भार्य्यासमेत २१ व बहुत से शूकरों से रक्षित था व अपने पुत्र पौत्रोंसमेत विराजमान था उस गंगाके तीर मेरुभूमिमें पहुँचे २२ सुकला अपनी सखियों से बोली कि तब हर्षसे युक्तहोकर वह शूकर अपनी प्रियासे बोला कि हे प्रिये! देख महाबली कोशलाधिपति चलेआते हैं २३ व महाप्राज्ञ राजा हमारे मारने के उद्देश से मृगया क्रीड़ा करते हैं इनके संग देवताओं व दैत्यों के हर्ष करानेवाला युद्ध हम करेंगे २४ यह तो ऐसा अपनी स्त्रीसे कह-रहाथा व महातेजस्वी महाराज धन्वा बाण हाथोंमें लिये सत्यधर्मा-गी अपनी सुदेवानाम महारानी से हर्षित होकर बोले २५ कि हे कान्ते ! देखो यह महाबली शूकर गर्ज्जरहाहै व उसके संग महाबल पराक्रमी उसके परिवारवाले भी गर्ज्जतेहैं यह मृगके मारनेवालोंसे दुःसह है २६ हे प्रिये ! इसी समय तीक्ष्ण बाणोंसे मारूंगा जो यह महाशूर युद्ध करनेके लिये हमारे पास आवेगा २७ ऐसा स्त्रीसे कह लुब्धकों से बोले कि जैसे यह शूकर शूर है ऐसेही महाशूरों को इसके पास भेजो २८ तब लुब्धकोंने बल तेज पराक्रम युक्त शूरोंको भेजा तोवे गर्जतेहुये दौड़े २९ व वायुवेगसे चले व पहुँचकर तीक्ष्ण बाणोंके जालों व अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्रोंसे लगे शूकरों को व

उस वीररूप महावराह को मारने ३० । ३१ सुकला अपनी सखियों से बोली कि लुब्धकलोग बाण तोमर इस प्रकार शूकरके ऊपर छोड़ते भये जैसे मेघपर्वतमें जल छोड़तेहैं जब दृढ़ प्रहार करनेवाले सैकड़ों लुब्धकों से संग्राम में प्राप्त यूथपालक शूकर मारकर निर्जित किया गया ३२ तब अपने पुत्र पौत्र और बान्धवों समेत होकर उसने लुब्धकोंको मारा और डाढ़ोंसे लुब्धकों को काटकर गिराया पांव हाथ गिरनेलगे तब शूकरने लुब्धकोंकी आईहुई गर्जनहीं देखी ३३ अपने तेजसे नाशित और मुखके अग्र और डाढ़ों से लुब्धकों को मारकर राजाके पासगया तब राजा संग्रामकी वाञ्छा न करताभया ३४ फिर क्रोधयुक्त संग्राम में हर्ष समेत होकर शूकर राजाको बहुत भय दिखाकर जबर्दस्ती वनमें उनसे युद्धकी वाञ्छा करताभया ३५ फिर युद्धमें कुशल शूकर संग्राम की इच्छासे थूथुनके आगेसे तीक्ष्णदांत और नहोंसे क्रोधयुक्त होकर पृथ्वीको खोदनेलगा हुंकार के उच्चार गर्वसे विमलराजा को प्रहार करता भया तब आनन्द की रोमाञ्च युक्त राजा विष्णुके समान पराक्रमी शूकर को जानतेभये ३६ शूकर के अतुल पौरुष को देखकर इन्द्र मनसे सहसा वाराहरूप से देवताओंके वैरी शूकर को समझकर और बहुत सेना देखकर उसके नाशने के लिये हाथी भेजते भये और यह राजा से कहते भये कि हाथी को ग्रहणकरो ३७ फिर बहुत वेग युक्त रथ और हाथी भेजते भये तब लुब्धक बाण खड्ग भुशुंडी मुद्गर और फँसरी हाथमें लेकर जहां हाथी घोड़े थे वहां लड़ाई की इच्छा से शब्द करनेलगे और रोंकनेसे भी न रुँकते भये ३८ तब शूकर कहीं २ न दिखाई देताभया और कहींकहीं दिखाई पड़ता भया कहीं डरवाता भया कहीं घोड़ों को मारता भया ३९ फिर रणमें दुर्जय शूकर क्रोध से लाल नेत्रकर वीर योधाओं को मर्दन कर बड़ा शब्द करता भया ४० तब कोशलापुरीके स्वामी तिसको रणमें दुःख से जीतनेवाले बड़ी देहयुक्त मेघों के समान गर्जते हुये और युद्ध करते देखकर ४१ धीरयुक्त होकर समरभूमिमें गर्जने और घूमनेलगे और अपने तेज से वीरोंको प्रकाशित करतेभये मुखों में बिजलीकीनाईं दाढ़ें प्रका-

स्थितहोतीभई ४२ तब राजा शूकर को उसके बंधुओं समेत देखकर तीक्ष्ण बाणों से और शस्त्रों से एक एकको मारते भये ४३ और सेनावालों से बोले कि हे सेनावाले शूरो! इसको पराक्रम से क्यों नहीं पकड़लेतेहो फिर इससे तीक्ष्ण बाणों से युद्ध करो ४४ तब क्रोधयुक्त महात्मा राजा के वचन सुन सब सेनावाले युद्ध करनेकेलिये उपस्थित हुये ४५ सहस्रों योधा वनमें रण में स्थित शूकर को सब दिशाओं में प्रहार कर भेदन करतेभये ४६ किसी विशाल योधाओं ने संग्राममें बाण समूहोंसे मारा किसी ने चक्र किसी ने वज्रसे मारा ४७ तब पौरुषों से क्रोधयुक्त रक्तकी धारा से भीगाहुआ शूकर रण में फँसरियों को काटकर बड़े शूकरों समेत पहुँचा ४८ व पहुँचकर घोड़ों हाथियों के पेट मस्तक पैरआदि फाड़चीड़डाले व तीक्ष्ण दांतों से पैदललोगों को तो विदारणही करडाला ४९ यहांतक कि उस बड़े शूकरराज ने तो अपने थूथुन से गजका मस्तक विदीर्ण करडाला और पांवके नखोंसेवीरोंका नाश किया ५० तब फिर सब लुब्धक व सबशूकर क्रोधकेमारे लाल२ नेत्रकर परस्पर घूम २ कर युद्धकरनेलगे ५१ तब लुब्धकोंकेमारेहुये शूकर व शूकरोंके मारेहुये लुब्धक रुधिरसे अरुण होकर पृथ्वीपर गिरनेलगे ५२ लुब्धकोंने जीव छुड़ाकर शूकरोंको बलसे महीपर गिराया कि वे मृतकहो विना प्राणके पृथ्वीपर गिरपड़े व कुत्तेभी प्राणों को छोड़ देते भये ५३ व बहुतसे शूकर जो प्राणसहित भूमिपरगिरेथे उन्हों ने अपने दांतोंसे क्षितिपर पड़ेहुये घायल लुब्धकोंके अंगनिकट जा जाकर चीड़फाड़डाले ५४ व बहुतसेशूकर बाणोंके आघातोंसे पीड़ितहो पर्वतके दुर्गम स्थानों में भागकर जागिरे व बहुतसे कुञ्जोंमें बहुतसे कन्दराओंमें बहुतसे अपने २ घरोंमें जाघुसे ५५ ऐसेही कोई २ लुब्धकभी शूकरोंके दांतों से छिन्नभिन्न होकर प्राणों को छोड़ खण्ड २ होकर स्वर्गको चलेगये ५६ व लुब्धकलोगों के जाल व फांसियें जो लिये थे सब जहां की तहां पड़ीरहगईं व उनलोगों की नसें भी ठौर २पड़ीरहगईं ५७ केवल वह बलके अभिमानयुक्त महावाराह अपनीस्त्री व पांचसात पुत्र पौत्रों समेत खड़ारहगया ५८ तब वह

शूकरी अपने स्वामी शूकर से फिर बोली कि हे कान्त! हमारे व इन बालकोंके साथ चलेचलो ५९ तब प्रीतियुक्त दुःख से पीड़ित प्राणप्रियासे वह शूकर प्रीतिसे बोला कि हम कहांको जायँ टूटफाटगये हैं हमारेलिये भूतलमें कहीं स्थान नहीं है ६० हे महाभागे हमारे नाशहोनेपर शूकरोंके झुण्ड नष्टहोजायँगे क्योंकि आजतक दोसिंहोंके बीचमें शूकर पानी पीताथा ६१ व दो शूकरों के मध्यमें सिंह नहीं जल पीसक्ताथा शूकरकी जातियोंमें ऐसा उत्तमबल दिखाईदेताथा ६२ सो हम समरसे भागजायँ तो उस धर्म्म व बलको नष्टकरें हे महाभागे!बहुत कल्याणदायक धर्म्म हम जानते हैं ६३ जो कोई लोभ व भयसे समरसे भागता है व रणतीर्थको छोड़ताहै वह पापीहोता है इसमें कुछभी संशय नहीं है ६४ व जो तीक्ष्ण शस्त्र समूहको देखकर हर्षितहोताहै वह मानों समुद्र तीर्थ में स्नानकरके उसके पारको जाताहै ६५ व अपने पुरुषोंसमेत वैष्णवलोकको जाता है व जो पुरुष शस्त्रास्त्रयुक्त वीरोंके आनन्द देनेवाली समरभूमिको देख हर्षितहोताहै उसके पुण्यकाफल हमसे सुनो ६६ पद पद पर गङ्गाजीके स्नानका महापुण्य होताहै वरणसे भागकर जो लोभसे घर को चलाजाताहै उसका फलसुनो ६७।६८ वह जानों अपनी माता के दोषों को प्रकाशित करता है व जानों पुरुष होकर उत्पन्नही नहीं हुआ-वरन स्त्रीही होकर जन्मा है हे कान्ते!इस रणभूमिमें सबयज्ञ व सबतीर्थ विद्यमानरहते हैं व महापराक्रमी देवतालोग ६९ कौतुक देखा करते हैं मुनि सिद्ध चारणलोगभी कौतुक देखते हैं जहां वीरवीरको युद्धकरनेकेलिये प्रचारता है तीनोंलोक वहां देखनेकेलिये आजाते हैं ७० व समरसे भग्नको तीनोंलोकों के निवासी देखतेहैं व जो पापयुद्धकरता है उस घृणाहीन पापीको शापदेते हैं व बार२ हँसते हैं ७१ व धर्म्मराज उसको दुर्गति दिखाते हैं इसमें कुछ भी संशयनहीं है व जोकोई सम्मुखहोकर युद्धकरके अपने शिरकारुधिर पीताहै ७२ वह अश्वमेधयज्ञका फल पाताहै व इन्द्रलोकमें जाकर बसताहै व हे वरानने!जब शूर समरमें शत्रुओं को जीतताहै ७३ तो वह नानाप्रकारकी लक्ष्मीको भोगताहै इसमेंसंशयनहींहै व जो कोई

सम्मुखयुद्धमें निराश्रयहोकर प्राणछोड़ताहै ७४ वह परमलोक को जाकर देवकन्याओंके सङ्ग भोग करता है इसप्रकारका धर्म्म हम जानतेहैं फिर कैसे समरसे भागें ७५ इन राजाकेसाथ समरमें युद्ध करेंगे इसमें कुछसन्देहनहींहै ये एकतो मनुकेपुत्र दूसरे धीर इक्ष्वाकुजी हैं ७६ व हे वरानने!इन पुत्र पौत्रादिकोंको लेकर तुमजाओ व सुखसेजीवो उसका ऐसा वचन सुन शूकरी बोली कि हम तोतुम्हारे स्नेहके बन्धनोंसे बँधीहैं ७७ क्योंकिहेप्रिय!जबतुम्हारेस्नेह व नाना प्रकारकी रतिक्रीड़ाका स्मरणकरती हैं तो आपको छोड़कर जाया नहींजाता इससे हे मानद ! तुम्हारेआगे पुत्रोंसमेत प्राणोंको त्यागूंगी ७८ इसरीति से आपसमें वार्त्ताकर व एक दूसरेका हितचाहते हुये वे दोनों स्त्री पुरुष युद्धकरने का निश्चयकर अपने शत्रुओंकी ओर देखनेलगे ७९ व कोशलापुरी के स्वामी महाराज इक्ष्वाकुजी ओर बड़ेक्रोधसे देखने लगे ८० ॥

चौपै० जिमिनभमहँगर्ज्जतमेघा तर्ज्जतचपलासँगअतिवेगा ।
तिमिवहवरशूकर गर्ज्जत भूपर निजदयिताके नेगा ॥
महराजकुमारहि अतिहि प्रचारहि समरकरनके हेता ।
पुनिपुनितेहिओरावचनकठोरा बहुविधिसों कहिदेता ॥
गर्ज्जत लखिताही मन उत्साही भूपतिमनहिं विचारें ।
यहएक वराहा रणगुणगाहा करुपुरुषार्थ प्रचारें ॥
नरवीर धुरन्धर भूमि पुरन्दर अश्वारूढ़ तुरन्ता ।
आयहुत्याहि आगे अति अनुरागे चापकरतशरवन्ता ८१।८२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेत्रयश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

## चवालीसवां अध्याय ॥

दो० चौवालिसयेंमहँ नृपति श्रीइक्ष्वाकु महान ॥
वध्योशूकरहि सोगयो सुरपुरचढ़िविमान १

सुकला अपनीसखियोंसे बोली कि अपनी दुर्द्धरसेनाको अति दुर्द्धर शूकरसे निर्जितदेखकर महाराजने दुस्सह व क्रूरस्वभाववाले

उस शूकरके ऊपर बड़ा कोपकिया १ व वेगसे घोड़ेपर चढ़ धनुष हाथ में ले कालाग्निके समान बाण चढ़ाकर शूकरको मारा २ जब श्रेष्ठ पौरुषयुक्त शत्रुनाशक राजा को शूकरराज ने घोड़ेपर चढ़ा देखा तो रणभूमिमें राजा के सम्मुख गया ३ महाराजने दूसरा अतितीक्ष्ण बाणचलाया तब वह उसको भी उल्लंघन कर शीघ्रता से घोड़ेके पांवके पासपहुँचा ४ और घोड़ेको व्यथितकिया तो थूथुन से माराहुआ घोड़ा पृथ्वी में गिरा और शूकर अपनी जातिके शब्दों से गर्जा तब राजा झट उसपरसे उतरकर रथपर सवारहुये ५ तब भूपालमणिने एक ऐसी गदा बड़े बलसे उसकेमारी कि उसका शिर फटगया व पृथ्वीपर गिरपड़ा प्राण निकलगये व उसीसमय विमान पर विद्याधरके रूपसे चढ़कर श्रीहरिलोक को गया जब महाराज केसंग समरमें युद्धकरके शूकरराज मृतकहोकर पृथ्वीपर गिरा तब प्रसन्नहुये देवताओंने महाराजके ऊपर पुष्पोंकी वर्षाकी वे सब पुष्प कल्पवृक्षके थे जिनसे देवताओंने वर्षाकी व कुंकुम चंदनादिकों की भी वर्षा भूपाल के ऊपर की ६।९ व राजाके देखतेही देखते प्रथम विद्याधर का रूप धारणकिया था फिर चतुर्भुजी मूर्त्ति धारणकर दिव्यभूषण वस्त्रादि धारण किये सूर्य्य समान प्रकाशित होनेलगा १० व दिव्यविमानपर चढ़के देवता गन्धर्व्व सिद्धादिकोंसे पूजित हो फिर वह गन्धर्व्वराज होगया क्योंकि पूर्व्वजन्म का भी वह गन्धर्व्वही था इससे हरिपुरमें पहुँच कुछदिन वहां के सुख भोगकर फिर गन्धर्व्वराज हुआ ११ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

## पैंतालीसवां अध्याय

दो० पैंतालिस महँ शूकरी चार पुत्र लै साथ ॥
नृपसों समरभिरीतनय तासुमरो यहगाथ १

सुकला अपनी सखियोंसेबोली कि जब शूकरमारागया तब राजा की ओरके सब शूर लुब्धकलोग पाश हाथोंमेंलिये

किये उस शूकरी के ऊपरको दौड़े १ व शूकरी अपने स्वामीको परिवारसहित मरेहुये देख केवल चारपुत्र उसके बचे थे उनको संगले वहां स्थितरही २ व यह उसने विचारा कि इसी समरमें मरकर मेरा पति ऋषि देवताओंसे पूजितहुआ व इसी वीरकर्म से वह महात्मा स्वर्गकोगया ३ सो इन राजाकेसंग युद्धकर समरमें मरकर मैंभी पतिकेपास पहुँचूंगी यह चिन्तनाकर फिर उसने अपने बालकों के विषयमें सोचा कि ४ जो ये चारो मेरेबालक जीते रहेंगे तो वंशको धारणकियेरहेंगे व उस हमारे अतिवीर महात्मा पतिकाभी नाम चलाजायगा ५ सो अब मैं किसउपायसे इन पुत्रोंकी रक्षाकरूं इस चिन्तामें युक्तहो व पर्व्वतके दुर्ग्गमस्थान देख ६ व वहां मार्ग्गभी बहुत लम्बा चौड़ा भागनेकेलिये देखकर उसने निश्चयकिया कि अब पुत्रों से कहूं कि इस मार्ग्गहोकर भागजायँ ७ यह दृढ़कर पुत्रोंसे बोली कि हे पुत्रो ! जबतक मैं जीतीहूं व यहां खड़ीहूं तबतक तुमसब यहां से शीघ्र चलेजाओ ८ उनमें जो ज्येष्ठ उसका पुत्रथा वह माता का वचन सुनकर बोला कि माता को छोड़कर मैं कैसे जासक्ता हूं हे मातः ! तुमको छोड़कर चलेगयेहुये मुझको धिक्कारहै व मेरे जीनेको अतिधिक्कार है ९ मैं रणमें शत्रुसे अपने पिता का पलटा लूंगा उसे मारडालूंगा इससे मुझसे छोटे इन तीनों मेरे भाइयोंको लेकर पर्व्वत की कन्दरा में तुम चलीजाओ १० क्योंकि जो कोई माता पिताको ऐसे स्थानपर छोड़कर चलाजाताहै वह महापापी होताहै व करोड़ों कीड़ों से युक्त नरकको प्राप्त होताहै ११ यह सुन दुःखसे व्याकुलहो वह बोली कि हे पुत्र ! तुमको छोड़कर मैं कैसे जाऊं क्योंकि जो कोई अपने पुत्रको छोड़कर कहीं चलाजाताहै वह महापापी होताहै तीनों मेरेपुत्रजावें १२ यह कह आपतो उनके देखतेही देखते बड़े पुत्रकेपास रणमें रहगई व उसके छोटे तीनोंलड़के बड़े दुर्ग्गम मार्गमें चलेगये १३ व तेज बलसे अपने बड़े पुत्र समेत बारंबार गर्ज्जतीरही इतनेमें पवनके वेग के समान शूर लुब्धकलोग आपहुँचे १४ व जिसमार्ग्ग होकर अपने तीनों पुत्रोंको भेजाथा उस मार्ग्गको रोककर ये दोनों माता व पूत खड़ेरहे १५ व लुब्धकलोग खड्ग बाण धन्वा धारण

कियेहुये वहां आये और तीक्ष्ण तोमर चक्र मूसरआदिसे उन दोनों को मारने लगे १६ तब माताको पीछेकर पुत्र उनके साथ लड़ने लगा किसी २ को तो दांतोंसे व किसी २ को थूथुनसे विदीर्णकर दिया १७ व शूरों को नहों से ऐसा नोचा कि सबकेसब पृथ्वीपर गिर पड़े व जब इस प्रकार युद्धकरनेलगा तो महात्मा राज ने उसेदेखा १८ व विचारा कि यह अपने पिताकी अपेक्षा अधिक शूर है इससे महातेजस्वी प्रतापी महाराज इक्ष्वाकुजी धन्वाबाण लेकर उसके सम्मुख उपस्थितहुये १९ व अर्द्धचन्द्राकार अतिचोखेबाणसे उसे मारा महात्मा राजाके उस बाणके लागतेही छाती फटकर वह शूकर भूमिपर गिरपड़ा २० व गिरतेही वह वराह स्वलकभी होगया व पुत्रके अतिमोहसे व्याकुल उसके पीछे उसकी माता शूकरी युद्धकरने में प्रवृत्तहुई २१ उसने अपने तुण्ड के घातसे शूरोंको ऐसा मारा कि बहुत से लुब्धक तो मरगये २२ तब अपने दांतोंसे बड़ी भारी सेनाको विदीर्ण करती हुई वह शूकरी आगेको बढ़ी जैसे कि मन्त्रसे उत्पन्न कृत्या महाभयंकरी होकर सैन्यको काटती फाड़ती चलीजाती है २३ उसको सब सैन्यको संहारकरतीहुई देख महारानी जी महाराज इक्ष्वाकुजी से बोलीं कि हे महाराज! इस शूकरी ने तो आपकी बड़ी सेना मारी २४ आप इसके मारनेमें कैसे उपेक्षा करते हैं इसका कारण हमसे कहैं तब महाराजने रानीजीसे कहा कि हम मारती हुईभी स्त्रीको कभी नहींमारते २५ क्योंकि हे प्रिये! स्त्रीके वधमें देवताओंने महादोष दिखाये हैं इससे हम स्त्रीको अपने हाथों से कभी नहीं मारसक्ते न उसके मारनेके लिये किसी को हम भेजीसक्ते हैं२६ इससे हे सुन्दरि! इसके वधके निमित्त पापसे हमडरते हैं ऐसाकहकर उससमय राजाविश्राम कररहे फिर कुछ न बोले २७॥

चौ० तबलुब्धकयक आर्ज्जरनामा। लखीशूकरी करतसुग्रामा॥
जिमिनसुभटरणकरहिंकदापी। तिमिशूकरी करतअतिपापी २८
तिन अतिवेग निशित शरलीना। हती वराही ह्वैगइ छीना॥
बाण विदीर्ण रुधिर की धारा। बहत कोलिनी देह अपारा २९
शरशोभा शोभितसोकोली। झपटजाय भ्रूज्झंर ढिगडोली॥

हत्यो तुण्डसों ताहि करारी । घायल भो सो वीरप्रहारी ३०
गिरतसमय तिन कीनप्रहारा । खड्ग उठाय कठोर उदारा ॥
तासु घात व्याकुल भुविसोई । मूर्च्छित कोली सबबल खोई ३१
श्वासलेत कहरत क्षितिमाहीं । लोटत छटपटात बल नाहीं ॥
इमि शूकरी व्यथित भै कैसे । जलबिन मीन दीनहो जैसे ३२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने
सुकलाचरित्रेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

## छियालीसवां अध्याय ॥

दो० छीयालिसयें महँ कह्यो शूकरिमुक्ति बहोरि ॥
तिन निजपतिपूरबजनम भाषेचरितनिहोरि १

सुकला सखियोंसे बोली कि राजाकी पतिव्रता महारानी पुत्रोंके ऊपर कृपाकरनेवाली उस शूकरीको पृथ्वीपर पड़ी लोटतीहुई देख बड़ी कृपासे दुःखितहो महादुःखित उस शूकरी के समीप गई १ व शीतल जलसे उसका मुखधो फिर उस रणशालिनीके सर्व्वांग जलसे धोये २ जब पुण्य शीतलजल से वह हनवाई गई तो महारानी से मनुष्य बोली से बोली सो भी बड़े मधुरस्वरसे बोली ३ कि हे देवि! तुमको सुखहो क्योंकि तुमने अपने हाथोंसे मुझको हनवाया तुम्हारे दर्शन से व स्पर्शकरने से मेरेपापोंका ढेर नष्टहोगया ४ अ-द्भुताकारसंयुत उस शूकरीका अद्भुत संस्कृत भाषाका शब्द स्पष्टता पूर्व्वक सुनकर वह सुदेवा नाम महारानी अपने मनमें कहनेलगी कि ऐसा आश्चर्य हमने देखाहै जोकि स्वर व्यंजनसहित उत्तम संस्कृतवाणी यह शूकरी बोलती है ५।६ इस हर्ष व विस्मयसे उत्तम साहसकरके अपने पतिसे यह बोली कि हे पूज्यमहाराज ! यह अ-पूर्व्व संस्कृत बोलती है क्याकहूं उसके सुनने से आश्चर्यहोता है पशुयोनि में इसका जन्महै पर वाणी पढ़े लिखे विज्ञानी मनुष्यकी बोलतीहै ७।८ सब ज्ञानवानों में श्रेष्ठ राजा यह सुनकर जोकि उस ने अद्भुत व अद्भुताकार कभी न सुनाथा न देखाथा ९ तब अपनी सुदेवा प्राणप्रिया से महाराज बोले कि यदि ऐसा है तो इससे पूछो

कि यह कौनहै १० राजाका वाक्य सुन महारानी सुदेवाने उस शूकरी से पूँछा कि तुम कौन हो तुम में यह बड़े आश्चर्यकी बात दिखाईदेतीहै ११ कि पशुयोनिको पाकर भी मनुष्यकीसी बोली बोलती हो बरन बहुतसे विना पढ़ेहुये मनुष्योंसे भी ज्ञान सम्पन्न और सुन्दर बोली बोलती हो इससे तुम अपने पूर्व्वजन्मके सब कर्म्म हमसेकहो १२ व हे महाभागे! अपने महात्मापतिकेभी विचित्रचरित कहो वह पूर्व्वजन्मका कौन धर्म्मात्मा है जो अपने पराक्रमोंसे स्वर्ग को चला गया १३ अपने व अपने भर्ताके सब पूर्व्वजन्मके समाचार कहो ऐसा कहकर रानी तो चुप होरही १४ और शूकरी उसी मनुष्य वाणीसे बोली कि हे भद्रे! जो तुम हमारे व महात्मा इन हमारेप्रिय पति के वृत्तान्त पूँछती हो तो हम प्रथम इन महात्मा अपने पति के चरित कहती हैं जो कि इन्होंने पूर्व्व जन्म में किये थे १५ ये महात्मा महाप्राज्ञ सब शास्त्रों के अर्थ जानने में बड़े पण्डित व गानविद्या में बड़ेविज्ञ रंग विद्याधर नाम गन्धर्व्वथे १६ व पर्व्वतों में श्रेष्ठ मनोहर निर्झर व कन्दराओं से युक्त सुमेरुपर्व्वत पर महातेजस्वी मुनिश्रेष्ठ पुलस्त्यजी १७ चित्तलगाकर तपस्या करते थे वहां पर अपनी इच्छा से विद्याधर गया १८ और उस पर्व्वत में गीतविद्या में अभ्यास किया करता सो स्वर व तालसमेत अति मनोहर इनका गाना सुनकर एक मुनि ध्यानसे चलित मन होगये तबगातेहुये उनगीत विद्याधरनाम गन्धर्व्वसे मुनिराज बोले १९।२० कि आपके इस दिव्यगीत से देव मोहित होते हैं इस में कुछ सन्देह नहींहै जब तुम सातस्वर व पुण्यलयताल भाव मूर्च्छना आदि से युक्त गीतगाते हो तो देवताओं को कौन कहे हम मुनियों का ध्यान चलायमान होजाता है २१।२२ इस से तुम यह स्थान छोड़कर और किसी स्थान को चलेजाओ यह सुन वे गीत विद्याधर नाम गन्धर्व्व बोले कि हम यहां अपने ज्ञान के समान गीत को सिद्ध करते हैं और स्थान को क्योंजावें २३ किसीको कुछ दुःख नहीं देते सदैव मनुष्योंको इस गीतसे सुखही देते हैं क्योंकि सब देवता इस दिव्यगीतको सुनकर प्रसन्न होते हैं २४ हे द्विज! गीतकी ध्वनि में

रत महादेवजी भये हैं गीत सर्वरस कहाता है और गीतही आनन्द दाताहै २५ शृंगारादिक सबरस गीत से ही प्रतिष्ठा युक्तहैं गीत से उत्तम चारोवेद शोभित होते हैं २६ व गीतही से सब देवगण सन्तुष्ट होते हैं और किसी से नहीं सो ऐसे गीत के गातेहुये हम को आप रोकते हैं २७ हे महाभाग! इस विषय में आपकाही यह अन्याय दिखाई देताहै यह सुन पुलस्त्यमुनि बोले कि तुमने सत्यकहा गीतका अर्थ बहुत पुण्यदायक है २८ पर हे महामते! हमारा वाक्य सुनो व मानको छोड़ो हम गीतकी निन्दा नहींकरते वन्दना करते हैं २९ सब चौदहो विद्या गीत के भाव से पढ़ने सेही आती हैं परन्तु जितनी विद्याहैं मुख्यकर ध्यान देकर एकभाव से चित्त लगाने से आती हैं ३० व ऐसेही तप मन्त्र सब एकचित्तता सेही सिद्धहोते हैं हमारे मत से इन्द्रियोंकासमूह बड़ा चञ्चलहै ३१ इससे वह आत्माको सब विषयों में खींचता रहताहै इस से मनको ध्यान से चलादेताहै इसमें कुछभी संशय नहींहै ३२ जहां शब्दरूप व युवती नहींरहतीं मुनिलोग तप सिद्धकरनेके लिये वहां जाते हैं ३३ यह तुम्हारा गीत पुनीत व बहुतही सुखदायकहै व हे वीर! हमलोग घर द्वार छोड़कर तपस्याही करने के लिये वनमें आकर स्थितहुये हैं ३४ इससे कितो तुम्हीं अन्यस्थान को चलेजाओ वा तुम न जाओ तो हमीं कहीं चलेजावें यह सुन गीत विद्याधर बोला कि जिस महात्माने इन्द्रियोंका बल व गर्व जीतलिया हो ३५ वही जयी तपस्वी योगी वीर व साधक कहाताहै हे महामते! जो शब्द सुनकर वा रूप देखकर ३६ ध्यानसे चलायमान नहीं होता वही धीर तप सिद्ध करनेवाला कहाता है हमने जानलिया कि तुम तेजसे हीनहो व काम क्रोध लोभादि छः रिपुओं को जीते नहींहो ३७ हे ब्राह्मण! जब अपने अंग में कुछ सामर्थ्यही नहीं रखते तो हमारेगीतसे डरतेहो जो हीनवीर्य्य होते हैं वे सब वन छोड़तेरहते हैं इसमें कुछ संशयनहीं है ३८ हे विप्र! यहतो साधारणवनहै इसमेंसंदेह नहींहै सब देवताओं का सब जीवोंकाहै इससे जैसे यह तुम्हाराहै वैसेही हमारा है ३९ ऐसाउत्तम वन छोड़कर हम क्योंचलेजायँ तुमचाहे चलेजाओ अथवा ठहरो व

जो भावीहै करो ४० उन ब्राह्मणदेवसे ऐसा कहकर गीतविद्याधर चुपहोरहा उन मुनिजीने उसका ऐसा उत्तर सुनकर ४१ अपने मन में चिन्तनाकी कि क्याकरनेसे अब हमारा सुकृतहो यह विचार क्षमाकरके वे महात्मा पुलस्त्य योगी वहांसे अलग चलेगये व अपने कहीं एकान्तमें तप करनेलगे सदैव योगके आसनमें रहें काम क्रोध मोह और लोभको त्यागदिया ४२।४३ मनकेसाथही सब इन्द्रियोंको अपने वशमें करलिया इसप्रकार मुनिश्रेष्ठयोगी पुलस्त्यजी स्थित रहे ४४जब मुनिश्रेष्ठपुलस्त्यजी चलेगये तो कालकी आज्ञासे प्रेरित उस गीत विद्याधरने ४५ अपने मनमें चिन्तनाकी कि हमारेभयसे देखो वह मुनि कहीं नहीं दिखाई देता अब नहीं जानते कहांगया व कहांहै व क्या करता है ४६ इसप्रकार विचारकर उसने जानलिया कि ब्रह्माके पुत्र पुलस्त्यहैं व एकान्तमें वन में हैं इससे वह गीतविद्याधर शूकरकारूप धारण करके वहांगया जहां वहांसे जाकर पुलस्त्यजी तप करते थे ४७ वहां पहुँचकर तेजकी ज्वाला से युक्त मुनि को आसनपर बैठेहुये तपकरते देख उन महात्मा ब्राह्मणदेवकी चारों ओर घूमने लगा व जाकर ब्राह्मणोत्तम पुलस्त्यजी के अपने तुण्ड से पेटमें खोददिया पशु जानकर उन महात्मा मुनिने अपराध क्षमा किया४८।४९ फिर मूत्र और पैशाच किया नाच और क्रीड़ा किया फिर गिरपड़े और उठकर फिर चले ५० तब मुनिने पशुजानकर छोड़ दिया जब वह उसी रूपसे फिर आया ५१ व बड़ा अट्टहास मुनि के पास इसने किया व बड़े जोरसे रोदनकिया फिर सुन्दर स्वरसे गीतगाया ५२ उससे मुनिने जाना कि बस यह वही गीतविद्याधर नाम गन्धर्वहै उसका चेष्टित देखकर जाना कि यह शूकर नहीं है ५३ उसके वृत्तांतको जानकर मुनिने कहा देखो पशु जानकर हमने इसे छोड़दिया परन्तु यह दुष्ट अपनी दुष्टताही करताजाता है ५४ यह विचार महात्मा गन्धर्वाधमको महामति मुनिश्रेष्ठने क्रोधकर शापदिया ५५ कि जिससे तुमने शूकरका रूप धारणकर हमको इस रीतिसे तप से चलायमान किया इससे हे महापाप ! तू ० । इसी शूकरी योनि में जन्मले ५६ जब उन मुनिने शापदिया

वह गीत विद्याधर गन्धर्व इन्द्रके समीप गया व हे वरानने! कांपताहुआ उनमहात्मा इन्द्रजीसेबोले कि ५७ हे सहस्राक्ष! हमारावचन सुनो हमने आपका कार्यकियाहै दारुण तप करतेहुये मुनियों में श्रेष्ठ पुलस्त्यजी को उस तपसे हमने चलायमान करदिया इससे उन्होंने शाप देकर हमारा देवरूप नष्ट करदिया ५८।५९ ऐसी दुष्ट पशुयोनि में गयेहुये मेरी रक्षाकरो उस गीत विद्याधरका सब वृत्तांत जानकर ६० उसकेसंग इन्द्रजाकर उनमुनि पुलस्त्यजीसे बोले कि हे द्विजोत्तम! इसके ऊपर अनुग्रह करो तुम सिद्धिके जाननेवालेहो ६१ जो इसने आपका पाप किया है क्षमा कीजिये व शाप छुड़ाइये इसप्रकार इन्द्र ने जब प्रार्थना किया तो प्रसन्नबुद्धि ६२ पुलस्त्यजी बोले कि हे देवेश! तुम्हारे कहने से हमने क्षमाकी महाबली मनुके पुत्र महाराज अयोध्याधिपति इक्ष्वाकुजी होंगे वे बड़े धर्म्मात्मा व सब धर्म्मोंके पालक होंगे उनके हाथ से जब इसकी मृत्यु होगी ६३।६४ तब यह फिर अपने गन्धर्व शरीरको पावेगा इसमें कुछभी संशयनहीं है ॥

चौ० यहवृत्तांतसकलहमगावा। महाराज्ञि सो तुम्हेंसुनावा॥
अब अपनी पूरबजनि केरी। कहत कथा कुछ करब न देरी॥
सो निजपतिसँगसुनहुसुनयनी। जिमिहमपापकीनपिकवयनी॥
पूर्व्वजन्म महँ किय अति घोरा। यासों शूकरिभइउँकठोरा ६५।६६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

## सैंतालीसवां अध्याय ॥

दो० सैंतालिसयेंमहँ कह्यो कोलीराज्ञी पाहिं॥
पूर्व्वजन्मकीनिजकथा दुर्गुणजासमनाहिं १

सुकला अपनी सखियोंसे बोली कि सर्व्वांगसुन्दरी सुदेवा उस शूकरीसेबोली कि हे शूकरि! तुम किसपापसे पशुयोनि में उत्पन्न हुई हो और संस्कृत कहतीहो १ इसप्रकार का ज्ञान कैसे हुआ हेशुभे! अपना और अपने स्वामी का चरित्र कैसे जानती हो सब हमसे कहो २ तब शूकरीबोली कि हे श्रेष्ठवर्णवाली! पशुके भावसे मोहसे

हम चुरालीगई हैं खड्गके व बाणोंके प्रहारों से समर में हम गिरा-ईगई ३ हे वरानने ! इससे ज्ञानहीनहोकर मूर्च्छित होगई थीं हे सुन्दरि ! फिर तुमने अपने पुण्यहाथ से हमारा अभिषेक अतिपुण्य शीतलजल से किया सो तुम्हारेहाथसे स्नानहोनेपर हमारा मोहन-ष्टहोकर हमको छोड़कर कहीं चलागया ४।५ जैसे कि सूर्य्य के तेज से अन्धकार जातारहता है वैसेही तुम्हारे स्नानकरानेसे हमारे पाप सब चलेगये हे शुभे! ६ हे सुन्दर अङ्गोंवाली! तुम्हारे प्रसादसे हमको फिर पुरानाज्ञान होआया हे शुभे! अब हमने जाना कि पुण्यगतिको हम जायँगी ७ अब सुनो हम अपनेपूर्व्वजन्मका वृत्तांत कहतीहैं हे भद्रे! हम पापिनीने जो बहुत पाप किये हैं ८ कलिंग देशमें एक श्रीपुर नाम नगर है वह सब समृद्धियोंसे समाकीर्ण व चारोंवर्णोंके लोगों से सेवितहै ९ उसमें एक वसुदत्त नाम ब्राह्मण रहता था वह ब्रह्मचार में नित्यपर रहता व सत्य धर्म्म में परायण १० वेदवेत्ता ज्ञानवेत्ता पवित्र गुणवान् व धनी था व नानाप्रकारके धनों धान्यों से तथा पुत्र पौत्रों से अलंकृत था ११ हे भद्रे! हम उसी ब्राह्मण की कन्याथीं हमारे कई सहोदर भाई व अन्य बांधव बहुत थे व हे वरानने! अलङ्कार व शृङ्गारोंसे भूषित रहतीथीं १२ हे महामते ! हमारे पिता ने हमारा सुदेवानाम धराया था उन महामति अपने पिताको हम बहुतही प्रियथीं १३ व रूपमें तो ऐसी सुन्दरी थीं कि हमारे समान संसारमें कोई स्त्री न थी इसलिये रूप व यौवन से मतवाली होकर हम बहुधा हँसाकरें १४ व सब उत्तम भूषण धारण किये रहें इससे अत्यन्त शोभित रहतीं हमको देखकर सब हमारे स्वजन बान्धव लोगों ने १५ हम से प्रार्थनाकी हे वरानने ! अब तुम अपना विवाह किसी के सङ्ग करलो इस बातको सुनकर बहुत ब्राह्मणों ने आकर हमको मांगा परन्तु हमारे पिताने न दिया १६ हे महाभागे! वे हमारे पिताजी मारे स्नेह के मोहित थे इसलिये महात्मा हमारे पिताने किसी को हमको न दिया १७ हे बाले ! इतने में हमको बनाय युवावस्था होआई व हमारा वैसारूप देखकर हमारी माता बहुत दुःखित रहा करे १८ व हमारे पिता से कहे कि कन्या क्यों

वह गीत विद्याधर गन्धर्व्व इन्द्रके समीप गया व हे वरानने ! कांपताहुआ उनमहात्मा इन्द्रजीसेबोले कि ५७ हे सहस्राक्ष ! हमारावचन सुनो हमने आपका कार्य्यकियाहै दारुण तप करतेहुये मुनियों में श्रेष्ठ पुलस्त्यजी को उस तपसे हमने चलायमान करदिया इससे उन्होंने शाप देकर हमारा देवरूप नष्ट करदिया ५८।५९ ऐसी दुष्ट पशुयोनि में गयेहुये मेरी रक्षाकरो उस गीत विद्याधरका सब वृत्तांत जानकर ६० उसकेसंग इन्द्रजाकर उनमुनि पुलस्त्यजीसे बोले कि हे द्विजोत्तम! इसके ऊपर अनुग्रह करो तुम सिद्धिके जाननेवालेहो ६१ जो इसने आपका पाप किया है क्षमा कीजिये व शाप छुड़ाइये इसप्रकार इन्द्र ने जब प्रार्थना किया तो प्रसन्नबुद्धि ६२ पुलस्त्यजी बोले कि हे देवेश ! तुम्हारे कहने से हमने क्षमाकी महाबली मनुके पुत्र महाराज अयोध्याधिपति इक्ष्वाकुजी होंगे वे बड़े धर्म्मात्मा व सब धर्म्मोंके पालक होंगे उनके हाथ से जब इसकी मृत्यु होगी ६३।६४ तब यह फिर अपने गन्धर्व्व शरीरको पावेगा इसमें कुछभी संशयनहीं है ॥

चौ० यह वृत्तांतसकलहमगावा । महाराज्ञि सो तुम्हेंसुनावा ॥
अब अपनी पूरबजनि केरी । कहत कथा कुछ करब न देरी ॥
सो निजपतिसँगसुनहुसुनयनी । जिमिहमपापकीनपिकबयनी ॥
पूर्व्वजन्म महँ किय अति घोरा । यासों शूकरिभइउँकठोरा ६५ । ६६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

## सैंतालीसवां अध्याय ॥

दो० सैंतालिसयेंमहँ कह्यो कोलीराज्ञी पाहिं ॥
पूर्व्वजन्मकीनिजकथा दुर्गुणजासमनाहिं १

सुकला अपनी सखियोंसे बोली कि सर्व्वांगसुन्दरी सुदेवा उस शूकरीसेबोली कि हे शूकरि! तुम किसपापसे पशुयोनि में उत्पन्न हुई हो और संस्कृत कहतीहो १ इसप्रकार का ज्ञान कैसे हुआ हेशुभे ! अपना और अपने स्वामी का चरित्र कैसे जानती हो सब हमसे कहो २ तब शूकरीबोली कि हे श्रेष्ठवर्णवाली ! पशुके भावसे मोहसे

हम सुरालीगई हैं खड्गके व बाणोंके प्रहारों से समर में हम गिराईगई ३ हे वरानने ! इससे ज्ञानहीनहोकर मूर्च्छित होगई थीं हे सुन्दरि ! फिर तुमने अपने पुण्यहाथ से हमारा अभिषेक अतिपुण्य शीतलजल से किया सो तुम्हारेहाथसे स्नानहोनेपर हमारा मोहनष्टहोकर हमको छोड़कर कहीं चलागया ४।५ जैसे कि सूर्य्य के तेज से अन्धकार जातारहता है वैसेही तुम्हारे स्नानकरानेसे हमारे पाप सब चलेगये हेशुभे! ६ हे सुन्दर अङ्गोंवाली! तुम्हारे प्रसादसे हमको फिर पुरानाज्ञान होआया हे शुभे! अब हमने जाना कि पुण्यगतिको हम जायँगी ७ अब सुनो हम अपनेपूर्व्वजन्मका वृत्तांत कहतीहैं हे भद्रे! हम पापिनीने जो बहुत पाप किये हैं ८ कलिंग देशमें एक श्रीपुर नाम नगर है वह सब समृद्धियोंसे समाकीर्ण व चारोंवर्णोंके लोगों से सेवितहै ९ उसमें एक वसुदत्त नाम ब्राह्मण रहता था वह ब्रह्मचार में नित्यपर रहता व सत्य धर्म्म में परायण १० वेदवेत्ता ज्ञानवेत्ता पवित्र गुणवान् व धनी था व नानाप्रकारके धनों धान्यों से तथा पुत्र पौत्रों से अलंकृत था ११ हे भद्रे! हम उसी ब्राह्मण की कन्याथीं हमारे कई सहोदर भाई व अन्य बांधव बहुत थे व हे वरानने! अलङ्कार व शृङ्गारोंसे भूषित रहतीथीं १२ हे महामते ! हमारे पिता ने हमारा सुदेवानाम धराया था उन महामति अपने पिताको हम बहुतही प्रियथीं १३ व रूपमें तो ऐसी सुन्दरी थीं कि हमारे समान संसारमें कोई स्त्री न थी इसलिये रूप व यौवन से मतवाली होकर हम बहुधा हँसाकरें १४ व सब उत्तम भूषण धारण किये रहें इससे अत्यन्त शोभित रहतीं हमको देखकर सब हमारे स्वजन बान्धव लोगों ने १५ हम से प्रार्थनाकी हे वरानने ! अब तुम अपना विवाह किसी के सङ्ग करलो इस बातको सुनकर बहुत ब्राह्मणों ने आकर हमको मांगा परन्तु हमारे पिताने न दिया १६ हे महाभागे! वे हमारे पिताजी मारे स्नेह के मोहित थे इसलिये महात्मा हमारे पिताने किसी को हमको न दिया १७ हे बाले ! इतने में हमको बनाय युवावस्था होआई व हमारा वैसारूप देखकर हमारी माता बहुत दुःखित रहा करे १८ व हमारे पिता से कहे कि कन्या क्यों

नहीं किसी को देते किसी उत्तमब्राह्मण महात्माको क्यों नहीं देदेते १९ हे महाभाग ! यह युवावस्था को प्राप्तहै इस कन्या को किसी को दीजिये तब एक दिन द्विजों में उत्तम हमारे पिता वसुदत्तजी हमारी मातासे बोले कि हे महाभागे ! हमारा वचन सुनो हे श्रेष्ठरङ्ग वाली ! हम कन्या के महामोह से मूढ़ होगये हैं २०। २१ इससे हे शुभे ! जो कोई ब्राह्मण आकर हमारेही गृहमें रहेगा उस जामाता को कन्यादेंगे इसमें कुछ संशय नहीं है २२ यह सुदेवा हमारे प्राण से प्यारी है इसमें सन्देह नहीं है इस प्रकार हमारे लिये वसुदत्त हमारे पिता कहते भये २३ कि इतने में एक दिन कौशिक के कुल में उत्पन्न सब विद्याओं में विशारद ब्राह्मणोंके गुणों से युक्त शीलवान् गुणवान् पवित्र २४ वेदपाठसे सम्पन्न इस से सुन्दर स्वरसे वेदको पढ़ते हुये भिक्षामांगने के लिये एक ब्राह्मणदेव आये उनके पिता माता कोई नहीं था २५ उन रूपवान् को देखकर महामति हमारे पिताने पूँछा कि तुम कौनहो २६ तुम्हारा नाम क्या है किस गोत्र व कुलमें उत्पन्नहो व तुम्हारा आचार कैसा है हमारे पिताका ऐसा वाक्य सुनकर वे ब्राह्मणदेव वसुदत्तजी से बोले २७ हम कौशिक के वंश में उत्पन्न हुये हैं व वेद वेदांग के पारगामी शिवशर्म्मा हमारा नामहै व पिता माता से विवर्जितहैं २८ हम चार और भी भाई हैं सब वेद वेदांग के पारगन्ता हैं इसप्रकार अपने कुलका सम्भव शिवशर्म्मा ने हमारे पिता से कहा तब जब शुभ लग्न आया व उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र आया २९। ३० हमारे पिता ने उन ब्राह्मणको हमारा पाणिग्रहण वेद विधान से करादिया व उन महात्मा अपने पति के सङ्ग हम अपने पिताही के गृहमें रहने लगे ३१ परन्तु मुझ पापिनी ने ऐसे महात्मा अपने पतिकी सेवा कभी न की क्योंकि पिता माता के धन के अहङ्कार से मोहित होगईथी ३२ उन महात्मा के अङ्ग तो कभी मैंने न मींजे व न रतिही उन के सङ्ग प्रेमसे करतीथी और कौन कहे कभी स्नेह सहित वचनभी न उनसे बोली ३३ बस उनको जब मैं देखूँ तो क्रूरही बुद्धिसे देखूँ ऐसी महापापिनीथी यहांतक कि पुंश्चली स्त्रियों के सङ्ग बैठने उठने वार्त्ताला

करनेसे मैं भी पुंश्चली होगई ३४ व माता पिता तथा स्वामी और अपने भाइयों का सिखाना कहना नहीं मानतीथी जहां मेरा मनहो वहीं चलीजाऊँ ३५ इसप्रकार मेरे पाप देखकर शिवशर्म्माजी मेरे महाबुद्धिमान् स्वामी श्वशुर वर्ग के स्नेह से कुछभी मुझको न कहैं क्षमाकरते रहें पर कुटुम्ब के लोग सब मुझपापिनी को रोकें ३६।३७ व महात्मा शिवशर्म्माका शील स्वभाव जानकर व मेरा दुराचार जानकर पिता माता अति दुःखित रहते ३८ तब हमारे पाप देख हमारे भर्त्ता एक दिन गृहसे कहीं चलेगये वह ग्राम देश सब उन्होंने छोड़दिया ३९ जब मेरे भर्त्ता चले गये तो मेरे पिताने बड़ीचिन्ताकी मेरे दुःखों से ऐसे दुःखित हुये जैसे कोई रोगसे पीड़ितहोताहै ४० तब ऐसे दुःखित अपने पतिसे मेरी माता बोली कि हे कान्त! तुम क्यों बहुत चिन्ता करतेहो हमारे आगे अपना दुःखकहो ४१ तब वसुदत्त मेरे पिता मेरी मातासेबोले कि हे प्रिये! सुनो वह ब्राह्मण हमारा जामाता कन्या को छोड़कर कहीं चलागया ४२ व यह पापसमाचारों से युक्त होगई व महापापचारिणी व निर्द्दय होगई महामति शिवशर्म्मा पतिको इसदुष्टाने छोड़दिया ४३ जोकि सब कुटुम्ब भरमें परम चतुर विज्ञानी ब्राह्मणथा वह ब्राह्मण अपनी सुशीलतासे व हमारे स्नेहसे भी इस दुष्ट सुदेवाको कभी कुछ नहीं कहता था ४४ अपने सौम्य भावसे रहता न कभी इसकी निन्दा करता न कठोर वचनही कहता सुदेवा तो महापापिनी दुराचारिणी व वह ब्राह्मण बुद्धिमान् पण्डित ४५ अब कुलनाशनी यह दुष्टा सुदेवा कौन कर्म्म करेगी अब हम भी इसको छोड़कर कहीं चलेजायँगे ४६ तब मेरी माता ब्राह्मणी बोली कि हे कान्त! तुमने आज कन्याके दूषण गुणजाने यह तुम्हारेही स्नेह व मोहसे नष्ट हुईहै ४७ क्योंकि चाहे कन्याहो वा पुत्रहो तबतक उसका लाड़ प्यार करना चाहिये जबतक पांच वर्ष का न हो फिर उसे शिक्षाकी बुद्धिसे सदैव फिर मोहसे पालन करें ४८ हां स्नान भोजन वस्त्रादि कराने देनेमें पाप न करना चाहिये जो हो प्रीतिपूर्व्वक देना चाहिये और सुन्दर गुण सुन्दर विद्या सीखने के लिये उसे आज्ञादेकर युक्त करना चाहिये ४९ पिताको

यदि वहां रहकर कुछ पाप करती है तो वह उसका पति भोगता है ६१ व वहां रहने से सदा पुत्रों पौत्रों से बढ़ती रहती है जब पिता कन्याके सुगुण सुनता है तो उसकी कीर्त्ति होती है ६२ हे कान्त ! पति सहित कन्या को तो कभी न अपने गृहमें रखना चाहिये हे कान्त ! इस अर्थ में एक पुराना इतिहास सुनाई देता है ६३ अट्ठाईसवीं चौयुगी के द्वापरयुग में एक उग्रसेन नाम वीर यदुवंशियों में श्रेष्ठ हुये ६४ उनका चरित तुमसे कहती हैं हे द्विज ! एकाग्र मन करके सुनो ६५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

## अड़तालीसवां अध्याय ॥

दो० अड़तलिसें महँ है कही पद्मावती सुगाथ ॥
सत्यकेतुकी जो सुता उग्रसेन ज्यहि नाथ १

वह ब्राह्मणी सुदेवा की माता अपने पति वसुदत्तजी से बोली कि माथुर देश में जो मथुरा नाम नगरीहै उसमें उग्रसेन नाम एक यदुवंशी शत्रुओंके नाशकर्त्ता हुये १ वे सर्व धर्म्म व अर्थ के तत्त्व को जानते व वेदज्ञ बहुश्रुत व बली दाता भोक्ता गुणग्राही व सद्गुणों से युक्त राजा हुये २ वे मेधावी राज्यकरते व प्रजाओं को धर्म्म से पालते इसप्रकारके महाप्रतापी महातेजस्वी उग्रसेनजी ने ३ विदर्भदेश के राजा बड़े पुण्यात्मा सत्यकेतु नाम बड़े प्रतापीकी कन्या महाभाग्यवती कमलमुखी व पद्मनयनी ४ पद्मावती नाम जो कि सत्यधर्म्म में परायणथी उसके स्त्रियोंके सब उत्तमगुण थे जिस के समान उन दिनों में दूसरी कोई स्त्री न थी लक्ष्मी के समानथी ५ यह वैदर्भी सत्य कारण अपने गुणों से शोभित भई सो माथुरदेश के निवासी राजाउग्रसेन ने उस सुलोचना के सङ्ग अपना विवाह किया ६ व उसके सङ्ग सुखसे वे प्रतापी भोग विलास करने लगे उस के शुभगुणों से राजा बहुत प्रसन्न हुये व सदा सुखी होनेलगे ७ उसके स्नेह व प्रीतिसे वे मथुरा के अधिपउग्रसेनजी बड़े आनन्दि-

चाहिये कि गुण सिखाने के लिये सदा पुत्र वा कन्या के ऊपर निर्मोह रहे हे कान्त ! पालन पोषण करने में प्रेम जान पड़ता है ५० व गुण के विषय में कभी पुत्रकी न प्रशंसा करनी चाहिये बरन प्रतिदिन ताड़ना करनी चाहिये व सदा कठिनता कह २ कर उसे घुड़कना धमकना चाहिये ५१ कि विद्या बड़े परिश्रम से आती है इससे रात्रिदिन श्रमकर ऐसे वचन स्नेहहीन होकर कहने चाहिये व यह कहना चाहिये कि अभिमान पाप दुराचारको दूरसे छोड़ जब इनको छोड़ेगा ५२ तब तू विद्या में और गुणोंमें निपुण होगा नहीं तो नहीं पिताको तो पुत्रको ऐसी ताड़ना के साथ सिखाना चाहिये व माताको चाहिये कि ऐसेही पांचवर्ष के ऊपर कन्याको ताड़ना देकर स्त्रियों के धर्म्म सिखावे व सासु अपनी बहूको सिखाती रहे व ताड़ना करती रहै ५३ व गुरु शिष्यको ऐसेही ताड़नाकरे तो कार्य्य सिद्धहो अन्यथा नहीं व पतिको चाहिये कि अपनी भार्य्याको ताड़ित कियाकरे व राजाको चाहिये कि अपने मन्त्रीको ताड़ित किया करे ५४ व वीरको चाहिये कि घोड़े को प्रतिदिन चलाया करे ऐसेही हाथी को हथिवान घुड़कता धमकता रहे बस इस रीति से शिक्षा करने ताड़नकरने व पालन करने से बुद्धि बढ़ती है ५५ हे नाथ ! इसको तुम्हीं ने दैव नष्ट किया इसमें कुछ भी संशय नहीं है व तुम्हारेही संग उस शिवशर्म्मा ब्राह्मण ने भी इसे नष्ट किया ५६ क्योंकि उसने भी इसे निरंकुश करदिया बस इसी कारण से यह नष्ट भ्रष्ट होगई हे कान्त ! हमारा वचन सुनो कन्या को तबतक अपने गृहमें रखना चाहिये ५७ कि जबतक आठवर्ष की न हो बस इसके ऊपर पिताके घरमें रहने से कन्या प्रबल होजाती है इससे फिर उसे न रहने देना चाहिये क्योंकि पिताके गृह में रहकर पुत्री जो पाप करती है ५८ वह पाप माता पिता को होता है इससे समर्थ पुत्रीको अपने घरमें न रहने देना चाहिये ५९ बस जिसको देनाहो उसे देकर उसके घरको भेजदेना चाहिये जिस से कि वह वहां रहकर अपने गुणों से अपने पतिको भक्तिपूर्व्वक प्रसन्न करे ६० ऐसा होने से कुलकी कीर्त्ति होती है व पिता सुखसे जीता

यदि वहां रहकर कुछ पाप करती है तो वह उसका पति भोगता है ६१ व वहां रहने से सदा पुत्रों पौत्रों से बढ़ती रहती है जब पिता कन्याके सुगुण सुनता है तो उसकी कीर्त्ति होती है ६२ हे कान्त ! पति सहित कन्या को तो कभी न अपने गृहमें रखना चाहिये हे कान्त ! इस अर्थ में एक पुराना इतिहास सुनाई देता है ६३ अट्ठाईसई चौयुगी के द्वापरयुग में एक उग्रसेन नाम वीर यदुवंशियों में श्रेष्ठ हुये ६४ उनका चरित तुमसे कहती हैं हे द्विज ! एकाग्र मन करके सुनो ६५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

## अड़तालीसवां अध्याय ॥

दो० अड़तालिसें महँ है कही पद्मावती सुगाथ ॥
सत्यकेतुकी जो सुता उग्रसेन ज्यहि नाथ १

वह ब्राह्मणी सुदेवा की माता अपने पति वसुदत्तजी से बोली कि माथुर देश में जो मथुरा नाम नगरीहै उसमें उग्रसेन नाम एक यदुवंशी शत्रुओंके नाशकर्त्ता हुये १ वे सर्व्व धर्म्म व अर्त्थ के तत्त्व को जानते व वेदज्ञ बहुश्रुत व बली दाता भोक्ता गुणग्राही व सद्गुणों से युक्त राजा हुये २ वे मेधावी राज्यकरते व प्रजाओं को धर्म्म से पालते इसप्रकारके महाप्रतापी महातेजस्वी उग्रसेनजी ने ३ विदर्भदेश के राजा बड़े पुण्यात्मा सत्यकेतु नाम बड़े प्रतापीकी कन्या महाभाग्यवती कमलमुखी व पद्मनयनी ४ पद्मावती नाम जो कि सत्यधर्म्म में परायणथी उसके स्त्रियोंके सब उत्तमगुण थे जिस के समान उन दिनों में दूसरी कोई स्त्री न थी लक्ष्मी के समानथी ५ यह वैदर्भी सत्य कारण अपने गुणों से शोभित भई सो माथुरदेश के निवासी राजाउग्रसेन ने उस सुलोचना के सङ्ग अपना विवाह किया ६ व उसके सङ्ग सुखसे वे प्रतापी भोग विलास करने लगे उस के शुभगुणों से राजा बहुत प्रसन्न हुये व सदा सुखी होनेलगे ७ उसके स्नेह व प्रीतिसे वे मथुरा के अधिपउग्रसेनजी बड़े आनन्दि-

त होकर रहने लगे वह महाभाग्यवती पद्मावती उनके प्राणके समान प्रिय हुई ८ राजा उसके विना न तो भोजन करें न कुछ क्रीड़ा करें व विना उसके उनको सुख क्षणमात्र भी न मिले ९ इस प्रकार उन दोनों की परस्पर प्रीतिथी व दोनों आपसमें अतिस्नेह करते थे १० महाभाग राजा सत्यकेतु ने अपनी कन्या पद्मावती का स्मरण किया व उसकी माताने भी बहुत दुःखितहो अपनी कन्या का स्मरण किया ११ तब विदर्भ देश के राजा सत्यकेतु ने मथुरापुरी को दूत भेजे वे मनुष्यों में वीर उग्रसेनजी से आदर समेत जाकर बोले कि हे महाराज उग्रसेनजी! हमलोग विदर्भ देशसे आये हैं विदर्भ देश के राजाने बड़ी भक्ति व स्नेह से आपको बहुत २ पूँछा है १२। १३ व अपना कुशल कहा है व आपका पूँछा है हे महाराज! राजा सत्यकेतु ने बड़े स्नेह से यह कहा है कि यदि आपकी कुछ अप्रसन्नता न हो तो पद्मावती को देखने के लिये भेजदो सो हे नाथ! जो तुम प्रीति स्नेह व हित मानतेहो १४ । १५ तो हे महाराज! इस अपनी महाभाग्यवती प्रीतिरूपिणी को थोड़े दिनों के लिये भेजदो क्योंकि महाराज सत्यकेतु व उनकी रानी कन्या के देखने को बहुत चाहती हैं १६ यह वाक्य सुन राजाओं में उत्तम उग्रसेनजी ने महात्मा सत्यकेतु राजाकी प्रीति स्नेह के कारण अपनी स्त्री को उन दूतों के सङ्ग बिदा करदिया यद्यपि प्रतापी उग्रसेनजीको अपनी भार्या पद्मावती प्रियथी १७ । १८ पर क्या करें श्वशुर व श्वश्रू के स्नेह से बिदाही करते बना व महाराजके भेजने से पद्मावती अपने पूर्वके घरको बड़े हर्ष से गई १९ जाते २ प्रथम तो अपने पिता माता को फिर सब कुटुम्बके लोगों को देखा व शिर झुकाकर उस सत्यवतीने पिता के चरणों के नमस्कार किया २० व उसमहाभाग्यवती पद्मावती के आनेपर विदर्भ देशके राजा बड़े हर्षित हुये २१ व बहुत भूषण व उत्तम वस्त्रों केदेनेसे अपनी कन्या को बहुत बढ़ाया व लालन पालन किया व पद्मावती सुखसे अपने पिता के घरमें रहने लगी २२ व अपनी सखियों के साथ निश्शङ्क रहनेलगी व उनके सङ्ग जहां चाहे मनमानी घूमाकरे २३ जहां चाहे गृहमें वनमें

व तड़ागों के किनारे महलोंमें अपनी सखियों के सङ्ग घूमाकरे यहां तककिमानोंफिर पांचवर्षकी बालिका होगई निर्लज्ज वैसेही घूमने लगी २४ हे विप्र ! सदा निश्शाङ्क अपनी सखियों के सङ्ग हँसती खेलतीरहै यद्यपि वह पतिव्रता व महाभाग्यवती थी पर मारे हर्ष के जहां चाहे चलीजाय २५ पिता के घरके सुख श्वशुरके घरमें तो दुर्ल्लभ होतेही हैं इस विचारसे खुले बन्धन यथेष्ट सर्व्वत्र आया जाया करे २६ इस मोहभाव से क्रीड़ा में इतनी लोभिनी हुई कि सखियों के सङ्ग सदा वनों में व वाटिकाओं में ही बहुधा विहार कियाकरे २७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

# उनचासवां अध्याय ॥

दो० उग्रसेन दयिता तथा सत्यकेतु दुहिताउ ॥
गोभिलसँग भोगी उनचसयेंमहँ यह गाउ १

ब्राह्मणी बोली कि हे महाभाग ! एक समय वह एक पर्व्वत के ऊपर गई देखा तो कदली के खण्डों से मण्डित वहां का वन अति रमणीयथा १ जोकि शाल ताल तमाल के वृक्षोंसे व नालिकेरों से शोभित था पूगीफल मातुलिंग व सुन्दर जँभीरी निम्बूके तरुओं से विराजमानथा २ चम्पा कठचम्पा पाड़र डांड़ अर्क मन्दार कँदैल अशोक मौनश्रीआदि नानाप्रकार के वृक्षों से अलंकृत था ३ वह पुण्यवान् पर्व्वत सब ओरसे पुष्पित वृक्षोंसे शोभित था व सब कहीं नानाप्रकारके धातुओं से समाकुल था ४ वहांपर गोल एक बड़ा सुन्दर तड़ाग पुण्य निर्म्मल जलसे परिपूर्ण पुष्पित नानाप्रकारके कमलोंसे व सुवर्णके रंगके कमलों से शोभितथा ५ व श्वेतनीरज रक्त कमल नीलपंकज कुमुदआदि पुष्पोंसे मनोहरथा हंस जलकुक्कुट ६ कारण्डवआदि पक्षियों के शब्दों से कूजित था नानाप्रकार के अन्य जलजन्तुओं से समाकुल था व अनेक प्रकार की धातुओं से युक्त भी था ऐसा सब ओरसे सुन्दर तड़ाग था तीरपर पुष्पित नानाप्र-

कारके वृक्षोंपर नानाजाति के पक्षी बोलते थे ७ कोकिलों के सुन्दर स्वरसे उपशोभित व मोरोंके शब्दों से मधुर होरहाथा ८ भ्रमरों के नादसे सब ओरसे शोभित था इस प्रकारका रम्य पर्व्वत व उत्तम वन ९ तड़ाग उसने देखा व सखियों के संग क्रीड़ा करती हुई वैदर्भी पद्मावती १० सब ओर फूलोंसे युक्त पुण्यकारी वनको देखकर चपलता के प्रभाव से स्त्रीभावसे लीलापूर्व्वक ११ व तड़ाग में सखियोंके संग जलक्रीड़ा करती हुई बार बार हँसने व गानेलगी १२ सुखसे उस सरमें वह भामिनी क्रीड़ा करतीरही हे विप्र! वह बड़े सुखसे वहां स्थितरही १३ विष्णुभगवान् राजा वेनसे बोले कि उसी बीचमें गोभिलनाम दैत्य जोकि कुबेरजीका सेवक था दिव्य विमान पर चढ़ा व सब भोगविलास की वस्तु उसपर धरे १४ आकाशमार्ग होकर जाताथा उसने ऊपरही से निर्भय जलक्रीड़ा करती हुई विदर्भराजकी कन्या पद्मावती को देखा १५ जोकि सब स्त्रियों में श्रेष्ठ व उग्रसेन की प्राणप्रिया भार्य्या थी व रूपमें उसके समान लोकोंमें दूसरी योषित् न थी व सर्व्वांग सुन्दरी थी १६ यही जान पड़तीथी कि किंतो कामकी स्त्री रतिहै वा श्रीहरिकी स्त्री लक्ष्मी हैं अथवा पार्व्वती देवीहों वा इन्द्राणीहो १७ जैसी स्त्रियों में उत्तम व वर यह दिखाई देतीहै अन्य ऐसी भूमण्डल में नहीं दिखाईदेती १८ नक्षत्रों के मध्य में जैसे पूर्णमासी का चन्द्रमा शोभित होताहै वैसेही यह वरानना गुणरूप व कलाओं से शोभित होतीहै १९ जैसे पुष्करों में राजहंस शोभित होताहै वैसेही यह चारुहासिनी शोभित होतीहै अहोरूप अहोभाव इसका देखाई देताहै २० किसकी यह शोभनबाला है जिसके सुन्दर व गोल मोटे कुचहैं ऐसा अपने मन से कहता हुआ श्रेष्ठ मुखवाली पद्मावती को अच्छी तरह देखकर वह गोभिलदैत्य २१ क्षणमात्र चिन्तना करके कहनेलगा कि भाई यह किसकी है फिर बड़े ज्ञानसे उसने जाना कि यह विदर्भदेशके राजाकी कन्या है इसमें कुछ सन्देह नहींहै २२ व उग्रसेनकी प्राणप्रियाहै और पातिव्रत धर्म्म में परायणहै अपने बलसे यहां स्थितहै व पुरुषों को बड़े दुःखसे मिलने के योग्यहै २३ उग्रसेन महामूर्खहै

जिसने ऐसी श्रेष्ठ स्त्रीको पिताके गृहमें भेजाहै वह उग्रसेन अब भाग्यरहित होगया है २४ इसके विना कैसे जीसकाहै क्या सदैव कूट बुद्धि राजा नपुंसक तो नहींहै जो ऐसी स्त्रीको छोड़दिया है २५ तिस को देखकर गोभिलदैत्य तिसी क्षणसे कामात्मा होगया यह पतिव्रता स्त्री पुरुषों को दुःखसे प्राप्त होने योग्यहै २६ कैसे हम जाकर इसको भोग करेंगे क्योंकि काम तो अतीव हमको पीड़ित करता है जो अब विना इसके संग भोग कियेहुये हम जायँगे तो हमारा मरणही होजायगा २७ इसमें कुछ भी सन्देह नहींहै क्योंकि काम महाबली है इस प्रकार चिन्तासे युक्तहो यह मनसे सोचकर २८ उस दुष्टने मायासे राजा उग्रसेनजीका रूपधारण करलिया जैसे सांगोपांग उग्रसेन थे वैसाही तद्रूप बनगया २९ व उसीप्रकार की चाल वैसाही बोल बनाकर गोभिल वहां गया जैसे उग्रसेनके वस्त्र व जैसा वेष व अवस्था थी वैसाही बनालिया ३० दिव्यमाला वस्त्र धारण किये दिव्यमाल्य व अनुलेपन लगाये सब आभरणों की शोभासेयुक्त जैसे मथुराके राजा उग्रसेन थे ३१ वैसाही होगया व उग्रसेनमय होके उससमय वह दैत्य परममायासे युक्तहो रूप व तरुणताकी सम्पदासे बनाय वैसाही हो ३२ पर्व्वत के ऊपर अशोक वृक्षकी छायामें बैठा शिलातलपर बैठकर उस दुष्टात्माने वीणा का दण्ड अपने हाथमें लिया ३३ व विश्वमोहन गीत सुन्दर स्वरसे गाने लगा वह गीत तालमान व लययुक्त था व निषादादि सातों स्वरोंसे युक्तथा ३४ सो वह दुष्टात्मा पद्मावती के रूपसे मोहित होकर गीत गाने लगा पर्व्वत के आगे स्थित हो व महाप्रहर्षसे युक्तहुआ ३५ उसका गाना सुन सखियों के मध्यमें प्राप्त श्रेष्ठमुखवाली पद्मावती सखियों से बोली कि यह कौन है जो ताल लयसहित गीत गारहा है यह तो जानो बड़ा धर्मात्मा है जो ऐसे स्वर तालमानसे गाताहै यह गीत तो सत्कार करने के योग्य है क्योंकि सब भावसे युक्त है ३६।३७ इतना कह वह राजकुमारी उत्सुकहोकर अपनी सखियों के साथ वहांगई व देखा तो अशोकवृक्षकी छाया में निर्मल शिलाके ऊपर बैठाहुआ वह दानवों में अधम मुकुट धारण किये पुष्प

सुन्दर वस्त्र धारण किये व दिव्य गन्ध अनुलेपन किये ३८।३९ सब आभरणों की शोभासे युक्त उसे पतिव्रता पद्मावती ने बनाय समीप जाकर देखा तो अपने मनमें कहने लगी कि धर्म्मपरायण मथुरा-नाथ हमारेपति कब यहां आये हमारे महात्मानाथ राज्य छोड़कर इतनी दूर कैसे आये जबतक वह पतिव्रता विचारना चाहे तबतक उस पापी दुरात्माने ४० । ४१ आतुर होकर उसको बुलाया कि हे प्रिये ! यहां आओ तब वह बहुत चकड़ाई व शङ्कितहुई कि हमारा भर्त्ता यहां कैसे आया ४२ व लज्जित दुःखितहोकर उसने नीचे को मुख करलिया व मनमें कहनेलगी कि मैं पापिनी दुराचारिणी बड़ी निश्शंक ठहरी ४३ मुझको ऐसी धृष्ट देखकर ये महाभाग कोप करेंगे इसमें संदेह नहीं है जबतक वह ऐसा विचारने लगी तबतक उस पापीने ४४ आतुर होकर फिर बुलाया कि हे हमारी प्यारी ! यहां आओ हे देवि ! हे श्रेष्ठ मुखवाली ! हम विना तुम्हारे अपने प्राण नहीं धारण करसक्ते इससे यहां चले आये ४५ क्योंकि वहां तो जीही नहीं सक्ते थे फिर राज्य कौनकरे तुम्हारे स्नेह के हम लुब्धहैं तुमको छोड़कर हम कहीं नहीं ठहरसक्ते इसीसे यहां आये हैं ४६ ब्राह्मणी अपने पति वसुदत्तसे बोली कि जब उस दुष्टने ऐसा कहा तो लज्जायुक्तहो अपना पतिजान उसके पास वह पतिव्रता गई व उस का मुख देख दुष्ट दैत्यको वह सती छपटी व अच्छी प्रकार आलि-ङ्गनकिया ४७ तब वह दैत्य उसे एकान्त में लेजाकर अच्छे प्रकार उसके संग इच्छापूर्व्वक भोगकिया इस प्रकार गोभिलदैत्य व राजा सत्यकेतुकी कन्या बड़े आनन्दसे रमे ४८ सुकला अपनी सखियों से बोली कि राजा उग्रसेन के कोई अण्डके स्थान में चिह्नथा जब उसे उसने न देखा तो झट उसने अपना वस्त्र धारण करलिया व शंकित तथा अतिदुःखित हुई ४९ व क्रोधयुक्त होकर दानवाधम गोभिलसे बोली कि हे पाप समाचार अधम ! तू कौनहै क्या कोई दानवहै ५० ॥

चौ० यह कहि शापदेन परवाला । उद्यतभै करिकोप कराला ॥
वेपमान पीड़ित दुखभारा । दुष्ट दैत्यसों वचन उचारा ५१
दुष्टकौन मम पतिकर रूपा । छलसों आयहुवनिममभूपा ॥

पातिव्रत समधर्म्म विनाशा । जोउत्तम सबलोक प्रकाशा ५२
वृथाकीन तुम जन्म हमारा । इमिकहि पुनि २ रुदनप्रचारा ॥
शापदानमहँपुनिमनकीना।गोभिलदुखितरुभयहुमलीना५३।५४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेसुकला चरित्रेएकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

## पचासवां अध्याय ॥

दो० पचासयेंमहँ तो बहुत गोभिल भाष्यो धर्म्म ॥
पुंश्चलि भावारोपकिय कहि पद्मावति कर्म्म १

सुकला सखियों से बोली कि पद्मावतीका ऐसा वचन सुनकर गोभिल दैत्य उससे बोला कि आप मुझको क्यों शाप देना चाहती हैं इसका मुझसे कारण बतावें १ मैं किसदोषसे लिप्तहूँ जिसपर तुम शापदेनेपर उद्यतहुईहो हेशुभे ! मैं कुबेरका भट गोभिल नाम दैत्यहूँ २ अपने दैत्यके आचारसे बर्ताव करताहूँ उत्तम विद्याजानताहूँ वेदशास्त्रका अर्थ व कलाशास्त्रका अर्थ अच्छीतरह जानताहूं अब दैत्याचार मेरा सुनो पराया धन व पराई स्त्री बलसे सदा भोगता हूँ निर्बलता के साथ कभी नहीं भोगता ३ । ४ हम दैत्य हैं इसलिये हमको सदा दैत्योंकाही कार्य्यकरना चाहिये सो अपनी जातिके भावसे बर्तते हैं यह सत्यही तुमसे कहते हैं ५ हमलोग प्रतिदिन ब्राह्मणों के छिद्र देखा करते हैं व उनलोगों के तपकानाश विघ्नों से किया करते हैं इसमें कुछभी संशय नहीं है ६ व फिर छिद्रही पाकर ब्राह्मणों का नाशभी करडालते हैं इसमें भी सन्देह नहीं है हे भद्रे ! हे श्रेष्ठमुखवाली! ब्राह्मणलोग सदा देवयज्ञ कियाकरते हैं ७ व इस से हम यज्ञों व धर्मयज्ञका नाशकरते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है परन्तु सुब्राह्मणों को व प्रभु नारायणदेवको छोड़कर अन्य ब्राह्मण व अन्यदेवों का नाशकरते हैं ८ व जो स्त्री पतिव्रता होती अपने पतिकी सेवामें सदा तत्पर रहती है इन सबोंको तो हमलोग दूर से डरादेते हैं इसमें भी संशय नहीं है ९ क्योंकि ब्राह्मण व महात्मा हरिका तथा पतिव्रता स्त्रीका तेज दैत्य कभी नहीं सहसक्ते १० पति-

ब्रह्मा के व विष्णु के व सुन्दर ब्राह्मण के भयसे सब दानव व राक्षस श्रेष्ठ दूरही से नष्टहोजाते हैं ११ सो हम दानवधर्म्म से महीतलमें विचरते हैं फिर क्यों तुम हमको शापदेना चाहती हो हमारा दोष तो विचारो १२ यह सुन पद्मावती बोली कि हमारा धर्म्म व सुन्दर शरीर तुम्हींने नष्ट किया व हम पतिव्रता व साधुहैं और पति के लिये सदा तप करती हैं १३ हे पाप ! अपने मार्ग्ग पर स्थितथीं परन्तु तुमने मायासे हमको भ्रष्ट करदिया इससे हे दुष्ट ! तुमको हम भस्म करडालेंगी इसमें कुछ भी संशय नहीं है १४ यह सुन गोभिल दैत्य बोला कि हे राजपुत्रि !जो आप मानें तो हम धर्म्मकी बात कहें वह धर्म्म अग्निमें नित्य हवन करनेवाले ब्राह्मण काहै १५ जो दोनों कालों में अग्नि में आहुति देताहै उससमय चाहे कोईभी कार्यलगे पर देवमंदिर को नहीं छोड़ता वह अग्निहोत्री होता है जो प्रतिदिन इसप्रकार से हवन करता रहता है १६ हे वरानने ! अब और भृत्योंका धर्म कहते हैं मन कर्म व वचन से भृत्यको सदा शुद्ध रहना चाहिये १७ व नित्य अपने स्वामीकी आज्ञाकरे पीछे व आगे बैठे वही भृत्य कहाताहै हे देवि ! जो ऐसा करताहै वही भृत्य पुण्य भोगता है इसमें संशय नहीं है यह भृत्यका लक्षण तुमसे कहा अब पुत्रका लक्षण कहते हैं १८ जो पुत्र शुभज्ञाता गुणवान् होकर अपने पिता का पालन करताहै व माताका पालन पितासेभी विशेष करताहै सो भी मनसा वाचा कर्म्मणा १९ उसको दिन२ गंगास्नान का पुण्य मिलता है व जो इसके विपरीत करताहै माता पिताका पालन नहीं करता वह महापापी होताहै इसमें कुछभी सन्देह नहीं है २० अब उत्तम पातिव्रत धर्म्मका लक्षण कहते हैं हे सुन्दरि ! सुनो वचन से मनसे व कर्म्म से २१ प्रतिदिन पतिकी सेवा करे व भर्त्ता के प्रसन्न होने में आप प्रसन्न रहे कोप न करे २२ उसके दोष न ग्रहणकरे ताड़ित होनेपर भी सन्तुष्टही बनी रहै व पतिके सब कामों के करनेमें सदैव आगे स्थित रहे २३ उसी स्त्रीको पातिव्रत में परायण कहते हैं ऐसेही पुत्रों को चाहिये कि चाहे पिता पतितभी होगया हो व बहुतसे दोषों से युक्त भी हो २४ कोढ़ी वा क्रोधीहोपर

उसको कभी न त्यागे इसप्रकार जो पुत्र पिता माताकी सेवाकरते हैं २५ वे सर्वोपरि श्रीविष्णु भगवान् के परमपदको जाते हैं व इसीप्रकार भृत्यलोग जो अपने स्वामीकी सेवाकरते हैं २६ वे भी स्वामी के प्रसाद से पतिके लोकको जाते हैं व जो ब्राह्मण कभी अग्निहोत्र करना नहीं छोड़ता वह ब्रह्मलोकको जाताहै २७ व जो अग्नित्यागी विप्रहै वह शूद्रीका पति कहाताहै व स्वामी को जो भृत्य त्यागताहै वह स्वामिद्रोही होताहै इसमें कुछ संशयनहींहै २८ इससे अग्नि पिता व स्वामी इनको कभी न छोड़े हे शुभे ! ब्राह्मण अग्निको पुत्र पिताको भृत्य स्वामीको न छोड़े यह हम सत्य२ कहते हैं २९ व जो कोई इनको छोड़ते हैं वे नरकको जाते हैं ऐसेही जातिभ्रष्ट रोगी विकल कुष्ठ रोगयुक्त ३० सब कर्म्मोंसेहीन व द्रव्यहीन व पतिकात्याग स्त्री कभी न करे जो अपना कल्याण चाहती हो ३१ व जो स्त्री अपने पति के विपरीत कार्य्य करनेकी इच्छा करती है वह पुंश्चली नारी के समान होती व सब धर्म्म कर्म्मसे बाहर समझी जाती है ३२ व जो स्त्री पति के विदेशादि जानेपर भोग व शृङ्गार करती है व बहुत चन्दनादि सुगन्धित वस्तु धारण करतीहै वह भी पुंश्चली कहातीहै ३३ ऐसे वेदशास्त्रों से संस्कार कियेहुये धर्म्म हम जानते हैं अब जिस हेतु से दानव राक्षस व प्रेतोंको जो आदिसे ब्रह्माने बनायाहै ३४ तुमसे कहते हैं इसमें संदेह नहीं है जितने ब्राह्मण दानव पिशाच राक्षस हैं वे सब धर्मके अर्थ कहे गयेहैं और उन्होंने पढ़ाभी है सब सबके धर्म्म जानते हैं परन्तु दानव धर्म नहीं करते ३५।३६ इससे ज्ञान वर्ज्जित जो मनुष्य विधिहीन कुछ करते हैं वा अन्यायसे कोई कर्म्म करते वेदविधिसे नहीं करते ३७ उन दुष्ट अज्ञानियों को दण्ड देने के लिये हमलोगों को ब्रह्माजी ने बनायाहै इसीसे जो अधम नर विधिहीन धर्म्म करते हैं ३८ उनको हमलोग बड़े दण्डसे सिखाते हैं सो तुमने बड़ा दारुण व निर्घृण कर्म्म कियाहै ३९ गृहस्थाश्रमके कर्म्मको छोड़ यहां क्यों आईहो व अपने मुखसे कहतीहो कि हम पतिव्रता हैं ४० परन्तु तुम्हारा कोई कर्म्म हम पतिव्रता स्त्रीका नहीं देखते यदि पतिव्रता थी तो पतिको छोड़ यहां क्यों आई ४१ फिर

पति तो उतनी दूरपर बैठा है तुम शृङ्गार भूषण व वेष किसके लिये बनाये हो हे पापे! यह शृङ्गार किस लिये व किसके देखने के लिये किया है हम से कहो तो ४२ भला पतिव्रता स्त्री निश्शङ्क होकर कौन पर्व्वत व वनमें घूमेगी बस हमने तुम पापिनीको बड़े दण्ड देकर सिद्ध किया ४३ क्योंकि तू बड़ी अधर्म्मचारिणी दुष्टा है जो अपने पति को छोड़ यहां आई है वह पातिव्रत धर्म्म तेरा कहांहै हमारे आगे दिखावे तो ४४ तेरा तो पुंश्चली नाम ठीकहै क्योंकि तूने अपने पतिको छोड़ दिया क्योंकि जब स्त्री अपने पतिकी शय्या पर से अलग रही वही पुंश्चली कहाती है ४५ सो अलग शय्या को कौन कहै तू अपने पति से सौयोजन अलग चली आई है अ तेरा पातिव्रत धर्म कहां रहा हां पुंश्चलीका धर्म तो ठीक २ तुझ दिखाई देताहै ४६ हे निर्ल्लज्जे! हे निर्घृणे दुष्टे! क्या हमारे सम्मुख अपनेको पतिव्रता बताती है तपका भाव तेरे कहां है व तेज बल कह है ४७ जो कुछ बल वीर्य्य पराक्रम हो हमको अभी दिखाव देखें त कैसाहै यह सुन पद्मावती बोली कि हे असुराधम! सुन हमारा पित स्नेहसे पति गृहसे अपने यहां लाया है इसमें कौन पाप हुआ न लोभ से न काम से न मोहसे न मत्सरसे ४८।४९ हम पतिको छोड़ कर यहां आई हैं हां अब हमारे पतिके रूपके बलसे तुझ दुराचारी ने छला ५० तुमको पति जान तुम्हारे सम्मुख हम गईं पर हे दान- वाधम जैसेही तुझको हमने मायावी जाना ५१ अब एकही हुङ्कार से तुझको भस्म करती हैं तब गोभिल दैत्य बोला कि सुनो नेत्रहीन मनुष्य नहीं देखते ५२ फिर धर्म्म नेत्रों से रहित तुम हमको कैसे जानतीहो सुनो जब तुम्हारा भाव पिताके गृहमें रहनेको हुआ ५३ तब तुमने पतिका भाव त्याग दिया इससे तुम्हारा ध्यान पातिव्रत धर्म्मसे अलग होगया व ज्ञानसे तुम तभी नष्ट होगई व तुम्हारा हृ- दय फूटगया ५४ तुम फिर ज्ञान नेत्रोंसेरहित होकर कैसे हमको जा- नती हो किसकी माता किसका पिता किसके स्वजन बांधव ५५ सब स्थानों में स्त्रीके लिये एक पतिही श्रेष्ठतर है इसमें संशय नहीं है ऐसा कह दानवोंमें अधम गोभिल हँसकर बोला ५६ कि हे पुंश्चलि!

तुम्हारा हमको कुछ भी भय नहीं है तुम्हारे शापसे हमारा क्या होगा जो तुम हमको देखहीकर कांपती हो ५७ हमारे घरमें चलकर मनोवाञ्छित भोगोंको भोगिये यह सुनकर पद्मावती बोली कि हे पापसमाचर निघृर्ण ! क्या बकताहै ५८ हम अबभी पातिव्रत में परायण सती के भावसेही स्थित हैं जो ऐसा कहेगा तो हे महापाप ! अभी तेरा वधकरूंगी ५९ जब पद्मावतीने ऐसाकहा तो वह एकान्तमें पृथ्वीपर बैठगया व बड़े दुःख से युक्त उस पद्मावती से बोला ६० कि शुभे तुम्हारे पेटके भीतर जो हमने अपना बीज स्थापित कियाहै उससे तीनों लोकों के क्षोभकरनेवाला पुत्र उत्पन्नहोगा ६१ ऐसा कह गोभिलदानव तो चलागया ॥

चौ० दुराचारि पापी दानव जब । गयहु तहां सों नृप तनयातब ॥
महादुःखयुत ह्वै त्यहिठामा । रोदनकरनलगीसोवामा६२।६३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरितेपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

## इक्यावनवां अध्याय ॥

दो० इक्यानयें महँ शूकरी पद्मावति पति पाव ॥
बहुरि सुदेवा त्यागकी कथाकही अतिचाव १

वह ब्राह्मणी अपने पतिसे बोली कि हे द्विजोत्तम ! जब दुराचारी पाप चित्तवाला गोभिल दैत्य चलागया तो बड़े दुःखसे युक्तहोकर पद्मावती रोदन करनेलगी १ हे द्विजोत्तम ! उसका रोना सुनकर सब श्रेष्ठमुखवाली सखियोंने उस राजकन्यासे रोदनका कारण पूंछा २ कि तुम्हारा कल्याणहो हमलोगों से बताओ क्यों रोतीहो महाराज मथुराके अधिपति कहांगये ३ जिन्होंने तुमको प्रियाकहकर अपने समीप को बुलायाथा इसका कारण सब हमसे कहो तब बड़े दुःखसे बार २ रोदन करतीहुई वह अपनी सखियों से बोली ४ व सब कहा जो बात अज्ञान से होगईथी तब वे सब कांपती और अत्यन्त दुःखयुक्तको पिताके गृहको लिवालेगईं ५ व उसकी माता के आगे उन स्त्रियों ने सब वृत्तान्त कहा इस बातको सुनकर वह रानी

अपने पतिराजा के समीपगई ६ व पति से सब कन्याका वृत्तान्त सुनाया उसे सुन राजा महादुःखी हुआ ७ व बहुतसे वस्त्र भूषणादि दे पालकीपर चढ़ाय कन्याको परिवारयुक्त मथुराको भेजदिया वह अपने पतिके मन्दिर में पहुँची ८ पिता माताने कन्याका दोष छिपा डाला व धर्म्मात्मा उग्रसेन ने देखा कि पद्मावती आई ९ देखकर बड़े हर्षितहुये व अपनी प्राणप्रिया पद्मावतीसे बोले कि हे वरानने! तुम्हारे विना तो हम जीही नहीं सक्के १० हम तुम्हारे गुणोंसे व शीलसे और बड़ी दीप्ति से बहुत प्रसन्न हैं व तुम्हारी भक्तिसे और सत्यवाणीसे पातिव्रतके गुणोंसे अतीवप्रसन्नहैं ११ इसप्रकार पद्मावत अपनी प्रिया भार्य्या से कहकर राजा उग्रसेनजी उसके संग विह करनेलगे १२ व पद्मावती का वह सबलोगों के भयदेनेवाला दारु गर्भबढ़ा पद्मावती जानों उस गर्भ का कारण जानतीही थी १३ इससे अपने गर्भ में बढ़तेहुये उस बालक के विषय में रात्रिदि चिन्ता किया करती थी क्योंकि यह जानती थी कि जो यह लड़क उत्पन्नहोगा तो तीनोंलोकों का नाश होगा १४ इस से इस दुष्टपुत्र से हमारा कुछ भी प्रयोजन नहीं है इसलिये गर्भपात कराने के लिये सब स्त्रियों से बहुधा ओषधियां पूछा करे १५ व महौषधियों को लेकर प्रतिदिन खायाकरे इसरीति से गर्भपात होने के लिये उसने बहुतसे उपाय किये परन्तु वह गिरा नहीं १६ वरन सबलोक भयङ्कर दारुण गर्भ बढ़ताही गया जब बनाय उत्पत्ति का समय आगया तो वह गर्भ अपनी माता पद्मावती से बोला १७ कि हे मातः! तुम क्यों प्रतिदिन ओषधियों के पीने से दुःखित होती हो पुण्य से आयु बढ़ती है व पापसे थोड़े दिन प्राणी जीताहै १८ अपने कर्म्म के विपाकसे प्राणी जीते मरते हैं कोई २ कच्चेही गर्भ से चलेजाते हैं कोई पापी जन्म लेकर तुरन्त मरते हैं कोई कुमारावस्थामें कोई ज्वान होनेपर कोई बाल कोई वृद्ध कोई तरुणही मरते हैं जिसकी जैसी आयुहोती वह उतने दिन जीताहै १९।२० बस सब अपने कर्म्मविपाकसे जीते हैं व मरते हैं ओषधियां मन्त्र व देवता मरण जीवन के निमित्त नहीं हैं इसमें संशय नहीं है २१ परन्तु

हमको आप नहीं जानती हैं कि हम जैसे हैं तुमने भी देखा सुना होगा कि कालनेमि बड़ा बलीथा २२ सब दानवों में महावीर्य्य व तीनों लोकों को भयदायी था सो हम कालनेमि दानव हैं देवासुर संग्राममें विष्णुसे मारेगये हैं २३ सो उनसे अपना वैर साधन करनेके लिये तुम्हारे उदरमें आये हैं सो तुम्हारा साहस हम ने सुना कि गर्भपात के लिये नित्य ओषधियां खातीहो अब ऐसा न करो २४ हे द्विजश्रेष्ठ! इस प्रकार मातासे कहकर वह गर्भ चुप होरहा व माता ऐसे उग्र गर्भको धारण करके महादुःखसे पीड़ित हुई २५ जब दशमास बीते तो वह महावृद्धिको प्राप्तहुआ पीछे उत्पन्नहुआ वही महाबली कंसहुआ २६ जिसने तीनोंलोकोंके निवासियों को व्याकुल करदिया व फिर वासुदेव भगवान् के हाथसे मारागया इससे मुक्त होगया इसमें कुछ संशय नहींहै २७ हे द्विजोत्तम! हमने ऐसा सुनाहै कि जो काल होनेवाला होगा वह होगा यह सब पुराणोंमें जो निश्चित कहाहै वह हमने तुमसे कहा २८ बस पिता के घरमें रहने से कन्या इसी प्रकार नष्ट होजाती है इससे अपने गृहमें रखनेके लिये कन्या का मोह न करना चाहिये २९ अब इस महापापिनी दुष्टाका परित्याग करके स्थिरहोओ नहीं तो लोकमें महा पाप व दारुण दुःख तो मिलेहीगा ३० हे कांत! आप हमारे साथ लोकमें कल्याणकारक भोग भोगिये तब शूकरी बोली ऐसा वचन अपनी स्त्रीका सुन वे द्विजोत्तम ३१ हमको बुलाकर बोले कि हमने तुम्हारा त्याग किया इतना कहकर हमारे पिताजी ने वस्त्र भूषणादि हमको बहुत दिया ३२ व कहा कि तेरेही दुराचार से द्विजों में उत्तम बुद्धिमान् शिवशर्म्मा चलागया हे दुष्टे! हे कुलदूषण करनेवाली! ३३ इससे जा जहां तेरा भर्त्ता है वहीं तू भी जाकर रह इस में संदेह नहीं है अथवा जहां का रहना तुझको प्रसन्नहो वहां जाकररह ३४ हे महाभागे! हे श्रेष्ठमुखवाली! पिता माता व सब कुटुम्बवालोंने ऐसा कहकर मुझको त्यागदिया तब निर्लज्ज होकर मैं वहांसे चलखड़ीहुई ३५ हे शुभे! परन्तु मैंने बहुतलोगोंसे रहनेकेलिये कहा पर कहीं रहने न पाई जैसेही मुझको देखें बकनेलगें

कि देखो यह पुंश्चली आई ३६ इस प्रकार कुलमान से वर्जितहो घूमती २ गुर्ज्जरदेशमें जो पुण्यकारी सौराष्ट्रदेशहै वहां एक शिव मन्दिर है वहां पहुँची ३७ वहां एक वनस्थल नाम अति प्रसिद्ध वृद्धियुक्त नगरहै वहां क्षुधासे अतिपीड़ितहुई ३८ तब हाथ में मिट्टी का खप्पर ले भिक्षा मांगनेलगी सबके गृहों के द्वारपर दुःखित होकर जाकर मांगूँ ३९ जब मेरा रूप देखें तो सबलोग निन्दा करने लगें व कहें कि यह पापाचार करनेवाली आई व फिर भिक्षा भी मुझको नदें ४० इसप्रकारके दुःखों से समाक्रान्त व दारिद्र्य से पीड़ितहो एक दिन घूमती २ मैंने एक उत्तम गृह देखा ४१ वह सदन बड़ी भारी छहरदीवारीसे व बड़ेभारी खावांसे युक्त व वेद शालासे युक्तथा वेदध्वनि उसमें होरही थी व बहुत वेदपाठी विप्रों से भराथा ४२ धन धान्यसे समाकीर्ण व दासी दासों से शोभितथा लक्ष्मी से मुदित उस सुन्दर गृहमें मैं पैठी ४३ परन्तु वह गृह सब ओरसे कल्याणदायक उन्हीं शिवशर्म्माजी का था तब दुःखसे पीड़ित मुझ सुदेवा ने कहा कि भिक्षादो ४४ तब द्विजों में उत्तम शिवशर्म्माने भिक्षाका शब्द सुना व अपनी लक्ष्मीरूप श्रेष्ठमुखी मंगलानाम भार्य्यासे ४५ हँसकर कहा कि यह जोबड़ी दुर्व्वल भिक्षा के लिये द्वारपर आईहै ४६ इसे बुलाकर हे प्रिये ! हे शुभे ! भोजन देदो तब परमकृपासे युक्तहो उसको आई हुई जानकर ४७ मंगला अपने पतिसे बोली हम प्रिय भोजन देवेंगी यह कह मंगलयुक्तहो मंगलाने ४८ अति मीठे भोजन सुदेवा को कराये जब मैं अच्छीतरह भोजन करचुकी तो महामुनि धर्मात्मा शिवशर्म्मा जी मुझ से बोले कि ४९ ॥

चौ० तुमहोकौनकहांसेआई । भ्रमतजगतमहँ किमिअकुलाई ॥
है तवकार्य्य कौन सनकाहीं । कहु हमसन यहँ कुछभयनाहीं ५०
इमिनिजपतिके सुनि शुभवैना । भाष्यहु जौन महा सुखदैना ॥
स्वरसेलक्षितकरि मैंपापिनि । जानेहुँनिजस्वामिहिसुनुभामिनि ५१
जबदेख्योंनिजपतितबलज्जित । भइउँबहुतविधिदुखसों मज्जित ॥
चारुसर्व्वतनु सुमुखिमंगला । बोलीपतिसों वचन शुभला ५२

क्यों यह तुम्हें देखिमै ब्रीड़ित । अति दुखसों मानो है पीड़ित ॥
कहहु कान्त हमसों समुझाई । यहहै कौन यहां किमि आई ५३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेसुकला चरित्रेएकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

## बावनवां अध्याय ॥

दो० बावनयें महँ नरकगत दुःखशूकरी गाव ॥
लै राज्ञीकर पुण्यगै दिव्य स्वर्गयुत भाव १

सुकला अपनी सखियोंसे व शूकरी इक्ष्वाकु महाराज की रानी सुदेवा से बोली कि मङ्गलाका वचन सुन शिवशर्म्मा बोले कि हे मङ्गले ! जो तुमने इस समय पूँछा उसका उत्तरसुनो जिसलिये तुमने पूँछा है हे वरानने ! वह ऐसाहै १ कि यह बेचारी जो इससमय भिक्षुकीकारूप धारणकरके आईहै हे चारुलोचने ! यह वसुदत्त नाम विप्रकी कन्याहै २ सुदेवा इसका नामहै व हमारी प्यारी भार्या है ३ किसी कारणसे देश छोड़कर यहां आगईहै ३ व हेवरानने ! हमारे वियोगके दुःखसे जलीहुईहै हमको जानकर भिक्षुकी के रूपसे तुम्हारेगृहमें आईहै ४ ऐसा जानकर हे भद्रे ! इसका सुन्दर आतिथ्य तुमको करना चाहिये क्योंकि हमारी यही इच्छाहै कि इसका आदरभाव जो तुमसे होसके करो ५ ऐसा पतिका वचन सुन उस बड़े आनन्दयुक्त पतिव्रता मंगलाने ६ हमको स्नानवस्त्र और भोजन कराये रत्न और सुवर्णयुक्त गहने पहनाये ७ और हमसे अर्थात् सुदेवासे कहा कि हे भद्रे ! हमभी तुम्हारेही पतिकी कामनासे भूषित रहती हैं यह कहकर उसने नानाप्रकारके भूषणों से हमको भूषित किया व विविधप्रकारके भोजन कराये ८ व हमारे पति शिवशर्म्मा जीनेभी हमारा बड़ा मान व आदर किया हे भद्रे ! तब हमारे हृदय में सब प्राणनाशक महा तीव्र इतना दुःखहुआ जिसका अन्त नहीं है ९ उनका वैसामान व अपनी दुष्टताको देख हमारे ऐसी दारुण चिन्ताहुई कि अबतो हमारे प्राण निकलजाते तो अच्छाहोता १० क्योंकि मुझ पापिनीने कभी पतिसे सुवचन नहीं कहाथा बरन इन

विप्र श्रेष्ठकेसाथ पापही किया ११ न कभी इनका पैर धोया न मर्दन किया व न इन महात्माके संग कभी एकान्तमें शयनही किया १२ अब इन महात्मासे पापिनी मैं कैसे बोलसकूंगी उस रात्रिमें ऐसी चिन्ता करतीहुई मैं दुःखके सागरमें डूबगई १३ व ऐसी चिन्ता करतीथी कि मेरा हृदय फटगया व हे वरानने ! शरीरको छोड़ मेरे प्राण निकलगये १४ तब हाथोंमें गदा चक्र खड्ग धारण किये वीर दारुणक्रूर धर्मराजके दूत आये १५ और रोतीहुई अत्यन्त दुःखित मुझको दृढ़ बन्धनवाली जंजीरोंसे बाँधकर यमपुर लेगये १६ मुद्ग-रोंसे ताड़ितहुई दुर्ग मार्गसे पीड़ितभई यमराजके आगे डाटीगई और दूतोंने मुझे यमराजके पास पहुँचादिया १७ तो क्रोधयुक्त महात्मा यमराजने मुझे देखा और अङ्गारसंचय और नरकसंचयमें डालदिया १८ फिर लोहका पुरुष अग्निसे तपाकर अपने स्वामीके छलनेसे मेरेहृदयमें लगायागया १९ अनेकप्रकारकी पीड़ासे अत्य-न्त संतप्त और नरककी अग्निसे तापयुक्त हुई फिर करंभ बालूके ऊपर तेलकी नावमें छोड़ीगई २० तलवारके समान पत्तोंसे छिन्न भिन्न कीगई जलमंत्रसे वाहितहुई व मुझको छिन्न भिन्न करतेहुये यमपुरको लेगये फिर कूटशाल्मलिवृक्ष नरकमें महात्मा यमराज की आज्ञासे छोड़ीगई २१ फिर पीब रुधिर व विष्ठाके कुण्डमें जहां नानाप्रकारके कृमि भरेथे मुझको उसमें लेकरडाला हे राजकुमारि ! कहांतक गिनाऊं एकमें से दूसरे में डालतेहुये सब नरकों में मुझे यमदूतों ने डाला २२ जिनमें कि नानाप्रकारके तीव्र दुःख होतेथे खड्गलेकर बीचसे मुझको चीड़डाला शक्तियोंसे ताड़ित किया २३ अन्य सब नरकोंमें मैं गिराईगई फिर नानाप्रकारकी नारकी योनि-योंमें गिराईगई २४ व उन्हीं धर्म्मराजनेसब नरकोंमें मुझको गिर-वाया फिर बगुलीकी योनिमें उत्पन्न होकर बड़े २ दारुण दुःख मैंने भोगे २५ फिर शृगालीकी योनिमें जन्मी फिर कुत्तीकी योनिमें जन्म पाया फिर मुरगीकी योनिमें फिर मार्ज्जारीकी योनिमें फिर मूसकी योनिमें २६ इस रीतिसे जितनी पाप योनियांथीं सबोंमें मेरा जन्म हुआ जिन २ योनियों में जन्म लेनेसे बड़ी पीड़ा होती है धर्म्मराज

ने उन सबोंमें मुझको डलवाया २७ हे नृपनन्दिनि ! इसीक्रमसे मैं भूतलपर आकर शूकरीहुई पर हे महाभागे ! तुम्हारे हाथोंमें अनेक तीर्थ हैं २८ सो उन्हीं हाथोंसे मुझको तुमने स्नान कराया इससे हे श्रेष्ठवर्णवाली ! हे सुन्दरि ! हे देवि ! तुम्हारे प्रसादसे मेरे सब पूर्वजन्मके पाप जातेरहे २९ व हे वरानने ! तुम्हारेही तेजके पुण्य से मैंने ज्ञानपाया अब नरकसंकटमें पड़ीहुई मुझको उबारो ३० जो अब उद्धार न करोगी तो फिर दारुण किसी नरकयोनिमें जाऊंगी इससे हे महाभागे ! मुझ दुःखिनीकी रक्षाकरो ३१ पापभावसे मैं इसदशाको पहुँचीहूँ व और कोई मेरा रक्षक नहीं है जिसके शरण में जाऊँ यह सुन सुदेवा महारानी बोली कि हे भद्रे ! पूर्व्वजन्म में हमने कौन पुण्य कियाहै ३२ जिससे तुम्हारा उद्धार करें हमसे इस समय कहो यह सुन शूकरी बोली कि ये मनुके पुत्र महाराज इक्ष्वाकुजी ३३ साक्षात् महाबुद्धिमान् विष्णुभगवान्हैं व आप लक्ष्मी हैं इसमें संदेह नहीं है क्योंकि तुम पतिव्रता महा भाग्यवती व पातिव्रत धर्म्ममें परायणहो ३४ हे भद्रे ! जिससे तुम पतिव्रताहो इससे सर्व्वतीर्थमयीहो व स्वर्गमें भी सर्व्वदेवमयी तुम थीं व अबभी सर्व्वदेवमयीहो ३५ क्योंकि इसलोकमें महापतिव्रताओं में तुम एकहीहो क्योंकि आप अपने भर्त्ताकी शुश्रूषा पुण्यके लिये सदा करती हैं ३६ हे देवि ! हे वरानने ! यदि तुम हमारा प्रिय करती हो तो पति सेवा का एक दिनकाभी पुण्य मुझको देदो ३७ मेरी मातापिता व सनातनी गुरु तुम्हींहो मैं तो पापिन दुराचारिणी झूठी व ज्ञानवर्ज्जितहूं ३८ हे महाभागे ! अब मेरा उद्धारकरो क्योंकि मैं यमराज के दण्डोंसे बहुत व्याकुलहूँ सुकला अपनी सखियोंसे बोलीकि यह सुन महारानीने महाराजकी ओर देखकर कहा ३९ कि हे महाराज ! अब हम क्याकरें सुनो यह पशु शूकरी क्या कहती है यह सुन राजा इक्ष्वाकुजी बोले कि हे शुभे ! यह बेचारी पापयोनिमें पड़ी है ४० इससे इसका उद्धार अपने पुण्यों से करो तुम्हारा बड़ा कल्याण होगा जब इसप्रकार से चारु मङ्गलवती महारानी सुदेवासे महाराजने कहा ४१ तो उन्होंने उस शूकरी से कहा कि हे श्रेष्ठमु-

खवाली ! हमने जो पतिकी सेवाकी है उसमें एक वर्षका पुण्य तुमको देती हैं जैसेही उन देवी महारानी जीने ऐसा कहाहै कि उसी क्षण ४२ रूपयौवन सम्पन्न दिव्यमालासे विभूषित तेज की ज्वालासे युक्त वह शूकरी दिव्य देहहोगई ४३ सब भूषणोंकी शोभा से युक्त व नानारत्नोंसे शोभितहुई दिव्यरूप होकर दिव्य गन्धानुलेपन से युक्त हुई ४४ व दिव्य विमान पर चढ़कर जा अन्तरिक्ष में होरही व वहीं से मस्तक झुँकाय प्रणाम करती हुई बोली ४५ कि हे महाभागे ! हे सुंदरि ! तुम्हारा कल्याणहो मैं तुम्हारे प्रसादसे पापोंसे छूटकर अति पुण्यतम शुभ स्वर्गलोकको जातीहूँ ४६ इसप्रकार महारानी के प्रणामकर सुदेवा स्वर्गको चलीगई ॥

चौ० सुकलानिजसखियनसोंबोली। वचनसुधासमअतिहिअमोली॥
कह्यो सुदेवा चरित अनूपा । तुमसन हम बहुभांति सुरूपा ४७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेसुदेवास्वर्गारोहणंनामद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

# तिरपनवां अध्याय ॥

दो० तिरपनयेंमहँ देवपति सुनि सुकला दृढ़ताइ ॥
मन्मथसम्मत दूतिका तहँ पठई सो जाइ १
यदपिकरी बहुयुक्तिपर सुकलापहँ न बिसान ॥
तासुवचन वेदान्तसों खण्ड्योसहित विधान २

सुकला अपनी सखियोंसे बोली कि पुराणोंमें पूर्व्वसमय हमने ऐसा धर्म्मसुनाहै फिर पतिहीनहोकर अकेले भोगके पदार्थ कैसे भोजनकरके पापिनीहोवें १ इससे अब विना अपने स्वामीके जीव को शरीरमें धारण न करेंगी विष्णुजी बोले कि हे राजन् वेन ! इस प्रकार से उत्तम पातिव्रतधर्म्म सुकलाने कहा २ उसे सुन वे सब श्रेष्ठ स्त्रियां अति हर्षितहुईं व नारियोंको गति देनेवाला परमउत्तम पातिव्रत धर्म्म सुनकर ३ धर्म्मवत्सल महाभाग्यवती उस सुकलाकी सब स्तुतिकरनेलगीं वे सब स्त्रियां व ब्राह्मणलोग व सब देव भी उसकी स्तुति करनेलगे ४ उस सुकलाका ध्यान व पतिकी कामना

विचारकर इन्द्र अपने लोकमें बहुत प्रसन्नहुये ५ व सुकलाका परम भाव विचारनेलगे व फिर कहनेलगे कि इस सुकलाकाभाव व धैर्य्य हम पतित करादेंगे इसमें कुछ संशयनहींहै ६ तुरन्त देवराजने कामदेवका स्मरण किया जैसेही स्मरण किया है कि पुष्प का धन्वा हाथ में लिये कन्दर्प्प वहां आगया ७ अपनी प्रिया रति को भी सङ्गही लाया व इन्द्रको देखकर दोनों हाथ जोड़ सहस्राक्ष से बोला कि ८ हे नाथ! इससमय मेरा स्मरण आपने क्यों किया जो कार्य्यहो सब भावसे आज्ञादीजिये ९ यह सुन इन्द्र बोले कि यह महाभागा सुकला पातिव्रतधर्म्ममें परायण है हे कामदेव! सुनो व इस विषय में उत्तम सहायकरो १० इस महाभागा पुण्यमङ्गला सुकलाको आकर्षितकरो तिस इन्द्रके वचन सुनकर कामनेकहा ११ देवराज बहुत अच्छा ऐसाही करूँगा इसमें संदेह नहीं है हे देव देवेश! तुम्हारे कौतुक के अर्त्थ सहायकरूँगा १२ ऐसा कह मुनियों से भी दुर्ज्जय महातेजस्वी काम कहनेलगा कि ऋषियों मुनियों सहित देवगणों के जीतनेमें मैं समर्त्थहूं १३ फिर हे देव! कामिनी के जीतनेमें क्या है जिसके अङ्गों में कुछ बलही नहीं होता क्योंकि हे देव! कामिनियों के अङ्गों में मैं निवास करताहूं १४ मस्तक कुच नेत्र व ग्रीवा के अग्रभाग में सदा रहताहूं व नाभि कटि पीठ दोनों मोटी जांघों में और योनिमंडलमें १५ ओष्ठ दांत व कांखोंमें मेरा वास रहताहै इसमें संदेह नहीं है अङ्गों और प्रत्यङ्गों में सबसे मैं रहताहूं १६ हे देव! नारी हमारा घर है सदैव तहां हम बसते हैं और वहां स्थित होकर सब पुरुषों को निस्सन्देह मारते हैं १७ स्त्री स्वभावहीसे हमारे बाणोंसे सन्तप्त रहती है पिता माता और स्वजन बान्धव रूपवान् गुणवान् को देखकर हमारे बाणों से हत हुई चलायमान होजाती है इसमें संदेह नहीं है विपाककी चिन्तना नहीं करती है १८। १९ व इसी कारणसे जब स्त्रियां किसी सुन्दर पुरुषको देखती हैं तो उनकी योनि से बीजयुक्त जल बहने लगता है इससे हे सुरराज! उस में कुछभी धैर्य्यनहीं है सुकला को मैं नाश करडालूँगा २० इन्द्रबोले कि हे काम! धनीगुणवान् व रूपवान् पुरुष हमहोंगे व कौतुकसे इस

को चलायमान करेंगे २१ न काम से न डरसे न लोभसे न कारण
से न मोहसे न क्रोधसे चलायमान करेंगे यह हम सत्य सत्य कहते
हैं २२ तिसका बड़ा सत्यपतिव्रत हमको कैसे दिखाई देगा इससे
जाकर आकर्षण करूंगा मोहही इस में कारण है २३ इस प्रकार
कामदेव को आज्ञादेकर इन्द्रजी चले गये जो कि स्वभावही से रू-
पवान् गुणवान् हैं फिर सब भूषणोंकी शोभासे अंगयुक्त व सब भोग
विलासकी सामग्री समेत भोगलीला से समाकीर्ण हो व सब प्रकार
से उदारता युक्तहो इन्द्र २४ । २५ जहां वह पतिव्रतादेवी कृकलकी
स्त्री सुकलाथी वहां अपनी लीला गुणरूप व भाव जाकर दिखाय
२६ परन्तु उस ने इनकेरूप व धनसम्पदा की ओर देखाही नहीं
जहां २ वहजाय वहां देखे तो इन्द्र आगे खड़े २७ व साभिलाष
मनसे स्थित उन्हीं इन्द्रको देखे इन्द्र नाना प्रकारकी कामचेष्टाओं
को दिखाते हुये २८ चौरहा व तीर्थ में जहां २ वह देवीजाय वहां
दिखाई दें व सहस्राक्ष वहां उसको भी देखें २९ फिर इन्द्रने एक
दूतीको भेजा वह उसके पास गई व महाभाग्यवती सुकलासे बहुत
हँसकर बोली ३० कि अहोसत्य अहोधैर्य्य अहोकांति व अहोक्षमा
इसके रूपकी तो कोई नारीही संसार में नहीं है ३१ हे कल्याणि!
तुम कौनहो व किसकी भार्य्या होवेगी व जिसकी तुम गुणवती भा-
र्य्याहोगी वह पुरुष पुण्यवान् धनी पृथ्वी में होगा ३२ उसका वचन
सुन वह मनस्विनी सुकला बोली कि वैश्यजाति में उत्पन्न धर्म्मात्मा
सत्यवत्सल ३३ सत्यप्रतिज्ञ धीमान् एक कृकलनाम महानुभाव
वैश्यहैं हम उन्हीं की भार्य्या हैं तुम से सत्यही कहती हैं ३४ सो
सुधी धर्म्मात्मा हमारे भर्त्ता तीर्थयात्रा करनेको गयेहैं हे महाभागे!
उन हमारे भर्त्ता को गयेहुये ३५ इस समय तीन वर्ष बीतगये हैं
इससे उन महात्मा विना हम अत्यन्त दुःखित हैं ३६ यह सब हमने
अपना वृत्तान्त तुमसे कहा व आप जो हमसे पूँछती हैं तो आप
कौनहैं व क्यों हमको पूँछती हैं ३७ उसका वचनसुन वहदूती उससे
आभाषणकर फिर बोली कि भद्रे! हमको पूँछतीहो तो सब हम तुम
से कहती हैं ३८ हे वरवर्णिनि! हम तुम्हारे पास किसी कार्य्य से

लिये आई हैं सुनो कहेंगी व सुनकर उसे धारणकरो ३९ हे वरानने ! जो निर्दयी भर्त्ता तुमको छोड़कर चलागया उसको लेकर तुम क्या करोगी ४० व सुंदर आचारसमन्वित तुमको छोड़कर जो पापी चला गयाहै हे बाले ! अब नहीं जानतीं कि कहीं मृतक होगया वा जीता है ४१ व जो हो तुम उस पापीका क्या करोगी हमारी जान तो आप बिन प्रयोजन खेद करती हैं अपने इन दिव्य सुवर्ण समान दीप्ति वाले अंगोंको क्यों नष्ट करतीहो ४२ बाल्यावस्थामें मनुष्य इस सुखको नहीं पाता जोकि युवावस्थामें पाताहै क्योंकि बाल्यावस्था में शरीरमें बलतो रहताही नहीं इससे क्रीड़ाका सुख उसको नहीं मिलता ४३ वैसेही वृद्धावस्था में भी क्रीड़ाका सुख नहीं मिलता क्योंकि बुढ़ापाके मारे सब इन्द्रियां शिथिल होजाती हैं इससे हे वरानने ! सब सुख व भोग तरुणावस्थाही में भोगे जाते हैं ४४ जबतक तरुणता रहती है तभीतक मनुष्य भोग विलास करते हैं व सुख भोगादि सब में अपनी इच्छासे मनुष्य क्रीड़ा करता है ४५ जबतक तरुणता है तभीतक भोगभी हैं सो हे भद्रे ! जब तारुण्यावस्था चलीजायगी तो फिर क्या करोगी ४६ हे देवि ! जब वृद्धावस्था आवेगी तो कुछभी कार्य्य न सिद्धहोगा क्योंकि वृद्ध सुख करनेकी इच्छा करता है परन्तु कुछ कार्य्य तो उससे होताही नहीं सुख कैसे करे ४७ जैसे जब वर्षा होजाती है तब सेतुका बांधना वृथा होता है वैसेही तारुण्य बीतजाने पर सुख करने का अनुभवहै ४८ इससे सुखभोगो व मधुमाधवी आनन्दसे पान करो हे चारुलोचने ! देखो ये कामबाण तुम्हारे अंगोंको जलाये देतेहैं ४९ रूपवान् गुणवान् धनी व युवा यह पुरुष तुम्हारेलिये आया है यह पुरुष सर्व्वज्ञ व पुरुषोंमें श्रेष्ठहै ५० व हे वरवर्णिनि ! तुम्हारे अर्थ सदा स्नेहहीकेसाथ रहना चाहताहै यह सुन सुकला बोली कि जीवको न बाल्यहै न कभी तरुणताहोतीहै ५१ बुढ़ापाभी नहीं होता अपने आप सिद्ध अच्छी सिद्धि का देनेवाला अमर बुढ़ापारहित व्यापी अच्छा सिद्ध सब जाननेवाला ५२ कामरहित संसार में कामना का देनेवाला आतमरूप से वर्त्तमान है जैसे घरका संस्थान है तैसेही

देहका दिखाई देनाहै ५३ जैसे वृद्धावस्थासे देह तैसेही सूत्रसे मन्दिर है अनेकों काष्ठ समूहों से नानाप्रकार के काष्ठ समुच्चयोंसे ५४ मिट्टी और जलसे चारोंओर से बनायाजाता है लेपन करनेवालोंसे घर लीपाजाताहै चित्र बनानेवालों से काष्ठचित्र होताहै ५५ पहले रूपको प्राप्त होताहै और सूत्रसे घर सूत्रित होताहै फिर दिनदिन में लेपनसे अपने आप पुष्टहोताहै ५६ नित्यही पवन सेघर मलिन होजाता है मध्यम वर्तुतकाल घरका कहाता है ५७ तिस घरकी रूपहानि होतीहै तो घरका स्वामी अपनी इच्छा से लिपाता है तब रूपवान् घर होजाताहै ५८ हे दूतिके ! तिस घरकी युवावस्था कही फिर काष्ठसमूहों से बहुत काल में पुराना होजाता है ५९ स्थान से भ्रष्टहोकर इन्द्रियां अलग २ होरहती हैं इससे बल व भार को नहीं सहतीं बस इसी को देह की वृद्धता कहते हैं हे दूषण करनेवाली ! जब गृहको गिरताहुआ जानताहै तो गृहका स्वामी उसे छोड़देताहै ६० । ६१ व दूसरे घरको शीघ्रही चलाजाता है तैसेही बाल्य तारुण्य व वृद्धता ये सब क्षणिक हैं ६२ बाल्यावस्था में ज्ञानहीन होने से बालरूप रहता है केवल वस्त्र अलंकार भूषण व सुन्दर शरीरकी इच्छा करताहै ६३ व चन्दनादि सुगन्धि वस्तुओंके लेपन व ताम्बूलादि के भक्षणकी इच्छा करताहै जब शरीर तरुणताको पहुँचता है तो अतिरूप होजाता है ६४ तब बाहर व भीतर सब कहीं रसों से उसे पुष्टकरताहै उस पोषणभावसे शरीर पुष्टहोजाता है ६५ व गण्डस्थल पृष्ठ उदर इत्यादि में मांसकी वृद्धि होजाती है ऐसेही और भी सब अंग वृद्धिको प्राप्त होते हैं ६६ इसीप्रकार प्रत्येक अंग रसयुक्त होनेसे रूपवान् दिखाई देने लगते हैं व हे दूतिके ! दन्त ओष्ठ स्तन बाहु कटि पीठ दोनों जंघा ६७ हाथ और पादतल ये सब बढ़जाते हैं व रस मांस दोनों के बढ़ने से सब अंग बढ़ते हैं ६८ व तभी सब अंग स्वरूपयुक्त होते हैं व उन्हीं स्वरूपों से मनुष्य रसबद्ध होताहै ६९ फिर लोक में स्वरूप कौन पदार्थ कहाजाताहै हे दूतिके ! यह शरीर तो विष्ठा व मूत्रका स्थानहै ७० इससे महाअपवित्र वस्तु शरीर है क्योंकि दिन रात्रि

इससे निर्घृण मल मूत्रादि चुआकरते हैं सो हे शुभे ! जलके बुल्ले के समान नश्वर इस शरीर का रूप कैसे वर्णन करती है ७१ जब तक पचासवर्ष नहींबीतते तबतक यह शरीर दृढ़ रहताहै पीछे फिर दिन २ प्रति हीनही सब अंग होतेजाते हैं ७२ दांत शिथिल होजाते हैं व मुखसे राल टपकने लगती है नेत्रों से दिखाई नहीं देता न कानों से सुनाई देताहै ७३ व हे दूतिके ! पैरों से चला नहीं जाता न हाथों से कुछकर्म करसक्ताहै जराकालमें पीड़ितहोकर यह शरीर नष्ट होनेपर आजाता है ७४ वह सब रस वृद्धता के अग्निसे सूख जाताहै फिर सब कुछ करने में असमर्थ होजाता है फिर हे दूतिके! रूपत्व इसमें कैसे है ७५ जैसे जीर्णगृह क्षय होजाताहै इसमें सन्देह नहीं है वैसेही वृद्धावस्थामें जीर्णशरीर भी नष्ट होजाता है ७६ फिर हमारे रूपको क्या बार २ वर्णन करती है किस कारणसे हमको रूपयुक्त जानती है ७७ जैसे जीर्णघर त्राताहै वैसेही शरीर भी त्राता है व किससे इस पुरुषको बली मानती है जिसके अर्थ तू आई है उसकी कौनसी प्रशंसनीय बात है ७८ व हमारे अङ्गोंमें तुमने कौनसी विलक्षणता देखी इस समय हमसे कह तिसके अङ्गोंसे अधिक वा हीन नहीं है ७९ बस जैसे तेरे अङ्गहैं वैसेही इस पुरुषके व वैसेही हमारे इसमें सन्देह नहीं है फिर किसमें रूप नहीं व भूतलमें रूपवान् नहींहै ८० हे शुभे ! जितने ऊँचे वृक्ष व पर्वतहैं सबका अन्त गिरपड़नाहै ऐसेही कालसे पीड़ित होकर सब प्राणी अन्तमें नाशको प्राप्तहोते हैं ८१ हे दूतिके ! है अरूप पर रूपवान् होकर दिव्य आत्मा पवित्र सबमें टिकाहै सब स्थावर व जङ्गमों में आत्मा वही है ८२ सबों में एक वही शुद्धआत्मा विद्यमानहै जैसे छोटे बड़े चाहे जैसे घटमें जल भराहो पर वह अकेला शुद्धस्वरूपहै कुछ अन्य२ कुम्भमें भरनेसे और नहीं होजाता व अन्तमें जब घट फूट जाते हैं तो फिर वही अकेला शुद्धजल दिखाई देताहै इस बातको तू नहीं समझती ८३ पिण्डों के नाशसे ऐसेही आत्माभी एक रूप होजाताहै हमने एकहीरूपसे संसार में बसेहुये आत्माको सदा देखा है ८४ सो जिसके लिये आईहै उससे जाकर ऐसेही कहदे कि जो

हमारे सङ्ग भोग किया चाहताहो तो कुछ अपूर्वता दिखावे ८५ सुन जब व्याधि से प्राणी पीड़ित होताहै तो कफसे युक्तहोताहै अङ्ग से रक्त चलायमान होताहै तब स्थानसे भ्रष्ट होजाताहै ८६ सब अङ्ग सन्धियों में भीतर मांस है एकसे नाशको प्राप्त होजाता है अपने रूपको छोड़देताहै ८७ तब शीघ्रही कृमियों से युक्त विष्ठाके भावको प्राप्तहोजाताहै तैसेही दुःख करनेवाले अपने रूपको जब परित्याग करताहै ८८ तब पीछेसे दुर्गन्धयुक्त कीड़ा होताहै व फिर यूका वा कृमि योनियों में उत्पन्न होताहै इसमें सन्देह नहीं है ८९ व जबतक नरकों में पड़ा रहताहै तबतक कृमि नानाप्रकारके खजुलीआदि दारुणदुःखदेते हैं शरीरमें व्यथा उत्पन्न करातेहुये वे यूका उसे इधर उधर छटपटवाते हैं ९० वह खजुली नखों से खजुवानेसे कुछशान्त होजाती है तैसेही भोगकी सुनिये इसमें सन्देह नहीं है ९१ अच्छे रसों को मनुष्य भोजन करता पीछे से पान करताहै तो प्राणवायु पाकस्थान को लेजाती है ९२ जो प्राणी भोजन करते हैं तो फिर पाकस्थानको प्राप्तहोजाताहै तब वायु सब मलको गिरादेतीहै ९३ सारभूतरसका रक्तहोजाताहै व जो निर्म्मल शुद्धवीर्य्य होताहै वहतो ब्रह्मस्थानको चलाजाताहै ९४ व जो यहां औरोंको दुःखदेताहै वह अपनेहीसमान दुष्टकृमिसे व्याकुल हुआकरताहै एक स्थान पर उस का वीर्य्य नहीं रहता चञ्चलताको प्राप्त रहताहै ९५ व बहुधा सब प्राणियोंके शिर में पांचकृमि सदा रहते हैं दोतो कर्णमूलोंमें व दो नेत्रोंमें ९६ ये कनिष्ठिका अंगुली के समान होतेहैं लाल इनकी पूँछ होती है हे दूतिके! व एक नैनूके रङ्गका होताहै व काली उसकी पूँछहोतीहै इसमें संशयनहीं है ९७ हे भद्रे! उन सबों के नाम कहती हुई हमसे सुन पिङ्गली व शृङ्खली नामके दो कृमि कानों के मूलोंमें रहते हैं ९८ चपल व पिप्पल ये दो कृमि नाकके अग्रभाग में रहते हैं व शृंगली व जंगली ये दोनों नेत्रोंमें रहते हैं ९९ व डेढ़सौ कृमि पुरुषों के माथेके अंत में राई के प्रमाण से रहते हैं १०० सब निःसंदेह मस्तक रोगी करते हैं दो बाल तिसके मुखमें विद्यमान रहते हैं १०१ उसी क्षणमें प्राणियों का नाश जानो इस में संदेह नहीं है

अपने स्थानमें स्थित प्राजापत्य के मुखमें १०२ वह वीर्य रसरूप से निस्सन्देह गिरताहै मुख से वीर्य पीताहै तिससे मत्त होजाता है १०३ व तालुस्थान में अतिचञ्चल होता है व जिह्वाके नीचे सूक्ष्म रूपसे इडा व पिङ्गला व सुषुम्णा नामकी तीन नाड़ियां रहती हैं १०४ ये तीनों नाड़ियां चलाकरती हैं व हे दूतिके ! सब प्राणियों के कन्दर्प्प में बड़ी भारी खजुहट होती है १०५ इससे पुरुषका लिंग खजुलाने लगताहै व स्त्रीकी योनि जब स्त्री पुरुष दोनों प्रमत्त होजाते हैं तब दोनोंका संगम होताहै यही इसकी व्यवस्था है १०६ ॥

चौ० काय कायसों घर्षण करई। मैथुन समुझि मोदमन भरई ॥
नाहिं अपूर्व्व मिथुन महँ कोई। व्यर्थ नारि नर प्रमुदित होई ॥
मो महँ नाहिं अपूर्व्व विधि कोई। यासों मैथुन सुखद न होई ॥
मैंनहिंकरहुँकवानिविधिपाहीं। जायकहसिकिनपहुँचितहांहीं १०७,१०८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

# चौवनवां अध्याय ॥

दो० चौवनयें महँ दूतिके सुनिकै वचन सुरेश ॥
ताहि कामरति संगलै गे सुकलाके देश १

श्रीविष्णु भगवान् राजा वेनसे बोले कि जब सुकलाने ऐसाकहा तो वह दूती चलीगई व संक्षेपरीति से उसके वचन कहे सुनकर व विचार करके इन्द्र १ सत्यधर्म्मयुक्त सुकला के वचन मन में गुन कर व उसका साहस व धैर्य्य ज्ञानदेख जानकर २ दूती से बोले कि नारीहोकर ऐसा वचन भूतलमें कोई भी न कहेगी क्योंकि सब उस के वचन योगरूप संसिद्ध व ज्ञानजलसे धोयेहुये हैं ३ यह महाभागा सत्य रूप पवित्र है इसमें कुछ भी संशय नहीं है यह तो सब त्रिलोकीको धारण करसक्ती है ४ यह विचार करके इन्द्र कामदेवसे बोले कि तुम्हारे साथ हम उस कृकलकी प्राणप्रिया को देखने चलेंगे ५ तब बलसे दर्पित मन्मथ इन्द्रसे बोला कि हे देवेश ! जहां वह

पतिव्रता है वहां चलो ६ पहुँचतेही हम उसका मान वीर्य बल धैर्य सत्य पातिव्रत धर्म्म नाश करदेंगे हे सुरेश्वर! यह प्रतिज्ञा करके कहते हैं ७ कामका ऐसा वचन सुन इन्द्र बोले कि हे कामदेव! सुनो हमारे विचार से तुमने बहुत अधिक कहा ८ क्योंकि हमने भी उसे देखा है कि सत्य वीर्य्य व धर्म्म कर्म्मों से युक्त रहती है इससे इस सुकलाको तुम नहीं जीतसक्के वहां तुम्हारा कुछभी पौरुष न चलेगा ९ यह सुन अतिक्रुद्ध हो काम सहस्राक्ष से बोला कि हमने ऋषियोंव व देवताओंका बल नष्ट करदियाहै १० फिर इसका बल कितना आप देखें हम मन्थनकरते हैं कि नहीं हे देवेश! तुम्हारे देखतेहे देखते उस स्त्रीका नाश करडालेंगे ११ जैसे नवनीत को अग्नि पिघलादेताहै वैसेही हम अपने तेज व रूपसे उसे पिघलादेंगे १२ इससे चलिये व इससमय उपस्थित महाकार्य्य हमारा देखिये तीनि लोकों के नाशनेवाले हमारी निन्दा क्यों करतेहो १३ विष्णुभगवा न् राजावेनसे बोले कि कामका वाक्य सुनकर जाना कि यह काम से असाध्य नहीं है व यहभी विचारा कि अच्छा उस धैर्य्यवती प तिव्रता पुण्यशील के दर्शन होंगे १४ फिर काम से कहा कि अच्छा अब चलकर तुम्हारा वीर्य्य बल देखते हैं यह कह काम व रति व उस दूतीके संग इन्द्र तिस पतिव्रता के वहां गये १५ जहां कि अ केली पुण्यशीला पतिव्रता सुकला अपने पतिका ध्यान करतीहुई अपने गृहमें टिकी थी वह अपने पतिकाध्यान ऐसे करतीथी कि जैसे योगीलोग अतिगोप्य परमेश्वरका करते हैं १६ मदन अति मोहन रूप धारणकर व लीलायुक्त भोगसहित पुरन्दरको आगेकर वहां को चला व जाकर पहुँचा अतिमनोहर रूप धारण किये काम व इन्द्रको कृकल वैश्यकी पतिव्रता स्त्री सुकलाने देखा १७। १८ जिसकी शोभा इन्द्रके साथ ऐसी होतीथी जैसी कि कमलों के संग जल की होती है तैसेही सत्ययुक्त स्वभाव तिस पतिव्रता का हुआ १९ देखतेही सुकलाने जानलिया कि इसी पुरुषने प्रथम दूती भेजी थी जो स्त्री इनको गुणका जाननेवाला कहतीथी लीला स्वरूप बहुधा आत्मभाव हमको यह सब दिखाता है २० हमको प्रबल काल

चिन्तनाकर दुष्ट हमारे पतिके गुणोंसे आयाहै रति समेत यह सुक्ष्म सतीके पत्थरके भावसे मर्दित कैसे जीवेगा २१ मेरा भाव ग्रहणकर अच्छी बुद्धियुक्त कांत क्या जीताहै हमारा शरीर तो कामादिकों से शून्यहै इससे कुछ चेष्टाही नहीं करसक्ता जैसे कि मृतक कुछ नहीं करसक्ता २२ हां कामके ग्राममें रहनेवाली जो सकाम प्रजाहोंगी वे भले नष्टहोंगी हमारे शरीरमें तो पतिके वियोगसे कामही नहीं है फिर हमारा कोई क्या करेगा क्योंकि जबतक प्राणी जीता रहता है तभी तक जो चाहे करै करावे फिर मरनेपर मृतक शरीर लेकर कोई क्या करसक्ताहै इससे जो यह हमारे संग भोग किया चाहताहै इससेभी अवश्य वार्त्ता करनी होगी पर अभी नहीं २३।२४

चौ० इमिविचारिसोसतीसयानी । गृहप्रवेश निजकीन सुठानी ॥
नियमजानि ताकेमघवाना । तहँथिररहेन कछु कियआना २५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलचरित्रेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

## पचपनवां अध्याय ॥

दो० पचपनयें महँ इन्द्रकहि सती कथा बहुमार ॥
समझायहुपुनिमदननिजसैन्यहिदीनप्रचार १

श्रीविष्णु भगवान् वेन से बोले कि सुकला का अभिप्राय जानकर देवराज कामसे बोले कि हे मदन ! तुम्हारी सामर्थ्य नहीं है कि इस पतिव्रताको जीतसको क्योंकि यह ध्यानयुक्त है १ व यह धर्म्मरूप धन्वा अपने हाथ में लिये है व ज्ञान नाम बाण उसपर चढ़ायेहै व युद्ध करनेके लिये यह पतिव्रता सन्नद्ध है जैसे कि समर में अच्छे वीरलोग निर्भय होकर युद्ध करने को सन्नद्ध होते हैं २ इसने तो अपने तेजसे सबको जीतलिया हे पुत्र! अब तुम अपना पौरुषकरो हमतो जानते हैं कि यह तुम्हारे जीतनेमें इस समय समर्थ है इससे अच्छे प्रकार शोच विचारकर युद्ध करने में उद्यत होना चाहिये ३ क्योंकि तुमने पूर्व्व समय में महात्मा शम्भुजीसे विरोध कियाथा तब उन्होंने भस्मही करडालाथा उसका फल यह

हुआ कि तबसे तुम अनंग सत्यही होगये ४ जैसे तुमने पूर्व समय में कर्म किया था तैसेही तीव्रफल प्राप्तहुयेथे निश्चय इस पतिव्रताके साथ निंदित योनिको प्राप्त होगे ५ जे ज्ञानवान् पुरुष तीनोंलोक में महात्माओंके साथ वैर करते हैं वे पापही भोगते हैं दूसरे नाना प्रकारके दुःख भोगने पड़तेहैं व रूपका भी विनाश होताहै ६ इससे अच्छा होगा कि हम तुम दोनों इस महापतिव्रता को छोड़कर अपने स्थानको चलेचलें क्योंकि पतिव्रताके संग भोग करनेका असह्यपापमय फल हम एकबार पाचुके हैं ७ वह चरित्र तुम भी जानते हो गौतमजी ने शाप दियाथा उससे नपुंसक होगयेथे व तुम हमको वहीं छोड़कर भागगये थे ८ पतिव्रताओं के तेजका प्रभाव अतुल होताहै उसके नष्ट करनेको ब्रह्मा व सूर्य्यभी नहीं समर्थ होसक्ते पूर्वकाल में अनसूया पतिव्रताके शापसे सूर्य्य को कुष्ठरोग होगया था यद्यपि सूर्य्य ने अनसूयाके पति अत्रिजी का अपराध किया था अपने भर्त्ताकी ओर होकर अपने पातिव्रत धर्मके प्रभावसे उन्होंने सूर्य्यका मार्गही रोंक दियाथा यद्यपि सूर्य्यका बड़ाभारी तेजहै पर सब नष्ट करादिया था व अपने पति माण्डव्यजीकी मृत्यु जानक उनकी पतिव्रता कौण्डिनी नाम स्त्रीने मृत्युही को शाप देदियाथ ९।१० व अत्रिजी की भार्य्या अनसूयाजी ने अपने पातिव्रत धर्म के प्रभाव से ब्रह्मा विष्णु महादेव इन तीनों देवदेवों को अपना पुत्र बनाया हे मन्मथ! तुमने इन सतियोंकी कथा न सुनी होगी पतिव्रता सदैव सत्कार योग्य होतीहैं ११ ऐसेही द्युमत्सेन राजाकी कन्या महापतिव्रता सावित्री ने मरेहुये अपने पतिको यमलोकसे बुलालिया व उससे सत्यवान् नाम पुत्र उत्पन्न कराया १२ हे काम! भला अग्निकी शिखाको हाथोंसे कौन पकड़सक्ताहै व भुजोंके बलसे तैरता हुआ समुद्रके पार कौन जासक्ता है उसमेंभी गले में शिला बांधकर और रागरहित पतिव्रताको कौन वशकरसक्ता है १३ जब बहुत नीतियुक्त वचन इन्द्रने कामदेव की अच्छी शिक्षाके लिये कहे तब कामदेव सुनकर इन्द्रसे बोला १४ कि आपकी आज्ञासे धैर्य सुहाव और पुरुषार्थ त्यागकर मैं आया था तिसी के लिये हमको निश्चय

रूप बहुत भययुक्त कहतेहो १५ हे सुरेश! जब हम चलेजावैंगे तब संसार में हमारे यशका नाशहोजायगा और इससे जीतेहुये हमको सब्रमान विहीन कहेंगे १६ जे देवसमूह दानव और तपस्यासेयुक्त मुनीन्द्र पूर्वसमय में मैंने जीते हैं वे शीघ्रही हमको हँसेंगे कि यह भयानक कामदेव स्त्रीसे हारगया १७ तिससे हे इन्द्र! तुम्हारे साथ जाताहूँ इस अबला का बल व मान व तेज व धैर्य्य अभी नष्ट किये देताहूं आप भयभीत न हों १८ इसप्रकार इन्द्रको समझाकर काम ने अपने धन्वापर बाण चढ़ाया व आगेखड़ी हुई क्रीडा से कहा कि आप मायाकरके वहां जायँ १९ जहां कि सुपुण्या सत्यस्थिता धर्म्म जाननेवालियों में श्रेष्ठ वैश्यकी भार्य्या सुकलाहै यहांसे जाकर साहाय्यरूप यह हमारा कामकरो हे प्रिये! २० इसप्रकार क्रीडा से भी कहकर फिर कन्दर्प्प ने समीप में स्थित प्रीतिको तुरन्त बुलाया व उससे कहा कि तुम हमारा यह उत्तम कामकरो कि सुन्दर स्नेहों से इस सुकला को परिभावितकरो २१ जिससे कि इन्द्रको देखकर मारे स्नेह के वह अपने चारुनेत्रों से देखने लगे ऐसे २ प्रभावों व गुणों से भरेहुये वाक्यों से उसको वश करो जिससे इन्द्रही में वह अपना चित्तलगावे २२ ॥

चौ० पुनि कोकिलसों कहाबुलाई । सफल पुष्पतरु बैठहु जाई ॥
कूजहु कलरव सहित विधाना । जासों सुकला करै प्रमाना ॥
पुनि मकरन्द वीरसों बोला । सकल रसास्वादित अनमोला ॥
जाय प्रफुल्लित करहु विशेषी । वैश्य प्रिया दीखै अवलेषी ॥
तुम सब रसनापर ह्वै सुस्थिर । तासु बसहु जासों सो पुष्टिर ॥
[illegible]मिनिज सैन्यहि दीन्ह निदेशा । कामभली विधिसों उपदेशा ॥
तीनिलोक मोहन के हेतू । सैन्यहि कह्यहु तबहि झषकेतू ॥
पुनि सुरराज प्रीतिके हेता । जगमोहनहितभयहुसचेता २३।२९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

## छप्पनवां अध्याय ॥

दो० छप्पनकेरे महँ कह्यो सुकला धर्म्म सँबोधि ॥
सकलज्ञानसुरपतिकुमतिकामकुगतिबहुशोधि १

विष्णुभगवान् राजावेनसे बोले कि उसके सत्यके विनाश करने के लिये कन्दर्प्प व इन्द्र दोनों चले तब इस वृत्तान्त को जानकर सुकला धर्म्म से बोली १ कि हे महाप्राज्ञ धर्म्म! कामकी चेष्टादेखो अब मैं तुम्हारे व अपने पुण्य व महात्मापति के अर्थ २ सुख देनेवाले अपने धनसे भरे पुरे इस स्थान को छोड़ती हूं पर इस शरीररूप स्थानको नहीं छोड़ती ३ क्योंकि इसका वसुप्रिय नामहै व इस उत्तम गृहमें सदा हर्षही बना रहताहै सो यह प्रमत्त बुद्धिवाला अत्यन्त दुष्टकाम इसको नष्टकिया चाहताहै क्योंकि वह हमारा शत्रुरूपहै इसमें कुछ संशय नहीं है ४ जो पतिव्रतास्त्री होती उसकापति तपोरूप ब्राह्मण के तुल्य होताहै इससे इस मेरेशरीर गृहमें भी ऐसाही है व घरका राजा धर्म्महै व सत्यभी है ये सब अवश्य मेरेगृहकी रक्षा करते रहेंगे व जिसके गृहमें सत्य ज्ञान आदि पुष्टहोते हैं हे धर्म्म! वहां तुम बसते हो इसमें सन्देह नहीं है व उसी गृहमें पुण्यभी आकर श्रद्धाके साथ क्रीडाकरताहै ५।६ क्षमा शान्ति व कृपाभी आती हैं मेराभीगृह ऐसाहीहै इससे ये सब बसते बसती हैं ऐसेही सत्य दम दया सौहृद ७ प्रज्ञा निर्लोभ ये सब जिस मन्दिर में मैं रहतीहूं रहते हैं पवित्रता स्वभावभी रहते हैं व कामके बान्धव तो अप्रीति निर्दयता आदि हैं वे मेरेगृह में आनेही नहीं पाते अहिंसा सहनशीलता वृद्धि धन्यता ये सब मेरेगृहमें निवास करतीहैं हे धर्म्मराज!८।९ व गुरुओंकी शुश्रूषाभी व लक्ष्मीयुक्त विष्णुभगवानका ध्यानभी मेरेगृहमें रहताहै व अग्नि आदि सब देवताभी मेरेगृहमें सदा आते हैं १० मोक्ष मार्ग का प्रकाश व ज्ञानदीपभी मेरेगृहको प्रकाशित करताहै इन सबों के व धर्म्मात्माओं व पतिव्रताओं के सङ्ग सदा मैं बसती हूं ११ व साधु श्रोतालोगभी मेरेगृह में सदा रहते हैं इनके सङ्ग हे धर्म्मजी ! तुम मेरे गृहमें बसते हो व जितने

साधु स्वभाववाले तपस्वी हैं वेभी मेरेगृह में रहतेहैं व इन्हीं के संग स्वच्छन्दता से लीलापूर्व्वक मैं आनन्द से विचराकरती हूं १२ व जगत्स्वामी वृषवाहन तीन नेत्रवाले ईश्वर भी मेरे गृह स्वरूप शरीर में पार्वतीयुक्त सदा बसते हैं वे मङ्गल करते हैं १३।१४ सो गृहरूप महादेवजी से प्रार्थनाकर संसारसे पार होऊंगी ऐसा मेरा सदन है उसको दुष्ट मदन नाशना चाहता है १५ एकसमय जो विश्वामित्र उत्तम तपकर रहेथे इतने में मतवाले कोकिलों को व कामको सङ्गले मेनकानाम अप्सरा वहां आई पर उसका कुछ वहां किया नहींहुआ गौतमकी महापतिव्रता प्यारी शुभस्त्री अहल्याको इसीदुरात्मा कामने सत्यसे चलायमानकरदिया १६।१७ व सत्य धर्म्म जाननेवाले बहुतसे मुनि तथा बहुतसी बेचारीपतिव्रता स्त्रियां इसदुष्टात्मा कामके अग्निसे जलगईं १८ वही दुर्धरदुःसह अत्यन्त सत्यमें निष्ठुरपापी काम नित्य मुझको देखताहै सत्य कहां ठहरताहै १९ व मुझको अकेलीजान हाथोंमें धनुर्बाण लिये वीतिहोत्र नाम अपने सैनिकोंके संग मारनेके लिये आता है व पापकरनेके लिये पाखण्डकिये अपाखण्डी हम लोगों के खण्डन करने में उद्यत है व पाप बुद्धिसे पापीमदन मुझको पीड़ादेना चाहताहै इसके तेजसे जलीहुई मैं अब अन्य नयेगृहमें चलीजातीहूं जो नवीनहो व उसमें की स्त्रियों का पति कोई महाप्रबल राजाहो पुण्यात्माकृकलका यह मंगल व कल्याणदायक गृह है जिसका सुकलानाम है उसके भस्म करने को यह दुष्ट काम उद्यत है २०।२४ व यह बलीइन्द्रभी उसी कामके साथलगा है इससे आता है कामही के संग जाने में जो दुर्द्दशाहुई है उसपूर्व्ववृत्तान्त का स्मरण नहीं करता जोकि अहल्या केसंग भोगकरने से नपुंसक होगया था पीछे बड़ी प्रार्थना करने से फिर पौरुष को पाया था वहां से काम तो प्रथमही भागखड़ाहुआ था २५।२७ इन्द्र ने दारुण दुःखभोगे थे व बड़ाभारी शाप गौतम-जीने दियाथा कृकलकी प्रिया पुण्यचारिणी इस सुकला के २८ यह कामसंयुक्त इन्द्र मारनेमें उद्यतहैजैसे इन्द्र समेत काम न आवे तैसा करो २९ हे महाबुद्धिमान्! बुद्धिमानों में श्रेष्ठ धर्मराज तब धर्म

राजबोले कि तेज कम करदूंगा और कामकी नाश ३० यह एक उपाय मैंने देखाहै तिसको यहां देखो यह महा बुद्धिमती के शकुन जाननेवाली रूपचारिणीहै ३१ पुण्यकारी स्वामीका आगमन शकुनके प्रभाव से स्वामी के आगमन से ३२ स्वस्थ चित्त निस्संदेह होजाय दुष्टोंसे नाशको प्राप्त न हो यह कह प्रज्ञाको भेजा वह सुकला के गृहकोगई ३३ व ज्योतिर्वित्पण्डित बनकर बड़ाशब्द करतीहुई पहुँची तब सुकलाने बड़ामान वपूजन धूप दीपादि से उसका किया ३४ वह ब्राह्मणका रूप तो धारणही कियेथी प्रथम विचारतीथी कि हमसे कुछ सुकला पूँछेगी पर जब उसने कुछ न पूँछा तो आप विप्ररूप से बोली ॥

चौ० तवपतिआवनवैश्यकुमारी । होइहिगये दिवसतिन चारी ॥
स्थिरमति होहु न करहु सँदेहू ।सतयेंदिन आपनपतिलेहू ३५।३६
यह सुनि मंगल वचन पुनीता । प्रमुदितभई सुथिरकरिचीता ॥
धर्म्म शकुनसुनि निश्चयजाना । स्वामिआगमनमनललचाना ३७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेपंचाशत्तमोध्यायः ५६

## सत्तावनवां अध्याय ॥

दो० सत्तावनयें महँ मदन प्रेरितक्रीड़ा जाय ॥
सुकलाकहँलाईवनहिं सुरपपासयहगाय १

श्रीविष्णुभगवान् राजावेनसे बोले कि जब ब्राह्मणकेरूपसे क्रीड़ा ने सुकला के पति के आगमन की कथा कही भी पर पुरुष जानकर सुकला पतिव्रता ने विशेष कुछ न पूँछा तब वहाँसे जाकर क्रीड़ा फिर एक पतिव्रतास्त्रीका वेषधारणकर चारुपतिव्रता सुकलाके गृह मेंगईव उसको आईहुई देख वह सत्य स्वरूप युक्त धन्यरूप सुकला आदर समेत बोली सुन्दर पुण्यवाक्योंसे क्रीडाकी बड़ी पूजाकी तब क्रीडा मुसुकाकर विश्वविमोहन वचन बोली कि सखि! और तो हमारे सब अच्छा है परन्तु हमारे स्वामी कहीं विदेश को चलेगयेहैं और वे हैं तो बड़ेगुणज्ञ व प्रबल धीर विद्वान् महिमा युक्त अत्यन्त पुण्या-

त्मा परन्तु अत्यन्त पापिनी हमको छोड़कर कहीं चलेगयेहैं इस बात को क्रीडाने बहुत पल्लवित करके विधिपूर्व्वक जब सुकलासे कहा तो उसे सुनकर सुकलाने अपने शुद्ध भावसे क्रीडासे पूँछा कि हे सुन्दरि! तुमको तुम्हारेपति क्योंछोड़गये ३।४ उसने कहा कि छोड़ने का कारण मैं नहीं जानती मैं तो जिस २ कामकी इच्छा वे करते थे सब तुरन्त करतीथी व सब पुण्य कर्म्म करके अपने भर्त्ताके वचन मानतीथी व सदा उन्हींका ध्यान स्मरण कियाकरती थी व एकान्तमें सदा अपने गुणों से उनको प्रसन्न करती थी शुश्रूषा से सदा प्रसन्न रखतीथी ५।७ यह सुन सुकलाने कहा कि हमभी कर्म्म मन वचनसे अपने स्वामी की सेवा यथाशक्ति सदा करती थीं आज्ञा के प्रतिकूल कभी नहीं चलीं परन्तु यह कुछ हमारे पूर्व्वजन्म के कर्म्मका बिपाकहै जिससे हमारा भर्त्ता हम अभागिनी को छोड़ कर चलागया ८ हे सखे! मैं अपने जीव व देहको न धारण करूंगी पति से हीन निर्घृण स्त्रियां कैसे जीवती हैं ९ रूप शृङ्गार सौभाग्य सुख संपदा महाभाग स्वामीही स्त्रियोंको शास्त्रों में कहा है १० क्रीडा यह सुन कुछ न बोली कुछ बिचारने लगी व सुकलाने जो कीडा ने क्रीडा के अर्त्थ कहा उसको सत्यही माना ११ व जाना कि यह हमसेभी अधिक प्रतिव्रताहै इससे वह पतिदेवता महाभागा सुकला उसके विश्वास में आगई व अपने पूर्व्वके पति सेवा रूप कर्म्म क्रीडासेकहे जब सुकलाने अपने पूर्व्वके समाचार संक्षेपसे कहे जैसे कि उसका पति उसे छोड़ पुण्य तीर्त्थयात्रा करने को गया था व उसको संग नहीं लेगया था १२।१३ हे मनस्विनि! जैसे २ उसको इन्द्रकी ओरसे दुःख मिले सत्य तप सब उसने क्रीडा से वर्णन किये व क्रीडा भी पतिव्रता का वेष धारण कर वहीं रहने लगी १४ एक दिन उस क्रीडा ने सुकलासे कहा कि हे सखे! देखो एक दिव्यवन तुमको दिखावें जो दिव्यवृक्षोंसे अलंकृत रहता है १५ वहां एक तीर्त्थभी ऐसा पुण्यदायक है कि ब्रह्महत्यादि महापातकों का नाशकरताहै नानावल्ली वितानोंसे व विविध प्रकार के पुष्पोंसे शोभित रहताहै १६ हे श्रेष्ठमुखवाली! अब पुण्य

हम तुम दोनों जनी चलें ऐसे मायारूप वचन सुन एक दिन वह सुकला क्रीडाके साथ उस वनको गई वह नन्दनवनही के समान उत्तम था सब ओरसे सुगन्धित पुष्प फूलरहे थे सैकड़ों कोकिला नाद कररहीथीं १७। १८ भ्रमर मधुर शब्दोंसे सबओरसे गारहे थे कूजतेहुये पुण्य पक्षियोंके शब्दों से वह वन मनमनारहा था १९ चन्दन आदि सुगन्धित वृक्षोंसे विराजित था सब भोगोंसे सम्पूर्ण व पापी वसन्तऋतुसे युक्तथा २० वसन्त व कामने सुकला के मोहनेके लिये बनायाथा उस क्रीडाके साथ सुकला उस सर्वभावन वनमें पैठी २१ जोकि सुखदायी और पुण्यकारी था हे राजन्! उसके साथ सुकला वन देखतीभई और मायाके भावको नहीं जाना २२ फिर देव मूर्ति से प्रकाशित इन्द्रजी आये और तिसी दूती के साथ कामदेवभी तहाँ आगया २३ सब भोगोंके पतिहोकर कामलीला से युक्त इन्द्रकामसे बोले कि यह सुकला प्राप्तहै २४ हे महाभाग! प्रहारकीजिये क्रीडा के आगेस्थितहै क्रीडाने मायाकरके तुम्हारे निकट प्राप्त कियाहै २५ अब पौरुष दिखाओ जो होतो निश्चयकरो यहसुन कामदेवइन्द्रसे बोला कि प्रथम तुम अपना दिव्य रूपसुकलाको दिखावो तब हमअपने पांच दारुणबाणोंसे इसेमारेंयह सुन इन्द्रबोले कि हे मूर्ख! वह तेरापौरुष कहांहै जिसके बलसे तूने तीनोंलोकोंकी विडम्बनाकीथी २६।२७ अब हमारे आश्रयसे इससे युद्धकरना चाहताहै तब काम बोला कि उन देवदेव महादेव शूलीने २८ पूर्व समय में जबसे हमाराशरीर नष्टकिया है तबसे हमारे शरीरही नहीं है जब पुरुषको देखकर स्त्री इच्छा करती है तो हम फिर शरीर धारणकरके उसके शरीर में प्रवेशकरते हैं व जब पुरुष स्त्रीको देख मैथुनकी इच्छा करताहै तो उसके शरीरमें प्रवेशकरके प्रेरितकरते हैं २९।३० स्त्रीने पूर्वसमय जिसरूपको देखा उसके भीतर प्रवेशकरके फिर उसीरूपका स्मरण मैं कराताहूँ यदि पुरुषने प्रथम स्त्रीको देखा तो उसके अङ्ग २ में प्रविष्टहोकर उस स्त्रीकेरूपका स्मरण बार २ कराताहूं ३१ अदृष्टको आश्रयकर पुरुषको मैं उन्माद युक्त कराताहूँ तैसेही निस्संदेह नारी रूपको भी उन्माद युक्त

करताहूँ ३२ हे इन्द्र! स्मरणसे स्मर हमारा नाम हुआ है तिसको देखकर तैसाही रंग वस्तुरूप आश्रय करताहूं ३३ अपने तेजके प्रकाश से बाध्य बाधकताको प्राप्त होता है नारी रूपको आश्रयकर धीर पुरुषको मोहित करताहूं ३४ पुरुषको आश्रयकर अच्छी स्त्रीको मोहित करताहूं हे इन्द्र! रूपहीन मैं हूँ हमको रूपदीजिये ३५ आपके रूपको आश्रयकर तिसयथेप्सितको साधन करूंगा ॥

चौ० इमिकहिसुरपतिसोंकरिक्रोधा । कामप्रबलविजयीबड़योधा ॥
परमसखा ऋतुराजहिं टेरा । पुष्पायुध करि निजमन हेरा ३६
कृकलबधू पातिव्रत भूषित । सुकला सबविधि पापअदूषित ॥
तासुहननकी करि अभिलाषा । मदन वसन्त पाहिं यह भाषा ३७
उद्यत होहु हनत हम याके । नयन माहिं शर पञ्चक बांके ॥
यहकहि मनसिज बाणचलाये । ललकि हिये सुकलाकेछाये ३८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनो
पाख्यानेसुकलाचरित्रेसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

## अट्ठावनवां अध्याय ॥

दो० अट्ठावन महँ इन्द्र अरु सगण मदन लहिहारि ॥
सुकलासों निजगेहगे यहकह बहुत विचारि १

श्रीविष्णुभगवान् राजा वेनसेबोले कि वैश्यकी प्राणप्रियासुकला महापतिव्रता क्रीडाके साथ उस मायारूपवनमें प्रवेशकर सब ओर से मनोहर सघनवन देखकर उस सतीने उसी अपनीसखीसे पूंछा१ कि यह पुण्यदायक दिव्य मनोभिराम सिद्ध व सब श्रेष्ठ कामप्रवरोंसे युक्त वन किसका है हे सखे! हमसे कहो२ इतनासुन क्रीडा बोली कि सब गुणों से युक्त पुष्पों से आकुल कामफलों से युक्त अपने स्वभाव से परिमथनशील कामने बनाया है सब ओर देखो तो कैसादिव्य है ३ ऐसावाक्य सुनकर बड़ेहर्ष से युक्तहोकर सुकलाने जो चारो ओरदेखा तो दुरात्मा कामके बड़े वृत्त देखे ४ व सब ओरसे पवन के आकर्षणसे सुगन्ध चला आताथा व वायु पुष्प गन्धकी लपटों से सनाहुआ सब ओरसे आरहा था ५ वह सुगन्ध

अपने आप सुकलाके घ्राणोंमें पैठाजाताथा वह वरांगना अपनेआप पुष्पोंकी सुगन्ध को नहींसूँघती थी ६ व उन पुष्पों के रसोंको उस महापतिव्रताने न ग्रहणकिया उसमें भ्रमण तो करतीरही परन्तु कामदेव के उन सुखदायक पदार्थों से रहितरही ७ वृक्षोंके लाल २ जोपत्र कामने बनायेथे सब लज्जितहोकर भूतलपर गिरपड़े मञ्जरियोंसे पुष्प अपनेआप उसके आगे गिरे पर उसने न सूँघा ८ तिससे जीताहुआ यह लवरूप रस भूमि में गिरा फिर अत्यन्त दीनात्मा मकरंद फलसे भूमिमें गिरा ९ उन पुष्पों के रसों को केवल मक्षिका खातीथीं जैसे रणमें मरा तैसेही मक्षिकासे खायाहुआ नदीके प्रवाहके साथ बहताथा १० पवन मारेलज्जाके अति मन्द २ बहनेलगा तिसको पक्षी हँसने लगे सुखमानन्द निर्भर अनेकप्रकारके शब्दों से चलतेभये ११ वनके बीचमें वृक्षोंमें स्थित पक्षीलोग प्रीति से रहते भये इस प्रकार सुकलासे पराजित होकर सब नीचेहोगये १२ तब प्रीति से काम की स्त्री रतिजाकर सुकला से हँसकर बोली कि हे भद्रे ! तेरा कल्याणहो अच्छीतरह से तो आई अब प्रीतिपूर्व्वक इन इन्द्रके संग विहारकर १३ इन्द्र महात्माको तुम्हारा निर्मलरूप इष्ट है जो तुमको इष्टहो तो कहिये मैं निस्सन्देह लेआऊंगी १४ सूतजी बोले कि उन स्त्रियों को बतलाती हुई देखकर अच्छे वचन सुनकर बोली कि रतिको ग्रहणकर मेरा महाबुद्धिमान् स्वामी चलगया है १५ जहां मेरा स्वामी स्थित है तहां मैं भी पति संयुक्त रहूंगी तहां कामना मेरीजानेकी है इसमें मेरी प्रीति है यहदेह आश्रयरहित है १६ रति और प्रीति दोनों ये वचन सुनकर लज्जित होगये और लज्जितही दोनों जहां महाबलवान् कामथा वहां गईं १७ इन्द्रकी देहमें महावीर काम आश्रित था धनुषको खींचता नेत्रको लक्ष्य और महाबलवान् था इस वीरसे रति और प्रीति दोनों बोलीं १८ कि हे महाप्राज्ञ ! यह दुर्जय है अपने पौरुष को त्यागिये पतिकी कामना वाली महाभाग्यवती और सदैव पतिव्रता है १९ तब कामदेवजी बोले कि इसको महात्मा इन्द्र का रूप देखना चाहिये हे देवि! जो देखेगी तो निस्सन्देह मैं मारूंगा २० तब इन्द्र अन्यवेष

धारणकर महारूपवान् उसके पीछे २ घूमनेलगे २१ सब भोगके पदार्थोंसे समाकीर्ण व सब आभरणोंसे भूषित दिव्यमाला दिव्य वस्त्र धारणकिये दिव्यसुगन्धित अनुलेपन लगाये २२ उस दूतीके संग वहां आकर आगे खड़ेहुये जहां वह पतिव्रता सुकलाथी व वह दूती सत्यचारिणी महाभागा सुकला से बोली २३ जैसे कि पूर्ववाली दूती प्रीतिसे बोलीथी कि हे सखि ! यहां आयेहुये इन पुरुषोत्तमको तुम क्योंनहीं मानतीहो २४ यहसुन सुकलाबोली कि हे भद्रे ! तुम्हारा कल्याण हो मैं अपने भर्त्ताके महात्मा पुत्रोंसे रक्षितहूँ किसी का मुझ को भयनहींहै २५ क्योंकि वे बड़ेशूरहैं व पुरुषों का रूप धारणकिये सबओरसे मेरीरक्षा करतेरहते हैं मैं स्वतन्त्र नहींहूँ सदा अपनेपतिके कर्मके करने में व्यग्र रहतीहूँ २६ हमारे साथ रमण करते हुये आप क्यों न लज्जित होंगे २७ मरणसेभी निर्भय आप कौन आये हैं तब इन्द्रबोले कि वनके मध्यमें प्राप्त तुमको इसप्रकार देखती हैं २८ तुमने शूरस्वामी के पुत्र कहेहैं कैसे हम देखें हमारे आगे दिखाइये २९ तब सुकला बोली कि अपने सब वर्ग के स्वामी भावमें प्रवेश कराकर धृति बुद्धि गति मति इनसे सत्य को संन्यास कराय अचल सब धर्म वाला नित्य युक्तमहात्मा मदन बलसहित धर्मात्मा सदैव मेरी रक्षाकरते हैं ३० हमको दमगुण पवित्रता से धर्म सदैव इस प्रकार रक्षाकरता है जितनी देर में नेत्र फड़कता है उतनाभी अवकाश मुझे नहीं है व न हमको अवकाश है देखो हमारे आगे सत्य खड़ा है व शांति क्षमा भी खड़ी है महाबलवान् ज्ञान भी खड़ा है व बड़ाभारी यश भी हमारे सम्मुख खड़ा है व हमारी सदा रक्षा करता है व दृढ़ बन्धनों से हम को ऐसे बांधे है कि किसी ओरको मुख नहीं करसक्तीं इसके विशेष हम अपने गुणों से भी नित्य रक्षित हैं ३१ व सत्यादिक सब सदा हमारी रक्षा किया करते हैं व धर्म बुद्धि दम पराक्रमादि सबके सब रक्षा करते रहते हैं ३२ जब इतने हमारी रक्षाकरते हैं तो क्या हमारी बलसे प्रार्थना करती है ३३ आप कौनहैं जो निर्भयहोकर दूतीके साथ आये हैं सत्य धर्म पुण्य ज्ञानादिक बड़ेप्रबल रक्षक हैं व ये सब हमारे

पतिकी आज्ञासे सदा हमारी रक्षाकरते हैं ३४ व दम शान्ति में परायण हम अपने आपभी रक्षितरहती हैं हमको जीतने को साक्षात् इन्द्रभी समर्थ नहीं है ३५ व यदि रूपधारणकरके काम भी आवेगा तो वह भी न जीतसकेगा क्योंकि हम सत्यादिकोंसे सदारक्षित रहती हैं ३६ इससे काम के बाण निरर्थकहोंगे इसमें कुछभी संशय नहीं है यहां से भागजा नहीं तो धर्मादिक महाभट तुझको मारडालेंगे ३७ दूरहो भागजा यहां इस समय न खड़ी हो व जो रोकने परभी खड़ी रहेगी तो भस्म होजायगी ३८ क्योंकि बिना हमारेपति और किसी पुरुष में ऐसी शक्ति नहीं है जो हमारारूप देखसके जैसे अग्नि काष्ठ भक्षण करता है वैसेही वह हमारा भक्ष्य होजायगा इस में संदेह नहीं है ३९ ऐसा सुनकर इन्द्रने कामकी ओर देखकर कहा कि इस का पौरुषदेखो अब अपने पौरुषोंसे इस के संग युद्धकरो ४० यह कहकर इन्द्रादिक जैसे आये थे वैसेही अपने २ स्थानों को चलेगये शाप के भयसे आतुरहुये कि ऐसा न हो कि चलेजाने पर भी शापदे ४१ जब सब चलेगये तो महापतिव्रता सुकला पतिके ध्यानसे पुण्यसंयुक्त अपने गृहको आई ४२॥

चौ० सर्व्वतीर्थमयसबसुखदाई। पुण्ययज्ञमयस्वगृहसुहाई॥
सुकला पातिव्रत परनारी। महीपाल निज गेह पधारी ४३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेऽष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

## उनसठवां अध्याय॥

दो० उनसठमहँ मगकृकल सों कहिन भार्य्याके धर्म्म॥
सफलहोतनहिं यहकहा धर्म्म अपर नहिंकर्म्म १

श्रीविष्णुभगवान् राजावेन से बोले कि इतनेमें कृकलवैश्य सब तीर्थोंकी यात्राकर अपने गृहको चला व सब साथियों समेत बड़े आनन्द से आताथा १ मार्गमें चिन्तना करता था कि संसार मेरा सफल हुआ अब मेरे पितर तृप्त होकर स्वर्गको जायँगे इसमें सं-

शय नहीं है २ तबतक धर्म उसके पितामहोंको बांधकर प्रत्यक्ष उस के आगे आन खड़ाहुआ व आगेसे बोला कि तेरा उत्तम पुण्यनहीं है ३ दिव्यरूप धारण कियेहुये बड़ी देहयुक्त होकर कृकलसे बोला कि तुमको तीर्थफल नहीं है वृथा परिश्रम कियाहै ४ अपने आप सन्तोष कररह तेरा उत्तमपुण्य नहीं है ऐसा सुनकर कृकलवैश्य अतिदुःख से पीड़ित हुआ ५ व बोला कि आप कौनहैं जो मुझसे ऐसा कहते हैं किस कारण से पितामहों को बांधाहै व किस दोषके प्रभावसे इसका कारण हमसे कहिये ६ कैसे तीर्थका फल नहीं है वहमारी यात्रा कैसे सफल नहींहै सब हमसे कहो यदि इसका फल जानतेहो ७ तब धर्म बोले कि जो कोई पवित्र अत्यन्त पुण्यकारिणी अपनी भार्य्या को छोड़कर तीर्थयात्रादि धर्म्म करनेजाता है उस के पुण्यका सब फल वृथा होजाता है इसमें संशय नहीं है ८ धर्म्माचारमें पर पुण्यरूप साधुव्रत में परायण पातिव्रतमें रत सुगुणवती व पुण्य के ऊपर वत्सल अपनी भार्य्याका परित्याग करके जो कोई धर्म्म कार्य करनेजाते हैं उनका कियाहुआ धर्म्म सब वृथा होजाताहै इसमें संशय नहींहै ९ । १० सब आचारों में पर भव्यरूप धर्म्म साधन में तत्पर अतिशय पतिव्रता व सर्व्वदा ज्ञानमें तत्पर ११ इस प्रकार के गुणोंसे युक्त जिसकी महापुण्य पतिव्रता भार्या होती है उसके गृहमें महा पराक्रमी देवगण सदा टिके रहतेहैं १२ व गृह केमध्यमें टिकेहुये उसके पितरलोग उसका कल्याण चाहतेहैं गंगादि पुण्य नदियांवसब सागरभी उसके गृहमें रहतेहैं इसमें अन्यथा नहीं है १३ जिसके गृहमें पुण्यमें तत्पर पतिव्रता स्त्री होती है उसके गृहमें सब यज्ञ धेनु व ऋषिलोग रहतेहैं इसमें अन्यथा नहीं है १४ वहीं विविध प्रकारके पुण्यकारी सब तीर्थ रहते हैं भार्य्या के योगसे ये सब वहां स्थित रहते हैं इसमें अन्यथा नहीं है १५ पुण्यरूप भार्य्याही होने से उत्तमगृहस्थी का धर्म्म होता है व गृहस्थाश्रम से श्रेष्ठ कोई धर्म्मभूतल पर नहींहै १६ गृहस्थका गृहही पुण्य सत्यपुण्ययुक्त होता है हे वैश्य ! गृहस्थकाघर सर्व तीर्थमय व सर्व्व देवमय होताहै १७ क्योंकि गृहस्थाश्रम के आश्रित

होकर सब जन्तु जीतेहैं इससे गृहस्थाश्रम के समान अन्य आश्रम हम नहीं देखते १८ जिस पुरुष के घर में मंत्र अग्निहोत्र देवताओं की पूजाहोती सब सनातन धर्म दान आचार वर्तमान रहतेहैं १९ इस प्रकार जो भार्यासे हीन होताहै तिसका घर वन समान है यज्ञ और अनेकप्रकारकेदान नहीं सिद्धहोतेहैं २० स्त्री हीन पुरुषके महाव्रत सब पुण्यकारी अनेक प्रकार के धर्म कर्म सिद्ध नहीं होतेहैं २१ धर्मसाधन के हेतु भार्य्या के समान तीर्थ नहीं है इसको तुम सुनो गृहस्थका तीनोंलोकमें और धर्म नहींहै २२ पुरुषके जहां स्त्री हैवहीं घरहै अन्यथा नहीं है गांव अथवा वन में सब धर्मका साधन होता है२३ भार्य्याके समान कोई तीर्थ नहींहै न भार्य्या के समान कोई सुखही है न भार्य्याके समान कोई पुण्यही तारने के लिये व हितके लिये है २४ हे नराधम ! सो धर्म्मयुक्त पतिव्रता अपनीभार्य्याको छोड़कर और धर्म युक्त घरकोछोड़कर तीर्थयात्राको जाता है तेरे धर्म्म काफल कहां है २५ क्योंकि स्त्री विना जो तीर्थ श्राद्ध दान तूने किया उसदोष से तेरे पूर्व्वज पितामह बँधुआ हैं २६ तुम चोरहू जिसनेविना स्त्रीके श्राद्ध दानादिकियेवे चोरहैं जिन्होंनेतुम्हारे हाथ कादियालिया व खाया तुमने विना अपनी स्त्रीके जो अन्न श्राद्धमें दिया उसका कुछभी पुण्यनहींहुआ २७ क्योंकि पुत्र वह है जो श्रद्धापूर्व्वक श्राद्धकरै व भार्य्याके हाथ के बनाये हुये पिण्डलेका दानकरे ऐसा करनेसे जो पुण्यहोताहै उसकाफल कहतेहैं २८ अमृतके पानसे जैसे मनुष्योंको तृप्तिहोतीहै तैसेपितरों को श्राद्ध सेहोती है हम सत्य सत्य कहतेहैं २९ क्योंकि गृहस्थीकेसब धर्म्मोंकी स्वामिनी भार्य्या होतीहै सो हे मूढ़ ! तूनेउससे छलकरके चोरीसे तीर्थयात्राकी इससेतेराकियाहुआसबवृथा हुआ ३० ये तेरे पितामहभी चोरहुये जिन्होंने विना स्त्रीके सङ्ग दियेहुयेको ग्रहणकिया क्योंकि भार्य्याकेहाथके पकायेहुये अन्न अमृतोपम हैं ३१ क्योंकि उनको पितर हर्षित मन से भोजन करतेहैं उसीसे तृप्तहोते हैंव सन्तुष्टभी होते हैं ३२ इससे विना भार्य्याके पुरुषका धर्म्म नहीं सिद्ध होता ॥
चौ० भार्य्यासम नाहिं तीरथकोई । सद्गतिदायि पुरुषकहँहोई ॥

भार्य्या बिनकर पुण्यनहूता । विफलहोयसब नहिंमजबूता ३३।३४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखंडभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

# साठवां अध्याय ॥

दो० सठयें के महँ कृकलसह सुकला कीनशराध ॥
तासों ब्रह्मादिक मुदित वर दै हरे पराध १

यह सुनकर कृकलवैश्य धर्म्मजीसे बोला कि मेरी सिद्धि कैसेहो व मेरे पितरोंकी मुक्ति कैसेहो हे धर्म्मराज ! वह विस्तारपूर्व्वक हम से इसीसमय कहो १ धर्म्मजी बोले कि हे महाभाग! गृहको जाओ तुम्हारे विना तुम्हारी भार्य्या बहुत दुःखितहै इससे धर्म्मचारिणी अपनी पत्नी को जाकर संबोधन करो २ व गृहमें जाकर उसीके हाथ से पायस व पिंड बनवाकर श्राद्ध दानकरो व पुण्यतीर्थों का स्मरण करके उत्तम देवताओं की पूजाकरो ३ तब तीर्थयात्रा करने की तुम्हारी सिद्धिहोगी क्योंकि विना भार्य्याके जो कोई धर्म्म करना चाहताहै ४ वह गृहस्थाश्रम को लोपकर अकेले वनको जावे संसार में उसका किया विफल होताहै उसको देवता नहीं मानते हैं ५ व जब गृहस्थ अपनी गृहिणी के संग यज्ञ करता है तो उसके सब यज्ञ सिद्धहोते हैं व अकेले धर्म अर्थ साधन के लिये समर्थ नहीं होताहै ६ विष्णु जी बोले ऐसा कहकर धर्म्म जैसे आये थे वैसेही चलेगये व धर्म्मात्मा कृकल भी अपने गृहको चला ७ व अपने घरमें पहुँचकर उस बुद्धिमान् ने अपनी पतिव्रता स्त्री को देखा व उसने भी पतिके संग जो भारवाहक गयाथा उसके कहने से जाना कि हमारा स्वामी आया ८ तब उस स्त्रीने धर्मके जाननेवाले स्वामीको देखकर स्वामी के आने में पुण्यकारी मंगलाचार किया ९ फिर धर्म्मात्मा ने धर्मका विचेष्टित कहा तब महा भाग्यवती ने आनन्द देनेवाले स्वामी के वचन सुने १० और धर्मवाक्यकी प्रशंसा की व मान किया वि॰ बोले कि पहुँचने के पीछे उस कृकल वैश्यने अतिपुण्यदायक

श्राद्ध देवपूजा के गृह में स्थित होकर उस पतिव्रता भार्य्या के संग
किया तब पितर देव व गन्धर्व्व विमानों पर चढ़कर आये १२ व
मुनिलोग भी आये सबके सब उन दोनों महात्मा स्त्री पुरुषोंसे बोले
उनमें हम व ब्रह्मा और पार्व्वतीसहित महादेव १३ सब देव गन्ध-
र्व्वादि इस तुम्हारी स्त्रीके सत्य से बहुत संतुष्टहुये व फिर सब देव-
गण महात्मा व धर्म्मज्ञ सत्य पण्डित उन दोनों स्त्री पुरुषों से बोले
भी कि १४।१५ हे सुव्रत! स्त्री समेत तुम्हारा कल्याणहो वरमांगो त
कृकल बोले कि हे सुरोत्तमो ! किसके पुण्य के प्रसंग से वा तपस्य
से १६ आपलोग स्त्री समेत हमको वरदेने के लिये आये हैं तब
इन्द्र बोले यह चारुमंगलरूप पतिव्रता महाभाग्यवती सुकलाहै १७
इसके सत्यसे हमलोग संतुष्ट होकर वरदेने के लिये आये हैं जो
चाहो वरमांगो संक्षेप से पूर्वका वृत्तान्त कहा है १८ जब अपनी
भार्य्या के पातिव्रतादि धर्म्मयुक्त माहात्म्य देवताओं के मुखोंसे सुना
तो भर्त्ता अत्यन्त हर्षितहुआ व उसके संग वह धर्म्मात्मा अति
प्रसन्नहो व प्रेमके मारे व्याकुल नेत्र होगया १९ व वार वार
उन दोनोंने उन देवताओंके दण्डवत् प्रणाम किया व कहा कि हे
महाभागो ! जो सनातन आप तीनों देवदेव प्रसन्नहुये हो २० व
अन्य देवता व ऋषिलोगभी प्रसन्न हुयेहो तो मेरे ऊपर कृपा क-
रके यह वरदें कि जन्म २ हम दोनों देवताओं की भक्तिही किया
करें २१ व आप लोगोंके प्रसादसे धर्म्म व सत्यमें हमारी प्रीति हो
पीछे स्त्री और पितामहों सहित हम श्रीवैष्णवलोकको जायँ बस हे
देवदेव ! यदि हमारे ऊपर सन्तुष्टहुये हो तो यही वरदेवो और कुछ
हमको न चाहिये तब सब ब्रह्मादि देवदेवेश बोले कि ऐसाही हो
हे महाभाग ! जो २ चाहतेहो सबहोगा २२।२३ फिर उन दोनोंके
ऊपर सब देवताओंने फूलोंकी वर्षाकी गीतके तत्त्वके जानने वाले
गन्धर्वों ने महापुण्यकारी ललित सुन्दर स्वर से गीतगाये अप्स-
राओंने नाचकिया फिर गन्धर्वों समेत देवता अपने २ स्थानोंको
२४।२५ वर देकर उस पतिव्रता सुकलाकी स्तुति करतेहुये चलेगये
हे महाराज ! तुमने पूँछा था कि भला स्त्री कैसे तीर्थहोती है सो

नारी तीर्थ इस प्रकारसे होती है हमने कहा अब और क्या पूँछते हो वह भी कहैं २६ ॥

चौ० यहतुमसनहमभूप बखाना । पुण्याख्यान पुनीत पुराना ॥
जो यहि सुनत भूप सो प्रानी । छूटत अघगण सों हमभानी २७
श्रद्धा सों सुकला की गाथा । जो नारी सुनि नावे माथा ॥
सो सौभाग्य पौत्र सुत पावै । सत्य लहै निजपति मनभावै २८
धन अरु धान्य मोदयुत लहई । पति सँग सुखसों नित्य विहरई ॥
जन्म जन्म पातिव्रत धर्म्मा । पावै भावै स्वामिसुकर्म्मा २९
ब्राह्मण पढ़े वेदविद होई । क्षत्रिय पढ़ि विजयी नहिं गोई ॥
वैश्य पढ़े धन धान्य समेता । होय न संशय गुनहु सचेता ३०
शूद्रपढ़े करि आदर जोई । सुख सुत धन युतसों नितहोई ॥
अरु सब साधारण नरनारी । यहि पढ़िहोत धर्म अधिकारी ३१
सदाचार युत सदा सुखारी । विपुल धान्यधन रमा विहारी ॥
धर्म्म कर्म्मकारक अघ हीना । होत वंश महँ अतिहि प्रवीना ३२

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने सुकलाचरित्रेषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

## इकसठवां अध्याय ॥

दो० इकसठयें महँ सुत तिरथ सूचन हित कह गाथ ॥
कुण्डलसुत पितृ भक्ति अरु पिप्पल तप यकसाथ १

यह इतिहास सुनकर राजावेन श्री विष्णुभगवान् से बोले कि सब तीर्थोंसे उत्तमोत्तम भार्य्यातीर्थ आपने कहा अब पुत्रोंके तारनेमें श्रेष्ठ पितृतीर्थ हमसे कहिये १ श्री भगवान्जी बोले कि महा क्षेत्र कुरुक्षेत्र में एक महाप्राज्ञ कुण्डलनाम ब्राह्मण अपनी भार्य्या समेत रहते थे कुण्डल महात्मा का सुकर्मानाम सज्जन पुत्रहुआ २ पिता माता धर्म के जाननेवाले शास्त्र में निपुण महात्मा थे वे अति वृद्ध होने के कारण दोनों प्राणी पीड़ित रहते थे ३ परन्तु उनदोनों की सेवा बड़ी भक्ति व कृपा से उनका पुत्र करताथा जो कि बड़ाधर्म्मज्ञ व भावनायुक्त था वह रात्रिदिन माता पिताकी शुश्रूषा छोड़

कुछ अन्यकार्य्य करताही न था ४ व उसी अपने पिताही से उसने चारोवेद व अनेक शास्त्र पढ़ेथे इससे आचारमें तत्पर चतुर धर्म्मज्ञ व ज्ञानमें वत्सल था ५ माता पिताके चरणादि सब अंग अपनेही हाथों से चापे पाद भी प्रक्षालन करे स्नान भोजनकी सब क्रिया अपनेही हाथों से ६ बड़ी भक्तिसे करे व उनके स्वभाव के अनुकूल सब कर्म करतारहै यहांतक कि सेवा करते २ तन्मय होगया हे रा-जेन्द्र! ध्यानदेकर माता पिताकी ऐसी शुश्रूषा उसनेकी ७ सूतजी इसी कथा को शौनकादिकों से कहते थे इससे बोले कि उन्हींदिनों में महात्मा कश्यपजी के कुलमें एक पिप्पलनाम विप्र था ८ वह मत्सर व आत्मा को जीतकर निराहार तप करताथा दया और दान युक्तथा इंद्रियोंको दमन करलियाथा व काम क्रोधसे रहित होकर९ शांतिमें परायण व ज्ञान ध्यानमें तत्पर वह ब्राह्मण दशारण्य देश को गया वहां सब इन्द्रियों को जीतकर मनसहित सबों को अपने वशमें करलिया और तपस्या करतारहा १० तिनके तपके प्रभावसे सुन्दर युगमें लड़ाई छोड़कर प्राणी सगेभाइयों के समान वसते थे ११ मुनिलोग तिसकी तपस्या देखकर विस्मयकरते भये कि किसीने ऐसातप नहींकिया जैसा इसमुनिने किया १२ इन्द्रादिक देवता बड़े विस्मय को प्राप्त हुये इसकी तपस्या बड़ी तीव्र शम इन्द्रिय संयम १३ निर्विकार उद्वेगहीन काम क्रोधरहित शीत वात घाम को सहता पर्वतकी नाईं स्थित था १४ विषयमें विमुख धीर मनसे अतीत सं-ग्रहथा जब वह द्विजसत्तम किसीका शब्द सुनता १५ तो उस स्थान को छोड़ अन्यत्र चलाजाता व वहां एकाग्रमनकरके ब्रह्मके ध्यान में मग्न होजाता इससे उसका कमल समानमुख सदा आनन्दयुक्त रहता १६ यहांतक कि सुस्थिरहो ध्यान करते २ वह धर्म्मवत्सल पत्थर व काष्ठके समान होगया चेष्टारहित पहाड़की नाईं स्थित भया तपस्या से क्लेशयुक्त शरीर अत्यन्त श्रद्धावान् निन्दारहित था इसप्रकार का धर्म्म व ध्यान करते २ उसको सहस्रवर्ष बीतगये १७ । १८ इससे च्यूँटियों ने उसके ऊपर वामी व व्यमौर लगाई १९ उसी वामी के बीचमें बैठाहुआ वह पिप्पल जड़की नाईं स्थित

होकर बड़ा तप करतारहा २० व उसके ऊपरसे कालेसर्प्प सब ओर से लपटगये और पिप्पल को काटते भये परन्तु उस उग्रतपस्वी के अङ्गों में अतिउल्वण सर्प्पों का विष प्रवेश न करसका न उसके सुकुमार अंगोंको भेदनहीं करसका तिस ब्राह्मणके तेजसे सर्प शांति को प्राप्तहोजातेभये २१।२२ व उसके शरीरसे प्रकाशित तेजसेयुक्त बहुत ज्वाला निकलने लगीं जैसे कि अग्नि से लपकें निकलती हैं वैसेही उस तपस्वी के अंगों से जैसे इन्धनों के बीचमें प्रवेशकरके अग्नि प्रकाशित होताहै और जैसे मेघोंके बीचमें प्रवेशकर किरणों से सूर्यप्रकाशित होताहै २३।२४ वैसेही वह ब्राह्मण बामीके बीचमें तेजसे प्रज्वलित होताथा सर्प्पलोग बड़े क्रोधसे अपने विषारीदांतों से काटते थे २५ परन्तु उस विप्रके शरीर के चर्म्म को नहीं छेद सक्के थे हे राजेन्द्र ! इसप्रकार तप करते २ सहस्रवर्ष बीतगये व वह महात्मामुनि वैसेही त्रिकाल बराबर तप करतारहा शीत घाम व वर्षा अपने ऊपर सहतारहा २६ व उस महात्मा ने वायु भक्षण के विशेष और कुछ नहीं भक्षण किया २७।२८ तीनसहस्र वर्षतक वायु भक्षण किये तप करतारहा तब देवताओंने उसके शिरपर पुष्पों की वर्षाकी २९ व कहा कि हे महाभाग ! तुम ब्रह्मज्ञहो व धर्मज्ञहो इस में कुछ सन्देह नहीं है व सर्व्वज्ञानमयहो सो अपनेही कर्म्म से तुम ऐसे हुयेहो ३० इसलिये जो २ मनोरथ तुम चाहतेहो सब तुमको प्राप्तहोंगे अन्यथा नहीं कहते व सब काममयी सिद्धि तुमको अपने आप होगी ३१ जब पिप्पल महात्मा ने ऐसे वचन सुना तो भक्ति से मस्तक झुकाकर सब देवताओं के प्रणामकर ३२ बड़े हर्षसे युक्त होकर देवताओं से यह वचनबोला कि यहसब विश्व हमारे वशमें जैसे होजाय ३३ हे देवेन्द्रो ! ऐसा आपकरें व हमको सब विद्या आजावें हे नृपोत्तम ! ऐसा कहकर वह मेधावी विश्रामकररहा ३४ देवताओं ने कहा सब ऐसाही होगा जैसा तुम चाहतेहो इसप्रकारका वरदेकर देव सब चलेगये ३५ उन विप्रोंके जानेके पीछे श्रेष्ठ ब्राह्मण पिप्पल नित्यही ब्रह्मण्य साधनकर संसार वश करने की चिन्तना करते भये ३६ तबसे लेकर श्रेष्ठ ब्राह्मण पिप्पल विद्याधर के पदको प्राप्त

होकर जहां चाहें तहां जासक्तेभये इस प्रकार वह पिप्पल विद्याधर होगया इसलिये देवलोकों का ईशहो सर्व शास्त्रों में विशारद होगया३७।३८एकसमय महातेजस्वी उस पिप्पलविप्रने अपनेमनसे यह चिन्तना की कि हमको देवताओंके वरदेनेसे जो अवश्य भी थे सब हमारे वश्य होगये ३९ अब इसकी परीक्षाभी करलेनी चाहिये ऐसा विचारकर जिस २ को चिन्तना की उसको अपने वशमें कर लिया ४० ऐसा होनेसे जो उसके मनमें संकल्प विकल्प था सब जातारहा व उसने विचारा कि अब लोकमें हमारे समान और दूसरा पुरुष कोई नहीं है ४१ सूत शौनकादिकों से बोले कि जब महात्मा पिप्पलने अपने मनमें ऐसी कल्पना की तो उसके मनका भाव जानकर एक सारसपक्षी तालाब के किनारे अच्छेस्वर से पिप्पलसे बोला ४२। ४३ कि इस प्रकार क्यों अभिमान करते हो सबके वशकी आत्मा की सिद्धि हम नहीं मानते ४४ वश्यावश्य इस अर्वाचीनकर्म पराचीन को तुम नहीं जानते हो हे पिप्पल! तुम मूढ़ बुद्धिहौ ४५ तुमने तीन सहस्र वर्ष तपस्या की है तिसीसे व्यर्थ अभिमान करतेहो ४६ कुण्डल का धीर बुद्धिमान् सुकर्मा नाम जो पुत्र हुआ तिसके सबसंसार वश होगया सो इस समय सुनिये ४७ अर्वाचीन पराचीन को वही बुद्धिमान् जानताहै हे पिप्पल! संसारमें तिसके समान ज्ञानी नहीं है ४८ कुण्डल के पुत्र सुकर्माके सदृश तुम नहीं हौ उसने न तो दान दिया न ज्ञानकी परिचिन्ता कभी की ४९ न होम यज्ञादि कोई कर्मकिया न किसी तीर्थयात्राके लिये गया न अग्निकी उपासना की ५० व हे विप्र! न कभी उसने उत्तम धर्म्म सेवन किया सदा स्वच्छन्दचारी बनारहा व ज्ञानात्माभी बना रहा परन्तु पिता माताकी सेवा सदैव की ५१ वेदाध्ययन किया सब शास्त्रके अर्थको जाना इससे हमारे मतसे जिस प्रकार उस सुकर्मा नाम बालक के ज्ञान है ५२ वैसा ज्ञान तुम्हारे नहीं है वृथा क्यों अहंकार करतेहो यह सुन पिप्पलब्राह्मण उससारससे बोला कि आप कौन हैं जो पक्षीकारूप धारणकर हमारी ऐसी निन्दा करतेहैं ५३ हमारे ज्ञानकी क्यों निन्दा करतेहो बताओ तो पराचीन ज्ञान कैसा

है सो हमसे विस्तार से कहो व यह भी कि तुमको इस बातका ज्ञान कैसे हुआ ५४ अब अर्व्वाचीन व पराचीन की सब गति हमसे विस्तारपूर्व्वक कहो व हे पक्षिश्रेष्ठ ! तुम ज्ञानपूर्व्वक समझाकर हमसे कहो ५५ व हे पक्षिराज ! तुम ब्रह्मा किंवा विष्णु अथवा रुद्र तो नहीं हो तब वह सारस पक्षी बोला न तुम्हारे तपका भावही है न उस बालक के समान तपका फलही तुम में है ५६ जो तुमने इतना तप किया है उसका समाचार सुनो कुण्डलके पुत्र उस बालकमें जैसा गुण है ५७ वैसा तुम्हारे ज्ञान नहीं है और तिस पदको नहीं जाना व हे द्विजोत्तम ! उसी बालकसे जाकर हमारा रूपभी पूँछलेना ५८ वह धर्म्मात्मा सब ज्ञानसे कहदेगा ॥

चौ० इमिसुनिसारसवचनरसाला । जोसबभांतिपुनीतविशाला ॥
पिप्पलगयहुदशारणदेशा॥सुनिखगवरकरपरमनिदेशा ५९।६०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादे
वेनोपाख्यानेएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

## बासठवां अध्याय ॥

दो० बासठयेंमहँ पिप्पलहु गयहु सुकर्म्मातीर ॥
तिनभाषीपितृमातृकी भक्तिमहाव्रत धीर १

विष्णु भगवान् राजा वेन से बोले कि हे नृपोत्तम ! कुण्डल के सत्य धर्म्मोंसे समाकुल आश्रमको व महाभक्तिसे अन्वित शान्त सर्व्व पिप्पल गये तब सुकर्माको देखा कि पिता माताकी सेवा करते १ सत्य पराक्रमी महारूप महातेज महाज्ञान से युक्त २ माता पिता के चरणोंके पास बैठे ज्ञाननिधि ३ कुण्डलके पुत्र सुकर्म्मा महात्मा हैं पिप्पलनाम विप्र वहां आये व उनको आयेहुये देखकर सुकर्म्माने आसनसे उठकर द्वारही पर जाकर अतिवेग से उनका अभ्युत्थानकिया व कहा कि हे महामते ! हे महाभाग विद्याधर ! यहां आओ ४।५ यह कह आसनपाद्य अर्घ्य आचमनीय सब उनको दिया व फिर कहा कि हे महाप्राज्ञ ! निर्विघ्न तो हो व कुशल विद्यमानहै ६ व निरामय तो है और यहभी कहा किहेपिप्पल !

कारण से तुम्हारा आगमन यहां हुआ वह सब हम तुमसे कहते हैं ७ तीन सहस्र वर्षतक जब तुमने तपकिया तो हे महाभाग ! तुमने देवताओं से वरपाया ८ वश्यत्वभी तुमने पाया और यथेच्छगमन भी पाया इससे तुम मत्तहोगये अपनेको न जाननेसे बड़ाभारी गर्व्व तुमने किया ९ तब तुम्हारा सब चेष्टित एक महात्मा सारस ने देखकर मेरानाम तुमसे कहा कि उसमें उत्तमज्ञानहै १० तब पिप्पलजी बोले कि नदी के तीरपर जिस सारसने हम से तुमको सब ज्ञानमय बतायाहै प्रथम बताइये वह कौनहै ११ यह सुन सुकर्म्मा विप्र बोले कि नदीके किनारे आपसे जिन्होंने वार्त्तालाप कियाहै उनको तुम महात्मा परमेश्वर ब्रह्माजी जानो १२ और क्या पूँछते हो कहो वहभी तुमसे कहेंगे विष्णुजीबोले ऐसा कहकर धर्म्मात्मा सुकर्म्माजी विराम कररहे १३ तब पिप्पलजी फिर बोले कि हमने भूतलपर सुनाहै कि सब संसार तुम्हारे वशमेंहै सो हे विप्र ! यह कौतुक हमको यत्नसे दिखाओ १४ तब धर्म्मात्मा सुकर्म्मा पिप्पल जीसे बोले कि सब जगत् हमारे वश्यावश्यहोनेका कारण देखो १५ इन्द्रादि लोकपाल व अग्निआदि सब देवगण व विद्याधरादिक सब हमारे बुलाने पर आते हैं फिर विसर्जन करने से चले जाते हैं इतना कहतेही इन्द्रादि देवगण वहां आये व महात्म सुकर्म्माजी से बोले १६ । १७ कि किसलिये आपने हमलोगों का स्मरणकियाहै हे विप्र ! इसका कारणकहो तब सुकर्म्माजी बोले कि ये पिप्पलनाम विद्याधर यहांआयेहैं १८ इन्होंने हमसेकहा कि विप्र तुम्हारे वशमें सब विश्व है सो हमने इन महात्माके विश्वासके लिये आपलोगोंको बुलाया है १९ अब अपने २ स्थानों को जाओ यह देवताओंसे सुकर्म्माने कहा तब सब देवगण महात्मा सुकर्म्मासे बोले २० कि हे विप्र ! व हे विद्याधर ! हमलोगोंका दर्शन सफल होताहै इससे जो तुम्हारे मनकोरुचताहो वह वर मांगो तुम्हारा कल्याण हो २१ वह तुमकोदेंगे इसमें सन्देहनहींहै यह सुरोत्तमों ने कहा तब भक्ति से देवताओं के प्रणामकर उन द्विजोत्तमने वर मांगा कि हे देवेन्द्रो ! माता पिता के चरणों में हमको अचल भक्ति

देखो बस यही उत्तम वर आपलोगों से मांगते हैं २२।२३ व हमारे पिता वैष्णव लोकको जायँ एक यह उत्तम वरदो व ऐसेही माता जीभी उसी लोकको जायँ बस और कुछभी वर नहीं चाहते २४ तब देवगण बोले कि हे विप्रेन्द्र ! पिता के भक्त तो तुमहो उसी तुम्हारी पितृभक्ति से हमलोग सदा तुम्हारे ऊपर प्रीतियुक्त रहते हैं २५ हे महाराज ! ऐसा कहकर सब इन्द्रादि देव अपने लोक को चले गये इस रीति से सुकर्म्माजी ने सब अपना ऐश्वर्य्य पिप्पल को दिखादिया २६ व पिप्पल ने भी महाअद्भुत कौतुक देखा तब धर्म्मात्मा पिप्पल कुण्डलके पुत्र सुकर्म्मा से बोले कि २७ अर्व्वाचीन व पराचीनरूप कैसे होते हैं हे कहनेवालों में श्रेष्ठ ! दोनोंका प्रभाव हम से कहो २८ तब सुकर्म्माजी बोले कि अब पराचीन रूपका चिह्न तुम से कहते हैं जिससे इन्द्रादि सबदेव व चराचर विश्व प्रमोहित होरहाहै २९ व जो सब विश्व में व्यापक प्रभु सब में प्राप्त संसारका स्वामी है उसका रूप किसी योगी ने भी नहीं देखा ३० वेद कहता है कि ऐसा है पर उसको भी कहने की शक्ति नहीं है इससे नहीं कह सक्ता क्योंकि वह पदहीन करराहित नासिकाहीन अकर्ण व मुखवर्जितहै ३१ परन्तु तीनों लोकों के रहनेवालों के सब कर्म क्षण क्षण के किये हुये देखता रहताहै व उन लोगों के कहेहुये व अन्तःकरण के सब वचन अच्छीतरह विना कानके सुन लेता है ३२ है गतिहीन पर सब कहीं चला जाता है व उसका कुछरूप नहीं है पर सर्व्वत्र दिखाई देताहै हाथ उसके नहीं पर सब पदार्थों को अच्छेप्रकार ग्रहणकरताहै व पादहीनहै पर अतिवेग से दौड़ताहै ३३ व हे विप्र ! वह सबकहीं देखाई देताहै व विना पैरों से सब कहीं पहुँचताहै व जिसको सब देवेन्द्र तथा तत्त्वदर्शी मुनिलोग भी नहीं देखते ३४ व वह उन सबोंको देखताहै व्यापक विमलसिद्ध सिद्धिके देनेवाले सब के नायकको ३५ महायोगी धर्म अर्थ के जाननेवाले तेजोमूर्ति व्यासजी जानते हैं आकाश एकवर्ण अनन्त ३६ सो यह निर्मलरूप निश्चित श्रुति कहती है व्यासजी और मार्कण्डेयजी तिस पद को जानते हैं ३७ अब अर्वाचीन को कहते हैं एकाग्र

मन होकर सुनो जब भूतात्मा संहारकर अकेलेही रहे ३८ जल
शेषजी के ऊपर शय्याबनाकर बहुतकाल जनार्दनजी सोये ३९ त
जलके अन्धकार से तपेहुये योगी महामुनि मार्कण्डेयजी स्थान
इच्छाकर घूमनेसे कष्टयुक्तहो ४० घूमते २ शेषकी शय्यापर सोतेहु
करोड़ सूर्य्यों के समान प्रकाशित सुन्दर आभरणों से भूषित ४
दिव्यमाला और वस्त्रधारे सब व्यापियों के ईश्वर योगनिद्रामें प्रा
मनोहर शङ्ख चक्र गदा धारण किये दिखलाई पड़े ४२ और म
भाग्यवती काले अञ्जनके समान काली डाढ़ों से कराल मुखवाल
भयानकरूपयुक्त एकस्त्री भी दिखाईदी ४३ तब उस स्त्रीने महामु
मुनिश्रेष्ठजी से कहा कि मत डरो फिर पांच योजन के विस्तारवा
कमलपत्र में ४४ महादेवी ने मार्कण्डेयजी को बैठाला और क
कि केशवजी सोते हैं अब तुमको डर नहीं है ४५ तब योगियों
श्रेष्ठ मार्कण्डेयजी बोले कि हे भामिनि ! तुम कौनहो इस प्रलय
तुम्हीं रहगईहो ४६ जब मुनिने देवीसे इसप्रकार पूछा तब आद
समेत देवी बोली कि हे ब्राह्मण ! जो शेषकी शय्यापर केशवजी सोते
हैं ४७ इनकी वैष्णवीशक्ति मैंहूं जो यहां कालरात्रि कहातीहूं हे वि
प्रेन्द्र सब मायासे युक्त हमको इसप्रकार जानो ४८ संसार के मोह
के लिये पुराणों में महामाया कहातीहूं ऐसा कहकर देवी अन्तर्द्धान
होगई ४९ मार्कण्डेयजी के देखते हुये देवीके जाने में भगवान्की
नाभि में सुवर्ण के समान दीप्तिवाला कमल उत्पन्नहुआ ५० कमल
से महातेजस्वी लोकपितामह ब्रह्माजी उत्पन्न हुये ब्रह्मा से सब
स्थावर जङ्गम संसार उत्पन्न हुये ५१ इन्द्रादिक लोकपाल अग्नि
इत्यादिक देव सब ब्रह्मासे उत्पन्न हुये विष्णुजी राजा वेनसे कहते हैं
कि हे राजन् ! अर्वाचीन स्वरूप मैंने तुमको दिखाया ५२ यह अ
र्वाचीन स्वरूपहै पराचीन निराश्रयहै जब वह देह दिखलाताहै तब
देहरूप वे होजाते हैं ५३ हे पिप्पल ! ब्रह्मादिक सब लोक अर्वाचीन
हैं जे तीनों लोकमें मनुष्य होते हैं वे अर्वाचीनहैं ५४ और वह भू
तात्मा पराचीनहैं जिसको योगिजन देखते हैं वह मोक्षरूप परंस्थान
परब्रह्म स्वरूप ५५ अव्यक्त अक्षर हंस शुद्धसिद्धियुक्तहै हे विद्याधर !

पराचीनका जो रूपहै वह तुम्हारे आगे ५६ सब कहा और क्या तुम से कहैं तब पिप्पल बोले कि हे सुव्रत ! किससे तुम्हारे महाज्ञान उत्पन्न हुआहै ५७ अर्वाचीन की गति और पराचीनकीभी गति जानते हैं तीनों लोकका श्रेष्ठ ज्ञान तुममें इसीप्रकार वर्तमानहै ५८ हे सुव्रत ! तपस्याकी परानिष्ठा को नहीं देखते हैं यजन याजन तीर्थ वा तपस्या तुमनेकी है ५९ तिसका प्रभाव कहिये किस से तुमको सब ज्ञान प्राप्तहुआ है तब सुकर्मा बोले कि तप नहीं जानते देहको सुखलाया नहीं ६० यजन याजन वा तीर्थ साधन नहीं जानते पुण्य काल सुन्दर कर्म से उत्पन्न ध्यान मैंने नहीं साधा ६१ केवल पिता माता की पूजन जानताहूं दोनों हाथ से माता पिताके नित्यही ६२ पुण्यकारी चरणों को धोताहूं अङ्ग चापता स्नान भोजनादिक कराताहूं ६३ तीनों कालमें ध्यानमें लीन दिन दिन में साधन करताहूं तिन माता पिता के चरण जलको दिन दिन में ६४ भक्ति भाव से पीता और अच्छे भाव से पूजन करताहूं जबतक हे पिप्पल ! मेरे माता पिता जीवते हैं ६५ तबतक हमको अतुल लाभहै शुद्धभाव चित्त से दोनों को हम पूजते हैं ६६ स्वच्छन्द लीलापूर्वक चलते हैं इसप्रकार हम बर्तते हैं हमको अन्य तपस्यासे क्या है देह के सुखलाने से क्या है ६७ अच्छी तीर्थयात्रा और अन्य पुण्यों से इस समय में क्याहै सब यज्ञों का जो फल प्राप्तहोताहै ६८ वह फल मैंने पिताकी और माताकी सेवामें देखाहै माता पिता की सेवा पुत्रों को गतिकी देनेवाली है ६९ सब कर्मों में सर्वस्व तीनों लोकमें सारभूत है माता की सेवासे पुत्रको लोक होताहै ७० तिसीप्रकार पिताकी शुश्रूषासे भी होताहै बड़ी पुण्य होती है गङ्गा गया पुष्कर तहांही हैं ७१ पुत्रके जहां माता पिता स्थितहैं इसमें सन्देह नहीं है और भी पुण्यकारी अनेक प्रकार के तीर्थ तहां हैं ७२ ये पुत्रको पिताकी सेवा से होते हैं पिताकी सेवा से तिस दान तपका फल ७३ अच्छे पुत्रको होता है और धर्म से श्रमही है पिताकी सेवा से अत्युत्तम पुण्य पुत्र पाताहै ७४ अपने कर्म का सर्वस्व यहां और परलोक में है जीवते हुये अपने माता पिताकी ७५ पुत्र होकर सेवाकरे तिसके पुण्यफल

को सुनिये तिसके ऊपर देव पुण्यवत्सल ऋषि ७६ और तीनों लोक प्रसन्न होते हैं माता पिता के चरणों को नित्यही धोताहै ७७ तिस को दिन दिन में गङ्गा स्नान का फल होताहै पुण्यकारी मिष्टान्नपानों से जो माता पिता को ७८ भक्तिसे नित्यही भोजन कराता है तिस के पुण्य को हम कहते हैं पुत्रको अश्वमेध यज्ञ का फल होताहै ७९ पान छादन भोजन पीनेवाले भोजन और पुण्यकारी अन्नसे भक्तिसे जो माता पिता की पूजन करताहै ८० वह सर्व ज्ञानी होताहै यश और कीर्त्ति पाता है माता पिताको देखकर आनन्द से पुत्र बोलताहै ८१ तिसके ऊपर प्रसन्न होकर निधि उसके घरमें बसती हैं गौवें स-दैव पुत्रको सुख देतीं और प्रसन्न होती हैं ८२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमातृपितृतीर्थ माहात्म्येद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

## तिरसठवां अध्याय ॥

दो० तिरसठयें महँ मातु पितु सेवनकेर विधान ॥
जासों होवें पुत्र के सकल काम अरु ज्ञान १

सुकर्माजी बोले कि हे द्विजश्रेष्ठ! तिन माता पिताके स्नान क-रानेमें जो जलके कण पुत्र के सब अङ्ग में पड़ते हैं १ तो पुत्र को सब तीर्थ के स्नान के समान फल होताहै पतित विकल वृद्ध सब कर्मों से अशक्त २ व्याधि युक्त और कोढ़ी पिता माताकी जो पुत्र सेवाकरता है तिसके पुण्य को हम कहते हैं ३ तिसके ऊपर विष्णुजी प्रसन्न होजाते हैं इसमें सन्देह नहीं है और वैष्णव लोक को जाता है जो योगियों को भी नहीं मिलता ४ पिता माता विकल दीन वृद्ध और महारोगीहों ऐसे को जो पापबुद्धि त्याग करदेताहै ५ तो पुत्र घोर कीड़ेयुक्त नरक को पाताहै और वृद्ध माता पिता का बुलाया हुआ ६ पुत्र होकर जो न जावे तो तिसके पापको हम कहते हैं वह मूर्ख मैला खानेवाला गांवका सुअर होताहै इसमें सन्देह नहीं है ७ सहस्र जन्मतक सुअर होने के पीछे फिर कुत्ता होता है पुत्रके घरमें स्थित बूढ़े माता पिताको ८ जो विना भोजन कराये आप खाता है

वह सहस्रवर्ष तक मूत्र और मैला खाता है ९ और दोसौ जन्म तक वही पापी पुत्र काला सांप होता है वृद्ध माता पिता का जो अपमान करताहै १० वह दुष्ट सौ करोड़ जन्म तक मगर होता है जो पुत्र माता पिता को कटुक वचन कहताहै ११ वह पापी व्याघ्र होकर फिर वृक्ष होताहै जो दुष्टबुद्धि पुत्र माता पिता का मान नहीं करताहै १२ वह सहस्र युग तक कुम्भीपाक में बसता है पुत्रों को माता और पिताके समान तीर्थ तारने और कल्याण करनेके लिये इसलोक और परलोकमें नहीं है हे महाप्राज्ञ ! तिससे हम पितृदेव और मातृदेवको पूजते हैं जिससे सब देवोंमें श्रेष्ठ योगी होवें और माता पिताके प्रसाद से उत्तम ज्ञान प्राप्त हुआहै १३ । १५ ये सब तीनोंलोक हमारे वश हुये हैं इन महात्मा देव वासुदेवजी की अर्वाचीन गति हम जानते हैं हे महामते ! और पराधीन गति को भी जानते हैं पिता माता के प्रसादसे हमारे सब ज्ञान उत्पन्नहै १६।१७ कौन विद्वान् पिता माता को पूजन न करै सांगोपांग वेद और शास्त्र पढ़ने से क्या है जिसने पिता और माता को नहीं पूजा तिसके वेद निरर्थक हैं १८ । १९ हे विप्र ! यज्ञ तपस्या दान पूजनों से क्याहै तिसके सब विफल होजाते हैं जिसने माता २० और जीवते हुये पिता जो कि घरमें स्थितहैं उनको नहीं पूजा यही पुत्रका धर्म है और मनुष्यों में यही तीर्थ है २१ यही पुत्रका निश्चित मोक्ष व यही शुभ जन्म का फलहै इसमें कुछ संशय नहीं है व यही पुत्रका यज्ञ दानहै २२ कि पिताकी पूजा नित्य भक्तिभावसे करता रहै जो पुत्र इसप्रकारसे पिता माताकी सेवा करताहै कि जिनसे उत्पन्न हुआ है व जिनसे पालित पोषित हुआहै २३ बस उसके तीर्थ दान यज्ञ तप का फल यही है व जिसने माता की उपासना की उसको सब यज्ञों का फल मिलताहै इसमें सन्देह नहीं है २४ व जिसने नित्य सुन्दरी भक्तिके साथ पिताकी उपासना की है उसकी सब पुण्यदेने वाली यज्ञादिक क्रिया सिद्ध होती हैं २५ इस अर्थ में हमने धर्म्म शास्त्र भी सुनाहै कि पुत्रको चाहिये कि पिता की भक्तिमें नित्यही तत्पर रहै २६ पिताके सन्तुष्ट होनेपर पूर्व्वकाल में राजा पूरुने बड़ा सुख

पाया व पिता के रुष्टहोने पर पूर्व्वकालमें यदुजीने महापाप पाया २७ क्योंकि उनके पिताने उनको शाप दिया था ऐसा जानकर मैंने अपने वृद्ध माता पिता की सेवा भक्तिसे की है २८ व इन्हीं दोनों जनों के प्रसाद से महाफल पाया २९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेमातापितृतीर्थ माहात्म्येत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

## चौंसठवां अध्याय ॥

दो० चौंसठयें महँ नहुष सुत नृपययाति वृत्तान्त ॥
मातलिसों तनुआत्मके विषय विचारनितान्त १

ये समाचार सुन पिप्पल विप्रने प्रश्न किया कि पिता के प्रसा के भावसे पूरुजीने कैसे उत्तम सुखपाया व भोगा सो हमसे विस्ता सहित कहो १ व पापका प्रभाव भी दूसरे ने कैसे भोगा हे द्विज त्तम ! सब हमसे विस्तार से कहो २ सुकर्म्मजी बोले कि सुनो पाप नाशन चरित कहेंगे जिसमें नहुष व उनके पुत्र महात्मा ययातिक वृत्तान्तहै ३ सोमवंश में उत्पन्न नहुषनाम राजाहुये उन्होंने अतुल दान धर्म्म अनेक किये ४ व नानाप्रकार के उत्तम यज्ञ किये सोभी सब उत्तम २ अश्वमेध और वाजपेय यज्ञ सौ सौ किये व और भी बहुत से किये ५ अपने पुण्यके प्रभाव से इन्द्रलोकको प्राप्तहुये सब धर्म्म युक्त गुणसहित अपने पुत्र ययाति को राजा बनागये ६ जोकि सत्यसम्पन्न धर्म्मवीर्य्य व महामति थे जब राजा नहुष ऐन्द्रपद भोगने लगे तो उनके पुत्र ७ ययाति सत्ययुक्त प्रजाओं को धर्म्मसे पालनेलगे अपने आप जा २ कर प्रजाओंके कर्म्म देखते व जो २ यज्ञादि धर्म्म सुनें व जो २ पुण्यतीर्थ सुनें उसकी यात्राकरें व सब धर्म्म कर्म्म सदाकरें ८ । ९ यज्ञ तीर्थ दान पुण्यादिक करतेहुये धर्म्म पूर्व्वक वे मेधावी राज्यकरते धर्म्म के अनुकूलही सब कार्य्य करते इसप्रकार राज्यकरते २ राजा ययातिको अस्सीसहस्र वर्ष १० बीत गये व उन महात्माके राज्यमें कुछ अन्तर न पड़ा राजा ययातिजी के उन्हींके बल व वीर्य्य के समान चार पुत्रहुये ११ हे पिप्पल! उन

के नाम कहते हैं एकाग्रमन होकर सुनो उनके ज्येष्ठपुत्र महाबल प-
राक्रमी यदुनामहुये १२ व एक पूरुनाम पुत्रहुये तीसरे अनुनाम
हुये व चौथे द्रुह्युनाम धर्मात्मा हुये १३ इस रीति से महात्मा यया-
तिजी के चारोपुत्र तेज पौरुष व पराक्रमसे अपने पिताही के तुल्य
हुये १४ व बहुत दिनों तक राज्यकरके उन धर्म्मात्मा ययाति जीने
ऐसा राज्यकिया कि उनका यश तीनों लोकों में बहुतहुआ १५ श्री-
विष्णु भगवान् राजा वेन से बोले कि हे राजन्! एकसमय में देवर्षि
नारदजी ब्रह्माजी के पुत्र इन्द्र के देखने के लिये इन्द्रलोक को गये
१६ अग्निसमान तेजस्वी विप्र सर्व्वज्ञ ज्ञानपण्डित नारदजी को
आयेहुये देखतेही देव इन्द्र आसनपर से उठे १७ व प्रणाम करके
मधुपर्कादि से शिरझुकाकर भक्तिपूर्व्वक उनकी पूजाकी और अपने
पुण्यकारी सिंहासनपर बैठाकर मुनिश्रेष्ठ से पूँछा कि १८ आप का
आगमन कहां से इस समय हुआ व उसका कारण क्या है हे महा-
मुने विप्र! आपका कौन प्रिय इससमय हमकरें १९ नारदजी बोले
कि हे देवराज! जो तुम भक्तिसे बोले सब कुछ तुम ने किया हम
तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हुये अब तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कहते हैं
सुनो २० इस समय हम महीलोकसे आकर तुम्हारे मन्दिर में प्राप्त
हुये हैं सो तुम्हारे देखनेही के लिये आये हैं और नहुषको भी देख
आये हैं २१ इन्द्र बोले कि आज कल सत्यधर्म्म से कौन राजा
पृथ्वी का सदैव पालन करताहै व आपभी सर्व्व धर्म्म से युक्त
वेद शास्त्र पढ़े हुये ज्ञानवान् व गुणीहो २२ व वेदज्ञ ब्राह्मणप्रिय
ब्रह्मण्य वेदवादी शूरवीर यज्ञकर्त्ता दाता व भक्तिमान्हो २३ नारद
जी बोले कि इनगुणों से युक्त तो अतिबली राजा नहुषका पुत्र यया-
ति है जिसके सत्य व वीर्य्य से सब लोक प्रतिष्ठितहैं २४ आपके
समान भूलोक में नहुष का पुत्र ययाति है आप स्वर्गमें हैं और ऐ-
श्वर्य बढ़ानेवाला ययाति पृथ्वी में है २५ हे महाराज! पितासे श्रेष्ठ
पृथिवीका पति ययाति है उसने सौ अश्वमेध और सौ वाजपेय यज्ञ
किये हैं २६ और अनेकप्रकारके दान भक्तिसे दिये हैं लाखों करोड़ों
गोदान किये हैं २७कोटि होम व लक्षहोम किये हैं भूमिदानादिक दान

ब्राह्मणों को दियाकरता है २८ व सब साङ्गोपाङ्ग से सुरूपवान् धर्म्म का परिपालन करनेवाला है इन सब गुणोंसे युक्त नहुषका पुत्र महाराज ययाति २९ पृथिवीपर राज्य करता है अस्सीसहस्र वर्ष तक सत्य धर्म्म के साथ पृथ्वी का राज्य उस धर्म्मात्माने किया है जैसे स्वर्गमें आप राज्य करते हैं ३० मुनीश्वर नारदजी से ऐसा सुनकर मेधावी इन्द्र धर्म्म के पालनसे डरे और पीछे से कहा ३१ कि हां सुकर्माजी बोले सौ अश्वमेधयज्ञ करके इसके पिता नहुष ने पूर्व्वकालमें हमारा राज्य बहुत दिनों तक कियाथा यहां ऐन्द्रपद पर आकर वह वीर देवराज होगया था ३२ जब इन्द्राणी के सङ्ग भोगकरने की इच्छाकी तो फिर नीचे गिरादिया गया उसी अपने पिताके तुल्य पराक्रमी यहभी महाराज है ३३ तो यह भी इन्द्रपद पर आजायगा इसमें सन्देह नहीं है इससे जिस किसी उपायसे उस राजा को स्वर्ग को लानाचाहिये ३४ इस प्रकार से इन्द्रने अपने मनमें चिन्ता की और तिससे डरा ययाति राजाके बड़े भयसे ३५ इन्द्र ययाति के लेने को दूत मातलि सब काम युक्त नहुषके विमान समेत भेजते भये मातलि जहां नहुषके पुत्र ययातिजी थे वहां पहुँचा देखा तो जैसे सभामें विराजमान इन्द्र शोभित होते हैं ३६ । ३७ वैसेही धर्म्मात्मा ययाति जी अपनी सभामें शोभित होरहेथे सो जाकर सत्यभूषण महात्मा राजा से मातलि बोला कि ३९ हे राजन् हम देवराजके सारथि हैं हमारा वचन सुनो हम इन्द्र के भेजेहुये तुम्हारे समीप इस समय आये हैं ४० जो देवराज ने तुमसे कहाहै वह एकाग्र मन होकर करो इसी समय आप इन्द्रलोकको चलें क्यों कि देवराज ने कहाहै कि अब पुत्रको राज्य दे अन्त्येष्टि कर्म्म उत्तम करके आवें महातेजस्वी इलराजा यहीं आकर वसते हैं ४१ । ४२ क्योंकि पुरूरवा महावीर्य्यवान् विप्रचित्ति शिवि मनु इक्ष्वाकु राजा ४३ बुद्धिमान् सगर नहुष तुम्हारे पिता ऋतवीर्य शन्तनु ४४ भरत युवनाश्व कार्तवीर्य ये सब बहुत यज्ञोंको कर स्वर्ग में आनन्दित रहते हैं ४५ व इन राजाओं के तुल्य और भी यज्ञकर्म्मों में तत्पर राजा यहां आकर निवासकरते हैं सबके सब अपने अपने कर्म्मों से

स्वर्ग में भी इन्द्रही के सङ्ग प्रमुदितहोतेहैं ४६ फिर तुम सब धर्म्म जाननेवाले और सब धर्मों में स्थितहैं हे महीपते ! इन्द्रके सङ्ग स्वर्ग में आनन्द कीजिये ४७ यह सुन ययातिजी बोले कि हमने कौन सा कर्म्म किया है जिससे देवराज इन्द्रजी अपने साथ स्वर्गसुख भोगनेको बुलाते हैं मातलि सब हमसे कहो ४८ तब मातलि बोले कि हे राजेन्द्र ! अस्सीसहस्रवर्ष पर्य्यन्त तुमने जो दान पुण्य यज्ञादि कर्म्मोंका साधन कियाहै ४९ हे महाराज ! उन्हीं अपने कर्म्मों से स्वर्गको चलो हे महीनाथ ! चलके देवराजजी से सख्यकरो ५० व पञ्चभूतात्मक इस शरीरको यहीं भूमिपर छोड़ कर चलो व दिव्य शरीर धारणकर अपने मनमाने भोग वहांचल कर भोगो ५१ तुम्हारेभोगके लिये सब पदार्थ स्वर्ग में जैसे तुमने यहां दान पुण्य यज्ञतपकिये हैं वैसे २ बनकर तैयारहुये हैं ५२ महाराज ययातिजी बोले कि हे मातलिजी! जिसशरीरसे पृथ्वीपर बहुत से सुकृत और पाप सिद्धहोते हैं उसको यहींछोड़कर उसी के इकट्ठे किये हुये पदार्थोंके भोगने को कैसे चलें ५३ मातलि बोले कि हे नृप ! जहां इन पृथ्वी जल वायु तेज आकाश पञ्चतत्त्वों से यह शरीर उत्पन्न हुआ इसे वहीं छोड़ दिव्य शरीर से सब लोग स्वर्ग में जाते हैं ५४ व अन्य सब मनुष्यभी जोकि पाप पुण्य सब के साधक हैं वे भी इसशरीरको यहीं छोड़कर नीचे वा ऊँचे को जाते हैं ५५ राजा ययाति बोले कि हे मातलिजी ! इसी पञ्चात्मक शरीरही से पुण्य पापकरके मनुष्य ऊपर वा नीचे को जाते हैं ५६ तो फिर क्या विशेषता हुई जो शरीर को भूमिही पर छोड़कर जाना होताहै जो पाप पुण्यकही प्रभाव से देहका पात होताहै ५७ तो हे सूत ! मर्त्य लोकमें यह प्रत्यक्ष दृष्टान्तही दिखाई देताहै पाप व पुण्यकरने की कुछ विशेष अधिकता न हुई ५८ जिस शरीर से मनुष्य यहां सत्य धर्मादि इकट्ठाकरता है उसको मनुष्य यहां कैसे छोड़े ५९ आत्मा व काय ये दोनों मित्ररूप हैं फिर काय मित्रको छोड़कर आत्मा चला जाता है ६० मातलि बोले कि हे राजन् ! तुमने सत्य कहा आत्मा कायको यहां छोड़हीकर जाताहै क्योंकि आत्माका कायकेसंग कुछ

सम्बन्धही नहीं है ६१ क्योंकि यह शरीर सदा पंचत्वरूपही रहता है देखो जबसे उत्पन्न होताहै सदैव जर्ज्जितही बनारहता है वृद्धावस्था से पीड़ित होता है और व्याधियों से सदैव दूषित रहता है ६२ व जब जरा के दोषोंसे यह काय प्रभग्न होजाता है तो फिर यहां का रहना नहीं चाहता आकुल व्याकुलहो जीवको छोड़कर आप चलाजाता है ६३ धर्म्म सत्यसे जो पुण्य उसने किये हैं व दान नियम संयम किये हैं व अश्वमेधादि यज्ञ तीर्थ संयम जो कुछ उसने धर्म्म कर्म्म किये हैं ६४ व जो तप पु और भी किये हैं वे इस जरा को नहीं रोंकसक्के व न वे पातक शरीरको दुःख देनेवाली वृद्धता को निवारित करसक्के हैं ६ तब राजा ययातिजी फिर बोले कि जरा कहां से उत्पन्न होती है क्यों शरीरको पीड़ित करती है हे सूत ! यह हमसे तुम विस्तार कहनेके योग्यहो ६६ मातलि बोले कि हे नृपोत्तम ! हम तुम से जरा कारण कहते हैं जिससे कि यह कायके मध्यमें उत्पन्न होती है ६ यह शरीर पृथिव्यादि पांचभूतों से बना है इसी से पांचों से सद युक्त रहताहै व हे राजन् ! जिससे कि इन सबों से यह उत्पन्न होत है इसी से काय कहाता भी है ६८ जब यह वह्निसे प्रज्वलित होता है तो इसमें से रस उत्पन्न होताहै उस रससे धूम उत्पन्न होताहै व धूमसे मेघ होते हैं ६९ व मेघों से जल उत्पन्न होता है व जलमें पृथ्वी होतीहै फिर वह पृथ्वी ऋतुकाल को प्राप्त होतीहै जैसे कि नारी रजस्वला होती है ७० उससे गन्ध उत्पन्न होताहै व गन्धसे फिर रस होताहै रससे अन्न होताहै अन्न से वीर्य होताहै इसमें सं देह नहीं है ७१ वीर्य से कुरूप देह होताहै जैसे पृथ्वी गन्धोंको उत्पन्न करती है रसों से पृथ्वी तलमें चलतीहै ७२ तैसेही देह नित्यही रसके आधार सब ओर चलताहै तिससे गन्ध उत्पन्न होता है गन्ध से फिर रसहोताहै ७३ हे राजन् ! रससे महावह्नि होती है इस दृष्टान्त देखिये जैसे काष्ठ से अग्नि होतीहै और फिर काष्ठ को प्रकाशित करदेती है ७४ तैसेही देहके मध्यमें रससे अग्नि उत्पन्न होती है वही नित्यही संचारकर देहको पुष्ट करती है ७५ जबतक रस

अधिकता होती है तबतक जीव शांतिमान् होता है तैसेही अग्नि चारप्रकारकर क्षुधारूपसे वर्तमान होताहै ७६ फिर यह तीव्र जल समेत अन्नकी इच्छा करताहै तो अन्न और जलके दानको पाताहै ७७ अग्नि रक्त को चारप्रकार करती है तैसेही वीर्यकोभी इस में संदेह नहीं है तिससे फिर सब देहका नाश करता यक्ष्मरोग होताहै ७८ रस की अधिकता होती है तब अग्नि शांत होजाती है रससे पीड़ित हुआ तो ज्वररूप होजाता है ७९ ग्रीवा पीठ कटि गुदा और सब सन्धियों में अग्नि स्थित होता है देह में अग्नि वर्त्तमान होता है ८० जब रस की आधिक्य होती है तो काय को पुष्ट करती है रस जब कुछ बन्धनको प्राप्त होता है उसीसे बल होता है ८१ व उसी बलसे फिर काम उत्पन्न होता है वह इस शरीर का शल्यरूप होता है ८२ व वही कामाग्नि कहाता है वह बलका नाश करता है मैथुनके प्रसङ्गसे देहमें विनाशभाव को प्राप्त होजाताहै ८३ जब पुरुष स्त्रीका हाथ पकड़ता है तब कामाग्नि से पीड़ित होताहै व मैथुनके प्रसङ्ग से फिर उसकी इन्द्रियको मूर्च्छा आजाती है ८४ व शरीर तेजहीन होजाता है और बलकी हानि होती है जब बलहीन होजाता है तो अग्नि की प्रेरणा से दुर्बल होजाता है ८५ व उस वह्नि के प्रचार से पुरुषके शरीरमें शुक्र व शोणित उत्पन्न होता है व जब शुक्र व शोणित दोनों का नाश होजाताहै तब देह शून्य होजाता है ८६ व तब काय में अतिलोलुपता उत्पन्न होतीहै तब शरीर की आकृति अतिप्रचंड होकर बिगड़ उठती है व अंगोंमें विवर्णता छाजाती है उससे दुःखके मारे सन्तप्त होकर काय बुद्धिहीन होजाता है ८७ व जब कभी नारी को देखना वा सुनताहै तब चित्त सदैव उसी में लगकर भ्रमण करनेलगता है व कायमें तृप्ति नहीं होती चित्त लोलुप होकर उसीमें दौड़ता रहता है ८८ फिर सुरूपवती व अरूपवती सब स्त्रियों में उसका चित्त जाताहै तब मांस व शोणित के संक्षय से काय बलहीन होजाता है ८९ व कामाग्नि से नाशित होनेके कारण शरीरमें पलित आजाता है बस तब उसी से शरीर में दिन दिनमें जरा आजाती है ९० तब

सुरतमें नारीकी चिंतना करता है जैसे वार्द्धषिक नर करता है तैसे तैसे इस के तेजकी हानि होती है ९१ तिससे देह नाशहोजाता है फिर जरारूप अग्नि उत्पन्न होता है इसमें सन्देह नहीं है ९२॥
चौ० तब तनु में दारुण ज्वरहोई । प्राणिप्राणनाशक नहिंगोई ॥
स्थावर जङ्गम सकल जरार्दित । पीड़ितहोत तासुपरिमर्दित ॥
बहु पीड़ा पीड़ित ह्वै सारे । नष्टहोत करि दीन पुकारे ॥
यहकहिइन्द्रसारथीमातलि । कीनविरामयुक्तिकहिकैभलि ९३।९५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेमातापितृतीर्थ कथनेचतुष्षष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

# पैंसठवां अध्याय ॥

दो० पैंसठयें महँ पुनि नृपति मातलिकर संवाद ॥
ज्यहि सुनि भूपतिके मिटे मन के सकल विषाद १

राजा ययातिजी मातलिसे बोले कि हे मातलिजी ! यह शरीर धर्म्मका रक्षकहै पर तोभी आत्माके संग स्वर्ग को नहीं जाता इसका कारण हमसे कहो १ मातलि बोले कि हे भूपाल ! पृथिव्यादि पंच महाभूतों की संगति आत्माके साथ नहीं है केवल एक स्थान पर रहते पर वे पांचों आत्मासे संगति नहीं रखते २ इनपांचोंके एकत्र होने से यह शरीर बनकर शोभित होनेलगता है परन्तु जब ये सब जरा से पीड़ित होते हैं तब अपने २ स्थान को चले जातेहैं ३ हे महाराज ! रस अधिक वाली पृथ्वी प्रकल्पित है फिर रसोंसे भींगी हुई पृथ्वी कोमल होतीहै ४ तो चींटी और मुसरियोंसे भेदन कीजा तीहै फिर छिद्र होजाते हैं बामी बड़ीभारी होजातीहैं ५ तैसे देहमें गण्डमाला विचर्चिका उत्पन्न होजाती हैं फिर यह देह कीड़ोंसे काटा जाताहै ६ तो शीघ्रही पीड़ा करनेवाले गुल्म होजातेहैं इन दोषों से युक्त यह देहहै तो प्राणोंके संग कैसे स्वर्गको जासके ७ यह शरीर पृथिव्यादिकों का भाग है अपनी पृथ्वी में मिलजाता है स्वर्ग को नहींजाता क्योंकि जैसेही पृथ्वी वैसेही शरीर जहां पृथ्वी रहती उसीमें मिलकर रहजाताहै ८ हे पार्थिवोत्तम ! यह हमने तुमसे मन

वर्णन किया जो कि तुमने शरीर व आत्मा के विषयमें पूँछा ६ ॥

इति श्रीपाद्म्येमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने मातापितृतीर्थमाहात्म्येपञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

# छासठवां अध्याय ॥

दो० छासठयें महँ नहुषसुतसों मातलि यह गाव ॥
सृष्टि देहकी मलिनता भाव शुद्धि करि चाव १
पुनि पिप्पलरु सुकर्म्म द्विज कर संवाद अनूप ॥
मातु पिता सेवा सुतहि पुण्य अधिक सुनि रूप २

ययातिजी बोले कि हे मातलिजी ! जो शरीर पापसे पतित होता है व धर्म्म से भी पतितही होता है तो पुण्यकरने में भूतलपर कुछ विशेषता हम नहीं देखते १ व जैसे पूर्व्वजन्म में पतितहोकर इस जन्ममें हमलोगों का शरीर उत्पन्नहुआ है फिर अबकी पतितहोकर कैसे उत्पन्नहोगा यह हम से विस्तार सहित कहो २ मातलि बोले के नारकी पुरुषों का शरीर अधर्म्म करने के कारण ज़बरदस्ती उत्पन्न करायाजाता है इस से एक क्षणमात्रमें सब पृथिव्यादि भूतों से उत्पन्न होजाता है ३ ऐसेही एक धर्म्मकरने के कारण देवताओं का शरीर भी पञ्चभूतों के सारसे बहुत शीघ्र उत्पन्न होताहै ४ व कर्म्मों के मिलने से जो महात्माओंके शरीर उत्पन्नहोते हैं व पंचभूतों के एकमें मिलनेसे चार प्रकारके होते हैं ५ उद्भिज्ज स्थावर जाननेचाहिये तृण गुल्मादि रूपी कृमि कीटपतंगादिक स्वेदज हैं ६ अंडज सब पक्षी सांप मगर हैं जरायुज मनुष्य चौपाये जानने चाहिये ७ तहां जलसे भूमि सींचीगई व ऊपरसे सूर्य्य की ऊष्मा व नीचेकी शीतलता से युक्तहुई फिर वायुने उसे आकर्षित किया तो खेतों से बीज जमआये बस वृक्ष वल्ली अन्नादि उत्पन्न होआये ८ जैसे कि स्त्रीकी योनि जब पुरुषके संयोगसे संसिक्त होती है व फिर उष्णता पहुँचती है तब मृदु होजाती है बस बीज उसमें स्थित होजाताहै ९ उसी से मनुष्यादिकों की उत्पत्ति होती है ऐसेही शीतलता व उष्णताके योग से बीजसे अंकुर निकलआते हैं व अंकुरसे फिर पत्ते निकलते

हैं फिर पत्तेसे नाल फिर नालसे काण्ड व काण्डसे प्रभव १० प्रभव से दुग्ध व दुग्ध से तण्डुलकी उत्पत्तिहोती है फिर तण्डुल परिपक्व होने से ओषधियां पकीहुई होजाती हैं उन्हीं ओषधियों कोही अन्न कहतेहैं ११ वे यव आदि व धानपर्य्यन्त श्रेष्ठ होते हैं जिनके फलों में सारांश होताहै वे मुख्य ओषधियां कहाती हैं नहीं तो क्षुद्र तो बहुतहैं १२ इन्हीं ओषधियोंको पकनेपर काटकर फिर माड़तेहैं तब ओखड़ी में कूटकर सूपसे पछोड़ कर जलभरकर आग पर चढ़ाकर पकातेहैं और १३ छः प्रकारके रसके स्वादु निकालते हैं फिर उनको पाक कर भक्ष्य भोज्य पेय लेह्य चोष्य खाद्य पदार्थ बनाते हैं तिन के भेद ६ और मधुर आदिक ६ गुण हैं १४ । १५ फिर वह अन्न कवल बनाय २ भोजन करतेहैं उन्हीं कवलोंके परिपाकके रससे सब प्राण पुष्टहोते हैं १६ व जो विना अग्नि में परिपक्व किये अन्न खायेजाते हैं उनसे भीतर का पवन वैर रखताहै इससे उसके भीतर प्रवेश करके बिगाड़ देताहै व जठराग्नि भी उसे कम पचाताहै इसलिये उस से विकार उत्पन्न होजाते हैं व जो अग्निमें पक्व करके पदार्थ भक्षण किये जाते हैं उनको जाठराग्निभी अच्छे प्रकार पाचित करताहै नहीं तो सामान्यतः कच्चे पक्के जो पदार्थ भोजनकिये जातेहैं उदर में पहुँचतेही पवन उनमें प्रवेश करके जलको अलग करदेता है व अन्नको शुष्क करके अलग १७ फिर उदरके अग्निके ऊपर जल को स्थापित करता है व जलके ऊपर उस अन्न पिण्ड को स्थापित करता तदनन्तर अग्निके नीचे वह पवन जाकर उसे धमताहै फिर पवन से धमायाहुआ अग्नि जलको अतिउष्ण करदेताहै उस अति उष्ण जल के संयोग से अच्छे प्रकार पचकर सब ओरको फैलताहै १८ । १९ व फैलनेहीके समय दो स्थानोंपर होजाताहै एक रस रूप होकर व दूसरा मलरूप होकर वह मल कीट बारह स्थानों में होकर बाहर को निकलताहै २० दोनों कान दोनों नेत्र दोनों नासिका के पुट जिह्वा दन्त ओष्ठ शिश्न व गुद रोम व सब देहपर का चर्म बस उस अन्नकी कीट और पसीना निकलने के येही बारह मार्ग हैं २१ हृदयसे सब नाड़ियां कर चरणादिकों में लगी व बँधी रहती

हैं व उन्हीं नाड़ियों के मुख में होकर वह अन्नरस सर्व्वत्र पहुँच-
ताहै २२ व उसी रससे नाड़ियां प्राणोंको परिपूर्ण करती हैं व प्राण
सब देह भरको तृप्त कराते हैं २३ व प्राणों में जो नाड़ियां टिकी
हैं उनमें शरीर की ऊष्मा से जो जो पचने के योग्य होते हैं सब
पचजाते हैं २४ व उन्हींसे त्वचा मांस हड्डी मज्जा मेदा रुधिर उत्पन्न
होतेहैं रक्त से रोम और मांस उत्पन्न होते हैं केश तथा सब नसें
मांस से होती हैं २५ व नसों से मज्जा व हड्डियां होती हैं व मज्जा
और हड्डियों से नख उत्पन्न होते हैं व मज्जाही के अधिक होनेसे
बल होता है व बीज प्रभव से होता है २६ ये बारहों के परिणाम
हमने तुमसे कहे बस देहका मुख्य परिणाम कामहै शुक्रही से देह
की उत्पत्ति होतीहै २७ मैथुनके समयमें योनि में जैसा निर्दोष होता
है वा शुक्र में निर्दोष होताहै वह स्त्री के रुधिर के सङ्ग मिलकर एक
होजाताहै निर्दोष दोनोंहुये तो शुद्ध सदोष हुये तो अशुद्ध उत्पत्ति
होती है २८ सृष्टि होने में शुक्रही कारण होता हैं व उसी बीजके
द्वारा अपने कर्म्मों से जीव योनि में पैठता है २९ पुरुषका शुक्र व
स्त्रीका शोणित गर्भाधान के समय एकमें मिलजाते हैं सो दोनोंके
मिलने से एक रात्रि में तो कलल अर्थात् कुछ ढबैलेरङ्गका होजाता
है फिर पांच रात्रियोंमें वही कलल बुल्ला होजाताहै ३० व एक मासमें
फिर पांच प्रकार का होजाताहै अर्थात् ग्रीवा शिर स्कन्ध पृष्ठ वंश
व उदर ये एक मासमें बन जातेहैं ३१ हाथ पैर बगलें कटि ये सात
दो मासों में बनते हैं व जितने जोड़ है वे भी दूसरेही मास में बन-
ते हैं ३२ व तीन मासों में सैकड़ों सन्धि बनजाते हैं व चार मासों
में हाथों पैरों की सब अंगुलियां बनती हैं ३३ मुख नासिका व
कान पांच मासों में होते हैं दांतों के जमने के स्थान जिह्वा नख ३४
व कानों के छेद ये सब छठें मास में होते हैं पायु लिङ्ग उपस्थ वृ-
षण ३५ व गात्रों के सब सन्धि ये सब सातयें मास में होते हैं अङ्ग
प्रत्यङ्ग सम्पूर्ण केशसहित शिर ३६ सब अवयव स्पष्टतापूर्व्वक जाके
अठयें मासमें होते हैं फिर किसी अङ्गमें कुछ न्यूनता नहीं रहती
इसप्रकार से जब आठमासका गर्भ होता है तो उसको भूखभी ल-

गती है ३७ इसी से जब माता छः प्रकार के रस भोजन करती है उसका कुछ रस उसके भी मुखमें जाताहै व उसको सब रसोंका ज्ञान होजाताहै व दिन २ उसको भूँख बढ़ने लगती है ३८ जब इसप्रकार से शरीर पूर्ण होजाताहै तो फिर जीव स्मृति पाताहै व सुख दुःखभी जानताहै व फिर उसको अनेक जन्म का स्मरण आताहै निद्रा स्वप्न कोभी जानताहै ३९ कि मैं मरा था फिर उत्पन्न हुआ व फिर मरा फिर हुआ व नानाप्रकारकी सहस्रों योनियां मैंने अनेकबार देखीं ४० पर अबकी जैसे मेरा जन्महो व संस्कार जैसेहीहों वैसेही अपने कल्याण के कर्म्मकरूं जिससे फिर गर्भ में वास न हो व यहभी चिन्तना करताहै कि जैसेही अबकी गर्भ से निकला कि संसारसे निवृत्त होनेवाला ज्ञान जानूँगा ४१।४२ इसप्रकार गर्भके दुःखों सेपीड़ितहोकर कर्म्म के वशीभूतजीव गर्भही में मोक्षके उपायकी चिन्ताकरने लगता है ४३ जैसे कि पर्व्वतों से दबाहुआ कोई दुःखसे स्थित होता है ऐसेही ओझड़ी से बँधा हुआ प्राणी दुःख सहित अपना समय बिताता है ४४ व जैसे किसीको समुद्रमें डूबनेमें दुःख होताहै वैसेही वह दुःखसे आकुल होताहै गर्भ के जलसे सब अङ्ग उसके भीगेहुये होते हैं व अतिव्याकुल रहताहै ४५ जैसे कि कोई अग्नि से तपाये हुये कराहके तैलमें पड़कर छटपटाता है वैसेही गर्भ में पेटकी अग्नि से कष्ट पाताहै ४६ फिर अग्नि के समान तीक्ष्ण सूजियों से छिन्न भिन्नाङ्ग होकर दुःखित होताहै जो दुःखसूजियोंकेलगनेसे होताहै उससे अठगुना गर्भ में दुःख होताहै ४७ गर्भ वाससे कष्टदायक और कहीं का वास नहीं होताहै प्राणियों को अतुल दुःख व सुघोर सङ्कट गर्भवासमें होताहै ४८ ये चर स्थिर सब प्राणियों के गर्भका दुःख अपने गर्भ के अनुरूप से कहा ४९ गर्भ से कोटिगुण पीड़ा जब जन्म के समय योनि में दबताहै तब होती है यहांतक कि ऐसे सङ्कीर्णमार्ग्ग से निकलने से देही मूर्च्छित होजाताहै ५० जैसे ऊखकोल्हू में पीड़ित होतीहै वैसेही जन्मके समय प्राणी योनिसङ्कट में पड़कर पीड़ित होताहै जब जब गर्भ से निकलने पर प्राणी होताहै तो प्रसूतिका पवन प्रेरणा करताहै व अधोमुखकरके नीचेको गिराय।

जाताहै ५१ व महादुःख भोगताहै व रक्षा अपनी कहीं से नहीं पाता जैसे कोल्हू में ऊख पेरी जाती है व पीड़ित होती है ५२ वैसेही योनि यन्त्रमें पीड़ितहोकर प्राणी दुःखित होताहै व गर्भ के भीतर जब तक रहताहै नेत्रमूँदे राल कफयुक्त ओझरी से बँधा ५३ रक्त मांस वसा से लिप्त व विष्ठा मूत्रका पात्र बनारहताहै केश लोम नखसे ढँका व रोगोंका उत्तम स्थान ५४ आठ झरोखासे भूषित मुखही एकबड़ा द्वार रहताहै दो ओष्ठ दांत जीभ गला ५५ कफ पित्तयुक्त नाड़ी स्वेद प्रवाह रहताहै व वहां जब रहता तभी वृद्धताके शोकको करताहै कि जन्म लेनेपर जरा अवश्य समय पाकर आवेगी व काल चक्रभी आवेगा ५६ इसप्रकार कामक्रोधसे युक्त रहताहै पवनोंसे मर्दित रहता है नानाप्रकारके भोगविलासोंकी इच्छा से आतुर गूढ़ व रागद्वेषके वशानुग रहताहै ५७ व सब उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग जरायुसे वेष्टित रहते हैं ऐसा प्राणी बड़े संकटसे योनिमार्ग होकर बाहर निकलताहै ५८ ...ब उत्पन्न होताहै तो वैसेही विष्ठामूत्र व रुधिर से लपटाहुआ होता व इस मनुष्यादि के शरीर को हड्डियों का पिंजड़ा समझना चाहिये ५९ इस शरीर में साढ़े तीन करोड़ तो रोम होते हैं यह शरीर सूक्ष्म व स्थूल के भेदसे दोप्रकार का होताहै सूक्ष्म अदृश्य व स्थूल दृश्य रहताहै व इसमें एक कोटि नसें होती हैं ६० । ६१ व अपवित्र पसीना भीतर रहताहै बत्तीस दांत होते हैं व बीस नख ६२ पित्त कुडव भर होताहै बीस टकाभर तो इसमें वसा रहतीहै व दश टका भर कफ ६३ व पांच अर्बुदटका भरसे किसीका शरीर अधिक नहीं होता दशटकाभर मेदा तीन टकाभर रक्त व रक्त से चौगुनी मज्जा शरीर में होती है ६४ शुक्र इसमें आधे कुड़वभर होताहै व वही प्राणियों का बल होताहै व एक सहस्र पल मांस का सब प्रमाण होता है ६५ व सौ टकाभर रक्त इसमें मुख्य होताहै व विष्ठा मूत्र अप्रमाण होताहै हे राजन् ! गृहरूप देहमें इतने २ ये पदार्थ नित्य रहते हैं इसीमें आत्मा का वास है ६६ सब अशुद्ध पदार्थों से भराहुआ होता है व शुक्र शोणित के संयोगसे देह उत्पन्न होताहै ६७ व नित्यही विष्ठा मूत्रसे परिपूर्ण रहता है इसी से अपवित्र कहाजाता है

जैसे विष्ठासे भराहुआ घड़ा भीतर बाहर सब अपवित्र होताहै
ऐसेही ऊपरसे धोनेआदिसे स्वच्छ रखनेपरभी भीतर विष्ठामूत्र
हुये के कारण बाहर भीतर सब कहीं अपवित्र होताहै जिस श
में जाकर अतिपवित्र पंचगव्य व पायस आदि पदार्थभी ६९
घ्र अपवित्र होजाते हैं तिससे यह देह अपवित्र है व नानाप्रक
उत्तम अन्न व जल जिस शरीरमें जाकर ७० शीघ्र भ्रष्ट होजा
उससे और कौन अपवित्र अधिक होगा हे लोगो ! देखते नहीं
प्रतिदिन इस शरीरसे कितना मल सब छिद्रों के द्वारा बाहर नि
ताहै फिर उस मलके रहने का आधार यह देह कैसे पवित्र हो
है यह देह पंचगव्य कुश जलादिकों से शुद्ध करनेपर भी ७१।
चिताके अग्नि के समान अपवित्र होता निर्म्मल नहीं होसक्ता
ससे निरन्तर कफ मूत्रादि अपवित्र वस्तुओं के सोते बहाकर
जैसे पर्वत से जलके झरने बहते हैं वह ऐसा अपवित्र देह
शुद्धहो७३।७४ सब ओर से अशुचि इस शरीरकी शुद्धि किसी
अंगमें भी नहीं होसक्ती दिन वा रात्रि में मिट्टी व जलसे शुद्ध
ने पर भी हाथकी शुद्धता नहीं होती और मनुष्य विरागको
पाते हैं इस शरीर को धूपादि सुगन्धित पदार्थों से धूपित भी
७५। ७६ पर इसकी दुर्गंधि नहीं मिटती बनीही रहती है जैसे
वाईहुईकुत्तेकी पूंछ तैसेही जातिही से काली ऊन कभी सफ़ेद न
होती तिसीप्रकार शुद्ध कीहुई मूर्ति निर्मल नहीं होती अपनी
विष्ठाको सूँघ देखकर लोग नाक मूँदलेते हैं विरागको नहीं प्रा
होते हैं यह बड़ा भारी मोहका माहात्म्यहै व इससे सब जगत् मो
हितहै ७७। ७९ कि शरीर से निकलेहुये मलको सूँघकर तो ना
मूँदते हैं व शरीर को सूँघकर नहीं जो अपने शरीरको तुच्छ न
मझ इससे विराग नहीं करता ८० फिर उसको और क्या विरा
कारण उपदेश दिया जावेगा सब जगत् पवित्रहै केवल देहही अ
वित्रहै ८१ कि जिसके मलके स्पर्श से पवित्र भी पदार्थ अपवि
होजाते हैं दुर्गंधि मिटजाने के लिये मृत्तिका व जलसे शौच क
कहाहै ८२ परन्तु इन दोनों से शौच करनेके पीछे जब भावसे शु

कीजाती है तब शरीरकी शुद्धि होती है क्योंकि चाहे गंगाजी के सब जलसे व ढेरकी ढेर मृत्तिकासे शौचकरे ८३ परन्तु दुष्टात्मा दुर्गन्ध देहवाला पुरुष नहीं शुद्धहोता तीर्थ स्नाने और तपस्यासे दुष्टात्मा मनुष्य नहीं शुद्ध होताहै ८४ कुत्तेको चाहे तीर्थ में भी धोवे पर वह शुद्ध नहीं होता ऐसेही जिसका अन्तःकरण दुष्टहै उसको जो अग्नि आप आकर शुद्धकरै तोभी नहीं शुद्धहोता ८५ दुष्टात्माको न स्वर्ग पवित्रकरे न मोक्ष न अग्नि इससे जो भावसे शुद्धहै वह परमशौच युक्त कहाताहै व सब कर्म्मोंमें उसीका प्रमाण होताहै ८६ ऊपरसे चिह्न चाहे जैसे रक्खे परन्तु भावसे सब पापों को दूरकरे व मनसे धर्म्मकी वृद्धिकरे ८७ पतिव्रता और तरहसे पुत्रको औरही तरहसे पतिको चिन्तना करती है बस जिसका जैसा स्वभाव होता उसका वैसा अभिप्राय होताहै ८८ जो स्त्रीको आलिंगन करे पर भावसे हीन कभी न करे विविधप्रकारके भोजन मिलें परन्तु उनको भी न खावे ८९ अभावसे मिलनेसे सबरसहीन होजाते हैं व भावसे मिलनेसे सब रस युक्त होते हैं ८९ इससे सब यत्नोंसे चित्तको शुद्ध करो बाहरके शोधन से क्या है ९० यदि भाव पवित्र हुआ तो यह शुद्धात्मा प्राणी स्वर्ग और मोक्षको पाताहै ज्ञान जलसे देहकेमल धोवे व सद्वैराग्यको मृत्तिका बनावे ९१ व अविद्या रागरूप मल मूत्रोंको धोवे इसप्रकारसे स्वभावहीसे अपवित्र शरीरको शुद्धकरे ९२ क्योंकि यह शरीर केलाके खम्भेके तुल्य निस्सारहै सो ऐसे दोषी देहको जो प्राज्ञ शिथिल समझताहै ९३ वह संसारको अतिक्रमण कर डालता है व दृढ़तापूर्वक ग्रहण करके स्थित होता है इसप्रकारसे महाकष्ट युक्त जन्ममें नाना प्रकारके दुःख होते हैं ९४ व पुरुषोंके अज्ञानके दोषसे व नानाप्रकार के कर्म के वशसे गर्भ में टिकेहुये प्राणी को जो मति आती है वह उत्पन्न होने में नष्ट होजाती है ९५ अथवा योनिसंकटमें से निकलने से मूर्च्छित होजाने के कारण से वह बुद्धि जाती रहती है अथवा बाहर के पवनके लगतेही प्राणियों को मोह होजाताहै ९६ इससे जैसेही उत्पन्न होता है कि ज्वर से पीड़ित होजाने के कारण मोहको प्राप्त होताहै व उसी बड़ेभारी ज्वर से महामोह उत्पन्न होताहै ९७ जब

बनाय मूढ़ होजाताहै तो शीघ्रही उसकी स्मृतिका भ्रंश होजाताहै व स्मृतिभ्रंश होने से व पूर्व्व जन्मके कर्म्म के वशसे ९८ उस प्राणी की प्रीति उसी जन्ममें होजाती है व ऐसा मूढ़ होजाता है कि अकार्य्य कर्म्म करने लगताहै ९९ न आत्माको जानताहै न अन्य किसीको जानताहै न देवताओंकोही जानता है न परमकल्याणकी बातें सुनताहै व नेत्र सहित है पर नहीं देखताहै १०० व समान मार्ग्गपर भी चलनेपर पद २ पर गिर २ पड़ता है बुद्धि विद्यमान भी होती है पर पण्डितों के समझानेपर भी नहीं समझता १०१ इसी से लोभके वशीभूत होकर इस संसारमें नानाप्रकार के क्लेशों से क्लेशित होताहै गर्भ के स्मरण के न रहने के कारण शिवजी का कहा हुआ शास्त्र भी भूलजाताहै १०२ जोकि दुःख कहने के लिये स्वर्ग्ग व मोक्षका साधक है व जिसके जानने से धर्म्म अर्थ प्राप्त होताहै १०३ सो यहां आकर अपना कल्याण नहीं करते यह म अद्भुत है जिससे कि बुद्धि इन्द्रियों के विषय को अच्छेप्रकार न जानती इससे बाल्यावस्थामें महादुःख होताहै १०४ बोलने इच्छा करता है पर क्याकरे बोल नहीं सक्ता व चञ्चल वायु बालपनमें बहुत दुःखदेती है दांतों के निकलने से बड़ा दुःख होत है १०५ व नानाप्रकारके बालरोगों से पीड़ित होताहै व बालग्रहों भी पीड़ा होती है प्यास व भूँखके मारे कभी २ बहुत पीड़ित होता १०६ व मोहसे बालक विष्ठा व मूत्रभी खा पी लेताहै व कौमारावस्था में कर्णवेध आदि संस्कार करने से माता पिताके ताड़नों से १०७ अक्षर आदि के पढ़ने को गुरुआदि के शासनसे बालक बहुत दुःख बताते हैं व प्रमत्तेन्द्रिय होने के कारण कामरागादिकों से पीड़ित होते हैं १०८ इसप्रकारसे बाल्यावस्था के पीछे युवावस्था आती है उसमेंभी रोगोंकी वृद्धिके कारण सुख नहीं होता व सब ईर्षा करने से दुःख व मोहके कारण पीड़ित होताहै १०९ नेत्र रक्तपित्तके कारण अरुण रहते हैं इससे महादुःख मिलता है व कामाग्नि के खेद से रात्रिमें नींद नहीं आती ११० फिर दिनमें धन उपार्ज्जनकी चिन्ता से सुख कैसे मिलसक्ता है स्त्री को देखकर युवावस्था में पुरुषों के

काम के बिन्दु चूने लगते हैं १११ पर वे सुखके लिये नहीं होते जैसे कि पसीने के बिन्दु सुखके लिये नहीं होते जैसे पापी कोढ़ी को कीड़ों के ताड़न करने से सुख होताहै ११२ वैसेही पुरुषों को स्त्रियों के सङ्ग प्रसङ्ग करने से सुख होताहै जैसा सुख प्राणी धनके उपार्जन करने में मानताहै ११३ वैसेही स्त्रीके सङ्ग भोग करने से होताहै उस से अधिक नहीं मनुष्य को सोई वेदनाहै जिसके विना चित्त निवृत्ति है ११४ परस्पर पहले प्राप्त अन्तमें और प्रकार की होवे तैसेही बुढ़ापासे ग्रस्त रोगों से युक्त ११५ अपूर्वकी तरह से आत्मा होजाता है क्योंकि बुढ़ापा से पीड़ित रहता है जो देखतेहुये भी विराग युक्त नहीं होता उससे और अचेतन कौनहै ११६ बुढ़ापासे युक्त प्राणी स्त्री पुत्रादिक बांधव और दुराचारी नौकरों से अशक्त होनेके कारण अनादरको प्राप्त होताहै ११७ बुढ़ापासे युक्त धर्म अर्थ काम और मोक्ष के साधन करने में नहीं समर्थ होताहै इससे चाहिये कि युवावस्थाही में धर्म्म आचरणकरे ११८ क्योंकि जब वृद्धावस्थामें वात पित्त कफादिकोंकी विषमता होगी फिर वही तो व्याधि कहावेगा व वातादिकों के समूहही से यह देह बनाहै ११९ इससे इसको व्याधिमय शरीर जानना चाहिये वातादिकों के व्यतिरिक्त सब व्याधियों का तो पिंजराही देहहै १२० इससे नानाप्रकारके रोगोंसे शरीरी अनेक प्रकारके दुःख पाताहै वे दुःख अपनेही आत्माको जान पड़ते हैं और तुमसे क्या कहें १२१ इस देहमें एक सौ एक मृत्यु स्थितहैं तहां एक काल संयुक्तहै सौ आगंतुहैं १२२ जो आगंतु कहे हैं वे तो औषधोंसे निवृत्त भी होजाते हैं परन्तु कालमृत्यु जप होम व विशेष दान देनेसे भी नहीं शान्त होता १२३ व जब मृत्यु नहीं होता तब विषादिकों के खालेने से भी नहीं होता व न विना काल आये अकाल मृत्यु किसी का होता है १२४ फिर मृत्यु होने के समयमें मारने के लिये विविध प्रकार के व्याधि व सर्प्पादिजीव खड़े होजाते हैं व विष जलकी धारा अग्नि येही सब प्राणियों के मरने के द्वारहैं १२५ व चाहे अपने आप धन्वन्तरिहों पर मरण के समय सब रोगों से पीड़ित को नहीं आराम करसक्ते हैं १२६ व काल जब आजाताहै तो कोई उसको वशीभूत

नहीं करसक्ता कि वह छोड़कर चलाजाय न औषध न तप न दान न माता न बांधव काल से पीड़ित नरकी रक्षा करसक्के हैं १२७ रसायन तप जाप योग सिद्ध महात्मा ये कोई भी मृत्युको नहीं हटासक्ते व बड़े २ विज्ञानी भी मरनेपर कोटियों योनियों में जाकर जन्मलेते हैं व मरने पर कर्म्म के अनुसार देह पाते हैं व देह भेदसे जो पुरुषों का वियोग होताहै १२८ । १२९ उसको मरण कहते हैं पर परमार्थ से नाश नहीं होता जब कर्म्म के वशीभूत होकर प्राणी महापथ को प्राप्त होताहै १३० उसमें जो दुःख मरण के समय पाताहै वैसा कभी नहीं पाता मार्ग्गमें अतिदुःखित होके हा तात ! हा मातः ! हा कांत ! ऐसा कह २ कर बड़े आर्त्तस्वरसे रोदन करते हैं व पुकारते हैं १३१ जैसे मण्डूक को सर्प्प निगलजाताहै ऐसेही मृत्यु सब जन्तुओं को निगल लेताहै तब बान्धवों से त्यागा हुआ व प्रियों से घिराहुआ १३२ ऊर्ध्वश्वासें लेता हुआ व उष्ण श्वासें लेने से मुख सूखे हुये लोग खट्वापर पड़ेहुये बार २ मोहित होते हैं १३३ व मूर्च्छित होकर इधर उधर हाथ पैर फटकारते हैं खट्वापर से भूमिपर आने की इच्छा करते हैं व भूमिपर से खट्वाकी व खट्वा पर से फिर पृथ्वी पर आने की इच्छा करते हैं १३४ व विवश होजाते लज्जा छोड़देते मूत्र व विष्ठा देहमें लगी होती कण्ठ तालु ओंठ सूखजाते हैं बार २ पानी पीने को मांगते हैं १३५ व पड़े २ चिन्ता करते हैं कि हमारे मरने पर हमारे ये सब द्रव्य किसके होंगे इतने में यमराज के दूत कण्ठ में फांसी लगाकर खींचनेलगते हैं १३६ व सबके देखतेही देखते मरने लगताहै तो कण्ठ घुरघुराने लगता है व जीव इस शरीर से निकल कर दूसरे सूक्ष्म शरीर में प्रविष्ट होजाता है जैसे तृणजलौका नाम कीड़ा आगेके तृणको पकड़कर पीछेवाले तृणको छोड़देताहै १३७ जब देहान्तर को प्राप्त होताहै तो जीव पूर्व्वदेह को छोड़ताहै विवेकियों को मरण से अधिक दुःख किसी से प्रार्त्थना करने में होताहै १३८ क्योंकि मरण में एक क्षणमात्र का दुःख होताहै व प्रार्त्थना करने से अनन्त दुःख होताहै देखो जगत् भरके रक्षक श्रीविष्णुभगवान् वामनताको प्राप्तहुये १३९ फिर उनसे अधिक श्रेष्ठ कौन है

जो मांगे व लघुताको न प्राप्तहो यह अमृतोपमज्ञान हमने तुमसे कहा १४० इससे माता पिता व गुरुसे भी बार २ न प्रार्थनाकरे इस मांगने में प्रथम दुःख व मध्य में दुःख अन्तमें देने के समयमें भी दारुण दुःख होताहै १४१ इससे किसी से कुछ पदार्थ मांगने के समान और कोई दुःख नहीं है व वर्त्तमान भूत इतने दुःख जो हमने कहे १४२ उनको पुरुष नहीं शोचते न जन्मको शोचते और न उससे विरागको प्राप्त होते हैं देखो अतिआहार करने से महादुःख होताहै व विना आहार करनेसे उससे भी अधिक दुःख होताहै हां मध्यम भोजन करने से कुछ सुख होताहै वह कियाही नहीं जाता फिर सुख कहां मिलसक्ता है क्षुधा सब रोगों से व्याधि श्रेष्ठ है क्योंकि रोग तो औषध करने से शान्त होजाते हैं इससे क्षणमात्रही दुःख देते हैं परन्तु क्षुधाकी पीड़ा ऐसी है कि पुरुष के सब बलका नाशही करडालती है १४३ । १४५ जैसे अन्य महारोगों के होने से नर मरजाताहै ऐसेही क्षुधा से युक्त होने से भी मृतकही होजाता है व जिह्वाके आगे वर्त्तमान अन्नादिक के रसमें भी कौनसा सुखहै १४६ क्योंकि जबतक प्राणी युवा रहताहै तभीतक तो जिह्वाको रसादिका सुख जान पड़ता है व जैसेही वृद्धावस्था आती है फिर तो वह बहुधा गलेके नीचेही नहीं उतरता फिर सुख कैसे हो बस क्षुधाके तापसे तापितपुरुषोंके लिये केवल अन्नही औषधकी नाईं है और कुछ भी नहीं १४७ सो भी परमार्थता से कुछ सुखकेलिये नहीं होता क्योंकि मरना तो एकदिन पड़ताही है फिर सुख किसकाम का ठहरा हां जो सब कामों से विवर्जित रहे उसका कल्याण अमृतके तुल्य होताहै उसमें भी जो नेत्रोंसे देखनेका काम न लियाजाय तो सबओर से जीवको अन्धकारही जानपड़े तो कौनसा सुखहो जो नेत्र मूँदेरहे तो सुखको पकरताहै व जो देखतारहे तो नानाप्रकारके रूपों के देखने से व उनमें लगजानेसे आत्माही हतहोताहै १४८। १४९ पुरुष सुखकेलिये खेती वाणिज्य नौकरी चाकरी गोरक्षादि करते व और भी नानाप्रकारके परिश्रम करते हैं व उससे जो पाते हैं उसको सुखसमझते हैं प्रातःकाल मूत्र और पाखाना फिरना दुपहरमें भूख और

प्यास से १५० तृप्त कामनासे बाधितहोते हैं रात्रिमें प्राणी निद्रासे सोते हैं द्रव्यके पैदाकरने में दुःख इकट्ठाकीहुई द्रव्यके रक्षणकरने में दुःख १५१ द्रव्यनाश में दुःख द्रव्यके खर्च में दुःख द्रव्ययुक्तको कहां सुखहै चोर जल अग्नि भैयाचार और राजा से १५२ नित्यही द्रव्यवानोंको डरहै जैसे देहधारियोंको मृत्युसेहै परन्तु जैसे पक्षीलोग आकाशमें मांसभक्षण करते व व्याघ्र सिंहादि पृथ्वी में मांसभक्षण करतेहैं १५३ व जलमें मछलियां जलके विकार बहुतसे खाती हैं व आनन्दित रहती हैं ऐसेही धनवान् लोग अपने धनके भोग से आनन्दित रहतेहैं इससे सम्पत्ति से विनोद करते हैं शोकहोने से दुःखही मानते हैं १५४ द्रव्यके इकट्ठा करनेके समयमें खेद करते हैं कब सुख का देनेवाला द्रव्यहोगा जो धनादिकोंके बटोरने में उद्विग्न रहता है पीछे उसको सबसे निःस्पृह होना पड़ता है १५५ इससे वह धनका स्वामी छोड़ने के समय बहुत दुःखीहोताहै उससे बढ़कर और कोई दुःख नहीं होताहै हेमन्तके शीतसे व ग्रीष्म के तापसे वर्षाकीधारा से धनादि उपार्ज्जन करनेवालों को १५६ वात घाम व वृष्टिसे नाना प्रकारके दुःख होतेहैं फिर उनको सुख कहां से आया विवाह कार्य्य करने में भी नानाप्रकार के दुःख होते हैं व फिर उससे उत्पन्न लड़के बालों के विष्ठादिक उठाने से दुःखही होते हैं बस इसीप्रकार यह विश्वमूर्ख होकर नानाप्रकारके कर्म्मों से घिराहुआ रहता है जब पुत्रादिकों को कोई दांत वा नेत्र में रोग हुआ तो उसे देख रोदन करताहै कि हा बड़े कष्टकीबातहै अब मैं क्याकरूं १५७ । १५८ वाहन खोगया खेती भ्रष्टहोगई भार्य्या बड़ी प्रबलहुई पिता माता वृद्धहुये ये महिमानआये हैं नेत्रफूटगये हैं बस इत्यादि कर्म्म गृहके देख २ सदा दुःखितही रहता है १५९ मेरी स्त्री के छोटा बालक है इससे रक्षण कौन करेगा इसका शोक करताहै व विवाह के समय नहीं जानते कन्याको कैसा वर मिले १६० बस इन चिन्ताओं में तिरस्कृत कुटुम्बवालों को सुख कैसे होसक्ताहै १६१ ॥

कुं० ॥ चिन्ता जाहि कुटुम्बकी होत पुरुष कहँ जब्ब । ताके अब गुण तुरतही नष्ट होतहैं तब्ब ॥ नष्टहोतहैं तब्ब यथाका चेघटमाहीं ।

जलभरनेसों टपकजात ठहरत तहँ नाहीं॥ इमि देहहिं के संग सकल
विज्ञान अनिन्ता । नष्टहोत हैं तासुजासु स्वकुटुम्बीचिन्ता १६२ ॥
व राज्य पानेपर भी इससे मिलाप करनाहै इससे बिगाड़ करना
है इस चिन्ताके मारे कहांसुख मिलसक्ताहै क्योंकि उसमें तो पुत्रसे
भी भय बना रहताहै कि ऐसा न हो कि किसीयुक्तिसे हमको मार
कर राज्य यह न लेले फिर उसमें सुख कैसे है १६३ व उसकी जाति
वाले प्रायः सब उसके वैरी रहते हैं व उससे ईर्ष्या करते रहते हैं
क्योंकि एकही उसी राज्यके अभिलाषी सब होते हैं इससे परस्पर
कुत्तोंकासा कलह हुआ करताहै १६४ इससे हे राजन् ! राज्यादिमें
भी पुरुषको कोई सुख नहीं मिलता केवल सुख उसीको मिलता है
जो सबको छोड़कर निर्भय हो एकान्तमें बैठ रहताहै १६५ देखो
बड़ाभारी महाराजाधिराज कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन को प्रतापी ऋषिके पुत्र
अकेले परशुरामजीने युद्धमें मारडाला १६६ व उन महात्माका भी
वीर्य्य महाराज दशरथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी ने नष्ट करदिया
१६७ जरासंधने रामजी के यशको तेजसे नाश किया जरासंध को
भीमसेनने मारा भीमसेन को हनुमान्जी ने परास्त किया १६८
हनुमान्जी सूर्य्यजी के फेंकेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े व जिन अर्ज्जुन ने
महाबलसे दर्पित निवातकवचनाम दानवों को मारडाला उनको
पीछे से गोपालों ने जीतलिया सूर्य्य बड़े प्रतापसे युक्तभी हैं परन्तु
कभी २ बादलों से आच्छादित होजाते हैं १६९।१७० व उनबादलों
को पवन दूर २ उड़ा लेजाताहै व उस पवनके वीर्य्य को पर्व्वतों
ने जीतलिया व पर्व्वतों को अग्नि जलादेता है उसको जल शान्त
करदेता है १७१ उस जलको सूर्य्य शोषलेते हैं व सूर्य्य जलादि
सब ब्रह्माजी के एकदिन में नष्ट होजाते हैं १७२ व ब्रह्माभी पित-
रों व देवताओं के संग परार्द्ध द्वय कालके अन्तमें परमात्मा शिव
में मिल जाते हैं १७३ इस प्रकार इस संसारमें सर्व्वोत्तम बलवान्
परमात्मा जगन्नाथ अव्ययको छोड़ और कोई नहीं है १७४ ऐसा
सातिशय परमेश्वरको जानकर प्राणीको चाहिये कि अतिमान न करे
इस प्रकारके जगत् में कौन देवता वा पण्डित १७५ कोईभी सर्व्व

नहीं है व न अत्यन्तमूर्खही कोई है जो जबतक कुछ-जानताहै तब तक पण्डित कहाता है १७६ परन्तु सदा उसका प्रभाव समान नहीं बनारहता कहीं २ ऐसा एकआधा मनुष्य वा देव दिखाई देताहै कि जिसका प्रभाव जन्मपर्यन्त एकसा चलागयाहो १७७ दानव लोग कभी २ देवताओं को जीतलेते हैं फिर देवगण उनको जीतलेते हैं एकान्ततः सदा एकहीका जय वा पराजय नहीं हुआ करता १७८ राजा भी दो वस्त्र व प्रस्थमात्र भोजन कुछ पीनेका पदार्थ सवारी शय्या सब व बैठने के लिये एक चौकीआदि इतनेहीका अधिकारी है अन्य पदार्थ तो दुःखदहैं क्योंकि उनकी देखाभाली उसको करनी पड़तीहै १७९ सैकड़ों शय्या व मन्दिरहों पर उसके अधिकारमें एक खट्वामात्र रहती है व हजारों जलपात्र गृह में रहते पर सब दुःखद केवल एक जलपात्रसे उसका प्रयोजन चलताहै १८० प्रातःकाल सब नगरनिवासियोंके शब्दकेसहित नगारों का शब्दहोना केवल राज्यका अभिमानमात्र है कि हमारे गृहमें नगारे बाजते हैं १८१ सब आभरण भाररूपहैं व सब आलेपन भी मलही हैं व सब गाना मुहबाना है व सब नाचना उन्माद का साजना है १८२ इस प्रकारके राज्यभोगों से जो विचारकरे तो कहां सुखहै क्योंके परस्पर जीतने की इच्छा कियेहुये राजाओं को विग्रहकी चिन्ता बनीरहती है १८३ प्रायः लक्ष्मीमदवाले नहुषादिक बड़े राजा स्वर्ग में प्राप्तहुये और फिर पृथ्वी में पतित हुये लक्ष्मीसे कौन सुखपाताहै १८४ व स्वर्ग में भी कहां सुखहै क्योंकि दूसरे की शोभा अधिकदेख वहां भी तो स्पर्द्धा करनेलगते हैं क्योंकि अपनेसे ऊपरवाले देवोंको जब अधिक शोभावान् देखते हैं तो इच्छा होती है पर वह उनको नहीं मिलता १८५ क्योंकि मनुष्य जितना यहां दान पुण्यादि करताहै उतनाही स्वर्ग में भोगने को मिलताहै किसीको अधिक देखकर उसे कैसे मिले तब वहां मन करता है कि अबकी भूमिपर जन्म होगा तो अधिक पुण्य दान यज्ञादि करेंगे १८६ जब पुण्य क्षीणहुआ कि फिर पृथ्वीपर गिरपड़े व ऐसेही अन्य देवगण भी पुण्यक्षीण होनेपर स्वर्ग से पृथ्वीपर गिरते हैं १८७ सुखकी अभिलाषाही में निष्ठा कियेहुये देवोंका जब स्वर्ग से पातहोताहै तो

अकस्मात् पतित होनेके कारण स्वर्गवासियोंको भी दुःखही होता है १८८ इसप्रकार विचार करनेपर स्वर्ग में देवताओंको भी कुछ सुख नहीं है स्वर्ग के सुख भोगने से जो कर्म यहां करके स्वर्ग को जाताहै उनका नाश होजाताहै १८९ वहां फिर महादारुणकष्ट स्वर्गवासियोंको होताहै यह कष्ट तो ऐसाही होताहै जैसे नरकवासियोंको होताहै जोकि यहां मनवचन व शरीरसे तीनप्रकारके पापकरके जाते हैं वे भोगते हैं १९० पापीलोग जैसेही नरकमें पहुँचते हैं कि कुल्हाड़ियों से उनके अङ्ग छिन्न भिन्न करडालेजाते हैं तो पत्थरों की वर्षा ऊपरसे होती है कहीं २ वृक्ष उखड़ २ ऊपर गिरते हैं कहीं प्रचण्ड पवनका वेग चलताहै कहीं २ उठाकर एकस्थान से दूसरे में फेंक दियेजाते हैं १९१ कहीं २ मर्द्दन करडालेजाते हैं कहीं २ गजोंसे मर्द्दन कराते व कहीं २ अन्य प्राणियोंसे कहीं २ दावानलोंसे जलाये जाते कहीं २ अत्यन्त शीत में डाल दियेजाते हैं व कहीं कहीं अन्य स्थावरों वा जङ्गमों से दुःखपाते हैं १९२ ऐसेही बड़े २ विषधर क्रोधी सर्प्पों से कटाये जाते हैं जिससे दारुण दुःख उत्पन्नहोते हैं दुष्टोंका घात लोकही में पाशोंसे बांधकर यमदूत करते हैं १९३ व फिर कीटादि योनियों में बार २ जन्म लेना पड़ता है व सर्प्पादिकोंकी योनियों में भी जन्मना पड़ताहै इसप्रकार अनेक प्रकारके दुःख भोगने पड़ते हैं १९४ पशुओं की आत्मा का शमन दंड से ताड़न नाक के छेदने से त्रास कोड़ा से ताड़न १९५ बेंत काष्ठादिक निगड़ों और अंकुश से अंगबन्धन भाव मनसे क्लेशों से भिक्षा युद्धादि से पीड़न १९६ अपने यूथ के वियोगों से जबर्दस्ती लाकर बांधने में इसप्रकार पशुओं की देहों में अनेक प्रकार के दुःख होते हैं १९७ वर्षा शीत व घामसे बड़ादुःख मिलता है व ग्रहोंसे पक्षियों से अत्यन्त दुःख मिलते हैं ऐसेही अन्यभी बड़े २ शरीरवाले प्राणियोंसे दुःखमिलता है इसप्रकार नानाभांति के दुःख प्राणीको होते हैं १९८ गर्भवास में दुःख जन्महोने पर भी मनुष्यों को सब दुःखहीदुःख हैं क्योंकि बाल्यावस्थामें सुचाल चलने के लिये गुरुशिक्षा होनेसे दुःखमिलता है १९९ व युवावस्था में काम व नाना

प्रकारके रागोंसे और ईर्षा से अपनेआप दुःख होते हैं कृषी वाणिज्य सेवा गोरक्षादि कर्म्मोंसे भी दुःखही होते हैं २०० व वृद्धतामें जरा व व्याधियों से पीड़ित होने से दुःखहोते हैं व मरण में महादुःख और किसीसे कुछ मांगने में उससे भी अधिक महादुःख होता है २०१ राजा अग्नि मेघ चौर व शत्रुओं से महादुःख मिलते हैं व धनकी रक्षामें धननाश और धनके खर्चमें नानाप्रकारके दुःख मिलते हैं २०२ कार्प्पण्य मत्सर दम्भ और धनकी अधिकता में महाभय बनारहता है अकर्त्तव्य करनेमें प्रवृत्त धनवानों को तो सदा दुःखही दुःख रहते हैं २०३ व्याजलेना भृत्योंकीसी वृत्तिहै व परतन्त्रताको दासत्व कहते हैं इष्ट अनिष्टके योगसे संयोग हज़ारों तरहके होतेहैं २०४ दुर्भिक्ष पड़नेपर अभाग्यता मूर्खता व दरिद्रता किसीके अधीन होकर रहना व राजासे विग्रह ये सब नरकहैं २०५ परस्परके तिरस्कार का दुःख व परस्परका भय परस्परसे क्रोधहोना ये सब दुःख राजाको राजाओं से रहते हैं २०६ भावोंकी अनित्यता कृतकार्य देहधारी को होतेहैं परस्पर एक दूसरेका मर्म्म भेदन किया करताहै व नित्य एक दूसरेकी पीड़ा चाहता है २०७ परस्पर पापके भेदसे लोभीहैं व अन्योन्य एक दूसरे को भक्षण भी करलेता है जिससे कि इत्यादि दुःखों से चर अचर सब भय युक्त रहता है २०८ नारकी योनिवालों से लेकर मनुष्य पर्य्यन्त सबको ये दुःख होतेहैं इससे पण्डित को चाहिये कि इन सबोंको त्यागे जैसे इस कन्धेपरसे उतारकर भारको दूसरेकन्धेपर धरनेसे मनुष्य सुस्ताना समझताहै २०९ ऐसेही सब संसार एक दुःखदके करनेसे दूसरे दुःखदको सुखद समझता है इसीप्रकार परस्पर की अतिशयता को देख मारे दुःखके व्याकुल होकर देवलोग भी सदा दुःखितही बनेरहते हैं व बहुतदिनों के पीछे जब उनका पुण्य क्षीण होता है तो फिर मनुष्यादिकों में जन्म पातेहैं २१० । २११ व विविध प्रकारके रोग देवलोकमें भी होते हैं यज्ञका शिरकटाहुआ अश्विनीकुमारोंने जोड़ा २१२ तिसीदोष से यज्ञके सदैव शिरकारोग होताहै सूर्यके कोढ़ वरुणके जलोदर २१३ पूषाके दाँतोंकी विकलता इन्द्रके भुजोंका रुकना चन्द्रमा के बड़ा

भारी क्षयीरोग है २१४ व दक्षप्रजापति के बड़ाभारी ज्वर बहुतदि-
नोंतक बनारहा व कल्प २ में बड़े २ देवताओंका भी नाश होताहै
२१५ व द्विपरार्द्धावसान में ब्रह्माका भी नाशहोताहै व दक्षकी कन्या
जो कि उनकी पौत्रीथी ब्रह्माने उससे भोगकरना चाहाथा २१६ प-
रन्तु जब वह देवी अपने योगाभ्यास से अन्तर्द्धान होगई तो ब्रह्मा
भी उसको शाप देतेभये जहां काम क्रोध स्थित रहते हैं वहां उसी
प्रकारके दोष हुआ करते हैं २१७ व सब दुःखभी वहां स्थित रहते
हैं इसमें कुछभी संशय नहीं है वृद्धता व जन्म मरण सब भोजन
करना हविका भोजन २१८ स्त्रीका वधकरना कामासक्तहोना व पा-
ण्डवों के दलमें सारथ्यकरना श्रीकृष्णचन्द्रजी को भी पड़ा व रुद्रने
क्रोधकर त्रिपुरको भस्मकिया व दक्षका यज्ञविनाशा २१९ ऐसेही स्क-
न्दकाभी जन्महुआ व सहस्रों क्रीड़ायें उन्हों ने कीं इसीप्रकार तीनों
देवदेवभी रागादिकों से युक्तरहते हैं २२० व जो इन तीनों से परे
सनातन शान्त परिपूर्णस्वामी है वह मुक्तिदायक है ऐसेही सब ज-
गत् परस्परकी अतिशयतामें स्थित रहताहै २२१ व नानाप्रकारके
दुःखों से व्याकुल रहता है ऐसा जानकर इस संसार से निर्म्मोह
होनाचाहिये क्योंकि निर्म्मोह होनेसे विराग होताहै व विरागसे ज्ञान
की उत्पत्ति होतीहै २२२ ॥

चौ० ज्ञानपाय परमेश्वर जानी । अनघअनादि सकलगुणखानी ॥
परब्रह्म परमात्महिं पावै । कोटि जन्मके पाप नशावै ॥
सब दुखरहित स्वस्थचित होई । ह्वै निर्म्मुक्त सुखी नर सोई ॥
पुनि सर्व्वज्ञ पूर्ण ह्वै मुक्तिग । मुक्ति कहावत नर ह्वै भुक्तिग ॥
यह तुमसन सब चरित सुनावा । जो पूँछ्यहु भूपति मनभावा ॥
धर्म्माधर्म्म विवेक सुहावन । होत ज्ञान सों अतिशय पावन ॥
अब चलिये ययाति नृप आपू । इन्द्र बुलावत हैं गत पापू ॥
अपरकथाकुछपूछनचहहू । तोपुनिगुनिमनमहँसोंकहहू २२३ । २२५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने
पितृमातृतीर्थमाहात्म्येषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

# सरसठवां अध्याय॥

दो० सरसठयें महँ नरन के भाषे कर्म्मविपाक॥
तहँ प्रसङ्ग सों पापकर जनन जात कह नाक १

इतनी कथा सुन राजा ययाति मातलिसे बोले कि हमारे भाग्य के प्रसंग से आपने हमको दर्शन दिया व इन्द्र के सारथि आप हमारे अतिथिहुये यहभी हमारे भाग्यहीका प्रभावहै १ मनुष्य लोग मर्त्यलोक में नित्य दारुण पापकरते हैं हे मातलिजी! उनके कर्म्मोंका विपाक हमसे इस समय कहो २ मातलि बोले कि सुनो हम पापाचार का लक्षण कहेंगे उसके सुनते २ महाज्ञान इस लोक में होताहै ३ जो कोई वेदोंकी निन्दा करतेहैं वा वेदविहित आचारकी निन्दा करते हैं ज्ञानी पण्डितों ने इसको महापापों में बताया है ४ व जो कोई सब साधुओं को पीड़ित करता है यहभी महापातक है प्रायश्चित्तही से जाता है ५ व जो कोई अपने कुलके आचार को छोड़कर अन्य कुलका आचार करता है यह भी बड़ाघोर पाप कृत्यके जानने वालों ने कहा है ६ व जो कोई माता पिताकी निन्दा करता है वा अपनी भगिनी को ताड़ित करता है व फूफू की निन्दा करता है वह भी महापापी है ७ हे राजन्! श्राद्धकाल आने पर भी पांच कोसके भीतर में टिकेहुये कन्यासहित अपने जामाता और नाती को जो नहीं निमन्त्रण देकर बुलाता ८ वा अपने बहनोई व बहिन को नहीं बुलाता व औरों को बुलाता खिलाता है चाहे कामसे वा क्रोध से वा भयसे ९ तो उसके पितर श्राद्ध में भोजन नहीं करते व विश्वेदेव भी परित्याग करके चलेजाते हैं यह पाप पिताके मारनेके समान होता है १० व दानके कालमें भी जो दान के समय ब्राह्मण के आजाने में बड़े दानको छोड़ कुछको दान देवे ११ व एक को दान दे व औरोंको कुछ भी न दे तो यह अतिघोर पाप दान का नाश करनेवाला कहा गया है १२ व यजमान के गृह में जितने ब्राह्मणहों जो उनको छोड़कर दान करता है वह दानका लक्षण नहीं है १३ धर्म आचार से युक्त आश्रित ब्राह्मणको सब उपायों से

बहुत दान देवे १४ मूर्ख विद्वान् न गिने ब्राह्मण सदा पालने योग्य है बहुत दानोंसे दाता सब पुण्योंसे युक्त होताहै १५ व जहां सदाका पूज्य ब्राह्मण आवे व उसकी पूजा किसीकारणसे न कीजाय व औरोंकी कीजाय १६ तो उसके दान हवन सब निष्फल होजाते हैं इसमें संदेह नहीं है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य चौथावर्ण शूद्र १७ पुण्यकालमें आश्रित ब्राह्मण चाहे पढ़ा लिखाहो वा मूर्खही ब्राह्मणहो जो उसको दान दे तो उसके पुण्यका फल हमसे सुनो १८ अश्वमेधयज्ञ करनेका फल होता है कोई मनुष्य किसी कार्य्य के लिये किसीके समीप आवे तो यदि उसके करने से होसक्ता हो तो उसे विमुख न करे १९ और ब्राह्मण तिस समय श्राद्धकर्ममें आवे तो दोनोंकी भोजन और वस्त्रोंसे पूजा करै २० ताम्बूल दक्षिणा देवे क्योंकि ऐसा करनेपर उसके पितर अत्यन्त प्रसन्नहोते हैं श्राद्ध भोजन किये हुये ब्राह्मणको सदैव दान दक्षिणा देनाचाहिये २१ जो श्राद्धकर्त्ता नहीं देता तो उसको गोहत्या के समान पाप होताहै तिससे श्रद्धासे दो ब्राह्मणों की पूजा करे धन-हीन में एकहीको पूजे क्योंकि इनमें से कुछ भी करने से ब्रह्महत्या का दोष उसे लगताहै व ऐसेही श्राद्धकर्त्ता भी जो ऐसा करताहै ब्रह्महा होता है इससे श्राद्ध करनेवाले व भोजन करनेवाले दोनों को ब्रह्म-चर्य्य से रहकर ऊपरके लिखेहुये आचार से रहना चाहिये २२।२३ हे नृपोत्तम ! जब व्यतीपात वा वैधृतियोग आवे व अमावास्या तिथि आवे वा क्षयाह की तिथि आवे तो ब्राह्मणादि तीनों वर्णों को इनमें श्राद्ध करना चाहिये २४ हे महाराज ! जैसे यज्ञमें ऋत्विज् करै वैसेही श्राद्ध में सदैव ब्राह्मण करने चाहिये २५ जाननेवाला मनुष्य विना जानाहुआ ब्राह्मण श्राद्ध में न करै जिसका वंश और तीन पीढ़ी जानताहो उसे करै २६ जो ब्राह्मण आचारसे युक्तहो उस को श्राद्धमें निमन्त्रितकरे जिसका कुल न जानता हो उसे आचारसे विचारना चाहिये २७ श्राद्ध दान में शुद्ध वेदवेदाङ्ग का पारगामी जाना हुआही ब्राह्मणहो २८ तब श्राद्ध दान करना चाहिये तिससे ब्राह्मण को निमन्त्रणकरै और अपूर्व आतिथ्य करै २९ अन्यथा जो पापी करता है वह निश्चय नरक को जाताहै तिससे दान श्राद्ध और

पर्वों में ब्राह्मण करना चाहिये ३० श्राद्ध दान में पहले ब्राह्मण की परीक्षाकर श्राद्ध दान करै ब्राह्मण के विना भोजन कराये तिसके घर में पितर भोजन नहीं करते हैं ३१ व जिस श्राद्धमें ब्राह्मणों को भोजन नहीं दियाजाता पितर कर्त्ता को शाप देकर चलेजातेहैं व वह महापापी होताहै चाहै ब्रह्मा के समान भी हो ३२ व जो आचार नहीं करता मोहसे श्राद्धके दिन मैथुनादि कर बैठताहै वह महापापी जानाजाताहै व सब धर्म्मों से बाहर समझा जाता है ३३ जो लोग वैष्णव वा भोगदाता शैव ब्राह्मणको त्याग देते हैं वा ब्राह्मणके धर्म की निन्दा करते हैं उनको महापापी जानना चाहिये ३४ व जो शिव के आचारको त्यागदेते हैं वा शैवोंसे वैर करते हैं व जो हरिकी निन्दा करते हैं व ब्राह्मण मात्र से वैर रखते हैं ३५ व जो आचार की निन्दा करते हैं वे महापापी हैं पहले श्रेष्ठ ज्ञानयुक्त पुण्यकारी भागवत पूजनी चाहिये ३६ फिर विष्णुपुराण हरिवंश मत्स्य वा कूर्म और पद्मपुराण पूजना चाहिये जे पूजते हैं तिनके कल्याण को हम कहते हैं ३७ तिसने प्रत्यक्ष मधुसूदन देवको पूजा तिससे वैष्णव ज्ञान विष्णु के प्रियको पूजै ३८ देवस्थान में नित्यही वैष्णव पुस्तक को पूजै तिसके पूजने से लक्ष्मीपतिजी पूजित होजाते हैं ३९ हरिकी ज्ञानवाली पुस्तक की विना पूजा किये जे गाते और लिखते हैं और विना जाने तिसको देते सुनते उच्चारण करते हैं ४० लोभसे कुत्सित ज्ञान नियमसे वेंच डालते हैं और इष्ट मित्रको विना ज्ञारी बहारी भूमि में बैठा देते हैं ४१ हरिका ज्ञान यथा क्षेम प्रत्यक्ष से प्रकाशित करै जो समर्थ होकर पढ़ाहै परन्तु प्रमाद करता है ४२ वा अपवित्र आप अपवित्र स्थानमें उसे पढ़ता है वा सुनताहै वह भी पापी होता है यह संक्षेप रीति से ज्ञानका माहात्म्य व प्रकार हमने तुमसे वर्णन किया अभी और ज्ञानकी बातें कहते हैं ४३ जो विना गुरुकी पूजा किये उससे शास्त्र सुनता है व विना उसकी शुश्रूषा किये भाव से आज्ञा भंग करनेलगताहै ४४ व जो गुरुवचन का प्रमाण नहीं करता व उसको बहुधा उत्तर देता है व गुरुका कर्म्म उसके करने से होसकाहै पर उसकी उपेक्षा करताहै ४५ व गुरु दुःखित अशक्त वि-

देश गये शत्रुओं से पीड़ित हों पर पापी मनुष्य गुरुको छोड़कर कहीं चलाजाता है ४६ वह महापापी गिना व समझा जाताहै व जो कोई किसी स्थान पर पुराण पढ़ाजाताहो व उसमें विघ्न करता है तिसके पाप को हम कहते हैं वह तबतक कुम्भीपाक नाम नरक में पड़ा रहताहै कि जबतक चौदह इन्द्र भोग करते हैं ४७ व पढ़तेहुये गुरु की जो पापी उपेक्षा करताहै वह बहुत दिनोंतक घोर नरकों में निवास करता है ४८ व जो अपनी पतिव्रता भार्य्या व आज्ञाकारी पुत्र और मित्रका अनादर करता है इसका पाप भी गुरुनिन्दा समान होताहै ४९ ब्राह्मण का मारनेवाला सोना चुरानेवाला मदिरा को पीनेवाला गुरु की शय्या पर जानेवाला और पांचवां तिनका संयोगी ये महापापी कहाते हैं ५० क्रोध द्वेष लोभ व भयसे विशेष करके ब्राह्मण की कोई हानि करता है वह ब्राह्मण का मारनेवाला होताहै ५१ व जो मांगते हुये निर्द्धन ब्राह्मण को बुलाकर पीछे से कहदेता है कि हमारे पास कुछ नहीं है वह ब्रह्मघाती कहाता है ५२ जो विद्याके अभिमान से सभा के मध्य में ब्राह्मण को निस्तेज वा उदासीन करता है वह ब्राह्मण का मारनेवाला कहाता है ५३ व जो मिथ्या गुणों से अपनी प्रशंसा करता है व जो गुरु से विरोध करता है वह भी ब्रह्मघाती कहाता है ५४ व क्षुधा तृष्णा से व्याकुल होकर भोजन करने की इच्छा कियेहुये किसी प्राणी के विषय में जो विघ्न करता है उस को पण्डित लोग ब्रह्मघाती कहते हैं ५५ सब मनुष्यों का चुगल छिद्र ढूंढ़नेमें तत्पर उद्वेजन करनेवाला और क्रूर ये भी ब्राह्मण के मारनेवाले हैं ५६ देवता ब्राह्मण और गौवोंकी पहले दीहुई और कुछ कालसे नष्ट हुई भूमिको हरलेताहै तिसको ब्राह्मण का मारनेवाला कहते हैं ५७ जो ब्राह्मण की द्रव्य हरलेताहै जो कि धरोहर धरी थी तिसको उत्तम ब्रह्महत्या के समान पाप होता है ५८ पञ्चयज्ञ कर्म्म के अग्निहोत्र को करके फिर छोड़ देताहै व माता पिता गुरुकी कूट करताहै वहभी ब्रह्मघाती कहाताहै ५९ व जो कोई शिवभक्तों का अप्रिय करताहै और अभक्ष्य मांस मत्स्यादि भोजन करताहै व जो प्राणियों को मारा करताहै ६० गौवों के गोठ

में वन में ग्राम में व नगर में अग्नि लगादेताहै ये सब घोर पाप मदिरापानके समानहैं ६१ व जो दीन किसीका सर्व्वधन हरलेताहै व परस्त्री गज व अश्व किसीके हरलेताहै व गो भूमि चांदी कपड़ा ओषधियों के रस ६२ चन्दन अगर कपूर कस्तूरी रेशमी वस्त्र ह लेताहै और पराई धरोहर हरलेताहै येसब पाप सुवर्ण हरनेकेसमा होते हैं ६३ व कन्या जब वरके योग्यहुई व वह देता नहीं उसे भी सुवर्णही हरनेका पाप होता है व जो पुत्र वा मित्रकी भार्य्या को व बहिनों में गमन करताहै ६४ व जो बिना बिवाहीहुई किसी कन्याके संग भोग करताहै व जो ब्राह्मण क्षत्रिय होकर पासी कोरी चमा आदि अन्त्यजोंकी स्त्रीके संग भोग करताहै व अपने वंशकी किसी स्त्री से भोग करताहै उसे गुरुकी स्त्री के संग भोग करने के समान पाप होताहै ६५ व अन्य भी महापापों के तुल्य पाप जो कहेहैं सब पातकहैं उनसे कम उपपातकहैं ६६ ब्राह्मणोंको देने को कहक फिर जो नहीं देताहै व फिर ब्राह्मण का स्मरण नहीं करता यह उप पातकों में गिना जाताहै ६७ ब्राह्मणकी द्रव्य का हरना व मर्य्याद के विपरीत करना अतिमान अतिकोप करना व दम्भ कृतघ्नता ६८ व और जगह विषय में आसक्त होना कृपणता व मत्सरकरना पर स्त्रीगमन करना साध्वी कन्याको दूषित करना ६९ व परिवित्ति वा परिवेत्ताको कन्या देना वा उनके यहां यज्ञ कराना ये भी उपपातकों में हैं ज्येष्ठकी विद्यमानतामें जो कनिष्ठ भाई अपना विवाह करे वा राज्य भोगने लगे व ज्येष्ठ का विवाह न हुआहो व उसको राज्य न दियाहो तो ज्येष्ठपरिवित्ति व कनिष्ठपरिवेत्ता कहाताहै ये दोनों देव पितृकार्य्य से रहित होजाते हैं ७० व जो पुत्र मित्रकी स्त्री स्वामी को धनके अभावमें परित्याग करदेताहै वा भार्य्या साधु तपस्वी ७१ धेनु क्षत्रिय वैश्य स्त्री शूद्र व शिव विष्णुके पूजन के वृक्ष बिल्व तुलसी पिप्पल आमलकी आदिको जो काटता है व पुष्पवाटिका फुलवाड़ी आदि का विनाश करताहै ७२ व जो जनों के रहनेवाले स्थानों में थोड़ी भी पीड़ा करताहै ऐसेही जो अपने भृत्यवर्गों को पीड़ित करताहै वा पशु धन धान्य धन किसी के हरलेताहै ७३ व

सब धान्यों में जो किसीप्रकार का विघ्न करताहै पशुकी चोरी यज्ञके अयोग्यों को यज्ञ कराना यज्ञ तड़ाग वाटिका पुत्र स्त्री इनको जो बेंच डालताहै ७४ तीर्थयात्रा व्रतादि सुकर्म्म इनको जो बेंचते हैं व जो स्त्री के धनसे जीते हैं स्त्री की भगसे अत्यन्त जीवित रहते हैं ७५ व जो अपना धर्म्म बेंचते हैं व धर्म्मका वर्णन करते हैं व जो पराये दोष कहते व जो पराये छिद्र देखाकरते हैं ७६ जो परधन हरने की अभिलाषा करते हैं व परस्त्री को कुदृष्टि से देखते हैं हे महाराज ! सब पाप गोघात के समान हैं जो सब अस्त्र शस्त्र बनाता है व गऊ हरलेता व जो गऊ को बेंचता और जो अपने नौकर चाकरों के ऊपर निर्दयी होता व जो पशुओंको दमन कराताहै ७७। ७८ व जो मिथ्यावचन बोलताहै व मिथ्यावचन सुनताहै व जो स्वामि-द्रोही गुरुद्रोही मायावी चञ्चल शठ ७९ स्त्री मित्र पुत्र बालक वृद्ध दुर्बल आतुर नौकर अतिथि बन्धु इन सबको भूखेहुये छोड़कर आप भोजन करताहै ८० व जो लोग मीठे उत्तम पदार्थ अकेले भोजन करते हैं व औरों को मांगने परभी नहीं देते वे पृथक्पाकी कहाते हैं व सब वेदवादियों में निन्दित होते हैं ८१ व जो अजिते-न्द्रिय किसी कार्य्यके करनेकेलिये नियमोंको ग्रहण करके फिर नहीं करते और मदिरा पीनेवालों से युक्त होकर जे पराई स्त्री में गमन करते ८२ क्षयरोगसे पीड़ित प्यास और भूंखसे आतुर गऊको यत्न से नहीं पालते वे गऊ के मारनेवाले नारकी हैं ८३ सब पाप में रत चौपाये और खेतके काटनेवाले व साधु विप्र गुरुओं और गऊको ताड़ित करताहै ८४ व जो अपनी पतिव्रता स्त्रीका परित्याग करते हैं व जो आलस्यके वशीभूतहोकर बार २ सोताही रहता है ८५ व जो दुर्बलोंको जे नहीं पुष्टकरते नाशहुओं को नहीं ढूंढ़ते वा भारसे पी-ड़ित मनुष्योंको औरभी पीड़ित करतेहैं वा घावयुक्तको चलातेहैं ८६ सब पापमें रत व जो पापियों के संग बैठकर एकत्र भोजन करते हैं व जो अंग भंग घाव रोगसे पीड़ित गोरूप भूंखसे आतुर ८७ इनका पालन यत्नसे नहीं करते ये सब नरकको जाते हैं व जो पापीलोग बैलों के अण्डे कुटाते हैं ८८ व गाइयों के बछड़ोंको बाधा करवाते

हैं वे सब महानारकी होते हैं जो आशाकरके द्वारपर आयेहुये भूँख प्यास श्रमसे पीड़ित ८९ अतिथिको नहीं मानते वे नरकगामी होते हैं अनाथ विकल दीन बाल वृद्ध व बीमारके ऊपर ९० जो मूढ़ दया नहीं करते वे सब नरकगामी होते हैं व ब्राह्मण होकर जो बकरियां पालता है वा भैंसोंको गाड़ी हल आदिमें जोतता है व शूद्रकी स्त्री और दासीको अपने घर बैठालेता है ये भी सब नरकगामी होते हैं ९१ व शूद्रहोकर जो कोई ब्राह्मण वा क्षत्रियके आचारकरने में प्रवृत्तहोता है ब्राह्मण होकर जो राज बढ़ई दरजी आदि शिल्पियों का कामकरता है व किंड़िहिरआदि बनाता है वा वैद्यकी करताहै और देवताके मन्दिर में जीविकालेकर पूजाकरताहै ९२ नौकर और मन्त्र के कर्मके करनेवाले सब नरकजाते हैं जो कहे हुयेको अतिक्रमणकर अपनी इच्छासे करलेताहै ९३ वह नरकों में पचता है और जो वृथा दण्डदेता है वह अधिकारी उत्कोचक और चोरों से पीड़ित होताहै ९४ जिस राजाकी राज्यमें प्रजा नरकोंमें पचते हैं और जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य पापवर्त्ती राजा को ग्रहण करते हैं वे भी निस्संदेह घोरनरकों में जातेहैं पराईस्त्री से गमन करनेवालेव चोरोंको जो पाप होताहै वह न रक्षाकरनेवाले राजा को होताहै परस्त्रीगामी व चोरों से रक्षा न करनेवाले राजाको वेही नरक होतेहैं जोकि परस्त्रीरतोंको व तस्करोंको होते हैं व जिसके राज्यमें चोर अचोरके समान व अचोर चोरोंके समान समझे जाते हैं ९५। ९७ कुछ निर्णय नहीं होता उस राजा को नरक होता है व घृत तैल अन्न पानादि मधु मदिरा मांस आसव ९८ गुड़ ऊख दुग्ध शाकादि मूल फल दधि तृण इन्धन पुष्प पत्र व कांस्य के पात्र ९९ जूता छतुरी पालकी कोमल आसन ताम्र सीसक पित्तल व जलसे उत्पन्न सब पदार्थ १०० बाजा बाँस घरकीसामग्री ऊन कपास रेशम वा रेशमीवस्त्र व भेड़ी ऊँटके रोमोंसे बनेहुये कम्बलादि १०१ रुई सूक्ष्मवस्त्र लोभसे जोकोई इनकी चोरी करता है वा नानाप्रकार की औरही द्रव्य हरलेताहै १०२ वह सब नरकों में जाता है थोड़ी सरसोंभरभी दूसरेकी द्रव्य हरताहै तो निस्संदेह नरकमें जाता है बहुत वा थोड़ी दूसरेकी द्रव्य १०३।१०४

हरकर मनुष्य निस्संदेह नरकको जाता है इसी प्रकारके पापों से मनुष्य १०५ शरीरघातन के लिये पहलेके आकारको प्राप्तहोते हैं फिर शरीर में स्थित यमराजकी आज्ञासे यमलोकको जातेहैं १०६ मार्ग्ग में यमदूत अतिकराल ताड़ना करते हैं व उनके सङ्गजाने से महादुःख भोगते हैं फिर धर्म्मराज की आज्ञासे पापी देव मानुष वा तिर्य्यग्योनियों में जन्मपातेहैं १०७ धर्मराज शासन करनेवाले विनय आचार युक्त और प्रमादसे मलिन आत्मावालों को अनेक प्रकारके घोरवधों से पीड़ित करते हैं १०८ यहां तो विनय आचार युक्तको देख दण्डदेनेवाला चाहे कुछ शील संकोच भी करजाय परन्तु यमराज जी कुछभी शील संकोच नहीं करते पापानुसारदण्डदेही देते हैं परस्त्रीगामी व चोरों को तथा अन्याय करनेवालों को १०९ राजा दण्डदाता कहा है छिपेहुओंको धर्मराज हैं इससे जो कोई कुछ पापकरे भी उसको चाहिये कि उसका प्रायश्चित्तभी यहीं अपने वित्तकुलके अनुसार करडाले ११० नहीं तो वहां जाकर कोटि कल्प पर्य्यन्त नरक भोगकरते हुये पापके फल भोगनेहोंगे ॥

चौ० कर्म्मकरत वा आनकरावत । अनुमोदित करि त्यहिहरषावत ॥
कर्म्मवचन मनसों जो प्रानी । जात अधोगति सत्यबखानी ॥
धन अरु धान्य नारि परिहारी । उनकी गति संक्षेप उचारी ॥
पापकारि नर नारिन केरी । कही विचित्र कुगतिकी ढेरी ॥
अपर कहेंका कहहु भुआला । जो पूँछन तुम चहत रसाला ॥
धर्म्म अधर्म्म सकलफल गाउब । भलीभांति नृपतुम्हें सुनाउब ॥
बोले हरि सुनु भूप महाना । इमिमातलि सबकीन बखाना ॥
धर्म्म प्रसङ्ग ययाति नृपाला । सुनिगुनि मनपुनि भयहुनिहाला ॥
सकल अधर्म्म प्रसङ्ग सुनावा । तासु त्यागकर यत्न बतावा ॥
पुनि यममार्ग कहन सो लागा । राजासुनतसहितअनुरागा ११।१११९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डे भाषानुवादेवेनोपाख्यानेपितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

# अड़सठवां अध्याय ॥

दो० अड़सठयें महँ कह बहुत दान मान करिजोय ॥
विप्रनकहँ आदरकरे यममग सुखलहसोय १

राजा ययातिजी बोले कि हे मातलिजी ! अधर्म का फल सब हमने सुना अब धर्मका फल कहिये क्योंकि धर्म फल सुननेमें हम को कौतूहल है १ मातलि फिर राजा ययातिजी से बोले कि इन सब पापों के करनेवाले चार प्रकार के जन सब यमपुरको जातेहैं जहां नानाप्रकारके घोरभय दिखाई देतेहैं जिससे सब प्राणी विवश हो जातेहैं २ गर्भके भीतरहीसे वा उत्पन्न होनेसे बाल्यावस्थासे अथवा तरुण अवस्था से व मध्यमावस्था से पुरुष स्त्री वा नपुंसक वा वृ सबको पाप करनेपर यमपुर जाना पड़ताहै ३ वहां प्राणियोंके शुभा शुभ कर्म्मोंका विचार होताहै विचार सब देखनेवाले चित्र गुप्तादिकों सङ्ग और मध्यस्थ लोग करते करातेहैं ४ ऐसे प्राणी यहां कोई नहीं हैं जो यमपुरको नहीं जाते व उनके विचारेहुये कर्म्म अवश्य भोगने पड़तेहैं ५ वहां जो शुभकर्म्म करनेवाले सौम्यचित्त व दयायुक्त लोग होतेहैं वे लोग सौम्यमार्ग्ग होकर यमपुरको जातेहैं ६ जो कोई यहां ब्राह्मणोंको जूता खराऊँ आदि देतेहैं वे लोग बड़े भारी विमानपर चढ़ सुखसे यमालय को जातेहैं ७ व जो यहां ब्राह्मणको छत्र दान करते हैं वे मेघोंकी छायामें जातेहैं व वस्त्र देनेवाले सुन्दरवस्त्र धारण कियेहुये जातेहैं ८ व पालकी के देनेसे वहां विमानपर चढ़कर सुखसे जातेहैं व नालकी तामदानादि सुखासन देनेसे उन्हींपर चढ़कर सुखपूर्वक प्राणी जाताहै ९ व पुष्पवाटिका वा साधारण वाटिकाके देने वाले पुष्पकविमानपर चढ़कर शीतल छायामें सुखसे यमपुरको जाते हैं १० व विष्णु शिव देवी आदि देवताओंके मन्दिर बनवाने वाले लोग व संन्यासियों योगियों के स्थान बनवानेवाले अनाथ मंडपों के बनवानेवाले दिव्य मकानों के भीतर २ होकर धर्म्म राजपुरको जातेहैं ११ देव अग्नि गुरु व ब्राह्मण व माता पिताकी पूजा करने

वाला भी १२ उत्तम गृहों के भीतरही भीतर होकर आनन्दपूर्व्वक सब देखता भालता चला जाताहै ॥

कुण्डलियां ॥

श्रद्धासोंगुणयुक्तदुखभरेजननकोजोय । अल्पवस्तुहूदेतनरअति प्रसन्नचितहोय ॥ अतिप्रसन्नचितहोयदानकरु युतअभिलाषा । सो सुखसोंयमलोकजाय निर्गत मदमाषा ॥ जासोंबुधजन सकल सदा भाषहिंयहश्रद्धा । दानवहीहै श्रेष्ठ दीनकरिकै जोश्रद्धा १३ हितसों श्रद्धासहित जो दान करत चितलाय । वारिमात्र तृणधान्य कुछसो असंख्यह्वैजाय ॥ सोअसंख्य ह्वैजाय नहींयामहँ कछुशङ्का । वर्णत हैंश्रुतिशास्त्र विप्रदीन्हें यहडङ्का ॥ विनयसनयकरि पात्रकाहिंदेवत जो चितसों । सोपावतफल सकलदान सोजोकियहितसों १४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमातृपितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेऽष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

## उनहत्तरवां अध्याय ॥

दो० उन्हत्तरें महँ स्वर्ग्ग के उपयोगी सब धर्म्म ॥
मातलिकह्यो ययातिसों पिप्पलपाहिंसुकर्म्म १

मातलि राजाययातिजी से बोले कि जो धर्म्म हमने इस समय कहे हैं शिवजीने अपने तन्त्रमें कर्म्मयोगके प्रसंगसे बहुत प्रकार के कहेहैं १ वे सब धर्म्म हिंसादि दोषों से निर्म्मुक्तहैं व क्लेश परिश्रम रहित सब प्राणियोंको हित शुद्ध सूक्ष्म परिश्रमवाले बड़े फल देनेवाले २ अनन्त शाखाओं में कलित शिवमूलही में एक आश्रित ज्ञान ध्यान सुन्दर फूलोंसे युक्त सनातन शिवधर्म हैं ३ उन धर्म्मों को सनातन शिवजी धारण करतेहैं इसलिये सब शिवभक्तोंको भी धारण करने चाहियें व इसीसे वे शिवधर्म्म कहातेहैं जिससे कि संसारसागरके तारक हैं ४ अहिंसा क्षमा सत्य लज्जा श्रद्धा इन्द्रिय संयम दान यज्ञ करना तप दान ये दश धर्म्म के लक्षणहैं ५ इन्हीं सबोंसे क्रमसे वा उत्क्रम से शिवधर्म्म बनाहै यद्यपि ये धर्म्म अकेले शिवजीकेही कहेहुये हैं पर सबके उपयोगी हैं ६ जैसे यह पृथ्वी

सब प्राणियों का साधारण स्थान है इससे सर्व्व साधारण के लिये उत्तमहैं व शिवभक्तों के लिये तो अत्युत्तमहैं ७ जैसे इस पृथ्वीपर सब प्राणियोंके भोगविलासके पदार्त्थ विद्यमानहैं ऐसेही नानापुण्य विशेषता से शिवपुरमें भी सबभोगहैं ८ जबतक सबप्राणी शुभाशुभ फल भोगते हैं तबतक भोगते हैं व जब शिव धर्म्मका फल भोगते हैं त उसी अकेलेही से सब भोग भुक्त होजाते हैं ९ जिसको पात्रविशेषमें दानादि देनेमें श्रद्धा है उसको शिवपुरमें जाकर बैठे २ सब भोग भोगने को मिलते हैं इससे प्रियतर व उत्तम भोग सब शिवपुर में स्थितहैं हे महाभाग ! इससे स्वर्ग्गादि जीतने की इच्छासे पुण्यधर्म सदा करने चाहियें क्योंकि उस शिवपुरमें सर्व्वाधिपत्य नहीं है किंतु आत्मभोगाधिपत्यहैं जितने दान पुण्य यहां करोगे उतनेही भोगने को मिलेंगे १०।१२ कोई २ ज्ञान योगमेंरत मनुष्य उस शिवपुर में जाकर मुक्त होजाते हैं फिर और भोगमें तत्पर संसार में लौट आते हैं १३ तिससे मुक्तिकी इच्छा करे तो भोग की आसक्ति को छोड़देवे विरक्त शान्तचित्तात्मा शिव ज्ञानको प्राप्त होता है १४ जिनके महादेवजी में हृदय हैं और प्रसंगसे शिवजी को पूजते हैं तिनको ईशजी भावके अनुरूपसे स्नान देते हैं १५ सो वेही लोग जो यहां एकबार भी शिवका पूजन करते हैं उनके पाप हत होजाते हैं उनको यमलोकमें भी नानाप्रकारके भोगविलास शिवजी देते हैं १६ व जो शिव विष्णु आदि देवों की आराधना यहां नहीं करते वे प्राणी बड़े दुःखभारसे पीड़ित होकर मरते हैं जो किसी को अन्न दान करताहै वह पुण्यदाता कहाताहै व प्राणदाता जानो सर्वदाता होताही है १७ इससे अन्नदान करनेसे सब दानों का फल होता है तीनोंलोकों में जितने रत्न व भोग करनेके योग्य स्त्रियां और वाहन हैं १८ अन्नदानही के फलके भीतर सबहैं क्योंकि अन्नदानसे यहां वहां सर्वत्र प्राणी सुखी रहताहै जिसके अन्नखाने व जलपीने में पुष्टाङ्ग होकर कोई पुण्यकर्म्म करताहै १९ उसमें से आधा पुण्य अन्नदाता को व चतुर्त्थांश जलदाता को मिलताहै इसमें संदेह नहीं है धर्म्म अर्त्थ काम व मोक्षों का परमसाधन देह है २० व उसको

स्थिति अन्न और जलादि पान करने के पदार्थों से होती है इससे अन्नदान सब का साधक होताहै अन्नसाक्षात् ब्रह्माका रूपहै व अन्न विष्णु रूपहै तथा अन्नही शिवरूप है २१ इससे अन्नके समान कोई दान न हुआहै न होगा व जल तीनोंलोकों का भी जीवन कहाता है २२ क्योंकि वह पवित्र दिव्य शुद्ध व सर्व्व रसायन है अर्थात् इसके विना कोई भी रस नहीं बनसक्ता यमपुरके ये आठदान बड़े उपयोगी हैं १ अन्न २ जल ३ घोड़ा ४ धेनु ५ वस्त्र ६ शय्या ७ सूत्र ८ आसन २३ इससे इतने दान अवश्य करने चाहियें इन दानों व धर्म्मों के करने से धर्म्मराजके पुरको जिससे कि प्राणी सुख से जाता है इससे इनका दान व धर्म्म अवश्य करना चाहिये व हे नृपनन्दन ! जो लोग क्रूर कर्म्म हिंसादि करते हैं व अन्य महापाप करते व दानसे वर्जित हैं २४।२५ वे नरकमें पड़कर दारुणदुःख भोगते हैं व वैसेही दान करनेवाले वहीं सुख भोगते हैं २६ क्योंकि सुख उन्हींकेलिये बने हैं जो सुकर्मकरनेमें निरतहैं वे लोग अप्रमेय गुणों से युक्त यथेच्छगामी सब कामना देनेवाले विमानों पर चढ़कर व सब प्राणियोंके उपकारक असंख्य पुण्यफल भोगतेहुये सहस्र चन्द्रमाके समान दिव्य व सूर्यके तेज के समान दीप्तिवाले शिवलोक को जाते हैं व जो शिवके भक्त होते हैं वे उसी शिवलोकही में जाते हैं जोकि सब गुणसंयुक्त रुद्रलोक भी कहाताहै २७। २९ व रुद्रके क्षेत्र काशी आदिमें मरेहुये सब जंगम शिवलोकको चलेजाते हैं ॥

चौ० एकहु दिन जो शिव आराधै । भक्ति सहित पूजन करिसाधै ॥
सोउ जाय शिवपुर नर आसू । जो बहु पूजे कहुँ का तासू ॥
वैष्णव विष्णु ध्यान महँ चातुर । विष्णुभक्ति भूषित नहिं आतुर ॥
ते वैकुण्ठ जाहिं हरि रूपा । ह्वैसुखलहहिं स्वमनअनुरूपा ॥
ब्रह्म भक्ति भूषित जो प्राणी । जात तहां जहँ वसु विधि वाणी ॥
पासों सदा ईश सिवकायी । करैं भली विधि नर समुदायी ॥
अथवा करै भक्ति हरिकेरी । लहै तुरत नर मुक्ति घनेरी ॥
ज्ञानवान ह्वै जो हरि ध्यावै । सो वैकुण्ठ जाय मुद पावै ॥
इमिश्री विष्णु प्रभाव सुकर्म्मा । अरु शुभ क्रियेसकल निजधर्म्मा ॥

देश प्रभाव सकल दुखनासी । पुरुष होत वैकुण्ठ निवासी ॥
अरु शिवभक्त जाहिं शिव लोका । मुदित होहिं तहँ विगत विशोका ॥
प्राणि ऊर्द्धगति हेतु विचारो । है शिवलोक अशोक निरारो ॥
शिवपुर सों ऊपर हरिलोका । विगत विकार अपार अशोका ॥
तहँ सब वैष्णव मानव जाहीं । जो हरिध्यान निरतशकनाहीं ॥
ब्राह्मण जाहिं ब्रह्मपुर पावन । जो सबभांति द्विजनमनभावन ॥
यज्ञकर्म्म रत जो द्विज पुंगव । वेदवादि कोविद गुण संगव ॥
ब्रह्मलोक ते बसहिं सदाहीं । पुनरावृत्ति न लहहिं कदाहीं ॥
जो क्षत्रिय रणमाहिं प्रचारी । करत युद्ध खड्गादि प्रहारी ॥
इन्द्रलोक ते जाहिं न शंका । मुदित वदन सुनते सुर डंका
अन्य पुण्यकारी नरनारी । पुण्यलोकमहँहोहिंविहारी३०।३९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने
पितृतीर्थेययातिचरित्रेएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

## सत्तरवां अध्याय ॥

दो० सत्तरवें महँ कह विविध यमयातना अनेक ॥
जो पावत पापीपुरुष जिन नहिं कीन विवेक १

मातलि राजाययाति से बोले कि महातीव्र व दारुण यमपीड़ा का वर्णन करते हैं जिसे सब क्रूर ब्राह्मण के मारनेवाले पापी पुरुष भोगते हैं १ कहीं तो तीव्रअग्नि से जलतेहुये पापीप्राणी पचते हैं व कहीं २ दारुण सिंह व्याघ्र वृक व अन्य दंशक जन्तुओं से पीड़ित होते हैं २ कहीं महाजोंकों से व कहीं महा अजगरों से कहीं अतिभयङ्करी मक्षिकाओंसे व कहीं सर्प्पोंके उल्वण विषोंसे ३ कहीं मत्त हस्तियों के यूथोंसे जोकि बड़े बलसे ऊंचे से नीचेको गिरादेते हैं व कहीं मार्ग्गको तीक्ष्ण शृंगोंसे खोदतेहुये बैलोंसे ४ कहीं दुष्टों की देहमें बाधा करनेवाले बड़ी २ सींगोंवाले भैंसोंसे कहीं अतिरौद्र डाकिनियों से कहीं अति विकराल राक्षसों से ५ व कहीं महाघोर व्याधियों से पीड्यमान पापी चलेजाते व बड़ी तराजू पर चढ़तेहुये दावानल में जलते हैं ६ महाप्रचण्ड वायुसे महावेग से कांपते हैं

महापाषाणकी वर्षासे सब ओरसे भेदनको प्राप्तहैं ७ वज्रपातकेसमान शब्दवाली दारुण उल्कापात होरहीं और प्रदीप्त अंगारकीवर्षा से पीड़ित जातेहैं ८ बड़ीधूलिकी वर्षासे पूरित यमराज के यहांजाते हैं ॥

चौ० जोनरपापकरतअतिदारुण। भोगतसोफल जासु न बारुण ॥
इमिकरि पाप विशेष अभागे। पापी नरक जाहिं यकलागे ॥
नरकजाहिं भोगहिं अरुरोवत। अतिपीड़ा पीड़ित तनुगोवत ॥
पर न होत रक्षा क्यहु भांती। गिनीजात तिनकी अघपांती ॥
यह सब पुण्यरुपाप विवेका। तुम सन कहे महीप अनेका ॥
अपर कहौं तुमसनका उत्तम। साधन धर्म कहहु सो वित्तम९।१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने पितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

# इकहत्तरवां अध्याय ॥

दो० इकहत्तरयें महँ कह्यो गुण बहुलोकन केर ॥
पर वैष्णव शाम्भव उभय गुणवर्णै सुघनेर १

इतनी कथा सुन राजा ययातिजी मातलिसे बोले कि जो तुमने उत्तम धर्म्म अधर्म्मका विषय हमसे वर्णन किया वह तो हमने सुना परन्तु अब फिर हमारे श्रवण करनेकी इच्छा और है इससे जो पूछें सो सुनाओ १ अब आप देवताओं के लोकोंका संस्थान हमसे बतावें व जिस पुण्यके प्रसंगसे जिसने जो लोक पायाहो वहभी हमसे कहें २ मातलि बोले कि अच्छा जिस २ तपसे जिसने जिस लोक की प्राप्तिकी है सबका योग हम कहेंगे व सुख भोगदेनेवाले देवताओं के वासस्थान भी कहेंगे ३ व धर्म्मका भावभी कहेंगे जोकि लोगोंने परिश्रम से अलग २ उपार्ज्जन कियाहै व ऊपरके लोकोंका स्वरूप भी क्रमके साथ कहेंगे ४ उनमें राक्षसों का ऐश्वर्य्य आठगुणोंसे युक्तहोता है इससे वे देवताओं के व नरोंके भी समान होतेहैं ५ व राक्षसों के सोलह गुण राजा होतेहैं व जो उनसे शेषहैं वे सब पवित्र व तेजस्वी होते हैं ६ गन्धर्व्वों के वायव्य याक्ष सबहैं इन्द्रके पाञ्चभौतिक चालीस बड़े गुणहैं ७ चन्द्रमा का दिव्य मानस है

संसारके स्वामी पाञ्चभौतिकहैं बुध प्रजापति ईशोंसे अहंकार गुण में अधिक हैं ८ ब्रह्माजी के चौंसठगुण अधिक तेजहै व ऐश्वर्य्यमें इतनेही गुण अधिकहै व विष्णु भगवान्‌का ऐश्वर्य्य व गुण ब्रह्मासे असंख्यगुण अधिक है पर वे तो सनातन ब्रह्महैं इसलिये वहां ब्रह्म पदमें सब शून्यहीहै कुछभी गुण नहीं है व ऐसेही श्रीशिवके पुरमें सब दिव्य ऐश्वर्य्यहै व सर्व्व कामनाओंको पूरा करताहै इससे शिवकेभी अनन्तगुण ऐश्वर्य्यहैं ९।१० व आदि मध्य अन्तहीन विशुद्ध उनका लक्षणहै व सब देवताओंका प्रकाशक सूक्ष्म अनौपम्य परसे पर ११ सुसम्पूर्ण जगद्रूप पशुओंकेपाश छुड़ानेवालास्थानहै जो उस स्थानको पहुँचजाताहै उसको सदाके लिये भोग भोगनेको मिलते हैं १२ व ईशके प्रसाद से तिसके समान विमान होताहै व जो ये नक्षत्रों के किड़ोरों रूप दिखाई देते हैं १३ उनमें अट्ठाईस अच्छी दीप्तिसे पुण्यात्माओं को प्रकाशित हैं जो कोई ईश्वर के कभी कभी संपर्क से कौतुक और लोभसे नमस्कार करते हैं उस विमानको वे प्राप्त होते हैं व जो कोई प्रसंगसे भी शिवजीका नाम कीर्त्तन करता है १४ । १५ वा उनके नमस्कार करताहै उसके सब कर्म्म सफल होते हैं ये इतनी सब महागतियां शिवजी के कर्म्म में हैं १६ इसमें विना कर्म्म किये पुरुषों को ईशके अनुभाव से आनन्द नहीं होता प्रसङ्ग से भी जो लोग शिवका स्मरण करते हैं १७ वे अतुलसुख पाते हैं फिर जो शिवमें परायण हैं उनको क्या कहनाहै व जो मनुष्य ध्यान से विष्णु भगवान्‌की चिन्ता करते हैं १८ वेउस विष्णुभगवान् के परम उत्तमसर्व्वोपरि स्थानको जातेहैं हेनरोत्तम ! शैव व वैष्णव रूप दोनों एकरूपके हैं १९ दोनों महात्माओंके रूपों में अन्तर नहीं है क्योंकि एकहीरूप दोनों हैं शिव विष्णुके रूपहैं व विष्णु शिव के रूपहैं २० शिवके हृदय विष्णुहैं व विष्णु के हृदय शिवहैं व ... मूर्त्ति ये तीनों हैं पर ब्रह्मा विष्णु महेश येतीननाम होगयेहैं २१ ... में अन्तर कुछ नहींहै पर गुणोंमें भेदहैं हे राजेन्द्र ! तुम शिवके ... हो व वैसेही भगवद्दासहो २२ इससे ब्रह्मा विष्णु महादेव तीनों देव तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहैं हे राजन् ! तुम्हारे कर्म्म से अच्छे प्रकार

श्वरसहैं व तीनों वर देनेपर उद्यत हैं २३ व हम तो तुम्हारे समीप इन्द्रजीकी आज्ञासे आयेहैं ॥
चौ० यासों प्रथम इन्द्रपद जाहू । पुनि ब्रह्मा को सुपद लहाहू ॥
पुनि शिवपद कहँ किह्यहु पयाना । तहँ रहि कुछ दिन भूप महाना ॥
प्रलय दाह वर्जित पुनि जायहु । विष्णुलोक कहँ तब हरषायहु ॥
तहँ सों पात कबहुँ नहिं होइहि । बस्यहु सदा तुमकहँ हरि गोइहि ॥
दिव्यगामि सब गामि विमाना । यह हम तुमसन भूप बखाना ॥
यासों जाय दिव्यसुर भोगा । भोगहु चलि ह्वैकै गतशोगा ॥
जो वाञ्छित सो भोगहु नीके । सकल विचारहु करि मन ठीके ॥
चढ़िकै पुष्पक नाम विमाना । भूप अबहिं तहँ करहु पयाना ॥
मौन भये मातलि कहि येहू । सुनु द्विज अब तव गयेहु सँदेहू ॥
नहुष तनय राजाग्र्य ययाती । मुदित भयहु सुनि बात प्वसाती २४।२७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता पितृतीर्थेययातिचरित्रेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

## बहत्तरवां अध्याय ॥

दो० बाहत्तरयें महँ नृपति मातलिसों कह येह ॥
हमन स्वर्गकहँ चलब यहँ करबनाकनसँदेह १

पिप्पलजी सुकर्म्माजी से बोले कि हे महाप्राज्ञ ! राजाययातिजीनें मातलिका वचन सुनकर फिर क्या किया यह हमसे विस्तारसे कहो १ हे प्राज्ञ ! सर्व पुण्यमयी पुण्यकारिणी और पापनाशिनी यह कथा है हमको सुनने की इच्छाहै हम इसके सुनने से अभी तृप्त नहींहुये २ यह सुन सुकर्म्माजी बोले कि सब धर्म्मधारियों में श्रेष्ठ व नृपों में सत्तम राजा ययातिजी इन्द्र के सारथि आयेहुये दूत उनमातलि से बोले कि ३ हे मातलिजी ! हम अपने इस शरीरको न छोड़ेंगे न स्वर्गको विना इस पार्थिव शरीर के आवेंगे इस में कुछभी संशयनहीं है ४ यद्यपि तुमने प्रथम ऐसे शरीर के बहुत से दोष कहेथे व गुण अवगुण भी कहे ५ परन्तु न हम अपना शरीर छोड़ेंगे न स्वर्गको आवेंगे सो यहां से जाकर देवदेव पुरन्दर से यह कहो ६ कि हे :

हामते! एकाकी शरीरसे व अकेले जीवसे सिद्धि नहीं होसक्ती क्योंकि यह सांसारिक व्यवहार है ७ कि प्राण विना शरीर नहीं रहसक्ता व विना शरीरके प्राण नहीं रहते इन दोनोंकी मैत्री है इससे हम इन दोनोंको सङ्गही लावेंगे अलग २ न छोड़ेंगे ८ जिस शरीरके प्रसाद से यह प्राण अपने मनमाने अनेक भोग विलास करताहै व बहुत सुख भोगताहै ९ ऐसा जानकर अब प्राण कैसे शरीरको छोड़ स्वर्गके सुख भोगनेके लिये चलाजाय हे मातलिजी! यद्यपि यहां रहनेसे महा दुष्ट दुःखदायक महारोग उत्पन्न होंगे १० व जराके दोष से नानाप्रकारके पाप भी इस शरीर से असामर्थ्य के कारण होंगे पर अभी तो देखो हमारा शरीर पुण्ययुक्त सोलह वर्षकासा है ११ यद्यपि जन्मसे लेकर अबतक पचासवर्ष बीतगये तथापि अभी हमारे शरीर का नूतनही भाव दिन २ होता चला आताहै १२ हे दूत! हमारी पचासवर्ष की अवस्था हुई परन्तु जैसे सोलहवर्ष के पुरुष की देह शोभित होती है १३ तैसेही बलवीर्य युक्त हमारा देह शोभित होताहै न हमको ग्लानि है न हानिहै न श्रम है न व्याधियां हैं न जराहै १४ हे मातले! हमारे देहमें अभी धर्म्म उत्साहित कररहाहै व सर्व्व अमृतमय परमऔषध देताहै १५ पाप व्याधिनाशनेके लिये पूर्व्व समयमें हमने धर्म्म बहुत किये हैं उसी से हमारा शरीर शोभित है व रोगके दोष भी कुछ नहीं प्रकट होते १६ यह सब हृषीकेश भगवान्‌के ध्यानसे व नामके उच्चारणसे हे दूत! हम उत्तम रसायन नित्यकरते हैं १७ इसी से हमारे व्याधिदोष व पापादि प्रलयको चलेगये संसारमें जब कृष्णनाम महौषध विद्यमान है १८ तो भी पापव्याधि से पीड़ितहोकर मनुष्य मरते हैं महामूढ़ कृष्णनाम रसायनको नहीं पीते १९ कि हे मातले! उसीज्ञानसे व ध्यानसे पूजाभाव से सत्य से दान पुण्य से हमारा शरीर निरामय है २० पापही से प्राणियों को रोगादिकी पीड़ाहोती है व पीड़ासेही प्राणियोंका मृत्यु होताहै इसमें कुछ सन्देह नहीं है २१ इस पुण्य व सत्य के आश्रयमें मनुष्योंको धर्म्म करना चाहिये यह पंचभूतात्मककायसैकड़ों स्थानों पर जुड़ने के कारण महाजर्ज्जरहै २२ इसको मनुष्य जोड़ता नहीं

रहता जैसे स्वर्णकार टूटे फूटे भूषणको जोड़ता रहताहै इसमें नाना प्रकार के भय लगे हैं क्योंकि अनेक धातुओं से यह बनाहै २३ हे विप्र ! शतखण्डमय इस शरीरको जो जोड़ता रहताहै वह बुद्धिमान् है व जोड़ने के लिये केवल एक हरिका दिव्यनामहै उससे जोड़ता है २४ पञ्चात्मक इसमें जो खण्डहैं वे सौ सन्धियों से जर्जरहोरहे हैं बस हरिनाम से जोड़ने से सब काय धातुओं के समान होजाता है २५ हरिकी पूजासे व विचारसे ध्यानसे व नियमसे सत्यभावसे दानसे काय नवीन होजाताहै २६ ऐसा करने से शरीर के दोष नष्ट होजाते हैं व हे मातले ! व्याधिभी सब नष्ट होजाते हैं बाहर व भीतर पवित्र होजाताहै दुर्गन्धि आती नहीं २७ व हे सूत ! उन विष्णु भगवान् के प्रसादसे परमपवित्रता होजाती है इससे हम स्वर्ग को न जायँगे यहीं स्वर्ग बनावेंगे २८ तपसे व प्रभावसे व अपने धर्म्म के प्रभाव से इसी महीतलपर स्वर्ग बनावेंगे बस उन्हीं चक्री भगवान्के प्रसाद से इसी को स्वर्ग रूप करेंगे २९ ऐसा जानकर तुम जाओ व इन्द्रसे कहो सुकर्माजी बोले तब राजाका कहना सुनकर वह सारथि ३० आशीर्वाद देकर व महाराजसे बिदाहोकर चला गया व जाकर जो कुछ महात्माराजाने कहा था इन्द्र से कहा ३१ ॥

चौ० सुनिमातलिकेमुखनृपवाणी । जोययातिनृप निजमुखभाणी ॥
ताहि स्वर्ग आनन के हेतू । कीन विचारबहुतसुरकेतू ३२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने मातापितृतीर्थेययातिचरितेद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

## तिहत्तरवां अध्याय ॥

दो० तीहत्तरयें महँ कह्यो ज्ञानामृत सुस्तोत्र ॥
जासुपढ़े सबनरनको होतविष्णुहीगोत्र १

पिप्पल मुनिने फिर सुकर्म्मा से पूँछा कि जब इन्द्र के सारथि महाभाग मातलि चले गये तो नहुषजी के पुत्र धर्मात्मा ययाति महाराजने क्या किया १ सुकर्म्माजी बोले कि जब देवदूत मातलि चलेगये तो राजा ययाति चिन्तना करने लगे श्रेष्ठ दूतों को बुला

हामते! एकाकी शरीरसे व अकेले जीवसे सिद्धि नहीं होसक्ती
यह सांसारिक व्यवहार है ७ कि प्राण विना शरीर नहीं
विना शरीरके प्राण नहीं रहते इन दोनोंकी मैत्री है इससे हम
दोनोंको सङ्गही लावेंगे अलग २ न छोड़ेंगे ८ जिस शरीरके
से यह प्राण अपने मनमाने अनेक भोग विलास करताहै व
सुख भोगताहै ९ ऐसा जानकर अब प्राण कैसे शरीरको छोड़
र्गके सुख भोगनेके लिये चलाजाय हे मातलिजी! यद्यपि
हलेसे महा दुष्ट दुःखदायक महारोग उत्पन्न होंगे १० व जराके
से नानाप्रकारके पाप भी इस शरीर से असामर्थ्य के कारण
पर अभी तो देखो हमारा शरीर पुण्ययुक्त सोलह वर्षकासा है
यद्यपि जन्मसे लेकर अबतक पचासवर्ष बीतगये तथापि अ
रे शरीर का नूतनही भाव दिन २ होता चला आताहै १२ हे
हमारी पचासवर्ष की अवस्था हुई परन्तु जैसे सोलहवर्ष के
की देह शोभित होती है १३ तैसेही बलवीर्य युक्त हमारा देह
होताहै न हमको ग्लानि है न हानिहै न श्रम है न व्याधियां
जराहै १४ हे मातले! हमारे देहमें अभी धर्म्म उत्साहित
सर्व्व अमृतमय परमऔषध देताहै १५ पाप व्याधिनाशनेके
पूर्व्व समयमें हमने धर्म्म बहुत किये हैं उसी से हमारा शरीरश
त है व रोगके दोष भी कुछ नहीं प्रकट होते १६ यह सब
भगवान्के ध्यानसे व नामके उच्चारणसे हे दूत! हम उत्तम
नित्यकरते हैं १७ इसी से हमारे व्याधिदोष व पापादि
चलेगये संसारमें जब कृष्णनाम महौषध विद्यमान है १८
पापव्याधि से पीड़ितहोकर मनुष्य मरते हैं महामूढ़ कृष्णनाम
यनको नहीं पीते १९ कि हे मातले! उसीज्ञानसे व ध्यानसे
से सत्य से दान पुण्य से हमारा शरीर निरामय है २० पापही
प्राणियों को रोगादिकी पीड़ाहोती है व पीड़ासेही प्राणियोंका मरण
होताहै इसमें कुछ सन्देह नहीं है २१ इस पुण्य व सत्यके
मनुष्योंको धर्म्म करना चाहिये यह पंचभूतात्मककायसैकड़ों
पर जुड़ने के कारण महाजर्ज्जरहै २२ इसको मनुष्य जोड़

राजाकीआज्ञायाहुआ श्रीविष्णुजीका नामामृत पानकरो १६ यह नामामृत नाम स्तोत्र जो कोई विष्णुभक्त नियतात्माहोकर प्रभातकाल पढ़ेगा वह मुक्ति को पावेगा इसमें कारण विचारना न चाहिये १७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेपितृतीर्थवर्णनेययातिचरितेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३॥

# चौहत्तरवां अध्याय॥

दो० चौहत्तरयें महँ सकल प्रजा भूप इकरूप॥
विष्णुभजन पूजनकरत जाहिसुने यमचूप १

सुकर्माजी पिप्पलसे बोले कि इसप्रकार से सब दूतलोग ग्रामों में देशों में द्वीपोंमें नगरों में जाकर कहते थे कि हे लोगो ! सुनो राजा की आज्ञाहै कि तुम सब लोग सब प्रभावों से श्रीहरिकी पूजाकरो १ व यज्ञ दान बहुत तप धर्माभिलाष पूजनों से श्रीमधुसूदनजीका ध्यानकरो महाराजकी यही आज्ञाहै २ इसप्रकारका पुण्यकारी प्रघोषण सुनकर पृथ्वीपरके रहनेवाले सब लोग तबसे श्रीहरिका पूजन ध्यान करने गाने व जप करनेलगे ३ वेदके मन्त्रोंके पढ़नेसे व तन्त्रों के मन्त्रों से अमृत के सदृश पुण्यकारी स्तोत्रों से श्रीकेशवजीकी आराधना भगवान् में मन लगाकर मनुष्य करनेलगे व व्रत उपवास नियम दानों से भी ४ अपने देह चित्त और वाणी से उत्पन्न सब दोषोंको छोड़कर लक्ष्मीनिवास जगन्निवास श्रीवासुदेवकीपूजा राजा की आज्ञासे प्रेममें रत सब मनुष्य करनेलगे ५ इसप्रकारकी आज्ञा राजाकी क्षितिमण्डल भरमें होगई इससे वैष्णवभावसे सब लोग पूजन करनेलगे ६ ज्ञान में पंडित लोग नामों से व कर्मों से पूजा करनेलगे व उन्हीं विष्णु भगवान् का ध्यान उन्हीं का पूजन अर्चन करके सब उन्हीं में परायण होगये ७ जितना सब भूमण्डल है व जहां तक सूर्य्य तपते हैं वहां तकके सब मनुष्य भागवत होकर प्रकाशितहुये ८ विष्णुके ध्यानके प्रभावसे व पूजा स्तोत्रोंसे सब मनुष्य आधिव्याधियों से विहीन होगये ९ सब के सब शोकरहित सुपुण्यात्मा व तपस्वी वैष्णव होगये हे विप्र ! उनचक्री भगवान्जीके प्रसाद

कर शीघ्रही धर्म अर्थ युक्त वचन बोले २ कि हे श्रेष्ठदूतो ! उत्तम पुर देश सब द्वीप संसार में जावो हमारे धर्मयुक्त वचन करो भगवान् के सुन्दर मार्ग से मनुष्य प्राप्तहों ३ सुन्दर पुण्यकारी भाव अमृत सदृश ध्यान ज्ञान पूजन तपस्या यज्ञ दान पुण्यादिकों से मधुसूदन भगवान् की पूजा करो अन्य सब लोक के विषयों को छोड़दो ४ व सर्व्वत्र शुष्क आर्द्र स्थावर जङ्गमों में एक श्रीमुरारिजी को देखने लगो व मेघों में भूमि पर सब चराचरों में व अपने सब देहों में भी श्रीविष्णुजीही को देखने लगो ५ व उन्हीं के उद्देशसे दान पुण्य सब करनेलगो व सबों में परिपैत्रिक अतिथि के भावों से केवल देववर नारायणही को मानकर पूजन करनेलगो तो थोड़ेही कालमें दोषों से छूटजावोगे ६ व जो कोई लोभ व मोह से हमारी आज्ञा न करेगा उस निर्घृण चोर निकृष्ट मनुष्यको दण्डहोगा ७ राजाके ऐसे वचन सुनकर दूत लोग अति हर्षित होकर जा २ कर सब पृथ्वी में सब राजाओं से महाराजकी आज्ञा कहने लगे ८ हे ब्राह्मणादि सब लोगो ! महाराज के पृथ्वी में लायेहुये पुण्यकारी वैष्णव अमृतको पीवो जोकि दोषों से विहीन परिणाम में मीठाहै ९ श्री केशव क्लेशहर्त्ता श्रेष्ठ आनन्दरूप परमार्थस्वरूप दोषहारी राजाका लायाहुआ श्रीहरि का नामामृत सब लोग पानकरो १० खड्गपाणि मधुसूदन श्रीनिवास सगुण सुरेश दोषहर्त्ता राजा के लायेहुये नामामृत को सब लोग पानकरो ११ हे लोगो ! कमलेक्षण पद्मनाभ जगदाधार जगदीश श्रीहरिका नामामृत दोषहर्त्ता राजाका लेआयाहुआ पानकरो १२ व हे लोगो ! पापापहारी व्याधिविनाशन रूप आनन्ददायक दानवदैत्यनाशन दोषहारी श्रीहरिका नामामृत राजाका लायाहुआ पानकरो १३ यज्ञाङ्गरूप चक्रपाणि पुण्यकी खानि सुखदाता असद्रूप श्रीहरि का नामामृत दोषहारी राजाका लाया हुआहै तिसको लोगो पानकरो १४ हे लोगो ! संसारके वास स्थान विमल विराम राम रमण मुरारिजीका दोषहारी राजाका लायाहुआ नामामृत पानकरो १५ व हे लोगो ! आदित्यरूप अन्धकारों के विनाशक व अन्धकार कमलों के लिये चन्द्रप्रकाशरूप दोष हरनेवाले

राजाकाज्ञायाहुआ श्रीविष्णुजीका नामामृत पानकरो १६ यह नामामृत नाम स्तोत्र जो कोई विष्णुभक्त नियतात्माहोकर प्रभातकाल पढ़ेगा वह मुक्ति को पावेगा इसमें कारण विचारना न चाहिये १७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेपितृतीर्थवर्णनेययातिचरितेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३॥

## चौहत्तरवां अध्याय॥

दो० चौहत्तरयें महँ सकल प्रजा भूप इकरूप॥
विष्णुभजन पूजनकरत जाहिसुने यमचूप १

सुकर्माजी पिप्पलसे बोले कि इसप्रकार से सब दूतलोग ग्रामों में देशों में द्वीपोंमें नगरों में जाकर कहते थे कि हे लोगो ! सुनो राजा की आज्ञाहै कि तुम सब लोग सब प्रभावों से श्रीहरिकी पूजाकरो १ व यज्ञ दान बहुत तप धर्माभिलाष पूजनों से श्रीमधुसूदनजीका ध्यानकरो महाराजकी यही आज्ञाहै २ इसप्रकारका पुण्यकारी प्रघोषण सुनकर पृथ्वीपरके रहनेवाले सब लोग तबसे श्रीहरिका पूजन ध्यान करने गाने व जप करनेलगे ३ वेदके मन्त्रोंके पढ़नेसे व तन्त्रों के मन्त्रों से अमृत के सदृश पुण्यकारी स्तोत्रों से श्रीकेशवजीकी आराधना भगवान् में मन लगाकर मनुष्य करनेलगे व व्रत उपवास नियम दानों से भी ४ अपने देह चित्त और वाणी से उत्पन्न सब दोषोंको छोड़कर लक्ष्मीनिवास जगन्निवास श्रीवासुदेवकीपूजा राजा की आज्ञासे प्रेममें रत सब मनुष्य करनेलगे ५ इसप्रकारकी आज्ञा राजाकी क्षितिमण्डल भरमें होगई इससे वैष्णवभावसे सब लोग पूजन करनेलगे ६ ज्ञान में पंडित लोग नामों से व कर्मों से पूजा करनेलगे व उन्हीं विष्णु भगवान् का ध्यान उन्हीं का पूजन अर्चन करके सब उन्हीं में परायण होगये ७ जितना सब भूमण्डल है व जहां तक सूर्य्य तपते हैं वहां तकके सब मनुष्य भागवत होकर प्रकाशितहुये ८ विष्णुके ध्यानके प्रभावसे व पूजा स्तोत्रोंसे सब मनुष्य आधिव्याधियों से विहीन होगये ९ सब के सब शोकरहित सुपुण्यात्मा व तपस्वी वैष्णव होगये हे विप्र ! उनचक्री भगवान्जीके प्रसाद

से सब मानव ऐसे होगये १० कि सब रोगोंसे वर्जित दोष और रोष से हीन सब ऐश्वर्य संयुक्त अमर बुढ़ापा रहित व धनधान्य से युक्त श्रीविष्णुजी के प्रसादसे होगये ११। १२ व सब पुत्र पौत्रादिकों से भरेपुरे श्रीभगवान्जी केही प्रसादसे हुये व हे महाभाग! उन मनुष्यों के द्वारोंपर नित्यही कल्पवृक्ष अत्यन्त पुण्यकारी सब कामफलका देने वाला व धेनु सब मनोरथों को पूरण करनेलगीं व चिन्तामणि आदि महामणि सब के वाञ्छित पूरेकरनेलगे १३।१४ व उनलोगों के गृहोंमें पुण्यकारी ये सब कामोंको देनेलगे सब मनुष्य पुत्र पौत्रों से शोभित होकर अमर होगये १५ व श्रीविष्णुजी के प्रसाद से सब सब दोषोंसे विहीन होगये व सर्व्व सौभाग्योंसे सम्पन्न महामंगलों से युक्तहुये १६ व सुपुण्यदानों से संयुक्त ज्ञानध्यानमें परायणहुये न कभी दुर्भिक्षहो न व्याधि न कभी मनुष्योंका अकाल में मरणहोने लगा १७ व उन धर्मज्ञ ययातिराजा के राज्य करने के समयमें सब वैष्णव होगये इससे सबके सब विष्णुके व्रतमें परायणहुये १८ व उन भगवान्जीके ध्यान करने से सब उन्हींके भावसे भूषितहुये व उन्हींमें तत्पर हुये व हे द्विज-सत्तम! उनलोगों के गृह दिव्य व पुण्य होगये १९ सबके मन्दिर स-फ़ेद पताकाओं से व शंख चक्र गदा और ध्वजाओं से युक्तहुये २० व पद्मादिकों से भी अङ्कितहोकर प्रकाशित होनेलगे व सबके गृह विमानों के तुल्य होगये व सबके गृहों की भित्तियां सुन्दर चित्रोंसे चित्रित होने से विचित्रहोगईं २१ व सबके गृहों के द्वारों पर औरदे-वादिकों के पुण्यस्थानों में हरी २ घाससहित दिव्य वृक्षोंके वन ल-गगये २२ व तुलसी के वृक्ष तो सब के यहां हरिमन्दिरों के आंगनों में लगगये व सदैव पुण्य दिव्य मन्दिर प्रकाशित हुये २३ व सर्व-त्र वैष्णवभाव होने के कारण मङ्गलही मङ्गल दिखाई देनेलगे व भू-र्ल्लोक भर में जहां सुनो शंख का शब्द २४ सुनाई देता जिसके सु-नाई देने से सबदोष पाप नष्ट होजाने लगे शंख स्वस्तिक पद्म सब के गृहोंके द्वारों पर व भीत्तियोंमें २५ विष्णुकी भक्तिसेयुक्त नारियोंने बनादिये व सब वर्णके लोग ठौर २ ताल स्वरसमेत गीत गानेलगे उसमें वह नहीं कि टप्पा ठुमरी आदि रागिनियां गाईजायँ किन्तु

विष्णुकेध्यान करनेवाले नानाछन्दोंके श्लोकगाये जानेलगे २६। २७
हरिगीतिका ॥
मुरारि हरि वामन वराह नृसिंह गावहिं ध्यान कै।
माधव रमेश कुजेश मेश सुरेश मानहिं मान कै ॥
कमलाक्ष केशव कान्ह कान्हर काम पूरण गावहीं ।
कमलेशकृष्ण कृपालु कालियकदनकाहि मनावहीं ॥
इमिशरणभरण सुभव्यकरण रमेश चरणसुपूजहीं ।
जपकरहिंधरहिंहृदयसदा पुनिऔरनाहिंमनदूजहीं ॥
यकविष्णुध्यावहिंसबभुलावहिं सुकृतपावहिंतेभले ।
वैष्णवसमाजसुसाजआजविराजअघदारिदले २८।२९
इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता
पितृतीर्थेवर्णनेययातिचरितेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

## पचहत्तरवां अध्याय ॥

दो० पचहत्तरयें महँकह्यो जिमि हरि अरु नरलोक ॥
एकरूप ह्वै नृप भजन सों सब भये अशोक १
सुकर्म्मा पिप्पलसे बोले कि विष्णु कृष्ण हरि राम मुकुन्द मधुसूदन नारायण विष्णुरूप नारसिंह व अच्युत १ केशव पद्मनाभ वासुदेव वामन वाराह कच्छप मत्स्य हृषीकेश सुराधिप २ विश्वेश विश्वरूप अनन्त अनघ शुचि पुरुष पुष्कराक्ष श्रीधर श्रीपति हरि ३ श्रीनिवास पीतवास माधव मोक्षद व प्रभु ३ इत्यादि नाम उच्चारण करतेहुये मनुष्य सदा विचरने लगे ४ ऐसा सब नर बाल वृद्ध करनेलगे व कुमारियां स्त्रियां सब अपने २ घरों में बैठीहुई व श्रीहरिको गाती हुई सदैव अपने गृह के कर्म्म करतीं ५ व बैठे सोते जागते ध्यान लगाते व ज्ञान करते समय माधवहीका स्मरण करते व बालक लोग बालक्रीड़ा करनेके समय गोविन्दही को प्रणाम करते ६ इस तरह दिन रात्रि हरिही का मधुर नाम कहते हे द्विजसत्तम ! विष्णुका उच्चारण सर्व्वत्र सुनाई देता ७ सब मनुष्य भूतल देवताओं के मन्दिरों में प्रासाद कलशों के आगे ८ में वैष्णव प्रभावसे युक्त होगये जैसे

सूर्य्य के किरण सब कहीं दिखाते हैं वैसेही चक्र प्रकाशित होगये जो भाव वैकुण्ठ में दिखाई देताहै वह भूतलपर दिखानेलगा ९ उस समय भूतल व विष्णुजी में कुछ अन्तरही नहीं दिखाई देता उस महात्मा पुण्यात्मा राजाने भूतल व विष्णुलोककी समताकरदी १० नहुषके पुत्र वैष्णव ययाति राजाने वैकुण्ठ व भूतलका एकही भाव करदिया ११ भूतल और विष्णुका अन्तर नहीं दिखाई देताभया जैसे वैकुण्ठमें वैष्णव लोग विष्णु भगवान्‌का उच्चारण करते हैं १२ उसीप्रकार का उच्चारण मनुष्य लोग भूतलपर करनेलगे व हे विप्र! दोनोंलोकोंके सब भावएकही से दिखाई देनेलगे १३ क्योंकि भूतलपर जरा व रोग का भयनहीं रहगया सबमनुष्य मृत्युहीनप्रकाशितहोगये वैकुण्ठकी अपेक्षा दानभोगका प्रभाव भूमिपर अधिक दिखाई देनेलगा १४ पुत्र पौत्रादिकोंका पुण्यकारी सुख मनुष्य भूतलपर अधि देखते थे व अन्यभी बहुत से सांसारिक सुख मनुष्यलोग भूतल अधिक भोगनेलगे थे १५ विष्णुके प्रसाद के दानसे व उपदेश मनुष्य सब व्याधियों से हीनहोकर सदैव वैष्णवही होगये १६ सेही राजाने स्वर्गलोक का प्रभाव पृथ्वीपर करदिया पच्चीसहीव में उस महाराज ने ऐसा किया १७ कि सब मनुष्य रोगहीन होग व ज्ञान ध्यान में परायण होगये व सब यज्ञदान में तत्पर हुये सब दयाभाव से युत १८ सब उपकारमें रत पुण्यात्मा धन्य व य के पात्र होगये सब धर्म्म कर्म्मों में पर व विष्णु भगवान्‌के ध्यान सब परायण १९ व राजाके दिये हुये ज्ञानसे सबके सब वैष्णवह होगये श्रीविष्णु भगवान् राजा वेन से बोले कि हे नृपसत्तम! उ महात्मा राजा का चरित सुनो २० वे सर्व्व धर्म्म में पर व विष्णु भक्तिमें नित्य संलग्नहुये व राज्य करते करते राजाको एक लाख पृथ्वीमें बीते २१ परन्तु शरीर ऐसा नवीन बनारहा जैसे कि पची वर्षकी अवस्थावालेका रहताहै सो रूप व अवस्था दोनोंसे पच्चीसह वर्षके विदित हो शोभित होते २२ व उन श्रीविष्णुजी के प्रसाद प्रबल और पुष्ट वैसेही बनेरहे मनुष्यभी पृथ्वी में स्थित होकर य मराजके यहां नहीं जातेभये २३ व रागद्वेष से सब रहितरहने लग

की फँसरीसे वर्जित होते सब सुखी रहते बराबर दान पुण्य करनेमें तत्पर रहते व सब धर्म्म में परायण थे २४ व जितने प्राणीथे सबों की प्रतिदिन पुत्र कन्यासे बढ़तीही होती चलीजाती जैसे प्रत्येकवर्ष में दूर्व्वाकी शाखायें पृथ्वीपर फैलती बढ़ती हैं २५ वैसेही सब मनुष्य पुत्र पौत्रादिकों से फैलते बढ़ते थे सब मृत्युदोषसे विहीन होगये इससे चिरकाल तक जीतेही बने रहते २६ सबके शरीर स्थिर और सुखी रहते क्योंकि जरारोगसे तो सब रहितही होगयेथे सब मनुष्य भूतल पर पचीसही वर्षके दिखाई देते २७ व सब सत्य आचारमें पर व विष्णुके ध्यानमें परायण रहते उन भगवान् चक्रधारी जी के प्रसाद से २८ सबके सब दान भोगमें परायण होगये यद्यपि मर्त्यलोकमें बसते थे परन्तु मृतक कोई भी सुनाई नहीं देता २९ शोक कोई देखताही नहीं न दोष कोई करता ॥

चौ० स्वर्गलोक कर जो रह रूपा । मर्त्यलोक कर स्वइ नररूपा ॥
हरिप्रसाद सों भयहु अनूपा । किमिबरणै कहुतासु स्वरूपा ॥
जब यमदूत भूत ह्वै आवहिं । तब हरिदूत तिन्हेंतड़वावहिं ॥
रोदन करत जाहिं यम पाहीं । कहैं विष्णुचर कर्म्म तहांहीं ॥
सोसुनि मनगुनि प्रेतअधीशा । राजभक्ति जानी जगदीशा ॥
चिन्ता करनलागे नृपचेष्टित । समझिरहे नुपगुनिहरिवेष्टित ३०।३५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता पितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेपञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

## छिहत्तरवां अध्याय ॥

दो० छीहत्तरयें महँ कह्यो यम जिमिगे पुरऐन्द्र ॥
सुरपतिसुनितिनवचनतहँ कामपठवजहँचन्द्र १

सुकर्म्मा जी पिप्पलसे बोले कि यमराज जी सब दूतोंके साथ देवसमूहों के बीचमें बैठेहुये इन्द्रके देखनेको स्वर्ग में जातेभये १ धर्म्मराज को आतेहुये सुरराज ने देखा इसलिये शीघ्रतायुक्त उठकर उनको उत्तम अर्घ्य दिया २ व पूँछा कि हमारे आगेसब अपने आनेका वृत्तान्त कहो देवराज का ऐसावचन सुनकर ३ धर्म्मराज

राजा ययाति के सब चरित कहते हुये बोले कि हे देवेश! सुनो इ
सलिये हमारा आगमन यहां हुआ है ४ जिस कारणसे हम आ
सब तुमसे कहते हैं राजानहुष के पुत्र महाराज वैष्णव महात्म
ययाति ने ५ पृथ्वीतलपर सब छोटेबड़े मनुष्यों को वैष्णव करडा
व वैकुण्ठके समान मर्त्यलोकका रूपकरडाला ६ मनुष्य सबजरारो
गसे रहित होकर अमर होगये पाप नहीं करते झूंठ नहीं बोलते ७
काम क्रोधसेहीन लोभमोहसे वर्जित दानशील महात्मा व सबधर्म
में परायण होगये ८ व सब धर्म्मों से अनामय श्री नारायणजी की
पूजा करते हैं इससे सब मनुष्य पृथ्वीतल पर वैष्णव धर्म्मसेयुक्त
सब निरामय शोक रहित व सबकी सदा युवावस्थाही बनी रहती
है जैसे दूर्व्वा सब ओर पृथ्वी में फैलतीहै १० वैसेही सबपुरुष पु
पौत्र प्रपौत्रों से बढ़ते फैलते हैं उनके पुत्र पौत्र प्रपौत्र वंशोंसे वं
शान्तरको प्राप्त होगये ११ इसप्रकार सब वैष्णव होकर जरादु
से रहित होगये यह सब मर्त्यलोक में राजा ययातिके कारण हुआ
१२ व कुछ काम न रहनेके कारण हमभी पदसे भ्रष्ट होगये हैं इस
प्रकार तुमसे अपने कर्म्म के विनाशनेवाला सब वृत्तांत कहा १३
ऐसा जानकर हे इन्द्र! लोक का हितकरो जो तुमने हमसे पूंछाथा
सो हम सब तुमसे कहा १४ व हे इन्द्र! इसीकारण से तुम्हारे पास
हम आये हैं इन्द्र बोले कि हमने बहुत दिनहुये तब उन महात्मा
को यहां बुलाने के लिये दूत भेजाथा सो हे धर्म्मराज! हमारे दूत
से उन्होंने कहा कि हम न आवेंगे हम स्वर्ग के अर्थी नहीं हैं इस
से स्वर्गको न आवेंगे १५। १६ व हम सब पृथ्वी मण्डल स्वर्ग
रूप बनालेंगे ऐसा कहकर राजा प्रजाओं को पालनेलगा १७
उसके धर्म्म के प्रभावसे हम यहां बैठेहुये सदा डरते हैं यह सुन
धर्म्मराज कहनेलगे कि जिस किसी उपायसे बने तिस राजाको यहां
बुलाओ १८ हे महाभाग देवराज! जो हमारा प्रियकरना चाहो तो
ऐसा करो धर्म्मराजका यह वचन सुनकर सुरराजने १९ सब प्रकार
से इस विषय में बड़ी चिन्ताकी कि क्या करना चाहिये और
निश्चयकर इन्द्रने कामदेव और गन्धर्वों को बुलाकर उनसे कहा कि

ुम व मकरन्द व तुम्हारी स्त्री रति ये सब भूतलको जाओ व उन
ाहात्मा राजा ययातिको जैसे बने यहां लाओ वही उपाय तुमलोग
करना जिससे राजा यहां चलेही आवें २० । २१ बस अब हमारी
आज्ञासे तुम लोग अभी भूलोकको चलेजाओ इसमें संशय नहीं है
इस बातको सुन काम बोले कि आप दोनोंका पुण्यकारी प्रिय हम
करेंगे इसमें संदेह नहीं है २२ । २३ इतना कहकर सब चले वराजा
ययातिजीके निकट पहुँचे व वहां पहुँच कर नटोंका रूप धारणकरके
सबके सब राजाको आशीर्वाददे राजा से अच्छा नाटक कहते भये
२४ तिनके वचन सुनकर पृथिवीकेपति बुद्धिमान् ययातिजी अच्छे
पण्डितों से देवरूपिणी सभाकरते भये २५ व नहुषके पुत्र ज्ञान वि-
ज्ञानमें निपुण राजा आपभी सभामें आये और उनका नाटक देखा
२६ ब्राह्मणरूपी वामनजीकी उत्पत्ति वा चरित्रका नाटक भया ऐसा
रूप सबोंने धारण किया कि लोकमें किसी का उससमय वैसाथाही
नहीं व गीतभी ऐसा उत्तम सुन्दर स्वरसे गाया कि उसकेभी अनु-
रूपका कोई न गासके २७ इसप्रकार गाती स्त्री अपना अद्वितीय
रूप दिखाने लगी व हाव भाव गीत विलास सब दिखाने लगी
२८ उस गाने व कन्दर्प की माया से धर्म्मात्मा ययातिजी कुछ
मोहितहुये क्योंकि वे सब दिव्यभाव व चरितथे २९ कामदेवजी ने
राजा बलिका जैसा रूप पूर्व समयमें विंध्यावली रानीका जैसारूप
और वामनजीका जैसारूप था तैसाही रूपकिया ३० कामदेवजी
आपही सूत्रधार हुये वसंत पारिपार्श्वक हुये प्रसन्नपतिवाली रति
नटीका वेष धारण करतीभई ३१ यह रतिने पथ्यके भीतर नृत्य
करती भई और भीतरही घूमती भई महा बुद्धिमान् मकरन्द राजा
को क्षोभित करता भया ३२ जैसे जैसे राजा उत्तम नाच देखे गीत
सुने तैसेही तैसे महा प्रभाव युक्त मकरन्द नटी के प्रणीत से राजा
को मोहित करै ३३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने
मातापितृतीर्थेययातिचरित्रेपट्सप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

---

## सतहत्तरवां अध्याय ॥

दो० सतहत्तर अध्याय महँ नृपलखि युवती दोय ॥
कामविवश पूँछा सुना तासु चरित यह गोय॥१

सुकर्मा पिप्पलसेबोले कि कामके गानेके नादसे व ललितहास्यसे फिर राजा ययाति ऐसे मोहितहुये कि नटोंके समान होगये १ दिशा पेशाबकरके आये व विना पैर धोये वैसेही आसनपर बैठगये जैसे कि नटलोग बैठजाते हैं २ यह इतनी अशुद्धता पाकर कामने इन्द्रका कार्य करलिया राजाको वृद्धावस्था प्राप्त करदिया ३ जब नाटक बन्द हुआ राजा वृद्धावस्थासे युक्त होगया तो वे कामादि अपने २ स्थान को चलेगये व धर्म्मात्मा महाराज ययाति कामासक्त मन होगये ४ काम मोह से ऐसे मोहित हुये कि वनाय विह्वल विकलेन्द्रिय होगये ऐसे धर्म्मात्मा राजा पर विषयों से अपवाहित अतिमुग्ध होगये ५ एकसमय मोह राग के वश में प्राप्त राजा मृगया खेलने के लिये क्रीड़ा करते २ वनकोगये ६ वहां महात्मा राजाके क्रीड़ा करने के समय उपमा रहित एक चारसींगोंका मृग आया ७ वह सब अङ्गों से सुन्दरबना था व रोम सब उसके सुवर्णके थे व रत्नोंकीसी उसकी ज्योतिथी इससे अतिदर्शनीय चित्रविचित्र व मनोहर था ८ उसे देखतेही धनुर्बाण धारण कियेहुये राजा अतिवेगसे उसके पीछे दौड़े उन मेधावी ने पहले माना कि यह कोई दैत्य आयाहै ९ इसप्रकार वह मृग राजाको बड़ीदूर तक अपने पीछे २ दौड़ालेगया बड़े वेगसे जो राजा का रथ उसके पीछे दौड़ा उसके खेदसे महाराज अतिश्रमित होगये १० व राजा देखतेहीरहगये वह मृग वहीं अन्तर्द्धान होगया व राजाने अद्भुत नन्दनवनके सदृश वन देखा ११ वह वन दिव्य वृक्षों संयुक्त दिखाई देनेलगा जहां देखो पञ्चमहाभूतों से बनेहुये नानाप्रकार के पदार्थ दृष्टिगोचर होनेलगे बड़े २ भारी चन्दनों के वृक्षों से व पुष्पवेलों व चमेलों से मनोहर होगया १२ बकुल अशोक पुन्नाग नालिकेर व तिन्दुओं से मण्डित दिखाई देनेलगा सुपारी खजूर कोकाक्षि रातांक १३ कनक चम्पा आदि नानाप्रकारके वृक्षों से व अन्य सब ऋतुओं

में फरनेवाले वृक्षों से शोभित देखपड़ा पुष्पोंकी सुगन्धिसेयुक्त केतकी व पाड़र डांड़ के वृक्षोंसे भूषित १४ उत्तम तालाबदेखा जोकि पुण्य-कारी जलसे पूर्ण पांचयोजनका चौड़ा १५ हंस चकई चकवासे युक्त जलके पक्षियोंसे शब्दयुक्त व कमलोंसे मुदित श्वेतकमलों से विराजित १६ व रक्तकमलोंसे व पीले पङ्कजोंसे शोभित नीलपद्मोंसे प्रकाशित व बैंजनीरंगवाले नीरजों से अत्यन्त शोभित १७ मत्तभ्रमरों से स-र्वत्र नादित इसप्रकार के सब गुणोंसे युक्त वहां एक उत्तम तड़ाग देखा १८ वह पांच योजन का चौड़ा व दशयोजन का लम्बा था व सब दिव्य भावों से वह तड़ाग अलंकृत था १९ रथके वेगसे चलने के कारण जो राजाको कुछ श्रमहुआ था व उस वनमें तालाब के कि-नारे एक अतिशीतल आँबकी छायामें राजा बैठगये व कुछकाल वि-श्रामकर २० स्नानकर कमलों से सुगन्धित व शीतलजल पानकिया जोकि सब श्रमके मिटानेवाला और अमृतके तुल्य मीठा था २१ जब इसप्रकार वृक्षकी छायामें राजा बैठे तो अतिमनोहर तालल्य स्वरादिकों से युक्त गाना सुनाई दिया २२ व यह जान पड़ा कि मानों कोई दिव्यस्त्री गानकररही है महाराज गीतके बड़े प्रियथे । चि-त्तलगाकर सुननेलगे २३ व चिन्ताकरने कि यहां वनमें स्त्रीका गाना कहां से सुनाईदिया इसप्रकार धर्मात्मा महाराज चिन्ता करतेहीथे कि तबतक एक अतिश्रेष्ठ बड़े मोटे करिहाँव और कुचोंवाली अतिमनोहर स्त्री २४ राजाके देखतेही देखते उसी वनमें आई जोकि सब आभरणों से शोभित अङ्गवाली व शीलसुलक्षणों से युक्तथी २५ वह आकर राजाके आगे खड़ीहुई उससे महाराज बोले कि तुम कौनहो व कि-सकी भार्य्या बना चाहतीहो २६ व किस अर्थ यहां आईहो इसका सब कारण तुम हमसे कहो हे पिप्पल ! राजाके पूँछनेपर उसने कुछ भी २७ शुभ अशुभ राजासे न कहा वैसेही वह श्रेष्ठमुखी मन्द २ मुसकाती खड़ीरही व फिर अत्यन्त हास्यकरके वीणा हाथमें लिये हुई वहां से चलखड़ी हुई २८ यह दशा देख महाराज बड़े विस्मित हुये व शोचने लगे कि हमने इससे सम्भाषणभी किया पर इसने कुछ भी उत्तर न दिया २९ यह विचार कर पृथिवीपति ययातिजी

# सतहत्तरवां अध्याय॥

दो० सतहत्तर अध्याय महँ नृपलखि युवती दोय॥
कामविवश पूँछा सुना तासु चरित यह गोय॥

सुकर्मा पिप्पलसेबोले कि कामके गानेके नादसे व ललितहास्यसे फिर राजा ययाति ऐसे मोहितहुये कि नटोंके समान होगये १ दिशा पेशाबकरके आये व बिना पैर धोये वैसेही आसनपर बैठगये जैसे कि नटलोग बैठजाते हैं २ यह इतनी अशुद्धता पाकर कामने इन्द्रका कार्य करलिया राजाको वृद्धावस्था प्राप्त करदिया ३ जब नाटक बन्द हुआ राजा वृद्धावस्थासे युक्त होगया तो वे कामादि अपने २ स्थान को चलेगये व धर्म्मात्मा महाराज ययाति कामासक्त मन होगये ४ काम मोह से ऐसे मोहित हुये कि बनाय विह्वल विकलेन्द्रिय होगये ऐसे धर्म्मात्मा राजा पर विषयों से अपवाहित अतिमुग्ध होगये ५ एकसमय मोह राग के वश में प्राप्त राजा मृगया खेलने के लिये क्रीड़ा करते २ वनकोगये ६ वहां महात्मा राजाके क्रीड़ा करने के समय उपमा रहित एक चारसींगोंका मृग आया ७ वह सब अङ्गों से सुन्दरवर्ण था व रोम सब उसके सुवर्णके थे व रत्नोंकीसी उसकी ज्योतिथी इससे अतिदर्शनीय चित्रविचित्र व मनोहर था ८ उसे देखतेही धनुर्बाण धारण कियेहुये राजा अतिवेगसे उसके पीछे दौड़े उन मेधावी ने यह माना कि यह कोई दैत्य आयाहै ९ इसप्रकार वह मृग राजाको बड़ीदूर तक अपने पीछे २ दौड़ालेगया वड़े वेगसे जो राजा का रथ उसके पीछे दौड़ा उसके खेदसे महाराज अतिश्रमित होगये १० व राजा देखतेहीरहगये वह मृग वहीं अन्तर्द्धान होगया व राजाने अद्भुत नन्दनवनके सदृश वन देखा ११ वह वन दिव्यवृक्षों सेयुक्त दिखाई देनेलगा जहां देखो पञ्चमहाभूतों से वनेहुये नानाप्रकार के पदार्थ दृष्टिगोचर होनेलगे बड़े२ भारी चन्दनों के वृक्षों से व पुण्यकेलों के झमेलों से मनोहर होगया १२ वकुल अशोक पुन्नाग नारिकेर व तिन्दुओं से मण्डित दिखाई देनेलगा सुपारी खजूर कोकाबेलि शतावरी १३ कनैर चम्पा आदि नानाप्रकारके वृक्षों से व अन्य सब ऋतुओं

में फरनेवाले वृक्षों से शोभित देखपड़ा पुष्पोंकी सुगन्धिसेयुक्त केतकी व पाड़र डांड़ के वृक्षोंसे भूषित १४ उत्तम तालाबदेखा जोकि पुण्यकारी जलसे पूर्ण पांचयोजनका चौड़ा १५ हंस चकई चकवासे युक्त जलके पक्षियोंसे शब्दयुक्त व कमलोंसे मुदित श्वेतकमलों से विराजित १६ व रक्तकमलोंसे व पीले पङ्कजोंसे शोभित नीलपद्मोंसे प्रकाशित व बैंजनीरंगवाले नीरजों से अत्यन्त शोभित १७ मत्तभ्रमरों से सर्व्वत्र नादित इसप्रकार के सब गुणोंसे युक्त वहां एक उत्तम तड़ाग देखा १८ वह पांच योजन का चौड़ा व दशयोजन का लम्बा था व सब दिव्य भावों से वह तड़ाग अलंकृत था १९ रथके वेगसे चलने के कारण जो राजाको कुछ श्रमहुआ था व उस वनमें तालाब के किनारे एक अतिशीतल आँबकी छायामें राजा बैठगये व कुछकाल विश्रामकर २० स्नानकर कमलों से सुगन्धित व शीतलजल पानकिया जोकि सब श्रमके मिटानेवाला और अमृतके तुल्य मीठा था २१ जब इसप्रकार वृक्षकी छायामें राजा बैठे तो अतिमनोहर ताललय स्वरादिकों से युक्त गाना सुनाई दिया २२ व यह जान पड़ा कि मानों कोई दिव्यस्त्री गानकररही है महाराज गीतके बड़े प्रियथे।चित्तलगाकर सुननेलगे २३ व चिन्ताकरने कि यहां वनमें स्त्रीका गाना कहां से सुनाईदिया इसप्रकार धर्मात्मा महाराज चिन्ता करतेहीथे कि तबतक एक अतिश्रेष्ठ बड़े मोटे करिहाँव और कुचोंवाली अतिमनोहर स्त्री २४ राजाके देखतेही देखते उसी वनमें आई जोकि सब आभरणों से शोभित अङ्गवाली व शीलसुलक्षणों से युक्तथी २५ वह आकर राजाके आगे खड़ीहुई उससे महाराज बोले कि तुम कौनहो व किसकी भार्य्या बना चाहतीहो २६ व किस अर्थ यहां आईहो इसका सब कारण तुम हमसे कहो हे पिप्पल! राजाके पूँछनेपर उसने कुछ भी २७ शुभ अशुभ राजासे न कहा वैसेही वह श्रेष्ठमुखी मन्द २ मुसकाती खड़ीरही व फिर अत्यन्त हास्यकरके वीणा हाथमें लिये हुई वहां से चलखड़ी हुई २८ यह दशा देख महाराज बड़े विस्मित हुये व शोचने लगे कि हमने इससे सम्भाषणभी किया पर इसने कछ भी उत्तर न दिया २९ यह विचार कर पृथिवीपति ययातिजी

फिर चिन्ता करनेलगे कि जो मृग हमने चारसींगोंवाला अच्छेवर्ण का देखा था ३० हमको जान पड़ताहै कि यह उसीकी स्त्री होगी सत्य हम जानते हैं कि बस वह कोई सत्य मायारूप दानवों का था ३१ नहुषके पुत्र राजा ययाति एकक्षणभर चिन्तना करके फिर उस की ओर देखकर विचारने लगे कि तबतक वह स्त्री उसीवनमें ३२ अन्तर्द्धान होगई व अन्तर्द्धान होते समय राजाकी ओर देखकर बहुत हँसी व इसी अन्तरमें फिर सुन्दर स्वरताललययुक्त गीत राजा ने सुना व जहां वह गीतकी महाध्वनि सुनी वहीं अति शीघ्रतासे राजा गये व देखा ३३ । ३४ तो सहस्र पखुरीवाले कमलों से युक्त उसी पुष्करके तीरपर दिव्यशील गुणरूपसम्पन्न ३५ दिव्यलक्षणयुक्त दिव्य भूषणों से भूषित व दिव्यभावों से युक्त वीणा हाथमें लिये एक स्त्री शोभित होरही है ३६ व तालमान लयस्वर से युक्त मधुरगीत गारही है व उसगीतके प्रभावसे चराचरको मोहित करारही है ३७ देव मुनिगण दैत्य गन्धर्व व किन्नर सबों को मोहित कररही है व रूप तेजशालिनी उस विशालनयनी को देखकर ३८ राजाने विचारा कि बस इसचराचर संसारमें ऐसी और कोई नारी नहींहै यद्यपि राजाको प्रथमही नटने वृद्धकर दिया था ३९ तथापि उस समय फिर राजाके सर्वाङ्ग में महाकाम प्रकट होगया जैसे कि घृतके पड़तेही कैसाही मूर्च्छित अग्निहो पर उससे धूम निकलनेही लगताहै ४० ऐसेही उसस्त्री को देख राजाके अङ्गसे काम प्रकटहोआया व कामसे युक्त राजा उस सुन्दर लोचनवाली को देखकर बोला ४१ कि इसप्रकार की रूपवती संसारके मोहन करनेवाली स्त्री मैंने नहीं देखी राजाक्षणमात्र चिन्तनाकर काममें आसक्तमन होगया ४२ तिसके विरहसे तिससमय राजा लुब्ध होगया कामकी अग्निसे जलता और कामज्वरसे पीड़ित भया ४३ कि यह कैसे हमारीहोगी कैसे भाव होगा जो कमलमुखी कमलनयनी यह स्त्री हमको आलिंगनकरे ४४ प्राप्तहो तो जीवन सफलहो इसप्रकार चिन्तना कर पृथिवीपति धर्मात्मा ययातिजी ४५ उससे बोले कि हे शुभे! तुमकौनहो व किसकीस्त्री हो प्रथम हम ने जिसस्त्रीको देखा था वही फिरभी तुम दिखाईपड़ी

४६ इससे तुमसे पूँछते हैं कि तुम कौनहो इतने में फिर दो स्त्रियां दिखाईदीं तब धर्म्मात्मा राजाने प्रथमवाली से पूँछा कि तुम्हारेपास यह दूसरी कौन नारीहै हे कल्याणि ! हमसे सब कहो हमतो नहुष के पुत्र हैं ४७ व सोमवंश में उत्पन्नहुयेहैं और सप्तद्वीपवती पृथ्वी के स्वामीहैं व हे देवि ! ययाति हमारानाम है व तीनों लोकों में हम विख्यात हैं ४८ व हमारा चित्त चाहताहै कि तुम्हारे साथ भोगकरें इससे हे भद्रे ! हमको संगम दो व हमारा प्रियकरो ४९ हे भद्रे ! जो २ पदार्थ तुम चाहोगी सब तुमको देंगे इसमें संशय नहीं है हे वरवर्णिनि ! हम दुर्ज्जय कामसे पीड़ित हैं ५० अब उस कामसे हम दीन की रक्षाकरो हम तुम्हारे शरणहैं राज्य सब पृथ्वी व शरीर तुम्हारे समर्प्पण है ५१ व तुम्हारे संगम में तीनोंलोक तुमको देंगे राजा के वचनसुन कमलनयनी वह स्त्री ५२ विशाला नाम अपनी सखी से बोली कि राजासे हमारी उत्पत्तिका स्थानबताओ व हमारे पिता माताकाभी नाम बताओ ५३ व हमारा एकाग्रभाव भी इन राजाके आगे निवेदन करो उस स्त्री का वाञ्छित जानकरविशाला मधुर वचनों से राजासे बोली कि हे नृपनन्दन ! सुनो कामको पूर्व्वकाल में देवदेव महादेवजी ने भस्मकरडाला था ५४ । ५५ तब उसकी स्त्री रति पतिहीन होजाने के कारण बहुत रोई वह रति सदा इसी सरोवर में रहती थी ५६ उसका बड़े ऊँचे स्वर से करुणापूर्व्वक रोदन सुनकर बड़ीकृपासे युक्तहुये देवता ५७ हे राज-राजेन्द्र! शङ्करजीसे यह वचन बोलेकि हेमहादेवजी ! कामको फिर जिआदो ५८ क्योंकि यह बेचारी रति पतिहीन होने से कैसे जीवेगी सो हमारे स्नेहसे इसे काम से संयुक्तकरो ५९ महादेवजीने कहा कि हे महाभागो ! अच्छा कन्दर्प्पको हम फिर जिआदेंगे अब आज से यह शरीर से तो हीनहोगा और सब के अङ्गों में रहेगा अनङ्ग इस का और एक नामहोगा ६० व यह वसन्त ऋतुका मित्र होगा इस में सन्देह नहीं है व अतिदिव्य शरीर धारण करेगा अन्यथा न होगा ६१ इसप्रकार महादेवजी के प्रसादसे काम फिर जिआ ऐसा आशीर्व्वाददेकर महादेवजी कामसे बोले ६२ कि हे काम ! यहां

जाओ व अपनी प्रिया रति से मिलो तब स्थिति व संहार करनेवाला महातेजस्वी काम महादेव पार्वतीजी की आज्ञालेकर ६३ फिर इस तालपर आया क्योंकि यहां उसकी स्त्री दुःखयुक्त रतिथी सो हे राजन् ! यह कामसरहै व वह रति यहां अबभी रहती है ६४ महाभाग मन्मथ तो जानों भस्महीं होगया था तब से रति यहीं विद्यमान है व सदा दुःखिनी रहती है रतिके कोपसे दारुण उत्पन्न हुआहै ६५ इससे उसकी जलाई हुई रति अति मूर्च्छित रहती है हे नरोत्तम! पतिहीन होने से सदा अश्रुपात किया करती है ६६ उसके दोनों नेत्रों से जो आँसुओं के बूँद गिरते हैं उनसे सब सुखनाशक महा शोक उत्पन्न होताहै ६७ व उन्हीं आंसुओं से जराभी उत्पन्न होती है व उन्हीं से दुर्बुद्धि वियोग भी होताहै जो कि प्राणोंका नाश करताहै ६८ व दुःख और सन्ताप भी उन्हीं आंसुओं से उत्पन्न हुये हैं व सुखनाशिनी दारुण मूर्च्छाभी उन्हीं से उत्पन्न हुई है ६९ व शोकसे कामज्वर उत्पन्नहुआहै व विभ्रमभी शोकही से उत्पन्न हुआहै व शोकही से प्रलाप उत्पन्नहुआ व प्रलापसे विह्वलता और उन्माद उन्माद से मृत्यु ७० बस ये सब विश्वके नाशक उसी के आंसुओंके बिन्दुओंसेही उत्पन्नहुये हैं रतिके समीप में उत्पन्न हुये इससे सब तापयुक्त अंगवाले ७१ मूर्तिधारणकिये व सद्भावगुणोंसे संयुक्त हुये व कामभी किसी के कहने से यहां आया ७२ तब काम को आये हुये देखकर रति महानन्दसे युक्तहुई व तब उसके दोनों नेत्रों से जलकेभीतर आनन्दके आंसुओं के बिन्दुगिरे हे महाराज! उन से सब चापल्यता से प्रजा उत्पन्नहुई प्रथम प्रीति हुई उससे ख्याति व लज्जा ये दो हुईं ७३।७४ व उन्हीं से महानन्द व दूसरी शान्ति उत्पन्नहुई इसी शान्ति से शुभ व सुख संभोग देनेवाली दो कन्या उत्पन्नहुईं ७५ व लीला क्रीड़ा मनोभाव व संयोग भी उत्पन्नहुये व महाराज रतिके वामनेत्र से जो आनन्दके आंसुओंके बिन्दु गिरे थे ७६ हे राजन् ! जहां जल में पड़े थे वहीं से एक सुन्दर कमलजामा व उसीकमल से सुन्दरमुखी यह स्त्री उत्पन्नहुई है ७७ इसका अश्रुबिन्दुमती तो नामहै और रतिकी कन्याहै व इसकी सखी

से सुख कर हम इसके समीप सदा रहती हैं ७८ सखीके भावसे सदैव प्रसन्न रहती हैं व विशाला हमारानामहै व हम वरुणकी कन्या हैं ७९ सो स्नेह से इसके पास सदा रहती हैं व स्नेहही का बर्ताव इसके संग वर्त्तती हैं हे राजन् ! यह सब इसका व अपना वृत्तान्त हमने तुम से कहा ८० यह सुमुखी यहां पतिपाने की इच्छासे तप करती है इतनासुन राजाययाति बोले कि हे शुभे ! तुमने सब कहा व हमने सब जाना अब जो हम कहते हैं सुनो ८१ यह सुमुखी रतिकीपुत्री हमींको भजे यह बाला जो कुछ चाहतीहो हम इसे सब कुछ देंगे ८२ हे कल्याणि ! अब ऐसा करो जिससें यह हमारे वश में होजावे यह सुनकर विशाला बोली कि हे भूपाल ! इसका नियम हम कहती हैं उसे सुनो, युवावस्था से युक्त सब कुछ जाननेवाला वीर लक्षण देवराजके समान धर्म्माचारसमेत८३।८४ तेजस्वी महा प्राज्ञ दाता यज्ञ करनेवालोंमें श्रेष्ठ गुणों के धर्म भावका जाननेवाला पुण्यका पात्र ८५ लोक में इन्द्र के समान सुन्दर यज्ञों से धर्म में तत्पर सब ऐश्वर्य्य से युक्त जैसे नारायण भगवान् होते हैं ऐसेही वह भी हो ८६ देवताओं का प्रिय व ब्राह्मणों का अतीव प्रियकरने वाला ब्रह्मण्य वेदतत्त्व जाननेवाला तीनोंलोकों में विख्यात विक्रम ८७ इन सब गुणों से युक्त व तीनोंलोकों से पूजित सुमतिवाला सुन्दर प्रीति करनेहारा ऐसा पुरुष जो होगा वही इसका पति होगा अन्यथा न होगा ८८ यह सुन राजाययाति बोले कि इनसब गुणों से युक्त आयेहुये हमको जानो इसी के अनुरूप भर्त्ता हमको ब्रह्माके बनाये हुये जानो इसमें कुछ भी सन्देह नहींहै ८९ विशाला बोली कि हे राजन् ! आपको पुण्यसे बढ़ेहुये हम तीनोंलोकों में जानती हैं व जो २ गुण हमने कहे वास्तव में सब आपमेंहैं ९० परन्तु एक ही दोषसे यह तुमको अपना पति बनानेको नहीं मानती बस वही हमको भी सन्देहहैं कि आप विष्णुमयहैं ९१ ययातिजीबोले कि जिस महादोषसे यह हमको अपना पति बनाने को नहीं चाहती उसे हमसे कहो व जिससे यह हमारे ऊपर प्रसाद से सुमुखीहो हम वही करें ९२ विशाला बोली कि हे पृथ्वीनाथ ! तुम अपना दोष कैसेनहीं

जानते वृद्धावस्था से तुम्हारा शरीर व्याप्त है बस इसी से यह तु
को अपना पति बनाने को नहीं मानती ९३ ऐसा अप्रिय उत्तर
वचन सुन राजा बड़े दुःखसे युक्त होकर उस विशालासे फिर बोल
कि ९४ हे भद्रे ! जरादोष हमारे शरीर में किसके संसर्ग से हुआ
यह हम नहीं जानते कि जराका आगमन कैसे हुआ ९५ जो
दुर्लभ पदार्थ तीनों लोकों के यह चाहतीहो वे सब हम इसक
दिया चाहते हैं उत्तम वर मांगो ९६ विशाला बोली कि जब तु
वृद्धता से हीनहोओ तो तुम्हारी यह प्रियाहो हे राजन् ! यह नि
श्चय तुमसे हम सत्य २ कहती हैं ९७ सो हे राजन् ! इस विष
में एक श्रुति है कि पुत्र भाई व भृत्य चाहे जो हो जिसके अंग
जराआती है उसके अंगों में फैलही जाती है ९८ सो यदि कि
के तरुणताहो उससे तुम ग्रहणकरो व अपनी जरा उसको दो
वह भी जो राजीहो तो ऐसा होसक्ता है ९९ सो जो कोई तु
कृपाकर अपना रूपदे तो उसको पुण्य होगा इसमें कुछ स
नहीं है १०० दुःख से इकट्ठा की हुई पुण्य और को दीजावे
अच्छी पुण्य उसीकी होजायगी वही पुण्यका फल भोगकरेगा १
हे राजन् ! इससे तुम अपने पुत्रसे तरुणता ग्रहणकरो व वृद्धाव
और पुण्य देवो हे महाराज ! जाकर सुन्दरता ग्रहणकरके फिर आ
१०२ जो तुम इसके संग भोग करना चाहते हो तो तो ऐसा
ऐसा राजा से कहकर विशाला विश्राम कररही १०३ सुकर्मा
बोले विशालाका ऐसा वचन सुनकर राजा उससे बोले कि हे म
भागे ! ऐसाहीहो हम तुम्हारा वचन करेंगे १०४ कामासक्त
राजा ययाति गृह में आकर अपने पुत्रोंको बुलाकर यह वचन
पूरु यदु तुर्वसु अपने प्यारे सबसे बोले कि हे पुत्रो ! हमारी आ
से यह करो जिसमें हमको सुखहो १०५ । १०६ सब पुत्र बोले
शुभ वा अशुभ चाहे जैसाहो पर पिताका वाक्य पुत्रों को क
चाहिये इससे आप शीघ्रही कहिये व कियाहुआही समझिये
में कुछ सन्देह नहीं है १०७ ॥

चौ० इमिमुनि वचनसुननकराजा । कामातुर प्रमुदित मन भ्राजा

बोले पुत्रन सों करिप्रीती । मदनातुर जानें किमि नीती १०८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमातापितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

# अठहत्तरवां अध्याय ॥

दो० अठहत्तर अध्याय महँ निज पुत्रन पहँजाय ॥
नाहुष वयमांगीलही नहिंपुनि लहि तहँआय १

ययाति बोले कि हे पुत्रो! तुममें से दुःखदायिनी हमारी वृद्धता ो एक भी कोई ग्रहण करे व धीरहोकर तुम लोगों के मध्य में से पनी तरुणता हमकोदे १ और यह उत्तम स्वरूपदे क्योंकि इस ासमय हमारा मन कामासक्तहो एकस्त्री में लगकर अत्यन्त चञ्चल ोगयाहै २ इससे जैसे पात्रमें स्थित जलको अग्नि खलभलाता व न्तप्त करता है वैसेही हमको कामका अग्नि सन्तप्त करता है व ससे हमारा मन कामासक्त होकर अत्यन्त चलायमान होरहाहै ३ ो हे पुत्रो! एक कोई दुःखदायिनी हमारी जराको ग्रहण करे व अपनी तरुणता हमको दे जिसमें हम कामसुख भोगें ४ जो कोई उत्तम पुत्र हमारी जराको ग्रहण करेगा वही राज्य भी भोगेगा व हमा- ा धन्वा भी वही ग्रहण करेगा ५ व उसीको धन धान्यादि अच्छी सम्पत्तिका सुखभी होगा व विपुल सन्तति भी उसीके होगी व कीर्ति यश भी उसीके होंगे ६ पुत्र बोले कि हे महाराज! आप तो धर्म्मा- त्माहैं इससे प्रजाओंको सत्यसे पालते हैं फिर आपका इस प्रकारका चञ्चल भाव कैसे होगया ७ राजा ययाति बोले कि हमारे पुरमें पूर्व समयमें नाचनेवाले लोग आये उनके नृत्य देखने से हमारा चित्त कामसे सम्मोहित हुआ ८ व हे पुत्रो! वृद्धावस्था से देह व्याप्त हो- गया तबसे हमारा मन कामसे ऐसा व्याकुल होगया है कि कहतेही नहीं बनता इसी दशामें हम वनको गये वहां हमने ९ एक सुमुखी दिव्यरूपवती स्त्री देखी व हे पुत्रो! हमने उससे पूँछा तो वह सती ो कुछ नहीं बोली १० उसकी एक विशालानाम सखी अतिचारु

जानते वृद्धावस्था से तुम्हारा शरीर व्याप्त है बस इसी से यह
को अपना पति बनाने को नहीं मानती ९३ ऐसा अप्रिय इन
वचन सुन राजा बड़े दुःखसे युक्त होकर उस विशालासे फिर बो
कि ९४ हे भद्रे! जरादोष हमारे शरीर में किसके संसर्ग से हुआ
यह हम नहीं जानते कि जराका आगमन कैसे हुआ ९५ जो
दुर्लभ पदार्थ तीनों लोकों के यह चाहतीहो वे सब हम तुम
दिया चाहते हैं उत्तम वर मांगो ९६ विशाला बोली कि जब
वृद्धता से हीनहोओ तो तुम्हारी यह प्रियाहो हे राजन्! यह
अब तुमसे हम सत्य २ कहती हैं ९७ सो हे राजन्! इस लो
में एक श्रुति है कि पुत्र भाई व भृत्य चाहे जो हो जिसके
जराआती है उसके अंगों में फैलही जाती है ९८ सो यदि
के तरुणताहो उससे तुम ग्रहणकरो व अपनी जरा उसको दे
वह भी जो राजीहो तो ऐसा होसक्ता है ९९ सो जो कोई
कृपाकर अपना रूपदे तो उसको पुण्य होगा इसमें कुछ सन्
नहीं है १०० दुःख से इकट्ठा की हुई पुण्य और को दीजावे
अच्छी पुण्य उसीकी होजायगी वही पुण्यका फल भोगकरेगा १०
हे राजन्! इससे तुम अपने पुत्रसे तरुणता ग्रहणकरो व उ
और पुण्य देवो हे महाराज! जाकर सुन्दरता ग्रहणकरके फिर
१०२ जो तुम इसके संग भोग करना चाहते हो तो तो ऐसा
ऐसा राजा से कहकर विशाला विश्राम करतीहुई १०३ सू
बोले विशालाका ऐसा वचन सुनकर राजा उससे बोले कि हे
भागे! ऐसाहीहो हम तुम्हारा वचन करेंगे १०४ कामातुर
राजा ययाति गृह में आकर अपने पुत्रोंको बुलाकर यह वचन
पुरु यदु तुर्वसु आदि चारि सबसे बोले कि हे पुत्रो! हमारी
में यह करो जिसमें हमको सुखहो १०५ । १०६ सब पुत्र बोले
शुभ या अशुभ चाहे जैसाहो पर पिताका वाक्य पुत्रों को
चाहिये इसमें चार [illegible] करें न [illegible] सबको
में कुछ सन्देह नहीं है १०७॥
[illegible] श्रीमुन्शी नवलकिशोर [illegible]

बोले पुत्रन सों करिप्रीती । मदनातुर जानें किमि नीती १०८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमातापितृ तीर्थवर्णनेययातिचरित्रेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

## अठहत्तरवां अध्याय ॥

दो० अठहत्तर अध्याय महँ निज पुत्रन पहँजाय ॥
नाहुष वयमांगीलही नहिंपुनि लहि तहँआय १

ययाति बोले कि हे पुत्रो! तुममें से दुःखदायिनी हमारी वृद्धता ो एक भी कोई ग्रहण करे व धीरहोकर तुम लोगों के मध्य में से तपनी तरुणता हमकोदे १ और यह उत्तम स्वरूपदे क्योंकि इस ासय हमारा मन कामासक्तहो एकस्त्री में लगकर अत्यन्त चञ्चल ोगयाहै २ इससे जैसे पात्रमें स्थित जलको अग्नि खलभलाता व न्तप्त करता है वैसेही हमको कामका अग्नि सन्तप्त करता है व ससे हमारा मन कामासक्त होकर अत्यन्त चलायमान होरहाहै ३ ो हे पुत्रो! एक कोई दुःखदायिनी हमारी जराको ग्रहण करे व अपनी तरुणता हमको दे जिसमें हम कामसुख भोगें ४ जो कोई उत्तम पुत्र हमारी जराको ग्रहण करेगा वही राज्य भी भोगेगा व हमा- ा धन्वा भी वही ग्रहण करेगा ५ व उसीको धन धान्यादि अच्छी सम्पत्तिका सुखभी होगा व विपुल सन्तति भी उसीके होगी व कीर्ति ाश भी उसीके होंगे ६ पुत्र बोले कि हे महाराज! आप तो धर्मा- माहैं इससे प्रजाओंको सत्यसे पालते हैं फिर आपका इस प्रकारका ञ्चल भाव कैसे होगया ७ राजा ययाति बोले कि हमारे पुरमें पूर्व ामयमें नाचनेवाले लोग आये उनके नृत्य देखने से हमारा चित्त ामसे सम्मोहित हुआ ८ व हे पुत्रो! वृद्धावस्था से देह व्याप्त हो- ाया तबसे हमारा मन कामसे ऐसा व्याकुल होगया है कि कहतेही ाहीं बनता इसी दशामें हम वनको गये वहां हमने ९ एक सुमुखी देव्यरूपवती स्त्री देखी व हे पुत्रो! हमने उससे पूँछा तो वह सती ो कुछ नहीं बोली १० उसकी एक विशालानाम सखी अतिचारु

जानते वृद्धावस्था से तुम्हारा शरीर व्याप्त है बस इसी से यह
को अपना पति बनाने को नहीं मानती ९३ ऐसा अप्रिय
वचन सुन राजा बड़े दुःखसे युक्त होकर उस विशालासे फिर बोले
कि ९४ हे भद्रे! जरादोष हमारे शरीर में किसके संसर्ग से हुआ
यह हम नहीं जानते कि जराका आगमन कैसे हुआ ९५ जो
दुर्लभ पदार्थ तीनों लोकों के यह चाहतीहो वे सब हम
दिया चाहते हैं उत्तम वर मांगो ९६ विशाला बोली कि जब
वृद्धता से हीनहोओ तो तुम्हारी यह प्रियाहो हे राजन्! यह
अय तुमसे हम सत्य २ कहती हैं ९७ सो हे राजन्! इस विष
में एक श्रुति है कि पुत्र भाई व भृत्य चाहे जो हो जिसके अंगों
जराआती है उसके अंगों में फैलही जाती है ९८ सो यदि
के तरुणताहो उससे तुम ग्रहणकरो व अपनी जरा उसको दो
वह भी जो राजीहो तो ऐसा होसक्ता है ९९ सो जो कोई
कृपाकर अपना रूपदे तो उसको पुण्य होगा इसमें कुछ सन्दे
नहीं है १०० दुःख से इकट्ठा की हुई पुण्य और को दीजावे
अच्छी पुण्य उसीकी होजायगी वही पुण्यका फल भोगकरेगा १०
हे राजन्! इससे तुम अपने पुत्रसे तरुणता ग्रहणकरो व
और पुण्य देवो हे महाराज! जाकर सुन्दरता ग्रहणकरके फिर
१०२ जो तुम इसके संग भोग करना चाहते हो तो तो ऐसा
ऐसा राजा से कहकर विशाला विश्राम कररही १०३
बोले विशालाका ऐसा वचन सुनकर राजा उससे बोले कि हे
भागे! ऐसाहीहो हम तुम्हारा वचन करेंगे १०४ कामासक्त
राजा ययाति गृह में आकर अपने पुत्रोंको बुलाकर यह वचन
पूरु यदु तुर्व्वसु अपने प्यारे सबसे बोले कि हे पुत्रो! हमारी
से यह करो जिसमें हमको सुखहो १०५। १०६ सब पुत्र बोले
शुभ वा अशुभ चाहे जैसाहो पर पिताका वाक्य पुत्रों को
चाहिये इससे आप शीघ्रही कहिये व कियाहुआही समझिये
में कुछ सन्देह नहीं है १०७॥
चौ० इमिसुनि वचनसुतनकेराजा। कामातुर प्रमुदित मन भ्राजा

बोले पुत्रन सों करिप्रीती । मदनातुर जानें किमि नीती १०८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमातापितृ
तीर्थवर्णनेययातिचरित्रेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

# अठहत्तरवां अध्याय ॥

दो० अठहत्तर अध्याय महँ निज पुत्रन पहँजाय ॥
नाहुष वयमांगीलही नहिंपुनि लहि तहँआय १

ययाति बोले कि हे पुत्रो! तुममें से दुःखदायिनी हमारी वृद्धता ो एक भी कोई ग्रहण करे व धीरहोकर तुम लोगों के मध्य में से पनी तरुणता हमकोदे १ और यह उत्तम स्वरूपदे क्योंकि इस मय हमारा मन कामासक्तहो एकस्त्री में लगकर अत्यन्त चञ्चल ोगयाहै २ इससे जैसे पात्रमें स्थित जलको अग्नि खलभलाता व न्तप्त करता है वैसेही हमको कामका अग्नि सन्तप्त करता है व ससे हमारा मन कामासक्त होकर अत्यन्त चलायमान होरहाहै ३ ो हे पुत्रो! एक कोई दुःखदायिनी हमारी जराको ग्रहण करे व पनी तरुणता हमको दे जिसमें हम कामसुख भोगें ४ जो कोई त्तम पुत्र हमारी जराको ग्रहण करेगा वही राज्य भी भोगेगा व हमा- ा धन्वा भी वही ग्रहण करेगा ५ व उसीको धन धान्यादि अच्छी म्पत्तिका सुखभी होगा व विपुल सन्तति भी उसीके होगी व कीर्ति ाश भी उसीके होंगे ६ पुत्र बोले कि हे महाराज! आप तो धर्म्मा- माहैं इससे प्रजाओंको सत्यसे पालते हैं फिर आपका इस प्रकारका ञ्चल भाव कैसे होगया ७ राजा ययाति बोले कि हमारे पुरमें पूर्व्व मयमें नाचनेवाले लोग आये उनके नृत्य देखने से हमारा चित्त ामसे सम्मोहित हुआ ८ व हे पुत्रो! वृद्धावस्था से देह व्याप्त हो- ाया तबसे हमारा मन कामसे ऐसा व्याकुल होगया है कि कहतेही हीं बनता इसी दशामें हम वनको गये वहां हमने ९ एक सुमुखी देव्यरूपवती स्त्री देखी व हे पुत्रो! हमने उससे पूँछा तो वह सती ो कुछ नहीं बोली १० उसकी एक विशालानाम सखी अतिचारु

जानते वृद्धावस्था से तुम्हारा शरीर व्याप्त है बस इसी से यह
को अपना पति बनाने को नहीं मानती ९३ ऐसा अप्रिय
वचन सुन राजा बड़े दुःखसे युक्त होकर उस विशालासे फिर बोले
कि ९४ हे भद्रे! जरादोष हमारे शरीर में किसके संसर्ग से हुआ
यह हम नहीं जानते कि जराका आगमन कैसे हुआ ९५ जो
दुर्लभ पदार्थ तीनों लोकों के यह चाहतीहो वे सब हम
दिया चाहते हैं उत्तम वर मांगो ९६ विशाला बोली कि जब
वृद्धता से हीनहोओ तो तुम्हारी यह प्रियाहो हे राजन्! यह नि
श्चय तुमसे हम सत्य २ कहती हैं ९७ सो हे राजन्! इस विषय
में एक श्रुति है कि पुत्र भाई व भृत्य चाहे जो हो जिसके
जराआती है उसके अंगों में फैलही जाती है ९८ सो यदि
के तरुणताहो उससे तुम ग्रहणकरो व अपनी जरा उसको दो
वह भी जो राजीहो तो ऐसा होसक्ता है ९९ सो जो कोई तुमको
कृपाकर अपना रूपदे तो उसको पुण्य होगा इसमें कुछ सन्देह
नहीं है १०० दुःख से इकट्ठा की हुई पुण्य और को दीजावे
अच्छी पुण्य उसीकी होजायगी वही पुण्यका फल भोगकरेगा १
हे राजन्! इससे तुम अपने पुत्रसे तरुणता ग्रहणकरो व
और पुण्य देवो हे महाराज! जाकर सुन्दरता ग्रहणकरके फिर आओ
१०२ जो तुम इसके संग भोग करना चाहते हो तो तो ऐसा
ऐसा राजा से कहकर विशाला विश्राम कररही १०३
बोले विशालाका ऐसा वचन सुनकर राजा उससे बोले कि हे
भागे! ऐसाहीहो हम तुम्हारा वचन करेंगे १०४ कामासक्त
राजा ययाति गृह में आकर अपने पुत्रोंको बुलाकर यह वचन
पूरु यदु तुर्व्वसु अपने प्यारे सबसे बोले कि हे पुत्रो! हमारी
से यह करो जिसमें हमको सुखहो १०५। १०६ सब पुत्र बोले
शुभ वा अशुभ चाहे जैसाहो पर पिताका वाक्य पुत्रों को
चाहिये इससे आप शीघ्रही कहिये व कियाहुआही समझिये
में कुछ सन्देह नहीं है १०७॥
चौ० इमिमुनि वचनसुतनकेराजा। कामातुर प्रमुदित मन भ्राजा

बोले पुत्रन सों करिप्रीती । मदनातुर जानें किमि नीती १०८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमातापितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

## अठहत्तरवां अध्याय ॥

दो० अठहत्तर अध्याय महँ निज पुत्रन पहँजाय ॥
नाहुष वयमांगीलही नहिंपुनि लहि तहँआय १

ययाति बोले कि हे पुत्रो! तुममें से दुःखदायिनी हमारी वृद्धता को एक भी कोई ग्रहण करे व धीरहोकर तुम लोगों के मध्य में से अपनी तरुणता हमकोदे १ और यह उत्तम स्वरूपदे क्योंकि इस समय हमारा मन कामासक्तहो एकस्त्री में लगकर अत्यन्त चञ्चल होगयाहै २ इससे जैसे पात्रमें स्थित जलको अग्नि खलभलाता व सन्तप्त करता है वैसेही हमको कामका अग्नि सन्तप्त करता है व इससे हमारा मन कामासक्त होकर अत्यन्त चलायमान होरहाहै ३ सो हे पुत्रो! एक कोई दुःखदायिनी हमारी जराको ग्रहण करे व अपनी तरुणता हमको दे जिसमें हम कामसुख भोगें ४ जो कोई उत्तम पुत्र हमारी जराको ग्रहण करेगा वही राज्य भी भोगेगा व हमारा धन्वा भी वही ग्रहण करेगा ५ व उसीको धन धान्यादि अच्छी सम्पत्तिका सुखभी होगा व विपुल सन्तति भी उसीके होगी व कीर्ति यश भी उसीके होंगे ६ पुत्र बोले कि हे महाराज! आप तो धर्म्मात्माहैं इससे प्रजाओंको सत्यसे पालते हैं फिर आपका इस प्रकारका चञ्चल भाव कैसे होगया ७ राजा ययाति बोले कि हमारे पुरमें पूर्व समयमें नाचनेवाले लोग आये उनके नृत्य देखने से हमारा चित्त कामसे सम्मोहित हुआ ८ व हे पुत्रो! वृद्धावस्था से देह व्याप्त होगया तबसे हमारा मन कामसे ऐसा व्याकुल होगया है कि कहतेही नहीं बनता इसी दशामें हम वनको गये वहां हमने ९ एक सुमुखी दिव्यरूपवती स्त्री देखी व हे पुत्रो! हमने उससे पूँछा तो वह सती तो कुछ नहीं बोली १० उसकी एक विशालानाम सखी अतिचारु

चतुर है उसने हमसे शुभ व हमको सुख देनेवाला यह वचन कहा
कि ११ जो तुम जराहीन होओ तो यह तुमको प्रसन्नकरे सो इस प्र
कार लिसके कहेहुये वाक्यको अंगीकार कर हम अपनी जरानिय
के लिये घर आयेहैं १२ व उसीके लिये तुम लोगोंसे ऐसा कहा है
हमको कोई अपनी तारुण्यदे व हमारी जरा लेऐसा जानकर हे पुत्रो
हमारे सुखका देनेवाला कर्म्म तुममें से एकको करना चाहिये १३
यह सुन उनमें अनुनाम पुत्र बोला कि पिता व माता के प्रसाद से
पुत्र शरीर पातेहैं व हे राजन् ! धर्म्म भी पण्डितलोग इसी शरीर
से करतेहैं १४ व पुत्रोंको माता पिताकी शुश्रूषा विशेष रीतिसे करनी
चाहिये परन्तु नवयौवन अवस्थाका देना नहीं होसक्ता १५ क्योंकि
हे नृप ! मनुष्य प्रथमावस्थाहीमें विषयवासनाको भोगते हैं सो इस
समय हम लोगों के भोगका समयहै इससे हम तुम्हारी जरा
लेसके न अपनी तरुणता देसकेहैं क्योंकि आप बहुत दिन
भोगचुके हैं अब वृद्धहुये हैं ऐसे सुखोंके भोगनेकी कौन आवश्य
है अब इस अवस्थामें जो ऐसे भोगकरोगे तो आपका जीवन
होगा १६ । १७ इससे हे महाराज ! हम तुम्हारा वाक्य न करेंगे
प्रकार राजासे ज्येष्ठपुत्र अनुने कहा १८ अनुका वाक्य सुनकर
होकर राजा ययाति बोले व यद्यपि धर्म्मात्माथे पर मारे रोषके अ
नेत्र कर उसको शाप दिया १९ कि हे पापचेतन ! तुमने हमारी
आज्ञाका अपध्वंस किया इससे तुम सब धर्म्म से बाहर होकर
होओ २० शिख से विहीन होकर वेदशास्त्र से विहीन होओ व
आचारों से तुम विहीन होगे इसमें संशय नहीं है २१ ब्रह्महा म
दुष्टात्मा व सत्यवर्जित भी होगे व नराधम तुम अतिकोप के व
करनेवाले होओगे २२ मदिरा बेंचनेवाले भूंखे पापी व गोघाती
तुम होओगे दुष्कर्म्म करनेवाले व ब्रह्मद्वेषी सदा होगे २३ व पर
गामी और महाप्रचण्ड लम्पटहोगे व सदा दुष्टबुद्धि होकर सर्वभक्षी
होओगे २४ व अपने गोत्रकी स्त्री के संग भोगकरोगे व सब
का नाश करोगे पुण्य ज्ञानसे विहीन व कोढ़ी भी होओगे २५
तुम्हारे पुत्र पौत्रभी ऐसेही सब पुण्योंके नाशनेवाले म्लेच्छ श्रेष्ठ

पापी होंगे इसमें सन्देह नहीं है २६ इसप्रकार अनुको शाप देकर यदुनाम अपने दूसरे पुत्र से राजा ययाति बोले कि हमारी जराको धारण करो व अकंटक राज्यभोगो २७ तब हाथजोड़कर यदु राजा से बोले कि हे तात! हम जराका भार नहीं उठासक्के इससे कृपा कीजिये २८ अतिशीत लगना मार्ग्गमें न चलने पाना दन्तादिकोंके न रहनेसे कदन्न भोजन करना वृद्धस्त्रियों का सङ्गहोना व सब अपने मनके प्रतिकूल कामोंका देखना ये पांच जराके लक्षणहैं २९ इससे हे राजन्! हम अभी पहिलीही अवस्था में वृद्धता के दुःख नहीं सहसक्के व हम क्या कोईभी ज्वानीही में बुढ़ापेको नहीं धारण करसक्का इससे अब हमारे ऊपर क्षमाकीजिये ३० हे द्विजनन्दन! यह सुन क्रुद्धहोकर राजाने यदुकोभी शापदिया कि तेरे वंशमें उत्पन्नहो कर कोई कभी न राज्य के योग्यहोगा ३१ बल व तेज व क्षमा से हीन व क्षत्रिय धर्म्मसे वर्जित सब तेरेवंशके होंगे जिससे तुम हमारी आज्ञाके प्रतिकूलहो इससे ऐसा होगा सन्देह नहीं है ३२ यह सुनकर यदु बोले कि महाराज हमतो निर्दोषहैं आपने क्यों शाप दिया अब हमदीनके ऊपर कृपाकरो व प्रसन्नहोओ ३३ ययाति राजा बोले कि हे पुत्र! देवदेव श्रीविष्णु अपने अंशसे तुम्हारे कुलमें अवतारलेंगे तब तुम्हाराकुल पवित्र होजायगा ३४ यदु बोले कि हे महाराज! हम निर्दोष पुत्र को आपने शापित किया जो हमारे ऊपर दया हो तो अब अनुग्रह कीजिये ३५ राजा बोले कि जो ज्येष्ठपुत्र पिताके दुःखों को हरता है वह राज्य का भाग भोगताहै व भारउठाताहै ३६ तुम भव्य अभव्य सब करोगे इसमें संशय नहीं है परन्तु तुमने हमारी आज्ञा का नाश किया इससे हमने महादण्ड से तुमको घातित किया ३७ व अब अनुग्रह नहीं होसक्का तुम्हारी जैसी इच्छाहो वैसा करो यह सुन यदु बोले कि हे नृप! जिससे तुमने हमारा राज्य कुल व रूप नष्ट किया ३८ इससे अब हम व हमारे वंश का पति जोई होगा दुष्ट होगा अब हमभी कहते हैं कि तुम्हारे वंश में नाना भेद के क्षत्रिय होंगे ३९ उनके ग्राम व देश और स्त्रियों को व रत्नों को बड़े२ कोप करनेवाले महाबलवान् भोगेंगे इसमें संशय नहीं है॰

व हमारे वंश से जो तुम्हारे शाप से तुरुष्क व म्लेच्छ उत्पन्नहोंगे वे भी सब भोग करेंगे जिनको कि तुमने दारुण शापोंसे नाशित किया है ४१ ऐसा राजासे कहकर यदु बहुत क्रुद्धहुये तब महाराज ययाति और भी क्रुद्धहुये और फिरसे शापदिया ४२ कि अच्छा जो तुम्हारे वंशसे उत्पन्न म्लेच्छादिक हमारी प्रजाओंका नाश करेंगे तो तुम हम से सुनो जबतक चन्द्रमा सूर्य्य पृथ्वी नक्षत्र तारागण रहेंगे ४३ तब तक जितने म्लेच्छ उत्पन्नहोंगे कुम्भीपाक नरक में गिरेंगे व रौरव नरकमें भी पड़ेंगे तब राजाने सबसे छोटे तुर्व्वसु नाम पुत्रको बालकों के संग खेलतेहुये देख बुलाकर बालक जान राजाने उससे कहा कि तुम तो लड़केहो तुमसे क्या कहें जाकर खेलो ४४।४५ फिर शर्म्मिष्ठा केपुत्र पुण्यात्मा पूरुको बुलाकर उससे कहा कि हे पुत्र! हमारी जरा तुम ग्रहणकरो ४६ व हमारा दियाहुआ अतिपुण्यदायक शत्रुरहित राज्य भोगो यह सुन पूरु बोले कि हे देव! राज्य हम न भोगेंगे क्यों आप अभी भोगते हैं भोगें ४७ पर आपकी आज्ञासे जरा हम ग्रहण करते हैं दीजिये व हमारी तरुणतासे अभी सुन्दररूप धारणकरके ४८ विषयासक्तचित्तसे आप नानाप्रकारके भोग विलास कीजिये हेमहाभाग! जबतक इच्छाहो तबतक तिसके साथ विहार करो ४९ जब तक हम जीवेंगे तबतक आपकी वृद्धावस्था धारणकिये रहेंगे जब पूरुने ऐसा कहा तो महाराज ययाति ५० अतिहर्षित होकर उस पुत्र पूरुसे बोले कि हे वत्स! जिससे कि तुमने हमारी आज्ञा नहीं हतकी वरन अच्छेप्रकार से की ५१ इससे बहुत सुखके देनेवाला तुमको देंगे जिससे हमारी वृद्धावस्था ग्रहणकी और अपनी युवावस्था दी ५२ तिससे हेमहामते! हमारी दीहुई राज्य भोगो हेराजन्! जब राजाययाति ने पूरुसे ऐसा कहा तो ५३ पूरुने अपनी तारुण्य राजाको दी व उनकी जरावस्था आप ग्रहणकी पिता पुत्रके अवस्था बदलतेही ५४ उसीक्षण राजा युवा होगये व पूरु वृद्धहोगये राजा का रूप ऐसा दिखाई देनेलगा जैसा कि सोलहवर्ष के अतिस्वरूपवान् पुरुषका होताहै ५५ बड़ेरूपसे युक्त हो राजा मानो दूसरे कामदेवही गये धनुष व सब पृथ्वीका राज्य छत्र पंखा सब आसन गज ५६

कोश देश सबसेना चामर रथ जो पदार्थथे सब महात्मा पूरुको राजा ने देदिये ५७ व उन धर्म्मात्मा राजाने कामासक्तहोकर उसस्त्री की चिन्तना की व उसी स्वच्छ जलवाले काम नाम तड़ागपर राजा ययातिजी गये ५८ जहां कि वह अश्रुबिन्दुमती नामस्त्री थी व उस विशालनयनी चारुपीन कुचवाली मनोहर स्त्रीको देख ५९ कामसे अतिव्याकुल मन होकर राजा विशाला से बोले कि हे महाभागे ! हे चारुलोचने विशाले ! जराको त्यागकरके व तारुण्यको ग्रहणकरके हम आगये अब हम तरुण होकर आये हैं इससे तुम्हारी यह सखी हमकोभजै ६० । ६१ व जो जो यह चाहती हो वह वह देंगे इसमें संशय नहीं है यह सुनकर विशाला बोली कि जब अब आप दुष्ट जराका परित्याग करके आये ६२ तो एक दोषसे औरभी लिप्तहोने से यह आपको अपना पति नहीं बनाना चाहती यह सुनकर राजा बोले कि जो निश्चय से हमारा दोष तुम जानती हो तो कहो ६३ उस गुणरूप दोषको हम अभी छोड़देंगे इसमें संशय नहींहै ६४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता पितृतीर्थवर्णनेययातिचरितेऽष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

## उनासीवां अध्याय ॥

दो० ऊनासी अध्याय महँ मदनसुता अरु भूप ॥
क्रीड़ाकरि हयमेधमख कीन गमन सुनि चूप १

राजाके वचन सुनकर विशालाबोली कि हे महाराज ! जिस आप के शर्म्मिष्ठा व श्रेष्ठमुखवाली देवयानी नाम दोस्त्रियां विद्यमान हैं वहां अन्यस्त्रीका सौभाग्य भूतलपर कैसे होसक्ता है १ हे महाभाग ! तिससे कैसे आप इसकेकार्य्यवशहोंगे आप सापत्नभावसेयुक्त पति हैं २ हे महाराज ! जैसे सर्प्पसहित चन्दनका वृक्ष भूतलपर होता है ३ ऐसेही आपभी सौतियों से वेष्टित हैं क्योंकि सपत्नियां भी सर्प्प हीके समान होती हैं ॥

दो० अनल प्रवेश सुवर शिखर पतन श्रेष्ठ नहिं शङ्क ॥
प्रबलसौति सँग नहिं भलो लहत अनेक कलङ्क ४

ये सब श्रेष्ठहैं परन्तु सपत्नीयुक्त पति अच्छा नहीं बस यद्यपि आप रूपतेजयुक्तहैं पर सौतिसहितहैं सौतिरूप विषयुक्त ५ प्रिय कान्तवर को गुणसागरको अपना पति बनाना नहीं चाहती यह सुन राजा बोले कि न अब हमारा देवयानी से कुछ प्रयोजन है न शर्मिष्ठाही से ६ इस अर्थमें सत्यधर्म्म समन्वित हमाराकोश देखो तब अश्रुबिन्दुमती बोली कि हम राज्य भोगकरने की इच्छा नहीं करतीं केवल तुम्हारे शरीरसे हमारा प्रयोजनहै ७ जोजो हम कहेंगी सो सो तुमको निश्चय करनाहोगा बस इस अर्थके लिये हे धर्म्मवत्सल! अपना हाथ हमको दीजिये ८ जो कि बहुत धर्म्मों से युक्त व चारु लक्षण सहितहै राजा ययाति बोले कि हे वरवर्णिनि! हम प्रतिज्ञाकरते हैं कि आजसे तुमको छोड़ अन्य स्त्रीको अपनी भार्य्या न बनावेंगे व हमारा राज्य सब पृथ्वी शरीर और खजाना भोगो यह हाथ तुमको दियाहै ९। १० व जो अन्यभी किसी कार्य्यके लिये कहोगी सब हम करेंगे अश्रुबिन्दुमती फिर बोली कि हे महाराज! इसपर तो हम तुम्हारी भार्य्याहोंगी ११ यह सुनकर राजा हर्षसे व्याकुल नेत्रहुये व राजा ययातिजीने गान्धर्व्व विवाहकी रीतिसे १२ उस कामकन्या के साथ अपना विवाह करलिया व वे महात्मा राजा उसके साथ क्रीड़ा करनेलगे १३ समुद्र के किनारोंपर वनों में व उपवनों में सुन्दर पर्व्वतों पर नदियों के तटोंपर १४ उसके संग यथेष्ट भोगविलास करनेलगे क्योंकि तारुण्य तो प्राप्तही होचुकीथी उसके संग भोग करते राजाको बीस सहस्रवर्ष बीतगये १५ व बराबर महात्मा राजाययाति रमतेरहे श्रीविष्णु भगवान् राजा वेनसे बोले कि इस प्रकार महाराज ययाति उस स्त्री से मोहितहुये १६ इस विषय में इन्द्रके अर्थ कामदेवहीका सब प्रपंचथा जिससे राजेन्द्र मोहित होगये सुकर्म्माजी पिप्पलसे बोले कि हे पिप्पल! पृथिवीपति राजा ययाति १७ उसके मोहसे कामसे व ललित सुरतादि से ऐसे मोहितहुये कि कामकन्या के वशीभूत होकर अब उनको यही नहीं विदित होताथा कि दिनहै कि रात्रि है बनाय उसीमें लीनही होगये १८ तब एक समय सुन्दर नेत्रवाली अश्रुबिन्दुमती मोहित नव वश में प्राप्त राजाययाति से बोली १९

के हे कान्त ! हमारे गर्भहै तिससे हमारा मनोरथ करो एक अश्व-
मेध यज्ञकरो २० राजा बोले कि बहुत अच्छा ऐसाही होगा हम
तुम्हारा प्रिय करेंगे इतना कहकर राजाने अपने पूरु श्रेष्ठ पुत्र को
बुलाया जो राज्य भोग में वाञ्छा नहीं करताथा २१ जैसेही महा-
राजने बुलाया कि भक्तिसे शिर झुँकातेहुये पूरु आये व दोनों हाथ
जोड़कर राजाके प्रणाम किया २२ फिर भक्तिसे माथ नवाकर उस
अश्रुबिन्दुमती के भी चरणों के प्रणाम किया व बोले कि हे राजन् !
आज्ञा दीजिये आपके बुलाने से हम आये २३ हे महाभाग ! अब
क्याकरें आपके दास और नम्रहैं राजा ययातिजी बोले कि हे पुत्र !
अश्वमेध यज्ञ की सब सामग्री इकट्ठीकरो २४ ब्राह्मणोत्तमोंको बुला-
कर ऋत्विक् बनाओ व सब पृथ्वीमण्डल के खण्ड मण्डलेश्वर
राजाओं को बुलाओ यह सुनकर महातेजस्वी परमधार्मिक पूरुजी ने
२५ जैसा उनके महात्मा पिताने कहा वैसेही सब यज्ञकी सामग्री
इकट्ठी की व उस कामकन्या के सङ्ग ग्रन्थिबन्धनकर महाराज यया-
तिजी यज्ञ करने के लिये दीक्षितहुये २६ व अश्वमेध यज्ञ किया
उसमें अनेक दान महाराज ने दिये व ब्राह्मणों को तो बहुत अनन्त
दान दिया २७ व अन्य दीन लोगों को भी विशेषकर दान पृथ्वी-
पतिने दिये व यज्ञके अन्तमें महाराज उस श्रेष्ठमुखी प्राणप्रिया से
बोले २८ कि हे बाले ! अब और तुम्हारा प्रिय क्याकरें सो कहो वह
सब हम करेंगे चाहे साध्यहो वा असाध्य २९ सुकर्म्माजी पिप्पल
से बोले कि जब राजाने ऐसा कहा तो वह महीपाल से बोली कि हे
महाराज ! हे पापरहित ! हमारे गर्भहै हमारी यह इच्छाहै उसे आप
पूरणकरें ३० प्रथम इन्द्रलोक को चलें फिर ब्रह्मलोक को तदनन्तर
शिवलोक को चलें फिर हे महाराज ! वहांसे श्रीविष्णु लोकको चलें
हमारे यह सब देखनेकी बड़ीभारी अभिलाषाहै ३१ हे महाभाग ! जो
हम तुमको अति प्रियहों तो हमको सब दिखाओ जब राजासे उस
ने ऐसा कहा तो उस अतिप्रिया से राजा बोले ३२ कि हे वरारोहे !
बहुत अच्छा बड़े पुण्यकी बात कहतीहो पर स्त्री के स्वभाव से चप-
लता व कौतुक से ऐसा कहतीहो ३३ क्योंकि यह तुम्हारा कहाहुआ

कार्य्य सर्व्वथा हम से तुम से दोनों से असाध्यहै वह पुण्यदान व
तपस्यासे साध्यहै ३४ अन्यथा साध्य तुम्हारा कहाहुआ नहीं है तु
ने जो पुण्य मिश्रित कहा वह असाध्यहै ३५ मनुष्यलोक से इ
शरीरसे पुण्यकर्त्ता मनुष्य स्वर्गको गयाहुआ न सुना न अब त
देखा ३६ हे वरारोहे ! जो तुमने कहा वह असाध्यहै हे प्रिये! औ
करेंगे जो तुमको प्रियहो सो कहो ३७ ॥

चौ० अश्रुबिन्दुमतियहसुनिबोली । वचनपरमप्रियअतिहिअमोली॥
सत्य सत्य हम कहत महीपा । सब तव साध्यअहै कुलदीपा॥
तप व्रत दान यज्ञ शुभ कर्म्मा । क्षत्रियवरके अपर सुधर्म्मा॥
सब तुम महँ नहिं तुम्हें समाना । मर्त्यलोक महँ आन महाना॥
तेज क्षात्र बल सब तुम माहीं । भूप प्रतिष्ठित संशय नाहीं॥
तासों ममप्रिय यह नृपकरहू । वचन विचारि हृदयमहँ धरहू ३८॥४०॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमाता पितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

## असीवां अध्याय ॥

दो० असी के अध्याय महँ नूतन सौतिहि देखि ॥
देवयानि शर्म्मिष्ठ मिलि तासुसङ्ग विद्वेखि १

पिप्पल मुनि ने सुकर्म्मा से पूँछा कि हे द्विजोत्तम ! जब काम
कन्या अश्रुविन्दुमती को राजा ययातिजीने व्याहलिया तो उन
प्रथमकी दोनों पुण्यवती भार्य्याओं ने क्या किया १ महाभाग्यवती
शुक्राचार्य्य की कन्या देवयानी व वृषपर्व्वा दैत्यराजकी कन्या श
र्म्मिष्ठा उनदोनोंका चरित हमारे आगेकहो २ सुकर्म्मा बोले कि जब
राजाययाति कामकन्याको व्याह करके अपने गृहकोलाये तो उसके
साथ मनस्विनी देवयानी बड़ी स्पर्द्धा करनेलगी ३ तिसीके लिये दो
पुत्र उसके शापितहुये तब क्रोधसे आकुल आत्मा होकर यशस्विनी
देवयानी ने शर्मिष्ठाको अपने पास बुलाकर उनसे बोली ४ बल रूप तेज
दान पुण्य सत्य पुण्यव्रतों से शर्म्मिष्ठा व देवयानी दोनों एकहोकर
कामकन्याके साथ वैरभावकरनेलगीं ५ जब दोनोंका दुष्टभाव काम-

कन्याने जाना तो राजासे उसने उसीक्षण सब कहा ६ तब महाराजने क्रोधकरके देवयानी के पुत्र यदुको बुलाया व कहा कि शर्म्मिष्ठाको अभी मारडालो व शुक्रकीपुत्री देवयानीको भी ७ पुत्र यह हमारा प्रियकरो जो कल्याण चाहतेहो पिताकी ऐसी बातसुनकर यदु ८ राजासे बोले कि हे तात! दोषवर्ज्जित अपनी इनदोनों माताओं का हम न वध करेंगे ९ क्योंकि माताके वधमें वेदवादी पण्डितों ने बड़ा दोष कहाहै इससे हे महाराज! हम इनदोनों का वध न करेंगे १० हे महाराज! चाहे माता हज़ारों दोषोंसे युक्तहो ऐसेही बहिन कन्या इन को ११ पुत्र व भाई कभी नहीं मारते ऐसा जानकर महाराज इन दोनों माताओंको हम नहीं मारते १२ यदुकी बात सुनकर क्रुद्धहो राजा बोले व पीछे से ययाति राजाने शापभी दिया १३ कि जिससे हे पाप! तुमने हमारी आज्ञा आज नहीं की इससे हमारे शापसे मलिन हो तुम जाकर अपने मामाकी सेवाकरो १४ इसप्रकार यदु अपने पुत्रको शापदेकर राजाययाति पुत्रके शाप देने केपीछे अपनी उस नवीन स्त्रीके संग १५ फिर क्रीड़ा करनेलगे सुखसे भोग विलासभी किया करें व विष्णु भगवान्‌जी के ध्यानमें तत्परभी रहाकरें ॥

चौ० अश्रुबिंदुमतिविपुलसुलोचनि।पतिसँगरमतकरतनहिंशोचनि ॥
चारुसर्व्व तनु विमल विलासिनि । नृपसँग भोगे भोग सुवासिनि ॥
इमि महान बलवान ययाती । भोगत भोग न गनु दिनराती ॥
अक्षय अमर जरा नहिं काऊ । सकल प्रजा इमि सुखी सुभाऊ ॥
विष्णुध्यानरत सब नरनारी । भजनपरायण राज्यकरारी ॥
नृपतपसोंसबप्रजासुखारी । प्रमुदितरहतलहतहितभारी १६।१९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने मातापितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेऽशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

## इक्यासीवां अध्याय ॥

दो० रतितनया नृपसों कह्यो बहुत इक्यासी माहिं ॥
स्वर्ग्ग चलन कहँ कालगति भूपकही शक नाहिं १

सुकर्म्माजी पिप्पलसे बोले कि दान पुण्यादियुक्त महात्मा यया-

ति का विक्रम देखकर महाप्राज्ञ इन्द्रजी सदा भयभीत रहते थे इस लिये उन्हों ने मेनका नाम अप्सरा को दूतता करने के लिये भेजा व कहा कि हे महाभागे! जाकर हमारा सन्देश कहो २ कामकन्या से ऐसा कहना कि इन्द्रने यह कहाहै कि किसी उपाय से अब राजाको तुम यहां लाओ ३ यह सुनकर इन्द्रकी भेजीहुई मेनका वहां गई व इन्द्रके कहेहुये सब वचन उससे कहे ४ इतना कहकर काम कन्याके कहनेसे मेनका तो चलीगई व मेनका के चलेजाने पर मनस्विनी रतिकी पुत्री ५ यशस्विनी राजासे धर्म्म संकेत वचन बोली कि हे राजन्! तुम सत्य वचनकी प्रतिज्ञा करके हमको पहले यहां लाये ६ व अपना हाथ हमको पकड़ाकर अङ्गीकार किया व घरमें लाये हमने कहा था कि राजन् जो २ हम कहेंगी वह तुमको करना होगा ७ सो हे वीर! तुमने हमारा कहा नहीं माना इससे अब तुमको छोड़कर हम अपने पिताके मन्दिरको चलीजायँगी ८ यह सुन राजा बोले कि हां हे देवि! जो तुमने कहा वह हमने नहीं किया इसमें सन्देह नहीं है अब असाध्यको छोड़ कोई साध्य कार्य्य कहो देखो कैसे करते हैं ९ अश्रुबिन्दुमती बोली कि इसी लिये हमने सब लक्षण सम्पन्न स धर्म्मसमन्वित आप ऐसे भर्त्ताको ग्रहण किया है १० यही जाना कि आप सब कुछ करसक्ते हैं ऐसा कोई कार्य्य नहीं है जिसे आप न करसकेंगे क्योंकि सब धर्म्मों के कर्त्ता व पुण्यकर्म्मों के स्रष्टा ११ तीनोंलोकों के साधक जानाथा क्योंकि तीनोंलोकों में आपके समान कोई नहींहै व तुमको सब वैष्णवों में अतिश्रेष्ठ विष्णुभक्त हम जानती हैं १२ इसी आशासे हमने आपको पूर्व्वकालमें भर्त्ता बनाया था कि जिसके ऊपर विष्णुभगवान्‌का प्रसाद होताहै वह सर्व्वत्र जासक्ता है १३ हे राजेन्द्र! चराचर इन तीनों लोकों में उसको कुछ दुर्लभ नहींहै इससे हे सुव्रत! आपकी गति सब लोकोंमें है १४ विष्णुजी के प्रसाद से आकाश में जानेकी उत्तमगति आपमें है क्योंकि हम मर्त्यलोकमें आकर तुम्हींको १५ ऐसी सामर्थ्य है कि हे वसुधाधिप! सब प्रजाओंको जरापलित से हीन करदियाहै राज्यभरमें कोई दुःख होनेही नहीं पाता और मृत्युहीन मनुष्य किये हैं हे महाराज! सब

मनुष्योंके गृहोंके द्वारोंपर १६ अनेक कल्पवृक्षके पेड़ तुम्हींने लगवा दियेहैं व हे महाराज! जिन तुमने मनुष्योंके गृहोंमें कामधेनु लेकर १७ एक २ सबके यहां बँधवादी हैं कि सदाके लिये स्थिरहैं उन सब मनुष्यों को तुमने सब कामोंसे सुखी करदियाहै १८ कुलीनोंके एक२ गृहमें सहस्रों मनुष्य दिखाई देते हैं ऐसी वंशकीवृद्धि मनुष्यों की तुमने कीहै १९ यमराज और इन्द्रके विरोधसे इस मृत्युलोकको तुमने व्याधि व पापसे विहीन करदियाहै २० अपने तेजके अहंकार से भूतलको स्वर्ग के तुल्य करलिया है व सबको अपना प्रभाव तुमने ऐसा दिखाया है कि महाराज तुम्हारे समान भूतलपर कोई भी नहींहै २१ व न पूर्व्वकाल में भी ऐसा हुआहै न अब और कोई होगा हम आपको जानती हैं कि आप सब धर्म्मों के प्रकाश करने वालेहैं २२ इससे हमने आपको भर्त्ता बनायाहै सो हमारे आगे आप ऐसा कहतेहैं कि हम इन्द्रलोकादिको जायही नहींसके हम तो जानती हैं कि हमारे आगे यह बात आपने हास्य करनेके लिये कहदी अब सत्य २ कहिये २३ यदि तुम्हारे सत्य व धर्म्महै तो हे महाराज! देवलोकों के जानेमें और आकाशके जानेमें हमारी उत्तमगति नहीं है २४ सो अब सत्य वचनको छोड़कर जो तुम स्वर्ग नहीं चलोगे तो तुम्हारे वचन कूटहोंगे इसमें सन्देह नहीं है २५ जो पूर्व्व समय में सुकृत तुमने कियाहै सब भस्मीभूत होजायगा इतना सुन राजा ययाति बोले कि हे भद्रे! तुमने सत्य कहा हमको साध्य असाध्य कुछ भी नहींहै २६ श्रीनारायण स्वामीके प्रसाद से तीनों लोकों में हमको सब साध्यही है स्वर्ग्ग नजाने में तुम कारण हमसे सुनो २७ जब हम स्वर्गको जायँगे तो फिर देवगण हमको मर्त्यलोकको न आने देंगे तब फिर हे वरानने! हमारे सब मनुष्य प्रजालोग २८ हमारे न होने से मृत्युयुक्त होजायँगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है इसीसे हम स्वर्ग्गको जाना नहीं चाहते यह हमने सत्य २ तुमसे कहा २९ यह सुन अश्रुबिन्दुमती देवीबोली कि हे महाराज! सब लोकोंको देखकर फिर हम व आप संगही संगचले आवेंगे हमको इस विषय में बड़ी श्रद्धाहै सो इसको पूरण कीजिये ३० राजाययाति बोले कि अच्छा

तुमने जो कहा सब ऐसाही करेंगे इसमें कुछभी संशय नहींहै महा-
तेजस्वी भी महाराज ययातिने ३१ स्त्रीसे ऐसाकहकर चिन्तना करने
लगे कि मत्स्य जलके भीतर रहते हैं पर वेभी जाल में बँधजाते हैं
३२ पवन के समान वेगवाला भी मृग बागुरा में बँधजाताहै सहस्र
योजनमें स्थित मांसको पक्षी देखताहै ३३ पर दैवसे मोहित कंठमें
लगीहुई फँसरी को नहीं देखता कालही सम व कालही विषम का-
लही सम्मान कराताहै कालही हानिदेताहै ३४ व कालही अनादर
कराताहै व वह जहाँ कहीं विद्यमान रहताहै पुरुषको दाता और
वही दीन करडालताहै ३५ जितने स्थावर जंगमप्राणीहैं चाहे स्व-
र्ग में हों वा भूतलपरहों सबकहीं काल पहुँचताहै व कोईभी उसको
रोक नहीं सक्ता वह सब को समय पर ग्रासकरजाताहै ३६ काल
आदि और नाशरहित धाता जगत् का पर कारणहै वह काल म-
नुष्यों को पचाता है जैसे वृक्ष में आहित फलहै ३७ न मंत्र न तप
न दान न मित्र न बान्धव कालसे पीड़ित पुरुषकी रक्षाकरसक्तेहैं३८
ये तीन कालके कियेहुये पाश होते हैं किसीके मिटाये नहीं मिटते
एक विवाह दूसरा जन्म तीसरा मरण जब जहां जिसके संग होने
को होताहै होहीजाता है ३९ जैसे मेघ आकाश में पवनके वशी-
भूत जहां तहां भ्रमण करते हैं वैसेही यह जगत् कर्म्मयुक्त कालसे
भ्रमण करायाजाताहै ४० सुकर्म्मा पिप्पलसे बोले कि कर्म्मयुक्त इस
कालकी उपासना सब मनुष्य किया करते हैं काल कर्म्मको प्रेरित
किया करता है उसको काल नहीं करता है ४१ उपद्रव घातकदोष
सर्प्पव्याधि ये सब कर्म्म की प्रेरणा से मनुष्य के ऊपर कालपाकर
आजाते हैं ४२ पुण्यसे युक्त जितने उपाय सुखकेलिये कियेजाते हैं
वे सब कर्म्म से युक्त रहते शुभ वा अशुभ दिखाई देते हैं यह नहीं
कि सुखकेलिये किये जायँ तो उनसे सुखही हो ४३ कर्म्महीं के अ-
नुसार भाग मिलता है व कर्म्महीं के अनुसार बान्धव मिलते हैं व
कर्म्महीं पुरुषको सुख दुःखकी प्रेरणा करता है ४४ सुवर्ण वा चांदी
जैसे गलाकर बनाने से एक रूपका भूषण बनजाता है वैसेही प्राणी।
अपने कर्म्मके वशीभूत होकर बँधकर एकरूप दिखाई देता है ४५

आयु कर्म्म धन विद्या व मरण ये पांच जब प्राणी गर्भमें रहता है तभी उत्पन्न कियेजाते हैं ४६ जैसे मिट्टीका पिण्डलेकर कुम्हार जो २ चाहता है सो २ बनालेता है इसीप्रकार पूर्वके किये कर्म कर्त्ताको प्राप्तहोते हैं ४७ देवत्व मनुष्यत्व पशुत्व वा पक्षित्व तिर्यक्त्व स्थावरत्व सब अपने कर्म्मों से मिलते हैं ४८ जो जिसने कर रक्खाहै वही उसको भोगताहै जैसे अपनाही किया दुःख व अपनाही किया सुख सब कोई भोगता है ४९ गर्भही से जिसकी जैसी शक्तिहोती है उसीके अनुसार पूर्व्वदेह कृत सुखादि सब भोगते हैं पृथ्वीमें कोई मनुष्य अपने कर्म नहीं छोड़ते हैं ५० कोई भी बलसे वा बुद्धि से उसके विपरीत करने में समर्थ नहीं होसक्ता अपने कियेहुयेही दुःख वा सुख सब भोगते हैं ५१ व कारणही पाकर मनुष्य नित्य कर्मबन्धोंसे बँधता है कि जैसे सहस्रों धेनुओंकेबीचमें खड़ीहुई अपनीही माताको बछड़ा पहिचानलेताहै ५२ ऐसेही शुभ वा अशुभ कर्म्म करनेवाले के पीछे २ चलताहै विना भोग किये कर्म्म का नाश नहीं होसक्ता ५३ इस पूर्व्वजन्म के कियेहुये कर्म्म के विपरीत कोई नहीं करसक्ता अतिशीघ्रताके साथ दौड़ते हुये पुरुषके पीछे २ वह भी दौड़ताहै ५४ व सोतेहुये के साथ सोताहै जैसा कर्म्म पूर्व्व में किया है वैसाही उसके पीछे लगा फिरताहै बैठेहुये के समीप बैठजाताहै व चलतेहुये के पीछे २ चलताहै ५५ कुछ करतेहुये के संग करता है इसप्रकार छाया के समान संगही कर्म्म रहता है जैसे छाया व घाम से नित्य सम्बन्ध रहता है ५६ ऐसेही कर्म्म व कर्त्ता का परस्पर सम्बन्ध रहताहै ग्रह रोग विष सर्प्प शाकिनी राक्षस ५७ ये मनुष्य को पीछे से पीड़ित करते हैं जब कि प्रथम कर्म्म से पीड़ित होलेता है जिसको जहां पर सुख वा दुःख भोगना होताहै ५८ उस को मानो रस्सी से बांधकर जबर्दस्ती भाग्य वहां पहुँचा देताहै इस से प्राणियों के दुःख वा सुख के उत्पन्न करनेवाला भाग्यही प्रभुहै ५९ क्योंकि अपने मनसे प्राणी कुछ और विचारताहै चाहे जागता हो वा सोताहो पर भाग्य उसके विपरीत वध करता वा बन्धनमें डालदेताहै चिन्तित कार्य्य नहीं होने देता ६० जिसकी रक्षा किया

चाहता है शस्त्र अग्नि विष दुर्गम स्थानों से बचालेताहै चाहे वह अरक्षितभीहो पर दैव रक्षा करलेताहै ६१ व जिसको दैव अर्थात् भाग्य नाशताहै उसकी रक्षा नहीं दिखाई देती जैसे पृथ्वी में वीर्य्य अन्न व धन रहते हैं ६२ ऐसेही शरीरमें कर्म्म रहते हैं व उत्पन्न भी होते हैं जैसे तेल न रहने से दीपक बुझजाताहै ६३ ऐसेही कर्म्मक्षय होजानेपर प्राणी नाशको प्राप्त होजाताहै व कर्म क्षय होनेहीपर तत्त्व ज्ञानी लोग मृत्युका होना भी कहते हैं ६४ प्राणी के रोगादि बहुतसे मृत्युके हेतु होते हैं राजा ययातिने कहा कि ऐसेही यह हमारे पूर्व कर्म्म का विपाकहै अन्यथा नहीं है ६५ कि स्त्री रूप होकर मृत्युका कारण हुआ है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है कहां से हमारे गृहमें एक नाचनेवाली नटी व बहुत से नट आगये थे ६६ जिनके प्रसंगमें जरा हमारे शरीर में प्रवेशकर आई सो उसको भी हम पूर्वजन्मही का कर्म्म समझते हैं नहीं तो काहेको वे आते व काहेको हम उनकी ओर देखते काहे को वृद्धता आती ६७ इससे कर्म्मही को प्रधान मानना चाहिये उपाय निरर्थकहैं देखो पूर्वही काल में देवराजने हमारे बुलाने के लिये उत्तमदूत ६८ भेजाथा सो हमने वैसे उत्तमदूत मातलि का कहा न किया उसी का यह कर्म्मविपाक है जो इससमय दिखाई देताहै ६९ ऐसी चिन्तामें पर राजा बड़े दुःखसे युक्तहुये व कहनेलगे कि यदि इससमय हम इसका वचन प्रीति से सर्वथा नहीं करते ७० तो सत्य व धर्म्म दोनों जाते हैं इसमें कुछभी सन्देह नहीं है इससे अब इसका वचन करनाही है ॥

चौ० जो ममपूर्वजन्म परिपाका। प्रकट्यो सोय सत्य हम आंका॥
दैव दुरतिक्रम नहिं सन्देहा। जो भावी होइहि गत नेहा॥
इमि चिन्तापर भूप ययाती। पुनिसुस्थिर ह्वै गनि गुण पांती॥
क्लेशहरण हरिशरण पहूँचे। करन ध्यान लागे मन ऊँचे॥
नमन ध्यान स्तुति सीतावरकी। कीन्हभली विधि मतिनकुनरकी॥
गयहुशरणत्यहिमनहिमनावा।पाहिरमाप्रियशरणहिआवा॥७१।७२॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेमातापितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेएकाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

# बयासीवां अध्याय ॥

दो० बायासी महँ नृपति निज राज्य पूरुकहँ दीन ॥
राजनीति उपदेश किय बहुविधि भूपप्रवीन १

सुकर्म्माजी पिप्पल से बोले कि परमधार्म्मिकराजा जब इसप्रकार चिन्तना करनेलगे तब श्रेष्ठमुखी वह रतिकी पुत्री बोली १ कि हे महामति भूपाल ! आप किस बातकी चिन्ता कररहे हैं बहुधा स्त्रियां सब चंचल होती हैं इसमें सन्देह नहीं है २ परन्तु हम चंचलता के भावसे आपको चलायमान नहीं करतीं हम अब आपके पासका रहना नहीं चाहतीं ३ जैसे अन्य स्त्रियां लोकमें लोभ व मोहसे लम्पटहोकर चपल भावसे अकर्त्तव्य कार्य्य करने को कहाकरती हैं ४ वैसा हम नहीं कहतीं किन्तु हमारे हृदयमें लोकों के देखनेकी श्रद्धा है व देवताओं के दर्शन मनुष्यों को अत्यन्त दुर्ल्लभहैं ५ हे राजन् ! हम उन्हीं का दर्शन किया चाहती हैं हमसे कहो जिसमें जो कुछ दोष पाप हमारे संगसे हुयेहों देवदर्शन से मिटजायँ ६ आपतो ऐसी चिन्ता करते हैं जैसी कि कोई प्राकृतिकजन करताहै व जैसे कोई महाभय से डराहुआ और मोहके गर्त्त में पड़ाहुआ करताहै ७ हे महाराज ! चिन्ता छोड़ दो तुम स्वर्गको न चलो जिससे तुमको दुःखहो वह हमको कभी न करना चाहिये ८ जब उसने ऐसा कहा तो राजा उस वरांगनासे बोले कि हे देवि ! हमने जो चिन्तन किया है वह इस समय हमसे सुनो ९ हे प्रिये ! हमने आजतक अपना मानभंग कभी नहीं देखा जब हम स्वर्गको चलेजायँगे तो प्रजा दीन होजायगी १० व दुष्टात्मा यमराज रोगोंसे प्रजाको पीड़ित करेगा परन्तु जो हो अब हम तुम्हारे साथ स्वर्गलोक को चलेंगे ११ ऐसा उससे कहकर राजा ने पुत्रों में उत्तम व सर्वधर्म्मज्ञ जरायुक्त महामति पूरु को बुलाया १२ कि हे वत्स ! हे सर्व्वधर्म्मज्ञ ! यहां आवो तुम धर्म्मको अच्छेप्रकार जानतेहो हे धर्मात्मन् ! हमारी आज्ञासे धर्म तुमने पालन कियाहै १३ हे तात ! अब हमारी जरा हमको दो व अपनी तरुणता ग्रहण करो व कोश वाहन सहित व रत्न धन धान्यसमेत

यह हमारा राज्यभोगो हे महाभाग! हमारी दीहुई गांव वन देशसमेत पृथ्वी के सुख अच्छीतरह भोगो १४। १५ हे पापरहित! प्रजाओं का पालन पुण्य सदा करतेरहना दुष्टोंको सदा दण्डदेतेरहना और साधुओं का परिपालन नित्य करना १६ सो हे वत्स! दण्डव पालन दोनों मन्वादि धर्म्मशास्त्रों के अनुसार करना व हे महाभाग! अपने कर्म्म से विधिपूर्व्वक ब्राह्मणों की १७ पूजाकरना व भक्तिसे उनका पालनकरना क्योंकि वे तीनों लोकों में सबसे पूज्य होते हैं पांचयें सातयें दिन कोश देखते रहना १८ व प्रसाद धन भोजनों से सेना का पूजन नित्य करते रहना दूतों को नेत्र बनाये रहना व दान में सदा निरतरहना १९ व मन्त्र नित्य एकान्तमें बैठकर पण्डितोंकेही संगकरना हे पुत्र! अपने आत्माको सदा नियतरखना और शिकार कभी न खेलना २०. स्त्रियों में व कोशमें व सेनामें विश्वास कभी न करना कि ये हमारे वशमें हैं सब पात्रों का व कलों का संग्रह करते रहना २१ व पुण्यात्मा होकर यज्ञों से श्रीविष्णुभगवान् की पूजा सदा करतेरहना प्रजाओं के सब कण्टकों को प्रतिदिन मर्दन करते रहना २२ हे पुत्र! प्रजाओं को सब वाञ्छित सुख सदा देना व उनको अच्छेप्रकार पालते रहना २३ अपनी विवाहिता स्त्रीके संग नित्य भोगकरना परस्त्रीगमन कभी न करना परधन लेने के लिये दुष्टमति कभी न करना २४ हे वत्स! वेदों की व शास्त्रों की चिन्ता सदा सर्व्वदा करते रहना हे वत्स! ऐसा करतेहुये व शस्त्र शास्त्र में सदा निपुणरहना २५ सदैव संतुष्टरहना और अपनी शय्यामें निरत होना गज अश्व व रथ इनपर चढ़नेका अभ्यास सदा रखना २६॥

चौ० इमिसुतकहँअनुशासनदयऊ। आशिषयुत ताकहँकरिलयऊ॥
निज करसों सिंहासन पाहीं। थाप्यो सब धन देशक नाहीं २७
लै निज जरा दई तरुणाई। ताकी ताहि सहित निपुणाई॥
स्वर्ग गमनकी करि मति भूपा। सुस्थिर भयहु भव्यअनुरूपा २८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने मातापितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेद्व्यशीतितमोऽध्यायः८२॥

# तिरासीवां अध्याय ॥

दो० प्रजहि बहुत समझाय नृप रहन कह्यो क्षितिमाहिं ॥
पर सब भूपति संगही गे हरिपुर चितचाहिं १
सुतहि राज्य दै नीति कहि दयितायुत हरिलोक ॥
गे नृप हरिपुर ख्याति कहि तीरासीमँ अशोक २

सुकर्म्माजी पिप्पलसे बोले कि इसके अनन्तर महाराज ययातिजीने अपनी द्वीपोंकी सब प्रजा बुलाई व महाहर्षके साथ उनसे यह वचन कहा कि १ इन्द्रलोक ब्रह्मलोक व शिवलोक देखते हुये सब पापनाशन व प्राणियों को गतिदायक वैष्णवलोकको २ इस अपनी भार्य्या के साथ हम जाते हैं इसमें अब कुछ सन्देह नहीं है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व शूद्र जो सब हमारी प्रजाहो ३ सुख से अपने २ परिवारके साथ यहां निवासकरो अब यह महाभाग पूरु आपलोगों का पालक नियत कियागयाहै ४ इससे अब राज्य में स्थापित धीर यही हैं दुष्टों को दण्ड देता रहेगा जब ऐसा राजा ने कहा तो सब प्रजा भूपति से बोली ५ कि हे नृपोत्तम ! सब वेदों में व पुराणों में सुनाई देताहै कि धर्म्मही परमज्ञानहै पर देखा किसीने नहीं ६ पर हमलोगोंने दशोअंगोंसे युक्त सत्यवल्लभ धर्म्मको देखाहै वह सोमवंश में राजानहुषके गृहमें उत्पन्नहुआहै ७ हाथ पाद मुखादि से युक्तहो सब आचारोंका प्रचार कररहाहै ज्ञान विज्ञानसे सम्पन्न व पुण्योंका महानिधिहै ८ हे महाराज ! गुणोंका आकर व सत्यमें महापण्डित है जिस महाधर्म्म को सत्यवान् महापराक्रमी सदा कियाकरते हैं ९ उस धर्म्मको मनोहर रूप धारण किये हमलोगोंने देखा सो आप हैं सो काम के कर्त्ता ऐसे सत्यवादी आपको १० कर्म्म मन व वचन तीनों से हमलोग कभी नहीं छोड़सक्के इससे जहां आप वहां हम लोग भी क्योंकि हमलोगोंके सुख व पुण्य आपही हैं ११ इससे जो आप नरकमें भी जावें तो हमलोग भी चलें इसमें कुछभी सन्देह हे महाराज ! विना आपके हमलोगों को स्त्रियोंसे क्याहै व क्या भोगों से क्या जीनेसे क्याहै तिससे यहां कारण जीनेसे

हे राजेन्द्र! तुम्हारे साथ हम लोग चलेंगे अन्यथा न होगा १२।१३
इसप्रकार तिन प्रजाओंके वचन सुनकर बड़े हर्षसे युक्त राजा प्रजाओं
से बोले १४ कि सब अच्छे पुण्यकर्ता मनुष्यो! हमारे साथ आओ फिर
राजा उस काम कन्या के साथ रथपर चढ़ा १५ जो रथ कि हंसके
वर्णवाला चन्द्रमा के बिम्बका अनुकरण करनेवाला था चामर और
व्यजन चलरहे हैं व्यथारहित था १६ और तिस पुण्यकारी सुन्दर
बड़े पताका से जैसे देवताओं से देवोंके राजा पुरन्दर शोभित होते
हैं १७ वैसेही ऋषियों वन्दीजनों चारणों और प्रजाओं से स्तुति
कियेगये नहुषके पुत्र ययाति आप शोभित होते हैं १८ सब प्रजालोग
वाहनों पर चढ़ २ कर राजा के समीप आये कोई हाथियों पर कोई
घोड़ोंपर कोई रथोंपर चढ़कर आये व सबोंने स्वर्गजानेकी तैयारी
की १९ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र व वैसेही अन्य अन्त्यज चण्डाला-
दिभी सब विष्णुके ध्यान में परायण वैष्णव मनुष्य चले २० उन
सबोंकी पताका श्वेतरंगकी उनमें सुवर्ण के दण्डलगे सब के सब शंख
चक्रसे अंकित दण्डों की पताका अपने अपने ऊपर लगाये थे २१
इससे प्रजाओं के समूह में सब पवनसे प्रेरित पताका शोभित
होतीथीं व दिव्य तुलसीकी माला सब धारणकिये थे व तुलसीदलों
से शोभित होते थे २२ व सब दिव्य चन्दन के सुगन्ध से युक्त व
दिव्य अरगजादि अनुलेपन अंगों में लगाये दिव्यवस्त्रों से शो-
भित व दिव्य आभरणों से भूषित २३ व सबलोक सुरूप धारण
किये राजाके समीप उपस्थितहुये इसप्रकार सैकड़ों लाखों कोटियों
प्रजायें आकर इकट्ठी हुईं २४ व अर्व्व खर्व्व सहस्र तक सबलोग
आकर प्राप्तहुये व उन महाराज ययातिजीके सङ्ग चलने पर उद्यत
हुये क्योंकि सब लोग चाहे किसी वर्ण के क्यों न हों वैष्णवथे इसमें
सब पुण्यकारी थे २५ विष्णुके ध्यान में सब पर थे व जप दान में
परायणथे सुकर्म्मा पिप्पल से बोले कि इसप्रकार महाहर्षित होकर
सबके सब चलनेपर उद्यतहुये २६ तब आपने पूरु पुत्रको अपने
राज्य पर अभिषेककर महाराज ययातिजी इन्द्रलोकको गये २७ व
उन महात्मा राजाके तेज पुण्य धर्म्म व तपसे वे सब प्रजालोग

उत्तम श्रीविष्णुलोक को चलेगये २८ जब राजा इन्द्रलोकमें पहुँचे
तो सब देव गन्धर्व किन्नर चारण इन्द्र सहित अगुआनी लेने के
लिये राजाके सम्मुख आये २९ व उन नृपोत्तम की पूजा करतेहुये
इन्द्रजी बोले कि हे महाराज ! आप अच्छे प्रकार तो आये हमारे
नगर में प्रवेश करो ३० यहां अब दिव्य पुण्य अपने मनमाने भोग
भोगो व नानाप्रकारके विहार करो तब राजा ययातिजी बोले कि हे
महाप्राज्ञ सहस्राक्ष ! अब हम तुम्हारे दोनों चरणकमलों के ३१ प्र-
णामकरते हैं व ब्रह्मलोकको जाते हैं तब देवताओंसे स्तुति कियेगये
राजा ब्रह्मलोक में पहुँचे ३२ तब महातेजस्वी ब्रह्माजी मुनिवरों के
साथ पाद्य अर्घादि सुन्दर विष्टरोंसे राजाकी आतिथ्य करतेभये ३३
और बोले कि तुम अपने कर्म्म से विष्णुलोक को जावो जब ब्रह्मा ने
ऐसा कहा तो शिवमन्दिर को गये ३४ तब महादेव व पार्व्वती ने उनका
बड़ा आतिथ्य सत्कार किया व पूजाभी बड़ी की और उनसे कहा ३५
कि हे राजेन्द्र ! तुम बड़े कृष्णभक्तहो इससे हमारेभी बड़े प्रियहो अब
हमारेही मन्दिरमें निवासकरो ३६ व सब भोगों को यहां भोगो जो
कि मनुष्योंको बड़े दुःख से प्राप्त होते हैं हे राजेन्द्र ! हममें व श्रीवि-
ष्णुमें कुछ अन्तर नहीं है इसमें कुछ सन्देह नहींहै ३७ जो रूपधारण
किये विष्णुहैं वही शिवहैं इसमें कुछभी संशय नहीं है व हे राजन् !
जो शिवहैं वही सनातन विष्णुहैं ३८ दोनों में कुछ अन्तर नहीं है
इससे ऐसा हम कहते हैं पुण्यात्मा तुम विष्णुजी के भक्तहो इसीसे
तुमको यहां रहने का स्थान बताते हैं ३९ इससे हे पापरहित महा-
राज ! तुम यहां ठहरो जब शिवजी ने ऐसाकहा तो श्रीहरिवल्लभ राजा
ययातिजी ४० भक्तिसे मस्तक झुँकाकर शङ्करजीके प्रणामकर बोले
कि हे महादेवजी ! जो आपने इससमय कहा वह सत्यहै ४१ आप
दोनों में अन्तर नहीं है एकही मूर्त्तिहो दो होगयेहो पर हमको अब
विष्णुलोक जानेकी इच्छाहै इससे तुम्हारे चरणोंके प्रणाम करते हैं ४२
तब महादेवजी ने कहा महाराज बहुत अच्छा वैष्णवलोक को जाइ-
ये जब शिवजीनेभी आज्ञादी तो राजा ययाति वहांसे चले ४३ तब
विष्णुलोकनिवासी महापुण्य विष्णुके वल्लभ वैष्णवलोग राजाके आगे

नृत्य करनेलगे ४४ व पापनाशन शङ्खशब्द व बड़े सिंहनाद लगे व सब चारणलोग कुछ इच्छासे नहीं योंही राजा की पूजा लगे ४५ व बड़े गानविद्यामें चतुर शास्त्रमें निपुण गन्धर्व्वलोग न्दर स्वर से राजाका यश गानेलगे ४६ व ऋषि तथा देववृन्द तियां करनेलगे अतिसुरूपवती अप्सरा महाराज ययाति की सेवा करनेलगीं ४७ गन्धर्व्व किन्नर सिद्ध व चारण पुण्यमङ्गलों राजाकी स्तुति करनेलगे इसीप्रकार साध्य विद्याधर पवन वसु रुद्र आदित्य लोकपाल दिक्पाल तीनोंलोकों के निवासियों कराते हुये राजा ययातिजी ने ४८ जाकर उपमा रहित विष्णुलो को देखा जो कि निरामय व सुवर्ण के विमानों से सर्व्वत्र होरहाथा ५० वह लोक हंस कुन्द व चन्द्रके सम श्वेतरङ्गके विमा से शोभित व सैकड़ों महलों से शोभित मेरु मन्दराचल के ऊँचे धवरहरोंसे उपशोभित ५१ व शिखरों से अपने ऊँचेवाले आ काशको छूतीहुई अट्टालिकाओं से युक्त व अन्यनानाप्रकार के शि खरोंकी चमकसे जाज्वल्यमान होने से कलशों से अतिशोभित ५ जैसे तारागणों से यह आकाश प्रकाशित होता है वैसेही विमा की शोभा से वह लोक प्रकाशित होता बड़ी प्रज्वलित ज्वाला से ऐसा प्रकाशित मानों नेत्रों से सब ओर देखरहाथा ५३ व ना प्रकार के सब रत्नों से व हरिलोक मानों दांतों से हँसरहा था मानों उन नानाप्रकार के दिव्य पदार्थों से विष्णु के वल्लभ वैष्ण को अपने यहां आनेको बुलाता था ५४ व ध्वजाओं के व्याज मानों कहताथा कि तुमलोगों के पाप दूरको उड़ादेंगे पवनके से कम्पित ध्वजाओं से यही विदित होताथा व सुवर्णकी डांड़ी हुये व घण्टा बँधेहुये चामरों से सर्व्वत्र शोभित होरहा था व सू के तेजके समान प्रकाशित गोपुर अट्टालिकादिकों से विराजमान ५५।५६ गवाक्षोंसे व जालमालाओंसे व मनोहर वातायनोंसे अति शोभित बाहर के खात्रां व प्राकार से जोकि सुवर्ण के बनेथे अत्यन्त शोभित ५७ तोरणों से व बड़ी बड़ी पताकाओं से व नानाप्रकार मंगल शब्दों से शब्दायमान होरहाथा व कलशों के ऊपर मणि

कोपर ऐसी युक्तिसे धरेथे कि देखनेवालोंकी दृष्टिमें उनकी चका-
धी लगती थी ५८ सौ कक्षायें ऐसी बनीथीं कि स्थलपर मानों
लसे भरीहुई दिखाती थीं दण्ड व छत्र युक्त सुवर्णके अनेक प्रकार
कलशों से देदीप्यमान होताथा ५९ वर्षाकाल के मेघों के आकार
न्दिर शोभित थे कलशों से शोभित थे जैसे नक्षत्रों से आकाश
भित होताहै ६० दण्ड समूह पताका नक्षत्रों के समूहकी समान
न्तिवाले थे तैसेही स्फटिकमणि के आकार व शङ्ख चन्द्रकी कान्ति
समान नाना धातुमय देव मन्दिरों से उपशोभित था व कोटियों
र्बुदों सर्व्वभोगयुक्त विमानों से वह श्रीहरिलोक शोभित होता
। जिन लोगों ने शंखचक्रगदाधर श्रीरमानिवासजी की आराधना
थीं वा करते हैं ६१।६३ उन धवरहरोंपर व उन हरिपुरके म-
दिरों में भगवान् के प्रसाद से वे लोग निवास करते हैं व सब पुण्य
प दिव्य भोगविलास के पदार्थों से भरेपुरे ६४ मन्दिरों में पुण्य
र्मवाले सब पापरहित वैष्णवलोग निवास करतेथे ऐसे पुण्य गृहों
श्रीविष्णु मन्दिर शोभित होता ६५ व नानाप्रकार के चन्दनादि
ने वृक्षों से समाकीर्ण होने से अत्यन्त शोभित होता वहां जितने
क्षथे सब सब कालोंमें फलेफूले बने रहते उनसे वह हरिपुर अलं-
त होरहाथा ६६ व वापी कूप तड़ाग सारसों से उपशोभित था व
नमें हंस कारण्डव कह्लार कमल ६७ शतपत्र महापत्र पद्म उत्पल
राजित थे आदि पक्षी व कमल विहरते थे तथा सुवर्णसे बनेहुये
समान तालाबों से विराजमान था ६८ इस प्रकार इन सबोंसे व
वताओं के देव श्रीहरिकी पुष्पवाटिकाओं से अलंकृत सब शोभा
युक्तथा अन्य भी दिव्य शोभाओं से समाकीर्ण व वैष्णवों से शो-
ततथा ६९ व देववृन्दोंसे समाकीर्ण मोक्षके उत्तम स्थान ऐसे वैकु-
ण्ठको नहुष के पुत्र राजा ययातिजीने देखा ७० व सब प्रकार के
ापोंसे वर्ज्जित दिव्य श्रीहरिपुरमें राजा ययातिने प्रवेश किया व
र्वक्लेशनाशन अनामय ७१ सब आभरणों से भूषित विमानों के
ध्यमें एक सर्व्वोपरि विमानपर बैठेहुये श्रीनारायणजी के दर्शन
ाजाको हुये ॥

चौ० पीताम्बर धृत जगके नाथा । श्रीवत्साङ्क महाद्युति साथा ॥
वैनतेय कृत वाहन नीके । परसे पर लक्ष्मीपति ठीके ॥
सर्व्वदेव लोकप परमेश्वर । सबकी गति सर्व्वग भुवनेश्वर ॥
परमानन्द रूप गुण सागर । मोक्षदानि शुभखानि रमावर ॥
महापुण्य वैष्णवगण सेवित । सकल लोक पालकन निषेवित ॥
देव वृन्दयुत नुत गन्धर्व्वा । किन्नर चारणादि सुरसर्व्वा ॥
अरु अप्सरा सहस्र निषेवित । रमा निवास रमासों सेवित ॥
क्लेशहारि नारायण जी के । कीन प्रणाम भूप अति ठीके ॥
निज दयिता युत बारहि बारा । कीन प्रणाम महीप उदारा ॥
पुनि भूपति सँग वैष्णव जेते । गयेहते सब मानव तेते ॥
सबन भूप सँग कीन प्रणामा । विनय विधान सहित अभिरामा ॥
पादाम्बुज पहँ प्रणमत देखी । भक्तिसहित गतमान विशेखी ॥
तब श्रीहरि भूपति सों भाषा । नृप सन्तुष्ट काह अभिलाषा ॥
मांगहु वर सब देहहुँ तोहीं । लखहु प्रसन्न महीपति मोहीं ॥
तुम मम भक्त न कछु सन्देहू । यासों करिकै कहत सनेहू ॥
यह सुनि भूपति वचन उचारा । सुनिय कृपालु दयालु उदारा ॥
देव देव जो भयहु प्रसन्ना । मधुसूदन म्वहिं गुनत प्रपन्ना ॥
तो निज चरण दास्य अब दीजै । नाथ कृपाकरि अभय करीजै ॥
श्रीहरि बोले सुनहु महीशा । एवमस्तु लहु भक्ति सुदीशा ॥
महाराज अब मम पुर माहीं । बसहु सदा कछु संशय नाहीं ॥
यह हरिवच सुनि भूप ययाती । प्रमुदित मन करि शीतल छाती ॥
विष्णुप्रसाद पाय त्यहि लोका । बस्यहु तहां सब भाँति अशोका ॥
नित्य विष्णु सँग विहरत नीके । यथा तहां सब वैष्णव टीके ॥
उत्तम हरिपुर विगत विबाधा । तहँ दयितायुत नृप सबसाधा ॥ ७२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेपितृतीर्थवर्णनेययातिचरित्रेस्वर्गारोहणंनामत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

# चौरासीवां अध्याय ॥

दो० चौरासी अध्याय महँ पिता आदि गुरु सेव ॥
पिप्पल सुन्यो सुकर्म सों गयहु स्वर्ग जहँ देव १

सुकर्माजी पिप्पलसे बोले कि दिव्य बहुत पुण्यदायक पुत्रोंको तारनेवाला व पापनाशन यह चरित हमने तुमसे कहा १ जोकि यह ययातिजी का चरित लोकमें प्रसिद्ध है व प्रत्यक्ष में दिखाई देताहै कि पिताकी भक्ति करने से पूरुने तो राज्य पाया व अनुने दुर्गति भोगी २ पितृतीर्थ के प्रभाव से व कोपसे जैसे हुये तैसे फिर कहते हैं यह चरित पुत्रोंको तारनेवाला पुण्य यश बढ़ानेवाला व धनधान्य देनेवाला है ३ यदु और अनु दोनों शापयुक्त भये परन्तु पितृतीर्थ मातृतीर्थके तुल्य नहीं है क्योंकि मातृतीर्थ अधिक अभीष्टफल देता है ४ क्योंकि पिता पुत्रको किसी न किसी इच्छाही के लिये बुलाता है व माता जब कभी क्या बार २ पुत्र २ कहकर बुलाया करती है उसके बुलानेपर जानेसे जो पुत्रको फल होताहै वह हमसे सुनो ५ जब माताके बुलानेपर बड़े हर्षके साथ पुत्र उसके समीप जाता है तो पहुँचतेही गंगास्नान का फल पाताहै ६ जो महायशस्वी माता पिताके पांव धोताहै वह उनके प्रसादसे सब तीर्थके फल भोगताहै ७ जो देह चापता है वह अश्वमेध के फल को प्राप्तहोताहै व जो पुत्र गुरुजी को भोजन व वस्त्रदेता व स्नानकराता है ८ उसको पृथ्वी दान करनेका फल मिलता है क्योंकि जैसे गंगाजी सर्व्वतीर्थमयी हैं ऐसेही माता सर्व्वतीर्थमयी है इसमें सन्देह नहीं है ९ व जैसे लोकमें बहुत पुण्यमय समुद्र हैं ऐसेही मुख्य पिताभी होतेहैं क्योंकि सब पुराने पण्डितोंने यही कहा है १० व जो पुत्र माता वा पिताको दुःख देताहै वह रौरवनरकमें जाताहै इसमें सन्देह नहीं है ११ जो गृहस्थपुत्र अपने वृद्ध माता पिताका पालन पोषण नहीं करता वह गृहस्थपुत्र नरकको जाता और निश्चय कष्टको पाताहै १२ व जो दुर्बुद्धि पापीपुरुष गुरुको दुःख देताहै उसका निस्तार किसी प्रकारसे नहींहोता यह बात सब पुराण व कविलोग कहते हैं १३ सुकर्म

पिप्पलसे बोले कि हे विप्र! ऐसा जानकर भक्तिसे मस्तक झुकाय हम प्रतिदिन अपने पिता माताकी पूजा कियाकरते हैं १४ हमारे गुरु हम को बुलाकर चाहे करने के योग्य कार्य्य करने को कहते हैं वा करने के अयोग्य कहते हैं परन्तु हम बिना विचारेही शक्तिसे तुरन्त उसको करते हैं १५ इसीसे हमको यह गतिदायक परमज्ञान होगयाहै इन्हीं दोनों जनों के प्रसादसे इस संसारमें भूत भविष्य व वर्त्तमान तीनों कालोंकेवृत्तान्त हम जानते हैं १६ गृहस्थपुरुष भूमण्डलमें कहीं स्थित होकर कुछभी कार्य्य करते हैं पर हम यहीं बैठे २ जानजाते हैं मानों सब हमारे आगेही होता है हे पिप्पल! सो पृथ्वीहीपर के वृत्तान्त हम नहीं जानते किन्तु स्वर्ग में १७ सबसे नीचे नागलोग रहते हैं उनकी भी गति यहीं बैठे हुये हम जानते हैं इन्हीं दोनों जनों के प्रसाद से तीनों लोक हमारेवश में हैं १८ इससे हे विद्याधर श्रेष्ठ पिप्पल! अब तुम जाओ व भगवान् को पूजो ॥

चौ० इमिपिप्पलकहँजबहिंप्रबोधा। विप्रसुकर्म्मा बहुविधिशोधा॥
आज्ञा लै प्रणाम करि फेरी। पिप्पल गयहु स्वर्ग नहिं देरी॥
बहुरि सुकर्म्मा निजगुरु सेवा। करन लगे जिमि पूजत देवा॥
जिमि नित पूजत रह्यो सदाहीं। तिमिपुनि करतमुदितमनमाहीं॥
इमि पितृतीर्थ कहा तुमपाहीं। करि विचार कछु संशय नाहीं॥
कहहुवेन अब काह बखानों। वाञ्छितवर्णहुनिजमनमानों१९।२१॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेमातापितृतीर्थमाहात्म्यवर्णनंनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

## पचासीवां अध्याय ॥

दो० पञ्चाशीत्यध्याय महँ दिवोदास तनयाहु ॥
दिव्या देवीके भये इकइस बार विवाहु १

यह सुनकर राजावेन ने श्रीविष्णुभगवान्‌जीसे पूंछा कि हे देव देवेश भगवान्! तुम्हारे प्रसादसे हमने भार्य्यातीर्थ व उत्तम पितृतीर्थसुना १ व हे हृषीकेश! बहुतपुण्यका देनेवाला मातृतीर्थभी तुमने कहा अब प्रसन्नहोकर गुरुतीर्थ हम से कहिये २ श्रीभगवान् बोले

बोले कि हे राजन्! सब पापहरनेवाला शिष्यों के गति का दायक उत्तम गुरुतीर्थ हम तुमसे कहेंगे ३ जो कि शिष्योंके लिये परम पुण्य धर्मरूप सनातन परतीर्थ परज्ञान व प्रत्यक्षफल देनेवालाहै ४ हे राजेन्द्र! जिसके प्रसाद से इस लोकमें व परलोक में भी परमफल शिष्यलोग भोगते हैं परलोकमें सुख व यहां कीर्त्ति पाते हैं ५ व हे राजेन्द्र! जिस महात्मा गुरूके प्रसाद से शिष्यलोग प्रत्यक्ष में सच-राचर तीनोंलोक देखते हैं६ व हे नृपनन्दन! सब लोकोंका व्यवहार व आचार व विज्ञान शिष्य पाताहै व मोक्षको प्राप्त होताहै ७ जैसे सब लोकोंके प्रकाशक सूर्य्य हैं वैसेही शिष्योंका प्रकाशक व उत्तमगति गुरु होताहै ८ हे नृपोत्तम! रात्रिमें चन्द्रमा सर्व्वत्र प्रकाशकरताहै तेज से सब चराचर अधिकारको साधताहै ९ व गृहोंके भीतर में दीपक प्रकाश करताहै व तेजसे सब अन्धकारको नाशताहै १० अज्ञान तमोरूप से अत्यन्त घिरेहुये शिष्यको शिक्षा व ज्ञानके उपदेशों से सदागुरु प्रकाशित करताहै ११ सूर्य्य दिनमें प्रकाश करते हैं व चन्द्र-मा रात्रिमें सदा प्रकाश करते हैं व गृहमें दीपकसे रात्रिमें प्रकाशहोता है व सदैव अन्धकार नाशकहै १२ व रात्रि दिन व गृहान्तरमें शिष्य के सदा प्रकाशक गुरुलोग होते हैं व शिष्योंके सब अज्ञानान्धकार को दूरकरते हैं १३ इससे हे महीपाल! शिष्यों का परमतीर्थ गुरुहै ऐसा जानकर शिष्यको चाहिये कि सदा पूजनकरै १४ क्योंकि गुरु परमपुण्यमय होते हैं इससे शिष्य उनको त्रिविधकर्म्मसे प्रसन्नकरें क्योंकि गुरुओं के प्रसन्न होने में फिर कुछभी दुर्ल्लभ नहीं होता हे विप्र! इसी अर्थ में महात्मा च्यवनजीका एक बहुत पुराना इतिहास सुनाई देताहै जोकि सब पापोंको हरताहै भार्गवकुलमें एक मुनियों में सत्तम च्यवनजी हुये १५ । १६ हे नृपोत्तम! उनको एकसमय बड़ी चिन्ता उत्पन्नहुई कि हम महीतलपर कब ज्ञानसम्पन्न होकर विचरेंगे १७ इस चिन्तासे वे मुनिश्रेष्ठ ज्ञानकी इच्छा किये दिन रात्रि चिन्तनाकरें इसप्रकार चिन्ताकरते २ उन महात्माकी मति हुई कि १८ अब हम अभीष्ट फल देनेवाली तीर्थयात्रा करें गृह खेत आदि भार्या पुत्र धन सब छोड़कर १९ तीर्थ यात्रा के प्रसङ्ग

से पृथ्वीपर विचरने लगे हे नृप ! उन्होंने उलट पुलटकर कई बार
गंगाजी की यात्राकी २० व ऐसेही उन मुनीश्वर ने नर्मदा व
सरस्वती नदीकी यात्रा लोम अनुलोम की रीति से की व गोदावरी
आदि और सब महानदियों की यात्रा तथा समुद्रकी यात्राकी २१
व हे नृपोत्तम ! ऐसेही सब और पुण्यक्षेत्र व पुण्य तीर्थोंकी यात्रा
की व पुण्य देवताओंकी मूर्तियोंके इसी यात्राकेव्याजसे वे मुनि घू-
मते रहे २२ व सब उत्तम उत्तम तीर्थोंकी यात्रा करडाली इससे
उनका शरीर ऐसा निर्मल होगया कि सूर्य्य के तेजके समान प्रकाशित
होनेलगा २३ व च्यवनजी दीप्तिसे प्रकाशितहो पवित्रात्मा होगये
व उस कर्म से अतिदेदीप्यमान होगये घूमते घूमते फिर क्षेत्रों में
उत्तम २४ नर्मदा के दक्षिणतटपर अमरकण्टक नाम स्थान पर
पहुँचे जहां कि सब को गतिदायक महालिंगहैं २५ वहां सिद्धिनाथ
उन महेश्वरजीके नमस्कार पूजन व स्तुतिकर फिर ज्वालेश्वर के
दर्शन करके अमरेश्वरके दर्शन किये २६ फिर ब्रह्मेश कपिलेश व
मार्कण्डेयेश्वर के उत्तम दर्शन किये इस प्रकार यात्राकर ओंकारनाथ
के मुख्यस्थान में आये २७ वहां शीतल व श्रमनाशिनी वटवृक्ष की
छाया में पहुँचे व भृगुवंश में उत्तम च्यवनजी सुखसे उस छाया में
बैठे २८ व वहां उन्होंने पक्षियों का शब्द सुना वह दिव्य भाषा व
दिव्य ज्ञान से युक्तथा २९ वहां बहुत कालसे उस वृक्षपर एक शुक
रहता था कुञ्जल उसका नाम था व धर्मात्मा था चार उसके पुत्र थे
व उसकी भार्य्याभी थी ३० उसके चारपुत्र अपने पिताके आनन्द
करनेवाले थे हे राजेन्द्र ! तुम्हारे आगे उन के नाम कहते हैं ३१
ज्येष्ठका तो उज्ज्वल नाम था व दूसरे का समुज्ज्वल तीसरे का वि-
ज्ज्वल न चौथेका कपिंजल ३२ हे महामते ! इस प्रकार कुञ्जल के चार
पुत्रथे उस पुण्य शुकके वे सब पिता माताके भजनमें परायण थे ३३
व पर्वतों के ऊपर व द्वीपों में यथेष्ट सदा घूमा करते व जब भूख
प्यास लगती तो आप वहां से दिव्य फल खाते व अमृतके समान
स्वादुवाला जलपानकर आते ३४ । ३५ व जो परम उत्तम दिव्य
फल होते वे अपनी माता और पिताके लिये देते उनमें भी जो अच्छे

ारिपक्व व स्वादुयुक्त होते वेही आदरके अर्थ माताको ढूँढ़ २ कर
ताते थे व जो अपनी माताके लिये लाते बड़ी भक्तिभाव से लाते व
उनको उनके माता व पिता खाकर सन्तुष्ट होते तो उन अपने पुत्रों
के साथ बैठकर आनन्द से उस वटवृक्षपर पड़ते ३६ । ३७ व क्रीड़ा
में रत होकर सबके सब विलसित होते व खेल करते व जब सन्ध्या
समय आता तो सब अपने पिता के पास आजाते थे ३८ व
सबेरेजाकर दोपहर के समय अपने पिताके लिये यत्न से भोजन
लाते व सन्ध्यासमय में भी लाया करते सो उस दिन महात्मा ब्राह्मण
च्यवनजीने देखा ३९ तब सब पक्षी भी पिताके सुन्दर खोलखल में
आये व पुत्रोंने अपनी माता व पिता के चरणों में आकर प्रणाम
किया ४० और भोजनके फल माता पिता के आगे धर सब पितासे
बोले पिताने उत्तम पुत्रोंका मानकिया ४१ और माताने कृपाकर
प्रीतिसंयुक्त वचनों से मान किया तब पुत्र माता पिता के ठण्ढी
पखनों की हवा करते भये ४२ फिर दोनों पक्षियोंने पुत्रों का खोल-
खल बनाया और दोनों ने अच्छे पुत्रोंको आशीर्वाद दिया ४३ तब
पुत्रोंने अमृत के समान पुष्ट आहार दिया तो दोनों पक्षियों ने प्रीति
से भोजन किया ४४ और करोड़ तीर्थोंसे उत्पन्न निर्मल जल पिया
अपने स्थान में सुख से संतुष्ट मन होगये ४५ फिर सुन्दर पापना-
शिनी कथा कहते भये श्रीविष्णुभगवान् राजा वेनसे बोले कि तब
उनका पिता कुंजल अपने ज्येष्ठ पुत्र उज्ज्वल से बोला ४६ कि हे
पुत्र ! आज तुम कहांगयेथे व वहां तुमने क्या अपूर्व देखा व पुण्य-
कारी सुना हे पुत्र ! वह हमसे कहो ४७ कुंजल नाम अपने पिताका
वचन सुनकर वह उज्ज्वल भक्तिसे कांधा झुकाकर अपने पितासे
बोला ४८ और मस्तकसे प्रणामकरके मनोरम कथा कहनेलगा कि
हे महाभाग ! मैं तो नित्य प्लक्षद्वीपको जायाकरताहूँ ४९ व बड़े उद्यम
से वहां से आहार लेआता हूँ उस प्लक्षद्वीप में अनेक देश हैं ५० व
बहुत से पर्वत नदियां व वन तड़ागहैं ग्राम व पत्तन पुर नगरादि
बहुतहैं व सब सुप्रजाओं से आनन्दयुक्तहैं ५१ व सदासुखसे सन्तुष्ट
हर्षित लोग वहां बसते हैं सब दान पुण्य जप श्रद्धा भक्तिसे संयुक्त

रहते हैं ५२ उस प्लक्षद्वीप में सत्यधर्म्मपरायण पुण्यमति दिवोदास नाम बड़ाभारी राजा रहता है उस राजाके एक अपत्यरत्न अत्युत्तम कन्या ५३ गुणरूपशीलसे अतिमङ्गलवती है उसका दिव्यादेवी नाम है व रूपमें आजकल उसके तुल्य भूतलपर कोई स्त्री नहीं है ५४ उसको उसके पिताने एक समय देखा तो वह बनाय रूप व तारुण्यसे युक्त होने से सुन्दरमङ्गलवती होचुकीथी ५५ उसको पतिके योग्य देख कर राजा दिवोदासजीने विचारा कि अब तो यह विवाहके बनाने योग्यहुई यह कन्या हम किसको दें व वरभी जो कोई महात्मा होवे उसीको देते ५६ इसप्रकार चिन्तामें तत्पर होकर उन राजोत्तमने रूप देशके राजामहात्मा चित्रसेनको रूपादिक में अपनी कन्याके समान देखकर उनको अपने यहां बुलाया उन महात्माने अपनी कन्या बुद्धिमान् चित्रसेनकोदी ५७।५८ परन्तु हे राजन्! विवाहही के समय किसी कारणसे राजा चित्रसेन मृतक होगये ५९ तब धर्म्मात्माराजा दिवोदासने बड़ी चिन्ताकी ब्राह्मणोंको बुलाकर उनसे पूंछा ६० कि इस हमारी कन्याके विवाहके समय में चित्रसेन स्वर्गको चलेगये तो अब इस कन्याका कैसा कर्म्महोना चाहिये आपलोग हमसे कहें ६१ ब्राह्मण लोग बोले कि हे राजन्! कन्याका विवाह तो वेदविधानसे होहीगया व पति इसका मृतक होगया है कुछ संग नहीं किया ६२ धर्म्मशास्त्र में तो यों दिखाई देताहै कि किसीमहात्मा नसी व्यथा वा व्याधि से युक्तहो वा विवाह करके तुरन्त त्यागकरके पति चलाजाय अथवा संन्यासी होजाय ६३ व केवल विवाहहीमात्र हुआ हो तो वह कन्या विना विवाहिताही समझीजाती है इससे उसका फिर से विवाह करना चाहिये जबतक वह रजस्वला न हो तब तक उस को दूसरे पतिको देना चाहिये ६४ पिता फिर वेदविधि से उसका विवाहकरे इसमें सन्देह नहीं है हे राजन्! धर्म्मशास्त्रविशारदों ने ऐसा कहा है ६५ इससे इसका भी विवाह फिर से करदेना चाहिये ब्राह्मणोंने यह राजासे कहा ब्राह्मणोंकी प्रेरणासे धर्मात्मा दिवोदास ने ६६ कन्या के विवाहके लिये फिर उद्यम किया व दिव्यादेवीको राजा ने फिरदिया ६७ उन महात्मा पुण्यकारी राजाका रूपसेन नाम

था जिनको फिर दिया जैसेही विवाह हुआ कि तुरन्त वह भी राजा मृतक होगया ६८ जब महादेवी दिव्यादेवी का वह भी पति मृतक होगया तो तब राजाने अन्य तीसरे पतिके संग विवाह करदिया वह भी विवाह होतेही मरा यहांतक कि विवाह होतेहीहोते इक्कीस पति उस दिव्यादेवी के मृतकहुये तब वह महाप्रतापी राजा दिवोदास महादुःखीहुआ ६९।७० व अपने मन्त्रियोंको बुलाकर उसने निश्चय किया सबका सम्मतहुआ कि अबकी स्वयंवर करके कन्या दीजाय इस बातको विचारकर ७१ प्लक्षद्वीपके सब राजालोग इकट्ठे किये गये व उनसे कहागया कि धर्म में तत्पर तुमलोग स्वयंवर के लिये बुलायेगयेहो ७२ उसका रूप व गुण सुनकर मृत्युके भेजेहुये सब राजालोग आये व उस स्त्रीको देखकर परस्पर संग्राम करनेलगे कि जिस में सब मूढ़ मारेगये एक भी न बचा ७३ इसप्रकार वहां के महात्मा क्षत्रियों का महानाश हुआ व दिव्यादेवी मारे दुःख से पीड़ित होकर वनमें जाकर ७४ रोदन करनेलगी यद्यपि बड़ी मन-स्विनी थी हे तात ! मैंने यह अपूर्व्व समाचार देखा है ७५ सो हे तात ! इसका कारण हमसे विस्तार सहित कहो ७६ ॥

इति श्रीपाद्म्येमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरु तीर्थेच्यवनोपाख्यानेपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

# छियासीवां अध्याय ॥

दो० छीयासी अध्याय महँ दिव्यादेवी केर ॥
पूर्व जन्म वृत्तान्त जहँ कीन पापके ढेर १

तब कुंजल बोला कि हे वत्स ! उस दिव्यादेवीका पूर्व्व जन्मका कर्म्म हम कहते हैं जो २ पूर्व्वजन्म में उसने कियाहै कहतेहुये हम से सुनो १ पापनाशिनी महापुण्य वाराणसी पुरी है उसमें महाप्राज्ञ सुवीरनामएकपुरुष रहताथा २ वह वैश्यकी जाति में उत्पन्नबहुत धन धान्यसे युक्तथा उसकी महाभाग्यवती भार्य्याका चित्रानाम था ३ वह कुलके आचारको छोड़कर अनाचारही करती थी अपने पति को तो नहीं मानती व स्वच्छंदवृत्ति से वर्तती थी ४ धर्म्म पुण्य से तो वि-

हीन रहती व पापकर्म्म किया करती अपने पतिको नित्य झ
झकती व गालियां दिया करती व बात में कलह किया करती
कि उसे कलह करना बहुतही प्रिय था ५ व नित्य परायेही गृह
रहाकरे व दिनराति परायेघरों में घूमाकरे व प्राणियों में पराये अ
वगुण सदा ढूँढ़ाकरे व महादुष्टा थी ६ साधु की निन्दा सदा कि
करे व सदा अच्छेलोगों को बहुत अकारण हँसाकरे इसके अन
चार बड़े २ पाप जानकर उस महात्मा सुवीर ने निन्दा की ७ औ
उस दुष्टा व्यभिचारिणीका परित्याग करदिया एक अन्य वैश्य
कन्या के संग अपना दूसरा विवाह करलिया व उसके संग वह अ
पने सब कार्य्य करनेलगा ८ सदा धर्म्म आचार पुण्य दान अप
स्त्रीके संग वह धर्म्मात्मा करनेलगा सुवीर की निकाली हुई प्रचण्ड
वह चित्रा अब और पृथ्वीपर जहां पावे भ्रमण कियाकरे ९ घूमते
घूमते२ पापी दुष्ट पुरुषोंकी अत्यन्त संगति उससे हुई अब महा
पिनी उन लोगों की दूती बनकर १० साधुओं के घर भ्रष्ट करने
पतिव्रता स्त्रियों को लोभमें डालकर उन पापियों के पास पहुँचाया
करे ११ ऐसे विश्वास के वचन उन बेचारी छलछिद्ररहित
पतिव्रताओं के पास कह पातिव्रत को भंग कराया करे साधु
की परमभक्त स्त्रियों को भी ले ले कर और लोगों को सौंप दे १
इसप्रकार उस महापापिनी चित्राने सैकड़ों गृह महात्माओं के
करादिये व इसके विशेष वह महादुष्टा सैकड़ों पति पुत्रों से
कराती फिरे १३ व बहुतसे साधुओं के मन उनके समीप बारम्बा
जा जा कर ऐसे बिगाड़े कि वे भी पाप करनेलगें व ऐसी ऐसी
इयां सज्जनों में भी पहुँचते२ वह दुष्टा करादे कि जिनका कुछ
पार नहीं १४ इसप्रकार सैकड़ोंघर नष्ट भ्रष्ट करके व आप महा
भ्रष्ट होकर वह दुराचारिणी मृतकहुई यमराज ने बहुतसे दण्ड
उसको अच्छीरीति से सिखलाया १५ यहांतक कि जितने महा
रौरवादि नरकथे सबों में क्रमसे एकमें से निकालकर दूसरे में
वाया व नानाप्रकार के दण्ड उस दुष्टा चित्राको उन्होंने दिये १
सो कुछ आश्चर्य्यकी बात नहीं है जो जैसा कर्म्म करताहै वह

भोगताही है उसने सैकड़ों गृह उजारडाले उसी पापके अनुसार उसको दण्ड भी दिये १७ व जैसे उसने पूर्व्वजन्म में सैकड़ों भले मानुषोंके घर उजाड़े थे वैसेही दुःखको भोगतीहै १८ विवाह का समय प्राप्तहोने में भाग्यहीन होने से पति मृत्यु को प्राप्त होजाता है १९ जैसे सैकड़ों घर उजाड़े तैसेही सैकड़ों वर मरे इक्कीस विवाहहुये २० जो तुमने हमसे दिव्यादेवीका वृत्तान्त पूँछाथा वह हमने तुमसे कहा बस यही उसके पूर्व्वजन्म का कर्म्म था जिस के कारण ऐसा हुआ २१ यह सुन उज्ज्वल शुक फिर अपने पितासे बोला कि तुमने पूर्व्वजन्मका कियाहुआ दिव्यादेवीका वृत्तान्त हम से कहा हमने जाना कि उसने गृहभंगनाम महाघोर पाप किया २२ परन्तु अब यह बताइये कि प्लक्षद्वीप के महाराज दिवोदासकी कन्या किस पुण्यसे महाकुलको प्राप्तहुई २३ हे तात ! यह हमको बड़ा सन्देहहै इस से हमसे कहो ऐसी महापापिनी राजाकी कन्या कैसे हुई २४ यह सुन कुंजल उसका पिता उससे बोला कि अब चित्राने जो पुण्यकियाथा वह भी सब तुमसे कहते हैं हे उज्ज्वल पुत्र ! सुनो जो पुण्य पूर्व्वजन्म में उसने किया था २५ घूमते घूमते एक महा-प्राज्ञ कोई सिद्ध संन्यासी वहां आगया था वह मैले कुचैले भी कुछ वस्त्र धारण नहीं किये था दण्ड कमण्डलुमात्र उसके पासथा २६ व एक लँगोटीमात्र धारणकिये हाथही उसके पात्रथे व नङ्गधड़ङ्ग ऐसा ही था दैवयोग से आते आते चित्राके घरके द्वारपर पहुँचा २७ वह मौनीथा व सब बालमुँड़ाये रहता अपने आत्मा व इन्द्रियों को भलीभांति जीते था आहार को उसने जीतलिया था इससे निरा-हारही था व सब वेदशास्त्रों के निश्चय अर्थ को जानता था २८ परन्तु कहीं दूरसे आया था इससे बहुतही थकगया था व घाम लगनेसे बहुत व्याकुल होगयाथा व हे पुत्र ! मारे मार्ग के श्रमसे अतिखिद्यमान था इससे बहुतही प्यासा था २९ चित्राके द्वारपर आकर छाया में खड़ाहोगया उस चित्राने भी देखा कि यह कोई महात्मा है व बहुतही इस समय श्रमसे पीड़ित है ३० इससे उस महात्माकी उस चित्राने बड़ी सेवाकी अपने गृह से झट जल-

उसके पैर धोये व बैठने के लिये उत्तम आसन दिया ३१ व कहा कि हे तात ! इस कोमल आसनपर सुख से विराजिये व क्षुधा दूर करने के लिये उत्तम अन्न भोजन कीजिये ३२ और अपनी इच्छा से परितुष्ट शीतल जल पीजिये ऐसा कहकर बैठाकर देवनाओं के समान तिसको पूजकर ३३ अपने हाथों से उसके पैर ऐसे मींजे कि उसका सब मार्ग्ग का श्रम जातारहा पर और उस के कहने से उस महात्मा ने भोजन भी किया व जलपान भी किया ३४ इस प्रकार उसने तत्त्वार्थदर्शी सिद्धको सन्तुष्ट किया व सन्तुष्ट होकर वह सर्वधर्म्मात्मा कुछ काल तक उसके यहां ठहरारहा ३५ व जब उसकी इच्छा हुई तब उठकर वह महायोगी चलागया उस महात्मा महाभाग सिद्धके चलेजाने पर ३६ थोड़ेही दिनों में अपने कर्मों के वश से वह चित्रा मृतकहुई व धर्म्मराज ने बड़े बड़े दण्डदेकर बड़े दुःख उसे दिये ३७ व वह चित्रा बड़े बड़े दुःख देनेवाले बहुत से नरकों में पड़ती रही व सहस्रयुगपर्यंत दुःख उसने भोगे ३८ भोग के अन्त में फिर उसने मनुष्य का जन्मपाया व जो कि पुण्यवानों में श्रेष्ठ उस महासिद्ध की पूजा उसने पूर्वजन्म में की थी ३९ उसी पुण्यका यह फल हुआ कि पुण्यवान् महाराजके घर में उत्पन्न हुई व क्षत्रियों के उत्तम कुलमें महाराज दिवोदासजी की कन्याहुई ४० व दिव्यादेवी ऐसा उसका श्रेष्ठ नाम हुआ उस ने सुन्दर अन्न व मीठा शीतल जल उस महात्मा को बड़ी प्रीति से दिया था ४१ उसी पुण्य का महाफलोदय उस ने भोगा जोकि राजकुमारीहो नाना प्रकार के पदार्थ भोजन किये मीठे अन्न व शीतल जल सदा उसको खाने पीने को मिले ४२ व दिव्यभोग भोगती हुई अपने पिताके मन्दिर में विराजती रही व उसी सिद्धही के प्रसाद से राजकन्या भी हुई ४३ व जो उसने गृहभङ्गरूप महापापकर्म्म किया था उसके प्रभावसे वह दिव्यादेवी सदा विधवाके दुःखभोगतीरही ४४ यह सब हमने दिव्यादेवी का कियाहुआ कर्म्म तुमसे कहा और तुमसे क्याकहें जो पूछनाहो पूछो सब हम तुमसे कहेंगे ४५ तब उज्ज्वल अपने पितासे फिर बोला कि अब हमसे यह कहिये कि हमने उसको रोदन करतीहुई महाकष्ट

से पीड़ित वनमें देखा है सो अब वह बेचारी अकेली वनमेंरोतीहुई इस महादुःख व शोक सन्तापसे कैसे छूटैगी४६।४८ विष्णुजी राजा बोले कहनेलगे कि अपने पुत्रका उत्तम वचन सुन एकक्षणमात्र तक विचारांशकर महाबुद्धिमान् कुंजल फिर अपने पुत्रसे बोला ४९ कि हे महाभाग वत्स ! सुनो हम सत्यहीसत्य कहते हैं हम पापयोनि पक्षीहुये थे तब सब पूर्व्वजन्म के ज्ञान हमको भूलगये थे ५० कुछ भी ज्ञान नहीं रहगयाथा परन्तु इस वृक्षके नीचे बैठेहुये इन महात्मा भृगुवंशी च्यवनके प्रसंग से ५१ व नर्म्मदा नदी के प्रसाद से और श्रीविष्णु महाराजके प्रसाद से हमको फिर ज्ञान हो आया मोक्ष स्थान निश्चित होगया ५२ अब उत्तम मोक्षमार्ग्ग उपदेश को कहते हैं पाप से छूटकर वह ऐसी होगई जैसे अग्नि से सोना होजाता है ५३ अग्नि के संगसे अपने रूपकेसमान शुद्ध होजाताहै हे महाप्राज्ञ! भगवान् के ध्यान से शीघ्रही तिस महात्मा के ५४ जपकरने व होम और व्रत करने से पापियों के पाप नष्ट होजाते हैं व जैसे सिंहके भय से सदा हाथी मदको छोड़देता है ५५ वैसेही श्रीकृष्णभगवान् के नामों के उच्चारण करने से पाप नष्ट होजाते हैं व जैसे गरुड़के तेज से बड़े विकराल नाग विषहीन होजाते हैं ५६ वैसेही ब्रह्महत्यादिक पाप चक्रपाणि के नामके उच्चारणसे नष्टहोते हैं और किसी उपायसे नहीं मिटते ५७ इससे यह चित्रा जब पुण्य श्रीविष्णुभगवान्जी के सौ नाम जपेगी जोकि सब पापोंके नाशकहैं सो भी जो चित्तको स्थिर करके काम क्रोधसे रहित होकर ५८ व सब इन्द्रियों का संयम करके अपने शरीरको रक्षितकरके उनके ध्यानमें प्रतिष्ठित होकर एकीभूत हो व एकाग्रचित्तकरके ५९ जब जपेगी तो उसकी मुक्ति होजायगी और परमज्ञान प्राप्तहोगा इससे उसको चाहिये कि विष्णुजी में अपने चित्तको बनाय लगादे व योगयुक्त होकर विष्णुशतनाम जपे ६० इतना सुन फिर उज्ज्वल बोला कि हे तात ! प्रथम हमसे इस समय परमज्ञान कहो पीछे ध्यान व्रत व पुण्य श्रीविष्णुशतनाम कहो ६१ कुञ्जल बोला कि परमज्ञान कहते हैं जिसे किसीने नहीं देखा इससे हे पुत्र ! मलवर्जित केवल मोक्ष सुनो ६२ सूतजी इसी कथा को

शौनकादिकों से कहने लगे कि हे महामते! जैसे पवनरहित स्थान पर स्थित व वायु से वर्जित दीपक अच्छे प्रकार प्रज्वलित होकर सब अन्धकारको नष्ट करताहै ६३ ऐसेही सब दोषोंसे हीन आत्मा निराश्रय होताहै व निराशहोकर निर्मल रहताहै वह आत्मा न किसी का शत्रुहै न किसी का मित्र ६४ न शोक न हर्ष न लोभ न मत्सर अकेला विषाद हर्षों से सुख और दुःखों से छूटजाताहै ६५ व सब विषयों से इन्द्रियों को वह आत्मा अलग करदेता है तब वह केवल ज्ञान होजाताहै व मोक्षको प्राप्त करदेताहै ६६ जैसे अग्निके कर्मके प्रसङ्गसे दीपक तैलको तब अच्छेप्रकार जलाताहै जबकि हेराजेन्द्र! बत्ती के आधारसे निस्सङ्ग पवनसे रहित होताहै ६७ व तभी तैलको जलाकर शुद्ध कज्जलको दीपक उगिलताहै तब हे महामते! दीपके आगे एक काली रेखा दिखाई देनेलगती है ६८ व अपने तेजसे व टेम तैलको अपने आप खींचती है इसी प्रकार इस शरीररूप मिट्टीके दीपकमें कर्म्मही तैल होताहै उसेभी शुद्ध करनाचाहिये ६९ अर्थात् वह कर्म्म विषयों को प्रत्यक्ष करके कज्जलरूप बनाकर दिखादेताहै व प्रज्वलितहो निर्म्मल होकर अपने आप प्रकाशित होने लगता है ७० वह शरीर क्लेशसंज्ञक क्रोध लोभादिक वायुरूपों से रहित होजाता है तब निश्चय व निस्स्पृहहो तेज आप इस शरीर में चमकने लगताहै ७१ व अपनेही स्थानपर टिकाहुआ अपने तेज से तीनोंलोकों को ऐसा ज्ञानी देखने लगता है केवल ज्ञानरूप यह हमने तुमसे कहा ७२ अब उन श्रीविष्णुभगवान्‌जी का ध्यान कहते हैं वह दो प्रकार का है एक तो केवल ज्ञानरूप ज्ञाननेत्र से दिखाई देताहै ७३ उसे परमार्थपरायण योगयुक्त महात्मालोग नेत्र रहित सबको देखतेहुये देखते हैं ७४ जिस के हाथ पांव नहीं हैं पर सब ओर जाता है स्थावर जंगम सब त्रैलोक्य को ग्रहण करता है ७५ नाक और मुखसे हीनहै पर सूंघता और खाता है जिसके कान नहीं हैं पर सब सुनता है सबका साक्षी संसार का पतिहै ७६ रूप नहीं है पर रूपमें संबद्ध है पंचवर्ग के वशमें प्राप्त सबलोक का प्राण और चराचरों से पूजित है ७७ जिह्वा नहीं है पर सब कहता

है वेद शास्त्रों के पीछे २ चलता है उस के त्वचा नहीं है पर स्पर्श उस का सब कोई करसक्ता है ७८ है वह विरक्त पर सब में आनन्दरूप होकर सदा टिका रहता है पर उसका कुछ आधार नहीं है कि जिसपर वह बैठताहो वह निर्जर ममत्वहीन न्यायी सगुण निर्म्मल अजन्मा ७९ अवश्य पर सबके वश्यात्मा सबकुछ देनेवाला व सब जाननेवालाहै उसका धाता इस संसारमें कोईभी नहीं क्योंकि वह व्यापक होने से सर्व्वमय है ८० इस प्रकार जो उस परमात्मा महात्मा को सर्व्वत्र देखताहै वह अमूर्त अमृतोपम परमस्थानको प्राप्तहोताहै ८१ अब उस महात्मा परमात्माका दूसरा ध्यान कहते हैं जोकि मूर्त्ताकार होने से साकारहै पर जितने साकार होते हैं सब आमययुक्त निराकार होते हैं ८२ व जिसकी वासना से सब अतुल ब्रह्माण्ड वासितहैं व इसीसे उसका वासुदेव नामहै ८३ उस के शरीरका रंग वर्षतेहुये मेघके समान श्यामहै व सूर्य्य के तेज से भी अधिक प्रकाशित रहताहै चतुर्भुजी उसकी मूर्त्तिहै और सब देवदेवोंकाभी ईश्वरहै ८४ उसके दक्षिण हस्त में सुवर्ण व रत्नों से विभूषित शंख रहताहै सूर्य बिम्ब के समान आकारवाले चक्र और कमल स्थितहैं ८५ व महाअसुरों के नाश करनेवाली कौमोदकी नाम गदा बायें हाथ में उसी महात्मा के विराजती है ८६ व अति सुगन्धित महापद्म दूसरे दहिने हाथ में रहताहै वे कमला के प्रिय करनेवाले श्रीविष्णुभगवान् सदा अपने आयुधों से शोभित हुआ करते हैं ८७ गलेमें शंखकेसमान तीनरेखाहैं व उसीकेसमान चढ़ा उताहै मुख गोलहै व कमलपत्रके समान नेत्रहैं इसप्रकार रत्नोंके समान चमकते हुये दांतों से हृषीकेशजी प्रकाशित होतेहैं ८८ व उनके अधर विद्रुमके समान अरुणहैं हे पुत्रक ! श्रीपुण्डरीकाक्षजी अतिमनोहर किरीटसे शोभित रहते हैं ८९ विशाल रूप व महाप्रकाशित व कौस्तुभमणि से केश जनार्दन भगवान् का रूप चमकता है ९० व सूर्य्य के तेजके समान प्रकाशित कुण्डल दोनों कानों में धारण किये शोभित होतेहैं व पुण्य श्रीवत्स के चिह्नसे श्रीहरि सदा राजित होतेहैं ९१ केयूर कंकण गजमुक्ताओं के हार से शोभित जो

मुक्ता नक्षत्रों के समान प्रकाशित होताहै उनसे युक्त दिव्य शरीरसे सदा शोभित होते हैं विजय और जीतनेवालों में श्रेष्ठ १२ श्रीगोविन्दजी पीताम्बर को धारण कियेरहते हैं रत्नों से जटित मुँदरियों से सब हाथोंकी अंगुलियां शोभित होती हैं १३ सब आयुधों से व दिव्य आभरणोंसे श्रीहरि सम्पूर्ण हैं ॥

चौ० वैनतेय आरूढ़ मुरारी । लोक विकर्त्ता जगदुपकारी ॥
त्रिभुवन नहिं त्यहि उपमा योगू । किमि पटतरे मूढ़ यह लोगू ॥
इमि अनन्य मनसों नर जोई । ध्यावत पावत सब सुख सोई ॥
छूटत सकल पापसों प्रानी । हरिपुर जात न मृषा बखानी ॥
यह जगदीश ध्यान हम गावा । उभय भेद सुत तुम्हैं सुनावा ॥
अब सबपाप निवारणकारी । श्रीहरि व्रत भाषत शुभधारी १४।१६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थवर्णनेषडशीतितमोऽध्यायः८६ ॥

## सत्तासीवां अध्याय ॥

दो० सत्तासी अध्याय महँ श्रीहरिकर शतनाम ॥
है सुस्तोत्र विचित्र अरु सो सब भांति ललाम १

कुञ्जल अपने पुत्रसे बोला कि अब श्रीहरिके सब व्रत कहते हैं जिनसे श्रीहरिकी आराधना कीजाती है जया विजया जयन्ती जोकि सब पापोंको नाशती है १ त्रिस्पृशा, वञ्जुली, तिलदग्धा, अपरा, अखण्डा, आचारकन्या, मनोरथा २ ये तो व्रतहुये व एकादशी के तो बहुतसे भेद हैं व अशून्यशयनव्रत व जन्माष्टमी ये दोनों महाव्रतहैं ३ इन महापुण्यकारी व्रतोंके करनेसे ब्रह्महत्यादि पाप प्राणियोंके नष्ट होजाते हैं हम यह सत्य २ कहते हैं इसमें सन्देह नहीं है ४ कुञ्जल बोला कि उन महात्मा श्रीविष्णुजी का पापराशियों के नष्ट करनेवाला स्तोत्र अब तुमसे कहते हैं हेपुत्र ! उस स्तोत्रका विष्णुशतनाम नामहै व सब मनुष्योंको गतिदायकहै ५ उन कृष्णदेवका उत्तम शतनाम अब कहतेहैं हे पुत्रोत्तम! तिसकोसुनो ६ विष्णुशतनामके ऋषि व छन्द सब बताते हैं व हे महाभाग! सब पातकों के शुद्ध करनेवाला देव

भी बताते हैं ७ विष्णुशतनामके ऋषि ब्रह्मा विष्णु देवता अनुष्टुप् छन्दहै ८ सब कामनाकी सिद्धि के लिये सब पापों के नाशके अर्थ में विनियोग है अस्यविष्णोःशतनामस्तोत्रस्य ब्रह्माऋषिर्विष्णुर्देवतानुष्टुप्छन्दस्सर्व्वकामनासम्भृद्ध्यर्थंसर्व्वपापक्षयार्थे विनियोगः ९ नमाम्यहंहृषीकेशं केशवम्मधुसूदनम् ॥ सूदनंसर्व्वदैत्यानान्नारायणमनामयम् १० जयन्तंविजयंकृष्णमनन्तंवामनन्ततः ॥ विष्णुंविश्वेश्वरम्पुण्यंविश्वाधारंसुरार्चितम् ११ अनघन्त्वघहन्तारन्नरसिंहंश्रियःप्रियम् ॥ श्रीपतिं श्रीधरं श्रीदं श्रीनिवासम्महोदयम् १२ श्रीरामम्माधवम्मोक्षं क्षमारूपञ्जनार्दनम् ॥ सर्व्वज्ञंसर्व्ववेत्तारंसर्व्वदंसर्व्वनायकम् १३ हरिम्मुरारिङ्गोविन्दम्पद्मनाभम्प्रजापतिम् ॥ आनन्दञ्ज्ञानसम्पन्नं ज्ञानदञ्ज्ञाननायकम् १४ अच्युतंसबलञ्चन्द्रञ्चक्रपाणिम्परावरम् ॥ युगाधारञ्जगद्योनिम्ब्रह्मरूपम्महेश्वरम् १५ मुकुन्दन्तंसुवैकुण्ठसेकरूपञ्जगत्पतिम् ॥ वासुदेवम्महात्मानम्ब्रह्मण्यम्ब्राह्मणप्रियम् १६ गोप्रियङ्गोहितंयज्ञं यज्ञाङ्गंयज्ञवर्द्धनम् ॥ यज्ञस्यापिसुभोक्तारं वेदवेदाङ्गपारगम् १७ वेदज्ञंवेदरूपन्तं विद्यावासंसुरेश्वरम् ॥ अव्यक्तन्तम्महाहंसंशङ्खपाणिम्पुरातनम् १८ पुरुषम्पुष्कराक्षन्तु वाराहन्धरणीधरम् ॥ प्रद्युम्नंकामपालंच व्यासंव्यालम्महेश्वरम् १९ सर्व्वसौख्यम्महासौख्यम्मोक्षंचपरमेश्वरम् ॥ योगरूपम्महाज्ञानंयोगिनांगतिदम्प्रियम् २० मुरारिंलोकपालंतं पद्महस्तंगदाधरम् ॥ गुहावासंसर्व्ववासम्पुण्यवासम्महाभुजम् २१ वृन्दानाथंबृहत्कायं पावनं पापनाशनम् ॥ गोपीनाथंगोपसखंगोपालंगोगणाश्रयम् २२ परात्मानंपराधीशंकपिलंकार्यमानुषम् ॥ नमामिनिश्चलंनित्यंमनोवाक्कायकर्मभिः २३ नमामिविलयन्नित्यन्नारायणमनामयम् ॥

अर्थात् हृषीकेश १ केशव २ मधुसूदन ३ सर्व्वदैत्यसूदन ४ नारायण ५ अनामय ६ । १० जयन्त ७ विजय ८ कृष्ण ९ अनन्त १० वामन ११ विष्णु १२ विश्वेश्वर १३ पुण्य १४ विश्वाधार १५ सुरार्चित १६ । ११ अनघ १७ अघहन्ता १८ नरसिंह १९ श्रीप्रिय २० श्रीपति २१ श्रीधर २२ श्रीद २३ श्रीनिवास २४ महोदय २५ । १२ श्रीराम २६ माधव २७ मोक्ष २८ क्षमारूप २९ जना-

र्द्दन ३०सर्व्वज्ञ ३१ सर्व्ववेत्ता ३२ सर्व्वद ३३ सर्व्वनायक३४।११
हरि ३५ मुरारि ३६ गोविन्द ३७ पद्मनाभ ३८ प्रजापति ३९
आनन्द ४० ज्ञानसम्पन्न ४१ ज्ञानद ४२ ज्ञाननायक ४३।१४ अ-
च्युत ४४ सबल ४५ चन्द्र ४६ चक्रपाणि ४७ परावर ४८ युगाक्ष
४९ जगद्योनि ५० ब्रह्मरूप ५१ महेश्वर ५२।१५मुकुन्द ५३ वैकुण्ठ
५४ एकरूप ५५ जगत्पति ५६ वासुदेव ५७ महात्मा ५८ ब्रह्मण्य
५९ ब्राह्मणप्रिय ६० । १६ गोप्रिय ६१ गोहित ६२ यज्ञ ६३ य-
ज्ञाङ्ग ६४ यज्ञवर्द्धन ६५ यज्ञभोक्ता ६६ वेदवेदाङ्गपारग ६७।१७
वेदज्ञ ६८ वेदरूप ६९ विद्यावास ७० सुरेश्वर ७१ अव्यक्त ७२म-
हाहंस ७३ शंखपाणि ७४ पुरातन ७५ । १८ पुरुष ७६ पुष्कराक्ष
७७ वाराह ७८ धरणीधर ७९ प्रद्युम्न ८० कामपाल ८१ व्यास ८२
व्याल ८३ महेश्वर ८४। १९ सर्व्वसौख्य ८५ महासौख्य ८६ सि-
द्ध ८७ परमेश्वर ८८ योगरूप ८९ महाज्ञान ९० योगिप्रिय ९१।
२० मुरारि ९२ लोकपाल ९३ पद्महस्त ९४ गदाधर ९५ गुहावास
९६ सर्व्ववास ९७पुण्यावास ९८ महाभुज ९९। २१ वृन्दानाथ
१०० बृहत्काय १०१ पावन १०२ पापनाशन १०३ गोपीनाथ
१०४ गोपसख १०५ गोपाल १०६ गोगणाश्रय १०७। २२ परा-
त्मा १०८ पराधीश १०९ कपिल ११० कार्य्यमानुष १११ निष्क-
ल ११२ नित्य ११३ इनको मन काय कर्मों से नमस्कार करते हैं
२३ इस शतनाम स्तोत्रसे जो कोई पुण्यकर्त्ता श्रीविष्णुजीकी स्थिर
मनसे स्तुति करताहै वह सब लोक छोड़कर पुण्यसे पवित्रहोकर श्रीम-
धुसूदनजीके लोकको जाताहै २४ यह नामोंका सैकड़ा महापुण्य
सब पापोंका शोधक है जो कोई अनन्यमनसे व ध्यानलगाकर इसे
जपता है २५ वह पुण्यात्मा नर नित्य गङ्गास्नान का फल पाता है
इसमें सुस्थिरहो एकाग्रमन से इसे जपै २६ जो मनुष्य इन्द्रियों को
अपने वशमें करके नियम में स्थितहोकर इस स्तोत्र को तीनों का-
लोंमें जपता है उसको अश्वमेध यज्ञका फलहोता है इसमें कुछ स-
न्देह नहीं है २७ व जो कोई एकादशीका व्रत रहकर श्रीमाधवजी
के आगे इस स्तोत्र को पढ़ताहुआ जागरण करता है जिसके पुण्य

को हम कहतेहैं २८ पुण्डरीक यज्ञके फलको मनुष्य पाताहै और तुलसी
जीके समीपमें स्थितहोकर मनसे जो मनुष्य जपताहै २९ वह मनुष्य
वर्षभरमें राजसूय यज्ञके फलको भोगता है शालग्रामकी मूर्त्ति और
द्वारकाकी मूर्त्ति जहांहो ३० दोनोंके समीपमें सुखकी इच्छा करनेवाला
जपकरै तो बहुत सुखको भोगकर अपने समेत कुलको तारदेताहै व
जो कार्त्तिक मासमें प्रातःकाल स्नानकरके मधुसूदनजीकी पूजाकरके
३१ । ३२ यह स्तोत्रपढ़ता है वह परमगतिपाता है ऐसेही जो माघ-
स्नायी पुरुष भक्तिसे मधुसूदनजी की पूजाकरके ३३ हृषीकेशजीको
ध्यानकर इसस्तोत्रकोपढ़ता है वा सुनताहै वह सुरापानादिक पापोंको
त्यागकर हे पुत्र! श्रीजनार्द्दन भगवान्‌जीके परमपदको निर्विघ्न जाता
है जो मनुष्य श्राद्धके समय ब्राह्मणोंके भोजन करतेहुये कालमें ३४ ।
३५ यह शतनामस्तोत्र जपै तो इस सर्व्वपातकनाशक स्तोत्रके पाठ
से उसकेपितर सन्तुष्टहों व तृप्तहोकर परमउत्कृष्टगतिको पावैं ३६ ॥
चौ० ब्राह्मणपढ़ै वेदनिधि होई । क्षत्रिय पढ़ै लहै महि सोई ॥
वैश्य सदा जो जपत निरालस । धनपावत अरु मनभावतयस ३७
शूद्र पढ़ै जो नित चितलाई । यहँ सुखलहि पुनिद्विज ह्वैजाई ॥
जन्मान्तर महँ द्विजतनुपाई । वेदपाठ अधिकारि कहाई ३८
यासों सुखद मोक्षप्रद येहू । है सुस्तोत्र न तनिक सँदेहू ॥
जो यहिपढ़ै रमेश प्रसादा । सर्व्वसिद्धिलहिविगतविषादा ३९

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डे भाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरु
तीर्थवर्णनेच्यवनचरित्रेसप्ताशीतितमोध्यायः ८७ ॥

## अट्ठासीवां अध्याय ॥

दो० अट्ठासी अध्याय महँ उज्ज्वलसों सुनि कर्म्म ॥
राजसुता हरिभजनकरि हरिपुर गई अभर्म्म १

कुंजल अपने पुत्रसे बोला कि हे पुत्र! श्रीविष्णुभगवान्‌जी के
व्रत स्तोत्र महाज्ञान व ध्यान जो कि सब पापोंके नाशक हैं हमने
तुमसेकहे १ सो ऐसेही जब वह इनचारोंको करेगी तो देवोंके दुर्लभ श्री
विष्णुभगवान्‌केलोककोजायगी २ इससे यहांसे जाकर तुम दिव्यादेवी

से कहो प्रथम तो अशून्यशयन नाम व्रतराजका विधान उससे कहो ३ फिर महाज्ञान ध्यानादि भी कहना जिस से उस महायशस्विनी राजकन्या का उद्धार हो तुमने पूँछा व हमने पुण्यद पापनाशन व्रत कहा ४ अब हे महाभाग ! जाओ २ इतना कहकर वह चुप होरहा श्रीविष्णु भगवान् राजा वेनसे बोले कि जब उज्ज्वलके पिता कुंजल ने ऐसा उससे कहा ५ तो वह महामति धर्मात्मा अपने पिता माता के चरणों के प्रणाम करके हे राजन् ! वह उज्ज्वल तुरन्त प्लक्षद्वीप को गया ६ व फिर नाना धातुओं से समाकुल सब ओर कल्याणकारक उस पर्वतपर गया जो कि नानारत्नमय ऊंचे शिखरों से शोभित होरहाथा ७ व हे नृप ! नानाप्रकार के उज्ज्वल जलोंसे सम्पूर्ण झरनोंके प्रवाहोंसे उपशोभित होताथा व उस पर्वतोत्तम पर स्वच्छ जलवाली बड़ी २ बहुतसी नदियां विद्यमान थीं ८ व किन्नर गन्धर्व वहां सुस्वर रागों से गानकरते अप्सराओं से समाकीर्ण व देवसमूहों से आकीर्ण था ९ सिद्ध चारणों से संयुक्त व मुनिवृन्दों से उपशोभित था व नानाप्रकार के पक्षियोंके नादोंसे सर्वत्र परिनादित था १० ऐसे पर्वत पर लघुपराक्रमी उज्ज्वल पहुँचकर देखा तो उस पर्वतपर बड़े सुस्वर से वह राजकन्या रोदन कररहीथी ११ व बार २ रोदन करतीहुई उससे वह यह वचन बोला कि हे कल्याणि ! तुम कौनहो व इस समय क्यों रोदन करतीहो १२ हे महाभागे ! तुम किसके आश्रितहो व तुम्हारा किसने अप्रिय कियाहै हमसे अपने दुःखका सब कारण अभी कहो १३ तब दिव्यादेवी बोली कि हे महाभाग ! इस समय में हमारेकर्मों का विपाक है विधवा होकर दुःखमें प्राप्त स्थितहूं १४ हे महाभाग ! आप कौनहैं कृपाकरके हमारे ऊपर क्या पीड़ित हैं पक्षीका रूपधारे उत्तानसमेत कहतेहो १५ इसप्रकार राजकन्याका कहाहुआ सब सुनकर वह उज्ज्वल पक्षी बोला कि हे महाभागे ! हमपक्षी हैं तुम्हारे ऊपर कृपासे पीड़ितहैं १६ हे भद्रे ! पक्षी के रूपधारे न हम सिद्धहैं न ज्ञानी हैं तुमको बड़े ऊंचे स्वरसे रोदन करती हुई सुनकर व देखकर १७ अब तुमसे पूँछते हैं कि हे देवि ! अपने रोदन का कारण हमसे कहो तब उसने अपने पिताके घरके सब वृत्तान्त

सुनाये १८ जिसप्रकार दुःख देनेवाले भये यथासंख्य सब कह सुनाये तो संक्षेप रीतिसे सुनकर उस महात्मा उज्ज्वलने १९ उस दुःखित राजकन्या से कहा कि जैसे विवाहहुईके समय तुम्हारे बहुतसे पति मृतक होगये हैं २० व तुम्हारे स्वयंवरके निमित्त बहुतसे क्षत्रिय नष्टहुये हैं यह सब तुम्हारा चेष्टित मैंने पितासे कहा है २१ क्योंकि हे सुलोचने ! यह तुम्हारे अन्य जन्म का किया हुआ पापहै हमारे पिताने बड़ी कृपासे हम से सब कहा है २२ उसी दोषसे संपुष्ट तुमने ये सब दुःख भोगेहैं यह सब कारण पिता ने कहा है २३ पूर्व्व जन्मके कियेहुये कर्म्मोंका फल तुम भोगतीहो जब उज्ज्वलने ऐसा कहा तो सुनकर वह राजकन्या दिव्यादेवी २४ उस महात्मा पक्षी उज्ज्वलसे फिर बोली कि अब मैं आपके प्रणाम करतीहूं मुझ दीन के ऊपर आप कृपाकरें २५ अब मेरे पूर्व्व जन्मके पापकी निष्कृति आपकहें व कृपाकरें व उसका जो कुछ पुण्यकारी हमारे पापों का शुद्ध करने वाला प्रायश्चित्तहो सोभी आप बतावें २६ जिससे पापों से मैं शुद्ध होजाऊं व पुण्यरूप होकर शुद्धलोक को चलीजाऊं हे महाभाग ! इन मेरे पापोंका प्रायश्चित्त दया करके मुझसे कहें २७ तब उज्ज्वल नाम पक्षी बोला कि हे महाभागे ! तुम्हारे अर्थ तो हमने अपने पिता से पूंछा था इससे हमारे पिताने बहुतही उत्तम प्रायश्चित्त बतायाहै २८ हे महाभागे ! सब पातकों के शोधक उसको तुम करो प्रथम हृषीकेश भगवान्का ध्यानकरो फिर उनका शतनामस्तोत्र जपो २९ फिर नित्यही ज्ञानमें पर होकर उनके उत्तम व्रतकरो पापनाशन पुण्यदायक अशून्यशयन व्रत करो ३० यह धर्मात्मा उज्ज्वल ने महात्मा श्रीविष्णु का सब ज्ञानप्रकाशक महाज्ञान ध्यान व्रत स्तोत्र उस राजकुमारी से कहा ३१ विष्णुजी राजावेन से बोले कि उससे सबको अच्छेप्रकार ग्रहण करके उसी निर्ज्जन वनमें सब द्वन्द्वों से निवृत्त होकर वह तप करने लगी ३२ प्रथम आहारको जीत कर निराधार होकर उसने अशून्यशयन नाम व्रत किया उसके करने में काम क्रोध से विहीनहुई व सब संयम अपनी इन्द्रियोंके करलिये ३३ हे महाराज! इन्द्रियोंके महामोहको तो उसने दूरकरदिया जब चौ॰

प्राप्त हुआ तब श्रीभगवान् जनार्दनजी प्रसन्नहुये ३४ व उसको स
देनेकी इच्छा से वरनायक वरदाता प्रभु वहां आकर प्राप्तहुये औ
तिसको अपना रूप दिखाया सूतजी३५ शौनकादिकों से बोले कि त
इन्द्रनीलमणि व सजलजलदश्याम शंख चक्र गदा धारण किये हुये
सब भूषणोंकी शोभासे युक्त कमल हाथ में लिये श्रीविष्णुभगवान्
के आगे ३६ हाथ जोड़ थर थर कांपतीहुई एक चरणके बल खड़ी
होकर प्रणाम करती हुई गद्गद वचनों से मधुसूदनजी से बोली कि
३७ हे महाराज! आपके दिव्य तेजसे मैं यहां स्थित नहीं होसकती
इससे आप दिव्य रूप हुये कौन हैं कृपाकर हमारे आगे ३८ प्रसन्न
होकर कहो यहां आपका क्या कार्य्य है महामते! सब प्रसन्नहोकर
कहो ३९ हे जगन्नाथ! सो भी आप के रूप व नामको तो मैंजानती
नहीं इंगितों से व तेजसे जानतीहूं कि आप देवहैं क्या आप ब्रह्मा हैं
वा विष्णुभगवान्हैं वा शङ्करजी हैं ऐसा कहकर प्रणाम करके पृथ्वी
पर दण्डवत् पड़गई ४०।४१ तब प्रणाम करती हुई उस राजकन्या
से श्रीजगन्नाथजी बोले कि हे शोभने! तीनों देवोंमें कुछ अन्तर नहीं
दिखाई देता ४२ जिसने ब्रह्माकी पूजाकी वा शङ्करकी पूजाकी उससे हम
नित्य पूजित होजाते हैं इसमें विचारणा करनेकी आवश्यकता नहीं
है ४३ ये दोनों देव हमसे भिन्न नहीं हैं नित्यही तीनोंरूपवालाहूं
व जिन्हों ने हमारी पूजाकी उनसे ये दोनों भी पूजित होजाते हैं ४४
हम हृषीकेशदेवहैं तेरे ऊपर कृपा करनेको आये हैं इस पुण्यस्तोत्रसे
व इस व्रतसे व तेरे नियम से हम बहुत प्रसन्नहुये ४५ क्योंकि इन
के करने से तू अब निष्पाप होगई इससे हे शोभने! जो चाह हमसे
वर मांगले दिव्यादेवी बोली कि हे हृषीकेश! हे कृष्णदेव! जयहो हे
क्लेशापहारक! ४६ आपके चरणारविन्द युगलको प्रणाम करतीहूं हे
सुरेश्वर! मेरा उद्धारकरो हे चक्रपाणे! जो मुझको वर दियाचाहते
हो तो मेरे ऊपर प्रसन्नहोवो ४७ व अपने दोनों चरणकमलकी
भक्ति मुझको दीजिये हे पापरहित! व हे जगन्नाथ! मुझको योगस
हित मोक्षका मार्ग दिखाओ ४८ व हे वैकुण्ठ! हे जनार्दन! यदि
सन्तुष्ट हुये हो तो वासस्थान दीजिये श्रीभगवान् बोले कि हे महा-

भागे ! ऐसाहीहो तू सब पापों से छूटगई इससे योगियों को सदैव दुर्लभ परम वैष्णवलोकको अभी हमारे प्रसादसे चलीजा४९।५० जब महात्मा माधवजीने ऐसा वचन कहा तो दिव्यादेवी दिव्यहोगई व सूर्य्य के तेजके समान प्रकाशित होनेलगी ५१ व सब मनुष्योंके देखतेही देखते सब आभरणों से भूषित होकर दिव्य माला पहिने व दिव्यहार धारणकिये ५२ दाह प्रलयसे वर्जित वैष्णवलोकको चलीगई ॥

चौ० पुनि उज्ज्वलपक्षी गृहआवा। समाचार निज पितहि सुनावा ॥
सो सुनि कुंजलभयहुसुखारी। हर्षितह्वैहरिनामपुकारी ५३।५४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेऽष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

## नवासी अध्याय ॥

दो० नावासीयें महँ कह्यो चारिहंस दुइ व्याध ॥
चारियुवति यकसँग हते तरीं न वै अपराध १

विष्णुजी राजावेन से बोले कि इसके पीछे कुंजल अपने पुत्र समुज्ज्वलसे बोला कि हे पुत्र ! अब कहो तुमने कहीं क्या अपूर्व्व देखाहै १ वह हमसे प्रीतिपूर्व्वक कहो हमारे इस समय सुननेकी इच्छाहै जब कुंजल ने अपने पुत्रको ऐसी आज्ञादी और आप चुप होरहा तो वह २ विनय से शिर झुकाकर अपने पितासे बोला कि देववृन्दों से युक्त यह जो हिमवान् पर्व्वतश्रेष्ठ है ३ हे पिताजी ! मैं अपने व आपके आहारके लिये उसी पर जाताहूं व वहां वह कौतुक देखताहूं जोकि अन्यत्र कभी देखा न सुनाथा ४ उसपर एक स्थानहै जो अनेक ऋषिगणों से व अप्सराओंसे शोभितहै व बहुत कौतुकों की शोभा से युक्त व नाना मांगल्य पदार्थों से युक्त है ५ व बहुत पुण्यफलों से युक्त व नानाप्रकारके वनोंसे शोभित होताहै व अनेक कौतुकों से निरन्तर परिभासित रहताहै मनका मोहनकर्त्ता है ६ हे तात ! वहां एक अपूर्व्व मानससर हमने देखा उसमें बहुत से हंस क्रीड़ा किया करते हैं पर एक दिन एक ऐसा हंस आया ७ वह

कृष्णरंगकाहै व उसी प्रकारके फिर तीन और भी हंस वहां आये
बस वे चार तो नीले रंगके हैं अन्य सब श्वेतरंग के हंस जैसे हि
होते हैं वैसेहैं फिर रौद्राकार अतिभयंकररूपिणी ८ व करालदंष्ट्रावाली
चारस्त्रियां कि जिनके शिर के बाल ऊपरको उठे थे व अतिभय-
नक लगते थे वहां आईं ये उस मानससर से पीछे को आईं १०
फिर जो कृष्णरंग के हंसथे उन्हों ने मानससर में स्नान किया
उनमें की तीन स्त्रियों ने भी स्नान किया व और सब हंसों ने मा-
नसमें स्नान न किया ११ तब वे स्त्रियां उनको हँसीं जिनने कि स्नान
नहीं किया था व हँसनेके समय उन्होंने बड़े दारुण दांत निकाले
तब उस सरसे एक बड़े शरीरका हंस निकला १२ पीछे से तीन और
निकले उनको देख परस्पर विवाद करतेहुये अन्य हंस वहांसे आकाश
मार्ग्ग होकर उड़े १३ व उन्हीं के संग वे महाभयंकरी स्त्रियां भी उड़ीं
व जाकर सब पक्षी तो विंध्याचल के एक पुण्यकारी शिखरपरके एक
वृक्षकी छाया में १४ बैठे क्योंकि वे बेचारे दारुणदुःखों से जलेहुये थे
उनलोगों के देखतेही देखते वहां पर एक भिल्ल आनपहुँचा १५ व
मृगों को पीड़ा देकर हाथमें धन्वा बाण लिये आकर सुखसे शिला
तल पर बैठगया १६ पीछे से अन्न व जललेकर उसकी भिल्ली वहां
आई व अपने पतिको देखनेलगी पर पूर्व्व के लक्षण उसके जाते
रहे थे १७ इससे उसने समझा कि यह मेरा पति नहीं है इसलिये
दूसरी ओर देखनेलगी व उसका पति तेजस्वी होगया था यहांतक कि
जैसे सूर्य्य आकाश में शोभितहोते हैं वैसेही वह शोभित होनेलगा
था १८ उसको अन्य पुरुष जानकर वहां से चलखड़ीहुई तब व्याध
बोला कि हे प्रिये! यहां आ तू हमको क्यों नहीं देखती है १९ और हम
तो क्षुधा से पीड़ित तुझकोही देखरहे हैं उसका वचन सुन वह उसकी
व्याधी शीघ्रही लौटी २० व अपने पति के पास पहुँचकर बहुत वि-
स्मित हुई कि यह महातेजस्वी कौन पुरुषहै क्या कोई देव तो नहीं
है जो मुझको बुलाता है २१ यह विचारकर वह व्याधी प्रकाशयुक्त
तेजवाले अपने पति उस भिल्लसे बोली कि हे वीर! यहां तुमने क्या
कियाहै व तुम दिव्य लक्षण पुरुष कौन हो २२ सूतजी शौनकादिक

से बोले कि जब व्याधी ने ऐसा कहा तो वह व्याधा अपनी प्रिया व्याधी से बोला कि हे कान्ते! हम तुम्हारे वल्लभहैं व तुम हमारी प्रियाहो २३ तुम क्यों हमको नहीं पहिचानती कैसे शंका हुईहै अरे हम क्षुधा से पीड़ित होनेसे जल और अन्नकी राह देखरहे हैं २४ व्याधी बोली कि राक्षस के समान काले वर्ण का लाललाल नेत्रवाला काले वस्त्र पहिने सब प्राणियोंको भय करनेवाला हमारा पति तो ऐसाथा २५ आप कौन हैं जो दिव्य देह धारण कियेहुये हैं पर हम भिल्ली को प्रिया कहकर बुलाते हैं यह हमको संशय उत्पन्नहुआ है इससे हमारे आगे सत्य २ कहो २६ तब वह व्याधा बोला कि हमारा यह कुलहै व यह नाम यह ग्राम ऐसी २ हम क्रीड़ा करते हैं व ये २ हमारे चिह्नहैं व पुत्र पुत्रीहैं जब सब बातें उसने अपनी स्त्री के आगे कहीं सो उसको विश्वासहुआ २७ तब वह व्याधी हर्षितमन हो अपने पतिसे बोली कि तुम्हारा शरीर ऐसा कैसे होगया कि अब तो तुम उजले वस्त्र धारण कियेहो २८ कहिये यह कैसे हुआ इस विषयमें हमको बड़ा आश्चर्य है तब पूँछती हुई अपनी प्राणप्रिया से वह व्याधा बोला कि २९ सूतजी शौनकादिकोंसे कहते हैं कि हे प्रिये! यद्यपि हम मृगों के मारनेवाले व्याधा हैं सो तो तुम जानतीहीहो पर इसका वृत्तांत कहते हैं सुनो नर्म्मदा नदीके उत्तर किनारे पर एक संगमहै ३० सो हम घामसे बहुत व्याकुल होकर वहां गये ३१ उस संगम में स्नान किया व जलपान किया व अच्छे प्रकार वहां बैठे उठे फिर वहांसे चले आये तबसे हमारा शरीर इसप्रकार का तेजस्वी होगयाहै ३२ व तभीसे ये औरभी शुक्लवस्त्र हमारेपास आगये हैं व यह वही नीलका रँगाहुआ चोलन है उसमें स्नान करतेही उजला होगयाहै व इसीसे प्रथमके सब लक्षण बदल जानेही से कुल और स्थानसे तुमने हमको चीन्ह नहीं पाया ३३ तब वह व्याधी अपनेपतिको लक्षित कर पुण्यका संभव जानकर अपने भर्त्ता से बोली कि वह संगम हम को भी दिखावो ३४ तो हमभी भोजन व पीने के पदार्थ पीछेसे तुमको देंगी जब व्याधा से उसकी प्रियाने ऐसा कहा तो वह अतिवेगसे चला ३५ व जाकर अपनी

प्रिया को वह पापनाशकर्त्ता संगम दिखादिया व उसीके पीछे २३
जो कालेरंग के हंस वहां आकर बैठेथे वे भी उस नर्म्मदाके संगम
परको उड़े चले गये व उन सबों के देखतेही देखते और मेरे देखते
हुये३६।३७प्रथम उसके पतिने स्नान किया फिर उसव्याधीने स्नान
किया स्नान करतेही दोनों दिव्य कान्ति समेत दिव्य देह धारे ३८
दिव्य वस्त्र अनुलेपन धारण कियेहुयेहोगये दिव्यमाला और वस्त्रको
दिव्य चन्दन अरगजादि लगाये ३९ व दोनों वैष्णव विमान पर
चढ़के मुनियों व गन्धर्व्वों से पूजितहो वैष्णवलोकको चले गये
वहांके रहने वाले वैष्णव लोग उन दोनों की पूजा करते भये ४०
व और दोनों स्त्री पुरुष महात्माओं की स्तुति की और स्वर्गमार्गसे
चले गये और पक्षी शब्द करते गये यह हमने देखा ४१ व जो वे
चारों कालेपक्षी उनके पीछे गयेथे उनकी ऐसी दशा देख उन्होंनेभी
उसमें स्नान किया उनकेभी दिव्य देह होगये क्योंकि वह तीर्थ पा-
पनाशक तो थाही इससे दिव्यदेह धारण किये हुये जल पीकर बाहर
निकले ४२।४३ फिर जो चार वे कालेरंगकी महाविकरालरूपवाली
स्त्रियांथीं उन्होंनेभी वहांजाकर उसी संगममें स्नान किया परन्तु वे
स्त्रियां स्नानमात्रही से उसी समय मरीं बड़ी दूरतक उन के रोदन
का शब्द सुनाई देताथा वे यमलोकको गईं हे तात! यह भी चरित्र
हमने वहांदेखा तब वहांसे वे हंस उड़े व अपने स्थानको चलेगये
४४।४५हे तात!यह हमने प्रत्यक्ष देखा सो आपसे कहा सो वे काले
पखनों की बड़ी देहवाली भालरासू वे स्त्रियां कौनथीं ४६ हे तात!
प्रसन्नता से उनके वृत्तांत हमसे कहो व जो मानससरके भीतरसे
वे कालेकौवों के रंगके हंस निकले थे वे कौन हैं व फिर उनकी कैसे
दशा हुई होगी हमसे कहो वे प्रथम कृष्णताको कैसे प्राप्त हुये
फिर उस संगममें स्नान करने से शुद्ध कैसे होगये ४७।४८ वे
स्त्रियां स्नान करतेही मृतक होगईं॥
चौ० यह मम हृदय घोरसन्देहा। भयहु तात जो भाष्यहु देहा॥
ज्ञानविचक्षण हौ तुम ताता। नाना नागहु चादि प्रमाता॥
है प्रसन्न मम ऊपर आजू। करहु तात अब कृपा समाजू॥

मिनिजजनकहिकह्योसमुज्ज्वल । पुनिकीन्होविरामगतसबछल४६।५१॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थवर्णनेच्यवनचरित्रेएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

## नब्बे अध्याय ॥

दो० नब्बे के महँ इन्द्रसब तीर्थन काहिं बुलाय ॥
पापनाशकी शक्ति तिन पूँछी है यह गाय १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि इसप्रकार सब अपने पुत्र समुज्ज्वल के वचन सुन धर्म्मात्मा वह कुञ्जल अपने सुत से बोला कि हे तात ! स्थिरमन करके सुनो हम पापनाशन सब सन्देह विध्वंस करनेवाला चरित्र कहते हैं २ वह इन्द्रलोक का वृत्तान्त है जहां के समाचार प्रायः कौतुकयुक्तही होते हैं एकसमय उन महात्मा इन्द्रदेवकी सभा में ३ नारदमुनिसत्तम सहस्राक्षदेव पुरन्दर के देखने की इच्छा से अकस्मात् आगये सूर्य्य के तेज के समान प्रकाशित उन मुनिसत्तम को आयेहुये ४ देखकर इन्द्र बड़ेहर्ष से अपने आसन परसे उठकर उनको अर्घ्य पाद्य दिये ५ व फिर दोनोंहाथ जोड़कर प्रणाम किया व पुण्यकारी कोमल आसनमें उन द्विजोत्तम को बैठाकर ६ अतिप्रणतहो परमश्रद्धा से उनसे पूँछा कि इससमय आपका आगमन कहां से हुआ व उसका जो कारणहो इससमय हम से कहें ७ जब देवराज ने ऐसा कहा तो महामुनि नारदजी उन से बोले कि इससमय पृथ्वी परसे आपके देखने की इच्छासे यहां आये हैं ८ वहां पर नाना २ देशों में नानाप्रकारके पुण्यतीर्थों में श्रद्धासे स्नानकिया व देवताओं पितरोंका तर्प्पण किया और अनेक तीर्थ देखे ९ जो तुमने पूँछा सब हमने अपने आगमन का वृत्तान्त कहा तब इन्द्र बोले कि हे महामुने ! आपने तो अनेक पुण्यक्षेत्र व तीर्थ देखे हैं १० भला ऐसा भी कोई तीर्थ व सुपुण्य क्षेत्र देखाहै कि जिसमें स्नान करने से ब्राह्मणका मारनेवाला ब्रह्महत्या से छूट जाय व मदिरा पान करनेवाला पापसे छूटे व गऊ का मारनेवाला सुवर्ण का चोर उस पापसे छूटे ११ व हे महाभाग ! स्वामी के साथ

द्रोह करने वाला व स्त्रीवध करनेवाला कैसे सुखीहो नारदजी बोले कि हे सुरेश्वर ! गयादिक जितने तीर्थ पृथ्वी पर हैं १२ उनकी विशेषता हम पाप नाशनेकी नहीं जानते हमारे जान तो सब पुण्यहैं सब दिव्यहैं व सब पापोंके नाशनेके कारण समानहैं १३ हे पुरन्दर हम तो सब तीर्थों को ऐसाही जानते हैं अविशेष व विशेष इसका मयहमनहीं जानते हैं १४ अबतुम उन तीर्थों को गतिकादाता विशेष जैसे बने करलो इसप्रकार महात्मा नारदजी के वचन सुनकर १५ इन्द्रने पृथ्वी परके सब तीर्थों को स्वर्ग्ग को बुलाया जितने तीर्थ भूतल परथे सबके सब मूर्त्तिधारण करके इन्द्रकी आज्ञा से तुरन्त वहां पहुँचे १६ व सब हाथ जोड़े व भूषण वस्त्रादि दिव्य धारण किये तेजसे युक्त मूर्त्तियों को धारणकिये १७ कोई तीर्थ स्त्री का स्वरूप धारणकिये व कोई पुरुषका स्वरूप बनाये सुवर्ण व चन्द्रमा के समान प्रकाशित दिव्यरूप सब किये १८ व कोई कोई तीर्थ मोती के समान झलकतेहुये रूप धारण किये कोई २ तपायेहुये सुवर्ण के रङ्गके रूप बनाये कोई २ उसी सुवर्ण के रङ्गमें कुछ अधिक अरुणता के रूप किये १९ कोई २ शुक्ल रूपों से भासित कोई पीले रूपसे कोई कमलके रङ्गके मूर्त्ति धारणकिये २० सूर्य के तेजके समान प्रकाशित बिजली के तेजके समान और कोई अग्निके सदृश सभा में प्रकाशित हुये २१ सब गहनों की शोभासे युक्त शोभितहुये हार कङ्कण केयूरमाला चन्दन २२ धारे सुगन्ध लगाये और कमण्डलु हाथमें लिये सभामें आये २३।२४ गङ्गा, नर्मदा, पुण्या, चन्द्रभागा, सरस्वती, देविका, विंत्रिका, कुब्जा, कुञ्जला, मञ्जुला, भानुमती, पुण्या, पारा, सुघर्घरा, शोणा, सिन्धु, सौवीरा, कावेरी, कपिला २५ कुमुदा, वेदनदी, पुण्या, सुपुण्या, महेश्वरी, चर्म्मण्वती, लोक सुकौशिकी २६ सुहंसी, हंसपादा, हंसवेगा, मनोरथा, सुरुथा, स्वारुचवेणा, भद्रवेणा, सुपद्मिनी २७ नाहली, सुमरी; दूसरी पुण्या, पुलिन्दिका, हेमा, मनोरथा, दिव्या, चन्द्रिका, वेदसंक्रमा २८ स्वाहा हुताशिनी, स्वाहा, काला, कपिञ्जला, स्वधा, सुकला, लिङ्गा, गम्भीरा भीमवाहिनी २९ वद्रीची, वीरवाहा, लक्षहोमा, अवापहा, पाराशरी

हेमगर्भा, सुभद्रा, वसुपुत्रिका ३० हे नरेश्वर ! इतनी नदियां मूर्त्तिधारण किये हुये आईं सब सब आभरणों की शोभा से युक्त व कुम्भ हाथों में लिये अच्छेप्रकार पूजित आईं ३१ प्रयाग, पुष्कर अर्घदीर्घ, मनोरथा, महापुण्या, वाराणसी ब्रह्महत्याऽपपोहिनी ३२ द्वारावती, प्रभास, अवन्ती, नैमिषारण्य, दण्डक, महारत्न, महेश्वर, कलेश्वर ३३ कालिंजर, ब्रह्मक्षेत्र, माथुर, मानवाहक, माया, कांती तथा अन्य विविधप्रकार के तीर्थ ३४ अरसठतीर्थ व सौकड़ोर नदियां गोदावरी आदि सब इन्द्रकी आज्ञासे आईं ३५ और भी द्वीप२ के सब तीर्थ जो कि बड़े थे सब मूर्तिधारण किये हुये आये व सब इन्द्रके आदेशकारी होकर वहां पहुँचे व सबों ने देवताओं के ईश इन्द्रजी के प्रणामकिया ३६ । ३७ सूतजी बोले कि सबों ने देवराज से कहा कि हे देवदेव ! हमसे कहिये तुमने क्यों हम लोगों को बुलायाहै ३८ हे देवराज ! हम लोगों से सब कारणकहो तुम्हारे नमस्कार है इसप्रकार सब तीर्थों के वचन सुनकर देवराज उन सबों से बोले ३९ कि हे महातीर्थो ! तुम लोगों में ब्रह्महत्या नाशने में कौन समर्थ है व गोवधनाम महापाप के नाशने में कौन व स्त्रीवध महाघोर पापके विदारण करने में कौन समर्थ है ४० स्वामिद्रोह से उत्पन्न महापाप के व मदिरापान नाम दारुणपापके विनाशने में कौन सुवर्ण चोराने से उत्पन्न व गुरुनिन्दा से समुद्भूत पाप के विदारणमें कौन समर्थ है ४१ व गर्भपात कराने के दोषको कौन समर्थ नाशकरसक्ता है राजा से द्रोह करने से जो महापीड़ा देनेवाला महा पाप होताहै उसके नाशने में कौन समर्थ है ४२ व मित्रद्रोह करने से जो महापाप होताहै व विश्वासघात करने से जो घोरपाप होता है देवमूर्त्ति तोड़ने में जो महापाप होताहै व कहीं का कोई चिह्न बिगाड़डालने में जो पाप होताहै ४३ व ब्राह्मणों की जीविका नाश करने में जो पाप होतेहैं व गउओं के चरने की भूमिके जोतने बोनेमें जो महापाप होताहै किसी के गृहके जलादेने में व देवमन्दिर जला देने में जो दोष होते हैं ४४ व सोलह महापाप व गुरु आदिकी अगम्य स्त्रियों के संग गमनकरने से जो पाप होते हैं स्वामी के त्याग-

ने से जो महापाप होता है व रणमें स्वामी को छोड़कर भागने से जो अघ होताहै ४५ इन पापोंको कौन समर्थ उत्तम तीर्थ नाश करसक्ता है आपलोगों के मध्यमें कौन ऐसा समर्थ है कि इन पापों के करनेवाले प्रायश्चित्त न करें व उनके पापोंको नष्टकरसके ४६ सब इन देवताओं के देखते २ व नारदजी के समक्षमें अच्छे प्रकार विचारि करके व संचिन्तन करके आपलोग कहें ४७ जब महात्मा देवराजने ऐसा शुभवचन कहा तो सब तीर्थलोग तीर्थराजसे सलाह कर बोले ४८ कि हे देवराज ! सुनो हमलोग कहेंगे तुम्हारे नमस्कार जितने सब तीर्थहैं सब साधारण रीतिसे सामान्य पापोंको मिटासके हैं ४९ परन्तु ब्रह्महत्या गोहत्याआदि महापापों को नहीं मिटासकते उन महाघोर पापों के नाशने में ५० प्रयाग पुष्करादि अर्घतीर्थ समर्थ हैं व महापुण्या वाराणसीपुरी उन पापों के विनाशने में समर्थहै ५१ बस महापातकोंके नाशनेमें प्रयाग पुष्कर वाराणसी अर्घतीर्थ ये चार तीर्थ समर्थहैं व उपपातकों के नाशकरने के लिये चार अति पराक्रमी हैं ५२ पुष्करादिक महाबली हैं इनको ब्रह्माजीने प्रतिष्ठित कियाहै तीर्थोंका ऐसा वचन सुनकर देवराजने बड़े हर्षसे युक्तहो उनतीर्थोंकी स्तुतिकी ५३ । ५४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

## इक्यानबे अध्याय ॥

दो० इक्यानबें महँ पातकी चारि भये यकठौर ॥
एक दूसरे की कथा पूँछी कही न और १

कुञ्जल अपने पुत्र से बोला कि इसप्रकार तीर्थों से पूँछकर उन को तो बिदा किया जब गौतमजी की स्त्री अगम्या अहल्या के साथ इन्द्रने भोगकिया तो उनको ब्रह्महत्या लगी १ उस महापातक के करनेसे इन्द्रको सब देवताओं व ब्राह्मणों ने छोड़दिया तब निरा लम्ब वनिराश्रय हो इन्द्र तप करनेलगे तब सब देवता यक्ष किन्नर ऋषिलोगों ने तप करने के पीछे इन्द्रकी पूजाके लिये उनका अभि

किया ३ हे पुत्र ! सब देवादि मालवदेशको इन्द्र को लेगये व वहां कुम्भों में जल भर२कर उनसे इन्द्रको स्नान कराया ४ फिर उनको लेजाकर वाराणसीपुरी में स्नान कराया फिर प्रयाग तीर्त्थराज में स्नान कराया फिर अर्घतीर्थ में स्नानकराया ५ तदनन्तर उन महात्माको पुष्कर तीर्त्थ में स्नापित कराया इस स्नान कराने में सब ब्रह्मादि देवता व मुनियों के वृन्द संग थे सब स्नान कराते थे यक्ष, नाग, सर्प, गन्धर्व, किन्नर, वेदमन्त्रों से सब इन्द्र को स्नान कराते फिरते रहे ६ । ७ मुनिलोग भी नानाप्रकारके पापनाशन मन्त्र पढ़ते थे जब इसप्रकार इनचार तीर्त्थोंमें स्नान कराया तो महात्मा महाभाग इन्द्र शुद्धहुये ८ व अगम्यागमन से जो ब्रह्महत्या हुईथी वह जातीरही व अगम्यागमनका दोष नष्टहोगया ब्रह्महत्याका नाम भी न रहगया जो कि गौतमकीस्त्री के सङ्ग भोगकरने से हुईथी ९ उस महापुण्यसे ऐसे शुद्ध हुये कि प्रथमही के समान फिर प्रकाशित होने लगे तब अति प्रसन्न होकर इन्द्रने उन तीर्थों को वरदिया १० कि आप लोग तीर्थों के राजाहैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है हमारे प्रसादसे पवित्रहो जिससे तुम लोगों ने हमारा बड़ाभारी पाप नष्ट करदियाहै इससे अब और भी तुम लोगों का अधिक माहात्म्यहोगा व कैसाही पापी तुम लोगों में आकर स्नान करेगा तो शुद्ध होजायगा इस प्रकार उन तीर्त्थोंको वरदेकर फिर मालवदेश को इन्द्रने वर दिया ११ । १२ कि जिससे तुम ने हमारे शरीरका बहुतसा श्रमदायक मल हरलिया इससे तुम अन्न पान धन धान्य से अलंकृतहोगे १३ हमारे प्रसाद से ऐसा होगा इसमें कुछभी सन्देह नहीं है तुममें सदा सुकाल बनारहेगा इससे तुम पुण्यवान् देश कहाओगे १४ इस प्रकारसे मालवदेश को वर देकर देवोंके राजा इन्द्र मालव देशसे सब देवताओं के सङ्ग अपने स्थान इन्द्रपुरी को चले गये क्षेत्र सब तीर्थ मालवदेश भी अपने स्थानोंको गये सूतजी शौनकादिकों से बोले कि तबसे फिर वाराणसीपुरी प्रयाग व अर्घतीर्त्थ और पुष्कर इन चारों तीर्थों ने उत्तम राजपदवी पाई १७ कुञ्जल बोला कि मालव देशमें एक विदुरनाम क्षत्रिय था उस ने मोहके प्रसङ्ग से पूर्वसमय

किया ३ हे पुत्र ! सब देवादि मालवदेशको इन्द्र को लेगये व वहां कुम्भों में जल भर२कर उनसे इन्द्रको स्नान कराया ४ फिर उनको लेजाकर वाराणसीपुरी में स्नान कराया फिर प्रयाग तीर्त्थराज में स्नान कराया फिर अर्घतीर्थ में स्नानकराया ५ तदनन्तर उन महात्माको पुष्कर तीर्त्थ में स्नापित कराया इस स्नान कराने में सब ब्रह्मादि देवता व मुनियों के वृन्द संग थे सब स्नान कराते थे यक्ष, नाग, सर्प, गन्धर्व, किन्नर, वेदमन्त्रों से सब इन्द्र को स्नान कराते फिरते रहे ६ । ७ मुनिलोग भी नानाप्रकारके पापनाशन मन्त्र पढ़ते थे जब इसप्रकार इनचार तीर्त्थोंमें स्नान कराया तो महात्मा महाभाग इन्द्र शुद्धहुये ८ व अगम्यागमन से जो ब्रह्महत्या हुईथी वह जातीरही व अगम्यागमनका दोष नष्टहोगया ब्रह्महत्याका नाम भी न रहगया जो कि गौतमकीस्त्री के सङ्ग भोगकरने से हुईथी ९ उस महापुण्यसे ऐसे शुद्ध हुये कि प्रथमही के समान फिर प्रकाशित होने लगे तब अति प्रसन्न होकर इन्द्रने उन तीर्थों को वरदिया १० कि आप लोग तीर्थों के राजाहैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है हमारे प्रसादसे पवित्रहौ जिससे तुम लोगों ने हमारा बड़ाभारी पाप नष्ट करदियाहै इससे अब और भी तुम लोगों का अधिक माहात्म्यहोगा व कैसाही पापी तुम लोगों में आकर स्नान करेगा तो शुद्ध होजायगा इस प्रकार उन तीर्त्थोंको वरदेकर फिर मालवदेश को इन्द्रने वर दिया ११ । १२ कि जिससे तुम ने हमारे शरीरका बहुतसा श्रमदायक मल हरलिया इससे तुम अन्न पान धन धान्य से अलंकृतहोगे १३ हमारे प्रसाद से ऐसा होगा इसमें कुछभी सन्देह नहीं है तुममें सदा सुकाल बनारहेगा इससे तुम पुण्यवान् देश कहाओगे १४ इस प्रकारसे मालवदेश को वर देकर देवोंके राजा इन्द्र मालव देशसे सब देवताओं के सङ्ग अपने स्थान इन्द्रपुरी को चले गये क्षेत्र सब तीर्थ मालवदेश भी अपने स्थानोंको गये सूतजी शौनकादिकों से बोले कि तबसे फिर वाराणसीपुरी प्रयाग व अर्घतीर्त्थ और पुष्कर इन चारों तीर्थों ने उत्तम राजपदवी पाई १७ कुञ्जल बोला कि मालव देशमें एक विदुरनाम क्षत्रिय था उस ने मोहके प्रसङ्ग से पूर्वसमय

ने से जो महापाप होता है व रणमें स्वामी को छोड़कर भाग
से जो अघ होताहै ४५ इन पापोंको कौन समर्थ उत्तम तीर्थ
करसक्ता है आपलोगों के मध्यमें कौन ऐसा समर्त्थ है कि इन
के करनेवाले प्रायश्चित्त न करें व उनके पापोंको नष्टकरसके ४६
सब इन देवताओं के देखते २ व नारदजी के समक्षमें अच्छे प्रका
विचारि करके व संचिन्तन करके आपलोग कहें ४७ जब
देवराजने ऐसा शुभवचन कहा तो सब तीर्त्थलोग तीर्थराजसे
कर बोले ४८ कि हे देवराज ! सुनो हमलोग कहेंगे तुम्हारे नमस्कार
जितने सब तीर्त्थहैं सब साधारण रीतिसे सामान्य पापोंको मिटासके
४९ परन्तु ब्रह्महत्या गोहत्याआदि महापापों को नहीं मिटासक्ते
महाघोर पापों के नाशने में ५० प्रयाग पुष्करादि अर्घतीर्थ
हैं व महापुण्या वाराणसीपुरी उन पापों के विनाशने में समर्त्थहै ५१
बस महापातकों के नाशनेमें प्रयाग पुष्कर वाराणसी अर्घतीर्थ
चार तीर्त्थ समर्त्थहैं व उपपातकों के नाशकरने के लिये चार अति
पराक्रमी हैं ५२ पुष्करादिक महाबली हैं इनको ब्रह्माजीने
कियाहै तीर्थोंका ऐसा वचन सुनकर देवराजने बड़े हर्षसे पु
उनतीर्त्थोंकी स्तुतिकी ५३ । ५४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने
गुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

## इक्यानबे अध्याय ॥

दो० इक्यानवें महँ पातकी चारि भये यकठौर ॥
एक दूसरे की कथा पूँछी कही न और १

कुञ्जल अपने पुत्र से बोला कि इसप्रकार तीर्थों से पूँछकर उन
को तो बिदा किया जब गौतमजी की स्त्री अगम्या अहल्या के साथ
इन्द्रने भोगकिया तो उनको ब्रह्महत्या लगी १ उस महापातक के
करनेसे इन्द्रको सब देवताओं व ब्राह्मणों ने छोड़दिया तब निरा
लम्ब व निराश्रय हो इन्द्र तप करनेलगे तब सब देवता यक्ष किन्नर
ऋषिलोगों ने तप करने के पीछे इन्द्रकी पूजा के लिये उनका अभि

कया ३ हे पुत्र ! सब देवादि मालवदेशको इन्द्र को लेगये व वहां कुम्भों में जल भर२कर उनसे इन्द्रको स्नान कराया ४ फिर उनको लेजाकर वाराणसीपुरी में स्नान कराया फिर प्रयाग तीर्थराज में स्नान कराया फिर अर्घतीर्थ में स्नानकराया ५ तदनन्तर उन महात्माको पुष्कर तीर्थ में स्नापित कराया इस स्नान कराने में सब ब्रह्मादि देवता व मुनियों के वृन्द संग थे सब स्नान कराते थे यक्ष, नाग, सर्प, गन्धर्व, किन्नर, वेदमन्त्रों से सब इन्द्र को स्नान कराते फिरते रहे ६ । ७ मुनिलोग भी नानाप्रकारके पापनाशन मन्त्र पढ़ते थे जब इसप्रकार इनचार तीर्थोंमें स्नान कराया तो महात्मा महाभाग इन्द्र शुद्धहुये ८ व अगम्यागमन से जो ब्रह्महत्या हुईथी वह जातीरही व अगम्यागमनका दोष नष्टहोगया ब्रह्महत्याका नाम भी न रहगया जो कि गौतमकीस्त्री के सङ्ग भोगकरने से हुईथी ९ इस महापुण्यसे ऐसे शुद्ध हुये कि प्रथमही के समान फिर प्रकाशित होने लगे तब अति प्रसन्न होकर इन्द्रने उन तीर्थों को वरदिया १० कि आप लोग तीर्थों के राजाहैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है हमारे प्रसादसे पवित्रहो जिससे तुम लोगों ने हमारा बड़ाभारी पाप नष्ट करदियाहै इससे अब और भी तुम लोगों का अधिक माहात्म्यहोगा । कैसाही पापी तुम लोगों में आकर स्नान करेगा तो शुद्ध होजायगा इस प्रकार उन तीर्थोंको वरदेकर फिर मालवदेश को इन्द्रने वर दिया ११ । १२ कि जिससे तुम ने हमारे शरीरका बहुतसा श्रमदायक मल हरलिया इससे तुम अन्न पान धन धान्य से अलंकृतहोगे १३ हमारे प्रसाद से ऐसा होगा इसमें कुछभी सन्देह नहीं है तुममें सदा सुकाल बनारहेगा इससे तुम पुण्यवान् देश कहाओगे १४ इस प्रकारसे मालवदेश को वर देकर देवोंके राजा इन्द्र मालव देशसे सब देवताओं के सङ्ग अपने स्थान इन्द्रपुरी को चले गये क्षेत्र सब तीर्थ मालवदेश भी अपने स्थानोंको गये सूतजी शौनकादिकों से बोले कि तबसे फिर वाराणसीपुरी प्रयाग व अर्घतीर्थ और पुष्कर इन चारों तीर्थों ने उत्तम राजपदवी पाई १७ कुञ्जल बोला कि मालव देशमें एक विदुरनाम क्षत्रिय था उस ने मोहके प्रसङ्ग से पूर्वसमय

में एक ब्राह्मण को मारडाला १८ तब वह शिखासूत्ररहितहो तिलक से वर्जित भीखमांगने लगा व कहता फिरे कि ब्रह्महत्या किये हुये मदिरा पियेहुये मुझको भिक्षान्न देतेजाओ इस प्रकार प्रत्येक गृह के द्वारे द्वारे कहता हुआ वह क्षत्रिय घूमाकरे १९ । २० व ऐसेही वह घूमते घूमते सब तीर्थों मेंभी होआया परन्तु हे द्विजसत्तम! उस की ब्रह्महत्या न मिटी २१ तब एक दिन एक वृक्षकी छायामें बैठकर जलते हुये चित्तसे वह विदुरनाम क्षत्रिय पापी बड़े दुःख व शोकसे युक्तहुआ २२ उन्हीं दिनों में एक चन्द्रशर्म्मानाम ब्राह्मण महामोह से पीड़ित होकर मगधदेशमें बसता था उस दुष्ट ने मोहसे अपने गुरुको मारडाला था २३ इससे उसके स्वजन वर्ग्गोंने व बन्धुवर्गों ने उस दुरात्मा को छोड़ दिया था वहभी वहां आया जहां कि वह विदुरनाम क्षत्रिय बैठाथा २४ वहभी शिखासूत्र से हीन होनेके कारण ब्राह्मण के चिह्नों से रहितथा उसे देखप्रथम विदुरदुरात्माने उस ब्राह्मण से पूँछा २५ कि आप कौनहैं जो ऐसे दुर्भाग्ययुक्त दुःखित मन दिखाई देते हैं विप्र के चिह्नों से विहीनहैं सो आप क्यों पृथ्वी पर घूमते हैं २६ जब विदुर क्षत्रिय ने ऐसा कहा तो ब्राह्मणों में अधम उस चन्द्रशर्म्मा ने जैसा पूर्व्वकाल में किया था सब कहा २७ व जो महाघोरपाप गुरुके गृहमें बसते हुये ने किया था वहभी कहा जो कि महामोह में आजाने से क्रोधसे आकुलित होकर किया था २८ कि मैंने क्रोध के वशीभूत होकर अपने गुरुजी को मारडालाहै उसी पाप से इस समय जलताहूं यह कहा चन्द्रशर्म्माने अपना सब वृत्तान्त इस रीति से निवेदित किया व उससे पूँछा २९ कि आप कौनहैं जो दुःखित होकर वृक्षकी छायामें बैठेहुये हैं तब विदुरनेभी अपना सब वृत्तान्त संक्षेपसे कहा ३० उसी समय में मार्ग्ग के श्रम से दुःखित कोई तीसरा ब्राह्मण वहां आया उसका वेदशर्म्मा तो नाम था व वह भी बहुत पाप कियेथा ३१ तब उससे प्रथम के आये हुये उन दोनों ने पूँछा कि आप कौनहैं जो बहुत दुःखित दिखाई देते हैं तुम पृथ्वी पर क्यों भ्रमण करतेहो अपना भाव हम दोनों से कहो ३२ तब वेदशर्म्मा ने अपना किया हुआ सब कर्म्म दोनों

ने कहा जो कि उस ने अगम्यागमन किया था ३३ व इस से सब अन्य लोग और स्वजन बान्धवों ने उस को धिक्कार दिया था कि जिस पापसे लिप्त होकर पृथ्वीपर घूमताथा ३४ फिर जिसने मदिरा पान कर लिया था एक बंजुल नाम बनियां वहां आया जोकि विशेषकरगोघातीथा उससे उन तीनोंने पूर्व्वरीत्यनुसार पूँछा कि तुम कौन हो ३५ तब उसने भी जो पातक पूर्व्व समय में किया था सब कहा व वहभी उसी स्थानपर बैठगया ३६ इसप्रकार वहांपर चार महापापी इकट्ठे होगये किसीने किसी के भोजन आच्छादन के लिये कुछ न पूँछा परस्पर वार्ता करते भये न एक आसनपर बैठते न एक बिछौने पर सोते ३७। ३८ इसप्रकारके दुःख युक्त वे चारो नानातीर्त्थों में संगही संग गये ॥

चौ० पर तिनके अतिघोरसुपापा । नहिं छूटे तनु तापित तापा ॥
नहिं सामर्त्थ्य तीर्त्थ महँ काऊ । जो करतो तिन पाप नशाऊ ॥
विदुरादिक समस्त ते पापी । कालिंजर महँ गये संतापी ॥
जोगिरिवरचहुँदिशिविख्याता ॥ सब अघहरणसुपुण्यप्रदाता ३९।४० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेएकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

## बानबे अध्याय ॥

दो० बानबे के महँ सकल वे काशीआदि अन्हाय ॥
कुञ्जारे वासञ्ज महँ भे विशुद्ध यह गाय १

कुंजल अपने पुत्रसे बोला कि कालंजरमें आकर वे सब महापापोंसे जलतेहुये व विचेतन दुःखितहो हाहाकार करते हुये रहने लगे १ वहां एक महायशस्वी कोई सिद्ध आया उसने उन सबोंसे पूँछा कि तुमलोग किस दुःखसे दुःखितहो २ उन सबोंने अपना वृत्तान्त उस महाप्राज्ञ सिद्धसे कहा भी व वह सब ज्ञानों में विशारद भी था इससे उसने कृपाकर यह कहा कि ३ जब सोमवती अमावास्याहो तो प्रयाग वा पुष्कर अर्घतीर्थ अथवा वाराणसीपुरी में ४

तुम सबलोग पहुँचो उनमें भी काशी वा प्रयागमें क्योंकि सोमवती में गंगाका अधिक माहात्म्यहै व इन दोनों तीर्थों में गंगाहै जैसेही स्नान करोगे तुरन्त मुक्त होजाओगे ५ पाप सब छूटजायँगे व शरीर निर्म्मल होजायँगे इसमें कुछभी सन्देह नहींहै जब उस सिद्धने ऐसा उपदेश किया तो सबोंने हाथ जोड़कर उसके प्रणाम किया ६ व सबके सब कालंजरसे शीघ्रही चलखड़ेहुये व पापोंसे पीड़ित वे लोग जाकर वाराणसी में पहुँचे व वहां स्नान किया ७ फिर प्रयाग को गये वहांसे पुष्करको गये ऐसेही अर्घतीर्थमें भी घूमते घामते स्नान करते रहे एक समय सोमवारको अमावास्या पड़ी तब महापुरी काशीजीमें ८ विदुर चन्द्रशर्म्मा वेदशर्म्मा व मदिरा पीनेवाला पापी वह बंजुल वैश्यचारो पहुँचे ९ चारो महादुर्द्धर्ष पापीथे परन्तु उससोमवतीके पर्व्वमें गंगाजी में सबोंने स्नानकिया व स्नानमात्रही से सबके सब गोवध आदिक पापोंसे छूटगये १० क्योंकि वे ब्रह्महत्या गुरुहत्या सुरापानादिक पापों से युक्तथे व उनके ये सब पाप नष्ट होगये सो क्यों न वे पापोंसे छूटजाते ११ क्योंकि पापोंसे लिप्त लोगों के अघ मिटानेही के लिये पुष्कर अर्घतीर्थ व पापनाशक प्रयाग तीर्थराज पृथ्वीपर हैं व ऐसेही वाराणसीपुरी भी सबके पापही नाशने के लियेहै १२ व वे चार कृष्णवर्ण के हंस होकर आकाश में उड़नेलगे व फिर उन्होंने हंसके शरीर में घूम २ कर सब तीर्थोंमें स्नानकिया १३ परन्तु सब तीर्थोंके जलोंमें स्नान करने से उनकी कृष्णता नहीं मिटी तब फिर भी भूतलपर जितने सुन्दर २ पुण्यतीर्थ हैं उनमें उन्होंने क्रमसे स्नानकिया १४ हेमहाराज ! जिन२ तीर्थोंमें उन्होंने स्नान किया वे सब हंस रूपसे अत्यन्त दुःखित तीर्थ जातेभये १५ पातकरूपिणी स्त्रियां चारों ओर घूमती भईं अड़सठ अच्छे तीर्थों में हंस रूपसे घूमती भईं १६ और तिन महातीर्थों के साथ फिर पापसे आकुल मत्त होकर मानससर में आये १७ परन्तु हे महाराज ! वहां स्नान करने से भी पाप न छूटा तब लज्जित होकर मानससर तीर्थ हंसका रूप धरके १८ वहां से उड़गया हे पुत्र ! जिसको कि तुमने बड़ा भारी एक हंस देखने को बताया था इसके पीछे वे सब काले हंसों

के रूप के पापी नर्म्मदाके उत्तर तीरपरके उस संगमपरगये जोकि पापों का नाशक है १९ सो नर्म्मदा व कुब्जा के उस संगम में स्नानमात्र से सब पापों से सबकेसब निर्म्मुक्त होगये क्योंकि वह संगम सब देवताओं व सिद्धों से निषेवित रहता है २० वे अपनी कृष्णताको छोड़कर श्वेतताको प्राप्तहोगये व जिस जिस तीर्थ में वे हंसजाते थे सबमें स्नानकरते थे २१ परन्तु जो उन्हींके रंगकी काली वे चारस्त्रियां थीं उनके संग जाती तो थीं पर स्नान किसी तीर्थमें नहीं करती थीं देखकर हँसतीथीं इसी से पापनहींगया तोयानल से कुब्जा के श्रेष्ठपाप २२ भस्महोगये तब वे स्त्रियां मृतक होगईं ब्रह्महत्या गुरुहत्या सुरापान अगम्यागमनके पाप २३ नर्मदा और कुब्जा के नाशकिये भस्महोगये और जो नदी के किनारे मृतकहुईं वेभी हतहुईं २४ अड़सठ अच्छे तीर्थों में हंसरूप से हंस के साथ आये तिसको तुम मानससर जानो २५ चारकाले हंस थे उनके नाम मुझसे सुनो प्रयाग पुष्कर उत्तम अर्घतीर्थ २६ चौथी काशीजी ये चारों पापके नाशनेवाले हैं ब्रह्महत्यासे युक्त चारों घूमतेथे २७ ये तीर्थ दुःखसे तीर्थोंमें घूमें परन्तु उनके घूमते हुए भी घोरपाप न गये २८ कुब्जा के संगम में शुद्ध और निश्चय पाप से छूट गये पुण्य सब तीर्थों में यह संमत है २९ उन में तब से प्रयाग तो सब तीर्थों के राजा होगये क्योंकि जब इन्द्र ने बुलाया था तब वे तीर्थराज न थे सब तीर्थों में घूमते घूमते कुब्जा व नर्म्मदाके संगम में स्नान करनेही से तीर्थराजहुये क्योंकि अन्य तीर्थ तभीतक गर्ज्जते हैं जबतक कि नर्म्मदा नहीं देखते ३० जोकि ब्रह्महत्यादि पापोंके नाशने के लिये प्रतिष्ठित है ऐसेही कपिला व नर्म्मदाका संगमभी सब पापोंके नाशने में समर्थ है ३१ मेघनाद के संयोग में और उरु संगम में भी सबपाप नाशते हैं महापुण्यकारी महाधन्य और सब ओर दुर्ल्लभ नर्म्मदा है ३२ ॐकारेश्वर में भृगुक्षेत्र में व नर्म्मदाकुब्जा के संगम में भी मनुष्यों को नर्मदा दुःख से प्राप्तहै व माहिष्मतीनाम पुरी के पाससुरोत्तमतीर्थ है ३३ एक ऐसाही वहां विटंकासंगम नाम तीर्थ है व श्रीकण्ठतीर्थ मंगलेश्वर

तीर्थ भी हैं बहुत कौन कहे जहां जहां नर्म्मदा नदी है सब कहीं दुर्लभही है व सब पुण्यों से समाकुल है ३४ ॥

चौ० महापुण्य तीर्थनकी माला । करत विनाश पापके जाला ॥
उभयमध्य जहँ तहँ नर कोई । स्नानकरत बिन पातक होई ॥
जहँ नर्म्मदा अपरनदि सङ्गम । होय कहूँ सुन्दर हृदयङ्गम ॥
तहां सनान करे जो कोई । अश्वमेध फल पावत सोई ॥
यह तुमसन सुत हम सब भाषा । जो तुम पूँछ्यहु करि अभिलाषा ॥
इमिकहिदुसरेसुतसोंकुञ्जल । पुनितिसरेसोंबोल्यहुगतछल ३५।३७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

## तिरानबे अध्याय ॥

दो० तीरानबयें महँ कह्यो यकवन में सरएक ॥
तहँदुइपुनिदुइमिथभखे मांसनकीन विवेक १

कुञ्जल ने अपने तीसरे पुत्र विज्वलसे कहा कि पुत्र पृथ्वीमेंघूमते तुमने क्या अपूर्व आश्चर्य देखा है वह हमसे कहो यहांसे आहारके अर्थ जिस देशको जातेहो व वहां जो कुछ हे पुत्र ! शुभ वा अशुभ जो आश्चर्यकी बात देखते सुनते हो हमसेकहो १।२ तब विज्वलनाम उसका तीसरापुत्र बोला कि मेरुपर्व्वतपर एक आनन्द नाम का वनहै वह दिव्य वृक्षोंसे समाकीर्ण व फल पुष्पमय सदा रहताहै ३ देववृन्दों से समाकीर्ण व मुनि सिद्धों से युक्त रहता है सुरूपवती अप्सराओं से व गन्धर्व्व किन्नर सर्पों से भी उपशोभित रहता है ४ वापी कूप तड़ागों से व नदियों से व झरनों से भूषित है व वह दिव्य आनन्दकानन पुण्यात्मा नानाप्रकारके भावों से प्रकाशितहै ५ व किरोड़ों हंस कुन्दइन्दु के समान उज्ज्वल विमानों से समाकुल रहताहै गन्धर्व्वादिकों के सुन्दर गानेके कोलाहलों से व मेघध्वनियों से शब्दित रहता है ६ व भ्रमरों के निनादों से सर्व्वत्र निनादित रहताहै व चम्पा चन्दन आम के फूल अनेक वृक्षों से अतिप्रकाशित लगताहै ७ ऐसा वह आनन्दवन उत्तमहै कि नानाजातिके पक्षी उसमें

अनेकप्रकारकी बोली बोलाकरतेहैं उनके कोलाहलसे युक्तहै ८ इस प्रकारसे शोभित आनन्दवन हमने सुशोभित देखा उसमें एक अति विमल सरहै व सागरके समान शोभित होताहै ९ व कमलों की शुभ सुगन्धि से युक्त पुण्यजलों से पूर्णहै नाना प्रकारके जलजन्तुओं से व हंस कारण्डवादि जलपक्षियों से युक्त है १० इस प्रकार का सुन्दरसर उसवनके मध्य में विराजमान है वह देव गन्धर्वों से शोभित व मुनिसमूहों से अलंकृत रहता है ११ किन्नर नाग चारण व गन्धर्वों से अत्यन्त शोभित है हे तात! वहांपर मैंने आश्चर्य देखा है जो कहने को समर्थ नहींहूं १२ सुन्दरविमान और कलशों से उपशोभितहै छत्रदण्ड और पताकाओं से प्रकाशितरहता है १३ सब भोगसे युक्तहै किन्नर गानकरते हैं गन्धर्व अप्सराओंसे शोभायमानहै १४ वहांपर एक महासिद्ध बैठाहै जिसकी स्तुति सब तत्त्ववेदी ऋषिलोग करते हैं रूपमें तो ऐसा अद्वितीय है कि मर्त्यलोक में कोई दूसरा वासी कहीं दिखाईही नहीं देता १५ वह सब आभरणों की शोभासे शोभित व दिव्यमाला धारण करनेसे अलंकृतहै व महारत्नों से बनीहुई एक माला उसकी छातीपर विराजती है १६ उसी सरके समीपमें स्थित एक श्रेष्ठमुखवाली स्त्रीदेखा कि जिसके सुवर्णकी गुटिकाओं के बीच२ में बड़ी२ मोतियों से १७ गुहीहुई माला गले में विराजती है कङ्कणादि अन्य सब भूषणों सेभी भूषितहै दिव्यवस्त्र धारणकिये व चन्दनादि सुगन्धों से अनुलेपित है वह सिद्ध तो बैठाहीथा उसीप्रकार का एक और महादिव्य पुरुष विमानपर चढ़ा हुआ वहां आया जिसकी स्तुति नानाप्रकारके लोग करते थे व गीतें गायगाय सुनाते १८ उसके संग रतिके समान रूपवती एक स्त्रीभी उसी विमानपर चढ़ीहुई आईथी जिसके पयोधर व पश्चाद्भाग अति पीनथे व सब भूषणों की शोभा से उसके अङ्ग शोभित थे इस लिये सब प्रकारसे वहभी उसी के आकारकी थी १९ उन दोनों को हमने विमान पर चढ़े हुये आते देखा दोनों रूप लावण्य माधुर्य्यादि गुणों से व सब शोभा से युक्तथे २० विमान पर से उतरकर दोनों उस तड़ाग के तटपर आये व हे तात! उन महात्मा कमलके समान

नयनवाले स्त्री पुरुषों ने उस सरमें स्नान किया २१ फिर दोनों स्त्री पुरुषों ने शस्त्रलेकर परस्पर काटकर एक दूसरे का थोड़ा थोड़ा मांस भक्षण किया जब ये दोनों खाचुके तो उसीप्रकार के दो और आये २२ प्रातःकाल में कमल के समान नेत्रवाले स्त्री पुरुषों ने रूप में वैसेही शव देखे २३ उसमें पुरुष देवों के समान था जैसा रूप उसकी भार्य्याका था वैसाही जो इस दूसरे के सङ्ग स्त्री आई उसकाथा तो इन दोनों मेंकी जो स्त्री थी शस्त्र से काट काट अपने पति का मांस खानेलगी उसका मांस खाते खाते वह स्त्री बनाय रक्त से भीग गई व वैसेही फिर उस पुरुषने उस स्त्री का मांस भक्षण किया २४।२६ क्षुधासे पीड्यमान होकर उन दोनों नेभी परस्पर मांस भक्षण किया व इतना इतना मांस दोनों ने खाया जिससे दोनों तृप्त होगये २७ व उस सरका जलपीकर फिर दोनों सुखी होगये कुछ काल वहां स्थित रहकर फिर विमान पर चढ़कर चले गये २८ फिर हे तात! दूसरे दिन हमने एक और आश्चर्य्य देखा कि रूपसौभाग्यसम्पन्न सुन्दर लक्षणवाली दो स्त्रियां वहां आईं २९ तो उन्हों ने भी मांस खाया व दोनों मांस भक्षणके पीछे अति दारुण शब्द करती हुई हँसीं ३० फिर नित्यही दोनों अपने मांसोंको खावें स्नानादिकर हमारे देखतेही मांस भक्षण करें ३१ फिर एक दिन हे तात ! भयानक आकार युक्त दो स्त्रियां और आईं इनके बड़े विकराल डाढ़ थे व अतिविभीषणरूपथे ३२ येदोनों आतेही कहने लगीं कि हमको देवो हमको देवो ऐसा बार २ कहने लगीं वनमें बसतेहुये हमने ऐसे चरित्र देखे ३३ कि नित्य वे दोनों आते हैं व एक दूसरेका मांस काट २ कर भक्षण करते हैं व फिर उन दोनों के शरीर पीछेसे पूर्ण होजातेहैं नित्यही उत्तर कर वे दोनों और और भी हमारे देखतेहुये पूर्वोक्त सदृश चेष्टा करते हैं ३४।३५ सो तो आश्चर्य्य हमने देखाहै उसका कारण आपसे पूँछते हैं कि यह सब सन्देहही के करानेवाला वृत्तान्तहै प्रसन्न चित्तसे इसके वृत्त हमसे आपकहें ३६।३७ कि जो पुरुष स्त्री समेत विमानपर चढ़कर वहां आया व दिव्यरूप धारण कियेहुये था वह कमलनयन कौनहै ३८ व वह स्त्री कौनहै जो मांस

भक्षण करती है व वे पुरुष स्त्री कौन हैं जो कि परस्पर एकदूसरे का मांस भक्षण करते ३९ व उनको इस प्रकार मांस खातेहुये देखकर जो दो स्त्रियां हँसती थीं हे तात! वे कौन हैं हमसे कहो व जो दो स्त्रियां और आईं और देवो २ कहती थीं वे कौनहैं ४० उन दोनों महाभयङ्करी स्त्रियों केभी वृत्त बताओ हे तात! हे सुव्रत! यह हमारा संशय तुम काटो ४१ हे महाराज! ऐसा कहकर वह विज्वल नाम पक्षी फिर चुपहोरहा इसप्रकार तीसरे पुत्र विज्वलसे पूंछे गये ४२ कुञ्जलजी च्यवनजी के सुनते २ सब वृत्तान्त कहते भये ४३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेत्रिनवतितमोऽध्यायः

## चौरानबे अध्याय ॥

दो० चौरनवें महँ निजतनय सों कुंजल कहयेह ॥
दानसुबाहु महीपसों जैमिनि जिमिसहनेह १

यह सुनकर कुञ्जल शुक अपने पुत्र विज्वलसे बोला कि हे सुत! सुनो हम सब कारण कहेंगे जिससे वे दोनों वैसे अपने मांसभक्षी हुये १ सर्व्वत्र शुभाशुभ कर्म्मही कारण होतेहैं इसमें कुछभी संशय नहीं है हे पुत्र! पुण्यकर्म से पुरुष सुख भोगताहै २ व पापयुक्त कर्मसे दुःख भोगता है व सूक्ष्म कार्य्य के विचारमें शास्त्रहीकी द्वारा ज्ञान होताहै यों साधारण रीति से नहीं ३ मुनिलोग शास्त्रकी द्वारा अपने २ धर्म्म को फिर २ विचार कर करते हैं इससे मनुष्यभी निपुण मनसे जानकर तब कर्म्म करनेका प्रारम्भ करते हैं ४ जिसमें उस कर्म्मकी पूर्णता व फल अच्छे प्रकारहों देखो इन्धन कैसाही शुष्कहो पर जब अग्निमें डालो तो उसमें सब ओर ज्वालाओंसे ५ जल निकलने लगताहै जिससे वह गीला होजाताहै ऐसेही हे वत्स! जैसा अन्न जल मनुष्य खाता पीताहै वैसाही उसका रूप उस परिपक्व अन्न के रसके कारण होताहै इसमें कुछ संशय नहींहै जो जैसा करताहै वैसा भोगताहै ६ । ७ कर्महीं प्रधान है जो वर्षारूपसे वर्त्तमानहै जैसा बीज किसान खेतमें बोताहै ८ हे तात! वैसाही फल भी भोगताहै इसमें कुछ सन्देह नहीं है ऐसेही जैसा कर्म किया

जाताहै वैसाही फलभी भोगने पड़ता है ९ विना कर्म्म किये कोई
क्षणभरभी नहीं रहसक्ता इससे कर्म्मही के वशीभूत पुरुष रहताहै
संसारमें कर्म को भागी और कर्म के सम्बन्धी बांधव हमलोगहैं १०
कर्म पुरुष को सुख दुःख में प्रेरित करतेहैं सोना वा चांदी जैसा लगा
पाते हैं ११ तैसेही पूर्वकर्म के वशके पीछे चलताहुआ प्राणी भी
पाताहै आयु, कर्म्म, धन, विद्या व मरण ये पांच जब प्राणी गर्भमें ही
में रहताहै तभी नियत करदिये जाते हैं जैसे मिट्टी का पिण्ड हाथमें
लेकर कुम्हार जैसा पात्र चाहताहै उससे बनालेता है १२ । १३
ऐसेही जैसा कर्म्म प्राणी करते हैं उसी के अनुसार देवता मनुष्य
पशुत्व पक्षित्व आदि मिलते हैं १४ व सर्प्पादि योनि को स्थावर
भाव को भी प्राणी अपनेही कर्म्मों से जाते हैं बस वही वह भोग-
ताहै जिसने जो कियाहै १५ बस अपने आप कियाहुआ सुख व
अपनेही आप किया दुःख प्राणी भोगताहै गर्भ की शय्या को ग्रह-
णकर पूर्व देहिक भोगताहै १६ पूर्व्वदेहके कियेहुए कर्म्म के फलको
छोड़कर प्राणी और कुछभी नहीं भोगसक्ता जैसा जिसने किया है
वही भोगेगा पूर्व्वजन्म के कियेहुये कर्म्म के विपरीत कोई भी पुरुष
बलसे वा बुद्धि से नहीं करसक्ता १७ सब अपनेही किये हुये सुख
वा दुःख लोग भोगते हैं हेतुओं से व कारणों से जो अन्यथा करने
लगते हैं वे आप अहङ्कार से बाधित होजाते हैं १८ जैसे सहस्रों
धेनुओं के बीचमें खड़ीहुई अपनी माताहीको बछड़ा चीन्हकर पहुँ-
चताहै ऐसेही शुभ वा अशुभ कर्म्म करनेवाले को पहिचानकर उसी
के पीछे लगताहै १९ विना भोग किये कर्म्म का नाश नहीं होसक्ता
इससे पूर्व्व जन्मके कियेहुये कर्म्म बन्धन से बँधाहुआ पुरुष उसके
विपरीत कैसे करसक्ता है २० शीघ्रताके साथ दौड़ते हुये के साथ
ही साथ कर्म्मभी दौड़ताहै व उसके बैठजानेपर कर्म्मभी बैठजाताहै
जैसा कि उसने पूर्व्वमें कियाहै २१ खड़े होजाने पर खड़ा होजाता
है व चलतेहुयेके पीछे २ चलने लगता है कर्म्म करते हुये के साथ
कर्म्म करनेलगताहै जैसे छाया सब अनुकरण करती है वैसेही कर्म्म
भी २२ जैसे छाया व घाम का नित्य परस्पर सम्बन्धहै ऐसेही कर्म

का सम्बन्ध इस शरीरसे होताहै उपसर्ग त्रिषयहैं उपसर्ग वृद्धावस्था-
दि हैं २३ ये सब प्रथम कर्म्म से पीड़ित पुरुषको पीछे पीड़ित करते
हैं जिसको जहां दुःख वा सुख भोगनाहै २४ उसे वहां कर्म्म बलसे
रस्सी से बांधकर जैसे तैसे पहुँचादेताहै ऐसा प्राणियों के सुखदुःखकी
प्राप्तिके उपायकहे हैं २५ बस इसके अन्यथा नहीं होसक्ता सोतेजागते
चलते फिरते कर्म्महीं के अनुसार सब होताहै जो भाग्य के विपरीत
किया चाहता है वह आप मारा जाता है २६ जो वस्तु नष्ट होने पर
नहीं होती उसकी रक्षा शस्त्र, विष, दुर्गम स्थानों से भी होतीहै जैसे
कि पृथ्वी में वृक्ष गुल्म तृणादिकोंके बीजोंकी रक्षारहतीहै २७ ऐसेही
शरीरमें कर्म्म रहते हैं समयपाकर उत्पन्न होजाते हैं जैसे तैलके क्षय
होने पर दीपक बुझजाता है २८ ऐसेही कर्म्मके क्षयहोने से शरीर
नष्ट होजाता है व कर्म्मही क्षयहोनेपर तत्त्वज्ञानीलोग मृत्युकाहोना
भी बताते हैं २९ व मृत्युके कारण विविधप्रकार के रोगोंको बताते
हैं इससे मृत्युआदि के होने में कर्महीकी प्रधानता है ३० जो कर्म्म
पूर्व्वजन्म में किया जाताहै वह इसजन्म में भोगाजाता है हे तात !
जो प्रश्न तुमने हमसे इससमय पूछाहै ३१ इस अर्थ में हमने यह
तुमसे कहा कि वे दोनों अपने पूर्व्वजन्म के कर्म्मभोगते हैं जिनका
दारुण कर्म्म तुमने आनन्दवन में देखा है ३२ अब उन दोनोंके पू-
र्व्वजन्म के कर्म्म कहते हैं हे वत्स ! चित्तलगाकर सुनो हे तात !
कर्म्मभूमि यही है अन्य भूमियां भोगके अर्थ हैं ३३ जोकि नागा-
दिकों के लोकहैं उनमें जाकर यहां के कियेहुये पुण्यदानादिकों के
फल प्राणी वहां भोगते हैं कुछ कर्म्म नहीं करते सूतजी शौनकादि-
कों से बोले कि चौलदेश में महाप्राज्ञ रूपवान् गुणवान् व धीर
एकसुबाहु नाम राजाहुआ उसके समान पृथ्वीपर दूसरा और कोई
राजा नहीं है वह राजा विष्णुजी का महाभक्त महाप्राज्ञ वैष्णवों का
अतिप्रिय करनेवाला ३४ । ३५ व मन वचन कर्म्म तीनोंप्रकार के
कर्म्मोंसे श्रीमधुसूदनजी का ध्यान करता था व अश्वमेधादिक सब
यज्ञ उस राजसत्तम ने किये थे ३६ उस राजाके पुरोहित जैमिनि
नाम ब्राह्मणथे उन्होंने राजा को बुलाकर यह वचन कहा ३७ कि

हे राजन्! सुन्दर २ दान देतेरहो जिनसे सुख भोगने को मिले दातालोकों को तरता है व फिर मृतक होकर जन्म नहीं लेता ३८ व दान से सुख पाता है और निरन्तर यशभी पाता है व दानही से मनुष्योंके बीचमें अतुलकीर्त्ति होतीहै ३९ व जबतक दाताकी कीर्ति मर्त्यलोक में बनीरहती है तबतक कर्त्ता स्वर्ग में स्थित रहता है इसीसे दान दुष्कर होता है देने में नहीं समर्थ होता है ४० इससे सब प्रयत्नों से मनुष्यों को सदा दान देना चाहिये यह सुन राजा सुबाहु बोला कि हे द्विजोत्तम! दान व तप दोनों में कौन कर्म सुदुष्करहै ४१ व किसका अधिक फलहै सो हमसे कहो तब जैमिनि बोले कि पृथ्वीपर दानकरना थोड़ाभी अतिदुष्करतर होताहै क्योंकि हे राजन्! यह बात प्रत्यक्ष लोकमें रहनेवालों में दिखाई देतीहै कि अपने प्रिय प्राणोंको छोड़कर लोभसे मोहित लोग धनकेअर्थ ४२ ४३ समुद्र में व अग्निमें भी पैठ जातेहैं व अपनी जीविकाके लोभ से बहुतलोग नीचवृत्ति करलेते हैं ४४ व इसी प्रकार बहुतसे ऐसे कर्म करते हैं जिसमें बहुतक्लेशवाली अनेकजीवों की हिंसा होतीहै व बहुत लोग खेती करते हैं ऐसे २ दुःखोंसे इकट्ठा कियाहुआ धन प्राणोंसे भी अधिक प्रियतर होताहै ४५ इससे हे पुरुषव्याघ्र! धन देना बड़ा दुष्कर कर्म्म है पर न्यायसे इकट्ठा कियाहुआ धन ४६ सोभी श्रद्धापूर्वक देना बहुतही कठिनतरहै सोभी सत्पात्र को देना उससे भी अधिक दुष्कर है क्योंकि धर्म्मसुता श्रद्धादेवी पवित्र करतीहै व विश्वभर को तारती है ४७ सबको उत्पन्न करती है व संसारसागर से तारती है व सब पदार्थ श्रद्धा करनेवाले को देती है महात्मालोग श्रद्धाही से धर्म्मका साधन करते हैं धनोंसे नहीं ४८ क्योंकि मुनियों के पास एक कौड़ीका भी धन नहीं था पर श्रद्धा धर्म्मके बलसे स्वर्ग को चलेगये हे नृपोत्तम! नानाप्रकार के भेदोंसे दान अनेक हैं ४९ परन्तु अन्नदान से पर और कोई भी दान प्राणियों को गति देनेवाला नहीं है इससे जलसहित अन्नदेना चाहिये ५० मधुर पुण्यकारी वचनसे युक्त अन्नसे अधिक कोई दान न यहां के लिये उपयोगी है न परलोकही के लिये ५१ न तारनेही के लिये

अन्य कोई दान है न हित व सुख सम्पत्तिही के लिये जो निर्म्मल चित्तसे व श्रद्धासे विधिपूर्व्वक सत्पात्र को अन्न दियाजाता है ५२ उस एक अन्नदेने का फल पुरुष भोगता है भोजन करने के समय उन कवलोंमें से एक कवल देदेना चाहिये व मूठीभर पसर भर जितनाही होसके अन्नदेतारहे इसमें सन्देहनहीं है ५३ उसका वह एक कवल वा मूठी पसरभर अन्न अक्षय होजाता है व दानका महाफल होता है व जो न पसरभर होसके न मूठीभर होसके ५४ तो किसी अमावास्या संक्रान्ति पूर्णमासी आदि पर्वमें श्रद्धापूर्व्वकएकब्राह्मण को भक्तिसे भोजन करादे तो हे राजन् ! एकभी प्रधान अन्नके दान से जन्मान्तरमें नित्य अन्नको भोजन करताहै ५५।५६ क्योंकि पूर्व्व जन्ममें भक्तिसे जिसने थोड़ा भी अन्नदान किया है जन्मान्तरको पाकर नित्य वह प्राणी यथेष्ट अन्नभोजन करता है ५७ व जो कोई नित्य ब्राह्मणोंको अन्नदान करते हैं वे अन्न देनेवाले मनुष्य जन्मान्तर में मीठे स्वादुयुक्त अन्न भोजन करनेको पाते हैं ५८ ॥

चौ० वेदपारगामी ऋषिलोगा । अन्नदान कहँ कहें सुभोगा ॥
प्राणरूप है अन्न न शंका । अमृतोद्भव यह अन्न अनंका ॥
अन्नदान जिन कीन कदापी । प्राणदान तिन कीन अपापी ॥
तासों अन्नदान भूपाला । करहु यत्नसों होहु कृपाला ॥
इमिसुनि जैमिनि वचनमहीपा । पुनि पूँछ्यहु मुनिसों कुलदीपा ॥
ज्ञानीपरममहात्मामुनिसों । भलीभांतिनृपनिजचितगुनिसों ५९।६१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

## पञ्चानबे अध्याय ॥

दो० पञ्चानवयें महँ कहे स्वर्ग चिह्न अरु दान ॥
जिन्हें सुनत नरवरनको होत भलीविधि ज्ञान १

राजा सुबाहु बोले कि हे द्विजसत्तम ! अब हमसे स्वर्ग के गुण वर्णनकरो तब ये सब दान स्वाभाविक हमकरेंगे १ जैमिनि बोले कि स्वर्ग में विविधप्रकारके दिव्य नन्दनादिक सब उद्यान रम्य मनोहर

काम पूरणकरनेवाले व पुण्यदायकहैं २ सब कालों में फरनेवाले वृ
से सब ओरसे शोभितहैं व अप्सराओं से सेवित दिव्यविमान प
हैं ३ व सब वहां के प्रदेश समान और इच्छा से सर्व्वत्र जानेवाले
हैं व तरुण सूर्य्य के किरणों के समान मोतियों की झालरें लगी है
४ व चन्द्रमा के मण्डल के समान उज्ज्वल सुवर्ण के पर्य्यङ्कों
बिछीहुई दिव्य शय्यायें सुख देनेवाली वहां विद्यमान हैं वे अ
भी सब कामनाओं से समृद्ध व सब दुःखों से विवर्ज्जितहैं ५ व
सब पुण्यात्मालोग सुखसे विचराकरते हैं जैसे पृथ्वी में विचरतेहैं व
न नास्तिकलोग जाते हैं न चोर न अजितेन्द्रिय पुरुष ६ न क्रूरस्वभा
वाले न चुगुली करनेवाले न कृतघ्नलोग न मानीलोग जाते हैं व सत
बोलनेवाले तपमें स्थित दयावान् शूरवीर क्षमा करनेवाले लो
वहां निवास करते हैं ७ यज्ञकरनेवाले और जो पुरुष दानदेने
स्वभाव रखते हैं वे सब वहीं जाते हैं वहां रोग, जरा, मृत्यु, शो
जाड़ा, घाम नहीं हैं ८ वहां किसीको क्षुधा पिपासा तो लगती
नहीं ग्लानि नहीं विद्यमान होती थे व और भी स्वर्ग के बहुत
गुणहैं हे महाराज ! ९ व वहां जो दोष हैं उनको भी एकाग्रचि
होकर इससमय सुनो जो कुछ शुभकर्म्म प्राणी यहां करताहै उ
का फल वहां भोगता है १० वहां फिर कुछ कर नहीं सक्ता य
बड़ा भारी दोष है व पराई श्रीशोभा देखकर असन्तोष बना
रहताहै यह भी दोषहै ११ फिर जैसेही उनका दान पुण्यका फ
चुकजाता है कि एकाएकी वहां से पतन होजाता है यहां जो कर्म
प्राणी करता है उसका फल वहीं भोगताहै १२ हे राजन् ! कर्म
भूमि यही लोक है व फलभूमि स्वर्ग्गभूमि है यह सुन रा
सुबाहु ने फिर पूँछा कि स्वर्ग्ग में तो तुमने इतने दोष बताये १
अब कोई निर्दोष स्थानहो तो बताइये जैमिनिजी बोले कि निर्दो
तो अन्य कोई लोक नहीं है ब्रह्मा के लोक में दोषहै १४ इसी
बुद्धिमान् स्वर्गकी प्राप्तिकी इच्छा नहीं करते हैं ब्रह्मा के लोकमें
विष्णुजीका परमपदहै १५ वह शुभ सनातन ज्योति परब्रह्म कहात
है वहां मूढ़ विषयी पुरुष नहीं जाते १६ व न दम्भी भययुक्त

ापी लोभी मोही क्रोधीलोग कभी वहां जातेहैं व जो ममताहीन
नरहंकारी निर्द्वन्द्व संयतेन्द्रिय होते १७ व जो ध्यानयोग में रतहोते
ं वे साधुलोग वहां जाते हैं जो तुमने हमसे पूँछा सो सब हमने कहा
।८ स्वर्ग के गुणदोष सुनकर राजा सुबाहु कहनेवालों में श्रेष्ठ
हात्मा जैमिनिजी से फिर बोले कि हे मुनिराज ! हमारे स्वर्गजाने
ी इच्छा नहीं है इससे हम वहां न जायँगे क्योंकि वहां से तो फिर
ीचे को गिरना पड़ताहै वह कर्म्म नहीं हम करसक्ते १९।२० इससे
् महाभाग ! केवल दानही एक कर्म्म हम न करेंगे क्योंकि उसके
रने से स्वर्गवास होताहै फिर वहांसे पातभी नीचे को होताहै २१
ेसा कहकर धर्मात्मा राजा सुबाहुने फिर कहा कि ध्यान योग से
म श्रीविष्णु भगवान् की पूजा करेंगे २२ जिससे कि प्रलय काल
ें भी दाहसे रहित उस श्रीविष्णुपदको जायँगे तब जैमिनिजी फिर
ोले कि हे महाराज ! तुमने सत्यकहा व सब कल्याणसेही युक्तकहा
२३ इसीसे सब धर्मशील राजालोग श्रीविष्णुकी पूजा महायज्ञोंसे
रते हैं जिनमें सब प्रकारके दान देते हैं २४ व यज्ञों में सबसे प्रथम
अन्नदान करते हैं फिर वस्त्र ताम्बूल देते हैं फिर कांचन भूमिदान व
ोदान करते हैं २५ इसीसे सुन्दर यज्ञ करने से प्राणी श्रीवैष्णव
ाम को जाते हैं हे राजन् ! दानसे सब तृप्त होते हैं व सन्तुष्ट
ोजाते हैं २६ तपस्वी महात्मा नित्यही पूजन करते हैं भिक्षा मांग
र अपने स्थानको आते हैं २७ फिर भिक्षाके द्रव्य के भागकरते
हैं ब्राह्मण को एक भाग गऊ के ग्रासके समान देते हैं २८ और
तपस्वी मनुष्य परोसियोंको भी एक भाग देते हैं तिस अन्नके दान
से मनुष्यफलको भोगते हैं २९ भूंख और प्याससे हीन विष्णुलोक
में जाते हैं हे राजेन्द्र ! तिससे आपभी न्याय से इकट्ठा किया धन
दीजिये ३० दानसे ज्ञान और ज्ञानसे सिद्धिको प्राप्त होगे ॥
चौ० जोनरयहआख्यानपुराना । सुनिहिपढ़िहिगाइहि करिमाना ॥
सकलपाप तजि हरिपुरजाइहि । नाना सुख तहँ सो जनपाइहि ३१।३२
इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने
गुरुतीर्थेच्यवनचरित्रेपंचनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

# छानबे अध्याय ॥

दो० छीयानवयें महँ नरक स्वर्ग्ग जातकरि जोय ॥
पुरुषस्वई वर्णन कियो आनकह्यो नहिं कोय १

राजा सुबाहुजी ने अपने पुरोहित जैमिनिजीसे फिर पूछा कि कैसे कर्म्मों के करने से मरनेपर मनुष्य नरक को जाते हैं व स्वर्गको कैसे कर्म्मोंके करने से मरनेपर जाते हैं यह हम से आप कहने के योग्य हैं १ जैमिनिजी बोले कि जो ब्राह्मणलोग पुण्यकारी ब्राह्मणों के कर्म्म छोड़कर लोभसे मोहित होकर कुकर्म्मोंके करने से जीविका करते हैं वेभी निश्चय नरकगामी होते हैं २ व जो पुरुष नास्तिक भिन्न मर्य्यादवाले काम विषयमें उन्मुख दम्भ करनेवाले कृतघ्नहैं वेभी निश्चय नरकगामी होते हैं ३ ब्राह्मणों से धन देने को सुनाकर जो धन नहीं देते हैं और ब्राह्मणोंकी द्रव्य के हरनेवाले हैं वेभी मनुष्य नरकगामी हैं ४ व जो पुरुष चुगुली करते हैं व जो मानी और मिथ्यावादी होते हैं व अतिअनर्थ वचन सदा बोला करते हैं वेभी मनुष्य निश्चय नरकगामी होते हैं ५ जो लोग परधन हरलेते हैं व पराये दूषणों को औरों से कहाकरते हैं व पराई स्त्रीके सङ्ग भोगकरते हैं वे भी मनुष्य निश्चय नरकगामी होते हैं ६ व जो मनुष्य प्राणियों के मारडालने में सदा निरत रहते हैं व पराई निन्दा में रत हैं वेभी निश्चय नरकगामी होते हैं ७ कूप तड़ाग पौसरा व बड़े सरों के विदारण करने व बिगाड़नेवाले मनुष्य निश्चय नरकगामी होते हैं ८ जो लोग अपने स्त्री पुत्र भृत्यवर्ग्गों और अतिथियों को शिक्षादेने को छोड़ वृथा उनके विपरीत करते हैं व पितरों देवताओं की पूजा उन्मत्तता के कारण नहीं करते वेभी मनुष्य नरकगामी होते हैं ९ जो कोई संन्यासी वैष्णवादि विरक्तों को दूषितकरते हैं व अन्य आश्रमों को भी दूषते हैं व अपने मित्रोंको दूषते हैं वे भी निश्चय नरकगामी होते हैं १० व जो लोग आद्यपुरुष ईशान सब लोकों के महेश्वर श्रीविष्णु भगवान्‌जीकी चिन्तना नहीं करते वे भी निश्चय नरकगामी होते हैं ११ ब्राह्मण, यज्ञ, कन्या, सुहृद,

साधुलोग व माता पिताआदि गुरुओं को जो लोग दूषते हैं वे नरकगामी होते हैं १२ काष्ठों से, लोहोंकी शलाकाओं से, शून्य पत्थरों से वा कांटों से जो लोग मार्ग रूँधदेते हैं वे निश्चय नरकगामी होते हैं १३ जो लोग किसी भी प्राणीका विश्वास नहीं मानते व कामसे पीड़ितहैं और सब प्राणियोंके संग कुटिलता करते हैंवे भी निश्चय नरकगामी होते हैं १४ जीविका से हीन भोजनकरने के लिये आयेहुये ब्राह्मणोंको जो निषेध करते हैं वेभी निश्चय नरकगामी होते हैं १५ व जो पुरुष किसीके खेत जीविका व गृहका छेदन करते हैं व प्रीति का छेदन करते हैं और किसीकी लगीहुई आशाका छेदन करतेहैं वे भी निश्चय नरकगामी होते हैं १६ व शस्त्रोंके बनाने वाले व बाणोंके बनानेहारे व धन्वाओंकेभी बनानेवाले व हे राजेन्द्र! इन शस्त्रादिकोंके बेचनेवालेभी नरकगामीहोते हैं १७ अनाथ व्याकुल दीन रोगी व वृद्धको देखकर जिन मूढ़ों को दया नहींआती वे भी निश्चय नरकगामी होते हैं १८ जोलोग किसी व्रतादिके करने का नियम करलेते व वे अजितेन्द्रिय पुरुष चंचलतासे पीछे को छोड़ देते हैं व नष्ट भ्रष्ट करदेतेहैं वे भी निश्चय नरकगामी होतेहैं १९ हे राजन्! इतने हमने नरकगामी मनुष्य कहे अब जो स्वर्गलोकको जातेहैं उनको कहते हैं सुनो २० सत्यसे तपसे क्षान्तिसे दानसे व अध्ययन से जो लोग धर्म्म करतेहैं वे मनुष्य स्वर्गगामी होतेहैं २१ व जो मनुष्य होम निरतहोते ध्यान देवताओंकी पूजामें तत्पर होते हैं दान करते हैं वे महात्मालोग स्वर्गगामी होते हैं २२ जो पवित्रहोकर पवित्र देशमें बैठकर वासुदेवमें परायणहो विष्णुको पढ़ते व गाते हैं वे मनुष्य स्वर्गगामी होतेहैं २३ जो मनुष्य माता पिताकी सदा आदर समेत सेवा करतेहैं दिन में कभी सोते नहीं वे मनुष्य स्वर्गगामी होते हैं २४ जो मनुष्य सब हिंसासे निवृत्त साधु के संगी सब के हितमें युक्त हैं वे मनुष्य स्वर्गगामी होते हैं २५ जो मनुष्य सब लोभों से निवृत्त रहते हैं सबकी सहतेहैं व सब किसी के आश्रयी रहते वे मनुष्य स्वर्गगामी होतेहैं २६ व हे भारत! शुश्रूषाओं से और तपस्याओं से जो गुरुओंको मानदेतेहैं व दान किसी

का लेते नहीं वे मनुष्य स्वर्गगामी होते हैं २७ सहस्रसे व्याप्त सहस्रके देनेवाले और सहस्रों की रक्षा करनेवाले मनुष्य स्वर्गगामी होते हैं २८ भय पाप घाम शोक दारिद्र्य व व्याधिसे व्याकुल पुरुषोंको जो लोग नहीं छोड़ते वे स्वर्गगामी होते हैं २९ हे भारत ! जो अतिरूपवान् होकर व युवावस्था को पाकर भी जितेन्द्रिय और धीर रहते हैं वे नर स्वर्गगामी होते हैं ३० व हे भारत! सुवर्णदान करनेवाले गोदान करनेवाले व भूमि देनेवाले व अन्न वस्त्र देनेवाले पुरुष स्वर्गगामी होते हैं ३१ व जो पुरुष मांगने से हर्षित होते हैं व दानदेकर फिर प्रियवचन कहते हैं व दान के फलकी इच्छा नहीं करते वे स्वर्गगामी होते हैं ३२ हे परन्तप! जो पुरुष मन्दिर धान्य अपने आप उत्पन्न करके दान करते हैं वे स्वर्गगामी होते हैं ३३ व जो लोग अपने शत्रुओंके भी दोष कभी नहींकहते व गुणोंका कीर्त्तन करते हैं वे स्वर्गगामी होतेहैं ३४ व जो नर पराई लक्ष्मीदेखकर व्यथित नहीं होते न मत्सर करतेहैं व हर्षितहो प्रशंसाकरते हैं वे स्वर्गगामी होतेहैं ३५ व जो महात्मा पुरुष प्रवृत्तिमार्ग में व निवृत्तिमार्ग में भी वेद व शास्त्रहीके कहने के अनुसार कर्मकरते हैं वे स्वर्गगामी होतेहैं ३६ जो लोग छल करनेके अभ्यासको जानतेहीनहीं न अप्रिय बोलनाजानतेहैं व सदा प्रियवचन बोलनेहीको मुख्यज्ञान समझते हैं वे स्वर्गगामी होतेहैं ३७ जो पुरुष क्षुधा तृष्णा श्रमसे पीड़ित होनेपर भी नामभाग करते हैं व हंतकारके करनेवाले हैं वे नर स्वर्गगामी होते हैं ३८ व वापी कूप तड़ाग पौसरा गृह और पुष्पवाटिका को बनवाते हैं वे स्वर्गगामी होते हैं ३९ जो पुरुष असत्य बोलनेवालों के विषय में भी सत्यही बोलते हैं व सरलता से हीनों के संगभी सरलता रखते हैं व जो शत्रुओं के संगभी हितही करते हैं वे स्वर्गगामी होते हैं ४० व चाहे जिस किसी कुल में उत्पन्न हुयेहों पर उनके सैकड़ों पुत्रहों व सौ वर्षतक जीवें व सब के ऊपर दयाकरतेरहैं व सदाचार करतेरहैं वे स्वर्गगामी होते हैं ४१ व जो नर दान देनेसे सब दिनों को सफल करते हैं व नित्यही व्रत ग्रहण करते हैं वे स्वर्ग-

गामी होते हैं ४२ जो मनुष्य गालीदेनेवालेको व स्तुति करने वाले को तुल्यदृष्टि से देखते हैं व आप सदा शान्तात्मा व जितात्मा बनेरहतेहैं वे स्वर्गगामी होते हैं ४३ जो लोग कष्टमें पड़ेहुये ब्राह्मणोंकी व स्त्रियोंकी रक्षाकरते हैं और नौकरोंकी भी रक्षा करते हैं वे पुरुष स्वर्गगामी होते हैं ४४ गंगाजी के तटपर पुष्करतीर्थ में व विशेष करके गयामें जो लोग पितरोंके लिये पिण्डदेते हैं वे स्वर्गगामी होते हैं ४५ जो नर संयम करके इन्द्रियों के वशमें नहीं पड़ते व लोभ भय क्रोध कभी नहीं करते वे स्वर्गगामी होते हैं ४६ जो पुरुष अपने शरीर में काटतेहुये जुआं खटमल डांसआदि जन्तुओं की रक्षा अपने पुत्रके समान करते हैं वे स्वर्गगामी होते हैं ४७ जो लोग विधिपूर्वक ज्ञानका संचय करते रहते हैं व सुख दुःखादि द्वन्द्वों को सहते हैं वे स्वर्गगामी होते हैं ४८ जो पवित्र पुरुष कर्म्म मन व वचन से पराई स्त्रीके संग भोग नहीं करते व पवित्रचित्त रहते हैं वे सतोगुणी मनुष्य स्वर्गगामी होतेहैं ४९ जो लोग निन्दित कर्म्म करतेही नहीं जो कुछ करतेहैं वेदशास्त्र पुराणसे विहित करते हैं व अपनी शक्तिको जानते हैं वे स्वर्गगामी होते हैं ५०

चौ० यहहमतुमसनसबन्नपगावा । अरुनिश्चयकरिसकलसुनावा ॥ दुर्गतिसुगतिसदानरपावत । निजकर्म्मनसोंनिजमनभावत ५१

चौपैया ॥ जो नर प्रतिकूला नहिं अनुकूला करत आन के संगा । सो नरकहि जाई ढोलबजाई यहनहिं मृषाप्रसंगा ॥ जो करु सब केरो सुहित घनेरो निजजीवन भर प्राणी । सो सबसुख पावत निज मनभावत सत्य सत्य यह वाणी ५२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ माहात्म्येच्यवनचरित्रेषण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

## सत्तानबे अध्याय ॥

दो० सत्तानवयें महँ कह्यो हरिपुरगमन निपात ॥
नृप सुबाहु वमदेव मुनि करि संवाद कुबात १

कुञ्जल अपने तीसरे पुत्र विज्वल से बोला कि राजा

इस प्रकार जैमिनि से अधर्म्म व धर्म्मकानिर्णय सुनकर फिर उन मुनिसे बोले कि १ हे द्विजोत्तम! हम धर्म्म करेंगे पुण्यकरेंगे जगद्योनि वासुदेव भगवान्‌की सदैव पूजाकरेंगे २ तब सब कामों से पूजित राजा आनन्दसे होम करने व जप करनेसे मधुसूदनजी को पूजते भये यज्ञकर तप करके विष्णुभगवान्‌के लोक को चलेगये परन्तु वहां पहुँचने पर उन्होंने देवदेव श्रीविष्णुभगवान् को न देखा ३ । ४ व बड़ी भारी जीवके पीड़ा करनेवाली क्षुधा और तृष्णा राजाको वहां लगी ५ व राजाकी स्त्री भी वहां संग गई दोनों राजा रानी तीव्र क्षुधा पिपासासे पीड़ितहुये व जब हृषीकेश भगवान्‌जी के दर्शन न हुये तो बड़े दुःखसे युक्त हुआ ६ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि राजा स्त्री समेत इसप्रकार क्षुधा से जरव्याकुल हुआ व अनेक पीड़ाओंसे व्याकुलहुआ ७ व मारे भूख के इधर उधर घूमने दौड़नेलगा यद्यपि सब आभरणों की शोभासे युक्त था व सुगन्धित चन्दनादि लगाये था वस्त्रधारेथा ८ पुष्पोंकी माला धारण किये हारकुंडल कंकणोंसे शोभित था व रत्नोंकी दीप्तिसे शोभित था ९ इस प्रकार दुःखित राजा पाठकों से स्तुति को प्राप्त दुःख शोकसे युक्त होकर अपनी स्त्री से बोला १० कि हे सुशोभने! तुम्हारे साथ हम विष्णुलोक को प्राप्तहुये ऋषियों से स्तुति को प्राप्त विमानपर चढ़कर आये ११ किस कर्म से यह क्षुधा अत्यंत बढ़ी है और विष्णुलोक को प्राप्त होकर मधुसूदनजी को नहीं देखा १२ हे भद्रे! सो क्या कारणहै जो बड़े फलको हम नहीं भोगते अपने कर्म से यह दुःख वर्त्तमान हुआहै १३ रानी इस प्रकार राजाके वाक्य सुनकर उनसे यह बोली १४ कि हे राजन्! आपने सत्य कहा धर्म का फल नहीं है वेदशास्त्र और पुराणोंमें जे ब्राह्मणलोग पढ़तेहैं १५ कि यहां आनेपर दुःखशोक नहीं होता सब दोषों से प्राणी छूटजाता है जैसेही श्रीविष्णु चक्रधारी भगवान्‌जी के नामोंका उच्चारण पुरुष करता है १६ कि पुण्यात्मा महाभाग होजाता है व इसी से सब महात्मालोग सदा जनार्दन भगवान् का ध्यान करते रहतेहैं व इसी से तुमने भी देवदेव शंख चक्र गदा धारण कियेहुये श्रीहरिको

आराधना की है १७ ब्राह्मणों के कहने परभी अन्नादि दान ब्राह्मणोंको नहीं दिया तिसीका फल जानती हैं क्योंकि मधुसूदनजी को यहां आकर भी नहीं हम तुम देखते १८ हे राजन्! व क्षुधा हमको बाधित करती है व पिपासा तो सुखायेही डालती है कुञ्जल अपने पुत्रसे बोला कि जब राजा से रानी ने ऐसा कहा तो राजा और भी चिन्ता से व्याकुल इन्द्रिय हुआ १९ इतनेमें वहीं श्रम नाशनेवाला पुण्यकारी एक आश्रम राजाने देखा जोकि दिव्यवृक्षों से समाकीर्ण व तड़ागों से उपशोभित था २० व पुण्यकारी जलसे भरीहुई वापी कुण्ड तड़ागों से उपशोभित था उन वाप्यादिकों में हंस कारण्डव आदि पक्षी अपनी मधुरवाणी बोलते थे कमलोंसे शोभित था २१ व हे पुत्र! वह आश्रम तत्त्वके निश्चय जाननेवाले मुनियों से उपशोभित होताथा दिव्य वृक्षों से युक्त मृगसमूहों से शोभित था २२ अनेक प्रकार के पुष्पोंसे युक्त सुन्दर सुगन्ध से आकुल द्विज सिद्धों से युक्त और ऋषि शिष्यों से आकुलथा २३ योगी व योगीन्द्रोंसे युक्त व देववृन्दों से अलंकृत था व सुफल कदली के वन से चारों ओर से शोभित था २४ नानाप्रकार के वृक्षों से समाकीर्ण होने से सब कामों से युक्तथा चन्दनादि सुगन्धित और अच्छे फलवाले वृक्षों से सदा शोभित होता था २५ इसप्रकार पुण्यों से समाकीर्ण व ब्रह्म लक्ष्मी से युक्त हुआथा सुबाहुराजा तिस अपनी स्त्रीसमेत २६ सब कामना देनेवाले महापुण्यकारी उस वनमें प्रवेश करतेभये जहां सब दिशा प्रकाशित करताहुआ महादीप्ति से सूर्य्यके समान प्रकाशित होता योगासनमें बैठा योगपट्ट से युक्त २७। २८ वैष्णवों में श्रेष्ठ वामदेवऋषि श्रेष्ठ थे वे मुनि भुक्तिमुक्तिप्रदायक श्रीभगवान् हृषीकेशजी का ध्यान कररहे थे २९ ऐसे मुनिसत्तम महात्मा उन वामदेवजी को देखकर अपनी प्रियाके सहित राजा ने शीघ्रता से जाकर प्रणाम मुनि के किया ३० व वामदेवजीने भी राजा को प्रणाम करते हुये देखा तब स्त्रीसहित राजा को आशीर्वादों से प्रसन्न करके ३१ फिर सुन्दर पुण्यआसनपर राजाको बैठाया फिर अर्घ्य पाद्याचमनीयअच्छीतरह राजा रानीको दिलाया फिर महाभागवतों

इस प्रकार जैमिनि से अधर्म्म व धर्म्मकानिर्णय सुनकर फिर उन मुनिसे बोले कि १ हे द्विजोत्तम! हम धर्म्म करेंगे पुण्यकरेंगे जगद्योनि वासुदेव भगवान्की सदैव पूजाकरेंगे २ तब सब कामों से पूजित राजा आनन्दसे होम करने व जप करनेसे मधुसूदनजी को पूजते भये यज्ञकर तप करके विष्णुभगवान्के लोक को चलेगये परन्तु वहां पहुँचने पर उन्होंने देवदेव श्रीविष्णुभगवान् को न देखा ३। ४ व बड़ी भारी जीवके पीड़ा करनेवाली क्षुधा और तृष्णा राजाको वहां लगी ५ व राजाकी स्त्री भी वहां संग गई दोनों राजा रानी तीव्र क्षुधा पिपासासे पीड़ितहुये व जब हृषीकेश भगवान्जी के दर्शन न हुये तो बड़े दुःखसे युक्त हुआ ६ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि राजा स्त्री समेत इसप्रकार क्षुधा से जो व्याकुल हुआ व अनेक पीड़ाओंसे व्याकुलहुआ ७ व मारे भूंख के इधर उधर घूमने दौड़नेलगा यद्यपि सब आभरणों की शोभासे युक्त था व सुगन्धित चन्दनादि लगाये था वस्त्रधारेथा ८ पुष्पोंकी माला धारण किये हार कुंडल कंकणोंसे शोभित था व रत्नोंकी दीप्तिसे शोभित था ९ इस प्रकार दुःखित राजा पाठकों से स्तुति को प्राप्त दुःख शोकसे युक्त होकर अपनी स्त्री से बोला १० कि हे सुशोभने! तुम्हारे साथ हम विष्णुलोक को प्राप्तहुये ऋषियों से स्तुति को प्राप्त विमानपर चढ़कर आये ११ किस कर्म से यह क्षुधा अत्यंत बढ़ी है और विष्णुलोक को प्राप्त होकर मधुसूदनजी को नहीं देखा १२ हे भद्रे! सो क्या कारणहै जो बड़े फलको हम नहीं भोगते अपने कर्म से यह दुःख वर्त्तमान हुआहै १३ रानी इस प्रकार राजाके वाक्य सुनकर उनसे यह बोली १४ कि हे राजन्! आपने सत्य कहा धर्म का फल नहीं है वेदशास्त्र और पुराणोंमें जो ब्राह्मणलोग पढ़तेहैं १५ कि यहां आनेपर दुःखशोक नहीं होता सब दोषों से प्राणी छूटजाता है जैसेही श्रीविष्णु चक्रधारी भगवान्जी के नामोंका उच्चारण पुरुष करता है १६ कि पुण्यात्मा महाभाग होजाता है व इसी से सब महात्मालोग सदा जनार्दन भगवान् का ध्यान करते रहतेहैं व इसी से तुमने भी देवदेव शंख चक्र गदा धारण कियेहुये श्रीहरिकी

आराधना की है १७ ब्राह्मणों के कहने परभी अन्नादि दान ब्राह्मणोंको नहीं दिया तिसीका फल जानती हैं क्योंकि मधुसूदनजी को यहां आकर भी नहीं हम तुम देखते १८ हे राजन् ! व क्षुधा हमको बाधित करती है व पिपासा तो सुखायेही डालती है कुञ्जल अपने पुत्रसे बोला कि जब राजा से रानी ने ऐसा कहा तो राजा और भी चिन्ता से व्याकुल इन्द्रिय हुआ १९ इतनेमें वहीं श्रम नाशनेवाला पुण्यकारी एक आश्रम राजाने देखा जोकि दिव्यवृक्षों से समाकीर्ण व तड़ागों से उपशोभित था २० व पुण्यकारी जलसे भरीहुई वापी कुण्ड तड़ागों से उपशोभित था उन वाप्यादिकों में हंस कारण्डव आदि पक्षी अपनी मधुरवाणी बोलते थे कमलोंमे शोभित था २१ व हे पुत्र ! वह आश्रम तत्त्वके निश्चय जाननेवाले मुनियों से उपशोभित होताथा दिव्य वृक्षों से युक्त मृगसमूहों से शोभित था २२ अनेक प्रकार के पुष्पोंसे युक्त सुन्दर सुगन्ध से आकुल द्विज सिद्धों से युक्त और ऋषि शिष्यों से आकुलथा २३ योगी व योगीन्द्रोंसे युक्त व देववृन्दों से अलंकृत था व सुफल कदली के वन से चारों ओर से शोभित था २४ नानाप्रकार के वृक्षों से समाकीर्ण होने से सब कामों से युक्तथा चन्दनादि सुगन्धित और अच्छे फलवाले वृक्षों से सदा शोभित होता था २५ इसप्रकार पुण्यों से समाकीर्ण व ब्रह्म लक्ष्मी से युक्त हुआथा सुबाहुराजा तिस अपनी स्त्रीसमेत २६ सब कामना देनेवाले महापुण्यकारी उस वनमें प्रवेश करतेभये जहां सब दिशा प्रकाशित करताहुआ महादीप्ति से सूर्य्यके समान प्रकाशित होता योगासनमें बैठा योगपट्ट से युक्त २७। २८ वैष्णवों में श्रेष्ठ वामदेवऋषि श्रेष्ठ थे वे मुनि भुक्तिमुक्तिप्रदायक श्रीभगवान् हृषीकेशजी का ध्यान कररहे थे २९ ऐसे मुनिसत्तम महात्मा उन वामदेवजी को देखकर अपनी प्रियाके सहित राजा ने शीघ्रता से जाकर प्रणाम मुनि के किया ३० व वामदेवजीने भी राजा को प्रणाम करते हुये देखा तब स्त्रीसहित राजा को आशीर्वादों से प्रसन्न करके ३१ फिर सुन्दर पुण्यआसनपर राजाको बैठाया फिर अर्घ्य पाद्याचमनीय अच्छीतरह राजा रानीको दिलाया फिर महाभागवतों

में श्रेष्ठ राजा से वामदेवजी बोले ३२ । ३३ कि हे राजेन्द्र ! तुमको हम दिव्य ज्ञान से विष्णुके धर्म्म जाननेवाले व श्रीविष्णु के भक्त चोलदेशके राजा जानते हैं ३४ इस अपनी तार्क्ष्यानाम भार्य्यासमेत कुशलसहित तो आये राजा बोला कि हे विप्र ! हां हम निरामय हो इस विष्णुलोक में आये ३५ क्योंकि हमने परमभक्तिसे देवदेव जनार्दन भक्तिसे प्रसन्न जगन्नाथजी की आराधना की है पर यहां आनेपर सुरेश्वर देवदेव कमलापति के दर्शन हमको क्यों नहीं होते व हे तात ! हमको क्षुधा व अत्यन्त घोर तृष्णा बहुत बाधित कर रही है ३६ । ३७ उन दोनों से शान्तिको नहींपाते न सुखपाते हैं हे मुनिसत्तम ! यह दुःख का कारण हमारे उत्पन्न हुआहै ३८ इसका कारण प्रसन्नतासे सुमुख होकर तुम हमसे कहो ३९ वामदेवमुनि बोले कि हे राजेन्द्र ! तुम श्रीकृष्णदेव के भक्त सदैवहो यद्यपि तुमने परमभक्तिसे मधुसूदन भगवान्‌की आराधना की है व भक्तिके उपचारों से स्नानादिक चंदन पुष्पादिकों से पूजाकी है ४० परन्तु सब जगतों के पति श्रीविष्णुजीको नैवेद्य फलोंसे तो तुमने कभी नहीं दी व न कभी दशमीतिथि में तुमने एकभक्त व्रतकिया व न उस दिन ब्राह्मणको अच्छा भोजन दिया एकादशीके दिन तुमने भोजन नहीं किया ४१ । ४२ विष्णुको उद्देशकर तुमने ब्राह्मणको भोजन नहीं दिया अन्न सदैव अमृतरूपसे पृथ्वी में स्थितहै ४३ किसी ब्राह्मणको कभी तुमने थोड़ा भी अन्नदान किया अन्नदान विशेषकर तुमने किसीको कभी दियाही नहीं हे महाराज ! पृथ्वीपर जितनी ओषधियां उत्पन्न होती हैं उन ओषधियों के नाना भेदहैं हमसे सब सुनो ४४ कडुये, तीते, कसैले, मीठे, खट्टे व खारी छः प्रकारके रस होते हैं ये सब हींग आदि सामग्रियों के डालनेसे नानारूप होजाते हैं ४५ व सब अन्न अमृतरूप होकर पुष्टि करनेके हेतु होते हैं इससे सब अन्नोंका अच्छे प्रकार संस्कार करके ओषध व्यंजनयुक्त ४६ विष्णुरूप सब देवताओंको लोग देते हैं व विष्णुरूपी पितरोंको भी ब्राह्मणों के हाथोंपर धराकर अन्नही दियाजाता है ४७ फिर अतिथियों को देकर बन्धुओं परिवारों को दियाजाताहै फिर उसके पीछे आप भोजन करताहै

वह अन्न अमृतके तुल्य होजाताहै ४८ हे राजन्! जो कोई इसप्रकार अन्नको भोजन करताहै उसको दुःख कभी कहीं नहीं होताहै ब्राह्मण पितर व देवता येही अन्नदान करने के स्थान हैं व खेतरूप हैं ४९ जैसे कोई किसान सुन्दर खेती सदैव करता है वैसेही मनुष्य को चाहिये कि ब्राह्मण को खेतमानकर उसमें परिपक्व अन्न का बीज बोतारहे ५० व स्वभाव हरसे उस खेतको सींचतारहे व श्रद्धा खुरपी से उसको निरावे व बुद्धि और तपको बैल बनावे ५१ सत्य ज्ञानको ईश बनावे शुद्धात्मा को कोड़ा करनेवाला बनावे अन्नको विप्र नाम महाखेतमें अच्छेप्रकार बोवे और नमस्कारों से ब्राह्मणको विसर्जन करै ५२ व नित्य उसकी देखा भाली करता रहै जिसमें अच्छेप्रकार जमकर वह खेत का अन्न फूले फरे व पाके फिर उसी प्रकार सींचे काटे पीटे व फिर बोवे जैसे किसान अपने खेतको अच्छी तरह उस के उचित कामों से प्रसन्न करता रहताहै ५३ ऐसेही मनुष्य को चाहिये कि ब्राह्मणरूप अत्युत्तम खेत को उत्तम व पुण्य मधुर वचनों से प्रसन्नकर खेतकाल बादल व पशु और किसानसे खेती होती है जब सब अनुकूल होते हैं तब अन्न उत्पन्न होते हैं ऐसेही जब प्रथम अच्छेप्रकार प्रसन्न करके ब्राह्मण को अन्न दिया जाताहै तब उस का फल अच्छा होताहै जैसे कि जब खेतको अच्छेप्रकार जोतकर ठीक करते फिर खाद डालते हैं फिर बोते सींचते निराते हैं तब अन्न होता है वैसेही नित्य करनेसे खेतरूप ब्राह्मणसे सब फल उत्पन्न होते हैं सो ब्राह्मण पितर व देवता तीनों क्षेत्ररूप हैं इसमें संशय नहीं है ५४ । ५७ इस से मनुष्यों को चाहिये कि इन खेतों में अवश्य बोवें जिसप्रकारका मूल होताहै उसीप्रकार का उसका फलभी होताहै ५८ करुये बीज के वृक्ष के मधुर फल नहीं होते हैं मीठेके करुये नहीं होते हैं ५९ जैसा बीज बोया जाताहै वैसाही फल खाने को मिलताहै व जो न खेत बोता वह फलभी नहीं खाने को पाता ६० इससे देवता पितर व ब्राह्मण खेतरूपी हैं व देनेका फल सबको दिखाते हैं इसमें कुछभी संशय नहीं है ६१ इससे हे राजन् ! जैसा शुभ वा अशुभ कर्म तुमने कियाहै वैसा फल भोगो क्योंकि यही न्यायहै कि जो

जैसाकरे वैसा फलभोगे ६२ पूर्वसमय देवता पितर व ब्राह्मणों को तुमने कभी मीठा अन्न जल सुन्दर मन से नहींदिया ६३ जो सुन्दर मीठे स्वादुयुक्त अन्न पान होते थे तुम आप खालेते थे कब तुमने किसी को कुछ दिया ६४ बस अमृतसदृश अन्नों से केवल तुमने अपना शरीरही पुष्ट किया है जिससे कि तुमने अपने शरीरही का पालन पोषण कियाहै इससे अब तुमको क्षुधालगरही है ६५ हे राजन्! मनुष्यों के सुख दुःख जन्म मृत्यु का कारण कर्महीहै इससे तिस कर्म के फलको भोग करो ६६ पूर्वकालमें महात्मा अपने कर्म से स्वर्गको प्राप्त हुये हैं फिर कर्म के नाश होने से पृथ्वी में प्राप्त होगये ६७ नल भगीरथ विश्वामित्र युधिष्ठिर कर्महीसे अपने काल से स्वर्गको प्राप्त हुये हैं ६८ भाग्यही पुराना कर्म है तिसी से दुःख और सुखको प्राप्त होताहै हे राजन्! तिसके उल्लंघन करने में कौन ईश्वर समर्थ है ६९ हे नृपश्रेष्ठ ! अब तिसी से स्वर्ग में प्राप्तभी तुम्हारे भूंख और प्यास से उत्पन्न वेगहै तिसी से दुष्ट तुम्हारा कर्म है ७० हे नृपसत्तम ! जो तुमको भूंखका प्रतीकार अभीष्टहो तो जाकर आनन्दवन में स्थित अपनी देह को भोगो ७१ तुम्हारी यह महारानी भूंख से अत्यन्त दुर्बल दिखाई देती है यह सुन राजा सुबाहु बोला कि भला हम यहां से पतित होकर कितने कालतक अपनी स्त्री समेत मर्त्यलोक में रहेंगे ७२ व कब हमारे ऊपर भगवान् का अनुग्रह होगा हे महाभाग! यह हम से कहो हे मुनिसत्तम ! किस द्रव्य के दानसे क्या पुण्यहोता है ७३ हे महाप्राज्ञ ! जो इससमय प्रसन्न हो तो कहो वामदेवजी बोले कि हे महामते ! अन्नदान से महासुख जलदान देने में है ७४ वे मनुष्य स्वर्गही भोगते हैं कभी पापों से पीड़ित नहीं होते जो मनुष्य कभी दाननहीं देते ७५ वे सबभी मरण के समय अवश्य देते हैं पहिलेही से अन्न जलदान देना योग्यहै ७६ व छतुरी जूता खराऊँ सुन्दर लोटा पृथ्वी सोना व धेनु ये आठ दान जो दे ७७ स्वर्ग में फिर उसे क्षुधा तृष्णा नहीं लगती सो सुन्दर अन्नदान करनेसे तो क्षुधा नहीं लगती वह तृप्तियुक्त रहताहै ७८ व जलदान करने से तीव्र तृष्णा फिर उसको नहीं लगती सदैव तृप्त रहताहै

ड़ाऊं व छत्रदान करने से ७९ वहां छाया पाताहै व जूता देने से
हन वहां मिलताहै जूताके दान सेभी वाहनही पाताहै और भी
हते हैं ८० व भूमिदान करने से सब कामों को प्राणी पाता है व
महाराज ! गोदान करने से पुरुष सदैव रसों से पुष्ट होता है ८१
सबसुख भोगताहुआ स्वर्गलोकमें निवास करताहै व गोदानकरने
दाता अच्छे प्रकार वहीं तृप्तहोताहै इसमें कुछभी सन्देह नहीं
८२ व गोदानहीके करने से पुरुष नीरोग रहता है सुखयुक्त सं-
ष्ट और धनवान् होता है व सुवर्ण दान करने से प्राणी के देहका
ग व रूप बहुत अच्छा होजाता है इस में संदेह नहीं है ८३ व
ीमान् रूपवान् दानी और रत्नभोक्ता वह प्राणी होताहै व मृत्युकाल
भी जो कोई तिलदान करताहै ८४ वह सब भोगों का पति हो-
र विष्णुलोक को जाता है इसरीति से दान विशेष करने से परम
ुख यह प्राणी पाताहै ८५ गोदान भूमिदान अन्न जलदान हे
ाजन् ! जब तुम जीते थे कभी ब्राह्मणों को नहीं दिया ८६ फिर
रणके समयमेंभी नहीं दिया इसीसे तुमको यहां क्षुधा लगतीहै हे
ात ! कर्म्म के वशीभूत यह कारण तुमसे हमने वर्णन किया ८७
ैसा कर्म तुमने कियाहै वैसाही फलभोगो राजा सुबाहु बोला कि हे
ुनिसत्तम ! अब हमारी क्षुधाकी शान्ति कैसेहो ८८ इस क्षुधाने शरीर
ो शुष्क करदिया और अत्यन्त तापित करतीहै हे द्विजश्रेष्ठ ! क्षुधा
मिटनेकेलिये कुछ प्रायश्चित्त बताओ ८९ जैसे इस हमारे घोरकर्म्म
की शांतिहो वामदेवजी बोले कि हे नृपोत्तम ! बिना भोगकिये इसका
ायश्चित्त कुछ नहीं है ९० इससे अपने कर्म्मका फल स्वस्थहोकर
आप सब भोगें अब जहां तुम्हारा व तुम्हारी स्त्रीका शरीर पतितहुआ
है ९१ वहां यहांसे शीघ्रही जाओ इसमें संदेह नहींहै दोनोंजने उस
अपने शरीर का अक्षय मांस भक्षण करो ९२ बस अपना २ दोनों
जने शरीर भक्षणकरो इसमें संदेह नहीं है राजा बोला कि भला हम
अपना २ मांस कितने समयतक भक्षण करेंगे ९३ हे महाभाग !
सो कहिये वह वचन हमारे प्रमाणहै वामदेवजी बोले कि जब तुम
किसीके मुखसे महापातकनाशन वासुदेवस्तोत्र सुनोगे तब तुम्हारी

मुक्तिहोजायगी हे राजन् ! यह सब हमने तुमसे कहा अब जाकर अपना २ मांस भोजनकरो ९४ । ९५ यह सुनकर राजा सुबाहु वहां से चला व अपनी स्त्री सहित अपने २ शरीर का मांस खाने लगा ९६ नित्य अपने २ शरीर का मांस राजा रानी खालियाकरें व नित्य शरीर पूरा होजायाकरे इसप्रकार नित्य राजा व रानी शरीरका मांसही भक्षणकरे ९७ जैसे २ भक्तिसे राजा अपने शरीरको भक्षणकरे वैसे २ वहां स्त्रियां हँसती जायँ इसका भेद हम तुमसे बताते हैं ९८ वे स्त्रियां प्रज्ञा व महासाध्वी अनपायिनी श्रद्धा थीं सो दोनों राजा के चरित्रको नित्यही हँसती थीं ९९ क्योंकि जब प्रज्ञा प्रेरणाकरती थी तब श्रद्धायुक्त विष्णुके लिये उद्देशकर ब्राह्मणोंको अन्न देने को सङ्कल्प कर नहीं दिया था १०० इस प्रकार अपने शरीर का मांस नित्य अमृत सदृशरसों से राजा रानी खाते थे १०१ हे सुव्रत ! फिर सौ वर्ष के अन्त में महामुनि वामदेवजी को स्मरणकर आत्माकी निन्दा करनेलगे १०२ कि न देवताओं को कभी दिया न पितरों को न ब्राह्मणों को न अतिथियों को व न अन्य वृद्धोंको ही विशेषकर दान दिया १०३ व दीनों को भी नहीं दिया कृपा करके आतुरको भी नहींदिया इसीसे राजा अपने शरीरका मांस खाताथा और अपने कर्मकी निन्दा करताथा १०४ स्त्री समेत अपना २ मांस खातेहुये राजा का कर्म देखकर श्रद्धा व प्रज्ञा बार २ हँसती थीं कि हे पाप चेतन ! हे राजन् शुभात्मा ! तिस कर्मविपाकको हँसती हैं हमारे सङ्गके प्रसंगसे आपने न दान दिया १०५ । १०६ राजासे प्रज्ञा हँसतीहुई कहे कि हे महाराज ! वह ज्ञान तुम्हारा कहां गया जिससे मोहित होगये १०७ लोभ मोहसे ऐसे युक्तहुये कि अब तमोगुण में गिरा दियेगये अब दुःखसागर में पतित तुम्हारी रक्षा वह नहीं करता १०८ कि जिससे तुम दानमार्गको छोड़कर लोभमार्गको प्राप्तहुये अब क्षुधायुक्तहोकर भार्यासहित आनन्दसे अपना २ मांस भक्षणकरो १०९ इसप्रकार भार्यासमेत राजा सुबाहुको वह श्रद्धा हँसे हे पुत्र ! यही उन दोनों स्त्रियोंके हँसनेका कारणथा ११० जब राजा अपना देह भक्षणकरनेलगे व तब दो दारुणरूप धारणकरके

स्त्रियां सदैव कहतीथीं कि देओ देओ १११ हे महाप्राज्ञ! वे भीम व दारुणरूप धारण किये क्षुधा व तृष्णार्थी जलसहित अन्न राजासे बार बार मांगतीथीं ११२ जो तुमने पूँछा हमने सब तुमसे कहा अब और तुम से क्या कहें सो कहो ११३ तब विज्वल बोला कि हे तात! वासुदेवाभिधान स्तोत्र हमसे कहो जिसके सुननेसे राजा सुबाहुकी मुक्तिहोगी व राजा विष्णुजीके परमपद को जायगा ११४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थमाहात्म्येचयवनचरित्रेसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७ ॥

## अट्ठानवे अध्याय ॥

दो० अट्ठनवें महँ स्तोत्र श्री वासुदेव अभिधान ॥
प्रज्वलकह्यो सुबाहुसों नहिं यामहँ कुछ आन १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि जब उसके महात्मापुत्र प्रज्वल ने ऐसा पूँछा तब कहनेवालों में श्रेष्ठ कुंजलने श्रीविष्णुजीका पुण्यकारी स्तोत्र कहा १ प्रथम शान्ति देनेवाले व पुष्टि बढ़ानेवाले सबकामों के दाता ज्ञानवर्द्धन सर्व्व क्लेशनाशन श्रीहृषीकेशजीका ध्यानकरके फिर नमस्कार करके वासुदेवजी का स्तोत्र जो कि सब कल्याणदाताहै वासुदेवनाम परमेश्वर को परमप्रिय व पुण्य बढ़ानेवाला २ । ३ ऐसा कुंजल का कहाहुआ वासुदेव नाम स्तोत्र विज्वल के लिये प्रकाशित हुआ ४ वासुदेवजी का नाम अप्रमेय पुण्य बढ़ानेवाला है पक्षियोंमें श्रेष्ठ विज्वल पितासे सब प्राप्तकर ५ तहां जानेका विचार करता भया इसप्रकार जाने को बुद्धिकिये ज्ञानके पारगामी उपकारमें उद्यत पुत्रसे धर्मात्मा कुंजल बोला ६ । ७ कि हे पुत्र! जिससे राजा का पाप जायगा उसका उपायकरो अब यहां से शीघ्रही जाकर राजा सुबाहु के आगे जो स्तोत्र हमने कहाहै पढ़ो ८ जैसे २ राजा उत्तम स्तोत्र सुनेगा वैसेही वैसे ज्ञानमय होगा वह स्तोत्र वही है जो कि हमने तुमसे कहाहै इसमें संदेह नहीं है ९ यह सुन अपने पिताकी आज्ञाले अतिवेग से वहांसे उड़कर विज्वल पुण्य आनन्दवन में पहुँचा १० व वृक्षकी शाखापर बैठकर स्तोत्र पढ़ने के लिये उद्यत

हुआ देखा तो राजा विमान पर चढ़ाहुआ वैकुण्ठ से चलाआता
था ११ प्रथम मनमें विज्वल विचारता था कि देखें स्त्रीसमेत राजा
कब आवे और इस स्तोत्र से कब हम पापसे छुड़ावें १२ तबतक
किंकिणी जालसे मंडित विमान प्राप्त होगया जो कि घंटाके शब्दसे
युक्त वीणा और वेणुसमेत १३ गंधर्वोंके स्वरसे शब्दयुक्त अप्सराओं
सहित सब काम देनेवाला अन्न वा जलसे हीनथा १४ तिस विमानमें
स्त्रीसमेत राजा सुबाहु स्थित थे फिर सुताक्ष्यनाम अपनी स्त्रीके साथ
राजा आकर विमान परसे उतरे १५ तीक्ष्ण शस्त्रलेकर जबतक उस
पड़ीहुई अपनी लोथको काटाचाहे कि तबतक विज्वलने पुकाराकि
हे हे पुरुषशार्दूल ! आप देवता के तुल्यहैं व ऐसा निर्घृण कर्म
करते हैं कि क्रूरोंसे भी न होसके १७ हे पुरुषशार्दूल ! यह क्या
भाग्य के विपर्य्यय का कर्म्महै यह ऐसा दुष्कृत साहसका कर्म्म सर्व
लोकमें निन्दित है १८ वेदाचार से विहीन शव मांसभक्षण कर्म
आप कैसे करते हैं इसका कारण सब हमसे जैसेबने वैसे कहें १९
इसप्रकार महात्मा उस विज्वलका वचन सुनकर राजा अपनी स्त्रीसे
बोला कि २० हे प्रिये ! सौवर्ष बीतगये व प्रतिदिन मुझपापीने यह
मांस खाया पर जैसा यह आज कहता है ऐसा कभी किसीने नहीं
कहा २१ व हमारा हृदय क्षुधा के मारे अतीव पीड़ित होरहाहै आ
हमारी उत्कण्ठा इसके वचन के सुनने में लगगई है चित्तमें शान्ति
होगई है २२ जबसे सब दुःखका शांति देनेवाला इसका वाक्य सुना
व तबसे हमारे चित्तमें बड़ा आह्लाद हुआ है २३ नहीं जानते यह
कोई गन्धर्व्व है कि देवताहै वा इन्द्र आपही तो नहीं हैं जो पूर्व स
मयमें मुनिने कहा था वह मुनियों का वचन सत्यहै २४ यह अप
पतिका प्रिय वचन सुनकर पतिव्रता रानी बोली २५ कि हे नाथ
तुमने सत्य कहा यह उत्तम आश्चर्य है हे कांत ! जैसे तुम्हारे चित्त
में वर्तमान है वैसेही मेरे भी चित्तमें वर्तमान है २६ हितकारी की
नाईं पक्षीका रूप धारे यह कौन पूंछता है इसप्रकार राजा प्रियाका
वचन सुनकर २७ हाथजोड़कर पक्षी से बोला कि हे महाभाग
तुम्हारा आना अच्छेप्रकार तो हुआ पक्षीका रूप धारण किये

हाराज ! २८ हम अपनी स्त्रीसहित तुम्हारे चरणकमलों में शिरसे णाम करते हैं हमारे ऊपर आपका प्रसादहो २९ पक्षीके रूपसे ाप अतिपुण्यवचन कहते हैं पुरुष जैसा पूर्व्वजन्ममें करताहै ३० ाहे पुण्यकरे वा पाप वही इस जन्म में भोगता है इतना कह ापना सब वृत्तान्त संक्षेप रीतिसे सुबाहुने विज्वल से कहा ३१ सा कि कुंजलने विज्वल से बताया था जो अब आप बतावें कि ाप कौन हैं जो ऐसे धर्म्म की बात कहते हैं ३२ यह सुन क्षियों में श्रेष्ठ विज्वल सुबाहु राजा से बोला कि शुकों की जाति में त्पन्न कुंजल हमारे पिता का नामहै ३३ उनके हम तीसरे पुत्र हैं विज्वल हमारा नामहै हे महाभुज ! न हम देवता न गन्धर्व और द्भी नहींहैं ३४ तुम्हारा यह दारुण कर्म्म हम नित्य देखते हैं हो कबतक यह बड़ा कर्म साहस तुमकरोगे यह हमसे कहो राजा बाहु बोले कि जब वासुदेवाभिधान स्तोत्र जो पूर्व समय में ाह्मणों ने कहाहै ३५।३६ हम सुनेंगे तब हमारी मुक्ति होगी यह ण्यात्मा संयतात्मा मुनिने कहा है ३७ तब हम पाप से निस्सन्देह क्तहोंगे यह सुन विज्वल बोला कि मैंने तुम्हारे लिये पितासे पूछा न्होंने जो मुझ से कहा ३८ वह वासुदेवाभिधानस्तोत्र सुनाते हैं ावधान होकर सुनो ३९ इस वासुदेवाभिधान स्तोत्रका अनुष्टुप् छो न्दहै नारद ऋषि है ॐकार देवता सब पाप नाशने के लिये व ार्थ, धर्म्म, काम, मोक्ष सिद्ध होनेके लिये इसका विनियोगहै ॐन- ोभगवते वासुदेवाय ॥ पावन परमपुण्य वेदज्ञ वेदमन्दिर विद्याधार वाधारव प्रणवके हम नमस्कार करते हैं ४० निराभास निराकार प्रकाश महोदय निर्गुण गुण सबद्ध व प्रणवरूप तुम्हारे नमस्कार ४१ महाकान्त महोत्साह महामोहविनाशन सब जगत्के विस्तार रनेवाले गुणों से अतीत तुम्हारे नमस्कार है ४२ जो सर्व्वत्र होकर काशितहोताहै प्राणियोंके ऐश्वर्य्यको बढ़ाताहै अभयहै भिक्षुसंबद्ध शिवॐकाररूपीके नमस्कारहै ४३ जिसको गायत्री सामवेद सदागा- ाकरता है व जो सब गीतरूपहै व जिसको गीत बहुतप्रियहै शुभ है व जो गन्धर्व्वरूप गीतका भोक्ता है उस प्रणवरूप के नमस्कार

है४४ विचार वेदरूप यज्ञस्थ व भक्तोंकेऊपर कृपाकरनेवाले व
लोकोंकी उत्पत्ति के स्थान उन ॐकाररूपी के नमस्कारहै ४५
संसाररूपी समुद्रमें मग्न सब प्राणियों के तारने के लिये नौका
से विराजमान होताहै उस ॐकाररूपीके प्रणामहै ४६ जो सब
कों में एक रूपसे बसताहै व एक प्रकारका नहीं है धाम
उन ॐकाररूपी शिवके नमस्कारहै ४७ सूक्ष्म सूक्ष्मतर शुद्ध
गुणनायक प्राकृत भावोंसेवर्जित वेदकेस्थानके हमारानमस्कारहै
देव दैत्य वियोगों से और तुष्टियोंसेव कर्मों से सदा वर्जित
देवताओं व योगियों से जो ध्यान करने के योग्य है उस ॐ
नमस्कार है ४९ जो व्यापक है इससे विश्वके वृत्तको जानता है
परमशुभ विज्ञानरूप है शिव शिवगुण शान्तस्वरूप उस प्रण
श्वरके नमस्कारहै ५० व जिसकी मायामें प्रवेशकरके ब्रह्मादि
वता व असुर परम शुद्धरूप मोक्षकेद्वारको नहीं जानते उस
के नमस्कारहै ५१ आनन्दकन्द विशुद्धबुद्धिशुद्ध हंसपर और
उन वासुदेवजी के निरन्तर नमस्कारहै जिनकी महाप्रभाहै ५२
श्रीपांचजन्य नाम शंखसे विराजमान व सूर्यकीसीप्रभा से प्र
सुदर्शननाम चक्र हाथमेंलिये व गदा कमल हाथों में लिये उन वासु
जीके हम सदा शरणमें हैं ५३ वेद गुह्य सगुण चराचरके गुणोंके
भूत सूर्य अग्निके समान तेजस्वी उन वासुदेवजीके शरणमें हैं
जिनको क्षुधाके निधान विमल सुरूप आनन्दके प्रमाणसे वि
पाकर देवादि तीनोंलोक जीते हैं उन वासुदेवजी के शरण में हैं
अन्धकार घनोंको अपने हाथों से नाशकरते हैं नित्यही परिक्रम
हैं उदयको प्राप्त सूर्य के समान प्रकाशित तेजस्वी हैं तिन वासु
की हम शरण में प्राप्तहैं ५६ जो सब जगह सूर्य प्रभावों से प्रका
शहोताहै सुखाता और रसको देताहै जो प्राणियों के भीतर प्राप्त
है तिन वासुदेवकी हम शरण में प्राप्त हैं ५७ वे देवदेव
इच्छाके अनुरूप से सब लोकों और राजाओंको पालते हैं और
रने में जो नावरूप से वर्तमान हैं तिन वासुदेव की हम शरणमें
हैं ५८ अन्तर्गत लोकमय सदैव स्थावर जंगमोंको पचाताहै

सुख और देवसमूहों के हेतु तिन वासुदेव की हम शरण में प्राप्तहैं ५९ अच्छे पुण्यकारी सबरसों से साथही पुष्ट करताहै सौम्यलोकमें गुणका देनेवाला और जो निर्मलतेजसे अन्नोंको पुष्ट करताहै तिन वासुदेव की हम शरणमें प्राप्तहैं ६० सबजगह विनाशका हेतुहै सबके आश्रय सर्वमय सर्व और इन्द्रियोंके विना विषयोंको जो भोगताहै तिन वासुदेव की हम शरण में प्राप्तहैं ६१ जीव स्वरूप से स्वमूर्त सचराचर लोकों को पालन करते निःकेवल ज्ञानमय सुशुद्ध तिन वासुदेवकी हम शरणमें प्राप्त हैं ६२ दैत्यों के नाश करनेवाले दुःख के नाश का मूल शान्त परशक्तिमय विशालहैं जिनको देवता प्राप्त होकर विनयको प्राप्त होते हैं तिन वासुदेव की हम शरणमें प्राप्त हैं ६३ सुख सुखान्त सुखके दाता सुरेश ज्ञानके समुद्र मुनियों के रक्षा करनेवाले देवोंके ईश सत्य के आश्रय सत्य गुणमें बैठेहुये तिन वासुदेव की हम शरण में प्राप्तहैं ६४ यज्ञांगरूप परमार्थरूप मायायुक्त लक्ष्मी के पति उग्रपुण्य विज्ञान में एक और संसारोंके निवास तिन वासुदेवकी हम शरण में प्राप्तहैं ६५ समुद्रकेबीच में शेषजी की विशाल शय्या में जो सोते हैं तिन वासुदेवजी के दोनों चरणकमल हम नित्यही नमस्कार करतेहैं ६६ पुण्यसे युक्त नित्यही कल्याणकरनेवाले अनेकों तीर्थोंसे सेव्यमान तिन वासुदेवजी के पापनाशकरनेवाले दोनों चरणकमलहैं ६७ जो चरणकमल लालकमलकी दीप्तिकेसमान कमल अच्छा चिह्न और जयसे युक्त घुंघुरू और सुँदरियों से अलंकृत श्री वासुदेवजीके हम नित्यही नमस्कार करते हैं ६८ देवता सिद्ध मुनि सर्पोंके स्वामी भक्तिसे सदैव नमस्कार करतेहैं तिन श्रीवासुदेवजी के पुण्यकारी चरणकमलों को हम नित्यही नमस्कार करते हैं ६९ जिनके चरण के जलमें मज्जन करते हुये पवित्र पापरहित प्रसन्न मुनि मोक्षको प्राप्त होतेहैं तिन वासुदेवकी हम शरणमें प्राप्तहैं ७० जहां विष्णुजीका चरणजल रहता है तहां सदैव गङ्गादिक तीर्थ रहतेहैं पापदेहयुक्तभी जो आव पीते हैं वे शुद्धहोकर मुरारिजी के मन्दिरको जाते हैं ७१ चरणजल से अभिषेक भये मनुष्य जो उग्र पापों से युक्त देह भी हों तो भी वे मुक्तिको प्राप्तहोते हैं तिन परमे-

श्वर के चरणों को हम निरंतर नमस्कार करते हैं ७२ महात्मा च
क्रधारी की नैवेद्यमात्र खाने से मनुष्य सब अर्थयुक्तहोकर श्रीवाज
पेययज्ञके फलको पाते हैं ७३ नारायण नरकके नाशनेवाले मा
स हीन सकल गुणजाननेवाले हैं जिनको ध्यान करतेहुये अच्
गतिको प्राप्तहोतेहैं तिन वासुदेवकी हम शरण में प्राप्तहैं ७४ दे
ऋषि सिद्ध और चारणगणों से वन्दना के योग्यहैं देवों से स
पूजितहै जो संसार के सृष्टि हेतुकरने में ब्रह्मादि देवोंका प्रभुहै औ
संसाररूप महासमुद्र में गिरेहुये का उद्धार कर्त्ता है वत्सल है कि
के श्रेष्ठ पवित्र चरणों को भक्तिसे हम नमस्कार करते हैं ७५ जो
यज्ञ के मण्डप में देवताओं से देखेगये सामवेद के जाननेवाले सा
मवेदके गाने में कुतूहल युक्त तीनों लोकमें एकही प्रभुहैं और रा
बलिको कल्याण करनेवाले नेत्रों से पापहीन करते हैं तिनके पर
पवित्र दोनों चरणकमलों को हम वन्दना करते हैं ७६ ब्राह्मणों
मण्डलमें यज्ञ में प्रकाशित होरहे ब्रह्म की शोभा से शोभित दिव्य
तेजसे करमय इन्द्रनीलके समान देवों के हितकी कामना से अदि
देहसे उत्पन्न राजा बलिसे तीन पद मांगतेहुये कि हमको तीनपग
दीजिये ऐसे प्रभु वामन की हम वन्दना करते हैं ७७ तिन वामन
जी के देखने के लिये सूर्यमण्डल में मुनिगण प्राप्त हुये और आ
काश चन्द्रमा और सूर्यको पांवसे आच्छादित करतेभये तिन चक्र
धारी के देवता उससमय नाशको प्राप्तहोरहे थे और देह संसारभर
का निवासस्थान है तिन अतुल भगवान् के विक्रमको हम नमस्कार
करते हैं ७८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरु
तीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेऽष्टनवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

## निन्नानवे अध्याय ॥

दो० निन्नानवे अध्याय में हरिदर्शन लहि भूप ॥
स्तोत्रपाठ सुन देवतनु भयहु बहोरि अनूप १

विष्णुजी राजावेन से बोले कि पवित्र परमपुराण पाव

शन पुण्यमय कल्याणरूप धन्य सुसूक्तरूप परमसुजाप्य स्तोत्र सुनकर राजा अत्यन्त सुखीहुआ १ क्षुधा तृष्णा दोनों जातीरहीं इस से वह देवकी उपमाका होगया व भार्य्याभी उसकी रूपसे शोभित होनेलगी व दोनों पापनिबन्धन से छूटगये २ देवों से परिवारित हरिभक्तियुक्त सुसिद्ध विप्रोंसे युक्त शंख चक्र कमल गदा और तलवार के धारणकर्ता श्रीविष्णु देवदेव वहां आये व पापरहित राजाके समीप पहुँचे ३ उनकेसङ्ग नारद भार्ग्गव व्यास पुण्यात्मा मार्कण्डेय वाल्मीकि नाम विष्णुभक्त मुनि व ब्रह्माजीके पुत्र वशिष्ठजी भी आये ४ व और भी पुण्य महात्मालोग श्रीहरिके चरणारविन्दकी भक्तिसे युक्त गर्ग्ग महात्मा हरिभक्तियुक्त जाबालि रैभ्य कश्यपआदि श्रीहरि के सङ्ग सब आये ये सब विष्णुकेप्यारे भागवतों में श्रेष्ठ धन्य और पापरहित थे व श्रीवासुदेवजी की चारोंओर खड़ेहोकर राजा सुबाहु की अनेक प्रकारोंसे स्तुति करनेलगे ५ । ६ अग्निआदि सब देवता ब्रह्मा हरि व सब देवियां मिलकर सुन्दर मधुर मनोहर गीतगानेलगे व गन्धर्व्वराजादि सुन्दर गान करनेवाले लोग आये और वेभी गाते भये ७ मुनिलोग सुन्दर वेदयुक्त परमार्थ समेत सुन्दर पुण्यकारी स्तोत्रोंसे स्तुति करतेभये तब देव हरि राजाको देखकर मनोहर वचन बोले ८ कि हे राजन् ! जो इष्टहो वह वरमांगो हम तुमकोदेंगे क्योंकि तुमने प्रसन्न किया है हरिजीके वचन सुनकर राजा श्रीमुरारिजीको आगे कहतेहुये देखकर ९ जोकि नीलकमल सम श्यामस्वरूप मुर राक्षस के मारनेवाले पुरुषों के अधिनाथ शंख चक्र तलवार गदा धारण किये थे व लक्ष्मीसमेत रत्नोंसे प्रकाशित कङ्कण हारादिकों से भूषित परमेश्वरको १० जिनकी रविकीसी प्रभाथी देवसमूहों से सेवित थे बड़े मोलके हार और गहनों से भूषित थे व दिव्यगन्ध अनुलेपन किये थे ऐसे श्रीहरिको देखकर राजाने सुन्दर भक्तिभावोंसे पृथ्वी पर गिरकर दण्डवत् प्रणामकिया व कहा कि आपके निरन्तर प्रणामहैं आपकी जयहो हे भगवन् ! मैं तुम्हारा दासहूँ व सदाका भृत्यहूँ मैं आपके उत्तम भावसे युक्तभक्ति नहीं जानता स्त्रीयुक्त आये हुये शरणमेंप्राप्त मेरी रक्षाकरो हे माधवजी ! ब्राह्मण मनुष्य धन्यहैं

जोकि सदैव आपके ध्यानमें मनलगायेहुये रहते हैं ११।१३ शिव
माधव ऐसा उच्चारण करतेहुये अत्यन्त निर्मल वैकुण्ठ को जाते हैं
और आपके चरणकमल से निकलेहुये पुण्यकारी जलको जो शि-
रमें लगाते हैं १४ वे मनुष्य सब तीर्थों से उत्पन्न जलमें स्नानकर
हरिजीके सुन्दर धामको जाते हैं १५ मेरे योग भक्ति ज्ञान क्रिया कुछ
भी नहींहै किस पुण्यके सङ्गसे हमको वरदेतेहो १६ श्रीहरि बोले कि
महापातकनाशन वासुदेवाभिधान स्तोत्र तुमने पुण्यात्माविज्वलके
मुखसेसुनाहै इससे पापरहित १७ और मुक्तिके भागीहुये इसमें कुछ
सन्देहनहींहै अब चलकर हमारेलोकमें मनोरम दिव्यभोग भोगो राजा
सुबाहु यह सुनकर बोला कि हे देव! जो मुझदीनको आप वरदिया
चाहतेहैं तो प्रथम उत्तम वर इन प्रज्वलजीको दें १८।१९ श्रीहरिजी
बोले कि विज्वलका पिता कुञ्जल बड़ा पुण्यात्मा व ज्ञानवान् है हे
महाराज! वासुदेव महास्तोत्र नित्य पढ़ता है २० इससे पुत्रों व
स्त्रीसमेत वह हमारे लोकको जायगा क्योंकि जोई कोई इस स्तोत्र
को जपता है उसको हम सदैव फल देतेहैं २१ जब ऐसा शुभवचन
कहा तो राजा श्रीकेशवजीसे बोला कि हे केशव! इस महापुण्यस्तोत्र
को आप सफलकरें २२ श्रीहरिजी बोले कि हे महाराज! सत्ययुग
में जो मनुष्य इसेसुनेंगे तो तुरन्त मोक्ष पावेंगे इसमें कुछभी संशय
नहीं है २३ व त्रेतामें एक मासभर सुननेसे व द्वापरमें छःमासतक
श्रवणकरने से व एक वर्षभर तक सुनने से मनुष्य कलियुगमें २४
स्वर्गको वा गतिदायक वैष्णवलोक को जायँगे जो कोई ब्राह्मण
स्नानकर तीनोंकाल वा एककालमें इस स्तोत्रको पढ़ेगा २५ जो
चाहेगा सबकाम उसके होंगे क्षत्रिय जयको पावेगा और धन धान्य
से अलंकृत होगा २६ वैश्य सुनकर लक्ष्मीयुक्त होगा जो कोई शूद्र
इसे सुनेगा वह सुखीहोगा व जो कोई अन्त्यज को सुनावेगा तो
पापसे मुक्तहोगा व सुनानेवाला तो कभी घोर नरकको नहीं देखेगा
हमारे इसस्तोत्रके प्रसादसे सर्वसिद्धहोगा २७।२८ व जो कोई श्राद्ध
में ब्राह्मणोंके भोजन के समय इसे पढ़ेगा हे महाराज! उसके पितर
तृप्तहोकर श्रीवैष्णवलोक को जायँगे २९ व तर्प्पण करने के पीछे

ब्राह्मण वा क्षत्रिय जपकरें तो उसके पितर जो कोई इस हर्षितमन होकर अमृत पीवेंगे ३० जो कोई होमों के करनेके समय यज्ञों में भाव से इसे पढ़ेगा तो वहां विघ्न न होंगे व सब कार्य्यों की सिद्धिहोगी ३१ पर्व्वतादि विषम दुर्ग्गमस्थान में वा व्याघ्रादि के संकट में व चौरोंके संकटमें जो कोई इस स्तोत्रको पढ़ेगा तो ३२ वहां शान्ति होजायगी हे महाराज! इसमें कुछभी संशय नहीं है अन्य सब सेवकोंको चाहिये कि जब राजद्वार को चलें ३३ तो इसे पढ़कर चलें इस वासुदेवाभिधान स्तोत्र को ब्रह्मचर्य्य से स्नानकर क्रोध लोभसे वर्जित होकर मनुष्य दशहज़ार जपे ३४ वासुदेवको पूजनकर प्रयत मनहोकर तिल तण्डुल घी मिलाकर दशांश हवन करना चाहिये ३५ व जितने श्लोक स्तोत्र में हैं प्रतिश्लोक होमकी आहुति ध्यान से मनुष्यों को डालनी चाहिये ऐसा करनेवाले के समीप हम नित्य ही दासकी नाईं टिकेरहते हैं ३६ कलियुग में यह स्तोत्र दास्यको प्राप्त होजायगा वेदके भङ्ग प्रसंग से जिस किसीको न देवे ३७ परन्तु जहां कहीं इसका पाठहोगा सब कार्य्योंकी सिद्धिहोगी हे भूप! सुनो हमने इसप्रकार इसस्तोत्रको सफल किया ३८ इसको ब्रह्माने रचा फिर रुद्रने जपा तब ब्रह्महत्या से मुक्तहुये व इन्द्रभी इसीके जपने से पापोंसे छूटे ३९ ॥

चौ० देव सिद्ध ऋषि गुह्यकआदी । विद्याधर नर विगतविवादी ॥
सब यह स्तवन पढ़त करिछोहू । मनवाञ्छित पायहुँ गतमोहू ॥
जो मम पढ़िहि कबहुँ सुस्तोत्रा । पुण्य पुत्र धन धान्य सुगोत्रा ॥
सो पाइहि यामहँ न विचारा । करनचही सुनिवचन हमारा ॥
इमि कहि भूपति सों भगवाना । कह्यहु भूप अब करहुपयाना ॥
गहहु हमार पाणि पुनि चलहू । बसहुलोक ममसदा अचलहू ॥
जब हरि निजकर भूपहि दीना । देव स्वर्गमहँ अतिमुदकीना ॥
दीन दुन्दुभी बहुत बजाई । किन्नर गन्धर्व्वन तब गाई ॥

श्रेष्ठ अप्सरा नाचनेलगीं फूलों की वर्षा देवता सब ऋषि करते भये और वेदके स्तोत्रों से स्तुति करनेलगे तब स्त्रीसहित राजा हरि लोक को जाता भया ४० । ४४ तो देवसमूहों से स्तुति कियेहुये

राजा को देखकर विज्वल प्रसन्न मन होकर महाप्रभाव युक्तहोकर शीघ्रतासे जहां माता पिता थे वहां आगया ४९॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे च्यवनचरित्रेनवनवतितमोऽध्यायः ९९॥

# सौ अध्याय॥

दो० सौअध्यायमहँ किय तृतिय सुत कैलास बखान॥
यक नारी यक पुरुष की भाषी कथा सुहान १

विष्णुजी राजावेनसे बोले विज्वल उसी नर्म्मदा नदीके सुन्दर तटपरके वट वृक्षपर आया कि जहां उसका पिता था व आकर पिता के प्रणामकरके १ वासुदेवाभिधान स्तोत्रकी महिमा उस महामति धर्मात्माने अपने पिता से सब यथाक्रम कही २ कि जैसे श्रीविष्णु भगवान्जी ने आकर सुन्दर वर दिया सब प्रसन्न मनहोकर उसने वर्णन किया ३ व कुञ्जलने अच्छेप्रकार ध्यान देकर सब वृत्तान्त सुना तब बड़े हर्ष से युक्तहोकर विज्वल पुत्रको आलिंगन कर ४ उसे कहा कि हे वत्स! तुमने महात्मा राजाके लिये पुण्यकिया जोकि वासुदेवजी के कीर्त्तनसे महापुण्यकारी उपकार किया ५ इस प्रकार तिस पुत्रसे कहकर आशीर्वाद देकर देव समान पुत्रकी बार बार स्तुति करतेभये ६ और च्यवनजी के देखतेही देखते सुन्दर नदी के किनारे स्थितरहे यह सब तिन महात्मा वैष्णवों का वृत्तान्त तुमसे कहा ७ हे महाराज! और क्या तुमसे कहें इतनी कथा सुनकर राजावेन ने श्रीविष्णु भगवान्जी से कहा कि शंख पात्रमें अमृत हमारे पीने के लिये आपने दिया ८ तो पृथ्वी में उसके पीने की श्रद्धा किस मनुष्य को न हो इससे उत्तम वैष्णव ज्ञान सदैव जो आपने कहा उसके सुनने में हमारी तृप्ति नहीं हुई है अमृतका पानकियाहै सुननेमें हे देवदेवेश! हमारी श्रद्धा बढ़ती है ९।१० अब प्रसन्नहोकर कुञ्जलका चरित्त हमसे कहिये कि वह वृत्तान्त सुनकर उस महात्माने अपने चौथे पुत्रसे फिर क्या कहा ११ हे देव! वह हमसे विस्तारपूर्वक कृपाकर कहिये श्रीभगवान्जी बोले कि सुनो

स कुञ्जलका चरित तुमसे कहेंगे १२ व च्यवनमुनिका भी बहुत
ल्याण युक्त चरित्र कहेंगे हे नरश्रेष्ठ ! यह पुण्य बढ़ानेवाला पाप-
ाशनेहारा आख्यान १३ जो कोई मनुष्य भक्तिसे सुनताहै वह
हस्र गोदानका फलपाताहै १४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेभूमिखण्डेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवन
चरित्रेशततमोऽध्याय १०० ॥

## एकसौएक का अध्याय ॥

दो० इकसौइक अध्यायमहँ कुञ्जल सुन्यो विचित्र ॥
निजचौथेसुत शिवचरित पितुसों कह्योसुचित्र १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि देवदेव हृषीकेशजी नृपोंमें उ-
ाम अंगके पुत्र राजावेन से पापनाशन बड़े कल्याण युक्त आख्यान
ो कहते भये १ कि कल्याणदायक कुञ्जलमहात्मा और च्यवन
ाह्मण का वृत्तान्त हमसे सुनो हम कहते हैं २ विष्णुजी बोले कि
र्म्मात्मा कुञ्जलने आनन्द युक्तहो अपने चौथे पुत्रको बुलाकर
ससे कहा कि जिसका कपिञ्जल नाम था ३ कि हे पुत्र ! तुम जब
ोजन के लिये जाते हो तो क्या अपूर्व्व देखते हो व कहां जातेहो
? हे महाभाग ! जो कुछ पुण्यदायक चरित्र तुमने देखाहो हम से
वश्य कहो यह सुनकर कपिञ्जल बोला कि हे तात ! जो आपने
ूछा है तो हम अपूर्व्व कहते हैं ५ जोकि किसीने न देखाहोगा न
ुनाहोगा न हमनेही कभी किसीसे सुनाथा वह अब हम इस समय
ापसे कहते हैं हे पिताजी ! सुनिये ६ व ये सब हमारे भाईलोग
ी सुनें व माताजी तुमभी सुनो चन्द्रमा के समान श्वेत कैलास
ाम पर्व्वत श्रेष्ठ है ७ जोकि नानाप्रकार के धातुओं से समाकीर्ण
ा नानाप्रकार के वृक्षोंसे उपशोभित है व पुण्यशुभ गङ्गाजलसे सब
ोरसे क्षालित होताहै ८ व दिव्य सहस्रों नदियोंके प्रवाह उसपर
लते हैं जिनसे अनेक प्रकारके जल उत्पन्न हैं ९ महागिरिमें जल
मेत सहस्रों तालाबहैं सुन्दरी नदियाँहैं जोकि हंस और सारसों से
ेवितहैं १० पुण्यदेनेवाली और पापनाशनेहारीहैं तिसपर्व्वत श्रेष्ठ

में अनेकप्रकार के फूलेफले वनहैं ११ जोकि अनेकप्रकारके वृ
से युक्त शुभहरेहैं और पर्व्वत किन्नरों के समूहों से युक्त अ
से आकुल १२ गन्धर्व्व चारण सिद्ध देवसमूहों से सुशोभित दि
वृक्षवनोंसे युक्त दिव्यभावोंसे आकुल १३ सुन्दरशोभा युक्त दि
गन्धों और अनेकप्रकार के रत्नोंसे युक्तहै स्फटिकमणियों की स
शिलाओंसे उपशोभित १४ व हे राजन्! सूर्य्यके तेजके समान ते
विराजमान व मनोहर गन्धवाले चन्दन के वृक्षोंसे और नीले पु
वाले बकुलोंसे १५ व और भी नानाप्रकारके पुष्पमय वृक्षोंसे
ओर अलंकृत व पक्षियोंके दिव्य मधुरनादों से नादित १६ भ्र
के शब्दों से शब्दायमान वृक्षसमूहों से शोभित कोकिलों के ना
वनसमेत पर्व्वतशोभित होरहाथा १७ कोटि गणोंसे समाकीर्ण
पर शिवजी का मन्दिर है जोकि किरणों से उज्ज्वल पुण्यकारी
राशिके पत्थरोंकाहै १८ सिंह गर्जरहे हैं सैरिभहाथी और दिशा
के हाथियों के सुन्दर शब्दों से चारोंओर शब्द युक्त १९ अनेक
कारके मृग और वानरगणों से आकुल गुहाओं में मुरैलोंकी वा
से शब्द समेत २० नानाप्रकारकी लेपनकूट कन्दराओं से शोभि
व कँगूरोंसे विराजमान नानाप्रकारके झरनों व ओषधियों से वि
जित २१ इस प्रकारके दिव्य सुन्दर गुणयुक्त पुण्यकारी पुण्य
से युक्त पुण्यकीराशि महापर्व्वत पुण्यकारी मनुष्यों से सेवित है
व पुलिन्द भिल्लकोलों से भराहुआ व विकट शिखरों और को
पर्वतराज प्रकाशितहै २३ व अन्य नानाप्रकारके पुण्य शुभ
मङ्गलोंसे विराजमान व गङ्गाजीके बहुतसे प्रवाहोंसे शब्दायमान
ऐसेमहादेवजी के गृहयुक्त कैलास पर्व्वत पर हे तात ! हमगये
पर जो आश्चर्य्य हमने देखा वह कभी न देखाथा न सुनाथा
सो हे तात ! अब सब सुनिये तुमसे कहतेहैं उस पर्व्वतराजका
बड़ाभारी शिखर है जोकि पुण्यकारी बड़ेउदयवाला है २६ हे मह
भाग ! वहांसे गंगाजी का पानी दूधके समान सुन्दर वर्णवाला
वाह वेगसे पृथ्वीपर गिरता है जोकि शब्दसे भूषितहै २७
के शिरको पाकर विस्तृत दशयोजन का बड़ाभारी गंगाजी का

२८ जो कि पुण्यकारी विमल बहुत जलसे विराजित है सब ओर
कल्याणभावको प्राप्त बड़े हंसों से शोभितहै २९ हंस पुण्यकारी
दिव्य मीठे सामवेद के उच्चारसे वहांपर शब्दकरते हैं तिससे सर
विराजमान है ३० तिसके किनारे शिलामें हिमवान् की कन्या रूप
लावण्यशालिनी शिरके बाल खोले हुई बैठीथी ३१ दिव्यरूपसे युक्त
गुणों से सम्पन्न व दिव्य लक्षणों से युक्त दिखाई देती दिव्यअल-
ङ्कारों से भूषित विराजमान होतीथी ३२ नहीं जानते कि वे पर्वत
राजहिमवान् की कन्या पार्व्वती हैं वा समुद्रकी कन्या लक्ष्मीजी हैं कि
वो ब्रह्माजी की पत्नी ब्रह्माणी हैं वा अग्निकी भार्य्या स्वाहा ३३ वा
महाभाग्यवती इन्द्राणी वा चन्द्रमाकी स्त्री रोहिणी है हे तात! इस
प्रकारकी रूपकी सम्पत्ति और सुन्दर स्त्रियों के नहीं दिखाई देती
जैसा रूप सम्भाव व गुण शील उस स्त्रीका दिखाईदेताहै ३४ । ३५
ऐसा रूप लक्षण अप्सराओं का भी नहीं है कि जैसा विश्वमोहन
अंग हमने देखा ३६ शिलामें बैठी दुःख समेतभी थी उसका कोई
बन्धु उसके समीप नहीं था इससे बड़े स्वरसे रोदन करती थी ३७
व मोतियों के समान निर्मल बहुत से आंसु सरमें गिरातीथी ३८
वे आंसुओं के विन्दु मोती के समान उस बड़ेजल में गिरते उनसे
दिव्यकमल वहां उत्पन्न होते चलेजाते जिनमें कि महासुगन्ध
आताहै ३९ इस प्रकार उन सब आंसुओं से कमलही उत्पन्न होते
हैं व फिर वे असंख्य पुष्प गङ्गाजी के जलमें उतराते हैं ४० फिर
वेगसे जितने कमलके पुष्प गिरते हैं वे गङ्गाजी के प्रवाहमें बहते हैं
वह गङ्गाजीके प्रवाहका मध्य हंसवृन्दों से सुशोभित है ४१ गङ्गाजी
का प्रवाह तिसी स्थान से निकला है कैलास के सुन्दर कन्दरावाले
रत्ननाम शिखरको प्राप्तहोकर ४२ दो योजन का विस्तृतजलसे पूर्ण
वर्तमान प्रवाह है जो कि हंसवृन्दों से युक्त जल के पक्षियों से आ-
कुलहै ४३ हे तात ! मुनिसमूहों से सेवित निर्म्मल प्रवाहमें अनेक
वर्णवाले कमलहैं ४४ जो प्रातःकाल आंसुओं से उत्पन्न कमल होते
हैं वे बहुत सुगन्धित गङ्गाजल में डूबते ४५ निर्मल जल भरे हुये
प्रवाहमें उतराते हैं मध्यमध्यमें सुन्दर हंस और जलके पक्षी शब्द

करते हैं ४६ सूतजी शौनकादिकों से कहते हैं और हे पिताजी!
आपसे कह रहाहूं तिस रत्नपर्व्वत में रत्नेश्वर महादेवजी देवता
से पूजित सदैव स्थित रहते हैं ४७ तहांपर मैंने किसी पुण्यात्मा
मुनि को देखा जो कि जटाभारसे युक्त वस्त्रहीन दण्डधारे ४८ तिक
धार निराहार तपस्या से अत्यन्त दुर्बल दुर्बलअङ्ग हाड़समूहों
युक्त त्वचामात्र से आच्छादित थे ४९ महात्माजी के सब अङ्गों
भस्मलगी थी सूखे गिरेहुये पत्तौंका भोजन करते थे ५० शिवभक्ति
में बैठेहुये दुराधार महातपस्वी आंसुओं से जो सुगन्धित कम
उत्पन्नहों ५१ उनको गंगाजी के जलसे लेकर देवदेव रत्नेश्वर मह
देवजी को पूजनकरताहै वह गीत और नाचमें निपुण ५२ महात्मा
जी के द्वारमें स्थितहोकर गाता नाचता और मठमें आकर धर्मात्म
सुन्दर स्वरोंसे रोताहै ५३ हे तात! हे कहनेवालों में श्रेष्ठ! यह मैंने
अपूर्व देखा है प्रसन्न होकर जो आप कारण जानतेहों तो मुझसे
कहें ५४ वह महाभाग्यवती कौन स्त्री थी और हे तात! क्यों रोती
थी और वह देव पुरुष क्यों देव महेश्वरजी को पूजता था ५५ यह
सब सन्देहकारण हम से विस्तारसे कहिये जब कपिंजल पुत्रने महा
बुद्धिमान् कुंजलजी से इस प्रकार कहा तो कुंजलजी मुनि के सुनते
सुनते विस्तारसे कहने लगे ५६। ५७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरु
तीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेएकाधिकशततमोऽध्यायः १०१॥

## एकसौ दोका अध्याय॥

दो० व्यधिकसवें महँ पितु कह्यो सुतसों नन्दनगाथ॥
जहँ शिवसँग गिरिजाप्रकट किय यक नारिसनाथ १

कुंजलजी बोले कि हे पुत्र! जो तुमने हमसे पूँछा सब हम इस
समय तुम से कहते हैं जिससे कि उन दोनों का ज्ञान तुमको होगा
१ स्त्रियों में उत्तम महादेवी पार्व्वतीजी एक समय क्रीड़ा करतीहुई
महात्मा महादेवजी से यह वचन बोलीं कि २ हे महादेवजी! हम
खेलने गर्ई है इससे उत्तम वन हमको आप दिखावें ३ महादेवजी

बोले कि बहुत अच्छा ऐसाही होगा हे महादेवि ! अब देवताओं से युक्त पुण्यदायक द्विजसिद्धों से सेवित नन्दन नाम वन तुमको दिखावेंगे ४ ऐसा उन देवीजी से कह उनके व अपने सब गणों के सङ्ग महादेवजी नन्दनके चलने में उत्सुक हुये ५ इस लिये सर्वांग सुन्दर, दिव्य, पुष्ट व आभरणों से युक्त घण्टा माला पहिने किंकिणी जालों की माला धारे ६ चामर व पुण्य वस्त्रों और मोतियों की मालाओं से शोभित हंस व चन्द्रमा के समान उज्ज्वल सुन्दर लक्षण युक्त अपने नन्दीश्वर नाम वृषभपर ७ आरूढ़हुये उनके सङ्ग किरोड़ों गण थे जैसे कि नन्दी, भृङ्गी, महाकाल, स्कन्द, चण्ड, महोदर ८ वीरभद्र, गणेश, पुष्पदन्त, मणीश्वर, अतिबल, सुबल, मेघनाद, घटावह ९ घण्टाकर्ण,कालिन्द, पुलिन्द, वीरबाहुक, केशरी, किङ्कर, चण्डहास, प्रजापति १० इन गणोंको छोड़ औरभी सनकादि महा तपस्वी लोग व अन्य भी किरोड़ों गणों से युक्त होकर शिवजी ११ देवता किन्नरों से सेवित उस नन्दनवन में इन बहुतसे गणों से युक्त पार्वती समेत पैठे १२ व देवेश महादेवजी ने पार्व्वती जीको सब नन्दनवन दिखाया जो कि अति सुन्दर नानाप्रकारके वृक्षों से संयुक्त बहुत पुष्पादिकों से भराहुआ १३ दिव्य केलोंके वनोंसेयुक्त व फूलेहुये चम्पाके वृक्षों से विराजमान पुष्पित मल्लिका व मालतियों से शोभित १४ नित्य पुष्पित पाड़रकी शाखाओंसे शोभित व चन्दनादि सुगन्धित महावृक्षों से विराजमान १५ देवदारुओं के वनों से सेवित व अन्य बहुत बड़े ऊँचे २ वृक्षों से समाकुल, सरल, नारियल, सुपारी १६ खजूर, कटहल के फलभार से झुकेहुये वृक्षों से शोभित परिमल,कृतमाल,तमाल,शालके पुण्यवृक्षोंसे समाकुल १७ अग्निके तेजके तुल्य प्रकाशित सप्तपुष्पी के वृक्षों से सुशोभित तालके व और भी बहुत से सुगन्धित पुष्पों की शोभासे सदैव शोभित १८ जामुन, नींब, मातुलिंगादि वृक्षों से समाकुल, नारंगी, सिन्धुवार, प्रियाल, शाल, तिन्दुक १९ गूलर, कैथा, राजजम्बूके वृक्षोंसे शोभित बड़हल आदि महकतेहुये वृक्षोंकी शोभा व सुगन्धिसे समाकुल २० व आम फलराजादि मेघों के समान नीलवृक्षोंसेयुक्त नीलदिव्य शालके और

जालाओं के वनों से शोभित २१ सूर्य के समान विशाल तमालों से सेवित था ऐसे पुण्यकारी नन्दनवनको शिवजीने दिखाया २२ व बहुत घने जोकि और सब नीलवनकेसमान वृक्षोंसे शोभित सबकाम फलसे युक्त कल्याण फल देनेवाले २३ महापुण्यकारी कल्पवृक्षों से शोभित नन्दनवनहै और अनेकप्रकारके पक्षियोंके मीठेस्वरोंसे नाद युक्त है २४ कोकिलाओं के पुण्यकारी मीठे शब्दों समेतहै मकरन्द के लोभी पक्षियों के शब्द से नादित है २५ अनेकप्रकार के वृक्षों और अनेकप्रकार के मृगसमूहोंसे भी युक्तहै वृक्षोंसे अनेकप्रकारके सुगन्धित फूल पृथ्वीमें गिरते हैं २६ तब सुगन्धों से पूजितहुई की नाईं पृथ्वी वह प्रकाशित होतीहै वहांपर महापुण्यकारिणी कमलकी सुगन्ध से निर्मल बावली हैं २७ जोकि जलोंसे पूरित हंस चकई चकवासे सेवित जलकी सुगन्ध से पूजित सागरके समान तालाबों से २८ सबओर नन्दनवन प्रकाशितहै अप्सराओंके समूह विमान सुन्दर कलश और सुशोभन सोनेके दण्डोंसे युक्तहै २९ नन्दनवन राज अमृतयुक्त महलों से जहां तहां प्रकाशित है किन्नरोंके महागणोंसे ३० गन्धर्व सुरूपवती अप्सराओं से देवताओं के विनोदोंसे मुनिवृन्दों से सुन्दर योगियों से ३१ सब जगह नन्दनवन शोभित है इस प्रकार देवी समेत महानुभाव महात्मा शिवजी पुण्यवानों के निवासके स्थान सुखकी खानि शान्ति गुणोंसे युक्त ३२ । ३३ सूर्य तेजकेतुल्य प्रकाशित इस प्रकारके नन्दनवन में पार्वतीजी सहित श्रीमहादेवजी ने सबओर उनको दिखाकर फिर सूर्यतेज से प्रकाशित पुष्पों व फलोंसे युक्त कल्पवृक्ष नाम महावृक्षको देखा ३४ व ऐसे कल्पवृक्षको देखकर पार्वती जी श्रीशिवजीसे बोलीं किहेनाथ! इस वृक्षकानाम बताओ क्याहै क्या यह पुण्यवानोंकी मूर्ति है ३५ वा तेजस्वियोंमें श्रेष्ठ सूर्य्य है यह सुनकर शिवजी देवीजी से बोले कि इसकी प्रतिष्ठा बड़ी शुभहै जैसे देवताओं में मधुसूदन भगवान् श्रेष्ठहैं ३६ नदियोंमें गंगाजी श्रेष्ठहैं व जैसे सब सृष्टि करनेवालोंमें ब्रह्मा श्रेष्ठहैं व अमृतस्राव होनेके कारण जैसे चन्द्रमा सबतारागणों में श्रेष्ठ है व धारण पोषण करनेवालों में जैसे पृथ्वी श्रेष्ठ है ३७ व

जैसे सब हाथियों में ऐरावत नाम हाथी श्रेष्ठ है व जैसे सब जला-
शयोंमें समुद्र श्रेष्ठहै हे देवि ! जैसे सब महौषधियों में अन्न श्रेष्ठहै व
पर्व्वतों में जैसे हिमवान् श्रेष्ठहै ३८ सब विद्याओं में जैसे ब्रह्मविद्या
श्रेष्ठ होती है व जैसे सब मनुष्यों में राजा श्रेष्ठ होता है वैसेही यह
सब वृक्षोंमें श्रेष्ठ कल्पवृक्षहै सबका अतिथि व देवराज का परमप्रिय
है ३९ यह सुन पार्व्वती जी बोलीं कि हे महाराज ! वृक्षराज कल्प-
वृक्ष के सब शुभ पुण्यकारी गुण हमसे कहो ऐसा सुन महादेवजी
अपनी प्रिया पार्व्वतीजीसे बोले कि ४० जो २ लोग भूतलपर पुण्य
करते हैं व स्वर्ग्ग को आते हैं वे देवरूप होकर इसी कल्पवृक्ष के
प्रसादसे यहां वाञ्छितपद भोगते हैं व सब सुखकरते हैं ४१ और
इसीसे पुण्यकारी तपस्वी सब होते हैं यह जीवाधिक रत्नमय दिव्य
और यहां भी दुःखसे प्राप्तहोने योग्य है महाप्रधान देवता इसको
पाकर सुख भोगते हैं ४२ शिवजीका वचन सुनकर व आश्चर्य्यभूत
समझकर पार्व्वतीजीने अपने मनसे संकल्प किया कि इसमेंसे जो
दिव्य एकस्त्री निकलती तो अच्छाथा ४३ यह संकल्प करतेही सब
दिव्य वस्त्र भूषणों से भूषित अतिरूप शील गुणवती एक स्त्री उस
कल्पवृक्ष से निकलआई व पार्व्वतीजी ने उसको ग्रहण किया उस
का रूप ऐसा था मानों विश्वभर के मोहनेके लिये व कामकी सहा-
यताकरने ४४ व क्रीड़ा करने के लिये सुख सिद्धिरूप उत्पन्न होकर
वहां आईथी व उसके नयन कर चरण सब कमलके तुल्य कोमल
बड़े आदिथे व सब सिद्धिरूप थी व उसका मुख कमलके तुल्य कर
पङ्कज के समान देहकारंग तपाये हुये सुवर्ण के रंगका ४५ व सब
विमलतेज केशनील व घूँघुरवाले बड़े लम्बे पर बहुतही पतले और
चीकने नख व लालरेशम से अच्छे प्रकार बँधे सुगन्धित पुष्पगुहे व
सुगन्धित लेपअतर इत्यादि लगाये हुये ४६ पाटी उसकी ऐसी दृढ़
व चीकनी बनीथी कि देखतेही बनता था केशपाशों में मोतियों की
मालापुहीथीं जैसे वृक्षोंपर ओसके बिन्दु प्रातःकाल शोभित होतेहैं
४७ व पाटीकेनीचे मस्तकपर पीततिलक बृहस्पति के समान शोभि-
तहोता वह तिलककेसर व कस्तूरी घिसकर लगायागया था व अपने

तेजों से विराजित होता था ४८ व केशपाशके नीचेका तिलक उत्त
शोभाकोप्रकाशित कराता था व केशोंके बीच २ में जो मोतियोंकीलड़
लगी थीं अत्यन्त शोभित होती थीं ४९ जैसे पूर्णमासी का चन्द्रमा
प्रकाशित होता है वैसेही मुख प्रकाशित होताथा मुखकी गोलाई न
प्रकाश पूर्णमासी के चन्द्रमाके समान शोभित होताथा पूर्णमासी के
चन्द्रमा में भी कलङ्क रहता है व दिनमें उसका कुछ प्रकाश नहीं
रहता पर उसका मुख निष्कलंक व रात्रि दिन सदा प्रकाशित रहता
क्योंकि सदा हृष्टपुष्ट बनारहता था व चन्द्रमा कृष्णपक्षमें प्रतिदिन
कलाहीन हुआकरता है व वह सदा कलाओंसे पूर्णथा वह सकलंक
व मुख निष्कलंक था कमलमुखी सब गुणोंसे उपपन्न उसको देखकर
व अपना गन्ध उसमें देखकर कमल पवन लगतेही कांपनेलगे कि
हम में ऐसा गन्ध नहीं है ५०।५३ इससे सहसासे लज्जितहोकर
वह जाकर सदैव पानीमें रहनेलगा कोई २ नियत मतिवाले कहतेहैं
कि कामका कोश समुद्रमें रहताहै ५४ इसीसे वह अपनी कलाओंसे
सुन्दरदाँतोंको रत्नरूप दिखाताहुआमानों हँसता था ओंठ पके कुँदरू
के समान अरुण उससे शोभायमान मुखथा ५५ सुन्दरभौंहें सुन्दर
नासिका सुन्दर कान रत्नोंसे भूषित सुवर्णकी कान्तिके समान दीप्ति
संयुक्त कपोल थे ५६ ग्रीवामें तीनरेखा शोभित थीं वे रेखासौभाग्य
शील शृङ्गारोंसे थीं ५७ कठिनपीन व गोले उसके कुचकुम्भ मानों
कामराज के अभिषेक के लिये निर्म्मितहुये थे ५८ कन्धे दोनों ऐसे
समान शोभायुक्त थे कि वैसे कहीं दिखाईही नहींदेते भुजभी दोनों
समान चढ़ाउतार सब शुभलक्षणयुक्तथे ५९ करकमलोंकी अँगुलियां
पांच पांचोंकेसमानथीं व सब दिव्यलक्षण संयुक्तथीं ६० नखयुक्त अँगु-
लियां सब सीधा व मध्यमासे दोनों ओरोंको कुछेक यथाक्रम नीचेको
झुकतीगई थीं तीक्ष्ण नख जलविन्दुके समान थे ६१ उसके अङ्गों
का रंगभी पद्महीके समान था इससे जान पड़ता था कि मानों सब
प्रकार से वह पद्मिनीही थी ६२ सब अङ्ग सब लक्षणों से सम्पन्न
होनेके कारण परमसुन्दर लगते थे चरण दोनों अति कोमल लाले
कमलके सदृश नम्रथे ६३ व चरणोंके नखोंकी ज्योति रत्नोंके प्रकाश

के समान प्रकाशित थी जैसे शास्त्रों में कहा है तैसे उसके अंगों में सब रूपथे ६४ व सब आभरणों की शोभा से शोभित हार कङ्कण नूपुरयुक्त क्षुद्रघण्टिका से शोभित ६५ नीले रेशमी वस्त्रों से भूषित दिव्य लाल कंचुकधारेथी इससे बड़ी शोभाको प्राप्तथी ६६ ऐसी स्त्रीको पाकर कल्पवृक्षसे प्रसन्नहोकर पार्वतीजी फिर महादेवजीसे बोलीं ६७ कि हे स्वामिन् ! जैसा तुमने इस कल्पवृक्षका माहात्म्य कहा कि जो कुछ चाहो सब देसक्ता है हमने सब देखा क्योंकि हमारे संकल्प करतेही यह स्त्री उत्पन्नहोगई बस जैसा प्रभावहै हमने सबदेखा ६८ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि ऐसा पार्व्वती जी महादेवजी से कहतीही थीं कि इतने में उस स्त्रीने आकर उन दोनों के भक्तिसे चरणकमलोंमें प्रणामकिया ६९ व बोली कि आपने हमको क्यों उत्पन्न किया इसका कारण कहिये ७० श्रीपार्वतीजी बोलीं कि वृक्षका कौतुक देखने के लिये व महत्त्व जानने के लिये हमने तुमको उत्पन्नकराया है ७१ हे भद्रे ! तुम्हारे रूपकी सम्पदा से शीघ्रही फलको प्राप्तभई लोकमें अशोकसुन्दरी तुम्हारा नाम होगा सब सौभाग्यसम्पन्न होकर तुम हमारी पुत्री कहाओगी इस में कुछभी सन्देह नहीं है ७२ ॥

चौ० सोमवंश भूषण महिपाला । नहुपनाम जो परमविशाला ॥
जो पुनि होइहि इन्द्र पुनीता । तापती तुमहोव विनीता ७३
इमि दै वरगिरिजा निज धामा । शिवयुतगई परमअभिरामा ॥
गिरि कैलास सुहावन पावन । जो सबभांति विचित्रबनावन ७४

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने गुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेद्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२ ॥

## एकसौतीनका अध्याय ॥

दो० तीन अधिक सवयेंमहँ हुण्ड शैलजा कन्य ॥
वार्त्तातालप दैत्य कर है विचार नहिं अन्य १
आयु भूपतप अत्रिसुत सों पायहु वर पूत ॥
यहवर्णित यामहँ सकल बहुत भांति मजबूत २

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जलसे बोला कि वह सब स्त्रियों में श्रेष्ठ अशोकसुन्दरी सब काम गुणोंसे युक्त पुण्यकारी नन्दनवनमें विहार करनेलगी १ व उसके संग औरभी बहुतसी सुरूपवती देवताओंकी कन्याभी खेलती थीं उनके संग मन्द २ हँसती हुई गाती नाचती सब भोगोंको भोगनेलगी २ एकसमय विप्रचित्तिनाम दैत्यका पुत्र स्वेच्छाचारी महाकामी अतितीव्रस्वभाव हुण्डनाम दैत्य नन्दनवन में आया ३ उसने सब आभरणों से भूषित अशोकसुन्दरी को देखा व उसके देखनेसे वह दैत्य कामबाणोंसे अतीव व्याकुल हुआ ४ उससे बोला कि हे शुभे! तू कौनहै व किसकी स्त्री वा कन्याहै व किस कारणसे इस नन्दनवनमें आई है ५ इतना सुनकर अशोकसुन्दरी बोली कि सुनो हम अतिपुण्य शिवजीकी कन्याहैं व कार्त्तिकेयजीकी भगिनी हैं व पार्व्वतीजी हमारी माता हैं ६ व बालभाव से क्रीड़ा करनेके लिये इस नन्दनवनमें आई हैं आप कौनहैं और किसलिये हमसे ऐसा पूछतेहैं ७ तब हुण्डबोला कि हम विप्रचित्ति दैत्यके पुत्र हैं सब गुण लक्षणों से युक्त हैं हुण्ड ऐसा हमारा नाम है व बलवीर्य मद से उद्धत हैं ८ हम दैत्योंमें सबसे श्रेष्ठहैं देवलोक व मर्त्यलोक में भी तप व यश करने में हमारे तुल्य और कोई नहीं है ९ अरु नागलोकादिकों में भी हमारे समान रूपवान् कोई नहीं है सो हे विशालनयने! हम तुमको देखतेही कामके बाणोंसे मारेगये १० अब तुम्हारे शरण में हैं प्रसन्नतासे सुमुखी होओ व हमारी प्राणप्यारी तुम अपने आप होओ ११ इतना सुनकर अशोकसुन्दरी बोली कि सुनो सब सम्बन्धका कारण हम तुमसे कहेंगी इसलोकमें जितनी स्त्रियां वा पुरुष उत्पन्नहोते हैं उनको पति वा स्त्री जो मिलनेवाले होते हैं वेही मिलते हैं १२ हे हुण्ड! संसारमें यही व्यवस्था है परन्तु अन्य होतानहीं जिसका जिसके संग विवाहहोनेवाला होताहै होता है किसीके चाहने से नहींहोता १३ परन्तु एक कारण है जिससे हम तुम्हारी स्त्री नहीं होती हे दैत्यराज! वह वृत्तान्त हमसे चित्तलगाकर सुनो १४ हे महामते! जब हम वृक्षराज कल्पवृक्ष से उत्पन्नहुईं तो पार्व्वती हमारी माताने हमारे लिये यह सङ्कल्प करदिया १५

ई सङ्कल्प महादेवजी के सम्मतसे भी उन्होंने किया था वह यह
कि महाप्राज्ञ धर्म्मात्मा सोमवंश में १६ बड़े विजयी वीर्य्य में
ष्णु भगवान्‌केही समान तेजसे अग्निके तुल्य सर्व्वज्ञ सत्यवादी
धनमें कुवेरके समान १७ यज्ञकरने में तत्पर महादानी सुरूप में
ामकेतुल्य धर्म्मात्मा गुणशील में महानिधि नहुष नाम महाराज
१८ सो महादेवजी के सम्मतसे पार्व्वतीजी ने हमारे लिये उन्हीं
हुष को पति नियत करदिया है व कहाहै कि उनसे सब गुणयुक्त
न्दर पुत्र तुम पाओगी १९ तिससे महादेवजी के प्रसादसे संसारमें
न्द्रोपेन्द्र के समान मनुष्यों के प्यारे रणमेंधीर ययातिजी को प्राप्त
ोगी २० हम पतिव्रता स्त्री हैं इससे अब यहां से चलेजाओ व
र्वथा भ्रांतिछोड़ो २१ तब हँसकर हुण्ड बोला कि देवी व महादेव
तुम्हारे लिये योग्यपति नहीं नियतकिया न उचित वचनही कहा
२ क्योंकि धर्म्मात्मा राजा नहुष तो बहुत दिनों के पीछे सोमवंश
ं उत्पन्नहोंगे फिर आप तो उनसे बहुत जेठी होंगी व वे अवस्था
ं बहुत छोटेहोंगे फिर तुम्हारा उनका विवाह कैसे होगा २३ छोटी
ी श्रेष्ठ होतीहै पुरुष छोटा श्रेष्ठ नहींहोता है भद्रे ! वह पुरुष तुम्हारा
ब स्वामीहोगा २४ इसी प्रकार तुम्हारी युवावस्था नाश होजावेगी
ुवावस्थाही के बलसे सदैव स्त्रियां रूपवती होती हैं २५ पुरुषोंको
यारीहोती हैं हे श्रेष्ठमुख और वर्णवाली ! स्त्रियों को युवावस्थाही
हामूल है २६ तिसीके आधारसे सब मनोकामना भोगतीहैं भला
यह कौन जानता है कि कब राजा आयुके पुत्र नहुष होंगे २७ युवा-
ास्था अब वर्त्तमानहै सब वृथा होजायगा अभी तो वह गर्भहीमें
नहींआया जब आवेगा उत्पन्न होगा फिर बालकरहेगा कुमारावस्था
ेहेगी २८ कब वह युवावस्थासे युक्त तुम्हारेयोग्य होगा इससे अब
ौवनके प्रभावसे माधवीलताका मधुपानकरो २९ व हे विशालाक्षि !
हमारे सङ्ग सुखसे क्रीड़ाकरो हुण्डके ऐसे वचन सुनकर महादेवजी
की कन्या अशोकसुन्दरी ३० साहस करके फिर दानवेन्द्र से बोली
कि देखो अट्ठाइसईं चौयुगी के द्वापरयुग में ३१ शेषजीके अवतार
धर्म्मात्मा बलदेवजी वसुदेवकेपुत्र होंगे वे राजा रेवतकी कन्या रेवती

को अपनी भार्य्या बनावेंगे ३२ जोकि प्रथम चौयुगी के सत्ययुग में उत्पन्नहुई है वह तो उनसे तीनयुगों की जेठी है ३३ पर बलके की प्राणप्रिया भार्य्याहोगी सो भविष्य द्वापर युगके अन्तमें ऐसा होगा ३४ इसके विशेष एक गन्धर्व्वकी कन्या मायावती नाम है उसको दानवों में उत्तम शम्बरासुर हरलेगया ३५ उसके पति श्री कृष्णजी के पुत्र बड़े बलवान् प्रद्युम्नवीर यादवेश्वरों के आनन्द देनेवालेहोंगे ३६ यह बात महाभाग महावेदवादी व्यासादिकमहात्माओंने लिखाहै ३७ हे दैत्य ! ऐसा देखाजाताहै हिमवान्की कन्या संसारके रक्षाकरनेवाली पार्व्वतीजी ने हमसे कहा है ३८ तुम जो ऐसा कहतेहो तो केवल कामातुर होनेके कारण हमारे पानेके लोभ सेही कहतेहो यह बड़े पापकी वार्त्ता है पापसे युक्त व वेद शास्त्र से रहितहै ३९ शुभ वा अशुभ जो जिसके लिये भाग्य में लिखाहै पूर्व कर्म्म के अनुसारसे वही उसको मिलताहै ४० देवताओं व ब्राह्मणों के मुखसे जो सत्य वचन निकलता है वह अन्यथा नहीं होता ४१ हमारे भाग्यको पार्व्वतीजी ने जान लिया है तब उन्हों ने कहा है कि तेरा विवाह राजा नहुषके साथ होगा सोभी अपने आप नहीं महादेवजी के भी सम्मत से कहाहै ४२ हे दैत्य ! ऐसा जानकर चलेजाओ अपने मनकी भ्रान्ति मिटादेओ तुम मन चलायमान न करो तुमको सामर्थ्य नहीं है जो हमारे संग ऐसा करसको ४३ क्योंकि पतिव्रता चित्तमें दृढ़होती हैं इससे कौन हमारा मन चलायमान करने में समर्थहै हम महाशापसे भस्मकरदेंगी यहांसे आप चलाजा ४४ ऐसा उसका वचन सुनकर बली दानवेन्द्र हुण्डने मन से चिन्तना किया कि अब यह हमको कैसे मिले ४५ यह कार्यवाली हुण्ड चिन्तना कर वेगसे उस स्थान से निकल कर अशोकसुन्दरी को वहीं छोड़कर अंतर्द्धान होगया दूसरे दिन फिर तामसी मायाकरके ४६ दिव्य मायामय स्त्रीका रूप कर मायाही से कन्यारूप होगया ४७ श्रेष्ठकरिहांववाली हास्य लीला से युक्त वह मायारूपी कन्या अशोकसुन्दरी के पास आई ४८ और उनसे स्नेहसेही की नाईं बोली कि हे सुभगे ! तुम कौनहो और किसकीहो जो

तपो वनमें स्थितहौ ४९ हे बाले ! हे सुभगे ! किस लिये अत्यन्त दुष्कर काम सुखानेवाला तपकरतीहौ सो हमसे कहो ५० तब मायारूपी अभिलाष समेत दानव के कहेहुये शुभवचन सुनकर शीघ्रही ५१ अत्यन्त दुःखयुक्त अशोकसुन्दरी ने अपनी उत्पत्ति का सुन्दर वृत्तान्त जैसे पूर्वसमय में हुआ और सब तपस्याका कारण कहा ५२ परन्तु उस दुरात्मा दानवकी माया का रूप नहीं जाना अच्छे हृदय होने से उसने कहा ५३ तब हुण्ड फिर उससे बोला कि हे देवि ! तुमतो पतिव्रताहो साधु व्रत में परायण साधुशील समाचार से युक्त साधुचारा महापतिव्रताहौ ५४ हे भद्रे ! हम पतिव्रता पातिव्रत धर्म्म में परायण रहती हैं हे सुभगे ! महापतिव्रता हम स्वामी के लिये तप करती हैं ५५ हमारे पतिको दुरात्मा हुण्ड दैत्य ने मारडालाहै व उसके नाश करने के लिये हम घोर बड़ातप करती हैं ५६ सो अब पुण्यकारी हमारे स्थानपर चलो गङ्गातीर में हमारा आश्रम है इसके विशेष औरभी विश्वास कराने के लिये बहुतसे वचन उस स्त्रीरूपधारी हुण्डने कहे ५७ तब हुण्ड के साथ सखीका भावकरके शिवजी की कन्या मोहितहुई तब मोहित उस शिवकुमारी को हुण्ड माया से अतिमनोहर अपने स्थानपर लेगया हे पुत्र! प्रथम तो उसने गङ्गाके समीप अपना पुर बतायाथा परन्तु जब वह संग चली तो लेजाकर वह मेरुके शिखर पर वैदूर्य्य नाम पुरमें पहुँचा ५८ । ५९ जोकि सब गुणों से युक्त सब सुवर्णही से बनाहुआथा बड़े २ ऊँचे धवरहरोंसे समाकुलथा व कलश दण्ड चामरादि नानाप्रकारके पदार्थोंसे वह पुर शोभितथा ६० नानाप्रकारके वृक्षोंसे भरेहुये मेघों के समान नील वनोंसे शोभित होराथा वापी कूप तड़ाग व नदी आदि जलाशयों से शोभित होताथा व नाना प्रकारके चित्रविचित्र मन्दिर महारत्न और सुवर्ण संयुक्त और भी बहुतसे वहां बने थे व सब कामोंसे समृद्ध दानवके ६१ । ६२ उस पुरको अशोकसुन्दरीने अतिसुन्दरता के साथ बनाहुआ देखा फिर पूछा कि हे सखे! यह किस देवताका स्थानहै हमसे कहो ६३ तब वह स्त्रीवेषधारी हुण्डदैत्य बोला कि यह स्थान दानवेन्द्र हुण्डका है

जिसको कि तुमने पूर्व्वकाल में देखा है हे महाभागे! उसीका यह है हम वही हुण्डही हैं ६४ हे वरवर्णिनि! हम मायासे तुमको यहां लायेहैं ऐसा अपना नाम कहकर फिर सोनेसे बनेहुये अपने मन्दिर में अशोकसुन्दरीको लेगया ६५ जोकि नानाप्रकारके मन्दिरोंसे युक्त कैलास के शिखर के तुल्य था वहां लेजाकर सिंहासन पर बैठाकर कामसे पीड़ित होकर ६६ वह दैत्य हाथजोड़कर अतिविनयसे बोला कि ६७ हे भद्रे! जो २ वस्तु तुम चाहोगी सब तुमको देवेंगे इसमें कुछभी संशय नहीं है इससे कामसे पीड़ित हमको हे विशालाक्षि! भजो ६८ अशोकसुन्दरी बोली कि दानवेश्वर तुम हमको चलायमान नहीं करसक्ते हम मनसे नहीं यहां आई तुम मायासे हमको यहां लायेहो ६९ हे दानवाधम! तुम ऐसे महापापियोंको वा देवोंको हम बड़े दुःख से मिलने के योग्य हैं इसमें सन्देह नहीं है इससे वार २ न बक ७० तप तेजसे जाज्वल्यमान स्कन्दजी की भगिनी बड़े रोषोंसे जलाती हुई व उस दानवके नाश करने की इच्छासे कालकी जीभही के समान अपनी जिह्वा लपलपाती हुई ७१ फिर बोली कि हे पापरूप दानवाधम! तूने यह उग्र कर्म अपने नाशके लिये कियाहै ७२ व अपने वंश व परिवारके भी विनाशनेहीके लिये कियाहै तूने प्रज्वलित अग्निकी शिखाके समान हमको अपने गृहमें पहुँचायाहै ७३ जैसे कि अशुभ कुक्कुटपक्षी सब शोकोंसे युक्त होताहै व जिसके गृहमें रहताहै उसका नाश करताहै ७४ ऐसेही हम पतिव्रताओं का हाल होताहै कि जो दुष्ट हमलोगों को छलसे अपने घरको लेजाताहै पहुँचतेही उसके धन समेत कुल व परिवार वंशका नाश करडालती हैं इससे जो कोई हमको अपने गृहमें रखना चाहताहै वह अपने गृहका नाश चाहता है ७५ सो हम वैसेही तुम्हारा नाश चाहती हुई तुम्हारे गृह में आई हैं इससे तुम्हारे पुत्र धन धान्य सब का इस समय नाश करेंगी ७६ व जीव कुल धन धान्य पुत्र पौत्रादिक सबोंको नाश करके तब अब हम तुम्हारे घरसे जायँगी इसमें कुछभी सन्देह नहीं है ७७ हे दुष्ट! हमको आयुके पुत्र नहुपजी के लिये परम दुष्कर तप करती हुई को जैसे तू यहां लायाहै ७८ वैसेही हमारा भर्त्ता आकर तेरा

ाश करेगा क्योंकि हमारे निमित्त जो उपाय तूने कियाहै उस को
वे समय देवने देखा था ७९ यह लोककी कथा सत्य है जिसे बुद्धि-
ान्लोग गाया करते हैं व प्रत्यक्ष लोक में दिखाई देता है परन्तु
ुद्धिवाले लोग नहीं देखते ८० जिसको जहां सुख वा दुःख भो-
ना होताहै वही वहां जाकर भोगताहै इसमें सन्देह नहीं है ८१
ससे अब अपने इस कर्म्म का फल महीतल में जाकर भोग करो
। पीछे परस्त्रीगमन करनेवाले जिस नरकमें जाते हैं उसमें जापड़ो
८२ सुतीक्ष्ण व सुन्दर धारवाले खड्ग के ऊपर जैसे कोई नहीं अँ-
गुली धरसक्ता वैसेही हमको इस समय जानो ८३ भला गर्जते
हुये क्रुद्ध विकराल सिंहके मुखके बाल साहसके आकारसंयुक्त कौन
प्राणी सम्मुख जाकर उखाड़ सक्ताहै ८४ सत्याचारयुक्त दम समेत
नियत चित्त तप करती हुई हमारे सङ्ग भोगकरनेकी इच्छा जो तुम
ने की है वह अपने नाशहीकी इच्छाकी है ८५ क्योंकि जो कालेनाग
के जीतेही जीते कोई मणि लेनेकी इच्छा करताहै तो वह कालही
की प्रेरणासे चाहताहै ८६ सो हे मूढ़ ! कालकी प्रेरणाही से मोहित
तुम्हारी ऐसी कुमति हुई है उसे क्यों नहीं देखते ८७ आयुके पुत्र
नहुषको छोड़कर कौन हमको देख सक्ताहै और हमारे रूपके देखने
से नाशको प्राप्त होगा ८८ इस प्रकार तिससे कहकर शोक दुःखयुक्त
नियत नियमयुक्त वह पतिव्रता गङ्गाजी के किनारे गई ८९ पूर्वसमय
में तो पति पानेकी इच्छासे उसने परमतप कियाथा परन्तु अब तुम्हारे
वधकरने के लिये फिर दारुणतप करेंगी ९० जब तुमको महात्मा
नहुषजी से मारेहुये देखेंगी क्योंकि हमारे सङ्कल्परूप बाण काले
नागके दांतों के समान हैं ९१ रणमें रक्तसमेत केश खुलेहुये मृतक
तुमको पड़ेहुये देखकर फिर हम अपने पति नहुषजी के समीप को
जायँगी ९२ ऐसा नियमकरके गङ्गाजीके उत्तम तटपर स्थित होकर
अशोकसुन्दरी हुण्ड के नाश करने के लिये तप करनेलगी ९३ ॥

हरिगीतिका ॥

जिमि अनल ज्वालाकी सुमाला सकललोक सँहारई । नहिं
तनिक छोड़त प्रलय दिनमहँ तुरत सकल बिदारई ॥ तिमि क्रोध

युत त्रिदशेशपुत्री हुण्डनाशन के लिये। तपकरनलागी सुरनदी तट समझिकै सब निज हिये ९४॥

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि ऐसा कहकर शिवजी की कन्या अशोकसुन्दरी गङ्गाजी के तीरपर जाय स्नानकर अपने पुर काञ्चनपुरके समीप ९५ तप करनेलगी व सङ्कल्प करदिया कि यह तप हम हुण्डदैत्यके नाश के लिये करती हैं इस प्रकार बाला अशोकसुन्दरी सत्यवादिनी होकर तप करने लगी ९६ हुण्डभी दुःखित होकर शापसे जलेहुये चित्तसे अत्यन्त वचनरूप अग्निवों से जलताहुआ अपने मन में चिन्तना करनेलगा ९७ व फिर उस ने कम्पननामदैत्य को बुलाकर कहा कि हमको बड़ा भारी शाप हो गयाहै क्योंकि हमने एक स्त्रीका पातिव्रत भङ्ग करना चाहा था ९८ इससे उस शिवकी कन्या अशोकसुन्दरी नाम स्त्रीने शापदिया कि तू मेरे पति नहुष के हाथों से मरेगा ९९ परन्तु अभी नहुष उत्पन्न नहीं हुआ आयुकी स्त्री अभी गर्भिणीही है जैसा करने से वह नहुष उत्पन्नही न हो वैसा उपायकरो १०० यहसुनकर कम्पन दैत्य बोला कि किसी युक्ति से आयु की भार्य्या तुम यहां हरलाओ बस इसी प्रकारसे तुम्हारा शत्रु न उत्पन्न होगा १०१ नहीं यदि वहां जानेपर आयुकीस्त्री गर्भिणी समझपड़े तो उसका गर्भही डरवाकर पातितकर डालो इसी प्रकारसे तुम्हारा शत्रु न उत्पन्नहो १०२ दुष्टात्मा नहुष के जन्म कालकी राह देखतेरहो आयुकी स्त्रीको यहां लेआकर पापी नहुषको पेटहीमें मारडालो १०३ इसप्रकार कम्पनसे सम्मतकरके वह दानव हुण्ड नहुषके मारडालने के यत्नमें उद्यत हुआ १०४ श्री विष्णुभगवान् राजा वेनसे बोले कि ऐलके पुत्र महाभाग आयु नाम राजाहुये ये धर्म्मात्मा पृथ्वीभरके महाराज सत्यव्रत में परायणहुये १०५ उपेन्द्रके समान तपस्या यश और बलमें थे अत्यन्त पुण्य कारी दानयज्ञों से सत्य और नियम से १०६ एक छत्रसे सब धर्म जाननेवाले राजा पृथिवी में राज्य करते भये पर सोमवंशका भूषण १०७ पुत्र कोई इनके न था इससे बड़े दुःखीहुये व उन धर्म्मात्मा ने चिन्तना की कि हमारे पुत्र कैसे हो १०८ जब राजा आयु की

ऐसी चिन्ताहुई तो एकाग्रचित्त होकर उन्होंने पुत्रके लिये बड़ी २ युक्तियां कीं १०९ अत्रिके पुत्र महात्मा महामुनि दत्तात्रेयजी के समीपगये परन्तु उस समय वे मदिरा पान करने से अरुण नेत्र किये एक स्त्री के संग क्रीड़ा कररहे थे ११० वरन वारुणी से मत्त बहुतसी स्त्रियों के मध्यमें विराजमान एक सब स्त्रियों में श्रेष्ठ शुभ स्त्री को अपने क्रोड़पर बैठायेहुये १११ बड़ी प्रीति से गाते नाचते थे मदिरा वारवार पीते थे यज्ञोपवीत भी निकाल डालाथा क्योंकि महायोगीश्वरों में उत्तम तो थेही ११२ दिव्य पुष्पों की माला व मोतियों का हार पहिने थे दिव्य चन्दनलगायेहुये मुनीश्वरजी विराजते थे ११३ उनके आश्रम पर जाकर व उन मुनीश्वरजी को देखकर राजाने शिर झुकाय पृथ्वीपर गिरकर दण्डवत्प्रणाम किया ११४ पर वे धर्म्मात्मा अत्रिजीके पुत्र योगिराज दत्तात्रेयजी राजा को भक्तिसे आगे आये देख ध्यानमें स्थित होगये ११५ इसीप्रकार तिस राजाको सौवर्ष बीतगये तो उसकी निश्चल शांतियुक्त मानस भक्ति देखकर ११६ बुलाकर बोले कि हे नृप! तुम किस लिये क्लेश करतेहो हम तो ब्रह्माचारसे हीनहैं ब्राह्मणता हमारे कभी नहीं है ११७ हमतो मदिरा पीनेवाले मांसखानेवाले हैं एक स्त्री में सदैव आसक्त हैं इससे वर देनेमें हमको शक्ति नहीं है तुम अन्य किसी ब्राह्मण की शुश्रूषा करो ११८ यह सुन महाराज आयु बोले कि हे महाभाग! आपके समान ब्राह्मणोत्तम परमेश्वर तीनों लोकों में कोई नहीं है जो सब काम देसके ११९ आप अत्रिके वंशमें गोविन्द परमेश्वर आकर अवतरे हैं ब्राह्मण का केवल रूपही धारणकियेहैं पर हैं साक्षात् गरुड़ध्वज भगवान् १२० हे देवदेवेश! हे परमेश्वर! तुम्हारे नमस्कार है हे शरणागतवत्सल! हम तुम्हारे शरणमें हैं १२१ हे हृषीकेश! हमारा उद्धारकरो तुम मायाकरकेही इस संसार में स्थित हो व इस विश्वमें स्थित प्रजाओं के तुम धारण करनेवाले व विश्वके नायकहो १२२ जगन्नाथ मधुसूदन आपको हम जानतेहैं हमारी रक्षा करो व हे विश्वरूप! तुम्हारे नमस्कार है १२३ कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जलसे बोला कि बहुत कालके पीछे दत्तात्रेयजी मत्तरूप से राजा

से बोले कि हमारा वचन करो १२४ मनुष्यकी खोपड़ीमें मदिराका अदहन देकर मांस पकाओ वह हमको भोजन करनेको देओ ऐसा वचन सुनकर पृथ्वी के पति आयु राजाने १२५ खोपड़ी उठाकर उसमें मदिरा भरकर शीघ्रही मांसकाटकर अच्छेप्रकार परिपक्वकरके अपने हाथसे १२६ ब्राह्मणको दिया तब प्रसन्न होकर वे ब्राह्मणोत्तम १२७ भक्ति का प्रभाव तथा गुरुशुश्रूषा देखकर नम्रमन राजा से बोले कि १२८ हे राजन् ! जो फल पृथ्वीपर दुर्लभहो वह सब हम से मांगो जो २ चाहतेहो हम सब तुमको इस समय देवेंगे १२९ इतना सुनकर राजाआयु बोले कि हे मुनिसत्तम ! जो आप कृपाकरके सत्य वर दिया चाहते हैं तो गुणोंसे युक्त सर्वज्ञ पुत्र हमको दें १३० जिसके देवताओं के समान वीर्य्य और अच्छा तेजहो व समर में देवता दानव उसको न जीतसकें क्षत्रिय घोर राक्षस दानव किन्नरादि कोई उससे जीत न सकें १३१ फिर वह देवता ब्राह्मणों का भक्तहो व प्रजाओं के पालने में विशेषहो यज्ञ करनेवाला दानपति शूर व शरणागतवत्सलहो १३२ सब कुछ देनेवाला व सुख भोगने वाला महात्मा वेदशास्त्रों में पण्डितहो धनुर्वेदमें निपुण व सब शास्त्रों में परायण १३३ अनाहतमति व धीर संग्राममें सदा अपराजित इस प्रकारके गुणोंसे युक्त सुन्दर रूपवाला व हमारे वंश के धारण करने वाला पुत्र हमको दीजिये हे विभो ! जो कृपाकरके वरदान दिया चाहतेहो तो ऐसाही पुत्र दीजिये १३४।१३५ दत्तात्रेयजी बोले कि॥

चौ० एवमस्तु भूपति सुत तोरे । ऐसो होय अनुग्रह मोरे ॥
गृहकुलवंशकारि अतिचातुर । पुण्यकर्म्म करवरदन आतुर ॥
वैष्णव अंशसहित गुणधारी । होइहि तनय विप्रहितकारी ॥
सार्व्वभौम भूपति सुरराजा । सरिसहोयगो सब गुणभ्राजा ॥
ऐसो तनय नहीं सन्देहू । भूपति दीन त्वरित तुम लेहू ॥
यहफल लै निज नारिहि देहू । दशयेंमास पुत्र शुभलेहू ॥
इमि दै वर फल नृपहि मुनीशा । आशिषदीन कीन नहिं रीशा ॥
अन्तर्द्धान भयहु त्यहिधामा । सब नारिनयुत पूरणकामा १३६।१३७

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेत्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३ ॥

# एकसौचारका अध्याय ॥

दो० वेदोत्तरशततम महँ राज्ञी स्वप्न प्रभाव ।
कहशौनक नृपसों यही सकलवृत्तवर गाव ॥

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जलसे बोला कि जब महाभाग महामुनि दत्तात्रेयजी चलेगये तो महाराज आयु अपने पुरको आये १ व हर्षित होकर इन्दुमती के गृहमें प्रविष्टहुये जोकि लक्ष्मीयुक्त सब सामग्री से भरेपुरे के कारण इन्द्रभवनही के तुल्यथा २ आकर अपने राजकाज करने लगे जैसे इन्द्रपुरीका राज्य इन्द्र करते हैं व स्वर्भानुकी कन्या अपनी भार्य्या इन्दुमती रानीके संग राज्य करने लगे ३ महाराज से फलपाकर खाकर दत्तात्रेयके वचनसे महारानी न्दुमतीने दिव्य तेजयुक्त गर्भ धारणकिया ४ उसीके दूसरी रात्रि ं रानीने स्वप्नमें उत्तम बहुत मङ्गलदाता रात्रि में देखा ५ फिर सूर्य्य के समान प्रकाशित एक पुरुषको रात्रिमें अपने गृहको आतेहुये देखा फेर मोतियोंकी माला पहिने श्वेतवस्त्र धारण किये ६ व श्वेतही पुष्प की माला कण्ठमें धारणकिये सब भूषणों से भूषित दिव्य गन्ध अनुलेपन किये ७ शङ्ख चक्र गदा तलवार हाथोंमें लिये चतुर्भुजी मूर्त्ति धारण किये चन्द्रमाके बिम्बके समान छत्रधारे ८ महातेजस्वी शोभा से शोभित दिव्य आभरणों से भूषित हार कङ्कण बहूँटा नूपुर धारण किये ९ चन्द्रमा के बिम्बके अनुकरण करनेवाले दो कुण्डलों से विराजमान कोई इसप्रकार महाप्राज्ञ पुरुष आया १० व इन्दुमतीको बुलाकर पूर्णमासीके चन्द्रमाके समान उजले सम्पूर्ण शङ्खसे जोकि रत्न व काञ्चनसे बँधाहुआ था उससे इन्दुमतीको जलसे स्नानकराया फिर एकसहस्र शिरका सुन्दररूपवाला सफेदनाग ११।१२ महामणियुक्त धाम ज्वालासे आकुल इन्दुमती के मुखमें छोड़ा फिर मोतियोंका माला कण्ठमें पहनाया फिर महायशस्वी कमल हाथमें देकर अपने स्थानको चलागया जोकि महामणि जटित सब भूषणों से भूषित १३।१४ इसप्रकारके उत्तम महास्वप्न उसने देखे व सबके सब अपने पति आयुजीसे कहे १५ यह सुनकर महाराज चिन्तना करने

लगा व गुरुजी को बुलाकर उनसे उत्तम स्वप्नका वृत्तान्त कहा १६
और महाभाग सर्वज्ञ ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ शौनक गुरुसे राजा बोले कि
हे महाभाग ! हे द्विजोत्तम ! आज रात्रि में मेरी स्त्रीने १७ ब्राह्मणको
घरमें जातेहुये देखाहै यह स्वप्नका कारण क्याहै तब शौनकजी बोले
कि हे राजन् ! तुमने जो बुद्धिमान् दत्तात्रेयकी सेवा करके वरपायाहै
भला जो सुन्दरगुणयुक्त पुत्रके हेतु फल तुमने दत्तात्रेयजीसे पायाथा
उसे क्याकिया किसको दिया १८ । १९ राजाने कहा वह तो हमने
अपनी स्त्रीको देदिया था ये राजाके वचन सुनकर महाबुद्धिमान्
द्विजश्रेष्ठ शौनकजीने कहा २० कि दत्तात्रेय के प्रसादसे अब तुम्हारे
घरमें उत्तम पुत्र उत्पन्न होगा वह श्रीविष्णुजी के अंशसे युक्तहोगा
इसमें कुछ संशय नहींहै २१ हे राजेन्द्र ! स्वप्न का कारण तुमसे कहा
और कुछ नहीं व इन्द्र उपेन्द्र के समान दिव्य वीर्य्यवाला पुत्र होगा
२२ व वह धर्म्मात्मा सोमवंशका बढ़ानेवाला होगा धनुर्वेद व वेद
का पण्डित होगा २३ ऐसा कहकर शौनक अपने गृहको चलेगये
राजा रानी बड़ेहर्ष से युक्तहुये २४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरु
तीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेचतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४ ॥

## एकसौपांचका अध्याय ॥

दो० यकसैपँचयें महँ नहुष जन्महरण प्रतिपाल ॥
जिमिभोसो वर्णितकियो कुञ्जलबहुतविशाल १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि यहांकी तो यह व्यवस्था
हुई कि राजा रानी वरदान पाकर अपने घरकोआये व फिर रानी
सहित राजाभी आनन्दपूर्व्वक नन्दनवनमें क्रीड़ाकरनेके लिये गये
वहांपर हुण्डका भेजाहुआ कम्पन दैत्य आया उसने पिता से कहा
दुःखदायक वचनसुना जिसको आनन्द से चारण और सिद्ध कह
तेथे कि राजा आयुके ऐसा पुत्र होनेवालाहै जो पराक्रममें विष्णुके
तुल्य होगा व हुण्डका नाश करडालेगा ऐसा अप्रिय दुःखदायक
वचन १।२ सुनकर उस कम्पनने आकर हुण्डकेआगे सबकहा ३

वृत्तान्त दुःखदायक संक्षेप से अपने मित्रके मुख से सुनकर हुण्ड विस्मित हुआ व अशोकसुन्दरी के पहले दियेहुये शापका स्मरण किया ४।५ कि इसीलिये वह अशोकसुन्दरी तपस्या कररही है व उस दानवेन्द्र हुण्डने इन्दुमती रानीके गर्भ नाशकरनेका ६ बड़ा भारी उद्यमकिया व जाकर रूप बदलकर नित्यही छिद्रदेखताहुआ वह दैत्य रानी के समीप रहनेलगा ७ व रूप गुण उदारतासेयुक्त रानीको देखनेलगा व दिव्यतेजसेयुक्त विष्णुजीके तेजसे सदा महाराज्ञी को रक्षित देखने लगा ८ दिव्य तेजसे युक्त सूर्य्यबिम्ब की समान तिसके समीपमें रक्षा करने के लिये सदैव स्थित रहे ९ और दुष्ट दानव तिसको दूरही से अनेक प्रकार की बड़ी उग्र अत्यन्त भयानक बहुत विद्या दिखलावे १० गर्भ के तेजसेयुक्त विष्णुके तेज से रक्षित इन्दुमतीके मनमें कभी भय न हो ११ तब दानव निष्फल हुआ व उसका उद्यम निरर्थक हुआ उस दुष्ट हुण्ड के मनका इष्ट न पूराहुआ १२ इसप्रकार सौ वर्ष पूरेहोगये व गर्भ बनाय पूराहो गया तब स्वर्भानुकी कन्या इन्दुमती ने रात्रि में श्रेष्ठ पुत्र उत्पन्न किया उस पुत्रकी शोभा आकाश में सूर्य्य के समानहुई १३ । १४ सूतजी शौनकादि ऋषियोंसे बोले कि महादुष्ट कोई दासी सूतिका घरसे आई वह अपवित्र आचार संयुक्त महामंगल कहती थी १५ तिस दासी से सब जानकर दानवों में अधम वह हुण्ड दासी के अङ्गों में प्रवेश करके राजाआयुके मन्दिर में चलागया १६ उसकी माया से मोहित होकर सबके सबलोग वहां सोरहे थे तब हुण्ड उस देवगर्भ के समान पुत्रको लेकर चल दिया १७ व वह दानवाधम अपने काञ्चन नाम पुरमें पहुँचा व अपनी प्रिय विपुला भार्य्या को बुलाकर उससे बोला १८ कि शत्रुरूप इस महापापी बालक को अभी मारडालो व फिर भोजन बनानेवाले को देवो १९ कि वह यही मांस आज हमारे भोजन के लिये बनावे इस में नाना प्रकार के सुगन्धित पदार्थ लगाकर मांस झटपट तैयार करे हे महाभागे! आज हम पाककर्त्ता के हाथोंका बनायाहुआ इसी बालक पापी का मांस भक्षणकरेंगे इसमें कुछभी संशय नहींहै २० अपने पतिके ऐसे

वचनसुनकर दैत्यकीस्त्री अत्यन्त विस्मितहुई कि आज हमारा
कैसे निर्घृणता को प्राप्तहोकर निष्ठुरहोगया २१ जोकि सब लक्ष
से सम्पन्न देवगर्भकेतुल्य प्रकाशित किसीके इसबालकके खाने
उद्यतहुआहै नहीं जानती किसीके इस लड़केको निर्घृणहोकर
भक्षण किया चाहताहै व कैसे कृपाहीन होगयाहै २२ ऐसा
मनसें विचारांश करके दयायुक्तहो फिर अपने पतिसे कारण पूंछ
लगी कि तुम इसबालकको क्यों भक्षण कियाचाहते हो २३
क्रोधसे अत्यन्त निर्लज्जहोकर क्यों ऐसा कहते हो हे दानवेश्वर
इसका सबकारण तत्त्वसे हमसे कहो २४ यह सुनकर दुरात्मा हुण्ड
ने अपनी स्त्रीसे सब अपना दोष वृत्तांत व अशोकसुन्दरी का शाप
सब संक्षेपरीतिसे २५ उसे सुनकर उसकी स्त्रीने विचारकिया कि
इस बालक का वध सत्य कियाजाय नहीं तो पतिही का वधहोगा
२६ यह विचारकर मारेक्रोधके मूर्च्छितहोकर विपुला नाम हुण्डकी
भार्या मेकला नाम अपनी दासी को बुलाकर उससे बोली कि
हे मेकले! इस दुष्टमनवाले बालकको शीघ्रलेजा व भोजन बनाने
वाले को दे कि वह आज हुण्डके भोजनके लिये इसीका मांस
२८ मेकला बालक को लेजाकर भोजन बनानेवाले को बुलाकर
उससे बोली कि राजाकी आज्ञा करो आज इसी बालक का मांस
बनाओ २९ तब उसका ऐसा वचन सुनकर उस महात्मा पाककर्त्ता
ने बालक को हाथसे लेकर शस्त्र निकालकर उसके मारने पर उद्यत
हुआ ३० तब देवदेव श्रीदत्तात्रेयजी के तेजने उस बालककी रक्षा
करली तब वह बालक बार २ हँसने लगा ३१ उसको हँसते हुये देख
करवह पाककर्त्ता कृपायुक्त हुआ तब वह कृपायुक्त दासी उससे बोली
कि ३२ हे महामते! यह बालक तुम से अवध्यहै क्योंकि देखो तो
कैसे दिव्य लक्षण इसके हैं हम जानती हैं कि किसी अच्छे कुलका
यह बालक है ३३ यह सुनकर वह पाककर्त्ता जिसका सूदभी नाम
होताहै उस दासी से बोला कि हे भद्रे! तुम ने सत्य कहा यह बालक
तुम्हारा कृपायुक्त है राजलक्षणयुक्त रूपवान् किसी का पुत्र है ३४
फिर दुष्टात्मा दानवाधम हुण्ड इसको क्यों भक्षण किया चाहताहै

जिसकी रक्षा पूर्व्वजन्म के सुकर्म्म से होतीहै ३५ वह सब आपदों से बचजाता है व नाना प्रकारके दुर्गम स्थानों में जाकर भी जीताही रहता है जिसका कर्म्म सहायक होता है वह अग्निके बीचमें गिर कर व समुद्रमें डूबकर भी बचजाताहै ३६ इससे धर्म्म पुण्यसमेत सदा कर्म्म करना चाहिये इस में सन्देह नहीं है ३७ क्योंकि ऐसेही कर्म से पुरुष आयुष्मान् होताहै व सुखभी ऐसेही कर्म्म से पाताहै कर्म्मही सब का तारक व पालकभी है व कर्म्मही जागते हुयेकी रक्षा किया करताहै ३८ कर्म्मही नित्यमुक्ति देताहै व मित्रोंका स्थानभी कर्म्मही देताहै पुण्य दानयुक्त कर्म्म व प्रियवचनयुक्त कर्म्म ३९ सदा उपकार करताहै इस से बुद्धिमान्को चाहिये कि सदा पुण्यादिसहि-तही कर्म्मकरे क्योंकि उसकी रक्षा सदा कर्म्मही करताहै इसमें सन्देह नहीं है ४० अपने कर्म्महीसे प्रेरित और योनि को प्राप्त होता है पिता माता अन्य स्वजन बान्धव क्या करसक्ते हैं ४१ जो कर्म्म से निहत होताहै वह नष्टही होजाताहै सूतजी बोले कि कर्म्मका रक्षित किसी का मारा मरताही नहीं ४२ उसी कर्म्मसे वह बालक रक्षित था इस से उस पाककर्त्ता के मन में दया आगई नहीं तो जो पूर्वकर्म का वश न होता तो उस दुष्टके मनमें क्यों कृपा आती व उसी बा-लक के कर्म्मकी प्रेरणा से वह दासीभी कृपायुक्त होगई ४३ इस से उन दोनों ने राजा आयुके सुन्दर लक्षणवाले पुत्रकी रक्षाकी रात्रिमें हुण्डसे छिपाकर वे दोनों ब्रह्माजी के पुत्र वशिष्ठजी के पुण्यकारी आश्रमपर उस बालक को लेगये पुण्यकर्म्म करनेवाली उस दासी ने उन महात्मा के द्वारपर बालकको पौढ़ाकर आप अपने स्वामीके स्थान पर चलीआई व उस पाक करनेवाले से हरिण का वधकराके उस का मांस परिपक्क कराके ४४।४६ हुण्ड को भोजन कराया तब दुष्ट हुण्ड बहुत हर्षित हुआ कि अब तो शत्रु मारा गया व अशोक-सुन्दरी का शाप व्यर्थहुआ ४७ यह विचारांश करके दानवों का ईश्वर हुण्ड अतीव हर्षितहुआ कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि जब विमल प्रभात हुआ तो मुनिसत्तम वशिष्ठजी ४८ अपने आश्रम से बाहर निकले तो देखा सब देव लक्षणों से युक्त सुवर्ण व

चन्द्रमा के समान प्रकाशित सुन्दर लोचनवाला पुत्र पड़ाहै उ
देख बोले कि हे मुनिलोगो ! यहां आकर देखो तो यह किसका बालक
है व रात्रिमें कौन हमारे द्वारपर फेंकगयाहै यह देव गन्धर्वोंके
के समान प्रकाशित राजलक्षणसंयुक्त ४९ । ५१ करोड़ कामके
दृशहै मुनिलोगो देखो तो उसको देखकर सब द्विजवर कौतुकसंयु
प्रसन्न हुये ५२ और महात्मा आयुके पुत्र को देखते भये धर्मात्म
वशिष्ठजी ने जो ज्ञानदृष्टि से बालक को देखा ५३ तो विदित हुआ
कि सत्य २ यह राजा आयुका पुत्रहै व ऐसे चरित्रसे यहांतक पहुंचा
है व उस दुष्ट हुण्डकी प्रवृत्तिभी मुनिने जानली कि वह लायाहै ५४
बस झटपट मुनिराज ने कृपा करके दोनों हाथों से उस बालक को
उठालिया ५५ जैसेही दोनों हाथों से द्विजवर वशिष्ठजी ने उस बा
लक को उठायाहै कि देवताओं ने बालक के ऊपर पुष्पोंकी वर्षा की
व गन्धर्व किन्नरादि ललित सुन्दर स्वरयुक्त गीत गाने लगे ५६
ऋषि लोग मन्त्रोंसे उस महाराज कुमारकी स्तुति करनेलगे वशिष्ठ
जी तिसको देखकर तिसी समय वर देतेभये ५७ कि नहुष यह नाम
तुम्हारा संसारमें प्रसिद्ध होगा बालभावों से दूषित नहीं होता ५८
तिससे नहुष तुम्हारा नाम होगा और देवोंमें पूज्य होगे फिर द्विजो
त्तम वशिष्ठजी तिसका जातकर्मादिक कर्म करते भये ५९ व्रतबन्ध
विसर्ग गुरु शिष्यादि लक्षण सम्पूर्ण वेद पद क्रमसमेत पडङ्ग ६०
और सब शास्त्रों को वशिष्ठजी से पढ़ता भया फिर महाबुद्धिमान्
बालक रहस्यसमेत धनुर्वेद ६१ ग्राहमोक्षयुक्त दिव्य शस्त्र अस्त्र
शास्त्रादिक न्याय राजनीति गुणादिकों को भी ६२ वशिष्ठजी से शि
ष्यरूप से भक्तियुक्त होकर सीखता भया इसप्रकार अत्यन्त सुन्दर
नहुष सब विद्याओंसेयुक्त हुआ ६३ और वशिष्ठजी के प्रसादसे धनुष
और बाण धारण करनेवाला भया ६४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ
माहात्म्येच्यवनचरित्रेपञ्चोत्तरशततमोऽध्यायः १०५ ॥

# एकसौ छः का अध्याय ॥

दो० यकसै छठयें महँ नहुष विद्यापठन बहोर ॥
ताजननी अरुजनककर अतिविलापकहघोर १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले वहां जब पुत्र तुरन्तही सूतिकागृह से उठागया तो स्वर्भानुकी कन्या महाभाग्यवती आयु की भार्य्या देवताओं के समान रूपवाले अपने पुत्रको न देखकर १ महाहाहाकार करके वह वरवर्णिनी रोदन करनेलगी व कहने लगी के सब राजलक्षणयुक्त हमारा बालक कौन हरलेगया २ हे वत्स ! तुमको हमलोगोंने तपस्या दान यज्ञों बड़े २ दुष्कर नियमों व दारुण कष्टों से पाया ३ व महात्मा दत्तात्रेयजी ने सन्तुष्ट होकर अपने पुण्यप्रसादसे दिया था हाय ! उस पुत्रको कौन हरलेगया करुणायुक्त होकर इसप्रकार रोनेलगी ४ हा! पुत्र हा! वत्स हा! तात हा! बाल हा! गुणमन्दिर कहांहो व कौन तुमको लेगया हमसे पुकारकर कहो ५ तुम सब सोमवंशके भूषणहो इस में कुछ सन्देह नहीं है सो हमारे प्राणों समेत तुमको कौन यहां से हरलेगया ६ हे वत्स ! सब राजलक्षणों से युक्त दिव्य लक्षणों से विभूषित कमलदलनयन तुमको कौन हरलेगया अब हम कहां जायँ व क्याकरें ७ हम यह स्पष्ट जानती हैं कि अन्य जन्मके किये हुये कर्म्म नहीं मिटते विना भोग किये छुट्टी नहीं मिलती नहीं जानती कि पूर्वजन्ममें हमने किसकी धरोहर खाई है तिससे हमारा पुत्रहरगयाहै ८ वा पापिनी मैंने पूर्वजन्ममें किसीसे छल कियाहै तिस कर्मका दुःख भोगतीहूं अन्यथा नहीं है ९ हम रत्न की अपहारिणी हुईं इससे हमारा पुत्ररत्न उठागया हम जानती हैं कि भाग्यहीने दिव्य अनुपम गुणोंकी खानि इस हमारे पुत्र को हरलिया है १० अथवा उन ब्राह्मणदेव ने हमारे कर्म्मकी वितर्कणा अच्छे प्रकार नहीं की उसी से हमने ऐसा महादारुण पुत्रशोक पाया है इस में सन्देह नहीं ११ अथवा जन्मान्तर में हमने किसी बालक के सङ्ग विरोध कियाहै उसी पापसे यह दारुण पुत्रशोक हमने पाया है १२ अथवा वैश्वदेवकर्म्म के समय ब्राह्मण

लोग व्याहृतियों से हवन करते होंगे तब कोई ब्राह्मण आया हो
उसको अन्न न दिया होगा १३ इसप्रकार अपने भाग्यसे कह
स्वर्भानुकी पुत्री इन्दुमतीरानी महादारुण शोक से करुणा से व्या
कुलहुई १४ व शोकही से विह्वल होकर पृथ्वीपर गिरकर मूर्च्छि
होगई व फिर ऊर्ध्वश्वास लेतीहुई विना बछड़ेकी धेनुके समान रो
दन करनेलगी १५ ऐसेही बालकको हरगया सुनकर राजा आयु
बड़े शोकसे दुःखितहो धैर्य्य छोड़ रोदन करनेलगे १६ व कहने
जो इसप्रकार पुत्रहरगया तो इसमें कुछभी सन्देह नहींहै कि तप
कुछफल नहींहोता व दानका भी कुछफल नहींहोता १७ ॥

चौ० दत्तात्रेय परममुनि ज्ञानी । ह्वै प्रसन्न मनवच अस्वानी ।
सब गुणयुतसुत दीन विचारी । किमिसोमृषाभयहुयकबारी ।
ता वरमहँ किमि विघ्न दिखाई । विधिगतिकछुनहिंपरतलखाई ।
इति चिन्तापर भयहु महीपा । अतिदुःखितविलपतकुलदीपा ।

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरु
तीर्थमाहात्म्येच्यवनचारित्रेषडधिकशततमोऽध्यायः १०६ ॥

# एकसौसातका अध्याय ॥

दो० यकसै सतयें महँ कह्यो नारद आयु महीप ॥
नहुषतनय आगमन ज्यहि सुनिदम्पतिभेदीप १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि तब नारदमुनि स्व
र्गसे राजा आयुके यहां आये व आकर उन्हों ने कहा कि राजन्
क्यों शोचकररहे हो १ हां तुम्हारा पुत्र हर तो गया है पर वह कुशल
पूर्वक है हम अच्छेप्रकार जानते हैं हे महामते! वह तो देवादिकों
काभी राजाहोगा ऐसा जानकर तुम शोच न करो २ वह सर्वज्ञ व
गुणी व सब विज्ञान संयुक्त व सब कलाओं से सम्पूर्ण होकर फिर
तुम्हारे गृहको आवेगा ३ हे महाराज ! जो तुम्हारे देवोंकेगुण समान
बालकको हरलेगया है वह अपने घरको अपना काल लेगया है
इसमें कुछभी संशय नहींहै ४ सो उसका नाशकरके वह महाबली
पराक्रमी होकर तुम्हारापुत्र शिवजीकी कन्याके साथ तुम्हारे समीप

आवेगा ५ व तुम्हारा पुत्र अपने तेजसे इन्द्र व उपेन्द्रके समानहोगा अपनेही कर्म्मोंसे इन्द्रपदवी भोगेगा ६ ऐसा राजा आयुसे कहकर अनुग समेत राजाके देखतेही नारदजी सहसा से चलेगये ७ फिर महाभाग देव नारद के चलेजाने पर राजाने पुत्रके समाचार नारद के कहने के अनुसार अपनी रानी से कहे ८ कि हे भद्रे! जो देव श्रेष्ठ के समान उत्तम पुत्र हमको दत्तात्रेयजी ने दिया है वह विष्णु के प्रसादसे कुशलपूर्व्वक है ९ हे वरानने! जो हमारे गुणयुक्त पुत्र को हरलेगया है उसका शिर काटकर यहां लावेगा १० यह हमसे नारदजी ने कहा है इससे हे भद्रे! अब शोच न करो कार्य व धर्म्म के नाशनेवाले इस महामोहको छोड़देओ ११ पति के ऐसे वचन सुनकर इन्दुमती रानी पुत्रका आगमन सुनकर महाहर्षवती हुई १२ क्योंकि उसने समझा कि जैसा नारदजी ने कहाहै वह वैसाही होगा व दत्तात्रेय ने हमको जरामरणरहित पुत्र दिया है सो यह अर्थभी सत्यहीहोगा इसमें सन्देह नहीं है ऐसा चिन्तवन करके मनसे द्विजपुङ्गव दत्तात्रेयजी के नमस्कारकिया १३ । १४ ॥

चौ० अत्रितनय दत्तात्रेयजी के । चरणकमल विनवों करिठीके ॥
जासु प्रसाद लह्यों सुतचारू । पुण्यपराक्रम सहित विचारू १५
यह कहिरही मौनगहि रानी । दुःखितह्वै मनमहँकरि ग्लानी ॥
सुत आगमन सुने पुनि सोई । नहुषनाम जान्यहु मुनिगोई १६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ माहात्म्येच्यवनचरित्रेनाहुषाख्यानेसप्तोत्तरशततमोऽध्यायः १०७ ॥

## एकसौआठका अध्याय ॥

दो० यकसै अठयें महँ कह्यो मुनि नृपसुतसों वृत्त ॥
आयु नहुष शिवकीसुता हुण्डआदि शुभवृत्त १

कुञ्जलजी अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले कि ब्रह्माजी के पुत्र महातेजस्वी तपस्वियोंमें श्रेष्ठ वशिष्ठजी नहुषको बुलाकर उनसे यह वचन बोले कि १ अब तुम शीघ्र वनकोजाओ व बहुतसे फलपुष्प लाओ मुनिका वाक्यसुन नहुष वनको जातेभये २ वहांपर बलवान्

नहुष कुछ अच्छा वृत्तान्त सुनतेभये कि आयुके पुत्र धर्मात्मा म
बुद्धिमान् जिनका वियोग बाल्यावस्थाही से माताका रहा व इन
के अतिवियोगसे आयुकी भार्य्या रोदन कियाकरती ३।४ व इन
के लिये अशोकसुन्दरी ने परमदुष्कर तप किया व कहती थी कि
इन्दुमती अपने पुत्रको नहीं जानती कब देखे ५ जो कि धर्म
नहुषनाम उसके पुत्रको दानव हर लेगया है ऐसा विचारती हु
शिवजीकी श्रेष्ठपुत्री बाला अशोकसुन्दरी आयुके पुत्रके सुखीरहने
के विचारसे आलम्बरहित होकर बराबर तप करती रही सो आयु
पुत्र नहुषजी से कब मिलेगी ६।७ इस प्रकारका सांसारिक वचन
आकाश में चारणोंसे भाषित धर्म्मात्मा नहुष ने सुना इससे वे वि
भ्रमयुक्त होगये ८ व वशिष्ठजी के आश्रमपर लौट आये व स
महात्मा वशिष्ठजी से उन्होंने निवेदन किया ९ कहने के समय म
दोनों हाथजोड़ भक्तिसे शिर झुकाकर तपस्वियों में श्रेष्ठ महाप्राज्ञ
वशिष्ठजी से बोले कि १० हे भगवन्! चारणों के कहेहुये अपूर्व व
चन हमसे सुनो यह नहुष आयुका पुत्रहै व अपनी माता इन्दुमती
से अलग करलियागया है सो दुष्ट दानव इन्दुमती माता से इसे
वियोजित किया है व शिवकीपुत्री बाला अशोकसुन्दरी इसीकेलिये
अत्यन्त दुश्चर तप करती है ११।१२ उसका अन्य कुछ प्रयोजन
नहीं है केवल धीर नहुषही के लिये तप करती है यह सब हमने
सुनाहै १३ अब आपसे पूँछते हैं कि धर्म्मात्मा आयु कौनहै और
कल्याणकारिणी इन्दुमती कौन है अशोकसुन्दरी कौन है व नहुष
कौन कहाता है १४ यह हमको संशय हुआहै उसे आप मिटाने
योग्यहैं भला अन्यभी कोई महाप्राज्ञ नहुष यहांहै १५ हे तात! यह
सब व और भी जो कारणहो हम से कहो वशिष्ठजी बोले कि आयु
धर्म्मात्मा बली सप्तद्वीपवती पृथ्वीका आजकल महाराजाधिराज है
१६ व सत्यरूपा यशस्विनी इन्दुमती उनकी भार्य्या है उस में उन
प्रतापी राजा ने गुणके मन्दिर आपको पुत्र उत्पन्न किया है जो तुम
सोमवंशके भूषणहो व महादेवजी की कन्या गुणों से भूषित व रूप
समन्वित सुभगा मनोहर हँसनेवाली अशोकसुन्दरी है वह तुम्हारे

लिये आलस्यरहित होकर तपोवन में तपकरती है १७।१९ उसके भर्त्ता आपको ब्रह्माजीने योगसे उत्पन्न कियाहै वह गङ्गाजी के तीर पर योगाभ्यास करनेमें तत्पर होरहीहै २० उसको अकेली पतिव्रता तप करती हुई देखकर जो कि रूप गुण उदारतामें युक्त सुभगा व कमलेक्षणाथी हुण्डनाम दानवेन्द्र कामबाणों से पीड़ित हुआ व उसके समीप जाकर कहा कि हमारी स्त्री होवो २१। २२ इस प्रकार उसका वचन सुन उस तपस्विनी ने कहा कि हे हुण्ड ! साहस न कर व बार२न बक २३ हे वीर ! हम तुम्हारे प्राप्त होने योग्य नहीं हैं विशेषकर पराई स्त्री हैं क्योंकि देवदेव ब्रह्माजीने हमारे लिये आयुके पुत्र महाबली २४ नहुष नाम मेधावीको भर्त्ता नियत कियाहै इसमें सन्देह नहीं है जोकि देवोंसे दियेगये व महातेजस्वी हैं सो तू इस बातको अन्यथा किया चाहताहै २५ इससे हम तुझे शापदेंगी जिससे तू भस्म होजायगा ऐसा उसका वचन सुन कामबाणों से पीड़ित २६ वह दुष्ट आपभी एक स्त्री बनकर छलसे अशोकसुन्दरी को अपने स्थानपर लेगया तब हे महाभाग ! जैसेही उसने जाना कि यह हुण्ड दैत्य है वैसेही उसने उस दानवाधमको शाप दिया २७ कि महाराज नहुषके हाथ से तेरी मृत्यु होगी जब तुम उत्पन्नही नहीं हुये थे तभी उसने ऐसा कहाथा २८ सो हे वीर ! आयुके पुत्र तुमको जन्म पातेही हुण्ड पापी अपने यहां उठालाया व अपनी जान मार रींधकर खाभी लिया परन्तु उसके पाककर्त्ता ने तुम्हारी रक्षा करके दासीने तुम को हमारे स्थान पर पहुँचादिया २९ जब तुम वनको गये तो तुमको देखकर चारण किन्नरों ने तुमसे यही वृत्तान्त कहा हे वत्स ! वही हमने तुमसे वर्णन किया ३० इससे अब पापी दानवाधम हुण्डको जाकर तुम मारो व दोनों नेत्रों से आंसुओं की धारा छोड़ती हुई उस अशोकसुन्दरी के आंसु पोंछो ३१ फिर अपने पिताके गृहको जाकर अपनी माता इन्दुमतीका प्रबोध करो उस दानवेन्द्रके निपातसे मानों अपने माता पिताको बन्दीखानेसे छुड़ाओ और अशोकसुन्दरीके भर्त्ता होओ यह हमने तुम्हारे इस प्रश्नका कारण कहा ३२।३३ ऐसा नहुषसे कह कर महामति वशिष्ठजी विश्राम कररहे फिर ३४ ॥

चौपैया ॥

इमि मुनि बानी सब सुखखानी सुनिकै नहुष महाना ।
गुनिके मनमाहीं अतिहर्षाहीं बहु तिन अचरज माना ॥
पुनिकरिअतिकोपा अतिहिसुचोपा तावधंहितनृपनन्दा ।
मुनिआयसुपाई अतिसुखदाई मनमहँभयहु अनन्दा ३५

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे माहात्म्येच्यवनचरित्रेनाहुषाख्यानेऽष्टोत्तरशततमोऽध्यायः १०८ ॥

## एकसौनवका अध्याय ॥

दो० यकसैनवयें महँ कह्यो विदुर किन्नरराज ॥
शिवतनयासों नहुषके गुणयशवंशसमाज १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले कि बाण हाथमें ले धनु धारण कर नहुष तपस्वियों में श्रेष्ठ वशिष्ठ के नमस्कारकर प्रसन्न कर जाते भये १ जो कि आयुके पुत्र गुणसमेत सुरूपवान् देवों के समान देवगुणों से युक्त हैं जब नहुष बालक को वशिष्ठजी के आश्रमपर पहुँचाकर मृगका मांस परिपक्वकरके उस दुष्ट हुण्डदैत्य को उसके पाककर्त्ता ने खिलाया तो उस मांस के रससे अतिपुष्टहोकर दैत्यने अपने शत्रुका मांसजानकर बड़ी प्रसन्नता और हर्ष से भक्षण किया फिर परमानन्दित होकर अशोकसुन्दरी के समीप गया और व कालसे उपहतचित्त होकर उस महापतिव्रता स्त्रीसे बोला कि हे भद्रे ! आयुके पुत्र तुम्हारे पति को हमने भक्षण करलिया ५ इसलिये हे पवित्रअङ्गवाली ! अब हमींको भजो व अपने मनमाने भोगभोगो आयुहीन उस मनुष्यको लेकर तुम क्याकरोगी ६ यह सुनकर तप स्विनी शिवजी की कन्या अशोकसुन्दरी बोली कि हमारा भर्ता देवताओं का दिया हुआहै इससे अजर व दोषरहित है ७ उस हमारे पतिकी मृत्यु तो महात्मा देवताभी नहीं देखसके ऐसा उसका वचन सुनकर उसदुरात्मा दानव ने ८ बड़े जोरसे हँसकर उस विशालाक्षी से कहा कि हे सुन्दरि ! हमने तो आजही आयुके पुत्रका मांस खाया है उस दुरात्मा नहुपको तो हम उत्पन्नहोतेही उठालाये उसका पक

वचन सुनकर अतिदारुण कोपकरके १० सत्यप्रतिज्ञा करनेवाली त-
पा से महातेजस्विनी अशोकसुन्दरी बोली कि हमारे सत्य नियम
पसे आयुका पुत्र चिरजीवीहोगा ११ हे दुराचार! यदि जीनाचा-
हे तो यहांसे अभी चलाजा नहीं तो हम फिर तुझको शापदेंगी इ-
कुछभी संशय नहीं है १२ पाककर्त्ताने राजासे कहा कि हे महाराज!
को छोड़कर औरको आश्रय करो १३ पाककर्त्तासे भेजाहुआ पापी
ड दैत्य शीघ्रतासे अपनी प्यारी स्त्रीके पास गया १४ और उस
पा से सब वृत्तांत कहा और दासी और पाककर्त्ता ने जो किया
को नहीं जाना १५ सूतजी शौनकादि ऋषियों से बोले कि वह
स्विनी अशोकसुन्दरी बड़ी तपस्या करतीहुई बड़े शोक व दुःख
स्त होकर बनाय दुर्बल होगई १६ व अपने प्रिय कान्तकी चि-
व ध्यान बार २ करनेलगी कि दैत्यलोग विविध प्रकारके उपा-
से क्या नहीं करते हैं १७ उपाय जाननेवाला अपनी बुद्धि से
मसे अनेक प्रकारके भावोंसे सदा सब कार्य्य सिद्धकिया करता
१८ मायाकेही उपायसे वह पापी पूर्व्वकालमें हमींको हरलेगया
ऐसेही आयुके पुत्रकोभी माया से उसने मारडाला हो तो क्या
श्चर्य्य है १९ भाग्यके कारण जो पदार्थ होनेवाला होताहै वह
भी २ उद्यम करने से नष्टभी होजाताहै व कभी नहींभी नष्टहोता
० कभी २ उद्यम का फल श्रेष्ठहोजाताहै कभी २ कर्म्मकाफल पर-
जो भावी भावहै वह कैसे नष्ट होसक्ताहै व यहभीहै कि जिसको
ग्य मारा चाहतीहै वह नहीं ठहरसक्ताहै २१ व जो विशेषरीतिसे
मारी माता पार्व्वतीजी ने कहाथा तेरा नहुष पतिहोगा यह बात
से मिथ्याहोसक्ती है वह महाभाग्यवती इसप्रकार बार२ चिन्तना
रतीथी २२ कि इतनेमें विद्दरनाम किन्नर बड़ा शरीर धारण किये
भीके ऊपरका शरीर तो उसकाथा पर नीचेका नहीं २३ द्विभुजी
सकी मूर्तिथी वंशी हाथ में थी हार और कंकण से शोभित था
ङ्गों में दिव्य गन्ध लगायेथा वह अपनी स्त्री समेत अशोकसुन्दरी
पास आकर २४ उस निरानन्दा महादेवजी की कन्या से यह
ला कि हे देवि! तुम चिन्ता किसलिये करतीहो आयेहुये हमको

विद्वरनाम किन्नर जानो हम विष्णुजी के भक्त हैं इससे देवताओं ने
तुम्हारे समीप हमको भेजाहै अब आपको नहुषके विषयमें कुछ
दुःख न करना चाहिये २५।२६ क्योंकि पापी हुण्डने उन बुद्धिमान्
के मारडालने के लिये उद्यम कियाथा व आयुके पुत्रको हरलि-
याथा २७ परन्तु देवताओंने विविध प्रकार के उपायों से आयुपुत्र
की रक्षाकी पर हुण्ड यही जानता है कि आयुके पुत्रको हमने हर
लिया है २८ व भक्षणभी करलियाहै हे विशालाक्षि! हे शुभे! आ-
पको सुनाकर वह अधम दानव चलागया २९ व अपने पूर्वजन्म
के कर्मके विपाकसे महापुण्यात्मा व यशस्वी नहुष पूर्वजन्मके इकट्ठे
कियेहुये कर्म्म से तुम्हारे भर्त्ता जीतेहैं ३० पुण्यहीके बलसे जिनकी
जितनी आयु बनाई जाती है उतनी होती है परन्तु पाप के बल से
वही आयुष् नष्टहोजाती है व पुण्यात्माओं की आयु जो पापात्मा
घातक पुरुष नष्ट किया चाहते हैं ३१ वे दुरात्मा महापापी पराये
तेजके नाशक आप नष्टहोजाते हैं ३२ पर नहीं मानते महात्माओं
का यश मिटाने के लिये बार २ यत्न कियाकरते हैं व विष शस्त्रादि
नाना प्रकारके उपायों से उनका वध कियाचाहते हैं यह नहीं जा-
नते कि यह अपने पुण्यकर्म्मों से रक्षितहै ३३ हुण्डादिक महापापी
अनेकप्रकारके भेदबलयुक्त मोहन स्तम्भनादिकोंसे पीड़ा देतेहैं ३४
हे महाभागे! सुकृतके प्रयोग से पूर्वजन्मके इकठे हुये से पुण्यवान्
रक्षित रहताहै ३५ परन्तु उन पापियोंके सब उपाय पुण्यात्माओं के
विषयमें विफल होतेहैं देवता व पुण्यों से रक्षित महात्मा पुरुषों को
मन्त्र यन्त्र तन्त्र विष अग्नि शस्त्र बन्धन घातक कुछभी नहीं दुःख
देसक्ते जो उसके विषय में कुछ करते हैं वे भस्म होजाते हैं व वह
पुण्यात्मा तो जहांका तहां स्थित रहता है ३६ । ३७ हे शुभे! इस
आयुपुत्र के रक्षक देवतालोग हैं कि यह नहुष वीर सब पुण्यों का
सञ्चय व सब तपस्याओं का निधान है ३८ इसी से बलवानों में
श्रेष्ठवीर नहुष की रक्षा हुई सत्य तप पुण्य संयम दमादिकों से उ-
नकी रक्षाहोगई ३९ अब तुम वृथा क्यों दारुण दुःख सहती हो
अकारण शोक को छोड़ो वह धर्म्मात्मा विना माता पिताके औ

मैं जीताहै ४० व तपोबलसे तपस्वी वशिष्ठजी पालन करते हैं व वह
दवेदाङ्गों के निश्चय को जानता है व धनुर्वेदमें अतीव विचक्षण
४१ जैसे चन्द्रमा अपनी कलाओं से सदा शोभित होताहै वैसेही
अपने तेज व कलाओं से नहुष शोभित होता है ४२ व विद्या म-
हापुण्य तप व यशों से रिपुवीरोंके मारडालनेवाला व देवताओं को
अतीवप्रिय महात्मा नहुष है ४३ हुण्ड दैत्य को मारकर वह वीर
तुम्हारे समीप आवैगा व विवाहकरेगा पीछे से पृथ्वी में एक राजा
होगा ४४ और महायोगी होगा जैसे स्वर्ग में इन्द्र हैं हे भद्रे ! तुम
तिससे इन्द्रके समान अच्छे पुत्रको प्राप्त होगी ४५ ययाति नाम
पुत्र होगा वह धर्म्मज्ञ प्रजापालन में तत्पर होगा रूप उदारता गुण
युक्त सौ कन्या भी होंगी ४६ हे देवि ! पुण्य विक्रम नहुष महाराज
जिनके पुण्यों से इन्द्रलोक को जावेंगे और इन्द्रपदवी को भोगेंगे
४७ व धर्म्मात्मा ययाति नाम पुत्र तुम्हारे होगा वह महाराजाहोकर
प्रजाओं का पालन सबजीवों के ऊपर दयामें पर होकर करेगा ४८
उसके महापराक्रमी चार पुत्रहोंगे सबके सब बलवीर्य्य से युक्त व
धनुर्वेदके पारगामी होंगे ४९ एकका अनु नाम होगा दूसरे का पूरु
तीसरेका द्रुह्यु व चौथे का वीर्य्ययुक्त यदुनाम होगा ५० ये सब पुत्र
महावीर्य्य महाबली महात्मा सब प्रकार के तेजों से युक्त होंगे ५१
उन में यदु के वीर पुत्र सिंहके समान पराक्रमी होंगे अब यदुके म-
हापराक्रमी पुत्रों के नाम कहतेहुये हमसे सुनो ५२ भोज भीमक
अन्धक कुञ्जर धर्म्मात्मा और सत्य के आधार वृष्णि पांच ये ५३
छठां श्रुतसेन सातवां श्रुताधार कालदंष्ट्र जोकि समरमें कालको भी
जीतेगा और महाबलीहोगा ५४ हे वरानने! यदुके महावीर्य सबपुत्र
यादव कहावेंगे उनके पुत्र पौत्रादि सहस्रोंहोंगे ५५ हे देवि! तुम्हारा
व नहुषका ऐसा वंशहोगा इससे अब ऐसा दुःखछोड़ कर सुखसे स्थित
होओ ५६ हे शुभानने! वह महाप्राज्ञ नहुष तुम्हारा स्वामी तुम्हारेलिये
अवश्य आवेगा हुण्ड दानव का वधकरके फिर तुम्हारे संग विवाह
करेगा ५७ दुःख से उत्पन्न उष्ण तुम्हारे नेत्रों से गिरेहुये आंसुओं
के बूँद वह मान का देनेवाला अपने हाथों से आकर पोंछेगा ५८

व आयु राजाके दुःखको उद्धारकर अपने सबकुलको तारेगा व अ-
पने पिताको सुखित करके पीछे आप प्रजापालहोगा ५९ हे शुभे !
यह सब हमने देवताओंका वचन तुमसे कहा अब सब दुःख शोक
छोड़कर सुख से बैठो ६० यह सुनकर अशोकसुन्दरी बोली कि ॥
चौ० दैवविहितनिजपतिगुणधामा। कब देखब हम पूरणकामा ॥
धर्म्मधीर यह कहहु विचारी। सब सुख जासों होयकरारी ॥
विद्दुरबोल्यो सुनि यह वचना। बहुत शीघ्र लखिहोयह रचना ॥
इमिकहि विद्दुर गो सुरलोका। जो सब विधिसोंरहतअशोका ॥
अरु अशोकसुन्दरी सुबाला। करन लगी तप तहां विशाला ॥
काम क्रोध मद लोभ बिहाई। अरुमनकी सिगरी दुचिताई ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरु-
तीर्थेच्यवनचरित्रेनाहुषाख्यानेनवाधिकशततमोऽध्यायः १०९ ॥

## एकसौदशका अध्याय ॥

दो० एकसै दशयें महँ कह्यो जिमि देवन निज शस्त्र ॥
दीन नहुष महराजकहँ हुण्डवधनहित अस्त्र १

कुञ्जलजी अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले कि जब वशिष्ठजीने हुण्ड
के मारने की आज्ञा नहुषकोदी तो सब मुनियों व मुनियों में व त
करनेवालों में श्रेष्ठ वशिष्ठजी से पूँछकर नहुष उस दानव के मारने
में उत्सुक हुये १ तब तपस्वी वशिष्ठादिक उन मुनियोंने आयुके म
हाबली पुत्रको बहुतसे आशीर्वाद दिये २ व आकाशमें सब देवता
ओंने नगारे बजाये व नहुषके शिरपर पुष्पोंकी वर्षा की ३ व फिर
सब देवताओंको सङ्गलिये इन्द्रदेव वहां आये व सूर्य्यतेजोपम अ
पने २ शस्त्र अस्त्र नहुषको दिये ४ हे द्विजसत्तम ! तब देवताओंसे
नृपशार्दूल नहुषने उन दिव्यअस्त्रोंको ग्रहण किया उनके ग्रहणकरने
से औरभी अधिक महाराजकुमार शोभितहोनेलगे ५ फिर सब दे
वगण इन्द्रजीसे बोले कि हे सुरेश्वर ! इन राजाको अपनारथ दी
जे ६ देवताओं के मनका अभिप्राय जानकर देवराजने अपने सा
रथि मातलिको बुलाकर आज्ञादी कि ७ तुम इन महात्मा के रथ

जाओ व रथपर इनको चढ़ाओ व ध्वजासहित रथपर चढ़ेहुये इन महाराजकुमार को समर में लेजाओ ८ सारथिने कहा बहुत अच्छा ऐसाही हो हे सहस्राक्ष! आपका कहा करेंगे यह कहकर युद्ध करने पर उद्यत नहुषके समीप रथलेकर मातलि गया ९ व इन्द्रके वचन राजा नहुषसे उसने कहे कि हे धर्मज्ञ ! इस रथपर चढ़कर समरमें विजयीहोओ १० हे नृपतीश्वर ! इन्द्रजीने तुमसे यह कहा है कि अब तुम पापी हुण्डदानवको समरमें मारडालो ११ यह सुनकर राजेन्द्र नहुषजी के मारेहर्ष के सबअङ्गों में पुलकावली छागई व कहा कि देवदेव महात्मा वशिष्ठजी महाराजके प्रसाद से १२ समर में उस पापी दानव को मारेंगे क्योंकि वह दुष्ट देवताओं के साथ बहुत पाप करताहै १३ जब महात्मा नहुषजी ने ऐसा वचन कहा तो देवताओं के भी देव शङ्ख चक्र गदाधर श्रीविष्णुभगवान् आप वहां प्राप्तहुये १४ व अपने चक्रसे सूर्य्य तेजके समान दूसरा चक्र निकालकर तेजसे प्रज्वलित शुभ देनेवाला वह चक्र बड़े हर्षसे युक्त होकर देवदेव ने राजा नहुषजीको दिया फिर महादेवजीने आकर अतिप्रज्वलित तीक्ष्ण अपना त्रिशूल राजाको दिया १५ । १६ जिससे समर करनेको उद्यत राजा बहुतही शोभित हुये मानो त्रिपुरासुरके मारनेवाले दूसरे महादेवही के समान दिखाई दिये १७ फिर ब्रह्माजीने आकर ब्रह्मास्त्र दिया व वरुणने आकर उत्तम फांसी व चन्द्रतेज के समान प्रकाशित शब्दमें मङ्गलदाता शंख दिया १८ फिर इन्द्रने वज्र और शक्ति दिया वायुने धन्वाबाण दिये व अग्निजीने अपना आग्नेयास्त्र महात्माको दिया १९ व विविध बहुत दिव्य अस्त्र शस्त्र अन्य महात्मा देवताओंने महापराक्रमी राजा को दिये २० कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि फिर देवताओं से मानित व तत्त्ववेदी मुनियों की आशिषों से अभिनन्दित महाराजकुमार वीर नहुषजी २१ घण्टाके शब्द से शब्दायमान छोटी २ घण्टाओंसे नादित दिव्यप्रकाशित रत्नों की मालायुक्त उस रथपर चढ़े २२ व उस दिव्य रथपर चढ़ने से नृपनन्दन ऐसे शोभित हुये कि जैसे अपने तेजों से स्वर्ग में सूर्य्य शोभितहोते हैं २३ व जैसे

सूर्य सब के ऊपर अपने तेजसे तपते हैं वैसेही वे महाराजकुमार दैत्यों के मस्तकों पर तपनेलगे व ऐसे वेगसे चले जैसे कि महावेग से प्रचण्ड पवन चलता है २४ जहां वह पापीदानव अपने गर्वसे युक्त था वहां उस मातलिमहात्मा सारथिके साथ जातेभये २५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे माहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेदशादिकशततमोऽध्यायः११०॥

## एकसौग्यारहका अध्याय॥

दो० यकसै ग्यरहें महँ नहुष समर गमन लखि आप॥
देवादिक युवती तहां आईं कीन अलाप १

कुञ्जल अपने पुत्रसे बोला कि जब सुरराजके समान विराजमान महाराजकुमार वीर नहुषजी चले तो सुन्दर कौतुकों और मङ्गलगीत युक्त सब देवताओंकी स्त्रियां भी वहां आईं १ देवताओं की सब श्रेष्ठ स्त्रियां व रम्भादिक सब अप्सरायें किन्नरोंकी स्त्रियां ये सब मारे कौतुक की उत्सुकता से स्वरसे गानेलगीं २ व ऐसेही सब आभूषणयुक्त गन्धर्व्वोंकी सब स्त्रियां कौतुकार्थ वहां आईं जहां कि राजारथपर चढ़े चलेजातेथे ३ जाते २ हुण्डदैत्यके महोदयनाम पुर में राजा पहुँचे जोकि सब ओरसे आनन्ददायक वनोंसे शोभित होरहाथा ४ जिसमें सात कक्षायें थीं सब सोने चांदीके कलशोंसे शोभित होती थीं व महादण्डयुक्त पताकाओंसे शोभित वह उत्तम पुर होता था ५ व कैलास पर्व्वतके शिखरोंके आकारके शिखरोंसे शोभितथा और भी सब शोभाओंसेयुक्त नानाप्रकारके उत्तम पदार्थों से शोभायमान होताथा ६ सागरके तुल्य तड़ागों से व वन उपवनों से उपशोभितथा तड़ाग सब जलसे भरेथे और कमल लालकमलों से अतीव शोभितथे ७ महारत्नों के प्राकारों से शोभित व सैकड़ों अँटारियों से युक्तथा स्वच्छ जलोंसे परिपूर्णखाओंसे शोभित था ८ अश्वरत्न गजरत्नों से शोभित होरहाथा अतिप्रकाशित रूपवती स्त्रियों से व सुरूपवान् पुरुषोंसे समाकीर्ण ९ व नाना प्रभाववाले दिव्य पदार्थों से उसका महोदय शोभायमान होरहाथा राजाओं श्रेष्ठ महाराज नहु-

बजी जब ऐसे पुरको देखते भये १० तो पुरके समीप एक दिव्य वृक्षों का वन था उसमें महाराजने प्रवेश किया जैसे कि नन्दन वनमें इन्द्रजी प्रवेश करते हैं ११ वहीं वे धर्मात्मा उस मातलि सारथि के साथ ठहरे व उसी वनमें एक बड़ी भारी नदीथी इसलिये फिर वहां उतरे १२ वहां सब रूपसम्पन्न वे दिव्य स्त्रियांभी आईं गीत नृत्य में चतुर गन्धर्वलोगभी आये व राजाके आगे गाने लगे १३ सूत मागधादि नृपोत्तम आयुके पुत्र सूर्य के समान प्रकाशित राजा की स्तुति करनेलगे १४ तब राजा नहुषजी किन्नरों के गायेहुये मधुर गीत सुनते भये १५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेएकादशाधिकशततमोऽध्यायः १११ ॥

## एकसौबारहका अध्याय ॥

दो० यकसै बरहेंमहँ कह्यो जिमि शिवसुता सुगीत ॥
सुनि पहुँचीढिग नहुषके कीन्हें तर्क विनीत १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि जब राजाके आगे वे सब गाने बजाने स्तुति करनेलगे तो सुन्दर स्वरसहित मधुरगीत व तालसहित बाजे पुण्यरूप स्तुतियां उस स्थानसे थोड़ेही दूरपर तप करतीहुई शिवजीकी कन्या अशोकसुन्दरी सुनकर चिन्तना करनेलगी १ व आसन परसे तुरन्त उठकर महाउत्साहसे युक्त होकर अपने तपोभावसेयुक्त वहां शीघ्रही आगई २ व दिव्यरूप धारणकिये देव समान प्रकाशित दिव्य चन्दनादि गन्धलगाये दिव्यमाला पहिने ३ दिव्यवस्त्र भूषणों से भूषित अतिशोभित महाराजकुमार नहुषजी को दिव्य लक्षणसंयुत सूर्य्यसमान देदीप्यमान देखकर ४ विचारनेलगी कि क्या यह कोई महाबुद्धिमान् देवहै वा गन्धर्व्व वा यह कोई नाग कुमारहै वा कोई विद्याधरहै ५ ऐसा रूपवान् तो हम देवताओंमें भी किसी को नहीं देखतीं फिर यक्षों में कौन कहै इसी लीला से तो सहस्राक्ष देवभी दिखाई देते हैं ६ कि शम्भुजी तो नहीं हैं कि कामदेव है रूपधारण करके आयाहै कि हमारे पिताके सखा कुबेरजी हैं ७ ॥

चौपैया ॥

इमिजबतक बाला नयनविशाला चिन्ता करत सुलागी।
तबतक वररूपा परमअनूपा रम्भादिक अनुरागी॥
अतिप्रहसित होई तनिक न गोई बोली मधुरी बानी।
निज मनमहँजानी त्यहिअकुलानी सो सब भांति सयानी ८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेद्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ११२॥

## एकसौतेरहका अध्याय ॥

दो० यकसै तेरहयें महँ रम्भा कह सब ज्ञान॥
सुनि अशोकसुन्दरिचरित कीन्ह्यो नहुष प्रमान १

उन सब स्त्रियों में से रम्भा अप्सरा बोली कि हे शुभे! तपस्या छोड़कर यहां क्या देखती हो तप पुरुषके चिन्तन से भी चूकता है १ यह सुन अशोकसुन्दरी बोली कि नहुषकी कामना से हमारा मन तपस्या में लीन है हमको चलायमान करने में देव असुर नागादि कोई भी पुरुष समर्थ नहीं हैं २ परन्तु हे महाभागे! इनको देखकर हमारा मन अत्यन्त चलायमान हुआहै इससे यही मनमें आता है कि इनके सङ्ग विहार करें ३ परन्तु हे वरानने! हमारा मन विपरीत हुआहै यदि तुमको इस विषय में उत्तम ज्ञान हो तो हमसे इसका कारण बताओ ४ महात्मा देवताओं ने हमको आयु महाराज के पुत्रकी भार्य्या होनेके लिये आज्ञादीहै फिर भी हमारा चित्त रमण करने में उत्सुकहै ५ रम्भाबोली कि हे भामिनि! सब देहरूप प्राणियों में ज्ञानरूप सनातन ब्रह्म आत्मा आप वसता है ६ यद्यपि अपकारिणी इन्द्रियां अपने अपने विषयोंकी इच्छा करके आत्माको मोहित कराती हैं तथापि वह सबों में सदैव रहता है ७ हे सुन्दरि! प्रकृति ज्ञान विज्ञानकी कला को नहीं जानती परन्तु यह शुद्धात्मा धर्मज्ञ आत्मा अच्छेप्रकार जानता है ८ तपस्वी भी महामति को देख मन तापको प्राप्त है इसीप्रकार पापको और सत्यही को धावताहै ९ ये आयुराजा के पुत्र तुम्हारेही पती हैं

में कुछभी सन्देह नहीं है अन्य पापीपुरुष को देखकर तुम्हारा आ-त्मा शङ्का करता १० क्योंकि देवताओं ने सत्यकी फांसी से तुम्हारे आत्माको इन महात्मा नहुषमें बांधदिया है जिससे कि जब कभी अपने पतिको देखे उसी के पास चलीजावे ११ हे सुन्दरि ! तुम्हारे आत्मा ने इस निबन्धन को सुन लियाथा इसी से भाव के सत्य स-म्बन्ध को ग्रहणकर अपने आप स्थितहुआ १२ अन्यभाव को वह जानताही नहीं बस अपने आयुपुत्रके समीप चलाआया पर हे देवि! तुम्हारी प्रकृति इन राजाको आयेहुये नहीं जानती १३ ऐसा जानकर तुम्हारा प्रधान आत्मा इन्हीं के पीछे दौड़ताहै बस आत्मा सब कुछ जानताहै क्योंकि वह सनातन देवहै १४ येही वीर्य्यवान् वीरोंमें श्रेष्ठ नहुष महाराजहैं इससे तुम्हारा चित्तगयाहै सत्य सम्बन्धकी इच्छा करताहै १५ हे भद्रे ! आयुके पुत्र को जानकर अन्यके पास नहीं गया यह सब शाश्वत तुम्हारे मनमें प्राप्त को मैंने कहा १६ कि लड़ाई में महाघोर दानवों में अधम हुण्डको मारकर तुमको अपने उत्तम स्थान आयुके गृहको लेजावेंगे १७ वीरेन्द्र दैत्य से हरलिया गया था परन्तु अपनी पुण्य से बचगयाहै बाल्यावस्था से लेकर स्वजनों से वियुक्त रहा है १८ पिता माता से हीन महावनमें वृद्धि को प्राप्त हुआ है और तुम्हारे साथ इस समय पिताके घरको जावेगा १९ इसप्रकार शिवपुत्री अशोकनन्दनी रम्भा के वचन सुनकर बड़े आनन्द से युक्त रम्भा से बोली २० कि यह सत्यात्मा अत्यन्त वीर्य्यवान् हमारा स्वामी है हमारा शोकसे आकुल विह्वल मन चलायमान है २१ जिसके समान कोई देव नहीं है क्योंकि वह सब निश्चित पदार्थ जानताहै हे चारुहासिनि ! सत्य २ हमने अपना चित्त ऐसाही देखा २२ कि काम सदृश अन्य पुरुषको देखकर कभी यह चित्त चलाय-मान न हुआ व इन महात्माको अपना जानकर चलउठा २३ हे भद्रे ! जैसे इनको देखकर चित्तने बाधाकी है वैसा अन्य पुरुष को देखकर कभी नहींकी इससे अब हम व तुम दोनों सखियां सङ्गही सङ्ग इनके गृह चलें २४ जब ऐसा अशोकसुन्दरी ने कहा तो रम्भा चलने के लिये उद्यतहुई नहुषके समीप जाने के लिये उत्सुक अशोक-

सुन्दरी को जानकर २५ रम्भा बोली कि अब क्यों नहीं चलती सू
जी शौनकादिकों से बोले कि अशोकसुन्दरी रम्भा सखी के सा
वीर लक्षण नहुष २६ के समीप प्राप्त होकर रम्भा सखी को भेज
और कह दिया कि हे महाभागे ! इन देवरूपी नहुष के पास जाओ
२७ व इस सब कथा को कहो कि तुम्हारे लिये जिससे आई है त
फिर रम्भा बोली कि हे सुव्रते ! हे सखि ! ऐसा प्रिय हम तुम्हारा क
गी २८ ऐसा कहकर महाराजनन्दन नहुषजी के पास रम्भा गई
व धनुर्ब्बाण धारण किये दूसरे इन्द्रही के समान स्थित वीर नहु
जी से २९ अपनी सखी का उत्तम वचन बोली कि हे आयुपुत्र ! हे
महाभाग ! हम रम्भाहैं तुम्हारे समीप आई हैं ३० हे वीर ! शिवकी
कन्याने हमको तुम्हारे समीप भेजा है व तुम्हारेही लिये देवदेव श्री
महादेवजीने और पार्व्वतीजी ने पूर्व्वकालमें ३१ तुम्हारे अनुरू
श्रेष्ठ भार्य्या उत्पन्न की है यह लोकों में दुर्ल्लभ नरश्रेष्ठों इन्द्रादि
तपस्वी देवों ३२ गन्धर्व्व नागादिकों पुण्यात्मासिद्ध चारणों को दु
ष्प्राप्य है वह तुम्हारे लिये अपने आप आई है उसके स्वभावादि
हम से सुनो ३३ हे महाप्राज्ञ ! यह स्त्रीरत्न पुण्यसे निर्मित सम्पू
है अशोकसुन्दरी उसका नामहै व तुम्हारेही लिये तपकरती है ३४
व तुम्हारे अर्थ उस ने अत्यन्त तपकिया है व तुम्हीं को सदैव चा
हती है ऐसा जानकर हे महाभाग ! भजती हुई उसको भजो ३५
तुमको छोड़ अन्य किसी को वह वरारोहा पुरुषही नहीं मांगती जा
ऐसा रम्भा ने अपनी सखीकी ओर से वचन कहा ३६ तो राजाने
प्रत्युत्तर दिया कि हे रम्भे ! हमारा वचन सुनो जो तुमने हमारे आगे
कहा है वह सब हम प्रथमही से जानते हैं ३७ क्योंकि पूर्व्वसमय
हमारे आगे महात्मा वशिष्ठजी ने कहाहै व सब इसके उत्तम तपको
हम जानते हैं ३८ हे भद्रे ! कारण सुनिये जैसे सुख होगा विना हुं
हुण्डदानव को मारडाले हम इस वराङ्गना के पास न जावेंगे ३९
यह सब वृत्तान्तभी हम जानते हैं कि हमारेही अर्थ वह उत्पन्न
हुई है व तपभी हमारेही अर्थ करती है ४० व वह हमारीही भा
र्य्या ब्रह्मा से बनाई गई है इस में सन्देह नहीं है व हमारेही अर्थ

निश्चयकर तपकरने में उद्यतहुई है ४१ फिर नियमयुक्त उसे दुष्ट पापी हुण्ड हरलेगयाथा वबह दानवाधम अपने गृहको सूतिका गृह से हमें लेगया था ४२ व बालावस्थाही में विना पिता माता का कर दिया था इससे उस दानवाधम हुण्डको मारकर ४३ तब उसको वशिष्ठजीके आश्रमपर लेजायँगे हे रम्भे! तुम्हारा कल्याणहो हमारे प्रिय करनेवाली से ऐसा कहो ४४ ऐसा कहकर रम्भाको विदा किया वह अतिवेग से चलीगई ॥

चौ० कह्योअशोकसुन्दरीपाहीं। सबसँदेश रम्भा शक नाहीं ॥
जोभाषा नृप नहुष विचारी। क्रमसोंसो निजमतिअनुसारी ॥
सुनि अशोकसुन्दरी सुबाला। भाषित नहुष केर गतजाला ॥
हर्षित भई बहुत सुख पावा। वीरप्राणपति अतिमनभावा ॥
रम्भासहित तहां सुखपूर्वक। रहनलगी तपकरतअपूर्वक ॥
इमि अशोकसुन्दरी कहानी। कहीभूपतुमसन प्रियजानी४५।४८

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ माहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेत्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः११३॥

# एकसौचौदहका अध्याय ॥

दो० यकसैचौदहयें महं हुण्ड नहुष को जानि ॥
युद्धकरनगो क्रोधसों समर अरम्भ्यो मानि १

कुञ्जलजी अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले कि इसके पीछे हुण्ड परिचारक सब दानवों ने जैसा रम्भा व नहुषका संवाद सुना । १ सब ज्योंकात्यों जाकर दैत्येन्द्र हुण्डसे कहा उसे सुनकर बड़ा ोधकरके वह दूत से बोला कि २ हे वीर! हमारे आदेशसे जाओ मने तिसपुरुषको जाना है कि वह अशोकसुन्दरी के साथ वार्त्ता रता था ३ स्वामी की आज्ञापाकर वह लघु दानव वीर नहुषजी पास गया व एकान्त यह वचन बोला कि ४ सारथि घोड़े सहित थपर चढ़कर दिव्य धनुर्बाणादि धारणकिये सभा में भयकराते ये ५ तुम कौनहो व किसकेहो व किसने तुमको किस कार्य्यके लिये जा है व इस रम्भासे और इस अशोकसुन्दरी से ६ तुमने स्पष्टता

पूर्व्वक क्या कहा था हमारे आगेभी कहो व देवताओंके मर्दन कर-
नेवाले हुण्डसे आप कैसे नहीं डरते ७ जो जीने की इच्छाहो तो
यह सब हमसे कहो व शीघ्र यहांसे चलेजाओ यहां न रहो क्योंकि
दानवों का स्वामी बड़ा दुस्सह है ८ यह सुन नहुषजी बोले कि
जो सप्तद्वीपवती पृथ्वी के बड़ेबली महाराज आयुजी हैं सब दान-
वोंके विनाशक हमको उनके पुत्र जानो ९ नहुष हमारा नाम वि-
ख्यातहै व देवता ब्राह्मणों के हम पूजकहैं हे दानव ! हमको बाल-
कपनहीमें तुम्हारा स्वामी हुण्ड हरलायाथा १० व शिवजीकी इस
कन्याको भी यह दैत्य पूर्व्वकालमें हरलायाथा इसलिये हुण्डके वध
के निमित्त इसने अतिघोर तपकियाहै ११ जैसेही हमारा जन्महुआ
कि सूतिका गृहसे तुम्हारा स्वामी हमें उठालाया और अपनी दासी
को और पाककर्त्ताको दिया हे पाप ! अब सुन हम वही हैं उस दुष्ट
पापकर्म करनेवाले हुण्डदैत्यके वधके लिये आयेहैं १२।१३ व यहांके
औरभी घोर दानवोंको यमपुरको भेजेंगे हे पापिष्ठ ! हमको ऐसा जान
कर दानव से ऐसाही जाकर कहदे १४ नहुष महात्माके ऐसे वचन
सुनकर वह दुष्टात्मा वहां गया हुण्ड से जैसेका तैसा उसने कहा
१५ दूतके मुखसे जैसेही ऐसा सुना कि दानवेन्द्रने बड़ाभारी क्रोध
किया व कहा कि उस पापी सूदने व उस दुष्टा दासीने क्यों नहीं उस
बालकको मारडाला १६ अब देखो हमारा मरणरूप वह बढ़कर
फिर आनपहुँचा हम अभी अशोकसुन्दरीसहित उस १७ आयु
के दुष्ट पुत्रको जाकर मारते हैं समरमें मारेतीखे बाणोंसे मारकर
उड़ादेंगे फिर ऐसा कहकर अपने सारथिसे बोला कि तुम अच्छे
सीखेहुये घोड़ेजोतकर रथलाओ फिर आतुर उसने सेनापतिको
बुलाकर उससे यह कहा कि १८।१९ हमारी सबसेना अभी तैयारकरो
व सब अन्यशूरोंकोभी आज्ञादेओ कि युद्ध करनेको उद्यतहों घोड़े
व सवार योधा सब तैयारहों पताका चामर छत्र सब हमारे रथके
ऊपर लगायेजायँ २० हमारी चतुरंगिणी सेना योजितकरो यह
बहुतही शीघ्र विलम्ब न हो ऐसा हुण्डका वचन सुनकर तुरन्त उस
महाप्राज्ञ सेनापतिने यथाविधि सबक्रिया चतुरङ्ग महासैन्यसे यु-

असुर युक्तहुआ २२ व बाणचाप धारण कियेहुये नहुषवीरके सङ्ग युद्धकरनेके लिये वह गया हुण्ड उन नहुषजीके सामने पहुँचा जोकि इन्द्रके रथपर चढ़े सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ २३ समरमें उद्यन्तवीर सुर असुरों से दुःखसे प्राप्तथे इनका युद्ध देखने के लिये विमानोंपर चढ़कर सब महापराक्रमी देवगणभी आकाश में स्थितहुये २४ नहुषको सब तेजोज्वालासे समाकीर्ण दूसरे सूर्य्यहीकेसमान सबों ने देखा सूतजी शौनकादिकोंसे बोले कि फिर वे सब दानवलोग नहुषके ऊपर उत्तम बाणोंकी वर्षा करनेलगे २५ शक्ति, महाशूल, खड्ग, परशु,फँसरी आदि अस्त्र शस्त्र चलानेलगे व समर में उन महात्मा नहुषजीके सङ्ग युद्ध करने लगे २६ व क्रोधसे ऐसे गर्जने लगे जैसे वर्षाकालमें मेघ पर्वत में गर्ज्जतेहैं उन दैत्योंका विक्रम देखकर आयुकेपुत्र महाप्रतापी नहुषजीने २७ अपने इन्द्रके आयुधके समान धनुष्को उठाकर उसकी प्रत्यञ्चा चढ़ाई व उन महात्माने वज्रके शब्दके समान धनुषका शब्दकिया २८ हे विप्रो ! नहुषजीने ऐसा चाप शब्दकिया कि जिससे सब दानवों को भय पहुँचा ॥

चौ० महाघोररवसुनिसबदानव । कम्पितभेजिमिकातरमानव ॥
कश्मलसहित भगनसब अङ्गा । सुनतशब्द सारेअँगभङ्गा २९।३०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेचतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४ ॥

## एकसौपन्द्रहका अध्याय ॥

दो० यकसैपन्द्रह महँ कह्यो हुण्ड नहुषकर युद्ध ॥
जामें दानव सकलनृप मारे ह्वैके क्रुद्ध १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जलसे बोला कि तदनन्तर धनुर्बाण धारण किये महात्मा महाराज नहुषजी संग्राम में विराजमान हो अतिक्रोध से दानवोंके नाशकरने में ऐसे उद्यतहुये जैसे प्रलयकाल में काल क्रुद्धहोकर सबलोकों का नाशकरताहै १ रविके तेजके समान दीप्तिमान् अस्त्रोंके जालोंसे उन महात्माने दानवोंको ऐसामारा जैसा कि प्रचण्डपवन वृक्षोंको उखाड़डालताहै २ वजैसे पवन अपने

बल तेजसे दिव्य मेघसमूहों को उड़ालेजाताहै वैसेही महाराज ने अत्यन्त तीक्ष्ण श्रेष्ठ बाणोंसे मार २ कर सब मदोत्कट असुरोंको नाशकरदिया ३ यहांतककिउन महात्माकी बाणवृष्टि कोईभी दानव न सहसके कोई तो मरगये कोई घायल हुये व बहुतसे समर छोड़ कर भागखड़ेहुये ४ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि महातेजस्वी महाप्राज्ञ बड़े दानवोंके विनाशनेवाले महाराज नहुषको देख दुष्टात्मा हुण्डने क्रोधकिया ५ व सम्मुख जाकर बोला कि हे आयुपुत्र! रण में खड़ेरहो खड़ेरहो तुमको अभी यमराजके पास भेजदेते हैं ६ तब नहुषजी बोलेकि देख हम समरमें स्थित हैं व तुम्हारे मारने के लिये आये हैं हम तुझ पापी दानवको मारडालेंगे ७ यह कह धन्वाले अग्निकी शिखाकेसमान लपलपाते हुये बाण चढ़ाकर छत्र लगाये हुये राजा समर में शोभित हुये ८ व इन्द्र के दिव्य सारथि मातलि से वचन बोले कि आप हमारा रथ हुण्ड के सम्मुख लेचलें ९ जब वीर नहुषजीने ऐसा कहा तो मातलि ने महावायु के वेगके समान अतिशीघ्र चलनेवाले घोड़ों को हांका १० व ऐसे उड़े कि जैसे आकाश में हंसउड़ते हैं व चन्द्रमा के रङ्ग के छत्र पताकासहित उस रथपर चढ़े ११ राजानहुष ऐसे शोभितहुये जैसे आकाश में सूर्य्य शोभित होतेहैं ऐसेही तेजसे व विक्रमसे आयुके पुत्र रणमें शोभित हुये १२ व उधर हुण्डभी अपने रथपर चढ़ाहुआ व अपने तेजसे विराजमान सब आयुध धारण किये वीरव्रत में स्थित हुआ १३ व दोनों वीरोंका दारुण भयङ्कर युद्ध होने लगा जिससे कि देवताओं कोभी विस्मयहुआ हे महाप्राज्ञ! तब अतितीक्ष्ण कङ्कपत्र लगेहुये बाणोंसे हुण्डने नहुषराजा की छातीमें ताड़ित किया १४। १५ और पांच बाण नहुष के मस्तक में मारे तब बाणोंसे विद्धराजा क्रुद्धहुआ व उस समय बाणोंके लगनेसे अधिक शोभितहुआ १६ जैसे अपने किरणों से अरुणसहित उदयहुये सूर्य्य शोभित होते हैं उपर से रुधिर की धारा बहरही थी व सुवर्ण की फोंकवाले बाण देह में घुस गये थे १७ इससे सूर्य्य के समान राजा भूमिपर शोभित हुये और तिसके पौरुष को देखकर दानव से बोले १८ हे दैत्य!

होकर हमारी शीघ्रता देख ऐसा कहकर समर में दैत्य के दश
मारे १९ वे सब बाण मुख व ललाटही में लगे इससे महा-
मूर्च्छितहोकर सब देवताओं के देखतेही देखते रथके ऊपर
नहुआ २० तब देवों चारणों सिद्धोंने आकाश में बड़े हर्ष का
किया जय २ महीपाल ऐसा कह सबोंने शंख बजाये २१ वह
ाओं का कियाहुआ तुमुल कोलाहल हुआ व मूर्च्छित हुण्ड
ानों में पड़ा २२ सुनतेही धन्वा व सर्पोंके समान बाण लेकर
। कि समर में खड़े होवो खड़े होवो अभी तुम्हारे मारनेसे नहीं
ं २३ ऐसा कह फिर उठकर अतिवेगसे इक्कीस बाणों से नहुष
ारा २४ उनमेंसे एक बाण से तो मूठी के मध्यमें मारा व चार
से छाती में प्रहार किया व अन्य चारबाणों से चारो घोड़ोंको
व एकसे छत्रको २५ व पांच बाणों से मातलिको मारकर सा-
ग रथमें मारे व उस दानवने मोरके पंख लगेहुये तीनबाणों से
के दण्डमें मारा २६ बाणों का लेना चढ़ाना व छोड़ना अति
ते दुरात्माका देखकर सब देवगण बहुत विस्मित हुये २७
तका पौरुष देखकर राजाने दानवोत्तम से कहा कि तुम शूर
नुर्विद्या भी पढ़े हो धीर व रणमें पण्डितहो २८ ऐसा उस
से कह व धन्वाकी टङ्कोर दे महाराज ने दश बाण दानव के
चलाये २९ तीन बाणों से ध्वजा काटकर पृथ्वीमें गिरादिया
ाणों से तिसके घोड़ों को गिराया ३० पराक्रमी राजाने एक
से तिसके छत्रको काटा दश बाणोंसे उसके सारथिको यमराज
न्दिर भेजा ३१ दशबाणों से उसके दाँतों को गिराया तीस
से दनुजेश्वर के सब अंगों में मारा ३२ जब घोड़ा मर गया
रथ टूटगया तो वह राक्षस बाण और धनुष हाथ में लेकर वेगसे
ा बाण बरसाता हुआ दौड़ा ३३ फिर तलवार और शूल धारण
ैत्य राजापर दौड़ा तब दौड़ते हुये हुण्डकी तलवार ढाल को
ने तीक्ष्ण बाणों से काटडाला तब दुष्टात्मा हुण्ड ने चारोंओर
कर ३४ । ३५ मुद्गर को शीघ्र ग्रहणकर छोड़ा राजा ने वज्र के
न वेगवाले मुद्गरको आते हुये देखा ३६ और दश तीक्ष्ण बाणों

बल तेजसे दिव्य मेघसमूहों को उड़ालेजाताहै वैसेही महाराज ने अत्यन्त तीक्ष्ण श्रेष्ठ बाणोंसे मार २ कर सब मदोत्कट असुरोंको नाशकरदिया ३ यहांतककि उन महात्माकी बाणवृष्टि कोईभी दानव न सहसके कोई तो मरगये कोई घायल हुये व बहुतसे समर छोड़ कर भागखड़ेहुये ४ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि महातेजस्वी महाप्राज्ञ बड़े दानवोंके विनाशनेवाले महाराज नहुषको देख दुष्टात्मा हुण्डने क्रोधकिया ५ व सम्मुख जाकर बोला कि हे आयुपुत्र! रण में खड़ेरहो खड़ेरहो तुमको अभी यमराजके पास भेजदेते हैं ६ तब नहुषजी बोले कि देख हम समरमें स्थित हैं व तुम्हारे मारने के लिये आये हैं हम तुझ पापी दानवको मारडालेंगे ७ यह कह धन्वाले अग्निकी शिखाकेसमान लपलपाते हुये बाण चढ़ाकर छत्र लगाये हुये राजा समर में शोभित हुये ८ व इन्द्र के दिव्य सारथि मातलि से वचन बोले कि आप हमारा रथ हुण्ड के सम्मुख लेचलें ९ जब वीर नहुषजीने ऐसा कहा तो मातलि ने महावायु के वेगके समान अतिशीघ्र चलनेवाले घोड़ों को हांका १० व ऐसे उड़े कि जैसे आकाश में हंसउड़ते हैं व चन्द्रमा के रङ्ग के छत्र पताकासहित उस रथपर चढ़े ११ राजानहुष ऐसे शोभितहुये जैसे आकाश में सूर्य्य शोभित होतेहैं ऐसेही तेजसे व विक्रमसे आयुके पुत्र रणमें शोभित हुये १२ व उधर हुण्डभी अपने रथपर चढ़ाहुआ व अपने तेजसे विराजमान सब आयुध धारण किये वीरव्रत में स्थित हुआ १३ व दोनों वीरोंका दारुण भयङ्कर युद्ध होने लगा जिससे कि देवताओं कोभी विस्मयहुआ हे महाप्राज्ञ! तब अतितीक्ष्ण कङ्कपत्र लगेहुये बाणोंसे हुण्डने नहुषराजा की छातीमें ताड़ित किया १४। १५ और पांच बाण नहुष के मस्तक में मारे तब बाणोंसे विद्धराजा क्रुद्धहुआ व उस समय बाणोंके लगनेसे अधिक शोभितहुआ १६ जैसे अपने किरणों से अरुणसहित उदयहुये सूर्य्य शोभित होते हैं ऊपर से रुधिर की धारा बहरही थी व सुवर्ण की फोंकवाले बाण देह में घुस गये थे १७ इससे सूर्य्य के समान राजा भूमिपर शोभित हुये और तिसके पौरुष को देखकर दानव ने बोले १८ हे दैत्य!

ती हो तो हमभी गुरुजीके कथनानुसार जब मुहूर्त्त आवेगा तब
हारे पतिहोंगे ४ हे भामिनि ! अब इस रम्भाके साथ हम तुम
ोचलें यह कह उसको व मनोरमा रम्भाको रथपर चढ़ाकर ५
ो श्रेष्ठ रथकी द्वारा वशिष्ठजीके आश्रमपरको अतिशीघ्रता से म-
यशस्वी नहुष वीर चलेगये ६ वहां पहुँच वशिष्ठजी को स्थान
देखकर प्रणाम करके स्त्री के साथ महातेजस्वी राजा बड़े आनं-
से युक्तहुये ७ व मुनिराजके आगे उसयुद्धमें जो २ वृत्तान्त हुये
जैसे कि उस दानवाधमको मारा सब समाचार महात्मा वशिष्ठ
निसे कहे ८ वशिष्ठजीने भी नहुषके वृत्तान्त सुनकर अतिहर्षितहो
जाको बहुतसी आशिषें दीं ९ व जब शुभ तिथि और लग्न आई तब
नेराजने उनदोनोंका विवाह अग्नि व ब्राह्मणोंकेसम्मुखकराया १०
बहुतसे आशीर्व्वाद देकर स्त्रीसहित राजा नहुष से कहा कि
महामतेराजन्! अब तुम शीघ्रतासे जाकर अपनी माता व पिता को
वो ११ हे सुव्रत! तुम दोनों को देखकर तुम्हारी माता व पिता ब-
त हर्षित होंगे जैसे कि पूर्णमासी के चन्द्रमा को देखकर समुद्र
ड़े हर्षसे प्रसन्न होता है १२ इसप्रकार ब्रह्माजी के पुत्र वशिष्ठमुनि
उन दोनों को भेजा व मुनि के प्रणामकर रथपर चढ़के सारथि स-
त दोनों गये १३ जब इसप्रकार पिता माताके देखनेको अपनी
ोसमेत नहुषचले १४ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि इतने में दे-
ताओंने मेनकानाम अप्सराको भेजा तो मेनका सारेदुःखसे व्याकुल
जा आयुकी स्त्री को शोकके समुद्रमें गिरीहुई १५ महाभागा देवी
न्दुमती रानी से बोली कि हे महाभागे ! अब शोक को छोड़ो व
तोहू समेत अपने पुत्र को देखो १६ कि तुम्हारे पुत्रके हरलेजाने
ले पापी दानव को मारकर वीर श्री से युक्त सभामें आया हुआहै
७ फिर मेनिकाने तिस इन्दुमतीसे नहुषने हुण्डके संग्राममें जैसा वृ-
ान्त कियाथा सब निवेदित किया १८ मेनिकाके वचन सुनकर बड़े
ानन्दसे युक्त रानी मेनिकासे गद्गद समेत वचन बोली कि हे सखि !
म सत्यही कहती हो १९ अमृत समेत अत्यन्त प्रिय मनके उत्साह
रनेवाला कहां है यदि सत्य है तो हम अपने प्राणादिक सब इस

स अपने पराक्रम से शब्दयुक्त मुद्गरको आकाश से गिराया ३
हुण्ड दश खण्ड मुद्गर के पृथ्वी में गिरे देखकर वेगसे गदा
राजापर दौड़ा ३८ फिर राजाने उसके उसी हाथमें एक तीक्ष्ण
रवाला खड्ग ऐसा मारा कि गदा बहूँटासहित उसका वह हाथ
कर अलग पृथ्वीमें गिरा ३९ तब उसने वज्रपात के समान
भारी शब्द किया व रुधिर से सर्व्वांग भीगाहुआ वह रणमें
उधर दौड़नेलगा ४० व बड़े क्रोधसे युक्तहोकर उसने राजाको
ललेना चाहा इससे राजाके सम्मुख दौड़ा ४१ कि महाराजने
महाशक्ति हृदयमें मारी कि उसके लगतेही वह दानव
पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे माराहुआ पर्व्वत गिरे ४२
चौ० जब सो दैत्य गिर्‌यो महिमाहीं। प्राणरहित कुछ संशय
शेष दैत्य भागे चहुँओरा। करत पुकार महारव
सुर गन्धर्व्व सिद्ध मुनि चारण। हर्षित भये असुर हति
नहुषमहात्मा जब त्यहिमारा। सब देवन जयजयति
आशिष दीन देवगण आई। जीवहु भूपति सब सुख
यहसुनिहर्षितभयहुमहीपा। मनमहँविहँस्योसोकुलदीपा ४३

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनो
माहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुषाख्यानेपंचदशाधिकशततमोऽध्यायः ११५

## एकसौसोलहका अध्याय॥

दो० यकसैसोलहवें महें नहुष युवतियुत गेह॥
मुनिआज्ञासोंआयगे त्यहिलखिनृपकियनेह॥

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोला कि हुण्डके मारने
पुण्यरूपिणी तपस्विनी अशोकसुन्दरी अतिहर्षित होकर
आकर नहुष वीरसे बोली कि १ हे वीर मैं आपकी धर्मसे
दिष्टा और तपस्विनी हूं यदि धर्मकी इच्छा करतेहो तो अब
विवाहकरो २ क्योंकि हम सदा से तुम्हारी चिन्ता करतीहुई
हैं हे नृपोत्तम! आपको धर्म्मके प्रसादसे हमने पाया है ३
नहुषजी बोले कि हे भद्रे! जो तुम हमारेही निमित्त बहुत दिन

ती हो तो हमभी गुरुजीके कथनानुसार जब मुहूर्त्त आवेगा तब
हारे पतिहोंगे ४ हे भामिनि ! अब इस रम्भाके साथ हम तुम
ोचलें यह कह उसको व मनोरमा रम्भाको रथपर चढ़ाकर ५
ो श्रेष्ठ रथकी द्वारा वशिष्ठजीके आश्रमपरको अतिशीघ्रता से म-
यशस्वी नहुष वीर चलेगये ६ वहां पहुँच वशिष्ठजी को स्थान
देखकर प्रणाम करके स्त्री के साथ महातेजस्वी राजा बड़े आनं-
से युक्तहुये ७ व मुनिराजके आगे उसयुद्धमें जो २ वृत्तान्त हुये
जैसे कि उस दानवाधमको मारा सब समाचार महात्मा वशिष्ठ
नेसे कहे ८ वशिष्ठजीने भी नहुषके वृत्तान्त सुनकर अतिहर्षितहो
ताको बहुतसी आशिषें दीं ९ व जब शुभ तिथि और लग्न आई तब
नेराजने उनदोनोंका विवाह अग्नि व ब्राह्मणों केसम्मुखकराया १०
बहुतसे आशीर्व्वाद देकर स्त्रीसहित राजा नहुष से कहा कि
महामतेराजन्! अब तुम शीघ्रतासे जाकर अपनी माता व पिता को
ो ११ हे सुव्रत! तुम दोनों को देखकर तुम्हारी माता व पिता ब-
ा हर्षित होंगे जैसे कि पूर्णमासी के चन्द्रमा को देखकर समुद्र
हर्षसे प्रसन्न होता है १२ इसप्रकार ब्रह्माजी के पुत्र वशिष्ठमुनि
उन दोनों को भेजा व मुनि के प्रणामकर रथपर चढ़के सारथि स-
ा दोनों गये १३ जब इसप्रकार पिता माताके देखनेको अपनी
ासमेत नहुषचले १४ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि इतने में दे-
ाओंने मेनकानाम अप्सराको भेजा तो मेनका मारेदुःखसे व्याकुल
ना आयुकी स्त्री को शोकके समुद्रमें गिरीहुई १५ महाभागा देवी
दुमती रानी से बोली कि हे महाभागे ! अब शोक को छोड़ो व
ोहू समेत अपने पुत्र को देखो १६ कि तुम्हारे पुत्रके हरलेजाने
ले पापी दानव को मारकर वीर श्री से युक्त सभामें आया हुआहै
७ फिर मेनिकाने तिस इन्दुमतीसे नहुषने हुण्डके संग्राममें जैसा वृ-
ान्त कियाथा सब निवेदित किया १८ मेनिकाके वचन सुनकर बड़े
ानन्दसे युक्त रानी मेनिकासे गद्गद समेत वचन बोली कि हे सखि !
म सत्यही कहती हो १९ अमृत समेत अत्यन्त प्रिय मनके उत्साह
रनेवाला कहां है यदि सत्य है तो हम अपने प्राणादिक सब इस

प्रियवचनकी न्योछावर करसक्ती हैं २० ऐसा मेनकासे कहकर
मती अपनेपतिसे बोली कि सुनतीहैं महाबाहु तुम्हारापुत्र इसे
आताहै २१ हे महाराज ! यह श्रेष्ठ अप्सरा मेनिका कहतीहै
स्वामी से कहकर अत्यन्त हर्षयुक्त रानी चुपहोरही २२ यह सु
आयुराजा तिसप्रियासे बोले कि हे महाभागे! हमसे यह बात
मुनि पहले कहगयेथे कि २३ हे राजन्! तुम पुत्रकेलिये कभी
न करना तुम्हारा पुत्र अच्छे पराक्रमसे उस दुष्ट हुण्ड दैत्यको
आवेगा २४ सो पहलेका मुनिका कहाहुआ अब सत्यहुआहै
उन मुनिका वचन अन्यथा कैसे होसक्ताथा २५ व इसके
मुनियों में श्रेष्ठ साक्षात् जनार्दनरूप दत्तात्रेयजी की सेवा
हमने व तुमने बहुत दिनोंतक तपसे कीथी २६ तब उन्होंने
केतेजसे युक्त पुत्ररत्न दियाथा कि वह पुत्र पापी दानव को
मारडाले २७ दत्तात्रेयजीने सब दैत्योंका प्रहर्त्ता प्रजाओंका
महाबली वैष्णवअंश धारण करनेवाला उत्तम पुत्र तो हमको
दीथा २८ राजा आयुजीने अपनी इन्दुमती स्त्रीसे ऐसा कहकर
पुत्रके आनेका बड़ाभारी उत्सव किया २९ व बड़े आनन्दसे
कर फिर राजाने विष्णुभगवान् का स्मरण किया जोकि सबपद
सेयुक्त देववर्गसमेत आनन्दरूप एक परमार्थ रूप अच्छे
मनुष्योंके क्लेश नाशनेवाले व सुखदेनेवाले मोक्षरूप ३०।३१॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखंडेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थ
माहात्म्येच्यवनचरित्रेनहुपाख्यानेषोडशाधिकशततमोऽध्यायः ११६॥

## एकसौसत्रहका अध्याय॥

दो० यकसै सत्रहयें महँ नहुष राज्य अभिषेक ॥
तापितुजननीस्वर्गहरिपुरगतिसहितविवेक १

कुञ्जल अपनेपुत्र कपिञ्जलसे बोला कि महाराजकुमार नहुष
पत्नी उस अशोकसुन्दरी भार्या व रम्भानाम अप्सरा समेत
दियेहुये उस श्रेष्ठ दिव्यविमानपर आरूढ़ १ सब शोभायुक्त
नापुरमें पहुँचे जो कि दिव्य मङ्गलयुक्त दिव्यमंदिरों से उपशो

रहाथा २ व सुवर्ण के तोरणसे युक्त और पताकाओंसे अलंकृत
रहाथा व नानाप्रकारके बाजों से व बन्दीगण चारणादिकोंसे शो-
भितथा ३ व देवरूपोंके समान रूपवाले पुण्यकारी मनुष्योंसे उप-
शोभित व दिव्यरूपवती स्त्रियोंसे और गज अश्व रथादिकोंसे भूषित
होरहाथा ४ नानामङ्गलशब्दोंसे व वेदध्वनियों से युक्तथा गीत वा-
दित्रोंके शब्दोंसे व वीणावंशीके सुस्वरोंसे पूरण होरहा था ५ इसीप्र-
कारअन्यसब शोभाओंसेसमाकीर्णउत्तमपुरमें उन्होंने प्रवेशकिया तो
वेदमङ्गल पढ़तेहुये ब्राह्मणोंने पूजा ६ उन वीरने अपने पिता व पुण्य-
रूपिणी माताके दर्शन किये व बड़े हर्ष से युक्तहोकर पिता के चरणों
के प्रणाम किया ७ व फिर श्रेष्ठमुखवाली अशोकसुंदरी ने अपने
श्वशुर श्वश्रूके चरणोंपर बार२गिरकर भक्तिभावसे प्रणाम किया ८
फिर प्रीति दिखाती हुई रम्भा ने भी रानी राजा दोनों के प्रणाम
किया इसप्रकार जब प्रणाम करचुके तो नहुष महाराजकुमार ने अ-
पने गुरु ९ व माता पितासे कुशल पूँछी तब राजा आयु आनन्दकी
पुलकावली समेत आंसु छोड़तेहुये बोले कि १० अब सब व्याधि
नष्ट हुये व शोक दुःख दोनों जातेरहे हे पुत्र ! तुम्हारे देखनेसे अ-
च्छी प्रसन्नतासे सब जगत् आनन्दमय है ११ व तुम महापराक्रमी
के उत्पन्न होने से हम कृतार्थ हुये क्योंकि अपने वंशका उद्धारकर
हमको तुमने उद्धार किया १२ फिर उनकी माता इन्दुमती बोली
कि हे महाभाग ! हे तात ! जैसे पूर्णमासी के चन्द्रमाके तेजको देख
कर समुद्र बढ़ता है ऐसेही तुम्हारे देखने से हम १३ बढ़ी हैं व बड़े
आनन्द से समाकुल होकर हर्षको प्राप्तहुई हैं हे महाप्राज्ञ ! हे मान
के देनेवाले ! तुम्हारे दर्शन से हम धन्य हुईं १४ इसप्रकार पुत्र से
कहकर फिर छाती से लपटाकर शिरसूँघा जैसे कि बाहरसे आकर
धेनु अपने बछड़े को सूँघती है १५ देवरूपी नहुषनाम पुत्रकोपाकर
अत्यानन्द युक्तहो पुण्यकारिणी इन्दुमती देवी ने बहुतसी आशिषों
से पुत्रको युक्तकिया १६ सूतजी शौनकादिकों से बोले कि तब नहुष
ने अपनी पुण्यवती माता देवी इन्दुमती से अपने सब वृत्तान्त
जिसप्रकार दैत्य उठा लेगया था १७ व अपनी भार्य्या की उत्पत्ति

व प्राप्ति व जैसे फिर हुण्ड से युद्ध हुआ व जैसे हुण्डको मारा
सब संक्षेप रीति से कह सुनाया व जिसके सुनने से माता पिता
परमानन्द हुआ १९ व माता पिताभी अपने पुत्रका विक्रम
कर बड़े हर्षितहो आनन्दसे पूर्णमन होगये २० फिर इन्द्रके
से धनुष्ले नहुषने देश सहित सप्तद्वीपवती सब पृथ्वी को जीता
२१ सब धन धान्य से पूर्ण पृथ्वी अपने पिताके समर्पण करके
दान पुण्यादि सुकर्म्मोंसे नित्य पिताको हर्षित कराते हुये नहुषने
२२ अपने पितासे राजसूयादि नानाप्रकारके यज्ञ कराये महा
दानों व्रतों नियमों संयमों २३ अच्छे दानों यज्ञ व पुण्यों से
एददायक अन्य महोदय वाले यज्ञों से पिता माता को पूर्ण किया
२४ फिर देवगणों ने उत्तम हस्तिनापुरमें आकर वीरमर्दन महा
नहुषजी का अभिषेक अपने हाथों से किया २५ व मुनियों
व राजा आयुसे भी अभिषेक करवाया अशोकसुन्दरीसमेत नहुष
का राज्यसिंहासन पर अभिषेक कराके २६ फिर राजा आयु महा
यशस्वी धर्मात्मा अपनी भार्य्यासमेत स्वर्ग को चलेगये व उन
देवताओं सिद्धोंने बड़ी वहां पूजाकी २७ कुछ दिन इन्द्रलोकमें
कर उसे छोड़कर राजाआयु ब्रह्मलोकको गये फिर मुनियों व देव
पूजित होतेहुये राजा वहांसे शिवलोक को गये २८ अपने कर्म
व अपने पुत्रके तेज पुण्यसे महाराज विष्णुलोकमें वसते भये
व हे महाभाग! पुण्यकर्म करनेवाले पुरुषोंको ऐसेही उत्तम पुण्य
करने चाहियें अन्य शोक देनेवाले कर्म्मोंके करनेसे क्या है ३०
नहुष धर्मात्मा अपने पितृके तारक हुये क्योंकि ज्ञान से
नहुष अपने सब कुलके धर्त्ता हुये ३१ यह हमने नहुष का सब
तुमसे कहा हे पुत्र कपिञ्जल! कहो अब और तुमसे क्या कहें ३२

चौपैया॥ इमि नहुषचरित्रं परमविचित्रं जो नर सुनै सुनावै।
सोसब सुखभोगै रहै निरोगै निज वाञ्छितफलपावै॥
पुनि सुरपुर जावै अतिहर्षावै तायश किन्नर गावैं।
देवन मनभावै सदा सुहावै तिन्हें सुमतसमझावै ३३

इति श्रीपद्मपुराणे भूमिखण्डे ... एकादशाधिकशततमोऽध्यायः॥

# एकसौअठारहका अध्याय ॥

दो० यकसै अठरहयें महँ कह विहुण्डकी गाथ ॥
जोमाया हरिरूपलखि मोहित भयहु अकाथ १

कपिञ्जलने अपनेपिता कुञ्जलसे प्रश्नकिया कि हे तात ! प्रथम गङ्गामुखके समीप एक श्रेष्ठस्त्री रोदन करतीथी उस के दोनों नेत्रों से आंसुओंके बिन्दु गङ्गाजल में गिरते १ व गङ्गाजलके मध्य गिरतेही कमलहोते थे उन कमलों में बहुत दिव्य रूप व सुगन्धित बहुत पुष्प फुलातेथे २ सो हे तात ! हे महाभाग ! तिसके सुन्दर नेत्रों से निर्मल आंसुओं के बिन्दु गङ्गाजलमें किसलिये गिरते ३ उनको केवल जिसके शरीरमें हड्डी व चमड़ाही रहगयाथा जटा चीर धारण किये वह एक पुरुष तोड़ाकरताथा ४ व सुवर्णमय उन दिव्य पुष्पों से शिवकी पूजा करताथा हे महामते ! वह नारी कौनथी व पुरुष कौनथा ५ महादेवकी पूजाकरके फिर पीछेको वह रोदन क्यों करता जो हम प्रिय सुतहों तो यह सब हमसे कहो ६ तब कुञ्जल बोला कि हे वत्स ! सुनो देवनिर्म्मित वृत्तान्त हम तुम से कहेंगे यह सब पापनाशन चरित्र महात्मा विष्णु भगवान् का है ७ जिस महावीर्य हुण्ड दैत्य को राजा नहुष ने समर में माराथा उसके पुत्रका विहुण्ड नाम हुआ वह तप करने लगा ८ जब उसने सुना कि मन्त्री और सेना समेत हमारे पिता को वीर बलवान् आयुके पुत्र नहुषने रणमें मारडाला ९ तो उसने क्रोधसे बड़ा तप किया व तप करने से उस दुष्टका पौरुष बहुत बढ़ा फिर वह देवताओं के मारने में उद्यतहुआ १० सब देवता रणमें उसको दुःसह जानते भये यहांतक कि हुण्ड का पुत्र विहुण्ड तीनोंलोकों के मारने में उद्यत हुआ ११ व पिता के वैरका पलटा लेने के लिये हम देवताओं मनुष्यों को मारडालेंगे इसप्रकार समुद्यत होकर वह पापी देवताओं ब्राह्मणों का कण्टक हुआ १२ वह उपद्रव व प्रजाओंको पीड़ादेता तब इन्द्रादि सब देवगण तिसके तेजसे जलते भये १३ देवदेव महात्मा श्रीविष्णु भगवान् के शरणको गये जोकि देवदेव जगन्नाथ शंख चक्र गदाधारी

हैं १४ उनसे देवता कहतेभये कि विहुण्डके महाभयसे हमारी नित्य रक्षाकरो श्रीविष्णु बोले कि हे देवगणो! सुखसे तुम्हारी बढ़तीहो देवताओं के कण्टक पापी विहुण्डको हम मारेंगे इसप्रकार उन देवताओं से कहकर फिर माया करके श्रीहरि महायशस्वी १६ आप अपना मायामय सुरूप बनाकर एक दिव्य रूपकी गुणयुक्त बनकर नन्दनवनमें जापहुँचे १७ कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जलसे बोला कि देवताओंके वधके लिये विहुण्ड दिव्यमार्गको गया व नन्दनवन के समीप उसने माया देखा व देखतेही वह दैत्य उससे ऐसा मोहित हुआ कि कामबाणों से पीड़ित होकर २० उस कालरूप श्रेष्ठ स्त्री को अपना नाश न जाना व रूप लावण्यसमेत नवीन सुवर्ण के समान स्त्री को देखकर २१ पापात्मा विहुण्ड कामातुर होकर श्रेष्ठ स्त्रीसे बोला कि हे वरारोहे! तुम कौन हो किसकी हो जो हमारे चित्तको मथतीहो २२ हे वरानने! हमको सङ्गमसे हमारी रक्षाकरो रक्षाकरो हे देवेशि! जब हमारा सङ्गम करोगी तो जिस२ कामकी इससमय इच्छा करोगी २३ वह सब हम तुमको देंगे चाहे देवता दैत्योंको भी दुर्लभ क्यों न हो तब वह मायामयी स्त्री बोली कि हे दानव! जो हमारे सङ्ग भोग किया चाहतेहो तो यह कामभाग हमको दो २४ किरोड़ कामोदके दिव्य सुगन्धित देवोंके दुर्लभ पुष्पोंसे महादेवकी पूजाकरो २५ उन सुगन्धित पुष्पोंकी माला बनाकर फिर आकर हमारे गले में अपने हाथोंसे पहिनाओ हे महाभाग यही भाग हमको देओ २६ तब हम तुम्हारी सुप्रिया भार्य्या होंगी इस में कुछ संशय नहीं है तब विहुण्डने कहा हे देवि! ऐसाही करेंगे वैसे पुष्पोंकी माला तुमको देंगे २७ ऐसा कहकर वह दानवेश्वर सब पुष्पकारी दिव्य वनों में घूमनेलगा काम बाणसे व्याकुल वह वृक्ष उसने कहीं न देखा २८ जहां कहीं जाय पूँछे कि कामोद का वृक्ष कहां है तब सब महाजन कहैं कि कामोद नाम वृक्ष तो नहीं है २९ इस प्रकार कामबाणों से पीड़ित वह दुरात्मा सबसे पूँछते २ एकदिन जाकर बड़ी भक्तिसे मस्तक झुकाकर भार्गवमुनिसे पूछा ३० कि सुन्दर पुष्पयुक्त कामोदकनाम वृक्ष हमसे बतावें तब शुक्राचार्यजी

बोले कि हे दानव! कामोद वृक्ष तो नहीं है पर स्त्रीहै ३१ जब वह हर्षित होकर किसी प्रसंगसे हँसती है तब हे दैत्य! उसके हास्य करने से श्रेष्ठ सुगन्धित दिव्य हृदय को प्रिय सुगन्ध युक्त पीले पुष्प उत्पन्न होते हैं इससें सन्देह नहीं है ३२। ३३ उनमेंसे जो कोई एकपुष्प से भी महादेवजीको पूजन करताहै उसका वाञ्छित महादेवजी पूर्ण करते हैं ३४ हे दैत्य! उस स्त्रीके रोदन करनेसेभी होते हैं इसमें सन्देह नहीं है तैसेही लोहित बहुत पुष्प होते हैं ३५ ना सौरभके हे दैत्य! तिन पुष्पों को न छुवै जब ऐसा शुक्राचार्य्य ा वचन विहुण्डने सुना ३६ तो फिर उनसे बोला कि शुक्रजी ामोदा नाम स्त्री कहांहै शुक्र बोले कि महापातक नाशनेवाले महा- ाय गङ्गाद्वारपर ३७ कामोदाख्यपुर है वह विश्वकर्म्माका बनाया ाहै उसी पुरमें दिव्य भोगों से शोभित ३८ आभरणों से शोभित ब देवों से पूजित कामोदा नारी रहती है उसकी पूजा जाकर तुम रो सो इस रीतिसे कि जैसा करने से वह श्रेष्ठ अप्सरा हँसे वही ुण्यकारी उपायकरो ॥

ो० इमिकहियोगिराजभार्ग्गवमुनि । कीनविरामकामअपनोपुनि ॥ रनलगे करिमानसपावन । जो सबभांतिसुहावनगावन ३९।४१

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे च्यवनचरित्रेकामोदाख्यानेऽष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ११८॥

## एकसौउन्नीसका अध्याय ॥

दो० यकसैउन्निस महँ कह्यो जिमि विहुण्डकी दौष्ट्य ॥
लखिहरियुवतीह्लैविधिज कहँतहँ पठव सपौष्ट्य १

कपिञ्जलने अपने पिता कुञ्जलसे पूछा कि हे तात! जिसके हँसने से दिव्य गन्धयुक्त व सुरासुरों को भी दुर्लभ सुहृद्य पुष्प उत्पन्न होते हैं १ हेमहामते! उन पुष्पों को सब देवगण वाञ्छाकरते महा- देवजी हास्य के पुष्पों से पूजित सुखको प्राप्त होते हैं २ उस पुष्प का क्या गुणहै हमसे विस्तारसहित कहो व कामोदा कौनहै व वह वरांगना किसकी पुत्री है ३ हेमहाभाग! उसके हँसने से सुन्दर पुष्प

क्यों होते हैं व उन पुष्पों में कौनसा गुणहै यह सब कथा हमसे विस्तारपूर्वक कहो ४ कुञ्जल बोला कि जब देवताओं व महादैत्यों ने उद्यत होकर बड़ी उत्तम मित्रताकरके अमृतके लिये क्षीरसागरको मथा ५ तब उन सुरासुरों के मथने से क्षीरसागरसे अतिदिव्य चार कन्या निकलीं उन कन्याओंको प्रथम वरुणने दिखाया फिर चन्द्रमा ने दिखाया ६ फिर कलशमें भराहुआ पुण्यकारी अमृत निकला वे चारों कन्या देवोंकेही हितकी इच्छा करती भई ७ उनमें एकका लक्ष्मीनाम था दूसरी का वारुणी तीसरी का ज्येष्ठा व चौथीका कामोदा नामहुआ ८ हे महामते! उनके मध्यमें पहले उत्पन्न हुई वह श्रेष्ठ ज्येष्ठाहुई क्योंकि उसमें सबसे अधिक गुण थे इससे उस ज्येष्ठा की पूजा सदा हुआ करती है ९ व क्षीरसागरसे निकलेहुये पय के फेनेसे वारुणीनाम कन्या हुई व अमृतकी लहरी से कामोदा हुई १० लक्ष्मी व चन्द्रमा ये दोनों अमृतही से उत्पन्न हुये हैं चन्द्रमा तीनों लोकों के भूषणहुये मुख्यकर शिवजी के तो प्रियहुये ११ व ज्येष्ठा मृत्युरोग हरनेवाली हुई तैसेही देवों को वारुणीहुई और कल्याणकी इच्छा करनेवाले मनुष्योंको अत्यन्त पुण्यदेनेवाली हुई १२ व जो अमृतसे पुण्यदेनेवाली कामोदा नाम देवी उत्पन्न हुई उसने श्रीविष्णुही की प्रीतिके लिये वृक्षरूप धारण किया १३ व सदैव विष्णुके प्रीति करनेवाली होगी वही पुण्यकारिणी कामोदा तुलसीहोगी इसमेंसन्देहनहीं है १४तिसके साथ जगन्नाथजी रमण करेंगे इस में भी संशय नहीं है जो तुलसी का एक पत्र श्रीहरि को चढ़ावेगा १५ श्रीभगवान् उसका उपकार मानेंगे कि हम इसके बदले में इसे क्यादें ऐसा नित्य चिन्तवन करते २ फिर उसकी प्रीति करने लगेंगे १६ सो इसप्रकार पूर्व्वकालमें कामोदा समुद्र से उत्पन्न हुई जब वह कभी हर्षसे गद्गदवचन कहतीहुई हँसतीहै १७ तब उसके मुखसे सुगन्धित दिव्य पुष्प निकलने लगते हैं व कभी सुन्दर फूल सूखते नहीं जो कोई उद्यत होकर उनफूलोंको ग्रहणकरता १८ और उनसे शङ्करदेव ब्रह्मा वा श्रीविष्णु की पूजा करताहै उसके ऊपर तीनों देव प्रसन्नहोते हैं व जो कुछ वह मांगताहै उसको देते हैं

व जब किसी दुःख से दुःखित जब यह रोती है तो उसके नेत्रों से जलकी धारा बहती है उससेभी वैसेही दिव्यपुष्प बहुत उत्पन्नहोते हैं वे सुगन्धहीन होते हैं उनसे जो महादेवजी को पूजता है २० । २१ उसको दुःख व सन्ताप होते हैं इसमें सन्देह नहीं है जो पाप-बुद्धि सुगन्धहीन उन पुष्पों से एक बार भी देवोंको पूजताहै २२ तो देवता उसको दुःख करतेहैं इसमें सन्देह नहीं है हे पुत्र ! यह तुम से हमने सब कामोदा के जन्मकी उत्तम कथा कही २३ यही चिन्तना करके श्रीविष्णु भगवान्जीने पापी विहुण्डका विक्रम साहस व उद्यम देखकर २४ श्रीनारदमुनिको उसके समीप भेजा कि तुम जाकर उसदुष्ट विहुण्डको मोहितकरो फिर महात्मा श्रीविष्णुजी के वचन सुनकर नारदजी २५ चले व कामोदा के समीपको जाते हुये उस दुष्टात्मा विहुण्ड के पास पहुँचे व हँसतेही से उस दुष्ट दैत्येन्द्रसे बोले २६ कि हे दैत्येन्द्र ! अतिआतुरहोकर बड़ी शीघ्रता से कहांको जाते हो व इस समय किस कार्य्यके लिये और किसके भेजेहुये जातेहो २७ तब वह नारदजी के नमस्कारकर हाथ जोड़कर बोला कि हे द्विजसत्तम ! हम कामोद पुष्पकेलिये जाते हैं २८ तब धर्म्मात्मा नारदजीने उससे कहा कि उन पुष्पों से तुम्हारा कौन प्रयोजन है तब उसने विप्रवर्य्य नारदजी से अपने कार्य्यका कारण कहा २९ कि नन्दनवनमें एक अतिश्रेष्ठ स्त्रीहै उसके दर्शनमात्र से हम कामके वशीभूत होगये ३० हे विप्रश्रेष्ठ ! उसने हमसे कहा कि कामोदा से उत्पन्न पुष्पों से महादेवजी की पूजाकरो सो सात किड़ोर पुष्पों से ३१ तब हम तुम्हारी प्रियाहोंगी इसमें सन्देह नहीं है सो हम उन्हीं पुष्पोंके लिये अब कामोदपुरको जाते हैं ३२ व समुद्र से उत्पन्न उस कामोदाको हम लेआवेंगे सो उसके मन को ऐसा उल्लासित करेंगे और महाहासों से फिर हँसावेंगे ३३ वह महाप्रसन्न होगी तो बारबार हँसेगी हे विप्र ! उसका गद्गद हास्य हमारा कार्य बढ़ावेगा ३४ तिससे कि वह अपने हास्यसे दिव्य पुष्प गिरावेगी उन से इसी समय शिवकी पूजा करेंगे ३५ वे पूजा के देने से सन्तुष्ट होकर उसका फल हमको देंगे क्योंकि महादेवजी सब प्राणियों के

स्वामी व कल्याणकर्त्ता लोकभावन हैं ३६ यह सुनकर नारदजी बोले कि हे दैत्य! तुम कामोदनाम उत्तम पुरको कभी न जाना क्योंकि वहां सब दैत्यों के नाशक अत्यन्त बुद्धिमान् विष्णुजी रहते हैं ३७ हे दानव! जिस उपायसे कामोद नाम पुष्प तुम्हारे हाथ लगेंगे वह उपाय हम तुमसे कहते हैं ३८ गङ्गाके जलमें वे दिव्य पुष्प गिरते हैं इसमें सन्देह नहीं है वे पुष्प जलों में बहते हुये इस समय यहां आवेंगे ३९ उन दिव्य बहुतसे पुष्पोंको लेकर तुम अपना मनोवाञ्छित साधन करना ४० यह दानव श्रेष्ठसे कहकर फिर मोहितकर धर्म्मात्मा नारदजी ने चिन्तनाकी ४१ कि अब वह कामोदा कैसे रोदन करे किसदुःखसे दुःखितहो इस विषयमें एक क्षणभर विचारकर ४२ फिर बुद्धिसे समझकर आप कामोदनामपुरको चलेगये ४३॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे च्यवनचरित्रेकामोदाख्यानेएकोनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ११९॥

# एकसौबीसका अध्याय॥

दो० यकसै बीस अध्यायमहँ कामोदा सों भाष॥
नारदमुनि पैत्तिक प्रमुख स्वप्न सकलसहसाष १

कुञ्जल अपने पुत्र कपिञ्जल से बोले कि नारदजी सब कामोंसे समृद्ध व देवताओं से समाकुल दिव्य कामोदाख्यपुर देखतेभये १ व द्विजोत्तमजी कामोदाके घरमें प्रविष्टहुये व सब कामों से समाकुल कामोदा को देखकर २ उससे अर्घ्य पाद्याचमनीय व स्वागतादि सुवाक्योंसे पूजितहुये फिर दिव्य आसनपर बैठकर उस स्त्रीसे बोले कि हे विष्णु तेजसे उत्पन्न कल्याणयुक्तवाली! सुखसे तो रहती है तुम्हारा अनामय तो है ऐसा कहकर बहुतसे आशीर्व्वाद दिये ४ तब कामोदा देवर्षिजी से बोली कि तुम्हारे व श्रीविष्णुभगवान् के प्रसाद से हम सुखसे हैं हे महाभाग! प्रश्नोत्तर का कारण हमसे कहिये ५ हे मुनिपुङ्गव! हमारे अंगमें महामोह उत्पन्नहुआहै कि हमारा मनि... नाशकरताहै वह सब लोगों मेंभी व्याप्तरहताहै ६ उसी महामोहके कारण हमको निद्रा आरही है जैसे मनुष्यादिकोंको आतीहै हे मुनि

ती ! आज हम सोगईं थीं तब हमने एक दारुण स्वप्न देखा ७ कि
केसी ने आकर हमसे यह कहा कि ये अव्यक्त हृषीकेश भगवान् सं-
सारको जावेंगे ८ तबसे हम बड़े दुःखसे दुःखितहैं आप ज्ञानवानों
में श्रेष्ठ हैं इसका कारण हमसे कहें ९ नारदजी बोले कि हे भद्रे !
मनुष्यों में वात पित्त कफ और सन्निपातसे उत्पन्न स्वप्न सदा हुआ
करते हैं इसमें संदेह नहीं है १० परन्तु देवताओं में ये स्वप्न कभी
नहीं होते सो हे सुन्दरि ! जो उत्तम स्वप्न सूर्य्योदय के समयमें दि-
खाईदेताहै ११ वह अच्छा स्वप्न मनुष्योंको पुण्य फलदायक होताहै
हे शुभे! अब औरभी स्वप्नका कारण तुमसे कहते हैं १२ हे वरानने!
जब प्रचण्ड पवन चलताहै तो उससे सब जल चलायमान होते हैं
उनसे सूक्ष्म जलकण निकलने लगते हैं १३ वे निर्मल जलकण
बाहर निकलकर जापड़ते हैं व फिर आकर उन्हीं जलोंमें लीन हो-
जाते हैं इससे कभी दृश्य कभी अदृश्य होजाते हैं १४ ऐसेही स्वप्न
का भावहै सो कहते हैं हे भामिनि ! सुनो यह आत्मा शुद्ध और विरक्त
है इससे राग दोषों से विवर्जित रहताहै १५ व यह शरीर पृथ्वी
जल अग्नि पवन आकाश पांच तत्त्वों से बनाहै इससे छब्बीस त-
त्त्वों के बीचमें यह रहताहै १६ यह शुद्धात्मा केवल नित्य है पर
प्रकृति केसाथ इसका सङ्गम होजाताहै उसी प्रकृतिके वायुरूप भावों
से प्रेरितहोकर स्थानसे जब इधर उधर चलायमान होने लगताहै
१७ तब वह आत्मा तेजके संग प्रचलित होनेलगता है वास्तव में
इस अन्तरात्मा का शुभनामहै जैसे पवनके प्रसङ्गसे जल में जल-
कण उठनेलगते हैं फिर फेना निकलने लगताहै ऐसेही प्रकृत्यादिकों
के संयोगसे यह आत्मा कभी कभी चलायमान होताहै १८ । १९
नहीं तो यही आत्मा पृथ्वी है यही वायु यही आकाश यही तेज
यही जल ये पांचों पहले कियेगये हैं २० ये आत्माके तेजसे संयुक्त
होने के कारण पञ्च महाभूत कहाते हैं व उसीके संगको पाकर फिर
ये पांचो एक होजाते हैं २१ तब आत्माके साथ पांचो ऐसे मिल
जाते हैं कि दिखाई भी नहींदेते कि कहां हैं हे वरानने ! फिर इसीप्रकार
बार २ अपने निमित्तकी इच्छा किया करते हैं २२ व इन्हीं सबोंकी

क्रीड़ा के रूपसे यह सब सृष्टि होतीहै जैसे जलमें तरङ्ग उठतेहैं फि
उसीमें लीन होजाते हैं २३ ऐसेही इन पांच महाभूतों से सृष्टि होत
है फिर उन्हीं में लीन होजाती है जैसे जलका व तरंगका दृष्टान्त
वैसाही सृष्टिकारूपहै इसमें संदेह नहीं है २४ हे देवि! आत्मा तेज
पृथ्वी आकाश जल ये नाश नहीं होते हैं २५ सो हे भद्रे! आत्मा
साथ तो ये पृथिव्यादि पञ्चमहाभूत नित्यहैं इसमें संशय नहीं
२६ केवल इनके इकट्ठे होने से जो पिण्ड बनजाताहै उसीका ना
होताहै व इनके विषयों का नाश राग द्वेषादिकों से होजाता है
तब सब वे प्रलयको प्राप्त होजाते हैं व पिण्डीभूत वह शरीरभी ना
होजाताहै व इन पञ्च महाभूतों में पिण्डके नाशहोनेपर भी अन्त
रात्मा सदा प्रकाशित रहताहै २८ जैसे अग्नि जब प्रज्वलित होत
है तब उससे चिनगारियां निकलती हैं ऐसेही इनके संग आत्म
प्रकाशको प्राप्त होताहै कभी दृश्य कभी अदृश्य रहताहै २९ पर
वह शुद्धात्मा परब्रह्म नित्य सदैव जागताहै अंतरात्मा प्रकृति
महागुणों से बँधाहै ३० अन्नके आहार से पुष्टों से अंतरात्मा सुख
प्राप्त होताहै तिससे मनमोहित होजाताहै ३१ पीछे से तामसी
बढ़ानेवाली निद्रा उत्पन्न होती है सो जबतक सूर्य्य सुमेरु पर्वत
उस पार जाकर उदय नहीं होते तबतक हे वरानने! यह आत्म
विषयान्धकारों से घिरारहता है अर्थात् तबतक रात्रिहोती है
३३ व तबतक पञ्च तत्त्वों से प्रतोषित आत्मा योगनिद्राको ग्रहण
करके आनन्द करता है व पूर्व्वजन्मके स्थित पिण्डमें निशावसान
फिर आत्मा प्राप्त होताहै ३४ व वह आत्मा फिर ऊँचे नीचे पिण्ड
प्रवेश करता है व आत्मा संसारमें दोषोंसे बँधा प्राप्त होताहै
जीवात्मा देहकी रचाकरता पीछे मध्य में प्राप्त होकर स्थित होत
जब उदानवायु स्फुरित होताहै तो उससे शब्द उत्पन्नहोता है
जैसे सूखी धौंकनी वायु से पूरित श्वास करती है तैसेही शब्दक
से उदान बलसे श्वासकरताहै ३७ व आत्माकेही प्रभावसे जब
होताहै तब उदान पवन बलवान् होताहै व इसीप्रकार शरीर
प्राप्त होताहै मृतकके समान होजाताहै ३८ तब इसको मह

द्रा आजाती है वह हृदय कण्ठ मुख नासिकामें स्थितहोताहै ३९
और बाहुको संकुचित करादेता है व नाभिमण्डलमें हृदय में स्थित
ताहै तब आत्माके प्रभावसे उदान नाम पवन ४० महातील उत्पन्न
ताहै इससे वह जाकर बलको रोंकदेताहै जैसे काठका कील रस्सी
बांधने से दृढ़ होजाताहै ४१ ऐसेही आत्माकी प्रेरणासे बद्धहोकर
ाणवायु दृढ़होता है इसमें सन्देह नहीं है हे शुभानने! अन्तरात्मा
प्रसकप्राणवायुहै ४२ व हे भद्रे! इसप्रकार महानिद्रा अर्थात्
रणके पीछे अन्तरात्मा फिर अपने दूसरे शरीरमें प्रवेश करताहै
पूर्व्वजन्मका स्मरण करताहुआ उस शरीर में इधर उधर दौड़ता
हता है ४३ व वहां रहकर वह महाप्राज्ञ अपनी इच्छा से रमताहै
इसीप्रकार नानाप्रकार के स्वप्न अन्तरात्मा देखा करता है ४४
कर्म्म से युक्त उत्तम व अपने विरुद्ध स्वप्न देखताहै ऊँचे नीचे नाना
प्रकार के पर्व्वत दुर्ग्गमस्थान देखताहै ४५ सो वातसे जानो यह
कफकीनाई है तिसको कहते हैं जल नदी तड़ाग और जलके स्थान
४६ अग्नि उत्तम बहुत सुवर्णको स्वप्न में देखताहै ये सब पित्तके
कारण स्वप्न देखताहै अब माठ्यको कहते हैं ४७ व हे वरारोहे!
जो स्वप्न प्रभात समय प्राणी अच्छा वा बुरा देखताहै वह लाभ
अलाभका दायक अपने फलके अनुसार होता है ४८ ॥
चौ० इमिपैत्तिकसबस्वप्नबखाने । जिनकर फलनाहिं होत प्रमाने ॥
वातजहू नहिं सफल कदापी । होतस्वप्न नहिं मृषा अलापी ॥
विष्णुप्रसाद पाय सबसपना । सफल होत देवत फलअपना ॥
तुम देखा दुस्स्वप्न करारी । हरिप्रसाद होइहि फलकारी ४९ । ५०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थे
माहात्म्येच्यवनचरित्रेकामोदाख्यानेविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२० ॥

## एकसौइक्कीसका अध्याय ॥

दो० यकसै इक्कीसयें महँ देवी मायारूप ॥
धरिमारोसुविहुण्डकहँ कहास्वमतिअनुरूप १
नारदजी के वचन सुनकर कामोदा बोली कि जिस परमेश्वरका

अन्त सब देवगण नहीं जानते व न जिसका रूप जानते हैं व जि-
में यह सब संसार लीन रहताहै वही आत्मा कहाताहै १ व हेनारद
सुनो जिसकी मायाका प्रपञ्च यह सब संसारहै वह हमारा स्वामी
जगत्पति संसारको कैसे प्राप्तहोताहै २ व मनुष्य पाप पुण्य कर्मों
से बँधा रहताहै फिर हे विप्र! श्रीहरि संसार में क्यों प्राप्तहोते हैं
इसका कारण हमसे कहो ३ नारदजी बोले कि हे देवि! सुनो श्रीहरि
जिस कारण इस संसार में जन्म लेते हैं उसका हेतु तुमसे कहते हैं
आगेकी बातहै कि भृगुमुनि यज्ञकरनेलगे तब श्रीहरिने प्रतिज्ञा की
कि हम यज्ञकी रक्षाकरेंगे ४ जब भृगु यज्ञ करनेलगे तो उसी बीच में
देवताओं दैत्योंका संग्राम होनेलगा तब इन्द्रकी रक्षाके लिये श्रीहरि
भृगु के यज्ञकी रक्षा छोड़कर चलेगये ५ जब श्रीहरि चलेगये तो
पापी दानवोंने आकर भृगुमुनि के यज्ञका विध्वंस करडाला ६ तब
श्रीहरिको योगीन्द्र भृगुजीने शाप दिया कि अच्छा हमारे शाप से
मलिनहोकर मर्त्यलोकमें तुम दश बार अवतार लेवो ७ बस तब से
जन्मलेकर श्रीजनार्दनजी अपने कर्म्मों का फल भोगते हैं सो हे
देवि! यह तो हमने तुमसे कहा हमको उन्हीं श्रीहरिने तुम्हारे लि-
लित्त यहांको भेजाहै ८ इतना कहकर नारदजी तो ब्रह्मलोकको चले
गये और श्रीविष्णुभगवान् के दुःखसे कामोदा अतिव्याकुलहोके
९ हाहा कहकर वह बाला करुणापूर्वक बारबार रोदन करनेलगी
रोदनके समय गङ्गाजी के तटपर जलके बनाय समीप बैठीथी १०
दोनों नेत्रोंसे मारे दुःखके आंसु गिराने लगी वे आंसु सब गङ्गाजी
केही जलमें गिरे ११ व जल में जाकर डूबगये हे तात! फिर
वे भी कमलरूप होगये १२ फिर वे आंसु सुन्दर फूलहोकर गङ्गाजी
के जलमें बहनेलगे फिर विष्णुभगवान्की मायासे मोहित उस वि-
हुण्ड दानवने उन पुष्पों को देखा १३ मुनि ने कहाथा कि कामोदा के
पुष्प अभी गङ्गाजलमें बहकर आवेंगे इससे उस दानवने न जाना
कि ये पुष्प दुःखके आंसुओं से उत्पन्नहैं इससे दुःखद व नाशक हैं
आनन्दके आंसुओंसे उत्पन्न नहीं हैं इसलिये बड़े हर्ष से पुलकित
उस दैत्य ने उन फूलों को गङ्गाके भीतर से निकाल लिया १४

उन्हीं फूलों कमलों से गिरिजापति शङ्करजीकी पूजा उसने की विष्णु की मायासे अतिमोहित उसने सात किरोड़ फूलों से महादेवजी को पूजा १५ यह वृत्तान्त देखकर देवीजी अत्यन्त क्रुद्धहोकर महादेव जी से बोलीं कि हे महामते! इस दानवके कर्म्म आपने देखा १६ कि शोक से फूलेहुये पुष्प गङ्गाके जलमें बहतेहुये कामसे आकुलचित्त १७ यह दुष्ट लेआताहै व उन शोक सन्ताप करनेवाले पुष्पोंसे आप की पूजा करता है फिर दुःख देनेवाले शोकसे उत्पन्न उन पुष्पों से पूजा करने से इसका कल्याण कैसे होगा १८ जैसे भावसे हमको पूजा तैसे भावसे इसकी सिद्धि होगी १९ यह कामोदा में मन लगाये है इससे सत्य ध्यानसे विहीन है इससे महापापात्मा है हे देवि! तुम अपने तेजसे इसको मारडालो २० महात्मा शम्भुजी की ऐसी वाक्यसुनकर देवीजी बोलीं कि हे शम्भुजी! तुम्हारी आज्ञासे हम इस दुष्टका नाशकरेंगी २१ ऐसा कहकर फिर देवीजी उस विहुण्डके वध के विषय में चिन्तना करनेलगीं कि कैसे इसका वधकरें २२ फिर सोचकर उन्हों ने महात्मा ब्राह्मणका मायामयरूप बनाया व पारिजात के सुन्दर पुष्पों से शङ्करकी पूजा करनेलगीं २३ तब पापी दानवने आकर उस ब्राह्मणकी कीहुई दिव्य पूजा का नाशकरदिया क्योंकि वह तो काम के मारे व्याकुल था उसका भाव उसी मायामय विष्णुरूप स्त्री में लगाथा २४ व विष्णुजीकी माया से वह दुष्ट मोहितथाही इससे कामबाणों से पीड़ित होकर उस दुष्टने उसी स्त्रीका स्मरण किया २५ व उसके स्मरणमात्रसे बलवान् कन्दर्प से व्याकुलित होगया मदन ने बनाय उस समय उसे पीड़ित किया बार बार रोने लगा २६ इसी से कालके मारेहुये उस दुरात्मा ने उन शोकसे उत्पन्न पुष्पों से शिवजी की पूजाकी २७ व बहुत से पुष्प इकट्ठे किये व दिव्य पुष्पों से जो पूजा वह ब्राह्मणरूप देवी करतीथी उसे तो अत्यन्त लोभसे नष्ट करदिया व आप उन्हीं शोकज पुष्पों से पूजने लगा २८ व शोकज पुष्पों से पूजन करने के कारण उस दुष्ट के नेत्रों से भी आंसुओंकी धारा बहती चलीजातीथी व शिवजी के ऊपर पड़तीथी २९ तब ब्राह्मण का रूप धारण किये हुई देवी

जी उससे बोलीं कि हे महामते ! आप कौनहैं जो इस प्रकारके शो
से युक्तहोकर सदैव शिवजी की पूजा करते हैं ३० व शोकसे उत्प
आंसुओं के बूँद देवताके शिरपर गिरते हैं ये आंसुओं के बिन्दु क
पवित्र हैं इसका कारण हम से कहो ३१ विहुण्ड बोला कि पूर्व
काल में सब सौभाग्य सम्पदासे सब लक्षणयुक्त बड़ा काम शा
एक स्त्री हमने देखी है ३२ उसके मोहसे सन्तप्त होनेके कारण ह
कामसे व्याकुलहैं उस स्त्रीने कहा कि भोगमें हमको उत्तम भाव
३३ कामोदाख्य पुष्पों से शङ्करजीकी पूजाकरो तिनके ऊपरके च
हुये पुष्पों की माला हमारे गले में डालो ३४ सो जब सातकरो
पुष्पों से पूजाकरो बस इसी अर्थ फलदायक शिवकी पूजा करतेहैं
३५ ये कामोद सम्भव पुष्प देवताओं व दैत्यों कोभी दुर्लभहैं त
देवीजी बोलीं कि हे दुष्ट ! तेरा भाव कहां है व तेरा ध्यान कहां है
तेरा ज्ञान कहां है ३६ ईश्वरका कुछभी सम्बन्ध तेरा नहीं है कामो
दाका श्रेष्ठरूप कैसाहै प्रथम हम से कह ३७ व उसके हँसनेसे उ
त्पन्न पुष्प तूने कहां पाये विहुण्ड बोला कि भाव व ध्यान हम नहीं
जानते न हमने कभी कामोदा को देखाहै ३८ गङ्गाजी के जल
प्राप्त पुष्पों को नित्यही ग्रहण करताहूं तिनसे शङ्कर एकही को पू
जन करताहूं यह मैं कहताहूं ३९ हे विप्र ! हमारे आगे महात्म
शुक्रजीने भी कहा है तिसके वचनसे हम प्रतिदिन महादेवजी को
पूजते हैं ४० जो तुमने हमसे पूँछा सब हमने तुम से कहा देवीजी
फिर बोलीं कि कामोदाके दुःख से उत्पन्न पुष्पों से ४१ तुम नित्य
प्रभात समय शिवलिङ्ग की पूजा करतेहो सो जैसे भावों से व जैसे
पुष्पों से तुमने ४२ शिवकी पूजाकी है वैसेही फलों को भोगो दिव्य
पूजा का नाशकरके शोक के पुष्पों से पूजन किया ४३ हमसे तुम
को यह बड़ा दारुण दोष उत्पन्न हुआ तिससे हम तुमको दण्ड देंगे
अब अपने कर्म से उत्पन्न फलको भोगो ४४ उस मायारूप ब्राह्मण
के ऐसे वचन सुनकर कालके वशीभूत होकर वह दुष्ट दैत्य भी
बोला कि रे दुष्ट रे दुराचार रे हमारे कर्म के दूषण करनेवाले अब
हम इस खड्गसे तुझको मारते हैं इसमें संशय नहीं है ऐसा कहकर

उस ब्राह्मणके मारनेकी इच्छासे उसने अतितीक्ष्ण खड्गलिया ४६ व वह दुष्टात्मा दानव उसके मारने के लिये दौड़ा परन्तु विप्ररूप धारण कियेहुये वह परमेश्वरी देवी क्रुद्धहुई ४७ जब उसको अपने स्थानमें आते देखा तो हुङ्कार शब्द किया उन देवीजीके हुङ्कारके शब्दसे वह दानवों में अधम पतित होगया ४८ व वज्रसे मारेहुये पर्वतके समान चेष्टारहित होकर गिरपड़ा जब सब लोकों का नाशक वह दानव पतित होगया ४९ तो सब लोक दुःख तापसे रहित होकर स्वस्थ होगये हे वत्स! गङ्गाजीके तीरपर इसीलिये वह वरारोहा कामोदा दुःख से व्याकुल मन होकर रोदन करती है यह सब तुमसे कहा जो तुमने पूंछा ५०।५१ ॥

चौ०इमिनिजसुतसोंकहिखगराजा। कुञ्जलसबविधिसाजिसमाजा ॥
कीनविराम न पुनिकुछ बोला। भूपति तुमसन हम यहखोला ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्येच्यवनचरित्रेकामोदाख्यानेएकविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२१ ॥

# एकसौबाईसका अध्याय ॥

दो० यकसैबाइसयें महँ च्यवन कुँजल सों पूँछ ॥
तिनभाष्यो निजपूर्वजनि कथा औरनाहिं कूछ १

श्रीविष्णुभगवान् राजावेनसे बोले कि धर्म्मयुक्त बड़ा बुद्धिमान् कुञ्जलपक्षी ऐसा अपने सब पुत्रोंसे कहकर जब चुप होरहा उनसे फिर और कुछ न बोला १ तब उस वटवृक्षके नीचे बैठेहुये च्यवन मुनिने उस कुञ्जलसे कहा कि आप पक्षीका रूप धारण किये ऐसे धर्म्मवक्ता कौनहैं २ क्या कोई देव हैं वा गन्धर्व्व वा विद्याधर हैं किसके शापसे इस सुयेकी पापयोनिमें उत्पन्न हुयेहैं ३ तुम्हारा ऐसा दिव्यज्ञान कैसे है यह किस सुन्दर पुण्य वा तपका फलहै ४ अथवा हे महामते! कोई सिद्ध वा देवहीहो इस रूपमें छिपे हुयेहो इसका कारण हमसे कहो ५ तब कुञ्जल च्यवनसे बोला कि हे सिद्ध! उत्तम गोत्र कुल तो हम जानते हैं विद्या तपका प्रभाव जानते हैं जिससे तुम पृथ्वीपर घूमतेहो ६ हे विप्र! हेसुव्रत! सब तुमसे कहते हैं अच्छे

प्रकार तो तुम्हारा आगमन हुआ अब अच्छे प्रकार इस छा
छायामें उस पुण्यकारी आसन पर विराजिये ७ अव्यक्तब्रह्मसे ब्रह्मा
जी उत्पन्न हुये उनसे प्रजापति ब्राह्मणद्विज भृगुजी उत्पन्नहुये
कि ब्रह्माकेही गुणोंसे युक्त होनेके कारण उन्हींके समानहैं ८ व उनके
पुत्रका भार्गव नाम हुआ ये सब धर्म्म जाननेवालों में बड़े
हुये उन्हीं के वंशमें आप उत्पन्न हुये हैं व च्यवन आपका प्रसि
सिद्ध पृथ्वीमें नामहै ९ हम न देवहैं न गन्धर्व्व न विद्याधर हैं वि
जो हमहैं कहते हैं कहते हुये हमसे सुनो १० कश्यपके कुलमें उ
त्पन्न वेदवेदाङ्गपारग सर्व्वकर्म्मप्रकाशक एक उत्तम ब्राह्मण था ११
विद्याधर उसका नामथा व कुल शील गुणों से संयुतथा व आचार
तप करने के कारण शोभासे वह प्रकाशित था १२ उस विद्याधरके
तीन पुत्र हुये वसुशर्म्मा नामशर्म्मा धर्म्मशर्म्मा ये तीन भये १३
उनमें सबसे छोटा धर्म्मशर्म्मा हुआ जोकि गुणसे वर्जितथा सो
मैं था वसुशर्म्मा हमारा भाई वेद शास्त्रके अर्थका जाननेवाला १४
आचार से और विद्यादि अच्छे गुणों से युक्त हुआ नामशर्म्मा महा
बुद्धिमान् तैसेही गुणों में अधिकहुआ १५ मैं एक महामूर्ख हुआ
हे सत्तम! सुनो हे विप्र ! विद्याओंका उत्तम भाव शुभ अर्थ कभी
१६ न सुनूं न उत्तमगुरुजी के घरको जाऊं तब मेरेपिता हमारे लिये
चिन्तना करतेभये १७ कि धर्मशर्मा पुत्रका नाम निरर्थकहै पृथ्वीके
मध्य में विद्वान् और गुणखानि न हुआ १८ यह चिन्तनाकर म
हात्मा अत्यन्त दुःखित हमसे बोला कि हे पुत्र ! गुरुजी के घरको
विद्या पढ़नेके लिये जावो १९ इस प्रकार पिताके शुभ वचन हमने
सुनकर कहा कि हे तात ! अत्यन्त दुःखदायी गुरुजी के घरको हम
न जावेंगे २० हे सत्तम! जहाँ नित्यही ताड़न भौंहें टेढ़ीकर बुलाना
कर्मसे अन्न नहीं दिखाई देता सो सुनो २१ दिन रात्रि नींद नहीं है
सुखका साधन नहीं है हे तात ! तिससे दुःखमय गुरुजीके मन्दिरको
न जावेंगे २२ क्रीड़ाके अर्थमें उत्सुक विद्याका कार्य न करेंगे हे पिता
जी! भोजन सोना खेलना आपके प्रसादसे बालकोंके साथ आनंदित
होकर दिन रात्रि सुखसे करेंगे तब धर्मात्मा अत्यन्त दुःखित हमारा

मूर्खजानकर बोले २३।२४ कि हे पुत्र! साहस न करो विद्याके लिये उद्यमकरो विद्या से सुख यश अतुल कीर्ति ज्ञान स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त होता है तिससे विद्याको पढ़ो पहले दुःखकी मूल होती है पीछे से विद्या सुख देती है २५।२६ तिससे हे पुत्र! तुम विद्याको साधन करो गुरुजी के घरको जावो तब हम पिताके वचन न करतेहुये दिन दिनमें २७ जहाँ तहाँ स्थित और नित्यही द्रव्यकी हानि करते भये हे विप्र! मनुष्यों ने उपहास और निन्दाकी २८ तब हमारे जीवके नाश करनेवाली लज्जा उत्पन्न हुई कि विद्या के अर्थ में उद्यत हम किस गुरुजीकी प्रार्थना करें २९ इससे मारे दुःख व शोकके मुझको बड़ी चिन्ता हुई कि मैं विद्या कैसे जानूं व गुणोंको कैसे पाऊँ ३० मुझको स्वर्ग कैसे हो व फिर मोक्ष कैसे हो ऐसी चिन्ता होनेसे मैं वृद्धावस्था को प्राप्त हुआ ३१ दुःखित मैं एकदिन एक देवमन्दिर में बैठाथा कि इतने में मेरे भाग्यों की प्रेरणासे एक सिद्ध वहां आया ३२ वह निराश्रय जिताहार सदा आनन्दरूप सब वाञ्छारहित व जितेन्द्रिय योगयुक्त एकान्तमें आकर बैठगया ३३ व ज्ञान ध्यान समाधि युक्तहो ब्रह्ममें लीनहुआ हे विप्र! मैं उस ज्ञान रूप महामतिके समीप गया ३४ व शुद्धभाव भक्तिसे मस्तक झुँका-कर महात्माके नमस्कारकरके उनके आगे बैठगया ३५ व मन्दभाग्य होने के कारण उसके आगे अत्यन्त दीनहोकर स्थित रहा तब उस सिद्धब्राह्मण ने मुझसे कहा कि आप क्यों शोच करते हैं ३६ व किस अभिप्रायके भावसे ऐसा दुःख भोगते हैं हे विप्रेन्द्र! जब उस ज्ञानी योगी ने मुझ से ऐसा कहा तो ३७ मूर्ख मैंने अपना सब पूर्व का वृत्तान्त उससे कहा कि मैं सब जाननेवाला कैसे होजाऊं ३८ इससे अत्यन्त दुःखी रहताहूँ अब इस विषय में आपही मेरी सदैवगति हैं तब वह महात्मा हमसे सब ज्ञान का कारण कहता भया ३९ ॥

इति श्रीपाद्मेच्यवनचरित्रेद्वाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२२ ॥

## एकसौतेईसका अध्याय ॥

दो० एकसै तेइसयें महँ ज्ञानोत्पत्ति बखान ॥

पुनिपृथुके अरुवेनके चरितकहेशुभदान १

सिद्ध बोला कि सुनो ज्ञानरूप हम तुम्हारे आगे कहेंगे ज्ञानके देह नहीं है हाथ पांव नेत्र १ नाक कान और हाड़ों का संग्रह भी ज्ञानके नहीं है किसने ज्ञान देखा है तिसके कौन चिह्न है २ नित्यही आकारोंसे रहित है वह सर्ववित् सबको जानताहै दिनका प्रकाशक सूर्य्यहै व रात्रि का प्रकाशक चन्द्रमा ३ व गृहका प्रकाशक दीपक है ये तीनों लोक में स्थित रहते हैं वह पद किस तेजसे देखा जाताहै हे सत्तम ! सुनो ४ विष्णुकी मायासे मोहित वे मूर्ख देहके मध्यमें स्थित ध्यानसे प्रकाशित उपमारहित ज्ञानको नहीं जानते हैं ५ वह पद चन्द्रमा और सूर्यादिकों ने भी नहीं देखा यद्यपि ज्ञानके हस्त पाद कर्ण नेत्र कुछभी नहीं हैं ६ परन्तु वह सब कहीं जासक्ताहै सबको ग्रहण करताहै व सब कुछ देखताहै सब सूँघताहै व सब सुनताहै हे विप्रेन्द्र ! इसमें सन्देह नहीं है ७ इस ज्ञानके समान सब अन्धकार नाशने में दीपक नहीं है पर ज्ञान का स्थान स्वर्ग में दिखाईदेता है भूमिपर पातालमें स्थान २ में दिखाताहै ८ इसी शरीरके मध्यमें ज्ञान सदा स्थित रहताहै परन्तु कुबुद्धिलोग उसे नहीं देखते अब हम ज्ञानकास्थान कहते हैं जिससे ज्ञान उत्पन्न होताहै ९ हे द्विज ! ज्ञान सदा प्राणियोंके हृदयमें नित्य स्थित रहता है व कामादिक महारोगों को और महामोहादिकों को १० विषरूप अग्निसे सबको सदा जलाना चाहताहै व सर्व्व शान्तिमय होकर इन्द्रियों के अर्थोंका मर्दनाकिया करता है ११ तो वह ज्ञान मार्गोंमें प्राप्तहोकर सब तत्त्वके अर्थोंको देखने लगताहै तत्त्वका मूल निर्मल सर्वदर्शक यह ज्ञानहै १२ तिससे सब सुखकी बढ़ानेवाली शान्ति तुम करो शत्रु मित्र अपनेमें व परमें समदृष्टि करो १३ व नित्य नियतहोकर जितेन्द्रिय व जिताहारहोवो न किसीसे बहुत मैत्री करो और वैरतो कभी किसीसे करोनहीं १४ निस्स्पृह निस्सङ्गहोकर एकान्त में बैठो बस ऐसाकरनेसे सर्व्वप्रकाशक ज्ञानी सर्वदर्शी होजावोगे १५ हे वत्स ! एकही स्थानपर टिकेहुये तुम तीनोंलोकोंमें जो कुछ वृत्तान्त होंगे हमारे प्रसादसे सब देखाकरोगे इसमें कुछभी संशयनहींहै १६

कुञ्जलबोले कि हे विप्र! तिससिद्धने हमारे ज्ञानरूप प्रकाशित किया तिसी भावसे भावित तिसके वाक्य में नित्यही स्थित रहताहूं १७ इससे तीनोंलोकोंके वृत्तान्तोंका ज्ञान हमको एकही स्थानपर बैठे पर तिस सद्गुरुके प्रसादसे रहताहै १८ यह हमने अपना सब वृत्तान्त तुमसे कहा हे द्विजसत्तम ! और क्या तुमसे कहो सो कहैं १९ च्यवन मुनि बोले कि ज्ञानवानोंमें श्रेष्ठ आप सुखकी योनिको कैसे प्राप्तहुये सर्व्व सन्देहनाशन इसका कारण तुम हमसे कहो २० कुञ्जल बोला कि संसर्गसे पाप उत्पन्नहोताहै व संसर्गहीसे पुण्यउत्पन्न होताहै इससे विद्वान् को चाहिये कि अभव्योंका संसर्ग न करे २१ एकपापी लुब्धक एक शुकका बच्चा पकड़कर बेचनेके लिये एकसमय लाया २२ वह तोतेकाबच्चा बड़ासुन्दर प्रियवचन बोलता था इससे उसको देखकर एक ब्राह्मणने मोललिया व आकर फिर प्रीतिसे हमको देदिया २३ हे द्विजोत्तम ! हमतो नित्य अपने ज्ञानध्यानमें स्थितरहते थे परन्तु बालस्वभाव से कौतुक से सुयेको हाथमें लिया २४ उसके कौतुक युक्त वाक्योंसे हम मोहित होगये इसलिये उस शुकके बच्चे को हम अपना पुत्र समझनेलगे व नित्यही सुयेमें मन लगारहे २५ व वहभी हमको तात पद कहकर बोलाकरे कहे कि हे महाभाग ! बैठो अब स्नान करनेजावो अब पूजनकरो २६ इत्यादि बहुतप्रिय मधुरवचन सदा हमसे कहाकरे उसके वाक्य के विनोदसे हमको धीरे २ उत्तम ज्ञान विस्मरणहोगया २७ एक दिन हम पुष्पलेनेके लिये व भोजनकेलिये फल लेनेको वनको गये व उसी बीचमें एक बिडाल हमारे दुःखके हेतु उस शुकको पकड़लेभागा २८ समान उमरवाले सज्जन हमारे संसर्गी लोगोंने चाहा कि इससे हम इस बच्चेकोछीनलें परन्तु उनका श्रम वृथाहुआ उस बिडालने मारकर उस पक्षीको खालिया २९ जब हम आये तो चाटुकारक उस पक्षी का मरण सुनकर हम बड़ेभारी दुःखसे अत्यन्त दुःखित हुये ३० व उसके महादुःखसे ऐसे पीड़ितहुये कि अनाथ विक्षिप्त से होगये हे द्विजपुङ्गव ! हम महामोहजालमें फँसगये ३१ मोहसे चलायमान मन होगया रामचन्द्र शुकराज अतिपंडित श्लोक रोज कहा करें ३२

और अपने कर्म से हम दुःखसे संतप्तहोगये व हे विप्रेन्द्र! उस
शुकके वियोग से ३३ हमको उस सिद्धका कहाहुआ सबज्ञान भूल
गया बस दिन रात्रि उसी शुकका स्मरणकर २ शोकसे व्याकुलचित्त
बनेरहैं ३४ व हे वत्स! हे वत्स! पुकाराकरें सो गद्यपद्यमय संस्कृत
वाक्योंसे पुकारें ३५ कि हे वत्स! तुम्हारेविना अब हमको कौन इस
समय समझावेगा व नानाप्रकारकी विचित्र कथायें कौन हमसे कहे
गा हे पक्षिराज! हमको प्रसन्न करो ३६ हे वत्स! इस निर्जन वन में
हमको छोड़कर आप कहां चलेगये तुम किसदोषसे खिन्नहोगये हो
हमसे आकर इस समय कहो ३७ इसप्रकारके नानामोहमय वचन
दीनतापूर्वक कहतेहुये हम अत्यन्त मोहित होगये इसीप्रकार के
अनेक वचन कहतेहुये मारेशोकके अत्यन्त पीड़ित ३८ तिस मोह से
तिसभावसे मोहित हम मृतक होगये मरणकालमें जिसका जैसा भाव
और जैसी मति होतीहै ३९ हे द्विजसत्तम! वह वैसेही भावसे उत्पन्न
होताहीहै इससे एक शुकी के गर्भ को प्राप्तहुये व सबज्ञान स्मरण
बनारहा ४० व पूर्व का अपना कियाहुआ कर्म स्मरण करताहुआ
कि हम अकृतात्मा मूढ़ने यह क्या किया ४१ गर्भकेयोगमें आकर
फिर तिसको चिन्तना करता भया इसी से हमको सर्वदर्शक निर्मल
ज्ञान होगया ४२ यह उत्तम ज्ञान शुकहोनेपरभी उन्हीं गुरु जीके ही
प्रसाद से हमको हुआ व उनके स्वच्छ जलरूप वाक्योंसे हमारे
शरीरका मल दूरहोगया ४३ भीतर बाहर निर्मल होगया शुककी
जातिसे उत्पन्न तिर्यक् योनि मैंने पाई ४४ जो कि मरण के समय में
शुकका ध्यानभाव किया और तिसभावसे भावित तिसीसमयमें मरगये
इसी से हम उसीप्रकारके शुक पृथ्वीपरहुये मरणसमयमें प्राणियों
का जैसा भाव होताहै ४६ तैसेही वे प्राणी वैसाही रूप तिसीमें पाय
यण तैसेही गुण और तैसेही स्वरूपभावमूत होते हैं ४७ हे विप्रेन्द्र!
हे महामते! मृत्युकालके भाव से हम यहां अतुल ज्ञान को प्राप्तहुये
इसमें सन्देह नहींहै ४८ हे महामते! हे महाप्राज्ञ! तिसज्ञानसे भूत भ
विष्य वर्तमान सब हम देखतेहैं ४९ और यहां स्थित सबको जानतेहैं
इसमें संदेह नहींहै संसारमें वर्तमान मनुष्यों के तारने के लिये ५०

न्ध छेदन करनेवाला गुरु समान तीर्थ नहीं है हे भार्गवनन्दन ! हे
द्विज ! यह सब तुमसे कहा ५१ हे विप्र ! जो तुमने पूंछा वह तुमसे सब
प्रकाशित किया स्थलके उत्पन्न जलसे सब बाहरका मलनाश होजाता
है ५२ जन्मान्तर के कियेहुये पापों को गुरुतीर्थ नाश करता है सं-
सार तारण के लिये उत्तम जंगम तीर्थहै ५३ विष्णुजी बोले कि हे
राजाओंमें उत्तम वेन ! महाबुद्धिमान् शुक्र महात्मा च्यवनजीसे तत्त्व
प्रकाशित कर चुपहोरहा ५४ यहउत्तम सब जंगमतीर्थ तुमसेकहा
तुम्हारा कल्याण हो और जो मनमें वर्त्तमान हो वह वरमांगो ५५ तब
वेनजी बोले कि हे जनार्दनजी ! मैं राज्यकी कामना नहीं करता और
न कुछ कामना करता देहसमेत तुम्हारे देहके जानेकी इच्छा करताहूं
५६ जो यहां देनेकी इच्छा है तो यही वर हम मांगते हैं फिर जगन्नाथ
श्रीनारायणजी राजा वेनसे बोले कि हे भूपते ! अब तुम अश्वमेध
और राजसूययज्ञकरो ५७ गऊ पृथ्वी सोना जल और धान्योंका दान
करो क्योंकि दानसे तुरन्त पाप नष्टहोते हैं व दुर्गति काभी तुरन्तही
नाशहोताहै व हे राजन् ! ब्रह्महत्यादिक घोर पाप दानसे नष्टहोते
हैं इससे दान सदा देतेरहो ५८ दान देने से धर्म अर्थ काम मोक्ष
सिद्ध होताहै इसमें संशय नहीं है इससे हे नरोत्तम ! हमारे उद्देश
से नित्य दान करना चाहिये ५९ हमारे उद्देशसे जिस भावसे कोई
दान करता है उसको हम उसीप्रकारके भावसे सत्यही युक्त करते
हैं ६० ऋषियों के दर्शन करने व स्पर्श करने से पातक समूह
तुम्हारा भ्रष्ट होगया यज्ञ के अंतमें हमारी देहको प्राप्तहोगे इसमें
सन्देह नहीं है ६१ ऐसा कहकर श्रीभगवान् अन्तर्द्धानहोगये ६२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्यानेगुरुतीर्थमाहात्म्यसम्पूर्तिवर्णनेच्यवनचरित्रसमाप्तौचत्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३॥

## एकसौचौबीसका अध्याय ॥

दो० यकसै चौबिसयें महँ पृथुतप कीन्ह अपार ॥
ब्रह्मासों वरदान लहि तब आये आगार १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि महाबुद्धिमान् राजावेन विष्णु

जीके अन्तर्द्धान होनेमें देवदेवेशजी कहांगये इस चिन्ता में प्राप्त भये १ व राजा बड़े हर्षसे युक्तहोकर चिन्तना करके अपने पुत्र महाराज पृथुजी को मधुर अक्षरों से बुलाकर २ उन महात्मा से हर्षसे बोले कि हे पुत्र ! तुमने हमको इसलोक के पापोंसे तारदिया व हमारे वंशको तुमने उज्ज्वल किया हमने इस वंशको दोषोंसे नाशित कियाथा व तुमने गुणोंसे प्रकाशित किया ४ अब हम अश्वमेध यज्ञकरें व विविधप्रकार के अनेक दानदें तो तुम्हारे प्रसाद शरीरसहित श्रीविष्णुके लोकको इस समय जायँ ५ हे महाभाग इससे अब तुम यज्ञ करनेकी सब सामग्री इकट्ठीकरो व हे महाभाग वेदपारगामी ब्राह्मणों को बुलावो ६ जब महात्मा राजा वेनने को ऐसी आज्ञादी तो वे महात्मा पृथुजी अपने पिता राजा से आदर से बोले ७ कि हे महाराज ! अभी आप राज्यकरें व ... पुण्यकारी मनुष्योंके वाञ्छित भोगभोगें व यज्ञोंसे श्रीविष्णुभगवान् की पूजा करतेरहें ८ ज्ञानमें तत्पर पितासे ऐसा कहकर प्रणाम पृथुजीने धन्वाबाण यत्नपूर्वक उठाकर ९ सब भटों को आज्ञादी पृथ्वी में हमारी आज्ञा सुनावो कि मन वचन कर्म से पाप नहीं करना चाहिये १० जो वेन राजाकी आज्ञा उल्लङ्घन कर पाप करेगा नाश को प्राप्तहोगा इसमें सन्देह नहीं है ११ भगवान् में ... कर मत्सरहीन हो सब मनुष्य दान देवें यज्ञों से जनार्दनको पूजें १२ इसप्रकार सब प्रजाओं को शिक्षा देकर व राज्यभार अपने मन्त्रियों को सौंपकर राजा पृथुजी तप करने को वनको गये १३ वहां सब दोषोंको छोड़ इन्द्रियों को उनके विषयों से ... सौवर्षतक निराहार तप करतेरहे १४ उनके तपसे सन्तुष्ट हो ... जी आकर पृथुसे बोले कि तुम क्यों तप करतेहो इसका ... हमसे कहो १५ यह सुनकर पृथुजी बोले कि कीर्त्ति बढ़ानेवाले हमारे महाप्राज्ञ पिताजी राज्य में जो कोई पुरुषाधम पापकरे उसका शिर श्रीविष्णुभगवान् काटडालें महाचक्र न देखपड़े ... श्रीहरिजी आपही दण्ड देवें १७ मनसे कर्म से व वचनसे ... कोई पाप करनाचाहें वैसेही उनके शिर पके फलके समान ...

गिरपड़ें १८ हे सुरेश्वर ! बस यही वर हम तुमसे मांगते हैं जिसमें राजाओं के दोषों से हमारे पिता न लिप्तहों १९ हे देवेश ! वैसा आप करें जो वरदेने की इच्छाहो और उत्तम काम दो हे ब्रह्माजी ! आपके नमस्कार हैं २० ब्रह्माजी बोले कि हे महाभाग ! ऐसाहीहो पिता तुम्हारे पवित्र होगये हे वत्स ! हे पृथो ! तुम्हारे पिताको विष्णुजीने और तुम्ह पुत्रने भी शिक्षा कीथी २१ ऐसा पृथुको आज्ञादेकर देकर ब्रह्माजी तो चलेगये व राजापृथु अपने स्थान पर आये अपना राज्यकर्म्म करनेलगे २२ तबसे पृथुके राज्य में कोई पाप नहीं करता था जो कोई मनसा वाचा कर्म्मणा पाप करनेकी चिन्ता करताथा २३ उसका शिर कटकर गिरपड़ता था जैसे कि चक्रसे कटनेपर गिरताहै इससे तबसे फिर उस राज्यमें किसीने कुछ पाप कियाही नहीं २४ महात्मा पृथुकी भी यही आज्ञा होगई थी कि हमारे राज्य में नित्यही सबलोग सदाचारही करते रहें २५ ॥

चौ० दानदेहिंसबप्रजानिरन्तर । धर्म्मपरायणह्वोहिंसमन्तर ॥
सबसुखभोगें जनसबभेरे । पाप न आवहिं तिनकेनेरे २६

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने चतुर्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२४ ॥

## एकसौपच्चीसका अध्याय ॥

दो० यकसै पच्चिसयें म्हें वेनस्वर्ग पृथुराज्य ॥
कहीफलस्तुतिविघ्नहतिहितहुतितिलयवआज्य १

सूतजी शौनकादिकों से बोले कि राजावेनकी यज्ञकरनेकी आज्ञा पाकर परमधार्म्मिक उनके पुत्र महाराज पृथुजीने नानाप्रकार के पुण्यकारी सब यज्ञसम्भार एकत्रकराये १ व नानादेशों के रहनेवाले सब ब्राह्मणोंको निमन्त्रणदेकर बुलाया तब वेन राजा अश्वमेध यज्ञ करताभया २ ब्राह्मणोंको नानाप्रकारके अनेक दान राजा ने दिये इसलिये महाराजवेन इसी पाञ्चभौतिक शरीरसे वैकुण्ठको सिधे चलेगये ३ व वे धर्म्मात्मा विष्णुभगवान्के सङ्ग नित्य वहाँ बसनेलगे यह हमने उन महात्माराजाका चरित्र तुमसे कहा ४ जो

कि सब पापोंका नाशक व सब दुःखोंका विनाशकहै वेनके
धर्म्मात्मा पृथुजी पृथ्वीकाराज्यकरनेलगे ५ पृथ्वीहीके समान स्व
र्ग व पातालकीभी रक्षा महाराज पृथुजीकरतेरहे वपुण्यधर्मवक
करतेहुये उन महाराजने प्रजाओं की रक्षा की ६ ॥
चौ० भूमिखण्ड उत्तमयह गाथा । सो सब मुनिवरतुम्हें सुनाथा ॥
सृष्टिखण्डहै प्रथमरु दूजा । भूमिखण्ड करने को पूजा ॥
भूमिखण्ड माहात्म्य बखानत । ज्यहिउत्तमतरसबजन जानत ॥
जोनरएकहु श्लोकहु कबहूँ । भूमिखण्डकरसुनिहि सुसबहूँ ॥
एकबार कृतपातक ताके । नष्ट होइ हैं तुरत सटाके ॥
जो नर भावसहित अध्याया । सुनिहि चित्तदे मनकरि दाया ॥
तासु पुण्य हमकरत बखाना । सुनहुद्विजेन्द्रहु सहित प्रमाना ॥
गो सहस्र द्विज उत्तम काहीं । दिये पर्व्वमहँ जो फलआहीं ॥
सोफलताहिमिलतनहिंसंशय । विष्णु प्रसन्न होत हरिकैभय ॥
पद्मपुराण पढ़ै नित जोई । कलियुग दुखपावै नहिं सोई ॥
कलिमहँ याकर पाठ विशेषा । फलदायक मुनिवर हम पेषा ॥
यासों कलिदारुण दुख तासू । होतनहीं अरु सकलसुपासू ॥
यहसुनि पूँछ्यहुव्यास महाना । किमिकलिमहँ यहिपाठमहाना ॥
अपरयुगनसों अधिकबखाना । यहकहिये विधिसहितविधाना ॥
कह ब्रह्मा सुनिये मुनिराया । हम तुमसन भाषत तजिमाया ॥
अश्वमेध मखकर फलजोई । प्रकटभली विधिकतहुँ न गोई ॥
सो फल पद्मपुराण सुनेते । पावत नर नित स्वमन गुनेते ॥
अश्वमेधमख कलियुग माहीं । विधिसों होवतहै कहुँनाहीं ॥
जासों कलिमहँ तासु निषेधा । यह जानहु मुनिकैनिजमेधा ॥
पद्मपुराण समान बखाना । अश्वमेध कलिमहँ नहिं आना ॥
अश्वमेध फल स्वर्गद होई । मोक्षप्रदायकहु नहिं गोई ॥
परपापी नरपुण्य न तासू । कलिमहँ भोगहिं बड़ाकुपासू ॥
पद्मपुराण पुण्य मुनिसत्तम । अश्वमेधमखपुण्य विजनत ॥
कलिमहँ उभय नलहत अभागे । जात नरक महँ ते यकलागे ॥
कलिमहँ जातनरक सब प्रानी । जो पापी अघगणकी खानी ॥

यासों पद्मपुराणहिं सुनई । अर्त्थ धर्म्म कामादिक चुनई ॥
पद्मपुराण सुन्यो जो लोगू । पुण्य प्रदायक दायक भोगू ॥
अर्त्थ धर्म्मवर मोक्षरुकामा । सब पावत मनभावत सामा ॥
अश्वमेध आदिक मखसारे । अरु वर तप सब महाउचारे ॥
कलिमहँ सबस्वर्ग्गहिगे आसू । साङ्गवेद आगमयुत भासू ॥
जो श्रद्धा अरु भावसमेता । भार्य्या सुतयुत कै स्वनिकेता ॥
पद्मपुराण सुनै मन लाई । अथवा पढ़ै छोड़िकुचिताई ॥
सकल विघ्न ताके मिटिजाहीं । सब सुखलहै शङ्ककछु नाहीं ॥
जो बिन श्रद्धा सुनै पुराना । लहत विघ्नसो मृषा न भाना ॥
जो श्रद्धा नहिं यामहँ करई । ह्वैआलस निजमति अनुसरई ॥
लोभ करहिं जो वक्तापाहीं । यथाशक्ति देवत जो नाहीं ॥
हरिप्रेरित तहँ दारुण मोहा । आवत तहां करत नहिं छोहा ॥
दूषत तासु कर्म्म किय जेते । यासों भ्रष्ट होत हैं तेते ॥
विघ्ननिवारण हितनर नीके । होमकरै नित सब विधिठीके ॥
वैष्णवमन्त्र जपै अरु जापै । पुण्यपाठ सब तहां अलापै ॥
विष्णु रराट मन्त्र सों होमा । अरु सहस्रशीर्षायुत सोमा ॥
इदंविष्णु जो मन्त्र करारी । ब्रह्ममन्त्र सों वा अधिकारी ॥
त्र्यम्बक मन्त्र पढ़ै वा नीके । करै होम सब विधिसों ठीके ॥
बृहत्साम्न मँत्रवर सों वापी । द्वादशवर्णक मन्त्र प्रतापी ॥
वासुदेव कर जो मँत्र होई । तासों ताहित होमक होई ॥
अष्टोत्तरशतआदिक आहुति । करैपलाश समिधसों सहद्युति ॥
सूर्य्यादिक ग्रहके सुस्थापन । गणपति पूजन औरक्षमापन ॥
शारदपूजा सहित विधाना । विघ्न निवारि करै कल्याना ॥
जातवेद मँत्र चण्डी मन्त्रू । पढ़ै आज्य तिलहनै स्वतन्त्रू ॥
तण्डुल यवपुनि लेयमिलाई । पायस आज्यकेरि अधिकाई ॥
इमिकरि होम देय द्विजदाना । आदरभाव करै युत माना ॥
धेनु सवत्सा काञ्चनशृङ्गी । रूप्यमढ़े खुर वर्ण सुभङ्गी ॥
अरु दक्षिणा विशेष समेता । वक्तहिं देय चित्त करि चेता ॥
पावै सकल पुण्य सो प्रानी । मुक्तिलहैगतसकलगलानी ॥७३२॥

इसप्रकार जो नहीं करता तिसके विघ्नको हम कहते हैं बहुत दुःख का देनेवाला तिसके अंगमें रोग होताहै ३३ स्त्री का शोक पुत्र शोक धनकी हानि और नानाप्रकारके महारोगोंको भोगताहै इसमें स न्देह नहीं है ३४ जिसके घरमें द्रव्य नहीं है वह एकादशी का व्रत क भावयुक्त चित्तसे सोलहों उपचारोंसे भगवान्‌की पूजनकरै पीछेसे जि द्रव्यहो उसके अनुसार ब्राह्मणोंको भोजन करावै ३५। ३६ सो पु सङ्कल्प केशवजीको देकर फिर बुद्धिमान् मनुष्य बान्धवों पुत्रों औ स्त्रीसमेत आप भोजनकरै तब सिद्धिकोप्राप्तहोवै सम्पूर्ण पुराणसंहि धर्मतत्पर मनुष्य को सुननी चाहिये ३७। ३८ तब सुननेवाले को धर्म अर्थ काम मोक्षकी सिद्धि होतीहै अन्यथा नहीं होती सबका ब्रह्मनाम पुष्करको सुनो ३९ हे द्विज! सतयुग में पापहीन मनुष्य प पद्मपुराण बावन हजार श्लोकयुक्त को सुनते भये त्रेतायुग में म मनुष्य सुनते हैं ४०। ४१ वे धर्म अर्थ काम मोक्ष फलको भोग फिर भगवान्‌को प्राप्तहोते हैं बाईसहजार पद्मपुराणकी संहिता ब्रह्मापरमात्मा ने द्वापरयुग में कहीहै बारहहजार पद्मपुराण की सं हिता ४३ कलियुगमें विष्णुमें तत्पर मनुष्य पढ़ेंगे एक अर्थ प्र भाव चारोंमें वर्त्तमान है४४संहिताओं में शेष आख्यानका वि है हे विप्रेन्द्र! हे सत्तम! कलियुगमें बारह हजार नाशको प्राप्त हं भूमिखण्डको मनुष्य सुनकर सबपापोंसे छूटजाताहै४५।४६ सब और सब रोगोंसे भी छूटजाताहै और सब जप दान और सुनना छोड़कर ४७ पाप नाशनेवाला पद्मपुराण यत्नसे सुनना चाहि प्रथम सृष्टिखण्ड द्वितीय भूमिखण्ड ४८ तृतीय स्वर्ग खण्ड च पाताल खण्ड पंचम सब पाप नाशनेवाला उत्तर खण्ड है ४९ मनुष्य भक्तिसे क्रमसे पांच खण्डों को सुनता है वह हजार गौ के फलको पाता है ५० हे ब्राह्मणो! बड़ी भाग्यसे पांच खण्ड मि हैं ये पांचों सुनने से सत्य सत्य निस्सन्देह मोक्षदेते हैं ५१॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेद्वितीयेभूमिखण्डेभाषानुवादेवेनोपाख्याने पञ्चविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२५॥

समाप्तमिदंभूमिखण्डन्द्वितीयम्॥

# इश्तहार ॥

## भविष्यपुराण भाषा क्री० १॥)

श्रीपण्डित दुर्गाप्रसादकृत उल्था इसमें पौराणिक इतिहास, चारोंवर्णों के [illegible] परीक्षा, राजा और सर्व पुरुषों के लक्षण, व्रतोंके उद्यापन और उनकी कथा, सर्पों का [illegible] चिकित्सा, स्वप्नों का वर्णन, प्रासाद और प्रतिमाओंके लक्षण, शाकद्वीपीय [illegible] वर्णन, होनेवाले राजाओं का राज्य समय, संसारके दोष पातक नरकादि वर्णन, [illegible] धेनुदान विधान, जलाशय, देवालय बनाने वृक्ष लगाने का फल सर्व प्रकार के दानों [illegible] वर्णन कियेगये हैं ॥

## वामनपुराण भाषा क्री० ॥॥=)

जिसको बेरीग्रामनिवासि रविदत्त वैद्यजीने संस्कृतसे सरलभाषा में अनुवादित [illegible] मोचन आख्यान, दक्षयज्ञविनाश, महादेवका कालरूपधारण, कामदेवदहन, प्रह्लादनारायण [illegible] संग्राम, सूर्यकी कथा, भुवनकोश वर्णन, काम्यव्रत आख्यान, दुर्गाचरित्र, पार्वती [illegible] विवाह वर्णन, गौरी उपाख्यान, कुमार, जाबालि, बलि, लक्ष्मी, त्रिविक्रमचरित्र, [illegible] उपाख्यान, ब्रह्माकृतस्तव एवम् श्रीवामन भगवान्की अनेक उत्तमोत्तम कथा सरलभाषा में

## स्कन्दपुराणका सेतुमाहात्म्य खण्ड क्री० ।॥)

पण्डित दुर्गाप्रसादजीकृत भाषा इसमें सेतुबन्धका माहात्म्य वहांके सब तीर्थोंका [illegible] श्राद्धका विस्तारपूर्वक माहात्म्य, नरकोंका वर्णन, रामेश्वर महादेवका विस्तारसे [illegible] मनोहर कथा जिनसे पुण्यहोकर और चित्तआनंद पाता है वर्णन कीगई हैं जो [illegible] अपूर्व थी इससे हमने इसका उल्था करादिया ॥

## श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण भाषा किताबनुमा कागज़ रस्मी ६) व कागज़ गुन्दा ६)

पूरे सातोंकाण्ड अयोध्यापाठशाला के तृतीयाध्यापक पण्डित महेशदत्तकृत भाषा [illegible] महाराज हैं जिन्होंने पहिले देवीभागवत और विष्णुपुराण का उल्था किया है [illegible] सुगमरीति से परिपूर्ण श्लोकके अनुसार हुआ है कोई शब्दभी छूटने नहीं पाया [illegible] लिये अङ्क भी लगादिये हैं कि भ्रम न पड़े अक्षर टैपके बहुत पुष्ट हैं अबकीबार [illegible] छापीगई है ॥

## तथा पत्रानुमा क्री० १६)

विदितहो कि यह पत्रानुमा वाल्मीकीयरामायण जोकि अबकीबार मालिक [illegible] है वह बहुतही अनुपम होकर सन्दर्शनीय है कि जिसका भाषानुवाद [illegible] पासि पण्डित महेशदत्तने किया व जिनका संशोधन भी संस्कृत प्रसिद्ध [illegible]
[illegible]

# पद्मपुराण भाषा

## स्वर्गखण्ड तृतीय

जिसको

उन्नामप्रदेशान्तर्गत ताड़गाँवनिवासि पण्डितरामविहारी शुक्लजी ने संस्कृत पद्मपुराण से देशभाषा में उल्था किया ॥

प्रथमबार

में छपा ॥

# अथ पद्मपुराणभाषा स्वर्गखण्डतृतीय का सूचीपत्र ॥

इति ॥

# पद्मपुराणभाषा स्वर्गखण्डतृतीय

## पहिला अध्याय॥

नैमिषारण्यमें शौनकादिक ऋषियों से सूतजी का पद्मपुराण प्रारम्भ करना॥

लक्ष्मीजी से सदैव वन्दित उत्तम नाम वाले संसार के मनुष्यों के हृदयमें प्रविष्ट महाजनोंको एक स्थान रूप उत्तमोत्तम गोविन्द जी के चरण कमलों को हम नमस्कार करते हैं १ एक समय प्रकाशित अग्निके सदृश हिमवान् पर्वतके बसनेवाले वेदके पारगामी सब मुनि २ त्रिकालके जाननेवाले महात्मा अनेकप्रकार के पुण्यों के आश्रय और महेन्द्र पर्वत विन्ध्याचल पर्वत ३ अर्बुदारण्य पुष्करारण्य श्रीशैल कुरुक्षेत्र ४ धर्मारण्य दण्डकारण्य जम्बू और सत्य के बसनेवाले ५ ये और और भी बहुत शिष्यों समेत निर्मल मुनि उत्साहयुक्त शौनकजी के देखने के लिये नैमिषारण्यको प्राप्त होते भये ६ वहां पर विधिपूर्वक शौनकजीकी पूजाकर और उनसे आप सब पूजित होकर क्रमसे विचित्र बृसी आदिक ७ शौनक के दिये हुये आसनों में वे तपस्वी बैठकर पुण्यकारी कृष्णजीकी कथा कहते भये ८ तब भावितात्मा मुनियों की कथाके अन्तमें महातेजस्वी महादीप्तिवाले व्यासजी के शिष्य पुराण के जाननेवाले रोमहर्षण नाम सूतजी आतेभये और न्याय समेत मुनियों के प्रणामकर और उनसे आप भी पूजित होकर ९ । १० यथायोग्य बैठते भये तब

महाभाग तपस्वी शौनकादिक महर्षि सुखसे बैठेहुये व्यासजी के शिष्य रोमहर्षण सूतजी से पूछतेभये कि हे पुराणके जाननेवाले महाबुद्धिवाले अच्छे व्रतकरनेवाले रोमहर्षणजी! ११। १२ पूर्वकाल में आपसे महापुण्यवाली पुराण की कथा सुनी है अब इस समयमें हरिजीकी कथा में अवकाश समेत प्रवृत्तहैं १३ सोई पुरुषों का धर्म है जिससे भगवान् में भक्ति हो फिर भी भगवान् की वार्तायुक्त पुराण को कहिये १४ हे सूतजी! भगवान् से और कथा श्मशानके सदृश है तीर्थस्वरूप से भगवान् आपही स्थित रहते हैं यह हमने सुनाहै १५ निश्चयकर पुण्यदाता तीर्थों के नाम कहिये किससे यह उत्पन्न किससे पालित १६ और किसमें यह चराचर संसार नाशको प्राप्त होताहै कौन पुण्यकारी क्षेत्रहैं कौन पर्वत पूज्यहैं १७ मनुष्यों के पाप नाशनेवाली शुभ कौन श्रेष्ठ पुण्यकारिणी नदियां हैं हे महाभाग! यह सब क्रमसे कहिये १८ तब सूतजी बोले कि हे महाभाग्यवाले तपस्वियो! आपलोगोंने अच्छा प्रश्नकिया तिनको प्रणामकर पद्मपुराण को कहताहूं १९ पराशरजी के पुत्र परम पुरुष संसार और वेदके एकयोनि विद्या के आधार सुन्दर मति के देनेवाले वेद और वेदान्तके जाननेवाले निरन्तर शान्त अपनी मति के विशुद्ध तेज सुन्दर विस्तृतयशवाले वेदव्यासजीको हम सदैव नमस्कार करते हैं २० तिन अमिततेजस्वी भगवान् व्यास के नमस्कार हैं जिनके प्रसाद से इस नारायणजीकी कथाको कहताहूं २१ और महापुण्यकारी पद्मपुराण को कहताहूं यह छः और खण्डों से युक्त पचपन सहस्रवाला है २२ पहले आदिखण्ड फिर भूमिखण्ड फिर ब्रह्मखण्ड फिर पातालखण्ड २३ फिर क्रियाखण्ड फिर अन्तिम उत्तरखण्ड है यह अद्भुत महापद्म है यन्मय संसार है २४ जिस वृत्तान्त के आश्रयहै तिससे पण्डितों करके पाद्म कहाजाता है यह निर्मल विष्णुमाहात्म्य उत्तम पुराणहै २५ जिसको देवदेव हरिजीने पूर्व समयमें ब्रह्माजी से कहा था ब्रह्माजीने नारदजी से नारदजीने हमारे गुरुजी के आगे कहाथा २६ व्यासजी इतिहास समेत सब पुराण संहिता अपने अत्यन्त प्यारे हमको पढ़ाते भये २७ निश्

अत्यन्त दुर्लभ पुराणको हम कहते हैं जिसको सुनकर मनुष्य ब्रह्म-हत्यादि पापों से छूट जाताहै २८ जो सुनताहै वह सब तीर्थ के अभिषेक को प्राप्त होताहै श्रेष्ठ भक्ति से श्रद्धा से सुननेही से मुक्ति का देनेवालाहै २९ विना श्रद्धासे जो सुनताहै वह भी पुण्यसमूह को प्राप्त होताहै तिससे सब यत्नसे पद्मपुराण को कानों का अतिथिकरो ३० तहाँ पुण्यकारी पाप नाशनेवाले आदिखण्ड को कहते हैं यहां पर स्थित शिष्यों समेत सब मुनि सुनो ३१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

## दूसरा अध्याय ॥

ज्ञानेन्द्रिय पांच और कर्मेन्द्रिय पांचों की उत्पत्ति और उनके कर्मों का वर्णन और भूतों से सब सृष्टि की रचना का वर्णन ॥

हे द्विजोत्तमो ! हम पहले आदिसृष्टि को कहते हैं जिससे परमात्मा सनातन भगवान् जाने जाते हैं १ सृष्टियों में प्रलय से ऊपर कुछ नहीं होताभया सब करनेवाली ब्रह्मसंज्ञक एक ज्योति नित्यमाया रहित शान्तनिर्म्मल नित्यनिर्म्मल आनन्दसागर और स्वच्छ होती भई जिसको मोक्षकी इच्छा करनेवाले इच्छा करतेभये २। ३ वह ज्योति सब जाननेवाली ज्ञानरूपसे अनन्त अज अव्यय अविनाशी सदैव स्वच्छ अच्युत व्यापक महान् भई ४ सृष्टिकालके प्राप्तहोनेमें तिस को ज्ञानरूप और आत्मामें लीन विकार जानकर तिसके रचने को प्रारम्भ करतेभये ५ तिससे प्रधान उत्पन्नहुआ फिर महान् हुआ सात्त्विक राजस तामस यह तीनप्रकारका महान् हुआ ६ प्रधानसे आच्छादित त्वचा बीजकी नाईं आच्छादित हुआ वैकारिक तैजस भूतादि तामस ७ यह तीनप्रकारका अहंकार महत्तत्त्वसे उत्पन्नहुआ जैसे प्रधानसे महान् तैसे महान्से वह आच्छादित हुआ ८ हर्षित भूतादि शब्दतन्मात्रा को रचताभया शब्दतन्मात्रा से शब्दलक्षण आकाशहुआ ९ शब्दमात्र आकाशको भूतादि आच्छादित करता भया शब्दमात्र आकाश स्पर्शमात्र को रचता भया १० बलवान् वायुहुआ तिसका स्पर्श गुण हुआ आकाश शब्दमात्र स्पर्शमात्र

को आच्छादित करता भया ११ फिर हर्षित होकर वायु रूपमात्र
को रचताभया वायुसे ज्योति उत्पन्नहुई वह तद्रूप गुण कहाई १२
स्पर्शमात्र वायु रूपमात्रको आच्छादित करताभया हर्षित ज्योति
रसमात्रको रचताभया १३ फिर रसमात्र जल हुये रसमात्र जल रूप
मात्रको आच्छादित करताभया १४ हर्षित जल गन्धमात्रको रचते
भये तिससे सब भूतों से गुणमें अधिक यह पृथ्वी हुई १५ जिससे
संघात समेतहै तिससे तिसका गन्धगुणहुआ तिस तिसमें तन्मात्रा
से हुये तिससे तन्मात्रता कहाई १६ तन्मात्रा अविशेष हैं विशे
पर क्रमसे हैं यह भूत तन्मात्र सर्ग तामस अहंकारसे १७ संक्षेपसे
हे तपस्वी मुनिश्रेष्ठो! कहागया तैजस इन्द्रिय कहाईं देव वैकारि
कदशहुये १८ तत्त्वचिन्तकों से कहाहुआ ग्यारहवां मन हुआ पांच
ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रिय हैं १९ तिनको और तिनके गुण
पवित्र कर्मोंको कहतेहैं कान त्वचा नेत्र जिह्वा और पांचवीं नासि
का हुई २० शब्दादि ज्ञानसिद्धि के लिये ये पाचों बुद्धि युक्त भी
गुदा लिंग हाथ पांव और पांचवीं वाणी हुई २१ गुदाका विष्ठा त्या
गना लिङ्गका आनन्द देना हाथका ग्रहण करना पांवका चलना
और वाणीका कहना कर्म हुआ आकाश वायु तेज जल पृथ्वी २२
हे ब्राह्मणो! शब्दादिक गुणों से क्रमसे संयुक्त हुये नाना प्रकार के
वीर्यवाले अलग अलग समूह विना भये २३ सब विना मिले हुये
प्रजा रचने में समर्थ न भये परस्पर आश्रय से परस्पर संयोग को
प्राप्तहोकर २४ एक संघ लक्ष्य समेत सब से एकता पाकर पुरुषा
धिष्ठितत्व और प्रधानके अनुग्रह से २५ महदादि और विशेषान्त
अण्डको उत्पन्न करते भये वे क्रमसे जलके बुल्लेकी नाईं सदैव बढ़े
२६ हे महाबुद्धिमानो! भूतों से जलमें शयन करता हुआ अण्ड
बढ़ा जोकि ब्रह्मरूपका प्राकृत विष्णुका उत्तमस्थान भया २७ तहां
पर अव्यक्त स्वरूप यह संसार के ईश्वर प्रभु विष्णु ब्रह्मरूप को
धारणकर अपने आप स्थित हुये २८ तिस महदात्मा के स्थेनगर
थ्व जरायु पर्वत गर्भोदक समुद्र हुये २९ पर्वतों समेत द्वीप समुद्र
ज्योति समेत लोकसंग्रह तिस अण्डमें सहित देवता असुर मनुष्य

के सब होताभया ३० आदि और नाशरहित विष्णुजी की नाभिसे
जो कमल उत्पन्न हुआ वह केशवजी की इच्छासे सुवर्ण का अण्ड
हुआ ३१ तब आपही श्रेष्ठहरिजी रजोगुण को धारण कर ब्रह्माजी
का रूपधार संसारके रचने में प्रवृत्त हुये ३२ फिर ब्रह्माजी की र-
चीहुई सृष्टिको युग युगमें कल्प पर्यन्त नृसिंहादि रूपसे श्रीभगवान्
रक्षा करते भये और रुद्ररूप से संहार करते भये ३३ महात्मा भ-
गवान् सब संसार को ब्रह्माका रूप धारणकर रचते भये रक्षाकरने
की इच्छाकर रामादिकरूपोंको धारतेभये और संसार के नाशकरने
को रुद्ररूप धारण करते भये ३४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

# तीसरा अध्याय ॥

## नदी पर्व्वत और खण्डादिकों के नामों का वर्णन ॥

शौनकादिक ऋषि सूतजीसे पूछतेभये कि हे प्रमाणके जाननेवाले!
सज्जनों में श्रेष्ठ सूतजी ! नदी सब पर्वत और पृथ्वी के आश्रित
और देशों के नाम और सब पृथ्वी और वनों का प्रमाण सम्पूर्ण
कहिये १ । २ तब सूतजी बोले कि हे महाप्राज्ञ शौनकजी ! संग्रह से
पांच महाभूत सब पृथ्वीमें स्थितहैं इनको बुद्धिमान् समान कहते हैं ३
पृथ्वी जल वायु अग्नि आकाश ये पाचों गुणोत्तरहैं तिनमें पृथ्वी
प्रधानहै ४ तत्त्वके जाननेवाले ऋषियोंने शब्द स्पर्श रूप रस और
पांचवां गन्ध ये पृथ्वीके गुणकहे ५ हे ब्राह्मणो ! जलमें चार गुणहैं गन्ध
नहीं है तेजके शब्द स्पर्श और रूप ये तीन गुणहैं ६ वायुके शब्द
और स्पर्श गुणहैं आकाश में शब्दही गुणहै ये पांच गुण पाँचों महा-
भूतों में ७ सब लोकोंमें वर्तमानहैं जिनमें भूत स्थितहैं जब परस्पर
नहीं वर्तते तव समहोते हैं ८ जब परस्पर विषम भावको प्रवेश क-
रतेहैं तव देहधारी देहोंसे जन्म धारते हैं और प्रकारसे नहीं ९ आनु-
पूर्वीसे नाश होतेहैं आनुपूर्वसे उत्पन्न होतेहैं ये सब प्रमाणरहित हैं
इनका ईश्वरका रूपहै १० जहाँ जहाँ पांचभौतिक दिखाई देते और
दौड़ते हैं तिनके मनुष्य तर्क से प्रमाण कहते हैं ११ निश्चयकर जे

चिन्तना करनेके योग्य भाव नहीं हैं तिनको तर्कसे नहीं साधन करो हैं मुनिश्रेष्ठ सुदर्शनद्वीपको कहते हैं १२ यह परिमंडलद्वीप चक्र स्थितहै नदी के जलसे परिच्छिन्नहै समुद्रके समान पर्वतों १३ अनेकप्रकारके आकारवाले सुन्दर पुर और देशोंसे युक्त पुष्प औरफल युक्त वृक्षों से सम्पन्न धन धान्ययुक्त १४ और लवण समुद्र से चारों ओर घिराहुआहै जैसे पुरुष दर्पण में अपना मुख देखे १५ तैसे चक्रमण्डल सुदर्शनद्वीप दिखाई देताहै तिसके दो भाग में पिप्पल और दो भाग में बड़ा शशाहै १६ सब ओषधि को लेकर चारों ओर से घेरे हैं तिससे अन्य जल जानने योग्य हैं शेष संक्षेप कहाहै १७ तब ऋषि बोले कि हे बुद्धियुक्त सूतजी! विधिपूर्वक आपने जिसका संक्षेपकहाहै तिसको विस्तार से हमसे कहिये क्योंकि आप तत्त्व के जानने वाले हैं १८ शश लक्षण में जितना यह पृथ्वी का अवकाश दिखाई देताहै तिसका प्रमाण कहिये फिर पिप्पल को कहिये १९ इस प्रकार निश्चयकर ऋषियोंके पूंछनेपर सूतजी बोले कि हे बुद्धिमान् ऋषियो! छः ये रत्नपर्वत हैं २० दोनों ओर से अवगाढ़हैं पूर्व पश्चिम समुद्रहैं हिमवान् हिमकूट पर्वतों में उत्तम निषध २१ सूंगों से युक्त नीलपर्वत और चन्द्रमा के समान श्वेतपर्वत और सब धातुओं से युक्त शृंगवान् नाम पर्वत है २२ हे ब्राह्मणो! निश्चयकर ये पर्वत सिद्ध चारणों से सेवित हैं तिनके बीचमें विष्कुम्भ सहस्र योजन काहै २३ तहां तिन खण्डों में पुण्यकारी देश हैं तिनमें अनेक प्रकारकी जातिके सबसे जीव बसते हैं २४ यह भारतवर्षहै तिससे पर हैमवतहै हेमकूटसे पर हरिवर्ष कहाताहै २५ हे महाभागो! नीलपर्वत के दक्षिण और निषध पर्वत के उत्तर पूर्वको विस्तृत माल्यवान् नाम पर्वत है २६ माल्यवान्के पर गन्धमादन पर्वतहै तिन दोनों पर्वतों के मध्य में परिमण्डल सुवर्णका मेरुपर्वत है २७ यह तरुण सूर्य और धुआं रहित अग्निकी नाईं प्रकाशित है चौरासी सहस्र योजनका ऊंचाहै २८ हे द्विजोत्तमो! नीचे भी चौरासी सहस्र योजन काहै ऊपर नीचे तिरछे लोकों को आच्छादित कर स्थितहै २९ तिसके समीपमें ये चारद्वीप स्थितहैं भद्राश्व केतु

माल जम्बूद्वीप ३० और उत्तरकुरु इनमें पुण्यात्मा बसते हैं नि-
श्चयकर सुपार्श्व का पुत्र विहंगसुमुख ३१ सुवर्ण के कौवोंको देख
कर चिन्तना करनेलगा कि मेरु पर्वत उत्तम मध्यम और अधम
पक्षियों का ३२ जिससे अविशेष करनेवाला है तिससे इसको हम
त्याग करते हैं ज्योतिवालों में श्रेष्ठ सूर्यजी तिसके पीछे प्राप्त होते
हैं ३३ नक्षत्रों समेत चन्द्रमा और वायु प्रदक्षिण हैं हे बुद्धिमानो !
यह पर्वत सुन्दर पुष्पों से युक्तहै ३४ सब सुन्दर सुवर्ण के स्थानोंसे
आच्छादितहै तिस पर्वतमें देवगण गन्धर्व असुर राक्षस ३५ अप्स-
राओं समेत सदैव क्रीड़ा करते हैं और ब्रह्मा रुद्र और देवोंके ईश्वर
इन्द्र ३६ मिलकर अनेक यज्ञों से अनेक दक्षिणाओं से देव पूजा
करते हैं तुम्बुरु नारद विश्वावसु हाहा हूहू ३७ ये मिलकर इन्द्रकी
अनेक स्तोत्रों से स्तुति करते हैं महात्मा सप्तर्षि और कश्यप
प्रजापति ३८ तहां पर्व पर्व में सदैव जाते हैं हे ऋषियो ! तुम्हारा क-
ल्याण हो तिसके मस्तक में उशना शुक्रजी दैत्यों से पूजित होते हैं
३९ तिसके सुवर्ण रत्न हैं तिसीके ये रत्नपर्वत हैं तिससे कुबेर भगवान्
चौथाई भाग ग्रहण करते हैं ४० तिससे द्रव्यका कलांश मनुष्योंको
देते हैं पर्वतके अन्तर में सुन्दर सब ऋतुके फूलों से युक्त ४१ रम्य
कर्णिकार वन शिलासमूहों से ऊंचाहै तहां पर साक्षात् पशुपतिजी
दिव्य भूतों से युक्त ४२ भूतभावन उमा समेत भगवान् क्रीड़ा करते
हैं चरणों तक लम्बी कर्णिकारमयी माला धारण करते हैं ४३ तीन
नेत्रों से प्रकाश करते हैं मानों तीन सूर्य्य उदयहैं तिन शिवजीको
उग्र तपस्यावाले अच्छे व्रत करनेहारे सत्य बोलनेवाले ४४ देखते
हैं महेश्वरजी दुष्टों से देखने में समर्थ नहीं हैं हे द्विजोत्तमो ! तिस
पर्वतके शिखर से दुग्धकी धारा ४५ विश्वरूप से गिरी हुई भया-
नक शब्द युक्त है पुण्यकारिणी अत्यन्त पुण्यात्माओं से सेवित
गङ्गा कल्याणकारिणी भागीरथीजी ४६ वेगसे चन्द्रमा के शुभकुण्ड
में गिरती हैं तिनसे उत्पन्न हुआ पुण्यकारी समुद्र के समान वह
कुण्ड हुआ ४७ तिससमयमें पर्वतों सेभी दुःखसे धारण करनेवाली
गङ्गाजी को शिवजी सैकड़ों हजार वर्षतक शिरसे धारण करते

भये ४८ हे द्विजोत्तमो! जम्बूखण्डमें मेरुपर्वत के पश्चिम पार्श्व
बड़े देशोंवाला केतुमाल नामहै ४९ अवस्था दशसहस्र वर्ष की मनु
ष्यों की है मनुष्य सुवर्ण के वर्णवाले हैं स्त्रियां अप्सराओं के समान
हैं ५० मनुष्य रोग और शोकहीन नित्यही प्रसन्न मन वाले और
तपायेहुये सुवर्ण के समान दीप्ति युक्तहैं ५१ गन्धमादनपर्वत के
कँगूरों में राक्षसों समेत अप्सराओं के समूहों से युक्त गुह्यकों के
स्वामी कुबेरजी आनन्द करते हैं ५२ गन्धमादनपर्वत के पर पार्श्व
में पापरहित ग्यारह सहस्र वर्षों की अवस्थावाले ५३ तेजयुक्त
महाबली काले वर्णवाले मनुष्यहैं सब स्त्रियां कमल पत्र के समान
दीप्ति युक्त अत्यन्त प्रियदर्शनवाली हैं ५४ नील कमलके भ
करनेवाले श्वेत श्वेत से सुवर्ण के समान रंग श्रेष्ठहै ऐरावत वा अ
नेकदेशों से युक्तहै ५५ हे महाभागो! उसके दक्षिण उत्तरमें दो
हैं बीचमें इलावृत्तखण्डहै और पांचखण्ड ५६ इनसे उत्तरोत्तर गु
से युक्तहैं आयुका प्रमाण आरोग्य धर्म काम अर्थ से युक्त प्र
तिन सब खण्डों में हैं इसप्रकार पर्वतों से पृथ्वी युक्तहै ५७।
अत्यन्त भारी हेमकूट! और कैलास नाम पर्वतहै वहां पर गु
समेत कुबेरजी आनन्द करते हैं ५९ कैलास पर्वतके उत्तर म
पर्वत बड़ाभारी हिरण्य शृङ्ग और दिव्यमणिमय पर्वतहै ६०
के पार्श्व में बहुत सुन्दर शुभ्रकांचन बालुकरम्य विष्णुसर नाम
जहां पर भगीरथ राजा ६१ भागीरथी गङ्गाजीको देखकर बहुत
बसतेभये वहां पर मणियों से जड़ेहुये यज्ञके खम्भ और सुवर्ण
हुये चैत्रहैं ६२ तहांही महायशस्वी इन्द्रजी यज्ञकर सिद्धि को
हुये हैं ये स्रष्टा प्राणियों के स्वामी सनातन सब लोकों से पूजित
६३ और अत्यन्त तेजस्वी प्राणी चारोंओर उपासना करते हैं
ही नरनारायण ब्रह्मा मनु और पांचवें शिवजी भी रहते हैं ६४
पर दिव्य गङ्गाजी प्रथम स्थितहैं ये ब्रह्मलोक से आई हैं और
प्रकारसे हैं ६५ वटोदका नलिनी पार्वती सरस्वती जम्बूनदी
और सातवीं गङ्गा सिन्धु नामहै ६६ ये अचिन्त्य दिव्य सङ्क
प्रभावों से युक्तहैं यहां पर सहस्रों युगमें यज्ञहुई हैं ६७ तहां

पर सरस्वतीजी कहीं दिखलाई और कहीं नहीं दिखलाई देती हैं ये सातों दिव्य गङ्गा तीनों लोकों में प्रसिद्धहैं ६८ हिमवतीखण्ड में राक्षस हेमकूट में गुह्यक निषधमें सर्पनागहैं गोकर्ण तपोवनहै ६९ सब देवता असुरोंका श्वेत पर्वत कहाहै गन्धर्व नित्यही निषधमें हैं ब्रह्मर्षि नीलमें हैं ७० शृंगवान् देवताओं के आनेजानेका है ये सात खण्ड भागसे हैं ७१ यहाँ पर प्राणी बैठते और चलते हैं उनकी बहुत प्रकार की देवता और असुरों की सम्पदा दिखाई देती है ७२ जोकि गिनती करने में नहीं आसक्ती श्रद्धा और भूषणादिकों से युक्त है जिसको आप ब्राह्मणोंने पूंछा उस दिव्य शशाकृतिको कहा ७३ शशके पार्श्व में दक्षिण उत्तर जो दो खण्ड कहेगये हैं कर्ण में नाग द्वीप और काश्यपद्वीपहैं ७४ कर्णद्वीप शिल और श्रीमान् मलय पर्वत ये दोनों शशि में स्थित द्वीप दिखाई देते हैं ७५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

# चौथा अध्याय ॥

उत्तरकुरु और जम्बूद्वीप और माल्यवान्पर्वत का प्रमाण वर्णन ॥

ऋषि पूंछते हैं कि हे महाबुद्धियुक्त सूतजी! मेरुपर्वत के उत्तर पश्चिम और पूर्वमाल्यवान् पर्वतको वर्णनकीजिये १ तब सूतजी बोले कि हे विप्रो! नीलके दक्षिण और मेरुपर्वतके पार्श्व और उत्तर में पुण्यकारी सिद्धों से सेवित उत्तरकुरु हैं २ तहाँपर वृक्ष शहद के समान मीठेफलवाले नित्यही पुष्प और फलयुक्त हैं पुष्प सुगन्धित और फल रसयुक्त हैं ३ सब कामना देनेवाले फल और बहुतसे दूध देनेवाले वृक्ष हैं ४ दूधदेनेवाले सब वृक्ष सदैव अमृतके समान दूध चुवाते हैं वस्त्रोंको उत्पन्न करते और फलों में आभरणोंको उत्पन्न करते हैं ५ सूक्ष्मसुवर्ण के समान बालूवाली सब मणियुक्त पृथ्वी है यह सब ऋतुमें सुख देनेवाली है निष्कल तपस्वी हैं ६ सब मनुष्य वहां पर देवलोकसे च्युत उज्ज्वल बन्धुओं से युक्त और अत्यन्त प्रियदर्शनवाले हैं ७ अप्सराओं के समान स्त्रियां जोड़ा उत्पन्न करती हैं वे दूधवाले वृक्षों के अमृत समान दूधको पीते हैं ८ समय

पाकर जोड़ाही उत्पन्न होता है फिर बढ़जाता है समान रूप गु-
और वेष होते हैं ९ चकई चकवे के समान एकही के सदृश होते हैं
वे मनुष्य रोगहीन और नित्यही प्रसन्नमन होते हैं १० हे मह-
भागो! वे ग्यारह सहस्र वर्ष तक जीते हैं परस्पर त्याग नहीं क-
हैं ११ जब मृतक होजाते हैं तो महाबलवान् तीक्ष्ण चोंचवाले
भारुड नाम पक्षी उनको उठाकर कन्दराओं में फेंक देते हैं १२ हे
विप्रो! उत्तरकुरु आपलोगों से संक्षेपसे कहा अब मेरुके पार्श्व के
पहले यथातथ्य कहते हैं १३ हे तपस्वियो! तिस भद्राश्व के मस्त
का अभिषेक हुआहै जहां पर भद्रशालवन और कालाम्र बड़े वृक्ष
हैं १४ कालाम्र नित्यही शुभ पुष्प और फल युक्त रहते हैं योजन
पर्यन्त विस्तृत हैं सिद्ध चारणोंसे सेवित हैं १५ तहाँपर वे पुरुष श्वेत
तेज युक्त महाबली हैं स्त्रियां कुमुदके वर्णवाली सुन्दरी प्रियदर्शन
युक्त १६ चन्द्रमाके समान वर्णवाली हैं चारोंवर्ण पूर्ण चन्द्रमाके
समान मुखवाले चन्द्रमा के समान शीतल देहवाले नृत्य और गीत में
निपुणहैं १७हे द्विजश्रेष्ठो! दशसहस्र वर्ष की उनकी आयुहै और का-
लाम्रका रस पीकर वे नित्यही युवावस्थामें स्थित रहते हैं १८ नील
के दक्षिण और निषध के उत्तर सनातन बड़ाभारी सुदर्शन नाम
जामुन का वृक्षहै १९ यह सब काम फल देनेवाला पुण्यकारी सिद्ध
चारणोंसे सेवितहै तिसी के नाम से सनातन जम्बूद्वीप प्रसिद्धहै २०
यह ग्यारह सौ योजनहै माल्यवान् के पूर्वशृङ्ग में यमराज के अनु-
चरहैं २१ हे द्विजो! माल्यवान् पचास सहस्र योजनहै तहाँ के मनु-
ष्य चाँदी के समान उज्ज्वल होते हैं २२ सब ब्रह्मलोकसे च्युत और
वेद पढ़नेवाले दिव्य तप करते और ऊर्ध्वरेता होते हैं २३ वे
प्राणियों की रक्षा के लिये सूर्य में प्रवेश करते हैं छांछठ सहस्र २४
सूर्य को छोड़कर अरुणके आगे जाते हैं छांछठ सहस्र वर्ष २५ सू-
र्य की तापसे तप्त होकर चन्द्रमण्डलमें प्रवेशकर जाते हैं २६॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचतुर्थोऽध्यायः ४॥

# पांचवां अध्याय॥

खण्डों के नाम और पर्वतों के नामों का वर्णन ॥

ऋषि बोले कि हे सज्जनों में श्रेष्ठ सूतजी! खण्डों और पर्वतों
नाम और पर्वतवासियों को हमसे तत्त्वसे कहिये १ तब सूतजी
ोले कि श्वेत के दक्षिण और निषध के उत्तर रमणक नाम खण्ड
वहां पर मनुष्य उत्पन्न होते हैं २ जोकि उज्ज्वल बन्धुओं से
क्त सब प्रियदर्शनवाले और शत्रुओं से रहित होते हैं ३ वे महा-
ाग नित्यही आनन्दयुक्त मन होकर ग्यारह सहस्र पांचसौ वर्षतक
ीते हैं ४ नीलके दक्षिण और निषधके उत्तर हिरण्मय नाम खण्ड
जहां हैरण्वती नदीहै ५ हे महाबुद्धिमानो! जहां पक्षियों में उत्तम
ारुड़जी रहते हैं और यज्ञके करनेवाले ब्राह्मणों में श्रेष्ठ धनुष धा-
ण करनेवाले प्रियदर्शनवाले ६ महाबली प्रसन्नमन होते हैं और
तपस्वी बारह सहस्र पांचसौ वर्षतक जीते हैं हे द्विजश्रेष्ठो! तीन
वित्र वहाँपर कँगूरे हैं ७। ८ एक मणियों से जड़ाहुआ है दूसरा
अद्भुत सुवर्ण जड़ाहै तीसरा सब रत्नों से जड़ाहै और उत्तम स्थानों
। शोभित है ९ शृङ्ग के उत्तर समुद्र के अन्त में शाण्डिनी स्वयं-
भा देवी नित्यही बसती हैं १० तिस शृङ्गवान् से पर ऐरावत
ाम खण्ड है वहांपर सूर्यकी गति नहीं है और मनुष्य जीर्ण नहीं
ोते हैं ११ नक्षत्रोंसमेत चन्द्रमा ज्योतिर्भूत की नाईं आच्छादित
कमल की समान दीप्तिवाले कमल के वर्णवाले कमलपत्र के स-
ान नेत्रवाले १२ कमलके पत्रके समान सुगन्धित वहाँपर मनुष्य
त्पन्न होते हैं और अनिष्पन्न गन्धहीन आहाररहित जितेन्द्रिय
१३ देवलोकसे च्युत सब रजोगुणहीन ब्राह्मण हैं और तेरह सहस्र
र्ष १४ धर्मात्माओं में श्रेष्ठ मनुष्य जीते हैं क्षीरसमुद्र के उत्तर
भु १५ वैकुण्ठहरि सुवर्णके रथमें स्थित होते हैं उनका रथ आठ
ाहियेवाला प्राणियों समेत मनके समान वेगवाला है १६ और
अग्नि के समान वर्णवाला महातेजस्वी सुवर्ण से भूषित है और
सब प्राणियों के प्रभु विभुजी १७ संक्षेप और विस्तार में कर्त्ता

और करानेवाले हैं पृथ्वी जल आकाश वायु तेजों के पति हैं १८ सब प्राणियों के यज्ञहैं और तिनका मुख अग्नि है १९॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादे पञ्चमोऽध्यायः ५॥

## छठवां अध्याय॥

भारतवर्ष के कुलपर्वतों नदियों और देशों का वर्णन॥

ऋषि बोले कि हे सूतजी! जो यह पुण्यकारी पुण्यविपाक भारतवर्ष है वह सब हम से कहिये क्योंकि आप बुद्धिमान् हैं १ तब सूतजी बोले कि यहां तुम से उत्तम भारतवर्ष को कहते हैं कि देव प्रियमित्र वैवस्वत मनु २ पृथु बुद्धिमान् वैन्य महात्मा इक्ष्वाकु ययाति अम्बरीष मान्धाता नहुष ३ मुचुकुन्द कुबेर उशीनर ऋषभ ऐल राजानृग ४ राजर्षि कुशिक महात्मा गाधि राजा सोम और दिलीप ५ और अन्य भी बलवान् क्षत्रियों और सब प्राणियों को उत्तम प्रियहै ६ हे द्विजो! अब वर्ष को कहते हैं अब कि सुनाहै महेन्द्र मलय सह्य शुक्तिमान् ऋक्षवान् ७ विन्ध्य पारियात्र ये सात कुलपर्वत हैं और तिनके सहस्रों पर्वत तुम्हारे समीप सारयुक्त विपुल चित्र विचित्र सानुवाले नहीं जानेगयेहैं और अन्य जे जाने गये हैं वे ह्रस्व और ह्रस्वों के जीविका देने वाले हैं आर्य म्लेच्छों को धर्मयुक्त करनेवाले हैं वे मिश्र पुरुष निर्मल गङ्गा नदी सिन्धु सरस्वती १० गोदावरी नर्मदा वहूदा महानदी सतलज चन्द्रभागा यमुना महानदी ११ दृषद्वती वितस्ता विपाशा स्वर्ण वालुका वेत्रवतीनदी कृष्णा वेणीनदी १२ इरावती वितस्ता पयो ष्णी देविका वेदस्मृति वेदशिरा त्रिदिवा सिन्धुलाकृमि १३ करी षिणी चित्रवहा त्रिसेनानदी पाप नाश करनेवाली गोमती चन्दना महानदी १४ कौशिकी त्रिदिवा हृद्या नाचिता रोहितारणी रहस्या शतकुम्भा सरयू १५ चर्मण्वती वेत्रवती हस्तिसोमा दिश शरावती पयोष्णी भीमा भीमरथी १६ कावेरी चुलुका तापी शतमला नीवारा महिता सुप्रयोगानदी १७ पवित्रा कृष्णला सिन्धुवाजिनी पुरमा लिनी पूर्वाभिरामा वीरा भीमा मालावती १८ पलाशिनी पापहरा

महेन्द्रा पटलावती करीषिणी असिक्नी कुशचीरी महानदी १९ मरु-
ता प्रवरा मेना हेमा घृतवती अनावती अनुष्णा सेव्याकापी २०
सदावीरा अधृष्या कुशचीरा महानदी रथचित्रा ज्योतिरथा विश्वा-
मित्रा कपिंजला २१ चन्द्रा वहफली कुचीरा अम्बुवाहिनी वैनदी
पिङ्गलावेणा तुङ्गवेगा महानदी २२ विदिशा कृष्णवेणा ताम्रा कपि-
ला धेनु सकामा वेदस्वा हविःस्रावा महापथा २३ शिप्रा पिच्छला
भरद्वाजीनदी कौशिकी नदी शोणा बाहुदा चन्द्रमा २४ दुर्गा अंतः-
शिला ब्रह्ममेध्या दृषद्वती परोक्षा अथरोही जम्बूनदी २५ सुनासा
तमसा दासी सामान्या वरणा असि नीला धृतिकरी पर्णाशा महा-
नदी २६ मानवी वृषभा भासा ब्रह्ममेध्या और दृषद्वतीनदीको जल
पीते हैं हे द्विजश्रेष्ठो ! ये और बहुत महानदियां और भी हैं २७
सदैव निरामया कृष्णा मंदगा मन्दवाहिनी ब्राह्मणी महागौरी दुर्गा
२८ चित्रोत्पला चित्ररथा अतुला रोहिणी मन्दाकिनी वैतरणी को-
कामहानदी २९ शुक्तिमती अनंगा वृषसाह्वया लोहित्या करतोया
वृषकात्वया ३० कुमारी ऋषितुल्या मारिषा सरस्वती मन्दाकिनी
सुपुण्या और सब गङ्गा ३१ ये सब संसार की माता हैं और सब
महाफल देनेवाली हैं तैसेही अच्छे प्रकाशवाली सैकड़ों सहस्रों
नदियां हैं ३२ हे विप्रो ! जैसी स्मृति है उसके अनुसार ये नदियां
कहीं इसके उपरान्त देशों को हमारे कहते हुये जानिये ३३ कुरु
पांचाल शाल्व मात्रेय जांगल शूरसेन पुलिन्द बोध माल ३४
मत्स्य कुशट्ट सौगंध्य कुत्सप काशि कोशल चेदि मत्स्य करूष भोज
सिंधु पुलिन्दक ३५ उत्तम दशार्ण उत्कलों समेत मेकल पञ्चाल
कोशल नैकपृष्ठ युगन्धर ३६ बोध मद्र कलिङ्ग काशि परकाशि
जठर कुकुर सुदशार्ण सुसत्तम ३७ कुन्ति अवन्ति अपरकुन्ति गो-
मन्त मल्लक पुंड्र विदर्भ नृपवाहिक ३८ अश्मक सोत्तर गोपराष्ट्र
कनीयस अधिराज्यकुशट्ट मल्लराष्ट्र केरल ३९ मालव उपवास्य चक्र
वक्रालय शक विदेह मगध सह्म मलज विजय ४० अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग
यकृल्लोमा मल्ल सुदेष्ण प्रह्लाद महिष शशक ४१ बाह्लिक वाटधान
आभीर कालतोयक अपरान्त परान्त पङ्कल चर्मचण्डिक ४२ अट-

और करानेवाले हैं पृथ्वी जल आकाश वायु तेजों के पति हैं १८ सब प्राणियों के यज्ञहैं और तिनका मुख अग्नि है १९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादे पञ्चमोऽध्यायः ५॥

# छठवां अध्याय ॥

भारतवर्ष के कुलपर्वतों नदियों और देशों का वर्णन ॥

ऋषि बोले कि हे सूतजी ! जो यह पुण्यकारी पुण्यविधायक भारतवर्ष है वह सब हम से कहिये क्योंकि आप बुद्धिमान् हैं १ तब सूतजी बोले कि यहां तुम से उत्तम भारतवर्ष को कहते हैं जो कि देव प्रियमित्र वैवस्वत मनु २ पृथु बुद्धिमान् वैन्य महात्मा इक्ष्वाकु ययाति अम्बरीष मान्धाता नहुष ३ मुचुकुन्द कुबेर उशीनर ऋषभ ऐल राजानृग ४ राजर्षि कुशिक महात्मा गाधि राजर्षि सोम और दिलीप ५ और अन्य भी बलवान् क्षत्रियों और सब प्राणियों को उत्तम प्रियहै ६ हे द्विजो ! अब वर्ष को कहते हैं जैसा कि सुनाहै महेन्द्र मलय सह्य शुक्तिमान् ऋक्षवान् ७ विन्ध्य पारियात्र ये सात कुलपर्वत हैं और तिनके सहस्रों पर्वत तुम्हारे समीप ८ सारयुक्त विपुल चित्र विचित्र सानुवाले नहीं जानेगयेहैं और अन्य जे जाने गये हैं वे ह्रस्व और ह्रस्वों के जीविका देने वाले हैं ९ आर्य म्लेच्छों को धर्मयुक्त करनेवाले हैं वे मिश्र पुरुष निर्मल गंगा नदी सिन्धु सरस्वती १० गोदावरी नर्मदा बहूदा महानदी सतलज चन्द्रभागा यमुना महानदी ११ दृषद्वती वितस्ता विपापा स्वच्छवालुका वेत्रवतीनदी कृष्णा वेणीनदी १२ इरावती वितस्ता पयोष्णी देविका वेदस्मृति वेदशिरा त्रिदिवा सिन्धुलाकृमि १३ करीषिणी चित्रवहा त्रिसेनानदी पाप नाश करनेवाली गोमती चन्दना महानदी १४ कौशिकी त्रिदिवा कृत्या नाचिता रोहितारणी रहस्या शतकुम्भा सरयू १५ चर्मण्वती वेत्रवती हस्तिसोमा दिशा शरावती पयोष्णी भीमा भीमरथी १६ कावेरी चुलुका तापी शतमला नीवारा महिता सुप्रयोगानदी १७ पवित्रा कुण्डला सिन्धुवाहिनी पुण्यमालिनी पूर्वाभिरामा वीरा भीमा मालावती १८ पलाशिनी पापहरा

महेन्द्रा पटलावती करीषिणी असिक्नी कुशचीरी महानदी १९ मरुता प्रवरा मेना हेमा घृतवती अनावती अनुष्णा सेव्याकापी २० सदावीरा अधृष्या कुशचीरा महानदी रथचित्रा ज्योतिरथा विश्वामित्रा कपिंजला २१ चन्द्रा वहफली कुचीरा अम्बुवाहिनी वैनदी पिङ्गलावेणा तुङ्गवेगा महानदी २२ विदिशा कृष्णवेणा ताम्रा कपिला धेनु सकामा वेदस्वा हविःस्रावा महापथा २३ शिप्रा पिच्छला भरद्वाजीनदी कौशिकी नदी शोणा बाहुदा चन्द्रमा २४ दुर्गा अंतःशिला ब्रह्ममेध्या दृषद्वती परोक्षा अथरोही जम्बूनदी २५ सुनासा तमसा दासी सामान्या वरणा असि नीला धृतिकरी पर्णाशा महानदी २६ मानवी वृषभा भासा ब्रह्ममेध्या और दृषद्वतीनदीको जल पीते हैं हे द्विजश्रेष्ठो ! ये और बहुत महानदियां और भी हैं २७ सदैव निरामया कृष्णा मंदगा मन्दवाहिनी ब्राह्मणी महागौरी दुर्गा २८ चित्रोत्पला चित्ररथा अतुला रोहिणी मन्दाकिनी वैतरणी कोकामहानदी २९ शुक्तिमती अनंगा वृषसाह्वया लोहित्या करतोया वृषकात्वया ३० कुमारी ऋषितुल्या मारिषा सरस्वती मन्दाकिनी सुपुण्या और सब गङ्गा ३१ ये सब संसार की माता हैं और सब महाफल देनेवाली हैं तैसेही अच्छे प्रकाशवाली सैकड़ों सहस्रों नदियां हैं ३२ हे विप्रो ! जैसी स्मृति है उसके अनुसार ये नदियां कहीं इसके उपरान्त देशों को हमारे कहते हुये जानिये ३३ कुरु पांचाल शाल्व मात्रेय जांगल शूरसेन पुलिन्द बौध माल ३४ मत्स्य कुशट्ट सौगंध्य कुत्सप काशि कोशल चेदि मत्स्य करूष भोज सिंधु पुलिन्दक ३५ उत्तम दशार्ण उत्कलों समेत मेकल पञ्चाल कोशल नैकपृष्ठ युगन्धर ३६ बोध मद्र कलिङ्ग काशि परकाशि जठर कुकुर सुदशार्ण सुसत्तम ३७ कुन्ति अवन्ति अपरकुन्ति गोमन्त मल्लक पुंड्र विदर्भ नृपवाहिक ३८ अश्मक सोत्तर गोपराष्ट्र कनीयस अधिराज्यकुशट्ट मल्लराष्ट्र केरल ३९ मालव उपवास्य चक्र वकालय शक विदेह मगध सद्म मलज विजय ४० अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग यकृल्लोमा मल्ल सुदेष्ण प्रह्लाद माहिष शशक ४१ बाह्लिक वाटधान आभीर कालतोयक अपरान्त परान्त पङ्कल चर्मचण्डिक ४२ अट-

वीशेखर मेरुभूत उपावृत अनुपावृत सुराष्ट्र केकय ४३ कुट्टापरान्त साहेय कक्ष सामुद्र निष्कुट अन्ध अन्तर्गिर्य ४४ बहिर्गिर्य अङ्ग मलद मगध मालवार्घट सत्त्वतर प्रावृषेय भार्गव ४५ पुंड्र भार्ग किरात सुदेष्ण भासुर शक निषाद निषध आनर्त नैऋत ४६ पूराळि पूलिमत्स्य कुन्तल कुशक तरिग्रह शूरसेन ईजिक कल्पकारण ४७ तिलभाग मसार मधुमत्त ककुंदक काश्मीर सिन्धु सौवीर गांधार दर्शक ४८ अभीसार कुद्रुत सौरिल वाह्लिक दर्वी मालव दर्व वातजाम रथोरग ४९ वलरद्द सुदामा सुमल्लिक वन्ध करीकप कुलिन्द गंधिक ५० वनायु दश पार्श्वरोमा कुशविन्दु काच्छ गोपालकच्छ जांगल कुरुवर्णक ५१ किरात बर्बर सिद्ध वैदेह ताम्र लिप्तिक सैरिंद्र समेत औड्र म्लेच्छ पार्वतीय ५२ हे मुनिश्रेष्ठो! और देशों को दक्षिण जानिये द्रविड केरल प्राच्य सूषिक बालमूषिक ५३ कर्णाटक माहिषक विकन्ध मूषिक झल्लिक कुन्तल सौहृदानलकानन ५४ कोकुटक चोल कोकण मणिवालक समंग कनक कुंकुरांगारमारिप ५५ ध्वजिन्युत्सव संकेत त्रिवर्ग माल्यसेनि व्यूढक कोरक प्रोष्ठ संगवेगधर ५६ विंध्यरुलिक बल्वलोंसमेत पुलिन्द मालवामल्लर अपरवर्तक ५७ कुलिन्द कालद चण्डक कुरट मुशल तनवाल सतीर्थ पूतिसृंजय ५८ अनिदाय शिवाट तपन सूतप ऋषिक विदर्भ रलंगना परतंगक ५९ हे मुनिश्रेष्ठो! उत्तर और म्लेच्छ मनुष्यहैं कांबोजों समेत यवन दारुण म्लेच्छ जाति हैं ६० सकृद्ग्रह कुलत्थ पारसिक समेत हूण रमण अंध्र दशमालिक ६१ क्षत्रियों और वैश्य शूद्रों के कुलों के रहनेवाले हैं शूराभीर दरद पशुओं समेत काश्मीर ६२ खापडांक तुषार पह्लव गिरिगह्वर आत्रेय सभिरद्वाज स्तनपोषक ६३ द्रोपक कलिंग इनमें किरातों की जातिहैं तोमर हन्यमान करभंजक ६४ ये और देश पूर्व और उत्तरहैं हे ब्राह्मणो! उद्देशमात्रसे मैंने वर्णन किये हैं जैसे गुण बलहैं यह धर्म अर्थ काम के महाफल देनेवाले हैं ६५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डे भाषानुवादेऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥
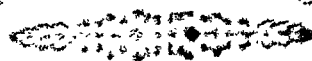
# सातवां अध्याय ॥

भारतवर्ष की चारों युगकी आयु का प्रमाण शुभाशुभ बल और मनुष्यों के गुणों का वर्णन ॥

ऋषि बोले कि हे सूतजी ! इस भारतवर्ष और हैमवतकी आयु का प्रमाण और शुभअशुभ बल १ भविष्य भूत और वर्तमान हम से विस्तार से कहिये और हरिवर्ष को भी तैसेही कहिये २ तब सूत जी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठो ! भारतवर्ष में चार युगहैं सतयुग त्रेता द्वापर और कलियुग हैं ३ पहले सतयुग फिर त्रेता तिस पीछे द्वापर और फिर कलियुग वर्तमान होताहै ४ हे मुनिश्रेष्ठो तपस्वियो! सत-युगमें चार सहस्र वर्षों की आयु संख्या कहीहुई है ५ त्रेता में तीन सहस्र आयु जानिये द्वापर में दोसहस्र वर्ष पृथ्वी में स्थित मनुष्य रहते हैं ६ कलियुगमें दोही सहस्र वर्षों की स्थितिहै गर्भ में स्थितही मरजाते हैं और उत्पन्न हुये भी मरजाते हैं ७ महाबली महासत्त्व युक्त बुद्धि और गुण संयुक्त सैकड़ों सहस्रों उत्पन्न होते हैं ८ सत-युगमें ब्राह्मण बली प्रियदर्शनवाले उत्पन्न होते हैं और मुनि तपस्वी ९ बड़े उत्साह युक्त महात्मा धर्मात्मा सत्य बोलनेवाले प्रियदर्शन वाले उत्तम देह युक्त महावीर्य्य युक्त धनुषधारण करनेवाले होते हैं १० क्षत्रिय रणभूमि में वीरशूरों के सम्मत होते हैं त्रेतायुगमें सब क्षत्रिय चक्रवर्त्ती होते हैं ११ द्वापर युगमें सदैव सब वर्ण बड़े उ-त्साहवाले वीर्यवान् परस्पर वधकी इच्छा करनेवाले १२ अन्धतेज संयुक्त क्रोधी पुरुष निश्चय होते हैं कलियुगमें लोभी झूठ बोलने वाले उत्पन्न होते हैं १३ ईर्ष्या मान क्रोध माया निन्दा कलियुगमें प्राणियों के होती हैं और राग लोभभी होते हैं १४ द्वापर युगमें संक्षेप वर्तमान होताहै हैमवत गुणोत्तरहै तिससे पर हरिवर्षहै १५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

# आठवां अध्याय ॥

विष्कम्भ और समुद्र के प्रमाण और शाकद्वीप का विस्तार समेत वर्णन ॥

ऋषि बोले कि हे सूतजी! आपने श्रेष्ठ जम्बूखण्ड यथावत् कहा

अव विष्कम्भके प्रमाण को तत्त्व से कहिये १ समुद्र के प्रमाण को अच्छेप्रकार से कहिये शाकद्वीप धार्मिक कुशद्वीप २ शाल्मल और क्रौंचद्वीपको तत्त्वसे कहिये तव सूतजी बोले कि हे द्विजश्रेष्ठो! बहुत द्वीपहैं जिनसे यह संसार निरन्तर है अव सात द्वीपोंको कहते हैं सुनिये ३ अठारह सहस्र छःसौ पूर्ण योजनका विष्कम्भ जम्बुपर्वत है ४ लवण समुद्रका विष्कम्भ दूनाहै अनेक प्रकार के देशों से युक्त मणि और मूंगोंसे चित्रितहै ५ अनेकप्रकार की धातुओं से विचित्र पर्वतोंसे उपशोभितहै सिद्ध और चारणोंसे युक्तहै परिमण्डल समुद्र है ६ हे श्रेष्ठ धर्मात्माओ! यथावत् शाकद्वीपको कहते हैं हमारे कहते हुये जैसा न्यायहै तैसेही इस समय में सुनिये ७ जम्बुद्वीपके प्रमाण से शाकद्वीप दुगुनाहै विष्कम्भसे क्षीरोद समुद्र विभागसे ८ युक्तहै तहां पर पुण्यकारी देशहैं और मनुष्य मरता नहीं है ९ फिर दुर्भिक्ष कैसेहो वहां के मनुष्य क्षमा और तेजयुक्त हैं हे मुनिश्रेष्ठो! शाकद्वीप का संक्षेप यथावत् कहा अव और क्या तुमलोगों से कहें १० तव ऋषिबोले कि हे धार्मिक महाप्राज्ञ सूतजी! शाकद्वीपका संक्षेप यथावत् आपने कहा अव तत्त्वसे विस्तार समेत कहिये ११ तव सूतजी बोले कि हे विप्रो! तैसेही सात पर्वत मणिपर्वत समुद्र नदियां तिन के नामों को हम वर्णन करते हैं १२ हे धर्मात्माओ! अत्यन्त गुण युक्त सव तत्त्व को पूछाहै देवर्षि गन्धर्वों से युक्त पहला मेरु पर्वत कहाताहै १३ पूर्वविस्तृत मलय नाम पर्वतहै तहां मेघ वर्तमान होते और सब ओर होते हैं १४ तिसके परसे जलधार महापर्वत है तिससे नित्यही इन्द्र श्रेष्ठ जलको ग्रहण करतेहैं १५ तिसी से वर्षा कालमें वर्षा होतीहै ऊंचा रैवतक पर्वत जहाँ नित्यही प्रतिष्ठितहै १६ आकाशमें रेवती नक्षत्रहै ब्रह्माकी कीहुई विधिहै उत्तरसे श्यामनाम महापर्वतहै १७ जोकि नवीन मेघकी दीप्तिवाला ऊंचा श्रीमान् उज्ज्वल देहवालाहै जिससे श्यामताके भावको प्राप्त प्रजा प्रसन्नमन हैं १८ तव ऋषि बोले कि हे सूतजी! यह हमारे वड़ा संशयहै जो कि आपने प्रजाओंको श्याम भावमें प्राप्त श्याम पर्वत से कहाहै सो प्रजा कैसे अच्छेप्रकार श्यामताको यहां प्राप्त हुये हैं १९ तव सूतजी

बोले कि हे मुनि श्रेष्ठो ! हे महा बुद्धिमानो ! सब द्वीपों में गौर कृष्ण पतगहैं तिनके वर्ण के अन्तर में २० श्याम जिससे प्रवृत्त हैं तिससे श्याम गिरि कहाहै तिससे पर दुर्ग शैल बड़े उदय वाला है २१ केशरी केशर युक्तहै जहां से वायु प्रवृत्तहै तिनके योजन भर विष्कम्भ विभागसे दूनाहै २२ तिनमें बुद्धिमानोंने वर्ष कहे हैं महामेरु महाकाश जलद कुमुदोत्तर २३ जलधार महा प्राज्ञ सुकुमार ये वर्ष हैं रैवतके कौमार श्याम मणिकांचन हैं २४ केशरके मौदाकी है परसे महान् पुरुष परिवार्य है दीर्घ और ह्रस्व भी २५ जम्बूद्वीपसे प्रसिद्ध है तिसके बीचमें शाकनाम बड़ा वृक्षहै तिसके प्रजा नौकरों समेत महाबुद्धिमान् हैं २६ तहां पुण्यकारी देशहैं तहांहीं महादेवजी पूजे जाते हैं तहां पर सिद्धचारण और देवता जाते हैं २७ सब प्रजा धर्मात्माहैं चारोंवर्ण मत्सरहीन अपने अपने कर्ममें निरतहैं चोर कोई नहीं दिखाई देता २८ दीर्घ आयुवाले महाबुद्धिमान् बुढ़ापा और मृत्युसे हीन प्रजा इसप्रकार बढ़ते हैं जैसे वर्षा में नदियां बढ़ती हैं २९ तहाँ पुण्यकारी जल वाली नदियाँ हैं और गङ्गा बहुत तरह से हैं सुकुमारी कुमारी शीता शीतोदका ३० महानदी मणिजलानदी इक्षुवर्द्धनिका ये सात गंगाहैं ३१ तहां से पुण्यकारी जल वाली परम सुन्दर सैकड़ों सहस्रों नदियां प्रवृत्त हैं जहां से इन्द्र बर्षते हैं ३२ तिनके नाम स्मरण और गिनती में नहीं आसक्ते हैं वे पुण्यकारी श्रेष्ठ नदियां हैं ३३ तहां पर पुण्यकारी चार देशलोकमें प्रसिद्ध हैं मृग मशक मानस और मल्लक नामहैं ३४ मृगदेशमें वेदके जाननेवाले अपने कर्म में निरत ब्राह्मणहैं मशकदेशमें धर्मात्मा सब कामनादेनेवाले क्षत्रियहैं ३५ मानसदेशमें महाभाग वैश्य धर्मसे जीविका करनेवाले सब कामनाओंसे युक्त शूर धर्म अर्थ में निश्चित वैश्यहैं ३६ मल्लकदेशमें नित्यही शूद्र पुरुष धर्मात्माहैं हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठो ! तहांपर राजा नहीं है न दण्डहै न दण्ड देनेवाले पुरुषहैं ३७ धर्म के जाननेवाले अपने धर्महीं से परस्पर रक्षा करते हैं इतनाहीं महापराक्रमी तिस शाकद्वीपमें कहनेको समर्थ हैं और इतनाहीं सुननेयोग्य है ३८।३९॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेऽष्टमोऽध्यायः ८॥

अब विष्कम्भके प्रमाण को तत्त्व से कहिये १ समुद्र के प्रमाण को अच्छेप्रकार से कहिये शाकद्वीप धार्मिक कुशद्वीप २ शाल्मल और क्रौंचद्वीपको तत्त्वसे कहिये तब सूतजी बोले कि हे द्विजश्रेष्ठो! बहुत द्वीपहैं जिनसे यह संसार निरन्तर है अब सात द्वीपोंको कहते हैं सुनिये ३ अठारह सहस्र छःसौ पूर्ण योजनका विष्कम्भ जम्बुपर्वत है ४ लवण समुद्रका विष्कम्भ दूनाहै अनेक प्रकार के देशों से युक्त मणि और मूंगोंसे चित्रितहै ५ अनेकप्रकार की धातुओं से विचित्र पर्वतोंसे उपशोभितहै सिद्ध और चारणोंसे युक्तहै परिमण्डल समुद्र है ६ हे श्रेष्ठ धर्मात्माओ! यथावत् शाकद्वीपको कहते हैं हमारे कहते हुये जैसा न्यायहै तैसेही इस समय में सुनिये ७ जम्बुद्वीपके प्रमाण से शाकद्वीप दुगुनाहै विष्कम्भसे क्षीरोद समुद्र विभागसे ८ युक्तहै तहां पर पुण्यकारी देशहैं और मनुष्य मरता नहीं है ६ फिर दुर्भिक्ष कैसेहो वहां के मनुष्य क्षमा और तेजयुक्त हैं हे मुनिश्रेष्ठो! शाकद्वीप का संक्षेप यथावत् कहा अब और क्या तुमलोगों से कहें १० तब ऋषिबोले कि हे धार्मिक महाप्राज्ञ सूतजी! शाकद्वीपका संक्षेप यथावत् आपने कहा अब तत्त्वसे विस्तार समेत कहिये ११ तब सूतजी बोले कि हे विप्रो! तैसेही सात पर्वत मणिपर्वत समुद्र नदियां तिन के नामों को हम वर्णन करते हैं १२ हे धर्मात्माओ! अत्यन्त गुण युक्त सब तत्त्व को पूछाहै देवर्षि गन्धर्वों से युक्त पहला मेरु पर्वत कहाताहै १३ पूर्वविस्तृत मलय नाम पर्वत है तहां मेघ वर्तमान होते और सब ओर होते हैं १४ तिसके परसे जलधार महापर्व्वत है तिससे नित्यही इन्द्र श्रेष्ठ जलको ग्रहण करतेहैं १५ तिसी से वर्षा कालमें वर्षा होतीहै ऊंचा रैवतक पर्वत जहाँ नित्यही प्रतिष्ठितहै १६ आकाशमें रेवती नक्षत्रहै ब्रह्माकी कीहुई विधिहै उत्तरसे श्यामनाम महापर्वतहै १७ जोकि नवीन मेघकी दीप्तिवाला ऊंचा श्रीमान् उज्ज्वल देहवालाहै जिससे श्यामताके भावको प्राप्त प्रजा प्रसन्नमन हैं १८ तब ऋषि बोले कि हे सूतजी! यह हमारे बड़ा संशयहै जो कि आपने प्रजाओंको श्याम भावमें प्राप्त श्याम पर्वत से कहाहै सो प्रजा कैसे अच्छेप्रकार श्यामताको यहां प्राप्त हुये हैं १९ तब सूतजी

बोले कि हे मुनि श्रेष्ठो ! हे महा बुद्धिमानों ! सब द्वीपों में गौर कृष्ण पतगहै तिनके वर्ण के अन्तर में २० श्याम जिससे प्रवृत्त है तिससे श्याम गिरि कहाहै तिससे पर दुर्ग शैल बड़े उदय वाला है २१ केशरी केशर युक्तहै जहां से वायु प्रवृत्तहै तिनके योजन भर विष्कम्भ विभागसे दूनाहै २२ तिनमें बुद्धिमानोंने वर्ष कहे हैं महामेरु महाकाश जलद कुमुदोत्तर २३ जलधार महा प्राज्ञ सुकुमार ये वर्ष हैं रैवतके कौमार श्याम मणिकांचन हैं २४ केशरके मौदाकी है परसे महान् पुरुष परिवार्य है दीर्घ और ह्रस्व भी २५ जम्बूद्वीपसे प्रसिद्ध है तिसके बीचमें शाकनाम बड़ा वृक्षहै तिसके प्रजा नौकरों समेत महाबुद्धिमान्हैं २६ तहां पुण्यकारी देशहैं तहांहीं महादेवजी पूजे जाते हैं तहां पर सिद्धचारण और देवता जाते हैं २७ सब प्रजा धर्मात्माहैं चारोंवर्ण मत्सरहीन अपने अपने कर्ममें निरतहैं चोर कोई नहीं दिखाई देता २८ दीर्घ आयुवाले महाबुद्धिमान् बुढ़ापा और मृत्युसे हीन प्रजा इसप्रकार बढ़ते हैं जैसे वर्षा में नदियां बढ़ती हैं २९ तहाँ पुण्यकारी जल वाली नदियाँ हैं और गङ्गा बहुत तरह से हैं सुकुमारी कुमारी शीता शीतोदका ३० महानदी मणिजलानदी इक्षुवर्द्धनिका ये सात गंगाहैं ३१ तहां से पुण्यकारी जल वाली परस्पर सुन्दर सैकड़ों सहस्रों नदियां प्रवृत्त हैं जहां से इन्द्र बर्षते हैं ३२ तिनके नाम स्मरण और गिनती में नहीं आसक्ते हैं वे पुण्यकारी श्रेष्ठ नदियां हैं ३३ तहां पर पुण्यकारी चार देशलोकमें प्रसिद्ध हैं मृग मशक मानस और मल्लक नामहैं ३४ मृगदेशमें वेदके जाननेवाले अपने कर्म में निरत ब्राह्मणहैं मशकदेशमें धर्मात्मा सब कामनादेनेवाले क्षत्रियहैं ३५ मानसदेशमें महाभाग वैश्य धर्मसे जीविका करनेवाले सब कामनाओंसे युक्त शूर धर्म अर्थ में निश्चित वैश्यहैं ३६ मल्लकदेशमें नित्यही शूद्र पुरुष धर्मात्माहैं हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठो ! तहांपर राजा नहीं है न दण्डहै न दण्ड देनेवाले पुरुषहैं ३७ धर्म के जाननेवाले अपने धर्महीं से परस्पर रक्षा करते हैं इतनाहीं महापराक्रमी तिस शाकद्वीपमें कहनेको समर्थ हैं और इतनाहीं सुननेयोग्य है ३८।३९॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेऽष्टमोऽध्यायः ८॥

# नववाँ अध्याय॥

उत्तर के द्वीपों का वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे महाभाग ऋषियो! उत्तर द्वीपोंकी कथा हमसे सुनिये १ घृततोय समुद्र दधिमण्डोदक सुरोदसागर और दुग्ध सागर २ ये सब द्वीप परस्पर से द्विगुणहैं पर्वत समुद्रोंसे घिरेहुये हैं ३ मध्यम द्वीपमें गौरवर्ण बड़ाभारी मनःशिल पर्वतहै पश्चिममें कृष्णवर्ण नारायण सख पर्वतहै ४ तहाँ पर प्रसन्न केशवजी दिव्य रत्नों की आपही रक्षा करते और प्रजाओंके सुखको देते हैं ५ देशके बीच शरद्वीपमें कुशस्तंबहै शाल्मलिद्वीपमें शाल्मलि पूजाजाताहै ६ क्रौंचद्वीपमें रत्न समूहोंकी खानि महा क्रौंचपर्वत चारों वर्ण से नित्य-ही पूजितहै ७ बड़ाभारी सब धातुओं का उत्पन्न कर्त्ता गोमंतपर्व्वत है जहां पर नित्यही श्रीमान् कमलनयन मोक्षकी इच्छा करनेवालों से युक्त प्रभु नारायण हरिजी बसते हैं कुशद्वीपमें मूंगोंसे जड़ा हुआ पर्वतहै ८। ९ अत्यन्त दुर्धर्षसुनामा पहला पर्वत है दूसरा हेमका पर्वत द्युतिमान् नाम है तीसरा कुमुद पर्वतहै १० चौथा पुष्पवान् नाम है पांचवाँ कुशेशयहै छठां हरिगिरि नाम है ये छः उत्तम पर्वत हैं ११ तिनके बीचमें विष्कम्भ पूर्वभाग से दुगुनाहै पहले वर्ष का औद्भिदनाम दूसरे का रेणुमण्डल १२ तीसरे का सुरथ चौथे का लम्बन पांचवेंका धृतिमत छठवेंका प्रभाकर १३ औरसातवें वर्षका कापिलनामहै ये सात वर्षलंबकहैं इनमें देवता गन्धर्व प्रजा आनन्द युक्त विहार और रमण करते हैं तिनमें कोई जन मरता नहीं है १४ न चोर और म्लेच्छ जाति कोई है सब जन गौरवर्ण और सुकुमार हैं १५ हे महा बुद्धिमान् द्विज श्रेष्ठो! शेष सब द्वीपों में जैसा सुनाहै तैसाही कहते हैं सुनिये १६ क्रौंचद्वीपमें क्रौंचनाम महा पर्वतहै क्रौंचसे पर वामनक वामनकसे पर अन्धकारक १७ अन्धकारक से पर पर्वतों में उत्तम मैनाक पर्वतहै मैनाकसे पर उत्तम गोविन्द पर्वत है १८ गोविन्दसे पर पुण्डरीक महापर्वतहै पुण्डरीक से पर दुन्दुभि स्वन कहाताहै १९ तिनके आगे दुगुना विष्कम्भ पर्वतहै अब तहां

के देशोंको कहते हैं कहतेहुये मुझसे सुनिये २० क्रौंचका कुशल देश वामनका मनोनुग मनोनुगसे पर उष्णनाम देशहै २१ उष्णसे पर प्रावरक प्रावरक से अन्धकारक अन्धकारक देशसे पर मुनि देश २२ और मुनि देशसे पर दुन्दुभिस्वन कहाताहै जो कि सिद्ध चारणों से युक्तहै और बहुधा गौरवर्ण वहां के जनहैं २३ ये देव गन्धर्वों से सेवित देश कहेगये पुष्करमें मणिरत्न युक्त पुष्कर नाम पर्वतहै २४ तहां पर प्रजापति देव नित्यही आप रहते हैं देवता और सब महर्षि तिनकी उपासना करते हैं २५ और द्विजोत्तम मन के अनुकूल वाणियोंसे पूजा करते हैं जम्बूद्वीपसे अनेकप्रकारके रत्न पैदा होते हैं २६ तिन सब द्वीपों में ब्राह्मण प्रजाओं की ब्रह्मचर्य सत्य और दमसे २७ आरोग्य आयुके प्रमाणसे दुगुनी दुगुनीहै तिन द्वीपों में ये देश २८ कहेगये हैं जिनमें एक धर्मही वर्तमानहै और प्रजापति ईश्वर आपही दण्ड लेकर २९ इनद्वीपों की रक्षा करते हुये सदैव स्थितरहते हैं और वहां के राजा पिता पितामह शिवजी ही हैं ३० हे द्विज श्रेष्ठ द्विजोंमें पण्डित विप्रोंमें श्रेष्ठो! शिवजी प्रजा-ओं की रक्षा करते और प्रजा आपही उपस्थित भोजन ३१ पके-हुयेको नित्यही भोजन करते हैं तिससे परलोककी संस्थिति महा शैल दिखाई देताहै ३२ जोकि चौगोल महा बुद्धिमान् सबसे परि-मण्डलहै तहां परलोक सम्मत चार दिग्गज स्थित रहते हैं वामन ऐरावत अंजन और सुप्रतीक जिनके नामहैं ३३ । ३४ तिस महाशैलके प्रमाण की संख्या हम नहीं करसक्के नित्यही तिरछा ऊपर और नीचे प्रमाण रहितहै ३५ तहां पर सब दिशाओं से वायु चलती है सम्बन्धहीन मुनि श्रेष्ठ ब्राह्मण तिनको ग्रहण करते हैं ३६ कमलकी समान महादीप्ति वाले पुष्करों से सैकड़ों प्रकार से खींचते हैं और नित्यही शीघ्र तिनको छोड़देते हैं मुख और नासि-कासे श्वास लेते हुये दिग्गजों से पवन जैसे छोड़ी जाती है तैसेही छोड़ते हैं तहां पर प्रजा आती और स्थित होती हैं ३७ । ३८ यह निर्माण समेत यथोद्दिष्ट संसार मैंने वर्णन किया इस पुण्य देनेवाले मनके अनुग पृथ्वी के मानको सुनकर ३९ श्रीमान् सिद्ध अर्थवाले

साधुओं को संमत तर जाता है और तिसकी आयु बल यश और तेज बढ़ताहै ४० जो व्रत धारणकर पर्व में इसके कहने को सुनता है तिसके पितृ पितामह प्रसन्न होते हैं ४१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेनवमोऽध्यायः ९ ॥

# दशवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर के पास वनमें नारदमुनि का आगमन और राजासे वशिष्ठ मुनि और दिलीप का संवाद कथन ॥

ऋषि बोले कि हेमहाभाग सूतजी! पृथ्वीका प्रमाण और नदियो की संस्थान आपसे सुनकर अमृतहीपान किया १ तिस भूमिमें पवित्र तीर्थ हमने सुने हैं तिन सबको जैसे फल करनेवालेहों कहिये हे महाप्राज्ञ! विशेष समेत आपसे सुनना चाहते हैं २ तब सूतजी बोले कि हे तपस्वियो! धन्य पुण्यकारी बड़े आख्यान को तुमलोगों ने पूंछा तिस पुराने आख्यान को यथायोग जैसा सुना है अपनी बुद्धिके अनुसार कहते हैं हे द्विजश्रेष्ठो! देवर्षि नारद और युधिष्ठिर के संवाद को सुनिये ३।४ राज्य हरजाने में महारथी पाण्डुके पुत्र महाभाग पाण्डव द्रौपदी समेत तिस वनमें वसते थे ५ तब महात्माब्राह्मी लक्ष्मीसे प्रकाशित अग्निके समान तेजस्वी देवर्षिनारद जीको पाण्डव देखते भये ६ तिन भाइयोंसे युक्त श्रीमान् युधिष्ठिर जी इस प्रकार शोभित होते थे जैसे स्वर्ग में प्रकाशित तेजवाले इन्द्र देवताओं से शोभित होते हैं ७ जैसे सावित्री देवोंको नहीं छोड़ती और सूर्यकी दीप्ति मेरु पर्वतको नहीं त्यागती तैसेही द्रौपदी जी धर्मसे पाण्डव पतियों को नहीं त्यागती भई ८ भगवान् नारद ऋषि युधिष्ठिर की पूजाको ग्रहण कर युक्तरूप प्रिय से धर्म्म पुत्र महात्मा धर्मराज युधिष्ठिर को समझाकर बोले कि हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ! कहिये क्या इच्छा है वह तुमको देवें ९।१० तब धर्म के पुत्र राजा युधिष्ठिर भाइयों समेत हाथ जोड़कर प्रणामकर देव सम्मित नारदजी से बोले ११ कि हे महाभाग! हे अच्छेव्रत करने वाले सबलोकों से पूजित! आपके प्रसन्न होने में आपके प्रसाद से

कृतार्थ मानते हैं १२ जो भाइयों समेत हमारे ऊपर आपने कृपा किया हे पापरहित मुनि श्रेष्ठ! हमारे हृदय के सन्देह के काटने के योग्य आप हैं १३ हे ब्रह्मन्! जो तीर्थ में तत्पर पृथिवी की प्रदक्षिणा करता है तिसको क्या फल होता है सम्पूर्ण आप कहने के योग्यहैं १४ तब नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! एकाग्रचित्त होकर सुनिये यह सब पूर्वसमयमें दिलीपने वशिष्ठजीसे सुनाहै १५ पूर्वकाल में राजाओं में श्रेष्ठ दिलीप गङ्गाजी के किनारे मुनि की नाईं धर्मके व्रत में स्थितहोकर बसते भये १६ हे महाराज! शुभ देश पुण्यकारी देवर्षियों से पूजित देवगन्धर्वों से सेवित गङ्गाद्वार में महातेजस्वी १७ परम दीप्तिवाले दिलीप पितृदेव और ऋषियों को विधिदृष्ट कर्मसे तर्पण करते भये १८ और महामन राजा किसी कालमें जपकरतेहुये भूतोंके समान उत्तम ऋषि वशिष्ठजीको देखते भये १९ तब लक्ष्मी से प्रकाशित पुरोहितजी को देखकर दिलीप अतुलहर्षको प्राप्तहो परम विस्मयको प्राप्तहोतेभये २० हे युधिष्ठिर महाराज धर्मधारियों में श्रेष्ठ! दिलीप उपस्थित वशिष्ठजीको विधिदृष्टकर्मसे पूजनकरतेभये २१ और पवित्र प्रयतमनहो शिरसे अर्घ्य ले तिन ब्रह्मर्षिश्रेष्ठसे नाम कहतेभये २२ कि हे अच्छेव्रत करनेवाले वशिष्ठजी! मैं आपका दास दिलीपहूं आपका कल्याणहो आपके दर्शनसे सब पापों से मैं छूटगया हूं २३ हे महाराज युधिष्ठिर! इसप्रकार मनुष्यों में श्रेष्ठ सत्यबोलनेवाले दिलीप कहकर हाथजोड़ कर चुपहोजातेभये २४ तब वशिष्ठमुनि स्वाध्यायसे कर्षित राजाओं में श्रेष्ठ दिलीप को नियम से देखकर प्रसन्नमन होजातेभये २५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेदशमोऽध्यायः १० ॥

## ग्यारहवां अध्याय ॥

### पुष्कर तीर्थका माहात्म्य वर्णन ॥

वशिष्ठजी बोले कि हे धर्म जाननेवाले महाभाग दिलीप! तुम्हारी इस प्रश्रयदम और सत्य से तुम्हारे ऊपर सब प्रकार से प्र-

सन्नहूं १ हे पापरहित पुत्र! जिस तुम्हारा इस प्रकारका यह धर्महै तुमने पितर तार दिये तिसीसे मुझको देखतेहो हमारे यजमानहो २ हे पापरहित राजन्! तुम्हारे ऊपर इस समय हमारी प्रीति बढ़ती है कहिये तुम्हारा क्याकरें जो कहो तिसके दाता हमहैं ३ तब दिलीप बोले कि हे वेदवेदाङ्ग के तत्त्वके जाननेवाले! हे सब लोकों से पूजित! जो मैंने प्रभु आपको देखा तो कियाहुआ मानताहूं ४ हे धर्म धारियों में श्रेष्ठ! जो आपने मेरे ऊपर कृपाकीहै तो हृदयके स्थित सन्देहको पूछताहूं वह मुझसे आप कहने के योग्यहैं ५ हे भगवन्! कुछ तीर्थ में जो मेरे धर्म संशयहै वह मैं अलग संकीर्तन आपसे सुनने की इच्छा करताहूं ६ हे द्विजसत्तम! हे विप्रर्षे! हे तपोधन! जो पृथिवी की प्रदक्षिणा करता है तिसको क्या फलहै वह हमसे कहिये ७ तब वसिष्ठजी बोले कि हे तात! तिन ऋषियों और मेरे परायण को मैं कहताहूं एकाग्र मन होकर तीर्थोंमें जो फलहै तिस को सुनिये ८ जिसके हाथ पांव मन अत्यन्त संयत हैं विद्या तप और यशहै वह तीर्थके फलको भोगताहै ९ दान लेनेसे हीन संतुष्ट नियत पवित्र और अहंकार से निवृत्तहो वह तीर्थके फलको भोगता है १० लड़ाई से रहित निराहार आहार न प्राप्त होनेवाला जितेन्द्रिय और जो सब दोषों से विमुक्तहो वह तीर्थके फलको भोगता है ११ हे राजेन्द्र क्रोधरहित सत्य शील दृढ़ व्रतवाला और प्राणियोंको अपने समान जानताहो वह तीर्थके फलको भोगता है १२ ऋषियोंने देवताओं से यथा क्रम यज्ञ कहीहैं और यथा तत्त्व मरने के पीछे वा इसीलोक में फल कहाहै १३ हे राजन्! वे यज्ञ दरिद्र से नहीं प्राप्त होसक्ते यज्ञोंमें बहुत उपकरण हैं अनेकप्रकार की सामग्रियोंका विस्तार है १४ ये राजाओं से वा धनवान् मनुष्यों से कहीं प्राप्त होसक्ती हैं एकात्मावाले साधन रहित धन हीन मनुष्य समूहों से नहीं प्राप्त होसक्ती हैं १५ हे जनोंके ईश्वर! हे पृथ्वी के स्वामी! जो दरिद्रों से प्राप्त होने में विधि समर्थ है और पुण्यकारी यज्ञोंके फलके समान है तिसको समझिये १६ हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ! यह ऋषियों को परमगुह्य है तीर्थों के जानेका पुण्य यज्ञों से

भी विशेष है १७ तीर्थ के गमन से तीन रात्र व्रतकर सोना और गऊ न देकर दरिद्र मनुष्यको १८ अग्निष्टोमादि बहुत दक्षिणावाली यज्ञोंको कर वह फल नहीं मिलता है जो तीर्थ के जानेसे मिलता है १९ मनुष्य लोकमें देवलोकके तीर्थ त्रैलोक्य में प्रसिद्ध पुष्कर को प्राप्त होकर देव देव समान होजाता है २० हे सूर्यवंश में उत्पन्न राजन्! जिन दश करोड़ सहस्र तीर्थोंका तीनों सन्ध्याओं में पुष्कर में सान्निध्य है २१ आदित्य वसु रुद्र साध्य मरुद्गण गन्धर्व और अप्सरा तहांपर प्राप्तहैं २२ हे द्विजो! हे महाराज! जहां देवता दैत्य और ब्रह्मर्षि तपकर बड़े पुण्य से दिव्ययोगको प्राप्त होगये २३ पुष्कर में मनसे भी जानेकी बुद्धिमान् मनुष्य इच्छाकरै तो सब पाप नाश होजाते हैं और स्वर्ग में पूजा जाताहै २४ हे महाभाग! इस तीर्थमें नित्यही परम प्रसन्न देव और दानवोंके सम्मत ब्रह्माजी बसते हैं २५ पुष्करों में देवता और ऋषि बड़े पुण्य से मुक्त परम सिद्धिको प्राप्त हुयेहैं २६ तहांपर जो पितृ और देवोंके पूजन में रत अभिषेक करता है उसको बुद्धिमान् अश्वमेध यज्ञसे दश गुणा कहते हैं २७ पुष्करारण्य में आश्रित होकर जो एक भी ब्राह्मण को भोजन करावे तो ब्रह्माके स्थान में स्थित पूजित लोकोंको वह प्राप्त होवे २८ हे राजन्! सन्ध्या और प्रातःकाल में जो हाथ जोड़कर पुष्करों को स्मरणकरै तिसने सब तीर्थोंमें स्पर्श किया २९ स्त्री वा पुरुषका जन्म पर्यन्त का जो पापहै वह पुष्कर में जानेही से सब नाश होजाता है ३० जैसे सब देवों के आदि मधुसूदन भगवान् हैं तैसेही तीर्थों में आदि पुष्कर कहाता है ३१ पुष्कर में नियत पवित्र होकर बारह वर्ष बसकर सब यज्ञों को प्राप्त होता है और ब्रह्मलोक को जाता है ३२ जो सौ वर्ष पूरे अग्निहोत्रकरै वा पुष्करमें एक कार्तिकी बसै तो दोनों का फल समान है ३३ पुष्कर में जानाही दुष्कर है पुष्कर में तपस्या दुष्कर है पुष्कर में दान दुष्कर है और पुष्कर में वास दुष्कर है ३४ तीन सुन्दर कँगूड़े हैं तीन झरने हैं पुष्कर आदि तीर्थ हैं तिसका कारण हम नहीं जानते हैं ३५ जो नियत और नियत भोजनकर बारह वर्ष बासकरै

वह सब पापों से छूटकर सब यज्ञों के फलको प्राप्त होवे ३६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेपुष्करतीर्थमाहात्म्यवर्णनं नामएकादशोऽध्यायः ११ ॥

# बारहवां अध्याय ॥

जम्बू मार्ग ढुलिकाश्रम अगस्त्याश्रम कन्याश्रम ययातिपतन महाकाल भद्रवट और गाणपत्य तीर्थका वर्णन ॥

वशिष्ठजी बोले कि हे राजन्! दिलीप प्रदक्षिण वर्त्तमान होकर जम्बू मार्गमें प्रवेशकरै पितृदेवर्षि पूजित जम्बू मार्गमें प्रवेश करने से १ अश्वमेध यज्ञके फलको पाता और विष्णुलोक को जाता है तहां कालमें पांच वा छः रात्रि बसकर २ दुर्गति को नहीं प्राप्त होता और अत्युत्तम सिद्धिको प्राप्त होताहै जम्बू मार्गसे उपावृत्त होकर ढुलिकाश्रम को जावे ३ तो दुर्गति को नहीं प्राप्त होवे और स्वर्ग लोकमें पूजित होवे पितृ और देवतों के पूजन में रत मनुष्य अगस्त्यके स्थानमें प्राप्तहो ४ तीन रात्रि बसकर अग्निष्टोम यज्ञके फल को प्राप्त होताहै साग वा फल खाकर श्रेष्ठ कौमार को प्राप्त होवे ५ फिर कन्याश्रम को प्राप्त होकर लोकमें पूजित श्री पुष्टको जावे फिर पुण्यकारी आद्यधर्मारण्य को जावे ६ हे विप्र! जहां प्रवेशमात्रही से निश्चय पापोंसे छूटजाता है फिर प्रयत नियत भोजनकर पितृदेवों को पूजनकर ७ सब काम समृद्ध यज्ञके फलको पाताहै फिर प्रदक्षिणाकर ययातिपतन को जावे ८ तहांपर निश्चय अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होवे फिर नियत नियतही भोजनकर महा काल को जावे ९ फिर कोटि तीर्थको स्पर्शकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होवे हे धर्म जाननेवाले! तिस पीछे महादेवजीके तीर्थ स्थान को जावे १० जिसका भद्रवट नामहै और तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध है तहां महादेवजीको प्राप्तहोकर सहस्र गौवोंके फलको प्राप्तहोवे ११ हे राजन्! महादेवजीके प्रसादसे समृद्धशत्रुरहित लक्ष्मीयुक्त गाणपत्यको प्राप्तहोवे १२ फिर तीनों लोकमें प्रसिद्ध नर्मदा नदी को प्राप्त होकर पितृ और देवोंको तर्पणकर अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्तहोवे १३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

# तेरहवाँ अध्याय ॥

नर्मदाजी का विस्तार पूर्वक माहात्म्यवर्णन ॥

युधिष्ठिर जी बोले हे द्विजों में उत्तम नारदजी! वशिष्ठजी ने राजा दिलीप से उत्तम तीर्थ पापरूपी पर्व्वत के नाश करनेवाले नर्मदानामसे प्रसिद्धको कहाहै अब फिर वशिष्ठजी के कहेहुये नर्मदा जी के माहात्म्य को सुननेकी इच्छा है सो हमसे कहिये १ । २ कैसे यह महापुण्यकारिणी सब ओर प्रसिद्ध नर्मदानाम से प्रसिद्ध नदी है तिस को हमसे कहिये ३ तब नारदजी बोले कि नदियों में श्रेष्ठ सब पापों के नाशकरनेवाली नर्मदा नदीहै यह स्थावर जंगम सब प्राणियों को तारती है ४ हे महाराज युधिष्ठिर ! वशिष्ठजी के कहे हुये नर्मदाजी के माहात्म्य को मैंने सुना है तिस सबको तुमसे कहताहूं ५ कनखल में पुण्यकारिणी गङ्गाजी हैं कुरुक्षेत्र में सरस्वती हैं गांव वा वन में सब जगह पुण्यकारिणी नर्मदाजी हैं ६ तीन दिन में सरस्वती का जल सात दिनमें यमुना का जल पवित्र करता है गङ्गाजी का जल शीघ्रही पवित्र करताहै और नर्मदाजी का जल दर्शनही से पवित्र करताहै ७ कलिंग देशके पश्चिम आधेमें अमरकण्टक पर्वतपर तीनों लोकमें पुण्यकारिणी रमणीय मनोरम नर्मदा जीहैं ८ देवता असुर गन्धर्व तपस्वी ऋषि तपकर परम सिद्धिको प्राप्तहुये हैं ९ तहाँ नियम में स्थित जितेन्द्रिय मनुष्य स्नानकर एक रात्रि बसकर सौ पीढ़ियों को तारदेता है १० जनेश्वर में मनुष्य स्नानकर यथाविधि पिण्डदेवे तो तिसके पितर प्रलय पर्यन्त तृप्त रहते हैं ११ पर्वतके चारों ओर रुद्र कोटि प्रतिष्ठित है तहाँ जो मनुष्य स्नानकर चन्दन और माला चढ़ाता है १२ तिसके ऊपर सब रुद्र कोटि निस्सन्देह प्रसन्न होजाते हैं पश्चिम के अन्त पर्वत में आपही महेश्वर देवहैं १३ तहाँ स्नानकर पवित्र होकर ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय विधिदृष्ट कर्मसे श्राद्धकरै १४ और तिल जल से तहाँहीं पितृ देवताओं को तर्पणकरै तो सातपीढ़ी तिसके स्वर्ग में रहें १५ और करनेवाला साठ सहस्रवर्ष अप्सराओं समेत दिव्य

स्त्रियों से युक्त सुन्दर चन्दन लगाये सुन्दर गहनों से भूषित स्वर्ग लोकमें रहे फिर स्वर्ग से भ्रष्ट होकर सुन्दर कुलमें उत्पन्नहोवे १६। १७ धनवान् दानी और धर्मात्मा होवे और फिर तिसतीर्थ को स्मरणकर तहाँ गमनकरै १८ तौ सौ पीढ़ियों को तारकर शिवलोकको जावे उत्तम नदी सौ योजनकी सुनी है १९ और दो योजनकी चौड़ीहै साठसहस्र तीर्थ और साठकरोड़ तीर्थ २० पर्वतके चारोंओर अमर कण्टकमें स्थितहैं ब्रह्मचारी पवित्र होकर क्रोधरहित जितेन्द्रिय २१ सब हिंसाओं से निवृत्त और सब प्राणियों के कल्याण में रत और अच्छे आचारयुक्त होकर क्षेत्रपालोंको जावे २२ हे राजन् पाण्डव युधिष्ठिर! तिसके पुण्यफलको एकाग्रचित्त होकर मुझसे सुनिये सौ सहस्र वर्ष स्वर्ग में आनन्द करै २३ अप्सराओं के समूहोंसे युक्त दिव्यस्त्रियोंसे सेवित देवलोकमें दिव्यचन्दन लगाकर सुन्दर गहनों से भूषित होकर २४ क्रीड़ाकरै और देवताओंसमेत आनन्दकरै फिर स्वर्ग से भ्रष्ट होकर वीर्यवान् राजा होवे २५ और अनेकप्रकार के रत्नों से विभूषित स्थानको प्राप्त होवे स्थान में दिव्यमणि जड़े हुये हीरा और मूंगाओं से भूषित खम्भेहों २६ चित्रकारी सहित दिव्य दासी और दास युक्तहों मतवारे हाथियों के शब्द और घोड़ों के शब्दों से २७ इन्द्रके स्थान की नाईं तिसका द्वार क्षोभयुक्तहो राज राजेश्वर श्रीमान् सब स्त्रियों का प्यारा २८ क्रीड़ा भोगयुक्त सब रोगों से हीन तिस स्थान में बसकर सौ वर्ष जीवे २९ जो अमरकण्टक में मरताहै तिसके भी इसी प्रकारका भोग होताहै अग्निके प्रवेश जल और विना भोजनके भी कष्ट नहीं पावे पर्वत और आकाश में जो कूदता है वह मनुष्य मनुष्यों का स्वामी होताहै ३०। ३१ तीन सहस्र कन्या एक वा और तिसके दूसरे स्थान में स्थित हों और प्रेषणको मांगें ३२ दिव्यभोगसे युक्त नाश रहित कालतक वह मनुष्य क्रीड़ाकरै समुद्र पर्यन्त पृथिवी में ऐसा नहीं होता ३३ जैसा अमर कण्टक पर्वत में होताहै पर्वतके पश्चिम में करोड़ तीर्थ जानने चाहिये ३४ तीनों लोकों में प्रसिद्ध जालेश्वर नाम रुद्रहैं तिनके पिण्ड देने और सन्ध्योपासन कर्मसे ३५ पितृ दश वर्षतक

तृप्त रहते हैं नर्मदा के दक्षिण में कपिला नाम महानदी है ३६ सरल और अर्जुन वृक्षों से आच्छादित समीपही स्थितहै पुण्यकारिणी महाभागा तीनों लोकमें प्रसिद्धहै ३७ हे राजन् युधिष्ठिर! तहां पर सौकरोड़ तीर्थ हैं यह पुराणमें सुनाहै सब कोटि गुणा होताहै ३८ तिसके किनारे जे वृक्ष कालके विपर्यय से गिरते हैं ते नर्मदाके जल से संयुक्त होकर श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होते हैं ३९ हे महाभाग! दूसरी शुभ विशल्यकरणा है तिसके किनारे मनुष्य स्नानकर क्षण मात्र में विशल्य होजाताहै ४० तहां सब देव समूह किन्नर बड़े सर्पों समेत यक्ष राक्षस गन्धर्व तपस्वी ऋषि ४१ तिस अमरकण्टक पर्वत में सब आते हैं तिन सब तपस्वी मुनियों से मिलकर ४२ पुण्यकारिणी नर्मदा संश्रित हुई और विशल्यानामनामही से महाभागा सब पापों के नाश करनेवाली उत्पन्न हुई ४३ हे राजन् ! तहां मनुष्य स्नानकर ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय होकर एक रात्रि बसकर सौ पीढ़ियों को तार देताहै ४४ कपिला और विशल्याको ईश्वरने लोकों के हित की कामनासे पुराणमें कहा है यह हमने सुनाहै ४५ तहां स्नानकर मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फल को प्राप्त होताहै और तिस तीर्थमें जो अनशन व्रत करताहै ४६ वह सब पापों से विशुद्ध आत्मा होकर इन्द्र लोकको जाताहै नर्मदामें पुराणमें जो मैंने सुनाहै ४७ तहां तहां स्नानकर मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै जे उत्तर किनारे बसते हैं वे इन्द्र लोकमें बसतेहैं ४८ हे युधिष्ठिर ! सरस्वती गङ्गा और नर्मदामें दान और स्नान समान हैं जैसे मुझसे महादेवजीने कहाहै ४९ जो अमर कण्टक पर्वतमें प्राणोंको छोड़ताहै वह सौ करोड़ वर्ष इन्द्रलोकमें रहताहै ५० नर्मदा का जल पुण्यकारी फेना और लहरियों से अलंकृत पवित्र और शिर से वन्दना करने के योग्यहै सब पापों से मनुष्य छूटजाताहै ५१ नर्मदा सब पुण्य करनेवाली ब्रह्महत्याके नाश करनेवाली है मनुष्य एक दिन रात्रि के बसने से ब्रह्म हत्या से छूटजाता है ५२ इसप्रकार पुण्यकारिणी रमणीय नर्मदाहै यह महानदी तीनों लोकोंको पवित्र करती है ५३ महापुण्यकारी वटेश्वर और तपोवन गंगाद्वारमें इन सब स्थानों में

जे अर्दित और व्रत करते हैं उनसे दशगुणा पुण्य नर्मदाके संगममें सुना है ५४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

## चौदहवां अध्याय ॥

बाणासुर के त्रिपुरसे व्याकुल देवों का शिवजी की स्तुति करना और शिवजी का उनको समझाकर नारद मुनिका बाणासुर के पास भेजना ॥

नारदजी बोले कि हे पाण्डव युधिष्ठिर! नर्मदानदी श्रेष्ठ पुण्य कारिणी तीनों में अत्यन्त पुण्ययुक्त महाभाग धर्म्म की कांक्षा करने वालों से विभक्तहै यज्ञोपवीत मात्रही विभक्तहैं हे राजाओं में श्रेष्ठ! तिनमें स्नानकर सब पापों से छूटजाताहै १। २ हे पाण्डु के पुत्र! जलेश्वर जो तीर्थ तीनों लोकमें प्रसिद्ध है तिसकी उत्पत्ति कहताहूं सुनिये ३ पूर्वसमयमें सब मुनि समूह और इन्द्र समेत सब देव समूह महात्मा देवदेव महेश्वरजीकी स्तुति करतेभये ४ और स्तुति करतेहुये जहां महेश्वर देवहैं तहां प्राप्त हुये और इन्द्र समेत देव समूह देवेशसे कहते भये कि हे प्रभो! हे विरूपाक्ष शिवजी! भयसे उद्विग्न हमलोगों की रक्षा कीजिये ५ तब महादेवजी बोले कि हे मुनि श्रेष्ठो! तुमलोगों का अच्छा आना हुआ किस लिये यहां पर आयेहो क्या दुःख कौन संताप और कहां से भय प्राप्त हुआ है ६ हे महाभागो! कहो यह हम जानने की इच्छा करते हैं जब रुद्रजी ने इसप्रकार कहा तो ऋषि कहतेभये ७ कि निश्चय घोर महावीर्यवान् दानव बलसे दर्पित बाण नाम प्रसिद्ध है जिसके त्रिपुर पुरहैं ८ वे पुर दिव्यहैं आकाशमें बसते और तिसके तेजसे घूमते हैं हे शिवजी! तिससे डरेहुये आपकी शरण में प्राप्तहैं ९ हे देवदेवेश! बड़े दुःखसे रक्षा कीजिये आपही श्रेष्ठ गति हैं इसप्रकार सब को प्रसन्न करनेको योग्यहैं १० हे शङ्कर! हे प्रभो! जिससे देवता अत्यन्तप्रसन्न सुखको प्राप्त हों और श्रेष्ठ निर्वृत्ति को प्राप्तहों वह करने के योग्यहो ११ तब महादेवजी बोले कि यह सब करेंगे क्लेशमतकरो थोड़ेही काल में तुमलोगों को सुख युक्त करेंगे १२ हे युधिष्ठिर तिन सब को

समझाकर नर्मदाके किनारे स्थित महादेवजी त्रिपुरके मारने की चिन्तना करतेभये १३ कि कैसे किसप्रकार से मुझसे त्रिपुर मारने के योग्य है इसप्रकार महादेवजी चिन्तनाकर तिसी समयमें नारद जी को स्मरण करतेभये तो स्मरणही से नारदजी उपस्थित होजाते भये १४ और बोले कि हे देव महादेवजी ! कहिये किसलिये मुझको स्मरण कियाहै क्या कार्य हमको करना चाहिये वह मुझसे कहिये १५ तब महादेवजी बोले कि हे नारदजी ! तहां जाइये जहां दानवेन्द्र बाण का त्रिपुरपुर है शीघ्रही जाइये यह कीजिये १६ स्वामी देव-ताओं की दीप्तिवाले स्त्रियां अप्सराओं के समानहैं तिनके तेजसे त्रिपुर आकाशमें घूमताहै १७ हे विप्रेन्द्र ! तहां जाकर अन्य सलाह को प्रेरणा कीजिये महादेवजीके वचन सुनकर अत्यन्त पराक्रमी मुनि १८ स्त्रियों के हृदय नाशने के लिये तिसपुरमें प्रवेशकरतेभये जो कि शोभा युक्त दिव्य अनेकप्रकार के रत्नों से शोभित १९ सौ योजन के लम्बे दो सौ योजनके चौड़े हैं फिर तहांपर बलसे दर्पित बाणासुर को देखतेभये २० जोकि माला कुण्डल केयूर और मुकुट से विराजितहार और रत्नों से युक्त चन्द्रके समान कान्तिसे विभू-षितहै २१ तिसकी स्त्रियां रत्नों से युक्त मनुष्य सुवर्ण से मण्डितहैं दानवेन्द्र महाबली नारदजी को देखकर उठकर २२ बोला कि हे द्विजश्रेष्ठ देवर्षि ! आप इससमयमें हमारे स्थानमें प्राप्त हुये हैं अर्घ पाद्य न्याय समेत कराइये २३ हे विप्र ! बहुत कालमें आयेहो इस आसन पर बैठिये इसप्रकार उपस्थित नारदजी की पूजा करतेभये तब बाणकी स्त्री महादेवी अनौपम्या नामवाली २४ बोली कि हे भगवन् ! मनुष्य लोकमें देवता किस व्रत नियम दान अथवा तपस्या से प्रसन्न होते हैं २५ तब नारदजी बोले कि जो वेदके पारगामी ब्राह्मणको तिलधेनु देताहै उसको सागर समेत नवद्वीपवाली पृथ्वी दीहुई होजाती है २६ और सूर्य करोड़के समान प्रकाशित सब का-मना देनेवाले विमानों से नाशरहित बहुत काल तक राज्य करता हुआ आनन्द करै २७ अँवरा कैथा केलेका वन कदम्ब चम्पक अशोक और अनेकप्रकार के वृक्ष २८ अष्टमी चतुर्थी दोनों द्वादशी

संक्रांति विषुवसंज्ञक संक्रांति दिन छिद्रमुख २९ ये सब पुण्यकारी हैं जो स्त्रियां इनमें व्रत करती हैं तिन धर्मयुक्तों का स्वर्ग में निस्संदेह वास होताहै ३० कलिकाल से निर्मुक्त सब पापसेहीन व्रतमें रत स्त्रियां और तपस्वी नहीं प्राप्त होते हैं ३१ हे अच्छे कटिवाली! ऐसा सुनकर यथेष्ट करने को योग्यहो तब नारदजी के वचन सुनकर रानी बोली ३२ कि हे विप्रेन्द्र! हे द्विजश्रेष्ठ! प्रसन्न होवो जो वाञ्छित हो वह दान ग्रहणकरो सोना मणि रत्न कपड़े और गहने और जो कुछ दुर्लभहो वह आपको मैं दूंगी ग्रहण कीजिये हरि और शिवजी प्रसन्नहों ३३ । ३४ तब नारदजी बोले कि हे भद्रे! और को दीजिये जो ब्राह्मण जीविका से क्षीणहो हम शील युक्तहैं और भक्तिही करते हैं ३५ हे राजन्! इसप्रकार तिन सब को मन हर वा उपदेशदे फिर नारदजी अपने स्थान को जाते भये ३६ और उन स्त्रियों का मन खिंच गया अन्य जगह मन होगया और महात्मा वाणासुर के पुरमें छिद्र उत्पन्न होगया ३७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

## पन्द्रहवां अध्याय ॥

शिवजीका अत्यन्त प्रचण्ड अग्निकर त्रिपुरको जलाना और वाणासुर को वर देना और अमरकण्टक पर्वत का माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजीबोले कि हे युधिष्ठिर! जो हमसे पूंछतेहो वह समझकर सुनो इस अन्तरमें रुद्रजी नर्मदाजी के किनारे स्थितहुये १ हरेश्वर नाम तीनोंलोकमें प्रसिद्ध स्थानमें महादेवजी त्रैपुरके मारने की चिन्तना करतेभये २ मन्दराचलको धनुष वासुकि को रस्सी वैशाख को स्थान और विष्णुजीको उत्तम वाणकर ३ आगे अग्नि स्थापित कर मुखमें वायु अर्पित करतेभये चारोंवेद घोड़े हुये सब देवमय रथ हुआ ४ पहिये में प्राप्त अश्विनीकुमार देव भये चक्रधारी भगवान् आपही अक्ष हुये इन्द्र आपही धनुप के अन्तमें हुये वाणमें कुवेरजी स्थित भये ५ यमराज दहिने हाथ में घोर काल बायें हाथ में हुये लोकमें प्रसिद्ध गन्धर्वोंको पहियों के आरों में लगाया ६ श्रेष्ठ रथमें

प्रजापति भये और ब्रह्माजी सारथिहुये इसप्रकार देवेशजी सर्वदेवमयरथकर ७ स्थाणुभूत होकर सहस्र वर्षतक स्थितरहे जब तीनों पुर मिलकर आकाशमें गये ८ तब तीन बाणसे त्रिपुरको विदारण करतेभये जब रुद्रजीने त्रिपुरके बाण मारा ९ तो स्त्रियां तेजसे भ्रष्ट होगईं तिनका बल नाश होगया और तिस पुरमें सहस्रों उत्पात प्रकट हुये १० त्रिपुरके नाश के लिये कालरूप शिवजी तिससमय में हुये काष्ठमय रूप हँसते भये ११ और चित्रकर्म से पलकें भी खोलते मूंदते भये स्वप्नमें वहांके मनुष्य आत्माको लाल कपड़े से विभूषित देखते भये और विपरीतही इन उत्पातों को देखते भये १२।१३ तिनके बल और बुद्धि शिवजी के क्रोधसे नाशहोगये युगके अन्तके समान संवर्तक नाम वायु महान् चलनेलगा १४ श्रेष्ठ अग्नि उत्तम अंगों में बाधा देनेलगा वृक्ष तहांके जलनेलगे कँगूरेगिरनेलगे १५ सब व्याकुल होगये हाहाकार होगया सब अचेत होगये सब टूटे हुये वन शीघ्रही जलतेभये १६ तिससे सब दीपित होगया शिखायुक्त बाणों से सब जलनेलगा वृक्ष बगीचों के खण्ड अनेक प्रकारके स्थान जलतेभये १७ यह प्रकाशित अग्नि दशदिशाओं में प्रवृत्त हुआ तब विभागसे दशोंदिशा शिलाओंको छोड़ती भईं १८ अत्यन्त घोर सहस्रों शिखायुक्त अग्नियों से जलनेलगीं सब टेसू के सदृश जलता हुआ पुर दिखाई देनेलगा १९ घरसे और घर में धुआंके मारे जाने को राक्षस समर्थ न हुये महादेवजी के कोपरूपी अग्निसे जलेहुये अत्यन्त दुःखित रोनेलगे २० सब दिशाओं में प्रदीप्त त्रिपुर पुर जलनेलगा महलों के शिखरों के अग्र सहस्रों गिरतेभये २१ अनेकप्रकार के रत्नों से विचित्र अनेकप्रकारके विमान और रम्य स्थान प्रज्वलित अग्निसे जलतेभये २२ वृक्षों के खण्डों में जनों के स्थानमें बाधादेते भये सब देवताओंके स्थानोंको जलाते भये २३ अग्निसे स्पर्श हुये राक्षस कष्ट पातेभये और अनेकप्रकार के स्वरों से रोतेभये तहां पर अंगारों की राशि गिरिकूट के सदृश दिखाई पड़ी २४ तब देवदेवेशकी स्तुति करनेलगे कि हे प्रभो! हमारी रक्षाकरो अग्निसे अत्यन्त पीड़ित परस्पर लपटकर २५

सैकड़ों सहस्रों दानव जलते भये हंस और चकई चकवों से युक्त कमल समेत कमलिनी भी जलती भई २६ पुरके वन और बावलियां अग्निसे जलनेलगीं जो बावलियाँ म्लानतारहित कमलों से आच्छादित सैकड़ों योजनों में विस्तीर्ण हैं २७ तहां पर रत्नों से भूषित अग्निसे जलेहुये गिरिकूट के सदृश महल ऐसे गिरतेभये जैसे तोय रहित मेघ गिरतेहैं २८ महादेवजी के कोपसे प्रेरित दया रहित अग्नि सहित स्त्री बालक वृद्ध गऊ पक्षी और घोड़ोंको जलाताभया २९ स्त्रियों समेत बहुत जन सोतेही रहगये वे पुत्र को अत्यन्त लपटकर शिवजी से जलादियेगये ३० फिर प्रज्वलित तिस पुरमें अप्सराओं के समान स्त्रियाँ अग्निकी ज्वाला से हृत पृथ्वी में गिरती भईं ३१ कोई सुन्दर नेत्रवाली स्त्री मोतियों की पंक्तियों से विभूषित धुयें से व्याकुल अग्निकी शिखासे पीड़ित जब चेतयुक्त हुई ३२ तब पुत्रकी चिन्तनाकर पृथ्वी में गिरपड़ी कोई सुवर्ण के वर्णके सदृश नीलवर्णके रत्नोंसे विभूषित ३३ धुयेंसे व्याकुल पृथ्वी में गिरपड़ी और स्त्री बालकोंका हाथ पकड़कर बालकों समेत जल गई ३४ फिर अग्निने और दिव्यरूप मद से विमोहित स्त्री देखी तब वह स्त्री शिरसे हाथ जोड़कर अग्नि से प्रार्थना करती भई ३५ कि जो तुम अपकारी पुरुषों में वैरकी इच्छा करतेहो तो घररूपी पंजर की कोकिलारूप स्त्रियां क्या अपराध करती हैं ३६ हे पाप! निर्दय निर्लज्ज स्त्रीके ऊपर कौन तुम्हारा कोपहै न निपुणता न लज्जा न सत्य है पवित्रता से हीनहौ ३७ अनेकरूप वर्णों से युक्त उपलभ्य स्त्रियां हैं क्या तुमने नहीं सुनाहै कि संसारमें सब स्त्रियां मारने योग्य नहींहैं ३८ हे अग्निजी! किन्तु तुममें यही गुण हैं कि स्त्रियोंको पीड़ाहो स्त्रियोंके ऊपर करुणा दया और दाक्षिण्य नहींहै ३९ म्लेच्छ भी स्त्रीको देखकर दया करते हैं तुम म्लेच्छों को भी कष्ट दुर्निवार्य और अचेतनहौ ४० ये गुण नाश करने को हैं हे दुराचार! हम स्त्रियोंको क्या मारडालोगे ४१ हे दुष्ट! निर्घृण निर्लज्ज अग्नि मन्दभाग्यक दुराचार निर्दय तुम निराशहौ और बालकों को भी जलातेहौ ४२ इसप्रकार बहुत स्वर से बककर विलाप करती

भई और अत्यन्त क्रोधित बालकके शोकसे मोहित स्त्रियां रोतीभई कि दयाहीन अत्यन्त क्रुद्ध अग्नि सब शत्रुकी नाईं जलाता है तलैया में जलमें कुँवों में अग्नि है ४३ । ४४ हे म्लेच्छ ! हमको जलाकर तुम कौन गतिको प्राप्त होगे इसप्रकार तिन स्त्रियोंके प्रलाप करतेही अग्नि बोला ४५ कि अपने वश हम नहीं हैं विनाश करेंगे हम आज्ञाके करनेवाले हैं दया करनेवाले नहीं हैं ४६ यहांपर क्रोधयुक्त इच्छापूर्वक विचरते हैं तदनन्तर महातेजस्वी बाणासुर त्रिपुर को जलता हुआ देखकर ४७ आसन में स्थित होकर इसप्रकार बोला कि हम अल्प बलवाले दुराचारी देवोंसे नाश कियेगये हैं महादेव जीके निवेदित हैं ४८ महात्मा शंकरजीने विना परीक्षाकर हमको जलाया है महादेवजी को छोड़कर और शत्रु हमको मारने को नहीं है ४९ फिर उठकर त्रिभुवनके ईश्वरको लिंग बनाकर शिरसे प्रणामकर मित्रोंको त्यागकर आपही पुरके द्वारसे निकला ५० और अत्यन्त विचित्र रत्न अनेक प्रकारकी स्त्रियों को भी त्यागकर शिरसे लिंगको ग्रहणकर नगर मण्डल में स्थापित कर देताभया ५१ और देवदेवेश त्रैलोक्यके स्वामी शिवजीकी स्तुति करता भया कि हे हर ! हे शंकर ! आपसे हम जलाये गये जो हम वधके योग्यहैं ५२ तो हे महादेवजी ! आपके प्रसाद से हमारा लिंग नाशको न प्राप्तहो सदैव परम भक्तिसे लिंग पूजित है ५३ यद्यपि आपसे हम मारने के योग्यहैं तथापि हमारा लिंग न नाशहो यह प्राप्त होनेके योग्य हैं हम आपके चरणों को ग्रहण करते हैं ५४ जन्म जन्ममें आपके चरणों में निरतहैं फिर तोटकछन्द से परमेश्वर देव की स्तुति करने लगा ५५ कि हे शिव ! हे शंकर ! सब करनेवाले आपके नमस्कार हैं हे भव ! हे भीम ! हे महेश शिवजी ! आपके नमस्कार हैं हे काम की देहके नाश करनेवाले ! हे त्रिपुरके अन्त करनेवाले ! हे अंधकके चूर्ण करनेवाले ! ५६ हे स्त्रियोंके प्रिय ! हे कामके नाश करनेवाले ! आपके नमस्कारहैं सुर सिद्धगणों से नमस्कार कियेगये आपके नमस्कार हैं घोड़े वानर सिंह और हाथियोंके समान मुखवाले अत्यन्त छोटे और अत्यन्त बड़े मुखवाले गण ५७ असुरों से प्राप्त होने

को नहीं समर्थहो और बहुत सैकड़ों शरीरों से व्यथा युक्त नहींहो हे भगवन्! बहुत भक्तिमान् से प्रणतहो हे चलायमान चन्द्रमा की कला धारण करनेवाले! हे देव! आपके नमस्कार हैं ५८ सहित पुत्र स्त्री समूह धनोंसे निरन्तर जय दीजिये आपका स्मरण करते हैं और बहुत सैकड़ों शरीरों से व्यथा युक्तहूं और इस समय में महानरक की गतिको प्राप्तहूं ५९ जो हमारी पापगतिको नहीं निवृत्त करता विशुद्ध पवित्र कर्मको नहीं त्यागता दिशाओं में घूमघूम कर दया करता है यह भ्रम कुबुद्धि को निवारण करता है ६० जो मनुष्य दिव्य तोटक छन्दवाले स्तोत्र को प्रयत पवित्र मन होकर पढ़ता है तिसको यह स्तोत्र इसप्रकार वर देनेवाला होताहै जैसे बाणासुर को महादेवजी वरदाता हुये हैं ६१ इस महादिव्य स्तोत्र को सुनकर आपही देव महेश्वरजी तिससमय में तिसके ऊपर प्रसन्न होजाते हैं ६२ हे वत्स! हे दानव! तुम न डरो पुत्र पौत्र सपत्नियां स्त्री और भृत्यजनों समेत सुवर्णही में स्थितहो ६३ हे बाणासुर! आजसे लेकर तुम देवताओं से भी अवध्य होगे फिर देवदेव ने और वरदिया ६४ कि अक्षय और अव्यय और निर्भय होकर संसार में विचरो तिस पीछे महादेवजी ने अग्निको निवारण किया ६५ और महात्माजी ने बाणासुरको तृतीय रक्षित किया तो रुद्रजी के तेजके प्रभाव से नित्यही आकाश में घूमता भया ६६ इसप्रकार महात्मा शंकरजी ने ज्वालाकी मालासे प्रदीप्त त्रिपुरको जलाया तो वह पृथ्वी में गिरपड़ा ६७ तिसके एकको त्रिपुरांतक श्रीशैल में गिराया और अमरकण्टक पर्व्वत में द्वितीयको गिराया ६८ हे राजन्! त्रिपुरके जल जानेसे रुद्रकोटि प्रतिष्ठित रही और जलते हुये तहां गिराया तिससे ज्वालेश्वर कहाया ६९ तिसकी दिव्य ज्वाला ऊपर से स्वर्गको चलीगई तब देव असुर किन्नरोंने हाहाकार शब्द किया ७० तिस बाणको रुद्रजीने उत्तम माहेश्वर पुरमें रोका इसप्रकार जो तिस अमरकण्टक पर्व्वत में जाताहै वह १०३० सहस्र करोड़ वर्ष चौदहों भुवनोंको अच्छी प्रकार भोगकर ७१। ७२ फिर पृथ्वी में प्राप्त होकर धर्मात्मा राजा होताहै और एक छत्रसे पृथ्वी में राज्य

भोगताहै इसमें सन्देह नहींहै ७३ हे महाराज! यह अमरकण्टक सब ओर पुण्यकारी है चन्द्रमा और सूर्यके ग्रहण में जो अमर कण्टक पर्वतको जाताहै ७४ उसको बुद्धिमान् अश्वमेधयज्ञ से दश गुणा फल कहते हैं तहांपर महेश्वरजी को देखकर स्वर्ग्गलोक को मनुष्य जाताहै ७५ सूर्य ग्रहण में काशीमें जो फल होताहै वह सब पुण्य अमरकण्टक पर्वत में होता है ७६ और पुण्डरीक यज्ञके फल को मनुष्य प्राप्त होताहै तिस अमरकण्टक पर्वतमें ज्वालेश्वर नामहैं ७७ तहां स्नानकर मनुष्य स्वर्गको जातेहैं और जे वहां मरते हैं तिनका फिर जन्म नहीं होताहै ज्वालेश्वर में चन्द्रमा और सूर्यके ग्रहण में भक्तिसे प्राणोंको त्याग करता है तिसका फल सुनिये अमरकण्टक पर्वत में अमर नाम वे देव होतेहैं और प्रलय पर्यन्त शिवलोकको प्राप्त होतेहैं अमरेश्वर देवके पर्वतके जलके किनारे ७८। ८० अच्छे व्रत करनेवाले करोड़ों मुख्य ऋषि तपस्या करते हैं हे राजन्! अमरकण्टक क्षेत्र चारों ओर योजनभर है ८१ विना कामना वा कामनासहित नर्मदाके शुभ जलमें स्नानकर मनुष्य पापों से छूटकर शिवलोक को जाताहै ८२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेपञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

# सोलहवां अध्याय ॥

## कावेरी और नर्मदा के संगमका माहात्म्य वर्णन ॥

ऋषि बोले कि वे महात्मा महाजन युधिष्ठिर पर सब तपस्वी ऋषि नारदजी से पूछतेभये १ कि हे भगवन्! कावेरी और नर्मदाके संगममें सत्य बड़े फलको मनुष्यों के कल्याण के लिये और हमारी वृद्धि के लिये कहिये २ जे पाप करनेवाले मनुष्य सदैव पाप में रत होते हैं वे सब पापों से छूटकर परमपद को जाते हैं यह हम जानने की इच्छा करते हैं आप कहने के योग्यहो ३ तब नारदजी बोले कि युधिष्ठिर सहित सब ऋषियो सुनो कावेरी और नर्मदा के संगममें सत्य पराक्रमी कुबेरजी महा यज्ञकर इस तीर्थ को पाकर साम्राज्यसे अधिक होगये ४ और हे महाराज! सिद्धिको प्राप्त हुये वह हमारे

कहते हुये सुनिये जहां पर संसार में प्रसिद्ध नर्मदा में कावेरी का संगमहै ५ तहां स्नानकर पवित्र होकर सत्य पराक्रमी यक्षोंमें श्रेष्ठ कुबेरजी दिव्य सौवर्ष बड़ी तपस्या करते भये ६ तब महादेवजी उत्तम वरदेते भये कि हे महासत्त्व! यक्ष कुबेरजो इच्छाहो वह वर मांगो यथेष्ट कार्य जो मन में वर्तमानहो कहो ७ तब कुबेरजी बोले कि हे देवेश शिवजी! यदि प्रसन्नहो और जो मुझको वरदिया चाहते हो तो सब यक्षोंका स्वामी आदि करनेवाला होऊं ८ कुबेरके वचन सुनकर महेश्वर देव प्रसन्नहोकर ऐसाहीहो यह कहकर तहांहीं अन्तर्द्धानहोगये ९ तब वरपाके यक्ष शीघ्रही यक्ष कुलको गये और सब यक्षोंमें श्रेष्ठोंसे अभिषेकको पाकर राजाहोगये १० कावेरीका संगम तहां पर सब पापोंका नाशकरनेवालाहै जे मनुष्य नहीं जानते हैं वे वंचितहैं इस में सन्देह नहीं है ११ तिससे सब यत्नसे मनुष्य तहां स्नान करै कावेरी और महानदी नर्मदा महापुण्य कारिणी हैं १२ हे राजेन्द्र! तहां स्नानकर शिवजी को पूजनकरै तो अश्वमेध यज्ञके फलको पाकर रुद्रलोकमें प्राप्तहोवे १३ और जो अग्नि में प्रवेशकर जाताहै और जो भोजन नहीं करता है तिसकी अनिवर्तिका गतिहोती है जैसे मुझसे महादेवजी ने कहा है १४ साठकरोड़ साठसहस्र वर्ष श्रेष्ठ स्त्रियों से सेवितहोकर स्वर्ग में शिवजी की नाईं आनन्द करै १५ और रुद्रलोक में स्थित होकर जहां जहां जावे वहां आनन्दकरै फिर पुण्यके नाशहोनेसे परिभ्रष्ट धर्मात्मा राजाहोवे १६ जो कि भोगवान् धर्म्मशील कुल में उत्पन्न महान् होवे तहाँ जलपानकर अच्छे प्रकार चान्द्रायण के फलको प्राप्तहोवे १७ जे मनुष्यशुभजलको पीते हैं वेस्वर्गकोजाते हैं मनुष्य गंगा और यमुना के संगम में जिसफलको प्राप्तहोते हैं १८ कावेरी के संगम में स्नानकर वह फल तिसको होता है हे राजेन्द्र! इस प्रकार कावेरी का संगम महान् पुण्यकारी बड़े फलका दाता और सब पापों का नाश करनेवालाहै १९॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेषोडशोऽध्यायः १६॥
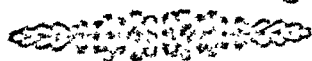
# सत्रहवाँ अध्याय ॥

पत्रेश्वर, गर्जन, मेघराव, ब्रह्मावर्त, अंगारेश्वर, कपिला, कुण्डलेश्वर, पिप्पलेश्वर, विमलेश्वर, पुष्करिणी और नर्मदानदीकामहात्म्यवर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर ! उत्तर नर्मदानदी के किनारे योजनभरका लम्बा सब पाप हरनेवाला श्रेष्ठपत्रेश्वर नाम से प्रसिद्धतीर्थ है १ तहाँ स्नानकर मनुष्य देवताओं समेत आनन्द करताहै पांचसहस्र वर्ष कामरूप धारण कर क्रीड़ा करताहै २ फिर गर्जनकोजावे जहां मेघ उपस्थितहैं और तिस तीर्थ के प्रभाव से इन्द्रजित् नाम प्राप्तहुआहै ३ तदनन्तर मेघराव तीर्थ को जावे जहाँ मेघगर्जते हैं और मेघनादगण तहाँपर श्रेष्ठ सम्पन्नताको प्राप्तहुआहै ४ फिर ब्रह्मावर्त तीर्थकोजावे तहाँपर नित्यही ब्रह्माजी स्थितरहते हैं ५ तहाँ स्नानकर ब्रह्मलोकको मनुष्यजाता है तिस पीछे नियत नियतही भोजनकर अंगारेश्वर तीर्थकोजावे ६ तो सब पापों से विशुद्धआत्मा होकर रुद्रलोकको जावे तदनन्तर उत्तम कपिला तीर्थ को जावे ७ तहां स्नानकर मनुष्य गोदान के फलको प्राप्तहोताहै फिर देवर्षिगणों से सेवित काञ्चीतीर्थ कोजावे ८ तहां स्नानकर मनुष्य गोलोकको प्राप्तहोताहै तिसपीछे उत्तम कुण्डलेश्वरकोजावे ९ तहांपर पार्वती समेत महादेवजी स्थितरहते हैं तहाँ स्नानकर देवताओं से भी अवध्यहोताहै १० तदनन्तर सब पापनाशकरनेवाले पिप्पलेश्वरकोजावे तहाँजाने से शिवलोक को प्राप्त होताहै ११ फिर निर्मल विमलेश्वरको जावे तहाँपर रम्य देवशिखा ईश्वर से निपातितहै १२ तहाँप्राणोंको त्यागकर शिवलोककोप्राप्त होताहै तदनन्तर पुष्करिणी को जावे और तहाँस्नान करै १३ तो स्नानमात्रही में मनुष्य इन्द्र के आधे आसनको प्राप्तहोताहै नदियों में श्रेष्ठ नर्मदा जी शिवजी के देहसे निकली हैं १४ और स्थावर जंगम सब प्राणियों को तारती हैं सब देवों के अतिदेव ईश्वर महात्माने १५ ऋषिसमूहों और विशेषकर हमसे कहाहै यह मुनियोंसे स्तुतिकीगई श्रेष्ठ नर्मदानदीहै १६ और लोकों के कल्याण

की कामना से शिवजी के देह से निकली हैं नित्यही सब पापों के नाश करनेवाली और सब प्राणियों से नमस्कार कीगई हैं १७ देवता गंधर्व और अप्सराओं से स्तुतिकीगई हैं पुण्यकारी जलवाली आद्य और समुद्रगामिनी के नमस्कार हैं १८ महादेवजी के देहसे निकली ऋषिगणों से नमस्कार कीगई के नमस्कार हैं धर्म से युक्त श्रेष्ठ मुखवाली देवगणों से एक वन्दित के नमस्कार हैं १९ सब पवित्र पावनके नमस्कार हैं सब संसारके अत्यन्तपूजितके नमस्कार हैं जो मनुष्य नित्यही शुद्धहोकर इस स्तोत्रको पढ़ताहै २० तो ब्राह्मण वेदको प्राप्तहोताहै क्षत्रिय विजयपाताहै वैश्य लाभ को प्राप्तहोताहै और शूद्र शुभगतिको प्राप्तहोताहै २१ नित्यही स्मरण करने से अन्नकी इच्छा करनेवाला अन्नको प्राप्तहोता है महेश्वरदेव आपही नित्य नर्मदाजीको सेवन करते हैं तिससे ब्रह्महत्या के नाश करनेवाली पुण्यकारीनदी जानने योग्य हैं २२॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेसप्तदशोऽध्यायः १७॥

## अठारहवाँ अध्याय॥

शूलभेद, भीमेश्वर, नर्मदेश्वर, आदित्येश्वर, मल्लिकेश्वर, वरुणेश्वर, नीराजेश्वरऔर कोटितीर्थादिकों का वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! काम क्रोधसे वर्जित ब्रह्मादिक देवता और तपस्वी ऋषि नर्मदाजीको सेवनकरते हैं १ तिसमें देवका शूल पृथ्वी में गिराहुआ देखकर तिसका पुण्य महात्मा शंकरजीने कहाहै २ शूलभेद नाम करके प्रसिद्ध बड़ा पुण्यकारी तीर्थहै तहां स्नानकर सहस्रगऊ के फलको प्राप्तहोवे ३ और जो तिस तीर्थ में त्रिरात्र करताहै और महादेवजी को पूजन करता है तिसका फिर जन्म नहीं होताहै ४ फिर भीमेश्वरको जावे तिस पीछे उत्तम नर्मदेश्वरको जावे फिर महापुण्यकारी आदित्येश्वरको जावे वहां घी और शहदसे मल्लिकेश्वर को पूजकर जन्मके फलको प्राप्तहोवे फिर वरुणेश्वर और उत्तमनीराजेश्वर को देखे ६ तो पद्मायतन के दर्शन से तिसको सब तीर्थ का फल होवे तिस पीछे जहां

युद्ध साधितहुआ है तहां जावे ७ कोटि तीर्थ नाम प्रसिद्ध है जहां असुरोंने युद्धकियाहै जहां वे बलसे दर्पित दानव नाशभयेहैं ८ और मारेगये वे तिनके शिरोंको ग्रहण करतेहैं जब पहले आये तो उन्होंने देव शूलपाणि महादेवजी को स्थापित किया ९ तहांहीं कोटि का नाश हुआहै तिससे कोटीश्वर कहाये तिस तीर्थके दर्शन से देह समेत स्वर्ग को प्राप्त होवे १० तब इन्द्रने क्षुद्रभाव से वज्रकील से यंत्रित किया तबसे लेकर मनुष्योंका स्वर्ग में जाना निवारित हुआ ११ घृतसमेत नारियल देकर अन्त में प्रदक्षिणा देकर सब ओर देव को शिरमें लेकर धारणकरे तो सब कामना से पूर्ण राजा होवे १२ फिर मरकर रुद्रभाव को प्राप्त होवे यहां फिर नहीं उत्पन्न होवे और स्वर्गको जाकर तहां राज्यकरै १३ मनुष्य त्रयोदशी में महादेवजीकी उपासनाकर स्नानमात्रही से तहां सब यज्ञके फलको प्राप्त होवे १४ फिर मनुष्यों के पाप नाशने के लिये परमशोभन उत्तम अगस्त्येश्वर तीर्थको जावे १५ तहां स्नानकर मनुष्य ब्रह्महत्या से छूटजाता है कार्तिक महीनाके कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में १६ समाधि में स्थित जितेन्द्रियमनुष्य घी से देवको स्नान करावै तो इक्कीस पीढ़ी समेत ईश्वरके पदसे नहीं छूटताहै १७ गऊ जूता छतुरी कम्बल और ब्राह्मणोंको भोजनदेवे तो सबकोटि गुणा होवे १८ तदनन्तर अत्युत्तम रविस्तव तीर्थको जावे तहां स्नानकर मनुष्य सिंहासनपर बैठताहै १९ नर्मदाजी के दक्षिण किनारे इन्द्रका प्रसिद्ध तीर्थ है तहां एक रात्रि व्रतकर स्नानकरै २० और यथा न्याय स्नानकर भगवान् को पूजनकरै तिसको सहस्र गऊके देनेका फल होताहै और विष्णुलोक को जाताहै २१ तदनन्तर मनुष्यों के सब पाप नाशनेवाले ऋषि तीर्थको जावे तहां स्नानकर मनुष्य शिवलोक में प्राप्त होताहै २२ तहांहीं परम शोभन नारदजीका तीर्थहै मनुष्य स्नानकर सहस्रगऊ के फलको प्राप्त होताहै २३ फिर पूर्वकालके ब्रह्माके निर्मित देवतीर्थ को जावै तहां स्नानकर मनुष्य ब्रह्मलोकमें प्राप्त होताहै २४ तदनन्तर पूर्वकालके देवों के स्थापित अमरकण्टक तीर्थको जावे तहां स्नानकर मनुष्य सहस्र गऊके फलको प्राप्त होताहै २५ फिर उत्तम

वामनेश्वर को जावे तहां वामनजी को देखकर ब्रह्महत्या से छूटजाता है २६ तदनन्तर पुरुष निश्चय ईशानेश ऋषि तीर्थको जावे और वटेश्वरको वहां देखकर जन्मके फलको प्राप्त होवे २७ फिर सब व्याधिके नाश करनेवाले भीमेश्वरको जावे तहां स्नानकर मनुष्य सब दुःखसे छूटजाता है २८ तिस पीछे उत्तम वारणेश्वर को जावे तहां स्नानकर मनुष्य सब दुःखसे छूटजाता है २९ फिर सोमतीर्थ को जावे वहां उत्तम चन्द्रमा को देखकर तहां स्नानकर परम भक्ति से युक्त मनुष्य ३० तिसी क्षणसे दिव्य देहमें स्थित होकर बहुत कालतक महादेवजी की नाईं आनन्दकरै और साठ सहस्र वर्ष शिव लोकमें प्राप्तरहे ३१ फिर उत्तम पिंगलेश्वर को जावे वहां एक दिन रात्रिके व्रतसे त्रिरात्रके फलको प्राप्त होवे ३२ तिस तीर्थमें जो क-पिला गऊ देताहै तो जितने गऊ और बछड़े के रोम होतेहैं ३३ तितने सहस्र वर्ष शिवलोक में प्राप्त होताहै और जो तहांपर प्राणों को छोड़ता है ३४ तो जबतक चन्द्रमा और सूर्य रहते हैं तबतक नाशरहित कालतक आनन्दित रहतेहैं नर्मदाजी के किनारे जो मनु-ष्य स्थित रहते हैं ३५ वे मरकर पुण्यात्माओं की नाईं स्वर्गको प्राप्त होतेहैं फिर सुरभिकेश्वर, नारक और कोटिकेश्वर को जावे ३६ तहां गंगावतरण दिनमें निस्सन्देह पुण्य होताहै तदनन्तर नन्दि तीर्थको जाकर तहां स्नानकरै ३७ तिसके ऊपर नंदीशजी प्रसन्न होतेहैं और चन्द्रलोक में प्राप्त होताहै फिर तपोवन द्वीपेश्वर व्यास तीर्थको जावे ३८ तहां पूर्वकाल में व्याससे डरी हुई और हुंकार करने से निवर्तित दक्षिण से चलीगई ३९ तिस तीर्थमें जो प्रकाशित प्रदक्षिणा करताहै तिसके ऊपर व्यासजी प्रसन्न होतेहैं और वाञ्छित फलको प्राप्त होताहै ४० जो वेदीसमेत देवको सूत्र से आच्छादित करता है तो जैसे शिवजी तैसेही स्नानकर वह मनुष्य नाशरहित कालतक क्रीड़ा करता है ४१ फिर उत्तम एरंडी तीर्थ को जावे वहां संगम में म-नुष्य सब पापों से छूटजाता है ४२ एरंडी पापके नाश करनेवाली तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध है अथवा कुवार महीनेकी शुक्लपक्षकी अष्टमी में ४३ व्रतमें परायण मनुष्य पवित्रहोकर स्नानकर ४४ एक ब्राह्मण

को भोजन करावै तो करोड़ ब्राह्मण भोजन का फल होजाता है
एरंडी के संगम में भक्तिभाव से युक्त ४५ मिट्टीको शिरमें लगाकर
नर्मदाके जलसे मिलेहुये जलमें स्नानकर सब पापोंसे छूटजाता है
४६ और जो तिस तीर्थमें प्रदक्षिणा करता है तिसने सातों द्वीपकी
पृथ्वी प्रदक्षिणा करडाली ४७ फिर सुवर्ण तिलक तीर्थमें स्नानकर
सोना देकर सोनेके विमान से शिवलोक में जाताहै ४८ फिर काल
पाकर स्वर्ग से च्युत होकर वीर्यवान् राजा होताहै तदनन्तर इक्षु
नदीके संगम में जावे ४९ जोकि त्रैलोक्य में प्रसिद्ध दिव्य है तहां
पर शिवजी रहते हैं वहां स्नानकर मनुष्य गणेशजी के लोक को
प्राप्त होताहै ५० फिर सब पापके नाश करनेवाले स्कन्द तीर्थ को
जावे तो स्नान मात्रही से जन्म पर्यन्त के पाप नाश होजाते हैं ५१
तिस पीछे आंगिरस तीर्थको जावे और तहां स्नानकरै तो तिसको
सहस्र गऊ देनेका फल होताहै और शिवलोक में प्राप्त होताहै ५२
फिर सब पापके नाश करनेवाले लांगल तीर्थको जावे तहां जाकर
स्नानकरै तो ५३ सात जन्मके कियेहुये पापोंसे छूटजाता है इसमें
संशय नहीं है तिस पीछे सर्वतीर्थ अत्युत्तम वटेश्वरको जावे ५४ तहां
स्नानकर मनुष्य सहस्र गऊके देनेके फलको प्राप्त होताहै तदनन्तर
सब पापके नाश करनेवाले श्रेष्ठ संगमेश्वर तीर्थ को जावे ५५ तहां
स्नानकर मनुष्य निस्सन्देह राज्यको प्राप्त होताहै फिर भद्र तीर्थको
प्राप्त होकर जो मनुष्य दान देताहै ५६ तिसके तीर्थके प्रभावसे सब
कोटि गुणाहोताहै कोईस्त्री तहां स्नानकरै ५७ तो पार्वतीजीके समान
वह निस्सन्देह इन्द्रको प्राप्त होवे फिर अंगारेश्वरको जावे और तहां
स्नानकरै ५८ तो स्नान मात्रहीसे मनुष्य शिवलोक में प्राप्त होताहै
अंगारकी चौथि में तहां स्नानकरै ५९ तो भगवान् के कियेहुये
शासनवाला मनुष्य नाशरहित कालतक आनन्दकरै और अयोनि
संगम में स्नानकर योनिके स्थानको नहीं देखता है ६० फिर पाण्ड
वेश्वरक को जाकर तहां स्नान करै तो देवता असुरों से अवध्य
होकर नाशरहितकालतक आनन्द करै ६१ फिर क्रीड़ाभोग से
युक्त होकर विष्णुलोकको जाकर तहां महाभोगों को भोगकर मृत्यु

लोक में राजा होता है ६२ तिसपीछे कंवोतिकेश्वर को जाकर तहां स्नान करै उत्तरायण सूर्यको प्राप्तहोकर जो इच्छाकरै तिसको वह प्राप्तहोवै ६३ फिर चन्द्रभागा को जाकर तहां स्नान करै तो स्नान मात्रही से मनुष्य चन्द्रलोक में प्राप्त होता है ६४ तदनन्तर इन्द्र से पूजित देवों से नमस्कार किये हुये इन्द्र के प्रसिद्ध तीर्थको जावे ६५ तहां स्नानकर मनुष्य सोनादान दे अथवा नीलवर्णकी दीप्ति-वाले वैलको जो छोड़े ६६ तो बैल और बछियों के जितनेरोम होते हैं तितने सहस्रवर्ष मनुष्य शिवपुर में बसता है ६७ फिर स्वर्गसे परिभ्रष्ट होकर वीर्यवान् राजा होता है और श्वेतवर्ण के सहस्रों घोड़ोंका ६८ मनुष्य लोकमें तिस तीर्थके प्रभाव से स्वामी होताहै तदनन्तर अत्युत्तम ब्रह्मावर्त्त को जावे ६९ तहां स्नानकर मनुष्य पितृ देवताओं को तर्प्पण करै और एक रात्रि बसकर विधिपूर्वक पिण्ड देवे ७० तो जैसे कन्याके सूर्यमें नाशरहित इकट्ठा कियाहुआ पुण्य होताहै तैसाही पुण्य होवे फिर उत्तम कपिलातीर्थ को जावे ७१ तहां स्नानकर जो मनुष्य कपिलागऊ देता है वह सम्पूर्ण पृथिवी को देकर जो फल होताहै तिस फलको प्राप्त होताहै ७२ नर्मदेश्वर से श्रेष्ठतीर्थ न हुआ है न होगा तहां स्नान कर मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ७३ तहां सब में प्राप्त पृथ्वी में सब लक्षण से पूर्ण सब व्याधि से वर्जित राजा होता है ७४ नर्मदा के उत्तर किनारे परमशोभन रम्य ईश्वर से भावित आदि-त्यायतनतीर्थ है ७५ तहां स्नानकर शक्ति से दान देवे तो तिस तीर्थ के प्रभाव से दान नाशरहित होताहै ७६ जो दरिद्री रोगयुक्त और पाप कर्म करनेवाले हैं वे सब पापों से छूटकर सूर्य लोकको जाते हैं ७७ माघमास के शुक्ल पक्षकी सप्तमी में जो जितेन्द्रिय अन्न रहित होकर स्थानमें वसताहै ७८ वह रोग युक्त कालमें अन्धा और वहरा नहीं होताहै सुभग रूप युक्त और स्त्रियों को प्यारा होताहै ७९ यह मार्कण्डेय मुनिसे भाषित महा पुण्यकारी तीर्थ है जे इस तीर्थमें नहीं जाते हैं वे निस्संदेहवंचितहैं ८० तदनन्तर मासेश्वर को जावे और तहाँ स्नान करै तो स्नान करनेही से मनुष्य स्वर्गलोकको प्राप्त

होवे ८१ और सब लोकमें स्थित होकर जब तक चौदहों इन्द्रहैं तब तक आनन्द करै फिर समीपसे नागेश्वर तपोवनमें स्थित होकर ८२ तहां स्नानकर पवित्र होकर एकाग्र चित्त होवे तो बहुत नाग कन्या-ओं से नाश रहित काल तक क्रीड़ा करै ८३ फिर कुबेर भवनको जावे जहां कुबेर स्थित हैं कालेश्वर श्रेष्ठ तीर्थहै जहाँ कुबेरजी प्रसन्न किये गये हैं ८४ जहां स्नानकर सब सम्पदाओं को प्राप्त होता है फिर पश्चिममें उत्तम मरुतालयको जावे ८५ और तहां स्नानकर पवित्र होकर एकाग्र चित्त हो बुद्धिमान् सोना और शक्तिके अनुसार अन्न देवे ८६ तो पुष्पक विमान पर चढ़कर वायु लोकको जावे फिर हे युधिष्ठिर ! माघ मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में हमारे तीर्थ को जावे और तहां स्नानकरै फिर रात्रि में भोजन करै तो योनि के सं-कट को न प्राप्त होवे ८७ । ८८ फिर अहल्या तीर्थ को जावे और तहां स्नानकरै तो स्नानमात्रही करने से मनुष्य अप्सराओं समेत आनन्द करताहै ८९ पारमेश्वरमें तपकर अहल्या मुक्ति को प्राप्त हुई है चैत्रमास के शुक्लपक्षकी त्रयोदशी में ९० तिस कामदेवके दिनमें अहल्याको पूजै तो जहां मनुष्य उत्पन्न होवे तहां प्यारा होवे ९१ स्त्री को प्यारा लक्ष्मी युक्त दूसरे कामदेवकी नाईं सुन्दर हो फिर इन्द्रके प्रसिद्ध तीर्थ अयोध्याजीको प्राप्तहोकर ९२ मनुष्य स्नान मात्रही करने से सहस्र गऊके फल को प्राप्त होता है तिस पीछे सोमतीर्थ को जावे और स्नानमात्रही करै ९३ तो स्नानही करने से मनुष्य सब पापों से छूटजाताहै सोमग्रहमें पापका नाश करनेवाला ९४ तीनोंलोकमें प्रसिद्ध महा फल देनेवाला सोमतीर्थ है जो तिस तीर्थ में चान्द्रायण व्रत करताहै ९५ वह सब पापों से शुद्ध आत्मा होकर चन्द्रलोकको जाताहै अग्निके प्रवेशमें जल में अथवा विना भोजन में ९६ सोमतीर्थ में जो मरता है वह मनुष्य लोकमें नहीं उत्पन्न होता है फिर स्तम्भ तीर्थ को जावे और तहां स्नानकरै ९७ तो स्नान मात्रही करने से मनुष्य चन्द्रलोकमें प्राप्त होताहै तदनन्तर अत्युत्तम विष्णुतीर्थको जावे ९८ जो कि योधनी पुरनामसे प्रसिद्ध है तहां भगवान् ने करोड़ों असुरों से युद्ध किया

है ९९ और तहां पर तीर्थ उत्पन्न हुआहै यहां विष्णुजी प्रसन्न होते हैं दिन रात्रि के बसने से ब्रह्महत्या को दूर करते हैं १०० तिस पीछे उत्तम तापसेश्वरको जावे जो कि अमोहक नाम से प्रसिद्धहै तहांपर जो पितरों को तर्पण करै १०१ और पौर्णमासी अमावास्यामें विधिपूर्वक श्राद्धकरै तहां स्नानकर मनुष्य पितरोंको पिण्डदेवे १०२ तहां पर हाथी के समान शिला जलमें स्थित हैं तिसमें पिण्ड देवे और वैशाखमें विशेषकर देवे १०३ तो पितर तबतक तृप्त रहते हैं जब तक पृथ्वी स्थित रहती है फिर अत्युत्तम सिद्धेश्वर को जावे १०४ तहां जानेसे गणेशजी के समीप प्राप्त होताहै तिस पीछे जहां जनार्दनलिङ्गहै तहां जावे १०५ तहां स्नानकर विष्णुलोकमें प्राप्त होता है नर्मदा के दक्षिण किनारे परम शोभनतीर्थ है १०६ तहां पर महान् काम देव आपही तपस्या करते भये दिव्य सहस्रवर्ष महादेवजीकी उपासना करतेभये १०७ फिर महात्मा शङ्करजीने समाधि से जगकर जलादिया श्वेत पर्वोपम और शुक्ल पर्व में हुताश १०८ ये सब कुसुमेश्वर में स्थित जलाये गये फिर दिव्य सहस्र वर्ष से पार्वती समेत महादेवजी तिनके ऊपर प्रसन्न हुये जो कि वर के दाता हैं फिर नर्मदाजी के किनारे स्थित तिन सब को मोक्ष देकर १०९। ११० तिस तीर्थ के प्रभाव से फिर देव भावको प्राप्त हुये आप के प्रसाद से हे महादेवजी! तीर्थ उत्तम होवे १११ दिशाओं में चारों ओर आधा योजन विस्तृत होवे तिस तीर्थमें व्रतमें परायण मनुष्य स्नानकर ११२ काम देवके रूप से शिवलोक में प्राप्त होता है यमराजसे अग्निमें और कामदेव से वायुके लिये ११३ तपस्याकर तहां हीं पूर्वकालमें प्राप्त भये अन्धोन तीर्थ के समीप ११४ स्नान दान भोजन और पिण्डदान अग्निवेश जल अथवा अनाशनमें करै ११५ और अर्द्ध योधनमें जो मरै तिसकी अनिवर्तिका गति होती है श्रेष्ठ मनुष्य त्रैयंबक जलसे स्नानकरै ११६ और अंधोन मूलमें विधिपूर्वक पिण्ड देवे तो तिसके पितर जबतक चन्द्रमा और सूर्य रहते हैं तबतक तृप्त रहते हैं ११७ उत्तरायण सूर्य के प्राप्त होने में तहां जो स्नान करताहै पुरुष वा स्त्री जो हो पवित्र होकर स्थानमें बसता

है ११८ और सिद्धेश्वर देवजीको पूजन प्रातःकाल में करताहै वह सज्जनों की गति को प्राप्त होताहै जितना कि सब महायज्ञोंसे फल नहीं होता तितना होताहै ११९ जब तीर्थ काल से रूपवान् सुभग वह मनुष्य होताहै तब समुद्रान्त मृत्युलोकमें राजा होताहै १२० क्षेत्रपाल दण्डपाल महाबल और कर्णकुण्डल को विना देखे तिस मनुष्य की वृथा यात्रा होती है १२१ यह तीर्थ का फल जानकर सब देवता प्राप्त हुये फूलों की वर्षा करनेलगे और कुसुमेश्वरजीकी स्तुति करनेलगे १२२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

## उन्नीसवां अध्याय ॥

### भार्गवेश और शुक्लतीर्थ का माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी बोले कि फिर भक्तिसे भार्गवेशको जावे जहाँपर विष्णु देवसे हुङ्कारितदानव प्रलय को प्राप्तहुयेहैं १ हे पाण्डुनन्दन राजाओंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर! तहां स्नानकर सब पापों से छूटजाता है अब शुक्लतीर्थ की उत्पत्ति सुनिये २ रम्य अनेक प्रकार की धातुओं से विचित्रित तरुण सूर्यके समान प्रकाशित तप्त सोनेके समान हीरा और स्फटिकमणिकी सीढ़ीवाले चित्रपट्ट शिलातल वाले सुवर्णमय दिव्य अनेक प्रकार के कमलों से शोभायमान हिमवान् के शिखर में ३ । ४ बैठेहुये सब जाननेवाले प्रभु नाश रहित लोकोंके ऊपर दया करनेवाले शान्तगण समूहों से युक्त स्कन्दनन्दी महाकाल और वीरभद्र समेत पार्व्वती सहित देव महादेवजी से मार्कण्डजी पूछतेभये ५ । ६ कि हे देवदेव महादेव! हे इन्द्र! कामादिकों से स्तुति कियेगये संसार के डरसे डरेहुये हम से सुखका उपाय कहिये ७ हे भगवन्! हे भूतकाल! और भविष्यकाल के स्वामी हे महेश्वरजी! सब पाप नाश करनेवाले तीर्थों के परमतीर्थको कहिये ८ तब महादेवजी बोले कि हे विप्र! हे महाभाग! हे सब शास्त्रों में निपुण! ऋषिसमूहों से युक्त स्नानादि करके आप जाइये ९ मनु अत्रि याज्ञवल्क्य काश्यप अंगिरा यम आपस्तम्ब संवर्त कात्यायन बृह-

स्पति १० नारद और गौतमजी में धर्मकी कांचा करनेवाले पूछते हैं पुण्यकारिणी गंगा कनखल में हैं प्रयाग पुष्कर गया ११ और कुरुक्षेत्र ये सूर्य्यग्रहण में पुण्यकारी हैं दिन वा रात्रि में शुक्लतीर्थ महाफल देनेवाला है १२ दर्शन स्पर्शन स्नान ध्यान तपस्या होम और व्रतसे शुक्लतीर्थ बड़ेफल देनेवाला है १३ शुक्लतीर्थ महापुण्यकारी है और नदीमें स्थित है माणिक्यनाम राजर्षि तहांपर सिद्धिको प्राप्तहुये हैं १४ यह क्षेत्र योजन भरमें स्थित उत्पन्न है शुक्लतीर्थ महापुण्यकारी और सब पाप नाश करनेवाला है १५ वृक्षके अग्रसे देखने से ब्रह्महत्या को दूर करता है हे ऋषियों में श्रेष्ठ! हम यहां पार्व्वती समेत स्थित हैं १६ निर्मल वैशाख महीने के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में कैलास से हम निकलकर तहां स्थित हुयेहैं १७ देवता किन्नर गन्धर्व सिद्ध विद्याधर गण अप्सरा नाग सब देवता प्राप्त हुयेहैं १८ सब कामना देनेवाले विमानों से आकाश में स्थित धर्मकी कांक्षा करनेवाले शुक्लतीर्थमें आयेहैं १९ जैसे धोबीसे जलसे कपड़ा सफ़ेद होजाता है तैसेही जन्मपर्य्यन्त का इकट्ठा कियाहुआ पाप शुक्लतीर्थ में नाश होजाता है २० हे ऋषि श्रेष्ठ मार्कण्डजी! स्नान और दान महापुण्यकारी हैं शुक्लतीर्थसे श्रेष्ठ तीर्थ न हुआ है और न होगा २१ मनुष्य पूर्व अवस्था में पाप कर्मोंको कर शुक्लतीर्थ में दिन रात्रिके व्रतसे पापोंको दूर करता है २२ तपस्या ब्रह्मचर्य यज्ञ वा दानसे पाप नाश होजाते हैं दान से जो पुष्टि होती है वह सैकड़ों यज्ञोंसे नहीं होती है २३ कार्त्तिक महीना के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में व्रतकर घीसे देव परमेश्वर को स्नान करावै २४ तो इकीस पीढ़ीसे युक्त महादेवजी के पदसे नहीं गिरता है ऋषि और सिद्धों से सेवित शुक्लतीर्थ श्रेष्ठतीर्थ है २५ तहां स्नानकर फिर जन्म नहीं होताहै शुक्लतीर्थ में स्नानकर शिव जीको पूजन करै २६ नाच गानआदि मंगलों से तहां जागरण करावै प्रातःकाल शुक्लतीर्थ में स्नान और देवताओं का पूजन करै २७ और पीछेसे शिवजी के व्रतमें परायण पवित्र होकर आचार्य को भोजन करावै भोजन यथाशक्ति से करावै वित्तशाठ्य न करै २८

फिर प्रदक्षिणा कर धीरेधीरे देवजी के समीप जावै इस प्रकार जो करता है तिसके पुण्यफल को सुनिये २९ सुन्दर विमान पर चढ़कर अप्सरा समूहों से स्तुति को प्राप्त शिवजीके समान बलसेयुक्त होकर प्रलय पर्यन्त स्थिर रहे ३० शुक्लतीर्थ में जो स्त्री शुभ सुवर्ण को देतीहै घीसे देवको स्नान कराती वा कुमार की पूजन करती है ३१ इस प्रकार जो भक्तिसे करतीहै तिसके पुण्यफल को सुनिये देवलोक में स्थित जबतक चौदहों इन्द्र रहते हैं तबतक आनन्द करै ३२ अयन वा चतुर्दशी संक्रान्ति विषुवसंज्ञक संक्रान्तिमें स्नान कर व्रत समेत आत्मा को जीतकर एकाग्रचित्त होकर ३३ यथा शक्तिसे दानदेवे तो हरि और शिवजी प्रसन्न होतेहैं शुक्लतीर्थ के प्रभाव से सब नाशरहित होता है ३४ अनाथ दुर्गत ब्राह्मण वा स्वामी सहित को जो तीर्थमें बिवाह करादेता है तिसके पुण्यफल सुनिये ३५ जितनी जिसके रोमोंकी गिनती होती है और तिसके उत्पन्न कुलोंमें जितने रोम होतेहैं तितने सहस्र वर्ष शिवलोक में प्राप्त होता है ३६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेऊनविंशोऽध्यायः १९ ॥

## बीसवां अध्याय ॥

नरकतीर्थ गोतीर्थ कपिलातीर्थ ऋषितीर्थ
गणेश्वर और गंगावदनादि तीर्थों का वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे पांडुनन्दन राजेंद्र युधिष्ठिर! फिर नरकतीर्थ को जावे और तहां स्नानकरै तो स्नानमात्रहीसे मनुष्य तहां नरकको देखता है इसतीर्थ का माहात्म्य तुम सुनो तिसतीर्थ में जितनीहड्डियां छोड़ताहै १।२ सबनाश होजाती हैं और रूपवान् मनुष्यहोताहै तिसपीछे गोतीर्थ को जावे और देखे तो पापसे छूटजाताहै ३ तदनन्तर उत्तम कपिलातीर्थ को जावे और तहांस्नानकर मनुष्य सहस्रगऊ के फलको प्राप्तहोवे ४ ज्येष्ठमासकी चतुर्दशी प्राप्तहोने में विशेष कर तहां व्रतकर मनुष्य भक्ति से जो कपिलागऊ देता है ५ घी से दीपजलाकर घीसे शिवजी को स्नानकरावै और घी समे

नारियलदेकर अन्तमें प्रदक्षिणाकर ६ घंटा और गहनासमेत जो कपिलाको देताहै वह शिवजी के समान मनुष्य होकर फिर यहां नहीं उत्पन्नहोताहै ७ अंगारक चतुर्थीका दिन प्राप्तहोने में विशेष कर भक्ति से शिवजीको स्नानकराकर ब्राह्मणों को भोजन देवे ८ अंगारकनवमी में और अमावास्या में यत्न से स्नानकरावै तो रूपवान् और सुभग होवे ९ घीसे लिंग को स्नानकराकर भक्ति से ब्राह्मणों को पूजनकरै तो पुष्पक विमान से सहस्रों से युक्तहोकर १० शिव जीके पदको प्राप्तहोवे यहां न प्राप्तहोवे और महादेवजीकी नाईं नाशरहित कालतक आनन्दकरै ११ जबकर्म संयोग से मनुष्यलोक में प्राप्त होतो धर्मात्मारूपवान् और बलवान्राजाहोवे १२ तद-नन्तर अत्युत्तम ऋषितीर्थ को जावे जहां तृण विन्दु ऋषिशाप से जलकर स्थितहैं १३ तिसतीर्थ के प्रभावसे ब्राह्मणपाप से छूटजाता है तिसपीछे अत्युत्तम गणेश्वर को जावे १४ श्रावण महीना के कृष्णपक्षकी चतुर्दशी के प्राप्तहोने में तहां स्नानमात्र कर मनुष्य शिवलोकमें प्राप्त होताहै १५ पितरों को तर्पणकर तीनों ऋण से छूट जाताहै गणेश्वर जीके समीपमें उत्तम गंगावदनतीर्थहै १६ तहां कामनारहित वा कामना सहित मनुष्य स्नानकर जन्मभर के किये हुये पापोंसे निस्संदेह छूटजाताहै १७ सदैव पर्वदिनमें तहां स्नान करै और पितरों को तर्पण करै तो तीनों ऋण से छूटजावे १८ प्रयागमें जो फल महात्मा शंकर जीने देखाहै वह सब पुण्य गंगाजीमें सूर्य ग्रहणमें होता है १९ तिसके समीपही दूरनहीं पश्चिमस्थानमें तीनोंलोक में प्रसिद्ध दशाश्वमेधिक नाम तीर्थ है २० भाद्रपद महीने की अमावास्या में एकरात्रि रहकर मनुष्य स्नानकर जहां शंकरजी रहते हैं तहांजाताहै २१ सदैव पर्व के दिनमें तहांस्नानकरै और पितरों को तर्पणकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोवे २२ दशाश्वमेध से पश्चिम ब्राह्मणों में श्रेष्ठ भृगुजी दिव्य सहस्र वर्ष ईश्वरजी की उपासना करते भये २३ और वांबीमें स्थित रहे दक्षिण स्थानरहा तब पार्वती जी और महादेवजीको बड़ा आश्चर्यहुआ २४ पार्वती जी महादेवजी से पूंछती भई कि यहां कौन स्थित है

देवता वा दानवहैं हे महेश्वर जी! कहिये २५ तब महादेवजी बोले कि हे प्रिये! द्विजोमें श्रेष्ठ ऋषियों में श्रेष्ठ भृगुनाम मुनि समाधिमें स्थित होकर हमारा ध्यानकरतेहैं और वरमांगते हैं २६ तब हँस करपार्वती जी महादेवजी से बोलीं कि धूमावर्त शिखा होगई है अ-बतक आपप्रसन्ननहीं हैं तिसीसे आपदुराराध्य हैं इसमें संदेह न करनाचाहिये २७ तब महादेवजी बोले कि हेमहादेवि! नहीं जाना जाताहै यह क्रोध से चेष्टित है यथा तथ्य दिखलावेंगे तुम्हारा प्रि-यकरतेहैं २८ तबमहादेवजी ने धर्मरूप बैलको स्मरण किया स्मरण करने से नंदी जी शीघ्रही उपस्थित हुये २९ और मनुष्य की वाणी बोले कि हे प्रभो! आज्ञा दीजिये तब महादेवजीने कहा कि बांबियों से ब्राह्मण आच्छादित है इसको पृथ्वी में गिराइये ३० तब योगमें स्थित और ध्यान करते हुये मुनिजी को नन्दीने गिरादिया तो उसी क्षणसे क्रोधसे संतप्त होकर मुनिजी ने हाथ उठाया ३१ और इस प्रकार बोले कि हे नन्दी! तुम कहां जातेहो हे बैल! तुझ पापी को हम प्रत्यक्षही मारते हैं ३२ तब ब्राह्मण धर्षित हुये और नन्दी जी आकाशमें प्राप्तहुये हे राजन्! नन्दीजी आकाश में दि-खाई दिये यह उत्तम अद्भुतहै ३३ तदनन्तर महादेवजी हँसे और ऋषि आगे स्थित हुये और शिवजी का तीसरा नेत्र देखकर वैलक्ष्यसे पृथ्वी में गिरे ३४ और पृथ्वीहीमें दण्डवत् प्रणामकर शिवजीकी स्तुति करने लगे कि हे भुवनों के स्वामी भूतों के नाथ संसार के उत्पन्न करने वाले! दिव्यरूपभूत आपके नमस्कार कर कुछ विज्ञापित करते हैं ३५ हे नाथ! आपके गुण समूहों के कहने को कौन मनुष्य समर्थ होता है कदाचित् वासुकि जिसके सहस्र मुखहों वह समर्थ होसके ३६ हे भुवनों के स्वामी! हे वंदना करने के योग्य भगवन्! हे शङ्कर जी! आपकी भक्तिसे आपकी स्तुति में परायण हूं और आपके चर-णों में गिरा हुआ हूं क्षमाकर मेरे ऊपर प्रसन्न हूजिये ३७ हे देव! हे भुवनों के पति! हे भुवनों के ईश्वर! पालन उत्पत्ति और नाश में सत्त्व रज और तम आपही हैं आपको छोड़कर कोई और देवता नहीं है ३८ यम नियम यज्ञ दान वेदके अभ्यासके अवधारण के

उद्योग से आपकी भक्तिके सब यह कलाके सहस्र अंशसे योग्य नहीं है ३९ उत्कृष्ट रस रसायन खड्ग अंजन पादुकादि सिद्धि आपके प्रणतों के चिह्न इस जन्म में प्रकट दिखाई देते हैं ४० हे देव! हे नाथ! शठता के भावसे नमते हो यद्यपि धर्मकी इच्छा करने वालों को तुम देतेहो संसारके नाश करनेवाली भक्ति मोक्षके लिये रची है ४१ पराई स्त्री और पराये द्रव्यमें रत अनादर दुःख और शोकसे संतप्त पराये सुखके देखने में परायण मेरी हे परमेश्वर! रक्षा कीजिये ४२ हे देव! हे देवोंके स्वामी! अलीक अभिमान से दग्ध क्षणभंगी विभव से विलसित क्रूर कुपथ के अभिमुख गिरे हुये मेरी रक्षाकीजिये ४३ हे शङ्करजी! दीन इन्द्रियगण सार्थ बन्धुजनों से आशा पूरित है तिसपर भी तुच्छ है क्या मुझ मूर्ख की आप विडम्बना करते हैं ४४ हे महादेवजी! शीघ्रही तृष्णाको हरिये नित्य रहनेवाली हृदय में वसनेवाली लक्ष्मी को मुझेदीजिये मद मोह पाशों को काटिये और मुझे तारिये ४५ इस सिद्धि के देने वाले दिव्यकरुणाभ्युदयनाम स्तोत्रको जो भक्तियुक्त होकर पढ़ता है तिसके ऊपर इसप्रकार प्रसन्नहोते हैं जैसे भृगुजी के ऊपर शिव जी प्रसन्नहुयेहैं ४६ तब महादेवजी बोले कि हे विप्र भृगुजी! हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहैं मनोवाञ्छित वरमांगिये पार्वती समेत महादेवजी भृगुजी के वरदेने में तत्परहुये ४७ तब भृगुजी बोले कि हे देवों के स्वामी! यदि आप प्रसन्नहैं और मुझे वरदेना चाहतेहैं तो इसी प्रकारसे रुद्रवेदी होवे यह मुझे दीजिये ४८ तब महादेवजी बोले कि हे विप्रों में श्रेष्ठ भृगुजी! ऐसाही होवे क्रोध स्थान होगा पिता और पुत्रका एक वाक्य नहीं होगा ४९ तबसे लेकर किन्नरों समेत ब्रह्मादिक सब देवता भृगुजी के तीर्थ की उपासना करने लगे जहां पर महादेवजी प्रसन्न हुये हैं ५० तिस तीर्थ के दर्शन से शीघ्रही मनुष्य पापसे छूटजाताहै पराये वश या अपने वश जो प्राणी वहां पर मरते हैं ५१ तिनकी गुह्य अतिगुह्य की गति निस्संशय होती है यह क्षेत्र अत्यन्त भारी और सब पाप नाशकरने वाला है ५२ तहां स्नानकर स्वर्ग को जातेहैं और जो मरतेहैं उनका फिर जन्म

नहीं होता है जूता छतुरी अन्न सोना ५३ और यथाशक्तिसे भोजन ब्राह्मणों को देना चाहिये देनेवाले का नाशरहित फल होता है जो मनुष्य इच्छासे सूर्यग्रहण में दान देता है ५४ और तीर्थ में स्नान और दान करता है वह तिसका नाश रहितहोता है और चन्द्रमा और सूर्य्य के ग्रहण में अत्युत्तम वृषोत्सर्ग को करता है वह भी नाशरहित होता है ५५ हे राजन् ! विष्णुजी की माया से मोहित मूर्ख मनुष्य नर्मदाजी में स्थित दिव्य वृषतीर्थ को नहीं जानते हैं ५६ जो मनुष्य भृगुतीर्थ के माहात्म्य को एकबार सुनता है वह सब पापों से छूटकर शिवलोक को जाता है ५७ फिर हे राजेन्द्र ! उत्तम गौतमेश्वर तीर्थ को जावे तहां व्रत में परायण मनुष्य स्नान कर ५८ सुवर्ण के विमान से ब्रह्मलोक को जाता है तिसपीछे वृष से धौत धौतपापतीर्थ को जावे ५९ जो कि नर्मदाजी में स्थित सब पापों का नाश करनेवाला है तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर ब्रह्म-हत्याको दूर करदेता है ६० हे महाराज ! तिस तीर्थ में जो प्राण त्याग करताहै वह चारभुजा और तीन नेत्रका होकर शिवजीकेस-मान बलवाला होता है ६१ और दशहज़ार कल्पतक बसता है फिर बड़ेकाल से पृथ्वी में प्राप्त होकर पृथ्वी भरका एकही राजा होता है ६२ फिर हे राजेन्द्र ! उत्तम एरण्डी तीर्थ को जावे वहां मार्कण्डेय जीसे भाषित प्रयाग में जो फल देखा है ६३ वह फल स्नानही मात्र करने से मनुष्य पाताहै भाद्रपद महीने के शुक्लपक्ष की अष्टमी को ६४ एक रात्रि रहकर तहां स्नान करै तो यमराज के दूतों से न बाधित होकर इन्द्रलोक को जाता है ६५ फिर जहां जनार्दन सिद्ध हैं तहां जावे वह सब पापों का नाश करनेवाला हि-रण्यद्वीप नाम से प्रसिद्ध है ६६ हे राजन् ! हे राजेन्द्र ! तहां स्नान कर मनुष्य धनवान् और रूपवान् होता है फिर बड़ेभारी कनखल तीर्थ को जावे ६७ तिस तीर्थ में गरुड़जी ने तपस्या की है सब लोकों में प्रसिद्ध है योगिनी तहाँहीं स्थित है ६८ योगियोंके साथ क्रीड़ा करती है और शिवजी समेत नाच करती है तहां स्नानकर मनुष्य शिवलोक में प्राप्त होता है ६९ तदनन्तर अत्युत्तम ईश

तीर्थ को जावे तहांपर ईशजी विनिर्मुक्त होकर निस्संशय ऊर्ध्व को प्राप्तहुये हैं ७० फिर जहां जनार्दन सिद्ध हैं तहां को जावे शूकर जीका रूप धारणकर अचिन्त्य परमेश्वर जहांपर स्थित हैं ७१ वराह तीर्थमें मनुष्य विशेषकर द्वादशी में स्नान कर विष्णुलोकको प्राप्त होताहै नरक को नहीं जाताहै ७२ तदनन्तर अत्युत्तम सोम तीर्थको जावे विशेषकर पौर्णमासी में तहां स्नान करै ७३ ईशानजी के नमस्कार करे तो बलिजी तिसके ऊपर प्रसन्न होते हैं फिर दिव्य अन्तरिक्ष में दिखाई देनेवाला हरिश्चन्द्र पुरहै ७४ जो कि चक्रध्वज समावृत्त में सुप्त नागरिके तनमें है और नर्मदाजीके जल के वेगसे रुरु कच्छों से सेवित है ७५ तिस तीर्थ में निवास करै विष्णुजी महादेवजी से कहते हैं कि द्वीपेश्वरमें मनुष्य स्नान कर बहुल सुवर्ण को प्राप्त होताहै ७६ फिर रुद्र कन्या संगम में जावे तहां स्नान मात्रही करने से मनुष्य देवीजी के स्थान को प्राप्त होताहै ७७ तिस पीछे सब देवोंसे नमस्कार कियेगये देवतीर्थ को जावे तहां स्नानकर देवताओं समेत आनन्द करताहै ७८ तदनन्तर अत्युत्तम शिखितीर्थ को जावे तहां दानदिया जाताहै तो सब करोड़गुणा होताहै ७९ अपर पक्ष अमावास्या में तहां स्नानकरै और एक ब्राह्मण को भोजन करावै तो करोड़ ब्राह्मण भोजन किये का फल होताहै ८० भृगुतीर्थ में तीर्थ कोटि स्थितहैं कामना रहित वा कामना सहित तहां मनुष्य स्नानकरै ८१ तो अश्वमेध यज्ञके फल को प्राप्त होताहै और देवताओं समेत आनन्द करताहै मुनि श्रेष्ठ भृगुजी तहांही सिद्धिको प्राप्तहुये हैं और महात्मा महादेवजी ने अवतार धारण कियाहै ८२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेविंशतितमोऽध्यायः २० ॥

## इक्कीसवां अध्याय ॥

विहङ्गेश्वर नर्मदेश्वर अश्वतीर्थ पितामहतीर्थ सावित्रीतीर्थ और मनोहरादि तीर्थोंका वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिरजी फिर मनुष्य

उत्तम विहगेश्वर को जावे तिसके दर्शन से सब पापों से छूट जाता है १ फिर उत्तम नर्मदेश्वर को जावे तहां स्नानकर मनुष्य स्वर्ग लोकको जाता है २ तिस पीछे अश्वतीर्थ को जावे और तहां स्नान करै तो सुभग दर्शनीय और भोगवान् मनुष्य होवे ३ फिर पूर्व समय के ब्रह्माके रचेहुये पितामह तीर्थको जावे और तहां स्नान कर मनुष्य भक्तिसे पितरों को पिण्ड देवे ४ तिल और कुश मिला हुआ जल देवे तो तिस तीर्थके प्रभावसे सब नाश रहित होताहै ५ फिर सावित्री तीर्थको प्राप्त होकर जो स्नान करताहै वह सब पापों को दूरकर ब्रह्मलोकमें प्राप्त होताहै ६ तहांहीं परम शोभन मनोहर तीर्थ है तहां स्नान कर मनुष्य पितृलोक में प्राप्त होताहै ७ फिर हे राजेन्द्र ! उत्तम मानस तीर्थको जावे तहां स्नानकर मनुष्य शिवलोक में प्राप्त होताहै ८ तदनन्तर उत्तम क्रतु तीर्थको जावे जोकि सब लोकोंमें प्रसिद्ध और सब पाप नाश करने वालाहै ९ तहां स्नानकर जिन जिन पशुपुत्र धनोंकी इच्छा करै तिन सबको प्राप्त होवे १० फिर प्रसिद्ध त्रिदश द्योतिको जावे तहांपर अच्छे व्रतकरनेवाली ऋषियोंकी कन्या तपस्याकरती थीं ११ कि ईश्वर प्रभु नाशरहित सबके स्वामी होवें तब प्रचण्डरूप धारण करनेवाले हर महादेवजी तिनके ऊपर प्रसन्न हुये १२ और विकृतमुख वीभत्स परमेश्वर शिवजी कन्याओं के वर देनेके लिये तिस तीर्थ में प्राप्त हुये १३ जो कन्या ऋद्धिको सेवता और कन्यादान को देता है और दश कन्या नामसे प्रसिद्ध तीर्थ १४ में स्नानकर देवजी को पूजता है वह सब पापों से छूट जाता है तिस पीछे स्वर्ग बिन्दु नाम से प्रसिद्ध तीर्थ को जावे १५ तहां स्नानकर मनुष्य दुर्गतिको नहीं देखता है फिर अप्सरेश तीर्थ को जावे और तहां स्नानकरै १६ तो नागलोक में स्थित होकर क्रीड़ाकरै और अप्सराओं समेत आनन्दकरै तदनन्तर उत्तम नरकतीर्थ को जावे १७ तहां स्नानकर देवजी को पूजनकरै तो नरकको न प्राप्तहोवे फिर व्रतमें परायण मनुष्य भारभूत तीर्थ को जावे १८ इस तीर्थको प्राप्तहोकर विरूपाक्ष महादेवजी के अवतार को पूजनकर शिवलोक में प्राप्तहोता है १९ महात्माके तिस

भारभूत तीर्थ में स्नानकर मनुष्य जहां तहां मरै तो निश्चय गणेश्वरीगति होतीहै २० कार्तिक महीने में महादेवजी के पूजनकरने से बुद्धिमान् अश्वमेध यज्ञसे सौगुणा फल कहते हैं २१ घीसे भरे हुये सौ दिये बनाकर देवै तो सूर्यके समान प्रकाशित विमानों से जहां शंकरजी हैं तहां को जावै २२ जो शंख कोकाबेलि और चन्द्रमाके सदृशवर्णवाले बैलको देताहै वह बैल युक्त विमान से शिवलोकको प्राप्तहोताहै २३ और तिसीतीर्थमें एक चरु जो देताहै शहद सहित खीर और अनेक प्रकारके भोजन २४ यथाशक्ति ब्राह्मणोंको भोजनकराकर दक्षिणा देताहै तो तिसतीर्थ के प्रभाव से सब करोड़ गुणा फलहोताहै २५ नर्मदाजीके जलसे स्नानकर मनुष्य शिवजीको पूजनकरैं तो तिसतीर्थ के प्रभाव से दुर्गति को नहीं देखते हैं २६ इस तीर्थको प्राप्तहोकर जो प्राणों को छोड़ताहै वह सब पापोंसे विशुद्ध आत्माहोकर जहां शंकरजी हैं तहांहीं प्राप्त होताहै २७ और जो तिसतीर्थ में जलमें प्रवेश करजाताहै वह हंस युक्त विमान से शिवलोकको जाताहै २८ और जब तक चन्द्रमा सूर्य हिमवान् समुद्र और गंगादिक नदियां हैं तबतक स्वर्ग में रहता है २९ और जो मनुष्य तिसतीर्थ में भोजन नहीं करता है वह गर्भ में फिर नहीं आताहै ३० तिसपीछे उत्तम अटवी तीर्थ को जावे तहां स्नानकर मनुष्य इन्द्रके आधे आसन को प्राप्त होताहै ३१ फिर सब पापनाशकरनेवाले शृंगतीर्थ को जावे तहां भी स्नानमात्र करनेवाले की निश्चय गणेश्वरीगति होतीहै ३२ एरण्डी और नर्मदाजी का संगम संसारमें प्रसिद्धहै तहां सब पापनाशकरनेवाला महापुण्यकारी तीर्थहै ३३ तहां व्रतकर नित्यही ब्रह्ममें परायण होकर स्नानकरनेसे ब्रह्महत्यासे छूटजाता है ३४ फिर नर्मदा और समुद्र के संगम जमदग्निनामसे प्रसिद्धको जावे जहांजनार्दनजी सिद्धहुये हैं ३५ जहां बहुत यज्ञकर इन्द्र देवताओं के स्वामी हुये हैं तिस नर्मदा और समुद्रके संगम में मनुष्य स्नानकर ३६ तिगुने अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै पश्चिमोदधि सागुण्यनामतीर्थ मुक्तिका देनेवालाहै ३७ तहां देवता गन्धर्व ऋषि सिद्ध

और चारणतीनों सन्ध्याओं में देवोंके स्वामी विमलेश्वरजीकी आराधना करते हैं ३८ जो विमलेश्वर में स्नानकरताहै वह सब पापों से शुद्ध आत्माहोकर शिवलोक में प्राप्तहोताहै विमलेश्वरसे श्रेष्ठ तीर्थ न हुआ है और न होगा ३९ तहां व्रतकर जो विमलेश्वर को देखतेहैं वे सब पापोंसे विशुद्ध आत्माहोकर शिवलोकको जाते हैं ४० फिर मनुष्य उत्तम कोशिनी तीर्थको जावे तहां स्नानकर व्रतमें परायण होकर ४१ नियत और नियत भोजनकर एकरात्रि बसे तो तीर्थ के प्रभाव से ब्रह्महत्या से छूटजावे ४२ जो सब तीर्थों में अभिषेक और सागरेश्वरको देखताहै योजन भरके भीतरमें स्थितहोताहै आवर्तमें शिवजी स्थित हैं ४३ तिनको देखकर सब तीर्थोंको देखचुकताहै इस में संशयनहींहै और सबपापोंसे छूटकर जहां शिवजी हैं तहां जाता है ४४ नर्मदाजीका जितना संगमहै और अमरकण्टकका जितनाहै तिनके बीचमें तीर्थ कोटीजल में स्थित हैं ४५ तीर्थसे तीर्थमें जाना चर्याऋषि करोड़ों से सेवित दिव्य अंश अग्निहोत्रों और सब ज्ञान परायणों से ४६ सेवित तीर्थ कोटीहैं तिसीसे मनोवांछित अर्थके देनेवाली हैं जो भक्तिसे नित्यही इसको पढ़ता वा सुनता है ४७ तिसको सब तीर्थ अभिषेक करते हैं नर्मदाजी सदैव प्रसन्न होती हैं इसमें सन्देह नहींहै ४८ रुद्रजी और महामुनि मार्कण्डेयजी प्रसन्न होतेहैं बांझ स्त्री पुत्रोंको पाती दुष्ट भाग्यवाली अच्छी भाग्य युक्त होती ४९ कुमारी कन्या स्वामी को पाती और जो जिस फलकी वाञ्छा करता वह सब पाता इसमें संशय न करना चाहिये ५० ब्राह्मण वेदको पाता क्षत्रिय विजय पाता वैश्य धान्यको प्राप्त होता शूद्र अच्छी गतिको प्राप्त होता ५१ मूर्ख विद्याको पाताहै जो मनुष्य तीनों संध्याओं में पढ़ता है वह नरकको नहीं देखता और योनि को नहीं प्राप्त होताहै ५२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

# बाईसवां अध्याय॥

नर्मदाजीके माहात्म्य में पांच कन्याओंका चरित्र वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजन्! युधिष्ठिर महाराज इस प्रकार तुम से उत्तम नर्मदा तीर्थको कहा पूर्व समय में गन्धर्व कन्याओं के शाप से उत्पन्न घोरभय नर्मदाजी के जलके कणकी अग्नि से नाश को प्राप्त हुआहै नर्मदाजीके जलके कणके स्पर्शसे मनुष्य मुक्त होजाता है १।२ तब युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन्! नारदजी बहुत कन्याओंने कैसे कहांसे शाप पाया और किसकी कन्या थीं उनके नाम क्याथे कैसी अवस्था थी ३ कैसे नर्मदाजी के जलके स्पर्श से शापसे उत्पन्न विपाक से छूटगईं कहां उन्होंने स्नान कियेथे हे प्रभुजी! सब मुझ से कहिये ४ नर्मदा तीर्थका माहात्म्य चमत्कार करनेवाला है सुनने से भी पापोंके मलका नाश करनेहारा कहाताहै ५ नर्मदा नर्मदा शब्द जिसने कहा तिसकी शाश्वती मुक्ति जबतक चन्द्रमा और नक्षत्र रहते हैं तबतक होतीहै ६ हे साधो! आपने पहले उत्तम नर्मदाजी का माहात्म्य कहाहै तिसपर भी जो यह चरित है सो कहिये ७ उत्तम वार्ता बुद्धिमानोंके सेवन करनेके योग्यहै हे विप्रेन्द्र! हे विभो! इससे उत्तम नर्मदाजीका माहात्म्य पूंछते हैं कन्याओं के चरित से उज्ज्वल इतिहासको कहिये ८ तब नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! धर्म गर्भवाली श्रेष्ठकथा सुनिये जैसे अग्नि गर्भवाली अरणिहै तैसेही धर्म ब्रह्मसू की नाईंहै ९ शुक संगीति गन्धर्वकी कन्या प्रमोहिनी सुशील के सुशीला स्वर वेदीके सुस्वरा १० चन्द्रकांतके सुतारा सुप्रभ के चन्द्रिका ये तिन अप्सराओं के श्रेष्ठ नाम हैं ११ सब पांच कुमारी अवस्थासे सुभग हैं और वे सदैव परस्पर बहिनोंकी तरह बात करती हैं १२ मानों चन्द्रमासे निकली हैं चन्द्रिकाकी नाईं उज्ज्वल हैं चन्द्रमा के समान मुखवाली हैं सुन्दर बालवाली हैं चन्द्रमाकी स्त्री की नाईं उज्ज्वल हैं १३ देवताओंमें ये विलासिनी हैं नक्षत्रों में चन्द्रिका की नाईं हैं सुन्दरता के पिण्डसे उत्पन्न हैं दिव्यरूप मनोहर हैं १४ उन्नत स्तन पद्मिनी हैं वैशाखमें केतकीकी नाईं हैं उत्पन्न यौवनों में नवीन

पल्लवों से लताकी नाईं शोभायमान हैं १५ सुवर्ण के समान गौर सुवर्ण के तुल्य दीप्तिवाली सुवर्णके गहनोंसे भूषितहैं सुवर्ण चम्पक के माला धारण किये और सुवर्णके छबिवाले सुन्दर कपड़ेवाली हैं १६ स्वरसमूहों की पंक्तियों अनेकप्रकार की मूर्च्छनाओं ताल बाजा के विनोदों वंशी और वीणाके बजाने में १७ मृदंगके शब्दसे संभिन्नलास्य मध्यलयों में चित्रादिक विनोदों में और कलाओं में निपुण हैं १८ इसप्रकार की वे कन्या श्रेष्ठ क्रीड़नों से मोहको प्राप्त हुईं और पिताओं से सब लालित कुबेरके स्थानमें घूमती भईं १९ एक समय वैशाख महीनेमें कौतुकसे पांचों कन्या मिलकर कल्पवृक्ष के फूलोंको वनसे वनमें ढूंढ़ती भईं २० देवोंकी कन्या पार्वती जी की आराधना करनेको किसी समय में अच्छोद सरोवर को जाती भईं फिर वे श्रेष्ठ कमलों समेत सुवर्ण के समान रंगवाले श्रेष्ठ कमल अच्छोद सरोवर से लेकर २१ मूंगा और शुद्ध स्फटिक प्रकुट्टिम में स्नानकर घट्टमें कपड़ाधर मौनसे स्थंडिल पिण्डिकामयी मूर्ति रचकर सुवर्ण और मोतियों के गहने पहनाती भईं २२ चन्दन गन्ध कुंकुमों से पूजनकर श्रेष्ठ कमलादिकों से भी पार्वतीजी की पूजा करती भईं फिर शुभ भक्तिसे भावयुक्त कुमारिका अनेक प्रकार की भेंटें चढ़ाकर लास्य प्रयोगों से नाचती भईं २३ गान्धर्व श्रेष्ठस्वर आश्रयणकर वे कमलनयनी स्वभाव की ध्वनि से गानेके योग्य मूर्च्छना समेत मनोहर अक्षरवाले तारसे बढ़ेहुये गतियों से अच्छे स्वरवाले गीत गाती भईं २४ तिस अच्छे भावसे रसकी वर्षासे हर्ष कन्याओं को अत्यन्त हुआ निर्भर चित्तकी वृत्तियां होगईं तिस समय श्रेष्ठ अच्छोद तीर्थमें वेदनिधि मुनिका बड़ा पुत्र स्नान करने के लिये प्राप्त हुआ २५ जोकि रूपमें अधिक श्रेष्ठ मुखवाला फूलेहुये कमल के समान नेत्रवाला युवावस्था से युक्त चौड़े छातावाला सुन्दर भुजा युक्त श्याम छबिवाला दूसरे कामदेवकी नाईंथा २६ अच्छी शिखावाला दण्डसे युक्त धनुषसे कामदेवकी नाईं वह ब्रह्मचारी शोभित हुआ मृग चर्मधारे समुद्र धृग सुवर्णकी दीप्ति समान मौंजी और श्रेष्ठ मेखला कटिहांव में धारणकिये था २७ तिस ब्राह्मण

को तिस सरोवर के किनारे कौतुक से युक्त कन्या देखकर प्रसन्न होती भई कि यह हमारे अतिथि होंगे २८ गीत और नाच छोड़कर तिसके देखने में लालसा युक्त भई और कामके वाणोंसे इसप्रकार विद्ध भई जैसे हरिणी बहेलियासे विद्ध होतीहै २९ देखो देखो ऐसा कहरही हैं पांचों संभ्रम समेत मुग्धा हैं तिस युवावस्थावाले श्रेष्ठ ब्राह्मण से कामदेवके भ्रमको प्राप्त होती भईं ३० और फिर फिर कमलरूपी नयनों से तिनको पूजनकर पीछेसे अप्सराओंने परस्पर विचार प्रारंभ किये ३१ कि जो यह कामदेव हैं तो रतिसे हीन कैसे हुये अथवा देव अश्विनीकुमार हैं तो दोनों साथही जाते हैं ३२ गन्धर्व वा किन्नर वा कामरूप धारण करनेवाले सिद्ध अथवा कोई ऋषिके पुत्र वा कोई मनुष्यों में उत्तम ३३ हैं वा किसीको ब्रह्माजी ने हमारे लिये रचाहै जैसे भाग्यवानों के अर्थमें पूर्व कर्मोंसे निधान रचा होताहै ३४ तैसेही हम कुमारियों को करुणा जलके कल्लोल से लब्ध आर्द्र कियेहुये चित्तवाली पार्वतीजीने उत्तम वर प्राप्त कियाहै ३५ मैंने वरा तूने वरा इसने वरा इसप्रकार पांचों कन्या कहती भईं ३६ तहांपर तिनके वचन सुनकर दो पहर की क्रियाकर बुद्धिमान् मुनिका पुत्र चिन्तना करने लगा कि क्या करने से पुण्य होगा ३७ विश्वामित्र पराशर आदिक कण्डु देवल इत्यादिक ब्राह्मण योगियों में वली लीला पूर्वकही स्त्रियों से विमोहित होगये यह अद्भुत है ३८ भौंहें रूपलताओं में दृढ़ धनुष से निकलेहुये स्त्रियों के नयनरूपी तीक्ष्णबाणों से कामदेव धन्वीसेहत किसका हृदयमृगनहीं गिरजाताहै ३९ तबतक नीतिकीबुद्धि विराजमान होती है तबतक जनसमूह का भयहोताहै तबतक अत्यन्त धृतचित्तताहोती है तब तक कुलकी गणनाहोती है ४० तबतक तपस्याकी प्रगल्भता होती है तबतक मनुष्यों का शम सेवनहोता है जबतक पुरुष शीघ्रमद करनेवाले स्त्रियों के नयन आसवों से मदयुक्त नहीं होताहै ४१ स्त्रियां अपने ललित मनोहरों से रागयुक्तको मोहित और मदयुक्त करती हैं और धर्म की रक्षामें परायण हमको भी ये स्त्रियां मोहित और मदयुक्त अपने गुणों से करतीहैं ४२ मांसरक्त मलमूत्रसे गर्भा·

हुई निर्गुण अपवित्र स्त्रियोंकी देहमें कामी अत्यन्त मूढ़चित्तवाले पवित्रता कल्पितकर प्रवेश करते हैं ४३ निर्मलबुद्धिवाले पण्डित साधुओं ने स्त्री को काष्ठसे परिकीर्तित किया है जबतक ये समीप न आवेंगी तबतक हम घरको चलेजावेंगे ४४ श्रेष्ठ स्त्रियां जबतक तिसके समीप नहीं आईं तबतक वैष्णव प्रभाव से ब्राह्मण अन्तर्द्धानहोगये ४५ तिससमय में वैष्णव ब्रह्मचारीको योगबल से अन्तर्द्धान होजाना यह अद्भुत कर्म देखकर ४६ स्त्रियांभय युक्त नेत्र वाली हरिणीकी नाईं कातरहुईं और नयनलगाकर दशोंदिशा शून्य देखनेलगीं ४७ और परस्पर यह बोलीं कि स्फुट इन्द्रजालको जानताहै वा मायाको जानताहै जो कि देखागया और फिर न दिखाई दिया ४८ तिससमय में विरहकी अग्निसे तिन स्त्रियों का हृदय व्याप्तहोगया जलतीहुई अग्निसे सब वन अत्यन्त स्निग्धहोगया ४९ हे कान्त ! इन्द्रजालकी विद्याको त्यागकरो शीघ्रही दर्शनदो मक्षिका के समान आत्माको पहले ग्रास में तुम्हें युक्त नहीं है ५० किससे कष्टको दिखलाया ब्रह्माने तुम्हें कहांसे रचा हमने जाना कि बड़े संतापके हेतु रचेगये हो ५१ क्या तुम्हारा दयाहीनचित्त है क्या हमलोगों में बुद्धि नहीं है हे कांत ! क्या तुम क्रूरहो क्या हम लोगों के मनको चुरातेहो ५२ क्या हमलोगों में प्रत्ययनहीं है क्या हमलोगों को परीक्षाकरतेहो क्या ममताहीनहो क्या माया में निपुणहो ५३ क्या चित्तमें प्रवेशकरने को विज्ञानलाघव जानतेहो फिर क्या निकलने का उपाय नहीं जानतेहो ५४ क्या विना अपराधही के हमलोगों पर कोप करतेहो क्या दूसरों के दुःखको नहीं जानतेहो ५५ हे हृदयके ईश्वर ! इससमय में तुम्हारे दर्शनके विना हमलोग नष्टहुईजाती हैं नहीं जीवेंगी फिर आपके दर्शनकी आशा से जीरही हैं ५६ हमलोगों को तहांहीं शीघ्र लेचलिये जहां आप गये हैं आपके दर्शन के हरनेवाले ब्रह्मा ने आनन्द के अंकुरों को काटडाला है ५७ सर्वथा दर्शन दीजिये सर्वथा दयाको सेवन कीजिये सज्जन मनुष्य किसी के अन्तको नहीं देखते हैं ५८ इस प्रकार वे कन्या रोदनकर बहुत समयतक परखकर पिता के डरसे

घरजाने को शीघ्रही प्रारंभकरतीभईं ५९ तिसके प्रेमकी जंजीरों से बँधीहुई विरहसे अत्यन्त व्याकुल बड़े कष्ट से धैर्य धारणकर अपने अपने घरको आतीभईं ६० और आकर सब माताओं के पास गिरपड़ीं तब माताओं ने पूछा क्याहै कहां इतना समयलगा ६१ तब कन्याओं ने कहा कि अच्छोदसरोवर में स्थित होकर किन्नरियों के साथ क्रीड़ाकरती थीं तिसी से दिन नहीं जानपड़ा ६२ हे मातः! हमलोग राहमें थकगईं हैं तिसी से हम लोगोंकी देहमें सन्ताप है बड़े मोह से कहने को कोई समर्थ नहीं है ६३ ऐसा कहकर कन्या तहांही मणिजटित पृथ्वी में लोटगईं और आकारको छिपाती हुई माताओं से बातें करतीभईं ६४ तिस समय में कोई क्रीड़ा के सुरैलेको आनन्द से न नचाती भई दूसरी कन्या कुतूहल से पींजरे में सुवे को न पढ़ाती भई ६५ तीसरी कन्या न्यौरेको न दुलराती भई चौथी कन्या सारिका से न बोलती भई पांचवीं अत्यन्तमुग्धा कन्या सारसों से न खेलतीभई ६६ सब कन्या विनोद को न सेवन करती भईं मन्दिर में क्रीड़ा नहीं करती भईं बांधवों से नहीं बोलती भईं वीणाको न बजाती भईं ६७ कल्पवृक्ष के जितने फूल थे सब अग्नि के समान भये कल्पवृक्ष के मीठे शहदको न पीतीभईं ६८ योगिनियोंकी नाईं वे कन्या नासिका के अग्र में नेत्रों को लगाती भईं उनका ध्यान नहीं दिखलाई पड़ा उत्तम पुरुष में मन होगये ६९ चन्द्रकांत मणिसे ढकेहुये चूते हुये जलवाले कन्दर में क्षणमात्र रह झरोखे में क्षणमात्र स्थितहो क्षणभर जलके यन्त्र के स्थान में रह ७० क्षणमात्र बावली के कमलिनी दलों से शय्या रचतीभईं और सखियां शीतल कमलिनी के दलों से पंखा करती भईं ७१ इस प्रकार वे श्रेष्ठ कन्या युगसमान रात्रिको प्राप्तभईं और बड़ेकष्टसे धारणकर ज्वर समेत कन्याओं की नाईं व्याकुल होगईं ७२ जब प्रातःकाल हुआ तो सूर्य्य नारायणजी को देखकर अपने जीवनको मानती भईं और अपनी अपनी माता से आज्ञालेकर पार्वती जी के पूजने को गईं ७३ निज विधि से स्नानकर पुष्प धूपों से पार्वती जीका पूजनकर तहां स्थित

होकर गानेलगीं ७४ तो इसी अन्तर में वह ब्राह्मण पिता के आ-
श्रम से अच्छोद सरोवर में स्नान करने के लिये आया ७५ तब
रात्रिके अन्त में सूर्यजी को देखकर कमलिनी की नाईं कन्या तिस
ब्रह्मचारीको देखकर फूलेहुये नेत्रवाली होजाती भई ७६ और तहां
ब्रह्मचारी के समीप जाकर बायें और दहने बन्धसे भुजोंकी फँसरी
करतीभई ७७ और बोलीं कि हे प्रिय ! कलह चलेगये थे इस समय
में जाने न पावोगे निश्चय हमलोगों से तुम स्वीकार कियेगये हो
यहां तुम्हारा विचारणा नहीं है ७८ भुजाओंकी फँसरी में प्राप्त ब्राह्मण
जब इसप्रकार कहेगये तब हँसकर बोले कि तुमलोगों ने कल्याण
कारी अनुकूल प्रियवचन कहे हैं ७९ प्रथम आश्रम में निष्ठ मेराव्रत
नाशहोजायगा और विद्या अभी गुरुदेवजी के यहां पढ़रहे हैं पढ़नहीं
चुकेहैं ८० हे कन्याओ ! जिस आश्रममें जो धर्म है वह अच्छे पण्डितों
से रक्षा करने के योग्य है इससे यह विवाह हम धर्म नहीं मानते
हैं ८१ ब्राह्मणके वचन सुनकर वैशाख महीने में मनोहर ध्वनि में
उत्कण्ठा समेत कोकिलोंकी नाईं श्रेष्ठ कन्या ब्राह्मणसे बोलीं ८२ कि
धर्मसे अर्थ अर्थ से काम और काम से सुख फलका उदय होता है
इसप्रकार निश्चय जाननेवाले विद्वान् वर्णन करते हैं ८३ वह काम
धर्मकी अधिकता से तुम्हारे आगे उपस्थित हुआ है अनेकप्रकार
के भोगों से सेवन करो जिससे कि यह स्वच्छ भूमिहै ८४ तिन
कन्याओं के वचन सुनकर ब्राह्मण गम्भीर वाणी से बोले कि तुम
लोगों के वचन सत्यहैं और मेरा भी आवश्यक व्रतहै ८५ गुरुदेव
जी की आज्ञा पाकर विवाह कर्म करेंगे अन्यथा नहीं करेंगे ऐसा
कहने पर वे कन्या फिर ब्राह्मण से बोलीं कि हे सुन्दर ! तुम स्फुट
मूर्खहो ८६ हे मुनिजी ! सिद्ध औषध ब्रह्मबुद्धिसे रसायन सिद्धिनिधि
साधु कुलकी श्रेष्ठ स्त्रियां मन्त्र और सिद्धरस ये प्राप्तहुये धर्म्म से
बुद्धिमान् को सेवने योग्यहैं ८७ दैवसे यदि सिद्धि को प्राप्त कार्यहो
तिसमें नीति के जाननेवाले उपेक्षाको नहीं प्राप्तहोते हैं जिससे
उपेक्षा फिर फलके देनेवाली नहीं है तिससे दीर्घीकरण श्रेष्ठ न
है ८८ विषसे भी अमृत ग्रहण करने योग्यहै अपवित्र से भी

ग्रहण करना चाहिये नीच से भी उत्तम विद्या पढ़नी चाहिये और स्त्रीरूप रत्न नीच कुलसेभी लेना योग्यहै ८९ सांद्र अनुराग युक्त कुल जन्म निर्मलवाली स्नेह से आर्द्रचित्त अच्छी वाणी वाली अपने आप स्वीकार करनेहारी निश्चय पवित्र युवावस्था युक्त अच्छे रूपवाली कन्या जिन मनुष्यों को प्राप्त होती हैं वे धन्यहैं और धन्य नहीं हैं ९० कहां हम लोग देवों की सुन्दरी हैं और कहां आप तपस्वी ब्रह्मचारी हैं दुर्घटके विधानसे हम मानती हैं कि ब्रह्मा ही पण्डितहैं ९१ तिससे इससमय में गांधर्व बिवाहसे हमलोगों को स्वीकार करो आपका मंगल होवे अन्यथा जीवन न होगा ९२ कन्याओं के ये वचन सुनकर धर्म जाननेवालों में श्रेष्ठ ब्राह्मण बोला कि हे मृग समान नेत्रवालियो ! धर्महीं धनवाले मनुष्यों को कैसे धर्म त्यागना योग्यहै ९३ धर्म अर्थ काम और मोक्ष ये चारों यथोक्त फल दाता जानने योग्यहैं विपरीत निष्फलहैं ९४ व्रत धारण करने वाले हम अकालमें विवाह न करेंगे जो क्रिया काल को नहीं जानताहै उसकी क्रिया फल को नहीं प्राप्त होती है ९५ जिससे इस धर्म विचार में हमारा मन लगा है तिससे हे कन्याओ ! सुनो हमस्वयम्वरकी इच्छा नहीं करते हैं ९६ इसप्रकार तिस ब्राह्मणका आशय जानकर परस्पर देखकर हाथ से हाथ छोड़कर प्रमोहिनी कन्याचरण ग्रहण करती भई ९७ सुशीला और सुस्वरा भुजों को पकड़ती भई सुतारा और चन्द्रिका मुखको चूंबती भई ९८ तिस पर भी विकार रहित प्रलयकी अग्निके सदृश क्रोधसे अत्यन्त मूर्च्छित ब्रह्मचारी तिन कन्याओंको शाप देते भये ९९ कि पिशाचिनी की नाईं हमको पकड़ेहो इससे पिशाचिनी होवो इसप्रकार शीघ्रही ब्राह्मण से शाप को प्राप्त कन्या ब्राह्मण को छोड़कर आगे स्थित होती भईं १०० और बोलीं कि अपराध रहितमें तुमने पाप किया हमने तुम्हारा प्रिय किया और तुमने अप्रिय किया धर्म करनेवालों के अंत करने वाले तुमको धिक्कारहै १०१ अनुरक्त भक्तों और मित्रोंमें द्रोह करने वाले पुरुष को दोनों लोकों का सुखनाश को प्राप्त होताहै यह हमने सुनाहै १०२ तिससे तुम भी हमारे शाप से शीघ्रही पिशाच

हो ऐसा कहकर वे कन्या क्रोधसे व्याकुल श्वास लेती भई १०३ परस्पर कोपसे तिस सरोवर में वे कन्या और ब्रह्मचारी ये सब पिशाच होगये १०४ वह पिशाच और वे पिशाचिनी अत्यन्त घोर शब्द कर रोते भये और पूर्व कर्म के विपाकों को भोगनेलगे १०५ अपने समयमें पूर्वजन्मके शुभअशुभ होतेही हैं जैसे देवताओं को अपनी छाया दुर्वार होती है तिन कन्याओं के पिता माता और भाई रोनेलगे कि दैव दुरतिक्रमहै १०६ । १०७ तदनन्तर अत्यन्त दुःखित वे पिशाच आहार के लिये इधर उधर दौड़तेहुये सरोवरके किनारे बसते भये १०८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

## तेईसवां अध्याय ॥

लोमशजी के कहनेसे पिशाचिनी पिशाचका नर्मदाजीके जलके कण के स्पर्श से सुन्दर देह पाकर नर्मदाजी के किनारे विवाहकर नर्मदाजी के पूजन स्नानसे विष्णुलोक पाना ॥

नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर ! इसप्रकार बहुतकाल बीतनेपर मुनियों में श्रेष्ठ लोमशमुनि महा भाग इच्छापूर्व्वक आते भये १ तिन ब्राह्मण को देखकर यूथमें वर्तमान क्षुधासे व्याकुल सब पिशाच खानेकी कामना से दौड़े २ और सब तीव्र लोमशजी के तेजसे जलने लगे आगे स्थित होने में असमर्थ हुये दूरही स्थित रहे ३ तहांपर पिशाच ब्राह्मण पूर्व्वसमय के कर्मके बलसे लोमश जीको देखकर साष्टांग प्रणामकर ४ शिरमें अंजलि बांधकर सत्य वचन बोले कि हे ब्राह्मण ! महाभाग्य के उदय में साधुओं की संगति होती है ५ गङ्गादिक पुण्यतीर्थों में जो मनुष्य सर्व्वथा स्नान करता है और जो साधुओंका संग करताहै तिनमें साधुओंका संगम श्रेष्ठहै ६ गुरुओं का संगम पृथ्वी में दृष्ट अदृष्ट फल स्वर्ग देनेवाला रोग हरनेहारा और अन्धकार का नाश करनेवालाहै ७ ऐसा कह कर अद्भुत पूर्वसमयके वृत्तान्त को कहतेभये कि ये गन्धर्वोंकी कन्या और हम ब्राह्मण के पुत्रहैं ८ हे मुनि श्रेष्ठ ! सब परस्पर शाप से

विमोहित दीन सुखवाले पिशाच रूपसे आपके आगे स्थितहैं ९ आपके दर्शनसे कन्याओं का और हमारा निस्तार होगा जैसे सूर्य के उदयसें अंधकार समूह नाश होजाताहै तैसेही पिशाचता हम लोगों की नाश होगी १० ये वचन सुनकर महातेजस्वी लोमश जी कृपासे आर्द्रमन कर दुःखित मुनिके पुत्र से बोले ११ कि हमारे प्रसादसे सबकी स्मृति शीघ्रहोवे धर्ममें वर्तमान होवो और परस्परका शाप नाशको प्राप्तहोवे १२ तब पिशाचबोला कि हे महर्षिजी! धर्म कहिये जिससे पाप से छूटजावें यह विलम्ब का काल नहीं है जिससे कि शापकी अग्नि दारुण है १३ तब लोमशजी बोले कि हमारेसाथ विधि से नर्मदाजीका स्नानकरो तुमलोगों को नर्मदाजी शाप से छुड़ादेंगी और प्रकारसे शाप नहीं छूटेगा १४ हे ब्राह्मण! एकाग्र चित्त होकर सुनो निश्चय मनुष्यों का पाप नाश नर्मदाजी के स्नानसे होता है यह हमारी बुद्धि निश्चित है १५ सातजन्मके कियेहुये पाप और वर्तमान पाप सबको नर्मदाजी का स्नान इस प्रकार भस्म करता है जैसे अग्नि रुई की राशिको भस्म करता है १६ हे पिशाच! जिसपाप में प्रायश्चित्त नहीं दिखाई पड़ते वे सब नर्मदाजी के जल में स्नानमात्रही से नाश होजाते हैं १७ नर्मदाजीका स्नान ज्ञान करने वाला है इससे नर्मदाजी मोक्षफल देनेवाली हैं हिमवत् पुण्यतीर्थ सब पाप नाश करनेवाले निश्चय हैं १८ और यह ब्रह्मवादियों ने रचा है कि नर्मदा जी इन्द्रलोक देनेवाली सब कामफल देनेहारी और मोक्ष देनेवाली १९ पापनाश करनेवाली पाप हरनेवाली और सब कामफल देनेवालीहै नर्मदाजीका आप्लाव विष्णुलोक देनेवाला और पाप नाश करनेवाला है २० यमुनाजीका आप्लाव उत्तम और सूर्यलोक देनेवाला है सरस्वती जी का आप्लाव पाप नाशकरनेवाला और ब्रह्मलोक फल का देनेवाला है २१ विशाला विशाल फलके देनेवाली कही है नर्मदाजी का आप्लाव पापरूपी इन्धनके जलाने को अग्निरूप है गर्भहेतु क्रिया का नाशकरनेवाला विष्णुलोक देने वाला मोक्ष देने हारा कहाहै सरयू गण्डकी सिन्धु चन्द्रभागा कौशिकी २२। २३

तापी गोदावरी भीमा पयोष्णी कृष्णवेणिका कावेरी तुंगभद्रा और और भी समुद्रगामिनी नदियां हैं २४ विष्णुलोक देनेवाली नर्मदानदी श्रेष्ठ कहीगईहै नर्मदाजी पूर्वजन्मके कियेहुये पुण्यों से प्राप्तहोती हैं हे मुनिपुत्र ! तहांपर स्नान मोक्षदेनेवाला है २५ स्वर्ग में स्थित देवता निरन्तर गाते हैं कि नर्मदा हमारी कब दृष्टि में प्राप्तहोगी जहां पर स्नानकर मनुष्य गर्भकी वेदनाको नहीं देखते और विष्णु जीके समीप स्थित होते हैं २६ जो बहुत पापी मनुष्य प्रतिदिन नर्मदाजीके जलमें स्नान करते हैं वे धर्म से नरकों में नहीं स्नान करते हैं पवित्रहोकर स्वर्ग में देवताओं के समान घूमते हैं २७ हे पिशाच ! पूर्वसमय में ब्रह्माजीने तीव्र व्रत दान तपस्या और यज्ञों के साथ तराजू में नर्मदाजीको तौला तो मोक्ष के साधन करनेवाली नर्मदाजी श्रेष्ठहुईं २८ नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर! तिन लोमशजीके वचन सुनकर पिशाच लोमशजीके साथ शीघ्रही नर्मदाजी के स्नानके हेतु जातेभये २९ तब नर्मदाजीके किनारे भाग्य से पवन उत्पन्न हुआ वह पवनप्रवाह स्पर्श करनेवाले तिनके देहमें जलके कणका देनेवाला हुआ ३० तो नर्मदाजीके जलके कण के स्पर्श से पिशाचभाव से वे छूटगये तिसी क्षण से सुन्दर देहवाले होकर नर्मदाजीकी प्रसंशा करनेलगे ३१ तदनन्तर लोमशजी के वाक्य से तिस ब्राह्मण ने नर्मदाजी के किनारे सुखपूर्वक तिन गन्धर्व कन्याओं के साथ विवाह किया ३२ और बहुत समय तक वास किया स्नान पान अवगाहनों से नर्मदाजीका पूजन कर वे विष्णु लोक को प्राप्तहोगये ३३ हे राजन् युधिष्ठिर ! इसप्रकार तुम से महापुण्यकारी सुनने से पाप नाशकरने वाला नर्मदाजी के गुणका आश्रयइतिहास कहा ३४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

# चौबीसवां अध्याय ॥

दक्षिणसिन्धु, चर्मण्वती, अर्बुद, पिंगातीर्थ, प्रभास, सरस्वती सागरका संगम, सलिलराज, और वरदानादितीर्थोंका वर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे नारदमुनि ! वशिष्ठजी के कहेहुये और

तीर्थों को मुझसे कहिये जिनको सुनकर पापनाशहोजाते हैं १ तब नारदजी बोले कि हे राजन्! युधिष्ठिर यहां पर वशिष्ठजी के कहेहुये तीर्थोंको सुनिये जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी दक्षिणसिन्धुको प्राप्त होकर २ अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्तहोता और विमान पर चढ़ता है नियत और नियत भोजनकर चर्मण्वती को प्राप्तहोकर ३ रन्तिदेवसे अनुज्ञात अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्तहोताहै हे धर्मज्ञ! फिर हिमवान् के पुत्र अर्बुद को जावे ४ जहां पर पृथ्वीके पहले छिद्रहुये हैं तहां पर तीनों लोकों में प्रसिद्ध बशिष्ठजी का स्थान है ५ तहां पर एक रात्रि बसकर सहस्र गौ के फलको प्राप्त होताहै फिर मनुष्यों का स्वामी ब्रह्मचारी पिङ्गतीर्थको स्पर्श कर ६ सौ कपिलाओं के फलको प्राप्तहोताहै हे धर्म जाननेवाले मनुष्यों में व्याघ्ररूप! फिर संसारमें प्रसिद्ध प्रभासको जावे ७ जहां पर नित्यही अपने आप अग्नि देवताओं का मुख पवन सारथी वाला वीर स्थित है ८ तिसश्रेष्ठतीर्थमें पवित्र प्रयतमन मनुष्य स्नानकर अग्निष्टोम अतिरात्रके फलको प्राप्तहोता है ९ तदनन्तर सरस्वती सागरके सङ्गम को जाकर सहस्र गौ के फलको प्राप्तहोकर स्वर्गलोगमें प्राप्त होताहै १० हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ! दीप्तिसे नित्यही अग्निके समान प्रकाशितहोता है फिर प्रयतमन होकर सलिलराज के तीर्थ में स्नानकर ११ तहां तीन रात्रि बस कर पितृ देवताओं को तर्पण करै तो चन्द्रमाकी नाईं प्रकाशितहो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोवे १२ तदनन्तर वरदानतीर्थको जावे जहां पर विष्णुजीको दुर्वासाजीने वरदिया है १३ वरदान तीर्थमें मनुष्य स्नानकर सहस्र गौके फलको प्राप्तहोताहै फिर नियत और नियत भोजनकर द्वारिकाको जावे १४ पिण्डारक में मनुष्य स्नानकर बहुत सुवर्ण को प्राप्तहोता है १५ हे शत्रुओं के दमन करनेवाले महाराज! तिसतीर्थमें पद्मलक्षणसे लक्षित मुद्रा अबतक दिखाई देते हैं यह अद्भुतहै १६ हे कुरुनन्दन! हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! त्रिशूलके चिह्नवाले कमल दिखाई देते हैं तहांही महादेव जी का सान्निध्य है १७ हे भारतसागर! और सिन्धुके संगमको

प्राप्तहोकर सलिलराजके तीर्थ में स्नानकर प्रयतमन होकर १८ पितृदेव और ऋषियों को तर्पणकर अपने तेजसे प्रकाशित वरुण के लोकको प्राप्तहोवे १९ हे युधिष्ठिर ! शंकुकर्णेश्वर देवका पूजन करै जिसके फलको बुद्धिमान् अश्वमेध यज्ञसे दशगुणा कहते हैं २० हे कुरुवर ! श्रेष्ठ प्रदक्षिण प्राप्तहोकर तीनों लोक में प्रसिद्ध नामसे प्रसिद्ध सब पाप नाशकरनेवाले तीर्थको जावे जहां पर इन्द्रादिक देवता महादेवजीकी उपासना करते हैं २१।२२ तहां स्नानकर देवसमूहोंसे युक्त महादेवजीका पूजनकर मनुष्य जन्म पर्यन्त के कियेहुये पापोंको दूरकरताहै २३ हे नरश्रेष्ठ! यहां पर सब देवोंसे स्तुतिको प्राप्त तिमि तीर्थ है तहां स्नानकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता है २४ हे महाप्राज्ञ राजन्! तहां विष्णुजी ने दिति के नन्दन को जीतकर पूर्व समय में देवताओं के कण्टकों को मारकर शौच किया है २५ हे धर्मज्ञ! फिर स्तुति को प्राप्त वसुधाराको जावे तिसमें जानेही से अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोवे २६ हे कुरुवर! श्रेष्ठ प्रयतात्मा मनुष्य स्नानकर पितृदेवों को तर्पणकर विष्णुलोक में प्राप्तहोताहै २७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहां पर वसुओं का श्रेष्ठ तीर्थ है तहां स्नानपानकर वसुओंके सम्मत होताहै २८ फिर सिन्धुतम नामसे प्रसिद्ध सब पाप नाशकरनेवाला तीर्थहै हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! तहां स्नानकर बहुत सुवर्णको प्राप्तहोताहै २९ तिसपीछे पवित्र प्रयत मन सुकृती रज रहित मनुष्य ब्रह्मतुंग को प्राप्तहोकर ब्रह्मलोकको प्राप्तहोताहै ३० फिर सिद्धोंसे सेवित इन्द्रकी कुमारिकाओंके तीर्थको जावे तहां स्नानकर इन्द्रलोक को प्राप्तहोवे ३१ तहांही देवोंसे सेवितरेणुकातीर्थहै तहां स्नानकर ब्राह्मण निर्मल चन्द्रमा के समान होता है ३२ तदनन्तर नियत नियत भोजनकर पञ्चनदतीर्थको जाकर जो क्रमसे कही हुई हैं उन पञ्च यज्ञोंको प्राप्तहोता है ३३ हे धर्म जाननेवाले हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! फिर उत्तम भीमाके स्थान को जावे तहां स्नानकर मनुष्य योनि में नहीं प्राप्त होताहै ३४ हे राजन्! तहां पर कुण्डल देहमें धारण किये देवीका पुत्र होता है

और सौहज़ार गौवोंके बड़े फलको प्राप्त होताहै ३५ फिर तीनों लोक में प्रसिद्ध गिरिकुञ्जको प्राप्तहोकर ब्रह्माजी को नमस्कारकर सहस्र गौ के फलको प्राप्तहोता है ३६ हे धर्मज्ञ! तदनन्तर उत्तम विमल तीर्थको जावे जहां पर अबतक सोने और चांदीकी मछली दिखाई पड़ती हैं ३७ हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! तहां स्नानकर वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहोवे और सब पापोंसे विशुद्ध आत्मा होकर श्रेष्ठ गतिको प्राप्तहोवे ३८॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

# पचीसवां अध्याय॥

वितस्ता मलय रुद्रास्पद मणिमन्त देविका कामतीर्थ और दीर्घसत्रादि तीर्थों का वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर! वितस्ताको प्राप्त होकर पितृ देवताओं को तर्पण कर मनुष्य वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्त होता है १ काश्मीरों में तक्षक नागका स्थानहै वह सब पाप नाश करने वाला वितस्ता नामसे प्रसिद्ध है २ तहां स्नानकर मनुष्य निश्चय वाजपेय यज्ञ के फल को प्राप्त होता है और सब पापों से विशुद्ध आत्मा होकर श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होता है ३ तदनन्तर तीनोंलोक में प्रसिद्ध मलयको जावे सायङ्काल की सन्ध्या विधिपूर्वक कर ४ अग्नि में यथाशक्ति चरु छोड़े इसको बुद्धिमान् पितरों का अक्षय दान कहते हैं ५ सौ सहस्रगौवें सौराजसूययज्ञ और सहस्र अश्वमेधयज्ञ से श्रेष्ठ सप्तार्चिप चरुहै ६ हे राजेन्द्र! तिससे निवृत्त होकर रुद्रास्पद को प्रवेश करै महादेवजीको प्राप्तहोकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोवे ७ हे राजन्! एकाग्रचित्तहोकर ब्रह्मचारी मणिमन्त को प्राप्त होकर एक रात्रि वसकर अग्निष्टोम यज्ञ के फलको प्राप्तहोवे ८ हे भरतवंशियों और राजाओं में श्रेष्ठ! फिर लोक में प्रसिद्ध देविकाको जावे जहांपर ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति सुनी जाती है ९ जो तीनोंलोक में प्रसिद्ध शिवजी का स्थान है दे-विका में मनुष्य स्नानकर महादेवजी का पूजन कर १० यथाशक्ति

तहां दानकर सब काम से ऐश्वर्य्ययुक्त यज्ञके फलको प्राप्त होवे ११ तहांपर देवर्षियों के सम्मत शिवजी का काम नामतीर्थ है तहां स्नानकर मनुष्य शीघ्रही सिद्धिको प्राप्त होता है १२ जाकर ब्राह्मण का बालक यज्ञकरै यज्ञकरावै पुष्पन्यास स्पर्श कर फिर मरण को न शोचे १३ आधायोजन लम्बी पांचयोजन चौड़ी इतनी को मुनिलोग देविका कहते हैं यह पुण्यकारी और देवर्षियों के सम्मत है १४ हे धर्मजाननेवाले ! फिर क्रमसमेत दीर्घसत्रको जावे जहांपर ब्रह्मादिक देवता सिद्ध श्रेष्ठ ऋषि १५ दीक्षित नियतव्रत होकर दीर्घसत्रकी उपासना करते भये दीर्घसत्र में जानेही से १६ मनुष्य राजसूय और अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहोता है फिर नियत नियत भोजनकर विनाशनको जावे १७ जहां मेरुपृष्ठ में सरस्वती अन्तर्द्धान होगई हैं जो कि चमस शिवोद्भेद और नागोद्भेद में दिखाई देती हैं १८ चमसोद्भेद में स्नानकर अग्निष्टोम यज्ञके फलको मनुष्य पाता है शिवोद्भेद में स्नान कर सहस्र गौके फल को पाता है १९ नागोद्भेदमें मनुष्य स्नाकर नागलोकको प्राप्तहोता है हे राजेन्द्र! दुर्लभ शशयानतीर्थको प्राप्तहोवे २० जहांशश रूपसे पुष्करा आच्छादित है हे भरतवंशी ! हे महाभाग ! हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! हे मनुष्यों में व्याघ्ररूप ! मनुष्य प्रत्येक वर्ष कार्त्तिकी में सदैव स्नान करते हैं तहां स्नानकर सदैव शिवजीके समान मनुष्य प्रकाशित होताहै २१ । २२ और सहस्र गौ के फलको प्राप्त होताहै हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! हे कुरुनन्दन ! नियत मनुष्य कुमार कोटि को प्राप्त होकर २३ पितृ और देवताओं के पूजन में रतहो तहां अभिषेक करै तो दश सहस्र गौवोंके फलको प्राप्त होता और कुलको उद्धार करता है २४ हे धर्मज्ञान जाननेवाले! हे महाराज! फिर एकाग्र चित्त होकर मनुष्य रुद्रकोटिको जावे जहांपर पूर्व समय में ऋषिकोटि स्थितहै २५ जो कि शिवजी के दर्शन की कांक्षा से वर्षभरसे प्रविष्ट है कि हम पहले हमपहले शिवजीको देखेंगी २६ हे भरतवंशी ! हे राजन् ! इस प्रकार ऋषिभी प्रस्थान करते हैं तिस पीछे योगीश्वरने योगमें स्थितहो २७ भावितात्मा तिन ऋषियों के क्रोधशा-

न्ति के लिये रुद्रों और ऋषियों के आगे स्थित कोटि रची है २८ अलग अलग ऋषि यह मानतेहैं कि मैंने पहले शिवजीको देखाहै तिन उग्रतेज वाले ऋषियों के ऊपर महादेवजी प्रसन्न होतेहैं २९ हे राजन्! तिनकी परम भक्तिसे तिनको वरदेतेहैं कि इस समयसे लेकर तुम्हारी धर्मवृद्धिहोगी ३० हे मनुष्यों में व्याघ्ररूप! तिस रुद्रकोटि में मनुष्य स्नानकर पवित्र हो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै और कुलको उद्धार करताहै ३१ तदनन्तर हे राजाओं में श्रेष्ठ! लोकमें प्रसिद्ध संगमको जावे सरस्वती में महापुण्यकारी जनार्दनजी की उपासना करे ३२ जहांपर ब्रह्मादिक देवता ऋषि सिद्ध चारण चैत्रके शुक्लपक्षकी चतुर्दशी को प्राप्त होतेहैं ३३ हे मनुष्यों में व्याघ्ररूप! तहां स्नानकर बहुत सुवर्णको प्राप्त होताहै और सब पापों से विशुद्ध आत्मा होकर शिवलोक को जाताहै ३४ हे मनुष्यों के स्वामी! जहांपर ऋषियों की यज्ञ समाप्त हुई हैं तहां अवसान को प्राप्त होकर सहस्र गौवोंके फलको प्राप्त होताहै ३५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेपञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

## छब्बीसवां अध्याय ॥

कुरुक्षेत्र सतत पारिप्लव शालिविकिनी सर्पनीवि और अतर्णक द्वारपालादि तीर्थों का वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर! फिर स्तुतिको प्राप्त हुये कुरुक्षेत्र को जावे तहां के गये हुये सब प्राणी पापों से छूट जाते हैं १ जो इस प्रकार निरन्तर कहताहै कि हम कुरुक्षेत्र जावेंगे कुरुक्षेत्र में बसेंगे वह सब पापों से छूट जाताहै २ तहां सरस्वती जी में धीर मनुष्य महीना भर बसे जहां ब्रह्मादिक देवता ब्रह्मर्षि चारण ३ गंधर्व अप्सरा यक्ष सर्प महा पुण्यकारी ब्रह्मक्षेत्र को जाते हैं ४ कुरुक्षेत्र में जो मनसे भी इच्छा करता है उसके पाप नाश होजाते हैं और ब्रह्म लोक को जाताहै ५ श्रद्धा युक्तहोकर कुरुक्षेत्र में जाकर मनुष्य वाजपेय और अश्वमेधयज्ञ के फल

को प्राप्त होताहै ६ हेराजन् ! फिर मत्तर्णक महाबली द्वारपाल
के नमस्कार कर सहस्र गौवों के फल को प्राप्त होता है ७ हे धर्म
जानने वाले राजेन्द्र ! तिस पीछे अत्युत्तम विष्णुजीके स्थान सतत
नामको जावे जहां हरि जी स्थित रहते हैं ८ तहां स्नान कर तीनों
लोक के उत्पन्न करने वाले हरि जी को देखकर मनुष्य अश्वमेध
यज्ञ के फल को प्राप्त होता और विष्णु लोक को जाताहै ९ तदन
न्तर मनुष्य तीनों लोक में प्रसिद्ध पारिप्लव तीर्थको जावे तो अग्नि
ष्टोम और अतिरात्र के फल को प्राप्त होवे १० पृथ्वी में तीर्थ को
प्राप्त होकर सहस्रगौ के फलको प्राप्तहो हे राजन् ! तीर्थसेवन
करनेवाला मनुष्य फिर शालिकिनी को जाकर ११ दशाश्वमेधिक
में स्नानकर तिसफल को प्राप्त होताहै और उत्तम नागों के तीर्थ
सर्पनीवि को प्राप्तहोकर १२ अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्तहो और
नागलोक को जावे हे धर्मज्ञ ! फिर अतर्णकद्वारपाल को जावे १३
तहां एकरात्रि बसकर सहस्रगौ के फलको प्राप्तहोवे तदनन्तर नि-
यत और नियत भोजन करनेवाला मनुष्य पंचनद में जाकर १४
कोटितीर्थ को स्पर्शकर अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्त होताहै अश्विनी
तीर्थ में जाकर रूपवान् होता है १५ हे धर्मजाननेवाले! फिर उत्तम
वाराह तीर्थको जावे जहां पूर्वसमय में विष्णुजी वाराहरूप से स्थित
हुयेहैं १६ हे मनुष्यों में व्याघ्ररूप! तहां स्थितहोकर अग्निष्टोम के
फलको प्राप्तहोताहै तदनन्तर हे राजेन्द्र!जयिनी में सोम तीर्थको प्र-
वेश करै १७ वहां स्नानकर मनुष्य राजसूय यज्ञके फलको प्राप्त
होताहै एकहंसमें मनुष्य स्नानकर सहस्र गौ के फलको प्राप्त होताहै
१८ फिर तीर्थ सेवन करने वाला मनुष्य कृत शौचको प्राप्त होकर
पुण्डरीक यज्ञके फलको प्राप्त होता और पवित्र होजाता है १९
तिस पीछे बुद्धिमान् महादेवजी के मुञ्जावटनाम तीर्थ को जावे तहां
एकरात्रि बसकर गणेश जी के लोकको प्राप्तहोताहै २० हेमहाराज
हे राजेन्द्र! तहांही संसार में प्रसिद्धजयाको जाकर स्नानकर सबका-
म को प्राप्तहोवे २१ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तीर्थ सेवनकरनेवाला
मनुष्य प्रसिद्ध कुरुक्षेत्र के द्वार को प्रदक्षिणकर २२ पुष्करों के सं-

स्मृत में स्नानकर पितृदेवताओं का पूजनकरे यह तीर्थ महात्मा जमदग्नि जी के पुत्र परशुराम का बुलाया हुआ है २३ हे मनुष्यों के स्वामी हे राजन्! मनुष्य कृतकृत्य होजाता है और अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहोता है फिर तीर्थ सेवन करने वाला रामह्रद को जावे २४ जहां प्रकाशित तेज वाले परशुराम जीने पराक्रम से क्षत्रियों को मारकर पांचकुण्डों को रक्त से पूर्णकर सेवन कियाहै यह हमने सुना है २५ सब पितरतृप्त हुये हैं तैसेही प्रपितामह तृप्तहुये हैं हे राजन्! तब वे प्रसन्न पितर परशुराम जीसे बोले २६ कि हे राम हे राम हे महाभाग! हे भार्गव हे पाप रहित! तुम्हारे ऊपर हम इस पितृभक्ति और पराक्रम से प्रसन्न हैं २७ हे महाबुद्धि युक्त! हे राजेन्द्र! वरमांगो तुम्हारा कल्याणहो क्या इच्छा करते हो जबकहने वालों में श्रेष्ठ परशुराम जीसे इसप्रकार कहा २८ तब आकाश मे स्थित पितरों से हाथ जोड़कर वे बोले कि आपलोग जो मेरे ऊपर प्रसन्नहैं और हमपरकृपा किया चाहते हैं २९ तो पितरों के प्रसाद से यह इच्छाहै कि फिर तपकी वृद्धि हो और जो क्रोधयुक्त होकर मैंने क्षत्रियों को माराहै ३० तो आपके तेज से हम पापसेछूट जावें और पृथ्वी में प्रसिद्ध हमारे कुण्डतीर्थ होजावें ३१ ये परशुराम जीके शुभवचन सुनकर तिससमय में परम प्रसन्न तोषयुक्त पितर उनसे बोले ३२ कि पितृभक्ति से विशेष कर फिर तुम्हारा तप बढ़ेगा और जो क्रोधयुक्त होकर तुमने क्षत्रियों को माराहै ३३ तो पापसे तुम छूटगये और वे अपने कर्मसे मारेगये कुण्ड तुम्हारे निस्सन्देह तीर्थ भाव को प्राप्तहोंगे ३४ इन कुण्डोंमें जो स्नानकर पितरों को तर्पण करेगा तिस केऊपर पितृप्रसन्न होकर पृथ्वी में दुर्लभ पदार्थ देंगे ३५ मनोवाञ्छित कामना होंगी और निरन्तर स्वर्गलोक होगा हे राजन्! तिससमयमें परशुरामजी के पितर इस प्रकारवरदेकर प्रसन्न होकर परशुराम जीसे सलाहलेकर तहांहीअन्तर्द्धानहोगये ३६ इसप्रकार महात्मा परशुराम जीके पुण्यकारी कुण्डहुये शुभव्रत करने वाला ब्रह्मचारी परशुराम जी के कुण्डों में स्नानकर ३७ परशुराम जीका पूजनकर बहुत सुवर्ण को पाता है

फिर तीर्थ सेवन करने वाला वंश मूल तीर्थ को प्राप्त होकर स्नान कर अपने वंश को उद्धार करेगा हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! हे राजन्! कायशोधन तीर्थको प्राप्तहोकर ३८ । ३९ तिसमें स्नानकर शरीर की शुद्धिको निस्सन्देह प्राप्त होताहै और शुद्ध देहहोकर अत्युत्तम शुभलोकों को प्राप्तहोताहै ४० तदनन्तर त्रैलोक्यमें दुर्लभतीर्थको जावे जहां परविष्णुजी ने पूर्वसमय में लोकों का उद्धार कियाहै ४१ हे राजन्! त्रैलोक्य में प्रसिद्ध लोकोद्धारको प्राप्तहोकर श्रेष्ठतीर्थ में स्नानकर अपने लोकोंको उद्धार करताहै ४२ श्रीतीर्थको प्राप्त होकर उत्तम लक्ष्मीको प्राप्त होताहै फिर एकाग्र चित्त होकर ब्रह्मचारी कपिलातीर्थको प्राप्त होकर ४३ तहां स्नानकर देवता और पितरों को पूजनकर सहस्र कपिलाओं के फलको प्राप्त होताहै ४४ नियतमन वाला व्रतमें परायण मनुष्य सूर्यतीर्थको प्राप्त होकर पितृ देवताओंका पूजन कर ४५ अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्त होता और सूर्यलोक को जाताहै तीर्थ सेवन करनेवाला क्रमपूर्व्वक गया भवन को प्राप्त होकर ४६ तहां अभिषेक करै तो सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोवे हे राजन्! तीर्थ सेवनेवाला गङ्गातीर्थ को प्राप्त होकर ४७ और केव्यारतीर्थ में स्नानकर उत्तमवीर्य्य को प्राप्त होताहै हे राजेन्द्र! फिर लवणंक द्वारपाल को जावे ४८ यह सरस्वती का तीर्थहै जैसे महात्मा इन्द्रका है तहां स्नान कर मनुष्य अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्त होताहै ४९ हे धर्मज्ञ राजन्! तिस पीछे ब्रह्मावर्त को जावे ब्रह्मावर्त में मनुष्य स्नानकर ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है ५० फिर अत्युत्तम सुतीर्थक को जावे जहां देवताओं समेत पितर नित्यही स्थित रहते हैं ५१ तहां पितृ देवताओं के पूजन में रत अभिषेक करै तो अश्वमेधयज्ञ के फलको पावे और पितृलोक को जावे ५२ हे धर्मज्ञ! हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! क्रमसे और तीर्थ को प्राप्त होकर काशीश्वर के तीर्थमें स्नानकर ५३ सब व्याधियों से छूटकर ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै तहां पर मातृतीर्थ है जहां स्नान करनेवाले की ५४ प्रजा बढ़ती और स्वर्गको प्राप्त होता है फिर नियत और नियत भोजन करनेवाला शीतवन को जावे ५५ हे

महाराज ! हे मनुष्योंके स्वामी! तहांपर बड़ा और जगह दुर्लभतीर्थ है जोकि दर्शनसे एक दण्डमें पवित्र करता है ५६ तिसमें बालोंको बनवाकर पवित्र होजाता है तहांपर और तीर्थों में श्रेष्ठ स्नातलोकातिह है ५७ हे मनुष्यों में व्याघ्ररूप! हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहां पर ब्राह्मण विद्वान् तहांहीं तत्पर स्नानकर श्रेष्ठगति को प्राप्त होते हैं ५८ स्वर्णलोमाप नयनतीर्थ में ब्राह्मणों में उत्तम प्राणायामों से अपने लोमोंको नाश करते हैं ५९ पवित्र आत्मा होकर परमगति को जाते हैं दशाश्वमेधिकतीर्थमें स्नानकर परमगति को जाते हैं तदनन्तर लोकमें प्रसिद्ध मानुषतीर्थको जावे ६० । ६१ हे राजन्! तहां काले मृग बहेलिया के बाणोंसे पीड़ित हुये तिस सरोवर में स्नान कर मनुष्य होगये ६२ तिस तीर्थमें ब्रह्मचारी मनुष्य एकाग्रचित्त कर स्नानकर सब पापोंसे विशुद्ध आत्मा होकर स्वर्गलोक में प्राप्त होताहै ६३ मानुषतीर्थके पूर्व एक कोसपर सिद्धोंसे सेवित आपगा नाम से प्रसिद्ध नदी है ६४ तहां पर जो मनुष्य देवता पितरों को उद्देश कर सावेंका भोजन देताहै तिसके धर्मका फल बड़ा होता है ६५ एक ब्राह्मण के भोजन कराये करोड़ भोजन कराये का फल होता है तहां स्नानकर देवता पितरों को पूजनकर ६६ एकरात्रि वसकर अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्त होताहै तदनन्तर ब्रह्माजी के उत्तमस्थान को जावे जोकि पृथ्वी में ब्रह्मानुस्वर नामसे प्रसिद्ध है तहां सप्तर्षि कुण्डोंमें स्नान करनेवाला ६७।६८ और महात्मा कपिलजी के केदार में स्नानकर्त्ता ब्रह्माजी को प्राप्तहोकर पवित्र प्रयतमन होकर ६९ सब पापोंसे विशुद्ध आत्मा होकर ब्रह्मलोक को प्राप्त होताहै कपिष्ठल के अत्यन्त दुर्लभ केदारको प्राप्तहोकर ७० तपस्यासे पाप जलकर अन्तर्द्धान को प्राप्तहोताहै हे राजेन्द्र! फिर लोकमें प्रसिद्ध सर्वक को जावे ७१ कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में शिवजी को प्राप्त होकर सब कामनाओं को प्राप्त होता और स्वर्ग लोकको जाताहै हे कुरुनन्दन ! हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! तीनकरोड़ तीर्थों में श्रेष्ठतीर्थ है रुद्रकोटी तथा कूपमें कुण्डोंमें समन्तक और तहां ही इलास्पद तीर्थ है ७२।७३ तहां स्नान और देवता पितरों को

पूजनकर मनुष्य दुर्गति को नहीं प्राप्तहोता और वाजपेययज्ञ को प्राप्त होताहै ७४ किन्दान और किंजप में मनुष्य स्नानकर अप्रमेयदान और यज्ञको प्राप्त होता है श्रद्धायुक्त जितेन्द्रिय मनुष्य कलशीमें जल स्पर्शकर अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्त होताहै सरक के पूर्व महात्मा नारदजी का ७५ । ७६ शुभतीर्थ रामजन्म नामसे प्रसिद्ध है तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर प्राणों को त्यागकर ७७ नारदजी की आज्ञा पाकर दुर्लभलोकों को प्राप्त होताहै शुक्लपक्षकी दशमी में पुण्डरीक को प्रवेशकरै ७८ तहां स्नानकर मनुष्य पुण्डरीक यज्ञके फलको प्राप्तहोता है फिर तीनोंलोक में प्रसिद्ध त्रिविष्टप को जावे ७९ तहांपर पुण्यकारी पाप नाश करनेवाली वैतरणीनदी है तहांहीं स्नानकर वृषध्वज शूल हाथ में लेनेवाले शिवजी को पूजन कर ८० सब पापोंसे विशुद्ध आत्मा होकर परमगतिको मनुष्य जावे हे राजेन्द्र ! फिर उत्तम फलकी वनको जावे ८१ तहां देवता सदैव आश्रित रहते और बहुतवर्ष सहस्रतक बड़ी भारी तपस्या करते हैं ८२ मनुष्य दृषत्पान में स्नान कर देवताओं को तर्पणकर अग्निष्टोम और अतिरात्र के फलको प्राप्तहोता है ८३ हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ ! हे राजेन्द्र ! सब देवों के तीर्थ में स्नानकर सहस्र गऊके फलको प्राप्त होता है ८४ पाणिख्यात में मनुष्य स्नानकर देवताओंको तर्पणकर राजसूय यज्ञके फलको प्राप्तहोता और ऋषि लोक को जाता है ८५ हे धर्मज्ञ ! हे राजेन्द्र ! फिर लोकमें प्रसिद्ध मिश्रक को जावे तहां तीर्थोंको महात्मा व्यासजीने ब्राह्मणों के अर्थ मिला दिया है यह हमने सुना है सब तीर्थों में स्नानकरै और मिश्रक में जो मनुष्य स्नानकरै ८६।८७ फिर नियत और नियतभोजन कर व्यास वनको जावे मनोजव में मनुष्य स्नान कर सहस्र गऊके फलको प्राप्त होताहै ८८ फिर पवित्र मनुष्य देवी के स्थान मधुवनी को जाकर तहां स्नानकर नियत पवित्रहोकर देवता और पितरों को पूजन करै ८९ वह देवीजीकी कृपासे सहस्रगऊ के फल को प्राप्तहोवे कौशिकी और दृषद्वती के संगम में ९० स्नानकर नियत आहारहो सब पापों से छूटजाताहै फिर व्यासस्थली नामतीर्थ

जिसको पुत्रके शोकसे सन्तप्त बुद्धिमान् व्यासजीने देह छोड़ने के लिये निश्चय कियाथा और देवोंने फिर उत्थापित कियाथा ९१।९२ व्यासजीकी स्थलीको प्राप्तहोकर मनुष्य सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोता है ऋणान्त कूपको प्राप्तहोकर प्रस्थभर तिल देकर ९३ परम सिद्धिको प्राप्तहोता और ऋणों से छूटजाता है वेदीतीर्थ में मनुष्य स्नानकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोता है ९४ हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! हे राजन्! अह और सुदिन दो तीर्थ दुर्लभ हैं तिनमें स्नानकर सूर्यलोकको प्राप्तहोताहै ९५ फिर मनुष्य तीनों लोक में प्रसिद्ध मृगधूमको जावे तहां रुद्रपद में स्नानकर महात्मा शिवजी को पूजनकर अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहोता है कोटि तीर्थ में मनुष्य स्नानकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोता है ९६।९७ तदनन्तर तीनों लोकसे प्रसिद्ध वामनकको जाकर तहां विष्णुपदमें स्नानकर वामनजीको पूजनकर ९८ सब पापोंसे विशुद्धआत्माहोकर विष्णुलोकको प्राप्तहोता है कुलपुनमें मनुष्य स्नानकर अपने कुल को पवित्र करताहै ९९ हे मनुष्यों में व्याघ्र! पवनके ह्रद मरुतों के उत्तम तीर्थको जाकर तहां स्नानकर वायुलोकमें प्राप्तहोताहै १०० देवों के ह्रद में स्नानकर देवोंके स्वामीको पूजनकर देवों के प्रभाव से स्वर्गलोकमें प्राप्तहोताहै १०१ हे मनुष्य श्रेष्ठों में श्रेष्ठ! शालिहोत्रके शालिसूर्य्य में विधिपूर्वक स्नानकर मनुष्य सहस्र गऊ के फलको प्राप्तहोताहै १०२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! हे राजन्! सरस्वतीमें श्रीकुञ्जतीर्थ है तहां स्नानकर मनुष्य अग्निष्टोमके फलको प्राप्तहोताहै १०३ फिर अत्यन्त दुर्लभ नैमिषि कुंजको प्राप्तहो निश्चय नैमिषेय तपस्वी ऋषि १०४ पूर्वसमय में तीर्थयात्रा करते हुये कुरुक्षेत्र में गये और सरस्वती में कुञ्जबनाया १०५ जैसा कि ऋषियों को तुष्टिकरनेवाला बड़ा अवकाशहै तिस कुञ्जमें मनुष्य स्नानकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोताहै १०६॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेषड्विंशोऽध्यायः २६॥

---

# सत्ताईसवां अध्याय ॥

कन्यातीर्थ ब्रह्माजीका स्थान सोमतीर्थ सप्तसारस्वतादितीर्थोंका वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे धर्म्मजाननेवाले युधिष्ठिर ! फिर अत्युत्तम कन्या तीर्थको जावे कन्यातीर्थ में मनुष्य स्नानकर अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्तहोता है १ हे मनुष्यों व्याघ्र ! तिसपीछे उत्तम ब्रह्माजी के स्थान को जावे तहांपर शूद्रभी स्नानकर ब्राह्मण भावको प्राप्तहोताहै २ विरुद्ध आत्मावाला ब्राह्मण परमगति को प्राप्तहोताहै फिर उत्तम सोमतीर्थ को जावे ३ तहां स्नानकर मनुष्य सोम लोकको प्राप्त होताहै तदनन्तर सप्त सारस्वत तीर्थको जावे ४ जहां पर लोकमें प्रसिद्ध मंकणक ब्रह्मर्षि सिद्ध हुये हैं हे राजन् ! यह सुना है कि पूर्वसमय में मंकणकजी कुशाके अग्रसे ५ हाथमें निश्चय घाव करलेतेभये तिस हाथके घाव से शाक का रस गिरनेलगा तो महातपस्वी शाक के रसको देखकर हर्षितहुये ६ और विस्मय से उत्फुल्ल नेत्रहोकर नाचनेलगे तब तिनके नाचने में स्थावर जंगम ७ दोनों तिनके तेजसे मोहित होकर नाचनेलगे तो ब्रह्मादिक देव और तपस्वी ऋषियों ने ८ महादेवजी से ऋषिका हाल कहा कि हे देव ! जैसे यह ऋषि न नाचे तैसा तुम करने के योग्यहो ९ तब महादेव जी हर्ष चित्तसे नाचते हुये मुनिको देखकर स्थिरों के हितकी कामनासे मुनिसे बोले १० कि हे महर्षे ! हे धर्मज्ञ ! हे मुनिश्रेष्ठ! किस लिये आप नाचतेहैं इस समय में तुम्हारी किस लिये प्रसन्नता है ११ तब ऋषि बोले कि हे द्विजश्रेष्ठ ! हे ब्रह्मन् ! धर्म मार्गमें स्थित मुझ तपस्वीके घाव से शाकका रस गिरा १२ जिसको देखकर बड़ेहर्ष से युक्त होकर हम नाचतेहैं तब हँसकर महादेवजी रागसे मोहित ऋषिसे बोले १३ कि हे विप्र ! हम विस्मय को न प्राप्त होंगे हमको देखिये ऐसा कहकर तिस समय महादेवजी ने १४ अंगुली के अग्रसे अपना अंगूठा ताडित किया तो पालाके सदृश घाव से भस्म निकलतीभई १५ तिसको देखकर लज्जित मुनि चरणों में गिरते भये कि हम महादेवजी से श्रेष्ठ महान् और देवको

नहीं मानतेहैं १६ हे शूलधारण करनेवाले! देवता राक्षस सब जगत् के तुम्हीं गतिहौ आपका रचाहुआ यह चराचर त्रैलोक्य संसार है १७ हे भगवन्! युगके नाशमें सब तुम में प्रवेश करते हैं आप देवताओं से भी जानवे में समर्थ नहीं हैं फिर हम कैसे जानसकें १८ हे सब के स्वामी! हे पापरहित! तुम्हीं में शक्रादिक देवता दिखाई पड़तेहैं प्रतिदिन लोकों के कर्त्ता और कारयिता सब आपहीहैं १९ आप के प्रसाद से भय रहित सब देवता आनन्द करते हैं इस प्रकार प्रणत ऋषि महादेवजीकी स्तुतिकर बोले २० कि हे महादेवजी! आपके प्रसाद से हमारा तप न नाशहोवे तब प्रसन्न आत्मा महादेवजी ब्रह्मर्षि से यह बोले २१ हे विप्र! हमारे प्रसाद से तुम्हारा तप सहस्र प्रकार बढ़े हे महा मुनिजी! तुम्हारे साथ हम इस स्थान में वसेंगे २२ सप्त सारस्वत में स्नान कर जे हमको पूजेंगे तिनको इस लोक और परलोक में कुछ दुर्लभ न होगा २३ और निस्सन्देह सारस्वत लोक को जावे ऐसा कहकर महादेवजी तहांहीं अन्तर्द्धान होगये २४ तदनंतर तीनों लोक में प्रसिद्ध औशनस तीर्थको जावे जहां पर ब्रह्मादिक देवता तपस्वी ऋषि २५ और कार्तिकेय भगवान् भार्गवजी के प्रिय करने की कामनासे तीनों संध्याओं में समीपता करते हैं २६ सब पाप नाश करनेवाला कपालमोचन तीर्थ है हे मनुष्यों में व्याघ्र! तहां स्नानकर सब पापों से मनुष्य छूटजाता है २७ हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ! फिर अग्नि तीर्थ को जावे वहां स्नानकर अग्निलोक को मनुष्य जाता और कुलको उद्धार करता है २८ तहांहीं विश्वामित्रजी का तीर्थ है हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! हे महाराज! तहां स्नान कर ब्राह्मण ताको प्राप्त होता है २९ हे मनुष्यों में व्याघ्र! पवित्र और प्रयतमन होकर ब्रह्मयोनि को प्राप्तहो तहां स्नानकर ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है ३० और निस्सन्देह सात कुल को पवित्र करता है हे राजेन्द्र! फिर त्रैलोक्य में प्रसिद्ध कार्तिकेय के पृथूदक नाम से विख्यात तीर्थ को जावें तहां पितृ और देव पूजन में रत मनुष्य अभिषेक करे ३१। ३२ तो अज्ञान से वा ज्ञान से स्त्री पुरुष ने मनुष्य बुद्धि

से जो कुछ अशुभ कर्म्म किया हो ३३ वह सब स्नान मात्रही से नाशहोजावें अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहो और स्वर्ग को जावें ३४ कुरुक्षेत्र को पुण्यकारी कहते हैं कुरुक्षेत्र से सरस्वती और सरस्वती के तीर्थ और तीर्थोंसे पृथूदक पुण्यकारी है ३५ सब तीर्थों के उत्तम में जो अपनी देह छोड़ताहै और पृथूदक में जप करताहै वह जन्म को नहीं प्राप्त होताहै ३६ हे राजन्! सनत्कुमार और महात्मा व्यासजीने गान किया है वेदमें भी नियतहै कि पृथूदक को जावे ३७ पृथूदक से पुण्यकारी और तीर्थ नहीं है यह मेध्य पवित्र और निस्सन्देह पावनहै ३८ पाप करनेवाले भी मनुष्य पृथूदक में स्नान कर स्वर्ग को जाते हैं इसप्रकार बुद्धिमान् कहते हैं ३९ हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ! हे राजन्! तहांही मधुस्रवतीर्थ है तहां स्नानकर मनुष्य सहस्र गऊके फल को प्राप्त होताहै ४० हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! फिर क्रमसे देवीके तीर्थ संसार में प्रसिद्ध सरस्वती और आरुणा के संगम को जावे ४१ वहां तीन रात्रि बसकर स्नानकर ब्रह्महत्या से छूटजाताहै अग्निष्टोम और अतिरात्रके फल को प्राप्त होताहै ४२ निस्सन्देह सात कुलको पवित्र करताहै हे कुरुकुलोद्वह! तहांही अवकीर्ण तीर्थ है ४३ पूर्वसमयमें विप्रों के ऊपर कृपाकर दर्भीने रचाहै ब्राह्मण व्रत उपनयन वा उपवास ४४ और क्रिया मंत्रोंसे निस्सन्देह संयुक्त होताहै हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! क्रिया मन्त्रसे हीन भी तहां स्नान कर ४५ व्रतयुक्त ब्राह्मणहोता है यह पुरातन देखाहुआहै दर्भीजी ने चारोंसमुद्र लाकर प्राप्तकिये हैं ४६ हे मनुष्यों में व्याघ्र! तहाँ स्नानकर दुर्गतिको नहीं प्राप्तहोता है और चारसहस्र गौवों के फल को प्राप्तहोताहै ४७ हे राजेन्द्र! फिर तहांही शतसहस्रक और साहस्रक दो तीर्थलोक में प्रसिद्धहैं तहां जावे ४८ दोनों में मनुष्य स्नानकर सहस्र गऊकेफलको प्राप्तहोताहै दान वा उपवास सहस्र गुणाहोताहै ४९ हे राजेन्द्र! फिर उत्तमरेणुकातीर्थ को जावे तहां पितृ और देव पूजन में रतहोकर अभिषेककरै ५० तो सब पापों से विशुद्ध आत्माहोकर अग्निष्टोम के फलको प्राप्तहोवे क्रोध और इन्द्रियजीतकर विमोचन में स्पर्शकर ५१ सबदान लेने के पापोंसे

छूटजाताहै फिर जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी पंचवट में जाकर ५२ बड़े पुण्य से युक्तहोकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोताहै जहां वृषध्वज योगीश्वर शिवजी आपही हैं ५३ तिन देवेशको पूजनकर जानेही से सिद्धिकोप्राप्तहोताहै वरुणका तैजस तीर्थ अपने तेजसे प्रकाशित है ५४ जहाँ ब्रह्मादिक देवता और तपस्वी ऋषियों ने देवताओं के सेनापति में गुहको अभिषेक किया है ५५ हे कुरूद्वह! तैजसके पूर्व कुरुतीर्थ है ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय मनुष्य कुरुतीर्थ में स्नानकर ५६ सब पापों से विशुद्ध आत्मा होकर रुद्रलोक को प्राप्त होता है फिर नियत और नियत भोजन कर स्वर्गद्वार को जावे ५७ तो अग्निष्टोम के फल को प्राप्तहो और ब्रह्मलोक को जावे हे राजन्! फिर तीर्थसेवन करनेवाला अनरक तीर्थको जावे ५८ तहां स्नान कर मनुष्य दुर्गतिको नहीं प्राप्तहोता है तहांहीं देवताओं समेत ब्रह्मा अपने आप नित्यही प्राप्त रहते हैं ५९ हे पुरुषों में व्याघ्र! हे राजेन्द्र! हे कुरूद्वह! देवता लोग नारायण में परायण हैं तिनकी रुद्रवेदी में सान्निध्य है ६० तिन देवी को प्राप्त होकर दुर्गति को नहीं प्राप्त होताहै हे महाराज! तहांहीं संसार के ईश्वर पार्वतीजीके पति ६१ महादेवजी को प्राप्तहोकर सब पापों से छूट जाता है हे शत्रुओं के दमन करनेवाले! हे महाराज! हे मनुष्यों के स्वामी! कमलनाभ नारायण जी को प्राप्तहोकर ६२ शोभायमान होकर विष्णुलोकको प्राप्तहोता है सब देवों के तीर्थों में स्नानमात्र कर सब दुःखों से छूटकर सदैव शिवजी की नाईं प्रकाशित होता है हे मनुष्यों के स्वामी! तीर्थसेवन करनेवाला फिर अस्थिपुरको जावे ६३। ६४ हे भरतवंशी! पवित्र तीर्थको प्राप्तहोकर पितृ देवताओं को तर्पण करै तो अग्निष्टोम यज्ञ के फलको प्राप्तहो ६५ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहांहीं गंगाहृद और कूप है तिस कूप में तीन करोड़ तीर्थ हैं ६६ हे राजन्! तहाँ स्नानकर ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै आपगा में मनुष्य स्नानकर महेश्वर जीको पूजनकर ६७ श्रेष्ठगतिको प्राप्त होता और कुलको उद्धार करता है फिर तीनोंलोकमें प्रसिद्ध स्थाणुवटको जावे ६८ तहाँ स्नानकर रात्रिभर स्थित रहै तो रुद्रलोक

को प्राप्त होवे तदनन्तर वशिष्ठजी के आश्रम बदरीवन को जावे ६९ जहां बेरभक्षण किये जातेहैं वहां मनुष्य तीनरात्रि बसे अच्छी प्रकार जो बारह वर्ष बेरभक्षण करताहै ७० और जो तीनरात्रि वसता है तो दोनों समान होते हैं हे राजन् तीर्थसेवन करनेवाला मनुष्य इन्द्रमार्ग को प्राप्तहो ७१ दिन रात्रि के बसने से स्वर्गलोक में प्राप्त होताहै एकरात्र तीर्थको प्राप्तहोकर एकरात्रि मनुष्य बस-कर ७२ नियत और सत्यबादीहो ब्रह्मलोक में प्राप्त होता है हे राजेन्द्र! फिर त्रैलोक्य में प्रसिद्ध तीर्थको जावे ७३ जहां महात्मा तेजकी राशि सूर्यका आश्रम है तिस तीर्थमें मनुष्य स्नानकर अ-ग्निको पूजनकर ७४ सूर्यलोक को प्राप्त होता और कुलको उद्धार करता है हे कुरूद्वह! तीर्थसेवन करनेवाला मनुष्य सोमतीर्थ में स्नानकर ७५ निस्सन्देह सोमलोक को प्राप्त होता है हे धर्म्म जाननेवाले! हे राजन्! फिर दधीचि के अत्यन्त पुण्यकारी पावन लोक में प्रसिद्ध तीर्थको जावे जहां सारस्वत तपस्वी सिद्धिको प्राप्त हुये हैं ७६। ७७ तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर वाजपेययज्ञ के फलको प्राप्त होता है और निस्सन्देह सारस्वती बुद्धिको प्राप्त होता है ७८ हे राजन्! फिर नियत और व्रत में परायण मनुष्य कन्याश्रमको जाकर ब्रह्मचर्य्य से तीनरात्रि बसकर ७९ दिव्य सौ कन्याओं को पाता और ब्रह्मलोक को जाता है हे धर्मजाननेवाले! फिर सन्निहितीतीर्थ को जावे ८० जहां ब्रह्मादिक देवता और बड़े पुण्य से युक्त तपस्वी ऋषि महीने महीने में प्राप्त होते हैं ८१ सूर्य ग्रहण में सन्निहिती में जो स्पर्श करता है उसने निरन्तर अश्वमेध यज्ञ सौ करली ८२ हे मनुष्यों के स्वामी! हे मनुष्यों में व्याघ्र! हे जनों के ईश्वर! पृथ्वी में जितने आकाश में प्राप्त तीर्थहैं उदपान ब्राह्मण पुण्यकारी स्थान ये महीने महीने सन्निहिती में अमावास्या में प्राप्तहोते हैं ८३। ८४ तीर्थों के प्राप्त करने से पृथ्वी में सन्निहि-ती प्रसिद्ध है तहां स्नान और पानकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोता है ८५ अमावास्या में सूर्य्य के ग्रहण में जो मनुष्य श्राद्ध करता है तिसके पुण्य फलको सुनिये ८६ अच्छीप्रकार सहस्र अश्वमेधयज्ञ

छूटजाताहै फिर जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी पंचवट में जाकर ५२ बड़े पुण्य से युक्तहोकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोताहै जहां वृषध्वज योगीश्वर शिवजी आपही हैं ५३ तिन देवेशको पूजनकर जानेही से सिद्धिकोप्राप्तहोताहै वरुणका तैजस तीर्थ अपने तेजसे प्रकाशित है ५४ जहाँ ब्रह्मादिक देवता और तपस्वी ऋषियों ने देवताओं के सेनापति में गुहको अभिषेक किया है ५५ हे कुरूद्वह! तैजसके पूर्व कुरु तीर्थ है ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय मनुष्य कुरुतीर्थ में स्नानकर ५६ सब पापों से विशुद्ध आत्मा होकर रुद्रलोक को प्राप्त होता है फिर नियत और नियत भोजन कर स्वर्गद्वार को जावे ५७ तो अग्निष्टोम के फल को प्राप्तहो और ब्रह्मलोक को जावे हे राजन्! फिर तीर्थसेवन करनेवाला अनरक तीर्थको जावे ५८ तहां स्नान कर मनुष्य दुर्गतिको नहीं प्राप्तहोता है तहांहीं देवताओं समेत ब्रह्मा अपने आप नित्यही प्राप्त रहते हैं ५९ हे पुरुषों में व्याघ्र! हे राजेन्द्र! हे कुरूद्वह! देवता लोग नारायण में परायण हैं तिनकी रुद्रवेदी में सान्निध्य है ६० तिन देवी को प्राप्त होकर दुर्गति को नहीं प्राप्त होताहै हे महाराज! तहांहीं संसार के ईश्वर पार्वतीजीके पति ६१ महादेवजी को प्राप्तहोकर सब पापों से छूट जाता है हे शत्रुओं के दमन करनेवाले! हे महाराज! हे मनुष्यों के स्वामी! कमलनाभ नारायण जी को प्राप्तहोकर ६२ शोभायमान होकर विष्णु लोकको प्राप्तहोता है सब देवों के तीर्थों में स्नानमात्र कर सब दुःखों से छूटकर सदैव शिवजी की नाईं प्रकाशित होता है हे मनुष्यों के स्वामी! तीर्थसेवन करनेवाला फिर अस्थि पुरको जावे ६३। ६४ हे भरतवंशी! पवित्र तीर्थको प्राप्तहोकर पितृ देवताओं को तर्पण करै तो अग्निष्टोम यज्ञ के फलको प्राप्तहो ६५ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहांहीं गंगाहृद और कूप है तिस कूप में तीन करोड़ तीर्थ हैं ६६ हे राजन्! तहाँ स्नानकर ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै आपगा में मनुष्य स्नानकर महेश्वर जीको पूजनकर ६७ श्रेष्ठगतिको प्राप्त होता और कुलको उद्धार करता है फिर तीनोंलोकमें प्रसिद्ध स्थाणु वटको जावे ६८ तहाँ स्नानकर रात्रिभर स्थित रहे तो रुद्रलोक

को प्राप्त होवे तदनन्तर वशिष्ठजी के आश्रम बदरीवन को जावे ६९ जहां बेरभक्षण किये जातेहैं वहां मनुष्य तीनरात्रि बसे अच्छी प्रकार जो बारह वर्ष बेरभक्षण करताहै ७० और जो तीनरात्रि बसता है तो दोनों समान होते हैं हे राजन् तीर्थसेवन करनेवाला मनुष्य इन्द्रमार्ग को प्राप्तहो ७१ दिन रात्रि के बसने से स्वर्गलोक में प्राप्त होताहै एकरात्र तीर्थको प्राप्तहोकर एकरात्रि मनुष्य बस-कर ७२ नियत और सत्यबादीहो ब्रह्मलोक में प्राप्त होता है हे राजेन्द्र! फिर त्रैलोक्य में प्रसिद्ध तीर्थको जावे ७३ जहां महात्मा तेजकी राशि सूर्यका आश्रम है तिस तीर्थमें मनुष्य स्नानकर अ-ग्निको पूजनकर ७४ सूर्यलोक को प्राप्त होता और कुलको उद्धार करता है हे कुरूद्वह! तीर्थसेवन करनेवाला मनुष्य सोमतीर्थ में स्नानकर ७५ निस्सन्देह सोमलोक को प्राप्त होता है हे धर्म्म जाननेवाले! हे राजन्! फिर दधीचि के अत्यन्त पुण्यकारी पावन लोक में प्रसिद्ध तीर्थको जावे जहां सारस्वत तपस्वी सिद्धिको प्राप्त हुये हैं ७६। ७७ तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर वाजपेययज्ञ के फलको प्राप्त होता है और निस्सन्देह सारस्वती बुद्धिको प्राप्त होता है ७८ हे राजन्! फिर नियत और व्रत में परायण मनुष्य कन्याश्रमको जाकर ब्रह्मचर्य्य से तीनरात्रि बसकर ७९ दिव्य सौ कन्याओं को पाता और ब्रह्मलोक को जाता है हे धर्मजाननेवाले! फिर सन्निहिती तीर्थ को जावे ८० जहां ब्रह्मादिक देवता और बड़े पुण्य से युक्त तपस्वी ऋषि महीने महीने में प्राप्त होते हैं ८१ सूर्य ग्रहण में सन्निहिती में जो स्पर्श करता है उसने निरन्तर अश्वमेध यज्ञ सौ करली ८२ हे मनुष्यों के स्वामी! हे मनुष्यों में व्याघ्र! हे जनों के ईश्वर! पृथ्वी में जितने आकाश में प्राप्त तीर्थहैं उदपान ब्राह्मण पुण्यकारी स्थान ये महीने महीने सन्निहिती में अमावास्या में प्राप्तहोते हैं ८३। ८४ तीर्थों के प्राप्त करने से पृथ्वी में सन्निहि-ती प्रसिद्ध है तहां स्नान और पानकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोता है ८५ अमावास्या में सूर्य्य के ग्रहण में जो मनुष्य श्राद्ध करता है तिसके पुण्य फलको सुनिये ८६ अच्छीप्रकार सहस्र अश्वमेधयज्ञ

छूटजाताहै फिर जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी पंचवट में जाकर ५२ बड़े पुण्य से युक्तहोकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोताहै जहां वृषध्वज योगीश्वर शिवजी आपही हैं ५३ तिन देवेशको पूजनकर जानेही से सिद्धिकोप्राप्तहोताहै वरुणका तैजस तीर्थ अपने तेजसे प्रकाशित है ५४ जहाँ ब्रह्मादिक देवता और तपस्वी ऋषियों ने देवताओं के सेनापति में गुहको अभिषेक किया है ५५ हे कुरूद्वह! तैजसके पूर्व कुरुतीर्थ है ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय मनुष्य कुरुतीर्थ में स्नानकर ५६ सब पापों से विशुद्ध आत्मा होकर रुद्रलोक को प्राप्त होता है फिर नियत और नियत भोजन कर स्वर्गद्वार को जावे ५७ तो अग्निष्टोम के फल को प्राप्तहो और ब्रह्मलोक को जावे हे राजन्! फिर तीर्थसेवन करनेवाला अनरक तीर्थको जावे ५८ तहां स्नान कर मनुष्य दुर्गतिको नहीं प्राप्तहोता है तहांहीं देवताओं समेत ब्रह्मा अपने आप नित्यही प्राप्त रहते हैं ५९ हे पुरुषों में व्याघ्र! हे राजेन्द्र! हे कुरूद्वह! देवता लोग नारायण में परायण हैं तिनकी रुद्रवेदी में सान्निध्य है ६० तिन देवी को प्राप्त होकर दुर्गति को नहीं प्राप्त होताहै हे महाराज! तहांहीं संसार के ईश्वर पार्वतीजीके पति ६१ महादेवजी को प्राप्तहोकर सब पापों से छूट जाता है हे शत्रुओं के दमन करनेवाले! हे महाराज! हे मनुष्यों के स्वामी! कमलनाभ नारायण जी को प्राप्तहोकर ६२ शोभायमान होकर विष्णु लोकको प्राप्तहोता है सब देवों के तीर्थों में स्नानमात्र कर सब दुःखों से छूटकर सदैव शिवजी की नाईं प्रकाशित होता है हे मनुष्यों के स्वामी! तीर्थसेवन करनेवाला फिर अस्थि पुरको जावे ६३। ६४ हे भरतवंशी! पवित्र तीर्थको प्राप्तहोकर पितृ देवताओं को तर्पण करै तो अग्निष्टोम यज्ञ के फलको प्राप्तहो ६५ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहांहीं गंगाह्रद और कूप है तिस कूप में तीन करोड़ तीर्थ हैं ६६ हे राजन्! तहाँ स्नानकर ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै आपगा में मनुष्य स्नानकर महेश्वर जीको पूजनकर ६७ श्रेष्ठगतिको प्राप्त होता और कुलको उद्धार करता है फिर तीनोंलोकमें प्रसिद्ध स्थाणु वटको जावे ६८ तहाँ स्नानकर रात्रिभर स्थित रहे तो रुद्रलोक

को प्राप्त होवे तदनन्तर वशिष्ठजी के आश्रम बदरीवन को जावे ६९ जहां बेरभक्षण किये जातेहैं वहां मनुष्य तीनरात्रि बसे अच्छी प्रकार जो बारह वर्ष बेरभक्षण करताहै ७० और जो तीनरात्रि वसता है तो दोनों समान होते हैं हे राजन् तीर्थसेवन करनेवाला मनुष्य इन्द्रमार्ग को प्राप्तहो ७१ दिन रात्रि के बसने से स्वर्गलोक में प्राप्त होताहै एकरात्र तीर्थको प्राप्तहोकर एकरात्रि मनुष्य बस-कर ७२ नियत और सत्यबादीहो ब्रह्मलोक में प्राप्त होता है हे राजेन्द्र! फिर त्रैलोक्य में प्रसिद्ध तीर्थको जावे ७३ जहां महात्मा तेजकी राशि सूर्यका आश्रम है तिस तीर्थमें मनुष्य स्नानकर अ-ग्निको पूजनकर ७४ सूर्यलोक को प्राप्त होता और कुलको उद्धार करता है हे कुरूद्वह! तीर्थसेवन करनेवाला मनुष्य सोमतीर्थ में स्नानकर ७५ निस्सन्देह सोमलोक को प्राप्त होता है हे धर्म्म जाननेवाले! हे राजन्! फिर दधीचि के अत्यन्त पुण्यकारी पावन लोक में प्रसिद्ध तीर्थको जावे जहां सारस्वत तपस्वी सिद्धिको प्राप्त हुये हैं ७६। ७७ तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर वाजपेययज्ञ के फलको प्राप्त होता है और निस्सन्देह सारस्वती बुद्धिको प्राप्त होता है ७८ हे राजन्! फिर नियत और व्रत में परायण मनुष्य कन्याश्रमको जाकर ब्रह्मचर्य्य से तीनरात्रि बसकर ७९ दिव्य सौ कन्याओं को पाता और ब्रह्मलोक को जाता है हे धर्मजाननेवाले! फिर सन्निहिती तीर्थ को जावे ८० जहां ब्रह्मादिक देवता और बड़े पुण्य से युक्त तपस्वी ऋषि महीने महीने में प्राप्त होते हैं ८१ सूर्य ग्रहण में सन्निहिती में जो स्पर्श करता है उसने निरन्तर अश्वमेध यज्ञ सौ करली ८२ हे मनुष्यों के स्वामी! हे मनुष्यों में व्याघ्र! हे जनों के ईश्वर! पृथ्वी में जितने आकाश में प्राप्त तीर्थहैं उदपान ब्राह्मण पुण्यकारी स्थान ये महीने महीने सन्निहिती में अमावास्या में प्राप्तहोते हैं ८३। ८४ तीर्थों के प्राप्त करने से पृथ्वी में सन्निहि-ती प्रसिद्ध है तहां स्नान और पानकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोता है ८५ अमावास्या में सूर्य्य के ग्रहण में जो मनुष्य श्राद्ध करता है तिसके पुण्य फलको सुनिये ८६ अच्छीप्रकार सहस्र अश्वमेधयज्ञ

करनेका जो फल है वह स्नान और श्राद्ध करने से मनुष्य पाताहै ८७ जो कुछ स्त्री वा पुरुषका पापकर्म है वह सब निस्सन्देह स्नान मात्रही से नाश होजाता है ८८ और कमलवर्ण यानसे ब्रह्मलोक को जाता है फिर अचक्रुक नाम द्वारपाल के नमस्कार करै ८९ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! हे धर्मजाननेवाले! तहांहीं गंगाह्रद तीर्थ है तहां एकाग्रचित्त होकर ब्रह्मचारी स्नान करै ९० तो वह ब्रह्मचारी मनुष्य राजसूय और अश्वमेध के फलको प्राप्तहोवे पृथ्वी में पुण्यकारी नैमिषहै आकाशमें पुष्करहै ९१ और तीनों लोकमें कुरुक्षेत्र श्रेष्ठहै कुरुक्षेत्र में हवासे उड़ीहुई धूलि ९२ पापकरनेवाले को भी निश्चय श्रेष्ठगति को प्राप्त करदेती है सरस्वती के दक्षिण और उत्तर ९३ और जे कुरुक्षेत्र में बसते हैं वे स्वर्ग में बसते हैं कुरुक्षेत्र को जावेंगे कुरुक्षेत्र में हमबसेंगे ९४ जो एकवार भी ऐसा कहताहै वह स्वर्गलोकको प्राप्त होताहै ब्रह्मवेदी में पुण्यकारी ब्रह्मऋषियों से सेवित कुरुक्षेत्रहै ९५ हे राजन्! तिसमें जे बसते हैं वे कभी शोच करने के योग्य नहीं होते हैं तरंड और कारंडकका जो बीचहै रामह्रद और मचक्रुकका जो अन्तर है यह कुरुक्षेत्र समन्तपंचक ब्रह्माजी का उत्तरवेदि कहाता है ९६॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेसप्तविंशतितमोऽध्यायः २७॥

## अट्ठाईसवां अध्याय॥

पुराने धर्म तीर्थ कलापवन सौगंधिक वन प्लक्षादेवी और ईशानाध्युषित आदि तीर्थों का वर्णन॥

नारदजीबोले कि हे धर्मजाननेवाले युधिष्ठिर! तदनन्तर पुराने धर्म तीर्थ को जावे जहां महा भागधर्म जी उत्तम तपकरते हैं १ तिन्हों ने अपने नामसे चिह्नित पुण्यकारी तीर्थ किया है तहां धर्मात्मा एकाग्र चित्तहोकर मनुष्य स्नानकरे २ तो निस्सन्देह सातकुल को पवित्रकरै हे धर्मज्ञ! फिर उत्तम कलापवनको जावे ३ एकाग्र चित्तहो बड़े क्लेश से तहां जा स्नानकरै तो अग्निष्टोमयज्ञके फल को प्राप्तहो और विष्णुलोकको प्राप्तहो ४ हे राजन्! फिर मनुष्य

सौगन्धिक वनकोजावे जहां ब्रह्मादिक देवता तपस्वी ऋषि ५ सिद्धचारण गन्धर्व किन्नर महोरग तिसवनमें प्रवेशकरतेहुये सब पापों से छूटजाते हैं ६ फिर नदियों में श्रेष्ठ नदियों में उत्तम नदी महापुण्य कारिणी सरस्वती जिसका छक्षादेवी नामहै ७ तहां बांबी से निकले जलमें अभिषेककरै पितृ और देवोंको पूजनकरै तो अश्वमेध यज्ञके फल प्राप्त हो ८ तहां पर अत्यन्त दुर्लभ ईशानाध्युषित नामतीर्थ है और बांबी से निकलकर मिलने में छः गुणाहै यह निश्चयहै ९ हे मनुष्यों में व्याघ्र ! तहां स्नानकर सहस्र कपिलाओं और अश्वमेधयज्ञ के फल को मनुष्य पाताहै यह पुराने ऋषियोंने देखाहै १० हे भरतवंशी ! हे मनुष्यों में श्रेष्ठ ! सुगंधाशत कुम्भा और पंचयज्ञतीर्थ को प्राप्त होकर मनुष्य स्वर्ग लोकमें जाता है ११ तहांहीं दुर्लभ त्रिशूलपात्र तीर्थ को प्राप्तहोकर पितृ और देव पूजन में रत मनुष्य अभिषेक करै १२ तो देह छोड़कर निस्सन्देह गणेशजी के लोक को प्राप्त होवे फिर देवी के अत्यन्त दुर्लभराज गृहस्थान को जावे १३ जो देवी तीनों लोक में प्रसिद्ध शाकंभरी नाम से विख्यातहैं दिव्य सहस्रवर्षतक शाक से १४ महीने महीने आहार किया था तहां देवीजीके भक्त तपस्वी ऋषि आतेभये १५ तब शाकहीसे तिनका देवीजी आतिथ्य करती भई तबसे देवीजीका शाकंभरी नाम प्रतिष्ठित है १६ ब्रह्मचारी एकाग्रचित्त होकर नियत और पवित्र हो शाकंभरी को प्राप्तहोकर तीनरात्रि बस शाक भोजन करै १७ तो बारहवर्ष में अच्छीप्रकार शाकभोजन करने से जो फल है वह फल उसको देवीजी के छन्दसे होताहै १८ फिर तीनोंलोक में प्रसिद्ध सुवर्णाख्य तीर्थको जावे जहाँ पूर्वसमय कृष्णजीने प्रसन्नता के लिये शिवजी को आराधन किया १९ और देवताओं से दुर्लभ वरोंको पाया प्रसन्नहुये महादेवजी बोले २० कि हे कृष्ण ! संसार में तुम्हारा आत्मा अत्यन्त प्याराहोगा और सब संसार निस्सन्देह तुम्हारा मुख होगा २१ हे राजेन्द्र ! तहां प्राप्तहोकर शिवजी को पूजनकर मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता और गणेशजी के लोकको प्राप्तहोता है २२ फिर मनुष्य धूमावती को जावे वहां

तीनरात्रि बसकर मनसे प्रार्थित कामोंको निस्सन्देह प्राप्तहोवे २३ हे मनुष्योंके स्वामी! हे धर्म जाननेवाले! देवीजीके दक्षिणार्द्ध से र-थावर्त है तहां श्रद्धायुक्त जितेन्द्रिय मनुष्य आकर २४ महादेवजी के प्रसादसे परमगतिको प्राप्तहोवे हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! प्रदक्षिण वर्तमान होकर २५ सब पाप नाश करनेवाली धरानामनदीको जावे हे महा बुद्धियुक्त! हे मनुष्यों में व्याघ्र! हे मनुष्यों के स्वामी! तहाँ स्नानकर शोचको न प्राप्तहो २६ हे नरव्याघ्र! फिर महागिरिको नमस्कारकर स्वर्गद्वारके तुल्य निस्सन्देह गङ्गाद्वारहै २७ तहां एका-ग्रचित्त होकर कोटि तीर्थ में अभिषेक करै तो पुण्डरीक यज्ञके फल को प्राप्तहो और कुलका उद्धारकरै २८ तहां एकरात्रि बसकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो सप्त गंग त्रिगंग और शक्रावर्त में तर्पण २९ विधिपूर्वक देवता और पितरोंका करै तो पुण्यलोक में प्राप्तहो फिर कनखल में स्नानकर तीनरात्रि मनुष्य बसकर ३० अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो और स्वर्गलोकको जावे हे मनुष्यों के स्वामी! तीर्थ सेवी मनुष्य कपिलावट को जावे ३१ तहां एकरात्रि बसकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो हे राजेन्द्र! हेकुरुवरश्रेष्ठ! हेमनुष्योंकेस्वामी! नागराज महात्मा कपिल का तीर्थ सब लोक में प्रसिद्ध है तहां नागतीर्थ में अभिषेक करै तो कपिलाओं के सहस्र के फलको मनुष्य प्राप्तहो ३२। ३३ फिर शन्तनुजी के उत्तम तीर्थ ललितकाको जावे हे राजन्! तहां स्नानकर मनुष्य दुर्गति को नहीं प्राप्तहोताहै ३४॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेऽष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

## उनतीसवाँ अध्याय॥

यमुनाजीका माहात्म्यवर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ! हे राजन् युधिष्ठिर! फिर उत्तम कालिन्दी तीर्थको जावे तहां स्नानकर मनुष्य दुर्गतिको नहीं प्राप्तहोता है १ पुष्कर कुरुक्षेत्र ब्रह्मावर्त्त पृथूदक अविमुक्त और सुवर्णाख्य में जिस फलको मनुष्य प्राप्तहो २ हे मनुष्यों में उत्तम! तिस फलको यमुनाजी में भी पावे जिनके मनमें स्वर्ग भोगका राग

वर्तमान हो ३ यमुनाजी में विशेष कर स्नान दानसे आयुआरोग्य सम्पत्ति रूप और यौवनता गुणमें ४ जिनका मनोरथ हो तिनको यमुनाजल नहीं त्यागना चाहिये जे नरकादि से डरते हैं और दारिद्र्य से जे डरते हैं ५ तिनको सर्वथा प्रयत्नसे तहां स्नान करना चाहिये दारिद्र्य पाप दौर्भाग्य रूप कीचड़ के धोनेके लिये ६ यमुनाजलको छोड़कर और नहीं है श्रद्धाहीन कर्म आधाफल देते हैं यमुनाजी स्नान मात्रही से सम्पूर्ण फल देती हैं ७ कामना रहित वा कामना सहित यमुनाजलमें जो स्नान करता है वह इसलोक और परलोक के दुःखोंको स्नानही से नहीं देखता है ८ दोनोंपक्ष में जैसे चन्द्रमा क्षीण और वृद्धिको प्राप्तहोता है तैसेही तहां पापनाश होता और स्नान से पुण्य बढ़ती है ९ जैसे समुद्र में अनेक प्रकारके रत्न सुख पूर्वक प्राप्तहोते हैं तैसे यमुनाजलमें स्नानसे आयु द्रव्य स्त्रियां और सम्पदा होती हैं १० जैसे कामधेनु कामनाको देतीहै और चिन्तामणि भी विचिन्तित को देती है तैसेही यमुनाजी का स्नान सब मनोरथ को देता है ११ सतयुग में तपस्या श्रेष्ठ ज्ञान है त्रेतायुग में यज्ञ करना द्वापर और कलियुग में दान करना श्रेष्ठ है यमुनाजी सदैव कल्याण कारिणी हैं १२ हे राजन्! सबका सब वर्णों और आश्रमों का यमुनाजी में स्नान धर्म है यह निश्चय धाराओं से बरसता है १३ इस भारत वर्षमें विशेषकर कर्म भूमिमें यमुनाजी में नहीं स्नान करनेवालों का निष्फल जन्म कहाहै १४ जैसे अमावस में आकाश मण्डल में चन्द्रमा में ऐश्वर्य नहीं है तैसेही यमुनाजी के स्नान के विना अच्छा कर्म शोभित नहीं होताहै १५ व्रत दान और तपस्याओं से तैसे हरि नहीं प्रसन्न होते हैं जैसे यमुनाजी में स्नानमात्रसे केशवजी प्रसन्न होते हैं १६ सूर्यजी के तेजके समान जैसे कुछ तेज नहींहै तैसेही यमुनास्नानके समान यज्ञकी क्रिया नहीं हैं १७ भगवान् की प्रीतिके लिये सब पापोंके दूरकरने के लिये स्वर्ग लाभके लिये मनुष्य यमुनाजी में स्नानकरैं १८ रक्षितदेह अत्यन्त पुष्टवली और अध्रुव सुन्दर देहसे क्याहै जोकि यमुना स्नानरहित है १९ हाड़ोंके देहमें खंभेहैं नसें बन्धनहैं मांस और रक्तलेपनहैं चमड़ेसे भी बँधा

हुआ दुर्गन्धयुक्तहै मूत्र और विष्ठासे पूर्ण है २० बुढ़ापा शोक और विपत्ति से व्याप्तहै रोगका मन्दिर आतुर रागका मूल अनित्य सब दोषों के आश्रय २१ परोपकार पापार्त्ति परद्रोह और पराई ईर्षा करने वाले हैं चंचल चुगुल क्रूर कृतघ्न क्षणिक २२ निष्ठुर दुर्धर दुष्ट तीनों दोषसे विदूषित अपवित्रता दुर्गंधि और तीनों तापों से मोहित २३ स्वभावही से अधर्म में रत सैकड़ों तृष्णाओंसे व्याकुल काम क्रोध महालोभ नरक के द्वारों से स्थित २४ कीड़े विष्ठा और भस्मादि अन्त के गुणों को प्राप्त होनेवाला है इसप्रकारका शरीर यमुना स्नान के विना व्यर्थ है २५ यमुना के स्नान से वर्जित मनुष्य जलों में बुल्लों और पक्षियों में अण्डोंकी नाईं मरणही के लिये उत्पन्न होते हैं २६ वैष्णवहीन ब्राह्मण हत है पिण्डों के विना श्राद्ध हत है ब्राह्मणका न माननेवाला क्षत्रिय हत है आचार रहित कुल हत है २७ दम्भ सहित धर्म हत है क्रोधसे तप हत है दृढ़तारहित ज्ञान हत है अभिमान से वेदादि और पुराणादि सबका सुनना हत है २८ पराई भक्ति से स्त्री हत है ब्रह्मचारी स्त्री से हत है अप्रकाशित अग्नि में होम हत है माया सहित भक्ति हतहै २९ कन्या कन्या वेचनेवाले से हत है अपनेही लिये रसोई का बनाना हत है शूद्र भोजन से यज्ञ हत है कृपणका धन हत है ३० अभ्यासरहित विद्या हत है विरोध करनेवाला वोध हत है जीवित के लिये तीर्थ हत है जीवन के लिये व्रत हत है ३१ सत्यहीन वाणी हत है और चुगुलखोरी की भी वाणी हत है छःकानों में प्राप्त सलाह हत है व्यग्रचित्त होकर जप हत है ३२ वेद रहित में दान हत है नास्तिक मनुष्य हत है श्रद्धारहित जो कुछ परलोक के लिये किया है वह सब हत है ३३ इसलोक में जैसे दरिद्री मनुष्योंका हत है तैसे यमुना स्नान के विना मनुष्योंका जन्म हत है ३४ हे राजन्! सब उपपातक बड़ेपाप यमुना जी के स्नान से सब भस्म होजाते हैं ३५ यमुनाजी में मनुष्य के प्राप्त होने में सब पाप कांपते हैं कि सब पापों के नाश करनेवाले जलमें यदि स्नान करेंगे ३६ तो यमुनाजी में उत्तम मनुष्य अग्निकी नाईं प्रकाशित होंगे सब पापों से इस

प्रकार छूट जावेंगे जैसे मेघों से चन्द्रमा छूट जाता है ३७ गीले सूखे छोटे मोटे वाणी मन और कर्म्मों से कियेहुये पापों को यमुना स्नान इसप्रकार जलाता है जैसे अग्नि समिधों को जलाता है ३८ हे राजाओं में उत्तम ! अभिमान से जो पापज्ञान और अज्ञान से जो किये पाप यमुनाजी में स्नानमात्रही से नाश होजाते हैं ३९ पापरहित मनुष्य स्वर्ग को जाते हैं और पापिष्ठ शुद्धताको प्राप्त होते हैं यमुनाजी के जलमें स्नान करने में यहां सन्देह करना योग्य नहीं है ४० यहांपर विष्णुभक्ति में सब अधिकारी हैं सबको सब देनेवाली पापनाश करनेवाली यमुना देवी हैं ४१ यही श्रेष्ठ मन्त्र है यही श्रेष्ठ तपहै श्रेष्ठ प्रायश्चित्त है यमुना स्नान उत्तम है ४२ हे राजन् ! मनुष्यों को दूसरे जन्मोंके अभ्यास से यमुनाजीके स्नान में इसप्रकार बुद्धिहोती है जैसे जन्म के अभ्यास से अध्यात्म ज्ञानकी निपुणताहोती है ४३ यमुनाजी का उत्तम स्नान संसार-रूपी कीचड़के धोने में चतुर है पवित्रोंका पवित्रहै ४४ हे राजन् ! जे सबकामना के फल देनेवाली तिसमें स्नानकरते हैं वे चन्द्र सूर्य ग्रहों के सदृश शुभ भोगों को भोगते हैं ४५ मथुराजी में प्राप्त य-मुनामोक्ष देनेवाली कहाती हैं और अधिकपुण्य बढ़ानेवाली हैं ४६ और जगह भी यमुना पुण्य कारिणी और महापाप हरनेवाली हैं मथुराजी में प्राप्त यमुना देवी विष्णुजी की भक्तिदेनेवाली हैं ४७ भक्तिभाव से संयुक्त यदि यमुनाजी में स्नानकरै तो करोड़कल्प सहस्र हरिजी के समीप में बसे ४८ सांख्यसे वर्जित मनुष्य नि-श्चय मुक्तिको प्राप्तहोते हैं तिनके पितर तृप्तहोते हैं और सैकड़ों कल्प स्वर्ग में तृप्तहीरहते हैं ४९ हे राजन् ! जे मनुष्य यमुनाजी के शुभजलको पीते हैं उनको सहस्रों पञ्चगव्य सेवनसे क्या प्रयो-जनहै ५० और करोड़सहस्र तीर्थ सेवनसे भी क्या प्रयोजनहै तहां पर दान और होम सब करोड़गुणा होताहै ५१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेऊनत्रिंशोऽध्यायः२९ ॥
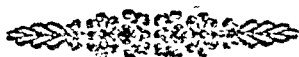
# तीसवां अध्याय॥

## हेमकुण्डल नाम वैश्यके धर्मकार्य्यों का वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! यहां पर तुमसे पुरातन इतिहासको वर्णनकरते हैं पूर्वसमय सतयुग में श्रेष्ठ निषधनगर में १ हेम कुण्डल नाम बनियांहुआ जो कि कुबेर की दीप्ति के समान कुलीन अच्छी क्रिया करनेवाला देवता ब्राह्मण और अग्निका पूजनकरनेवाला २ खेती और वाणिज्यका करनेहारा अनेकप्रकार से खरीदने और बेचनेवाला गऊ घोड़ा भैंसी आदि पशुओं के पालने में तत्पर ३ दूध दही माठा गोबर तृण लकड़ी फल मूल नमक अदरख आदि पीपरि ४ धनियां साग तेल अनेक प्रकार के कपड़े धातु और मिठाइयों को सदैव बेंचताभया ५ इस प्रकार अनेक भांतिके और उपायों से सदैव आठकरोड़ अशरफी इकट्ठा करता भया ६ इसप्रकार वह महाधनवान् होगया और कानकेपास बाल पकगये तब अपने चित्तमें संसार का क्षणिकत्व पीछे से विचारकर ७ तिस धनके छठवेंहिस्से से धर्म के कार्य करनेलगा विष्णुजी के मन्दिर और शिवालय बनवाताभया बड़ाभारी समुद्रके सदृश ताल खनवाताभया बावली और छोटी तलैया उसने बहुत बनवाईं ८।९ बरगद पीपल कंकोल जामुन और नीब आदिके वन और शुभ फूलों के वन अपने बलसे करताभया १० और रात्रि में अन्न जल नहीं खाता पीता दिनमें अन्न खाता जल पीता पुरकेबाहर चारोंदिशाओं में अत्यन्त सुन्दर पौसरे बनवाकर चलवाताभया ११ हे राजन्! पुराणों में जितने दान प्रसिद्ध हैं तिनको नित्यही दान में परायण वह धर्मात्मा देताभया १२ जितने जीवके किये पापहैं तिनका प्रायश्चित्त करताभया नित्यही देवपूजामें परायण और नित्य अतिथियों को पूजन करताभया १३ इसप्रकार वर्तमानहुये तिसके दोपुत्र उत्पन्नहुये तिनके अत्यन्त प्रसिद्ध श्रीकुण्डल और विकुण्डल नाम भये १४ तिनके माथे घरछोड़कर हेमकुण्डल तपस्या करनेकेलिये वनको जाते भये तहांपर श्रेष्ठ देव गोविन्द वर देनेवाले प्रभुजीको

आराधन कर १५ तपसे क्लिष्ट शरीर हो सदैव वासुदेवजी में मन लगाकर विष्णुजी के लोकको प्राप्त हुये जहां जाकर शोच नहीं होता १६ हे राजन्! फिर तिसके दोनों पुत्र बड़े अभिमान से युक्त युवावस्था वाले रूप समेत धनके अभिमान से अभिमान युक्त १७ दुःशील व्यसन में आसक्त धर्म कर्मादि के न देखनेवाले भये माता और वृद्धों के वचन न मानते भये १८ कुमार्ग चलनेवाले दुरात्मा पिताके मित्रों को निषेध करनेवाले अधर्म में निरत दुष्ट पराई स्त्री से भोग करनेवाले १९ गीत और बाजामें निरत वीणा और बेणु में विनोदयुक्त सौ वेश्याओं से युक्त तिस समय गाते हुये निकलते भये २० चाटुकार जनों से युक्त कुंदुरूके समान ओष्ठवाली स्त्रियों में विशारद सुन्दर वेषवाले अच्छे कपड़े पहने सुन्दर चन्दन लगाये २१ सुगंधित मालाओं से युक्त कस्तूरी के चिह्न से लक्षित अनेक प्रकारके गहनोंकी शोभा से युक्त मोतियों का हार पहने २२ हाथी घोड़े और रथ समूह से इधर उधर क्रीड़ा करतेहुये मदिरा पान कियेहुये पराई स्त्रीकी रति में मोहित २३ पिता की द्रव्यको नाश करते भये सौ वा सहस्र रुपया देतेभये और नित्यही भोगमें परायण अपने सुन्दर घरमें स्थित भये २४ इस प्रकार वह धन तिन्हों ने वेश्या विट् नट पहलवान चारण और बंदीजनों में असत् खर्चसे खर्च किया २५ कुपात्र में यह धन ऊसरमें बीजकी नाईं दिया सत्पात्रमें नहीं दिया न ब्राह्मणके मुखमें डाला २६ प्राणियों के पालन करने वाले सब पापों के नाश करनेवाले विष्णुजी को नहीं पूजा दोनों की वह द्रव्य थोड़ेही समयमें नाशको प्राप्त होगयी २७ तब दोनों दुःख को प्राप्त परम कृपण भावको प्राप्त होगये शोचकरते हुये मोहको प्राप्त हुये और भूखकी पीड़ाके दुःखसे पीड़ित भये २८ तिन दोनों के घरमें स्थित हुये जब भोजनको कुछ न रहा तब स्वजन सब बान्धव सेवक जीविका पानेवालों ने २९ द्रव्यके अभावमें छोड़ दिया तब अपने पुरमें चिन्तना करतेभये और पीछे से नगर में चोरी करते भये ३० फिर राजा और मनुष्यों से डरेहुये अपने पुरसे निकलकर पीड़ित होकर वनवास करतेभये ३१ दोनों मूर्ख

निरंतर विषसे अर्पित तीक्ष्ण बाणों से अनेक प्रकार के पक्षी सुकर हरिण और रोहूमछली चौगड़े शल्लक गोह और बहुतसे और जीवों को महाबल युक्त हो भिल्लोंको संगले सदैव शिकारमें भुजावाले होते भये ३२ । ३३ हे शत्रुओं के ताप देनेवाले! इस प्रकार मांसके आहार करनेवाले पापही का आहार करते भये किसी समयमें एक पहाड़ पर प्राप्तभया दूसरा वनमें जाताभया ३४ तब ज्येष्ठ को शार्दूल और छोटेको सांपने नाश करदिया हे राजन्! एकही दिनमें दोनों पापी नाश को प्राप्त होगये ३५ तो पापी यमराज के दूतों ने बांधकर यमराज के स्थानमें प्राप्तकर सबों ने यमराज जी से कहा कि हे धर्मराज! ये दो पापी मनुष्य आपकी आज्ञा से लाये हैं अपने नौकर हम लोगों को आज्ञा दीजिये प्रसन्न हूजिये क्या करें ३६ । ३७ तब चित्रगुप्त से पूछकर यमराज जी दूतों से बोले कि हे बीर! एक को तीव्र कष्टवाले नरकको लेजाइये ३८ और दूसरे को स्वर्ग में स्थापित कीजिये जहां अत्युत्तम भोग हैं तब यमराज की आज्ञा सुनकर शीघ्र करनेवाले दूतों ने ३९ ज्येष्ठ भाई को घोर रौरवमें डालदिया हे राजन्! उनदूतोंमें एक श्रेष्ठ छोटे भाई से मधुर वचन बोला ४० कि हे विकुण्डल! हमारे साथ आइये तुमको स्वर्ग देंगे अपने कर्म से इकट्ठा किये हुये अत्यन्त दिव्य भोगों को भोगिये ४१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

# इकतीसवां अध्याय ॥

विकुंडल नाम वैश्यका यमुना जीमें दोमाघ स्नानकर स्वर्गप्राप्तहोना॥

नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर! तब प्रसन्न मन होकर विकुण्डल राह में यम दूत से पूंछने लगा और हृदय में सन्देहकर परम विस्मय को प्राप्तहुआ और हृदय में विचार करता भया कि हमको किस फलसे स्वर्ग हुआ १ विकुण्डल जी बोले कि हे दूतों में श्रेष्ठ! हमतुम से श्रेष्ठ संशयको पूछतेहैं कि तुल्य कुलमें हम उत्पन्न हुये हैं और दोनों ने समानही कर्म किये २ दुर्मृत्यु भी तुल्यही हुआ यम-

राजजीको भी तुल्यही देखा तुल्यकर्म करने वाला मेरा बड़ा भाई कैसे नरक में डाला गया ३ औरहमको स्वर्ग कैसे हुआ इस हमारे सन्देहको काटिये हे देवदूत! हम स्वर्गका कारण नहीं देखते हैं ४ तब देवदूत बोला कि हे विकुंडल! माता पिता पुत्र स्त्री बहन और भाई यह प्राणी के जन्म हेतु की संज्ञा है कर्म भोग करने के लिये है ५ एकवृक्ष में जैसे पक्षियों का समागम होताहै तैसेही पूर्व भावित पुरुष जोजो समीहित कर्म करता है तिसतिस कर्मकाफलसदैव भोगकरता है यह प्रीतिसे तुमसेसत्य कहते हैं कि मनुष्य शुभ अशुभ कर्म ६।७अपना किया काल कालमें फिर फिर भोग करताहै एक कर्म करताहै एक तिसफलको भोग करताहै ८ हे वैश्य! हे धर्मज्ञ ! और के कर्म से और कभी लिप्त नहीं होता है तुम्हारा भाई अत्यन्त दारुण पापों से नरक में गिरा और तुम धर्मसे निरंतर स्वर्ग प्राप्त होगे ९ तब विकुंडल बोला कि हे दूत ! बाल्य अवस्था से हमारा मन पापों में रतहै पुण्य में रत नहीं है इस जन्म में मैंने पाप किया है १० हे देवदूत! आत्मा के पुण्य कर्म को नहीं जानताहूं जो हमारे पुण्य को जानते हो तो वह कृपा कर हम से कहो ११ तब देवदूत बोला कि हे बनियो! सुनो जो तुमने पुण्य इकट्ठा किया है तिस सब को हम जानते हैं तुम अत्यन्य निश्चित नहीं जानतेहो १२ हरि मित्र का पुत्र वेद का पारगामी सुमित्र हुआ तिस का पुण्यकारी स्थान यमुना जी के दक्षिण किनारे था १३ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! तिस वन में तिससे तुम्हारी मित्रता हुई तिस के संग से तुमने दोमाघ के महीने यमुना जी के पुण्य जल में सब पापों के हरनेवाले श्रेष्ठ लोक में प्रसिद्ध पाप प्रणाशन नाम तीर्थ में स्नान किये १४। १५ हे वैश्यों के पति! हे पाप रहित ! एक माघ की पुण्य से सब पापों से तुम छूट गये और दूसरे माघ की पुण्य से तुमने स्वर्ग प्राप्त किया १६ तिस के पुण्य के प्रभाव से निरंतर स्वर्ग में आनन्द करो और तुम्हारा भाई नरकों में बड़ी पाप की यातना को प्राप्त है १७तलवार के समान पत्तों से छेदा गया मुद्गरों से विदारण हुआ शिला की पीठ में चूर्ण किया गया तपे हुये अंगारों में भूजागया १८ ये

दूतों के वचन सुनकर भाई के दुःख से दुःखित पुलकावली से चि-
ह्नित सब अंग वाला दीन नम्रतायुक्त होकर १९ तिस देवदूत से
मधुर निपुण वचन बोला कि हे साधो! सज्जनों की सप्तपदी मित्र-
ता अच्छे फल देनेवाली होती है २० मित्र भाव चिन्तन कर तुम
हमसे उपकार करने के योग्य हो और सुनने की इच्छा करते हैं
क्योंकि हम को तुम सर्वज्ञ हो २१ मनुष्य किस कर्म से यम लोक
को नहीं देखते हैं और जिससे नरक को जाते हैं वह हम से कृपा
करके कहिये २२ तब देवदूत बोला कि हे वैश्य! तुमने अच्छा
प्रश्न किया इस समय तुम पापहीन हो पुरुषों के विशुद्ध हृदय में
बुद्धि कल्याणमें उत्पन्न होतीहै २३ यद्यपि अवसर नहीं है और तुम
हमारी सेवा में परायण हो तथापि तुम्हारे स्नेह से यथा मति कहते
हैं २४ जे कर्म मन वाणी से सदैव सब अवस्थाओं में दूसरों को पीड़ा
नहीं देते हैं ते यमराज के स्थान को नहीं जाते हैं २५ प्राणियों के
मारनेवाले पुरुष वेद दान तप और यज्ञोंसे बड़े कष्टसेभी स्वर्ग नहीं
जातेहैं २६ अहिंसा परमधर्म है अहिंसा परमतप है अहिंसा परम
दान है यह सदैव मुनि कहतेहैं २७ जे दयालु मनुष्य हैं ते मसा
सर्प डांस जुआं और मनुष्यों को अपने सदृश देखते हैं २८ ते
मनुष्य तपेहुये अंगार लोहे के कील मद प्रेतों की तरंगिणी और
यमराजकी दुर्गतिको नहीं देखते हैं २९ जे मनुष्य जीवनके लिये
जल और स्थल के रहनेवाले जीवों को मारते हैं वे कालसत्रनरक
की दुर्गतिको प्राप्त होतेहैं ३० तहांपर कुत्तेके मांसको भोजन करते
पीब और रक्तपीते चरबी के कीचड़ में स्नान करते नीचे को मुख
कियेहुये कीटों से काटे जाते ३१ अन्धकार में परस्पर एक दूसरे
को खाते परस्पर घात को करते हुये अनेकों कल्प दारुण शब्द से
रोतेहुये बसतेहैं ३२ सैकड़ों कृमियोनि में जाकर बहुत कालतक
स्थावर होते फिर वे क्रूर सैकड़ों तिर्यग्योनियों में जाते ३३ पीछे
से प्राणियों की हिंसा करनेवाले उत्पन्न होतेही अन्धे काने कुबड़े
लँगड़े दरिद्री और अङ्गहीन मनुष्यहोते हैं ३४ हे वैश्य! तिस से
परलोक और इसलोक में दोनों लोकोंके सुखकी इच्छा करताहुआ

धर्मजाननेवाला मनुष्य कर्म मन और वाणी से हिंसा न करै ३५ प्राणियों की हिंसा करनेवाले दोनों लोकोंमें सुखोंको नहीं प्राप्तहोते हैं और जो प्राणियों की हिंसा नहीं करते वे कहींनहीं डरतेहैं ३६ जैसे सीधी और टेढ़ी जानेवाली नदियां समुद्रही में प्रवेश करती हैं तैसे सब धर्म अहिंसा में दृढ़ प्रवेश करते हैं ३७ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! सब तीर्थों में स्नान कियेहुये सब यज्ञों में दीक्षित और इस लोक में जिसने प्राणियोंको अभयदिया ३८ जे नियोग और शास्त्र में कहेहुये धर्म अधर्म मिलेहुओं को पालन करते हैं वे यमराज जी के स्थानको नहीं जाते हैं ३९ ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यासी सब अपने धर्म में निरत स्वर्ग में बसतेहैं ४० सब वर्ण और आश्रम जैसा कहाहुआ है तिसके अनुसार चलनेवाले मनुष्य जितेन्द्रियहुये निरन्तर ब्रह्मलोकको जाते हैं ४१ इष्टापूर्त में जे रत पञ्चयज्ञ में जे रत और जे नित्यही दयायुक्त हैं वे यमराजजी के स्थान को नहीं देखतेहैं ४२ इन्द्रियों के अर्थ से निवृत्त समर्थ वेद कहनेवाले और जे नित्यही अग्नि पूजा में रतहैं वे ब्राह्मण स्वर्ग जाते हैं ४३ दीन बदन होनेवाले शूर शत्रुओं से आच्छादित रणभूमियों में जे प्राप्तहैं तिनका सूर्यलोक में मार्ग है ४४ हे वैश्य! अनाथ स्त्री और ब्राह्मण के लिये शरणागत पालन में जे प्राणोंको छोड़ते हैं वे स्वर्ग से च्युत नहीं होतेहैं ४५ लँगड़े अन्धे बालक बूढ़े रोगी अनाथ और दरिद्रियों को जे सदैव पालन करते हैं वे सदैव स्वर्ग में आनन्द करतेहैं ४६ कीचड़ में डूबीहुई गौ को और रोग से ग्रस्त ब्राह्मण को जे मनुष्य उद्धार करते हैं तिनको अश्वमेध यज्ञ करनेवालोंका लोक प्राप्त होताहै ४७ जे गऊको ग्रास देतेहैं जे सदैव गऊ की सेवा करते और जे गौ की पीठपर नहीं चढ़ते हैं वे स्वर्ग लोकमें वास करतेहैं ४८ जे गड़हा खोदतेहैं जहां गऊ प्यास रहित होजाती है वे मनुष्य यमलोक को न देखकर स्वर्ग को जाते हैं ४९ जे ब्राह्मण अग्नि देव गुरु और ब्राह्मणोंकी पूजामें नित्यही रत हैं वे स्वर्ग जातेहैं ५० बावली कुआं और ताल आदि में धर्म का अन्त नहीं है जहां जल और स्थल के रहनेवाले अपनी इच्छा

से जल पीते हैं ५१ और वह पण्डितों से नित्यही दान में परायण कहाता है जैसे जैसे प्राणी पानी पीतेहैं तैसे तैसे धर्म की बुद्धिसे नाशरहित स्वर्ग होता है प्राणियों का जीवन जल है प्राण जलमें स्थितहैं ५२।५३ हे वैश्य! जे पापी भी मनुष्य नित्य के स्नानसे पवित्र होतेहैं सवेरे का स्नान बाहर और भीतर के पापों को नाश-करता है ५४ प्रातःकाल के स्नानसे पाप रहित मनुष्य नरक को नहीं जाता है स्नान के विना जो मनुष्य भोजन करताहै वह सदैव मल भोजन करता है ५५ जो मनुष्य नहीं स्नान करता है तिसके पितृ देवता विमुख रहतेहैं और वह पापी मनुष्य अपवित्र रहता है ५६ विना स्नान करनेवाला नरक भोगताहै कीटादिकों में उत्पन्न होता है जे फिर पर्व में स्रोत में स्नान करतेहैं ५७ ते नरक को नहीं जाते और कुयोनियों में नहीं उत्पन्न होतेहैं दुःस्वप्न और दुष्ट चिन्ता सदैव वन्ध्या होजाती हैं ५८ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! प्रातःकाल के स्नानसे शुद्ध पुरुषों को तिल तिलकेपात्र विधि पूर्वक एक प्रस्थतिल देना चाहिये इसके देनेसे मनुष्य कभी यमराजकी भूमिको नहीं जातेहैं पृथ्वी सोना गऊ और सोलह दानोंको देकर ५९।६० हे विकुण्डल! स्वर्ग लोक में जाकर वहां से नहीं लौटते हैं बुद्धिमान् मनुष्य पुण्य तिथियों में व्यतीपात और संक्रांति में ६१ स्नानकर जो कुछ होसका वह देकर दुर्गति में नहीं डूबता है देने-वाले दारुण रौरव नरक के मार्ग को नहीं जातेहैं इसलोक में धन-हीन कुल में नहीं उत्पन्न होते हैं ६२ सत्यबोलनेवाला सदैव मौन रहनेहारा प्रिय वचन कहनेवाला क्रोध रहित अच्छे आचारवाला बहुत न बोलने वाला निन्दा न करनेहारा ६३ सदैव चतुरता युक्त सदैव प्राणियों पर दयासंयुक्त पराये हालों का छिपानेवाला पराये गुण का कहनेवाला ६४ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! जो मन से भी पराई तृणभर द्रव्यको न चुराता हो ये सब नरक की यातना को नहीं देखते हैं ६५ पराये कलङ्क कहनेवाला पाखण्डी पापों से भी अधिक है ऐसा मनुष्य प्रलय पर्यन्त नरक में रहता है ६६ कठोर वाक्यों का कहनेवाला नरक में निस्सन्देह जाता है फिर दुर्गतिको

प्राप्त होता है ६७ तीर्थों और तपस्याओं से उपकार न मानने वाले पुरुष की निष्कृति नहीं है वह मनुष्य नरक में बहुत काल घोर यातना को सहता है ६८ जो जितेन्द्रिय और आहार जीतने वाला मनुष्य पृथिवी में जितने तीर्थ हैं तिनमें स्नान करता है वह यमराज के स्थान को नहीं जाता है ६९ तीर्थ में पाप न करै जीविका न करै दान न लेवे धर्म को न बेंचे ७० तीर्थ में पाप दुर्जर है तीर्थमें दान लेना दुर्जर है तीर्थमें ये सब दुर्जर हैं इनके करने से मनुष्य नरक जाताहै ७१ पाप समूहों काभी करनेवाला मनुष्य एकबार गंगाजी के जलमें स्नानकर गंगाजी के जलसे पवित्र होकर नरकको नहीं जाता है ७२ व्रत दान तपस्या यज्ञ और और भी पवित्र कर्म गंगाजी के बिन्दुसे अभिषेक किये के समान नहीं हैं यह हमने सुनाहै ७३ हे वैश्य ! जो अधममनुष्य और तीर्थके समान गंगाको कहताहै वह बड़े दारुण रौरव नरकको जाता है ७४ धर्म का द्रव जलोंका बीज भगवान् के चरणों से च्युत महादेवजी से मस्तक में धारण कियाहुआ जो गंगाजीका निर्मल जल है ७५ वह निस्सन्देह ब्रह्मही है निर्गुण और प्रकृतिसे परहै निश्चय ब्रह्माण्ड भरमें गंगाजी की समता को कोई नहीं जाताहै ७६ गंगा गंगा जो मनुष्य सैकड़ों योजनोंसे कहताहै वह नरकको नहीं जाता है तिसके सदृश कौन होताहै शीघ्रही और से नरक देनेवाली क्रिया भस्म नहीं होतीहै ७७ हे वैश्य ! तिससे मनुष्यों को गंगाजल में प्रयत्न से स्नान करना चाहिये जो ब्राह्मण प्रतिग्रहके योग्यभी होकर दान न लेवे वह नक्षत्र रूप होकर बहुत कालतक आकाश में प्रकाशित होताहै ७८ जे कीचड़ से गऊको निकालते जे रोगियों की रक्षा करते जे गऊके घरमें मरते हैं तिनके आकाशमें तारा होतेहैं प्राणायाम में परायण पाप कर्म करने वालेभी मनुष्य यमलोक को नहीं देखते हैं प्राणायामों से पाप नाश होते हैं हे वैश्य ! दिन दिन में सोलह प्राणायाम कियेहुये साक्षात् ब्राह्मण के मारने वाले कोभी पवित्र करते हैं ७९ । ८० जे तपस्या करते व्रत नियम और सहस्र गऊका दान करते तिन्हीं के समान प्राणायाम भी है ८१

जो मनुष्य महीने महीने कुशाके अग्रसे जलके बिन्दुको सौवर्ष पीता है तिसी के समान प्राणायाम है ८२ बड़े पाप और छोटे पाप सब को मनुष्य प्राणायामों से क्षणभरमें भस्म करताहै ८३ हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! जे उत्तम मनुष्य पराई स्त्रियोंको माता के समान मानतेहैं वे कभी यमयातनाको नहीं जातेहैं ८४ हे वैश्य! मनसे भी जो मनुष्य दूसरों की स्त्रियों को नहीं सेवन करता तिसके समान धर्मात्मा दो लोकमें नहीं है तिसी ने पृथ्वी धारण की है ८५ तिससे धर्मयुक्तों को पराई स्त्रियोंका सेवन त्यागना चाहिये पराई स्त्रियां इकीस नरकों को लेजाती हैं ८६ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! जिन मनुष्यों के मनमें पराई स्त्रियों में लोभ नहीं उत्पन्न होता ते स्वर्ग को जाते हैं यमराज के यहां नहीं जाते हैं ८७ निरन्तर क्रोधके आदि कारणोंमें जो क्रोधसे नहीं जीता जाताहै वह क्रोध रहित पुरुष पृथ्वी में स्वर्ग जीतने वाला मानने योग्यहै ८८ जो पुत्र पिता माताको वृद्धावस्था का समय न प्राप्त होनेमें भी देवताके समान आराधन करताहै वह यमराज के स्थान को नहीं जाताहै ८९ हे वैश्यों में श्रेष्ठ जे पिताके अधिक भावसे गुरुजी को पूजते हैं वे ब्रह्माके लोकमें अतिथि होते हैं ९० यहां शीलके रक्षण से स्त्रियां धन्यहैं शीलके भंग होने में स्त्रियों को घोर यमलोक होताहै ९१ दुष्टों के संगके छोड़ने से सदैव स्त्रियों को शीलकी रक्षा करनी चाहिये हे वैश्य! शीलसे स्त्रियों को श्रेष्ठ स्वर्ग निस्संदेह होताहै ९२ शूद्रकी रसोई बनाने से और निषिद्ध आचरण से ब्राह्मणकी दुर्गति होती है और नरक जाताहै ९३ जे शास्त्र को विचार करतेहैं वेदके अभ्यास में जे रतहैं पुराण और संहिता को जे सुनाते और पढ़ाते हैं ९४ जे स्मृति के अनुसार चलते हैं धर्मको जे बोध कराते हैं और वेदान्तों में निपुणहैं तिनसे यह पृथ्वी धारण की हुई है ९५ तिन तिन अभ्यास माहात्म्यों से वे सब पाप हीन हो जाते हैं और ब्रह्माजी के लोकमें जाते हैं जहां मोह नहीं है ९६ ज्ञान को न जानकर भी जो वेद शास्त्र से उत्पन्न ज्ञानको देताहै तिस संसार बंधन को विदारण करने वालेकी वेदभी पूजा करते हैं ९७ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! यह अद्भुत रहस्य सुनिये यह

धर्मराज जीको सम्मत और सब मनुष्यों को अमृत देनेवाली है ९८ वैष्णव मनुष्य न यमराज जीको न यमलोक को और न घोर दर्शन वाले भूतों को निश्चय देखते हैं यह सत्य सत्य मैंने कहाहै ९९ हमसे सदैव वारंवार यमराजने कहाहै कि तुम लोगों से वैष्णव त्यागने योग्यहैं वे हमारे सामने नहीं आवें १०० जे प्राणी प्रसंग से एक बारभी केशवजी को स्मरण करते हैं ते सब पाप समूहों को नाशकर विष्णुजी के परंपद को जाते हैं १०१ जो दुराचारी पापी वा अच्छे आचारवालाभी जो मनुष्य विष्णुजी को भजताहो वह सदैव तुमसे त्याग करने योग्यहै १०२ जिसके घरमें वैष्णव भोजन करताहै और जिनकी वैष्णवों की संगतिहै वैष्णवों के संगसे उनके पाप नाश होजाते हैं इससे इनको भी तुमलोग त्याग करदिया करो १०३ हे वैश्य ! इस प्रकार हमको दंडधारण कर्त्ता यमराज देव सदैव सिखलाते हैं इससे वैष्णव मनुष्य यमराजजी की राजधानी को नहीं जाते हैं १०४ हे वैश्यों में श्रेष्ठ ! पापी मनुष्यों को विष्णु जीकी भक्तिके विना नरक रूपी समुद्र तरनेके लिये और उपाय नहीं है नहीं है १०५ हे वैश्य ! मनुष्योंके इष्ट कुत्तेके खाने वाले वैष्णव कोभी हम नहीं देखते हैं क्योंकि वर्ण से वाहरभी वैष्णव मनुष्य तीनों भुवनको पवित्र करता है १०६ पुरुषों के पाप नाश करने के लिये भगवान् के गुण कर्म और नामों का संकीर्तन ही समर्थ है जिससे मरण के समीप प्राप्त पापी अजामिल नारायण नाम पुत्र को रिसाकर नारायण नामसे बुलाकर मुक्तिको प्राप्त हुआहै १०७ जे दोनों कुलमें पूर्व में बहुत काल नरक में मग्नहैं वे तभी स्वर्गको जाते हैं जब आनन्द से हरिजीको पूजते हैं १०८ हे वैश्य ! जे विष्णु भक्तके दास और जे वैष्णवों के अन्न भोजन करने वाले हैं वे आकुलता रहित हुये यज्ञ करने वालोंकी गतिको प्राप्त होते हैं १०९ चतुर मनुष्य प्रयत्नसे सब पापोंकी शुद्धिके लिये वैष्णव के अन्नको मांगे जो न मिले तो जलपीवे ११० गोविन्द ऐसा मंत्र जपते हुये कहीं जो मनुष्य करे तो वह यमराज जी को न देखे और तिसको हम नहीं देखते १११ अंग मुद्रा ध्यान ऋषि और छंद देवता समेत

द्वादशाक्षर मंत्रको दीक्षासे विधि पूर्वक जपे ११२ जे उत्तम मनुष्य मंत्रों के स्वामी अष्टाक्षर मंत्रको जपते हैं तिनको देखकर ब्राह्मण का मारनेवाला भी शुद्ध होजाता और विष्णुजी के समान आपही प्रकाशित होताहै ११३ शंख चक्र धारण कर ब्रह्मके भीतर जाने वाले विष्णु रूपसे वे मनुष्य वैष्णव लोकमें बसते हैं ११४ हृदय सूर्य जल प्रतिमास्थंडिल में मनुष्य विष्णुजी को पूजनकर वैष्णव पद को जाते हैं ११५ अथवा मुमुक्षुओं को वासुदेव जी सदैव पूज्यहैं हे वैश्य! वज्रकीट विनिर्मित शालग्राम मणि चक्रमें सब पाप नाश करनेवाला सब पुण्य देनेहारा और सबको मुक्ति देनेवाला विष्णुजी का अधिष्ठान है ११६। ११७ जो शालग्राम शिलोद्भव चक्रमें हरिजी को पूजताहै उसने प्रति दिनमें सहस्र राजसूय यज्ञ करडालीं ११८ वेदान्त सदैव ब्रह्मनिर्वाण अच्युत को मनन करते हैं सोई प्रसाद मनुष्यों को शालग्राम की मूर्तिके पूजनसे होताहै ११९ जैसे महाकाष्ठ में स्थित अग्नि यज्ञके स्थानमें प्रकाशित होताहै तैसेही व्यापी हरि शालग्राम में प्रकाशित होते हैं १२० हे वैश्य! पाप करनेवाले कर्म में अधिकार न होने वाले यमराज जी के स्थानको नहीं जाते हैं १२१ जैसे शालग्राम शिलाचक्र में हरिजी सदैव रमते हैं तैसे लक्ष्मी जीमें और अपने पुरमें नहीं रमते १२२ तिसने अग्निहोत्र किया और समुद्र पर्यन्त पृथ्वीदी जिसने शालग्राम शिलोद्भव चक्रमें हरिजीको पूजा १२३ भो वैश्य! शालग्राम शिलासे उत्पन्न बारह शिलाहैं जिसने विधि पूर्वक पूजाहै तिसके पुण्यको तुमसे कहते हैं १२४ जो द्वादश कालों में कोटि द्वादशलिंग सोने के कमलों से पूजित होवें उतनाही फल एकदिन में शालग्राम जीके पूजन से होताहै १२५ जो फिर भक्ति से शालग्राम शिला के सैकड़े को पूजताहै वह हरिजी के लोक में बसकर इस लोकमें चक्रवर्ती राजा होताहै १२६ जो अधम मनुष्य काम क्रोध और लोभों से व्याप्त हो वहभी शालग्राम शिलाके पूजन से हरिजी के लोकको जाताहै १२७ जो मनुष्य आनन्द से शालग्राम में गोविन्दजीको पूजताहै वह प्रलय पर्यन्त स्वर्गसे नहीं च्युत होता

है १२८ हे वैश्य! तीर्थ दान यज्ञ और अबुद्धिके विना मनुष्य शाल-ग्राम शिलाके पूजनसे मुक्तिको प्राप्त होते हैं १२९ पापी भी शाल-ग्राम शिलाका पूजन करने वाला नरक गर्भत्रास तिर्यक् योनि और कृमि योनिको नहीं प्राप्त होताहै १३० दीक्षा विधान मंत्रका जानने वाला जो चक्रमें बलिदान करताहै गंगा गोदावरी नर्मदा नदी और मुक्तिके देनेवाली जो नदियां हैं १३१ वे सब शालग्राम शिला के जलमें बसती हैं नैवेद्य अनेक प्रकारके फल धूप दीप विलेपन १३२ गीत बाजा और स्तोत्रादिकों से भक्तिमें परायण जो मनुष्य कलियुग में शालग्राम शिलाका पूजन करताहै १३३ वह करोड़ सहस्र वर्ष हरिजी के समीप रमण करताहै करोड़ों लिंगों के दर्शन और तिनके पूजनों से जो फल होताहै १३४ वह शालग्राम शिला के एक दिन पूजन से होताहै शालग्राम शिलासे उत्पन्न लिंगके एकबार पूजन में १३५ सांख्य से वर्जित मनुष्य निश्चय मुक्ति को प्राप्त होते हैं शालग्राम शिलारूपी जहां केशवजी स्थित होते हैं १३६ तहां देवता यक्ष देवता और चौदहों भुवन स्थित रहते हैं शालग्राम शिलामें जो मनुष्य श्राद्ध करता है १३७ तिसके पितर तृप्त होकर सौ कल्प तक स्वर्ग में स्थित होते हैं जे मनुष्य नित्यही शालग्राम शिलाके जलको पीते हैं १३८ उनको सहस्रों पञ्चगव्य सेवनसे और करोड़ सहस्रतीर्थ सेवन से क्या प्रयोजन है १३९ यदि पुण्यकारी शालग्राम शिला के अंगसे उत्पन्न जलको पीता है शालग्राम शिला जहां है तहां तीनयोजन तीर्थहै १४० तहां दान और होम सब करोड़ गुणा होता है जो बिन्दु के बराबर शालग्राम शिला के जलको पीता है १४१ वह विष्णुजीका सेवन करनेवाला मनुष्य फिर माता के दूधको नहीं पीता है शालग्राम के समीप में चारोंओर कोस कोस भर १४२ कीटक भी मरकर श्रेष्ठ वैकुण्ठ स्थान को जाता है जो उत्तम शाल-ग्राम शिला चक्रको दान देता है १४३ उसने पर्वत वन कानन स-मेत पृथ्वी चक्र देडाला शालग्राम शिलाका जो मनुष्य मूल्यकर-ता १४४ बेंचनेवाला सलाह देनेवाला और परीक्षाओं में जो प्रसन्न

होता है वे सब प्रलय पर्यन्त नरक को जाते हैं १४५ हे वैश्य! तिससे चक्रका खरीदना और बेंचना पापसे डरनेवाले छोड़ देवें बहुत कहने से क्या है १४६ हरि वासुदेवजी का स्मरण सब पाप हरनेवाला है नियतेन्द्रिय मनुष्य वन में घोर तपस्याकर १४७जो फल पाताहै वह भगवान् का नमस्कारकर पाताहै मोहयुक्त मनुष्य बहुत पापकर १४८ नरकको नहीं जाता है सब पाप हरनेवाले हरिजीके पास जाकर पृथ्वी में जो तीर्थ और पुण्यकारी मन्दिर १४९ तिन सबको विष्णुजीके नामों के कहने से प्राप्त होता है देव शार्ङ्ग धनुष धारण करनेवाले विष्णुजी को जे प्रपन्न और परायण हैं १५० तिनको यमराज की सालोक्य नहीं है और उनके नरक में स्थान नहीं होतेहैं हे वैश्य! जो वैष्णव मनुष्य शिवजी की निन्दा करता है १५१ वह वैष्णवलोक को नहीं प्राप्तहोता है बड़े नरकको जाता है मनुष्य प्रसंग से एक एकादशी का व्रतकर १५२ यमराज की यातना को नहीं जाता है यह लोमश से सुना है ऐसा पवित्र कोई तीनोंलोक में नहीं है १५३ भगवान् के दोनों दिन पाप नाश करनेवाले हैं हे वैश्यों में श्रेष्ठ! तबतक इसदेह में पाप बसते हैं १५४ जबतक प्राणी शुभभगवान् के दिनका व्रत नहीं करता है सहस्र अश्वमेधयज्ञ और सौ राजसूय यज्ञ १५५ एकादशी के व्रतकी सोलहवीं कला को नहीं प्राप्त होतेहैं हेवैश्य! ग्यारह इन्द्रियों से जो मनुष्य ने पाप किये हैं १५६ वे सब एकादशीके व्रत से नाशको प्राप्त होतेहैं एकादशीके बराबर कोई पुण्यकारी लोकमें नहीं है १५७ जिन्हों ने व्याजसे भी एकादशीका व्रत किया है वे यमराज के वशको नहीं प्राप्त होते हैं यह एकादशी स्वर्ग मोक्ष देनेवाली शरीर को आरोग्य देनेहारी १५८ सुन्दरस्त्री देनेवाली जीतेहुये पुत्र देनेहारी है हे वैश्य! गङ्गा गया काशी पुष्कर १५९ वैष्णवक्षेत्र यमुना और चन्द्रभागा नदी एकादशी के तुल्य नहीं हैं १६० जिसमे यहां विना परिश्रम वैष्णवपद प्राप्त होता है रात्रि में जागरणकर एकादशी में व्रतकर १६१ दश पिता के पक्षके दश माता के पक्ष के और दशस्त्रीके पक्षके पहले के पु-

रुषों को निश्चय उद्धार करता है १६२ इन्द्र संगसे परित्यक्त गरुड़ से कियेहुये केतनवाले माला पहिने और पीले कपड़े धारण किये हरिजीके मन्दिर को जाते हैं १६३ हे वैश्योंमें श्रेष्ठ ! पापीभी मनुष्य बाल्यावस्था वा युवावस्था व वृद्धावस्था में निश्चय एकादशी का व्रतकर दुर्गतिको नहीं प्राप्तहोता है १६४ इस लोक में तीनरात्रि व्रतकर वा तीर्थ में स्नानकर सोना तिल और गौवों को देकर मनुष्य स्वर्ग कोजाते हैं १६५ हे वैश्य! जे तीर्थमें स्नाननहीं करते जिन्हों ने सोना नहीं दिया और कुछ तपस्या नहीं की वे सब जगह दुःखित रहते हैं १६६ संक्षेप से नरकका निरूपणधर्म कहा गया सब प्राणियों में द्रोह रहित वाणी मन काय कर्मों से १६७इन्द्रियों का निरोध दान हरि जीका सेवन वर्ण और आश्रम कीक्रियाओंका विधि से सदैव पालन १६८ स्वर्ग की इच्छा करने वाला करै तप और दान को न कहै आत्मा के हितकी कामना से जैसी शक्ति हो तैसा दानदेवे १६९ हेवैश्य !दरिद्र भी जूता कपड़ा अन्न पत्र मूल फल और जलको नित्य देवे १७० इसलोक और परलोक में नहीं दिया हुआ नहीं प्राप्तहोताहै देनेवाले तिनतिन यमयातनाओं को नहीं देखते हैं १७१ दीर्घआयुवाले और धनवान् फिर फिर होते हैं यहां बहुतकहने से क्याहै अधर्म से दुर्गति को प्राप्त होते हैं १७२ और धर्म से सब जगह सदैवस्वर्ग को जाते हैं १७३ तिससे बाल्यावस्था से लेकर धर्म का संग्रह करना चाहिये यह सब तुमसे कहा और क्या सुनने की इच्छाहै १७४ तब विकुंडल बोले कि हे सौम्य ! आपके वचन सुनकर हमारा प्रसन्न चित्त है गंगाजी का जल शीघ्रही पापनाश करनेवाला हैऔर सज्जनों के वचनपाप हरनेवालेहैं १७५ सज्जनों का स्वाभाविकगुण उपकारकरने और प्रिय कहने के लियेहै अमृतमण्डलवाला चन्द्रमा किसने शीतल कियाहै १७६ हे देवदूत ! तिससे दया से पूछतेहुये हमसे कहियेहमारे भाईकी शीघ्रही नरक से निष्कृति कैसे होगी १७७ वे तिसके वचनसुनकर ध्यान से देखकर क्षणमात्र ध्यानकर तिसकी मैत्रीरूप रस्सी में बँधाहुआ देवदूत बोला १७८ कि हेवैश्य! जो तुमने आ-

ठवें जन्ममें पुण्य इकट्ठा कियाहै तो सब भाईको दीजिये तिसकेस्वर्ग की जो इच्छा करतेहो १७९ तब विकुंडल बोला कि हे दूत! क्यावह पुण्य है कैसे हुईहै पूर्वसमयमें क्या जन्मथा यहसब कहिये फिर शीघ्रही दूंगा १८० तब देवदूत बोला कि हे वैश्य! सुनो हेतुसमेत तिसपुण्य को कहतेहैं पूर्वसमय पुण्यकारी मधुवन से शाकुनिऋषिहुये १८१ वे तपस्या और विद्या के पढ़ाने के काममें युक्त तेज में ब्रह्मा के समान भये तिसके रेवती में नवपुत्र ग्रहों कीनाईं उत्पन्नहुये १८२ ध्रुव, शील, बुध, तार और पांचवां ज्योतिष्मान् ये अग्निहोत्र में रत गृहस्थाश्रम के धर्मों में रमते भये १८३ निर्मोह, जितकाम, ध्यान कोश, गुणाधिक ये चारोब्राह्मणके पुत्र गृहसे विरक्त हुये १८४ संन्यास आश्रम में युक्त सबकामसे वाञ्छा रहित सब एक गांवमें बसते संग रहित स्त्री रहित १८५ निराश प्रयत्न रहित लोष्ट पत्थर और सुवर्ण समान समझने वाले जो कोई कपड़े देवे तो कपड़े पहनने वाले और जो कोई भोजनकरावे तो भोजनकरें १८६ सायंकाल के ग्रहकीनाईं नित्यही विष्णु जीके ध्यानमें परायण निद्रा और आहार के जीतने वाले और वात शीत के सहनेवाले हुये १८७ विष्णु रूपसे चराचर सब संसारको देखते हुये लीलापूर्वक पृथ्वी में परस्पर मौन हुयेघूमते भये १८८ देखाहै ज्ञान जिनने संदेह रहित चिद्विकार में विशारद योगी कोई द्रव्यमात्रकी क्रियानकरते भये १८९ इसप्रकार वे योगी आठवें जन्ममें पूर्वसमयपुत्र स्त्री कुटुम्ब वाले मध्यदेश में स्थित तुम्हें ब्राह्मणके १९० घरमें दो पहर में भूख और प्यासयुक्त आते हुये वैश्वदेवके अन्तर कालमें योगियों को घरके आंगन में तुमने देखा १९१ तो गद्गद वाणी समेत नेत्रों में आंशूसहित हर्ष और संभ्रमसमेत बहुत मानकर दण्डवत् प्रणाम करते भये १९२ चरणों में मस्तक से प्रणामकर दोनों हाथ जोड़कर सत्य वाणीसे सबको तिस समय में अभिनन्दित किया १९३ और बोले कि इस समय हमारा जन्म सफल हुआ जीवन सफल हुआ इस समय विष्णुजी मेरे ऊपर प्रसन्न हुये इसी कालमें सनाथ पवित्र १९४ और धन्य हुआ घर धन्य हुआ कुटुम्बी धन्य हुये

हमारे पितर इस समय धन्य हुये गौवें सुना हुआ और धन धन्य हुये १९५ जिससे तीनों तापके हरनेवाले आपके चरण मैंने देखे जिससे आपके दर्शन भगवान् की नाईं धन्य हैं १९६ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! इसप्रकार पांव धोकर पूजनकर श्रेष्ठ श्रद्धासे मस्तकमें धारण किया १९७ जहां चरण धोनेका जल श्रद्धासे शिरसे धारण किया गया चन्दन फूल अक्षत धूप दीपसे भावसमेत १९८ पूजन भया और सुन्दर अन्नसे संन्यासियों को भोजन कराया तब वे परमहंस तृप्त हुये रात्रिमें मन्दिर में विश्राम करते भये १९९ जो ज्योतियों को मत ज्योति परब्रह्म है तिसका ध्यान भी करते भये हे वैश्यों में श्रेष्ठ! तिनके आतिथ्य से जो उत्पन्न पुण्य हुई २०० वह निश्चय सहस्र मुखसे कहने को हम नहीं समर्थ हैं भूतोंमें प्राणी श्रेष्ठहैं प्राणियों में बुद्धिजीवी २०१ बुद्धिमानों में मनुष्य मनुष्यों में ब्राह्मण जाति ब्राह्मणों में विद्वान् विद्वानों में कृतबुद्धि कृतबुद्धियों में कर्त्ता कर्त्ताओं में ब्रह्मके जाननेवाले श्रेष्ठहैं २०२ इससे वे अत्यन्त पूज्य हैं तिसीसे तीनोंलोकमें श्रेष्ठहैं २०३ हे वैश्योंमें श्रेष्ठ! तिनकी संगति महापाप नाश करनेवाली है गृहस्थाश्रमी के घरमें विश्रामको प्राप्त संतुष्ट ब्रह्म जाननेवाले २०४ जन्म पर्यन्तके पाप क्षणभरमें नाश करतेहैं जो गृहस्थके मरणपर्यन्तके इकट्ठा कियेहुये पापहैं २०५ तिन सबको एक रात्रि बसकर संन्यासी जला देताहै तिसपुण्यको अपने भाईको दीजिये जिससे नरकसे छूटजावे २०६ ये दूतके वचन सुनकर शीघ्रही पुण्य को देतेभये तब प्रसन्न चित्तसे वह भाई नरकसे निकल आया २०७ देवोंने दोनोंके ऊपर फूल वर्षाकर पूजन किया तब वे स्वर्गकोगये तिन दोनोंसे अत्यन्त पूजित दूत जैसे आयाथा वैसेही गया २०८ सब भुवनके बोध करनेवाले वेदके वचनके तुल्य देवदूतके वाक्य सुनकर वैश्य पुत्र अपने किये हुये पुण्य दानसे भाईको तारकर भाईके साथ इन्द्रके श्रेष्ठलोकको जाताभया २०९ हे राजन्! जो इस इतिहासको पढ़ता वा सुनताहै वह शोकरहितहोकरसहस्रगोदानके फलको प्राप्तहोताहै २१०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

# बत्तीसवां अध्याय॥

सुगन्ध तीर्थ रुद्रावर्त गंगा सरस्वती संगम कर्णह्रद कुब्जाम्रक और अरुन्धती बटादि तीर्थोंका वर्णन॥

नारदजीबोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ! युधिष्ठिर फिर संसारमें प्रसिद्ध सुगन्ध तीर्थको जावे तो सब पापोंसे शुद्ध आत्मा होकर ब्रह्मलोकमें जावे १ हे मनुष्यों के स्वामी! हे राजन्! फिर तीर्थ सेवन करनेवाला मनुष्य रुद्रावर्त को जावे तहां स्नानकर मनुष्य स्वर्ग लोकमें प्राप्त होताहै २ हे मनुष्योंमें श्रेष्ठ! गंगा और सरस्वतीके संगम में स्नान कर मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको पाता और स्वर्गलोक को जाता है ३ तहां कर्णह्रदमें स्नानकर शंकरदेवजी को पूजनकर दुर्गति को नहीं प्राप्तहोता और स्वर्ग लोकको जाता है ४ फिर तीर्थ सेवन करनेवाला यथाक्रम कुब्जाम्रक को जावे तो सहस्र गऊके फल को प्राप्तहो स्वर्ग लोकको जावे ५ तीर्थसेवी मनुष्य अरुन्धतीवट को जावे वहां सामुद्रक को स्पर्शकर तीन रात्रिबसकर ६ सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो स्वर्ग लोकको जावे फिर एकाग्रचित्त होकर ब्रह्मचारी ब्रह्मावर्त को जावे ७ तो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो स्वर्गलोकको जावे फिर यमुना प्रभवतीर्थ को जावे वहां यमुनाजल को स्पर्शकर ८ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोताहै फिर त्रैलोक्य में प्रसिद्ध दर्वी संक्रमण तीर्थको पाकर ९ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो स्वर्गलोकको जावे फिर सिद्ध गन्धर्वोंसे सेवित सिन्धु के प्रभव को जावे १० तहां पांचरात्रि बसकर बहुत सुवर्णदेवे तदनन्तर मनुष्य अत्यन्त दुःखसे प्राप्तहोनेवाली देवीको प्राप्तहोकर ११ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो शुक्रजी की गति को प्राप्तहो फिर ऋषिकुल्या को प्राप्तहोकर वसिष्ठजी के यहां जावे १२ वसिष्ठजी के जाने से सब वर्ण ब्राह्मण होजाते हैं ऋषिकुल्या में मनुष्य स्नानकर ऋषि लोकको प्राप्तहोता है १३ हे मनुष्यों के स्वामी! यदि तहां शाक भोजन कर महीनाभर बसे भृगुतुंग को प्राप्तहोकर अश्वमेध यज्ञकेफलको प्राप्तहो १४ वीरप्रमोक्षको जाकर

सब पापोंसे छूटजाता है कार्तिक माघमें दुर्लभ तीर्थ को प्राप्तहोकर १५ पुण्यकर्त्ता अग्निष्टोम और अतिरात्र के फलको प्राप्तहोता है फिर सन्ध्या को अत्युत्तम विद्यातीर्थ को प्राप्तहोकर १६ स्पर्शकरै तो सब विद्याओंका पारगामी होवे सर्वपाप प्रमोचन महाश्रम में रात्रि भर बसे १७ निराहारहोकर एककाल तो शुभलोकों में बसे छःकाल व्रतसे महालय में महीनाभर बसकर १८ तरकर दशपहले के और दशपीछे के प्राणियों को तार देवे पुण्यकारी श्रेष्ठ देवताओं से नमस्कार कियेहुये माहेश्वरजी को देखकर १९ सब कृत्यों में कृतार्थ होकर मरण को कहीं न शोचे सब पापोंसे विशुद्ध आत्मा होकर बहुत सुवर्ण को प्राप्तहोवे २० फिर ब्रह्मासे सेवित वेतसिका को जावे तो अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहो परमगतिको प्राप्तहो २१ तदनन्तर सिद्धोंसे सेवित सुन्दरिका तीर्थको प्राप्तहोकर रूपकाभागी होता है यह पुरातन मुनियों ने देखा है २२ फिर एकाग्रचित्तहोकर ब्रह्मचारी ब्राह्मणिका को जावे तो कमल के वर्णवाले विमानसे ब्रह्म लोकको प्राप्तहोता है २३ तदनन्तर पुण्यकारी ब्राह्मणों से सेवित नैमिषतीर्थ को जावे तहां देवगणों समेत ब्रह्मा नित्यही बसतेहैं २४ नैमिषको जब चले तब आधापाप नाश होजाता है और वहां प्रवेशकर मनुष्य सब पापसे छूटजाताहै २५ हे भरतवंशीयुधिष्ठिर! तीर्थमें तत्पर धीर मनुष्य तहां महीनाभर बसे पृथ्वी में जितने तीर्थ हैं नैमिष में सब हैं २६ तहां नियत और नियत भोजन करनेवाला मनुष्य अभिषेककर राजसूय यज्ञ के फलको प्राप्त होता है २७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! और सातकुलको भी पवित्र करता है जो व्रत में परायण मनुष्य नैमिष में प्राणों को छोड़ता है २८ वह स्वर्गलोक में स्थित होकर आनन्द करता है इसप्रकार बुद्धिमान् ऋषि कहते हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ! नैमिष नित्यही मेध्य और पुण्यकारी है २९ मनुष्य गङ्गोद्भेद तीर्थको प्राप्तहोकर तीनरात्रि वसकर वाजपेययज्ञ के फलको प्राप्त होता है और सदैव ब्रह्मभूत होता है ३० सरस्वती को प्राप्त होकर पितृ और देवताओं को तर्पणकरै तो सारस्वतलोकों में निस्सन्देह आनन्द करै ३१ हे मनुष्यों के स्वामी! तदनन्तर

तीर्थसेवी मनुष्य बाहुदा को जावे तहां एक रात्रि बसकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोता है ३२ और देवसत्रयज्ञ के फलको पाता है फिर पुण्य-जनों से युक्त पुण्यकारिणी रजनी को जावे ३३ वहां पितृ और देवपूजन में रत मनुष्य वाजपेय यज्ञ के फलको प्राप्तहोता है विम-लाशोक को प्राप्तहोकर चन्द्रमाकी तरह प्रकाशित होता है ३४ तहां एकरात्रि बसकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोता है फिर गोप्रतार उत्तम सरयूतीर्थ को जावे ३५ जहां नौकर सेना और वाहनों समेत राम-चन्द्रजी हे राजन्! पूर्व समय में घर छोड़कर तिस तीर्थके तेज से स्वर्गको गये हैं ३६ हे भरतवंशी! हे मनुष्योंके स्वामी! तिस गोप्र-तार तीर्थ में मनुष्य स्नानकर तीर्थ के निज रामजी के प्रसाद और व्यवसाय से ३७ सब पापों से विशुद्धआत्मा होकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोताहै हे कुरुनन्दन! रामतीर्थ गोमती में मनुष्य स्नानकर ३८ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता और अपने कुलको पवित्र करता है हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहांपर सौसहस्र तीर्थहैं ३९ हे भरतर्षभ! तहां उपस्पर्शन कर नियत और नियत भोजन मनुष्यकर सहस्रगऊ देने के पुण्यफलको पाता है ४० हे धर्म्मजानने वाले राजन्! फिर अत्युत्तम ऊर्ध्वस्थान को जावे कोटितीर्थ में मनुष्य स्नानकर स्वा-मिकार्तिक को पूजनकर ४१ सहस्र गऊ देने के फलको प्राप्तहो और तेजस्वीहो फिर काशीजी को जाकर शिवजीको पूजनकर ४२ कपिलों के ह्रदमें स्नानकर राजसूय यज्ञके फलको प्राप्त होता है हे राजाओं में श्रेष्ठ! दुर्लभ मार्कण्डेयजी के तीर्थको प्राप्तहोकर ४३ संसार में प्रसिद्ध गोमती और गंगाजी के संगम में स्नानकर मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्त होता और कुलको उद्धार करताहै ४४॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

# तेंतीसवां अध्याय॥

काशीपुरीका विस्तार समेत माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे नारदमुनिजी! काशीजी का माहात्म्य आपने संक्षेप से कहा अब विस्तार से कहिये तब मेरा मन प्रसन्न

होगा १ तब नारदजी बोले कि यहांपर काशीजी के गुण के आश्रय इतिहास को कहते हैं जिसके सुननेही से मनुष्य ब्रह्महत्या से छूट जाता है २ पूर्व समय देवासन में बैठीहुई पार्वती देवी मेरुशृंग में देव-ईशान त्रिपुर के वैरी महादेवजी से पूँछतीभई ३ कि हे देवों के देव! हे भक्तोंकी पीड़ाके नाशकरनेवाले! हे महादेवजी! देव आपको कैसे थोड़े समय में देखसके ४ हे शङ्करजी! सांख्ययोग तथा ध्यान कर्मयोग वैदिक और जितने और हैं संसार में बहुत परिश्रमवाले हैं ५ जिससे विश्रांतचित्तवाले योगी कर्मी सबदेहधारियोंको सूक्ष्म भगवान् दिखलाई दें ६ यह अत्यन्त गुह्य गूढ़ इन्द्रादिक देवों से सेवित कामकी अग्निका नाशनेवाला ज्ञान सब प्राणियों के कल्याण के लिये कहिये ७ तब महादेवजी बोले कि यहांपर विज्ञान नहीं कहने योग्यहै ज्ञान न जाननेवालों से बाहर कियाहुआहै जो श्रेष्ठ ऋषियोंने कहाहै वह तुमसे यथा तत्त्व कहते हैं ८ सब प्राणियोंको संसाररूपी समुद्रके तारनेवाली हमारी काशीपुरी श्रेष्ठ अत्यन्त गुह्यक्षेत्रहै ९ हे महादेवि! तहां भक्तिसे हमारे व्रत और श्रेष्ठ नियम में स्थित महात्मा बसते हैं १० सबतीर्थों से उत्तम स्थानों से जो उत्तम ज्ञानों का उत्तम ज्ञान हमारा श्रेष्ठ अविमुक्त है ११ और स्थानों से पवित्र तीर्थ और स्थान श्मशान में स्थित दिव्यभूमि में प्राप्त हैं १२ भूलोक में नहीं संलग्न अन्तरिक्ष में हमारा स्थान है नहीं मुक्तहुये तहां देखते हैं मुक्तहुये चित्तसे देखते हैं १३ यह श्मशान विख्यात अविमुक्त सुना है हे सुन्दरि! यहां पर कालहोकर इस संसारको हम नाशकरते हैं १४ हे देवि! यह सब गुह्यों का स्थान हमारा प्याराहै तहांपर हमारे भक्तही जातेहैं और हम में प्रवेशकरजाते हैं १५ दान जप हवन यज्ञ तपकिया हुआ ध्यान पढ़ना और ज्ञान सब तहां नाश रहित होते हैं १६ और सहस्रों जन्मके पहले के इकट्ठा किये हुये पाप अविमुक्त क्षेत्र में प्रविष्ट हुये पुरुषके सब नाशको प्राप्तहोते हैं १७ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र वर्णसंकर स्त्री म्लेच्छ और जे संकीर्ण पाप योनिहैं १८ कीड़े चीं-टियां और जे अन्य मृगपक्षी हैं हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्वती! कालसे

अविमुक्तमें नाशको प्राप्तहुये १९ तो आधा चन्द्रमा मस्तकमें धारें तीन नेत्रवाले बड़े बैलको वाहन किये तिस हमारे पुरमें मनुष्य होते हैं २० अविमुक्तमें मराहुआ कोईभी पापी नरक को नहीं जाता है ईश्वरकी दया युक्त होकर सब श्रेष्ठ गतिको प्राप्तहोते हैं २१ मनुष्य मोक्षको अत्यन्त दुर्लभ और संसारको अत्यन्त भयानक मानकर पत्थरसे चरणोंको मर्दनकर काशीजी में बसै २२ हे परमेश्वरि! तपसेभी दुर्लभ जहां तहां विपन्न मरेहुयेकी संसार छुड़ाने वाली गति २३ हमारे प्रसादसे अच्छीतरह होतीहै हे हिमवान्‌की पुत्री! हमारी मायासे मोहित नहीं प्रबुद्धहुये नहीं देखतेहैं २४ वे वारंवार विष्ठा मूत्र और वीर्य्यों के मध्य में बसतेहैं सैकड़ों विघ्नों से ताड़ित हुआभी जो विद्वान् बसता है २५ वह श्रेष्ठस्थान को जाता है जहां जाकर फिर शोचनहीं होताहै जन्म मृत्यु और बुढ़ापे से मुक्त श्रेष्ठ शिवजी के स्थानको जातेहैं २६ मोक्षकी कांक्षाकरने वाले फिर मरण न होने वालोंकी वह गतिहै जिसको पाकर मनुष्य कृत कृत्य होता है यह पण्डित लोग मानते हैं २७ दान तपस्या यज्ञ और विद्यासे श्रेष्ठ गति नहीं मिलती जो अविमुक्तमें मिलती है २८ अनेक प्रकारके वर्णवाले विवर्ण चांडालादिक निन्दित योनि पापों से पूर्णदेह और विशिष्ट पापों से भी पूर्णदेह वाले जे हैं २९ तिनको अविमुक्त श्रेष्ठज्ञान और परंपद है यह पण्डित लोग कहतेहैं ३० अविमुक्त परंतत्त्व और परमकल्याण है नैष्ठिकी दीक्षा कर जे अविमुक्त में बसते हैं ३१ तिनको अन्त समयमें परमज्ञान और परंपद हम देतेहैं प्रयाग नैमिषारण्य श्रीशैल महाबल ३२ केदार भद्रकर्ण गया पुष्कर कुरुक्षेत्र भद्रकोटि नर्म्मदा आम्रातकेश्वरी ३३ शालग्राम कुब्जाम्र अत्युत्तम कोकामुख प्रभास विजयेशान गोकर्ण और भद्रकर्णक ३४ ये त्रैलोक्य में प्रसिद्ध पुण्यस्थान हैं काशीजी में जैसे मरेहुये श्रेष्ठ तत्त्वको प्राप्तहोते हैं तैसे अन्य स्थान में नहीं पाते हैं ३५ काशीजी में विशेष कर आकाश पाताल और मृत्यु लोकमें जानेवाली गंगाजी प्रविष्टहैं वे मनुष्यों के सैकड़ों जन्मके कियेहुये पापोंको नाशती हैं ३६ और जगह भी गंगा सुलभहै

श्राद्ध दान तप जप व्रत सब काशीजी में अत्यन्त दुर्लभ हैं ३७ निरंतर वायु भोजन करताहुआ काशीजी में स्थित मनुष्य जपकरै नित्यही हवनकरै दानदेवे और देवताओं को पूजन करे ३८ यदि पापी मूर्ख वा धार्मिक मनुष्यहो वह काशीजी को प्राप्त होकर सब कुलको पवित्रकरताहै ३९ काशीजी में जे महादेवजी को पूजते और स्तुतिकरते हैं वे सबपापों से छूटकर गणों के ईश्वर होते हैं ४० और जगह योग ज्ञान अथवा संन्यास से सहस्रजन्मसे श्रेष्ठ स्थान प्राप्तहोता है ४१ हे देवदेवोंकी स्वामिनी ! जे भक्त काशीजी में बसते हैं वे एकही जन्मसे श्रेष्ठ मोक्षको प्राप्तहोते हैं ४२ जहां योग ज्ञान और मुक्ति एकही जन्मसे मिलती है तिस अविमुक्तको प्राप्तहोकर और तपोवनकी न इच्छाकरै ४३ जहां से हम अविमुक्तहुये तिसी से अविमुक्त कहाताहै सोई गुह्योंका गुह्य यह विज्ञान कहाताहै ४४ हे सुन्दर भौंहवाली ! ज्ञान अज्ञानमें निष्ठ परमानन्दकी इच्छाकरने वालों की जो गति विदित है सो अविमुक्त में मरेहुये की होती है ४५ जो अविमुक्तकी देहमें सम्पूर्ण देखेगये हैं काशीपुरी तिन स्थानों से अधिक शुभहै ४६ जहां ईश्वर साक्षात् महादेवजी देहके अन्त में आपही मुक्तिके लिये तारक ब्रह्मको कहते हैं ४७ जो अत्यन्त श्रेष्ठ तत्त्वहै वह अविमुक्तही है यह सुनाहै हे देवि ! काशीजीमें एक ही जन्मसे सो प्राप्तहोता है ४८ भौंहके मध्यमें तोंदी के बीच में हृदय और मस्तक में जैसे सूर्य में अविमुक्तहै तैसे काशी में स्थित है ४९ वरणा नदी और असीनदी के बीचमें वाराणसी अर्थात् काशीपुरीहै तहांपर स्थित तत्त्व इसीप्रकार से नित्यही मुक्तिका करनेवालाहै ५० काशीजी से श्रेष्ठ स्थान न हुआहै न होगा जहां नारायण देव स्वर्ग के ईश्वर महादेवजी हैं ५१ तहां देवता गंधर्व यक्ष सर्प राक्षस और देवोंके देव ब्रह्माजी जिनकी निरन्तर उपासना करते हैं ५२ हे देवि ! महापापी और जे तिनसे भी अधिक पापी हैं वे काशीजी में प्राप्तहोकर परमगतिको प्राप्त होते हैं ५३ तिससे नियत मोक्षकी इच्छा करनेवाला मनुष्य काशीजीमें मरणके अन्ततक बसे और महादेवजी से ज्ञानप्राप्त होकर मुक्त होजावे ५४ किन्तु पाप

से हृत चित्तवाले विघ्नहोते हैं तिससे देह मनवाणी से पाप नहीं करै ५५ हे अच्छे व्रतकरनेवाली पार्वती! यह देवता और पुराणों का रहस्यहै अविमुक्त के आश्रय ज्ञान कोई तत्त्वसे नहीं जानताहै ५६ नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर! देवता ऋषि और ब्रह्माजी के सुनते हुये देवोंके देवने सब पाप नाश करनेवाले तीर्थको कहाहै ५७ जैसे देवताओंमें पुरुषोत्तम नारायणजी श्रेष्ठहैं ईश्वरोंमें जैसे महादेवजी श्रेष्ठहैं तैसेही स्थानों में यह उत्तमहै ५८ जिन्हों ने पूर्वकाल के एक जन्ममें रुद्रजीको आराधन कियाहै वे श्रेष्ठ शिवजीके स्थान अविमुक्त को प्राप्त होते हैं ५९ कलियुग के पापों से उत्पन्न जिनकी बुद्धिहरी होती है तिनको ब्रह्माजी का स्थान जानने में नहीं सामर्थ्य है ६० जे सदैव इसपुरीको स्मरण करते और कहते हैं तिनके शीघ्रही इस लोक और परलोकके पाप नाश होजाते हैं ६१ काशीजी में स्थान कर इसजन्ममें जो पापकरते हैं तिन सबको कालकी देह देव शिवजी नाश करते हैं ६२ तिससे मोक्षकी इच्छा करनेवालों से सेवित इस स्थानको जावे मरेहुओंका फिर संसाररूपी समुद्रमें जन्म नहीं होता है ६३ तिससे योगी वा अयोगी पापी वा पुण्यात्मा मनुष्य सब यत्नसे काशीजी में बसे ६४ मनुष्योंके वचन से पिता माताके वचन और गुरुजी के कहने से अविमुक्त के जानेकी बुद्धि न फिर जानीचाहिये ६५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

## चौंतीसवां अध्याय॥

काशीपुरी के माहात्म्य में ॐकारेश्वर कृत्तिवासेश्वर मध्यमेश्वर विश्वेश्वर ॐकार और कंदर्पेश्वरजीका वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर! तहांपर यह निर्मल सुन्दर ॐकार नाम लिंगहै जिसके स्मरणही मात्रसे मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है १ यह अत्यन्त श्रेष्ठ ज्ञान उत्तम पंचायतन काशीजी में नित्यही मुनियों से सेवित और मोक्षका देनेवाला है २ तहांपर पंचायतन के शरीर प्राणियों के मोक्ष देनेवाले भगवान् रुद्र साक्षात् महादेवजी रमते हैं ३ यह पाशुपत ज्ञान पंचायतन कहाताहै सोई

यह विमल लिंग ओंकार उपस्थित है ४ व्यतीत शान्ति, शान्ति, परावर विद्या, प्रतिष्ठा और निवृत्ति यह पञ्चात्मलिंग ईश्वरका है ५ पांच ब्रह्मादिक लिंगों के आश्रय ओंकार बोधक लिंग पंचायतन कहाता है ६ देहके अन्तमें नाश रहित पञ्चायतन ईश्वर लिंग को स्मरण करै तो बुद्धिमान् मनुष्य परमानन्द ज्योति में प्रवेश कर जावे ७ तहांपर पूर्व समय में देवर्षि सिद्ध और ब्रह्मर्षि ईशान देव की उपासना कर परम्पद को प्राप्तहुयेहैं ८ मत्स्योदरी के पुण्यकारी किनारे अत्यन्त गुह्य शुभ उत्तम गऊके चर्म्मके बराबर ओंकारेश्वर जीका स्थान है ९ हे युधिष्ठिर ! कृत्तिवासेश्वर लिंग, उत्तम मध्यमेश्वर, विश्वेश्वर, ओंकार और कन्दर्पेश्वर ये काशीजी में गुह्यलिंग हैं विनाशम्भुजीकी कृपाके कोई नहीं जानताहै १०।११ हे राजन् ! कृत्तिवासेश्वर का माहात्म्य सुनिये पूर्व्वसमय तिस स्थान में दैत्य हाथी होकर शिवजी के समीप १२ ब्राह्मणोंके मारनेके लिये आया जहां नित्यही शिवजी की उपासना होती है तिनके लिंग से तीन नेत्रवाले महादेवजी प्रकट हुये १३ भक्तों के ऊपर कृपा करनेवाले हर महादेव भक्तोंकी रक्षाके लिये अवज्ञा से शूलसे गजके आकार वाले दैत्यको मारकर १४ तिसकेवासः अर्थात् वस्त्रकी कृत्ति करते भये तिसी से कृत्तिवासेश्वर नाम हुआ हे युधिष्ठिर ! तहां मुनिश्रेष्ठ सिद्धिको प्राप्तहुये १५ और तिसी शरीरसे तिस परमपद को प्राप्त भये विद्या विद्येश्वर रुद्र जे शिव कहे गये हैं १६ कृत्तिवासेश्वर लिंगको नित्यही आश्रित होकर स्थितहैं मनुष्य अधर्म बहुतवाले घोर कलियुग को जानकर १७ कृत्तिवास को नहीं छोड़तेहैं वे निस्सन्देह कृतार्थ होते हैं जिस तीर्थ में सहस्र जन्मसे मोक्ष मिलता वा नहीं मिलता १८ परन्तु इस कृत्तिवास में एकही जन्मसे मोक्ष मिलताहै मुनिलोग सब सिद्धोंका स्थान इस स्थानको कहतेहैं १९ यह स्थान देव देव शम्भु महादेवजी से रक्षित है युग युगमें तपके क्लेशके सहनेवाले वेदके पारगामी ब्राह्मण २० महात्माजी की उपासनाकरते हैं शतरुद्रिय को जपते हैं निरन्तर तीन नेत्रवाले कृत्तिवासदेवकी स्तुति करतेहैं हृदयमें देव स्थाणु सर्वान्तर शिवको ध्यान

करते हैं २१ काशीजी में जे सिद्ध ब्राह्मण बसते हैं वे निश्चय गीत गाते हैं तिनमें एकसे मुक्ति होती है जे कृत्तिवास की शरणमें प्राप्त हैं २२ अत्यन्त दुर्लभ संसार को अभीष्ट ब्राह्मण कुलमें जन्मपाकर संन्यासी ध्यानमें धारणकर रुद्रजी को जपते चित्तमें महेशजी को ध्यान करते २३ काशीजी के मध्यमें प्राप्त मुनियों में श्रेष्ठ ईश प्रभु को आराधन करते और सन्धिहीन होकर यज्ञों से पूजन करते रुद्र जीकी स्तुति करते शम्भुजी को प्रणाम करते २४ निर्म्मल योगके धामभव महादेवजीके नमस्कार हैं पुराणस्थाणु गिरिश शिवजीकी शरणमें प्राप्त हैं हृदयमें प्रविष्ट रुद्रजीको स्मरण करते हैं अनेकरूप महादेवजी को जानते हैं २५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः३४॥

## पैंतीसवां अध्याय॥

काशी के माहात्म्य में व्याघ्रके हाथसे हरिणी का मरकर गणेश्वरी होना और पिशाच मोचनमें एक प्रेत का शंकुकर्ण मुनि के कहने से स्नानकर शिवजी के समीप जाना और शंकुकर्ण का शिवजीकी स्तुतिकर उन्हीं में लीन होना॥

नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! काशीजीमें और भी उत्तम कपर्दीश्वर लिंग है तहां विधि से स्नान कर पितरों को तर्पणकर १ मनुष्य सब पापों से छूटजाता और भुक्ति मुक्तिको प्राप्तहोता है पिशाचमोचन नाम और तीर्थ तहां स्थित है २ तहां आश्चर्य्यमयदेव मुक्तिके देनेवाले और सब दोषके हरनेवाले हैं कोई दैत्य व्याघ्रका घोर रूप धारणकर एक मृगी के भक्षणकरने के लिये उत्तम कपर्दीश्वरको जाताभया तब हरिणी हृदयमें डरकर प्रदक्षिण करकर ३।४ अत्यन्त संभ्रान्त दौड़ती हुई व्याघ्रके वशमें आगई तब महाबली व्याघ्र तीक्ष्ण नखोंसे तिसको फाड़कर ५ और जनरहितदेशको जाताभया और वह बालाहरिणी कपर्दीशके आगे मरगई ६ तो महाज्वाला दिखाईपड़ी आकाश में सूर्य्य के समान दीप्तिवाली तीन नेत्र युक्त नीलकण्ठ वाली चन्द्रमासे चिह्नित मस्तक युक्त ७ बैलपर चढ़ी और तैसेही पुरुषोंसे आच्छादितथी तब देवता तिसके चारोंओर फूलोंकी वर्षा

करते भये ८ गणेश्वरी आपही होकर तिस क्षणसे तहां न दिखाई पड़ी तिस श्रेष्ठ आश्चर्य को देखकर देवादिक प्रशंसा करतेभये ९ सो महादेवजी का उत्तम कपर्दीश्वरलिंग स्मरणकर सब पाप समूह से शीघ्रही मनुष्य छूटजाताहै १० काशीके बसनेवालोंकेकाम क्रोधादिक दोष और सब विघ्न कपर्दीश्वरजी के पूजनसे नाशहोजाते हैं ११ तिससे सदैव उत्तम कपर्दीश्वर देखने योग्य हैं प्रयत्नसे पूजने योग्यहैं और वैदिक स्तोत्रों से स्तुति के योग्यहैं १२ यहां पर नियत ध्यान करतेहुये शांत चित्तवाले योगियोंकी छः महीने से निस्संदेह योग सिद्धि होजाती है १३ इसके पूजन से ब्रह्महत्यादिक पाप नाश होजाते हैं पिशाचमोचन कुण्ड में स्नान करे जहां से निवृत्ति होती है १४ पूर्वसमय तिस क्षेत्रमें व्रतकरनेवाला तपस्वी शंकुकर्ण नामसे प्रसिद्ध महादेवजीको पूजन करता भया १५ और निरंतर फूल धूपादिक स्तोत्र नमस्कार प्रदक्षिणाओं से ब्रह्मरूपी प्रणव रुद्रजी को जपताभया १६ और योगकी आत्मा वह नैष्ठिकी दीक्षाकर उपासना करताभया किसीसमय भूंखसेयुक्त आतेहुये प्रेतको देखताभया १७ जोकि हाड़ और चमड़े से युक्त अंगवाला वारंवार श्वासलेताथा तिसको देखकर बड़ी कृपासेयुक्त मुनिश्रेष्ठ १८ बोला कि आप कौन हैं किसदेशसे इस देशको आये हैं तब भूंखसे पीड़ित पिशाच तिससे बोला १९ कि पूर्व्वजन्म में मैं धन धान्यसेयुक्त पुत्र और पौत्रादिकों से युक्त कुटुम्ब के पालने में उत्साहयुक्त ब्राह्मण था २० महादेव गऊ और अतिथियों को नहीं पूजा कभी थोड़ी वा बहुत पुण्य नहीं की २१ एक समय भगवान् देव वृषभेश्वर वाहन विश्वेश्वरजी को काशीजी में देखा स्पर्श और प्रणाम किया २२ तब थोड़ेही काल से हम नाशको प्राप्त होगये तो हे मुनिजी ! महाघोर यमराज के स्थान को नहीं देखा २३ प्यास से इस समय व्याकुल हित अहित को नहीं जानताहूं हे प्रभुजी !जो कुछ उद्धार करने को उपाय देखतेहो २४ तिसको करिये तुम्हारे नमस्कार हैं हम तुम्हारी शरण में प्राप्तहैं ऐसा कहनेपर शंकुकर्ण पिशाच से यह बोला २५ कि इसलोक में तैसा अत्यन्त पुण्यात्मा नहीं विद्यमान

है जैसा तुमने पहले विश्वेश्वर शिव भगवान्को देखा है २६ स्पर्श और फिर वन्दना किया है पृथ्वी में तुम्हारे समान और कौन है तिसी कर्म के विपाक से इस देशको प्राप्त हुयेहो २७ एकाग्रचित्त होकर इस कुण्ड में शीघ्रही स्नान करो जिससे इस कुत्सित योनि को शीघ्रही त्याग करो २८ जब दयालु मुनिने पिशाच से इस प्रकार कहा तो पिशाच देवों में श्रेष्ठ तीननेत्रवाले स्वामी कपर्दीश्वर को स्मरणकर मन में धारणकर स्नान करता भया २९ तिस समय स्नान करतेही मुनिके समीप में मरजाता भया तब चन्द्रमा के चिह्न से पवित्र मस्तक चिह्नित किये सूर्य के समान विमान में दिखाई दिया ३० स्वर्ग में स्थित रुद्रों सहित प्रकाशित भया यहदेव उपमा रहित बालखिल्यादिक योगियों से युक्तहुआ जैसे उदय में सब के देव सूर्य प्रकाशते हैं तैसेही प्रकाशता भया ३१ स्वर्ग में सिद्ध देवों के समूह स्तुति करते भये मनोहर सुन्दरी अप्सरा नाचती भईं गन्धर्व विद्याधर किन्नरादिक जल मिले हुये फूलोंकी वर्षा करतेभये ३२ मुनीन्द्रों के समूहों से स्तुति को प्राप्त और भगवान् के प्रसाद से बोधको प्राप्त होकर त्रयीमय अर्घ्यमण्डल को प्रवेश करतेभये जहां रुद्रजी प्रकाशित होरहे हैं ३३ पिशाचको मुक्तहुआ देखकर प्रसन्न हुये शंकुकर्णमुनि मनसे कवि अग्नि एकरुद्र महादेवजी को चिन्तन प्रणामकर तिन जटाके जूटधारे शिवजी की स्तुति करते भये ३४ कि जटा के जूट धारणकिये रक्षक एक पुरुष पुराण योगेश्वर मनोवांछित देनेवाले सूर्य्य अग्निरूप बैलपर चढ़हुये शिवजी की शरण में प्राप्तहैं ३५ ब्रह्मके सार हृदय में प्रविष्ट हिरण्मय योगी आदि अन्त स्वर्ग में स्थित महामुनि ब्रह्ममय पवित्र शिवजी की शरण में प्राप्त हैं ३६ सहस्रचरण नेत्र और शिरसे युक्त सहस्ररूप तमसे परे ब्रह्मकेपार हिरण्यगर्भाधिपति नेत्र शम्भुजी को प्रणाम करते हैं ३७ जो संसार के पैदा करनेवाले और नाश करनेहारे हैं जिन शिवजी से यह सब आवृत है तिन ब्रह्मपार भगवान् ईशजी को नित्यही प्रणामकर शरण में प्राप्त हैं ३८ लिंगरहित लोक से हीन रूपवाले स्वयंप्रभु चित्पति एकरूप ब्रह्मपार परमेश्वर तुम्हारे

नमस्कार करते हैं जिससे अन्य नहीं है ३९ परमात्मभूत त्याग कियेहुये बीज समेत योगवाले योगी समाधिको प्राप्त होकर जिन देवको देखते हैं तिन ब्रह्मपार परमस्वरूपके प्रणाम करते हैं ४० जहां नामादि विशेषक्कृप्ति नहीं है जिनका स्वरूप दृष्टि में नहीं स्थित होता है तिन ब्रह्मपार स्वयंभुवजी के नमस्कारकर शरण में प्राप्तहूं ४१ वेदके वादमें अभिरत जिन विदेह ब्रह्मविज्ञान समेत भेदरहित एक आपके स्वरूपको अनेक देखते हैं तिन ब्रह्मपार के नित्यही प्रणाम करते हैं ४२ जिससे पुराणपुरुष प्रधान तेजको धारण करते देवता प्रणाम करते तिन ज्योति में प्रविष्ट कालवृद्धि को प्राप्त आपके स्वरूप को नमस्कार करते हैं ४३ गुहेश स्थाणु गिरिशपुराण के नित्यही शरण में प्राप्त हैं शिव हरचन्द्र मौलिकी शरण में प्राप्तहैं पिनाक धारण करनेवाले आपकी शरण में प्राप्त हैं ४४ शंकुकर्णमुनि भगवान् जटाजूट धारणकिये शिवजी की इस प्रकार स्तुतिकर श्रेष्ठ ॐकार को उच्चारणकर पृथ्वी में दण्डकी नाईं गिरते भये ४५ तिसीक्षण से शिवकी आत्मावाला श्रेष्ठलिंग प्रकट हुआ जो कि ज्ञान आनन्द अत्यन्तकरोड़ अग्निकी ज्वालाके सदृश था ४६ मुक्तआत्मावाला तिनकी आत्मा सबमें प्राप्त निर्मल शंकुकर्ण विमल लिंगमें लीन होगया सो अद्भुतहीसा भया ४७ यह जटाजूटधारी शिवजीका रहस्य माहात्म्य तुमसे कहा तमोगुण से कोई नहीं जानता विद्वान् भी इस में मोहको प्राप्त होता है ४८ जो इस पापनाश करनेवाली कथाको नित्यही सुनताहै उसके पाप छूट कर विशुद्धआत्मा होकर रुद्रजी के समीप प्राप्तहोता है ४९ शुद्ध होकर प्रातःकाल और दोपहरके समय निरन्तर ब्रह्मपार महास्तोत्र को पढ़े तो वह श्रेष्ठ योगको प्राप्तहोवे ५० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेवाराणसीमाहात्म्ये पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

## छत्तीसवां अध्याय ॥

काशीपुरी के माहात्म्य में मध्यमेशजीकाभी माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हेमहाराज युधिष्ठिर ! काशीजीमें परमेपर मध्य-

मेशजी हैं तिस स्थान में देवीसहित महेश्वर महादेवजी १ भगवान् नित्यही रुद्रों से परिवारित होकर रमण करते हैं तहां पूर्वसमय हृषीकेश विश्वात्मा देवकी के पुत्र २ कृष्णजी सदैव पाशुपतों से युक्त वर्षभरतक बसते भये जो कि कृष्णजी भस्म सब अङ्ग में लगाये रुद्र के पढ़ने में तत्पर ३ हरिजी पाशुपत व्रतकर शम्भुजी को आराधन करते भये तिनके वे ब्रह्मचर्य्य में परायण बहुत शिष्य ४ तिन्हीं के मुखसे ज्ञानपाकर महादेवजीको देखतेभये तिन कृष्णजी को प्रत्यक्ष नीललोहित देव भगवान् वरदेने वाले महादेवजी उत्तमवर देतेभये कि जे मेरेभक्त विधिपूर्वक गोविन्दजी को पूजन करते हैं ५। ६ तिनको वह ईश्वरका जगन्मयज्ञान प्राप्तहोता है हमारे परायण मनुष्यों से कृष्णजी नमस्कार पूजन और ध्यान करने के योग्य निस्सन्देह होंगे हमारे प्रसाद से ब्राह्मण स्नान कर जे यहां देवों के ईश पिनाकधारी देवको देखेंगे ७। ८ तिनके ब्रह्महत्यादिक पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं जे पाप कर्म में रतभी मनुष्य प्राणोंको त्याग करते हैं ९ वे तिस श्रेष्ठ स्थान को जाते हैं इस में विचारणा नहीं करने योग्य है गङ्गाजी में तर्पण करनेवाले वे विज्ञ निश्चय धन्य हैं १० जो कि मध्यमेश्वर ईश्वर महादेवजी को पूजनकर ज्ञान दान तप श्राद्ध में पिण्ड देते हैं ११ एक भी कर्म कियाहुआ सातकुल को पवित्र करता है सूर्यग्रहण में सन्निहत्या में स्नानकर १२ मनुष्य जो फल पाता है तिस से दशगुणा मध्यमेश्वर में पाता है हे महाराज युधिष्ठिर! मध्यमेश्वर में इसप्रकार का माहात्म्य कहा है जो श्रेष्ठभक्ति से सुनता है वह परमपदको प्राप्त होताहै १३॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेवाराणसीमाहात्म्ये षट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

## सैंतीसवां अध्याय॥

काशीजीके माहात्म्यमें प्रयागतीर्थ विश्वरूपतीर्थ तालतीर्थ आकाशतीर्थ अर्षभतीर्थ और सुनीलादितीर्थों का वर्णन॥

नारदजीबोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! और पवित्र तीर्थ काशीजी

में स्थित हैं तिनको सुनिये १ प्रयाग से अधिक परम शुभ प्रयाग तीर्थहै विश्वरूपतीर्थ अत्युत्तमतालतीर्थ २ महातीर्थ आकाश नाम श्रेष्ठ अर्षभतीर्थ सुनील महातीर्थ अत्युत्तम गौरी तीर्थ ३ प्राजापत्यतीर्थ स्वर्गद्वार जम्बुकेश्वर उत्तमधर्मतीर्थ ४ श्रेष्ठतीर्थ गयातीर्थ महानदीतीर्थ नारायणपरतीर्थ अत्युत्तम वायुतीर्थ ५ परंगुह्य ज्ञान तीर्थ उत्तम वाराहतीर्थ पुण्यकारी यमतीर्थ शुभ संमूर्तिकतीर्थ ६ हे महाराज ! अग्नितीर्थ उत्तम कलशेश्वर नागतीर्थ सोमतीर्थ सूर्य तीर्थ ७ महागुहा पर्वततीर्थ अत्युत्तममणिकर्ण्यतीर्थ तीर्थों में श्रेष्ठ घटोत्कच श्रीतीर्थ पितामहतीर्थ ८ देवोंकेईश गंगातीर्थ उत्तमययातिकातीर्थ कापिलतीर्थ सोमेशतीर्थ और अत्युत्तम ब्रह्मतीर्थहैं ९ पूर्वसमय ब्रह्माजीलिंग लाकर जैसे गये कि तिसी समय विष्णुजीने तिस ईश्वर के लिंगको स्थापित किया १० तब ब्रह्माजी स्नानकर हरिजीसे मिलकर बोले कि इसमेरे लायेहुये लिंगको क्यों स्थापित कियाहै ११ तो विष्णुजी ब्रह्माजीसेबोले कि तुम से भी रुद्रमें हमारी दृढ़ भक्तिहै तिससे लिंगको स्थापित कियाहै तुम्हाराही नाम होगा १२ भूतेश्वरतीर्थ धर्म समुद्भवतीर्थ अत्यन्त शुभ गन्धर्वतीर्थ उत्तम वाह्नेयतीर्थ १३ हे युधिष्ठिर ! दौरवासिक व्योमतीर्थ चन्द्रतीर्थ चिंतांगदेश्वरतीर्थ पुण्यकारी विद्याधरेश्वरतीर्थ १४ केदारतीर्थ उग्र तीर्थ अतिउत्तम कालंजरतीर्थ सारस्वततीर्थ प्रभासतीर्थ शुभ रुद्रकर्ण ह्रदतीर्थ १५ महातीर्थ कोकिल महालयतीर्थ हिरण्यगर्भतीर्थ अत्युत्तम गोप्रेक्षतीर्थ १६ उपशान्ततीर्थ शिवतीर्थ अत्युत्तम व्याघ्रेश्वरतीर्थ महातीर्थ त्रिलोचन लोकार्कती उत्तराह्वयतीर्थ १७ ब्रह्महत्या नाशकरनेवाला कपालमोचनतीर्थ महापुण्यकारी शुक्रेश्वरतीर्थ उत्तम आनन्दपुरतीर्थ १८ इनको आदिदेकर काशीजीमें स्थिततीर्थ हैं विस्तारसे सैकड़ों करोड़ कल्पों में भी कहनेको समर्थ नहींहै १९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेवाराणसीमाहात्म्ये सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

# अड़तीसवां अध्याय॥

## गयादिक तीर्थोंका माहात्म्य वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे प्रभु युधिष्ठिर! काशीजीका और तिसके तीर्थों का माहात्म्य संक्षेपसे कहा और तीर्थों को सुनिये १ हे भरत वंशी! एकाग्र चित्त होकर ब्रह्मचारी गयाजी में प्राप्तहोकर वहां जानेहीसे अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता है २ हे प्रभु! जहां तीनों लोकमें प्रसिद्ध अक्षय्यवट नामहै तहां पितरों का दियाहुआ अक्षय होता है ३ महानदीमें स्नान कर पितृ देवताओंको तर्पणकरै तो अक्षय लोकों को प्राप्त होवे और कुल को उद्धार करै ४ तदनन्तर ब्रह्मारण्यसे सेवित ब्रह्मसर को जावे तो रात्रि जैसे प्रातःकाल को प्राप्तहोती तैसे पुण्डरीक यज्ञके फलको प्राप्त होता है ५ ब्रह्मसर में ब्रह्माजी ने श्रेष्ठ यूप ऊंचा करके गाड़ा है यूपकी प्रदक्षिणा कर वाजपेय यज्ञके फल को प्राप्त होता है ६ हे राजाओंमें श्रेष्ठ! फिर लोक में प्रसिद्ध धेनुक तीर्थ को जावे वहां एक रात्रि बसकर तिल धेनु देवे ७ तो सब पापोंसे विशुद्धआत्मा होकर निश्चय सोमलोक को जावे हे महाराज! तहां अबतक निस्संदेह चिह्न है ८ हे भारत वंशी! बछवे समेत कपिला पर्वत में घूमतीहै इस बछवे समेत गऊ के पद अबतक दिखलाई देतेहैं ९ हे राजेन्द्र! हे नृपसत्तम! हे भारत! तिनको स्पर्श कर जो कुछ अशुभ पाप है वह नाश होजाताहै १० तदनन्तर शूल धारण करनेवाले देवजी के स्थान गृध्रवटको जावे तहां शिवजीसे मिलकर भस्म से स्नानकरै ११ ब्राह्मण ने बारह वर्ष का व्रत कियाथा और भी वर्णोंके सब पाप नाश होजातेहैं १२ हे भारतवंशियों में श्रेष्ठ! फिर गीतों का शब्द होनेवाले उद्यन्तपर्वत को जावे तहांपर सावित्रपद दिखाई पड़ता है १३ तहां व्रत करने वाला ब्राह्मण सन्ध्याकरै तो उसने बारहवर्ष की सन्ध्याकर ली १४ हे भारतवंशियोंमें श्रेष्ठ! तहांहीं प्रसिद्धयोनिद्वारहै तहां पुरुष जाकर योनि के सङ्कट से छूटजाता है १५ शुक्ल और कृष्णपक्ष जो मनुष्य गयाजीमें बसताहै वह निस्सन्देह सातकुलको पवित्रकरता

है १६ बहुत पुत्र होने चाहिये उनमें जो एक भी गयाजीको जावे वा अश्वमेध यज्ञ करै वा नील सांड़ छोड़े १७ हे राजन्! हे मनुष्यों के स्वामी! तीर्थ सेवन करनेवाला मनुष्य फिर फल्गुजी को जावे तो अश्वमेध यज्ञको फल और परम सिद्धिको प्राप्तहोवे १८ हे राजेन्द्र! हे महाराज! हे युधिष्ठिर! फिर एकाग्र चित्त होकर धर्मपृष्ठको जावे जहांपर नित्यही धर्म रहता है १९ तो धर्म को मिलकर अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त हो तदनन्तर हे राजेन्द्र! उत्तम ब्रह्माके तीर्थ को जावे २० तहां नियत व्रत मनुष्य ब्रह्मा जी से मिलकर पूजन करै तो हे भारत! राजसूय और अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्तहो २१ हे मनुष्यों के स्वामी! फिर तीर्थ सेवन करनेवाला मनुष्य राजगृह तीर्थ को जावे तहां स्नानकर कक्षीवान् की नाईं आनन्दकरै २२ फिर अग्निवत् प्रकाशित पुरुष पवित्रहो यक्षिण्यानैत्यक को जावे तो यक्षिणी के प्रसाद से ब्रह्महत्यासे छूटजावे २३ तिसपीछे मणिनागको जावे तो सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो जो मनुष्य मणिनाग के नैत्यक को भोजन करता है २४ उसके सर्प काटे का विष नहीं चढ़ता है तहां एक रात्रि बस कर सब पापों से छूटजाता है २५ हे ब्रह्मर्षे! हे राजन्! फिर गौतम के वनको जावे अहल्या के कुण्ड में स्नानकर परमगति को प्राप्त होवे २६ हे राजन्! श्रीतीर्थ को जाकर उत्तम लक्ष्मीको प्राप्तहोवे हे धर्मजाननेवाले! तहां तीनों लोकमें प्रसिद्ध उदपान तीर्थ है २७ तहां अभिषेक करै तो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो फिर देवताओंसे पूजित जनकराजर्षिका कूपहै २८ तहां अभिषेककर विष्णु लोक को प्राप्तहो फिर सब पाप नाश करनेवाले विनाशन तीर्थको जावे २९ तो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो सोम लोकको जावे फिर सब तीर्थों के जलसे उत्पन्न गण्डकी को प्राप्तहो ३० तो वाजपेय यज्ञ के फल को प्राप्तहो तदनन्तर सूर्य्यलोक को जावे हे धर्मज्ञ! फिर ध्रुवके तपोवन में प्रवेशकर ३१ गुह्यकों में निस्सन्देह आनन्द करै हे महाभाग! सिद्धों से सेवित कर्म्मदा नदी को प्राप्त होकर ३२ पुण्डरीक यज्ञ के फलको प्राप्त हो सोमलोक को जावे

फिर त्रैलोक्य में प्रसिद्ध विशाला नदी को प्राप्तहोकर ३३ अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्त हो स्वर्ग्ग लोकको जावे हे मनुष्यों के स्वामी! फिर माहेश्वरी धाराको प्राप्त होकर ३४ अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्तहो और कुलको उद्धार करै पवित्र मनुष्य देवताओं की पुष्करिणी को प्राप्त होकर ३५ दुर्गति को न प्राप्तहो वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहोकर फिर एकाग्र चित्त होकर ब्रह्मचारी माहेश पदको जावे ३६ वहां स्नानकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो हे भारतवंशियों में श्रेष्ठ! तहां तीर्थों की कोटि प्रसिद्ध है ३७ हे राजेन्द्र! हे राजन्! उसको कच्छप रूप से दुरात्मा असुर ने हरलिया था तब प्रभाविष्णु विष्णु जी ने छीन लिया था ३८ हे मनुष्यों के स्वामी! तहां तीर्थकोटि में अभिषेक करै तो पुण्डरीक यज्ञके फलको प्राप्तहो विष्णुलोक को जावे ३९ हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! हे भारतवंशी! फिर नारायण के स्थानको जावे जहां सदैव सन्निहित हरिजी बसते हैं ४० जहां ब्रह्मादिक देवता तपस्वी ऋषि आदित्य वसु और रुद्र जनार्दन जीकी उपासना करतेहैं ४१ अद्भुत कर्मवाले विष्णुजीका शालग्राम नाम से प्रसिद्ध तीर्थ है वहां तीनों लोक के स्वामी वर देनेवाले अच्युत विष्णुजी को प्राप्तहोकर ४२ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो विष्णुलोक को जावे हे धर्म जाननेवाले! तहां उदपान सब पाप नाश करनेवाला है ४३ तहां चारों समुद्र कूप में सदैव सन्निहित हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ! तहां स्नान कर दुर्गति को नहीं प्राप्तहोता है ४४ हे युधिष्ठिर! महादेव वर देनेवाले नाशरहित विष्णुजी को प्राप्तहोकर ऋणों से छूटकर चन्द्रमा की नाईं प्रकाशित होवे ४५ जातिस्मर प्रयतमानस पवित्रहो स्नानकर निस्सन्देह जातिस्मर भावको प्राप्त हो ४६ वटेश्वर पुर में जाकर केशवजीको पूजन कर उपवास से निस्सन्देह मनुष्य मनोवाञ्छित लोकों को प्राप्तहो ४७ तदनन्तर सब पाप नाश करनेवाले वामन तीर्थ को जाकर हरिदेवकी वन्दना कर दुर्गति को न प्राप्तहोवे ४८ फिर सबपाप नाश करनेवाले भरत के आश्रमको जाकर तहां महापाप नाश करनेवाली कौशिकी को सेवन

करै ४९ तो मनुष्य राजसूय यज्ञके फलको प्राप्त हो हे धर्मजानने वाले! फिर उत्तम चम्पकारण्य को जावे ५० तहां एक रात्रि बसकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोवे तदनन्तर परम सम्मत गोविन्दतीर्थ को प्राप्त होकर ५१ एक रात्रि बसकर अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्तहो तहाँ महाप्रकाशित देवीसमेत विश्वेश्वरजीको देखकर ५२ मित्रावरुण के लोकों को प्राप्तहो हे भारतवंशियों में श्रेष्ठ! तहाँ तीन रात्रि बसकर अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्तहो ५३ हे भरतर्षभ! नियत नियत भोजन कर कन्यावसथ तीर्थ को प्राप्तहोकर मनुप्रजापति जीके लोकों को प्राप्तहो ५४ हे भारतवंशी! जे कन्या में थोड़ा भी दान देते हैं तिसको व्रत करनेवाले ऋषि अक्षय यह कहते हैं ५५ फिर तीनों लोक में प्रसिद्ध निष्ठावास को प्राप्तहोकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो विष्णुलोकको जावे ५६ जे मनुष्य निष्ठा के संगम में दान देते हैं वे रोगरहित ब्रह्मलोक को जाते हैं ५७ तहां तीनोंलोकों में प्रसिद्ध वसिष्ठ जीका आश्रम है तहां अभिषेक करनेवाला वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै ५८ फिर देवर्षिगणों से सेवित देवकूट को प्राप्त होकर अश्वमेध यज्ञके फल को प्राप्त हो और कुलको उद्धार करै ५९ हे राजाओं में श्रेष्ठ! फिर कौशिकमुनि के ह्रदको जावे जहां कौशिक विश्वामित्रजी श्रेष्ठ सिद्धिको प्राप्त हुये हैं ६० हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहाँ धीर मनुष्य कौशिकी में महीना भर वसे तो अश्वमेध यज्ञ का जो फल है वह महीने भरमें प्राप्तहो ६१ जो सब तीर्थों में श्रेष्ठ महाह्रद में बसे वह दुर्गति को न प्राप्तहो और वहुत सुवर्ण को प्राप्तहोवे ६२ फिर वीराश्रम निवासी कुमारतीर्थ को प्राप्त होकर अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्तहो और वह इन्द्रलोक को भी जावे ६३ तिसपीछे देवताओं से सेवित नन्दिनी में कूपको प्राप्त होकर अश्वमेध यज्ञ के पुण्य को प्राप्त हो ६४ फिर विद्वान् मनुष्य कालिका संगम और कौशिकी आरुणके संगम में स्नाकर तीन रात्रि वसकर सब पापों से छूटजाता है ६५ तिसपीछे पण्डित मनुष्य उर्वशी तीर्थ सोमाश्रम और कुम्भकर्ण के स्थान में स्नान कर पृथ्वी में पूजित

होवे ६६ फिर एकाग्र चित्तहोकर ब्रह्मचारी कोकामुख में स्नानकर जातिस्मरभावको प्राप्तहोता है यह पुराने मुनियों ने देखा है ६७ फिर ब्राह्मण सकृन्नदी को प्राप्तहोकर कृतार्थ होजाता है और सब पापों से शुद्ध आत्मा होकर स्वर्ग लोक को जाताहै ६८ फिर सैव्य क्रौंचों के नाश करनेवाले ऋषभ द्वीपको प्राप्तहोकर सरस्वती में स्नानकर विमान में चढ़कर प्रकाशित होता है ६९ हे महाराज! मुनियों से सेवित औद्यानकतीर्थ में अभिषेक करै तो सब पापों से छूट जाता है ७० फिर मनुष्य पुण्यकारी ब्रह्मर्षियों से सेवित ब्रह्म तीर्थ को प्राप्त होकर निस्सन्देह वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्त होता है ७१ तदनन्तर चम्पा में प्राप्त होकर भागीरथी में स्नान कर जलदानकर दण्डार्पण को प्राप्तहोकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो ७२ फिर पुण्यसेवित पुण्यकारिणी लाविढिका को जावे तो वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहो विमान में स्थित होकर पूजित होवे ७३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेगयादितीर्थमाहात्म्यकथनं नामअष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

# उनतालीसवां अध्याय ॥

सविद्या लौहित्य तीर्थ करतो या गंगा और सागर का संगमादि अनेक तीर्थों का वर्णन ॥

नारद जी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! संध्याको प्राप्त होकर उत्तम सविद्या तीर्थ में स्नान कर मनुष्य निस्सन्देह विद्वान् होता है १ रामजी के प्रसाद से पूर्वसमय तीर्थराज कियागया है तिस लौहित्य तीर्थ को फिर प्राप्त होकर बहुत सुवर्ण को प्राप्त होवे २ करतो याको प्राप्त होकर तीन रात्रि मनुष्य बसकर अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त हो और स्वर्गलोक को जाताहै ३ हे राजाओं में इन्द्र! गंगा और सागर के संगमसें अश्वमेधयज्ञ से दशगुणा फल बुद्धिमान् कहते हैं ४ हे भरतवंशी! हे राजन्! जो मनुष्य गंगा जीके श्रेष्ठ द्वीप को प्राप्त होकर तीन रात्रि बसता और स्नान कर

ता है वह सब कामनाओं को प्राप्त होता है ५ फिर पाप नाश करने वाली वैतरणीनदी को प्राप्त होकर विरजतीर्थ में प्राप्त हो चन्द्रमा की नाईं प्रकाशितहो ६ प्रभाव में कुल पवित्र कर सब पापों को नाश करै और मनुष्य सहस्र गऊ के फलको प्राप्त होकर अपने कुल को पवित्र करता है ७ फिर पवित्र मनुष्य शोण और ज्योतिरथ्या के संगम में बसकर पितृ और देवों को तर्पण कर अग्निष्टोम यज्ञ के फल को प्राप्त हो ८ हे कुरुवंशियों में श्रेष्ठ ! मनुष्य शोण और नर्मदाजीके उत्पन्न में वंशगुल्म में स्नानकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता है ९ हे मनुष्योंके स्वामी ! कोशलामें ऋषभ तीर्थ को प्राप्त होकर तीन रात्रि मनुष्य बसकर अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त होताहै १० फिर कोशला में प्राप्त होकर काल तीर्थमें स्नान करै तो वृषभसे ग्यारहगुणा फल निस्सन्देह प्राप्त होवे ११ मनुष्य पुष्पवती में स्नानकर तीन रात्रि बसकर सहस्रगऊके फल को प्राप्त हो और कुलको उद्धार करै १२ फिर प्रयत मनहो बदरिका तीर्थमें स्नान कर दीर्घ आयुको प्राप्तहो और स्वर्ग लोकको जावे १३ फिर मनुष्य परशुरामजी से सेवित महेन्द्र तीर्थ को प्राप्त हो राम तीर्थ में स्नानकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो १४ हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ ! हे राजन् ! तहांहीं मतंगका केदार तीर्थ है तहां स्नानकर मनुष्य सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो १५ और श्रीपर्वत को प्राप्तहोकर नदी तीरको स्पर्श करै तो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो और श्रेष्ठ सिद्धिको भी प्राप्तहो १६ श्रीपर्वत में देवी समेत महा प्रकाशित महादेवजी और परम प्रसन्न देवताओं से युक्त ब्रह्माजी बसते भये १७ तहां देवहृदमें पवित्र और प्रयत मानस मनुष्य स्नानकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो और श्रेष्ठ सिद्धिको प्राप्तहो १८ भाण्डों में देवताओं से पूजित ऋषभ पर्वत में जाकर मनुष्य वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहो और स्वर्गमें आनन्द करै १९ तदनन्तर हे राजन् ! मनुष्य अप्सराओं के समूहों से युक्त कावेरी नदीको जावे तहां स्नानकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो २० तहां समुद्रके तीर्थ में कन्या तीर्थको स्पर्श करै हे राजाओं में श्रेष्ठ ! तहां

स्पर्श करने से सब पापों से छूटजाता है २१ हे राजेन्द्र! फिर समुद्र के मध्यमें सब मनुष्यों से नमस्कार कियेहुये तीनों लोकों में प्रसिद्ध गोकर्ण को प्राप्तहो २२ जहां ब्रह्मादिक देव तपस्वी मुनि भूत यक्ष पिशाच बड़े नागों समेत किन्नर २३ सिद्ध चारण गंधर्व मनुष्य सर्प नदी समुद्र और पर्वत महादेवजी की उपासना करते हैं २४ तहां ईशान जीको पूजनकर तीन रात्रि मनुष्य बसकर दश अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होकर गणों का पतिहो २५ और बारह रात्रि बसकर मनुष्य कृतार्थ होजाताहै तहांहीं त्रैलोक्य में प्रसिद्ध गायत्री का स्थान है २६ तहां तीन रात्रि बसकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो हे मनुष्यों के स्वामी! ब्राह्मणों को निदर्शन प्रत्यक्ष है जो योनिसंकर से उत्पन्न ब्राह्मण गायत्री पढ़ता है हे राजन्! तिसकी कथा वा गीत गानेकी वाणी प्राप्तहो जातीहै २७।२८ जोब्राह्मण नहींहै और गायत्री पढ़ताहै तो उसकी गायत्रीनाशहोजाती है संवर्त विप्रर्षि की दुर्लभ बावली को प्राप्त होकर २९ रूपकाभागी और बड़ाऐश्वर्यवान् होताहै तदनन्तर वेणाको प्राप्तहोकर पितृ देवताओं को तर्पणकरै ३० तो मनुष्य मुरैले और हंसों से युक्त विमान को प्राप्तहो फिर नित्यसिद्धों से सेवित गोदावरीको प्राप्त होकर ३१ गवामय को प्राप्तहो वायुलोक को जावे और वेणा के संगम में स्नानकर वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहो ३२ वरदासंगमको स्नानकर सहस्रगऊ के फलको प्राप्तहो ब्रह्मस्थूणा को प्राप्तहोकर तीनरात्रि मनुष्य बसकर ३३ सहस्रगऊ के फलकोप्राप्त हो और स्वर्गलोक को जावे फिर एकाग्रचित्त होकर ब्रह्मचारी कुब्जावनको प्राप्तहोकर ३४ तीनरात्रिबसस्नानकर सहस्रगऊके फलको प्राप्तहो तदनन्तर कृष्णा वेणा के जलसे उत्पन्न देवह्रद में स्नानकर ३५ हे राजन्! ज्योतिर्मात्रह्रद और कन्याश्रम में स्नान करै जहां सौ यज्ञोंकोकर इन्द्र स्वर्गको प्राप्त हुये हैं ३६ तहांजानेही से सौ अग्निष्टोम यज्ञों के फलको प्राप्तहो और सर्वदेवह्रद में स्नानकर सहस्रगऊ के फलको प्राप्तहो ३७ मनुष्य जातिमात्र ह्रद में स्नानकर जातिस्मर होवे। फिर महापुण्यकारिणी बावली और

नदियों में श्रेष्ठ पयोष्णी में ३८ पितृ और देव पूजन में रत मनुष्य स्नान करै तो सहस्र गऊ के फलको प्राप्तहोवे हे महाराज ! दण्डकारण्य को प्राप्त होकर स्पर्श करै ३९ शरभंग और महात्मा शुक्र के आश्रम को जाकर मनुष्य दुर्गति को न प्राप्तहो और अपने कुलको पवित्र करै ४० फिर जमदग्निजीसे सेवित सूर्पारक को जावे और रामतीर्थ में मनुष्य स्नानकरै तो बहुत सुवर्णको प्राप्त हो ४१ तिसपीछे नियत और नियत भोजनवाला मनुष्य सप्त गोदावरीमें स्नानकर महापुण्यको प्राप्तहो और देवलोकको जावे ४२ फिर नियत और नियत भोजनवाला मनुष्य देवपथ को जावे तो देवयज्ञ का जो पुण्य है तिस को प्राप्तहो ४३ ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय तुंगकारण्य को प्राप्तहो तहाँ पूर्वसमय सारस्वत जी मुनियों को वेद पढ़ाते भये हैं ४४ हे भरतवंशी ! महर्षियों के उत्तरीय में बैठे हुये नष्टहुये वेदों को अंगिरा मुनिके पुत्र सारस्वत जी ने पढ़ाया है ४५ न्यायपूर्वक अच्छेप्रकार ओंकारका उच्चारण कर जिसने जो पहले अभ्यास कियाथा तिसको सो उपस्थितथा ४६ ऋषि देवता वरुण अग्नि प्रजापति हरि नारायण देव महादेव देवताओं समेत महाप्रकाशित ब्रह्मा भगवान् तहाँपर यज्ञ कराने के लिये शुक्रजी को लगाते भये ४७। ४८ तब शुक्रभगवान् विधिपूर्वक सब ऋषियों का देवदृष्टकर्म से पुनराधान करते भये ४९ तहाँ विधि समेत आज्य भागसे तर्पित देवता और ऋषि सुखपूर्वक त्रिभुवनको प्राप्त भये ५० हे राजाओं में श्रेष्ठ ! तिस वन में प्रविष्ट हुये स्त्री वा पुरुष का पाप समूह शीघ्रही नाश होजाता है ५१ हेराजन् ! तहां नियत नियत भोजन वाला मनुष्य महीने भर बसे तो ब्रह्मलोक को जावे और अपने कुल को फिर पवित्रभी करै ५२ मेधावनको प्राप्त होकर पितृ और देवों को तर्पण करै तो अग्निष्टोम यज्ञ के फल को प्राप्त हो स्मृति और बुद्धि को भी पावे ५३ तहां कालंजर में जाकर सहस्र गऊ के फलको प्राप्त हो तिस कालंजर पर्वत में आत्मा को साधै ५४ तो निस्सन्देह मनुष्य स्वर्ग लोक में प्राप्त हो हे राजन् ! तदनंतर पर्वत श्रेष्ठों में श्रेष्ठ चित्रकूट में ५५ पाप नाश

करने वाली मंदाकिनी को प्राप्त होकर पितृ और देवपूजन में रत हो वहां अभिषेक करै ५६ तो अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त हो और परम गतिको भी पावे हे राजेन्द्र! तदनन्तर अत्युत्तम गुहस्थान को जावे ५७ हे मनुष्योंमें श्रेष्ठ! हेराजन्! जहां महासेन देवनित्यही सन्निहित हैं तहां जानेही से पुरुष सिद्धिको प्राप्त होता है ५८ कोटि तीर्थ में मनुष्य स्नान कर सहस्रगऊ के फलको प्राप्तहो प्रदक्षिण वर्तमानहो मनुष्य यशःस्थानको जावे ५९ तो महादेवजी को प्राप्त होकर चन्द्रमा की नाईं प्रकाशितहो हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! हे महाराज! तहांकुँवां प्रसिद्धहै ६० हे राजाओंमें श्रेष्ठ! हे युधिष्ठिर! जहां चारों समुद्र बसते हैं तहां स्पर्श और प्रदक्षिणाकर ६१ नियतात्मा मनुष्य पवित्रहोकर परमगतिको प्राप्त हो हे कुरुश्रेष्ठ! तिस पीछे बड़ेभारी शृंगबेरपुर को जावे ६२ जहां महाबुद्धिमान् दशरथ के पुत्र रामजी पूर्व समयमें तरे हैं ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय मनुष्य गंगाजीमें स्नानकर ६३ पापरहित होता और वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्त होता फिर बुद्धिमान् देवके मुंजवट स्थानको जावे ६४ हे मनुष्यों के स्वामी! महादेवजी के पास जाकर पूजनकर प्रदक्षिणाकर गणों का पति होताहै ६५ तदनन्तर हे राजेन्द्र! ऋषियों से स्तुति को प्राप्त हुये प्रयागजी को जावे जहां ब्रह्मादिक देवता दिशाओं के ईश्वरों समेत दिशा ६६ लोकपाल सिद्ध पितर सनत्कुमार आदिक महर्षि ६७ नाग गरुड़ सिद्ध शुक्रधर नदियां समुद्र गन्धर्व अप्सरा ६८ और ब्रह्माजी को आगे कर हरि भगवान्हैं तहां तीन कुण्ड हैं तिनके मध्यमें गङ्गाजी नहीं हैं ६९ प्रयागसे अच्छेप्रकार अतिक्रान्त सब तीर्थोंको आगे कियेहुई तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध यमुनाजी हैं ७० लोकभाविनी यमुनाजी गङ्गाजी के साथ मिली हुई हैं गङ्गा यमुना के बीचमें पृथ्वी का करिहांव है ७१ ऋषि लोग प्रयाग को करिहांव का अन्तउपस्थ कहते हैं प्रयाग सुप्रतिष्ठान कंबलाश्वतर दोनों ७२ भोगवती तीर्थ यह तीर्थ ब्रह्मकी वेदी कहाताहै हे युधिष्ठिर! तहां वेद और यज्ञमूर्ति धारण कियेहुये हैं ७३ हे राजन्! बड़े पाप रहित ऋषि प्रजापति की उपासना करते हैं तैसेही चक्र धारण करनेवाले

यज्ञों से देवोंको पूजन करते हैं ७४ हे भरतवंशी ! हे प्रभो ! तीनों लोकमें प्रयागसे अधिक पुण्यकारी नहीं है प्रभावसे प्रयाग सब तीर्थों से अधिकहै ७५ तिस तीर्थ के सुनने नाम के कहने और मस्तक के नवानेसे सब पापोंसे मनुष्य छूटजाताहै ७६ तहां संगम में व्रत करनेवाला जो अभिषेक करताहै वह राजसूय और अश्वमेध यज्ञके बड़ेभारी पुण्यको प्राप्त होताहै ७७ हे भरतवंशी ! यह देवताओं के यज्ञकी भूमि है तिसकी कथा यह है कि तहां थोड़ा भी दिया बहुत होताहै ७८ हे तात ! देव वचन वा मनुष्यों के वचनसे प्रयागजीके मरणसे बुद्धि न हटाना ७९ हे कुरुनन्दन ! साठ करोड़ दश सहस्र तीर्थों की सान्निध्य यहां कही है ८० चतुर्विद्यामें जो पुण्य है सत्यवादियोंमें जो पुण्यहै वही पुण्य गङ्गा यमुनाके संगममें स्नान करनेवाला पाताहै ८१ तदनन्तर भोगवती नाम वासुकि का उत्तम तीर्थ है तहां जो अभिषेक करताहै वह अश्वमेध यज्ञके फल को प्राप्त होताहै ८२ हे कुरुनन्दन ! तहां तीनों लोकमें प्रसिद्ध हंस प्रपतन तीर्थ है और गङ्गाजी में दशाश्वमेधिकहै ८३ जहां तहां स्नान की हुई गंगाजी कुरुक्षेत्र के समानहैं कनखल में विशेष फल देनेवाली हैं और प्रयागजी बहुत श्रेष्ठहै ८४ जो सैकड़ों अकार्यकर गङ्गाजी का सेवन करे तो गङ्गाजी का जल तिसके सब अकार्यों को इसप्रकार जलाताहै जैसे अग्नि इंधनको जलाताहै ८५ और गङ्गा जल सब पापोंको इसप्रकार भी जलाताहै जैसे अग्निरुई की राशि को जलाताहै सतयुगमें सब पुण्यथे त्रेता युग में पुष्कर पुण्यकारी ८६ द्वापरमें कुरुक्षेत्र और कलियुगमें गंगाजी पुण्यकारिणी अधिक हैं पुष्कर में तपस्या करै महालयमें दान करै ८७ मलयाचल में अग्निको तापै भृगु तुंगमें भोजन न करै पुष्कर कुरुक्षेत्र गंगाजीके जल के मध्यमें प्राणों में ८८ प्राणी शीघ्रही सात सात पीढ़ियों को तारता आप पवित्र होता पाप को देखकर पुण्य देता ८९ स्नानकरी और पानकरी गङ्गा सात कुलको पवित्र करती है जबतक मनुष्य के हाड़ गङ्गा जलको स्पर्श करते हैं ९० तबतक वह पुरुष स्वर्गलोकमें रहताहै जैसे पुण्य तीर्थ पुण्य स्थान ९१ की उपासनाकर पुण्यको

प्राप्त होकर परलोक को जाताहै गङ्गाजी के समान तीर्थ नहीं है केशवजीसे श्रेष्ठ देवनहींहै ९२ और ब्राह्मणोंसे श्रेष्ठ कोई वर्ण नहीं है इसप्रकार ब्रह्माजी कहतेहैं हे महाराज! जहां गंगाजी हैं तहां योजनभर देश ९३ गंगाजीके तीर आश्रित सिद्धक्षेत्र जाननेयोग्य है यह ब्राह्मणों और साधुओं के मानसों में सत्यही है ९४ सज्जन पीछे चलनेवाले के कानमें मुक्तिको जपते हैं यह धर्मको देनेवाला मेध्य स्वर्गदेनेहारा सुखरूप ९५ अत्यन्त पुण्यकारी रम्य पावन उत्तम धर्म महाशीर्ष गुह्य और सब पाप नाशकरनेवालाहै ९६ इस को पढ़कर ब्राह्मणोंके बीचमें निर्मलता को प्राप्तहो तीर्थों के वंशका कीर्त्तन लक्ष्मीदेनेवाला स्वर्गदेनेहारा महापुण्यकारी शत्रुओंका नाशकरनेवाला कल्याण रूप बुद्धि का उत्पन्न करनेवाला और अग्र्यहै पुत्र रहित पुत्रको प्राप्तहोता धनहीन धनको पाताहै ९७।९८ राजा पृथ्वीको जीतता बनियां धनको पाता शूद्र मनोवाञ्छित कामनाओं को प्राप्तहोता और ब्राह्मण पढ़तेहुये वेदका पारगामी होता ९९ जो सदैव पवित्रतीर्थों के पुण्यको नित्यही सुनता है वह जातिस्मर के भावको प्राप्तहोता और स्वर्गमें आनन्द करताहै १०० तीर्थजानेके योग्यहैं और नहीं जानेवाले कीर्त्तन करने के योग्यहैं सबतीर्थों को बुद्धि से मनसेभी जावे १०१ ये सुकृतकी इच्छाकरनेवाले वसु साध्य सूर्य पवन अश्विनीकुमार और देव सदृश ऋषियों से किये हुये हैं १०२ हे कुरुवंशी! हे अच्छे व्रतकरनेवाले! नियत तुमभी इस विधि से तीर्थोंको जावो पुण्यपुण्यही से बढ़ती है १०३ पूर्वसमय भावित करणोंने आस्तिक्य श्रुतिदर्शन से शिष्टानुदर्शी सज्जनों से वे तीर्थ प्राप्तहोतेहैं १०४ हे कुरुवंशी! अकृत अकृतआत्मावाला अपवित्र चोर और वक्रबुद्धि वाला मनुष्य तीर्थों में नहीं स्नान करता है १०५ हे तात! अच्छे वृत्तवाले नित्यही धर्म अर्थ के दर्शी तुमने सब पितृ प्रपितामह ऋषिगणों समेत ब्रह्मादिक देवताओं को तृप्त किया है १०६ वसिष्ठजीबोले कि हे धर्म जाननेवाले दिलीप! तुम ने नित्यही प्रसन्न किये हैं इससे पृथ्वी में शाश्वतीभारी कीर्त्तिको प्राप्त होगे १०७ नारदजी बोले कि भगवान् वसिष्ठ ऋषि इस

प्रकार दिलीपसे कहकर बोध देकर प्रसन्न और प्रसन्न मनसे तहांहीं अन्तर्द्धान होगये १०८ हे कुरु वंशियों में श्रेष्ठ दिलीपजी ! शास्त्र के तत्त्व अर्थ के दर्शन और वसिष्ठजी के वचन से पृथिवी में घूमते भये १०९ हे महाभाग ! इसी प्रकार से यह प्रतिष्ठान में प्रतिष्ठित महापुण्यकारिणी सब पापनाश करनेवाली तीर्थ यात्रा है ११० इस विधि से जो पृथिवी को पर्यटन करता है वह मरकर सौ अश्वमेध यज्ञ के फलको भोग करताहै १११ हे युधिष्ठिर ! दिलीप से अठगुना उत्तम धर्म तुम प्राप्तकरोगे जैसे पूर्वसमय राजा दिलीप प्राप्त हुये हैं ११२ जिससे तुम ऋषियों के नेताहो तिससे तुमको अठगुना फल होगा हे भरतवंशी! ये तीर्थ राक्षसगणों के विकीर्ण हैं ११३ हे कुरुनन्दन ! तुमको छोड़कर औरकी गति नहीं विद्यमान है यह सब तीर्थों के पीछे आश्रित नारदचरित है ११४ जो सबेरे उठकर पढ़ता है वह सबपापों से छूटजाता है जहां सदैव ऋषियों में मुख्य वाल्मीकि कश्यप ११५ आत्रेय कौंडिन्य विश्वामित्र गौतम असित देवल मार्कण्डेय गालव ११६ भरद्वाजजी के शिष्य उद्दालकमुनि शौनक तपस्वियों में श्रेष्ठ पुत्र समेत व्यासजी ११७ मुनियों में श्रेष्ठ दुर्वासा महातपस्वी जाबालि ये सब तपस्वी ऋषि श्रेष्ठ तुमको प्रतीक्ष्य हैं ११८ हे महाभाग! इन्हों के साथ इनतीर्थों को जावो बड़ी कीर्त्ति को प्राप्त होगे जैसे महाभिष राजा ११९ धर्मात्मा ययाति और राजा पुरूरवा हे कुरुश्रेष्ठ! तैसेही तुमभी अपने धर्म से शोभित होगे १२० जैसे राजा भगीरथ और रामजी प्रसिद्ध हैं जैसे पूर्व्वसमय में इन्द्र सब शत्रुओं को भस्मकर १२१ ज्वर रहित होकर देवों के राजा त्रैलोक्य को पालन करते भये तैसेही शत्रुओं को नाशकर तुम प्रजाओं को पालन करोगे १२२ हे कमलनयन! अपने धर्म्म से इकट्ठा की हुई पृथ्वी को प्राप्तहो वीर्य्य से सहस्रबाहुकी नाईं प्रसिद्धता को प्राप्त होगे १२३ सूतजी बोले कि इसप्रकार भगवान् नारदऋषि राजा युधिष्ठिर से कहकर महाराज को बोधकर तहांहीं अन्तर्द्धान होगये १२४ धर्मात्मा अच्छे व्रत करनेवाला राजा युधिष्ठिर ऋषियों समेत आदरसहित सब

तीर्थों को जातेभये १२५ हे सब ऋषियो! हमारीकही हुई तीर्थयात्रा के आश्रय कथाको जो पढ़ता वा सुनता है वह सब पापों से छूट जाता है १२६ मैंने सब तत्त्व कहा अब फिर क्या सुननेकी इच्छा है क्योंकि पुण्ययशवाले ऋषियों से निश्चय कर हमको कुछ नहीं कहने के योग्य नहीं है १२७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेनानाविधतीर्थकथनं नामनवत्रिंशोऽध्यायः ३९॥

## चालीसवां अध्याय॥

ब्राह्मण तुलसी पीपलकावृक्ष तीर्थोंका संचय विष्णुजी और शिवजीका माहात्म्य वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे शौनकादिक ऋषीश्वरो! हे सुन्दरव्रतवालो! इसप्रकार विष्णुकी देह तीर्थ कहे इनके और संगसे मनुष्य मुक्त होता है १ तीर्थोंका सुनना धन्य है तीर्थोंका सेवन धन्य है पापोंकी राशिके गिराने के लिये कलियुग में और उपाय नहीं है २ हम तीर्थ में वास करेंगे हम तीर्थको स्पर्श करेंगे इसप्रकार जो प्रतिदिन कहता है वह बड़े परमपद को प्राप्त होताहै ३ हे अच्छेव्रत करने वालो! तीर्थों के कहनेहीमात्र से तिसके पापनाश होजाते हैं निश्चय तीर्थ धन्य हैं सेव्य धन्य हैं ४ तीर्थों के सेवन से प्रभु संसार के करनेवाले नारायण जी सेवित होते हैं तीर्थ से श्रेष्ठ पद नहीं है ५ ब्राह्मण तुलसी पीपलका वृक्ष तीर्थोंका संचय विष्णुजी और शिव जी सदैव मनुष्यों से सेवन करने के योग्यहैं ६ हे मुनिश्रेष्ठो! ब्राह्मणोंका विशेषकर सेवन है आगे के मुनि सब तीर्थों के स्नानादि से अधिक कहते हैं ७ तिससे विद्वान् मनुष्य ब्राह्मण के चरण जोकि साक्षात् सर्व तीर्थ मय और कल्याणरूपहैं तिनको प्रति दिन सेवन करै तो तीर्थोंसे अधिक फलहो ८ पीपलका वृक्ष तुलसी और गौवों की प्रदक्षिणाकरै तो सबतीर्थोंका फल पाकर विष्णुलोकमें प्राप्तहो ९ तिससे पापकर्म्मों को तीर्थों के सेवन से नाश करै और प्रकार से नरकको प्राप्तहोगा कर्म्मभोग से निश्चय शांतिहोगी १० पापियों

का नरक में वास होता है सुकृती स्वर्गभोग करता है तिससे चतुर मनुष्य निश्चय कर पुण्यकारी तीर्थको सेवन करें ११ तब ऋषि बोले कि हे अच्छे व्रत करनेवाले सूतजी ! हम लोगों ने माहात्म्य समेत निश्चयकर तीर्थ सुने अब इस समय में प्रयागका विशेष फल सुननेकी इच्छा है १२ प्रयाग को पहले आपने संक्षेपसे कहा है अब विशेष से सुनने की इच्छा है हे सूतजी ! हम से कहिये १३ तब सूतजी बोले कि हे अच्छेव्रत करनेवाले! हे महाभागो ! प्रयाग का अच्छाप्रश्न किया हम प्रयागका वर्णन कहते हैं १४ जो पूर्व समय मार्कण्डेयजी ने युधिष्ठिर से कहा है जब महाभारत होकर युधिष्ठिर को राज्य प्राप्तहुआ १५ इसी अन्तर में भाइयों के शोक से सन्तप्त कुन्ती के पुत्र राजा युधिष्ठिर वारंवार चिन्तना करनेलगे १६ कि ग्यारह चमूका स्वामी दुर्योधन राजा रहा हमको बहुतत-रह से तापदेकर वे सब नाशको प्राप्त होगये १७ वासुदेवजी के आश्रित होकर पाँच पाण्डव शेष रहगये कैसे द्रोणाचार्य्य भीष्म-पितामह महाबली कर्ण १८ और भाइयों के पुत्रों समेत राजा दु-र्योधन और जे और शूरमाननेवाले राजा रहे वे सब नाश को प्राप्त किये १९ इन सब लोगों के विना राज्यभोग और जीने से क्या है धिक्कार हमको है इसप्रकार कष्ट चिन्तनकर राजा विह्वलता को प्राप्त होगये २० चेष्टा और उत्साहहीन भये कुछ नीचेका मुख कर स्थित भये जब राजा होशको प्राप्त भये तब वारंवार चिन्तना करनेलगे २१ कि विधि से योग नियम वा किस तीर्थको जावें जिस से हम शीघ्र महापापों से छूटजावें २२ जहां स्नानकर मनुष्य अत्युत्तम विष्णुलोक को प्राप्त होताहै निश्चयकर कृष्णजी से कैसे पूछें जिन्होंने यह बड़ाभारी युद्ध कराया है २३ धृतराष्ट्रजी से कैसे पूछें जिनके सौ पुत्र नाश किये हैं व्यासजी से हम कैसे पूछें जिस के गोत्रका नाश किया है २४ इसप्रकार धर्मपुत्र युधिष्ठिरजी विक्ल-वताको प्राप्त होगये भाई के शोकसे युक्त सब पाण्डव रोनेलगे २५ और जो पाण्डवों के आश्रित महात्मा प्राप्त हुये थे कुन्ती द्रौपदी और जे तहां आये थे २६ सब चारोंओर रोतेहुये पृथ्वी में गिरगये

काशीजी में मार्कण्डेय मुनिने युधिष्ठिर को जाना २७ कि जैसे वि-
ह्वलता को प्राप्त भये और अत्यन्तदुःखित रोते हैं थोड़ेही काल में
महातपस्वी मार्कण्डेयजी २८ हस्तिनापुर में प्राप्त होकर राजा के
द्वार में स्थित भये तब द्वारपाल मुनिको देखकर शीघ्रही राजा से
कहता भया २९ कि आपके देखने की इच्छा से मार्कण्डेयमुनि द्वार
में स्थित हैं तब युधिष्ठिर जी तिनमें परायणहो शीघ्रही द्वारपर
आकर बोले ३० कि हे महामुनि जी! हे महाबुद्धि युक्त! आपका
आना अच्छा हुआ अच्छा हुआ इससमय हमारा जन्म सफल हुआ
इसी समय कुल पवित्र हुआ ३१ हे महामुनिजी! इसी समय आप
के देखने से हमारे पितर तृप्तहुये फिर सिंहासन पर बैठाकर चरण
धोकर पूजन आदि से ३२ महात्मा युधिष्ठिरजी ने तिन मुनिको
पूजित किया तब मार्कण्डेयजी युधिष्ठिर से बोले कि हे राजन्! तुमने
हमारा पूजन किया है ३३ शीघ्रही कहिये कि किसलिये और किस
ने शीघ्र विह्वलता युक्त किया है हमारे आगे कहिये ३४ तब युधि-
ष्ठिर बोले कि हे महामुनिजी! हमारा राज्य के लिये जो वृत्त था यह
सब जानकर भगवान् आप यहां आये हैं ३५ तब मार्कण्डेयजी
बोले कि हे महाबाहु युक्त! हे राजन्! जहां धर्म स्थित है बुद्धिमान्
रणभूमि में युद्ध कररहे हैं उनको पाप नहीं दिखाई देता ३६ फिर
क्या विशेषकर क्षत्रिय को राजधर्म से युद्धकर पापनहीं होता तिस
से इसप्रकार हृदय में कर पापकी चिन्तना न करो ३७ तब राजा
युधिष्ठिर शिरसे मुनिको प्रणाम कर सदैव त्रिकालदर्शी मुनि से
बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ! आप संक्षेप से कहें जिससे हम पापसे छूट-
जावें ३८ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे भरतवंशी! हे राजन् युधि-
ष्ठिर! हे महाभाग! इसप्रकार सांख्ययोग और तीर्थको जो हम से
पूंछतेहो वह सुनो ३९ हे विभो! फिर पुण्यकारी ब्राह्मणों से पूर्वसमय
कीर्त्तिको क्या कहना है पुण्यकर्मवाले मनुष्यों को प्रयागका जाना
श्रेष्ठ है ४० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥
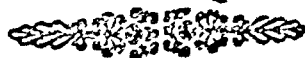
# इकतालीसवां अध्याय ॥

प्रयागजी के माहात्म्यका वर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे भगवन्! मार्कण्डेयजी पूर्व कल्पमें जैसे स्थित हे तिसके सुनने की हम इच्छा करते हैं मनुष्यों को कैसा तहां प्रयागका जाना है १ वहां मरनेवालों की क्यागति होती है और स्नान करनेवालों को क्याफल है और जे प्रयाग में बसते हैं तिनको क्या फल है यह सब हम से कहिये हमको बड़ा कौतूहल है २ तब मार्कण्डेय जी बोले कि हे वत्स! प्रयाग का जो फल है तिसको तुम से कहेंगे पूर्वसमय ब्राह्मण ऋषियों के कहते हुये मैंने सुना है ३ प्रयाग से प्रतिष्ठान से धर्मकी वासुकी ह्रद से कम्बल अश्वतर नाग बहुमूलिकनाग ४ ये तीनों लोक में प्रसिद्ध प्रजापति क्षेत्र हैं यहां स्नानकर स्वर्गको जाते हैं और जे वहां मरते हैं तिन का फिर जन्म नहीं होता ५ तहां मिलेहुये ब्रह्मादिक देवता रक्षा करते हैं और बहुत तीर्थ सबपाप नाश करनेवाले हैं ६ हे राजन्! सैकड़ों वर्षों से कहने में समर्थ नहीं हैं प्रयागका कीर्त्तन संक्षेप से कहते हैं ७ गङ्गाजी को एकसहस्र साठ धनुष रक्षा करते हैं यमुना जीको सदैव सातवाहनवाले सूर्य रक्षा करते हैं ८ प्रयाग को विशेष कर इन्द्र आप रक्षा करते हैं अत्यन्त सम्मत मण्डलको देवताओं समेत हरिजी रक्षा करते हैं ९ शूल हाथमें लियेहुये महादेवजी तिस वटकी नित्यही रक्षा करते हैं सब पाप हरनेवाले शुभस्थानकी देवजी रक्षा करते हैं १० हे मनुष्योंके स्वामी! अधर्मसे युक्त संसारमें तिस पदको नहीं जाता है जो तिसका थोड़ा पापहो ११ तो प्रयाग का स्मरण करने से सब नाश को प्राप्तहो तिस तीर्थ के दर्शन नाम का कीर्तन १२ और मट्टी लगानेसे मनुष्य पापसे छूटजाताहै हे राजाओं में श्रेष्ठ! पांच कुण्ड हैं जिनके बीच में गंगाजी हैं १३ प्रयाग में प्रवेश कियेहुये के पाप तिसी क्षणसे नाश होजाते हैं सहस्रों योजनों से जो मनुष्य गंगाजी को स्मरण करता है १४ वह पापकर्म करने वाला भी परमगति को प्राप्त होता है कीर्तन करने से पापों से छूट-

जाता है देखकर कल्याणों को देखता है १५ स्नान और पानकर सातकुल को पवित्र करता है सत्यवादी क्रोध जीतनेवाला अहिंसा में स्थित १६ धर्म के पीछे चलनेवाला तत्त्वका जाननेहारा गऊ और ब्राह्मण के हित में रत मनुष्य गंगा और यमुना के बीच में स्नानकर पापसे छूटजाता है १७ मन से चिंतित पुष्कल कामोंको अच्छीतरह से प्राप्त होता है फिर सब देवों से रक्षित प्रयाग को जाकर १८ ब्रह्मचारी महीनाभर बसे पितृ और देवोंको तर्पण करै तो जहां कहीं उत्पन्न हो वहां मनोवाञ्छित कामनाओं को प्राप्तहो १९ सूर्यकी कन्या यमुना देवी तीनोंलोक में प्रसिद्ध हैं जहां महाभागा यमुनानदी प्राप्त हैं २० हे युधिष्ठिर! तहां साक्षात् देव महादेवजी नित्यही सन्निहित हैं मनुष्यों से पुण्यकारी प्रयाग दुःख से प्राप्त होता है २१ हे राजाओं में श्रेष्ठ! देवता दानव गन्धर्व ऋषि सिद्ध और चारण तहां स्नानकर स्वर्गलोक में प्राप्त होते हैं २२॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१॥

## बयालीसवां अध्याय॥

प्रयाग जी का माहात्म्य वर्णन॥

मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! प्रयाग के माहात्म्य को फिर सुनिये जहांजाकर सब पापों से निस्सन्देह छूटजाता है १ पीड़ित दरिद्र निश्चितव्यवसायियों को प्रयागस्थान छोड़कर कोई नाश रहित नहीं है २ गंगा यमुना को प्राप्तहोकर जो प्राणोंको छोड़ताहै वह प्रकाशित सुवर्णके वर्ण समान दीप्तिवाले सूर्यके समान तेजवाले विमान में ३ गंधर्व और अप्सराओं के मध्यमें स्वर्ग में मनुष्य आनन्दकरताहै और मनोवाञ्छित कामनाओं को प्राप्तहोताहै यहश्रेष्ठऋषि कहते हैं ४ सर्वरत्नमय दिव्य अनेकप्रकार के ध्वजों से समाकुल श्रेष्ठ स्त्रियोंसे युक्त शुभलक्षणों से आनन्दकरै ५ गीत और बाजाओंके शब्दसे सोताहुआ जगपड़े जबतक जन्मका स्मरण न करै तबतक स्वर्गमें प्राप्तरहे जब कर्म्मक्षीणहो तब स्वर्ग से भ्रष्टहो वहांसे च्युतहो सुवर्ण और रत्नोंसे पूर्ण ऐश्वर्यवान् के कु-

लमें जन्महो ६।७तिस तीर्थको स्मरणकरै स्मरणहीसे तहां जावे देश वा वन विदेश वा घरमें ८ प्रयागको स्मरणकर जो प्राणोंको छोड़ताहै वह ब्रह्मलोक को प्राप्तहोता है यह ऋषि श्रेष्ठ कहतेहैं ९ और सब कामना के फलसेयुक्त जहां हिरण्मयी पृथ्वी है ऋषिमुनि सिद्ध जिस लोकमें जाते हैं १० सहस्रों स्त्रियों से आकुलरम्य गंगाजी के शुभ किनारे अपने किये हुये कर्म से ऋषियों के साथआनन्दकरै ११ सिद्धचारण गन्धर्व और देवताओं से स्वर्ग में पूजितहो तिस पीछे स्वर्ग से परिभ्रष्टहोकर जम्बूद्वीपका स्वामी हो फिर शुभकर्म्मों को फिर फिर चिन्तनाकरता हुआ गुणवान् और द्रव्यसंयुक्त निस्सन्देह होवे १२।१३ जो कर्म मन वाणी से सत्यधर्म में स्थितहो गंगा और यमुना के बीचमें दानदेताहै १४ सुवर्ण वा मणि मोती प्रतिग्रहधान्य अपने कार्य में वा पितृ कार्यमें वा देव पूजनमें देताहै १५ तो लेने वाले का वह तीर्थ निष्फल होजाता है जबतक तिसफल को भोग करताहै इसप्रकार तीर्थ और पुण्यकारी स्थानोंमें ग्रहण न करै १६ सब निमित्तोंमें मतवाला ब्राह्मण न हो जो सफेद और लाल रंग मिलीहुई गऊको प्रयाग में देताहै १७ गऊके सोने के सींग मढ़ाकर चांदी के खुर और कपड़ा कंठ में बांधकर दुग्धयुक्त गऊको प्रयाग में विधिपूर्वक वेद पाठी सज्जन सफेद कपड़े पहने शांत धर्म जानने वाले वेद के पारगामी को यमुना और गंगाजी के संगम में देताहै १८।१९ वस्त्रबड़े मोलवाले और अनेक प्रकारके रत्नोंको भी देताहै हे सत्तम! तो तिसगऊ की देहमें जितने रोमहोते हैं २० तितनेसहस्रवर्ष स्वर्गलोक में प्राप्तरहताहै जहां वह जन्मलेताहै तो वह गऊ भी वहांउत्पन्न होतीहै २१ तिसकर्मसे वह घोरनरकको नहीं देखताहै और उत्तर कुरुओंको प्राप्तहोकर नाशरहित कालतक आनन्दकरताहै २२ सैकड़ों सहस्रोंगउओंसे एक दुग्धयुक्त गऊको देवे एकही गऊ पुत्र स्त्री और भृत्योंको तारदेतीहै २३ तिससे सब दानोंमें गोदान श्रेष्ठहै दुर्गमघोर विषम महापाप से उत्पन्न में गऊही रक्षाकरती है तिससे ब्राह्मणको देनीयोग्यहै २४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

# तेंतालीसवां अध्याय॥

## प्रयाग जीका माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिरजीबोले कि हे मुनिजी! जैसे आपने प्रयागका माहात्म्य कहा तैसे तैसे सब पापों से निस्सन्देह हम छूटगये १ हे भगवन्! हे महामुनिजी! धर्मके निश्चय करनेवालों को किस विधिसे जाना चाहिये प्रयाग में जो विधिकही है तिस को हमसे कहिये २ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे वत्स! हे कुरुश्रेष्ठ! तुमसे तीर्थयात्रा विधि का क्रम कहते हैं जो देवसंयुक्त प्रयागमें बैलकी सवारी में जाता है तिसके फलको सुनिये गौवों के अत्यन्तघोर क्रोधसे घोर नरक में बसताहै ३। ४ और तिस देहधारीको पितर जलनहीं ग्रहण करते हैं जो पुत्र और बालकों को स्नान और पान कराता है ५ जैसे अपना तैसे सबको जानता है ब्राह्मणोंमें दान देताहै परन्तु ऐश्वर्य के लोभ व मोह से सवारी में जो मनुष्य जाता है ६ तिसका वह तीर्थ निष्फल होताहै तिससे सवारी को छोड़ देवे गंगा और यमुना के मध्य में जो कन्या को देताहै ७ ऋषियोंकी कहीहुई विधिसे यथाशक्ति द्रव्य भी देताहै वह तिसकर्म से यमराजजी और घोरनरकको नहीं देखता है ८ उत्तर कुरुओं में जाकर नाशरहित काल तकआनन्द करताहै धर्मात्मा और नीति संयुक्त पुत्र और स्त्रियोंको प्राप्तहोताहै ९ तहांपर यथाशक्ति दान देना चाहिये तो तिस तीर्थ के फलसे निस्सन्देह वृद्धिको प्राप्तहो १० हे राजाओंमें श्रेष्ठ! प्रलय पर्यन्त स्वर्ग में स्थित रहे जो मनुष्य बरगदकी जड़को आश्रितहोकर प्राणों को छोड़ताहै ११ वह सब लोकोंको अतिक्रमणकर शिव लोकको जाताहै तहां शिवजी में आश्रितबारहों सूर्य तपते हैं १२ वे सूर्य सब संसारको जलादेते हैं बरगदकी जड़ नहीं भस्महोतीहै चन्द्रमा सूर्य और पवननाश होजाते हैं जब एक समुद्र संसारहोता है १३ यहांहीं विष्णुजी सोते हैं वारंवार उत्पन्न [illegible] दानव गन्धर्व ऋषि सिद्ध और चारण १४ तिसतीर्थ [illegible]

हे राजाओं में श्रेष्ठ! गंगा यमुनाके संगममें

तहां जातेहैं १५ तहां ब्रह्मादिकदेव दिशा दिशाओं के स्वामी लोकपाल साध्य लोकों के सम्मत पितृ १६ तैसेही सनत्कुमार इत्यादिक परमर्षि अंगिरा इत्यादिक ब्रह्मर्षि १७ नाग सिद्ध गरुड़ पक्षी नदियां समुद्र पर्वत नाग विद्याधर १८ और ब्रह्माजीको आगे कर हरि भगवान् रहते हैं गंगा और यमुनाजी के मध्य में पृथ्वी का करिहांव कहाहै १९ हे भरतवंशी! हे राजाओं में श्रेष्ठ! तीनोंलोक में प्रसिद्ध प्रयागहै तीनोंलोक में तिससे अधिक पुण्यकारी नहींहै २० तिसतीर्थ के सुनने से नामके संकीर्तन से वा मिट्टी लगाने से मनुष्य पापसे छूटजाताहै २१ जो व्रतकरनेवाला तहां संगम में अभिषेक करताहै वह राजसूययज्ञ और अश्वमेधयज्ञ केसमान फल को प्राप्तहोताहै २२ हे तात! वेदकेवचन और लोककेवचनसे भी तुम्हारी प्रयागके जानेकी बुद्धि न बदलनी चाहिये २३ हे कुरुनन्दन! दशसहस्र तीर्थ और साठ कोटी कीर्तन से जिनकी यहांपर सांनिध्यहै २४ जो गतियोगयुक्त सज्जन उठेहुये बुद्धिमान् कीहै वह गति गंगा यमुनाके संगम में प्राणछोड़ने वाले कीहै २५ हे युधिष्ठिर! वे इसलोक में जहांजहां नहीं जीवते हैं जे तीनोंलोक में प्रसिद्ध प्रयागको नहीं प्राप्तहोतेहैं २६ इसप्रकार परमपद तिसतीर्थ प्रयाग को देखकर मनुष्य सब पापों से छूटजाताहै जैसे राहुसे चन्द्रमा छूटजाताहै २७ यमुनाकेदक्षिण किनारेकम्बल अश्वतर नागहैं तहां स्नान और पानकर मनुष्य सब पापों से छूटजाता है २८ तहां बुद्धिमान् मनुष्य महादेव जी के स्थान को जाकर दशबीतेहुये और दशआगे के पुरुषों को तारदेता है २९ मनुष्य अभिषेक कर अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहोता है और प्रलयपर्यन्त स्वर्गलोक को प्राप्तहोता है ३० हे भरतवंशी! गंगाजी के पूर्व किनारे तीनोंलोकमें प्रसिद्ध सामुद्र प्रतिष्ठान कूपहै ३१ ब्रह्मचारी क्रोध जीतने वाला जो तीन रात्रि वहांरहे तो सब पापोंसे विशुद्ध आत्माहोकर वह अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहो ३२ प्रतिष्ठान से उत्तर और गंगाजीके पूर्व तीनोंलोक में प्रसिद्ध हंसप्रपतननाम तीर्थ है ३३ हे भरतवंशी! तिसमें स्नानमात्रही से मनुष्य अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्त

होताहै और जबतक चन्द्रमा और सूर्य हैं तबतक स्वर्गमें रहताहै ३४ उर्वशी के पुलिनरम्य विपुल हंस पांडुर में जो मत्सरहीन मनुष्य जलसे पितरों को तर्पण करताहै ३५ हे मनुष्यों के स्वामी! वह साठसहस्र और साठसौ वर्ष पितरों समेत स्वर्गलोक को सेवन करताहै ३६ और तहां ऋषिगंधर्व किन्नरों से निरंतर पूजितहोताहै फिर जब कर्म क्षीण होतेहैं तब स्वर्गसे परिभ्रष्ट च्युत होता है ३७ हे पृथ्वी के पालनेवाले! तब उर्वशी के सदृश सैकड़ों कन्याओं को प्राप्तहोताहै और सौसहस्र गौवों का भोक्ता होताहै ३८ जंजीर और बिछियों के शब्दसे सोताहुआ भी जगपड़ताहै बहुत भोगोंको भोगकर फिर तिसतीर्थ को प्राप्तहोताहै ३९ नित्यही कुशासन को धारणकर नियत इन्द्रियों को जीतकर एककाल भोजन करै तो महीनेभर भोगका पतिहो ४० सुवर्ण से अलंकृत सौ स्त्रियों को प्राप्तहो समुद्र पर्यन्त पृथ्वी में महाभोग का पतिहो ४१ दशसहस्र गांवोंका भोग करनेवाला राजाहो धनधान्य से युक्त नित्यही दाताहो ४२ वह बहुत भोगोंको भोगकर फिर तिसतीर्थ को स्मरणकरै तिसपीछे जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी तिस रम्य बरगदके समीप ४३ योगयुक्त होकर बसे तो ब्रह्मज्ञान को प्राप्तहो कोटि तीर्थको प्राप्तहोकर जो प्राणों को त्यागदेवै ४४ वहकरोड़ सहस्रवर्ष स्वर्गलोक में प्राप्तरहे फिर कर्मक्षीण हुये स्वर्गसे परिभ्रष्टच्युत होकर ४५ सुवर्ण मणि और मोती से युक्तकुल में रूपवान् होवे फिर वासुकि के उत्तरसे भोगवतीको जाकर ४६ तहां दूसरा दशाश्वमेधकतीर्थ है वहां अभिषेक कर मनुष्य अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्तहो ४७ धनवान् रूपवान् चतुरदानी और धार्मिक होवे चारोंवेदों में जो पुण्यहै सत्यवादियों में जो फलहै ४८ अहिंसा में जो धर्महै वह वहांके जानेसे होताहै जहांतहां स्नानकी हुई गंगा कुरुक्षेत्र के समान हैं ४९ जहां सिंधु में प्राप्तहैं वहां कुरुक्षेत्र से दशगुणा हैं जहां महाभागा गंगा जी हैं जो कि बहुततीर्थ और तपस्वियों समेत हैं ५० तिसको सिद्धक्षेत्र जानना चाहिये इसमें विचारणा न करनी चाहिये पृथ्वी में मनुष्यों को तारती और पाताल में नागों को तारतीहैं ५१ स्वर्ग में देवों को तारतीहैं तिससे गंगा

जी त्रिपथा कहाईं तिसदेह धारीके जितने हाड़ गंगाजी में स्थित रहते हैं ५२ तितने सहस्र वर्ष स्वर्गलोक में प्राप्तहोताहै तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ हैं नदियों में उत्तमनदी हैं ५३ महा पापी भी सब प्राणियोंको मोक्षके देनेवालीहैं गंगाजी सब जगह सुलभहैं तीनस्थानों में दुर्लभहैं ५४ गंगाद्वार प्रयाग और गंगासागर संगम में तहां स्नानकर स्वर्ग को जाते हैं और जे मरतेहैं उनका फिर जन्म नहीं होताहै ५५ गतिके ढूंढ़नेवाले पापसे उपहत चित्तवाले सब प्राणियों को गंगाजी के समान गति नहींहै ५६ जो पवित्रोंका पवित्र मंगलों का मंगल महादेवजी के शिरसे भ्रष्ट सब पाप हरने वाली कल्याण कारिणीहैं ५७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्येत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

# चवालीसवां अध्याय ॥

## प्रयागजीका माहात्म्य वर्णन ॥

मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! प्रयागजी के माहात्म्यको फिर सुनिये जिसको सुनकर सब पापोंसे निस्संदेह छूटजाताहै १ गंगाजी के उत्तर किनारे मानसनाम तीर्थहै वहां तीनरात्रि वसकर सब कामनाओं को प्राप्त होताहै २ गऊ पृथ्वी और सोना दान से मनुष्य जो फल प्राप्त करताहै इसीफल को वह मनुष्य पाताहै जो तिस तीर्थ को फिर स्मरणकरै ३ कामना रहित वा कामना सहित जो गंगाजी के समीप मरता है वह मरकर स्वर्ग में जाता है और नरक को नहीं देखता है ४ अप्सरा गणोंके गीतों से सोता हुआ जगपड़ता है और हंस सारसयुक्त विमानसे वह जाता है ५ हे राजाओं में श्रेष्ठ! छःसहस्र वर्ष स्वर्ग भोगकरता है फिर क्षीण कर्महोने पर स्वर्ग से परिभ्रष्ट च्युत होता है ६ तो सुवर्णमणि और मोती से युक्त महाकुल में उत्पन्न होताहै साठसहस्र तीर्थ औरसाठ सौ तीर्थ ७ माघमहीने में गंगा यमुना के संगम में जातेहैं सौसहस्र गौओं के अच्छे प्रकार देनेसे जो फलहै ८ वह प्रयागमें तीन दिन

माघमहीने में स्नान करने से फलहोता है जो गंगा और यमुनाके बीच में पंचाग्नि तापताहै ९ वह पांच इन्द्रियसंयुक्त हीन अंगरहित रोगहीन होताहै और तिसदेह धारीकी देहमें जितने रोमहोते हैं १० तितने सहस्रवर्ष स्वर्गलोक में रहताहै फिर स्वर्ग से परिभ्रष्ट होकर जम्बूद्वीपका स्वामी होताहै ११ वह मनुष्य बहुत भोगों को भोगकर तिसतीर्थ को सेवनकरता है जो लोक में प्रसिद्ध संगम में जलमें प्रवेशकरताहै १२ वहराहुसे ग्रसेहुये चन्द्रमाकी नाईं सब पापों से छूटजाताहै चंद्रलोक को प्राप्त होता है और चन्द्रमा समेत आनन्द करताहै १३ ऋषि और गंधर्वों से सेवित साठसहस्र और साठसौ वर्ष स्वर्गलोकमें प्राप्तरहताहै १४ हे राजाओंमें श्रेष्ठ! स्वर्गसे परिभ्रष्टहोकर ऐश्वर्य युक्तकुलमें उत्पन्नहोताहै जो मनुष्य नीचे को शिर और ऊपर पांवकर ज्वालापीता है १५ वह सौसहस्र वर्ष स्वर्गलोकमें प्राप्तहोताहै वहांसे परिभ्रष्ट होकर अग्निहोत्र यज्ञ करने वाला मनुष्य होताहै १६ और बहुत भोगोंको भोगकर तिसतीर्थ को मनुष्य सेवनकरताहै जो देह को काटकर पक्षियोंको देताहै १७ पक्षियोंसे भोजन किये हुये तिसका जो फलहोताहै वह सुनो सौसहस्रवर्ष सोमलोकमें प्राप्तरहताहै १८ तदनन्तर स्वर्गसे परिभ्रष्ट धर्मात्मा राजाहोताहै जो कि गुणवान् रूपयुक्त विद्वान् और अत्यन्त प्रिय देहवाला होताहै १९ बहुत भोगोंको भोगकर फिर तिसतीर्थ को सेवन करताहै यमुना के उत्तर किनारे प्रयागके दक्षिण में २० ऋण प्रमोचन नाम श्रेष्ठ तीर्थ है वहां एकरात्रि बसकर सब ऋणों से छूटजाताहै २१ सूर्य लोकको प्राप्तहोताहै और सदैव ऋणरहित होताहै २२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्येचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

# पैंतालीसवां अध्याय ॥

यमुनाजी का माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर जी बोले कि हे मार्कण्डेयजी ! यह प्रयाग का माहात्म्य

जो तुमने कीर्तन किया है प्रयागके कीर्तन से यह हृदय शुद्धहुआहै हे भगवन् ! तहां कैसा अनाशकफल होताहै तिसको कहिये १ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् ! हे विभो ! प्रयाग में अनाशक फल को सुनिये श्रद्धायुक्त बुद्धिमान् पुरुष जैसे फलको प्राप्त होता है २ हीनांग रहित रोगहीन और पांच इन्द्रियसे युक्त पदपद में जातेहुये तिसको अश्वमेधयज्ञ का फलहोता है ३ हे राजन् ! दश पहले के और दश पीछे के कुलों को तारदेता है सब पापों से छूटजाता और परमपदको जाता है ४ तब युधिष्ठिर बोले कि हे धर्म जाननेवाले ! हे प्रभो! तुम महाभागहो हमसे दान कहिये जिस में थोड़े प्रधानसे बहुत धर्मोंको प्राप्त होवे ५ इसलोक में अश्वमेधयज्ञ बहुत सुकृतों से प्राप्त होतीहै इस हमारे संशयको कहिये हमारे बड़ाकौतूहल है ६ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे महावीर ! हे राजन् ! सुनिये जो पूर्वसमय में ब्रह्माजीने ऋषियों के समीप में कहाथा तिसको मैंने सुनाथा ७ पांच योजन विस्तृत प्रयाग का मण्डल है तिसके तिस भूमिमें प्रवेश करते हुये पदपद में अश्वमेधयज्ञ का फल होताहै ८ मनुष्य सात व्यतीत और चौदह भविष्यपुरुषों को सबको तार देताहै जो प्राणों को वहां छोड़ता है ९ हे राजाओं में श्रेष्ठ ! ऐसा जानकर सदैव श्रद्धामें परायण होवे श्रद्धारहित पापसे उपहत चित्तवाले पुरुष देवों के रचेहुये तिस स्थानप्रयाग को नहीं प्राप्त होते हैं १० तब युधिष्ठिर बोले कि हे महामुनिजी ! स्नेह से वा द्रव्य के लोभसे जे कामके वश में प्राप्त हैं तिन को तीर्थ का फल कैसा और कैसे पुण्य को प्राप्तहोते हैं ११ सब भांड़ों के बेचने और कार्य अकार्य को न जानते हुये तिस पुरुषकी प्रयाग में क्या गति होती है इसको कहिये १२ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् ! हे राजाओं में श्रेष्ठ ! सब पाप नाश करनेवाले महागुह्य को सुनिये नियतेन्द्रिय प्रयाग में महीने भर बसते हुये १३ सब पापों से छूटजाता है जैसे ब्रह्माजी ने कहा है पवित्र प्रयत हिंसारहित और श्रद्धायुक्त १४ सब पापों से छूटजाता है और वह परमपद को जाता है विश्राम-

घात करनेवालोंका प्रयाग में जो फल होता है तिसको सुनिये १५ त्रिकाल स्नान करै भिक्षाको भोजन करै तो प्रयाग से निस्सन्देह तीन महीनों में पापसे छूटजावे १६ जिसकी इसलोक में अज्ञान से तीर्थ यात्रादिक होती है वह सब कामनाओं से समृद्ध स्वर्गलोक में प्राप्त होता है १७ और नित्यही धन धान्य से युक्त स्थानको प्राप्त होता है इसप्रकार ज्ञान से पूर्ण सदैव भोगयुक्त होता है १८ हे तत्त्व के जाननेवाले! तिसने नरक से पितर और प्रपितामह तार दिये हैं धर्म के अनुसार में वारंवार पूँछते हुये तुमसे तुम्हारे प्रिय के लिये यह सनातन गुह्य कहा १९ तब युधिष्ठिर बोले कि हे धर्मात्मन्! इस समय मेरा जन्म सफल हुआ इसी समय मेराकुल सफल हुआ आपके दर्शन से मैं इस समय प्रसन्न और अनुगृहीत हूं आपके दर्शनही से सब पापों से मैं छूटगया हूं २० तब मार्कण्डेय जी बोले कि बड़ी भाग्य है कि तुम्हारा जन्म सफल हुआ तुम्हारी बड़ी भाग्य है कि कुलतार दिया कीर्तन से पुण्य बढ़ता है सुनने से पापनाश होता है २१ तब युधिष्ठिर बोले कि हे महामुनिजी! यमुनाजी में क्या पुण्य और क्या फल है जैसा देखा और जैसा सुनाहो यह सब मुझसे कहिये २२ तब मार्कण्डेयजी बोले कि सूर्यकी पुत्री देवी तीनों लोक में प्रसिद्ध महाभागा यमुनानदी जहां प्राप्त हैं २३ जिससे गंगाजी निकली हैं तिसी से यमुनाजी भी आई हैं सहस्रों योजनों में कीर्तन से पाप नाश करनेवाली हैं २४ हे युधिष्ठिर! तहां यमुनाजी में स्नान पानकर कीर्तन से पुण्य को प्राप्त होता है देखने से कल्याणों को देखता है २५ स्नान और पान करने से सातकुल को पवित्र करती हैं जो तहांपर प्राणों को त्यागता है वह परमगति को प्राप्त होताहै २६ यमुनाजी के दक्षिण किनारे अग्नितीर्थ प्रसिद्ध है पश्चिम में धर्मराजका तीर्थ हरवर है २७ तहां स्नानकर स्वर्ग को जाते हैं और जो मरते हैं तिनका फिर जन्म नहीं होता है इस प्रकार सहस्रतीर्थ यमुनाजी के दक्षिण किनारे हैं २८ उत्तर में महात्मा सूर्यजी के विरज नाम तीर्थको कहते हैं जहां इन्द्रसहित देवता २९ नित्यकाल सन्ध्या को करते हैं देवता और विद्वान् मनुष्य

तिसतीर्थ को सेवन करते हैं ३० श्रद्धा में परायण होकर तीर्थका स्नान करो और बहुत तीर्थ सब पाप हरनेवाले शुभ हैं ३१ तिन में स्नानकर स्वर्गको जाते हैं और जो मरते हैं तिनका फिर जन्म नहीं होता है गंगा और यमुना दोनों तुल्य फल देनेवाली हैं ३२ केवल श्रेष्ठ भावसे गंगा सबओर पूजित हैं हेयुधिष्ठिर! इसप्रकार स्वर्ग-तीर्थका स्नान करो ३३ जीवन पर्यन्त के पाप तिसी क्षणसे नाश होजाते हैं जो सबेरे उठकर इसको पढ़ता वा सुनता है ३४ वह सब पापों से छूट जाता है और स्वर्गलोक को जाता है ३५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेयमुनामाहात्म्ये पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

# छियालीसवां अध्याय ॥

प्रयागजी का माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे मार्कण्डेयजी! मैंने ब्रह्माजीकेकहेहुये पुराण में पुण्य सम्मित तीर्थों के सहस्र सैकड़ा और लाख तीर्थ सुने हैं १ सब पुण्यकारी और पवित्रहैं परमगति कहाती है पृथ्वीमें पुण्यकारी नैमिषहै अंतरिक्षमें पुष्करहै २ लोकोंका प्रयाग और कुरुक्षेत्र श्रेष्ठ है सबको छोड़कर कैसे एक की प्रशंसाकरतेहो ३ यह प्रमाण रहित श्रद्धारहित अत्युत्तमहै परमगति दिव्य भोग यथेप्सितहै ४ किस-लिये थोड़े योग से बहुत धर्म की प्रशंसाकरतेहो इस मेरे जैसे देखे और जैसे सुने संशयको कहिये ५ तब मार्कण्डेयजी बोले कि श्रद्धा युक्त पापसे उपहत चित्तवाले मनुष्यको श्रद्धा रहित नहीं कहने के योग्यहै वह प्रत्यक्षहोताहै ६ श्रद्धा रहित अपवित्र दुष्ट बुद्धि और मंगलहीन ये सब पापी हैं तिससे इसमेरे कहे हुये ७ जैसे देखे और जैसे सुनेहुये प्रयागमाहात्म्यको सुनिये प्रत्यक्ष परोक्ष जैसे और से हो-ताहै ८ जैसे पूर्वसमय और मैंने देखा और जैसे सुनाहै शास्त्र प्रमाण कर आत्माका योग पूजितहै ९ और तहां क्लेशको प्राप्त योगको नहीं प्राप्त होताहै सहस्रों जन्मोंसे मनुष्योंको योग प्राप्त होताहै १० जैसे सहस्रयोगसे मनुष्योंसे योग प्राप्तहोताहै जो सत्र रत्न ब्राह्मणोंको देना

है ११ तिस दियेहुये दानसे मनुष्यों से योग प्राप्तहोताहै प्रयागमें मरेहुयेको यह सब होताहै और तरह नहीं होताहै १२ हे भरतवंशी! श्रद्धायुक्तों में प्रधान हेतुको कहते हैं जैसे सब प्राणियों में सब जगह दिखाई १३ ब्रह्मही देताहै और नहीं कुछ दिखाता जिसके कहने को यह कहते हैं जैसे सब प्राणियों में सब जगह ब्रह्मपूजा जाता है १४ इसीप्रकार सब लोकों में पण्डितों से प्रयाग पूजित होता है हे युधिष्ठिर! यह तीर्थोंका राजा सत्यही पूजितहोताहै १५ ब्रह्मभी उत्तम प्रयाग तीर्थको नित्यही स्मरण करताहै प्रयागको पाकर और नहीं कुछ इच्छा करताहै १६ हे युधिष्ठिर! देव भावको पाकर कौन मनुष्य भावकी इच्छा करताहै इसी अनुमान से तुमजानो १७ जैसे पुण्य वा अपुण्य तैसे मैंने कहा तब युधिष्ठिर बोले कि जो आपने कहा वह मैंने सुना वारंवार मैं विस्मितहूं १८ कैसे योग कर्म से स्वर्गलोक मिलता है तब तिसकर्मों के फल भोगों और पृथ्वीको प्राप्तहोताहै १९ तिनकर्मों को पूंछते हैं जिनसे फिर पृथ्वी को प्राप्तहोताहै तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे महाबाहो! हे राजन्! यथोक्त कर्म से पृथ्वी २० गऊ अग्नि ब्राह्मण शास्त्र सोना जल स्त्रियां माता और पिताकी जो निन्दा करताहै २१ इनका ऊर्ध्वग- मन नहीं होता है इसप्रकार प्रजापति कहते हैं परम दुर्लभ स्थान इसीप्रकार अच्छे योगसे प्राप्तहोताहै २२ जो पाप करनेवाले मनु- ष्यहैं वे घोर नरकको जाते हैं हाथी घोड़ा गऊ बैल मणि मोती आदि और सोने को २३ जो परोक्ष हरता और पीछे से दानदेता है वे स्वर्गको नहीं जाते हैं जहां देनेवाले भोगी पुरुषजाते हैं २४ इस कर्म से युक्त अधम नरकमें पचते हैं हे युधिष्ठिर! इसी प्रकार योग धर्म दाता २५ जैसे सत्य वा असत्य है नहीं है यह जो फल नि- रुक्तहै तिसको कहते हैं जैसे जिसको आपही प्राप्तहोताहै २६॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्येषड्चत्वा रिंशोऽध्यायः ४६॥

---

# सैंतालीसवां अध्याय ॥

प्रयागजीका माहात्म्य वर्णन ॥

मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर ! प्रयाग के माहात्म्य
को फिर सुनिये नैमिष पुष्कर गोतीर्थ सिंधु सागर १ कुरुक्षेत्र गया
गंगासागर ये और बहुत पुण्यकारी पर्वत २ और तीर्थ दश सहस्र
और तीनसौ कोटी प्रयागमें नित्यही स्थितहैं इस प्रकार बुद्धिमान्
कहते हैं ३ तीन अग्नि के कुण्डहैं जिनके बीच में प्रयागसे निकली
सवतीर्थोंको आगे किये गंगाजी हैं तीनों लोकमें प्रसिद्ध सूर्यकी पुत्री
लोक भाविनी देवी यमुनाजी गंगाजी के साथ स्थित हैं ४।५ हे
राजाओं में श्रेष्ठ ! गंगा और यमुनाजीके बीच में प्रयाग पृथ्वीका
हरिहांवहै उसकी सोलहवीं कलाको और नहीं पहुंच सक्ते ६ वायुजी
साढ़ेतीनकरोड़ तीर्थकहतेहैं ये सब स्वर्ग पृथ्वी और आकाशमें हैं और
गंगाजीमें भी सबहैं ७ प्रयागमें सब स्थितहैं कंबल और अश्वतर
ये दोनों और भोगवती जो प्रजापतिकी वेदि है ८ हे युधिष्ठिर !
तहां पर मूर्तिधारे देवता यज्ञ और तपस्वी ऋषि प्रयागको पूजते हैं
९ हे भरतवंशी ! बहुत धनीराजा यज्ञोंसे देवताओंको पूजनकरतेहैं
तिससे अधिक पुण्य युक्त तीनोंलोकमें नहींहै १० हेराजन्! प्रभाव
से सबतीर्थों से अधिक है तीन करोड़ दश सहस्र तीर्थ हैं ११ जहां
महाभागा गंगाजी हैं वह देश तपोवन और गंगाजीके तीर आश्रित
सिद्धक्षेत्र जानने योग्यहै १२ यह सत्यहै ब्राह्मणों साधुओं वा पुत्र
मित्रों शिष्य वा पीछे चलनेवाले के कानमें सुनादेवे १३ यह धन
देनेवाला स्वर्गदेनेहारा सेवन करने योग्य शुभ पुण्य सुन्दर पवित्र
उत्तमधर्म १४ महर्षियोंका यह गुह्य सब पापनाशकरने वालाहै ब्राह्मण
पढ़ ध्यानकरे तो निर्मलताको प्राप्तहो १५ जो सदैव पवित्र इस
पुण्यकारी तीर्थको नित्यही सुने यह जातिस्मरत्वको प्राप्तहो और
स्वर्गमें आनन्दकरै १६ वे तीर्थ अच्छे अर्थके देखनेवाले सज्जनोंसे
प्राप्तहोसक्तेहैं हे कुरुवंशी ! तीर्थोंमें स्नानकरो वक्र बुद्धि न हो १७
हेराजन्! तुमने अच्छे प्रकारसे पूछा और मैंने कहा सब पितर और

पितामह तुमने तार दिये १८ हे युधिष्ठिर! वे सब प्रयागकी सो-
लहवीं कलाको नहीं पहुंचते इस प्रकार ज्ञान योग तीर्थ १९ बहुत
क्लेशसे मिलते हैं फिर परमगतिको जाते हैं मनुष्य प्रयागके स्मरण
से स्वर्गलोकको जाताहै २० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्येसप्त
चत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

# अड़तालीसवां अध्याय ॥

प्रयागजीका माहात्म्यवर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे मार्कण्डेयजी! प्रयागकी सब कथा आपने
कही इसीप्रकार हम से सब कहिये जैसे हमको तारदीजिये १ तब
मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! सब इस संसारको कहतेहैं
सुनिये ब्रह्मा विष्णु और देवताओंके प्रभु नाश रहित शिवजीहैं २
ब्रह्मा स्थावर जंगम सब प्राणियों को उत्पन्न करते हैं तिन सब प्र-
जाओं को विष्णुजी पालन करते हैं ३ तिस सब संसार को कल्पके
अन्त में शिवजी संहार करते हैं न देते न प्राप्त होते न कभी नाश
होते ४ सब प्राणियों के ईश्वर हैं जो देखता है वही देखता है इस
समय में प्रतिष्ठान से उत्तर ब्रह्म स्थित है ५ महेश्वर परमेश्वर वट
में होकर स्थित हैं तब देवता गन्धर्व सिद्ध परमर्षि ६ नित्यही पाप
कर्म में परायणों की रक्षा करते हैं और जो और स्थित हैं वे परम-
गतिको नहीं प्राप्त होते हैं ७ तब युधिष्ठिर जी बोले कि हम से
जैसा तत्त्व है वैसा कहो जैसे इनका सुना हुआ स्थित रहे किसकारण
से लोक सम्मत स्थित रहते हैं ८ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे
युधिष्ठिर प्रयाग में ये ब्रह्मा विष्णु और महादेवजी बसते हैं कारण
को कहते हैं तत्त्वको सुनिये ९ पांच योजन विस्तृत प्रयागका मण्ड-
ल है रक्षा के लिये पापकर्म के निवारण करनेवाले स्थित हैं १०
सहांपर थोड़ा पाप नरक में गिरादेता है प्रयाग में इसी प्रकार ब्रह्मा
विष्णु महादेवजी ११ पृथ्वीतलमें सातोंद्वीप समुद्र और पर्वत धारण
किये प्रलय पर्यन्त स्थित रहते हैं १२ हे युधिष्ठिर! जो और बहुत

हैं वे सब स्थित रहते हैं पृथ्वी का स्थान तीन देवताओं से रचा हुआहै १३ प्रजापतिका यहक्षेत्र प्रयाग प्रसिद्धहै यह पुण्यकारी और पवित्र प्रयाग है १४ हे राजाओं में श्रेष्ठ ! भाइयोंसमेत होकर अपना राज्य कीजिये १५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्ये ऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

# उनचासवां अध्याय ॥

प्रयागजी का माहात्म्य वर्णन ॥

सूतजी बोले कि हे शौनकादिक ऋषियो ! धर्म में निश्चय करने वाले भाइयों समेत सब पाण्डव ब्राह्मणों के नमस्कार कर गुरु देवों को प्रसन्न करते भये १ तहांपर क्षणमात्र में वासुदेवजी आते भये तब सब पाण्डवों ने लक्ष्मी के पतिकी पूजाकी २ कृष्ण समेत सब महात्माओं ने फिर धर्मपुत्र युधिष्ठिर को अपने राज्य में अभिषेक किया ३ इसी अन्तर में महात्मा मार्कण्डेयजी क्षणमात्र में स्वस्ति कहकर युधिष्ठिर के स्थान में प्राप्त हुये ४ भाइयों समेत धर्मात्मा धर्मपुत्र युधिष्ठिर जी महादान देतेभये ५ जो सवेरे उठकर इसको पढ़ता व सुनता है वह सब पापों से छूटजाता और विष्णुलोक को जाताहै ६ वासुदेवजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर ! हमारे वचन करनेयोग्य हैं तुम्हारे स्नेह से हम कहते हैं ज्वर रहित हो हम समेत प्रयाग में यज्ञ में रत होकर नित्यही प्रयाग को स्मरण करो तो आपही शाश्वत स्वर्गलोक को प्राप्त होगे ७ । ८ जो मनुष्य प्रयाग में जाता वा बसता है वह सब पापों से विशुद्धआत्मा होकर स्वर्गलोक को जाता है ९ जो दान नहीं लेता सन्तुष्ट नियत पवित्र १० और अहंकार से निवृत्त है वह तीर्थ के फलको भोगकरता है हे राजेन्द्र ! क्रोध रहित सत्यबोलनेवाला दृढ़व्रत करनेहारा प्राणियों में आत्मा के समान समझनेवाला तीर्थ के फलको भोगकरता है ११ हे पृथ्वी के स्वामी ! देवता और ऋषियों ने यथाक्रम यज्ञ कहे हैं वे यज्ञ दरिद्र से नहीं प्राप्त होसक्ते हैं १२ यज्ञ में अनेकप्रकार

की बहुत सामग्री लगती हैं और अनेक प्रकार के द्रव्ययुक्त धन-वान् मनुष्यों से कहीं प्राप्त होसक्ता है १३ हे मनुष्यों के स्वामी! जो दरिद्र पण्डित से प्राप्त होसक्ता है पुण्यकारी यज्ञ के फलको पाता है तिसको जानिये १४ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! ऋषियों का यह परमगुह्य है कि तीर्थ के जानेका पुण्य यज्ञों से भी श्रेष्ठ है १५ हे मनुष्यों के स्वामी! तीसकरोड़ दशसहस्र तीर्थ माघमास में गंगाजी में जाते हैं १६ हे महाराज! हे राजाओं में श्रेष्ठ! अकण्टकराज्य भोगकर स्वस्थहो फिर विशेषकर पूजन करते हुये तीर्थको देखोगे १७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्येनाम ऊनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

# पचासवां अध्याय॥

विष्णुभक्ति की प्रशंसा॥

ऋषिबोले कि हे महा बुद्धियुक्त सूतजी! जो कुछ पूंछा वह सब आपने कहा इस समय में भी पूंछते हैं एकको कहिये १ निश्चय इन तीर्थों के सेवनसे जो फल मिलताहै निश्चय सबोंको एकमें कर कर्म किससे मिलताहै २ हे सब जानने वाले! कर्म इसी प्रकार जो वर्तमानहै यह सब कहिये तब सूतजी बोले कि हे महाभाग ब्राह्मणो! अनेकप्रकारके कर्म योग ब्राह्मणादिवर्णों के निश्चयकर कहे गये तहां एक श्रेष्ठहै जिसने मन वचन वाणी से भगवान् की भक्तिकी है ३।४ तिसने जीता तिसने जीता इसमें सन्देह नहीं है जीतही लिया सब देवोंके ईश्वरोंके ईश्वर भगवान् आराधन करने के योग्य हैं ५ हरिनाम महा मंत्रों से पापरूपी पिशाचनाश होजाते हैं निर्मल अन्तःकरणवाले एकबार भी भगवान् की प्रदक्षिणाकर ६ सबतीर्थ के स्नानको प्राप्तहोते हैं इसमें सन्देह नहीं है भगवान् की मूर्तिदे-खकर सबतीर्थ के फलको प्राप्तहोताहै ७ श्रेष्ठ विष्णुनाम जपकर सब मंत्रके फलको प्राप्तहोताहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो! विष्णुजी के प्रसाद तुलसी को सूंघकर ८ प्रचण्ड विकराल यमराजजी के मुखको नहीं देखताहै एकबार भी कृष्णजीका प्रणाम करनेवाला माताका दूध

नहींपीताहै ९ भगवान्‌के चरण में जिनका मनहै तिनके नित्यही नमस्कार हैं पुल्कस वा चाण्डाल वा और म्लेच्छजाति १० भगवान् के चरणों के एक सेवक महाभागवे भी वन्दना करनेकेयोग्यहैं फिर पुण्यात्मा भक्त ब्राह्मणराजर्षियों को क्या कहनाहै ११ भगवान् में भक्तिकर गर्भवासको नहीं देखताहै भगवान् का नाम करनेवाला मनुष्य भगवान् के आगे नाचकर ऊंचे स्वरसे भगवान् का नाम लेताहै १२ वह गंगादिकके जलकी नाईं लोक को पवित्र करता है तिसके भक्तिसे दर्शन स्पर्शन और बोलने से १३ ब्रह्महत्यादिक पापों से निस्सन्देह छूटजाताहै भगवान्‌का नाम करनेवाला मनुष्य ऊंचे स्वरसे नामले और भगवान् की प्रदक्षिणाकरै १४ करताल आदिक लेकर अच्छे स्वरसे उनको बजावे तो उसने ब्रह्महत्यादिक पापको नाशकरदिया १५ हरिभक्तिकी कथा को कहकर आख्यायिकाको जो सुनताहै तिसके दर्शन से मनुष्य पवित्रहोता है १६ हे मुनि श्रेष्ठो ! हे महर्षियो ! फिर तिसके पापोंकी क्या शंकाहै कृष्णजी का नाम तीर्थोंमें श्रेष्ठ तीर्थ है १७ जिन्होंने कृष्णजी का नाम ग्रहण कियाहै वे पृथ्वीको पवित्र करते हैं हे मुनि श्रेष्ठो ! तिससे पुण्य श्रेष्ठ नहीं है १८ विष्णुजी के प्रसाद निर्माल्यको भोजनकर मस्तक में धारणकर मनुष्य यमराजके शोकका नाश करनेवाला विष्णुही होताहै १९ हरिजी निस्सन्देह पूजन और नमस्कार करने के योग्यहैं जे अव्यक्त महा विष्णु वा महेश्वर देवको २० एक भाव से देखते हैं उनकी फिर उत्पत्ति नहींहोती है तिससे आदि और नाश रहित विष्णुजी और नाश रहित आत्मा २१ और हरिजीको एकही देखो और तैसेही पूजनकरो जे हरिजी वा और देवताओं को समान देखते हैं २२ वे घोर नरकों को जाते हैं तिनको हरिजी नहीं गिनते हैं मूर्ख वा पण्डित ब्राह्मण केशवजी के दोनों प्यारे हैं २३ प्रभु नारायणजी आपही चाण्डाल को भी मुक्त करदेते हैं पापकी राशि का अग्निनारायण से श्रेष्ठ नहीं है २४ घोर पाप भी कर कृष्णजी के नाम से छूटजाताहै आपही नारायण देव संसार के गुरु अपने नाम में आत्मा से अधिक शक्ति को स्थापित करतेभये हैं यहां जे

परिश्रम थोड़े के दर्शन से विवाद करते हैं २५। २६ वा फलों के गौरव से वे बहुत नरक को जाते हैं तिससे हरिजी में भक्तिमान् और हरिजी के नाम में परायण होवे २७ प्रभुजी पूजाकरनेवाले की पीठसे रक्षाकरते हैं नामलेनेवालेकी छाती से रक्षाकरते हैं पाप रूपी पर्वत के विदारण करने में हरिजी का नाम महावज्र है २८ तिसके चरण सफल हैं तिसी के अर्थ चलते हैं जो पूजाकरने वाले हाथ हैं वही हाथ हैं २९ शिर वही है जो हरिजी में नम्रहै वही जीभ है जो हरिजी की स्तुति करती है सोई मनहै जो भागवान् के चरणों के पीछे चलताहै ३० वही रोम कहाते हैं जो हरिजी के नाम में खड़े होजाते हैं और भगवान् के प्रसंग से नेत्रों में जलकरते हैं ३१ आश्चर्य है कि मनुष्य अत्यन्त दैवके दोषसे वंचितहैं मुक्तिके देने वाले को नामके उच्चारण मात्र से निश्चय नहीं भजते हैं ३२ वे वंचित और स्त्रियोंके संग प्रसंगसे कलुष हैं जिनके कृष्णजीके शब्द कहने में रोम नहीं खड़े होते हैं ३३ वे मूर्ख अकृतात्मा पुत्रशोक आदिसे विह्वल बहुत आलापों से रोते हैं पर कृष्णजी के अक्षर का कीर्तन नहीं करते हैं ३४ इसलोक में जीभ पाकर भी कृष्णजी के नाम नहीं जपते हैं वे मुक्ति रूपी सीढ़ी पाकर निन्दा से गिरपड़ते हैं ३५ तिससे मनुष्य यत्नसे कर्मयोग से विष्णुजी को पूजे कर्म योग से पूजितहुये विष्णुजी प्रसन्नहोतेहैं और प्रकार नहीं ३६ तीर्थ से भी अधिक तीर्थ विष्णुजी का भजन कहाहै निश्चय सब तीर्थों के स्नान पान और अवगाहनों से ३७ जो फल मनुष्य पाता है वह फल कृष्णजी के सेवनसे पाताहै कर्मयोग से मनुष्य हरिजी को पूजते हैं वे मनुष्य धन्य हैं ३८ तिससे हे मुनियो! परम मंगल कृष्णजी को भजो ३९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेविष्णुभक्तिप्रशंसनंनाम पंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

# इक्यावनवां अध्याय ॥

## कर्मयोग का वर्णन ॥

ऋषिबोले कि हे महाभाग! हे कहनेवालों में श्रेष्ठ सूतजी! कर्म योग कैसाहै जिससे आराधित हरिप्रसन्नहोजाते हैं हमसे कहिये १ जिससे यह ईश भगवान् मोक्षकी इच्छा करनेवालों से आराधन करने योग्यहैं तिसको कहिये सब मनुष्यों का रक्षण धर्मका संग्रह है २ हे सूतजी! तिस कर्म योगको हमसे कहिये जो मूर्तिमयहै यह सुनने की इच्छा करनेवाले ब्राह्मण आपके आगे स्थितहैं ३ तब सूतजी बोले कि पूर्व्वसमय इसी प्रकार सत्यवती के पुत्र व्यासजी अग्निके सदृश ऋषियों से पूछेगये थे तब व्यासजी तिनसे कहते भये सो सुनो ४ व्यासजीबोले कि हे सब ऋषियो! सनातन कर्मयोग ब्राह्मणों के अत्यन्त फलके देनेवाले कहेहुये को सुनिये ५ जोकि शास्त्र सिद्ध सब ब्राह्मणार्थ प्रदर्शितहै ऋषियों के सुनतेहुये पहले प्रजापति मनुजी ने कहाहै ६ सब रोग हरनेवाला पुण्यकारी ऋषि समूहों से सेवितहै तुम सब एकाग्रचित्त होकर हमारे कहतेहुये सुनिये ७ उत्तम ब्राह्मण गर्भसे आठवें वा जन्मसे आठवें वर्षमें अपने सूत्रके कहेहुये विधानसे जनेऊकर वेदोंको पढ़े ८ दण्ड मेखलासूत्र कृष्णाजिन धारे मुनि भिक्षाका आहार करनेवाला गुरुका हितक-रने हारा गुरुजी का मुखदेखे ९ पूर्व्वसमय में ब्रह्माजी ने जनेऊ के लिये कपासरचा ब्राह्मणों को त्रिवृत्सूत्र और रेशमी वस्त्र रचा १० ब्राह्मण सदैव जनेऊ धारे और सदैव शिखाबांधे और प्रकार जो कर्म कियाजाताहै वह ठीक नहीं होताहै ११ अविकृत वस्त्र कपास वा कषाय धारणकरै उत्तम श्वेत डोरा पहने १२ उत्तरीय वस्त्र धारै शुभ काला मृगछाला वा गावय वा रुरुनामक हरिणोंकी छाल धारै १३ दहिना भुजा उठाकर बायें भुजा में नित्यही जनेऊ धारेरहे कंठ सज्जन में निवीत १४ बायां भुजा उठाकर दहिने में धारे यही प्रा-चीनावीत कहाता है पितृकर्म्म में युक्तकरै १५ अग्नि के स्थान में गोशाला में होममें तप्य में पढ़ने में नित्यही भोजन में ब्राह्मणों के

समीप में १६ गुरुओं की संध्याकी उपासना में साधुओं के संगम में नित्यही जनेऊ धारे यह सनातन विधि है १७ मौंजी त्रिवृतसमान मनोहर ब्राह्मणकी मेखलाकरै मौंजी मूंजके अभाव में कुशकी कहीगई है एक ग्रंथि वा तीन ग्रंथिबनावे १८ ब्राह्मण बांस और ढाकका दण्ड बालोंतक धारे वा यज्ञके कामवाले वृक्षका दंड सुन्दर व्रण रहित धारे १९ ब्राह्मण सायंकाल वा प्रातःकाल एकाग्रचित्त होकर संध्याकरै कामलोभ भय और मोहसे संध्या छोड़ने से पतित होताहै २० फिर प्रसन्नबुद्धि संध्या और सबेरे अग्निका कार्यकरै स्नानकर देवता ऋषि और पितृगणों को तर्पणकरै २१ पुष्प पत्र यव और जलसे देवताओं का पूजनकरै धर्म से नित्यही वृद्धों के नमस्कारकरै २२ तन्द्रादिक से वर्जित होकर उमर और आरोग्य की सिद्धि के लिये मैं हूं अपना नाम अच्छीतरह नम्रतापूर्वक नमस्कार में लेवे २३ तब ब्राह्मण नमस्कार में हे सौम्य! बड़ी उमर वाले हो यह वचनकहे इसनामके अन्त में आकार पहले का अक्षर प्लुत कहने योग्यहै २४ जो ब्राह्मण नमस्कार का अभिवादन नहीं जानताहै वह विद्वान् से नमस्कार करने योग्य नहीं है जैसे शूद्र तैसेही वहहै २५ व्यत्यस्त पाणिसे गुरुजी के चरण छूने चाहिये बायें से बायां और दहनेसे दहना छूना चाहिये २६ प्रयत होकर लौकिक वैदिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होकर गुरुजी के पहले नमस्कारकरै २७ जल भिक्षा पुष्प और समिधोंको न धारण करै इसप्रकार की और देवताके कर्मों में न धारणकरै २८ ब्राह्मण से मिलकर कुशल क्षत्रियसे अनामय वैश्य से क्षेम और शूद्र से आरोग्य पूंछे २९ पढ़ानेवाला पिता ज्येष्ठ भाई भयसे रक्षाकरने वाला मामा श्वशुर नाना बाबा ३० वर्ण में श्रेष्ठ चचा ये पुरुष के गुरुहैं माता नानी गुरु की स्त्री पिता और माता के भाई ३१ सास आजी ज्येठी और दूधपिलानेवाली स्त्री के गुरु हैं हे ब्राह्मणो! यह माता और पितासे गुरु वर्ग जानने योग्यहै ३२ मन वचन देह और कर्मों से इनका अनुवर्तन करै गुरुओंको देखकर उठकर हाथ जोड़कर नमस्कार करै ३३ इनके साथ बैठे नहीं आत्मकारण से

विवाद नहींकरै जीवितके लिये भी द्वेषसे गुरुओं से नहीं बोले ३४ और गुणोंसे युक्त भी गुरुद्वेषी नरक में गिरता है सब गुरुओं में पांच विशेषकर पूज्य हैं ३५ तिनमें पहले की तीन श्रेष्ठहैं तिनमें माता अत्यन्त पूजित है जो पालन करता है जिस माताने उत्पन्न कियाहै जिनने विद्या उपदेशकरी है ३६ ज्येठा भाई और स्वामी ये पांच गुरुहैं आत्माके सब यत्नसे फिर प्राणत्याग से भी ३७ कल्याण की इच्छा करनेवाले से ये पांच विशेषकर पूजने चाहिये जबतक पिता और माता ये दोनों विकाररहितहों ३८ तबतक सब को छोड़कर पुत्र तिनमें परायणहो यदि पुत्रके गुणोंसे पिता और माता अत्यन्त प्रसन्नहों ३९ तो तिस कर्म से पुत्र सब धर्मों को प्राप्तहो माताके समान देवता नहींहै पिताके समान गुरु नहींहै४० तिनका प्रत्युपकार कभी नहींहै कर्म मन वाणीसे तिनका नित्यही प्रियकरै ४१ तिनकी विना आज्ञाके और धर्म न करै मुक्ति फल तथा नित्यनैमित्तिकको वर्जितकरै ४२ यह धर्मसार कहाहै मरनेपर अनन्त फलका देनेवालाहै वक्ताकी अच्छेप्रकार आराधनाकर तिस की आज्ञासे विसृष्ट ४३ शिष्य विद्याके फलको भोग करता है मरने पर स्वर्गको प्राप्त होताहै जो मूर्ख पिताके समान ज्येष्ठ भाईहै तिसका अपमान करता है ४४ तो तिस दोषसे मरकर घोर नरकको जाता है पुरुषों को निसृष्टमार्ग से स्वामी सदैव पूज्य है ४५ निश्चयकर इस माताके लोकमें उपकार से गौरवता है मामा चचा श्वशुर ऋत्विज गुरु ४६ इनको ये हमीं हैं यह कहे उठकर नमस्कारकरै दीक्षा युक्त वृद्धभीहो उसको गुरुजी नाम लेकर नहीं बुलाने चाहिये ४७ धर्मका जाननेवाला भो और भवत्पूर्वक इनसे बोले लक्ष्मीकी कामनावाले ब्राह्मण और क्षत्रियादिकों से आदरसमेत सदैव गुरु अभिवादन पूजन और शिरसे नमस्कार करने योग्य हैं ब्राह्मण से ज्ञान कर्म गुणोंसे युक्त यद्यपि बहुत कथादिक सुननेवाले भी क्षत्रियादिक कभी नमस्कार करने के योग्य नहीं हैं ब्राह्मण सब वर्णोंका कल्याण करता है यह श्रुतिहै ४८।५० सवर्ण से सवर्णोंको नमस्कार करना चाहिये द्विजाति वर्णों के अग्नि और ब्राह्मण गुरुहैं ५१ स्त्रियों का

एक पतिही गुरुहै सब जगह अभ्यागत गुरुहै विद्या कर्म उमर बन्धु और पांचवां द्रव्य ५२ ये पांच मान्यके स्थान कहेहैं पीछे से पहले के गुरुहैं तीनों वर्णोंमें पांचोंकी अधिकता और बल ५३ जहां होंगे सोई मानके योग्यहै शूद्र भी दशमी को प्राप्तहै ब्राह्मण स्त्री राजा नेत्रहीन वृद्धभार से भग्न रोगी और दुर्बलको राह देना चाहिये प्रयत होकर नित्यही सज्जनों के घरसे भिक्षा मांगकर ५४। ५५ गुरुजी को निवेदनकर उनकी आज्ञासे मौन होकर भोजनकरै जनेऊ धारण कियेहुये ब्राह्मण भवत् शब्द पहले कहकर भिक्षामांगे ५६ क्षत्रिय भवत् शब्द मध्यमें और वैश्य भवत् शब्द अन्तमें कहे माता वा बहन वा अपनी माताकी बहन से ५७ पहले भिक्षामांगे जो इसको अपमान न करै सजातीय घरों में वा सब वर्णों में ५८ भिक्षा मांगना कहाहै पतित आदि वर्जितहैं वेद यज्ञोंसे हीन न हों अपने कर्मों में श्रेष्ठहों ५९ तिनके घरोंसे प्रयत ब्रह्मचारी प्रतिदिन भिक्षा मांगे गुरुजीके कुल जाति कुल बन्धुओं में न मांगे ६० और घरोंके न मिलने में पहले पहले को वर्जितकरै वा पहले कहेहुओं के असंभव में सब गांवमें भिक्षा मांगे ६१ प्रयत होकर मौनहो दिशाओंको न देखकर मायारहितहो जितना अर्थहो उतना भिक्षाके अन्न को इकट्ठाकर ६२ नित्यही भोजन करै मौन और अन्य में मनन होकर व्रत करनेवाला नित्यही भिक्षासे भोजनकरै एकही अन्न न खावे ६३ भिक्षा मांगकर खानेकी वृत्ति व्रतके समान है नित्यही भोजनको पूजनकर इनको विना निन्दाके देवे ६४ देखकर हर्षित प्रसन्न और सब ओरसे प्रशंसाकरै बहुत भोजन रोग करते उमर कम करते स्वर्ग न देते ६५ पुण्यहीन करते मनुष्यों में वैर करते तिससे बहुत अन्न वर्जितकरै पूर्व वा सूर्यके सम्मुख अन्नोंको भोजन करै ६६ नित्यही उत्तर मुख होकर न भोजनकरै यह सनातन विधि है हाथ पांव धोकर भोजनकर दोको स्पर्शकरै ६७ शुद्धदेश में बैठ भोजनकर दोको स्पर्शकरै ६८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेकर्मयोगकथनंनामएक पंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

# बावनवां अध्याय ॥

## कर्मयोगका वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि भोजनकर पानकर सो स्नानकर राहचलनेमें ओठके चाटने से स्पर्शकर वस्त्र पहनकर १ वीर्य्य मूत्र और विष्ठाके त्याग में झूंठ बोलने में थूककर पढ़ने के प्रारंभमें खांसी और श्वास के आनेमें २ चौराहा वा श्मशान में चढ़कर ब्राह्मण दोनों संध्याओं में आचमन किये भी हो पर फिर आचमन करै ३ चण्डाल और म्लेच्छ से बोलनेमें स्त्री और शूद्रके उच्छिष्ट बोलनेमें उच्छिष्ट पुरुष को देखकर उच्छिष्ट भोजन देखकर ४ आचमनकरै आंसू वा रक्तके गिरने में संध्याओंके भोजनमें स्नान पानकर मूत्र और दिशा फिर कर ५ और जगह से आकर सोकर एकवार आचमनकरै अग्नि और गौवोंके आलंभ में वा प्रयतको स्पर्शकर ६ स्त्रियों और अपने स्पर्श में वा नीलीको पहनकर जलको स्पर्शकरै वा दुःखी तृण वा भूमिको स्पर्शकरै ७ बालों के आत्माके स्पर्श में छूटेहुये कपड़ेके स्पर्श में धर्मसे नहीं दुष्ट गर्मी रहित बालोंसे ८ शौचकी इच्छा करनेवाला सदैव आचमनकरै पूर्व वा उत्तर मुख बैठे शिर खोलकर वा कण्ठ भी खोलकर वा बाल और शिखाखोलकर ९ पांवों के विना धोये राहसे पवित्र नहीं होताहै जूता वा खड़ाऊं पहनकर पण्डित विना पगड़ी के आचमनकरै १० वर्ष की धाराओं में उद्धृत जलोंमें न खड़ाहो एक हाथके अर्पित जलोंसे स्नान न करै वा फिर विना सूत्रके न नहावे ११ खड़ाऊं और आसनपर बैठकर न नहावे वा बाहर गांठरहे कहते हँसते देखते शय्यामें सोते १२ न अविक्षित फेनादिक से युक्त शूद्र के अपवित्र हाथों से छूटेहुए नक्षारों से १३ न अन्यमें मन होकर अंगुलियों से शब्दकरै न वर्णरसदुष्टों से न प्रदरके जलों से १४ न हाथसे क्षुभितोंसे वा बाहर गन्यहोकर नहीं हृदयमें प्राप्तोंसे ब्राह्मण पूजित होताहै कण्ठमें प्राप्तोंसे क्षत्रिय पवित्र होताहै १५ प्राशितोंसे वैश्य पवित्र होताहै स्त्री और शूद्रस्पर्शसे पवित्र होते हैं अंगुष्ठ मूल के भीतर से रेखामें ब्राह्म कहाताहै १६ अन्तर अंगुष्ठ देशमें पित-

रोंका तीर्थ कहाताहै कनिष्ठा मूलसे पीछे प्राजापत्य कहाताहै १७ अंगुल्यग्र में दैव और आर्षकहाहै मूलसे दैव और आर्ष होताहै मध्यसे आग्नेय होताहै १८ सोई सौमिक तीर्थ है यह जानकर मोहको न प्राप्तहो ब्राह्मतीर्थ से ब्राह्मण नित्यही स्पर्शकरै १९ हे ब्राह्मणो! दैवसे होमकरै पितृसे न करै तीनबार भोजनकरै पहले तीन बार जलको पीवे फिर ब्राह्मसे प्रयत २० शुद्धहो अंगुष्ठ मूलसे मुख को स्पर्शकरै अंगुष्ठ और अनामिका से दोनों नेत्रोंको स्पर्शकरै २१ तर्जनी और अंगुष्ठके योगसे दोनों नासिका के पुटस्पर्शकरै कनिष्ठा और अंगुष्ठके योगसे कानस्पर्शकरै २२ सबके योगसे हृदय और शिरस्पर्शकरै अंगुष्ठसे दोनों कांधा स्पर्शकरै २३ जो जल तीनबार पियागयाहै तिससे इसके ब्रह्मा विष्णु महेश देवता प्रसन्न होते हैं यह सुनाहै २४ परिमार्जन से गङ्गा और यमुना प्रसन्न होती हैं नेत्रों के स्पर्श से चन्द्रमा और सूर्य प्रसन्न होते हैं २५ नासिका के दोनों पुटके स्पर्श से नासत्य और दस्र ये दोनों अश्विनीकुमार प्रसन्न होते हैं कानों के स्पर्श से पवन और अग्नि प्रसन्न होते हैं २६ हृदयके स्पर्श से इसके सब देवता प्रसन्न होते हैं मस्तक के स्पर्श से एक सो पुरुष प्रसन्न होताहै २७ जो बिन्दु अंगमें लगते हैं वे मुखमें जूंठन नहीं करते दांतों में लगने में दांतों की नाईं जीभके स्पर्श में पवित्र होताहै २८ जो दूसरों को आचमन कराता है तब जो बिन्दु चरणोंको स्पर्श करते हैं वे पृथ्वीकी धूलिके समान जानने योग्यहैं तिनसे अशुद्धता नहीं होती है २९ मधुपर्क में सोममें पान के खाने में फल मूल और ईखमें मनुजी दोष नहीं कहते हैं ३० अन्न और पानों में जो मनुष्य हाथमें द्रव्य लियेहो तो उस द्रव्य को पृथ्वी में धर आचमनकर भोजनकर फिर आचमन करके ग्रहण करै ३१ तैजस को लेकर जो ब्राह्मण उच्छिष्टहो तो उस द्रव्य को पृथ्वी में धर आचमनकर फिर द्रव्यको ग्रहणकरै ३२ जो जो द्रव्य लेकर उच्छिष्टता से युक्त होताहै तिस द्रव्यको पृथ्वी में विना धरे अपवित्रता को प्राप्त होताहै ३३ वस्त्रादिकों में विकल्पहो तो उसको स्पर्शकर वहां आचमनकरै मनुष्यहीन वनमें रात्रिमें चोर और व्याघ्र

से व्याकुल राहमें ३४ द्रव्य हाथमें लियेहुये मूत्र और विष्ठाकरै तो अशुद्ध नहीं होताहै दहिने कानमें जनेऊ चढ़ाकर उत्तर मुखहो ३५ दिनमें विष्ठा और मूत्रकरै रात्रिमें दक्षिण मुख होकरकरै पृथ्वी को काष्ठ पत्ता लोष्ट और तृणसे आच्छादितकर ३६ शिरको ढककर विष्ठा और मूत्रकरै छाया कुंवां नदी गोशाला स्थान जल राह भस्म ३७ अग्नि श्मशान गोवर लकड़ी महावृक्ष और हरितमें विष्ठा और मूत्र न करै ३८ न स्थितहो वस्त्रहीन न हो पर्वतमण्डल में पुराने देवस्थान में वेमौरि में कभी मूत्र और विष्ठा न करै ३९ जीवयुक्त गड्ढों में न जावे न मूत्र और विष्ठाकरै भूसी अंगार कपालों में राज मार्गमें ४० खेत बिल तीर्थ चौरहा वन जलके समीप ऊसर गुहामें ४१ जूता वा खड़ाऊ वा छतुरी लिये अन्तरिक्ष में स्त्रियोंके सम्मुख गुरु ब्राह्मण और गौवोंके सम्मुख ४२ देवता और देवस्थानमें जल में कभी न ज्योतियों को देखतेहुये वा सम्मुख ४३ सूर्य अग्नि और चन्द्रमा के सम्मुख मूत्र और विष्ठा न करै किनारे से लेप गन्ध के दूर करनेवाली मिट्टीको लेकर ४४ अतन्द्रितहो विशुद्ध उद्धृत जलों से शौचकरै ब्राह्मण धूलि और कीचड़समेत मिट्टीको न लेवे ४५ राहसे ऊसर से मिट्टी न लेवे दूसरेके शौचसे बचीहुई न लेवे देवता के स्थान से कुवांसे धाम और जलसे मिट्टी न लेवे ४६ फिर नित्यही पहले कहेहुये विधान से स्पर्शकरै ४७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेकर्मयोगकथनेद्विपञ्चाश-त्तमोऽध्यायः ५२ ॥

# तिरपनवां अध्याय ॥

कर्मयोगका वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि इसप्रकार दण्डादिकों से युक्त शौचाचारसमेत बुलायाहुआ गुरुजीका मुख देखतेहुये पढ़े १ नित्यही उद्यतपाणिहो अच्छे आचारवालाहो अत्यन्त संयतहो बैठजाओ ऐसा कहनेपर गुरुजीके सम्मुख बैठजावे २ प्रतिश्रवण संभाषण में सोतेहुये न करै बैठेहुये भोजन करतेहुये न स्थितहो न पराङ्मुखहो ३ नीचलोग

सदैव गुरुजीके समीप शय्या और आसन करते हैं गुरुजीकी नजर के सामने यथेष्ट आसन न होवे ४ और परोक्षमें भी केवल गुरुजी का नाम न लेवे और चाल भाषण और चेष्टितके अनुसार न चले ५ गुरुजीका जहां परीवाद वा निन्दा होतीहो वहां कान मूंदलेवे वा वहांसे अलग चलाजावे ६ दूरमें स्थितहोकर गुरुजी को न पूजै न क्रुद्ध होकर न स्त्रीके समीप में पूजै गुरुजीको उत्तर न कहै समीप में स्थित न हो ७ उदकुंभ कुश फूल और लकड़ी सदैव लावे नित्यही अंगोंका मार्जन और लेपनकरै ८ गुरुजीका निर्माल्य शयन खड़ाऊं जूता आसन और छायादिकों को कभी आक्रमण न करै ९ दतूनि लावे जो कुछ मिलै गुरुजी को देवे विना पूंछे न जावे प्रिय हितमें रतहो १० गुरुजी के समीप कभी पांव न फैलावे जँभाई लेना हँसना कण्ठप्रावरण ११ और अंग स्फोटनको गुरुजी के समीपमें नित्यही वर्जितकरै यथाकालपढ़े जबतक गुरुजी विमन न हों १२ एकाग्र चित्त होकर गुरुजी के समीप नीचे बैठकर सेवाकरै आसन शयन और सवारी में कभी स्थित न हो १३ गुरुजीके दौड़तेहुये पीछेदौड़े चलतेहुये पीछे चले बैल घोड़ा ऊंट सवारी महल नीचे के बिछौनों में १४ शिला फलक नावोंमें गुरुजीके साथ बैठे सदैव जितेन्द्रियहो आत्माको वशरक्खे क्रोधरहित और पवित्रहो १५ सदैव हितकरने वाली मधुरवाणी बोले गन्धमाला रसकल्प शुक्ति प्राणियों का मारना १६ अभ्यंजन अंजन उन्मर्द छत्र धारण काम लोभ भय निद्रा गीत बाजा नाच १७ आतर्जन परीवाद स्त्रियोंसे दिल्लगी आलंभन पराया उपघात और चुगलीको यत्न से वर्जितकरै १८ उदकुंभ फूल गोबर मिट्टी कुश और जितने अन्नहैं वे लावे प्रतिदिन भिक्षामांगे १९ घी नमक लावे और सब बासी वर्जितकरै निरन्तर नृत्य न देखे गीतादिकमें निस्पृहहो २० निश्चय सूर्यकी चेष्टा न करै दतूनि नकरै एकान्तमें अपवित्र स्त्रियों और शूद्रादिकों से न बोले २१ गुरुजी का जूंठा औषध अन्न कामसे न युक्तकरै मलका अपकर्षण स्नान कभी न करै २२ ब्राह्मण गुरुजी के त्याग में बड़े कष्टसे भी मन न करै मोह से वा लोभसे जो छोड़े तो पतित होता है २३ लौकिक

वैदिक वा आध्यात्मिक जिनसे ज्ञान पाया है तिनसे कभी द्रोह न करै २४ अवलिप्तकार्य अकार्य के न जाननेवाले उत्पथ में प्रतिपन्न भी गुरुजी का त्याग मनुजीने नहीं कहा है २५ गुरुजी के गुरु समीपहों तो गुरुजी के तुल्य वृत्तिकरै नमस्कारकर गुरुजी से छोड़ा हुआ अपने गुरुओं के नमस्कारकरै २६ विद्याके गुरुओं में ऐसेही करै अधर्म से मना करनेवाले हितकेउपदेश करनेवाले नित्यकी वृत्ति वाले योगियों में २७ नित्यही अपने गुरुजी के तुल्य वृत्तिकरै यही कल्याणकारकहै गुरुजी के पुत्रों स्त्रियों अपने बंधुओं में २८ यदि कर्ममें शिष्टहो तो बालक मान्योंका मानकरै गुरुजीके पुत्रको पढ़ाते हुये भी गुरुजीके समान मानकरै २९ देहोंका चापना स्नानकराना जूंठा भोजन करना पांवों का धोना गुरुजी के पुत्रका न करै ३० सवर्णा गुरु की स्त्रियां गुरुजी के समान पूज्यहैं असवर्णा उठकर नमस्कारों से पूज्य हैं ३१ अंजन स्नान देहचापना वालोंका प्रसाधन गुरुजीकी स्त्रीके नहीं करनेयोग्य हैं ३२ गुरुजीकी स्त्री जवानहोतो पांवछूकर नहीं प्रणामकरै मैहूं ऐसाकहकर प्रथ्वीमेंवंदन करै ३३ गुरुजीकी स्त्रियों में सज्जनोंका धर्मस्मरणकर चरण ग्रहणपूर्वक नमस्कार करै ३४ मौसी माई सास फूफू गुरुजीकी स्त्रीके समान पूज्य हैं ये गुरुजीकी स्त्रीही के समान हैं ३५ भाईकी स्त्रियां सवर्णा दिन दिन में ग्रहणकरने योग्य हैं जाति और संबधकी स्त्रियां भी ग्रहण करने योग्य हैं ३६ फूफू मौसी बड़ीवहन ये माताके समानवृत्ति में स्थित हैं तिनसे माता श्रेष्ठहै ३७ इसप्रकार आचारयुक्त आत्मवान् दम्भरहितको वेदपढ़ावे धर्म और पुराणके अंग नित्यही पढ़ावे ३८ सालभर शिष्य गुरुजी के यहां वसे तो गुरुजी ज्ञान सिखलाकर वसते हुये शिष्यका पाप नाशकरदेतेहैं ३९ आचार्यका पुत्र सुननेकी इच्छा करनेवाला ज्ञानका देनेवाला धर्मात्मा पवित्र समर्थ अन्नका देनेवाला जलका देनेहारा और साधु ये दशधर्मसे पढ़ाने योग्य हैं ४० कृत करनेवाला द्रोह न करनेहारा बुद्धिमान् गुरुजीका कियाहुआ मनुष्य आप्तप्रिय ये छः ब्राह्मण विधिपूर्वक पढ़ाने चाहिये ४१ इनमें ब्राह्मणमें दानहै और में यथोचितहै आचमनकर संयतमनुष्य नित्यही

उत्तरमुख होकर पढ़ै ४२ गुरुजीके चरणछूकर गुरुजीका मुखदेखता हुआ जब गुरुजी कहैं कि पढ़ो तब पढ़े जब कहे कि अब बन्दकरो तब बन्दकरदे ४३ पूर्वकूलों को उपासनाकरे पवित्रों से पवित्र तीन प्राणायामों से पवित्र फिर ओंकारके योग्य होताहै ४४ ब्राह्मण अन्तमें भी विधिपूर्वक ओंकार पढ़े ब्रह्मांजलि पूर्वक नित्यही पढ़े ४५ सब प्राणियोंका सनातन वेद नेत्र है वेदको नित्यही पढ़े न पढ़े तो ब्राह्मणत्वसे हीन होताहै ४६ नित्यही ऋग्वेद पढ़े दूधकी आहुतिसे कामों से बुलाये हुये देवता प्रसन्न होते हैं ४७ निरन्तर यजुर्वेद पढ़े दहीसे देवता प्रसन्न होते हैं सामवेदको पढ़े प्रतिदिन घीकी आहुति से देवता प्रसन्न होते हैं ४८ नित्यही अथर्वण वेदको पढ़े शहद से देवता प्रसन्न होतेहैं धर्मके अंग पुराण हैं मांसों से देवताओंको तृप्त करते हैं ४९ प्रातःकाल सायंकाल प्रयत नित्यकी विधिमें आश्रित वन में जाकर एकाग्रचित्त होकर गायत्री को पढ़े ५० सहस्र परम देवी शतमध्या दशावरा गायत्रीको नित्यही जपै यह जप यज्ञ कहाहै ५१ गायत्री और वेदको प्रभुजी तराजूपर तौलते भये एक ओर चारों वेदोंको और एक ओर गायत्री को रखते भये ५२ एकाग्रचित्त होकर श्रद्धायुक्त ओंकारको आदिमें कर तिस पीछे व्याहृती को फिर गायत्री को पढ़े ५३ पूर्वसमय कल्प में सनातन भूर्भुवःस्वः और सब अशुभ दूरकरने वाली तीन महा व्याहृती उत्पन्नहुईं ५४ प्रधान पुरुष काल विष्णु ब्रह्म महेश्वर सत्त्व रज तम तीनों क्रमसे व्याहृती कहाती हैं ५५ ॐकार परं ब्रह्महै सावित्री तिसके उत्तरहै यह महायोग मन्त्रहै सारसे सार उदाहृत है ५६ जो ब्रह्मचारी अर्थको जानकर प्रतिदिन वेद माता गायत्री को पढ़ताहै वह परमगतिको प्राप्त होताहै ५७ गायत्री वेदकी माताहै गायत्री लोकको पवित्र करतीहै गायत्री से श्रेष्ठ जपने योग्यनहीं है यह विज्ञान कहाताहै ५८ हे उत्तम ब्राह्मणो! श्रावण मासकी पौर्णमासीमें आषाढ़ीमें भदईं पूर्णमासी में वेदका उपाकरण कहाहै ५९ जो सूर्य दक्षिण गमन करते हैं उनमें साढ़ेपांच महीने ब्रह्मचारी एकाग्रचित्त होकर पवित्र देशमें पढ़ै ६० ब्राह्मण पुष्यमें

वेदांका वहिरुत्सर्जन करै शुक्लपक्ष के प्राप्तहोने में पूर्वाह्नमें प्रथम दिनमें ६१ ब्राह्मण मनुष्य वेदका अभ्यास करै वेदांग और पुराणों को कृष्णपक्ष में अभ्यास करै ६२ इन अनध्यायोंको नित्यही पढ़ताहुआ और पढ़ाताहुआ यत्नसे वर्जित करै ६३ रात्रिमें अधिक आंधी आई हो दिनमें धूलिकी अधिकाई हो बिजलियों का गर्जना वर्षाहो बड़े उल्कापातहों ६४ इनमें प्रजापतिजी अकालिक अनध्याय कहतेहैं इनको जब प्रादुष्कृत अग्नियों में उदित जाने ६५ तब अनध्यायको जानेबिना ऋतुके मेघोंके दर्शनमें निर्घातमें पृथ्वी के हालनेमें ज्योतियोंके उपसर्जनमें ६६ इनको अकालिक अनध्याय जाने ऋतुमें जोहों प्रादुष्कृत अग्नियों में बिजलीके गर्जने में ६७ शेष रात्रिमें जैसे दिनहो वह ज्योतिः अनध्याय है ग्राम और नगरोंमें नित्य अनध्यायहै ६८ धर्म नैपुण्यकामोंको नित्यही दुर्गंध में ग्राममें भीतर मुर्दा प्राप्तहो शूद्रके समीप में ६९ अनध्याय मेघके रुध्यमान समयमें आधीरात्रि में जलहो विष्ठा और मूत्रकी वर्षाहो ७० उच्छिष्ट श्राद्धका भोक्ता मनसेभी न चिन्तनाकरै विद्वान् ब्राह्मण एकोदिष्ट का वेतन ग्रहणकर ७१ राजा और राहुके सूतकमें तीनदिन ब्रह्मका कीर्तन न करै जबतक एक ब्रह्ममें निष्ठा हो स्नेहालोप स्थितहो ७२ विद्वान् ब्राह्मणकी देह में तबतक ब्रह्मकीर्तन न करै सोताहुआ प्रौढ़पाद अवसक्थिकाको कर ७३ मांस खाकर शूद्रकी श्राद्धका अन्न खाकर न पढ़े दोनों संध्याओं में कुहिरा के पड़ने में वाण के शब्दमें ७४ अमावास्या चतुर्दशी पौर्णमासी अष्टमी उपाकर्म उत्सर्ग में तीन रात्रि क्षपण कहाहै ७५ अष्टका श्राद्धों में रात्रि दिन ऋतुके अंतकी रात्रियों में अगहन पौष और माघ मासमें ७६ कृष्णपक्षमें विद्वानोंने तीन अष्टका कही हैं लसोढ़ा सेमर और महुआकी छायामें ७७ कचनार और कैथाकी छायामें कभी न पढ़े समान विद्या वालेके तथा ब्रह्मचारी के मरनेमें ७८ आचार्यके संस्थित में तीन रात्रि क्षपणहै ये छिद्र ब्राह्मणों के अनध्याय कहे हैं ७९ तिनमें राक्षस हिंसा करते हैं तिससे इनको वर्जित करै नैत्यक में अनध्याय नहीं है संध्योपासन

करै ८० उपाकर्म में होमके अंतमें होमके मध्यमें एक ऋचा यजुर्वेद सामवेद की ८१ अष्टकाओं में न पढ़े पवन अधिक चलताहो तब अंगोंमें अनध्याय नहीं है इतिहास पुराणों में ८२ और धर्म शास्त्रोंमें इन सबको वर्जित करै यह धर्म संक्षेपसे ब्रह्मचारी का कहा है ८३ भावितात्मा ऋषियों से ब्रह्मा जीने पूर्वसमय में कहाहै कि जो ब्राह्मण वेद न पढ़कर और जगह यत्न करताहै ८४ वह मूर्ख संभाषण के योग्य नहीं है ब्राह्मणों से वेदवाह्य है वेदके पाठमात्र से ब्राह्मण संतुष्ट नहीं होताहै ८५ पाठमात्रही से कीचड़में गऊकी नाईं कष्ट पाताहै जो विधिपूर्वक वेदको पढ़कर वेदके अर्थ को नहीं विचारता है ८६ वह मूर्ख शूद्रके सदृशहै पात्रताको नहीं प्राप्त होताहै यदि गुरुजी के यहां अधिक दिनतक वास करनेकी इच्छाहो ८७ तो युक्त होकर जबतक शरीर न छूटै तबतक बसे वनमें जाकर विधिपूर्वक अग्निमें हवनकरै ८८ नित्यही ब्रह्ममें निष्ठ एकाग्रचित्त कर गायत्री शतरुद्री और विशेषकर वेदांतों को निरंतर अभ्यासकरै भिक्षाके भोजनमें परायणहो ८९ यह विधान परम पुराणहै वेदके आगममें अच्छी प्रकार यहां तुमसे कहाहै पूर्व समय महर्षि श्रेष्ठोंसे पूंछेहुये मनुदेव स्वायम्भुवजी ने जो कहाहै९०॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेकर्मयोगकथनं नामत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

## चौवनवां अध्याय॥

ब्रह्मचारीको गुरुजीके पाससे विद्या प्राप्तकर उसके नियमोंका वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों! वेद और वेदांगोंको पढ़कर उत्तम ब्राह्मण अधिगम्यके लिये फिर स्नानकरै १ गुरुजीको धन देकर तिनकी आज्ञासे स्नान करै व्रतको पूराकर युक्तात्मा वा समर्थ स्नान करने के योग्य होता है २ वैष्णवी लाठी धारण कर भीतर बाहर के वस्त्रधार दो जनेऊ जल समेत कमंडलु ३ छतुरी निर्म्मल पगड़ी खड़ाऊँ जूता और सुवर्णके कुण्डल धारण करने योग्य हैं बाल और नहों को कटाकर पवित्र हो ४ सुवर्ण से अन्यत्र ब्राह्मण लाल माला

न धारणकरै नित्यही श्वेत वस्त्र धारणकर सुगन्ध प्रिय दर्शनवाला ५
विभव होने में पुराने मैले कपड़े न धारे न लाल उल्वण और के धा-
रण किये कपड़े पहने न कुण्डल धारे ६ न जूता पहने माला और ख-
ड़ाऊं पहने जनेऊ गहने को दिखलाता हुआ कृष्णमृगछालाधारे ७
अपसव्य होकर न धारण करै विकृत वस्त्र न धारे विधिपूर्वक अपने
सदृश शुभ स्त्रियों को लावे ८ रूप लक्षण संयुक्त योनि दोषसे वर्जित
पिताके गोत्रसे उत्पन्नसन हो अन्य मनुष्यके गोत्र से उत्पन्न ९ शील
शौच से युक्त स्त्रीको ब्राह्मण लावे और ऋतुकालमें उसके पास जावे
जबतक पुत्र उत्पन्न हो १० यत्नसे निन्दित दिनोंको वर्जित करै छठि
अष्टमी पूर्णमासी द्वादशी चतुर्दशी को त्याग देवे ११ नित्यही ब्रह्म-
चारी तैसेही तीन जन्म के दिन में हो विवाह की अग्निजात वेदसको
धारणकर हवनकरै १२ स्नातक नित्यही इन पवित्रों को पवित्रकरै
नित्यही अतंद्रित होकर वेदमें कहेहुये अपने कर्म करै १३ कर्म न
करै तो शीघ्रही अत्यन्त भयानक नरकों में गिरै प्रयत होकर वेदको
अभ्यास करै महायज्ञोंको न छोड़े १४ घरके कामोंको करै संध्योपासन
करै समान और अधिकों से मित्रता करै सदैव ईश्वरको प्राप्त रहे १५
देवताओं के यहां जावे स्त्रीका पालन करै विद्वान् धर्म को न कहे और
पाप को न छिपावे १६ सब प्राणियों के ऊपर दयाकर नित्यही अपना
कल्याण करै उमरकर्म द्रव्यश्रुत और भाई बन्धुओं का १७ देश-
वाग् बुद्धिसारूप्य सदैव करतेहुये विचरे वेद और स्मृति में कहेहुये
अच्छीप्रकार कर्म करै जो साधुओंसे सेवित हैं १८ तिस आचारको
सेवन करै और कुछ आचारकी चेष्टा न करै जिससे इसके पितृपिता-
मह गये हैं १९ तिससे सज्जनोंकी मार्ग को जावै जिसमें जातेहुये
दूषित नहीं होता है नित्यही पढ़ने में शीलहो नित्यही यज्ञोपवीत
धारे २० सत्य बोले क्रोध जीते लोभ और मोहसे वर्जितहो गायत्री
के जाप में निरत श्राद्धका करनेवाला गृहस्थ मुक्त होजाता है २१
माता पिताके कल्याण में युक्त ब्राह्मण के कल्याण में रत दाता देव
पूजा करनेवाला देवोंका भक्त ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै २२ निरन्तर
धर्म अर्थ कामको सेवन करै प्रतिदिन देवताओं का पूजनकर प्रयत

होकर नित्यही देवताओं के नमस्कार करै २३ निरन्तर विभाग में शील हो क्षमायुक्त दयालु हो ऐसा गृहस्थ कहाता है घरसे गृहस्थ नहीं होता है २४ क्षमा दया विज्ञान सत्य दम शम अध्यात्म नित्यता ज्ञान ये ब्राह्मण के लक्षण हैं २५ इनसे विशेषकर उत्तम ब्राह्मण प्रमाद न करै यथाशक्ति धर्म करै निंदितों को वर्जितकरै २६ मोह के समूह को दूरकर उत्तम योग को प्राप्त होकर गृहस्थ बन्धन से छूट जाता है इसमें विचारणा नहीं करने योग्य है २७ निन्दित जयक्षेपहिंसा बन्धवधात्माओंको और के क्रोध से उठेहुये दोषोंका मर्षणक्षमा २८ अपने दुःखों में दया पराये दुःखोंमें मित्रता इसको मुनि दया कहते हैं साक्षात् धर्मका साधन है २९ परार्थ से चौदह विद्याओंकी धारणा तिसको विज्ञान् कहते हैं जिससे धर्म बढ़ता है ३० विधिपूर्वक विद्या को पढ़कर द्रव्य मिलताहै द्रव्यसे धर्मकार्य करै यह विज्ञान् कहाता है ३१ सत्यसे लोकको जीतता है वह सत्यही परमपदहै जैसे बुद्धिमान् प्राणी सत्यको प्रमाद कहते हैं ३२ दम शरीरोपरति प्रज्ञा के प्रसाद से शम अध्यात्मअक्षर विद्याहै जहां जाकर शोच नहीं होता है ३३ जिसविद्यासे परदेव साक्षात् हृषीकेश भगवान् प्राप्त होते हैं वह ज्ञान कहाताहै ३४ तिनमें निष्ठा तिनमें परायण विद्वान् नित्यही क्रोध रहित पवित्र महायज्ञमें परायण ब्राह्मण तिस अत्युत्तमको प्राप्त होता है ३५ धर्म के स्थान शरीर को यत्नसे पालन करै देह के विना परविष्णु पुरुषों से नहीं प्राप्त होते हैं३६ नियत ब्राह्मण नित्यही धर्म अर्थ कामों में युक्तहो धर्म से हीन काम वा अर्थको मनसेभी न स्मरण करै ३७ धर्म से कष्टपाता हुआ भी अधर्मको न करै धर्मदेव भगवान् हैं सब प्राणियों में गति है३८ प्राणियोंका प्रिय करनेवाला हो पराये द्रोह कर्म में बुद्धि न हो वेद और देवताओंकी निन्दा न करै तिनके साथ भी न बसे ३९ जो नियत मनुष्य पवित्र होकर इस धर्माध्याय को पढ़ताहै पढ़ाता वा सुनाताहै वह ब्रह्मलोकमें प्राप्त होता है ४० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डे भाषानुवादेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

# पचपनवां अध्याय ॥

## ब्राह्मणादिकों के उत्तम करने योग्य और नहीं करने योग्य कार्योंका वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि सब प्राणियोंकी हिंसा न करै कभी झूंठ न बोले अहित और अप्रिय न कहे कभी चोर न हो १ तृण वा साग वा मिट्टी वा जल दूसरेका चुराता हुआ प्राणी नरक को प्राप्त होता है २ न राजा से न शूद्र पतितसे न औरही से दान लेवे अशक्त भी पण्डित निन्दितों को वर्जित करै ३ नित्यही मांगनेवाला न हो फिर तिससे नहीं मांगे इस प्रकार मांगने वाला तिस दुर्बुद्धि के प्राणोंको हरलेता है ४ उत्तम ब्राह्मण विशेषकर देवता की द्रव्य न चुरावे कभी आपदा में भी ब्राह्मण की द्रव्य न चुरावे ५ विष विष नहीं कहाता है ब्राह्मणका द्रव्य विष कहाता है फिर यत्नसे देवता की द्रव्य को सदैव त्याग करै ६ फूल साग जल काठ मूल फल तृण ये नहीं दिये हुये भी चोरी नहीं हैं यह प्रजापति मनु कहते हैं ७ ब्राह्मण देवता की पूजा विधिमें फूलों को ग्रहण करै केवल विना आज्ञा लिये निरन्तर एकहीजगह से न लेवे ८ पण्डित मनुष्य तृण काष्ठ फल फूलोंको प्रकाशमें चुरावे केवल धर्मार्थ कहते हैं और प्रकारसे पतित होता है ९ तिल मूंग यवादिकोंकी मुष्टिमार्ग में स्थित भूँखे हुये ग्रहण करैं और प्रकारसे न करैं धर्मादिकों की यह स्थिति है १० धर्म के बहानेसे पापकर व्रत न करै व्रतसे पापको छिपाकर स्त्री और शूद्र का दम्भन करै ११ मरनेपर यहां ऐसा ब्राह्मण ब्रह्मवादियों से निन्दित होता है छद्म जो व्रत किया जाता है वह राक्षसों को प्राप्त होता है १२ जो अलिंगी लिंगि वेषसे वृत्ति में स्थित है वह लिंगी के पापको हरलेता और तिर्यग्योनि में उत्पन्न होता है १३ याचन योनि सम्बन्ध सहवास और नित्यही भाषण करता हुआ पतित होजाताहै तिससे यत्नसे वर्जित करै १४ देवता और गुरुजी से द्रोह न करै देवता के द्रोहसे गुरुजीका द्रोहकरोड़ करोड़ गुण अधिक है १५ मनुष्यों का कलङ्क नास्तिकता तिससे भी करोड़गुणा अधिकहै गऊ देवता

ब्राह्मण खेती और राजाकी सेवा से १६ जो धर्मसे हीन कुल हैं वे अकुलताको प्राप्त होते हैं कुविचार क्रियाके लोप और वेदके न पढ़नेसे १७ कुल अकुलताको प्राप्त होते हैं ब्राह्मण के अतिक्रम से झूंठसे पराई स्त्री से अभक्ष्य के भक्षण से १८ विना गोत्र के धर्म आचरण से शीघ्रही निश्चय कुल नाश होजाता है विना वेद पढ़े हुये शूद्रों में विहित आचारहीनों में दानसे शीघ्रही कुल नाश हो जाताहै धर्महीनोंसे युक्त गांवमें बहुत रोगवालेमें न बसै १९। २० शूद्रकी राज्यमें न बसे पाखण्डी मनुष्योंसे युक्त में न बसे हिमवान् और विन्ध्याचल का मध्य पूर्व पश्चिम में शुभ है २१ समुद्र के देशको छोड़कर और जगह ब्राह्मण न बसै जहां नित्यही स्वभाव से कालामृग चलता हो पुण्यकारिणी प्रसिद्ध नदियां हों तहां ब्राह्मण बसे उत्तम ब्राह्मण आधाकोस नदी के किनारे को छोड़कर २२। २३ और जगह न बसे चांडालों के गांवके समीप में पतित चांडाल पुल्कसों में न बसै २४ मूर्ख अवलिप्तों और अन्य जायावसायियों के यहां न बसे एक शय्या आसन में पंक्तिहो भांड में पक्वान्न मिश्रणहो २५ पूजन और पढ़ाने में योनिहो तैसेही साथ भोजनहो दशवां साथ में पढ़ना साथ में यज्ञ कराना २६ ग्यारह दोष सांकर्य संस्थित हैं स्थान ते समीप में मनुष्यों को पाप संक्रमण करता है २७ तिससे सब यत्न से शंकरभाव को वर्जित करै एक पंक्ति में जे बैठे हैं और परस्पर नहीं छूते हैं २८ भस्मसे चौका अलगहैं तिनको सङ्करभाव नहीं होताहै अग्नि से भस्मसे जलसे लिखने से २९ द्वारसे स्तम्भमार्गसे छःसे पंक्ति अलग होजाती है सूखा वैर विवाद और चुगली न करै ३० पराये खेतमें चरतीहुई गऊको कभी न हांके चुगुलके साथ न बसे मर्म में जलको न स्पर्शकरै ३१ सूर्यके मण्डल और तीसरे पहर के इन्द्रधनुषको चन्द्रमा वा सुवर्णको विद्वान् दूसरेसे न कहे ३२ बहुत बन्धुओं से विरोध न करै शत्रुओं को अपने प्रतिकूल न करै ३३ पक्षकी तिथि को न कहै नक्षत्रोंको भी न कहै उत्तम ब्राह्मण रजस्वला स्त्री वा अपवित्र से न बोले ३४ देवता गुरु और ब्राह्मणों के देतेहुयेको न मनाकरै

अपनी प्रशंसा न करै पराई निन्दाको वर्जितकरै ३५ वेदनिन्दा और
देवनिन्दाको यत्नसे वर्जितकरै जो ब्राह्मण देवता ऋषि और वेदोंकी
निन्दा करताहै ३६ हे मुनीश्वरो! शास्त्रों में तिसकी निष्कृति नहीं देखी
है वा गुरुदेव और उपबृंहण समेत वेदकी जो निन्दा करताहै ३७
वह मनुष्य अग्रसमेत सौकरोड़ कल्प रौरव नरकमें गिरताहै निन्दा
में चुपरहै कुछ उत्तर न देवे ३८ कान मूंदकरजावे इसको देखे नहीं
पण्डित मनुष्य रहस्य और दूसरोंकी निन्दाको वर्जितकरै ३९ कभी
बन्धुओं से विवाद न करै उत्तम ब्राह्मण पापियों के पाप वा धर्मको
न कहै ४० दोष सत्यसे तुल्य होताहै झूंठ से दोषयुक्त होताहै झूंठ
बोलनेवाले मनुष्यों के रोनेसे आंशू गिरते हैं ४१ तिन झूंठ बोलने
वालोंके आंशू पुत्र और पशुओंको नाशते हैं ब्राह्मणकी हत्या मदिरा
पीने और गुरुजी की स्त्री से भोगमें ४२ वृद्धोंने प्रायश्चित्त देखाहै
झूंठ बोलनेमें नहीं है सूर्य वा चन्द्रमाके उदय होतेमें विना निमित्त
से न देखे ४३ न अस्त होतेहुये न जलमें स्थित न मध्य में प्राप्त
अन्तर्द्धान होतेहुये न सीसे आदिमें प्राप्तहुयेको देखे ४४ नग्न स्त्री
वा पुरुषको कभी न देखे मूत्र विष्ठा और मैथुन त्यागनेवाले को न
देखे ४५ पण्डित मनुष्य अपवित्र होकर सूर्य और चन्द्रादिक ग्रहों
को न देखे उच्छिष्ट वा अवगुंठित दूसरे से न बोले ४६ प्रेतों के
स्पर्शको न देखे क्रोधयुक्त गुरुजी के मुखको न देखे तैल और जल
की छायाको न देखे भोजन होतेमें पंक्तिको न देखे ४७ छूटे बन्धन
वाले और मतवाले हाथीको न देखे स्त्री के साथ न खावे और खाती
हुई स्त्री को न देखे ४८ छींकतीहुई जँभाई लेतीहुई सुखपूर्वक आ-
सनमें न बैठीहुई स्त्री को न देखे जलमें शुभ वा अशुभ अपने रूपको
न देखे ४९ बुद्धिमान् मनुष्य न लंघनकरै न कभी स्थितहो न शूद्र
को बुद्धिदेवे कृसर खीर दही ५० जूंठा वा शहद घी काला मृगछाला
और हवि जूंठी न खावे पण्डित मनुष्य इसको व्रत और धर्म्म न
बतावे ५१ क्रोधके वश न प्राप्तहो द्वेष और रागको वर्जितकरै लोभ
दम्भ मूर्खता निन्दा ज्ञान कुत्सन ५२ ईर्षा मद शोक और मोहको
वर्जितकरै किसीको पीड़ा न देवे पुत्र और शिष्यको ताड़नाकरै ५३

हीनोंका सेवन न करै तृष्णामें बुद्धि कभी न हो आत्माका अपमान न करै दीनताको यत्नसे वर्जितकरै ५४ पण्डित मनुष्य सज्जन को दुर्जन न करै आत्माको वासना से असत् न करै नहँ से पृथ्वीको न लिखे बैठीहुई गऊको न उठावे ५५ नदियोंमें नदी न कहे पर्वतोंमें पर्वत न कहे बसने और भोजन में साथजानेवाले को न छोड़े ५६ नग्नहोकर जलमें न पैठे तैसेही अग्नि में न पैठे शिरके लगाने से बचेहुये तेलको अङ्गों में न लगावे ५७ सर्प शस्त्रों से क्रीड़ा न करै अपने अपने रोम और रहस्यों को न स्पर्शकरै दुर्जन के साथ न जावै ५८ हाथ पाँव वाणी और नेत्रोंकी चापल्यताको न आश्रयकरै लिङ्ग पेट और कानोंकी चपलता कभी न करै ५९ अंग और नहों को बाजा न करै अंजलिसे न पीवे पांवों वा हाथसे कभी जलको न ताड़ितकरै ६० ईंटोंसे मूल और फलोंको न गिरावे म्लेच्छ भाषण न सीखे पांवसे आसनको न खींचे ६१ बुद्धिमान् मनुष्य नखों का विदारण बजाना काटना लिखना विमर्दन अकस्मातही निष्फलको न करै ६२ कोड़ा में बैठकर भक्ष्य न भोजन करै वृथा चेष्टा न करै न नाचे न गावे न बजाओंको बजावे ६३ संहत हाथों से अपने शिर को न खुजलावे न लौकिक स्तोत्रोंसे ब्रह्मा और देवताओंको प्रसन्न करै ६४ पांसा न खेले दौड़े नहीं जलमें विष्ठा औरमूत्र न करै जूंठा नित्यही न प्रवेशकरै नग्न होकर स्नान न करै ६५ जातेहुये न पढ़े अपने शिरको न स्पर्शकरै दांतों से नहँ और रोवों को न काटै सोते हुयेको न जगावै ६६ दुपहर के घामको न सेवनकरै प्रेतके धुयेंको वर्जितकरै शून्य घरमें न सोवे अपने आपजूता न चुरावे ६७ विना कारण से थूंके नहीं भुजाओं से नदीको न पैरे पांवसे पांव कभी न धोवे ६८ पण्डित मनुष्य अग्निमें पांव न तपावें न कांस्यमें धोवे देवता ब्राह्मण और गऊके सम्मुख पांव न फैलावे ६९ वायु अग्नि राजा ब्राह्मण वा सूर्य चन्द्रमा के संमुख पांव न फैलावे अशुद्धहोकर शयन पान पढ़ना स्नान भोजन ७० और बाहर निकलना कभी न करै सोना पढ़ना स्नान उबटन भोजन और चलनेको ७१ नित्यही दोनों संध्याओं में और दोपहर में वर्जितकरै जूंठा ब्राह्मण हाथ में

गऊ ब्राह्मण और अग्निको न छुये ७२ वा पांवसे चलावे नहीं देवता की मूर्त्तिको न छुये अशुद्धहोकर अग्निको सेवन न करै न देवता ऋषियोंको अशुद्धमें कीर्तनकरै ७३ अथाह जलमें न पैठे विना निमित्त के दौड़े नहीं न बायें हाथसे उठाकर मुखसे जलको पीवे ७४ विना स्पर्श किये पैरे नहीं जलमें वीर्यको न गिरावे जोकि अपवित्र अलिप्त वा अर्ह वा लोहित वा विषाणिहै ७५ गऊका अपमान न करै जल में मैथुन न करै स्थानके वृक्षको न काटे जल में कुल्ला न करै ७६ हाड़ भस्म मूड़ बाल कांटा भूसी अङ्गार और करीषमें कभी न चढ़े ७७ बुद्धिमान् अग्निको लंघन न करै कभी नीचे न धरै पांवसे इसको न छुये बुद्धिमान् सूपसे अग्निको न धौंके ७८ वृक्षपर न चढ़े अपवित्र होकर कहीं न देखे अग्निमें अग्निको न छोड़े जलसे अग्निको शांत न करै ७९ मित्रका मरणमात्र आपही दूसरों को न सुनावे अपण्य वा कूटपण्यको बेंचने से युक्तकरै ८० अपवित्र बुद्धिमान् अग्निको मुखके निःश्वासों से न प्रकाशितकरै पुण्यस्थान जलस्थानमें सीमा के अन्तको न लेजावे ८१ प्राप्तहुये पूर्व समयको कभी न काटे पशु व्याघ्र और पक्षियोंको परस्पर न लड़ावे ८२ जल वात और घाम आदिकोंसे दूसरेको बाधा न करै अच्छे कर्मोंको करा कर पीछेसे गुरुओंको न छले ८३ सायंकाल प्रातःकाल रक्षाके लिये घरके द्वारोंको मूंदलेवे बाहर माला वा सुगन्धिको स्त्री समेत भोजनको ८४ ग्रहण कर बादकर प्रवेशको वर्जितकरै बुद्धिमान् ब्राह्मण खातेहुये न खड़ा हो न बातकरै वा हँसे ८५ अपनी अग्निको हाथसे छुये बहुतकाल जलमें न बसे न पखनों न सूप और हाथसे अग्निको धौंके ८६ बुद्धिमान् मनुष्य मुखसे अग्निको फूंके क्योंकि मुखही से अग्नि उत्पन्न है पराई स्त्री से न बोले विना पूजाके योग्यको न पूजाकरावे ८७ ब्राह्मण सदैव अकेलाजावे समूहको वर्जितकरै देवता के स्थान में कभी अप्रदक्षिण न जावै ८८ कपड़ोंको पीड़ित न करै देवताके स्थान में न सोवे अकेला राहमें न जावे न अधर्मी मनुष्यों के साथ ८९ न रोग से दूषितों के साथ न शूद्रों के साथ न पतित के साथ जावे जूताहीन न हो जलादिरहित न हो ९० ब्राह्मणमार्ग में बांह चिनाको

कभी न नांघे योगी सिद्ध व्रत करनेवाले वा यतियों की न निन्दा करै ९१ बुद्धिमान् देवताओं के स्थान यज्ञवाले देवताओं को न नांघे काम से ब्राह्मणों और गऊकी छाया को न नांघे ९२ अपनी छाया को न नांघे पतितादिक रोगियों के साथ न जावे अङ्गार भस्म और बाल आदिकों में कभी न चढ़े ९३ बढ़नी की धूलि को वर्जितकरै स्नान कपड़े घड़ा और जल को भी वर्जितकरै ब्राह्मण अभक्ष्यों को न भक्षण करै अपेय को न पीये ९४॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

# छप्पनवां अध्याय॥

भक्ष्य और अभक्ष्य नियमों का वर्णन॥

व्यासजी बोले कि ब्राह्मण शूद्र के अन्नको न खावे यदि मोहसे वा काम से विना आपदा के भोजनकरता है वह शूद्र की योनि को प्राप्त होता है १ जो ब्राह्मणछःमही ने शूद्र के निन्दित अन्न को खाता है वह जीवते ही शूद्र होताहै और मरकर कुत्ता होताहै २ हे मुनीश्वरो! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र जिसके पेट में स्थित अन्न से ब्राह्मण मरता है तिसी योनि को प्राप्त होता है ३ राजा नाचनेवाले नपुंसक चमार गण और वेश्या इन छः के अन्नको वार्जितकरै ४ कुम्हार धोबी चोर ध्वजी गानेवाले लोहार इन के अन्न और मृतक के अन्नको वर्जितकरै५ कुम्हार चित्रकार व्याजसे जीवनेवाला पतित उढ़रीका लड़का क्षत्रिय शापयुक्त ६ सोनार नट बहेलिया बांझ रोगी वैद्य छिनारस्त्री दण्डक ७ चोर नास्तिक देवताकी निन्दाकरनेवाला सोमबेंचनेवाला और विशेषकर कुत्तापकानेवाले के अन्न वर्जितकरै ८ स्त्री जितका अन्न जिसका दूसरा पतिघरमें हो त्याग कियाहुआ कायर जूँठखानेवाला ९ पापीका अन्न समूहका अन्न शस्त्रसे जीविका करनेवाले डरपोक रोनेवालेका अन्न अवक्रुष्ट परिक्षत १० ब्राह्मणसे वैरकरनेवाले पापमें रुचिवाले श्राद्धके अन्न मृतकका अन्न वृथा पाककरनेवालेका अन्न बालकका अन्न रोगीका अन्न ११ विनापुत्रवाली स्त्रियों का कृतघ्नका विशेषकर कारुकका अन्न शस्त्र

वंचनेवालेका १२ मतवालेका अन्न घण्टाव जानेवालेका अन्न वैद्योंका
अन्न विद्वत्प्रजनन का अन्न परिवेत्तृका अन्न १३ विशेषकर उढ़री
उढ़री के पतिका अन्न अवज्ञात अवधूत रोष और विस्मययुक्त १४
संस्कार वर्जित गुरुजी का भी अन्न नहीं खानेयोग्य है मनुष्य का
सब पाप अन्न में स्थितहोता है १५ जो जिसके अन्नको भोजन
करताहै वह तिसके पापको भोजनकरताहै अर्द्धका कुल मित्र अहीर
वाह और नाई १६ ये शूद्रोंमें अन्न भोजन करनेके योग्य हैं जो आ-
त्माको निवेदित करता है कुशील कुम्हार खेतके कर्मका करनेवाला
१७ पण्डितों ने थोड़ागुण देखकर ये भी शूद्रोंमें अन्न भोजन करने
के योग्यहैं खीर तेलसे पकीहुई वस्तु गोरस सत्तू १८ तिलकी खरी
और तेल ये ब्राह्मणों करके शूद्र से लेजाने के योग्य हैं वैंगन नारी
का साग कुसुंभ भस्मक १९ प्याज लहसुन शुक्त और निर्यास को
वर्जितकरै छत्राक विष्ठाखानेवाला सुअर स्विन्न पीयूष २० विलय
विमुख और कोरकों को वर्जित करै गाजर किंशुक कुम्हड़ा २१
गूलर और अलाबु को खाकर निश्चय ब्राह्मण पतित होताहै कृसर
हलुवा खीर पुवा २२ विना वलिदान का मांस देवों के अन्न हवि
यवागू मातुलिंग अनुपाकृत मछली २३ कदम्ब कैथा और पीपर
को यत्न से वर्जित करै तिलकी खरी उद्धृत स्नेह देवोंका धान्य २४
दही और रात्रि में तिल के सम्बन्ध को यत्न से छोड़दे दूधसे माठा
को न खाय अभक्ष्यों को न खाय २५ कीड़ापड़ेहुये भाव से दुष्ट
मिट्टी के संसर्ग को वर्जित करै कृमि और कीट से युक्त और सुहृत्
छेद को नित्यही छोड़े २६ कुत्तेके सूंघे हुये फिर पकाये गये चंडाल
के देखेहुये रजस्वला पतितों से देखेहुये गऊसे सूँघेहुये २७ अ-
सत्कृत बासी और पर्य्यस्तअन्न को नित्यही छोड़े कौवा और मुर्गोंसे
छुवाहुआ। कीड़ोंसे युक्त २८ मनुष्यों से सूँघाहुआ। कोढ़ीसे छुवाहुआ
इनको छोड़दे रजस्वला रोगसहित छिनारियों के दियेहुये को त्याग
दे २९ मलिन वस्त्रसे या दूसरे के वस्त्रको वर्जित करै बिना बछड़े की
गऊका दूध दशदिन के भीतर ब्याईहुई बकरी का दूध ३० भेड़
और सन्धिनी के दूधको मनुजी नहीं पीनेयोग्य कहते हैं ऊंटनी

हंस कालाकौवा गौरवा सुवा ३१ कुरर चकोर जालपाद कोकिल कौवा खड़रैचा बाज गृध्र ३२ घुग्घू चकवा चकई भास पारावत कबूतर टिट्टिभ गांवकामुर्गा ३३ सिंह व्याघ्र बिलार कुत्ता सुवर सियार बन्दर और गदहेको न भक्षणकरै ३४ सर्पहरिण मुरैला और वनके घूमनेवाले जल और स्थलके रहनेवाले जीव नहीं खानेयोग्य हैं यह धारणा है ३५ हे श्रेष्ठो! गोह कछुवा चौगड़ा खड्ग सेह इन पंचनखों को मनुप्रजापति नित्यही खानेके योग्य कहते हैं ३६ सशल्क मछलियों और रुरुसंज्ञक हरिणका मांस देवता और ब्राह्मणों को निवेदनकर खाने योग्यहै और प्रकार नहीं खानेयोग्य है ३७ मुरैला तीतर कबूतर कपिंजल वार्ध्रीणास बकुला मीन और पराजित हंस ३८ मछली सिंहतुण्ड पढ़िना लालहरिण हे उत्तम ब्राह्मणो! ये खाने के योग्यहैं ३९ ब्राह्मण की कामना से इनके प्रोक्षित मांसको जोकि विधिपूर्वक प्रयुक्तहो तिसको प्राणों के नाशहोने में खावे ४० मांसों को नहीं खावे शेषभोजी नहीं लिप्तहोताहै औषधके लिये वा अशक्त नियोगसे यज्ञकारण से ४१ जो दैवश्राद्ध में आमन्त्रित है मांसको त्यागही करै जितने पशुके रोम होते हैं तितने समयतक नरकको प्राप्तहोता है ४२ ब्राह्मणों को नहीं देनेयोग्य नहीं पीनेयोग्य नहीं छूने योग्य और नित्यही नहीं देखनेयोग्य मदिरा है यह स्थिति है ४३ तिससे सब यत्नसे नित्यही मदिरा को वर्जितकरै ब्राह्मण पानकर कर्मोंसे, पतित होजाता है और नहीं बोलने के योग्य होता है ४४ ब्राह्मण अभक्ष्योंको भोजनकर अपेयोंको पानकर तबतक अधिकारी नहीं होताहै जबतक तिसको नीचे न त्यागदे ४५ तिससे ब्राह्मण नित्यही अभक्ष्यों और अपेयों को यत्नसे त्यागदे न त्यागे तो रौरव नरकको जाताहै ४६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेभक्ष्याभक्ष्यनियमो नामषट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

# सत्तावनवाँ अध्याय ॥

## गृहस्थोंके धर्मका निर्णयवर्णन ॥

व्यासजी बोले कि अब अत्युत्तम दानधर्म्मको कहते हैं पहले ब्रह्मवादी ऋषियों से ब्रह्माजीने कहाहै १ द्रव्योंका पात्रमें श्रद्धासे प्रतिपादन उचित है यह भुक्ति मुक्ति फलका देनेवाला दान कहाता है २ जो श्रेष्ठ श्रद्धासे युक्त सज्जनों को दान देताहै वही दान हम मानते हैं शेष किसकी रक्षा करता है ३ नित्य नैमित्तिक काम्य तीन प्रकारका दान कहाता है चौथा सब दानोंसे उत्तमोत्तम विमल कहाताहै ४ दिन दिनमें जो कुछ उपकारहीन ब्राह्मणको दियाजाता है तिससे नित्य अनुद्दिश्य फल होताहै ५ जो पापकी शान्ति के लिये विद्वानों के हाथमें दियाजाता है उसको सज्जन अत्युत्तम नैमित्तिक दान कहते हैं ६ पुत्रके विजय ऐश्वर्य सुखके लिये जो दान दियाजाता है तिसको धर्मकी चिन्ता करनेवाले ऋषि काम्यदान कहते हैं ७ जो ईश्वरकी प्रीतिके लिये धर्मयुक्त चित्तसे वेदवेत्ता को दियाजाता है वह दान विमल शिव कहाताहै ८ पात्रको पाकर शक्तिसे दान धर्मको सेवन करै तिस पात्रकी उपासना करै जो सबमे तारता है ९ कुटुम्ब भुक्तिवसन से जो दियाजाता है वह अधिक फल देता है और प्रकार से जो दियाजाता है वह दान फलदेनेवाला नहीं होताहै १० वेदका जाननेवाला कुलीन नम्र तपस्वी व्रतमें स्थित और दरिद्रको भक्तिपूर्वक देना चाहिये ११ जो आहित अग्निवाले ब्राह्मण को भक्तिसे पृथ्वी देताहै वह परम स्थान को जाताहै जहां जाकर नहीं शोच करता है १२ जो ईखों से संयुक्त पृथ्वी को यव और गेहूं युक्तको वेदके जाननेवाले को देताहै वह फिर नहीं उत्पन्न होताहै १३ जो गऊके चमड़ेमात्र भी पृथ्वीको दरिद्र ब्राह्मण को देताहै वह सब पापोंसे छूटजाता है १४ पृथ्वीके दान से श्रेष्ठ दान कुछ नहींहै अन्नका दान तिसके समान है विद्याका दान तिससे अधिक है १५ जो शांत पवित्र धर्ममें शीलवाले ब्राह्मण को विधि से विद्या देताहै वह ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै १६ जो श्रद्धासे प्रति

दिन ब्रह्मचारी को सोना देताहै वह सब पापों से छूटकर ब्रह्माके स्थान को प्राप्त होताहै १७ गृहस्थको अन्नके दानसे मनुष्य फल को प्राप्त होताहै इसको अन्नही देने योग्यहै देने से श्रेष्ठगति को प्राप्त होताहै १८ वैशाखी पूर्णमासी में सात वा पांच ब्राह्मणों को विधिसे व्रत कराकर शांत पवित्र प्रयत मानस १९ काले तिलों और विशेषकर शहद से पूजनकर धर्मराज प्रसन्नहों जो मनमें वर्तमान है २० जीवन पर्यन्तका जो पाप है वह तिसी क्षणसे नाश होजाता है काले मृगछाला में तिल कर सोना शहद और घी को २१ जो ब्राह्मण को देताहै वह सब पापसे तरजाता है घी अन्न उदकुम्भ वैशाखी पूर्णमासी में विशेषकर २२ धर्मराजकी प्रसन्नता के लिये ब्राह्मणों को देवे तो भयसे छूटजावे सोना और तिलयुक्त जलके पात्रों से सात वा पांच ब्राह्मणों का तर्पणकरै तो ब्रह्महत्या दूर हो-जावे माघमासके कृष्णपक्ष में द्वादशी में व्रतकर २३।२४ श्वेत कपड़े धारणकर एकाग्रचित्तहो काले तिलों से अग्निको हवनकर ब्राह्मणों को तिल देताहै २५ तो निश्चय ब्राह्मण जन्मपर्यन्त सब किये हुये पापसे तरजाता है अमावास्या को प्राप्त होकर तपस्वी ब्राह्मण को २६ जो कुछ देवदेवेश केशवजीका उद्देश कर देवे कि ईश्वर सनातन हृषीकेश विष्णुजी प्रसन्नहों २७ तो सात जन्मके कियेहुये पाप तिसी क्षणसे नाश होजावें जो कृष्णपक्षकी चतुर्दशी में स्नानकर देव शिवजीको २८ ब्राह्मणके मुखमें आराधन कराता है तिसका फिर जन्म नहीं होताहै कृष्णपक्षकी अष्टमी में विशेषकर धर्मात्मा ब्राह्मणको २९ स्नानकर न्यायपूर्वक पादप्रक्षालन आदि-कोंसे पूजनकर मेरे ऊपर महादेवजी प्रसन्नहों ऐसा कह अपना द्रव्यदेवे ३० तो सब पापों से छूटकर परमगति को प्राप्तहो ब्राह्मणों करके कृष्णपक्षकी चतुर्दशी और कृष्णपक्षकी अष्टमी में विशेषकर ३१ और अमावास्या में भक्तों से भगवान् पूजने योग्य हैं एका-दशी में निराहार होकर द्वादशी को भगवान् का ३२ ब्राह्मण के मुखमें पूजन करै तो परमपद को जावे यह शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि वैष्णवी है ३३ तिसमें यत्नसे जनार्दनदेवजी का आराधनकर

जो कुछ ईशानदेवको उद्देशकर पवित्र ब्राह्मण ३४ और विष्णुजी को दियाजावे वह अनन्त फल होताहै जो मनुष्य जिस देवता के आराधन की इच्छाकरै ३५ तौ ब्राह्मणों का यत्नसे पूजनकरै तब भगवान् तिससे प्रसन्न होतेहैं ब्राह्मणोंकी देह धरकर नित्यही देवता स्थित रहते हैं ३६ और ब्राह्मणके न मिलने में तिनसे मूर्ति आदि-कों में कहीं पूजे जातेहैं तिससे फलकी इच्छा करनेवाले से यत्नसे मूर्ति आदिकों में पूजे जातेहैं ३७ ब्राह्मणों में देवता नित्यही विशे-षकर पूजने योग्य हैं ऐश्वर्यकी कामनावाला निरन्तर इन्द्रका पूजन करै ३८ ब्रह्मवर्चस और ज्ञानकी कामनावाला ब्रह्माको पूजै आरो-ग्यकी कामनावाला सूर्यको पूजै धनकी कामनावाला अग्निको पूजै ३९ कर्मोंके सिद्धिकी कामनावाला निश्चय गणेशजी का पूजनकरै भोगकी कामनावाला चन्द्रमाका पूजनकरै बलकी कामनावाला प-वनको पूजै ४० सब संसारसे मोक्षकी इच्छा करनेवाला यत्नसे भग-वान्का पूजनकरै जो योग मोक्ष और ईश्वरके ज्ञानकी इच्छाकरै ४१ तो यत्नसे देवताओं के ईश्वर विरूपाक्ष का पूजनकरै जे बड़े भोग और ज्ञानों की इच्छा करते हैं वे महादेव ४२ भूतों के स्वामी की पूजा करते हैं भोगकी इच्छावाले केशवजी की पूजा करते हैं जलका देनेवाला तृप्तिको प्राप्त होताहै इससे जलका दान अधिक है ४३ तैलका देनेवाला इष्ट पुत्रको दीपका देनेवाला उत्तम नेत्रको भूमिका देनेवाला सबको सुवर्णका देनेवाला बड़ी उमर को पाताहै ४४ घरका देनेवाला श्रेष्ठस्थानों को चांदी का देनेवाला उत्तमरूप को वस्त्रका देनेवाला चन्द्रसालोक्य को घोड़ेका देनेवाला उत्तमयान को ४५ अन्नका देनेवाला अपनी इष्ट लक्ष्मी को गऊका देनेवाला ब्राह्मण विष्टपको यान और शय्याका देनेवाला स्त्रीको अभय का देने वाला ऐश्वर्यको ४६ धान्यका देनेवाला निरन्तर सुखको ब्रह्मका देने वाला ब्रह्म शाश्वत को पाताहै यथाशक्ति धान्यों को ब्राह्मणों में देवे ४७ जोकि वेदविद्यामें निपुणहो तो मरकर स्वर्गको प्राप्त होताहै गौवों के अन्न देनेसे सब पापोंसे छूटजाताहै ४८ ईंधनों के देने से दीप्त अग्नि वाला मनुष्य उत्पन्न होताहै फल मूल पान अनेक प्रकारके शाक ४९

ब्राह्मणों को देवे तो सदैव आनंदयुक्त होवे औषध तेल भोजन रोग की शान्तिके लिये रोगी को ५० देवे तो रोगरहित सुखी और दीर्घ उमरवाला होवे असिपत्रवन छूरेकी धारासे युक्त मार्ग ५१ और तीक्ष्ण तापको छतुरी और जूताका देनेवाला मनुष्य तरताहै जो जो संसारमें अत्यन्त इष्ट और इसको घरमें अपेक्षित हो ५२ तो उसी को नाशरहित होनेकी इच्छासे तिस तिसको गुणवान्में देवे अयन में विषु व संक्रांति में चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहणमें ५३ संक्रांति आदिक कालोंमें दियाहुआ नाश रहित होताहै प्रयागादिक तीर्थों में पुण्यस्थानों में ५४ नदीके झरनों में देनेसे अक्षयको प्राप्त होता है दान धर्म से श्रेष्ठ धर्म प्राणियों को यहां नहीं विद्यमान होताहै ५५ तिससे ब्राह्मणों करके स्वर्ग ऐश्वर्यकी कामना और पापकी शांति के लिये वेदके जाननेवाले ब्राह्मणको देना चाहिये ५६ मोक्ष की इच्छा करनेवाले करके प्रतिदिन ब्राह्मणों को देना चाहिये गऊ ब्राह्मण अग्नि और देवताओं में देतेहुये को जो मोहसे ५७ मना करताहै वह अधर्मात्मा तिर्यग्योनिको प्राप्त होताहै जो द्रव्य इकठा कर ब्राह्मण और देवताओं का नहीं पूजन करताहै ५८ उसका सब द्रव्य छीनकर राजा राज्यसे निकाल देवे जो ब्राह्मण दुर्भिक्षकी वेला में मरतेहुये को अन्नादिक नहीं देताहै वह निन्दित है तिससे दान न लेवें और तिसके साथ न बसें ५९ । ६० राजा तिसके चिह्न कराकर अपने राज्यसे निकाल देवे पीछे से धर्म्म के साधन करनेवालो अपने द्रव्य को सज्जनों को देवे ६१ वह पहले से अधिक पापी मनुष्य नरकमें गिरताहै जे ब्राह्मण स्वाध्यायवन्त विद्यावन्त जितेन्द्रिय ६२ और सत्य संयम संयुक्त हैं तिनको देवे प्रभुक्त विद्वान् धर्मात्मा ब्राह्मणको भोजन करावे ६३ दशरात्रिके व्रत किये हुये अवृत्तमें स्थित मूर्खको न भोजन करावे जो वेदके जाननेवाले समीपही में स्थितको अतिक्रमण कर औरको देताहै ६४ वह पापी तिस कर्मसे सात कुलको जलाताहै यदि ब्राह्मण शील और विद्यादिकों से अपने आप अधिकहो ६५ तिसको समीपवाले को अतिक्रमण कर यत्नसे देना चाहिये जो पूजितको ग्रहण करताहै पूजित

को देताहै ६६ वे दोनों स्वर्गको जातेहैं उलटाकरने में नरक को जातेहैं नास्तिकहै तुकमें भी जल तक न देवे ६७ धर्म का जानने वाला सब पाखंडों में और वेदके न जानने वाले में न देवे चांदी सोना गऊ घोड़ा पृथ्वी तिलोंको ६८ मूर्ख ग्रहण करै तो काष्ठकी नाईं भस्महो उत्तम ब्राह्मण प्रशस्त ब्राह्मणोंसे धनलेवे ६९ क्षत्रिय और वैश्यसे भी लेवे शूद्रसे कभी न लेवे जीविकाके संकोच की इच्छा करै धनके विस्तार की चेष्टा न करै ७० धनके लोभ में प्रसक्त ब्राह्मणत्वसे हीन होजाताहै सब वेदोंको पढ़कर और सब यज्ञोंको कर ७१ तिस गतिको नहीं प्राप्त होताहै संतोष से जिस को प्राप्त होताहै दान लेने में रुचि न हो शूद्रसे न लेवे ७२ पालन के अर्थ से अधिक ग्रहण करताहुआ ब्राह्मण नरकको जाता है जो संतोषको नहीं प्राप्त होताहै वह स्वर्ग का भाजन नहीं है ७३ प्राणियोंको कँपाताहै जैसे चोर तैसेही वहहै गुरु और भृत्योंके हरनेकी इच्छा करनेवाला देवता और अतिथियों को तर्पण कर ७४ सबसे ग्रहण करै तो आपही न तृप्तहो इस प्रकार युक्तात्मा गृहस्थ देवता और अतिथियों की पूजा करनेवाला ७५ वर्तमान संयतात्मा तिस परम पदको प्राप्त होताहै तत्त्वका जाननेवाला पुत्रों में स्त्रीको छोड़कर वनमें जाकर ७६ अकेला उदासीन एकाग्रचित्त कर नित्यही विचरे हे उत्तम ब्राह्मणो ! यह गृहस्थों का धर्म तुम लोगों से कहा इसको जानकर नियत स्थितहो और तैसेही ब्राह्मणों को स्थित करावे ७७ इस प्रकार देव आदि रहित एक ईशको गृहके धर्म से निरन्तर पूजन करै तो सब प्राणियों की योनिको अतिक्रमण कर श्रेष्ठ प्रकृति को प्राप्त होताहै जन्मको नहीं प्राप्त होताहै ७८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेगृहस्थधर्मनिर्णयो नामसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

## अट्ठावनवां अध्याय ॥

वानप्रस्थ आश्रम के आचार धर्म का वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि इस प्रकार उमरके द्वितीयभाग को गृहस्था-

श्रममें स्थित होकर स्त्री और अग्नि समेत वानप्रस्थ आश्रम को जावे १ वा पुत्रोंमें स्त्रीको छोड़कर वनको जावे वा पुत्रके पुत्रको देखकर जर्जर देहवाला २ प्रशस्त उत्तरायण शुक्लपक्ष के पूर्वाह्ण में नियम युक्त एकाग्र चित्तकर वनमें जाकर तपस्या करै ३ पवित्र फल मूलों को नित्यही भोजन करने के लिये लावे जो भोजन हो तिससे पितृ और देवताओं को पूजन करै ४ नित्यही अतिथि को पूजन करै स्नान कर देवताओंको पूजन करै एकाग्रचित्त होकर घर से आठ ग्रासों को लेकर भोजन करै ५ नित्यही जटाधारण करै नख और रोमों को न त्याग करै सर्वथा पढ़ा करै और जगह से वाणी को रोंके रहे ६ अग्निहोत्र हवन करै अनेकप्रकार की पवित्र उत्पन्न हुई वस्तु वा शाक मूल फल से पंचयज्ञोंको करै ७ नित्यही चीर वस्त्र धारण करै त्रिषवण स्नान करै पवित्र सब प्राणियों के ऊपर दयाकर दान लेनेसे अलग रहे ८ ब्राह्मण अमावास्या और पूर्णमासी से नियत पूजन करै ऋत्विष्ट्याग्रयण में चातुर्मास्यों को करावै ९ उत्तरायण दक्षिणायन पवित्र उत्पन्न अपने आप आहृतों से १० पृथक् विधिपूर्वक पुरोडाशचरुओंकी करै देवता पितरों को अत्यन्त पवित्र हवि देकर ११ शेष को आप भोजन करै अपना किया हुआ नमक मद्य मांस और पृथ्वीके कवकोंको वर्जित करै १२ जलके खर शष्पक लसोढ़े के फलोंको भी छोड़ देवे फालसे जोती हुई को न भोजन करै किसीसे त्यागकी हुई को न भोजन करै १३ आर्त भी होकर गांव में उत्पन्न पुष्प और फलोंको न खावे श्रावण की विधि से सदैव अग्नि को सेवन करै १४ सब प्राणियों से वैर न करै निर्द्वंद्व निर्भय होवे रात्रिमें कुछ न खावे रात्रि में ध्यानमें परायण हो १५ इन्द्रिय जीतनेवाला क्रोध जीतनेहारा तत्त्व ज्ञानकी चिन्तना करनेवाला ब्रह्मचारी नित्यही होवे स्त्रीको भी आश्रय न करै १६ जो ब्राह्मण स्त्री समेत वनमें जाकर कामसे मैथुन करै तो वह व्रत तिसका लोप होजाता है और प्रायश्चित्त करना योग्य है १७ तहां जो गर्भ उत्पन्न होता है वह ब्राह्मणोंसे नहीं स्पर्श करने योग्य होता है इसका वेद में अधिकार और तिस वंश में भी अधिकार

नहीं है १८ निरन्तर पृथ्वी में शयन करै गायत्री के जपमें तत्परहो सब प्राणियों को शरणमें रखकर रक्षाकरै सदैव सद्विभाग में परायण हो १९ परिवाद मिथ्यावाद निद्रा और आलस्य को वर्जित करै एकाग्नि स्थान रहितहो प्रोक्षित भूमिको आश्रय करै २० दांत होकर मृगों के साथ घूमै मृगों के साथही वसै एकाग्रचित्त होकर शिला या शर्करा में सोवै २१ शीघ्रही प्रक्षालक हो वा मास संचयिक हो छः महीने वा सालभर में प्रक्षालक हो २२ दिनमें शक्ति से इकट्ठा कर रात्रि में अन्न भोजन करै चतुर्थकालिक वा अष्टमकालिकहो २३ वा चांद्रायण विधानों से शुक्ल और कृष्णपक्ष में वर्जित करै पक्ष पक्षमें एकबार की चुरई हुई यवागूको भोजन करै २४ वा केवल फूल मूल फलों से सदैव भोजन को करै जो कि स्वाभाविक अपने आप शीर्णहों तपस्वीके मतमें स्थित २५ भूमि में वा प्रपदोंसे दिनमें स्थितहो स्थान और आसनोंसे विहरै कहीं धैर्य को न छोड़े २६ गर्मीमें पंचाग्निताप वर्षामें बूंदें मेघोंकी सहै हेमन्तऋतु में गीले कपड़े धारे क्रमसे तपस्या बढ़ावै २७ त्रिषवण को स्पर्श करै पितृ और देवों को तर्पण करै एक पांवसे स्थितहो वा सदैव मरीचि को पीवै २८ पंचाग्नि के धुयें में प्राप्त वा गर्मी में प्राप्त सोमका पीनेवाला शुक्लपक्ष में पानी और कृष्णपक्ष में गोवर पीवै २९ वा पके पत्तोंका भोजन करै वा सदैव कृच्छ्रोंसे वर्ताव करै योगाभ्यासमें रतहो रुद्राध्यायी सदैवहो ३० अथर्व शिरसका पढ़नेवाला वेदांत के अभ्यास में तत्पर निरन्तर यमों को सेवन करै और अतंद्रित होकर नियमों को सेवन करै ३१ काला मृगछाला उत्तरीय समेत धारे शुक्ल यज्ञोपवीत पहने अपनी आत्मामें अग्नियोंको आरोपित कर ध्यान में तत्पर हो ३२ अग्नि वा स्थान रहित मुनि मोक्ष में परायण हो तपस्वी ब्राह्मणों में यात्रिक भिक्षा को मांगे ३३ और गृहस्थ वनचारी ब्राह्मणों में गांवसे लाकर वनमें वसतेहुये आठ ग्रासोंको भोजन करै ३४ पुटसे हाथसे वा खंडसे अनेक प्रकार की उपनिषदों को आत्म संसिद्धि के लिये जपै ३५ विद्या विशेषों को गायत्री रुद्राध्याय को महा प्रस्थानिक को पढ़ै भोजन

हीनहो अग्निमें प्रवेश वा और ब्रह्मार्पण विधिमें स्थित हो ३६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेवानप्रस्थाश्रमाचार धर्मोनामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

# उनसठवां अध्याय ॥

## संन्यासी के धर्म का निरूपण ॥

व्यासजी बोले कि इस प्रकार उमरका तीसराभाग वनके आश्रममें स्थित होकर चौथे उमरके भागको क्रमसे संन्याससे व्यतीतकरै १ ब्राह्मण आत्मा में अग्नियों को स्थापित कर संन्यासी होवे योगाभ्यास में रत शांत ब्रह्मविद्यामें परायण हो २ जब मनमें सब वस्तुओं में वैराग्य संपन्नहो तब संन्यास की इच्छा करै उलटा करने में पतित होताहै ३ प्राजापत्य इष्टि निरूपणकर अथवा फिर आग्नेयीको निरूपणकर दांत शुक्ल कषायहोकर ब्रह्माश्रमको आश्रय करै ४ कोई ज्ञान संन्यासी और वेद संन्यासी अन्य कर्म संन्यासी हैं तीन प्रकारके संन्यासी कहे हैं ५ जो सब जगहसे विनिर्मुक्त निर्द्वंद्व निर्भय हो वह आत्मामें स्थित ज्ञान संन्यासी है ६ नित्यही वेदको अभ्यास करै भोजन और स्त्रीसे हीनहो वह मोक्षकी इच्छा करनेवाला इन्द्रिय जीतनेहारा वेद संन्यासी कहाताहै ७ जो ब्राह्मण अग्निको आत्म सात्कर ब्रह्मार्पण में परायणहो वह महा यज्ञ में परायण कर्म संन्यासी जानने योग्यहै ८ इन तीनोंमें ज्ञानी अधिक है तिस ज्ञानी का कार्य वा लिंग नहीं विद्यमानहै ९ ममता हीन निर्भय शांत निर्द्वंद्व पत्ता भोजनकर पुराना कौपीन वस्त्र हो वा नग्न ध्यान में तत्पर १० ब्रह्मचारी आहार जीतकर गांवसे अन्नको लावे अध्यात्म में रतिहो अपेक्षा रहित आशिष हीनहो ११ आत्मा के सहायसे सुखके लिये यहां विचरे मरण और जीवन दोनोंकी प्रशंसा न करै १२ मृतककी नाईं निर्देश कालही को परखे न पढ़े न वर्तित हो न कभी सुने १३ इस प्रकार ज्ञानमें परायण योगी ब्रह्ममें मिल जाने के लिये कल्पितहै अथवा विद्वान् एकही वस्त्र धारणकर वा

कौपीन धारणकर १४ मूंड़ मुड़ाकर शिखा हीनहो तीन दंड धारण कर स्त्री हीनहो निरंतर काषाय वस्त्रधारे ध्यान योगमें परायण हो १५ गांवके अन्तमें वा वृक्षकी जड़में वा देवता के स्थानमें बसे शत्रु मित्र मान और अपमान में समानहो १६ नित्यही भिक्षासे भोजन करै कभी एकही अन्न न खायाकरै जो संन्यासी मोहसे वा और से एकही अन्न खायाकरै १७ तो उसकी धर्म शास्त्रों में कोई निष्कृति नहीं दिखाईंपड़ती राग और द्वेष से आत्मा वियुक्तहो लोष्ट पत्थर और सोना समानहो १८ प्राणियोंकी हिंसासे निवृत्तहो मौनहो सबमें निस्पृहहो दृष्टिसे पूत पांवधरे वस्त्रसे पूत जल पीवे १९ सत्यसे पूत वाणी बोले मन पवित्र होकर विचरे भिक्षुक वर्षा को छोड़कर और महीनोंमें एकही जगहमें न बसे २० स्नानकर नित्यही शौचयुक्त कमंडलु हाथमें ले पवित्र नित्यही ब्रह्मचर्य में रत और वनवास में रतहो २१ मोक्ष शास्त्रों में निरत जनेऊ धारे जितेन्द्रिय दंभ अहंकार से निर्मुक्त निन्दा और चुगुली से वर्जितहो २२ आत्मज्ञान गुण से युक्त यदि मोक्ष को प्राप्तहो तो निरन्तर सनातन ॐकार देवको अभ्यास करै २३ स्नानकर विधानसे आचमन कर पवित्र देवता के स्थान आदिकों में रहे यज्ञोपवीत धारे शांत आत्माहो कुश हाथमें ले एकाग्रचित्त हो २४ धोये काषाय वस्त्रधार तिसमें रोमको आच्छादित कर अधियज्ञ अधिदैविक ब्रह्मको जपै २५ निरंतर आध्यात्मिक और वेदांतके जो अभिहित है तिसको जपै पुत्रों में वसते हुये ब्रह्मचारी संन्यासी मुनि २६ नित्यही वेद को अभ्यास करै तो वह परम गतिको प्राप्तहो अहिंसा सत्य चोरी से हीन ब्रह्मचर्य २७ क्षमा दया संतोष इसके विशेषकर व्रतहैं वा वेदान्त ज्ञानमें निष्ठ एकाग्रचित्त हो पंच यज्ञोंको २८ प्रतिदिन करै स्नानकर भिक्षाके तिस द्रव्यसे एकाग्रचित्त हो काल कालमें होम मंत्रोंको नित्यही जपकर हवन करै २९ प्रतिदिन पढ़े दोनों संध्याओं में गायत्री को जपै एकान्त परमेश्वर देवको निरंतर ध्यानकरै ३० नित्यही एक अन्नको वर्जित कर काम क्रोध और स्त्रीको त्यागे एक वा दो वस्त्रधारे शिखाहीन यज्ञोपवीत धारे कमंडलु हाथमें

ले विद्वान् तीन दण्डवाला तिस श्रेष्ठ परमेश्वरको प्राप्त होता है ३१॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेयतिधर्मनिरूपणं नामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५६॥

# साठवां अध्याय॥

संन्यासी के धर्म का निरूपण॥

व्यासजी बोले कि इसप्रकार आश्रम निष्ठ नियतात्मा संन्यासियोंका भिक्षासे वा फल मूलों से वर्तन कहाहै १ एक काल भिक्षा मांगे विस्तार भिक्षा मांगने में न करै भिक्षामें प्रसक्त संन्यासी विषयों में फँस जाता है २ सात स्थानों में भिक्षा मांगे न मिलने में फिर न मांगे संन्यासी नीचेका मुखकर गऊके दुहनेमात्र समयतक ठहरा रहै ३ एकबार भिक्षा ऐसा कहकर चुपचाप वाग्यत पवित्र हो हाथ पांवों को धो विधिपूर्वक आचमन कर ४ सूर्य को अन्न दिखाकर मनुष्य पूर्वमुख हो अन्नको भोजन करै एकाग्रचित्त होकर पांच प्राणाहुती हवनकर आठ कौर खावे ५ फिर आचमन कर देव ब्रह्म परमेश्वर को ध्यान करै आलाबु काष्ठका बर्तन मिट्टी और बांसका बर्तन ६ इन चार संन्यासियों के पात्रों को मनुप्रजापति जीने कहा है पूर्वरात्र में मध्यरात्र में पररात्र में ७ संध्याओं में उक्ति विशेषसे नित्यही ईश्वरको चिन्तन करै हृदयरूपी कमलस्थान में विश्वाख्य विश्व संभवको करै ८ जोकि सब प्राणियों के आत्मा तमके परस्तात् स्थित सबके आधार अव्यक्त आनन्द ज्योति नाश रहित ९ प्रधान पुरुषातीत आकाश अग्नि शिव तिसके अन्त सब भावोंके ईश्वर ब्रह्मरूपी को करै १० ॐकार के अन्तमें अथवा आत्माको परमात्मा में समाप्तकर आकाशमें आकाश के मध्य में प्राप्त ईशान देवको ध्यान करै ११ सब भावों के कारण आनन्द एकमें आश्रय करनेवाले पुराण पुरुष विष्णुको ध्यान करतेहुये बन्धन से छूट जाता है १२ यद्वागुहा की आदिमें प्रकृति में जगत्संमोहन स्थानमें परमव्योम सब प्राणियोंके एक कारणको चिन्तनाकरै १३ जोकि सब प्राणियों के जीवन हैं जहां लोक लीन होता है ब्रह्मका

आनन्द सूक्ष्म जिसको मोक्षकी इच्छा करनेवाले देखते हैं १४ तिसके मध्यमें निहित ब्रह्म केवल ज्ञान लक्षण अनन्त सत्य ईशान को चिन्तनाकर मौन रहे १५ गुह्यसे अत्यन्त गुह्यज्ञान यतियोंका यह कहा है जो सदैव इससे स्थित होता है वह ईश्वर के योग को प्राप्त होता है १६ तिससे नित्यही ज्ञानमें रत आत्मविद्या में परायण हो ब्रह्मज्ञान को अभ्यास करै जिससे बन्धन से छूट जावे १७ केवल आत्माको सबसे अलग मानकर आनन्द अक्षर ज्ञानको तिसको पीछे ध्यान करै १८ जिससे प्राणी होते हैं जिसको जान कर यहां नहीं उत्पन्न होता सो तिससे ईश्वर देवहै जो पीछे स्थित है १९ जिसके अन्तर में तिसका गमन है शाश्वत शिव अव्यय है जो अपने परोक्ष है वह महेश्वर देवहै २० जौन संन्यासियोंके व्रत हैं तैसेही और व्रत हैं एक एकके अतिक्रमण से प्रायश्चित्त होता है २१ कामसे स्त्रीको प्राप्त होतो एकाग्रचित्त होकर प्रायश्चित्त करै प्राणायाम समेत पवित्र होकर सांतपन करै २२ फिर नियम से संयतमानस तन्द्राहीन संन्यासी कृच्छ्रको करै फिर आश्रममें आकर विचारै २३ धर्मयुक्त झूठ बुद्धिमान् को नाश नहीं करता है तिस पर भी झूठ न बोले यह प्रसङ्ग दारुण है २४ धर्मात्मा संन्यासी को झूठ बोलकर एकरात्र व्रत सौ प्राणायाम करने चाहिये २५ आपत्ति में प्राप्तको भी और जगह चोरी न करनी चाहिये चोरीसे अधिक कोई अधर्म नहीं है यह स्मृति है २६ हिंसा तृष्णा आत्मा के ज्ञानकी नाश करनेवाली यांचा जो ये द्रविण नाम हैं ये प्राण बाहर चरनेवाले हैं २७ जो जिसके धनको हरता है सो तिसके प्राणोंको हरताहै इसप्रकार कर वह भिन्नवृत्त व्रतसे च्युत दुष्टात्मा २८ फिर निर्वेदको प्राप्त अतंद्रित संन्यासी विचरै जो संन्यासी अकस्मात् हिंसाको करै २९ तो कृच्छ्र अतिकृच्छ्र वा चांद्रायण व्रतको करै यदि संन्यासी स्त्रीको देखकर इन्द्रिय की दुर्बलता से वीर्यपात करदे ३० तो वह सोलह प्राणायाम करै दिनमें वीर्यपात होनेमें त्रिरात्र व्रत करै सौ प्राणायाम करै यह पण्डित लोग कहते हैं ३१ एक अन्न खानेमें मदिरा और मांस खानेमें नव श्राद्धमें और प्र-

त्यक्ष नमक खानेमें प्राजापत्य व्रत करै ३२ निरन्तर ध्यानमें निष्ठ के सब पाप नाश होजाते हैं तिससे नारायण जीको ध्यानकर तिन के ध्यानमें परायण होवे ३३ जो ब्रह्मकी श्रेष्ठ ज्योति प्रविष्ट अक्षर नाश रहित है जोकि अन्तरात्मा परम्ब्रह्म है सोई महेश्वर जानने योग्य है ३४ यह देव महादेव केवल परम शिव सोई अक्षर अद्वैत नित्य परम्पद है ३५ तिससे महेश्वरदेव अपने धाम ज्ञानसंज्ञित आत्मयोग से परतत्त्व में महादेव कहाता है ३६ महादेव से व्यतिरिक्त और देवको न देखे तिस आत्माको जो प्राप्त होता है वह परम्पद को प्राप्त होता है ३७ जे अपनी आत्माको परमेश्वर से विभिन्न मानते हैं वे तिस देवको नहीं देखते हैं तिनका परिश्रम वृथाहै ३८ एकही तत्त्व नाश रहित परम्ब्रह्म जानने योग्य है सो देव महादेव यह जानकर नहीं बँधते हैं ३९ तिससे संयत मानसज्ञान योगमें रतशान्त महादेव में परायण संन्यासी नियत होकर प्रयत्न करै ४० हे ब्राह्मणो! यह संन्यासियों का शुभ आश्रम तुम लोगों से कहा जिसको विभुमुनि ब्रह्माजीने पूर्वसमय में कहा था ४१ इसप्रकार अत्युत्तम संन्यासियोंके धर्मके आश्रय कल्याणरूप ब्रह्माजीके कहेहुये ज्ञानको पुत्रहीन शिष्य और योगियों को न देवे ४२ यह संन्यासियों के नियमों का विधान कहा जो देवताओं में श्रेष्ठ भगवान् के प्रसन्न होनेमें एक हेतु होता है फिर इनकी उत्पत्ति वा नाश नहीं होता है जे मन लगाकर नित्यही करते हैं ४३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

## इकसठवां अध्याय ॥

### हरिभक्ति का माहात्म्य वर्णन ॥

सूतजी बोले कि हे शौनकादिक ब्राह्मणो! इस प्रकार अमित तेजवाले व्यासजी ने पूर्वसमय में कहा है ऐसा कहकर सत्यवती के पुत्र भगवान् व्यासजी १ सब मुनियों को समझाकर जैसे आये थे वैसे चलेगये मैंने वर्ण आश्रम विधान को तुमलोगों से कहा २ ऐसा करके विष्णुजी का प्रियहोता है और प्रकार से नहीं होता

है हे श्रेष्ठब्राह्मणो ! तहांपर रहस्य कहते हैं सुनिये ३ जे वर्णाश्रमके निबन्धन यहां धर्म कहेगये हैं हे ब्राह्मणो ! वेहरिभक्ति की कलाके अंशांश के समान नहीं हैं ४ पुरुषोंको कलियुग में एक हरिभक्तिही साधन करनेयोग्य है मनुष्यसे और युगमें धर्म्म सेवन करनेयोग्य हैं ५ कलियुग में दामोदर हृषीकेश पुरुहूत सनातन नारायण देवको जो पूजता है वह धर्मका भागीहोता है ६ हृदय में पर शान्त भगवानकोकर तीनोंलोकको जीतलेता है कलिकाल रूप सांपके काटने से पापसे कालकूट से ७ हरिभक्तिरूप अमृतपीकर ब्राह्मण उल्लंघन करने के योग्य होताहै जपोंसे क्या है यदि मनुष्योंने श्रीहरिजीका नाम ग्रहण कियाहै ८ स्नानों से क्या है जिसने विष्णुजी के चरण जलको माथेमें धारण किया है यज्ञसे क्याहै जिसने हरिजीकेचरण कमल को हृदयमें धारण किया है ९ दानसे क्या है हरिजी के कर्म जो सभामें प्रकाशित करता है हरिजीके गुणसमूहों को सुनकर जो वारंवार प्रसन्न होता है १० समाधि में प्रसन्नकी जो गतिहोती है सोई कृष्णमें चित्तवालेकी होतीहै तहां पाखण्ड के बोलने में निपुण विघ्न करनेवाले कहातेहैं ११ स्त्रियां और तिसके सङ्गी हरिभक्ति के विघ्न करनेवाले हैं स्त्रियोंके नेत्रोंकाआदेश देवताओंको भी दुःखसे जीतने योग्यहै १२ सोजिसने संसारमें जीताहै वह हरिभक्त कहाताहै यहांपर स्त्रियोंके चरितमें चञ्चल मुनिलोगभी प्रसन्न होतेहैं १३ हे ब्राह्मणो ! स्त्रियोंकी भक्ति सेवन करनेवालों को हरिभक्ति कहांहै संसारमें स्त्रियोंके वेषवाली राक्षसियां विचरती हैं वे निरन्तर मनुष्यों की बुद्धिको औरकरती हैं १४ तबतक विद्या होती है तबतक ज्ञानवर्तमान रहता है तबतक सब शास्त्रों के धारण करनेवाली अत्यन्त निर्मल बुद्धि रहती है १५ तबतक जपतप तीर्थोंका सेवन गुरुकी सेवा करनेमें बुद्धि १६ प्रबोध विवेक सज्जनों के संगकी रुचि और पुराण में लालसा होतीहै १७ जबतक स्त्रीके चञ्चल नयनों का आन्दोलन नहीं होता है हे ब्राह्मणो ! मनुष्य के ऊपर सब धर्मका विलोपन गिरता है १८ तहां जे हरिजी के चरणकमलके मधुके हेराम प्रसाद युक्तहैं तिनको स्त्रीके चंचल नेत्रोंका क्षेपण समर्थ नहीं

होताहै १९ हे ब्राह्मणो! जिन्होंने जन्म जन्ममें हृषीकेशजीका सेवन कियाहै ब्राह्मण में दानदिया है अग्नि में हवन कियाहै तहां तहां विरति है २० निश्चय स्त्रियों का क्या नाम सौन्दर्य कहाताहै वह गहनों और कपड़ोंका चाकचक्य कहाताहै २१ स्नेहसे आत्मज्ञान रहित स्त्रीका रूप कैसे कहाता है पीब मूत्र विष्ठा रक्त त्वचा मेदा हाड़ और वसासे युक्त २२ तिसका देह नामहै इसमें कहांसे सुन्दरताहै तिसको इसीप्रकार चिन्तनकर स्पर्शकर स्नान करनेसे पवित्र होता है २३ तिन्हों से युक्त शरीर मनुष्यों से सुन्दर देखाजाता है आश्चर्य है हे ब्राह्मणो! दुर्दैवसे घटित अत्यन्त दुर्दशा मनुष्यों की है २४ पुरुष कुचोंसे युक्त अंगमें स्त्रीकी बुद्धिसे वर्तताहै कौनस्त्री या कौनपुरुष है विचार होनेमें क्याहै २५ तिससे साधुसर्वात्मा से स्त्री संगको छोड़देवे पृथ्वीमें स्त्रीको प्राप्तहोकर किसनामवाली सिद्धिको प्राप्तहोता है २६ स्त्री और स्त्रीके संगियों का संग छोड़देवे तिनके संगसे साक्षात् रौरव प्रतीत होताहै २७ अज्ञान से चंचल मनुष्य तहां दैवसे ठगगये हैं मनुष्य साक्षात् नरकके कुण्ड स्त्रीकी योनिमें पचता है २८ जहांसे पृथ्वीमें आयाहै तिसीमें फिर रमताहै जहांसे नित्यही मूत्र और मलसे उठाहुआ रेतगिरताहै २९ तहांहीं मनुष्य रमता है तिससे कौन अपवित्र होताहै तहां इस लोकमें बड़ाकष्टहै आश्चर्य है कि दैवकी विडम्बना है ३० वारंवार तहांहीं रमता है आश्चर्य की बातहै कि मनुष्योंकी निर्लज्जता कैसीहै तिससे बुद्धिमान् मनुष्य स्त्रीके बहुल दोष समूहोंको विचारकरते हैं ३१ मैथुनसे बलकी हानिहोती है नींद अधिक लगतीहै नींदसे ज्ञान नाश होता है और थोड़ी उमरवाला मनुष्य होताहै ३२ तिससे बुद्धिमान् यत्नसे स्त्रीको अपनी मृत्युकी नाईं देखे और गोविन्दजीके चरण कमल में निश्चय मनको रमावै ३३ इसलोक और परलोक में सोई सुखहै कि गोविन्दजीके चरणोंका सेवनकरै तिन गोविन्दजी के चरणों की सेवाको छोड़कर कौन महामूर्ख स्त्रीके चरण को सेवताहै ३४ जनार्दनजीके चरणोंकी सेवा मोक्षके देनेवाली है स्त्रियोंके योनिकी सेवा योनिके संकटके करनेवाली है ३५ फिर फिर योनिमें गिरै जैसे यंत्र

में पचायाहुआ गिरताहै फिर तिसही की अभिलाषाकरै इसके वि-
डम्बनको प्राप्तहो ३६ ऊपरको भुजा उठाकर हम कहते हैं हमारे
सुन्दर वचनको सुनो गोविन्दजी में हृदयको धारणकरो तो योनिकी
यातना न हो ३७ जो मनुष्य स्त्री के संगको छोड़कर वर्तता है वह
पद पदमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ३८ कुलकी स्त्री
दैवयोग से यदि मनुष्योंकी पतिव्रताहो तो जो तिसमें पुत्रको उत्पन्न
कर तिसके संगको छोड़देताहै ३९ तिसके ऊपर जगन्नाथजी प्रसन्न
होतेहैं इसमें सन्देह नहींहै स्त्रीकासंग धर्म जाननेवालोंने असत्संग
कहाहै ४० तिसके होनेमें भगवान्‌में भक्ति अत्यन्त दृढ़ नहीं होतीहै
सब संग छोड़कर हरिजीमें भक्तिकरै ४१ इसलोकमें हरिभक्ति दुर्ल-
भहै हरिजीमें जिसकी भक्ति होती है वह निस्सन्देह कृतार्थहोताहै ४२
तिसतिस कर्मकोकरै जिससे हरिजी प्रसन्न होतेहैं भगवान्‌के प्रसन्न
होनेमें संसारप्रसन्नहोताहै तृप्त होनेमें संसार प्रसन्न होताहै ४३ हरिजी
में भक्तिकेविना मनुष्योंका जन्म वृथा कहाहै जिसकीप्रीतिके हेतु ब्रह्मा
ईशादिक देवता पूजन करते हैं ४४ नारायणमें मनवाला कौन मनुष्य
तिस अव्यक्त को न सेवन करै तिसकी माता महा भाग्यवाली है तिस
का पिता महान् कुशली है ४५ जिसने भगवान्‌के दोनों चरणोंको
हृदयमें धारण कियाहै हे जनार्दन ! हे जगद्वंद्य ! हेशरणागत वत्सल!
४६ ऐसा जे मनुष्य कहते हैं तिनकी नरक में गति नहीं होती है
ब्राह्मण विशेषकर प्रत्यक्ष हरिरूपी हैं ४७ यथा योग पूजते हैं तिन
के ऊपर हरिजी प्रसन्न होते हैं विष्णुजी ब्राह्मण रूपसे इस पृथ्वीमें
विचरते हैं ४८ ब्राह्मण के विना कर्म सिद्धि को नहीं प्राप्त होता है
ब्राह्मण के चरणजल को भक्तिसे जिन्होंने पानकर शिर में लगायाहै
४९ तिसने पितर तृप्त किये निश्चय आत्मा भी तार दिया ब्राह्मणों
के मुखमें जिसने पूजित मीठे को दिया ५० साक्षात् कृष्णजी के मुख
में दिये हुये को हरिजी निश्चय आपही भोजन करते हैं आश्चर्य है
कि अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य प्रत्यक्ष केशव ब्राह्मणमें ५१ मुनिआदिकों
में सेवन करते हैं तिनके अभावमें सो क्रिया होती है ब्राह्मणों के अ-
भिधानसे पृथ्वी धन्यहै वह नाम कियागयाहै ५२ तिनके हाथ में जो

दियाजाताहै वह हरिजी के हाथ में दिया होता है तिनसे किये हुये नमस्कार से पापियों का तिरस्कार होताहै ५३ ब्राह्मण के वन्दन से ब्रह्म हत्यादि पापोंसे छूटजाताहै तिससे विष्णुजीकी बुद्धि से ब्राह्मण सज्जनोंको आराधन करने योग्यहै ५४ यदि भूखेहुये ब्राह्मणकेमुख में जो कुछ दियाजाताहै तो मरकर देनेवाला अमृत की धाराओं से करोड़ कल्प तक सींचाजाताहै ५५ ब्राह्मण का मुख ऊसरहीन कांटा रहित बड़ा खेतहै यदि तहां कुछ बोयाजाताहै तो करोड़ करोड़ फल को प्राप्त होताहै ५६ घी समेत भोजन ब्राह्मणको देकर देनेवाला कल्प पर्यन्त आनन्द करताहै जो अनेक प्रकारके मीठे अन्नको ब्राह्मणकी प्रसन्नता के लिये देताहै ५७ तिसके महा भोगवाले लोक करोड़ कल्पांत तक मुक्ति के देनेवाले हैं ब्राह्मण को आगेकर ब्राह्मण से अनुकीर्तित ५८ महा पापको अग्निरूप पुराण को नित्यही सुनताहै जो पुराण सब तीर्थोंमें अधिक तीर्थ कहाताहै ५९ जिसके एक चरण के सुनने से हरिजी प्रसन्न होते हैं जैसे सूर्य का देहधारणकर प्रकाश करने के लिये हरिजी विचरते हैं ६० सब संसारों के हरिजी देखने के हेतुहैं तैसेही भीतर प्रकाशके लिये पुराणके अङ्ग हरिजी हैं ६१ यहां प्राणिणों में पर पावन पुराण विचरताहै तिससे यदि हरिजीकी प्रीति के उत्पाद में बुद्धि धारण करै ६२ तो निरन्तर कृष्ण रूपी पुराण पुरुषोंसे सुनने योग्यहै शान्त विष्णुजीके भक्तसेभी सुनने के योग्य दुर्लभहै ६३ पुराणका आख्यान निर्मल निर्मल करनेवाला और श्रेष्ठहै जिसमें व्यासरूपी हरिजीने वेदके अर्थ को लाकर ६४ पुराणरचाहै हे ब्राह्मण! तिससे सोई श्रेष्ठहोताहै पुराणमें धर्म निश्चित है धर्म केशवजी आपही हैं ६५ तिससे कियेहुये पुराणके सुनने में विष्णुही होताहै ब्राह्मण साक्षात् आपही हरि हैं तैसेही पुराणहै ६६ इन दोनों के संगको प्राप्त होकर मनुष्य हरिही होताहै तैसेही गंगाजी के जलके सींचने से अपना पाप नाश होजाताहै ६७ केशवजी द्रव रूपसे पापसे पृथ्वीको तारदेते हैं वैष्णव विष्णुजी के भजन का यदि आकांक्षा करनेवाला वर्तमानहो ६८ तो निर्मल निर्मल करनेवाले गङ्गाजी के जलको सेक करै विष्णुजी के भक्ति की देनेवाली देवी

गङ्गा पृथ्वी में गानकी जाती है ६९ लोकके विस्तार करनेवाली विष्णुरूप गंगाहैं ७० ब्राह्मणों में पुराणों में गंगाजी में गौवों में पीपर में नारायण की बुद्धि से पुरुषों करके अहैतुकी भक्ति करने योग्य है ७१ जो कि प्रत्यक्ष विष्णुरूपिणी और तत्त्व के जाननेवालों से यह निश्चितहो तिससे निरन्तर विष्णु भक्तिके अभिलाषी से पूजनेयोग्य है ७२ विष्णुजी में भक्ति के विना मनुष्यों का जन्म निष्फल कहाता है कलिकाल रूप जलकी राशि पापरूपी मगरसे व्याकुल ७३ विषयरूप मज्जन भँवर रूप दुर्बोध श्रेष्ठ फेनायुक्त महा दुष्टजन रूप सर्पोंसे महाभीम भयंकर ७४ दुस्तरको हरिभक्तिरूप नावमें स्थित तरजाते हैं तिससे मनुष्य विष्णुभक्ति के प्रसाधनमें यत्नकरै ७५ प्राणी असत् वार्ता के अवधारणमें क्या सुखको प्राप्त होताहै अद्भुत लीलावाले हरिजीकी लीलाख्यानमें जो नहीं लगताहै ७६ संसार में नानाप्रकार के विषयों से मिलीहुई भगवान् की विचित्र कथा निश्चय मनुष्योंको सुनने योग्य है विषयमें मन लगाहुआ है ७७ हे ब्राह्मणो ! मोक्षमें यदि चित्तहो तब भी सुनने योग्यहैं स्त्रियों के हाव से सुनने से भी तिसके ऊपर हरिजी प्रसन्न होजाते हैं ७८ निष्क्रिय भी हृषीकेश अनेकप्रकारके कर्म करते हैं भक्तवत्सल भगवान् भक्तों के कल्याण के लिये भक्तों की शुश्रूषा करते हैं ७९ कर्म से सैकड़ों वाजपेय यज्ञ और दशसहस्र राजसूय यज्ञसे भगवान् नहीं प्राप्त होते हैं जैसे भक्तिसे प्राप्त होते हैं ८० जो पद सज्जनों से चित्तमें सेवन करने योग्य वारंवार आचरित संसाररूपी समुद्र के तरण में सार ऐसे हरिजी के पदको आश्रयकरो ८१ रे रे विषयमें लोभी पामर निठुर मनुष्यो ! आत्मासे आत्माको रौरव नरकमें क्यों डालतेहो ८२ यदि विना परिश्रमही दुःखों के तरणकी वाञ्छा हो तो गोविन्दजी के सौम्यचरणों का सेवनकरो ८३ मोक्ष कारणमें कृष्णजी के चरणोंको भजो मनुष्य कहां से आया और कहां फिर जानाहै ८४ ऐसा विचारकर बुद्धिमान् धर्म के संग्रहको करै अनेकप्रकारके नरकोंके गिरने में यदि पुरुष उठे ८५ तो स्थावर आदिक देहको प्राप्त होकर यदि भाग्य के वशसे फिर मनुष्य जन्म को प्राप्तहो तहां गर्भका

वास अत्यन्त दुःख देनेवाला है ८६ हे ब्राह्मणो! फिर कर्मके वशसे प्राणी यदि पृथ्वी में उत्पन्नहो तो बाल्यादि बहुत दोषसे पीड़ित होता है ८७ फिर युवावस्था पाकर दारिद्र्य से पीड़ित होता है वा भारी रोग से अनावृष्टि आदि से ८८ वृद्धावस्था में इधर उधर नहीं कहनेवाली पीड़ाको प्राप्त होता है मनके चलन से रोग से फिर मरण को प्राप्त होताहै ८९ तिससे संसार में अधिकदुःखको पाता है फिर कर्म के वश से प्राणी यमलोक में पीड़ित होता है ९० तहां अत्यन्त यातनाको भोगकर फिर उत्पन्न होता है प्राणी उत्पन्न होता मरता, मरता फिर उत्पन्न होता है ९१ विना गोविन्द जी के चरणों की आराधना किये ऐसी दशा है विना परिश्रम से मरण और विना परिश्रम के जीवन ९२ गोविन्दजी के चरणकी आराधना न करनेवाले के नहीं होता है यदि घरमें धन हो तो तिसके रक्षा करनेसे क्याफल होताहै ९३ जब यह यमराजके दूतोंसे खींचा जाताहै तो क्या धनपीछे जाताहै तिससे ब्राह्मणों का सत्कार करने वाला द्रव्य सबसुख देता है ९४ दान स्वर्गकी सीढ़ी है दान पापनाश करनेवाला है गोविन्दजी की भक्तिका भजन है महापुण्यका बढ़ानेवाला है ९५ यदि मनुष्य में बलहो तो वृथा द्रव्यका खर्च न करै अतंद्रित होकर हरिजी के आगे नाच और गाना करै ९६ जो कुछ पुरुषों में विद्यमानहो वह कृष्णजी में अर्पण करदेवे कृष्ण जी में अर्पित कुशलका देनेवाला है अन्य से अर्पित सुखका देने वाला नहीं है ९७ नेत्रों से श्रीहरिजी की मूर्त्ति आदिका निरूपण करै कानों से रात्रि दिन कृष्णजी के गुण नामों को सुनै ९८ जीभ से चतुरों करके भगवान् के चरणजलका स्वाद लेना चाहिये नाक से गोविन्दजी के चरणकमल का तुलसीदल सूंघ ९९ त्वचा से हरिजी के भक्तको स्पर्शकर मन से तिनके पदको ध्यानकर प्राणी कृतार्थ होजाता है इस में विचारणा नहीं करनी चाहिये १०० बुद्धिमान् भगवान् में मनलगाये भगवान् में अन्तःकरण लगावे मनुष्य अन्त में भगवान्ही को प्राप्तहो इस में विचारणा नहीं करने योग्य है १०१ चित्त से ध्यानकिया गया जो अपने पदको

देता है ऐसे आदि और अन्तरहित नारायण को कौन मनुष्य न सेवन करै १०२ निरन्तर विष्णुजी के चरणकमल में चित्त लगावे भगवान् की प्रीतिके लिये यथाशक्ति दानकरै भगवान् के दोनों चरणोंमें नमस्कारके बुद्धिकी रतिभीकरै सो निश्चय मनुष्यलोकमें पूज्यताको प्राप्तहो १०३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

## बासठवां अध्याय ॥

पद्मपुराण और स्वर्गखण्डकी प्रशंसा वर्णन ॥

सूतजी बोले कि हे ऋषियो! इसप्रकार जिसकी महिमा संसारमें है लोकके निस्तारका कारण तिसपरेश अनेकप्रकार के शरीरधारी विष्णुके १ एक पुराणरूपहै तहां निश्चयकरके बड़ा श्रेष्ठ पद्मपुराण है हरिजीके ब्रह्मपुराण मस्तक है पद्मपुराण हृदयहै २ विष्णु पुराण दहना भुजाहै शिवपुराण महेशजीका बायां भुजाहै जंघा भागवत कहाहै नारदीय पुराण तोंदी है ३ दहना चरण मार्कण्डेय है बायां चरण अग्निपुराण है भविष्यपुराण दहिनी गांठ विष्णु महात्मा की है ४ ब्रह्मवैवर्तपुराण बाईं गांठ कहाहै लिंगपुराण दहना गुल्फ है वाराहपुराण बायां गुल्फहै ५ स्कन्दपुराण लोमहैं त्वचा वामनपुराण है कूर्मपुराण पीठ कहाहै मत्स्यपुराण मेदा कहाहै ६ गरुड़पुराण मज्जा कहाहै ब्रह्माण्ड हाड़ कहाहै एक पुराणके अंग हरि विष्णुजी हुयेहैं ७ तहां निश्चय पद्मपुराण हृदयहै जिसको सुनकर अमृतको भोग करता है यह पद्मपुराण आपही देवहरिजी हुयेहैं ८ जिसके एक अध्याय को पढ़कर सब पापों से छूटजाता है तहां आदि स्वर्ग खण्ड यह सब पद्मपुराणके फलका देनेवाला है ९ स्वर्गखण्ड को सुनकर जे महापापी भी हैं वे भी पापों से छूटजाते हैं पुरानी खाल से जैसे सांप छूटजाते हैं १० निश्चय यदि अत्यन्त दुराचार सब धर्मों से बाहर कियाहुआ आदि स्वर्गखण्डको सुनकर जिस फलको प्राप्त होनाहै ११ इस आदिस्वर्गखण्ड को सुनकर मनुष्य जिसी फलको प्राप्त होताहै माघ महीने में प्रयाग में मनुष्य प्रति दिन

स्नानकर १२ जैसे पापसे छूटजाताहै तैसेही सुनने से होताहै तिसने सुवर्णकी तुलादी सम्पूर्ण पृथ्वीदी १३ दरिद्र में जो ऋण कियाथा वह दानकिया हरिजीके सहस्रनाम वारंवार पढ़ने चाहिये १४ सब वेद तैसेही पढ़े तीन तीन कर्मकरे वृत्तिके दानसे बहुत पढ़ानेवाले स्थापितकरे १५ हे ब्राह्मणो! तिसने मनुष्योंको अभय दिया गुण-वान् ज्ञानवान् और धर्मवानों को पूजा १६ मेष और कर्कके मध्य में अत्यन्त शीतल जलदिया ब्राह्मणके अर्थ और गऊके लिये भी तिसने प्राण छोड़े १७ और अच्छे कर्म तिस बुद्धिमान्नेकिये जिसने सभामें आदिखंडसुना तथा सुनाया १८ स्वर्गखंड को पढ़कर अनेक प्रकारके भोगोंको भोगकरताहै सुखसे सोयाहुआ स्थानमें प्राप्तस्त्रियों को जगाताहै १९ किङ्किणी के शब्दके अच्छे शब्दों से तथा मीठे भाषणोंसे इन्द्रके अर्द्धासनको भोगता और इन्द्रलोकमें बहुत समय तक बसता है २० फिर सूर्यके स्थान फिर चन्द्रलोकको जाता फिर सप्तर्षि स्थानमें भोगोंको भोगकर फिर ध्रुवके स्थानको जाताहै २१ तदनन्तर ब्रह्माके लोकको प्राप्तहो तेजोमय देहधार तहांहीं ज्ञानको प्राप्तहोकर श्रेष्ठमोक्षको प्राप्तहोताहै २२ बुद्धिमान् मनुष्य सज्जनोंके साथ बसे अच्छे तीर्थमें स्नानकरै अच्छे आलापकोकरै और अच्छे शास्त्रको सुनै २३ तहां पद्मपुराण महावेद शास्त्र सबके फलका देने वालाहै तिसके मध्यमें स्वर्गखण्ड महापुण्य फलका देनेवालाहै २४ गोविन्दजीको भजो देवताओं में श्रेष्ठ एक हरिजी के नमस्कार करो अत्यन्त विमल भोगवाले लोकोंको जावो हे मनुष्यो! हरिजीके एक अतुलनामों को सुनो और कहो जो वीचियों के सुखसे तरने की इच्छाहो तो मनोवाञ्छित को प्राप्तहो २५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेरामविहारीसुकुलकृतभाषानु वादेद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

सम्पूर्णमिदमादिखण्डापरनामकमादिस्वर्ग खण्डंस्वर्गखण्डंवा ॥

अनेकप्रकारकी पुस्तकें इस यन्त्रालय में मुद्रित हुई हैं उनमें से जितने पुराणहैं उनसे चुनकर कुछ पुस्तकें नीचे लिखीजाती हैं ॥

## देवीभागवत भाषा क़ी० ३) पु०

इसका उलथा पण्डित महेशदत्त सुकुल ने कियाहै—इसमें मुख्य करके श्रीदेवीजी के पाठ आदिक का विस्तार और सर्व प्रकारकी शक्तियों का कथन और उनके अवतार, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, कवच, कीलक, अर्गला, पूजा, स्तोत्र, माहात्म्य, सदाचार, प्रातःकृत्य, रुद्राक्षमहिमा गायत्री और देवियों के पुरश्चरण का वर्णन, सन्ध्योपासन, ब्रह्मयज्ञादि असंख्य तन्त्र सम्बन्धी विषय हैं भाषा ऐसी स्पष्ट है कि साधारणलोग भी समझसक्ते हैं ॥

## लिङ्गपुराण क़ी० ॥।≈)

इसका उलथा छापेखाने के बहुतखर्च से जयपुरनिवासि पण्डित दुर्गाप्रसादजी ने भाषामें कियाहै-जिसमें अनेक प्रकारके इतिहास सूर्यवंश, चन्द्रवंश का वर्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल और खगोल का कथन, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और नागादिकी उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

## विष्णुपुराणभाषा वार्तिक क़ी० ॥।) पु०

इसका पण्डित महेशदत्त सुकुल ने भाषान्तर कियाहै जिसमें जगदुत्पत्ति, स्थिति, पालन, ध्रुव, पृथु आदि राजाओं की कथा, भूगोल, खगोल वर्णन, धर्मशास्त्र, मन्वन्तरकथा, और और सोमवंशी राजाओं का कथन इत्यादि बहुतसी कथायें संयुक्त हैं ॥

## विष्णुपुराणभाषाश्रीराजाअजीतसिंहवैकुण्ठवासीकृत क़ी० १॥) पु०

जिसको श्रीराजाप्रतापबहादुरसिंह ताल्लुक़दार व आनरेरी मजिस्ट्रेट व प्रेसीडेण्टप्रतापगढ़ ने छपवायाहै इसमें सम्पूर्ण विष्णुपुराण दोहा चौपाई इत्यादि अनेकप्रकार के ललित छन्दों में वर्णित है काग़ज़ सफ़ेद है ॥

## भविष्यपुराण क़ी० १≈)

# पद्मपुराण भाषा

## चतुर्थ ब्रह्मखण्ड

जिसमें

वैष्णवों के लक्षण, भगवान् के मन्दिर लीपने का माहात्म्य, दीपदान और जयंतीव्रत का माहात्म्य, कर्मविपाक, वैकुंठ प्राप्त होनेवाली पुण्य और राधाष्टमी का माहात्म्य, क्षीरसमुद्र का मथन, जन्माष्टमी और एकादशी का माहात्म्य इत्यादि अनेक विषय वर्णन कियेगये हैं ॥

जिसका

बाबू प्रयागनारायणजी की आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत तारगांवनिवासि पण्डित रामविहारी सुकुलने संस्कृत से प्रत्यक्षर का भाषानुवाद किया है ॥

पहलीबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर ( सी॰ आई॰ ई॰ ) के छापेखाने में छपा

सन् १८९९ ई० ॥

अनेकप्रकारकी पुस्तकें इस यन्त्रालय में मुद्रित हुई हैं उनमेंसे जितने पुराणहैं उनसे चुनकर कुछ पुस्तकें नीचे लिखीजाती हैं ॥

## देवीभागवत भाषा क़ी० ३) पु०

इसका उलथा पण्डित महेशदत्त सुकुल ने कियाहै—इसमें मुख्य करके श्रीदेवीजीके पाठ आदिक का विस्तार और सर्व प्रकारकी शक्तियों का कथन और उनके अवतार, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, कवच, कीलक, अर्गला, पूजा, स्तोत्र, माहात्म्य, सदाचार, प्रातःकृत्य, रुद्राक्षमहिमा, गायत्री और देवियों के पुरश्चरण का वर्णन, सन्ध्योपासन, ब्रह्मयज्ञादि असंख्य तन्त्र सम्बन्ध विषय हैं भाषा ऐसी स्पष्ट है कि साधारणलोग भी समझसक्ते हैं ॥

## लिङ्गपुराण क़ी० ॥।≈)

इसका उलथा छापेखाने के बहुतखर्च से जयपुरनिवासि पण्डित दुर्गाप्रसादजी ने भाषामें कियाहै-जिसमें अनेक प्रकारके इतिहास सूर्यवंश, चन्द्रवंश का वर्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल और खगोल का कथन, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और नागादिकी उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

## विष्णुपुराणभाषा वार्तिक क़ी० ॥।) पु०

इसका पण्डित महेशदत्त सुकुल ने भाषान्तर कियाहै जिसमें जगदुत्पत्ति, स्थिति, पालन, ध्रुव, पृथु आदि राजाओं की कथा, भूगोल, खगोल वर्णन, धर्मशास्त्र, मन्वन्तरकथा, सूर्य और सोमवंशी राजाओं का कथन इत्यादि बहुतसी कथायें संयुक्त हैं ॥

## विष्णुपुराणभाषाश्रीराजाअजीतसिंहवैकुण्ठवासीकृत क़ी० १॥) पु०

जिसको श्रीराजाप्रतापबहादुरसिंह तालुक़दार व आनरेरी मजिस्ट्रेट व प्रेसीडण्टप्रता-पगढ़ ने छपवायाहै इसमें सम्पूर्ण विष्णुपुराण दोहा चौपाई इत्यादि अनेकप्रकार के ललित छन्दों में वर्णित है काग़ज़ सफ़ेद है ॥

## भविष्यपुराण क़ी० १≈)

श्रीपण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासीकृत भाषाहै-इस में पौराणिक इतिहास, चारोंवर्णों के धर्म, स्त्रीशिक्षा व परीक्षा, व्रतोंके उद्यापन, शाकद्वीपीय ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति, कलियुगी राजाओंका राज्यसमय, गर्भिणी के धर्म, धेनुदानविधान, जलाशय, देवालय बनाने और वृक्ष लगाने का फल और सब प्रकारके दानोंका माहात्म्य आदि वर्णन किये गये हैं ॥

## शिवपुराण भाषा क़ी० १॥)

इसका पण्डित प्यारेलालजी ने उर्दू से हिन्दीभाषा में भाषानुवाद कियाहै इसमें शिवजी के निर्गुण व सगुण स्वरूप का वर्णन, सतीचरित्र, गिरिजाचरित्र, स्कन्दकथा, [illegible] काश्युपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिङ्गखण्ड, रुद्राक्ष व भस्ममाहात्म्य, व्रतविधि, भूगोल, [illegible] व आदि में छवों शास्त्रों के मतकी भूमिका भी संग्रहकीगई है ॥

## स्कन्दपुराणका सेतुमाहात्म्यखण्ड क़ी० ।≈)

पण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी का भाषा है इसमें सेतुबन्ध का माहात्म्य [illegible] तीर्थों का वैभव, [illegible] का माहात्म्य, [illegible] व रामेश्वर महादेव का [illegible] [illegible] भी कथायें हैं ॥

# पद्मपुराण भाषा

## चतुर्थ ब्रह्मखण्ड

जिसमें

वैष्णवों के लक्षण, भगवान् के मन्दिर लीपने का माहात्म्य, दीपदान और जयंतीव्रत का माहात्म्य, कर्मविपाक, वैकुंठ प्राप्त होनेवाली पुण्य और राधाष्टमी का माहात्म्य, क्षीरसमुद्र का मथन, जन्माष्टमी और एकादशी का माहात्म्य इत्यादि अनेक विषय वर्णन कियेगये हैं ॥

जिसका

बाबू प्रयागनारायणजी की आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशान्तर्गत तारगांवनिवासि पण्डित रामबिहारी सुकुलने संस्कृत से प्रत्यक्षर का भाषानुवाद किया है ॥

पहलीबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर ( सी, आई. ई ) के छापेखाने में छपा

सन् १८९९ ई० ॥

# पद्मपुराण भाषा ब्रह्मखण्डकी भूमिका ॥

---

प्रकटहो कि इस खण्डमें वैष्णवों के लक्षण, भगवान् के मन्दिर लीपनेका माहात्म्य, दीपदान और जयन्तीव्रतका माहात्म्य, कर्म-विपाक, वैकुण्ठ प्राप्त होनेवाली पुण्य, श्रीराधाष्टमी का माहात्म्य, समुद्र मथनेका उद्योग, क्षीरसमुद्रका मथन, लक्ष्मीजी के बृहस्पति के व्रतोंकावर्णन, ब्राह्मणका पालन, भगवान् की जन्माष्टमीका व्रत, ब्राह्मण और एकादशीका माहात्म्य, भगवान्को घीसमेत लाई और कौड़ी देने का माहात्म्य और भगवान् के चरणोदक का माहात्म्य, पापोंके प्रायश्चित्तोंका वर्णन, विष्ठा और मूत्रके खालेने और मदि-राके स्पर्शआदि पापकर्मों का प्रायश्चित्त, राधा और कृष्ण जी की पूजाका माहात्म्य, कार्तिक महीने की विधि और नियमोंका वर्णन, तुलसीजी, विष्णुपञ्चक और दानों के माहात्म्य का वर्णन, पुराण बाँचनेवाले के पूजनआदिका फल, प्रतिज्ञा के पालने और न पा-लने के दोषों का वर्णन इत्यादि विषय मनोहर भाषा में वर्णित हैं जिसको बाबू प्रयागनारायणजी की आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशा-न्तर्गत तारगांवनिवासि पण्डित रामविहारी सुकुल ने भगवद्भक्तों के उपकारके लिये संस्कृत से प्रत्यक्षरका भाषानुवाद कियाहै और उत्तम अक्षरों में सफ़ेद कागज़ पर छापागया है यह पुराण ऐसा उत्तम है कि इसमें कोई कथा ऐसी नहीं है जो इसमें न हो और दूसरे पुराणमें विद्यमानहो इससे यह पुराण प्रत्येक भगवद्भक्त के घर में रहना चाहिये—आशा है कि इसको देखकर भगवद्भक्त अत्यन्त प्रसन्नहोकर प्रसन्नतापूर्वक ग्रहणकरेंगे और यन्त्रालयाध्यक्ष को धन्यवाद देंगे ॥

मैनेजर नवलकिशोर
प्रेस लखनऊ

---

इस मतबे में जितने प्रकारकी पुराणों की पुस्तकें छपी हैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखी जाती हैं ॥

---

## लिंगपुराणभाषा क़ीमत ॥॥≈)

इसका उल्था छापेखाने के बहुत खर्च से जयपुरनिवासि पण्डित दुर्गाप्रसाद जीने भाषा में किया है जिसमें अनेक प्रकार के इतिहास, सूर्यवंश चन्द्रवंशका वर्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल और खगोलका कथन, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और नागादिकी उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

## शिवपुराण भाषा क़ीमत १॥)

इसका पण्डित प्यारेलालजी ने उर्दू से हिन्दीभाषा में अनुवाद किया है इसमें शिवजी के निर्गुण सगुण स्वरूपका वर्णन, सतीचरित्र, गिरिजाचरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, काश्युपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिंगखण्ड, रुद्राक्ष व भस्म माहात्म्य, व्रतविधि, भूगोल, खगोल व आदि में छहोंशास्त्रों के मतकी भूमिका भी संयुक्त कीगई है ॥

## शिवपुराण दोहा चौपाई में क़ीमत ॥) पु०

जिसमें अत्यन्त[illegible] कथा[illegible]श्री[illegible]पार्वतीजी[illegible] की दोहा चौपाई आदि छन्दों में रामायण तुलसीदासकृत की भाँति[illegible]से वर्णितहैं जिसके पढ़ने व सुनने से सम्पूर्ण दुःख दूर होजाताहै और चित्तमें अतीव प्रसन्नता प्राप्त होती है अन्त मोक्ष लाभ होता है ॥

## बारहोंस्कन्ध श्रीमद्भागवत क़ीमत ७) पु०

इसके भाषा टीकाको श्रीअंगदशास्त्रीजी ने अक्षर२ के अर्थको ललित [illegible] बोली में रचना कियाहै यह टीका ऐसा मनोहर हुआहै कि जिसको महावरा[illegible] थोड़ा भी जाननेवाला भागवत को अच्छीतरह से समझसक्ता है यह पुस्तक प्र[illegible]त्येक विद्वान् के पास रहनी चाहिये क्योंकि भागवत बड़ा कठिन पुराण है बिना ऐसे सहज भाषा टीका के सबको श्लोकार्थ नहीं समझ पड़ता है इसका [illegible]

# पद्मपुराण भाषा ब्रह्मखण्डकी भूमिका ॥

प्रकटहो कि इस खण्डमें वैष्णवों के लक्षण, भगवान् के मन्दिर लीपनेका माहात्म्य, दीपदान और जयन्तीव्रतका माहात्म्य, कर्म-विपाक, वैकुण्ठ प्राप्त होनेवाली पुण्य, श्रीराधाष्टमी का माहात्म्य, समुद्र मथनेका उद्योग, क्षीरसमुद्रका मथन, लक्ष्मीजी के वृहस्पति के व्रतोंकावर्णन, ब्राह्मणका पालन, भगवान् की जन्माष्टमीका व्रत, ब्राह्मण और एकादशीका माहात्म्य, भगवान्को घीसमेत लाई और कौड़ी देने का माहात्म्य और भगवान् के चरणोदक का माहात्म्य, पापोंके प्रायश्चित्तोंका वर्णन, विष्ठा और मूत्रके खालेने और मदि-राके स्पर्शआदि पापकर्मों का प्रायश्चित्त, राधा और कृष्ण जी की पूजाका माहात्म्य, कार्तिक महीने की विधि और नियमोंका वर्णन, तुलसीजी, विष्णुपञ्चक और दानों के माहात्म्य का वर्णन, पुराण बाँचनेवाले के पूजनआदिका फल, प्रतिज्ञा के पालने और न पा-लने के दोषों का वर्णन इत्यादि विषय मनोहर भाषा में वर्णित हैं जिसको बाबू प्रयागनारायणजी की आज्ञानुसार उन्नामप्रदेशा-न्तर्गत तारगांवनिवासि पण्डित रामबिहारी सुकुल ने भगवद्भक्तों के उपकारके लिये संस्कृत से प्रत्यक्षरका भाषानुवाद कियाहै और उत्तम अक्षरों में सफ़ेद कागज़ पर छापागया है यह पुराण ऐसा उत्तम है कि इसमें कोई कथा ऐसी नहीं है जो इसमें न हो और दूसरे पुराणमें विद्यमानहो इससे यह पुराण प्रत्येक भगवद्भक्त के घर में रहना चाहिये—आशा है कि इसको देखकर भगवद्भक्त अत्यन्त प्रसन्नहोकर प्रसन्नतापूर्वक ग्रहणकरेंगे और यन्त्रालयाध्यक्ष को धन्यवाद देंगे ॥

मैनेजर नवलकिशोर
प्रेस लखनऊ

# पद्मपुराण भाषा ब्रह्मखण्ड का सूचीपत्र ॥



इति ॥

# पद्मपुराण भाषा ॥

## चतुर्थ ब्रह्मखण्ड ॥

## पहला अध्याय ॥

### वैष्णवों के लक्षणों का वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! कलियुगके प्राप्त होनेमें प्राणियोंका किसकर्म्म से उद्धार होताहै तिसको मेरे आगे कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ तुमहो और निरन्तर सबमनुष्यों के कल्याण की वाञ्छा करतेहो २ इसको जैमिनिने पूर्व्वसमय में सब जाननेवाले, सबसे पूजित, व्यास ब्राह्मणसे पूंछाथा तिसको व्यासजीने जो कहा था तिसको हे वैष्णव शौनक! सुनिये ३ मुनियों में श्रेष्ठ जैमिनि सब ग्रंथों के पारगामी, सत्यवतीजी के पुत्र गुरु व्यासजी के दण्डवत् प्रणामकर पूंछतेभये ४ कि कलियुगमें मनुष्यों का किस थोड़े पुण्य से मोक्षहोताहै क्योंकि मनुष्य थोड़ी उमरवाले होतेहैं तिसको मुझ से कहिये ५ तब व्यासजी बोले कि हे विप्र! हे प्रभो! साधुओं के संग से शास्त्रोंका सुनना होताहै तिससे भगवान् की भक्ति तिससे ज्ञान और तिससे गति होती है ६ जिस अत्यन्त पापी मनुष्य के कर्णों में कथा नहीं अच्छी लगती है तो वह वैष्णव ब्राह्मणों पा-

पियों में श्रेष्ठ जानना चाहिये ७ श्रीकृष्णजीकी कथा सुनकर वैष्णव आनन्दित होता है और तिसको जो झूठकहताहै तो वह पापियों का गुरु जाननेयोग्यहै ८ जिसजिस स्थानमें कृष्णजीकी कथा होती है तिस तिसको भगवान् छोड़कर कहीं नहीं जाते हैं ९ जो अधम मनुष्य कृष्णजीकी कथाके आरम्भमें विघ्नकरताहै उसकी सौमन्वन्तर पर्यन्त नरकसे निष्कृति नहीं होती है १० जे पुराणकी कथा सुनकर निन्दाकरते और हँसते हैं उनके हाथों में बहुत क्लेश देनेवाले नरक सदैव स्थित रहते हैं ११ जो श्रीकृष्णजी के चरित्र सुनने की इच्छा करताहै तिसके और जन्मके इकट्ठे किये पाप तिसी क्षणसे नाश होजाते हैं १२ और भक्तिसे जो श्रीकृष्णचरित्रों को सुनताहै तो नहीं जानते तिसकी क्या गतिहोगी १३ पापी मनुष्य के ब्रह्म-हत्या आदिक पाप, पराई स्त्रीका हरना, मदिरा पीना और चोरी ये सब पाप नाश होजाते हैं १४ जो मनुष्य पापको करके पीछे से पाप को निवृत्त करताहै तो उसके पाप इसप्रकार नाश होजाते हैं जैसें अग्निसे रुईका समूह नाश होजाताहै १५ और जिसके घरमें श्री-कृष्णजी के चरित्रवाली पुस्तक स्थित रहती है तिसके घरके पास यमराजके दूत नहीं आते हैं १६ तब जैमिनिजी बोले कि हे गुरो व्यासजी! वैष्णव किनको कहते हैं इससमय में तिनके जानने और तिन्हीं के उत्तम माहात्म्य जानने की मेरे वाञ्छा है तिसको आप कहिये १७ तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण! जैमिनि! जो पापी मनुष्य वैष्णवों के चरणों के धोये जलको भक्तिसे मस्तक में सींच-ता है तो उसको तीर्थ के स्नान की कुछ आवश्यकता नहीं है १८ जो मनुष्य एक क्षण वा आधाही क्षण साधुओं का संग करता है तो उसके ब्रह्महत्याआदिक पाप नाश होजाते हैं १९ जिसके कुल में एक भी वैष्णव होता है तो उसका कुल जो पापों से युक्त हो तो मोक्षको प्राप्त होजाता है २० जे मनुष्य हिंसा, दम्भ, काम, क्रोध, लोभ और मोहसे हीन होते हैं वे वैष्णव जानने चाहिये २१ पिता के भक्त, दयायुक्त, सब प्राणियों के हित में रत, मत्सरहीन और सत्य बोलने वाले वैष्णव जानने चाहिये २२ ब्राह्मणों की भक्ति में

रत, पराई स्त्रियों में नपुंसक और जे एकादशी के व्रत में रत होते हैं वे वैष्णव जानने योग्य हैं २३ जे तुलसी की माला धारण करने वाले हरिजी के नामों को गाते और हरिजी के चरणजलों से सींचे जाते हैं वे वैष्णव जानने चाहिये २४ जिनके कानों और माथे में उत्तम तुलसीजी का पत्र कभी दिखाई पड़ता है तो वे वैष्णव जानने योग्य हैं २५ पाखण्डियों के संग से रहित, ब्राह्मण के वैर से हीन और जे तुलसीजी को सींचते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये २६ जे तुलसी से हरिजी को पूजते, कन्यादान में जे रत, अतिथि को जे पूजते २७ और विष्णुजी के चरित्रों को जे सुनते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं जिसके घरमें शालग्राम की मूर्त्ति स्थित होती है २८ हरिजी के स्थान को बहारते, पितृयज्ञ करते और दीन मनुष्य में जे दयाकरते हैं वे वैष्णव जानने चाहिये २९ पराई और ब्राह्मण की द्रव्य जे विषकी नाईं देखते हैं और जे भगवान् की नैवेद्य को भोजन करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ३० जे वेदशास्त्र में अनुरक्त, तुलसी के वनके पालनेवाले और राधाष्टमी व्रतमें रतहैं वे वैष्णव जानने चाहिये ३१ जे श्रीकृष्णजी के आगे श्रद्धासे दीपदेते और पराई निन्दा नहीं करते हैं वे वैष्णव जानने योग्यहैं ३२ सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन् शौनक! जैमिनिजी के पूछने पर व्यासजी ने यह जिसतरह से कहा और मैंने जो प्रसंग से गुरुजी से सुना तिसको इसी क्रमसे कहा है ३३ जे उत्तम मनुष्य श्रद्धायुक्त होकर इस अध्याय को सुनते हैं वे सब पापों से छूटकर विष्णुजी के परंपद को प्राप्त होते हैं ३४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेव्यासजैमिनिसंवादेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

## दूसरा अध्याय ॥

भगवान् के मन्दिर के लीपने का माहात्म्य वर्णन ॥

सूतजी बोले कि हे शौनक! व्यास और जैमिनिजी के संवाद, सुननेवालों के पाप नाश करनेहारे पुराने धर्म को कहताहूं सुनिये १ जैमिनि बोले कि हे गुरो! हे प्रभो! पापी मनुष्य किस कर्म से

भगवान् के मन्दिर को जाता है यह इस समय में मुझसे कहिये २ तब व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! जो मनुष्य श्रीकृष्णजी के मंदिर में लीपताहै वह सब पापोंसे छूटकर श्रांत होकर हरिजी के स्थान को जाताहै ३ जो भगवान् के मन्दिर में जलसे लीपता है तिसके पुण्य को मैं संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ४ हे उत्तम ब्राह्मण! तहां पर जितनी धूलि दिखाई पड़ती हैं तितनेही हजार कल्प वह विष्णुजी के मन्दिर में बसताहै ५ पूर्वसमय द्वापर युगमें दण्डकनाम चोर हुआहै यह मनुष्यों को भय देनेवाला, ब्राह्मणोंकी द्रव्य चुरानेवाला, मित्रों का नाश करनेहारा, ६ झूंठ बोलनेवाला, क्रूर, पराई स्त्री के गमनमें रत, गऊका मांस खानेवाला, मदिरा पीनेवाला, पाखण्डी, मनुष्यों का संग सेवन करनेवाला, ७ ब्राह्मणों की जीविका छीनने वाला, न्यास का हरनेहारा, शरणागतों के नाशनेवाला और वेश्याओं के हावभाव कटाक्ष में लोलुपथा ८ एक समय में यह मूढ़बुद्धि किसी विष्णुजी के स्थानमें भगवान् की द्रव्य चुराने के लिये गया ९ तदनन्तर देवस्थान के द्वारमें प्रवेशकर यह चोर कीचड़ से युक्त अपने सब पांवको निम्नभूमि में पोंछता भया १० तो इसी कर्म से पृथ्वी लीपी होगई और आनन्दसे लोहकी शलाकाओं से किंवाड़को उखाड़कर ११ भगवान् के स्थान में प्रवेश करताभया जोकि श्रेष्ठ विमानों से शोभायमान, रत्न और सोने के दीपोंसेयुक्त, बड़े अन्धकार से रहित, १२ अनेक प्रकार के सुगन्धित फूलों से युक्त, अनेक बर्तनों से आकुल और सुगन्धित तेल की सुगन्धसे परिपूर्ण है १३ तहांपर इस चोरने सुन्दर मनोहर शय्या में राधासमेत सोतेहुए पीताम्बरधारी भगवान् को देखा १४ और राधिका के स्वामी को प्रणामकर तिससमय में पापरहित होगया फिर यह कहनेलगा कि चोरी करूं या न करूं इससे क्या मेरा होगा १५ सेवा करने में तो मैं समर्थ नहीं हूं जिससे कि मैं सदैव चोरहूं द्रव्यसे कार्य्य होताहै यह कहकर द्रव्य चुराने के लिये मनकर १६ पृथ्वी में भगवान् के रेशमी कपड़ेको बिछाकर सब वस्तुओं को बांध कर हाथ में कर कांपताभया १७ तब मायापति विष्णुजी के सब

बर्तन इत्यादिक बड़ा शब्दकर कांपने से पृथ्वी में गिरपड़े १८ तो वहांके बहुतसे मनुष्य जगकर दौड़कर वहांआगये तब चोर शीघ्रता से द्रव्यको १९ और धनको वहीं छोड़कर कुछ भगा कुछ दूरगया है कि उसको कालरूपी सांपने काटखाया तो वह पापहीन मरगया २० तब यमराजजीकी आज्ञासे उनके दूत फँसरी और मुद्गर हाथ में लिये, बड़ी डाढ़ां और चमड़े के कपड़े धारण कर चोरके लेने के लिये प्राप्तहोगये २१ और उसको चमड़ेकी फँसरी से बांधकर दुर्गम राहसे लेगये तिसको देखकर क्रोधयुक्त होकर यमराजजी चित्रगुप्त मन्त्री से पूंछतेभये २२ कि हे बुद्धिमान् चित्रगुप्त! इसने क्या पाप वा पुण्यकर्म्म कियाहै मूलसमेत मेरे आगे कहो २३ तब चित्रगुप्त बोले कि हे लोकोंके स्वामी! हे यमुनाजीके भाई! ब्रह्माने पृथ्वी में जितने पाप बनाये हैं वे सब इस मूर्खने किये हैं यह मैं सत्यही कहता हूं २४ किन्तु इसका सब पाप नाश करनेवाला सुकृतभी है तिसको सुनिये २५ तब धर्म्मराज बोले कि हे मंत्री! इसकी क्या पुण्य वर्तमान है तिस को मेरे आगे कहिये उसको सुनकर जिस योग्य यह होगा वैसा करूंगा २६ यमराजजी के ये वचन सुनकर डरसमेत चित्रगुप्त अपने स्वामी के हाथ जोड़कर बोले २७ कि हे राजन्! यह पापियों में श्रेष्ठ भगवान् की द्रव्य चुराने के लिये गयाथा वहां भगवान् के द्वारमें अपने पांवों के कीचड़को पोंछदिया था २८ उस से पृथ्वी लीपी, बिल और छेदों से रहित होगई थी तिसी पुण्य के प्रभाव से बड़े भारी पाप इसके सब नष्ट होगये यह तुम्हारे दण्डसे निकल कर बैकुण्ठ जाने के योग्य है २९ व्यासजी बोले कि चित्रगुप्त के ये वचन सुनकर यमराज जी तिसको सोने का पीठ बैठने के लिये देतेभये वहां पर वह बैठा तब यमराजजी ने उसकी पूजाकी ३० और नम्रतायुक्त होकर शिर से नमस्कार कर उससे बोले कि तुम्हारे चरणों की धूलियों से इस समय में मेरा मन्दिर पवित्र हुआ है ३१ और मैं निस्सन्देह कृतार्थ हुआहूं हे साधो! इस समय में भगवान् के उत्तम मन्दिर को जाइये ३२ जो कि अनेक प्रकार के भोगों से युक्त जन्म और मृत्यु का निवारण

भगवान् के मन्दिर को जाता है यह इस समय में मुझसे कहिये २ तब व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! जो मनुष्य श्रीकृष्णजी के मंदिर में लीपता है वह सब पापोंसे छूटकर श्रांत होकर हरिजी के स्थान को जाताहै ३ जो भगवान् के मन्दिर में जलसे लीपता है तिसके पुण्य को मैं संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ४ हे उत्तम ब्राह्मण! तहां पर जितनी धूलि दिखाई पड़ती हैं तितनेही हजार कल्प वह विष्णुजी के मन्दिर में बसताहै ५ पूर्वसमय द्वापर युगमें दण्डकनाम चोर हुआहै यह मनुष्यों को भय देनेवाला, ब्राह्मणोंकी द्रव्य चुरानेवाला, मित्रों का नाश करनेहारा, ६ झूंठ बोलनेवाला, क्रूर, पराई स्त्री के गमनमें रत, गऊका मांस खानेवाला, मदिरा पीनेवाला, पाखण्डी, मनुष्यों का संग सेवन करनेवाला, ७ ब्राह्मणों की जीविका छीनने वाला, न्यास का हरनेहारा, शरणागतों के नाशनेवाला और वेश्याओं के हावभाव कटाक्ष में लोलुपथा ८ एक समय में यह मूढ़-बुद्धि किसी विष्णुजी के स्थानमें भगवान् की द्रव्य चुराने के लिये गया ९ तदनन्तर देवस्थान के द्वारमें प्रवेशकर यह चोर कीचड़ से युक्त अपने सब पांवको निम्नभूमि में पोंछता भया १० तो इसी कर्म से पृथ्वी लीपी होगई और आनन्दसे लोहकी शलाकाओं से किंवाड़को उखाड़कर ११ भगवान् के स्थान में प्रवेश करताभया जोकि श्रेष्ठ विमानों से शोभायमान, रत्न और सोने के दीपोंसेयुक्त, बड़े अन्धकार से रहित, १२ अनेक प्रकार के सुगन्धित फूलों से युक्त, अनेक वर्तनों से आकुल और सुगन्धित तेल की सुगन्धसे परिपूर्ण है १३ तहांपर इस चोरने सुन्दर मनोहर शय्या में राधासमेत सोतेहुए पीताम्बरधारी भगवान्को देखा १४ और राधिका के स्वामी को प्रणामकर तिससमय में पापरहित होगया फिर यह कहनेलगा कि चोरी करूं या न करूं इससे क्या मेरा होगा १५ सेवा करने में तो मैं समर्थ नहीं हूं जिससे कि मैं सदैव चोरहूं द्रव्यसे कार्य्य होताहै यह कहकर द्रव्य चुराने के लिये मनकर १६ पृथ्वी में भगवान् के रेशमी कपड़ेको बिछाकर सब वस्तुओं को बांध कर हाथ में कर कांपताभया १७ तब मायापति विष्णुजी के मन

बर्तन इत्यादिक बड़ा शब्दकर कांपने से पृथ्वी में गिरपड़े १८ तो वहांके बहुतसे मनुष्य जगकर दौड़कर वहांआगये तब चोर शीघ्रता से द्रव्यको १९ और धनको वहीं छोड़कर कुछ भगा कुछ दूरगया है कि उसको कालरूपी सांपने काटखाया तो वह पापहीन मरगया २० तब यमराजजीकी आज्ञासे उनके दूत फँसरी और मुद्गर हाथ में लिये, बड़ी डाढ़ों और चमड़े के कपड़े धारण कर चोरके लेने के लिये प्राप्तहोगये २१ और उसको चमड़ेकी फँसरी से बांधकर दुर्गम राहसे लेगये तिसको देखकर क्रोधयुक्त होकर यमराजजी चित्रगुप्त मन्त्री से पूछतेभये २२ कि हे बुद्धिमान् चित्रगुप्त! इसने क्या पाप वा पुण्यकर्म्म कियाहै मूलसमेत मेरे आगे कहो २३ तब चित्रगुप्त बोले कि हे लोकोंके स्वामी! हे यमुनाजीके भाई! ब्रह्माने पृथ्वी में जितने पाप बनाये हैं वे सब इस मूर्खने किये हैं यह मैं सत्यही कहता हूं २४ किन्तु इसका सब पाप नाश करनेवाला सुकृतभी है तिसको सुनिये २५ तब धर्म्मराज बोले कि हे मंत्री! इसकी क्या पुण्य वर्तमान है तिस को मेरे आगे कहिये उसको सुनकर जिस योग्य यह होगा वैसा करूंगा २६ यमराजजी के ये वचन सुनकर डरसमेत चित्रगुप्त अपने स्वामी के हाथ जोड़कर बोले २७ कि हे राजन्! यह पापियों में श्रेष्ठ भगवान् की द्रव्य चुराने के लिये गयाथा वहां भगवान् के द्वारमें अपने पांवों के कीचड़को पोंछदिया था २८ उस से पृथ्वी लीपी, बिल और छेदों से रहित होगई थी तिसी पुण्य के प्रभाव से बड़े भारी पाप इसके सब नष्ट होगये यह तुम्हारे दण्डसे निकल कर वैकुण्ठ जाने के योग्य है २९ व्यासजी बोले कि चित्रगुप्त के ये वचन सुनकर यमराज जी तिसको सोने का पीठ बैठने के लिये देतेभये वहां पर वह बैठा तब यमराजजी ने उसकी पूजाकी ३० और नम्रतायुक्त होकर शिर से नमस्कार कर उससे बोले कि तुम्हारे चरणों की धूलियों से इस समय में मेरा मन्दिर पवित्र हुआ है ३१ और मैं निस्सन्देह कृतार्थ हुआहूं हे साधो! इस समय में भगवान् के उत्तम मन्दिर को जाइये ३२ जो कि अनेक प्रकार के भोगों से युक्त जन्म और मृत्यु का निवारण

करनेवाला है व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! ऐसा कहकर धर्मराज सोने के बनेहुए रथ ३३ राजहंसों से युक्तमें उस पापरहित को चढ़ाकर सब सुख देनेवाले भगवान् के स्थानको भेजतेभये ३४ इस प्रकार वह वैकुण्ठ में गया और बहुतकाल वहां सुखसे स्थितरहा जे भक्तिसे भगवान् के मन्दिर को लीपते हैं ३५ तिनके पुण्य को मैं नहीं जानताहूं कि क्याहोगा जो भक्तिसे एकाग्रचित्त होकर इस को सुनता वा पढ़ताहै ३६ तो उसके करोड़ जन्मके इकट्ठे कियेहुए पाप निस्संदेह नाश होजाते हैं ३७ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेहरिमन्दिरलेपनमाहात्म्यंनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

# तीसरा अध्याय ॥

दीपदानका माहात्म्य वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी ! कार्तिक का माहात्म्य मेरे आगे कहिये कार्तिक के व्रत का क्या फल है और न व्रत करने में क्या दोष है १ तब सूतजी बोले कि हे शौनक ! पूर्वसमय में जैमिनि ने सत्यवती के पुत्र व्यासजीसे यह पूछा था तब व्यासजी कहने का प्रारंभ करते भये हैं २ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! जो मनुष्य शुभ देनेवाले कार्तिक में तिलके तेल और मैथुन को छोड़ देताहै वह बहुत जन्मों के कियेहुए पापों से छूटकर भगवान् के स्थान को जाता है ३ जो मनुष्य कार्तिक में मछली और मैथुनको नहीं त्याग करता है वह मूर्ख प्रत्येक जन्म में निश्चय सुअर होता है ४ कार्तिक में तुलसी के पत्रोंसे भगवान् को जो मनुष्य पूजन करता है वह पत्रमें अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्त होताहै ५ और कार्तिकमें अगस्त्य के फूलोंसे जो भगवान् को पूजन करता है वह हरिजीकी कृपासे देवताओं के दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताहै ६ जो उत्तममनुष्य कार्तिक में अगस्त्य के शाकको भोजन करता है उसके एक शाकहीसे सालभरके कियेहुए पाप नाश होजाते हैं ७ और जो मनुष्य भगवान् के प्यारे कार्तिक महीने में अगस्त्य के फलको भगवान्

को देकर भोजन करता है तो उस के करोड़ जन्मके पापनाश हो जाते हैं ८ जो घी से युक्त सुन्दर रस को भगवान् को देता है वह सब पापोंसे छूटकर भगवान् के स्थान को जाता है ९ कार्तिक में जो मनुष्य एक कमल भगवान् को देताहै वह सब पापों से रहित होकर अन्त में विष्णुपद को जाता है १० जो मनुष्य श्रीहरिजी के प्यारे कार्तिक में प्रातःकाल स्नान करता है वह सब तीर्थों में स्नान करने के फल को प्राप्त होता है ११ कार्तिक में जो ब्राह्मण मनुष्य आकाश में दीप देताहै वह ब्रह्महत्या आदिक पापों से छूट कर भगवान् के स्थान को जाताहै १२ जो कार्तिक में भगवान्की प्रीतिके लिये मुहूर्तमात्र भी आकाश में दीप देताहै तो उसके ऊ-पर हरिजी सदैव प्रसन्न रहते हैं १३ जो ब्राह्मण कार्तिक में कृष्ण-जीको घरमें घी समेत दीप देताहै वह दिन दिन में अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्त होताहै १४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! दीपका इतिहास स-मेत मैं माहात्म्य कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये १५ पूर्वसमय त्रेतायुग में वैकुण्ठनाम पवित्र ब्राह्मण हुआ है जिसके संग के प्र-भावसे पापी मुक्त होताहै १६ एक समय में ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वैकुंठ हरिजी के आगे घीसे पूर्ण दीप देकर घरको चलाआया १७ तब दीप के घी खानेके लिये मूसा आताभया जबतक मूसा खाने का प्रारंभ करै तबतक दीप अधिक प्रज्वलित हो गया १८ तो मूसा अग्नि के डरसे वेग से भागा तब तो भगवान् की कृपासे मूसे के सब पाप नाश होगये १९ फिर सांपने मूसेको काटा तो मूसाप्राण त्याग करताभया तब यमराजजीकी आज्ञासे उनके दूत पाश और मुद्गर हाथ में लेकर २० तिसके लेने के लिये आतेभये और चर्म की रस्सियों से बांधकर जबतक लेजाने का मन करते भये तभी शंख, चक्र, गदा धारे २१ विष्णुजी के दूत चारभुजावाले गरुड़ पर चढ़कर प्राप्त होगये और आकाश में राजहंसों से युक्त, शुभ विमान २२ शुद्ध सोने से बनाहुआ इच्छा के अनुसार जानेवाला भगवान् की कृपासे प्राप्त होताभया तब भगवान् के दूत मूसे की फँसरी काटकर यमराज के दूतोंसे बोले २३ कि रे मूर्खो! यह

जीका सबकी [illegible] इनने व्यर्थही बन्धन किया है इससे जो जीवनेकी वाञ्छा है [illegible] २४ ये विष्णुदूतों के वचन सुनकर कँपकर नम्रतायुक्त होकर यमराज के दूत पूंछतेभये कि किस पुण्यके प्रभाव से आपलोग इसको भगवान् के पुरको लिये जातेहौ २५ यह तो महापापी है यह आप कहने के योग्य हैं तब भगवान् के दूत बोले कि वासुदेवजी के आगे दीप को इसने प्रज्वलित किया है २६ हे यमदूतो! तिसी कर्म्म से हमलोग विष्णुजीके मन्दिरको लियेजाते हैं जो विना इच्छाके भी विष्णुजी के दीपको प्रज्वलित करता है २७ वह करोड़ जन्मोंके इकट्ठे कियेहुए पापोंको छोड़कर भगवान् के स्थानको जाताहै और जो भक्तिसे कार्तिकमें भगवान् के दिनों में दीप देता है २८ तिसकी पुण्य को हरिजी के विना कोई कहने में समर्थ नहीं है और जो घीसे पूर्णदीप भक्तिसे भगवान्के स्थान में देताहै २९ तिसको हजार अश्वमेधयज्ञ करनेका कुछ प्रयोजन नहीं है अश्वमेधयज्ञ का करनेवाला और एकादशी में ३० कार्तिक में दीप देनेवाला भी भगवान् के स्थान को जाता है व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! यह सुनकर यमराज के दूत तो जैसे आयेथे वैसेही चलेगये तब भगवान्के दूत उस मूसेको रथमें कर भग[illegible] स्थान [illegible] भये तो उसको सौ मन्वन्तर विष्णुजी के सम[illegible] ते बीत[illegible] ३१।३२ तदनन्तर मूसा भगवान्

तरने के लिये नावरूप हैं इससे जयन्ती के माहात्म्य को कहिये मनुष्यों को कब करनी चाहिये १ तब सूतजी बोले कि हे ब्राह्मण! हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक! जो तुमने पूंछा है तिसको मैं कहताहूं इसको देवस्थान में पूर्वसमय में नारदजी ने ब्रह्माजीसे पूछाथा २ नारदजी बोले कि हे पितामह ब्रह्माजी! जयन्ती के माहात्म्य को कहिये जिसको सुनकर मैं विष्णुजी के परमपद को जाऊं ३ तब ब्रह्माजी बोले कि हे ब्राह्मण नारद! तुम्हारे आगे कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनो जयन्ती के व्रत करनेसे कर्ता विष्णुलोकको जाता है ४ हे मुने! जयन्ती स्मरण और कीर्तन करनेसे सात जन्म के इकट्ठे कियेहुए पापों को जला देती है फिर व्रत करनेवाले के पुण्य का तो कहनाही क्या है ५ भादों में जन्माष्टमी, चैत्र में शुक्लपक्ष में शुभकारिणी नवमी, फाल्गुन में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, वैशाख में शुक्लपक्ष की चतुर्दशी, ६ कुँवार में दुर्गाष्टमी और शुक्लपक्ष की श्रवणयुक्त द्वादशी ये छः महापुण्यकारिणी और शुभ देनेवाली जयंती कहाती हैं ७ भादों में कृष्णपक्षकी जन्माष्टमी प्रसिद्ध, पापनाश करनेवाली, करोड़ यज्ञों और दशहज़ार तीर्थों के समानहै ८ जयंती के व्रतकरने में कर्ता दिन दिनमें हज़ार गौवों के देने के फलकोप्राप्त होताहै ९ जो कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहण में हज़ारभार सोना देने में फल पाता है तिसी फलको जयन्ती में व्रत करनेवाला भी पाता है १० हज़ार कृष्णवर्ण मृगछाला और सौ तिलधेनु के देने के फल को जयन्ती में व्रत करने से पाता है ११ हज़ार करोड़ कन्याओं के दान करने में जो फल होता है वह जयंती में व्रत करने से प्राप्त होता है १२ समुद्रपर्यन्त इस पृथ्वी के देने में जो फल मिलता है वह फल जयंती में व्रत करने से प्राप्त होता है १३ देवता के स्थान में बावली, कुँवां और तालाब आदि के बनवाने में जो फल होता है वह फल जयंती के व्रत करने में मिलता है १४ जो माता, पिता और गुरुओं की भक्ति करने से फल होता है वह जयंती में व्रत करने से मिलता है १५ आपदा हरने के लिये तीर्थसेवा में आत्मा करनेवाले और सत्यव्रतवालों को जो फल मिलता है वह फल

जीका भक्तहै इसका तुमने व्यर्थही बन्धन किया है इससे जो जीवनेकी वाञ्छा हो तो जावो २४ ये विष्णुदूतों के वचन सुनकर कँप कर नम्रतायुक्त होकर यमराज के दूत पूंछतेभये कि किस पुण्यके प्रभाव से आपलोग इसको भगवान् के पुरको लिये जातेहो २५ यह तो महापापी है यह आप कहने के योग्य हैं तब भगवान् के दूत बोले कि वासुदेवजी के आगे दीप को इसने प्रज्वलित किया है २६ हे यमदूतो! तिसी कर्म्म से हमलोग विष्णुजीके मन्दिरको लियेजाते हैं जो विना इच्छाके भी विष्णुजी के दीपको प्रज्वलित करता है २७ वह करोड़ जन्मोंके इकट्ठे कियेहुए पापोंको छोड़कर भगवान् के स्थानको जाताहै और जो भक्तिसे कार्तिकमें भगवान् के दिनों में दीप देता है २८ तिसकी पुण्य को हरिजी के विना कोई कहने में समर्थ नहीं है और जो घीसे पूर्णदीप भक्तिसे भगवान्के स्थान में देताहै २९ तिसको हज़ार अश्वमेधयज्ञ करनेका कुछ प्रयोजन नहीं है अश्वमेधयज्ञ का करनेवाला और एकादशी में ३० कार्तिक में दीप देनेवाला भी भगवान् के स्थान को जाता है व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! यह सुनकर यमराज के दूत तो जैसे आयेथे वैसेही चलेगये तब भगवान्के दूत उस मूसेको रथमें कर भगवान्के स्थान को जातेभये तो उसको सौ मन्वन्तर विष्णुजी के समीपमें रहते बीततेभये ३१।३२ तदनन्तर मूसा भगवान् की कृपासे मनुष्यलोकमें राजकन्या होताभया और इस राजकन्या ने पुत्र और पौत्रयुक्त होकर बहुत कालतक भोगकिया ३३ फिर मृत्युलोक से भगवान् की कृपासे गोलोक को चलीगई सूतजीबोले कि हे शौनक! जो मनुष्य भक्तिसे उत्तम दीपमाहात्म्यको सुनता है ३४ तो वह सब पापोंसे छूटकर भगवान्के स्थानको जाताहै ३५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेदीपदानमाहात्म्यंनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

# चौथा अध्याय॥

जयन्तीव्रतका माहात्म्य वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! आप मुझको संसाररूपी समुद्र

तरने के लिये नावरूप हैं इससे जयन्ती के माहात्म्य को कहिये मनुष्यों को कब करनी चाहिये १ तब सूतजी बोले कि हे ब्राह्मण! हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक! जो तुमने पूछा है तिसको मैं कहताहूं इसको देवस्थान में पूर्वसमय में नारदजी ने ब्रह्माजीसे पूछाथा २ नारदजी बोले कि हे पितामह ब्रह्माजी! जयन्ती के माहात्म्य को कहिये जिसको सुनकर मैं विष्णुजी के परमपद को जाऊं ३ तब ब्रह्माजी बोले कि हे ब्राह्मण नारद! तुम्हारे आगे कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनो जयन्ती के व्रत करनेसे कर्ता विष्णुलोकको जाता है ४ हे मुने! जयन्ती स्मरण और कीर्तन करनेसे सात जन्म के इकट्ठे कियेहुए पापों को जला देती है फिर व्रत करनेवाले के पुण्य का तो कहनाही क्या है ५ भादों में जन्माष्टमी, चैत्र में शुक्लपक्ष में शुभकारिणी नवमी, फाल्गुन में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, वैशाख में शुक्लपक्ष की चतुर्दशी, ६ कुँवार में दुर्गाष्टमी और शुक्लपक्ष की श्रवणयुक्त द्वादशी ये छः महापुण्यकारिणी और शुभ देनेवाली जयंती कहाती हैं ७ भादों में कृष्णपक्षकी जन्माष्टमी प्रसिद्ध, पापनाश करनेवाली, करोड़ यज्ञों और दशहज़ार तीर्थों के समानहै ८ जयंती के व्रतकरने में कर्ता दिन दिनमें हज़ार गौवों के देने के फलकोप्राप्त होताहै ९ जो कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहण में हज़ारभार सोना देने में फल पाता है तिसी फलको जयन्ती में व्रत करनेवाला भी पाता है १० हज़ार कृष्णवर्ण मृगछाला और सौ तिलधेनु के देने के फल को जयन्ती में व्रत करने से पाता है ११ हज़ार करोड़ कन्याओं के दान करने में जो फल होता है वह जयंती में व्रत करने से प्राप्त होता है १२ समुद्रपर्यन्त इस पृथ्वी के देने में जो फल मिलता है वह फल जयंती में व्रत करने से प्राप्त होता है १३ देवता के स्थान में बावली, कुँवां और तालाब आदि के बनवाने में जो फल होता है वह फल जयंती के व्रत करने में मिलता है १४ जो माता, पिता और गुरुओं की भक्ति करने से फल होता है वह जयंती में व्रत करने से मिलता है १५ आपदा हरने के लिये तीर्थसेवा में आत्मा करनेवाले और सत्यव्रतवालों को जो फल मिलता है वह फल

जीका भक्तहै इसका तुमने व्यर्थही बन्धन किया है इससे जो जीवनेकी वाञ्छा हो तो जावो २४ ये विष्णुदूतों के वचन सुनकर कँपकर नम्रतायुक्त होकर यमराज के दूत पूंछतेभये कि किस पुण्यके प्रभाव से आपलोग इसको भगवान् के पुरको लिये जातेहो २५ यह तो महापापी है यह आप कहने के योग्य हैं तब भगवान् के दूत बोले कि वासुदेवजी के आगे दीप को इसने प्रज्वलित किया है २६ हे यमदूतो! तिसी कर्म्म से हमलोग विष्णुजीके मन्दिरको लियेजाते हैं जो विना इच्छाके भी विष्णुजी के दीपको प्रज्वलित करता है २७ वह करोड़ जन्मोंके इकट्ठे कियेहुए पापोंको छोड़कर भगवान् के स्थानको जाताहै और जो भक्तिसे कार्तिकमें भगवान् के दिनों में दीप देता है २८ तिसकी पुण्य को हरिजी के विना कोई कहने में समर्थ नहीं है और जो घीसे पूर्णदीप भक्तिसे भगवान्के स्थान में देताहै २९ तिसको हज़ार अश्वमेधयज्ञ करनेका कुछ प्रयोजन नहीं है अश्वमेधयज्ञ का करनेवाला और एकादशी में ३० कार्तिक में दीप देनेवाला भी भगवान् के स्थान को जाता है व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! यह सुनकर यमराज के दूत तो जैसे आयेथे वैसेही चलेगये तब भगवान्के दूत उस मूसेको रथमें कर भगवान्के स्थान को जातेभये तो उसको सौ मन्वन्तर विष्णुजी के समीपमें रहते बीततेभये ३१।३२ तदनन्तर मूसा भगवान् की कृपासे मनुष्यलोकमें राजकन्या होताभया और इस राजकन्या ने पुत्र और पौत्रयुक्त होकर बहुत कालतक भोगकिया ३३ फिर मृत्युलोक से भगवान् की कृपासे गोलोक को चलीगई सूतजीबोले कि हे शौनक! जो मनुष्य भक्तिसे उत्तम दीपमाहात्म्यको सुनता है ३४ तो वह सब पापोंसे छूटकर भगवान्के स्थानको जाताहै ३५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेदीपदानमाहात्म्यंनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

## चौथा अध्याय॥

जयन्तीव्रतका माहात्म्य वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! आप मुझको संसाररूपी समुद्र

तरने के लिये नावरूप हैं इससे जयन्ती के माहात्म्य को कहिये मनुष्यों को कब करनी चाहिये १ तब सूतजी बोले कि हे ब्राह्मण! हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक! जो तुमने पूछा है तिसको मैं कहताहूं इसको देवस्थान में पूर्वसमय में नारदजी ने ब्रह्माजीसे पूछाथा २ नारदजी बोले कि हे पितामह ब्रह्माजी! जयन्ती के माहात्म्य को कहिये जिसको सुनकर मैं विष्णुजी के परमपद को जाऊं ३ तब ब्रह्माजी बोले कि हे ब्राह्मण नारद! तुम्हारे आगे कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनो जयन्ती के व्रत करनेसे कर्ता विष्णुलोकको जाता है ४ हे मुने! जयन्ती स्मरण और कीर्तन करनेसे सात जन्म के इकट्ठे कियेहुए पापों को जला देती है फिर व्रत करनेवाले के पुण्य का तो कहनाही क्या है ५ भादों में जन्माष्टमी, चैत्र में शुक्लपक्ष में शुभकारिणी नवमी, फाल्गुन में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, वैशाख में शुक्लपक्ष की चतुर्दशी, ६ कुँवार में दुर्गाष्टमी और शुक्लपक्ष की श्रवणयुक्त द्वादशी ये छः महापुण्यकारिणी और शुभ देनेवाली जयंती कहाती हैं ७ भादों में कृष्णपक्षकी जन्माष्टमी प्रसिद्ध, पापनाश करनेवाली, करोड़ यज्ञों और दशहज़ार तीर्थों के समानहै ८ जयंती के व्रतकरने में कर्ता दिन दिनमें हज़ार गौवों के देने के फलकोप्राप्त होताहै ९ जो कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहण में हज़ारभार सोना देने में फल पाता है तिसी फलको जयन्ती में व्रत करनेवाला भी पाता है १० हज़ार कृष्णवर्ण मृगछाला और सौ तिलधेनु के देने के फल को जयन्ती में व्रत करने से पाता है ११ हज़ार करोड़ कन्याओं के दान करने में जो फल होता है वह जयंती में व्रत करने से प्राप्त होता है १२ समुद्रपर्यन्त इस पृथ्वी के देने में जो फल मिलता है वह फल जयंती में व्रत करने से प्राप्त होता है १३ देवता के स्थान में बावली, कुँवां और तालाब आदि के बनवाने में जो फल होता है वह फल जयंती के व्रत करने में मिलता है १४ जो माता, पिता और गुरुओं की भक्ति करने से फल होता है वह जयंती में व्रत करने से मिलता है १५ आपदा हरने के लिये तीर्थसेवा में आत्मा करनेवाले और सत्यव्रतवालों को जो फल मिलता है वह फल

जयंती में व्रत करने से मिलताहै १६ गंगा, यमुना और सरस्वती के जलमें स्नान करने से जो पुण्य होताहै वह जयंती में व्रत करने से होता है १७ जो अमावस में पितरों की श्राद्ध करनेवालों को पुण्य होताहै वह जयंती में व्रत करने में होताहै १८ नारदजी बोले कि हे पितामह ब्रह्माजी ! किस किसने पहले इस व्रतको किया है तब ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सहस्रबाहु, कर्ण, बुद्धिमान् कुमार, १९ सगर, दिलीप, रामचन्द्र, गौतम, गार्ग्य, बुद्धिमान् परशुराम, २० बाल्मीकि और साधु द्रौपदी के पुत्रने पूर्व्वसमय में इस व्रतको किया है भादों के कृष्णपक्ष की अष्टमी वांछित कामनाओं को देती है २१ और रोहिणीनक्षत्रयुक्त अष्टमी विशेष कर उत्तम कही है यह अष्टमी भगवान् की प्रीति के लिये वर्ष वर्ष में करनी चाहिये २२ इसके करने से करोड़ जन्मके पाप मुहूर्त भरमें नाश होजाते हैं रात्रिमें जागरण कर निष्ठापूर्वक जितेन्द्रिय कर्ता २३ गन्ध और फूल आदिक और नैवेद्यों से अलग अलग भगवान् को पूजनकरे हे ब्राह्मण ! इस प्रकार जो जयंती का व्रत करता है २४ उसके करोड़ जन्म के ज्ञान वा अज्ञान से किये हुए पाप २५ भगवान् के प्रसाद से आधेपहर में नाश होजाते हैं और जयंती तिथिके प्राप्त होने में जे अधम मनुष्य भोजन करते हैं २६ वे तीनों लोकों के उत्पन्न पापों को निस्सन्देह भोजन करते हैं मुक्ति के स्थान सागर आदिक सब तीर्थ २७ जयन्ती के व्रत करनेवाले के घर और उस के सब अंगमें स्थित होते हैं हे महामुने ! जो भक्तिसे कृष्णजी की प्यारी जयंती के व्रत को करता है तिसकी देह में सब तीर्थ और देवता स्थित होते हैं वेद और पुराण में मैंने ऐसा व्रत नहीं देखा है २८।२९ कृष्णराधाष्टमी व्रतके समान वा अधिक कोई व्रत नहीं है जो मनुष्य भक्ति से इस व्रतको करता है वह क्रूर राक्षस होताहै ३० हे ब्राह्मण ! जो मूर्ख मनुष्य जयंती के दिन भोजन करता है वह एकादशी व्रतकीनाईं महानरक को भोजन करता है ३१ जयन्ती में भोजनसे मनुष्य भूत और वर्तमानकाल के एकसौएक कुलको घोर नरक में गिरादेता है ३२ हे मुनिशार्दूल ! जो जयन्ती अष्टमी

बुधवारमें रोहिणीनक्षत्रसमेत हो तो इस व्रतके करनेवाले को और करोड़ों व्रत करने की आवश्यकता नहीं है ३३ सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग में पापनाश करनेवाली जयंती अच्छीविधिसे करनी चाहिये ३४ भगवान् के जागरण में जो पुराणको पढ़ाता है उसके जन्मपर्यन्त के पाप इस प्रकार जलजाते हैं जैसे रुई का समूह जलजाता है ३५ जो मनुष्य भगवान्के व्रतके दिन भक्तिसे पुराण सुनता है तो उसके करोड़ जन्म के पाप तिसी क्षणसे नाश होजाते हैं ३६ हे मुने ! जो भगवान् के व्रत के दिन कथा बांचने वाले की पूजा करताहै वह करोड़ कुलको उद्धारकर विष्णुलोक में पूजित होताहै ३७ जयन्ती के व्रतसे जो मनुष्य पराङ्मुख रहताहै वह सब धर्मोंसे छूटकर निश्चय नरकको जाताहै ३८ जयंतीव्रतमें चन्दन, फूल, धूप और घीसे पूर्ण दीपोंसे भक्तिभावों से युक्तहोकर मनुष्य भगवान्को पूजनकर ब्राह्मणको दक्षिणा देवे ३९ हे विप्र! जो मनुष्य इस विधिसे भक्तिसे जयंतीको करताहै वह इक्कीस पुरुषोंको तार देताहै ४० और उसके घरमें भाग्यहीनता, विधवापन, लड़ाई और संतान का विरोध नहीं होताहै और धनका नाश नहीं देखता है ४१ जयंतीका व्रत करनेवाला जिन जिन कामनाओं को करताहै तिन सबको प्राप्तहोता और विष्णुलोकको जाताहै ४२ जे विष्णुजी की भक्ति में परायण और जयंती के व्रतमें मन लगाते हैं वे धन्य, कुलीन, ईश्वर और पण्डितहैं ४३ जितने तीर्थ, व्रत और नियमहैं वे जयंती के व्रतकी सोलहवीं कलाकोभी नहीं पाते हैं ४४ हे वत्स ! जो स्त्रीसमेत भादों के दोनोंपक्षों की राधाकृष्णाष्टमी के व्रतको करताहै वह भगवान् के समीप प्राप्त होताहै ४५ जयंती का व्रत करने वाला जो सदैव पुण्य भी करताहै वह भगवान् के वैकुण्ठलोक को प्राप्त होताहै ४६ भगवान् की प्यारी जयंती आचारहीनता, कुलभ्रष्टता, यशहीनता और बुरीयोनि से उत्पन्नहुए पापको शीघ्रही नाश करदेती है ४७ जयन्ती में व्रत करनेवाला मेरु पर्वतकेबराबर ब्रह्महत्यादिक सबपापोंको जलादेताहै ४८ जयंती में व्रतकरनेहारा पुत्रकी इच्छावाला पुत्रको, धनकी कामनावाला धनको और मोक्ष

की इच्छा करनेहारा मोक्षको प्राप्त होता है ४९ जिनका जयंती के व्रत करने में तत्पर चित्त होताहै उनसे यमराज भी नित्यही शङ्का करते हैं और वे परमगति को प्राप्त होते हैं ५० सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन् ! हे मुने! ब्रह्माजी नारदजी से कहकर जैसे आये थे वैसेही चलेगये मैंने जो तुमने पूंछा तिसको वैसेही तुमसे कहा है ५१ जे जयन्ती के माहात्म्य को भक्तिभाव से सुनते हैं वेभी सब पापों से छूटकर परंधाम को प्राप्तहोते हैं ५२ जे पापी भी मनुष्य पुराणके बांचनेवाले और जयन्ती के व्रत करनेवाले को देखते हैं तो वेभी परमपद को प्राप्त होते हैं ५३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेब्रह्मनारदसंवादेजयंतीव्रतमाहात्म्यं नामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

## पांचवां अध्याय ॥

कर्मविपाक का वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे महाबुद्धिमान् ! हे सूतजी ! मनुष्य किस कर्म्मसे पुत्ररहित और किससे पुत्रयुक्त होताहै १ तब सूतजी बोले कि हे मुनियोंमें श्रेष्ठ शौनकजी ! इसको पूर्वसमयमें महात्मा नारद जी ने ब्रह्माजी से पूंछा था तब ब्रह्माजी ने जो नारदजी से कहाथा तिसको तुम भी सुनो २ नारदजी बोले कि हे पितामह ! हे महा-बुद्धिमान् ! हे सब तत्त्वोंके अर्थों के पारगामी ! हे कमलसे उत्पन्न ब्रह्माजी ! किसकर्म्म से मनुष्य पुत्रहीन होताहै ३ और किसपापसे स्त्री बाँझ होती है हे सब प्राणियोंके हितमें रत ! यह मेरे आगे मुझ को सुनाकर कहिये ४ किसकर्मसे कन्या वा नपुंसक वा पुत्र मरने वाला पुरुष वा अत्यन्त दुःखित पुत्र मरनेवाली स्त्री होती है हे ब्र-ह्मन् ! फिर किस पुण्यसे पुत्र होताहै यहसब कहिये ५ तब ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! संक्षेपसे तुमसे कहताहूं सावधानहोकर तिसको सुनिये तुमने सुननेवालों के विस्मय देनेवाले वृत्तान्त को पूंछाहै ६ जो मनुष्य पूर्वजन्म में ब्राह्मणकी जीविकाको हरलेता वा हरालेता है वह यहांपर निश्चय पुत्ररहित होताहै ७ इस जन्ममें जो मनुष्य

पुराणको सुनता श्रद्धायुक्त होकर अन्नसमेत पृथ्वीका दानकरता ८ बहुत गुणयुक्त, बहुत दूधवाली, दक्षिणासमेत गऊ, सोने की गऊ और सोनेकी मूर्त्तिको देताहै तिसके पुत्र निश्चय होताहै ९ जोस्त्री पूर्वजन्म में कपटसे पराये बालकको मारडालती है वह निश्चय बालकहीन होती है १० जो स्त्री श्रद्धायुक्त होकर सोनेकी मूर्त्तिकादान, भक्तिसे ब्राह्मण के चरणजल का पान, ११ पुराण सुनना और बहुत दक्षिणाको दानकरती है उसके बहुत लड़के होते और निस्सन्देह जीते हैं १२ जो पुरुष जलमें डूबतेहुए बालक को देखकर नहीं निकालताहै वह पुरुष इस जन्ममें पुत्रहीन होताहै और स्त्री जो नहीं निकालती है तो वह भी निश्चय पुत्ररहित होतीहै १३ जो बैल, सोना और वस्त्रसमेत कुम्हड़े को ब्राह्मण को देवै शुभ बालव्रतकरै १४ आठ वर्षकी कन्याका विवाह करदेवै और पुराण को सुने तो निश्चय उसके पुत्रहोवै और सबपाप नाश होजावै १५ जो मनुष्य पूर्वजन्ममें अतिथि को निराश और क्रोधसे दण्डकरताहै वह निश्चय पुत्रहीन होताहै १६ वह ब्राह्मण और अतिथि को भक्तिसे पूजन करै अन्न और जलका दान तथा सुन्दर देवता का मन्दिर बनवावै १७ पूर्वजन्म में जो स्त्री तथा पुरुष गर्भहत्या करता है तो उसके निश्चय लड़के नहीं जीते हैं १८ जो अपने पतिसमेत स्त्री एकादशी का व्रत करती है वह प्रत्येक जन्म में सुन्दर पुत्रयुक्त और स्वामी की सुन्दर भाग्ययुक्त होती है १९ जो शूद्र मनुष्य विमोहित होकर गऊको मारडालताहै वा ब्राह्मणी को हरताहै वह नपुंसक होताहै २० हे ब्राह्मण! इस गऊके मारनेके पाप को कर जो पीछे से पुण्यकरता है तो इसलोकमें पुण्यके प्रभावसे कन्या होताहै २१ हे ब्राह्मण! त्रेतायुगमें श्रीधरनाम राजा पुत्रहीन और धनवान् हुए और उनकी स्त्री हेमप्रभावतीहुई २२ यह राजा सब शास्त्रके जाननेवाले और सब मनुष्योंके हितकी इच्छा करनेहारे अपने यहां आयेहुए व्यासजीसे पूछतेभये कि हे ब्राह्मण! मैं पुत्रहीन कैसेहूं २३ तब राजाके दियेहुए सोने आदिकों से बने हुए पीठपर बैठेहुए व्यासजी के राजा और रानी ने अत्यन्त प्रसन्न

होकर दोनोंने उनके चरणधोकर सब पाप नाश करनेवाले चरणों के धोये जलको पिया तब व्यासजी राजाके नम्रतायुक्त वचन सुन कर उससे बोले २४। २५ कि हे राजन्! जिसको तूने पूंछाहै और जिस कर्म्मसे पुत्रहीनहो तिसको सुनो तुम्हारी यहरानी और एक हीस्त्रीके व्रतवाले जिससे पुत्रहीनहो २६ पूर्वजन्म में श्रेष्ठ देहवाले चन्द्रनामथे और तुम्हारी यहरानी सुन्दर अंगवाली शंकरी नाम थी २७ एक समयमें तुम दोनों राहमें चलेजाते थे तब एक नीच मनुष्य का पुत्र जलमें डूबते हुए देखकर भी तुम दोनोंने निन्दासे नहीं निकाला तो वह नीचका पुत्र डूबकर मरगया २८ तिसी कर्म के प्रभावसे तुमलोगों के पुत्र नहीं हुआ है बहुत पुण्यके प्रभावसे तुम दोनों राजा रानी तो होगयेहो २९ तब राजाबोले कि हे प्रभो! इस समयमें किस पुण्य से निश्चय पुत्र उत्पन्न होगा क्योंकि पुत्र-हीन मनुष्यों का तो जीना निरर्थक है ३० तब व्यासजी बोले कि कपड़ेसमेत कुम्हड़ेको, सोने समेत बैलको ब्राह्मणको देवो, बाल-व्रतकरो ३१ आठवर्ष की कन्याका दानदो पुराणसुनो तो सब पा-पनाश होकर निश्चय पुत्रहोगा ३२ ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह व्यासजीका कहाहुआ सुनकर राजा उत्तम दान देताभया और पुराण सुनताभया तो पापरहित होगया ३३ तदनन्तर वर्षके मध्य में सबसे पूजित पुत्र उत्पन्नहुआ जोकि सब पृथ्वी का राजा हुआ सुन्दर और कुलमें श्रेष्ठभी हुआ ३४ सूतजी बोले कि हे ब्राह्मण शौनक! यह मैंने संक्षेपसे तुमसे कहाहै जो इसको भक्तिसे सुनता और उत्तमदान करताहै तो पुत्रहीन पुत्रको प्राप्तहोताहै ३५ और जो स्त्री भक्तिसे सुनकर ब्राह्मणका पूजन शास्त्रकी कहीहुई विधिसे नित्यही करती है तो सुन्दर पुत्रयुक्त होती है ३६ और जो मनुष्य भक्तिसे पुस्तकमें सोना, चांदी, कपड़ा, फूल, माला और चन्दन देता है उसके सब पाप नाश होजाते हैं ३७ और जो मूर्ख ब्राह्मण पूर्व-जन्म में ब्राह्मण के बालक को मारडालता है तो उसके सातजन्मों से क्रूर पुत्र होताहै ३८॥

इतिश्रीपाद्मेब्रह्मखण्डेब्रह्मनारदसंवादेकर्मविपाककथनंनामपञ्चमोऽध्यायः ५॥

# छठवां अध्याय ॥

वैकुण्ठ प्राप्त होनेवाली पुण्यका वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! किस पुण्यसे वैकुण्ठ प्राप्तहोता है तिसको मुझको सुनाकर कहिये क्योंकि आप भव समुद्रमें नावरूप हैं १ तब सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ! हे सब मङ्गल के करनेवाले! तुमने बहुत अच्छा प्रश्नकियाहै मैं सुननेवालों के पाप नाश करनेवाले चरित्रको संक्षेपसे कहताहूं २ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो ब्राह्मण मनुष्य विष्णुजी और ब्राह्मणको मिट्टी से बनेहुए स्थानको देताहै तिसकी पुण्यको सुनिये ३ वह ब्राह्मण सब पापों से रहित होकर विष्णुलोकमें महलमें नित्यही बसताहै और पूजित होताहै ४ जो विष्णुजी और ब्राह्मण को महल देताहै वह निश्चय स्वर्ग्ग में भगवान् के स्थानमें बसताहै ५ अन्तसमय में वह करोड़ कुलों से युक्त होकर विष्णुजी के पुरमें जाकर सोनेके महलमें स्थित होकर सुखको भोग करता है ६ हे मुनिजी! ब्राह्मणस्थापन में जो पुण्य होताहै तिसकी संख्या करनेको सबके करनेवाले ब्रह्माजी भी समर्थ नहीं हैं ७ धूलि और वर्षाकी बूंदें तो गिनीजासक्ती हैं परन्तु ब्रह्मा भी ब्राह्मण के स्थापनमें फलनहीं गिनसक्ते हैं ८ हे महामुने! पूर्व समयमें नारदजीने संसार के उत्पन्न करनेवाले ब्रह्माजी से पूछाथा तिसको ब्रह्माजीने कहा था तिसको तुमभी सुनो ९ हे ब्रह्मन्! पूर्व्व समयमें द्वापर युगमें अत्यन्त सुन्दर वेश्याहुई जिसके सुन्दरबाल, हरिणी के समान नेत्र, सुन्दर करिहांव, पवित्रहासयुक्त १० और चंचल कटाक्षवाली चारुहासिनी नामथी यह सब पापोंसेयुक्त कभी और देशमें जातीभई ११ वहांपर समुद्र के संगम में मनुष्यों की आकांक्षाकर देवस्थान में जातीभई और वहांपर क्षणमात्र बैठकर पानखाकर १२ बचेहुए चूर्णको महलकी भीतिमें कौतुकसे लगादेती भई और तिस पीछे व्यभिचारी पुरुषकी कांक्षायुक्त होकर धन के लिये नगरको जातीभई १३ वहांपर किसी व्यभिचारी के साथ सहसासे संकेत करतीभई तो रात्रिमें विमोहित होकर वेश्या तो वन

में संकेतमें गई १४ परन्तु वैश्य संकेतमें नहींगया तब यह देखकर
शंकायुक्तहुई कि मेरा कान्त क्यों नहीं आया क्या सर्प और व्याघ्रों
ने तो नहीं खालिया १५ कामसे विकल क्या संकेत को छोड़कर
चलागया क्या और स्त्री के साथ तो नहीं अभिलाषायुक्त हुआ १६
यह हृदयके बीचमें शोचतीहुई कोटकेरक्षा करनेवाले के डरसे और
अन्धकार से राह न दिखलाई देने से नगरमें नहींगई १७ कि इसी
अन्तरमें कालरूपी देवका भेजाहुआ कामरूपी व्याघ्र भूंखसेयुक्त
होकर वहां आकर तिस वेश्याको मारडालताभया १८ तब भया-
नक यमराज के दूत पर्व्वत के समान अंगवाले तिस पापिनी के
लिये आतेभये १९ जिनके टेढ़ेपांव, टेढ़ेमुख, ऊंचीनाक और बहुत
डाढ़ेंथीं वे चमड़े की रस्सी और मुद्गरोंको लेकर तिस वेश्याको २०
उन्मत्त होकर चमड़े की रस्सियों से बांधते भये तब शंख, चक्र,
गदा और पद्मके धारण करनेवाले २१ दूत भक्तवत्सल भगवान्
ने भेजे जो कि श्याम मेघों के समान रंगवाले, कमलके समान प्र-
काशित मुखवाले, २२ श्रेणी के धारण करनेहारे, पवित्र नासिका
वाले, सुन्दर कुण्डलों से भूषित थे तब महात्मा विष्णुजी के दूत
राहमें वेश्या को लिये जाते हुए यमराज के दूतों को देखकर २३
उनसे बोले कि तुम विकृत आकारवाले कौनहो कर्बुर की नाईं दि-
खलाई दिये हो इस उत्तमा विष्णुजीकी प्यारीको लेकर कहां जावो-
गे ये विष्णुदूतों के वचन सुनकर ते यमदूत शीघ्रता से जाते भये
२४ तदनन्तर क्रोधयुक्त विष्णुजी के महाबली दूत संसार के प्रभु
यमराजजी के दूतों को मारनेलगे २५ करोड़ सूर्य के समान दीप्ति
वाले चक्रादि शस्त्रसमूहों से मारेगये सब यमराजजी के दूत रोते
हुए भागकर २६ डरसमेत होकर सब वृत्तान्त यमराजजी से कहते
भये तब यमराजजी भी कथा को सुनकर चित्रगुप्त से बोले २७
कि हे मन्त्रिन्! किस पुण्यसे वेश्या मुक्तिको प्राप्तहोगई यह पूछते
हुए मुझसे सब यथोचित कहो २८ तब चित्रगुप्त बोले कि हे लोकों
के स्वामी! तिस वेश्याने जन्मसे लेकर बहुतसे पाप इकट्ठे किये हैं
अब कुछ उसके पुण्यको सुनिये २९ हे धर्मराज! एक समय में

सब गहनों से भूषित वेश्या धन की इच्छासे व्यभिचारीपुरुषों की आकांक्षा कर किसी पुरी को शीघ्रही जातीभई ३० और तहां पर तिस देवस्थान में स्थितहोकर पानखाकर तिस बचेहुए चूर्ण को कौतुकसे भीतिमें लगादेती भई है ३१ तिसी पुण्यके प्रभावसे वेश्या पापरहितहोकर तुम्हारे दण्डसे निकलकर वैकुण्ठको जाती है ३२ सूतजी बोले कि हे शौनक! ये चित्रगुप्त के वचन सुनकर यमराजजी और उनके दूत और व्यापारमें चित्त देतेभये और वह वेश्या ३३ राजहंसयुक्त सुन्दर रथपर चढ़कर विष्णुजी के दूतों से वेष्टित होकर विष्णुलोक को जातीभई ३४ और वहांपर करोड़ कुलसेयुक्त होकर श्रीविष्णुजी की आज्ञासे महलमें स्थित होकर अनेक प्रकार के भोगोंको करती भई ३५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो भक्तिसे भगवान् के स्थानमें यत्नसे चूर्ण देताहै तो नहीं जानते उसकी क्या पुण्यहोती है ३६ जो भक्तिसे इस अध्यायको पढ़ता वा आदरसे सुनताहै वह सब पापोंसे छूटकर भगवान् के स्थान को जाताहै ३७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेब्रह्मनारदसंवादेषष्ठोऽध्यायः ६॥

# सातवां अध्याय॥

श्रीराधाष्टमी का माहात्म्य वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे महाबुद्धिमान्! हे सुन्दरबुद्धियुक्त सूतजी! दुस्तर संसारसागर से मनुष्य किसकर्म्म से गोलोक को जाताहै और राधाष्टमी के उत्तम माहात्म्य को कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे महामुने! हे ब्राह्मण शौनक! पूर्वसमयमें इसको नारदजी ने ब्रह्माजी से पूछाथा तिसको संक्षेपसे सुनिये २ नारदजी बोले कि हे पितामह! हे महाबुद्धिमान्! हे सब शास्त्रोंके जाननेवालों में श्रेष्ठ! हे पिताजी! राधाजन्माष्टमी को मेरे आगे कहिये ३ हे विभो! हे द्विज! तिसके पुण्यफल को कहिये किसने पहिले इस व्रत को कियाहै नहीं करनेवालों को क्या पाप होताहै ४ किसविधिसे कब करनाचाहिये और राधाजी कहांसे उत्पन्नहुई हैं यह मूलसे मुझसे कहिये ५ तब ब्रह्माजी बोले कि हे वत्स! राधाजन्माष्टमी को ए-

काग्रहोकर सुनिये मैं संक्षेपसे कहताहूं और भगवान्के विना सब ६ तिसके पुण्यफल को कहने में कोई समर्थ नहीं है ब्रह्महत्यादिक करोड़जन्म के इकट्ठे कियेहुए बड़े पाप ७ तिनके तिसीक्षणमें नाश होजाते हैं जे एकवारभी भक्तिसे करते हैं मनुष्य हज़ारएकादशी से जिसफल को प्राप्त होताहै ८ तिससे सौगुणा अधिक राधाजन्माष्टमी का पुण्य होताहै सुमेरुपर्वत के बराबर सोना देकर जो फल मिलताहै ९ तिस से सौगुणा अधिक एकबार राधाष्टमी करके मिलताहै मनुष्योंको हज़ार कन्यादानसे जो पुण्य प्राप्त होताहै १० वह राधाष्टमीसे फल प्राप्तहोताहै गंगादिक तीर्थों में स्नानकर जो फल मिलताहै ११ वहफल राधाष्टमीसे मनुष्यपाताहै इसव्रतको जो पापी भी हेला वा श्रद्धासे १२ करताहै तो करोड़कुलसे युक्तहोकर विष्णुजी के स्थानको जाताहै हे वत्स! पूर्व्वसमय सतयुगमें अत्यन्त सुन्दर, वेश्या, १३ सुन्दर करिहांववाली, हरिणीके समान नेत्रोंसे युक्त,शुभ अंगवाली, पवित्रहाससमेत, सुन्दरबाल और पवित्र कानों वाली लीलावती नामहुई १४ तिसने बहुतसे दृढ़ पापकिये थे एकसमय में धनकी आकांक्षायुक्त होकर यह वेश्या अपने पुरसे निकलकर १५ और नगरमें गई तो वहांपर बहुतसे जाननेवाले मनुष्यों को सुन्दर देवताके मन्दिरमें राधाष्टमीके व्रतमें परायण देखतीभई १६ चन्दन, फूल, धूप, दीप, वस्त्र और अनेक प्रकारके फलों से भक्ति भावोंसे राधाजीकी उत्तममूर्ति को पूजन कररहेहैं १७ कोई गाते, नाचते और उत्तमस्तोत्र को पढ़रहे हैं कोई ताल, वंशी और मृदङ्ग को आनन्दसे वजारहेहैं १८ तिन तिन को तिसप्रकार के देखकर कौतूहल और नम्रता से युक्त होकर यह वेश्या तिनके समीप जाकर पूछती भई १९ कि हे पुण्यात्माओ! आनन्दयुक्त पुण्यवान आपलोगो! क्याकररहेहो नम्रतायुक्त मुझसे यह कहिये २० तब पराये कार्य्य और हितमेंरत, व्रतमें तत्पर वैष्णव मनुष्य तिस वेश्याके वचन सुनकर कहने का आरम्भ करते भये २१ कि भादों महीनेके शुक्लपक्षकी अष्टमीमें राधाजी जिससे उत्पन्नहुई हैं सोई अष्टमी इस समयमें प्राप्तहुई है तिसको यत्नसे हमलोग कररहे हैं २२

गऊके मारनेसे उत्पन्न पाप, चोरीसे उत्पन्न, ब्राह्मणके मारनेसे उत्पन्न, पराईस्त्रीके चुरानेसे, गुरुजीकी स्त्रीसे भोग करनेसे, २३ विश्वासघात और स्त्रीहत्यासे उत्पन्न पाप ये सब शुक्लपक्षकी अष्टमी करनेवाले मनुष्यों के शीघ्रही नाश होजाते हैं, २४ तिनके सबपाप नाशकरनेवाले वचन सुनकर मैंभी व्रत करूंगी यह वारंवार विचारकर २५ तहांहीं व्रत करनेवालों के साथ उत्तम व्रतकर निर्मल होकर भाग्यसे सांप के काटने से नाशको प्राप्तहोगई २६ तब यमराजकी आज्ञासे उनके दूत फँसरी और मुद्गर हाथमें लेकर तिस वेश्याके लेनेकेलिये आये और अत्यन्त क्लेशसे उसको बांधकर २७ जब यमराजके स्थान ले जानेका मन करतेभये तब विष्णुजी के दूत शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले प्राप्तहोगये २८ ये सुवर्णमय, राजहंसों से युक्त शुभ विमानको भी लाये थे फिर शीघ्रतायुक्त विष्णुदूतोंने चक्रकी धाराओं से फँसरी को काटकर २९ तिस पापरहित स्त्रीको रथमें चढ़ाकर मनोहर गोलोक नाम विष्णुजी के पुरको लेगये ३० वहांपर व्रतकेप्रसाद से यह वेश्या कृष्ण और राधिकाजी के संग स्थितहुई हे पुत्र! जो मूढ़बुद्धि राधाष्टमी के व्रतको नहीं करताहै ३१ उसकी सैकड़ों करोड़ कल्पोंमें भी नरकसे निष्कृति नहीं होती है जे स्त्रियां इस राधा और विष्णुजी की प्रीति करनेवाले सब पाप नाश करने हारे और शुभदेनेवाले व्रतको नहीं करती हैं वे अन्तसमयमें यमराजकी पुरीमें जाकर बहुत कालतक नरकमें गिरती हैं ३२। ३३ कदाचित् पृथ्वीमें जन्मपाती हैं तो निश्चय विधवा होती हैं हे वत्स! एकसमयमें पृथ्वी दुष्टों के समूहों से ताड़ित होकर ३४ गऊकारूप धारकर अत्यन्त दुःखित होकर वारंवार रोतीहुई मेरे पास आकर अपने दुःखको कहतीभई ३५ तब मैं तिसके वचन सुनकर शीघ्रही विष्णुजी के पास जाकर उनसे पृथ्वी के दुःखसमूहको कहताभया ३६ तब उन्होंने कहा कि हे ब्रह्मन्! आप देवताओंसमेत पृथ्वी में जाइये मैं भी अपने गणोंसमेत तहांही जाऊंगा ३७ ये भगवान् के वचन सुनकर ब्रह्माजी देवताओंसमेत पृथ्वी में प्राप्त होगये तब कृष्णजी प्राणोंसे भी प्यारी राधिकाजी को बुलाकर ३८ बोले

कि हे देवि! मैं पृथ्वी में जाताहूं पृथ्वी के भार नाशने के लिये तुम भी मनुष्यलोकमें चलो ३९ यह सुनकर राधाजी भी पृथ्वीमें भादों के शुक्लपक्षकी अष्टमी तिथिमें ४० दिनमें वृषभानुकी यज्ञभूमि शुद्ध करने में सुन्दररूपयुक्त होकर दिखलाई पड़ीं ४१ तब वृषभानुराजा तिनको पाकर आनन्दयुक्त मन होकर अपने स्थानमें अपनी रानी को लाकर देतेभये तब रानी राधाजी को पालनेलगीं ४२ हे वत्स! नारद! यह तुमने जो पूंछा तिसको मैंने तुमसे कहा यह व्रत यत्न से रक्षाके योग्यहै ४३ सूतजी बोले कि हे शौनक! जो धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्षफल के देनेवाले इस व्रतको सुनताहै वह सब पापों से छूटकर अन्तमें भगवान् के स्थानको जाताहै ४४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेब्रह्मनारदसंवादेश्रीराधाष्टमीमाहात्म्यं नामसप्तमोऽध्यायः ७॥

# आठवां अध्याय॥

समुद्र मथने का उद्योग वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! हे गुरो! पूर्वसमय में देवताओं ने क्यों समुद्र मथाहै यह सुनने को मेरे कौतुक उत्पन्न हुआ है इस से मुझसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन्! संक्षेपसे समुद्र के मथनेका कारण कहताहूं दुर्वासा से इन्द्रका संवाद हुआहै तिस को सुनिये २ एक समयमें महातपस्वी, महातेजस्वी, महादेवजीके अंशसे उत्पन्न, ब्रह्मर्षि दुर्वासाजी इन्द्रजीके देखनेके लिये स्वर्गको जातेभये ३ तो उस समयमें महामुनिजी हाथीपर चढ़ेहुये इन्द्रजी को देखकर कल्पवृक्ष का माला उनको देते भये ४ तब इन्द्र उस माला को लेकर हाथी के मस्तक में पहराकर सेनासमेत आप नन्दनवन को चलेगये ५ तो हाथी उसमाला को लेकर तोड़कर पृथ्वी में फेंक देताभया तब महामुनि क्रोधकर इन्द्रसे यह बोले ६ कि तीनोंलोकों की लक्ष्मी से युक्तहोकर जिससे तुमने मेरा अनादर कियाहै इससे निस्संदेह तुम्हारी तीनोंलोकों की लक्ष्मी नाश होजावे ७ तब शाप को पाकर इन्द्र शीघ्रही फिर अपने पुरको चले

आये तो क्या देखते भये कि संसारों की माता लक्ष्मीजी आपही अन्तर्द्धान होगईं ८ लक्ष्मी के अन्तर्द्धान होने में तीनों लोक नष्ट होनेलगे तब भूंख और प्यास से युक्तहोकर सब देवता निरन्तर रोतेभये ९ मेघ नहीं बरसते भये तालाब और कुंएं और वृक्ष सब सूखगये और वृक्षोंमें फल और फूलहीन होगये १० तब भूंख और प्याससे पीड़ित सब देवता ब्रह्माजीकी शरण में जाकर उनसे दुःख शोकको कहतेभये ११ देवताओंके वचनसुनकर देवगण और भृगु-आदिक मुनियोंसमेत ब्रह्माजी क्षीरसमुद्रको जातेभये १२ और क्षीर-समुद्रके उत्तर किनारे ब्रह्माजी अष्टाक्षर मंत्रको जप और जगत्पति विष्णुजी का ध्यानकर पूजन करतेभये १३ तब दयायुक्त प्रभुभग-वान् सब देवताओं के ऊपर प्रसन्न होकर गरुड़पर चढ़कर आते भये १४ जोकि पीताम्बर पहने, चारभुजायुक्त, शंख, चक्र और गदाको धारे, संसारों के स्वामी, कमल के समान नेत्रवाले, विष्णु, संसाररूपी समुद्रके नावरूप, वनमालासे विभूषित, भृगुलता और कौस्तुभमणि छाती में धारण कियेहुएहैं तिनको देखकर आनन्दके आंसुओंसेयुक्त होकर देवता १५ । १६ जयशब्द से स्तुति और निरन्तर नमस्कार करतेभये तब श्रीभगवान् बोले कि भोदेवताओ वरमांगो किसलिये तुमलोग यहां आयेहो मैं वर देनेवालाहूं जो कहोगे वही दूंगा और तरह न होगा १७ तब देवता बोले कि हे कृपालो ! हे नाथ ! ब्राह्मणके शापसे तीनोंलोक सम्पदाओं से हीन होगये हैं देवता, असुर और मनुष्य भूंख और प्याससे व्याकुलहैं १८ इन सबलोकोंकी रक्षा कीजिये आपकी शरणमें हमलोग प्राप्त हुएहैं तब श्रीभगवान् बोले कि हे देवताओ ! ब्राह्मणके शापसे ल-क्ष्मीजी अन्तर्द्धान होगई हैं १९ जिनकी कटाक्षमात्रसे संसार ऐ-श्वर्यसंयुक्त होता है तुम सब देवता सोने के पर्व्वत मन्दराचल को उखाड़कर सर्पराज वासुकिकी रस्सी से लपेटकर मथानी बनाकर दैत्योंसमेत होकर क्षीरसमुद्रको मथो २० । २१ तो तिससे संसार की माता लक्ष्मीजी उत्पन्न होंगी तिन्हीं से तुम सब प्रसन्न महाभाग निस्संदेह होजावोगे २२ कच्छपरूपसे मैं सबओर पर्वतको धारण

करूंगा ऐसा कहकर विष्णुभगवान्‌जी अन्तर्द्धान होगये तब सब देवता और असुर समुद्र के मथनेके लिये जातेभये २३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसमुद्रमथनोद्योगोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

## नवां अध्याय ॥

क्षीरसमुद्र का मथन वर्णन ॥

सूतजी बोले कि हे शौनक! तब गन्धर्व और दानवोंसमेत सब देवसमूह मन्दराचल को उखाड़कर क्षीरसमुद्र में फेंकदेते भये १ तब सनातन, श्रीमान्, दयालु, संसार के ईश्वर भगवान् कच्छप रूपसे पर्वतकी मूलको पीठपर लेलेतेभये २ और अनन्तजीसे लपेटकर देवादिक सब दुग्धके समुद्रको एकादशीमें मथतेभये मथने में प्रथम कालकूट विष निकलता भया तब विष को देखकर सब भागते भये तो तिनको भागतेहुए देखकर महादेवजी यह कहते भये ३।४ कि हे देवसमूहो! तुमलोग विषको मेरे हाथ में करो मैं शीघ्रही कालकूट महाविष को निवारण करूंगा ५ ऐसा महादेवजी कहकर हृदय में नारायणजी को ध्यानकर महामंत्रको उच्चारण कर भयंकर विषको पीलेतेभये ६ तो महामंत्रके प्रभावसे महान् विष पचजाताभया जो मनुष्य हरिजी के अच्युत, अनंत, और गोविन्द इन तीन नामोंको प्रयत होकर भक्तिसे जपताहै और तीनों नामों के पहले ओं और अन्तमें नमः यह उच्चारण करताजाताहै तिसको विष भोग अग्निसे उत्पन्न और मृत्युसे डर नहीं होता है ७। ८ तदनन्तर प्रसन्नमन होकर देवता क्षीरसागर को मथनेलगे तो अलक्ष्मीजी उत्पन्न हुईं जिनका कालामुख, लालनेत्र ९ रूखे पिंगल बाल और जरती देहको धारेहुई थीं ये लक्ष्मीजी की बहन ज्येष्ठा देवताओं से बोलीं कि मुझको क्या करना चाहिये १० तब देवता दुःख का वर्तनरूप तिन देवीजी से बोले कि हे ज्येष्ठे देवि! जिन मनुष्यों के घरमें लड़ाई वर्तमान रहतीहो ११ तहांपर स्थान देते हैं अशुभ से युक्त होकर वहां बसो जे मनुष्य झूंठ और निष्ठुर वचन कहते हैं १२ और संध्यामें भोजन करते हैं उनके घरमें दुःख देने

वाली तुमटिको और जहांपर मुंड, बाल, भस्म, हाड़, तुष और अंगार रहते हों १३ तहांपर निस्संदेह तुम्हारा स्थानहोगा और जे अधम मनुष्य विना पांवधोये भोजन करते हैं १४ तिनके घर में दुःख और दारिद्र्यके देनेवाली तुम सदैव स्थितहो और बालू,नमक और अङ्गारों से जे दांतधोते हैं १५ तिनके घरमें दुःख देनेवाली तुम लड़ाई के साथ सदैव स्थितरहो और जे अधम मनुष्य छत्राक और शिष्ट बेलको खाते हैं १६ हे पापकी देनेवाली हे ज्येष्ठे! तिनके घरमें तुम्हारा स्थानहो जे पापबुद्धी मनुष्य तिलपिष्ट, अलाबु,गाजर, पोतिकादल, कलंबुक और प्याजको खाते हैं तिनके घरमें तुम्हारा निस्संदेह स्थान होगा १७। १८ हे अशुभे! जहांपर गुरु, देवता और अतिथियों का यज्ञ और दान न हो और वेदकी ध्वनि भी जहां नहीं हो तहांपर सदैव स्थित हो १९ जहां स्त्री पुरुषों में लड़ाई,पितृ और देवताओंका पूजन न हो और जुंवें में रतहों तहां सदैव स्थितहो २० जहां पराई स्त्री में रत, पराई द्रव्यके हरनेवाले हों और ब्राह्मण, सज्जन और वृद्धोंकी पूजा न होती हो तिसस्थान में पाप और दारिद्र्यकी देनेवाली आप सदैव स्थितहों २१ इसप्रकार देवता सबकी लड़ाई प्यारीवाली ज्येष्ठाजी को आज्ञा देकर फिर एकाग्रचित्त होकर क्षीरसमुद्र को मथनेलगे २२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेसमुद्रमथनंनामनवमोऽध्यायः ९॥

## दशवां अध्याय॥

क्षीरसमुद्र का मथन वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे शौनक! तब ऐरावतहाथी, उच्चैःश्रवाघोड़ा, धन्वन्तरिवैद्य, कल्पवृक्ष, सुरभिगऊ और अप्सरा आदिक निकलतीभई १ तदनन्तर द्वादशी में प्रातःकाल सूर्य्य के उदयमें सब लक्षणों से शोभित श्रीमहालक्ष्मीजी उत्पन्न होती भई २ तब प्रसन्न हुए देवता तिन महादेवी, धर्मकी माता, सब प्राणी और श्रीकृष्णजी के हृदय में स्थानवाली लक्ष्मीजी को देखते भये ३ तदनन्तर

लक्ष्मीजी के भाई चन्द्रमा अमृत से उत्पन्नहुए और भगवान् की स्त्री संसारको पवित्र करनेवाली तुलसीजी उत्पन्नहुईं ४ तब परिपूर्ण मनोरथ होकर देवता तिस पर्व्वत को पहलेकी नाईं स्थापित कर लक्ष्मीमाताजी के पास आकर स्तुतिकर उत्तम श्रीसूक्त को जपतेभये ५ तदनन्तर लक्ष्मीदेवी प्रसन्न होकर सब देवताओं से बोलीं कि हे उत्तम देवताओ ! मैं वर देनेवालीहूं वर मांगो तुम लोगोंका कल्याणहो ६ तब देवता बोले कि हे कमले देवि ! हे सब की माता भगवान् की प्यारी ! आपके विना संसार शून्यहै प्राणों की रक्षा कीजिये ७ इस प्रकार देवताओं के कहनेपर नारायणजी की प्यारी महालक्ष्मीजी देवताओंसे बोलीं कि इसीसमय में मैं सब प्राणियों के प्राणोंकी रक्षा करतीहूं ८ तब नारायण श्रीमान्, शंख, चक्र, गदाके धारण करनेवाले, दयालु, संसार के ईश्वर भगवान् सहसासे प्रकट होगये ९ तो हाथ जोड़कर गद्गदवाणी बोलते हुए देवता लोकों के स्वामी के प्रणाम कर स्तुतिकर बोलतेभये १० कि हे विष्णुजी माता, आपकी प्यारी, अनपगामिनी लक्ष्मीजी को आप संसार की रक्षा के लिये ग्रहण कीजिये जबतक भगवान् प्रतिज्ञा नहीं करतेभये तबतक लक्ष्मीजीही हरिजीसे बोलीं ११ कि हे मधुदैत्यके मारनेवाले ! हे नाथ ! ज्येष्ठा अलक्ष्मीजी को विवाह न कर तिनकी छोटी बहन मेरे कैसे विवाहकी आप इच्छा करते हैं ज्येष्ठाके स्थितहोने में छोटीका विवाह नहीं होना चाहिये १२ सूतजी बोले कि हे शौनक ! ये लक्ष्मीजी के वचन सुनकर विष्णुजी देवताओंसहित वेद के वचनके अनुरूप ज्येष्ठा को उद्दालकजी को देतेभये १३ तदनन्तर श्रीमान् नारायणजी लक्ष्मीजीको अंगीकार करतेभये तब सब देवसमूह बारंबार नमस्कार करतेभये १४ तिस पीछे अधिक बलवाले सब देवता सब असुरोंको मारतेभये तो सब राक्षस रोते हुए दशोंदिशाओं को चलेगये १५ तो देवता अमृत पीनेके लिये क्रमसे पंक्ति करतेभये और श्रीविष्णुजी की आज्ञा में परस्पर सब बोलतेभये १६ कि तुम देवो ३ मैं नहीं समर्थ हूं ३-१७ तदनन्तर विष्णुजी स्त्रीको रूप धारणकर उठतेभये और मोने

के बर्तनमें अमृत परिवेषण करतेभये १८ हे उत्तम ब्राह्मण ! जब-तक राहु भी अमृत भोजन करताभया तब चन्द्रमा और सूर्य यह कहतेभये कि यह राक्षस छल से आगया है १९ तब जगन्नाथजी क्रोधित होकर उसको सोने के बर्तन से मारतेभये तो उसका शिर पृथ्वी में गिरकर केतुनाम होजाता भया २० तदनन्तर भयसे वि-कल होकर राहु और केतु शीघ्रतासे चलेगये और इस समयमें भी वह दिन प्राप्तहोने में वे चन्द्रमा और सूर्य्यके ऊपर क्रोध करते हैं २१ जिस क्षणमें राहु चन्द्रमा वा सूर्यको ग्रास करताहै तो वहक्षण दुर्लभ होताहै सब जल तो गंगाजी के समान होजाताहै और ब्रा-ह्मण वेदव्यासजी के समान होजाते हैं २२ जो वायस तीर्थ में स्नान करताहै वह गंगाजी के स्नानके फलको प्राप्त होता है और करोड़ जन्मका इकट्ठा दान नाशरहित पुण्यवाला होजाता है २३ जड़-समेत पाप नाश होजाताहै । फिर करोड़ों यज्ञों के करनेसे क्याहै वि-द्यार्थी विद्या को पुत्रकी इच्छा करनेवाला पुत्रको २४ और मोक्षकी इच्छा करनेवाला मोक्षको पाता है और निश्चय मंत्रकी सिद्धि हो-जाती है हे ब्राह्मण ! यह तुम से समुद्र का मथन मैंने कहा २५ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकादिकसंवादेसमुद्रमथनं नामदशमोऽध्यायः १० ॥

## ग्यारहवां अध्याय ॥

लक्ष्मीजी के बृहस्पति के व्रतोंका वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे साक्षात् भगवान् के स्वरूप वेदव्यासजी के शिष्य ! हे अहंकाररहित ! हे सूत ! हे मनुष्यों के ऊपर कृपा क-रने वाले ! किससे स्त्री सुभगा और किससे पापिनी और अत्यन्त दुर्भगा होती है यह मेरे सुननेकी इच्छाहै यथार्थ से कहिये १।२ और हे अंग ! हे तपोधन ! किससे पति की प्यारी, रूपवती, नेत्रों की अमृतरूप होती है और किससे लक्ष्मी उत्पन्न होती है यह भी मुझसे कहिये ३ तब सूतजी बोले कि हे विप्र ! शौनक ! यद्यपि यह चरित्र पुण्यकारी और परमदुर्लभ है तथापि संक्षेप से विधान

से तुमसे कहता हूं सुनिये ४ द्वापरयुग में सौराष्ट्र देश का वसने वाला, वेद वेदांग का पारगामी भद्रश्रवा नाम राजा हुआ है ५ और तिसकी सुरतिचन्द्रिका नाम स्त्री हुई है तिसमें राजाके मनोरम सात पुत्र हुए हैं ६ और सुन्दरी, सत्य बोलनेवाली, श्यामाबालानाम कन्या हुई है यह कन्या पिता के प्रीति करनेवाली हुई है ७ तदनन्तर एक समय में श्यामाबाला गूढ़, मनोहर, रत्नरूप सखियों के साथ आनंद से सुन्दरवर्ण वाली बालुओं में खेलने के लिये ८ परमदुर्लभ कदंब वृक्षके नीचे जातीभई और इसी अन्तर में संसार के तारनेवाली लक्ष्मी जी ९ मनुष्यों के नीति देनेवाली, पलित, अंगयुक्त, ब्राह्मणी का रूप धारणकर आपही आतीभई १० और सब मनुष्यों के शिक्षा देनेवाले राजा के नाशके विना किन अत्यन्त क्षुद्रों के घरमें इस समयमें जाऊं ११ यह मनसे चिन्तना कर राजाके स्थान को जाती भई जो स्थान कि सोनेकी भीतियों से युक्त और पताकाओं से अलंकृत है १२ वहांपर सिंहद्वारको नांघ कर द्वारपालन करनेवाली से बोलीं कि हे द्वारमें नियुक्त, शुभलक्षण वाली! द्वारको त्यागकर मुझे जानेदो १३ मैं सुरतिचन्द्रिका रानी के देखने के लिये जातीहूं तिनके कोकिला के समान वचन सुनकर रत्नका दण्ड हाथ में लिये हुई द्वारके रक्षा करनेवाली परम हर्षको प्राप्त होगई १४ और उनसे बोली कि हे वृद्धे! क्या आपका नाम है और आपका कौन पति है रानी के दर्शनमें क्या आपका काम है किसलिये तुम आई हो हे ब्राह्मणी! यह मेरे सुनने में कौतूहल है इससे मुझसे कहिये १५ तब वृद्धा बोलीं कि हे पोष्ये! हे रानीके द्वारकी रक्षा करनेवाली मेरे आगमन के कारण सुननेको जो तुम्हारे कौतूहल है तो सुनिये १६ मैं लक्ष्मी के नामसे प्रसिद्धहूं मेरे प्राणों के ईश्वर भुवनेश नामसे प्रसिद्धहैं द्वारकापुरी १७ में मेरे प्राणों के ईश्वर वर्त्तमानहैं हे रत्नोंका वेत्र हाथमें लेनेवाली मैं आने के कार्य को इससमयमें तुम्हारे आगे कहती हूं कौतुकसमेत सुनिये पूर्व समयमें तुम्हारी दुःखिनी रानी वैश्य कुलमें उत्पन्न हुईथी १८।१९ एक दिन स्वामी से पीड़ित होकर इस दुःखिनी स्त्री ने पतिसे ल-

ड़ाई की थी २० और वारंवार रोकर घरसे बाहर निकल गई थी तिसका रोना सुनकर मैं तिसके पास आई हूं २१ उससे सब वृत्तान्तको पूछकर श्रेष्ठ व्रतको मैं उपदेश दूंगी २२ हमारे उपदेश से वहभी आनन्दसे श्रेष्ठ व्रतको करेगी तिसके प्रसादसे हे द्वारके पालन करनेवाली वह सुखयुक्त होगी २३ कभी यह वैश्यकुल में उत्पन्न रानी पतिके साथ मृत्युके वश में प्राप्त होगई तब सब पाप करनेवाले इनके लेनेके लिये २४ प्रभु धर्म्मराजजी ने चण्ड आदिक दूतों को भेजा तब यमराजजी की आज्ञा से भयङ्कर यमके दूत २५ उसको चर्म्मकी फँसरी से बाँधकर लोहे के मुद्गर हाथमें लेकर यमराजकी शरणमें लेजाने के लिये उद्यम करते भये २६ उसी अन्तरमें लक्ष्मीजी के विष्णुजी में परायण दूत शङ्ख, चक्र, और गदाके धारण करनेवाले लेने के लिये प्राप्त होते भये २७ तिस प्रकारके लक्ष्मीजी के दूतों को देखकर यमराजजी के दूत भाग गये तब लक्ष्मीजी के दूत महात्मा स्वप्रकाश आदिक २८ फँसरी को काटकर राजहंसयुक्त रथमें उनको चढ़ाकर सहसा से आकाशमार्ग्ग होकर लक्ष्मीजी के पुरको जाते भये २९ जितनेबार वैश्याने श्रेष्ठ व्रतको तिसकाल में किया है तितने हज़ार कल्प लक्ष्मीजी के पुरमें दोनों स्थित होतेभये ३० फिर शेष पुण्यके भोग के लिये इससमय में राजाके वंशमें उत्पन्न हुएहैं राज्यकी सम्पत्ति से गर्वित होकर व्रतको इन्हों ने बिसार दियाहै तिससे मैं रानीको तिसी व्रतके उपदेशके लिये आईहूं ३१ तब द्वाःस्था (द्वारके रक्षा करनेवाली) बोली कि हे वृद्धे! किस विधि से किस महीने में श्रेष्ठ व्रतको करै और किस देवताकी पूजा होती है ३२ हे मातः! यह पूंछती हुई मुझसे यथावत् कहने के आप योग्यहैं तब लक्ष्मी जी बोलीं कि हे प्रेष्ये! (द्वारकी रक्षा करनेवाली) कार्तिक महीने के बीतने के पीछे अगहन के आने में बृहस्पति के दिन ३३ पहले पहरमें सब व्रतवालोंसे युक्त होकर नारायणजी के सहित लक्ष्मीजी को पूजन करै ३४ हे प्रेष्ये! खीरयुक्त मीठे अन्नों और खाँड़ मिले हुए भुक्तोंसे लक्ष्मीजीको प्रसन्न कर फिर यह प्रार्थना करै ३५ कि

हे तीनों लोकों में पूजित ! हे विष्णुजीकी प्यारी लक्ष्मी देवी ! जैसे आप कृष्णजी में अचलहैं तैसे मुझमें स्थित हूजिये ३६ हे ईश्वरी! हे कमले देवि ! हे पाप रहित! मुझको शरण लीजिये फिर नानाप्रकारकी भेंटकी द्रव्योंसे लक्ष्मीजी को प्रसन्न कर ३७ शास्त्रोंसे महोत्सवयुक्त देवीको पूजन करै तदनन्तर शेष नैवेद्यको श्रेष्ठ ब्राह्मण, ३८ आप, अपने पति, पुत्र और औरभी सेवकों को देवे हे सुंदरि! अब दूसरे बृहस्पति के दिनमें विशेषता सुनो ३९ गेहूंकी बनीहुई श्रेष्ठ चित्रधूली और अपूपोंसे लक्ष्मी देवी को भक्तिभाव से प्रसन्न करै ४० तीसरे बृहस्पतिके दिन शर्करसंयुक्त दही और भात निवेदन करै और चौथी बृहस्पति में शामाक शालिकासारों से आनन्द से पूजन करै ४१ हे रत्नों का दण्ड हाथ में लेने वाली ! यत्न से लक्ष्मी देवी को प्रसन्नकर उनकी प्रीतिके लिये ब्राह्मणों को धन से पूजनकरै ४२ कपड़े, गहने, भोजन और अनेक प्रकार के फल देवे तब द्वारपालकिनी बोली कि अत्यन्त श्रेष्ठ वृद्धे! आप यहींपर ठहरो मैं सुरतिचन्द्रिका रानी से आपका संदेशा कहकर आपको ले चलूंगी आप क्रोध न करना ऐसा कहकर वह श्रेष्ठ अंगवाली द्वारपालकिनी रानी के पास जाकर ४३। ४४ शिर में अंजलि धर कर जो लक्ष्मीजी ने कहा था उसको आदि से अन्ततक सब सुरतिचन्द्रिका से कहदिया तब द्वारपाली के वचन सुनकर रानी ४५। ४६ सुन्दरी, गर्वसमेत, ब्राह्मणी के पास जाकर बोली कि हे वृद्धे! हे ब्राह्मणि ! आप क्या उपदेश करने के लिये आई हैं ४७ डर छोड़कर सुखपूर्वक बहुत कालतक मुझसे कहिये तबब्राह्मणी बोली कि रे दुष्टे! तेरी अनीति देखकर चंचला मैं जानेकी इच्छा करतीहूं परमदुर्ल्लभ व्रत तुझसे नहीं कहूंगी लक्ष्मी के दिन जो चाण्डाल करता है ४८। ४९ वह मैंने तुझ अभिमानयुक्त के घरमें इससमय में देखा है ये ब्राह्मणी के वचन सुनकर रानी क्रोधसे लालनेत्र कर ५० वृद्ध ब्राह्मणी को मारतीभई तब वृद्धा लक्ष्मीजी रोतीहुई भागीं ५१ तदनन्तर तपस्विनी श्यामावाला खेलती हुई ब्राह्मणी के रोनेके शब्दको सुनकर उनके समीप आकर बोली ५२ कि हे वृद्धे!

तुमको इसप्रकार की व्यथा किसने दी है वह मुझसे कहो तब तिस के वचनसुनकर शोकसे गद्गदवाणी से ५३ लक्ष्मीजी सब वृत्तान्त कहती भई हे श्रेष्ठब्राह्मण ! तब श्यामाबाला परमदुर्लभ व्रत सुन कर ५४ शास्त्रकी कहीहुई विधिसे श्रद्धा और भक्तियुक्त होकर व्रत करनेलगी जब तीनबार पूरेहोगये और चौथावार प्राप्त होगया५५ तो लक्ष्मीजी के प्रसाद से विवाहकर्म सिद्ध होगया श्री सिद्धेश्वर देवराजा अत्यन्त तेजस्वी के ५६ मालाधर नाम पुत्रसे विवाह हुआ तब मालाधरजी श्यामाबाला को लेकर घरचलेगये तदनन्तर तिसके जाने में कौतुक को सुनिये ५७ हे ब्राह्मण ! रानीके घरमें बहुतसी द्रव्य स्थितथी वह सब नहीं जानीगई कि कौन लेगये ५८ तब रानी द्रव्य, बुद्धि और अन्न और कपड़ोंसे हीनहोकर बैठी तो अपनी कन्याके घरको ५९ कुछ मांगने के लिये अपने पतिको भेजतीभई तब राजा तिस मालाधर के नदीके किनारे गांव में ६० कुछकाल में कष्टसे प्रवेश करते भये तो नदी में जल लेने के लिये श्यामाबाला की दासी आतीभई और उन्होंने कृपायुक्त होकर तिन दुःखियों में श्रेष्ठ से पूछा ६१ कि मांस रक्तसे हीन, रूक्षअंग और बालवाले तुम कौनहो और कहांसे आयेहो यहसब हमसे कहो६२ तब दरिद्र बोले कि हे दासियो ! मैं श्यामाबाला का पिताहूं सौराष्ट्र नगरसे आयाहूं यह सबहाल श्यामाबाला के पास जाकर तुमलोग कहना ६३ ये तिनके वचन सुनकर कौतूहलयुक्त सब दासियां परस्पर मुखकर हँसकर अपनेपुरको चलीगईं ६४ और श्यामाबाला से जाकर सब वृत्तान्त कहा तब दासियों के ये वचन सुनकर सुन्दरी श्यामाबाला सुगन्धित फूलोंके तेल, सुन्दर कपड़े, चन्दन, पानकी बीरी और घोड़ा देकर नौकरों को पिताजी के पास भेजती भई ६५।६६ तब सब नौकर जाकर उत्तम सुन्दर वेष बनाकर उनको इन्द्रके मन्दिर के समान श्यामाबालाके मन्दिरको लेआतेभये ६७ तबश्यामाबाला दुःखियोंमें श्रेष्ठ पिताजीको घीसमेत शाली अन्नको यत्नसे भोजन कराती भई ६८ हे तपस्वी ! जब चारदिन व्यतीत होगये तब श्यामाबाला पिता को छिपेहुए बर्तन में स्थित धन दे-

कर भेजदेतीभई ६९ तब उनके पिता अपने घरमें प्रवेशकर पात्र के भीतर स्थित धनको खोलकर अंगारके समूह देखकर अत्यन्त दुःखित होकर रोनेलगे ७० और फिर घरमें प्राप्त होने के पीछे दुःखयुक्त स्त्रीसमेत होकर कन्याके स्थानं जानेके लिये निकल कर तहांहीं तालाव के किनारे प्रवेश करतेभये ७१ तब पतिव्रता श्यामाबाला अपनी प्राणप्यारी माता को बुलवाकर माताके स्नेह से तैसेही पूजन करतीभई ७२ हे ब्राह्मण! इसीसमयमें लक्ष्मीका दिन उत्तम बृहस्पति प्राप्त हुआ तब श्यामाबाला माता को व्रत कराने का मनकरतीभई ७३ तिनकी माता लक्ष्मीजीके कोपसेयुक्त दरिद्रों और बालकों की जूंठनको भोग करतीहुई ७४ लक्ष्मीजी के तीन बृहस्पतिवारों को व्यतीत करतीभई और चौथेदिन में दृढ़व्रत करतीभई ७५ फिर यह रानी सुरतिचन्द्रिका अपने नगर को चली आई तो लक्ष्मीजी के प्रसाद से तैसेही सुन्दर घर देखतीभई ७६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! किसी समय में श्यामाबाला ऐश्वर्य देखने की इच्छासे फिर माता के घरको गई ७७ तब श्यामाबाला को दूर से देखकर सुरतिचन्द्रिका क्रोधयुक्त होकर यह कहतीभई कि मैं श्यामाबाला का मुख न देखूंगी ऐसा कहकर छिपकर स्थित होतीभई ७८ और फिर लक्ष्मीयुक्त अपने घरकेभीतर आकर सेंधानमकको लेकर चुपचाप स्थित होरही ७९ तब उस पतिव्रता, साध्वी का स्वामी राजा उससे पूंछताभया कि हे कान्ते! तुम क्या लाईहो यह मेरे आगे कहो ८० तब कांताबोली कि सेंधानमक ले आईहूं भोजनमें दिखलाऊंगी ऐसा कहकर विना नमकके पाक बनाकर ८१ अन्नादिक को मालाधर राजा को देतीभई तब मालाधर राजा नमकके विना व्यंजन को ८२ भोजनकर अप्रसन्नता को प्राप्त हुए तब वह स्त्री नमकको देतीभई तो प्रसन्नमन होकर मालाधर राजा ने भोजन किया ८३ और तिस स्त्री की धन्य धन्य ऐसा कहकर प्रशंसा करतेभये जो स्त्री इस व्रतको बड़े आदरसे नहीं करतीहै ८४ वह सातजन्ममें दरिद्रा औ दुर्भगा होतीहै और जो इसको एकाग्रचित्त होकर भक्तिसे सुनता है ८५ वह सब पापोंसे छूटकर लक्ष्मी

जीके लोकको जाताहै और जो इस व्रतकी कथाको न सुनकर व्रत करती है तिसके व्रतका फल निस्सन्देह नाश होजाताहै ८६॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेएकादशोऽध्यायः ११॥

# बारहवां अध्याय॥

ब्राह्मणका पालन वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! और किस पुण्यसे पापरहित होकर मनुष्य भगवान् के स्थानको जाताहै यह कृपा करके कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण! जो मनुष्य ब्राह्मण के धन वा प्राणोंसे प्राणोंकी रक्षा करता है वह विष्णुलोक को जाता है २ पूर्वसमय द्वापरयुग में पुत्रहीन, बलवान्, वैष्णव, यज्ञ करानेहारा दीननाम राजाहुआ है ३ एक समयमें यह नम्रतायुक्त राजा गालवमुनिसे पूंछताभया कि हे दयाके समुद्र मुनियोंमें शार्दूलरूप! किस पुण्यसे निश्चय पुत्रहोगा यह मुझसे कहिये मैं आपकी आज्ञा करूंगा जिन मनुष्यों के पुत्र नहीं होता है उनका जीवन निरर्थक होताहै ४। ५ तब गालवमुनि बोले कि हे राजन्! जो तुमने पूंछा है तिस पुत्रकी उत्पत्ति के कारण को मैं संक्षेपसे तुम्हारे आगे कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये ६ हे श्रेष्ठराजा! नरमेधनाम यज्ञ कीजिये तब सबलक्षणसंयुक्त तुम्हारे निश्चय सन्तति होगी ७ तब राजा बोले कि हे ब्राह्मण! हे गुरो! यज्ञों मेंश्रेष्ठ, महायज्ञ नरमेध कैसे मनुष्यको लाकर करूंगा यह कहिये ८ तब गालवमुनि बोले कि सुन्दर अंग, सुन्दर मुख और सब शास्त्रका जाननेवाला अच्छे कुलमें जो उत्पन्न हो वह यज्ञके लिये समर्थ होगा ९ अंगहीन, कालावर्ण, मूर्ख योग्य नहीं होताहै हे ब्राह्मण! गालवजी के इस प्रकार कहने में मनुष्यों का ईश्वर वह राजा १० मुनिजी के वचन कहकर दूतों को भेजता भया और सब शास्त्रके पारगामी गालव इत्यादिक ब्राह्मणोंको बहुत द्रव्य देकर यज्ञ करानेके लिये वरण करता भया तदनन्तर राजा की आज्ञासे दूत देश देश को गये ११। १२ और एकाग्रचित्त होकर गांव गांव और शहर में

गये परन्तु कहीं भी न पाते भये तब देश को गये १३ जोकि दश पुर नामवाला और गुणी ब्राह्मणों से युक्तहै जहांकी स्त्रियां सुन्दर बाल और हरिणके बच्चेकेसमान नेत्रोंवाली हैं १४ उन चन्द्रमुखियों को देखकर पुरुष मोहित होजाते हैं तिस मनोरम पुरमें कृष्णदेव नाम ब्राह्मण १५ तीन पुत्र और सुशीला स्त्रीसमेत होताभया है यह वैष्णव, प्रिय बोलनेवाला, सदैव विष्णुजीकी पूजामें रत, १६ अग्नि में हवन करनेवाला, पिताका भक्त और वैष्णवों का प्रिय करनेवाला भी हुआ है तदनन्तर ते राजा के दूत उस उत्तम ब्राह्मणसे प्रार्थना करते भये १७ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! अत्यन्त सज्जन ! राजाके सन्ताप नाश करनेवाला पुत्र नहीं है इससे अपने पुत्र को दीजिये १८ और तिसी के लिये नरमेध नाम यज्ञ में दीक्षित हूजिये महायज्ञ में तुम्हारे पुत्रको बलि देनेके लिये लेजावेंगे १६ समाहित होकर सोनेके चारलक्षको लीजिये और जो पुत्रकी लालसासे सुखसे नहीं देवोगे २० तो हमलोग राजाकी आज्ञाके करनेवाले हैं बलसे लेजावेंगे दूतोंके वचन सुनकर शोकमें विह्वल ब्राह्मण और ब्राह्मणी २१ संशययुक्तमन होकर प्राणरहित की नाईं होगये और ब्राह्मण राजपुरुषों से बोले कि धन, सोना, जीवन और स्थान से मुझे क्याहै २२ हे दूतो ! जो तुम लोग शोकरूपी अन्धकारके दूर करनेवाले पुत्रके लेने के लिये जो निश्चय आये हो तो मेरे वचनको सुनो २३ पृथिवी में स्थितहोकर को श्रेष्ठराजा की आज्ञा करने की इच्छा करेगा पुत्रको छोड़कर मुझ वृद्धको ले चलो २४ ये ब्राह्मण के वचन सुनकर क्रोधयुक्त दूत तिसके घर में जबर्दस्ती से सोने को छोड़ देतेभये २५ और क्रोध से जब तिस पुत्रके लेने का मन करतेभये तब वह ब्राह्मण हाथ जोड़कर रोकर बोला २६ कि हे मनुष्यो ! मेरे पुत्रोंमें ज्येष्ठ पुत्रको छोड़कर दूसरे उत्तम पुत्रको ले जाओ ! और वचन कहने को मुखमें न लावो २७ तब ब्राह्मण के वचन सुनकर दूत रोती हुई पतिव्रता ब्राह्मणी से बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मणी ! छोटे पुत्र को दीजिये २८ तिन दूतों के ये वचन सुनकर दुःखिनी ब्राह्मणी तिससमयमें इसप्रकार भूमिपर

गिरपड़ी जैसे हवा से केला गिरपड़ताहै २९ फिर बलसे मुद्गरले-
कर मस्तकमें अपने मारकर बोली कि हे दूतो! छोटे अपने पुत्रको
मैं कभी नहीं दूंगी ३० हे ब्राह्मण! इसीसमयमें ब्राह्मण का मँझला
पुत्र नम्रतायुक्तहोकर रोकर माता पिताके प्रणामकर बोला ३१ कि
माता जो विषदेवे और पिता जो पुत्रको बेंचडाले और राजा सर्व-
स्व हरलेवे तो कौन रक्षा करनेवाला होताहै ३२ ऐसा कहकर तिन
का पुत्र माता और पिताके मस्तकसे प्रणामकर दूतों के साथ दी-
क्षित राजाके पास शीघ्रही चलताभया ३३ तदनन्तर ब्राह्मणी और
ब्राह्मण पुत्रके विच्छेदसे क्लिष्टमन होकर रोरोकर अन्धे होगये ३४
तदनन्तर वे दूत राह में शिष्ययुक्त और हरिण के बच्चों से सेवित
विश्वामित्र मुनिजी के स्थानमें प्राप्तहुए ३५ तब मुनि राजाके दूतों
को देखकर आदरसमेत पूंछते भये कि तुमलोग कौनहो कहांगये
और क्या जीविकाहै यह सब कहिये ३६ तब राजाके दूत बोले कि
हे ब्राह्मण! एकाग्रचित्त होकर सुनिये राजाके पुत्र नहीं होताहै तिसी
के लिये राजा नरमेधनामयज्ञमें दीक्षितहै ३७ तहांपर बलि देनेके
लिये इस ब्राह्मणके पुत्रको लिये जाते हैं ये दूतों के वचन सुनकर
वह ब्राह्मण दयासमेत होगये ३८ और यह विचारते भये कि मेरे
प्राण भी चलेजावें और बालक सुखी होवे तो अच्छाहै जे मनुष्य
यहांपर बालक, ब्राह्मण और स्वामी के लिये ३९ तृणवत् प्राणोंको
छोड़देते हैं उनको सनातन लोक मिलते हैं यह अपने अन्तःकरण
में विचारकर श्रेष्ठ ब्राह्मण बोले ४० कि यज्ञमें बलि देने के लिये
इस ब्राह्मण के बालक को छोड़कर मुझको शीघ्रही ले चलो यह
बालक उत्तमहै ४१ इसने संसार में जन्मपाकर सुख नहीं पाया है
इससे यह कैसे मरेगा ४२ हे दूतो घरसे इसके आने में इसके माता
पिता दुःखित और भाग्यहीन होकर निश्चय यमराज के स्थानको
जावेंगे ४३ इसप्रकार मुनिके वचन सुनकर दूत ब्राह्मणसे बोले कि
हे ब्राह्मण! हे बुद्धिमान्! दीननाथ राजाकी विना आज्ञाके तुझ वृद्ध
को हमलोग कैसे लेजावेंगे इसप्रकार वे दूत कहकर तिससमय में
राजाकी पुरीको चलतेभये ४४।४५ तब मुनि दूतसमूहोंकेसाथ यज्ञ

के स्थानको गये तब दूत राजासे ब्राह्मणके वृत्तान्तको कहतेभये४६ तब राजा शंकायुक्तमनहोकर मुनिजीसे ये वचन बोले कि हे मुने! हे ब्रह्मन्! जो बलि के विना मेरे यज्ञ करने में पुत्रहोवे तो ब्राह्मणके पुत्र कोलेजाइये ४७।४८ तब मुनि बोले कि हे राजन्! तुम्हारे यज्ञकरने में महापुत्र होगा इसमें तुम्हारे संशय नहीं होवे क्योंकि मेरे दर्शन सफलहैं ४९ ये मुनिजी के वचन सुनकर राजा अत्यन्त आनन्दयुक्त होकर सब मुनियोंसमेत यज्ञमें पूर्णाहुति करतेभये ५० तब विश्वामित्र मुनिश्रेष्ठ तिस समयमें ब्राह्मण के पुत्रको लेकर दशपुर नाम नगरको जातेभये ५१ और तिसके घरमें जाकर मुनिजी उसके पितासे बोले कि हे ब्राह्मण! हे मुने! तुम घरमें स्थितहौ और मैं मृतक की नाईं स्थितहूं ५२ तब ब्राह्मण विश्वामित्रजीसेबोले कि हेविप्र! राजा बलसे मेरेपुत्र को लेगये हैं मैं क्याकरूं फिर पुत्र के चलेजाने में स्त्री पुरुष हम दोनों के ५३ रोनेसे नेत्र अन्धे होगये हैं तब मुनियों में शार्दूलरूप विश्वामित्रजी बोले कि पुत्रको देखो और लेवो जब इस प्रकार मुनि ने कहा तो ब्राह्मण और ब्राह्मणी प्रसन्न होकर उसी क्षणसे ५४।५५ मुनि के वचनकी सिद्धिसे और पुत्रके दर्शन से शीघ्रही देखनेलगे ५६ फिर भ्रमरों के समान नेत्रों से पुत्रके मुखरूपी कमलको वड़ी देरतक पानकर वारंवार मुनिजी के प्रणाम कर ५७ प्रिय बोलनेवाले ब्राह्मण उनसे बोले कि हेमुने! आपने हम दोनोंको जीवदान निश्चय कियाहै ५८ [illegible]
ये वचन सुनकर दया के समुद्र मुनिजी तिनको [illegible]
अपने स्थान को चलेगये ५९ फिर महाभाग मुनि[illegible]
परंपदको हाथ में प्राप्तकर देवताओंसे भी दुर्लभ [illegible]
६० फिर कुछकाल के वीतनेपर तिस राजाके पुत्र [illegible]
सुन्दर और इस प्रकार राज्य के योग्यहुआ जै[illegible]
न्द्रमा हुआहै तब राजा पुत्रके उत्सवमें धनों [illegible]
रहित होकर कौतुक उत्पन्न होके देवताओंकी [illegible]
करतेभये-जो प्राण और धनदेकर ब्राह्मणों[illegible]
वह फिर लौटनेसे दुर्लभ विष्णुजी के मन्दि[illegible]

भक्तिसे इसको पढ़ते वा ब्राह्मण से कथाको ६३ आख्यानभर वा एकही श्लोक सुनते हैं वे विष्णुजी के मन्दिरको जाते हैं ६४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेसूतशौनकसंवादेब्रह्मखण्डेब्राह्मणपालनं नामद्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

# तेरहवां अध्याय॥

भगवान्‌की जन्माष्टमी के व्रतका वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे महाबुद्धिमान् सूतजी! कृष्ण की जन्माष्टमीके उत्तम माहात्म्यको कहकर महासमुद्रसे उद्धार कीजिये १ तब सूतजी बोले कि हे द्विज! हे ब्रह्मन्! जो मनुष्य भक्ति से कृष्णजन्माष्टमी के व्रतको करता है वह करोड़ कुलसेयुक्त होकर अन्त में विष्णुजी के पुर को प्राप्त होताहै २ हे उत्तम ब्राह्मण! बुधवार वा सोमवार में रोहिणीनक्षत्रसंयुक्त अष्टमी करोड़कुल के मुक्ति देने वाली है ३ जो महापापोंसेयुक्त होकर भी उत्तमव्रत को करताहै वह सब पापोंसे छूटकर अन्तमें हरिजी के स्थानको जाताहै ४ जो अधममनुष्य कृष्णजन्माष्टमी को नहीं करताहै वह इसलोक में दुःख को प्राप्त होकर मरकर नरक को जाताहै ५ जो मूर्खा स्त्री कृष्णजन्माष्टमी व्रतको वर्ष वर्षमें नहीं करती है वह भयङ्करनरकमें जातीहै ६ जो मूढ़बुद्धि मनुष्य जन्माष्टमी दिनमें भोजन करताहै वह महानरक को भोजन करता है यह मैं सत्यही सत्य कहताहूं ७ हेमहाबुद्धिमान्! पूर्वसमय में दिलीप ने सबपाप नाश करनेवाले व्रतको मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठजी से पूंछाथा तिसको सुनिये ८ दिलीप बोले कि हे महामुने! भादों महीनेकी कृष्णपक्ष की अष्टमी जिसमें जनार्दन भगवान् उत्पन्न हुएहैं तिसके मैं सुननेकी इच्छा करताहूं कहिये ९ शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले भगवान् विष्णुजी देवकी के पेटमें कैसे क्या करने और किस हेतु से उत्पन्न हुए हैं १० तब वसिष्ठजी बोले कि हे राजन्! स्वर्गको छोड़कर जनार्दनजी कैसे पृथिवीमें उत्पन्न हुएहैं तिसको मैं कहताहूं सुनिये ११ पूर्व्वसमय में पृथ्वी कंसादिक राजाओं से पीड़ित अपने अधिकार में मतवाले

कंसदूतसे ताड़ित १२ घूर्णितनेत्र होकर रोती रोती वहांगई जहां पर देवोंके स्वामी पार्वतीजी के पति वृषध्वज महादेवजी स्थित थे १३ हे नाथ! कंससे ताड़ित, विवर्ण और विमानित होकर आंशुओं के जलको वर्षती हुई अपना यह दुःख कहने को गईथी १४ तिस को रोतीहुई देखकर कोपसे ओंठों को फरकातेहुए पार्वतीजी और सब देवसमूहों से युक्तहोकर १५ महादेवजी क्रोधही से ब्रह्माजीके स्थान को गये और वहां जाकर कंसके मारने के प्रयोजन को ब्रह्माजी से कहतेभये १६ कि हे ब्रह्मन्! विष्णुजीसमेत होकर आप को उपाय रचना चाहिये महादेवजी के ये वचन सुनकर ब्रह्माजी क्षीरसागर में जहांपर भगवान् शेषजी के ऊपर शयनकरते हैं तहां के जाने के लिये कहकर हंसकी पीठपर चढ़कर हरिजी के समीप जातेभये १७। १८ और वहां जाकर बोलनेवालों में श्रेष्ठ ब्रह्माजी महादेवआदिक देवसमूहोंसेयुक्त होकर कोमल वाणियों से स्तुति करतेभये १९ कि हे लक्ष्मीजीके कान्त! कमलनयन, हरि, परमात्मा और संसारके पालन करनेवाले आपके नमस्कारहैं २० यह तिनकी स्तुति सुनकर जनार्दनजी क्लेशयुक्तमुखवाले सब देवताओं से बोले कि आपलोग किसलिये आये हैं २१ तब ब्रह्माजी बोले कि हे देवताओं में श्रेष्ठ जगन्नाथ देवलोकभावन! जिससे हमलोग आये हैं तिसको कहताहूं सुनिये २२ महादेवजी के वरदेने से उन्मत्त दुरासद राजाकंस है तिसके हाथ के घात से पृथ्वी ताड़ित होकर पीड़ित हुई है २३ कंसने महादेवजीसे कहाथा कि हे शंभो! भानजेके विना औरसे मेरा मरण न हो यह उसकी मायासे वंचित होकर आगे महादेवजी ने यहीवर दियाथा २४ तिससे हे देव! आप गोकुल में जाकर दुरासदकंस के मारनेके लिये देवकी के पेट में जन्म लीजिये २५ ब्रह्माजी के कहनेसे भगवान् महादेवजी से बोले कि देवों के स्वामी महादेवजी! पार्वतीजी को दीजिये ये साल भर स्थित होकर चलीआवेंगी २६ तब महादेवजीने पार्वतीजीको देदिया तो पार्वती रक्षाके साथ शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले भगवान् मथुराजी की यात्रा करतेभये २७ और वहांपर

गदाधरजी देवकीजी के पेटमें जन्म लेतेभये और मृगनयनी पार्व्वती जी यशोदाजी की कोखि में स्थित होती भई २८ नवमास और नवदिन कोखिमें रहकर भादों के महीने के कृष्णपक्षकी अष्टमी तिथि २९ रोहिणीनक्षत्रयुक्त, मेघोंसे गर्ज्जितहुई रात्रिमें कंस के वैरी,संसारके स्वामी वसुदेवजी के पुत्र उत्पन्न होतेभये ३० और नन्दजी की स्त्री वैराटी यशोदाजी कन्याको उत्पन्न करती भई पद्म हाथमें लेनेवाले, कमलनयन, पद्मनाभ पुत्रको ३१ देखकर तिस समयमें वसुदेवजी आनन्दको प्राप्त होगये और कंसके डरसे डरी हुई देवकीजी तिसी समयमें वसुदेवजी से बोली कि हे नाथ! निश्चय आप यशोदाजी के पास जाकर पुत्रको देकर तिनकी कन्या को ले आइये ३२। ३३ देवकी जी के वचन सुनकर दुःखयुक्त वसुदेवजी भी बालकको अंकमें लेकर यशोदाजी के सम्मुखको जाते भये ३४ तो तिसकी मध्यराहमें यमुनाजी पड़ीं जोकि जलसे भरी हुई, भयानक, महादीर्घ, गम्भीर जलके पूर को सेवन करनेवाली थीं ३५ इसप्रकारकी यमुनाजी को देखकर उनके किनारे स्थित होकर दुःखसे व्याकुल वसुदेवजी अत्यन्त चिन्तासे रोने लगे ३६ कि ब्रह्माजी से भी वंचित होकर मैं क्या करूं, कहां जाऊं और नन्दजी के स्थानको यशोदाजी के पास कैसे जाऊं ३७ फिर हरिजी की मायासे वंचित पिता वसुदेवजी आनन्दसमेत होकर क्षणमात्र यमुनाजी को देखते हुए किनारे स्थित होकर ३८ गांठपर्य्यन्त देखते भये तब इसप्रकार की यमुनाजी को देखकर प्रसन्न होकर जैसे वसुदेव जी उठ कर प्रस्थान करते भये ३९ कि माया करके जगन्नाथजी पिताके कोड़ से जलमें गिरते भये तिस पुत्र को गिरे हुए देखकर दुःखित वसुदेवजी हाहाकार कर ४० फिर तिन विधि से वंचित होकर महोपाय करते भये कि हे लोकोंके नाथ! हे देवताओंमें उत्तम! मेरी और पुत्रकी रक्षा कीजिये ४१ पिताका रोना सुनकर कंसके वैरी भगवान् वारंवार कृपासे जलक्रीड़ा कर फिर पिताजी के अंकमें प्राप्त होजाते भये ४२ जैसे तिस कृपासे वसुदेव जी नन्दके स्थानको जाकर यशोदाजीको पुत्र देकर तिसकी कन्या

को लेकर ४३ अपने स्थानमें आकर देवकीजीको कन्या दे देतेभये फिर कंसने यह हाल पाया कि देवकीजी के कुछ उत्पन्न हुआहै ४४ तो उससमयमें उसने दूतोंको पुत्र वा कन्या लेनेकेलिये भेजा तो वे कंसके दूत आकर कन्या लेनेका प्रारम्भ करतेभये ४५ बलसे देवकी और वसुदेवजी से कन्याको छीनकर लेकर कंसको दे देतेभये ४६ तब कन्याको लेकर राजाकंस डरसहित दुरासद होजाताभया और तपे हुए सोने के वर्ण के समान, पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाली ४७ बिजलीके तुल्य प्रकाशित नेत्रयुक्त, हँसतीहुई तिस कन्याको देखकर कंस राक्षसोंको आज्ञा देताभया कि इस कन्याको लेजाकर शिलाके ऊपर पटकदो ४८ तब वे असुर आज्ञा पाकर कन्याके पटकने में प्रवृत्तभये तो बिजली के समान शीघ्रतासे गौरीरूप कन्या महादेव जी के समान चलकर ४९ बोली कि हे असुरोंमें उत्तम राजन्! जहां पर तुम्हारा उत्तम शत्रु है तिसको मैं कहतीहूं सुनिये तुम्हारे नाश करनेवाला नन्दजी के स्थानमें छिपाहुआहै ५० वसिष्ठजी बोले कि हे दिलीप ! इसप्रकार कहकर वह देवी अपने मन्दिरको चलीगई तब देवीके वचनसुनकर राजाकंस अत्यन्त दुःखितहोकर ५१ यह न पूतनासे बोला कि तुम नन्दके मन्दिर को जावो और कपटसे तिस पुत्रको मारकर चलीआवो तुझको बहुत वाञ्छित ५२ दूंगा हेशुभे! मेरे शत्रु के मारने के लिये अत्यन्त शीघ्र जावो तब आज्ञा पाकर वह राक्षसी गोकुल के सम्मुख गई ५३ और मायासे सुन्दरी रूप होकर गोकुलमें प्रवेश करगई और स्तनमें विष धारणकर मारने को प्राप्त होगई ५४ गोपों के घरमें द्वारमें लक्षित होकर प्रवेशकर भीतर जाकर बालकको उठाकर स्तन पिलाकर सद्गतिको प्राप्तहोतीभई ५५ तदनन्तर कृष्णजी शकटासुर तृणावर्त्त आदिकोंको मर्दनकर कालीय को दमनकर मथुरापुरी को चलेगये ५६ और वहां जाकर क्रूरकंस को मारकर कंसके मल्लोंको भी जीततेभये हेराजन्! यह तुमसे विष्णुजी के जन्मके दिनका व्रतकहा ५७ इसके सुनने से पाप नाश होजाते हैं और करने से क्या होताहोगा जो मनुष्य वा स्त्री इस भगवान्के व्रतको करताहै ५८ वह इस जन्म में यश-

प्सित, अतुल ऐश्वर्य्य को पाताहै धर्म, काम और अर्थ की वांछा करनेवालों को तृतीया, छठि, अष्टमी, एकादशी और चतुर्दशी पूर्वविद्धा न करनी चाहिये और यत्न से सप्तमीसंयुक्त अष्टमी वर्जित होनी चाहिये ५९।६० विना नक्षत्रकेभी नवमीसंयुक्त अष्टमी करनी चाहिये उदयमें कुछ अष्टमी हो और सब नवमी जो हो ६१ और मुहूर्त्तभर भी रोहिणीयुक्तहो तो सब अष्टमी होतीहै अष्टमी रोहिणीसमेत जो बुधवार और ६२ सोमवारमें हो तो करोड़ों और व्रत करने की कुछ आवश्यकता नहीं है उदय में अष्टमी और नवमी सोमवार वा बुधवार में ६३ सैकड़ों वर्ष में मिलती वा नहीं मिलती है विना रोहिणीनक्षत्र के नवमीसंयुक्त अष्टमी न करनी चाहिये ६४ सप्तमीविद्धा भी रोहिणीसंयुक्त अष्टमी करनी चाहिये कलाकाष्ठा और मुहूर्त्त में भी जो कृष्णजी की अष्टमीतिथि हो ६५ नवमी में वह ग्रहण करनी चाहिये सप्तमीसंयुक्त नहीं ग्रहण करनी चाहिये फिर सोमवार और बुधवारमें विशेषकर ग्रहण करनी योग्यहै ६६ और फिर नवमीयुक्तहो तो करोड़ कुलको मुक्ति देनेवाली है हे राजेन्द्र! पलमात्र भी सप्तमी के वेधसे अष्टमी को त्याग करदेवे ६७ जैसे मदिरा के बिन्दु से स्पर्श कियाहुआ गंगाजी के जलका घड़ा त्याग करदिया जाताहै तब दिलीप बोले कि हे देव! हे महामुने! किसने पहले इस व्रतको किया किसने प्रकाशित किया क्या पुण्य और क्या फलहै यह सब कहिये ६८ तब वसिष्ठजी बोले कि महाराजा चित्रसेननाम हुएहैं जोकि महापापपरायण, महान्, अगम्यागमनकर ब्राह्मणके सोने को चुरानेवाले, ६९ मदिरामें सदैव तृप्त और वृथा मांसमें रतथे इसप्रकार पापमेंयुक्त नित्यही प्राणियोंके मारनेमें रत होकर ७० चाण्डाल और पतितोंके साथ सदैव वार्तालाप करते थे इस प्रकारके होकर राजा शिकार खेलने में मन धारण करतेभये ७१ वनमें व्याघ्रको जानकर सब ओरसे आच्छादित होकर सब वीरोंसे बोले कि तुम सब सावधानहो ७२ इस व्याघ्रको मैंहीं मारूंगा जो और कोई इसको मारेगा वह निस्सन्देह मारने योग्य होगा यह कहकर राजाकी मार्गसे जब व्याघ्र जाताभया ७३ तब

लज्जासमेत राजा व्याघ्र के पीछे जाताभया और अनेक प्रकारके क्लेश दुःख से व्याघ्र के मारने में एकाग्रचित्त करता भया ७४ भूख और प्यास से आकुल क्लेशयुक्त होकर सन्ध्या में यमुनाके किनारे जाताभया उसदिन कृष्णजी के जन्मका दिन रोहिणीयुक्त अष्टमी थी ७५ हेराजन्! प्रातःकालयमुनाजीमें कन्या व्रत करतीभई अनेक प्रकारकी भेंट,द्रव्य और सुन्दरधूप,दीप,७६ चन्दन,फूल,द्रव्य और कुंकुम आदि मनोहर से पूजन करतीभई तब बहुत गुणवाले अन्न को देखकर राजा के भोजन करने का मन होताभया तो स्त्रियों से राजा बोले कि इससमय में अन्न के अभाव से मेरे निश्चय प्राण शीघ्रही निकल जावेंगे तब स्त्रियां बोलीं कि हे पापरहित राजन्! जन्माष्टमी में आपको भोजन न करना चाहिये ७७।७८ जो कृष्ण-जीके जन्ममें भोजन अन्न करताहै वह गीध,गधा, कौवा और गऊ के मांस को निस्सन्देह भोजन करता है ७९ संसार में बसते हुए मनुष्यों के क्या क्या छिद्र नहीं उत्पन्न होते हैं जिसने देहमें प्राण स्थित हुए जयंतीका व्रत नहीं कियाहै ८० नहीं व्रत करनेवाले को यमराज के स्थानमें दण्ड मिलता है और जिसके दियेहुये को पि-तर नित्यही यथाविधि नहीं ग्रहण करतेहैं ८१ और जयंती में भो-जन करने से सब पितर गिरादिये जाते हैं यह सुनकर राजा व्रत करताभया ८२ कुछफूल, चन्दन और कपड़ा लेकर प्रसन्न होकर इसव्रत में युक्त होताभया और तिथि और नक्षत्रके अन्तमें पारण करताभया तो चित्रसेन राजा इसव्रत के प्रभाव से पितरोंसमेत सुन्दर विमानपर चढ़कर भगवान् के स्थानको जाताभया जो फल मथुराजी में जाकर कृष्णजी के मुखरूपी कमल के दर्शन करने से मिलता है ८३। ८४ वह फल कृष्णजीकी जन्माष्टमी के व्रतसे पुरुष को प्राप्त होताहै और द्वारका में जाकर संसार के ईश्वर भ-गवान् के दर्शन करनेसे जोफल मिलताहै वह फल दीनोंको कृष्ण-जन्माष्टमी के व्रत करनेसे मिलता है ८५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेहरिजन्माष्टमीव्रतमाहात्म्यंनाम त्रयोदशोऽध्यायः १३॥

# चौदहवां अध्याय॥

## ब्राह्मण का माहात्म्य वर्णन॥

शौनक बोले कि हे महाबुद्धिमान् दयासागर सूतजी! सबवर्णों में श्रेष्ठ ब्राह्मणके माहात्म्यको दयाकरके मुझसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण! सब वर्णों का ब्राह्मणही गुरु, सब देवताओं के आश्रय, साक्षात् नारायण, प्रभु है २ जो पृथ्वीके देवता ब्राह्मणको भक्तिसे भगवान्की बुद्धिसे प्रणाम करता है तिस के सम्पदा आदिक बढ़ती हैं ३ जो अभिमानयुक्त मनुष्य निन्दा से ब्राह्मणको देखकर नमस्कार नहीं करताहै तिसके शिरको भगवान् सदैव काटने की इच्छा करते हैं ४ जे पापबुद्धि मनुष्य अपराध किये हुए भी ब्राह्मण से वैर करते हैं वे भगवान् से वैर करने वाले जानने योग्यहैं और वे घोर नरक में जाते हैं ५ जो प्रार्थना करने के लिये आयेहुए ब्राह्मण को क्रोधसे देखता है तिसके नेत्रों में यमराजजी निश्चय तपीहुई सुई चुभो देतेहैं ६ जो मूर्ख अधम मनुष्य ब्राह्मण को डाटता है तिसके मुख में यमराज के दूत तपा हुआ लोहा देतेहैं ७ तपस्वी ब्राह्मण निश्चय जिनके स्थानमें भोजन करता है तिनके स्थान में सुपर्वाओंसमेत आपही विष्णुजी भोजन करते हैं ८ और उनके ब्रह्महत्याआदिक सब पाप नाश होजाते हैं जो मनुष्य कणमात्र भी ब्राह्मणके चरणजल को पीलेताहै ९ और जो भक्तिसे ब्राह्मणके चरण धोयेहुए जलको हाथ में लेताहै वह सब पापोंसे छूटजाताहै यह मैं तुमसे सत्यही कहता हूं १० पुत्रहीन स्त्री ब्राह्मण के कमलरूपी चरणके सेवने से पुत्रसहित होती है और बालक मरनेवाली के बालक जीते हैं ११ ब्रह्माण्डमें जितने तीर्थ हैं तितने तीर्थ समुद्र हैं और समुद्र में जितने तीर्थ हैं वे ब्राह्मणके चरणों में स्थितहैं १२ वह ब्राह्मणके चरण धोनेवाला सब तीर्थों में स्नान करचुका और सब पापों से छूट चुका है हे शौनक! तपस्वी, श्रेष्ठ ब्राह्मण! ब्राह्मण के चरणजलके पाप नाश करनेवाले माहात्म्यके इतिहास को मैं कहता

हूं सुनिये पूर्वसमयमें बनियेंकी जीविकामें परायण १३। १४ द्वापरयुगसें भीमनाम शूद्र हुआहै यह हजार ब्रह्महत्या करनेवाला, निष्ठुर, सदैव वैश्यकी स्त्रीसे प्रसन्न, महान्, १५ शूद्रके आचारसे भ्रष्ट और गुरुजी की स्त्रीसे भोग करनेवाला हुआ है तिस दुष्टचित्त चोरके पापोंकी गिनती नहीं है प्रत्येक पापको मैं क्या कहूं एक समयमें यह किसी ब्राह्मणके स्थानमें गया १६। १७ और वहां जाकर तिसके घरसे द्रव्य लेनेका मन करताभया तब ब्राह्मणके बाहरके दरवाजे के पास खड़ा होकर १८ तपस्वी ब्राह्मण से दीनतायुक्त वचन बोला कि भो स्वामिन्! मेरे वचनको सुनिये मैं आपको दयालुकी नाईं मानताहूं १९ मैं भूंखसे पीड़ितहूं मुझ को अन्न दीजिये मेरे प्राण शीघ्रही निकले जाते हैं २० तब ब्राह्मण बोला कि हे भूंखसे पीड़ित! मेरे कुछ वचन को सुनिये मैं रसोई नहीं करसक्ता हूं इससे मुझसे चावलों को लेकर सुखपूर्वक भोजन कीजिये २१ मेरे पिता, माता, पुत्र, भाई, स्त्री नहीं हैं स्त्री, माता और भाई ये सब मुझको छोड़कर मरगये हैं २२ हे अतिथि! मैं अकेलेही कर्महीन, भाग्यरहित घरमें स्थितहूं इससे मैं निश्चय तिसके विना कुछ नहीं जानताहूं २३ तब भीम बोला कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! मेरेभी कोई नहीं है इससे मैं शूद्र होकर आपके स्थानमें सदैव स्थित होकर आपकी सेवा करूंगा २४ सूतजी बोले कि हे तपस्वी! शौनक! ये भीमके वचन सुनकर ब्राह्मण आनन्दसमेत होकर शीघ्रही रसोई बनाकर अन्न देतेभये २५ तब भीमभी आनन्दयुक्त होकर तिस ब्राह्मण की मनोहर स्नेहयुक्त सेवा करते हुए उनके घरमें स्थित होताभया २६ और आज वा कल्ह इसको मारूंगा इसकी द्रव्य मेरीही है यह निस्संदेह द्रव्य लेनेकी इच्छा करताभया २७ यह हृदय के बीचमें विचारकर तिसके चरणधोने आदिक की क्रिया कर चरणजल को शिर में लगाकर पापरहित होगया २८ और चरणजल को आचमन कर कपट से प्रतिदिन शिर में लगाताभया एक समय में कोई चोर द्रव्य लेने के लिये ब्राह्मण के यहां आया २९ तो रात्रि में किवाड़ों को उखाड़कर तिन

के घरके भीतरगया तो मारने के लिये भीमको देखकर दण्ड हाथ में लेकर प्राप्त हुआ चोर ३० भीम के मस्तक को जल्द काटकर भागगया तदनन्तर विष्णुजी के शंख, चक्र और गदाके धारण करनेवाले दूत ३१ पापरहित भीम के लेने के लिये सुन्दर राजहंसयुक्त रथ लेकर प्राप्त होगये ३२ तब भीम रथपर चढ़कर निश्चय विष्णुजी के स्थान को जाताभया यह ब्राह्मण का माहात्म्य मैंने तुम से कहा जो मनुष्य भक्ति से इसको सुनता है तो तिसके पाप नाश होजाते हैं ३३ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेब्राह्मणमाहात्म्यं नामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

## पन्द्रहवां अध्याय ॥

एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे महाभाग ! एकादशी के पाप नाश करने वाले माहात्म्य को कहिये एकादशी के व्रत करने से क्या फल होता है और नहीं करनेसे क्या पाप होताहै १ तब सूतजी बोले कि इस समय में मैं एकादशी के माहात्म्य को क्याकहूं एकादशी का नाम सुनकर यमराजके दूत शंकायुक्त होजाते हैं २ जो कि सब प्राणियों के भय करनेवाले हैं इसमें सन्देह नहीं है सब व्रतों में श्रेष्ठ शुभा एकादशीको ३ व्रतकर विष्णुजी को महान् मण्डन और जागरण करै जो मनुष्य तुलसीदलों से निश्चय भगवान् की पूजा करताहै ४ वह एक दलसे करोड़ यज्ञ के फलको प्राप्त होता है नहीं भोग करनेवाली स्त्री से भोग करने में जो पाप कहाहै ५ वह पाप एकादशी में व्रत करने से नाशको प्राप्त होजाता है हे ब्राह्मण ! जो एकादशी के दिनमें घीसे पूर्ण दीप देताहै ६ वह अपने तेजसे अन्धकार नाशकर अन्तसमय में विष्णुजी के पुरको प्राप्त होताहै ते देश धन्यहैं और वह राजा धन्यहै ७ जिसकी राज्यमें हरिके दिन में एकादशी का बड़ा उत्सव होता है नारायण जी के शयन और पार्श्व के परिवर्त्तन में ८ और विशेष कर प्रबोधिनी एकादशी में जे

मनुष्य निराहार होते हैं उन पुण्यभागी मनुष्योंको हमारे पास नहीं लाना ९ यह यमराज जी दिनरात दूतोंको आज्ञा देते हैं एकादशी जगन्नाथजी की प्यारी और पुण्यकी बढ़ानेवाली है १० तिसमें अन्न के भोजन करने में भगवान् देहको जलादेते हैं तिनके जीवन, सम्पदा, सुन्दरता और वर्तनको धिक्कारहै ११ जे अत्यन्तपापी एकादशीमें अन्न भोजन करते हैं वे विष्ठाको भोजनकरते हैं हे श्रेष्ठब्राह्मण! एकादशी में केवल अन्नमें आश्रितहोकर १२ अनेकप्रकारके बहुत पाप स्थित होते हैं जैसे अमावसमें स्त्रियों के भोगकरने में बड़ा पाप होताहै १३ तैसेही एकादशी में अन्नके भोजनकरने में पाप होताहै रोगी, लँगड़े, खांसीयुक्त, पेटही से कोढ़ी १४ वे प्राणी एकादशी में अन्नके भोजन करनेसे निश्चय होते हैं गांवके सुअर, दरिद्रयुक्त १५ और एकादशी में भोजन करनेसे राजाके यहां बांधेजाते हैं संसार में जितने पापहैं वे एकादशी में १६ भोजनमें आश्रितहोकर स्थित होते हैं और आज्ञासे जल भोजन करनेवालों के सब पाप नाश हो जाते हैं और नरकसे निष्कृति होजाती है १७ परन्तु एकादशी में अन्न भोजन करनेवाले मनुष्यों की नरक से निष्कृति नहीं होतीहै मनुष्य एकादशी में जितने अन्न भोजन करतेहैं १८ उसमें प्रत्येक अन्नमें करोड़ ब्रह्महत्याका पाप होताहै हे मनुष्यो! मैं वारंवार कहता हूं सुनो १९ एकादशी के दिन कभी भोजन न करे चन्द्रमा और सूर्य्यके ग्रहणमें गंगादिक तीर्थोंमें स्नान करनेसे जो फल मिलता है वह फल एकादशी में व्रतकर कमल की मालाओं से भगवान्को पूजन करनेसे मिलताहै २० । २१ हे ब्राह्मण! विधिपूर्वकपारणाकर माताके गर्भमें नहीं आताहै एकादशी में भगवान् के स्थान में जो मण्डन करताहै २२ वह श्रेष्ठगतिको प्राप्त होकर विष्णुजीके स्थान में स्थित होताहै और जे एकादशी को प्राप्त होकर निराहार होते हैं २३ तिनका निरन्तर निस्सन्देह विष्णुजीके पुरमें निवास होताहै और जिनका मन तुलसीजीकी भक्तिमें अच्छेप्रकार लीनहोकर प्रकाशित होताहै २४ ते निस्सन्देह विष्णुजीके परमस्थान को प्राप्त होतेहैं जिनकी पराई द्रव्योंमें रुचिनहीं विद्यमान होतीहै २५ और

जे संतुष्टमन होते हैं तिनका निश्चय विष्णुपुर में वास होता है जे उत्तमकाल पाकर प्राणियोंको अन्न देते हैं २६ तिनका निस्सन्देह भगवान् के स्थानमें वास होताहै और गऊ, ब्राह्मण, स्वामी और स्त्रीकी रक्षा करनेके लिये जे मनुष्य प्राणों को छोड़ देते हैं तिनका निश्चय विष्णुपुरमें वास होताहै प्राणीलोग दशमीविद्धा एकादशी कभी व्रत न करैं २७ । २८ दुर्जन के संगकी नाईं छोड़ देवें अरुण के उदय के समयमें जो दशमी हो २९ तो द्वादशी का व्रत करना चाहिये त्रयोदशी में पारण करना चाहिये दशमीशेषसंयुक्त जो अरुणका उदयहो ३० तो वैष्णव मनुष्यको उसदिन एकादशीका व्रत न करना चाहिये चारघड़ी प्रातःकाल अरुणोदय कहाता है ३१ यह संन्यासियों के स्नानका समय गंगाजी के जल के समान कहा है अरुणोदय के समय में जो दशमी दिखाईपड़े ३२ तो वह एकादशी धर्म, काम और द्रव्य के नाश करनेवाली होती है यह नहीं करनी चाहिये ३३ मदिरा के बिन्दुके पड़जाने से घीके घड़े की नाईं त्यागकरदेवे और जो सम्पूर्ण एकादशी हो तो द्वादशी में ३४ संन्यासी लोग दूसरे दिन व्रतकरैं और पहले दिन एकादशी में गृहस्थ व्रतकरे एकादशी कलाभर जो हो और उपरांत द्वादशी न हो ३५ तो व्रत करनेसे सौयज्ञ करनेकाफल होताहै त्रयोदशीमें पारण करनाचाहिये और जो एकादशीकी हानिहो उपरांत द्वादशी युक्तहो ३६ तो जो परमगतिकी इच्छा चाहे तो पूर्ण द्वादशीकाव्रतकरे जो सम्पूर्ण एकादशी हो और प्रातःकाल दूसरे दिनभी एकादशीही हो ३७उपरान्त द्वादशीहो तो सबको पीछे की एकादशी करनीचा-हिये जिन मनुष्योंका मन एकादशी में लीन होता है ३८ तिनका नि-श्चय स्वर्गमें भगवान्के स्थानमें वास होताहै एकादशीसे श्रेष्ठ पर-लोकका साधन कुछ नहीं है ३९ बहुत पापोंसेयुक्तहोकरभी जो एका-दशी का व्रत करताहै तो वह सब पापोंसे छूटकर भगवान्के स्थान को जाताहै ४० और पति समेत जो स्त्री एकादशी का व्रत करती है वह सुन्दर पुत्रयुक्त और सुहागवती रहकर मरकर हरिजी के स्थान को जाती है ४१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! जो भक्तिभावसे भगवान्

के आगे एकादशी में दीप देता है तिसकी पुण्यकी गिनती नहीं है ४२ जो स्त्री अपने पतिसहित एकादशी में जागरण करती है वह पतिसमेत बहुत कालतक हरिजी के स्थान में स्थित होती है ४३ जो भक्तिसे जो कुछ वस्तु एकादशी में भगवान् के अर्थ देताहै तिस की सदैव नाशरहित पुण्य होती है ४४ पूर्वसमय में कांचनाढ्य नगर में वल्लभनाम हुआ है यह अधिक धनसे कुबेर की नाईं शोभित होताथा ४५ तिसकी महारूपवती स्त्री हेमप्रभा नाम हुई इस वल्लभको गरीयान्, मुखर कलियुग का गुण बाधा करताभया ४६ और हेमप्रभा पतिके साथ सदैव लड़ाई करतीभई निरन्तर गुरुजनोंको नीचबोलीसे डाटती ४७ और छिपकर पापयुक्त यह रसोई के वर्तनमें सदैव भोजन करतीथी और प्रतिदिन गुरुजनोंको जूंठा देतीथी४८ व्यभिचारी पुरुष में सदा चित्त स्थित रखती और यह कहतीथी कि मैं पतिव्रताहूं हे ब्रह्मन्! स्वामी से लड़ाइयों से सदैव मन को उद्वेग करनेवाली भी थी ४९ हे ब्राह्मण! एक समयमें तिस पापयुक्ता डाटनेवाली को आतेहुए देखकर उसका पति उसको मारताभया ५० तब वह स्त्री क्रोधयुक्त होकर शून्य घरमें चलीगई और छिपकर सोतीभई जल और अन्नको न खातीभई ५१ भाग्य से उसदिन भगवान्के पार्श्वका परिवर्तन, सबपाप नाश करनेवाला एकादशी का व्रत था ५२ तिसके पीछे द्वादशी श्रवणनक्षत्रयुक्त की रात्रि में प्राप्त होकर क्रोधयुक्त मनवाली स्त्री दो दिन निराहारकर निर्मल हो जयंतीएकादशी की रात्रिमेंहीं नाशको प्राप्त होगई ५३। ५४ तब यमराज की आज्ञासे उनके दूत भयंकर फँसरी और मुद्गर हाथों में लियेहुए तिसके लेने के लिये प्राप्त होगये ५५ और जब उसको बांधकर यमराजके स्थानमें लेजाने का मन करतेभये तब विष्णुजी के दूत शंख, चक्र और गदाको धारण कियेहुए आन पहुंचे ५६ और फँसरी को काटकर तिस पापरहित अत्यन्त निर्मल स्त्रीको सुन्दर रथमें बैठाकर भगवान् के स्थान को चलतेभये ५७ तब विष्णुदूतों से वेष्टित होकर वह स्त्री देवताओं से दुर्लभ शुभ भगवान् के मन्दिरमें प्राप्त होजाती भई हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह

एकादशी का माहात्म्य तुमसे कहा ५८ जो विना इच्छा के भी करताहै वह भी भगवान् के स्थानको प्राप्त होता है जो मनुष्य एकादशी के दिन दीप देनेके लिये भगवान्के मन्दिरमें ५९ जाता है तो वह प्रत्येक पदमें अश्वमेधयज्ञ से अधिक फलको प्राप्त होताहै और जे पुराणों को एकादशी के दिन सुनते वा पढ़ते हैं वे प्रत्येक अक्षर में कपिलागऊके दानसे उत्पन्न फलको प्राप्त होते हैं ६० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेसूतशौनकसंवादेब्रह्मखण्डेहरिवासरमाहात्म्यकथनंनामपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

# सोलहवां अध्याय ॥

भगवान्को घी समेत लाई और कौड़ी देनेका माहात्म्य वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! किस कर्मसे पापोंका नाश होता है और श्रीभगवान् की दया होती है यह कृपाकरके कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे शौनक! सुननेवालों के पाप नाशनेवाले चरित्र को कहताहूं सुनिये जिससे पापोंके नाश करनेवाली विष्णुजी की कृपा होती है २ हे ब्राह्मण! पौर्णमासी में जो भक्तिभावयुक्त होकर अनेक प्रकारकी विधिसे संसार के स्वामी श्रीभगवान्की पूजा करताहै ३ तिसके करोड़ जन्म के इकट्ठे किये हुए पाप नाश होजाते हैं और तिसके ऊपर लक्ष्मीपतिजी की कृपा निश्चय उत्पन्न होती है ४ द्वादशी में जो भक्तिसे ब्राह्मणको अन्नदान करताहै तिस के पाप इसप्रकार नाश होजाते हैं जैसे अरुण के उदय अन्धकार नाश होजाते हैं ५ हे ब्राह्मण! जो मनुष्य द्वादशी में श्रीहरिजीको दूध और शक्कर आदिकों से स्नान कराताहै तिसके ऊपर शीघ्रही भगवान् प्रसन्न होते हैं ६ जो मन्त्रके विना श्रीहरिजी को पत्थरके सदृश फूल देता है तो देनेवाला नरक को जाता है ७ जो मनुष्य मूर्ख ब्राह्मण को जो पत्थरके समान दान देता है तो उसकी पुण्य नहीं होती है ८ जो मूढ़बुद्धि, विद्यारहित ब्राह्मण मोह से दानको ग्रहण करता है तो जैसे कालाग्नि पचती है तिसी तरह से वह नरक में जाकर पचता है ९ जैसे काठका हाथी और तसवीर का

हरिण होता है तैसेही विद्याहीन ब्राह्मण होता है ये तीनों नामही धारण करनेवाले हैं १० जैसे राहमें स्थित जल पवन और सूर्यसे शुद्ध होताहै तैसेही भक्तिसे पार्षद को देखकर तिस देखनेवाले के पाप नाश होजातेहैं ११ जो मनुष्य कुँवार के महीने में पौर्णमासी के दिन श्रीहरिजी को घी समेत लाई और खेलने के लिये कौड़ी भक्तिसे देताहै वह हरिजी के स्थानमें जाता और वहांसे फिर नहीं आताहै और जो मनुष्य मोहसे नहीं देताहै तिसके ऊपर भगवान् प्रसन्न नहीं होतेहैं १२। १३ जो मनुष्य कुँवारमें पौर्णमासी के दिन जितनी कौड़ी भगवान् को देताहै तितनेही दिन हरिजी के स्थान में निश्चय बसताहै १४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! पूर्वसमयमें करवीरपुर में एक दयारहित कालद्विज नाम शूद्र हुआ है वह पापी, भय करने वाला १५ अपने कार्य्य में निरत और स्वामी के कार्य्य का नाश करनेवाला था एक समयमें जब वह नाशको प्राप्त होगया तो भयङ्कर यमराज के दूत १६ तिसको यमराज के स्थानमें लेजाने के लिये प्राप्त होगये और बांधकर लेगये तब उस को देखकर यमराज जी चित्रगुप्त मन्त्रीसे पूंछते भये १७ कि हे चतुर चित्रगुप्त मन्त्री ! इसका क्या शुभ और अशुभ कर्म विद्यमान है तिसको मूलसमेत कहिये १८ तब चित्रगुप्त बोले कि यह पापी, दुराचारी और स्वामी के कार्य्यका नाश करनेवाला है इसकी अणुमात्र भी पुण्य नहीं है इसको नरक में पचाइये १९ फिर हे राजन् यह निष्ठुर मनुष्य सौ मन्वन्तर सांपकी योनि में पत्थरके घरमें जन्म लेकर निरन्तर स्थित रहे २० सूतजी बोले कि हे ब्राह्मण शौनक ! तितने काल तक वह अत्यन्त दुःखित मनुष्य नरकमें गिरा फिर पत्थरके घरमें सांपकी योनिमें उत्पन्न हुआ २१ हे ब्राह्मण ! एक समय में कुँवारके महीने की पौर्णमासी के दिन यह सांप लाई और कौड़ी बिलसे बाहर फेंकता भया २२ तो वह भगवान् के आगे गिरती भई तब हरिजी दयालु दुःख नाश करनेवाले आपही शीघ्र उसके पापको नाश कर देतेभये २३ कदाचित् काल प्राप्तहोकर जब वह सांप नाशको प्राप्त हुआ तो उसके लेने के लिये बहुतसे यमराज

के दूत प्राप्तहोगये २४ और उसको बांधकर जब यमराजके स्थान लेजाने का मन करते भये तब तो शङ्ख, चक्र और गदाको धारण कर विष्णुजी के दूतभी आनपहुँचे २५ औ शीघ्रही फँसरी काटकर तिस पापरहित को सुन्दर रथमें चढ़ा लेतेभये तब यमराजके दूत भाग जातेभये २६ तो विष्णुदूतों से वेष्टित होकर सांप विष्णुजी के मन्दिर को जाताभया और वहां पर फिर लौटने से रहित हो-कर भगवान्‌के आगे स्थित होता भया २७ हे ब्राह्मण! जो मनुष्य भक्तिसे भगवान्‌को घी समेत लाई और कौड़ी देताहै तिसकी पुण्य को निश्चय मैं नहीं जानता हूं कि क्या होती है २८ और जो इस पाप नाश करनेवाले अध्याय को सुनताहै तो उसके श्रीहरिजी की दयासे पाप नाश होजाते हैं २९॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेषोडशोऽध्यायः १६॥

## सत्रहवां अध्याय॥

भगवान् के चरणोदक का माहात्म्य वर्णन॥

शौनक बोले कि हे महाबुद्धिमान् दयासागर सूतजी! विष्णु-जी के चरणोदक के पाप नाश करनेवाले माहात्म्य को मूलसमेत मुझसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन् शौनक! सब पाप नाश करनेवाले, शुभ, विष्णुजी के चरणोदक को जो कणमात्र भी प्राप्त होताहै तो वह सब तीर्थ के फलको प्राप्त होताहै २ विष्णुजी के चरणजलको स्पर्श करने से पाप नाश होजाते हैं अकालमृत्यु नहीं होती है और छूनेवाला गंगाजी के स्नानके फलको प्राप्तहोता है ३ जो पापी विष्णुजी के चरणोदक को पीता है तो उसके किये हुए देह के स्थित पाप निस्सन्देह नाश होजाते हैं ४ जो मनुष्य भक्तिसे तुलसीदलसंयुक्त विष्णुजी के चरणामृत को शिरसे धारण करताहै तो वह अन्तमें भगवान्‌के स्थानको जाताहै ५ मेरुपर्वतके बराबर सोना देनेसे जो फल मिलताहै वह फल मनुष्योंको हरिजी के चरणजलके स्पर्श से प्राप्त होताहै ६ हज़ारकरोड़ गौवोंके देनेसे जो फल मनुष्योंको मिलताहै वह फल हरिजी के चरणजलके छूनेसे

निश्चय प्राप्त होताहै ७ हजारकरोड़ यज्ञ करने से जो फल मिलता है तो तिससे करोड़गुणा भगवान् के चरणजल के स्पर्श से प्राप्त होता है ८ करोड़ कन्यादान करने से जो फल मनुष्यों को मिलता है तिससे अधिक फल विष्णुजी के चरणजल के छूनेसे होता है ९ करोड़ हाथी और करोड़ ही सप्तिके देनेसे जोफल मनुष्य पाताहै वह हरिजी के चरणजलके स्पर्श से भी पाता है १० मनुष्य अन्न समेत सातों द्वीपकी पृथ्वी देनेसे जिस फलको पाताहै तिससे अधिक विष्णुजी के चरण जलके स्पर्श से पाता है ११ हे ब्राह्मण! अधिक क्याकहूं संक्षेप से कहताहूं सुनिये विष्णुजी के चरणजल के स्पर्श से पापी भगवान् के घरको जाताहै १२ तब शौनक बोले कि हे सूतजी! पूर्वसमय में किस प्राणी ने भगवान् के चरणजल को स्पर्श और पानकर भगवान् के स्थानको पायाहै यह मेरे ऊपर दयाकरके कहिये १३ तब सूतजी बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण शौनक! पूर्वसमय त्रेतायुग में सुदर्शन नाम पापी ब्राह्मण एकादशी के दिन नित्यही भोजन करता था १४ शास्त्र और व्रतकी भी सदैव निन्दा करता था और अपने पेट के विना और कुछ वह नहीं जानता था १५ एक समय में काल पाकर नाशको प्राप्त होगया तो यमराज के दूत आकर उसको बांधकर यमराजके स्थानको लेगये १६ तिसको क्रोधसे देखकर यमराजजी चित्रगुप्त से बोले कि भो मंत्री! इसकी जो पुण्य वा पाप हो तिसको मूलसे कहिये १७ यह ब्राह्मण महापापी क्रूरकर्म्म करनेवाले की नाईं दिखाई देताहै १८ तब चित्रगुप्त बोले कि हे विभो! इसके पापको सुनिये पुण्य तो इसकी अणुमात्र भी नहीं है यह एकादशी के दिन नित्यही भोजन करता रहा है १९ हे राजन्! जो अधम मनुष्य एकादशी में भोजन करता है वह विष्ठाको भोजन करताहै और घोर नरकको जाता है २० इससे इसको सौमन्वन्तरपर्यन्त नरक में स्थान दीजिये तदनन्तर गांवके सुअर की योनि में जन्म होगा २१ सूतजी बोले कि हेब्राह्मण शौनक! तब यमराजजी की आज्ञासे उनके भयंकर दूतों ने सौमन्वन्तरपर्यन्त विष्ठा के नरक में तिसको गिराया २२ जब

नरकसे छूटा तो पृथ्वी में गांवका सुअर होकर बहुतकाल तक एकादशी के भोजन करने से नरकको भोजन करता रहा २३ फिर काल प्राप्त होनेपर मरकर कौवेकी योनिमें जन्म लेकर सदैव विष्ठा भोजन करतारहा २४ एक दिन वह कौवा द्वारदेश में स्थित श्री हरिजी के चरणजलको पानकर सब पापों से रहित होताभया २५ और तिसी दिन बहेलिये का कौवा गिरा तब कालमें बहेलिये ने कौवेको भी मारडाला २६ तब दिव्य, शुभ, राजहंसों से युक्त रथ वैकुण्ठसे आया तिसपर कौवा चढ़कर भगवान् के मन्दिर को जाता भया २७ यह पाप नाश करनेवाला चरणजल का माहात्म्य कहा जो पापी मनुष्यभी इसको सुनताहै तो उसके पाप नाशहोजाते हैं२८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेचरणोदकमाहात्म्ये सप्तदशोऽध्यायः १७॥

# अठारहवां अध्याय॥

पापों के प्रायश्चित्तों का वर्णन॥

शौनकजी बोले कि हे सूतजी! जो विमोहित होकर नहीं भोग करनेवाली स्त्रीसे भोग करताहै तो उसकी शुद्धि किससे होती है यह मूलसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि जो उत्तम ब्राह्मण कुत्ता पकानेवाली चाण्डाली से भोग करताहै वह तीन व्रतकर तिसपीछे प्राजापत्य करै २ शिखासमेत बाल बनवाकर दो गोदान देकर यथार्थ दक्षिणा देनेसे वह ब्राह्मण शुद्धिको प्राप्त होताहै ३ क्षत्रिय वा वैश्य जो चाण्डाली से भोग करता है वह प्राजापत्य, कृच्छ्रकर दो गौवों के जोड़े देवे ४ और जो शूद्र कुत्ते पकानेवाली चाण्डाली से भोगकरे तो चारगौवों के जोड़ों को देकर प्राजापत्य व्रतकरै ५ जो मोहित होकर माता, बहन, अपनी कन्या और बधूसे भोगकरे तो तीनि कृच्छ्र व्रतकर ६ चान्द्रायण भी तीनकर तीन गौवों के जोड़ों को देवे और शिखासमेत बाल बनवाकर तिसपीछे पंचगव्य पीवे ७ और अग्नि में हवनकरे तो इस प्रकारसे शुद्ध होजाता है पिता की स्त्रियां, मौसी, ८ गुरुजी की स्त्री, माई, भाईकी स्त्री और अपने

गोत्रसे उत्पन्न स्त्रीसे जो मोहसे भोग करताहै वह दो प्राजापत्यकरै ९ तीन चान्द्रायण भी करै पांचगौवोंके जोड़े और दक्षिणा ब्राह्मणों को देवे तो निस्सन्देह शुद्ध होजाता है १० जो मूर्ख गऊ से भोग करता है वह तीन ब्रतकर गऊ और अन्नदेवे तो निस्सन्देह शुद्ध होजाता है ११ वेश्या, गदही, सुअरि, बनरिया और भैंस से जो भोग करता है वह गोबर और जल के कीचड़ में कण्ठपर्यन्त १२ तीन रात्रलक निराहार होकर स्थित रहे तो शुद्ध होजाता है फिर शिखासमेत बाल बनवाकर तीनरात्र ब्रतकरै १३ एकरात्र जलमें स्थित रहे तो निस्सन्देह शुद्ध होजाताहै जो मनुष्य कामसे मोहित होकर ब्राह्मणीसे भोग करताहै वह तीन प्राजापत्य तीनचान्द्रायण और तीन गौवोंको देवे तो शुद्ध होजाताहै १४।१५ और ब्राह्मणी पांचरात्रि पंचगव्य पीवे दोगऊ और दक्षिणादेवे तो निस्संदेह शुद्ध होजाती है १६ जो पराई स्त्रीसे भोग करताहै वह कृच्छ्र सान्तपनकरै जैसे अर्गला है तैसेही स्त्री है तिससेही स्त्री को वर्जित करै १७ जो मनुष्य वर्णसे बाहरवाली तथा नीचस्त्री से एकबार भोग करता है वह प्राजापत्यकृच्छ्रकर निस्सन्देह शुद्ध होजाता है १८ अंगार के समान स्त्री और घीके घड़े के समान पुरुष है इससे स्त्री और दूसरा पुरुष ये एकान्तमें कभी स्थित न होवें १९ जो कुल के नाश करनेवाली स्त्री व्यभिचारी दूसरे पुरुषसे गर्भ को उत्पन्न करती है वह सर्वथा छोड़देने योग्यहै तिसके छोड़नेमें दोष नहीं होताहै २० जो स्त्री घर से अपने भाइयों को छोड़कर चलीजाती है वह नष्ट और कुलसे भ्रष्ट है उसका फिर संगम नहीं होना चाहिये २१ जो स्त्री मोहित होकर पराये पुरुषसे भोगकरै वह प्राजापत्यकृच्छ्रकर तिसपीछे पंचगव्य पीवे २२ और दोगऊ देवे तो निस्सन्देह शुद्ध होजावे हे ब्रह्मन्! मूर्खा ब्राह्मणी जो मोहित होकर पराये पुरुषसे २३ भोग करावे तो मनुष्य उसको छोड़देवे इसमें दोष नहीं होता है जो कामसे मोहित होकर ब्राह्मण ब्राह्मणी दूसरे की स्त्रीसे भोग करताहै वहगऊ और तिलों को देकर निस्सन्देह शुद्ध होताहै २४॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेऽष्टादशोऽध्यायः १८॥

# उन्नीसवां अध्याय॥

विष्ठा और मूत्रके खालेने और मदिराके स्पर्श आदि पाप-
कर्मोंका प्रायश्चित्त वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे शौनक ब्राह्मण! अज्ञानसे जो विष्ठा, मूत्र खालेते हैं या मदिरा को स्पर्श करते हैं तो जिसप्रकार से तिनकी शुद्धि होती है तिसको कहताहूं सुनिये १ हे मुने! दो प्राजापत्यकर तीर्थों में जाकर ग्यारह बैल और गऊ दानदेकर शिखासमेत बाल बनवाकर २ चौराहे में जाकर सब प्राजापत्य व्रतकर दोगऊ देकर पंचगव्य पीकर ३ ब्राह्मणों को भोजन करावे तो निस्सन्देह शुद्ध होजाताहै ज्ञानसे विपत्तियों में चाण्डाल के अन्न और जल को ४ जोकोई मनुष्य भोजन करलेता है वह कृच्छ्र चान्द्रायणकर शिखा समेत बाल बनवाकर पंचगव्य पीवे ५ और एक, दो, चार गौवें क्रमसे ब्राह्मणों को देवे, शूद्र का अन्न, सूतक का अन्न और जल ये खाने योग्य नहीं होते हैं इनको ६ और शूद्रके जूंठेको जो विपत्तियों में ज्ञानसे भोजन करताहै वह दो प्राजापत्य, तीन चान्द्रायणकर७ दो गऊ देकर पंचगव्य पीवे और अग्नि में हवनकर बहुत से ब्राह्मणों को भोजन करावे तो निश्चय शुद्ध होताहै ८ मूसा, न्यौरा और बिलारोंके खायेहुए अन्नको जो खावे तो तिल कुश और जल से छिनकरकर निस्सन्देह शुद्ध होजाताहै ९ जो मनुष्य प्याज, लहसन, शिग्रु, अलाबु, गाजर और मांसको भोजन करताहै तो वह चान्द्रायण व्रतकरै १० शूद्रके मदिरा और मांस प्रिय होताहै इससे उसको चाण्डाल की नाईं नीचकामों में भी न लगावे ११ जे ब्राह्मण की सेवामें अनुरक्त, मदिरा और मांससे वर्जित, दान और अपने कर्म में निरत रहते हैं वे उत्तम शूद्र जानने चाहिये १२ जो मृतक-सूतकमें अज्ञानसे भोजन करता है वह दशहज़ार गायत्री जप करनेसे पवित्र होताहै १३ क्षत्रिय सहस्र गायत्रीसे वैश्य पांचहज़ार गायत्री से शुद्ध होताहै और शूद्र पंचगव्योंसे शुद्धहोताहै १४ जो वर्ण घी, जल और दही को नीचके बर्तनमें स्थितहुए को अज्ञान

से पीताहै वह प्राजापत्य व्रतकरै १५ बहुत दानदेवे और अग्निमें विधि पूर्वक हवनकरै तो शुद्धहोताहै शूद्रोंका व्रत नहीं है दानहीसे शुद्धहोजाते हैं १६ शिखापर्यन्त बाल बनवाकर दिनरात्रि के व्रतसे नीचोंके दण्ड आदिकोंसे ताड़ित मनुष्य १७ प्राजापत्य वा चान्द्रायण व्रतकरै फिर शिखासमेत बालों को बनवाकर पंचगव्य पीवे १८ और दो गऊ देकर अग्निमें अन्नआदिके हवनकरै जो इच्छा पूर्वक ज्ञानसे घरमें मदिरा का पान होताहो १९ और कोई मनुष्य भोजन करलेवे तो वह मनुष्य कुलसे निकाल देनेके योग्य होताहै जो गऊके बीजका मारनेवाला दलका काटनेवाला २० और सोने का चुरानेवाला होताहै वह तीन कृच्छ्रप्राजापत्यकर शिखासमेत बाल बनवाकर पंचगव्य पीवे २१ और अग्निमें विधिपूर्वक हवन कर तीनिगऊदेवे तो अन्न और जल उसका ग्रहण करने के योग्य होताहै २२ तीनदिन प्रातःकाल और तीनही दिन सायंकाल जो विना मांगेहुएको भोजनकरै और तीनदिन नहीं भोजनकरै तो यह प्राजापत्यव्रत होता है २३ गऊ का मूत्र, गऊका गोबर, गऊ का दूध, दही और घी और कुशोंका जल दोदिन पीकर एकरात्र व्रत करै तो यहसब पाप नाश करनेवाला कृच्छ्रसांतपन कहाताहै २४ तीनदिन एक एक ग्रास प्रातःकाल और सायंकाल विनामांगे भोजनकरै तीन दिन व्रतकरै तो यह अतिकृच्छ्रव्रत होताहै २५ तीन दिन गर्म जल, दूध और घी पीवे एकवार दिन में स्नानकरै तो पाप नाश करनेवाला तप्तकृच्छ्र होताहै २६ बारहदिन भोजन न करै तो पाप नाश करनेवाला कृच्छ्र होताहै और पराकनाम प्रसिद्ध ही है वह भी जानने योग्यहै २७ शुक्लपक्ष में एक एक पिण्ड बढ़ावै और कृष्णपक्ष में एक एक घटावे और अमावस में भोजन न करै तो चान्द्रायण व्रतहोताहै २८ प्रातःकाल एकाग्रचित्त होकर चार पिण्ड और अस्त होतेहुए सूर्य्यों के चारही पिण्ड भोजनकरै तो शिशुचान्द्रायण होताहै २९ जो स्त्री कुम्हड़े को काटती है वह तीन दिन पंचगव्य पीकर सोना और कपड़ेसमेत पांच कुम्हड़े देवे तो उसका अन्न और जल ग्रहण करनेके योग्य होताहै ३० ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेएकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

# बीसवां अध्याय॥

राधा और कृष्णजीकी पूजाका माहात्म्य वर्णन॥

शौनक बोले कि हे सूतजी! क्या सुकृतकर कलियुग में अन्धे कुएँके मेढ़क के समान मनुष्य संसाररूपी समुद्र से तरजाते हैं १ तब सूतजी बोले कि जो स्त्री एकाग्रचित्त होकर राधा और कृष्णजी के प्यारे कार्त्तिक महीने में स्नानकर भक्ति से राधा और कृष्णजी की पूजाकरै २ मांस आदिक को छोड़कर पतिकी सेवा में परायण रहे तो वह अत्यन्त दुर्लभ, श्रीहरिजी के गोलोक नामस्थान को जावे ३ जो कार्तिकमें राधा और दामोदरजीको धूप और दीप देती है तो वह पापों से छूटकर विष्णुजी के मन्दिर को प्राप्त होती है ४ जो स्त्री कार्तिक में श्रीभगवान् के मन्दिर में कपड़ा राधा और दामोदरजी को देतीहै वह बहुत समयतक भगवान् के यहां रहती है ५ जो कार्तिक महीने में राधा और दामोदरजी को फूल और सुगन्धित माला देतीहै वह वैकुण्ठ मन्दिर को जातीहै ६ और जो स्त्री चन्दन और शक्कर आदिक नैवेद्य राधा और कृष्णजी को देती है वह निश्चय भगवान् के मन्दिर को जातीहै ७ और हे ब्रह्मन्! जो स्त्री कार्तिक में राधा और कृष्णजी की प्रीति के लिये जो कुछ ब्राह्मणको देतीहै तिसकी पुण्य नाशरहित होतीहै ८ जो स्त्री कार्तिक में राधा और कृष्णजीकी प्रातःकाल भक्तिसे पूजानहीं करतीहै वह बहुत कालतक नरक में प्राप्त रहती है ९ कदाचित् पृथ्वी में जन्म होताहै तो प्रत्येक जन्ममें विधवा होजातीहै और अपने स्वामीको प्यारी नहीं होतीहै १० पूर्वसमय त्रेतायुग में शंकरनाम शूद्रहुआ था यह सौराष्ट्रदेश में रहता था उसकी स्त्रीका कलिप्रिया नाम था ११ और सदैव जाराकांक्षी (व्यभिचारी पुरुषों की इच्छा करनेवाली) थी पतिको तृणकी नाईं मानती थी और यह पति मेरे योग्य नहीं है मेरा स्वामी परपुरुष है १२ यह मानकर सदैव निश्चयकर तिसको जूंठा भोजन देतीथी और महामूर्खा नीचोंके संगसे मदिरा और मांस को खातीथी १३ और निष्ठुर होकर स्वामीको नित्यही

डाटतीथी कि यह निश्चय पांवोंकी रस्सीहुआ मर क्यों नहीं जाता है १४ तिसके मरने में मैं इच्छापूर्वक भोग करूंगी यह मूर्खा मनसे विचारकर तिससमयमें एकव्यभिचारी पुरुषसे १५ अन्यदेश जाने केलिये संकेतकर रात्रिमें सोतेहुए अपने स्वामीका तलवारसे गला काट डालतीभई १६ और पीछेसे संकेतके स्थलको चलीगई तब उस स्थलमें आयेहुए व्यभिचारी पुरुषको सिंहने खालियाथा १७ उसकी यह व्यवस्था देखकर मूर्खा कलिप्रिया मूर्च्छित होकर गिर पड़ी और बहुत कालतक करुणापूर्वक रोकर श्वास लेकर बोली १८ कि अपने स्वामी को मारकर पराये पुरुषके पास आई परन्तु अभाग्यसे उसको भी सिंहने खालिया अब मैं क्याकरूं कहां जाऊं ब्रह्मासे मैं ठगीगई हूं १९ सूतजी बोले कि हे ब्रह्मन् शौनक! तदनन्तर कलिप्रिया अपने घरको चलीआई और अपने स्वामी के मुख में अपना मुख लगाकर रोतीहुई २० बोली कि हा नाथ! हा स्वामिन्! मैंने यह अत्यन्त घोरकाम आपके मारनेका कियाहै मुझसे आप कुछवाणी बोलिये मैं किस लोक को जाऊंगी २१ मुझ अत्यन्त निन्दित ने इच्छापूर्वक आप को डाट बतलाई थी अब हे स्वामिन्! आप कुछ कहते नहींहो जिससे मुझको पाप न होवे २२ सूतजी बोले कि हे शौनक! तिसपीछे वह स्त्री पतिके चरणमें नमस्कारकर और नगरको चलीगई तो वहांपर बहुत से पुण्य करने वाले मनुष्य २३ वैष्णवों और स्त्रियों को प्रातःकाल नर्मदानदी में स्नानकर राधा और कृष्णजी की २४ पूजाकर महान् उत्सव कर शंखके शब्दों और चन्दन, फूल, धूप, दीप, कपड़े और अनेक प्रकारके सुगंधित फलोंको चढ़ातीभई यह देखकर नम्रतायुक्त होकर कलिप्रिया उन स्त्रियोंसे पूछती भई कि हे स्त्रियो! यह क्या करती हो २५ । २६ तब स्त्रियां बोलीं कि हे मातः! सब महीनों में उत्तम कार्तिक महीने में हमलोग शुभ, राधा और दामोदरजी की कल्याण करनेवाली और सब पाप नाशकरनेहारी पूजाकर २७ करोड़ों जन्मों के पापों का नाशकर स्थान प्राप्त किया है तब कलिप्रिया भी एकादशीके दिन मांस त्यागकर भगवान्की पूजाकर २८ निर्म्मल

होकर पौर्णमासी में नाश होगई तो यमराज के दूत शीघ्रही क्रोध-युक्त होकर यमराज के स्थान लेजाने के लिये प्राप्त होगये और उसको चमड़ेकी रस्सियोंसे बांधलेतेभये और तिसीसमय में सोने के बनेहुए विमानको लेकर विष्णुजी के दूत २९ । ३० शंख, चक्र, गदा और पद्म धारणकर वनमाला पहनकर प्राप्त होगये और चक्र के धाराओंसे काटनेलगे तब यमराजकेदूत भागगये ३१ तो कलि-प्रिया विष्णुदूतों से आच्छादितहोकर राजहंसों से युक्त सोनेके बने हुए विमानपर चढ़कर विष्णुजी के मन्दिर को जातीभई ३२ और वहांपर मनोवांछित भोगोंको भोगकर बहुतकाल स्थितहोतीभई हे ब्राह्मण ! जो स्त्री कार्तिक में राधा और भगवान्को पूजन करतीहै ३३ वह पूजासे पापोंसे छूटकर मनोहर गोलोक को जाती है जो पुरुष और स्त्री एकाग्रचित्त होकर इस चरित्रको भक्तिसे सुनताहै तो उस पुरुष और उस स्त्री के करोड़जन्मों के इकट्ठे किये हुए पाप नाश होजाते हैं ३४ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेराधादामो-दरपूजामाहात्म्यकथनंनामविंशातितमोऽध्यायः २० ॥

## इक्कीसवां अध्याय ॥

कार्त्तिक महीने की विधि और नियमों का वर्णन ॥

शौनक बोले कि हे मुने सूतजी ! सब मासों में उत्तम कार्तिक महीने की अच्छीप्रकार से विधि और नियम कहने के आप योग्य हैं १ तब सूतजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! शौनक ! एकाग्रचित्त होकर मनुष्य कुँवारकी पौर्णमासी में कार्तिक का व्रत करै और ए-कादशी प्रबोधिनी तक करतारहे २ दिनमें सर्वज्ञ मनुष्य उत्तरमुख होकर मल और मूत्र करै मौनहोवे और रात्रिमें दक्षिणमुख होकर मल मूत्र करै ३ व्रत करनेवाला राह, जल, गोशाला, श्मशान और बांबी में मूत्र और दिशा फिरै नहीं ४ और अत्यन्त उत्तम स्थानों में भी मल मूत्र न करै फिर शुद्धमिट्टी लेकर बायां हाथधोवे ५ जलों और बीससंख्या मिट्टी से शुद्धिके लिये धोवे एक लिंगमें, पांचगुदा

में, दशवायें हाथ में ६ और दोनों पांवों में तीन तीन मिट्टी देवे तदनन्तर मुखकी शुद्धिकर स्नानका संकल्पकरै ७ हृदयमें दामोदरजी का ध्यानकर फिर यह मंत्र कहे कि हे जनार्दनजी! कार्तिक में मैं प्रातःकाल पाप नाश करनेवाला स्नान करूंगा ८ जिसमें दामोदरजी और राधिकाजी प्रसन्न रहें हे श्रीकृष्ण! कमलनाभ, जलमें शयन करनेवाले ९ राधिकासमेत आपके नमस्कार हैं अर्घ ग्रहण कर मेरे ऊपर प्रसन्न हूजिये तिस पीछे स्नान कर विधिपूर्वक तिलक देवे १० ऊर्ध्वपुण्ड्रसे हीन होकर जो कुछ कर्म करता है वह सब कर्म निष्फल होताहै यह मैं सत्यही कहताहूं ११ मनुष्यों का जो ऊर्ध्वपुण्ड्रसे विना शरीर कियाहै तिसका दर्शन न करना चाहिये जो दर्शनकरे तो सूर्य्य के भी दर्शनकरे १२ मिट्टी से जिसके मस्तकमें सुन्दर ऊर्ध्वपुण्ड्र दिखाई देताहै तो वह चाण्डाल भी जो हो तो भी शुद्धात्मावाला और निस्सन्देह पूजनेयोग्यहोताहै जे अधममनुष्य छिद्ररहित ऊर्ध्वपुण्ड्र करते हैं १३ तिनके मस्तक में निरन्तर निस्सन्देह कुत्तेका पांव है प्रातःकाल के कहेहुए कर्म समाप्त कर भगवान् की प्यारी १४ पाप नाश करनेवाली तुलसीजीको व्रत करने वाला मनुष्य स्थिरमन होकर पूजन करै फिर श्रीहरिजी की पुराण की कथा सुनकर भक्ति से विधिपूर्वक ब्राह्मण को पूजन करै पराया आसन, पराया अन्न, पराई शय्या और पराई स्त्री को १५। १६ सदैव वर्जितकरै और कार्तिक में विशेषकर वर्जितकरै सौवीरक, उर्द, मांस, मदिरा १७ और राजमाष आदिकको कार्तिक में नित्यही छोड़देवे जंवीरीनींबू, मांस, चूर्ण और वासी अन्नभी त्यागकरे १८ धान्यमें मसुरी कही है गौवोंका दुग्ध मांसरहितहै भूमिसे उत्पन्न नमकहै और निश्चय प्राणीका अंग मांस है १९ ब्राह्मण के वेंचेहुए सबरस, छोटे तालावमें स्थित जल, चारोंकाल में ब्रह्मचर्य और पत्तलों में भोजन २० करै तेलकी मालिश नहीं करै, छत्राक, नाली, हींग, प्याज, पूतिकादल, २१ लहसुन, मूली, सहँजन, तरोई, कैथा, बैंगन, कुम्हड़ा, कांसे के वर्त्तनमें भोजन, २२ दूसरीवार पकायाहुआ, सूतिकाका अन्न, मछली, शय्या, रजस्वला स्त्री, दोतीन

अन्न और स्त्री के भोगको कार्तिकका व्रत करनेवाला छोड़देवे २३ गृहस्थ मनुष्य रविवार में आंवलाको सदैव छोड़देवे कुम्हड़ेमें धन की हानि होतीहै बृहती में हरिको स्मरण नहीं होताहै २४ परवल में वृद्धि नहीं होती है मूली में बलकी हानि होती है बेलमें कलंकी होताहै नींबूमें तिर्यग्योनि होतीहै २५ तालमें शरीर नाश होता है नारियल में मूर्खता होती है तरोई गऊके मांसके तुल्य होती है कलिन्दकमें गऊका वध होताहै २६ शिंबी पाप करनेवाली कहीहै पूतिका ब्राह्मणके मारनेवाली है वार्ताकी में पुत्रका नाश होताहै उर्द में बहुतकाल रोगी रहता है २७ मांस में बहुत पाप होताहै इससे परेवा आदिकों में छोड़देवे जो मनुष्य भगवान्की प्रीतिके लिये जो कुछ अन्न छोड़ता है २८ वह फिर ब्राह्मण को देकर व्रतके अन्त में तिसका भोजनकरै कार्तिक के यथोक्तव्रत करनेवाले मनुष्यको २९ देखकर यमराज के दूत इसप्रकार भागजाते हैं जैसे सिंह को देख कर हाथी भागजातेहैं विष्णुजीकाव्रत श्रेष्ठहै तिसके समान सैकड़ों यज्ञ नहीं हैं ३० यज्ञकरके स्वर्गको जाताहै और कार्तिकका व्रत करने वाला वैकुण्ठ को जाता है जो मन, वाणी, देह और कर्मसे उत्पन्न जो कुछ पाप होता है ३१ वह कार्तिक के व्रत करनेवाले को देखकर क्षणमात्र में नाशको प्राप्त होजाता है यथोक्तव्रत करनेवाले कार्तिकके व्रत करनेहारे की पुण्यको चारमुख के ब्रह्माजी भी कहने में समर्थ नहीं हैं जिस को करके सब पाप दशोंदिशाओं को भाग जातेहैं ३२। ३३ और यह कहते हैं कि कार्तिक के व्रत करनेवाले के डरसे हम कहांजावें और कहां ठहरें हे ब्राह्मण! पौर्णमासी में यथाशक्ति अन्न वस्त्रादिक ३४ श्रीहरिजी की प्रीति के लिये ब्राह्मणों को देकर उन को भोजन करावे और व्रत करनेवाला नृत्य और गीत आदिकों से रात्रिमें जागरण करै जो मनुष्य भक्तिसे इसको सुनताहै तिसके पाप नाश होजाते हैं ३५॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेसूतशौनकसंवादेब्रह्मखण्डेएकविंशोऽध्यायः २१॥

---

# बाईसवां अध्याय ॥

तुलसीजी का माहात्म्य वर्णन ॥

शौनक बोले कि हे सब जाननेवाले सूतजी ! सब प्राणियों के कल्याण के लिये कृपाकरके तुलसीजीका सुननेवालों के पाप नाश करनेवाला माहात्म्य कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे शौनक ब्राह्मण ! जिसके परिसर में तुलसी जी का वन स्थित होता है उस घरके तीर्थरूप होने से यमराज के दूत नहीं आते हैं २ तुलसीजीका वन सब पापों का नाश करनेवाला और शुभ है जे श्रेष्ठ मनुष्य लगाते हैं ते यमराजजीको नहीं देखते हैं ३ हे उत्तम ब्राह्मण! जो तुलसीजी को लगाता, पालता, सेवा, दर्शन और स्पर्शन करताहै तिसके सबपाप नाश होजाते हैं ४ जे महाशय कोमल तुलसीदलोंसे हरिजीको पूजन करते हैं वे कालके स्थानको नहीं जाते हैं५ गंगाआदिक श्रेष्ठ नदियां विष्णु, ब्रह्मा और महादेव, देव, तीर्थ पुष्करादिक सब तुलसीदल में स्थित होते हैं ६ जो पापी तुलसीदलोंसे युक्त होकर प्राणोंको छोड़ता है वह विष्णुजी के स्थानको जाताहै यह मैंने सत्यही कहाहै ७ तुलसीकी मिट्टीसे लिप्त सैकड़ों पापों से युक्त भी मनुष्य प्राणों को जो छोड़ता है वह भगवान् के मन्दिर को जाता है ८ जो मनुष्य तुलसी की लकड़ी का चन्दन धारण करताहै तो उसके अंगसे पाप नहीं स्पर्श करताहै और वह परमपदको प्राप्त होताहै ९ जो अपवित्र और आचारहीन भी मनुष्य भक्तिसे तुलसी की लकड़ी की मालाको कण्ठमें धारण करता है वह हरिजी के स्थानको जाता है १० आंवले के फलकी माला और तुलसी के काष्ठसे उत्पन्न माला जिसकी देहमें दिखलाई देती है वही निश्चय भागवत मनुष्य है ११ जो विष्णुजी की जूंठी, तुलसीदलसे उत्पन्न मालाको कण्ठमें धारण करताहै वह विशेषकर देवताओं के नमस्कार करने के योग्य होताहै १२ जो फिर तुलसी की मालाको कण्ठमें कर जनार्दनजी को पूजन करताहै वह प्रत्येक पुष्प चढ़ाने में दशहजार गौवोंकी पुण्यको प्राप्त होता है १३ जे

हैंतक पापबुद्धि तुलसीजी की मालाको नहीं धारण करते हैं वे भगवान्के कोपकी अग्निसे जलेहुए होकर नरकसे नहीं निवृत्त होते हैं १४ महापापोंकी नाश करनेवाली, धर्म, काम और द्रव्यकी देने वाली तुलसी और आंवले की मालाको विशेषकर न त्याग करना चाहिये १५ कलियुगमें मनुष्यों के जिन रोमोंको आंवलेकी माला स्पर्श करती है तितनेही हज़ार वर्ष वह मनुष्य भगवान्के स्थानमें बसताहै १६ तुलसी की लकड़ी से उत्पन्न मालाको जो मनुष्य भक्तिसे भगवान् में चढ़ाकर धारण करता है तिसके निश्चय पाप नहीं होताहै १७ यमराजके दूत तुलसी की लकड़ी की माला को देखकर दूरही से इसप्रकार नाश होजातेहैं जैसे पवनसे तुलसीके दल नाश होजाते हैं १८ हे उत्तम ब्राह्मण ! जो उत्तम मनुष्य तुलसी के वनमें आंवले के वृक्षकी छायाओं में पिण्ड देताहै तिसके पितर मुक्तिको प्राप्त होजाते हैं १९ जो आंवले के फलको हाथ, मस्तक, गला, दोनों कान और मुखमें धारण करताहै वह स्वयं भगवान्ही जानने योग्य है २० जो आंवले के फलोंसे श्रीभगवान् को पूजताहै तिसकी एक बार पूजासे करोड़ जन्मों के इकट्ठे किये हुए पाप नाश होजाते हैं २१ कार्तिक के महीनेमें यज्ञ, देवता, मुनि और तीर्थ सदैव आंवले के वृक्षमें आश्रित होकर स्थित होते हैं २२ जो मनुष्य कार्तिक में आंवले के पत्रों और द्वादशीमें तुलसीदलोंको तोड़ता है वह अत्यन्त घोर नरकको जाताहै २३ जो कार्तिकमें आंवलेकी छायाओं में अन्नको भोजन करता है तिसके वर्ष पर्यन्त के अन्नके संसर्ग से उत्पन्नहुए पाप नाश होजाते हैं २४ जो कार्तिकमें तुलसी के वनके मध्य में और आंवले की जड़ में भगवान् को पूजन करताहै वह निश्चय वैकुण्ठको प्राप्त होता है २५ हे उत्तम ब्राह्मण ! जो पापीभी तुलसी की जड़ में स्थित जल को भक्तिसे मस्तकमें धारण करताहै तो भगवान्के स्थानमें प्राप्त होताहै २६ जो तुलसीदलों से गिरेहुए जलको शिरसे धारण करता है वह सब तीर्थों में स्नानकर अन्तमें भगवान्के स्थानको जाता है २७ हे महामुने ! द्वापरयुगमें पूर्वसमय में कोई श्रेष्ठ ब्राह्मणहुआ

है वह एक समय में स्नानकर तुलसीजी को जल देकर घर चला गया २८ यह तेजसे आदित्य नाम और पुण्यसे सूर्य्यहीकी नाईं था तब कोई बहुत पापी भक्षण करनेवाला प्याससे व्याकुल होकर आया २९ तब वह तुलसी की जड़से जल पीकर पापरहित होगया फिर अरिमर्दन नाम बहेलिया शीघ्रता से आया ३० और उससे बोला कि अन्न और जलको भोजनकर क्या तू नाशहोगया है फिर उस प्राणरहित को बहेलिया ताड़ना करता भया तब यमराजके दूत यमराजकी आज्ञासे क्रोधयुक्त होकर फँसरी और मुद्गर हाथमें लेकर उसके लेने के लिये प्राप्त होगये ३१।३२ और उसको बांधकर जब लेजाने का मन करते भये तब विष्णुजी के दूत प्राप्त होगये और चमड़े की फँसरीको काटकर रथमें तिसको ३३ शीघ्रही चढ़ा लेते भये तब नम्रतायुक्त होकर यमराजके दूत भगवान्के दूतोंसे पूंछते भये कि हे सज्जनो ! किस पुण्यसे इसको आपलोग लिये जातेहौ ३४ तब भगवान् के दूत उनसे बोले कि यह पूर्वसमयका राजाहै इसने अधिक पुण्य कियाथा किसी सुंदरी स्त्री को हर लिया था ३५ इसी पापसे राजा मरकर यमराज के स्थानमें प्राप्त हुआ तहांपर तुम लोगोंने निश्चय यमराजकी आज्ञासे इसको क्लेश दिये थे ३६ ताम्रमयी स्त्रीके साथ तप्त लोहे की शय्यामें सोकर वह क्रीड़ा करता भया और बहुत अपने कर्म्म से व्याकुल होताभया ३७ और यमराज की आज्ञा से तपे हुए लोहे के खम्भेको आलिंगनकर स्थित होताभया इसप्रकार राजा बहुत काल दुःख को भोगकर ३८ यमराजके स्थानमें और खारी जल की धाराओं से सींचा जाकर फिर नरकशेप में वारंवार पापयोनि में ३९ जन्म पाकर अपने कर्म्मसे बहुत कालतक दुःख भोगकरता रहा अब तुलसी की जड़के जलको पीकर हरिजी के स्थानको जाताहै ४० उससमय में विष्णुदूतों के ये वचन सुनकर यमराज के दूत जैसे आयेथे वैसेही चलेगये तब विष्णुजीके दूत तिसके साथ वैकुण्ठस्थान को गये ४१ हे ब्रह्मन्! हे मुने ! हे शौनक ! तुलसीजीका पाप नाश करनेवाला माहात्म्य तुमसे कहा जे मनुष्य भक्ति

से सेवा करते हैं तो नहीं जानते उनको क्या फल होता है ४२॥
इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेतुलस्यामाहात्म्यं नामद्वाविंशोऽध्यायः॥ २२ ॥

# तेईसवां अध्याय॥

विष्णुपंचक का माहात्म्य वर्णन॥

शौनक बोले कि हे मुने सूतजी! कार्तिक के शेष पांच दिन रह जाने के पाप नाश करनेवाले माहात्म्य को कृपाकरके कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे शौनक! कार्तिक के शेष पांच दिन रह जानेके माहात्म्य को जो तुमने पूंछाहै तिसको मैं कहताहूं सुनिये २ हेमुनिशार्दूल! व्रतों में यह विष्णुपञ्चक श्रेष्ठ है तिसमें जो श्रीहरि और राधाजी को भक्तिसे चन्दन, फूल, धूप, दीप, कपड़ा और अनेक प्रकारके फलोंसे पूजन करताहै वह सब पापों से हीन होकर विष्णुजी के स्थान को प्राप्त होताहै ३।४ ब्रह्मचारी, गृहस्थ वा वानप्रस्थ अथवा संन्यासी विना विष्णुपंचक के किये श्रेष्ठ स्थानको नहीं प्राप्त होते हैं ५ सब पाप नाश करनेवाला, पुण्यकारी, विष्णुपंचक प्रसिद्ध है तिसमें जो स्नान करताहै वह सब तीर्थोंके फलको प्राप्त होताहै ६ भगवान् के आगे और तुलसी जी के समीप जो भक्तिभावसे घी से पूर्ण दीप आकाश में भगवान् की प्रीतिके लिये देता है वह पापी भी विष्णुजी के मन्दिर को जाताहै यह मैंने सत्यही कहाहै ७।८ जो भक्तिसे भगवान् को शहद, दूध और घी आदिकों से स्नान कराताहै तिस साधु मनुष्य को भगवान् प्रसन्नहोकर क्या नहीं देतेहैं ९ जो देवों के स्वामीको सुन्दर अन्नकी नैवेद्य देता है तिसकी पुण्य गिनती करने में ब्रह्माजी भी समर्थ नहीं हैं १० एकाग्रचित्त होकर एकादशी में भगवान् को पूजन कर अच्छीप्रकार गोबर प्राप्तकर मंत्रवत् उपासनाकरे ११ फिर व्रत करनेवाला द्वादशी में मंत्रवत् गोमूत्र को त्रयोदशी में दूधको और चतुर्दशी में दहीको भोजनकरै १२ फिर पापकी शुद्धिके लिये चार दिन लंघन कर पांचवें दिन स्नानकर विधिपूर्वक भगवान् को पूजन कर

१३ भक्तिसे ब्राह्मणों को भोजन कराकर तिनको दक्षिणा देवे फिर रात्रिमें अच्छेप्रकार मंत्रयुक्त पंचगव्यको भोजनकरै १४ इसप्रकार करने में जो असमर्थ हो तो फल और मूलको भोजनकरै वा यथोक्त विधि से हविष्य भोजनकरै १५ जो मनुष्य तुलसीदलों से श्रीहरि जी को कार्तिक के अंतके पांच दिनों में पूजन करताहै तिसको स्वयंनारायण प्रभु जानना चाहिये १६ पूर्वसमय त्रेतायुग में दण्डकर नाम शूद्र हुआहै यह चोरोंकी जीविका में परायण, धर्म की निन्दा करनेवाला १७ झूठ बोलनेवाला, मित्रका नाश करनेहारा, वेश्याओं के हावभाव कटाक्षों में चंचल, ब्राह्मणोंकी द्रव्य हरनेहारा, क्रूर, पराई स्त्री के भोगमें रत १८ शरणागतों के मारनेवाला, पाखण्डीजनोंके संगका सेवन करनेहारा, गऊके मांस का भोजन करनेवाला मदिरा पीनेहारा, सदैव पराई निन्दा करनेवाला, १९ विश्वासघात करनेहारा और जातिवालों की जीविका नाश करनेवाला था तिस प्रकार के दुष्टको देखकर तिसके घर में सब २० उसकी जाति के क्रोधकर आकर उस पापपरायणसे बोले कि रे रे मूढ़! दुराचारी! जिस प्रतिष्ठा को हम लोगों के पुरुषों ने निर्मल वंशमें इकट्ठा कीथी तिसको तूने नाश करदिया है २१ इसप्रकार क्रोधही से अयश के डरसे तिस पापियों में श्रेष्ठ कुलके दूषण करनेवाले को सब लोग छोड़ देतेभये २२ तब वह सब ऐश्वर्य नष्ट होनेवाला महावन को चलागया और चोरों के साथ निरन्तर चोरीका कर्म करनेलगा २३ राहमें तिनके चलतेहुए उन्हीं के डरसे कोई राहमें न जाता था तब इन चोरोंको कुछ खाने को न मिलनेलगा तो सब भूख से व्याकुल और स्थान को चले गये २४ वहां पर प्रविष्ट होकर वे सब चोर बहुत से पुण्यकारी श्रेष्ठ वैष्णव ब्राह्मणों को आंवलेकी जड़के पास स्थित देखकर २५ उन सबके बीचसे दण्डकर चोर तिन पुण्यात्माओं के पास जाकर बोला २६ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो! मैं भूखसे पीड़ित हूं मेरे प्राण निश्चय निकलने वाले हैं इससे आप लोगों की शरण में प्राप्तहूं कुछ खाने के लिये दीजिये २७ दण्डकरके वचन सुनकर वे धर्म में तत्पर उससे बोले कि सब पाप हरनेवाले, प्रसिद्ध,

विष्णुपंचक २८ भगवान् के दिनमें कैसे तेरी अन्न खानेकी वाञ्छा हुई है विशेष कर कहिये इस समय में तेरी क्या संज्ञा हुई है २९ तब आनन्द से दण्डकर उनसे बोला कि मैं दण्डकर नाम ब्राह्मण सब पापों से युक्तहूं मेरा उद्धार कैसे होगा ३० तब वे ब्राह्मण बोले कि तुम श्रेष्ठव्रत विष्णुपञ्चक को करो तब दण्डकर ब्राह्मणों की आज्ञा से विष्णुपंचक व्रतको करतेभये ३१ फिर जब मरे तो जन्म से रहित होकर श्रेष्ठ रथपर चढ़कर श्रीभगवान् के स्थान में जाकर भगवान्ही के रूपको प्राप्त होतेभये ३२ जो मनुष्य इस पाप नाश करनेवाले चरित्रको भक्तिसे सुनताहै तिसके करोड़जन्म के पाप तिसी क्षणसे नाश होजाते हैं ३३॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेविष्णुपंचकमाहात्म्यं नामत्रयोविंशोऽध्यायः २३॥

## चौबीसवां अध्याय॥

दानों के माहात्म्य का वर्णन॥

शौनक बोले कि हे विद्वानों में श्रेष्ठ, तत्त्वोंके जाननेवाले, हे महाबुद्धिमान् हे मुने सूतजी! इससमय में मुझसे दानोंके माहात्म्यको क्रमसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ शौनक! पृथ्वी का दान दानों में उत्तम कहाहै, जिसने निश्चय यह दान किया है वह सब दानोंके फलको पाताहै २ जो ब्राह्मण को अन्नसमेत पृथ्वी देताहै वह विष्णुलोकमें जबतक चौदहों इन्द्र रहते हैं तबतक सुख भोग करताहै ३ फिर पृथ्वी में जन्मपाकर सब पृथ्वीका राजा होकर बहुत कालतक सब पृथ्वी को भोगकर श्रीभगवान् के घर को जाताहै ४ जो ब्राह्मणको गोचर्ममात्र पृथ्वीको देताहै वह सब पापोंसे रहित होकर भगवान्के स्थानको जाताहै ५ जहांपर सौगौवें और एक बैल अयंत्रित होकर स्थित होजाते हैं तिसभूमिको महर्षिलोग गोचर्ममात्रा कहते हैं ६ पृथ्वीका लेनेवाला और देनेवाला दोनों स्वर्गको जाते हैं तिससे बुद्धिमान् ब्राह्मण सैकड़ों दान छोड़कर भी पृथ्वी ग्रहणकरें ७ जो अज्ञानी ब्राह्मण विमोहित होकर पृथ्वी को

छोड़ देताहै वह प्रत्येक जन्मोंमें अत्यन्त दुःखोंको सेवनकरताहै ८ और से भी जो प्राप्तहोकर पृथ्वीको ब्राह्मणको देताहै तिसको भगवान् परमपद देतेहैं ९ जो अपनी वा पराई दीहुई पृथ्वी को हर लेताहै वह करोड़ कुलोंसे युक्तहोकर अत्यन्त घोरनरक को जाता है १० हे ब्राह्मण! हे मुने! जो देवता और ब्राह्मणकी पृथ्वीको हरलेताहै तिसकी सैकड़ों करोड़ कल्पों में भी निष्कृति नहीं है ११ जो राजा पराईदीहुई पृथ्वीकी रक्षा करताहै तो उसको देनेवालेसे निश्चय करोड़गुणा पुण्य अधिक मिलताहै १२ सातों द्वीपवाली पृथ्वी को देकर जो पुण्य प्राप्तहोताहै तिस पुण्यको मनुष्य ब्राह्मण को गऊदेकर प्राप्तहोताहै १३ जो दरिद्री और कुटुम्बीको बैल देताहै वह सबपापोंसे छूटकर महादेवजीके लोकको जाताहै १४ जो तिलके प्रमाण भी सोना ब्राह्मण को देताहै वह करोड़ कुलोंसे भी मुक्तहोकर भगवान् के स्थान को जाताहै १५ जो साधु ब्राह्मण को चांदी देताहै वह चन्द्रलोकमें प्राप्तहोकर सदैव अमृत पीताहै १६ जो मूंगा, मोती, हीरा और मणिको देताहै वह स्वर्गलोकको जाता है १७ तुलापुरुष के दानसे जो पुण्य मनुष्यको प्राप्त होताहै तिससे करोड़गुणा शालग्रामकी मूर्त्ति देनेसे मिलताहै १८ पर्वत वन और काननोंसमेत सातोंद्वीपकी पृथ्वी देनेसे जो पुण्य होताहै तिसको शालग्राम की मूर्त्ति देनेवाला निश्चय प्राप्त होताहै १९ जो निश्चय शालग्राम की मूर्त्तिको ब्राह्मणको देताहै तिसने चौदहों भुवन देडाले हैं २० जो तुलापुरुष का दान करताहै तिसका माता के पेटमें फिर जन्म नहीं होताहै २१ जो मनुष्य गहनोंसमेत कन्या को देताहै वह ब्रह्मस्थान को जाताहै और फिर जन्म नहीं होताहै २२ कन्या वेंचनेवाले की फिर नरकसे निष्कृति नहीं होतीहै और कन्यादान करनेवाले का फिर स्वर्गसे आगमन नहीं होताहै २३ जो जूता और छतुरी ब्राह्मण को देताहै वह मरकर इन्द्रपुरमें जाकर चार कल्पपर्यन्त वसताहै २४ हे उत्तम ब्राह्मण! जो साधु ब्राह्मण को कपड़े देताहै वह स्वर्गमें सुन्दर वस्त्र धारणकर बहुतकाल स्थितहोताहै २५ जो पुरानी गऊ, जरित कपड़ा और नवीन, स्त्री-

वती कन्यादेताहै वह नरकको जाताहै २६ बुद्धिमान् मनुष्य कन्या बेंचनेवाले का मुख न देखे जो अज्ञानसे देखलेवै तो सूर्यनारायण जीके दर्शनकरै २७ फल देनेवाला मनुष्य स्वर्गको जाताहै वहांपर हज़ार कल्प अमृत के समान फलको भोग करताहै २८ जो मनुष्य साग देताहै वह शिवजी के स्थानमें जाकर दोकल्पतक देवताओं को भी दुर्लभ खीर को भोजन करताहै २९ घी, दही, माठा और दूध का देनेवाला विष्णुजी के स्थान में जाकर अमृतपान करता है ३० चन्दन और फूलका देनेवाला मनुष्य देवस्थानको जाताहै वहांपर चन्दन और फूलोंसे विभूषित होकर हज़ार युगतक स्थित रहताहै ३१ जो दानोंमें साररूप शय्यादानको ब्राह्मण को देताहै वह ब्रह्मस्थान में जाकर बहुत समयतक शय्यामें सोताहै ३२ पीठ और दीपका देनेवाला सब पापों से रहितहोकर प्रकाशित दीपकी पंक्तियों से युक्तहोकर स्वर्ग में सिंहासन में स्थित होताहै ३३ जो मनुष्य पान देताहै वह सब पृथ्वीको सुखपूर्वक भोगकर स्वर्ग में देवताओं की स्त्रियोंके कोड़ में सोकर पानको खाताहै ३४ जो उत्तम मनुष्य दानों में श्रेष्ठ विद्यादानको करताहै वह मरकर विष्णुजीके समीप तीनसौ युगपर्यन्त स्थित होताहै ३५ तदनन्तर दुर्लभ ज्ञानको पाकर श्रीभगवान्की कृपासे दुर्लभ मोक्षकोभी पाता है ३६ जो उत्तम मनुष्य अनाथ और दुःखयुक्त ब्राह्मण को पढ़ा देताहै वह फिर जन्मसे रहित होकर श्रीहरिजी के स्थानको जाता है ३७ जो मनुष्य भक्ति और श्रद्धासे युक्त होकर पुस्तक देता है वह प्रत्येक अक्षरमें करोड़ कपिला गऊके दानसे उत्पन्न पुण्य को प्राप्त होताहै ३८ शहद और गुड़का देनेवाला मनुष्य ईखके समुद्रको प्राप्त होताहै नमकका देनेवाला वरुण के लोकको जाता है ३९ तत्त्वके जाननेवाले सब मनुष्योंने अन्न और जलको सबदानों में श्रेष्ठ कहाहै ४० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जिसने पृथ्वीमें अन्न और जल को दियाहै तिसने सब दान दियेहैं ४१ अन्नका देने वाला मनुष्य प्राणका देनेवाला कहाता है तिससे अन्नका देनेवाला सब दानोंके फलको प्राप्त होता है ४२ जैसे अन्न है तैसेही जलभी है ये दोनों

बराबरही कहेहुए हैं जलके विना अन्न सिद्ध नहीं होता है ४३ भूख और प्यास ये दोनों बराबर कहीगई हैं इससे अन्न और जल को बुद्धिमानों ने श्रेष्ठ कहा है ४४ जे उत्तम मनुष्य पृथ्वी में अन्नदान करते हैं वे सबपापों से छूटकर भगवान् के मन्दिर को जाते हैं ४५ भो तपस्वी ब्राह्मण! पृथ्वीमें जितने अन्नोंको देताहै तितनीही ब्रह्महत्या नाश होजाती हैं ४६ हे शौनक! अन्नके दानोंके देनेवालों और लेनेवालों की देहोंको पाप छोड़कर शीघ्रही भागजाते हैं ४७ इससे पापिष्ठों के अन्नों को बुद्धिमान् नहीं ग्रहण करते हैं और जे मूर्ख मोहसे ग्रहण करलेते हैं वे पापके भागी होते हैं ४८ जो एक जलको भूमिमें स्थित करदेताहै वह सब पापों से छूटकर भगवान्के मन्दिर को जाताहै ४९ हे श्रेष्ठब्राह्मण! यत्नसे धनका संचय करना योग्यहै और इकट्ठे हुए धनको दानके कर्ममें लगाना चाहिये ५० जे कृपणतासे धनका नहीं दान करते हैं ते अत्यन्त दुःखी होकर अन्तमें सब धन छोड़कर द्रव्यरहित चलेजाते हैं ५१ मनुष्यलोक में जे मनुष्य सदैव दान देदेकर दरिद्री होजातेहैं तो वे दरिद्री नहीं जानने योग्यहैं महेश्वर वे हैं ५२ साधु संयम से वर्जित, दया और बन्धुहीन परलोक में नहीं दियाहुआ नहीं स्थित होता है ५३ जो मनुष्य धनके स्थित होने में नहीं खाता और न दानही देताहै वह दरिद्रकी नाईं जानने योग्य है मरकर निश्वास को छोड़ता है ५४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तत्त्वके देखनेवालों ने तपस्यासे भी दानको श्रेष्ठ कहाहै इससे यत्नसे दानकर्मको करै ५५ जो दाता ब्राह्मणको दान नहीं देताहै वह सब प्राणियोंके भय देनेवाले घोरनरक को जाताहै ५६ देनेवाला दानको न स्मरण करै और ग्रहण करनेवाला नहीं मांगै तो इन दोनोंका जबतक चन्द्रमा और सूर्य रहते हैं तबतक नरक में वास होताहै ५७ और ब्रह्महत्याआदिक जितने निश्चय पाप होते हैं वे दानसे नाश होजाते हैं तिससे दानको करै ५८ ॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेचतुर्विंशतितमोऽध्यायः २४॥

———

# पचीसवां अध्याय ॥

## पुराण बांचनेवाले के पूजनआदिका फल वर्णन ॥

शौनक बोले कि हे सूतजी! लक्ष्मीजी का पद, विष्णुजीका चरित्र सब उपद्रवों का नाश करनेवाला, दुष्टग्रहों का निवारण करने हारा, १ विष्णुजी की समीपता देनेवाला और धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्षके फल का देनेहाराहै जो मनुष्य भक्तिसे सुनता है वह अन्त में भगवान् के स्थानको प्राप्त होताहै २ नामके उच्चारण का माहात्म्य मैंने बड़ा अद्भुत सुनाहै जिसके उच्चारणही मात्रसे मनुष्य परंपद को प्राप्त होताहै ३ तिस नाम के कीर्तनमें विधिको इस समय में कहिये तब सूतजी बोले कि मोक्षके साधन करनेवाले संवादको कहताहूं हे शौनक! तिसको सुनिये ४ पूर्व्वसमयमें एक समय यमुनाजी के किनारे बैठेहुए, शान्तमनवाले सनत्कुमार जी से हाथ जोड़कर नारदजी पूंछतेभये कि अनेक प्रकारके धर्मव्यतिकर धर्मोंको सुनकर ५। ६ जो इस धर्मव्यतिकर को भगवान् ने मनुष्यों को कहाहै हे भगवान्के प्यारे! तिसका नाश कैसे होता है सो कहिये ७ तब सनत्कुमारजी बोले कि हे गोविन्दजी के प्यारे और भगवान्के धर्म्म के जाननेवाले नारदजी! तुमने तमसे पर, मनुष्योंकी मुक्तिका कारण जो पूंछा है तिसको सुनिये ८ हे ब्राह्मण! जे सब आचारसे वर्जित, मूर्खबुद्धि, व्रात्य, संसार के छलनेवाले, दंभ, अहंकार, पान और चुगुली में परायण, पापी, निष्ठुर ९ और जे धन, स्त्री और पुत्रमें निरत होते हैं वे सब अधमहोते हैं भगवान् के चरणकमलों की शरण में जाने से शुद्ध होजाते हैं १० हे दयाकी खानि! तिस देवों के करनेवाले, स्थावर और जंगमकी मुक्तिकरनेहारे, श्रेष्ठ परमेश्वरको अपराधमें परायण मनुष्य अतिक्रमण करते हैं तिनके निश्चयनामोंको कहताहूं ११ सबअपराधका करनेवाला भी भगवान्के आश्रयहोनेसे छूटजाताहै जो मनुष्यों में दोषी मनुष्य भगवान् के अपराधों को करताहै १२ वह जो कभी नामके आश्रय होताहै तो नामसेही तरजाता है सबके मित्र नामों के अपराध से

नरकमें गिरता है १३ तब नारदजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! भगवान्‌के नामके कौन अपराध करनेवाले हैं जोकि मनुष्योंकी कृत्य को नाश करदेते हैं और प्राकृत को प्राप्त करदेते हैं १४ तब श्रीसनत्कुमारजी बोले कि हे नारद! सज्जनों की निन्दा करना नामों के परम अपराधको विस्तार करता है जिससे प्रसिद्धता को प्राप्त होते तो उसकी निन्दा को कैसे सहते हैं शुभ श्रीविष्णुजी के गुण और सब नाम आदिक को जो इस लोकमें बुद्धिसे भिन्न देखताहै वह निश्चय भगवान्‌के नामों का अहित करनेवालाहै १५ गुरुजी का अपमान, वेद और शास्त्रकी निन्दा, अर्थवाद, भगवान्‌के नाम में कल्पना और नाम के अपराध की पापबुद्धि जिसके नहीं विद्यमान होती है तिसकी यमोंसे शुद्धि होती है १६ धर्म, व्रत, त्याग, हवन आदिक सब शुभक्रिया की साम्य, प्रमाद, श्रद्धासे हीन और विमुख भी जो शिवनाम अपराध उपदेश न सुने १७ और जो अधम नाम के अपराधों को सुनकर भी प्रीतिरहितहो वह अभिमान आदिपरमभी अपराध करनेवालाहै १८ हे नारद! इस प्रकार महादेवजीने कृपाकर मुझसे मुनियों के पर, भगवान् के सुखदेनेवाला नाम को कहाहै जो यत्नसे सदैव छोड़ने योग्यहै और जे दशनामों के अपराधों को जानकर भी सहसासे नहीं छोड़देते हैं वेमाताको भी क्रोध करनेवाले, अभोजन में परायण बालक की नाईं खेद को प्राप्तहोते हैं १९ हे नारद! अपराधसे छूटकर भी नामों को सदैव जपो नामही से तुमको सब प्राप्तहोगा और तरह से नहीं प्राप्त होगा २० तब श्रीनारदजी बोले कि हे सनत्कुमार! हे प्रिय! ज्ञान वैराग्य से रहित, साहसी, देहप्रिय, अर्थ और आत्मा में परायण हम लोगों के अपराध कैसे छूटजावेंगे २१ तब श्रीसनत्कुमारजी बोले कि हे नारद! प्रमाद में नाम के अपराध उत्पन्नहोने में किसी तरह से सदैव एकशरण होकर नामों को कीर्तन करे २२ नाम के अपराधयुक्तों के अविश्रांतिसे प्रयुक्त, द्रव्य के करनेवाले नामही पापोंको हरते हैं २३ हेब्राह्मण! एकनामही जिसका चिह्न, स्मरण की राहमें प्राप्त वा कानों के मूलमें प्राप्त, शुद्ध वा अशुद्ध अक्षरवाला

व्यवहित से हीन हो तो सत्यही तार देता है वह यदि देह द्रव्य से उत्पन्न लोभ और पाखण्ड के मध्यमें निक्षिप्तहो तो शीघ्रही फलको उत्पन्न नहीं करताहै २४ हेनारद ! यह परमरहस्य, सब अशुभों की नाश करनेवाली और अपराधों के निवारण करने वाली है पूर्व समय इसको मैंने महादेवजी से सुना है २५ जे निश्चय अपराध में परायण भी मनुष्य हैं और विष्णुजी के नामोंको जानते हैं तिन की पढ़नेहीसे मुक्ति होजाती है २६ हे मानकेदेनेवाले ! नामों का सब माहात्म्य पुराण में कहागयाहै तिससे सब पुराण के सुनने के योग्यहो २७ हे भाई ! जिसकी प्रतिदिन पुराणके सुनने में श्रद्धा होती है तिसके ऊपर अनुगोंसमेत साक्षात् शिव और विष्णुजी प्रसन्नहोते हैं २८ पुष्करतीर्थ प्रयाग और सिन्धुके संगममें स्नान करनेसे जो फल होताहै तिसका दूनाफल श्रद्धा से सुननेवाले को होताहै २९ जे एकाग्रचित्त होकर पुराणोंको पढ़ते और सुनते हैं उन को प्रत्येक अक्षर में कपिला गऊके दानका फल प्राप्त होताहै ३० पुत्रहीन पुत्रको, धनकी इच्छा करनेवाला धनको, विद्या की इच्छा वाला विद्या को और मोक्षकी इच्छा करनेवाला मोक्षको प्राप्तहोता है ३१ जे पुराणोंको सुनतेहैं वे निश्चय करोड़ जन्मों के इकट्ठे किये हुए पापसमूहों को नाशकर भगवान् के स्थानको जाते हैं ३२ हे मुने ! पुराण बांचनेवाले ब्राह्मणको भक्तिभावसे गऊ, पृथ्वी, सोना, कपड़ा, चन्दन और फूल आदिकों से आनन्दपूर्व्वक पूजन करे ३३ और आनन्दयुक्त होकर कांसे के बनेहुए बर्तन, जल के बर्तन, कानेके कुण्डल, सोने की बनीहुई मुंदरी, ३४ आसन और फूलों के माला को देवे वित्तशाठ्य न करे जिससे दानहीन फलको न प्राप्त होवे ३५ हे ब्राह्मण ! जो सब कामना और द्रव्य की सिद्धि के लिये पुराणको बँचवाताहै और सोना, चांदी, कपड़ा, फूलों की माला, चन्दन ३६ और भक्तिसे पुस्तक को देताहै वह भगवान् के स्थान को जाता है इसविधि से जे सब पुस्तक को करते हैं चित्रगुप्त जी पूजन से तिनके नामों को अपने यहां नहीं रखते हैं ३७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेपंचविंशतितमोऽध्यायः २५॥

नरकमें गिरताहै १३ तब नारदजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! भगवान्‌के नामके कौन अपराध करनेवाले हैं जोकि मनुष्योंकी कृत्य को नाश करदेते हैं और प्राकृत को प्राप्त करदेते हैं १४ तब श्रीसनत्कुमारजी बोले कि हे नारद! सज्जनों की निन्दा करना नामों के परम अपराधको विस्तार करता है जिससे प्रसिद्धता को प्राप्त होते तो उसकी निन्दा को कैसे सहते हैं शुभ श्रीविष्णुजी के गुण और सब नाम आदिक को जो इस लोकमें बुद्धिसे भिन्न देखताहै वह निश्चय भगवान्‌के नामों का अहित करनेवालाहै १५ गुरुजी का अपमान, वेद और शास्त्रकी निन्दा, अर्थवाद, भगवान्‌के नाम में कल्पना और नाम के अपराध की पापबुद्धि जिसके नहीं विद्यमान होती है तिसकी यमोंसे शुद्धि होती है १६ धर्म, व्रत, त्याग, हवन आदिक सब शुभक्रिया की साम्य, प्रमाद, श्रद्धासे हीन और विमुख भी जो शिवनाम अपराध उपदेश न सुने १७ और जो अधम नाम के अपराधों को सुनकर भी प्रीतिरहितहो वह अभिमान आदिपरमभी अपराध करनेवालाहै १८ हे नारद! इस प्रकार महादेवजीने कृपाकर मुझसे मुनियों के पर, भगवान् के सुखदेनेवाला नाम को कहाहै जो यत्नसे सदैव छोड़ने योग्यहै और जे दशनामों के अपराधों को जानकर भी सहसासे नहीं छोड़देते हैं वेमाताको भी क्रोध करनेवाले, अभोजन में परायण बालक की नाईं खेद को प्राप्तहोते हैं १९ हे नारद! अपराधसे छूटकर भी नामों को सदैव जपो नामही से तुमको सब प्राप्तहोगा और तरह से नहीं प्राप्त होगा २० तब श्रीनारदजी बोले कि हे सनत्कुमार! हे प्रिय! ज्ञान वैराग्य से रहित, साहसी, देहप्रिय, अर्थ और आत्मा में परायण हम लोगों के अपराध कैसे छूटजावेंगे २१ तब श्रीसनत्कुमारजी बोले कि हे नारद! प्रमाद में नाम के अपराध उत्पन्नहोने में किसी तरह से सदैव एकशरण होकर नामों को कीर्तन करे २२ नाम के अपराधयुक्तों के अविश्रांतिसे प्रयुक्त, द्रव्य के करनेवाले नामही पापोंको हरते हैं २३ हेब्राह्मण! एकनामही जिसका चिह्न, स्मरण की राहमें प्राप्त वा कानों के मूलमें प्राप्त, शुद्ध वा अशुद्ध अक्षरवाला

व्यवहित से हीन होतो सत्यही तार देता है वह यदि देह द्रव्य से उत्पन्न लोभ और पाखण्ड के मध्यमें निक्षिप्तहो तो शीघ्रही फलको उत्पन्न नहीं करताहै २४ हेनारद ! यह परमरहस्य, सब अशुभों की नाश करनेवाली और अपराधों के निवारण करने वाली है पूर्व समय इसको मैंने महादेवजी से सुना है २५ जे निश्चय अपराध में परायण भी मनुष्य हैं और विष्णुजी के नामोंको जानते हैं तिन की पढ़नेहीसे मुक्ति होजाती है २६ हे मानकेदेनेवाले ! नामों का सब माहात्म्य पुराण में कहागयाहै तिससे सब पुराण के सुनने के योग्यहो २७ हे भाई ! जिसकी प्रतिदिन पुराणके सुनने में श्रद्धा होती है तिसके ऊपर अनुगोंसमेत साक्षात् शिव और विष्णुजी प्रसन्नहोते हैं २८ पुष्करतीर्थ प्रयाग और सिन्धुके संगममें स्नान करनेसे जो फल होताहै तिसका दूनाफल श्रद्धा से सुननेवाले को होताहै २९ जे एकाग्रचित्त होकर पुराणोंको पढ़ते और सुनते हैं उन को प्रत्येक अक्षर में कपिला गऊके दानका फल प्राप्त होताहै ३० पुत्रहीन पुत्रको, धनकी इच्छा करनेवाला धनको, विद्या की इच्छा वाला विद्या को और मोक्षकी इच्छा करनेवाला मोक्षको प्राप्तहोता है ३१ जे पुराणोंको सुनतेहैं वे निश्चय करोड़ जन्मोंके इकट्ठे किये हुए पापसमूहों को नाशकर भगवान् के स्थानको जाते हैं ३२ हे मुने ! पुराण बांचनेवाले ब्राह्मणको भक्तिभावसे गऊ, पृथ्वी, सोना, कपड़ा, चन्दन और फूल आदिकों से आनन्दपूर्व्वक पूजन करै ३३ और आनन्दयुक्त होकर कांसे के बनेहुए बर्तन, जल के बर्तन, कानेके कुण्डल, सोने की बनीहुई मुंदरी, ३४ आसन और फूलों के माला को देवे वित्तशाठ्य न करै जिससे दानहीन फलको न प्राप्त होवे ३५ हे ब्राह्मण ! जो सब कामना और द्रव्य की सिद्धि के लिये पुराणको बँचवाताहै और सोना, चांदी, कपड़ा, फूलों की माला, चन्दन ३६ और भक्तिसे पुस्तक को देताहै वह भगवान् के स्थान को जाता है इसविधि से जे सब पुस्तक को करते हैं चित्रगुप्त जी पूजन से तिनके नामों को अपने यहां नहीं रखते हैं ३७॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेपंचविंशतितमोऽध्यायः २५॥

## छब्बीसवां अध्याय ॥

प्रतिज्ञा के पालने के फल और न पालने के दोषों का वर्णन ॥

शौनकजी बोले कि हे बुद्धिमान् सूतजी! प्रतिज्ञाके पालने में क्या पुण्य होताहै और प्रतिज्ञा के खण्डन में क्या पाप होताहै तिसको मैं सुनने की इच्छा करता हूं कहिये १ हे कृपाके समुद्र मुनिजी! झूठ सौगन्द में और सत्य सौगन्द में क्या होताहै दक्षिण दासको देकर कृपाकर कहिये २ तब सूतजी बोले कि हे मुनिशार्दूल शौनक! वैष्णवों में तुम श्रेष्ठ और सब मनुष्यों के हितमें रतहो इससे मूलसे कहताहूं सुनिये ३ मनुष्य सौ गौवोंको देकर जो फल प्राप्त करताहै तिससे करोड़ गुणा प्रतिज्ञाके पालन में पाताहै ४ प्रतिज्ञा के खण्डन से मूर्ख घोर नरक को जाताहै और सौ मन्वन्तर तक निस्सन्देह पचताहै ५ तदनन्तर पृथ्वी में दरिद्री के घरमें जन्म पाकर अन्न और कपड़ों से हीन होकर अपने कर्मसे क्लेश पाताहै ६ सत्य में भी देवता, अग्नि और गुरुजीके समीप सौगन्द न करै क्योंकि तबतक विष्णुजी की देह को जलाताहै वंश लुप्त नहीं होता है ७ हे ब्राह्मण! झूठ सौगन्द में मैं इस समय में क्या कहूं सौ मन्वंतरपर्यन्त इससे नरक में रहता है ८ हे मुनिश्रेष्ठ! सत्य सौगन्द से श्रीभगवान् के निर्माल्य को स्पर्श करने से सात पुरुषों को लेकर नरक में बहुत कालतक पचता है ९ कदाचित् जन्म पाता है तो प्रत्येक जन्म में कोढ़ी होताहै सत्यकी सौगन्द से ऐसा होताहै अब झूठ सौगन्द में मैं क्या निश्चय कहूं १० जो मनुष्य दहिनाहाथ देकर तिसको प्रतिपाल करताहै तिसकी प्राप्ति कृष्णजी होते हैं यह मैं सत्यहीसत्य कहताहूं ११ जो मनुष्य हाथदेकर वचनका प्रतिपालन जबतक नहीं करता है तबतक पितर यातना को प्राप्त होते हैं १२ और आप भी मरकर निस्सन्देह करोड़ पुरुषोंसमेत घोर नरक को जाताहै १३ तब शौनक बोले कि हे सूतमुनि! पूर्वसमय में किसको दहिने हाथ के प्रतिपालन से कृष्णजीकी प्राप्ति हुई है तिसको आप कहिये मैं आदरसमेत सुनना चाहताहूं १४ तब सूतजी बोले कि हे शौनक!

पूर्वसमय में किसी पुर में वीरबिक्रम नाम शूद्र हुआ है वह बहुत भोजन करने वाला, मोटे अंगवाला, बहुत बोलने हारा, अत्यन्त सुन्दर, १५ धनवान्, पुत्रवान्, सभ्य, विद्वान्, सब जनोंको प्यारा, ब्राह्मण और अतिथियों को सदैव पूजन करने वाला, १६ पिता का भक्त, सदैव प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, गुरुजनों की वाणियों का पालने वाला और श्रीभगवान् की सेवा करने हारा था १७ एक समय में जवान, बुद्धिमान्, चाण्डाल सुन्दर ब्राह्मण का रूप कपटसे धारण कर प्राप्त होकर उससे बोला १८ कि हे धीर! मेरे वचन को सुनिये मेरी कल्याण करनेवाली स्त्री इस समय में मर गई है मैं क्या करूं कहां जाऊं इस समय में मुझसे कृपा करके कहिये १९ जो मनुष्य विशेष कर ब्राह्मण के विवाह को करता है उस को दान, तीर्थ, यज्ञ और करोड़ों व्रत करने की कुछ आवश्यकता नहीं है २० ये ब्राह्मण के वचन सुनकर वीरविक्रम उससे बोला कि हे ब्रह्मन्! मेरे वचन को सुनिये मेरे बाला कन्या है २१ जो इच्छा तुम्हारी होतो मैं विधिपूर्वक दूंगा मेरेदहिने हाथ को ग्रहण कीजिये मैं दूंगा और तरह न करूंगा २२ तिसके ये वचन सुनकर ब्राह्मणरूप चाण्डाल आनन्दयुक्त होकर दहिने हाथ को ग्रहणकर उससे बोला २३ कि शुभ मुहूर्तकर मुझको कल्याणयुक्त कन्याको दीजिये क्योंकि विलम्ब में बहुत विघ्न होते हैं यह शास्त्रोंमें निश्चयहै २४ तब वीरविक्रम बोले कि हे ब्रह्मन्! तुमको प्रातःकाल कन्यादूंगा झूठ न होगा अधमपुरुष दहिनाहाथ देकर नहीं करता है २५ सूतजी बोले कि हे शौनकमुनि! हे ब्राह्मण! तब वीरविक्रम कृष्णशर्मा ब्राह्मण पुरोहित को बुलाकर सब वृत्तान्त कहताभया २६ तब कृष्णशर्मा बोले कि कैसे ब्राह्मण को कन्या देने की इच्छा करता है विना जानेहुए अकुलीन को विशेषकर न दीजिये २७ फिर उसकेपिता आदिक सब जातिवाले बोले कि हे वीरविक्रम पुत्र! हमलोगोंके वचन सुनिये २८ जिसका कुल, देश, गोत्र, धन, शील और अवस्था नहीं जानी जाती है उसको भाईलोग कन्या नहीं देतेहैं २९ तब वीरविक्रम बोला कि मैंने दहिना हाथ दिया

है कदाचित् अन्यथा करने में सर्वथा नहीं समर्थहूं ३० यह तिन से कहकर ब्राह्मणको कन्या देनेका प्रारम्भ करताभया यह देखकर सब जातिवाले अद्भुत विस्मय को प्राप्त होतेभये ३१ तिसके सत्य वचन सुनकर शंख, चक्र और गदाको धारणकर भगवान् शीघ्रही गरुड़पर चढ़कर प्रकट होकर उससे बोले ३२ कि तेरे कुल, धर्म, माता, पिता, वचन, दहिनाहाथ, कर्म और जन्म धन्यहैं तेरे समान तीनोंलोक में कोई और नहींहै हे साधो! इसप्रकार के कर्मसे तूने कुलका उद्धार कियाहै ३३। ३४ सूतजी बोले कि हे शौनक! इसप्रकार श्रीकृष्णजी के कहतेही सोनेका बनाहुआ विमान भगवान् के गणोंसे युक्तहोकर प्राप्त होगया जिस में सबओर गरुड़ध्वजही थे ३५ तब भगवान् तिस के सब कुल, चाण्डाल और पुरोहित को आपही रथमें चढ़ालेते भये ३६ और तिन सब को लेकर वैकुण्ठस्थानको चलेगये वहांपर वह दुर्लभ भोगों को भोगकर बहुतकाल तक स्थित होताभया ३७ जो वचन और दहिनेहाथको लंघन करताहै वह कुलसमेत नरक को जाता है यह मैं सत्यहीसत्य कहता हूं ३८ तिसका अन्न और जल पितृ और देवताओं के नहीं ग्रहण करनेके योग्य होताहै और धर्म डरसे तिसके घरको छोड़कर चला जाताहै ३९ जो मूढ़बुद्धि मनुष्य आशा देकर निराश करदेताहै वह अपने करोड़ पुरुषों को लेकर नरक को जाताहै ४० जो वचनको लंघन करता है तिसका राजा, अग्नि और चोरों से धर्म लंघितहो जाताहै यह सत्यहीसत्य निश्चय है ४१ इस स्वर्गोत्तर ब्रह्मखण्ड को सुनकर मनुष्य इसलोक में जीवन्मुक्त होताहै और परलोक में स्वर्गमें श्रीकृष्णजी के उत्तमस्थान में जाताहै ४२॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेब्रह्मखण्डेसूतशौनकसंवादेउन्नामप्रदेशान्तर्गततारगांवनिवासिपं०रामविहारीसुकुलकृतभाषानुवादेषड्विंशतितमोऽध्यायः २६॥

इतिस्वर्गोत्तरापरनामकंब्रह्मखण्डंसम्पूर्णम्॥

बीच में और भाषा टीका नीचे ऊपर रखकर अत्यन्त शुद्धता से पत्रेनुमा छपा है क़ागज सफ़ेद निहायतउम्दा व टैप बम्बई में छपाहै ॥

## तथा कागज हिनाई छापापत्थर क़ीमत ४) पु०

## वामनपुराण भाषा क़ीमत ॥।≡)

पण्डितरविदत्तकृतभाषा है--जिसमें कपालमोचनआख्यान, दक्षयज्ञविनाश, महादेव का कालरूपधारण, कामदेवदहन, प्रह्लाद नारायण युद्ध और देवासुर संग्राम इत्यादि श्रीवामन भगवान्की उत्तमोत्तम कथासरल भाषामें वर्णित है ॥

## पद्मपुराण भाषा प्रथमसृष्टिखंड व द्वितीयभूमिखंड क़ीमत १॥) पु०

पण्डित महेशदत्त सुकुलकृत भाषा--इसमें पुष्कर का माहात्म्य, ब्रह्मयज्ञविधान, वेदपाठ आदिका लक्षण, दानों और व्रतोंका कीर्त्तन, पार्वतीजी का विवाह, तारकाख्यान, गवादिकों का माहात्म्य, कालकेयादि दैत्योंका वध, ग्रहोंका अर्चन और दान, पिता और माता आदि के पूजन के पीछे शिवशर्म्म और सुव्रत की कथा, वृत्रासुरकावध, पृथुवैन्यका आख्यान इत्यादि अनेक विषय संयुक्तहैं ॥

## पद्मपुराणका तृतीय स्वर्ग्गखण्ड भाषा क़ीमत १॥।) पु०

इसकाभी उल्था पण्डितमहेशदत्तजी ने वहुत उम्दाललित इबारतमें किया है इतिहास इसमें वहुत ज्यादाहैं और प्रत्येक धर्म, अर्थ, काम, मोक्षदेनेवाले हैं ॥

## पद्मपुराणका पञ्चम पातालखण्ड भाषा क़ीमत १॥।) पु०

पण्डित महेशदत्त भाषा--इसमें प्रथम रामाश्वमेध की कथामें श्रीरामजी के अभिषेक का वर्णन, अगस्त्यादि ऋषियोंका अयोध्याजी में आगमन, रावणके वंशका वर्णन, अश्वमेध करने का उपदेश, अश्वका छोड़ाजाना और उसका इधर उधर घूमना, नानाप्रकारके राजाओंकी कथा, जगन्नाथजीका अनुकीर्त्तन, वृन्दाबनका माहात्म्य इत्यादि अनेक कथायें संयुक्त हैं ॥

## पद्मपुराणका षष्ठ उत्तरखण्ड भाषा क़ीमत २॥) पु०

उन्नामप्रदेशांतर्गत तारगांवनिवासि पं० रामविहारीसुकुलकृतभाषा--इसमें नरजीकायश, जालंधरकी कथा, सम्पूर्णतीर्थोंकी महिमा, छव्वीसों एकादशियों की कथा, भागवत, शालग्राम, भगवद्गीता, कार्तिक, माघ और सवव्रतोंका माहात्म्य इत्यादि अनेक विषय वर्णितहैं यह खण्ड सातोंखण्डों में शिरोमणिहै ॥

## जैमिनिपुराण भाषा क़ीमत ॥)

परिडत शिवदुलारेकृत उल्था—जिसमें राजायुधिष्ठिरने गोत्रहत्यानिवारणार्थ अगस्त्योपदेशसे अश्वमेध घोड़ाछोड़ यौवनाश्व, नीलध्वज, सुरथ, सुधन्वा व अपने पुत्र बभ्रुवाहन इत्यादि राजाओंको श्रीकृष्णचन्द्रकी सहायतासे विजय किया इत्यादि कथायें बहुतसी वर्णितहैं ॥

## आदिब्रह्मपुराण भाषा क़ीमत १)

परिडत रविदत्तकृत-जिसमें ब्रह्माजीसे लेकर सृष्टिके उत्पत्तिका वृत्तांत, राजा पृथुका चरित्र, मन्वन्तरकीर्त्तन, आदित्यउत्पत्ति, सूर्य्यवंश व चन्द्रवंश कथन, राजाययातिचरित्र और कृष्णवंशकीर्त्तन इत्यादि कथायें वर्णितहैं ॥

## नरसिंहपुराण भाषा क़ीमत ।≈)

भाषा पं० महेशदत्त सुकुल कृत—इसमें संस्कृत नरसिंहपुराण से प्रतिश्लोक प्रतिचरण व प्रतिपद का टीका अति सरल व मधुर भाषा में कियागयाहै—जिस में सृष्टिवर्णन, सर्गरचना, सृष्टिरचनाप्रकार, पुंसवनोपाख्यान, मार्कण्डेय मुनि का तपोबल से मृत्युको जीतना, यमगीता, यमाष्टक वर्णन, मार्कण्डेयचरित्र, यमीयमसंवाद, ब्रह्मचारी व पतिव्रतासंवाद, एक ब्राह्मणका इतिहास जिस ने परमेश्वर कृष्णजीका ध्यानकर देहत्यागकिया और व्यासजी का शुकाचार्य से संसाररूपी वृक्षको वर्णन करना, शिव व नारद करके भवतरने की क्रिया का वर्णन और अष्टाक्षरमन्त्रमाहात्म्य इत्यादि अनेक विषय संयुक्तहैं ॥

## ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा क़ीमत ।)॥

जिसको परिडत दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी ने स्कन्दपुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्ड से देशभाषा में रचा-जिसमें अनेक प्रकारके इतिहास और सम्पूर्ण व्रतों के माहात्म्य आदि वर्णित हैं ॥

---

# पद्मपुराणभाषा

## सप्तम क्रियायोगसारखण्ड

जिसमें

नारायणजीकी कथाकी प्रशंसा, वैष्णवोंके लक्षण, गंगाजी और प्रयागजी का माहात्म्य, वीरवरका सुषेण राजाकी सभामें जाना, गंगासागरसंगम, गंगाजीके जलकी बूंदों और गंगाजीका माहात्म्य, चम्पाकेफूलकी महिमा, भगवान्के पूजाकी विधि, पीपलके वृक्षका माहात्म्य, ज्येष्ठसे कार्तिकतक भगवान्के पूजनकामाहात्म्य और सबदान, एकादशी, तुलसी और अन्न जल का माहात्म्य मनोहर देवनागरी भाषामें वर्णन कियागया है ॥

जिसको

बाबूप्रयागनारायण जी की आज्ञानुसार उन्नावप्रदेशान्तर्गत तारगांवनिवासी पण्डित रामविहारीसुकुलने संस्कृतसे प्रत्यक्षरका भाषानुवाद कियाहै ॥

पहिलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर ( सी आई, ई ) के छापेखाने में छपा
सन् १८९९ ई०

इस मतबे में जितने प्रकारकी पुराणों की पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी जाती हैं ॥

---

## लिङ्गपुराणभाषा क़ीमत ॥।≡)

इसका उल्था छापेखाने के बहुत खर्च से जयपुरनिवासि परिडत दुर्गाप्रसाद जीने भाषा में किया है जिसमें अनेक प्रकार के इतिहास, सूर्यवंश चन्द्रवंशका वर्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल और खगोलका कथन, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष,रा क्षस और नागादिकी उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

## शिवपुराण भाषा क़ीमत १॥)

इसका परिडत प्यारेलालजी ने उर्दूसे हिन्दीभाषा में अनुवाद कियाहै इस में शिवजीके निर्गुण सगुण स्वरूपका वर्णन, सतीचरित्र, गिरजाचरित्र, स्क न्दकथा, युद्धखण्ड, काश्युपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिंगखण्ड, रुद्राक्ष व भस्म माहात्म्य, व्रतविधि, भूगोल, खगोल व आदि में छहोंशास्त्रों के मतकी भूमिका भी संयुक्त कीगई है ॥

## शिवपुराण दोहा चौपाई में क़ीमत ॥)पु०

जिसमें अत्यन्त मनोरम कथायें श्रीशिव पार्वतीजी की दोहा चौपाई आदि छन्दों में रामायण तुलसीदासकृत की भाँति से वर्णितहैं जिसके पढ़ने व सुनने से सम्पूर्ण दुःख दूर होजाताहै और चित्तमें अतीव प्रसन्नता प्राप्त होतीहै अन्तमें मोक्ष लाभ होताहै ॥

## बारहोंस्कन्ध श्रीमद्भागवत क़ीमत ७)पु०

इसके भाषाटीकाको श्रीअंगदशास्त्रीजीने अक्षर२ के अर्थको ललित ब्रज बोलीमें रचना कियाहै यह टीका ऐसा मनोहर हुआहै कि जिसकी सहायतासे थोड़ा भी जाननेवाला भागवत को अच्छीतरह से समझसक्ताहै यह पुस्तक प्र त्येक विद्वान् के पास रहनी चाहिये क्योंकि भागवत बड़ा कठिन पुराणहै बिना ऐसे सहज भाषा टीका के सबको श्लोकार्थ नहीं समझ पड़ताहै इसका मूल

# पद्मपुराणभाषा सप्तम क्रियायोगसारखण्डकी भूमिका ॥

---

प्रकटहो कि इसपुस्तकमें नारायणजीकी कथाकी प्रशंसा, वैष्णवोंके लक्षण, गंगाजी और प्रयागजीका माहात्म्य, वीरवरका सुषेण राजाकी सभामें जाना, गंगासागरसंगम, गंगाजी के जलकी बूंदों और गंगाजीका माहात्म्य, चम्पाके फूलकी महिमा, भगवान्के पूजाकी विधि, पीपलके वृक्षका माहात्म्य, ज्येष्ठसे कार्तिकतक भगवान्के पूजनका माहात्म्य, भगवान्की पूजा, रामजीके नाम और भगवान्का माहात्म्य, पुरुषोत्तमक्षेत्र में भद्रतनुजी को वरप्राप्ति, पुरुषोत्तमतीर्थ, भगवान्, सबदान, अन्न, जल, एकादशी और तुलसीजीका माहात्म्य इतिहाससमेत तुलसी और अतिथिका माहात्म्य तथा युगधर्मनिरूपणपूर्वक पुराणका माहात्म्य ललित देवनागरीभाषा में वर्णन कियागयाहै—जिसको बाबूप्रयागनारायणजी की आज्ञानुसार उन्नावप्रदेशान्तर्गत तारगांवनिवासि पण्डित रामविहारी सुकुलने संस्कृतसे प्रत्यक्षरका भाषानुवादकिया और ईश्वरेच्छासे उत्तम अक्षरोंमें सफ़ेद काग़ज़पर छपकर प्रकाशित हुआहै यह पुराण सब पुराणोंमें शिरोमणि है इससे हरिभक्त लोग इसको देखकर प्रसन्नतापूर्वक ग्रहणकर यंत्रालयाध्यक्षको धन्यवाद देंगे ॥

मनेजर नवलकिशोर प्रेस
लखनऊ

---

# पद्मपुराणभाषा सप्तम क्रियायोगसारखण्डका सूचीपत्र ॥



इति ॥

# पद्मपुराण भाषा ॥

## सप्तम क्रियायोगसारखण्ड ॥

## पहला अध्याय ॥

नारायणजी की कथाकी प्रशंसा वर्णन ॥

मैं लक्ष्मीके स्वामी के कमलरूपी दोनों चरणोंकी निरन्तर वंदना करताहूं जोकि ब्रह्मा और महादेव आदिक देवताओंकी पंक्तियोंके नम्र शिररूपी भ्रमरके मालारूप, निर्मल,भक्तिसे योगियों के मनरूपी तालाव के सुषमासमूह के पुष्टकरनेवाले, गङ्गारूपी जलके मकरन्दरूपी बिन्दुओं के समूह और संसाररूपी दुःखके नाश करनेवाले हैं १ सुन्दर सूकरकी देह धारण करनेवाले हरि देवजी के नमस्कार हैं जो भगवान् अनेक प्रकारकी मूर्तियों को धारणकर सम्पूर्ण संसारकी रक्षा करते हैं जिनके चरणोंकी पूजन में तत्पर मनुष्य फिर संसाररूपी समुद्र में नहीं स्नान करते हैं और जिन प्रभुजी का निरन्तर सब प्राणियोंके हृदयरूप कमल में रहनेका स्थान है २ जो देव वेदोंसे सब धर्मोंको लेकर व्यासजीके स्वरूपसे संसारके कल्याणके लिये पुराणों में कहते भये ऐसे लक्ष्मीसंयुक्त भगवान्की वन्दना करताहूं ३ एक समय में सब लोकोंके कल्याण की इच्छा करनेवाले सम्पूर्ण मुनि सुन्दर नैमि-

षारण्य में मनोरम गोष्ठी करते भये ४ तिसी अन्तर में महाते-जस्वी, व्यासजीके शिष्य, महायशस्वी, शिष्यसमूहोंसे युक्त सूत-जी भी भगवान्‌का स्मरण करते हुए आते भये ५ तिन शास्त्रके अर्थके पार जानेवाले सूतजीको आते देखकर तपस्वी शौनकादि-क सब मुनि उठकर नमस्कार करते भये ६ और सब धर्मोंके जान-नेवालोंमें श्रेष्ठ सूतजीभी सहसा भक्तिसे तिन परमवैष्णव मुनियों के पृथ्वी में दण्डवत् नमस्कार करते भये ७ फिर सब शिष्यस-मूहोंसे युक्त महाबुद्धिमान् सूतजी श्रेष्ठ मुनियोंके दियेहुए श्रेष्ठ आसनपर मुनियों के बीचमें बैठतेभये ८ तहांपर बैठेहुए सूतजीसे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक नम्रतायुक्त हाथजोड़कर यह बोले ९ कि हे महर्षे! सब जाननेवाले, भगवन्, सूतजी! कलियुगके प्राप्त होने में मनुष्योंके किस उपायसे बहुत भक्ति होती है १० क्योंकि कलियुग में तो सब मनुष्य पापकर्म में रत और वेदकी विद्यासे हीन होंगे तिनका कल्याण कैसेहोगा ११ और इस युगमें अन्नहीमें प्राप्तप्राण, मनुष्योंकी थोड़ी उमर, धनहीन और अनेक प्रकार के दुःखोंसे पी-ड़ित होंगे १२ हे द्विज! शास्त्रोंमें परिश्रमसे साध्य सुकृत कियागया है तिससे कलियुगमें कोई भी मनुष्य सुकृत नहींकरेंगे १३ फिर सु-कृतके नाशहोने और पापकर्ममें प्रवृत्त होनेमें सब दुष्ट आशयवाले वंशसमेत नाशको प्राप्तहोजावेंगे १४ तिससे हे अत्यन्त श्रेष्ठ सूत जी! थोड़े परिश्रम और थोड़ेही द्रव्यसे जिस प्रकार महापुण्य होवे तिसको कहिये १५ जिसके उपदेश से मनुष्य पुण्य वा पाप करते हैं तो वह भी तिसका भागी होजाता है यह शास्त्रों में निश्चित है १६ पुण्यका उपदेश, दयासंयुक्त, कपटरहित, पापमार्ग का विरोधी है ये चारों केशवजीके सदृश हैं १७ संसारमें जो ज्ञान पा-कर दूसरों को नहीं देताहै उसको ज्ञानरूपी भगवान् प्रसन्न कीं नाईं नहीं देखते हैं १८ बुद्धिमान्, ज्ञानरूपी रत्नसे दूसरों को सं-तोष करनेवाला मनुष्य निश्चय मनुष्य रूप धारण करने द्वारा भगवान्‌ही है १९ हे मुनियों में शार्दूल! वेद और वेदाङ्गके पार-गामी आपही हैं आपको छोड़कर दूसरा कहनेवाला कोई नहीं है

क्योंकि आप व्यासजीसे शिक्षा पायेहुए हैं २० तब सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक! तुम धन्य और वैष्णवों में आगे होनेवाले हो जिससे सब लोकोंके कल्याणकी सदैव वाञ्छा करते हो २१ अब जो तुम्हारे सुनने की इच्छा है तिसको सब मनुष्यों और विशेषकर वैष्णवों के कल्याण के लिये कहताहूं सुनिये २२ जिस सबको जैमिनि के पूंछनेपर व्यासजीने कहा था तिसको सुनिये महर्षि, सदैव योगाभ्यास में रत जैमिनि २३ मुनिश्रेष्ठ शिरसे व्यासजीके प्रणाम कर पूंछते भये कि हे भगवन्! सब धर्म के जाननेवाले, सत्यवती के पुत्र व्यासजी २४ कलियुगमें किससे मोक्ष होता है तिसको मूल से मुझसे कहिये सूतजी बोले कि हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक! जैमिनि के वचन सुनकर सन्तुष्टमन व्यासजी मंगलसंयुक्त कथाको आरम्भ करते भये बोले कि हे मुनियोंमें शार्दूल महाबुद्धिमान् जैमिनि तुम धन्यहो २५। २६ जिससे सदैव नारायणकी कथा सुननेकी वाञ्छा करते हो जिस जिसकी अच्छी कथाके सुनने में बुद्धि प्रवृत्त होती है २७ तिस तिस के मोक्षका देनेवाला ज्ञान होता है यह मुनिलोग कहते हैं और पृथ्वीमें जिस पापीको वैष्णव कथा नहीं रुचती है २८ उसको ब्रह्माने वृथाही उत्पन्न कर पृथ्वी को भारयुक्त किया है पृथ्वी कथाके कहने के लिये वैष्णव मनुष्यों से श्लाघित है २९ और तिसको झूठ की नाईं जो कहता है वह पापियों में श्रेष्ठ जानने योग्य है हे मुनियों में श्रेष्ठ! जिस दिनमें भगवान्की कथा नहीं सुनी जाती है ३० वही दिन दुर्दिन मानताहूं मेघोंसे आच्छादित दुर्दिन नहींहै जहां जहां पृथ्वी के भागमें वैष्णवीकथा वर्तमान होती है तिसके पासको भगवान् कभी नहीं छोड़ते हैं और जो मनुष्य वैष्णवकथाके आरम्भमें विघ्न करताहै ३१।३२ तिसको शापदेकर देवताओंसमेत भगवान् चलेजातेहैं और वासुदेवजी का प्रभाव सुनकर जे मनुष्य प्रसन्न होते हैं ३३ वेही देवताओंके अंश,पूज्य,देखनेके योग्य और अत्यन्त श्रेष्ठ जानने योग्यहैं और नारायणजी का प्रभाव सुनकर जे हँसते हैं ३४ वे दानवोंके अंश नरकभागी मनुष्य

ग्य हैं तहां पर सब गङ्गादिक तीर्थ, ३५ देवर्षि, देवता, तपस्वी मुनि रहते हैं जहांपर मनुष्यसमूहों के सुनते हुए पापरूपी व्याधि के नाश करनेवाली नारायणजी की कथा प्रतिदिन वर्तमान रहती है हे मुनि! क्रियायोगसार बहुत द्रव्य देनेवाला, पाप नाशनेहारा ३६। ३७ नारायणजी की कथा से युक्त और इतिहास सहित हैं तिसको सुनिये ३८॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेक्रियायोगसारेजैमिनिव्याससंवादेप्रथमोऽध्यायः १॥

## दूसरा अध्याय॥

### वैष्णवों के लक्षण वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! सृष्टिके आदि में सब जगत्के रचना करने की इच्छाकर महाविष्णुजी उत्पन्न करने, पालन करने और संहार करनेवाली तीनमूर्ति आपही होतेभये १ श्रेष्ठ पुरुष महाविष्णुजी आत्मासे दहिने आत्मा को प्राप्त होकर इस संसारकी सृष्टिके लिये ब्रह्मारूप रचते भये २ तिस पीछे पृथ्वी के स्वामी महाविष्णुजी संसारके पालन के लिये बायें अंश से अपना अंश केशवविष्णुजी को रचते भये ३ तदनन्तर संसारके संहारके लिये लक्ष्मी के स्थान प्रभुजी मध्य अंगसे नाशरहित महादेवजी को रचते भये ४ रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण इन तीन गुणके आत्मा पुरुषको कोई ब्रह्मा कोई विष्णु और कोई शङ्कर कहते हैं ५ एकही विष्णु तीन प्रकारके होकर संसारको रचते, पालते और संहार करतेहैं तिससे श्रेष्ठमनुष्य तीनों लोकोंमें भेदनहीं करें ६ इस महाविष्णु परात्माकी आद्या प्रकृति, भूत संसार का आदिकारण विद्या और अविद्या गाईजाती है ७ भाव अभाव का स्वरूप, संसार का हेतु, सनातनी, ब्राह्मी, लक्ष्मी और अम्बिका ये तीनमूर्ति सहसा से होती भई ८ आदिपुरुष भगवान् आद्या प्रकृति को संसारके उत्पन्न, पालन और संहारमें युक्तकर तहांहीं अन्तर्द्धान हो जाते भये ९ फिर जिनकी आज्ञा से ब्रह्माजी महाभूत पृथ्वी, आकाश, पवन, जल और तेजको पंचसमाधिसे रचकर १० भू, भुव,

स्व, मह, जन, तप और सत्य इत्यादिक लोकोंको रचते भये ११ फिर अतल तिसके नीचे वितल, सुतल, तलातल, १२ महातल, रसातल और क्रमही से सबसे नीचे पातालको रचते भये १३ फिर देवताओंके निवास के लिये पृथिवीके मध्यमें रत्नसानु, सुवर्ण के समान उज्ज्वल महापर्वत को रचकर १४ मन्दर, चरम, त्रिकूट, उदयाचल और अनेक प्रकारके पर्वतों को रचते भये १५ तदनन्तर लोकालोक पर्वत और तिसके बीचमें सातों समुद्र सातों द्वीप १६ जम्बुद्वीप, प्लक्ष, तिससे दूना और प्लक्षसे दूना शाल्मली जानना योग्य है इन सबको ब्रह्माजीने रचा १७ ते प्लक्षादिक द्वीप सब भागयुक्त, सम्पूर्ण गुणों संयुक्त देव और देवर्षिकी मूर्ति हुए १८ ये सातों द्वीप सातों समुद्रसे घिरेहुए हैं तिन समुद्रों के नाम कहता हूं सुनिये १९ लवण, इक्षु, सुरा, सर्पि, दधि, दुग्ध और जल नामवाले हुए इनमें पहले से क्रमसे पीछे के श्रेष्ठ हैं २० लोकालोक पर्वत तक सब पर्वत भी क्रमसे द्विगुण हैं द्वीप द्वीपमें ब्रह्माजी वृक्ष, गुल्म, लता आदिक, तिर्यक् योनिमें प्राप्त जन्तुओंको रचकर तिस पीछे देवता, मनुष्य, नाग, विद्याधर, २१। २२ दक्षादिक पुत्र, मुनि, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा और चाण्डालोंको भी रचते भये २३ फिर तिनके वर्तन आदिकोंको भी रचते भये हेमपर्वतके दक्षिण और विन्ध्याचलके उत्तरको २४ मुनिलोग शुभ और अशुभ फल का देनेवाला भारतवर्ष कहते हैं जे उत्तम मनुष्य भारतवर्षमें जन्म पाकर २५ धर्म कर्म करतेहैं ते सब केशवजीके समान हैं कर्मभूमिमें किये हुए शुभ वा अशुभकर्म को २६ मनुष्य भोगभूमियोंमें तिस फलको भोगताहै जो कर्मभूमिमें प्राप्त होकर धर्म कर्मोंमें उद्यत होताहै २७ उसके समान तीनों लोकों में कोई विद्यमान नहीं होताहै तिसका जन्म सफलहै और जीवन सुन्दर जीवन है २८ श्री नारायणजी की सेवामें जिसकी बुद्धि नहीं वर्तमान होतीहै वह करोड़ जन्मकी इकट्ठा कीहुई पुण्यसे भी मानसी व्यथा से युक्त संसारहीमें रहताहै २९ नारायण देवदेवमें मनुष्यों की दृढ़ भक्ति होवे, सब सुखका देनेवाला, श्लाघ्य, निर्भय ३०

देश भी त्यागने योग्य है जहांपर वैष्णव नहीं स्थित है और ज-
न्म के इकट्ठा किये हुए थोड़े वा बहुत पाप ३१ भगवान् के भक्त
के दर्शन से तिसीक्षण में नाश होजाते हैं और जो सब पापों के
नाश करनेवाले वैष्णव के चरणजलको ३२ भक्ति से अपने शिर
में लगावे तो उसको गंगा के स्नानका कुछ प्रयोजन नहीं है जो
भगवान्के भक्तों का मुहूर्तमात्र भी संग करता है ३३ वह ब्रह्म-
हत्याआदिक सब पापोंसे छूट जाता है जितने धर्म कर्म भगवान्
के भक्तके आगे किये जाते हैं वे सब नाशरहित होते हैं जहांपर
वैष्णव मनुष्य मुहूर्त्त वा आधा मुहूर्त्त स्थित होते हैं ३४।३५
वह सत्यही तीर्थ वा तपोवन है अन्न वा जल वा फल वैष्णवको
३६ जो कुछ दियाजाता है वह दान नाशरहित होता है क्योंकि
सब देवताओं का रूप वैष्णव कहा है ३७ जिसने वैष्णवको सं-
तोषयुक्त किया उसने सब देवताओं को प्रसन्न किया इस महा-
घोर, अनेक प्रकार के दुःखयुक्त संसार में ३८ भगवान् का भक्त
पुरुष कभी नहीं कष्ट पाता है तिससे हे विप्रेन्द्र जैमिनि ! तुमभी
क्रियायोग से केशवजीको ३९ सदैव भक्तिसे [illegible]
जीके परमपदको जावो सूतजी बोले कि हे शौ[illegible]
व्यासजीके वचन सुनकर ४० जैमिनि शिरसे [illegible]
भये कि हे गुरो हे मुनियोंमें श्रेष्ठ व्यासजी ! [illegible]
माहात्म्य वारंवार कहा अब तिनके सब ल[illegible]
में कहिये वैष्णव मनुष्य कैसे जानने योग्य [illegible]
मारे ऊपर आपकी कृपाहै तो सब आदिसे [illegible]
बोले कि हे जैमिनि ! मधु कैटभ राक्षसों के [illegible]
ने आपही ४३ भगवान् से पूछा तब उन्होंने [illegible]
को मैं जानताहूं सुनिये कल्पके अन्त में रु[illegible]
संहारकर ४४ आपही एक भगवान् [illegible]
योगनिद्रा से मोहित भगवान् के सोते हुए [illegible]
महमें डूब गई ४५ तब भगवानकी नाभिक[illegible]
नवाले ब्रह्माजी भगवान्हीं में मनल[illegible]

ध्यानकर स्थित होजाते भये ४६ तिस महाघोर समय में विष्णु जीके कानके मलसे घोर मधु और कैटभ नाम दो बड़े असुर उ-त्पन्न होते भये ४७ और अत्यन्त घोर दोनों दानव आकाश में घूमते हुए श्रीविष्णुजी की नाभिकमल में विष्णुजी को देखते भये ४८ तब महाबल और पराक्रमयुक्त दोनों दैत्य क्रोधसे लाल नेत्रकर ब्रह्माके मारने के लिये उद्यम करते भये ४९ तब तो सं-सार के रचनेवाले ब्रह्माजी हृदय से तिनका वध चिन्तनाकर म-नोहर वाणी से भगवती योगनिद्राकी स्तुति करते भये ५० पर-मेष्ठी ब्रह्माजीका स्तोत्र सुनकर प्रीति से योगनिद्रा बोली कि तुम्हारा क्या अभिमत है तिसको कहिये ५१ तब ब्रह्माजी बोले कि हे योगनिद्रे ! ये दोनों अत्यन्त घोर राक्षस मेरे मारने के लिये निश्चय किये हुए हैं इस से माया से शीघ्रही मोहितकर रक्षा करनेवाले भगवान् को छोड़िये ५२ तब तो भगवान्‌की नि-द्रा महाविष्णु जी को छोड़ देतीभई तो दोनों दानवों और भ-गवान् का आकाश में ५३ भुजाओं से युद्ध होताभया तब शर-णागतवत्सल भगवान् पांच हज़ार वर्ष घोर युद्ध करतेभये ५४ परन्तु किसीकी न तो विजयहुई और न किसीकी हारहुई तदन-न्तर महामायासे विमोहित दोनों राक्षस ५५ भगवान्‌से बोले कि हमसे वर मांगो तब तो हँसकर भगवान् उनसे ये वचन बोले ५६ कि जो हमारे ऊपर तुम दोनों प्रसन्नहो तौ शीघ्रही हमसे मृत्यु को प्राप्तहोजावो तब तो घोर महामायायुक्त दोनों दानव जनार्दन भगवान्‌से ५७ महामायासे मोहित होकर बोले कि आपको नि-स्सन्देह यही वर देते हैं ५८ हे जनार्दनजी ! हम दोनोंको जहांपर पृथ्वी विना जलके है वहांपर मारिये तब तो भगवान् दोनों महा-सुरोंको जंघाओं पर लाकर ५९ सहसासे चित्रविचित्र चक्र की धारा से नाश करडालतेभये तब खेदरहित ब्रह्माजी भगवान् से मारेहुये मधु कैटभ राक्षसोंको देखकर देवदेवेश भगवान्‌की स्तुति करतेभये ६० कि परमेश्वर, शरणागतकी सब पीड़ा नाश करने वाले, त्रिगुणात्मक, अमित विक्रमवाले नारायणजी के नमस्कार

देश भी त्यागने योग्य है जहांपर वैष्णव नहीं स्थित है और जन्म के इकट्ठा किये हुए थोड़े वा बहुत पाप ३१ भगवान् के भक्त के दर्शन से तिसीक्षण में नाश होजाते हैं और जो सब पापों के नाश करनेवाले वैष्णव के चरणजलको ३२ भक्ति से अपने शिर में लगावे तो उसको गंगा के स्नानका कुछ प्रयोजन नहीं है जो भगवान्के भक्तों का मुहूर्तमात्र भी संग करता है ३३ वह ब्रह्महत्याआदिक सब पापोंसे छूट जाता है जितने धर्म कर्म भगवान् के भक्तके आगे किये जाते हैं वे सब नाशरहित होते हैं जहांपर वैष्णव मनुष्य मुहूर्त्त वा आधा मुहूर्त्त स्थित होते हैं ३४। ३५ वह सत्यही तीर्थ वा तपोवन है अन्न वा जल वा फल वैष्णवको ३६ जो कुछ दियाजाता है वह दान नाशरहित होता है क्योंकि सब देवताओं का रूप वैष्णव कहा है ३७ जिसने वैष्णवको संतोषयुक्त किया उसने सब देवताओं को प्रसन्न किया इस महाघोर, अनेक प्रकार के दुःखयुक्त संसार में ३८ भगवान् का भक्त पुरुष कभी नहीं कष्ट पाता है तिससे हे विप्रेन्द्र जैमिनि ! तुमभी क्रियायोग से केशवजीको ३९ सदैव भक्तिसे आराधनकर विष्णुजीके परमपदको जावो सूतजी बोले कि हे शौनक ! तिन महात्मा व्यासजीके वचन सुनकर ४० जैमिनि शिरसे हाथ जोड़कर पूछते भये कि हे गुरो हे मुनियोंमें श्रेष्ठ व्यासजी ! आपने भगवद्भक्तका माहात्म्य वारंवार कहा अब तिनके सब लक्षणों को इस समय में कहिये वैष्णव मनुष्य कैसे जानने योग्य हैं ४१। ४२ जो हमारे ऊपर आपकी कृपाहै तो सब आदिसे कहिये तब व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! मधु कैटभ राक्षसों के मारने के पहिले ब्रह्मा ने आपही ४३ भगवान् से पूछा तब उन्होंने जो कुछ कहा तिस को मैं जानताहूं सुनिये कल्पके अन्त में रुद्ररूपसे सब संसारको संहारकर ४४ आपही एक भगवान् योगमायासे सोते भये तिन योगनिद्रा से मोहित भगवान् के सोते हुए सब पृथ्वी जल के समूहमें डूब गई ४५ तब भगवान्की नाभिकमलके ऊपर संसारके रचनेवाले ब्रह्माजी भगवान्हीं में मनलगाकर आदिपुरुषजी का

ध्यानकर स्थित होजाते भये ४६ तिस महाघोर समय में विष्णु जीके कानके मलसे घोर मधु और कैटभ नाम दो बड़े असुर उत्पन्न होते भये ४७ और अत्यन्त घोर दोनों दानव आकाश में घूमते हुए श्रीविष्णुजी की नाभिकमल में विष्णुजी को देखते भये ४८ तब महाबल और पराक्रमयुक्त दोनों दैत्य क्रोधसे लाल नेत्रकर ब्रह्माके मारने के लिये उद्यम करते भये ४९ तब तो संसार के रचनेवाले ब्रह्माजी हृदय से तिनका वध चिन्तनाकर मनोहर वाणी से भगवती योगनिद्राकी स्तुति करते भये ५० परमेष्ठी ब्रह्माजीका स्तोत्र सुनकर प्रीति से योगनिद्रा बोली कि तुम्हारा क्या अभिमत है तिसको कहिये ५१ तब ब्रह्माजी बोले कि हे योगनिद्रे ! ये दोनों अत्यन्त घोर राक्षस मेरे मारने के लिये निश्चय किये हुए हैं इस से माया से शीघ्रही मोहितकर रक्षा करनेवाले भगवान् को छोड़िये ५२ तब तो भगवान्की निद्रा महाविष्णु जी को छोड़ देतीभई तो दोनों दानवों और भगवान् का आकाश में ५३ भुजाओं से युद्ध होताभया तब शरणागतवत्सल भगवान् पांच हज़ार वर्ष घोर युद्ध करतेभये ५४ परन्तु किसीकी न तो विजयहुई और न किसीकी हारहुई तदनन्तर महामायासे विमोहित दोनों राक्षस ५५ भगवान्से बोले कि हमसे वर मांगो तब तो हँसकर भगवान् उनसे ये वचन बोले ५६ कि जो हमारे ऊपर तुम दोनों प्रसन्नहो तौ शीघ्रही हमसे मृत्यु को प्राप्तहोजावो तब तो घोर महामायायुक्त दोनों दानव जनार्दन भगवान्से ५७ महामायासे मोहित होकर बोले कि आपको निस्सन्देह यही वर देते हैं ५८ हे जनार्दनजी ! हम दोनोंको जहांपर पृथ्वी विना जलके है वहांपर मारिये तब तो भगवान् दोनों महासुरोंको जंघाओं पर लाकर ५९ सहसासे चित्रविचित्र चक्र की धारा से नाश करडालतेभये तब खेदरहित ब्रह्माजी भगवान् से मारेहुये मधु कैटभ राक्षसोंको देखकर देवदेवेश भगवान्की स्तुति करतेभये ६० कि परमेश्वर, शरणागतकी सब पीड़ा नाश करने वाले, त्रिगुणात्मक, अमित विक्रमवाले नारायणजी के नमस्कार

हैं ६१ हे अपार कीर्तिवाले ! आप के दोनों चरणकमलों में प्राप्त हुए मनुष्य कभी विपत्तिको नहीं प्राप्तहोते हैं यह मैंने जाना है और आपने शीघ्रही मेरी बड़ी विपत्तिको नाश करदिया है ६२ हे तीनोंलोकके स्वामी ! हे देवदेव ! हे शरणागतपालक ! हे ईश ! आप योगेश्वर और दयासंयुक्त हैं और शत्रुओंके समूहों के नाश करने में निर्दय हैं जिससे कि इन दोनों राक्षसों को मारकर मेरी रक्षाकी है ६३ यद्यपि मधु कैटभ राक्षस अत्यन्त कठिन थे तिसपर भी अपने जीवनके नाशके वरदानोंसे प्रसन्नकर उनको मारते भये हो सब शुभके देनेवाले ईश्वर आपही हो ६४ तिसी पुरुषके ये तीनों सुन्दर लोक हैं अपने कुलसमेत सब वैरी नाश होजाते हैं हे देवताओंके स्वामी ! जिसको आप यहांपर दयाओंसे देखते हैं उसके मित्र और सब बान्धव वृद्धिको प्राप्तहोते हैं ६५ हे लक्ष्मीजी के मुखरूपी कमलके भौंर ! हे देवोंके देव ! हे संसारके मनुष्यों के भय और शोकके नाश करनेवाले ! हे नाथ ! आपके पवित्र दोनों चरणकमलोंके आश्रय मेरी निरन्तर रक्षा कीजिये आपके नमस्कार है ६६ हे कमलनयन ! हे लक्ष्मीके स्वामी ! हे सब प्राणियोंके स्वामी ! हे संसार के पालन करनेवाले ! आपके नमस्कार है ६७ हे पापरहित ! भक्तों के ऊपर प्रसन्न, भक्तिके देनेवाले, ज्ञानरूप आपके नमस्कार है मुझको शरण लीजिये ६८ हे जगन्मय ! आपके नमस्कार है आप रक्षाकीजिये ६९ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! इन वा और स्तोत्रों से संसारके रचनेवाले ब्रह्माजी से स्तुति कियेगये देवभगवान् परमप्रीति को प्राप्त होकर ७० ब्रह्माजी से बोले कि हे कमलासन ! तुम्हारी भक्तिसे इस स्तोत्रसे प्रसन्न हूं आपका पृथ्वीमें क्या अभिमत है तिसको कहिये मैं उसे आपको दूंगा ७१ तब ब्रह्माजी बोले कि हे देवोंके स्वामी ! हे दया के समुद्र ! हे जगन्मय ! जो आप प्रसन्नहो तो मुझे यह वर दीजिये कि आपके भक्तों को आपदा नहीं होवें ७२ तब श्रीभगवान बोले कि हे देवताओंमें श्रेष्ठ ! ऐसाही होवे यह वर मैंने तुम्हें दिया मेरे भक्तको पृथ्वी में कभी विपत्ति नहीं होगी ७३ वैष्णवों के ग-

रीरों में निरन्तर मैं बसताहूं तिससे वैष्णव मनुष्य कभी आपदाको नहीं प्राप्त होवें ७४ तब ब्रह्माजी बोले कि हे संसारके स्वामी ! आपने निस्सन्देह सब कुछदिया जो इन महादैत्यों को लड़ाई में नाशकर दिया ७५ हे प्रभो ! कुछ काल प्राप्त होकर जो इस स्तोत्रसे श्रेष्ठ भक्तिसे आपकी स्तुति करता है तो उसके आप रक्षा करनेवाले होजाते हैं ७६ आश्चर्य की बात है कि देवताओं के ध्यान करनेमें भी आप नहीं आसक्ते हैं सोई आप वैष्णवोंकी देहों में भ्रमते हैं यह बड़ा अद्भुत है ७७ हे स्वामिन् क्षणमात्र भी आपके प्रसन्न होनेसे क्या होताहै सोई आप वैष्णव के संगसे भ्रमते हैं यह बड़ा अद्भुत है ७८ हे कैटभ के वैरी ! हे केशवजी ! वैष्णव कौनहैं और तिनके कौन लक्षण हैं वे सब कैसे जाने जाते हैं यह हमसे कहिये ७९ तब श्रीभगवान् बोले कि हे सज्जनों में श्रेष्ठ ब्रह्मा ! वैष्णवों के लक्षण सौ करोड़ कल्पों में भी अच्छेप्रकार कहने को मैं समर्थ नहींहूं संक्षेप से सुनिये ८० संसार वैष्णवों के अधीन है देवता वैष्णवों से पालितहैं और मैंभी वैष्णवोंके अधीन हूं तिससे वैष्णवश्रेष्ठहैं ८१ हे ब्रह्मन् ! वैष्णव मनुष्य को छोड़कर क्षणमात्र भी मैं और जगह नहीं स्थित होताहूं क्योंकि वैष्णव मेरे बान्धवहैं ८२ कामक्रोध से हीन, हिंसा और दम्भ से वर्जित और लोभ मोह से जे हीनहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ८३ मत्सरहीन, दयायुक्त, सबप्राणियों के कल्याण की इच्छा करने वाले और सत्य बोलनेवाले वैष्णव जानने चाहिये ८४ धर्मके उपदेश करने वाले, धर्मके आचारके धारण करनेवाले और गुरुजी की सेवा करनेवाले वैष्णव जानने योग्यहैं ८५ तुमको मुझको और महादेवजीको जे बराबर देखतेहैं और अतिथि की पूजाकरतेहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ८६ वेदविद्यामें निरुक्त, ब्राह्मणकी भक्तिमें सदैव रत और पराई स्त्रियों में जे नपुंसक हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ८७ जे भक्तिभावसे एकादशीका व्रत करते हैं और मेरे नामों को गातेहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ८८ देवता का मन्दिर करनेवाले, तुलसीकी माला धारण करनेहारे और जे पद्माक्ष धारण करनेवाले

हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ८९ शंख, चक्र, गदा और पद्म इन मेरे आयुधों से चिह्नित जिनके शरीर हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९० जिनके गलेमें आंवलेके फलके माला हैं और तिनके पत्रों से मेरी पूजा करतेहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९१ तुलसी की जड़की मिट्टियोंसे जे तिलक देते हैं और तुलसी के काष्ठकी पङ्कसे जे तिलक देते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९२ गंगाजी के स्नानमें रत, गंगाके नाम में परायण और गंगाके माहात्म्य कहनेवाले वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९३ जिनके घरमें शालग्रामकी मूर्ति सदैव वसती है और भागवत शास्त्र वसता है वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९४ जे नित्यही मेरे स्थानों को शुद्ध करते हैं और वहांही दीप देते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९५ जे हमारे पुराने मन्दिरको फिर नया कर देते हैं और तहांपर मन्दिर की शोभा को करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९६ जे डरपोंकों को अभय देते और ब्राह्मणों को विद्यादान देते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९७ हमारे चरणके जलों से जिनके मस्तक सींचे जाते हैं और मेरी नैवेद्यको खाते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये ९८ जे भूख और प्यास से पीड़ितों को अन्न और जल देते हैं और जे योगकी सेवा करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं ९९ वगीचाके लगवानेवाले, पीपलके लगवाने हारे, और जे गऊकी सेवाकरते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये १०० जे अत्यन्त भक्त पितृयज्ञ करते और दीनोंकी सेवाकरते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं १०१ तालाव और गांवके करनेवाले और जे कन्यादानमें रत हैं और जे सास और श्वशुरकी सेवा करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये १०२ ज्येठी वहन और ज्येठे भाई की जे सेवा करते हैं और पराई निंदा नहीं करते हैं वे वैष्णव मनुष्य जानने योग्य हैं १०३ हेब्रह्मन! वैष्णवों में सवगुण हैं दोपका लेशनहीं उनके विद्यमानहै तिससे तुमभी इससमय में वैष्णवहोवो १०४ और हे प्रजापते! क्रियायोगोंसे मेरी नित्यही आराधनाकरो तो निस्सन्देह

सब तुम्हारेकल्याण शीघ्रहीहोंगे १०५ हेचतुर्मुख! जे देवता, ब्राह्मण और पराई द्रव्यको विषकेसमान देखतेहैं वे वैष्णव मनुष्य जानने चाहिये १०६ पाखण्ड भक्तिसे रहित शिवजीकी भक्तिमें परायण और चतुर्दशीके व्रतमें रतोंको वैष्णव मनुष्य जानिये १०७ यहांपर बहुत कहने और वारंवार भाषण करनेसे क्याहै जे मेरीपूजा करते हैं वे वैष्णव जानिये १०८ फिरपहलेके स्थितकी नाईं सब संसारको रचिये ऐसाब्रह्माजीसे कहकर परमेश्वर जी तहांहीं अंतर्द्धान होगये १०९ तदनन्तर ब्रह्माजी पहले की नाईं सब संसार को रचकर क्रियायोगोंसे भगवान् को पूजनकर परमपदको जाते भये ११० जे इसअध्यायको भक्तिसे नारायणजीके आगे पढ़ते हैं वे सब पापों से छूटकर अन्त समयमें हरिजीके मन्दिरको जाते-हैं १११॥

इतिश्रीपाद्मेमहापुराणेक्रियायोगसारेद्वितीयोऽध्यायः२॥

## तीसरा अध्याय॥

### गंगाजीकामाहात्म्यवर्णन॥

जैमिनिजी बोले कि हे महाबुद्धिमान् व्यासजी! क्रियायोग का तत्त्व मुझसे कहिये आपके आगे मैं क्रियायोगके जाननेकी इच्छा करता हूं १ तब व्यासजी बोले कि हे विप्र जैमिनि! इस पृथ्वी में मनुष्यका शरीर दुर्लभहै धीर मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर मोक्ष के लिये योगका अभ्यास करै २ क्रियायोग और ध्यानयोग ये दो योग कहेगये हैं तिनदोनोंमें पहला क्रियायोग करनेवालोंको सबकामना देनेवाला है ३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! गङ्गा, लक्ष्मी और विष्णुजीकी पूजा दान, ब्राह्मणों की भक्ति तथा एकादशी व्रत में भक्ति, ४ आँवला और तुलसी की भक्ति, अतिथिपूजन ये क्रियायोग के उत्पन्न हुये अंग संक्षेप से कहेगये हैं ५ हे विप्र! क्रियायोग को छोड़ कर ध्यान योग में सिद्धि को नहीं प्राप्त होसक्ता है क्रियायोगमें रतहुआ विष्णु-जी के परमपद को प्राप्त होता है ६ तब जैमिनिजी बोले कि हे प्रभो क्रियायोग के जितने उत्पन्न हुए अंग आपने कहे हैं तिनके माहा-

त्म्य भी कहिये जो मेरे ऊपर आपकी दयाहुई हो ७ हे ब्रह्मन्! गङ्गाजीके कौन गुण हैं विष्णुजी की पूजाका फल क्याहै कौन दान श्रेष्ठ हैं ब्राह्मणों की क्या भक्ति है ८ एकादशीका फल क्याहै आंवले की भक्ति और तुलसीकी भक्ति कैसी है अतिथिपूजन क्याहै ९ हे मुने! ये सब कहिये इन के सुनने को मेरा आदर है तीनों लोकमें आप को छोड़कर दूसरा कोई नहीं कहसक्ताहै १० तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जैमिन! बहुत अच्छा प्रश्न तुमने किया है निश्चय तुम्हारा मन निर्मल है जिससे इस छिपीहुई कथाके सुननेको तुम्हारे श्रद्धा और कौतुकहै ११ गङ्गाजीके गुण अच्छे प्रकार कहनेको नहीं समर्थ हूं तिससे संक्षेपसे कहताहूं एकचित्त होकर सुनो १२ गंगाके अत्यन्त कोमल दो अक्षर जपकरने से में महाभूत रसायन मानताहूं और पापचलाजाता है १३ सबजगह गंगाजी सुलभ हैं गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर का संगम इन तीनों स्थानोंमें दुर्लभ हैं १४ हे मुने! मनोरम गंगाद्वार में इन्द्रसमेत सब देवता आकर स्नानऔर दान आदिक करते हैं १५ दैवयोगसे वहांपर मनुष्य, पशु और कीटआदिक भी जे देहछोड़ देतेहैं तो परमपदको प्राप्तहोजाते हैं १६ हे विप्रर्षे! यहांपर मेरेकहेहुए इतिहासको सुनिये जिसके अच्छेप्रकार सुनतेही सबपापोंसे छूटजावोगे १७ पहले इसपृथ्वीमें सोमवंश में उत्पन्न, बलवान्, सबधर्मका जाननेवाला मनोभद्रनाम राजाहुआहै १८ तिसकी प्रियवचन बोलने वाली, पतिव्रता, महाभाग्यवती, सब लक्षणसंयुक्त हेमप्रभा नामस्त्री हुईहै १९ यहमहाबलवान् राजालड़ाईमें सबशत्रुओंको मारकर समुद्र और द्वीपोंसमेत सबपृथ्वीकी पालनाकरतागया है २० एकसमयमें यहराजा महायशस्वी सभामें अपनेमंत्रियों को बुलाकर प्रीतिसे यहवचनबोला २१ कि हे मंत्रियो! यहसबपृथ्वी मेरी रक्षाकीहुई है पुत्र, बलऔर वाहनों समेत सबशत्रु मैंने नाश किये हैं २२ अपने गोत्रों की रक्षाकी है दानों से ब्राह्मणों को प्रसन्न किया है सज्जन और पुत्र, बल और वाहनों समेत सबदेवता भी प्रसन्न किये हैं २३ दक्षिणाओं समेत सबयज्ञोंसे अपनेगोत्रों

की रक्षाकी है परन्तु इसबड़ी भारी वृद्धावस्थासे मेराबल हर लियागया है २४ इससे दुर्बल होकर मैं कुछकर्म करनेको नहींसमर्थहूं सामर्थ्यहीन पुरुषमें राजलक्ष्मी नहींशोभित होतीहै २५ जैसे सबगहनोंसे युक्त वृद्धअंगवाली स्त्री नहीं शोभित होती है पृथ्वी में तबतक सब शत्रु डरते हैं २६ जबतक पवित्र नेत्र से सामर्थ्यहीनको नहीं देखतेहैं सबगुणोंसे युक्त और तिसीमें प्राप्त मनवाले २७ वृद्धराजाको इस प्रकार पृथ्वी छोड़ देतीहै जैसे रक्षा की हुई भी व्यभिचारिणी स्त्री अपने पतिको छोड़ देती है सब गुण भक्तिसे लाभ होसक्ते हैं बड़ा यश गुणोंसे लाभ होता है २८ कल्याण दानसे मिलता है पृथ्वी बलसे मिलती है सामर्थ्यहीन, कृपण,शत्रुके शासनमें निश्चित, २९ मूर्खमात्र वचनका ग्रहण करनेवाला, शत्रुओं को आनन्द देनेवाला सो राजा है तिससे हे श्रेष्ठ मंत्रियो ! मैं सब राज्य बांटकर ३० पुत्रोंको देनेकी इच्छा करताहूं जो आप लोगोंकी सम्मतिहोवे तब मंत्री बोलेकि हे राजन् ! नीति के जाननेवाले आपने जो ये वचन कहे हैं ३१ सोई हम लोगोंके भी मत हैं इस में सन्देह नहीं है तदनन्तर राजा की आज्ञा से उनके दोनों श्रेष्ठ पुत्र सभामें आये ३२ वीरभद्र और यशोभद्र जिनके नाम हैं ये सब गुणोंसे युक्त, कुमार, प्रिय बोलनेवाले, ३३ पिताके भक्त, सदैव शान्त, बलवान् और धर्ममें तत्परहैं तब राजनीति जाननेवालों में श्रेष्ठ राजा सहसासे ३४ कुतूहलपूर्वक सब राज्य बांटकर दोनों पुत्रोंको देता भया इसी अन्तर में एक गृध्र अपनी स्त्रीसंयुक्त ३५ आकर तिस सभाके बीचमें बैठता भया सूतजी कहते हैं कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो तिन गृध्र और उसकी स्त्रीको अत्यन्त प्रसन्न आतेहुए देखकर ३६ राजा दोनोंसे बोला कि किस हेतुसे आपका शुभ आगमन हुआहै तिसको कहिये तब गृध्र बोला कि हे शत्रुओं के ताप देनेवाले राजन् ! मैं गृध्रहूं और यह मेरी स्त्री है ३७ आनन्दसे आपके दोनों पुत्रोंकी सभा देखने के लिये आया हूं पूर्वजन्ममें इन दोनोंने बड़ी विपत्ति देखी थी ३८ इस जन्ममें इनकी सम्पत्ति देखने के लिये हम दोनों आये हैं तब तो विस्मय

युक्तहोकर राजा फिर बोला ३९ कि हेगृध्र! अत्यन्त अद्भुत वचन आप से यह मैंने सुने इनके पूर्वजन्म का वृत्तान्त आप ने कैसे जाना ४० श्रेष्ठ पक्षी! जो तत्त्व से इनके पूर्वजन्मका वृत्तान्त जानते हो तो सम्पूर्ण हमसे कहो ४१ तब गृध्र बोला कि हे राजन्! द्वापरयुग में ये दोनों शूद्र, गर और संगर नामी सत्यघोष के पुत्र थे ४२ एकही समय में ये दोनों अपने घरमें मरगये तब इनके लेनेके लिये बड़ी डाढ़वाले यमराजके दूत ४३ फँसरी हाथ में लेकर सैकड़ों करोड़ आकर इन दोनों मदोद्धतों को चमड़े की फँसरी से बांधकर ४४ अति दुर्गम मार्गसे यमराज के स्थान को लेगये इनको देखकर धर्मराज चित्रगुप्त से बोले ४५ कि हे चित्रगुप्त! इन दोनों के सब वृत्तान्त विचारिये तब यमराज जी की आज्ञासे चित्रगुप्त सब शुभ अशुभ कर्म ४६ मूलसे विचारकर यमराजजी से बोले कि हे महाबाहो! ये दोनों सत्यही पुण्यकारी व्रत में बड़े अन्तःकरण वाले हैं ४७ कुछ इन्होंने बुरेकर्म कियेहैं जो कि सब कर्मके नाश करनेवाले होगयेहैं दान करके ब्राह्मण को इन्हों ने नहीं दियाहै ४८ हे राजन् तिसी कर्मसे ये दोनों नरक में प्राप्तहोंगे क्योंकि दाता दानकरके जो ब्राह्मण को नहीं देताहै ४९ तो वह सब प्राणियों के भय देने वाले घोरनरक में प्राप्तहोता है दाता दान को न स्मरण करै और दानका ग्रहण करनेवाला न मांगै ५० तो दोनोंका जबतक चन्द्रमा और सूर्यरहेंगे तबतक नरक में वास होताहै तिससे हे प्रभो! ये दोनों महापापी ब्राह्मणकी द्रव्य के हरनेवालेहैं दूत इनको शीघ्रही घोरनरक में लेजावें ५१।५२ हेराजन् तब तो यमराजजी की आज्ञासे क्रोध से ओष्ठोंको चबाते हुए उनके दूत इनदोनोंको घोरनरक में डालतेभये ५३ और तिसी दिन इस स्त्रीसमेत मुझको भी यमराज के दूत आकर यमराजके स्थान में प्राप्तकरते भये ५४ मैं सुननेवालों को विस्मय देनेवाले अपने कियेहुये कर्मको सब मूलही से कहताहूं तिनको सुनिये ५५ पूर्व समय में मैं महाकुलवान्, सौराष्ट्र देशका रहनेवाला, वेद और वेदाङ्गका पारगामी, सर्वग नाम ब्राह्मणहूं ५६ और यह यशस्विनी,

पतिव्रता, महाभागा, पवित्र कुलमें उत्पन्न, मंजूकषानाम हमारीस्त्री है ५७ हे महाभाग! विद्या, अवस्था और धन से मतवाला मैं युवावस्था में एकसमय मनसे माता पिता का अनादर करताभया ५८ बड़ी सभामें श्लाघ्य, वनमें स्थित, सबकर्म करनेवाला, धनवान् सुन्दर, ज्ञानी और जातिके पालन में तत्पर मैं था ५९ और मेरे माता पिता पापमें परायण, मुखर, दयाहीन, और पाखण्डियों के संगमें लोलुपथे ६० पौरुष, जीवन, धन, कुल, विद्या और सब यशको उन्हों ने निष्फल करदिया था ६१ हे राजन्! यहमन से बिचार कर मैंने वारंवार अनादर से माता पिताकी शुभकी देने वाली सेवाको छोड़दियाथा ६२ इसी कर्म से स्त्रीसमेत मैं यमराज की आज्ञा से दूतों के द्वारा जहांपर पापियों में श्रेष्ठ ये दोनों थे वहीं पर छोड़ा गया ६३ इन दोनों पापियों के साथ स्त्री समेत मैं घोरनरक में जितने कालस्थित रहा तिसको सुनिये ६४ हे श्रेष्ठ राजन्! हज़ार करोड़ युग और सौ करोड़ युग नरकके महादुःख हमलोगोंने सहे ६५ फिरनरक के अन्तमें स्त्री समेत मैं मरेहुओं के मांसकाखानेवाला गृध्रपक्षी के कुलमें उत्पन्न हुआ ६६ और ये दोनों नरक के अन्तमें अपने कर्मोंका फलभोगने के लिये टीड़ियों के वंश में उत्पन्न हुए ६७ हे राजन्! जो इन्हों ने टीड़ियोंके जन्म में कर्मकिये तिन श्रोताओं के विस्मय देने वालोंको कहताहूं सुनिये ६८ एकसमय में बड़ी आंधी आई कि जिससे उड़कर ये दोनों निर्मल गंगाजीके बीचमें गिरपड़े ६९ निर्मल अंग होनेके कारण से गिरतेही शीघ्रही मरगये और सबपाप इनके जाते रहे ७० तदनन्तर इनके लेने के लिये सुन्दर नेत्रवाले दूत सबभोगोंसे युक्त विमानों को लेकर आये ७१ तब सब पापों सेछूटकर तुलसी की मालासे शोभित होकर सुन्दर विमान पर चढ़कर विष्णुजी के पुरको जातेभये ७२ तितनेही समय अव्यक्त जन्मवाले ब्रह्माजीके यहां भी रहे फिरब्रह्माजीकी आज्ञासे इन्द्र के पुरको आये ७३ वहांपर देवताओं के दुर्लभ सुखको भोगकर तितनेही समय तक पृथ्वी भोगकरनेके लिये ७४ ये दोनों महायश-

स्वी आपके पवित्रवंश में उत्पन्न हुये हैं गङ्गाजीमें देहछोड़नेवाले का फिर जन्म नहीं होता है ७५ तिसपर भी ये अत्यन्त पुण्यात्मा पृथ्वी भोगकरने के लिये उत्पन्न हुये हैं बहुत कालतक पुत्र पौत्र संयुक्तहोकर सम्पूर्ण पृथ्वीको भोगकर ७६ गंगाजीमें मरणपाकर योगियों के दुर्लभ नारायणजीके सायुज्यको प्राप्तहोंगे ७७हेराजाओंमें शिरोमणि! जातिस्मरके प्रभावसे इनदोनों के पूर्वजन्म का यह सब वृत्तान्त मैंने कहा ७८ ये दोनों गंगाजीमें मरण पाकर इस दशाको प्राप्तहुये हैं दुरात्मा हम दोनोंकी रक्षाकौन करेगा ७९ पिताका अपमानकरना मनुष्यों को क्लेश देता है हे राजन् मैंने अच्छी तरहसे देखाहै ८० पिता की अभक्ति इस लोक और परलोक में दुःख देनेवाली है इसलोक में सम्पत्ति के नाशके लिये है और परलोक में नरक के लिये है ८१ हे राजन्! मैं ब्रह्महत्यादिक पाप को श्रेष्ठ मानताहूं कभी तो उस से छुटकारा मिलता है और यह सदैव होती है ८२ दुःख से इकट्ठे किये हुये पुण्यकारी वृक्ष सब क्लेशों के नाश करनेवाले को पिताके अनादर रूप कुल्हाड़े से मनुष्य पृथ्वी में काटडालते हैं ८३ और हे शत्रुओं के तापदेने वाले! जोकुछ पिताके मुख में दिया जाता है तिसको आपही विष्णु जी भोजन करते हैं क्योंकि पितृरूप हरि जी हैं ८४ ये प्रत्यक्ष देवमाता पिता की दिनरात सेवा करते हैं तिनको भगवान् के प्रसाद से सब सिद्धि होती है ८५ और पिता की भक्ति से मनुष्य हीन होकर जितने दिन स्थित रहते हैं तितनेही हज़ार कल्प वे नरक में स्थित रहते हैं ८६ तिसी से इससमय में हमको महादुःख मिला है यह मैं नहीं जानताहूं कि सोमसमेत मेरा कब मोक्ष होगा ८७ व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमिनि! ये गृध्र के वचन सुनकर राजा प्रसन्न और बारंबार विस्मित होकर बोला ८८ कि हे गृध्र! तुम्हारे मुखसे ये आश्चर्ययुक्त वचन सुनकर मेरे और इनके हृदयमें प्रतीति नहीं होती है ८९ तदनन्तर हे श्रेष्ठ राजन्! यह आकाशवाणीहुई कि यह सत्यही है इसमें कुछ सन्देह नहीं है ९० तब तो हे जैमिनिजी! वह पक्षी सोमसमेत

गङ्गाजी के माहात्म्यके कहनेसे पहलेकी नाईं स्थित होगया ९१ आकाशमें नगारे बजनेलगे श्रेष्ठ गन्धर्व गानेलगे अप्सराओं के समूह नाचनेलगीं फूलोंकी वर्षा होनेलगी ९२ सब भोगोंसे युक्त सुन्दर विमान आया और भगवान् के भेजेहुए दूतोंके समूह भी आये ९३ तदनन्तर हे विप्र! प्यारी स्त्रीसमेत गृध्र शीघ्रही विमानपर चढ़कर भगवान्के स्थानको जाताभया ९४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह अद्भुत कर्म सुनकर पुत्र और स्त्रीसमेत राजा गंगाजीकी सेवा में तत्पर होजाता भया ९५ गंगाजी के समान तीर्थ तीनों लोकमें नहीं है जिनके नामके उच्चारण करनेहीसे गृध्र मोक्षको प्राप्तहोजाता भया ९६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! सब पापोंका नाश करनेवाला गंगाद्वारका माहात्म्य तुमसे कहा अब और क्या सुनने की इच्छाहै९७ जे मनुष्य इस अध्यायको देवताके मन्दिर में पढ़ते हैं और जे ब्राह्मणोंके समूहोंके भक्त सुनतेहैं उनकेपाप शीघ्रही नाशहोजातेहैं९८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेतृतीयोऽध्यायः ३॥

# चौथा अध्याय॥

## प्रयागजीका माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनिजी बोले कि हे व्यासजी! आपके प्रसादसे मैंने गंगाद्वारका माहात्म्य तो सुना अब इससमयमें प्रयागजी के माहात्म्य सुनने की इच्छाहै१ हे मुने! गङ्गासागरके संगमका माहात्म्य कहिये पृथ्वी में आप को छोड़ कर और कोई दूसरा अच्छे प्रकार कहने को समर्थ नहीं है २ तब व्यासजी बोले कि हे वत्स! हे ब्राह्मण जैमिनि! प्रयाग और गङ्गासागर के संगम का फल अच्छे प्रकार कहने को मैं समर्थ नहींहूं संक्षेप से सुनिये ३ हे मुने! कोटि ब्रह्माण्डके मध्य में जितने तीर्थहैं वे सब प्रयागकी बराबरी को नहीं हैं ४ गङ्गा, यमुना और सरस्वती के संगम में ब्रह्मा, विष्णु और महादेव आदिक सब देवता प्रशंसा करते हैं ५ जे मकर के सूर्य में माघ में तहांपर स्नान करते हैं तिनका आगमन विष्णुलोक से कभी नहीं होता है ६ हज़ार करोड़ गौवों का दान, अश्वमेध इत्यादिक यज्ञ,

स्वी आपके पवित्रवंश में उत्पन्न हुये हैं गङ्गाजीमें देहछोड़नेवाले का फिर जन्म नहीं होता है ७५ तिसपर भी ये अत्यन्त पुण्यात्मा पृथ्वी भोगकरने के लिये उत्पन्न हुये हैं बहुत कालतक पुत्र पौत्र संयुक्तहोकर सम्पूर्ण पृथ्वीको भोगकर ७६ गंगाजीमें मरणपाकर योगियों के दुर्लभ नारायणजीके सायुज्यको प्राप्तहोंगे ७७ हेराजाओंमें शिरोमणि! जातिस्मरके प्रभावसे इनदोनों के पूर्वजन्म का यह सब वृत्तान्त मैंने कहा ७८ ये दोनों गंगाजीमें मरण पाकर इस दशाको प्राप्तहुये हैं दुरात्मा हम दोनोंकी रक्षाकौन करेगा ७९ पिताका अपमानकरना मनुष्यों को क्लेश देता है हे राजन् मैंने अच्छी तरहसे देखाहै ८० पिता की अभक्ति इस लोक और परलोक में दुःख देनेवाली है इसलोक में सम्पत्ति के नाशके लिये है और परलोक में नरक के लिये है ८१ हे राजन्! मैं ब्रह्महत्यादिक पाप को श्रेष्ठ मानताहूं कभी तो उस से छुटकारा मिलता है और यह सदैव होती है ८२ दुःख से इकट्ठे किये हुये पुण्यकारी वृक्ष सब क्लेशों के नाश करनेवाले को पिताके अनादर रूप कुल्हाड़े से मनुष्य पृथ्वी में काटडालते हैं ८३ और हे शत्रुओं के तापदेने वाले! जोकुछ पिताके मुख में दिया जाता है तिसको आपही विष्णु जी भोजन करते हैं क्योंकि पितृरूप हरि जी हैं ८४ ये प्रत्यक्ष देवमाता पिता की दिनरात सेवा करते हैं तिनको भगवान् के प्रसाद से सब सिद्धि होती है ८५ और पिता की भक्ति से मनुष्य हीन होकर जितने दिन स्थित रहते हैं तितनेही हजार कल्प वे नरक में स्थित रहते हैं ८६ तिसी से इससमय में हमको महादुःख मिला है यह मैं नहीं जानताहूं कि स्त्रीसमेत मेरा कब मोक्ष होगा ८७ व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमिनि! ये गृध्र के वचन सुनकर राजा प्रसन्न और वारंवार विस्मित होकर बोला ८८ कि हे गृध्र! तुम्हारे मुखसे ये आश्चर्ययुक्त वचन सुनकर मेरे और इनके हृदयमें प्रतीति नहीं होती है ८९ तदनन्तर हे श्रेष्ठ राजन्! यह आकाशवाणीहुई कि यह सत्यही है इसमें कुछ सन्देह नहीं है ९० तब तो हे जैमिनिजी! वह पक्षी स्त्रीसमेत

न्तर प्रणिधिनाम ब्राह्मण शुभलग्न और शुभही तिथिमें बहुतधन लेकर वाणिज्यके लिये जाताभया २४ क्योंकि धनसे धर्म्म, बहुत यश और कुल मिलताहै धनके विना कुछनहीं मिलता है २५ धनहीन मनुष्य को देखकर मित्र भाग जाताहै जैसे शरद्ऋतुमें मेघ जलहीन होकर खण्ड खण्ड हो भागजाता है २६ जबतकखानेको पातेहैं तभी तक बांधव रहते हैं जिसके धन होताहै उसी के कुल और बुद्धि होती है और वही पण्डित होताहै २७ द्रव्यों से हीन मनुष्य जीवताहुआभी मरेके समान है धर्म, द्रव्य और विद्याके इकट्ठा करने से जिसकी बुद्धि लौट जातीहै २८ वह अत्यन्त मूर्ख जानना चाहिये अधिक का अधिकही फल होताहै इससे निरन्तर धर्म करना चाहिये और सदैव धन इकट्ठा करना योग्य है २९ निपुण पुरुषों को सदैव विद्या सीखनी चाहिये दानसे धन और विद्या प्रतिदिन बढ़ती है ३० विना मनुष्यों की रक्षाकरनेके धर्म नहीं बढ़ता है काष्ठ, तृण और भूसीको भी पाकर न त्यागकरै ३१ क्योंकि इकट्ठा करनेवाला मनुष्य कभी कष्ट नहीं पाता है तदनंतर प्रणिधि बनियां स्थानमें स्त्री को छोड़कर ३२ घरके व्यापार में चतुरहोकर वाणिज्यके लिये जाताभया तिसपीछे एक समय में प्रणिधि बनियें की स्त्री उद्वर्तन आदिक लेकर ३३ सखियों के साथ स्नानकरने के लिये जाती भई तब धनुर्ध्वज नाम पापी चाण्डाल ३४ अपनी इच्छासे स्नानकर्म अच्छेप्रकार करतीहुई तिसको देखताभया जो कि फूलेहुए सोनेकेफूलसे युक्त, फूलेहुए कमलही के समान मुखवाली, ३५ हरिणकेबच्चे के तुल्य नेत्रों से युक्त, पवित्र, मोटे और ऊंचे स्तनवाली थी तिस बनियें की स्त्री को देखकर यह चाण्डाल काम से व्याकुलहोकर ३६ अपनी मूर्त्ति की चिन्तना कर हँसकर बोला कि हे कल्याणि ! हे सुन्दर कटिहाँव और पवित्र हासवाली ! हे सुन्दरि ! हे प्रिये ! हे सुन्दर जंघावाली ! हे पतले अंगवाली ! तू कौन है सुन्दर यौवन के रसों से मेरे मनको क्यों हरती है मुझ गुणवान् के साथ ३७। ३८ तुझ गुणवती को सब सुख करना चाहिये हे द्विज ! धनुर्ध्वज के वचन सुनकर

मेरुपर्वत के समान सोने का दान तथा और भी दान ७ कुरुक्षेत्र, पुष्कर, प्रभास और गयाजी में हवनकर ब्राह्मणों को देने से जो फल पण्डितों को मिलता है ८ तिससे करोड़गुणा फल माघ में प्रयागमें स्नान करनेसे मिलताहै तिससे सब तीर्थोंमें प्रयाग श्रेष्ठ है ९ हे उत्तम ब्राह्मण! सिंहराशि के सूर्य में गोदावरी नदी में स्नान, दान और व्रतादिकों से बहुत काल उग्र तपस्या कर १० वेद, शास्त्र और पुराणों का कहाहुआ जो नाशरहित पुण्य होताहै वही माघ में प्रयागमें स्नान करनेसे निस्सन्देह पुण्य होता है ११ काशीजीमें फाल्गुन के कृष्णपक्षकी चतुर्दशी में व्रतकरने से जो फल मिलता है तिसको मैं कहता हूं सुनिये १२ सब रूपका धारण करने वाला मनुष्य करोड़ जन्मके इकट्ठे कियेहुए पापोंसे छूटकर करोड़ पुरुषों को उद्धारकर शिवजीके साथ आनन्द करता है १३ ब्राह्मण माघमासमें प्रयागमें एकबार भी स्नानकर सौकरोड़ कल्प और जगह विष्णुजीको पूजकर जो फल मिलताहै १४ वह मकर के सूर्य्यमें एकदिनभी पूजनेसे सबनाशरहित होताहै यहमैं सत्यही कहताहूं १५ मनुष्य माघमासमें जितने दिन स्थितहोते हैं तितने सौकल्प विष्णुजी के साथ आनन्द करताहै १६ गंगा और यमुनाजीके जलमें जिसने एकबारभी स्नानकिया तो उसके दर्शनकरने से शीघ्रही सबपापों से मनुष्य छूटजाता है १७ मनुष्य जो दुस्तर संसाररूपी समुद्र के तरनेकी इच्छा करतेहैं वे भक्ति से गंगा और यमुनाजी में स्नानकर माधवजी के दर्शन करें १८ तहांपर मनुष्य जिस जिस देहकी पूजाकर पूजनकरते हैं तिसतिस को शीघ्रही निस्सदेह प्राप्तहोते हैं १९ यहांपर एकइतिहासको मैं कहताहूं सुनिये जिसके सुननेसे मनुष्य सबपापोंसे छूटजाता है २० तहांपर एक महाधनवान्, देवता और अतिथियों की पूजा और ब्राह्मण की भक्ति में तत्पर प्रणिधि नाम ब्राह्मणथा २१ तिसकीधर्मपत्नी, पतिव्रता, पवित्रअंगोंवाली, शीलयुक्त, कुलमें उत्पन्न औरप्रिय बोलने वाली पद्मावती नामथी २२ हे उत्तम ब्राह्मण! श्रीब्रह्माजीने स्त्रियों के योग्य जेजेगुण रचे हैं वे सबउसस्त्री में बसतेथे २३ तदन-

न्तर प्रणिधिनाम ब्राह्मण शुभलग्न और शुभही तिथिमें बहुतधन लेकर वाणिज्यके लिये जाताभया २४ क्योंकि धनसे धर्म्म, बहुत यश और कुल मिलताहै धनके विना कुछनहीं मिलता है २५ धनहीन मनुष्य को देखकर मित्र भाग जाताहै जैसे शरद्ऋतुमें मेघ जलहीन होकर खण्ड खण्ड हो भागजाता है २६ जबतकखानेको पातेहैं तभी तक बांधव रहते हैं जिसके धन होताहै उसी के कुल और बुद्धि होती है और वही पण्डित होताहै २७ द्रव्यों से हीन मनुष्य जीवताहुआभी मरेके समान है धर्म, द्रव्य और विद्याके इकट्ठा करने से जिसकी बुद्धि लौट जातीहै २८ वह अत्यन्त मूर्ख जानना चाहिये अधिक का अधिकही फल होताहै इससे निरन्तर धर्म करना चाहिये और सदैव धन इकट्ठा करना योग्य है २९ निपुण पुरुषों को सदैव विद्या सीखनी चाहिये दानसे धन और विद्या प्रतिदिन बढ़ती है ३० विना मनुष्यों की रक्षाकरनेके धर्म नहीं बढ़ता है काष्ठ, तृण और भूसीको भी पाकर न त्यागकरै ३१ क्योंकि इकट्ठा करनेवाला मनुष्य कभी कष्ट नहीं पाता है तदनंतर प्रणिधि बनियां स्थानमें स्त्री को छोड़कर ३२ घरके व्यापार में चतुरहोकर वाणिज्यके लिये जाताभया तिसपीछे एक समय में प्रणिधि बनियें की स्त्री उद्वर्तन आदिक लेकर ३३ सखियों के साथ स्नानकरने के लिये जाती भई तब धनुर्ध्वज नाम पापी चाण्डाल ३४ अपनी इच्छासे स्नानकर्म अच्छेप्रकार करतीहुई तिसको देखताभया जो कि फूलेहुए सोनेकेफूलसे युक्त, फूलेहुए कमलही के समान मुखवाली, ३५ हरिणकेबच्चे के तुल्य नेत्रों से युक्त, पवित्र, मोटे और ऊंचे स्तनवाली थी तिस बनियें की स्त्री को देखकर यह चाण्डाल काम से व्याकुलहोकर ३६ अपनी मूर्त्ति की चिन्तना कर हँसकर बोला कि हे कल्याणि ! हे सुन्दर करिहाँव और पवित्र हासवाली ! हे सुन्दरि ! हे प्रिये ! हे सुन्दर जंघावाली ! हे पतले अंगवाली ! तू कौन है सुन्दर यौवन के रसों से मेरे मनको क्यों हरती है मुझ गुणवान् के साथ ३७। ३८ तुझ गुणवती को सब सुख करना चाहिये हे द्विज ! धनुर्ध्वज के वचन सुनकर

क्रोधयुक्त, ओठों को चबाती हुई तिसकी सखियां बोलीं कि अरे मूर्ख, दुराचार, दुराचार कुल में उत्पन्न ३९। ४० इस का पादविक्षेपण भी तुझको नहीं दियाजावेगा यह पतिव्रता स्त्री धर्म कर्म में परायण है ४१ आत्मा के सुख की इच्छा करनेवालों करके पापदृष्टि से नहीं देखीजाती है सदैव पराई स्त्री के मुखकी सुंदरता और पराया द्रव्य ४२ देखकर काम की अग्निसे खेदयुक्त मूर्ख मनवाले जलजाते हैं इससे हे पापबुद्धिवाले! दूरजावो दुःसह वचन मतकहो ४३ हम लोग तुमको चरणोंसे भी नहीं छूसक्ती हैं तब धनुर्ध्वज बोला कि इस जातिशब्द को धिक्कार है जो कि सब गुण जानतेहुए भी ४४ आप लोगोंसे संभावित न हुआ जिससे कि इस समय में चाण्डालहूं—देखो मदिरा भरेहुये कलशके भीतर स्थित सोनेको ४५ पाकर तिसके गुणसमूहोंका जाननेवाला कौन पुरुष न ग्रहणकरेगा इससे मैं इस स्त्रीको इससमय में जैसे प्राप्त हूं ४६ तैसे हे सखियो करो आप लोगोंकी शरणमें मैं प्राप्तहूं हे उत्तम ब्राह्मण! वारंवार इसप्रकार कहतेहुए तिस मूर्खसे ४७ अत्यन्त कुतूहलको प्राप्तहोकर वे सखियां यह बोलीं कि हे दुर्बुद्धे! निश्चय जो इस स्त्री की इच्छा करतेहो ४८ तो शीघ्रही गंगा और यमुनाके संगममें देहको छोड़िये फिर परस्पर वे सब सखियां मुख देखकर हँसती हुई ४९ तिस पतिव्रता स्त्री को लेकर अपने घरमें जातीभईं तदनन्तर हजार ब्रह्महत्या करनेवाला वह चाण्डाल मोहसे ५० गंगा और यमुनाके जलमें तिसको पूजनकर मरजाता भया तो उसी स्त्री के पतिके समान आकारवाला, सब गुणयुक्त और बलवान् ५१ अपने वृत्तान्तको स्मरणकर होताभया तदनन्तर वह प्रणिधि बनियांभी तिसी शुभ दिनमें ५२ वाणिज्यकरके अपने स्थानको आताभया और चाण्डाल ब्राह्मणभी तिसी के घर में प्रवेश करता भया ५३ जो कि प्रणिधि बनियां के समान रूप, अवस्था और गुणोंमें था एकही आकारके, आगे स्थित, गुणों की खानि दोनों को देखकर ५४ वह पतिव्रता स्त्री यह चिन्तना करतीभई कि मैं किसकी स्त्री हूं और कौन मेरा स्वामी है ५५ तब

तो पद्मावती स्त्री कोमल अक्षरवाले वचनोंसे माधवदेवकी स्तुति करनेलगी ५६ कि गोविन्द, अनन्तमूर्ति, इन्द्रादि देवताओं से पूजित चरणकमलवाले, योगेश्वर, योग जाननेवालोंमें चेष्टारहित, योगके देनेवाले और योगियोंसे पूजनके योग्य आपके नमस्कार हैं ५७ कैटभ, मधु, कंस और चाणूर राक्षसके नाश करनेवाले आप के नमस्कार हैं ५८ वेद और पृथ्वी के उद्धार करनेवाले, पृथ्वी के उठाने के योग्य और दैत्यों के नाश करनेवाले आपके नमस्कार हैं ५९ गङ्गाजी के जलमें धोयेहुए दोनों चरणवाले, राजाओंके समूहों के नाश करनेहारे, रावणके वंशके नाश करनेवाले और दैत्योंके नाश करनेवाले आपके नमस्कार हैं ६० यज्ञकी निन्दा करनेवाले, म्लेच्छोंकेसमूहोंके नाश करनेहारे, हृदयरूपी कमल में आसन करने वाले और सब वैरियों के ध्वजारूप आपके नमस्कारहैं ६१ हे गोपीजनोंके प्यारे, प्रभू, एक हाथमें पर्वत धारण करनेवाले, देवोंके देव, लक्ष्मीमुखकमलके भँवर, विष्णु, कमलनयन, चक्रपाणि, कौमोदकी गदा हाथमें धारण करनेवाले, विष्णु, पांचजन्य शंख और पद्मके धारण करनेवाले आप प्रसन्न हूजिये आपके नमस्कार वारंवार है ६२। ६३ हे केशवजी आपके संसारकौतूहलमन्दिर, मोहान्धकार, विवेकदीपमें आपकी मायासे मोहित मैं नित्यही भ्रमतीहूं ६४ हे असुरों के वैरी! ब्रह्मा, इन्द्र और सूर्य आदिक श्रेष्ठ देवता आपकी मायाको नहीं जानते हैं तब मानुषी मैं कैसे जान सकूंगी अब दयासमेत मेरे भ्रमको नाशकीजिये ६५ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिसके स्तोत्रको सुन और देखकर भगवान् माधव, प्रभु, धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफलके देनेवाले ६६ करोड़ सूर्यके समान दीप्तिवाले सहसासे प्रकट होजाते भये तब पद्मावती स्त्री भूमिको देखकर तिनके दोनों चरणोंकी वन्दना करतीभई ६७ कि हे लक्ष्मी के पति! हे भुक्ति मुक्ति फलके देनेवाले! आपके नमस्कार हैं मुझ ज्ञानहीन के अपनी मतिके भ्रमको नाश कीजिये ६८ तब श्री भगवान् बोले कि हे पवित्र अंगवाली! और हे सुन्दर करिहांववाली स्त्री! भ्रमको छोड़िये ये दोनों तेरे पतिहैं इन

दोनोंकी सदैव एकभावसे सेवाकीजिये ६९ हे साध्वि! जो तुम्हारा स्वामी प्रणिधि, मेराभक्त, जवान और बुद्धिमान् था वही अपने आप सुखके फल भोगकरने के लिये दोप्रकार का हुआ है ७० हे सुन्दर कटिवाली! जैसे अनन्त रूपवाली लक्ष्मी मेरे साथ क्रीड़ा करती है तैसेही तुमभी इन दोनों के संग सदैव सुख भोगिये ७१ तब पद्मावती बोली कि हे देव! हे दयामय! मनुष्य एक स्त्री के दोपतिहोने में उसकी प्रशंसा नहीं करते हैं इससे लज्जारूपी समुद्रके कल्लोल में डूबतीहुई मेरा उद्धार कीजिये ७२ तब श्रीभगवान् बोले कि हे साध्वि! हे श्रेष्ठ मुखवाली! पृथ्वीमें जो निश्चय तुम अयश से डरती हौ तौ इन दोनों समेत मेरे पुरको प्राप्त होवो ७३ तदनन्तर भगवान्की आज्ञासे शीघ्रही विमान आताभया तब पद्मावती स्त्री दोनों पतियों को लेकर वैकुण्ठजाने को प्रारम्भ करती भई ७४ तिसपीछे हे जैमिनि! दोनों पतियोंसमेत मार्ग में जानेलगी तो स्त्रीसंयुक्त, रथमें स्थित एक महात्मा को देखतीभई ७५ जो कि कमलपत्रके समान नेत्रोंको धारे, अलसी के फूल के समान दीप्तिवाले, चारभुजा धारणकिये हुए दूतसमूहों समेत गरुड़के ऊपर बैठेहुए हैं ७६ तब श्रेष्ठ अंगवाली पतिव्रता स्त्री तिन विष्णुजी के दूतों से यह पूछती भई कि यह रथमें स्थित पुरुष कौनहै ७७ और कमलके समान नेत्रवाले, महात्मा, विष्णुजी के समान, शंख, चक्र आदिक हाथोंमें लियेहुए आप सब लोग कौनहैं ७८ तब विष्णुजीकेसमान पराक्रमी, श्रेष्ठ, आनन्दसंयुक्त वे भगवान् के दूत वारंवार हँसकर यह बोले ७९ कि हे साध्वि! हम लोग विष्णुजी के दूतहैं पुण्यात्मा इस मनुष्यको लेकर उदार और उत्तम विष्णुजीके लोकको जातेहैं ८० तब पद्मावतीबोली कि हे महात्मा विष्णुदूतो! किस पुण्य के प्रभावसे यह इस गतिको प्राप्तहुआ है यह मुझसे कहिये ८१ तब विष्णुजीके दूत उससे बोले कि यह वृहद्ध्वज नाम राक्षस, संसार में शोक करने वाला, वनआदिकों का वसनेहारा, महाबलपराक्रमी, ८२ पराई स्त्री और पराई द्रव्य का हरनेवाला, वैरियों के करने में उद्यत, गौवों के मांसकाखाने वाला,

निष्ठुरवचन कहनेवाला और देवोंकी निन्दा करने वाला है ८३ हे पतिव्रते! जो जो पापमें रत कर्महैं सो इसने सदैव कियेहैं स्वप्न में भी शुभकर्म नहीं कियाहै ८४ हे सुन्दर करिहाँववाली! यह काम से पीड़ित निरन्तर रथपर चढ़कर पराई स्त्री हरने के लिये आकाश में घूमकर ८५ जिस जिस सुन्दर यौवनवाली स्त्री को जहां जहां देखताथा तहां तहां पर तिस तिस को काम से आतुरहोकर बल से आलिङ्गन करताथा ८६ एक समय में भीमकेशनाम राजा की प्यारीस्त्री, सुन्दरी, नवयौवनवाली, क्रीड़ाके मध्यमें स्थित, ८७ सोने के फूल के समान दीप्तिवाली को देखकर प्रेम से यह बोला कि तुम कौनहो और यहां क्या कररहीहो ८८ तब भीमकेश राजा की स्त्री बोली कि मैं सुरतशास्त्र के जाननेवाली केशिनी नाम से भूषित हूं ८९ सबगुण जाननेवाली, प्रेमसे प्रसन्न, अपने वंश में उत्पन्न, दोषसे हीन मुझको राजा क्षणभर भी नहीं देखतेहैं ९० खण्डित चर्चा वाले पति से नित्यही मैं यहां स्थित कीगईहूं और विरहकी अग्नि से तप्त होकर अपने कर्मको शोच करती हूं ९१ हे सत्तम! तुमकौनहो और कैसे इस बागमें प्राप्त हुयेहो यह सब प्रसन्न होकर कहने के योग्य हो ९२ तदनन्तर राक्षस उससे बोला कि हे पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली! मैं मायावी राक्षस तेरे आलिंगन करने के लिये यहां आया हूं ९३ हे पतले अंगवाली! अप्रसन्न और सदैव दोष देखने वाले अपने स्वामी को त्यागकर मुझको सेवन कर मैं सब उत्तम सुखको तुझे दूंगा ९४ तदनन्तर यह स्त्री आनन्द से हँस कर इस राक्षसेन्द्र को भुजारूपी लतासे बांधकर मुखमें मुखको लगातीभई ९५ तब हे सुन्दर करिहांव वाली! यहराक्षस ज्ञानके उद्वेगसे विह्वल तिस स्त्रीको आलिंगनकर उसके साथ सुन्दर रथपर चढ़ता भया ९६ फिर वायु के समान वेगवाले रथपर चढ़े हुये, स्त्री और पुरुषके भाव को प्राप्त होकर वे दोनों अत्यन्त कौतुक से आकाशमार्ग में जातेभये ९७ तदनन्तर राक्षस उससे बोला कि हे श्रेष्ठ मुखवाली! देखो तुम्हारे स्वामी के देशसे गंगासागर के संगम में प्राप्तहुये हैं ९८ तब रथ

में चढ़ी हुई यह स्त्री अत्यन्त अपराधोंसे गंगासागर के संगमको देखकर शीघ्रही नाशको प्राप्त होजाती भई ९९ तब तो प्राणरहित उस साध्वी को देखकर यहराक्षस भी बहुत रोकर शीघ्रही मृत्यु को प्राप्त होजाताभया १०० अब भगवान्की आज्ञासे इनके पाप नाश होगये और पुण्यकर्मवाले होगये इससे इन दोनों को इस समय में वैकुण्ठको लियेजाते हैं १०१ जल, स्थल वा आकाश में गंगासागरके संगममें देह छोड़कर पापीभी परमगतिको प्राप्तहोते हैं १०२ यह तीनों लोकमें दुर्लभ तीर्थहै इस गंगासागरके संगम में माघमें और फाल्गुन के शुक्लपक्षकी एकादशी में व्रतकर १०३ ब्राह्मणका मारनेवाला भी निस्सन्देह शुद्धिको प्राप्त होता है गंगासागरके संगममें स्नानकर माधव हरिजीके दर्शनकर १०४ स्वामिकार्तिकका मुख देखनेसे फिर जन्म नहीं होताहै स्वामिकार्तिकजी साक्षात् हरिही हैं इसमें सदैव भेद नहीं कियागयाहै १०५ जे स्वामिकार्तिकजी को देखते हैं ते सब मोक्षको प्राप्तहोते हैं सब तीर्थों से अधिक तीर्थ गंगासागरके संगमको सुनो १०६ इस में जल, स्थल वा आकाश में मरकर मोक्ष को मनुष्य पाता है व्यासजी बोले कि हे जैमिने! ऐसा कहकर वे विष्णुजीके दूत उन दोनोंको लेकर १०७ सहसासे आकाशमार्ग होकर विष्णुजी के घर को जातेभये और पद्मावती साध्वी दोनों पतियों से युक्त भी १०८ धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले विष्णुजी की सारूप्यताको प्राप्तहोकर हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तहांके दुर्लभ सब भोगों को भोगकर १०९ श्रेष्ठ ज्ञानको प्राप्तहोकर भगवान्की सारूप्यता को प्राप्त होतीभई सब तीर्थमयी गंगाजी हैं और सब तीर्थमय हरिजी हैं ११० तिससे गंगाजी और हरिजीकी भक्ति कही है गंगासागर के संगममें पहले माधव नाम राजा १११ स्त्रीसमेत बहुत काल तपस्याकर मोक्ष को प्राप्त हुआ है ११२ तब जैमिनिजी बोले कि हेसत्तम व्यासजी! तुम्हारा कहा हुआ माधव कौनथा क्या कर्म उसने कियेथे और कैसे तपस्याकी थी यह सब मुझसे कहिये ११३ तब व्यासजी बोले कि हे महाबुद्धिमान्! हे विप्रर्षे!

तिस महात्मा माधवजीका चरित्र संक्षेप से कहताहूं सुनिये ११४॥
इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेव्यासजैमिनिसंवादेप्रयागवर्णनंनाम
चतुर्थोऽध्यायः ४॥

# पांचवां अध्याय ॥

वीरवर का सुषेण राजाकी सभामें जाना॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! देवताओं की नगरीके समान, सब लोकोंमें प्रसिद्ध,गुणियोंके गणोंसे युक्त तालध्वजा नाम नगरी है १ तहां पर शुद्धकुल में उत्पन्न, धर्मात्मा, सत्यवादी, प्रजाओं के पालनमें तत्पर विक्रमनाम राजाहुए २ तिनकी पृथ्वीमें दुर्लभ, अपने मुखकी दीप्ति से चन्द्रमा की दीप्ति जीतनेवाली हारावती नाम स्त्री हुई ३ तिस राजाके स्त्रीगणों में सोई प्यारी स्त्री हुई जैसे सब नदियों में गंगाजी हुईहैं ४हेब्राह्मण! कुछकालमें तिस स्त्रीमें सब लक्षणसंयुक्त पुत्र उत्पन्न होताभया ५ तब सब शास्त्र का जानने वाला चक्रवर्ती राजा शास्त्र में कहीहुई विधिसे माधव यह नाम करते भये ६ तदनन्तर यह माधव ब्राह्मण बलवान्, सद्गुणयुक्त कुछकाल में सब विद्यारूप नदीकेपार होगया ७ तदनन्तर वह राजा युवराज से राज्यमें सब देवगणों से पूज्य पुत्र को अभिषेक करताभया ८ एक दिनमें हाथी घोड़ा, रथ और पैदलकी सेनासे युक्त माधव राजा कौतुकसे शिकार खेलने के लिये बड़े वन को जाताभया ९ तहां पर बहुत जन्तुओं को मार कर मध्याह्न समयमें वन से नगर जाने के लिये उद्यमकरताभया १० सेनासमेत आनन्दसे माधवराजा नगर को आता था कि उसने तालाब में स्नानमें तत्पर एकस्त्री देखा ११ जो कि स्नानके योग्य द्रव्य और सुन्दर कपड़ों को देहमें पहने हुई, अपने मुखकी सुन्दरतासे पूर्णचन्द्रमाको जीतने वाली, १२सोनेके कुण्डल दोनों कपोलोंमें धारेहुई, तिनसे कपोलोंको प्रकाशित करती हुई,सुन्दरभारी बालोंसे करिहांव के पीछले भागको आच्छादित कियेहुई, पवित्रहासयुक्त, १३ सोनेकी कमलकी कली केसमान, पवित्र ऊंचे स्तनवाली, सिंहके समान पतलेकरिहांव-

युक्त, वसन्त ऋतु के कोकिलाके समान स्वरवाली थी १४ इस सुन्दरी को कामदेव महात्मा ने राज्यमें युवापुरुषों के मन हरनेवाली पताकाकी नाई आरोपित कियाथा १५ ऐसी स्त्रीको एकान्त में देखकर पृथ्वी में प्राणको धारण करतेहुए कौन पुरुष कामदेव के वशमें न प्राप्तहोजावे १६ तदनन्तर तिस श्रेष्ठ मुखवाली को देख कर विक्रमराजा के पुत्र माधव जी कामदेवके बाणसे घावयुक्त हृदय होकर यहचिन्तना करते भये १७ कि इस स्त्री के समान पृथ्वीमण्डल में कोई स्त्री मैंने नहीं देखी इसको यहां आलिंगनकर सफलजन्म करूंगा १८ क्योंकि अवस्था, तेज और गुणोंसे मैं सब मनुष्यों में श्रेष्ठहूं यद्यपि यह इन्द्रकी भी स्त्री होगी तथापि इस समय में लेनेयोग्य है १९ पराई स्त्रीके हरने में इससमय में जो दोष होगा तिसके कहने को कौन समर्थ है जिससे कि मेरा पिताही राजाहै २० ऐसा उसकामीने दृढ़मनसे चिन्तना कर सेनाको दूर खड़ीकर जहांवह स्नान करती थी वहां को जाता भया २१ पृथ्वी में ऐश्वर्य, मद और काम ये तीनों ज्ञान के तेजको निस्सन्देह हरलेते हैं २२ इनके पिता तो पापोंके नाश करने वाले, मनुष्यों के धर्म के रक्षा करने वाले हैं और कामदेव को धिक्कार है जो आपही सम्पूर्ण संसारको मोहित करता है २३ तिनमाधव राजाको बड़े वेगसे आते देखकर अकेली वह स्त्री बड़ी चिन्ता से व्याकुल होती भई कि यह मेरे साथ रमण करेगा २४ मेरे मनमें यह वर्तमान है कि मुझ अकेली, युवावस्थायुक्त, कान्तार में स्थितको देखकर यह वेगसे दौड़ा आताहै २५ सबमुनि यह कहते हैं कि रक्षा कियाहुआ धर्म रक्षा करता है परन्तु नहीं जानाजाता कि यहां पर क्याहोगा २६ सहायहीन स्थान में शत्रुलोग आगेही दौड़ते हैं तहां से भागना अच्छा होता है निवास होना प्राणों को नाश करताहै २७ ऐसा विचार कर वह श्रेष्ठ करिहांववाली स्त्री बाईं काँख में घड़े को लेकर डरसे तालावसे भागने का मन करती भई २८ तदनन्तर माधवजी अत्यन्त वेगसे तिसके आगे जाकर हाथ फैलाकर बोले २९ कि हे श्रेष्ठ स्त्री! हेपवित्र देहवाली!

सुन्दर यौवन के बलसे मेरामन हरकर भगीजाती हो मैं चेतनरहित हतहुआहूं ३० हे चञ्चल कटाक्ष और सुन्दर देहवाली! तुम्हारा कौन पतिहै क्या स्वर्ग से आईहो तुम्हारे समान पृथ्वी में कोई नहीं है ३१ हे सुन्दरि! हे कमलसमान मुखवाली! तुमयहां पर श्रेष्ठ, सबलक्षणसंयुक्त होकर दासी की नाईं कैसे पानी लिये जाती हो ३२ छाती में सोने केसे स्तन सदा धारणकिये हो और कोमल अंगवाली होकर कखरी में इस अद्भुतजलके घड़ेको लिये हुए हो ३३ सूर्य की किरणसे अत्यन्त तप्तमार्ग में लोहित पांयेंकी अंगुलीके अन्तर दुपहरियाके फूलकी कलीके समान शोभित होते हैं ३४ हे सुन्दर कारिहाँव और श्रेष्ठ मुखवाली! मेरे दर्शनहीमात्र से तेरे दुःखका अन्त होजायगा ३५ श्रीमान् विक्रमराजा का पुत्र माधव नामी मैं हूं हे सुन्दरि! सब भावों से तुम्हारा श्रेष्ठ अंगहूंगा ३६ हमारे स्त्रीगणों के मध्यमें तुम इस प्रकार सुभगा होगी जैसे भँवरेको सुन्दर फूलोंके वल्लीके मध्यमें चमेली होती है ३७ अथवा अभिमान से तुम हमारे वचन के टालने की इच्छा करतीहो तब भी तुमको मैं नहीं छोड़ूंगा क्योंकि मैं राजाका पुत्रहूं ३८ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! माधवजी के वचन सुनकर वह स्त्री राह छोड़कर नीचेका मुखकर स्थित होकर धीरे धीरे बोली ३९ कि कभी दूसरे पुरुष को मैंने वचन नहीं सुनाये तथापि लज्जा छोड़कर आपके आगे कहतीहूं ४० हे महावीर! सुबाहु क्षत्रियकी प्यारी स्त्री चन्द्रकला नाम होकर मैं देवपूजाके लिये जल लिये जाती हूं ४१ जो वचन आपने कहे हैं वे आपके कुलके उचित नहीं हैं क्योंकि आपके वंशवाले सब पराई स्त्रियोंमें नपुंसक होते हैं ४२ मैं अकेली स्त्रीहूं और वीरोंसे उत्पन्न आप हैं यहांपर बलसे मेरा आलिंगन करने से आपका क्या यश होगा ४३ पराई स्त्री का आलिंगन करने से क्षणमात्र सुख होताहै इसलोक में अयश शेष रहता है और सौकल्प दुःखही अधिक होताहै ४४ हे शूर! यह कर्मभूमि है यहांपर पुण्य कीजिये पराई स्त्रीके हरनेमें कभी चित्त न कीजिये ४५ लोभसे काम होताहै कामसे पाप वर्त्तमान होताहै पापसे

मृत्यु होती है और मरनेमें दुस्तर नरकमें स्थिति होती है ४६ सब तुम्हारे गुण व्यर्थ और तुम्हारा जन्म निष्फल है क्योंकि काम के वशमें प्राप्त होकर तुम पराई स्त्रीसे रमण करनेकी इच्छा करतेहौ ४७ मांस, मूत्र, विष्ठा और हाँड़से बना हुआ मेरा देहहै यह देखकर भी कामदेवके वशमें प्राप्त हुएहौ ४८ राजाके वंशमें उत्पन्न होनेसे क्या पुरवासियों से भी नहीं डरतेहौ और मस्तक के ऊपर गर्जते हुए समवर्त्ती को नहीं देखतेहौ ४९ सब ज्ञानसे वर्जित मछली कटिया को ग्रसलेती है और ज्ञानी कटियाको पाकर आप क्यों ग्रसेंगे ५० तीनों लोकों में ज्ञान सम्पदाओं का परमपद होताहै और अज्ञान मनुष्योंकी आपदाओं का परमपद होताहै ५१ तिस स्त्रीके कहेहुए वचन सुनकर कामसे मोहित, नम्रतायुक्त माधवजी फिरबोले ५२ कि हे प्रिये! तुम्हारे देखने रूप बाणकी धारासे जर्जरमनवाले मेरी रक्षा कीजिये मैं तेरी शरणमें प्राप्तहूं ५३ जबतक युवावस्था में स्त्री स्थित रहती है तबतक अत्यन्त प्यारी होती है कमलनाल की कली कमलिनीमें सोनेका भँवरा नहीं जाताहै ५४ हे मृगनयनी! प्रसन्न हूजिये और मुझ अपने सेवककी रक्षाकीजिये तुम्हारी नीरसवाणी सुनकर मेरा हृदय विदीर्ण होरहा है ५५ तब चन्द्रकला बोली कि हे महावीर! दुःखको छोड़कर मेरे शुभ वचन सुनिये आपके दुःखके नाश करनेके योग्य को मैं कहतीहूं ५६ प्लक्षद्वीपमें समुद्रके पार इन्द्रकी पुरीके सदृश प्रसिद्ध दीप्यंती नामपुरी है ५७ तहांपर महायशस्वी, सब गुणों से युक्त, प्रतापमें अग्निके समान, बलवान् गुणाकर नाम श्रेष्ठ राजा है ५८ तिसकी सब लक्षणसंयुक्त, सेवासे स्वामी के हृदयको वश करनेवाली, मनुष्यों के ऊपर दया करनेवाली सुशीला नाम स्त्री है ५९ हेवीर! तिसकी कोखिसे उत्पन्न सुलोचना नाम कन्या है यह कन्या रूपसे सब सुन्दरीसमूहों को जीतेहुए है ६० पृथ्वी में तिसकेरूप और गुणसमूह के वर्णन करने में कोई योग्य नहीं है तिसके रूपके दर्शन देखकर ब्रह्माजी आपही दूसरीको रचतेभये हैं ६१ हे महावीर राजपुत्र! सुन्दरी मैं तिसकी दासीहूं भाग्यसे आपके देशमें प्राप्तहुई

हूं ६२ तिसके समान सुन्दरी स्त्री नहीं है और आपके समान सुन्दर पुरुषभी नहींहै जो स्वर्गभोगकी इच्छा करते हो तो विवाहसे तिसको ग्रहण कीजिये ६३ बलवान् सिंह कोड़में प्राप्तहुई भी सियारी को छोड़कर यत्नसे सिद्धिके लिये क्या हस्तिनी को नहीं धारण करता है ६४ संसार में उद्योगी पुरुष परमलक्ष्मी को प्राप्त होताहै पृथ्वीमें उद्योगके विना कहिये क्या कार्य होता है ६५ व्यास जी बोले कि हे जैमिनि! तिस स्त्री के वचन सुनकर भगवान् के भजन करनेवाले माधवजी कामके भावको दूरकर तिसश्रेष्ठ मुखवाली से यह बोले ६६ कि हे कमलके समान मुखवाली! हेसुन्दर करिहांव वाली!किस चिह्नसे तिस कन्याको मैं जानूंगा जो तेरी कृपा मुझपर होतो यह मुझसे कहिये ६७ मैं मूर्ख मनुष्य समुद्रके पार कैसे जाऊंगा और तिसके कैसे मुझको दर्शन होंगे ६८ तब चन्द्रकला बोली कि तिस स्त्रीके बायें जंघेमें तिलके सदृश तिलकहै तिस के देखनेही से तुम सुलोचना को जानजावोगे ६९ तुम्हारी घोड़शालमें महात्मा, उच्चैःश्रवा घोड़ा का पुत्र, सब जगह जाने वाला उत्तम घोड़ा है ७० उस वेगसे पवन के सदृश श्रेष्ठ घोड़े परचढ़ कर समुद्रके अन्ततक चलेजावोगे जहां से पृथ्वी सुखसे साध्यहै ७१ तब राजाका पुत्र सेनासमेत घरको आता भया और पतिव्रता चन्द्रकला प्रसन्न होकर अपने घरको जातीभई ७२ फिर माधवजी तिस स्त्रीके वचनकी चिन्तना कर अत्यन्त वेगयुक्त चिन्तासे व्याकुलचित्त होकर सहसासे घोड़शालको जाते भये ७३ तहां पर पराक्रमयुक्त माधवजी गुणयुक्त महाबली घोड़ों से बोले ७४ कि तुम सब महात्मा सब लक्षणसंयुक्त हो समुद्रके पार मुझे लेजाने में कौन घोड़ा समर्थ है ७५ तदनन्तर डरसे सब घोड़ा तिसके वचन सुनकर परस्पर पृथ्वीकी ओर मुखकर खड़े रहजाते भये ले जाने में कोई उद्यत न हुए ७६ तिस पीछे सब लक्षणसंयुक्त एक घोड़ा माधवजी के आगे जाकर ये वचन बोला ७७ कि हे राजपुत्र! मैं आपको निस्सन्देह समुद्रके पार लेजाऊंगा किन्तु मेरे दुःखों को सुनिये ७८ और के भोगों से बचा हुआ तृण तो मेरा भोजन है,

करोड़ गांठोंसे युक्त रस्सियों से मेरा बन्धन है ७९ हे वीर! मुझ बली ने स्वप्नमें भी धान्य नहीं देखाहै हे राजपुत्र! और भोगों की क्या कथा है ८० हे वीर! गौरवके विना सज्जनों के पराक्रम नहीं होताहै जैसे अग्नि विना काष्ठके घी आदिकों से कैसे उत्पन्न होसक्ती है ८१ मैं तो इस प्रकारका हूं और ये सब घोड़े अनेक प्रकारके गहनों से युक्त हैं सब गहनों से भूषित सिंह के समान कुत्ते नहीं होसक्ते हैं ८२ हे प्रभो! हे राजन्! प्रदक्षिणाकारता से पर्वत, द्वीप और समुद्रपर्यन्त पृथ्वी को क्षणमात्र में जासक्ताहूं ८३ तब माधवजी बोले कि हे घोड़े! मेरे पिताके किये हुए सब दोषों को क्षमा कीजिये अबसे लेकर मेरी घोड़शालमें तुम मुख्य हुए ८४ दूसरे से दिया हुआ सन्ताप उत्तम में सदैव नहीं स्थित रहता है जैसे अग्निसे तपाहुआ भी जल क्षणमात्रमें शीतलताकोप्राप्त होता है८५ ईख अपने मीठेपनों से क्षणमात्र तृप्तिके लिये होती है ऐसा कहकर राजपुत्र तिस घोड़ेके नमस्कार कर ८६ तिसकी पीठ पर चढ़कर प्रचेष्टा नाम नौकरको लेकर समुद्रको लांघकर ८७ सब गुणों से युक्त, इन्द्रकी पुरीके सदृश, प्रकाशित हुए महलों की पंक्तियों से उज्ज्वल पुरीमें जाता भया ८८ तहां पर माधव ब्राह्मण गंधिनी नाम स्त्रीको समीप देखकर मुसकाकर कोमल वचन बोला ८९ कि हे वृद्धे! हे मातः! मैं धनवान् माधव नाम परदेशी ब्राह्मणहूं एक दिन तुम्हारे स्थान में ठहरने की इच्छा करताहूं इसमें तुम्हारी क्या आज्ञाहै ९० तबतो अतिथिकी भक्तिनि गन्धिनी प्रसन्न होकर तिस अतिथिको लेकर अत्यन्त भक्तिसे अपने घरको जाती भई ९१ और यथोचित कहीहुई विधिसे तिसका पूजन करतीभई तब माधव ब्राह्मण चिन्तासे व्याकुलमन होकर तिस रात्रिको वहीं बिताते भये ९२ तदनन्तर प्रातःकाल माधव ब्राह्मण गन्धिनी के आगे सब कार्य कहते भये ९३ और गन्धिनी सुलोचना देवी का तिसी शुभदिनमें गन्धादिवासनकर्म रचती भई ९४ राजपुत्री का अधिवासनकर्म सुनकर माधवजी शोकसमुद्र के कल्लोल के समूह होजाते भये ९५ कि जिसके लिये राज्य

स्थान और बान्धवोंको छोड़कर समुद्र मैंने लांघा ९६ आजही भाग्यसे तिसका अधिवासन होगा जितने परिश्रम मैंने किये वे सब निष्फल होगये ९७ किन्तु मनुष्य नहीं बकेंगे कि माध्वी में मुग्धहोकर सब को प्राप्तहोगया कार्य्य का निश्चय जानकर कौन भग्नउद्यम न होगा ९८ यह मनसे माधव वारंवार चिन्तनाकर माला और फूलादि में अपना वर्णित प्रेम लिखता भया ९९ कि हे कन्ये! तालध्वज के राजा विक्रम महात्मा का पुत्र माधव नाम मैंहूं १०० हे कन्ये! तहांपर कोई चन्द्रकला नाम दासी है उसने निश्चय मेरे आगे तुम्हारे गुणसमूह कहे हैं १०१ इससे तुम्हारे गुणसमूह में संलग्नचित्त होकर मैं गंभीर समुद्र नांघकर घोड़े पर चढ़कर तुम्हारी पुरीको आयाहूं १०२ हे सुलोचने कन्ये! इस समय में मुझको वरके भावसे वरिये जिससे संसार के मध्यमें मैं तुम्हारी शरण में प्राप्त हूआहूं १०३ जैसे गुणवती तुमको और मनुष्य न जाने १०४ कमलिनी के गुणको भौंराही जानता है मेढ़क नहीं जानता है और जैसे शुभ्र मेघको एक आकाशही का उदय नहीं है १०५ तिसपर भी कुमुद्वती चन्द्रमा के विना और को नहीं सेवती है तदनन्तर वीर माधवजी मालिनिके हाथ कुछ लिखकर १०६ नम्रतापूर्वक सोने की अंगूठीसमेत देते भये तब गन्धिनी मालिनि उसलेख को फूलके मालाओं के बीचमें अंगूठीसमेत कर १०७ राजपुत्री के पास शीघ्रही जातीभई और फूलके मालाकी बलिदेकर १०८ डरसे कुछ दूरजाकर हाथ जोड़कर स्थित होगई तब राजकन्या अंगूठीसमेत लेखको १०९ देखकर अत्यन्त पण्डित इसने मूलसे सब पढ़लिया और तिसीकी पीठपर तिसके योग्य उत्तर ११० लिखा विस्मययुक्त हुई कन्याने जो जो लिखा वह सब कहतेहैं कि हे राजपुत्र! हेमहाबाहो! तुम्हारे वाक्य मैंने सब सुने १११ अब हे अत्यन्त श्रेष्ठ! मेरे ये यथोचित वचन सुनिये इस समय में मेरा अधिवासनकर्म है और कलह विवाह निश्चय होगा ११२ पिताजी का जो संमतकार्य होता है पृथ्वीमें उसको कोई नहीं छोड़ता है दुःखसे साध्यकार्य में मनुष्यों

को अधिक परिश्रम नहीं करना चाहिये ११३ क्योंकि कार्य के सिद्ध होने में परिश्रम नहीं होताहै नहीं सिद्धहोने में श्रमही होता है तिसपर भी कहतीहूं सुनिये जिससे आप मुझको प्राप्तहोवें ११४ जिससे आपने समुद्र लाँघा मुझको यह विद्याधर वर प्रदक्षिणी करना चाहिये ११५ अनेक प्रकार के गहनों से भूषित होकर मैं तिसके आगे बायें भुजाको ऊपर करके जाऊंगी जिससे मेरे लेनेमें जो समर्थ होगा सोई मेरापति होगा सत्यही सत्य मैंने इस पत्रमें लिखाहै ११६ । ११७ और प्रकारसे दृढ़कार्य लंघन करने में नहीं समर्थ है यह राजकन्या लिखकर तिसके हाथमें देती भई ११८ तब गन्धिनी तिस पत्रको लेकर माधवजी के समीप जाती भई राजकन्याने जो पत्रमें लिखाथा तिसको पढ़कर माधवजी ११९ फिर अत्यन्त कौतुकोंसे लिखतेभये कि हेकन्ये ! हे धन्ये ! हे धन्य कुलमें उत्पन्न होनेवाली ! तुमने जो कहा १२० सोई सब मेरा भी मतहै कोई इसमें संशय नहीं है तदनन्तर गन्धिनी फिर तिस के निकट जाकर १२१ सुलोचनाको सुन्दर अक्षरवाले लिखनको देती भई तदनन्तर माधवसे अंगीकार कियेहुये लिखनको जानक- र १२२ सुलोचना अत्यन्त प्रसन्न और वारंवार विस्मययुक्त हो गई- तिसमें संशय न करना चाहिये जो माधवने स्वीकार करलि- याहै १२३ तब क्या आपही इन्द्रहीहो वा जिसकी मायासे माधव पुरुष इस लोक और परलोक में सदैव स्नेहका पृथ्वीपतिहै १२४ विना अच्छे प्रकार दर्शन करनेसे मैंने वरके भावमें नहीं वरण कि- याहै यह चिन्तनाकर वह पतिव्रता स्त्री वारंवार श्वास लेकर १२५ स्नान के बहाने से सखियोंसमेत गन्धिनी के घरको जातीभई तब गन्धिनी मालिनि हाथ में तिस कन्या को पकड़कर १२६ मंचानके ऊपर सोते हुए माधवजी को दिखलाती भई तवतो कामके समान तिसको देखकर १२७ रोमांचयुक्त सब अंग और उदात्तको क्रमसे देखतीभई और तिसके दोनोंनेत्रोंको जहां जहां शुद्धकरतीहै १२८ कष्टकी दृष्टिसे तिस नाम से अलग नहीं जाती है यहसाक्षात् काम- देव वा देवकीजीके पुत्र कृष्णजी १२९ वा विषयों के स्वामी साक्षा-

तू महादेवजी तो नहीं हैं संसार के मध्य में इनरूपों से मनुष्य नहीं उत्पन्न होताहै १३० इसस्वामी से मुझ हरिणी के समान दृष्टिवाली का जन्म सफल होगा मेरी भक्ति के वश होकर ब्रह्माने अत्यन्त यत्न से १३१ जब मैं कन्या हुईहूं तब इस को क्या तो नहीं रचा है अबसे लेकर यह स्वामी अपने आप निस्संदेह नहीं है क्या १३२ ऐसा कहकर वह अपने घरजाने के लिये बुद्धि करती भई तब गन्धिनी बोली कि हे भद्रे ! कन्ये ! यह युक्ति तुम हृदय में सेवन करो १३३ जैसे सुन्दर मूर्ति पुरुष तैसे ही निन्दा से नहीं प्रकाशित होता है उल्लास, देहकाभंग, मन्ददृष्टि और विस्मित १३४ ये सब विष्णु जी के चिह्न हे मृगनयनी ! इसके निद्रामें भौंहें ओष्ठों के पुटके काटने के आक्षेपसे निश्चय नहीं उठेगा १३५ तब धीरे धीरे माधवजीके हाथ को अपने हाथों से दिखलातीभई कि तुम्हारे देखने के लिये राजकन्या का आगमन हुआहै तिसको सुनिये १३६ यह सुनकर सम्भ्रम से आक्रांत मन नम्रतासे नम्रहोकर माधवजी उठकर तिससे बोले १३७ कि हे कन्ये ! मेरा जन्म और परिश्रम सफलहोगया जो तुम्हारे पवित्र कमलरूपी मुखको साक्षात् मैंनेदेखा है १३८ सब यौवनोंसे वरके भावसे मुझको तुमवरो हे सुन्दरि ! तुम्हारे योगका वर मेरे विना पृथ्वीमें और नहीं है १३९ तब सुलोचना बोली कि हेसुन्दरगतिवाले बड़ी भाग्यसे तुम हमारे पति होगे मैंने जो वचन कहेहैं सोई निश्चय दृढ़हैं १४० हेमहाभाग ! आज्ञादीजिये तो मैं अपने मन्दिरको जाऊं तब माधवजी बोले कि हे कन्ये!जो यह कहूं कि स्थितरहो तो अभिमान होताहै १४१ और हे पवित्र अङ्गवाली! जाइये यह वचन मेरे मुखसे नहीं निकलताहै इससे आपही विचार कर जो युक्तहो सो कीजिये १४२ यहांपर सत्यवचन में तत्परहोगी माधव के इसप्रकार कहने से प्रसन्नहोकर वहकन्या अपने घरको चली गई १४३ और बहुत परिच्छदोंसे युक्त माधवजी तहांहीं स्थित रहे और दूसरा वर विद्याधर भी इसीप्रकार स्थित रहा १४४ और वहांके स्थित सब मनुष्य माला और चन्दनसे विभूषित होकर सुन्दर वस्त्र धारण कर देवसमूहोंकी ना-

ई प्रकाशित होतेभये १४५ तिस पुरमें कहीं गान, कहीं नाच, कहीं कोलाहल का शब्द और किसीने कहींपर दीपोंकीपंक्ति जलाई १४६ सप्तिसमूहों के शब्द हाथियों के शब्द और पक्षियों के आनन्द के शब्दों से दशोदिशा पूर्ण होगई १४७ अनेकप्रकार के पताकाओं के समूह और उज्ज्वल राजाके स्थानों से चारोंओर सब आकाश व्याप्त होगया १४८ कोई शंख, ढक्का, डिंडिम, झर्झरको और कोई मधुकोहल आदिकको बजाने लगे १४९ तदनन्तर चन्द्रमाके समान मुखवाली कमलनयनी सबस्त्रियां ललित गीतों को गानेलगीं १५० तहां की पृथ्वी परस्पर यौवन से घिसनेसे गिरेहुये माला और पसीने के जलसे गिरती हुई सुगन्धों से कन्या कीनाईं प्रकाशित होती भई १५१ तब सुन्दरी सुलोचना गम्भारीके काष्ठ के बने हुये पीढ़े परचढ़कर जातिवालों से आच्छादित होकर श्रेष्ठस्थानको प्राप्त होतीभई १५२ इस अंतर में विक्रमके पुत्र माधवजी शय्याके ऊपर निद्रायुक्त होकर भाग्यसे सुन्दर नेत्र वाली सुलोचनाके बिवाह कार्यको न जानतेभये १५३ ब्रह्माकी सैकड़ों मायासे मोहित मनुष्यों का कभी संसारमें सुखनहीं होता है तिससे अपने संकेतकी विधिको यह मनुष्य विसराकर सुखसे निद्रा को सेवन करताभया १५४ देखो अग्निके डरसे कमलिनी जलमें पैठी तो वहां हिमकी अग्निसे जलमें जलगई इससे जो जिसका कर्म्म है उससे और तरह नहीं होता है १५५ मनुष्य वेद आदिक सब शास्त्र पढ़ते हैं परन्तु राजाकी सेवाही करते हैं और उग्र तपस्या प्रतिदिन साधन करते हैं तब भी अत्यन्त भाग्यहीन को लक्ष्मी नहीं सेवन करती है १५६ दुःख और सुख मस्तकके ऊपर स्थित रहते हैं अन्यकालमें हठसे अन्य प्राप्तहोजातेहैं १५७ दुःखभागी, निद्रायुक्त माधवको देखकर सुलोचना और माधवके संकेतको जानताहुआ प्रचेष्ट चिन्तना करता भया १५८ कि इस राजपुत्रको धिक्कार है जो दैवकी मायासे मोहित होकर अपने संकेतको विसराकर निद्रायुक्त है १५९ यह दुःखसे आई हुई कन्या इस समयमें वरके निकटहै और माधवके नयन में क्याहुआहै संकेत

निष्फल जाता है १६० हे पापकर्मन्! तुम मस्तक में निद्रा सेवन कर ठहरो यह श्रेष्ठ स्त्री घोड़ेपर चढ़कर मेरे लेजानेके योग्यहै १६१ कन्यारत्न और रत्न दुर्लभ आनन्द से प्राप्तहोते हैं तब इस दुर्मति माधवकी सेवासे क्या कार्यहै १६२ सब भावसे धनके लिये राजाओं की सेवा कीजातीहै सोई जो आनन्दसे अपने आप मिलै तो उस समय में सेवाके दुःखसे क्याहै १६३ प्रचेष्ट यह चिन्तनाकर घोड़ेपर चढ़कर जहांपर राजकन्याथी वहांको आकाशमार्ग से जाता भया १६४ तो वरकी प्रदक्षिणा कर अपने समयको स्मरणकरती हुई राजकन्या बायांहाथ उठाकर विद्याधरके आगे स्थित होजाती भई १६५ तब महाबलवान् प्रचेष्ट अत्यन्त वेग से तिस राजकन्याको हाथ पकड़कर घोड़ेकी पीठपर चढ़ा लेताभया १६६ और अत्यन्त वेगयुक्त मनके अपराधोंसे रहितहोकर जाकर सुन्दर कांचीपुरी को देखकर हाथ पकड़कर सुलोचना से बोला कि समुद्रके भीतर किनारेही स्थित कांचीनाम यह पुरी है १६७। १६८ यह सबसे विख्यात मनुष्यों को सब सुखदेनेवाली है इसको देखिये यहांपर माधव वीर और तिस विद्याधरका १६९ किसीकाभी भय नहीं है हे चन्द्रमा के समान मुखवाली! इसको देखकर मेरे चित्तरूपी इन्धनमें लग्न कामके अग्निकी शिखाकी पंक्तिको १७० कुचरूप घड़ाओं के करोंसे सिद्ध मोक्षको हे सुन्दरि! दीजिये तुम्हारे इस पवित्र कमलरूपी मुख में मेरा मुखरूप भँवर इस समयमें मधु पीनेकी इच्छा करता है इसमें हे प्रिये! तुम्हारी क्या आज्ञाहै तुम्हारे पवित्र देहके छूनेसे कामदेव बाणों से मुझको व्यथा देता है १७१। १७२ हे प्रिये! रक्षाकीजिये तुम्हारी मैं शरणमें प्राप्तहुआहूं तिस मूर्खको ऐसा कहते देखकर श्रेष्ठ स्त्री १७३ शोककी अग्निसे तप्त सब अंग होकर चित्तसे चिन्ता करतीभई कि यहमूर्ख दुष्ट चेष्टावाला प्रचेष्टही क्या ब्रह्माने १७४ मेरे माथेमें वर लिखा है मैं इस समयमें मारीगईहूं कहां माता कहां पिता और कहां विद्याधर वर है १७५ इस करके मैं लाई गईहूं ब्रह्मा की घटना को धिक्कार है मनुष्य संसार में सदैव बहुत अभिमान करते हैं १७६

ब्रह्मा की घटनारूप तलवार से अभिमानके वृक्षके काटने को भी मनुष्य जानता है तिसपर भी विपत्तिमें धैर्य, निर्भयता, तत्पर होना १७७ चार उपाय दीर्घदर्शियों ने श्रेष्ठ कहे हैं यह सबकार्य में निपुण कन्या हृदय से देखकर कोमल अक्षरवाले वचनों से प्रचेष्ट से बोली कि हे वीर! मनको दृढ़कीजिये मैं विना विवाही कन्या हूं १७८। १७६ हे दुर्बुद्धि! हे वीर! मोहसे मुझको कैसे आलिंगन कर जावेगा शास्त्रकी कहीहुई विधिसे विवाहसे मुझको ग्रहण कीजिये १८० दासीकी नाईं तुम्हारी सेवाकरूंगी इसमें कुछ संशय नहीं है तुम्हीं मेरे प्राण, मित्र, भूषण, और बान्धवहो १८१ क्या तुम नीतिको जानते हो स्त्रियोंकी और में गतिनहीं होती है विवाहके योग्य वस्तुओं को विवाहके लिये लाइये १८२ जड़ता के ग्रहणकरनेवाले तुम जल्द मेरा विवाहकरो ये भीतर दृढ़ और बाहर कोमल बेरके फलकीनाईं वचन १८३ सुलोचना के सुनकर मूर्ख प्रचेष्ट परमप्रीति को प्राप्त होजाताभया और फिर दुर्बुद्धि घोड़ा और तिस कन्याको एकत्र स्थितकर १८४ हाथ में कंकण लेकर सुलोचनाके तिसी पुरको जाताभया तदनन्तर सुलोचना निश्चय तिस विधिकी प्रशंसाकर चिन्तना करतीभई १८५ कि जिससे घोड़ा और मुझको छोड़कर यह मूर्ख प्रसन्न होकर जाता भया है इससे इससमयमें मुझको क्या करना कहां जाना और कहां स्थितहोना चाहिये १८६ इस अत्यन्त संकटकार्य में मेरा निस्तार कैसेहोगा जो मैं यहां स्थित रहूंगी तो वे लोग क्या कहेंगे १८७ पुण्यतीर्थ में प्राप्तहोकर परलोक के जन्मकी कामनासे मृत्युको प्राप्तहोजाऊं तो यह कल्याणके करनेवाली है १८८ परन्तु मेरे वियोगसे यह मूर्ख, विद्याधर और माधव ये तीनों स्मरणकर क्षणमात्र भी न जी सकेंगे १८९ मेरे स्थित रहने में इनके जीवनकी रक्षा होती है और मरने में ये तीनों नाशको प्राप्तहोजावेंगे १९० यहांपर मेरे जन मेरा उद्देशकर जो प्राणदेदेंगे तो निश्चय में तिनके मारनेकी भागिनी हूंगी १९१ इससमयमें पुण्यतीर्थों में भगवान् हरि पूजने योग्य हैं तिनके प्रसन्न होने में मेरा सब कल्याण होगा १९२

प्राणों के नाशहोजाने में सब नाश होजावेगा और तिनके स्थित होने में सब स्तोक स्तोकसे सिद्धहोजावेगा १९३ रात्रिकी अवशिष्ट अतिसुन्दरी कमलिनी चन्द्रमाके दूरहोजाने में प्रकाशित सूर्यकी किरणोंसे अत्यन्त सुगन्धित होनेके कारण क्या श्रेष्ठ भौंरेके संगमको नहीं प्राप्तहोती है १९४ हे जाननेवालों में उत्तम ! यह मनमें चिन्तनाकर वह श्रेष्ठ स्त्री तिस बड़े वेगवाले घोड़ेपर चढ़कर तपस्या करनेके लिये गंगासागरके संगमको जातीभई १९५ तिस पुण्यकारी श्रेष्ठ गंगासागरके संगम में सोमवंश में उत्पन्न सुषेण नाम राजा बसता है १९६ तिस राजाकी सभा में जानेके लिये चित्तसे सुलोचना चिन्तना करती भई कि मुझस्त्रीको कैसे राजा का दर्शन करना चाहिये १९७ दूबसमेत अधिवासनका सूत्र मेरी भुजा में बँधा है और स्त्रियोंके संगसे हीन घोड़ेपर चढ़ीहुई मैं कन्या हूं १९८ निश्चय मेरे चरित्र मनके विस्मय करने वाले हैं मैं अपनी आत्माको छिपाकर राजाकी सभाको जाऊंगी १९९ तब हे जैमिनि ! वह स्त्री इन्द्रजालके प्रभावसे पुरुषका आकारकर सुधर्मा सभाकी नाईं राजाकी सभा में प्रवेशकर जातीभई २०० तिसको संपन्नकी तरह शक्ति हाथमें लिये और घोड़ेपर चढ़ेहुए आते देखकर राजा आपही पूंछता भया कि तुम कौनहो और कहां से यहां आयेहो २०१ राजाके ये वचन सुनकर पुरुषके आकारवाली कन्या सुन्दर हृदयवाले सज्जनोंके आश्रय राजाके प्रणामकर बोली २०२ कि हे देव ! राजाका पुत्र वीरवर नाम मैं हूं इस समय आप की राज्य में रहने के लिये आयाहूं २०३ जो जो कार्य्य असाध्य हैं तिनको यहां पर साधन करूंगा मेरे स्थित होने में मेरे स्वामी की कहीं हार न होगी २०४॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेवीरवरप्रदर्शोनाम पंचमोऽध्यायः ५॥

# छठवां अध्याय

गंगासागरसंगमकामाहात्म्यवर्णन॥

तब राजाबोले कि हेमहाबाहो ! यहां पर मेरी सुन्दरराज्यमें ठ-

ब्रह्मा की घटनारूप तलवार से अभिमानके वृक्षके काटने को भी मनुष्य जानता है तिसपर भी विपत्तिमें धैर्य, निर्भयता, तत्पर होना १७७ चार उपाय दीर्घदर्शियों ने श्रेष्ठ कहे हैं यह सबकार्य में निपुण कन्या हृदय से देखकर कोमल अक्षरवाले वचनों से प्रचेष्ट से बोली कि हे वीर! मनको दृढ़कीजिये मैं विना विवाही कन्या हूं १७८। १७९ हे दुर्बुद्धि! हे वीर! मोहसे मुझको कैसे आलिंगन कर जावेगा शास्त्रकी कहीहुई विधिसे विवाहसे मुझको ग्रहण कीजिये १८० दासीकी नाईं तुम्हारी सेवाकरूंगी इसमें कुछ संशय नहीं है तुम्हीं मेरे प्राण, मित्र, भूषण, और बान्धवहो १८१ क्या तुम नीतिको जानते हो स्त्रियोंकी और में गतिनहीं होती है विवाहके योग्य वस्तुओं को विवाहके लिये लाइये १८२ जड़ता के ग्रहणकरनेवाले तुम जल्द मेरा विवाहकरो ये भीतर दृढ़ और बाहर कोमल बेरके फलकीनाईं वचन १८३ सुलोचना के सुनकर मूर्ख प्रचेष्ट परमप्रीति को प्राप्त होजाताभया और फिर दुर्बुद्धि घोड़ा और तिस कन्याको एकत्र स्थितकर १८४ हाथ में कंकण लेकर सुलोचनाके तिसी पुरको जाताभया तदनन्तर सुलोचना निश्चय तिस विधिकी प्रशंसाकर चिन्तना करतीभई १८५ कि जिससे घोड़ा और मुझको छोड़कर यह मूर्ख प्रसन्न होकर जाता भया है इससे इससमयमें मुझको क्या करना कहां जाना और कहां स्थितहोना चाहिये १८६ इस अत्यन्त संकटकार्य में मेरा निस्तार कैसे होगा जो मैं यहां स्थित रहूंगी तो वे लोग क्या कहेंगे १८७ पुण्यतीर्थ में प्राप्तहोकर परलोक के जन्मकी कामनासे मृत्युको प्राप्तहोजाऊं तो यह कल्याणके करनेवाली है १८८ परन्तु मेरे वियोगसे यह मूर्ख, विद्याधर और माधव ये तीनों स्मरणकर क्षणमात्र भी न जी सकेंगे १८९ मेरे स्थित रहने में इनके जीवनकी रक्षा होती है और मरने में ये तीनों नाशको प्राप्तहोजावेंगे १९० यहांपर मेरे जन मेरा उद्देशकर जो प्राणदेदेंगे तो निश्चय में तिनके मारनेकी भागिनी हूंगी १९१ इससमयमें पुण्यतीर्थों में भगवान् हरि पूजने योग्य हैं तिनके प्रसन्न होने में मेरा सब कल्याण होगा १९२

प्राणों के नाशहोजाने में सब नाश होजावेगा और तिनके स्थित होने में सब स्तोक स्तोकसे सिद्धहोजावेगा १९३ रात्रिकी अवशिष्ट अतिसुन्दरी कमलिनी चन्द्रमाके दूरहोजाने में प्रकाशित सूर्यकी किरणोंसे अत्यन्त सुगन्धित होनेके कारण क्या श्रेष्ठ भौंरेके संगमको नहीं प्राप्तहोती है १९४ हे जाननेवालों में उत्तम ! यह मनमें चिन्तनाकर वह श्रेष्ठ स्त्री तिस बड़े वेगवाले घोड़ेपर चढ़कर तपस्या करनेके लिये गंगासागरके संगमको जातीभई १९५ तिस पुण्यकारी श्रेष्ठ गंगासागरके संगम में सोमवंश में उत्पन्न सुषेण नाम राजा बसता है १९६ तिस राजाकी सभा में जानेके लिये चित्तसे सुलोचना चिन्तना करती भई कि मुझस्त्रीको कैसे राजा का दर्शन करना चाहिये १९७ दूबसमेत अधिवासनका सूत्र मेरी भुजा में बँधा है और स्त्रियोंके संगसे हीन घोड़ेपर चढ़ीहुई मैं कन्या हूं १९८ निश्चय मेरे चरित्र मनके विस्मय करने वाले हैं मैं अपनी आत्माको छिपाकर राजाकी सभाको जाऊंगी १९९ तब हे जैमिनि ! वह स्त्री इन्द्रजालके प्रभावसे पुरुषका आकारकर सुधर्मा सभाकी नाईं राजाकी सभा में प्रवेशकर जातीभई २०० तिसको सेनापतिकी तरह शक्ति हाथमें लिये और घोड़ेपर चढ़ेहुए आते देखकर राजा आपही पूंछता भया कि तुम कौनहो और कहां से यहां आयेहो २०१ राजाके ये वचन सुनकर पुरुषके आकारवाली कन्या सुन्दर हृदयवाले सज्जनोंके आश्रय राजाके प्रणामकर बोली २०२ कि हे देव ! राजाका पुत्र वीरवर नाम मैं हूं इस समय आप की राज्य में रहने के लिये आयाहूं २०३ जो जो कार्य्य असाध्य हैं तिनको यहां पर साधन करूंगा मेरे स्थित होने में मेरे स्वामी की कहीं हार न होगी २०४ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेवीरवरप्रदर्शोनाम पंचमोऽध्यायः ५॥

## छठवां अध्याय

गंगासागरसंगमकामाहात्म्यवर्णन ॥

तब राजाबोले कि हेमहाबाहो ! यहां पर मेरी सुन्दरराज्यमें ठ-

हरो मैं तुम्हारी जीविका करदूंगा इस में संदेह नहीं है १ तब तो वीरवर तिस राजा के समीप में तिसीकी सेवामें मन लगाकर निरन्तर बसते भये २ हे जैमिनि ! तदनंतर एक समय में तिसपुर में सब प्रजाओं को भीमनाद नाम खड्ग निरन्तर पीड़ा देताभया ३ तब राजा क्रोधसे तिसके मारने के लिये वीरवर को भेजताभया तो वीरवर मनुष्योंसमेत गण्डक के मारने के लिये जाते भये ४ और शक्ति धारण करनेवाले वीरवर उस खड्गीको पर्वताकार,पृथ्वी में सोते,डाढ़ोंसे कराल मुख देखकर ५ क्रोधसे आकाशमें घोड़े को घुमाकर मेघोंके समान गंभीर वाणी से तिसखड्गी से बोले ६ कि हे दुरात्मन् ! तुमने जे जे पाप के वृक्ष इकट्ठे किये हैं तेते ऋतु को पाकर वृक्ष की नाईं फले हैं ७ और तुझ पापीने इस राज्य में जे जे प्राणी भक्षण किये हैं उन सब का यमराजके स्थान में तुझ को दर्शन होगा ८ अरे दुष्ट ! निद्राको छोड़ अपने अन्त करनेवाले मुझको देख रे महानिद्रावाले ! इस निद्रासे क्या तेरा होगा ९ तब तो भीमनाद निद्राको छोड़कर क्रोध से लालनेत्रकर धूलिसेधूसर सब अंगहोकर उठकर १० बोला कि रेदुर्बुद्धे ! अभिमान मत करो तुम्हारी भी उमर बाक़ी नहीं रही है तिसके दर्शनमात्र से प्राप्त होकर कौन पीछे छूटता है ११ हमारे कोपरूप अग्नि की राशिमें तुम जलतीहुई अग्नि की शिखाकी पंक्तिमें टीड़ीकीनाईं गिरोगे १२ ऐसा कहतेहुए तिसके देखनेके लिये तीक्ष्ण शक्तिसे वीरवर महा कोपकर हुंकार शब्द कर प्रकाशित होता भया १३ तब आयुरहित गण्डक शब्द के समूहसे सब पृथ्वी को चलायमान कर पृथ्वी में गिरताभया १४ हे ब्राह्मण ! गंगासागर के किनारे खड्गी को गिरे हुए देखकर वीरवर तिस राजा के समीप जाने का प्रारम्भ करने लगे १५ तो राह में जातेहुए एक महाशय को तेजोंसे प्रकाशित दूसरे सूर्य की नाईं देखते भये १६ जो कि विष्णुजीके दूतसमूहों से युक्त तुलसी की माला से भूषित, सुन्दर वस्त्रधारे, सुन्दर, रथपर चढ़ेहुए और मुसकानियुक्त मुखवाला था १७ तब वीरवर भक्तिसे यह पूछताभया कि तुम कौन हो कहां से

यहां आयेहो और कहां जावोगे यह हमसे कहिये १८ तब वह पुरुष बोला हे पुरुषके वेष धारण करनेवाली कन्ये! मेरा वृत्तान्त सुनिये आनन्दसे जो सुनने की इच्छा है तो मैं संक्षेपसे कहताहूं १९ पूर्व समयमें मैं चोरोंके वंशरूप वनका अग्नि, सब धर्ममें परायण धर्मबुद्धि नाम राजा था २० मैंने सब यज्ञ और सम्पूर्ण दान किये थे चार हज़ार वर्ष तक पृथ्वी की पालनाभी की थी २१ पाखण्डजनके वचनसे मैंने ब्राह्मण की पृथ्वी कोपको प्राप्त होकर लेलीथी कभी दोषित नहीं किया था २२ मेरे तिसी अपराधसे ब्रह्माजी आपही क्रोधसे तिसी क्षणसे सब राजलक्ष्मी को हरलेते भये २३ हे साध्वि! तदनन्तर कुछ दिनमें मैं सम्पत्तिरहित होकर शोककी अग्निसे दग्धमन होकर यमराजके वश में मरकर प्राप्त होता भया २४ मुझको देखकर चित्रगुप्त ने पवित्र हासगतिवाले प्रभु यमराजसे मेरे तिस कर्मको प्रकट कर कहा २५ कि यह धर्मबुद्धि राजा सदैव पुण्य करता रहा है इसका कुछ पाप है तिसको मैं कहताहूं सुनिये २६ पाखण्डोंसे बोधित होकर यह ब्राह्मणकी जीविकाको हरलेताभया तिसी कर्मसे दुस्तर नरकमें इसका स्थान होगा २७ हे सूर्यके पुत्र यमराजजी! शास्त्रोंमें यह निश्चित है कि जिसने जिसकी जीविका नाशी वह उसके मारने को प्राप्त होताहै २८ तिससे यह पापकर्म करनेवाला ब्राह्मण का मारनेहारा राजाहै इसका सौ करोड़ कल्प नरक में स्थान होगा २९ हे विभो! अपनी वा पराई दीहुई पृथ्वी को जो हरलेताहै वह करोड़ कुलसंयुक्त नरक में जाताहै ३० जो देवता वा ब्राह्मणकी पृथ्वी हरता है तो उसकी निष्कृति सौ करोड़ कल्पमें भी नहीं देखी गईहै ३१ और जो पराई दीहुई रक्षा करनेवाले के पृथ्वी की रक्षा करताहै वह देनेवाले से भी करोड़ गुणा अधिक पुण्य को पाता है ३२ तब तो मैं यमराजकी आज्ञासे पूति मिट्टी को भोग कर कल्पयोनिमें प्राणियों की हिंसा सदैव मैंने की ३३ गऊ ब्राह्मण तथा और जीवोंको हज़ार करोड़ मुझ दुष्टने मारा ३४ फिर हे साध्वि सब नाशकरनेवालोंके आश्रय खड्गयोनिमें उत्पन्न हुए मुझको कालसे प्रेरित आपने मारा ३५

गंगासागर का तीर्थ देवताओं को भी दुर्लभ है जहां पर स्थलमें भी मृत्युको प्राप्त होकर यह मेरी अच्छी गतिहुई है ३६ हे सुन्दर करिहांववाली जावो तुम्हारा कल्याण निस्संदेह होगा और थोड़ेही समय में तुमको तुम्हारे पतिका दर्शन होगा ३७ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! तिस धर्मबुद्धिके ये परम अद्भुत वचन सुनकर वह कन्या तिसके चरणों की वन्दना करतीभई तब धर्मबुद्धि राजा ३८ रथपर चढ़कर स्वर्गको जाताभया और वीरवर राजा की सभाको जातेभये ३९ राजा तिस भयानक पराक्रमी खड्गी को मराहुआ सुनकर तिस को विवाह से जयन्ती नाम अपनी कन्या देतेभये४० तब पुरुष के आकारवाली कन्या तिस जयन्ती को लेकर गङ्गासागर के संगम में तपस्या करने के लिये मन करती भई ४१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! प्रातःकाल गङ्गासागरके संगम में स्नानकर गीतवाद्य और नाच से नारायण प्रभुको पूजन करतीभई ४२ विना मांसके हविष्य फलाहार और कभी वह श्रेष्ठ स्त्री उपवासही करती भई ४३ फिर यह कहतीभई कि इस पृथ्वी तलमें मुझको अकेली देखकर नीच मानकर कौन ग्रहण करै यह कहकर घोड़े पर चढ़कर ४४ वह श्रेष्ठ स्त्री फिर अपने राज्य को जातीभई वहां पर माधव और विद्याधरके वियोगसे ४५ दूसरे पुरुषको न सेवन करतीहुई राजकन्या मरजाती भई तिसके मरजाने के पीछे यह नौकर प्रचेष्टभी इच्छापूर्वक जाकर४६ बहुत प्रकारसे रोकर अत्यंत शोकयुक्त होकर मरने के लिये गंगासागर के संगम को जाताभया ४७ और वहां स्नान कर तुलसी की मिट्टी से विभूषित होकर गंगाजीके हाथजोड़कर बोला ४८ कि हे मातः ! तुम्हारे पवित्र जलमें यहांपर मैं देहछोड़ता हूं जिसतरह से सुलोचना मेरी स्त्री हो वह आपकीजियेगा ४९ वारंवार यह कहते हुए तिसको तिसके दूत फँसरी से बांधकर निरुक्त तिससभाको लेजाते भये ५० वीरवर की आज्ञासे तत्घोर दूत विकल प्रचेष्टको कारागृहमें स्थापित करते भये ५१ इसीकालमें तिस अद्भुतकार्य को देखकर तिस राज्यमें बड़ा हाहाकार होता भया ५२ यह अद्भुत कर्म सुनकर गुणाकर राजा अत्यन्त सन्तप्त

होकर यह कहताहुआ आताभया ५३ कि तरकसवाले रथ के स-वार, ढालवाले, तलवारवाले, धनुष और भालावाले सहस्रों करोड़ ५४ स्थान स्थान में तिसपुर में रक्षा करने के लिये युक्त होवें ५५ यह राजा की आज्ञा पाकर तब अमितपराक्रमी सब योधा क्रोध से शीघ्रतायुक्त तिसपुर में पतिरक्षाओं में स्थित होते भये ५६ सब गानेवालों ने गीत, नाचनेवालों ने नाच और बाजा बजाने-वालों ने बाजे वहां पर छोड़ दिये ५७ तब शोकसे उपहतमनहो कर राजा मंत्रियों को बुलाकर यह पूँछताभया कि क्या है ५८ तब मंत्री बोले कि हे देव! यह अद्भुत कर्म न कभी देखाहै और न सु-ना है इन मनुष्यों के देखतेही देखते वह कहां चलीगई ५९ कोई कहताभया कि वह लक्ष्मी थी शापसे पृथ्वी में आपके महल में आकर आपही अन्तर्द्धान होगई६० और कोई कहतेभये कि माया-मयी वह स्त्री मायासे आपके घर में स्थित होकर अपनी माया दिखला कर चलीगई ६१ कोई कहते भये कि वह सब लक्षणसं-युक्त स्त्री फिर आवेगी जहां कि भगके अंगवाले इन्द्र हैं ६२ और कोई कहते भये कि तिसके मुख को चन्द्रमा मानकर आत्मा से आत्मा को चिन्तना कर चन्द्रमा ने सुन्दर सिद्धिके लिये लेलिया है ६३ कोई कहते भये कि वह कन्या अच्छेगुण दीर्घ वासना-वाली और पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली थी इससे भ्रांति से चन्द्रमा ने ग्रस्त कर लिया है ६४ और कमलिनी की भ्रांति से दिग्गजों से फूले कमल के समान मुखवाली विष दण्ड हाथ में धारे कमलकी कलीके समान कुचवाली नष्ट होगई ६५ कोई कह-तेभये कि हे राजन्! उसको रचकर और स्त्रीके रचनेके लिये रूप और गुणों से युक्त को तिसके रूप के देखने के लिये ब्रह्माने ले-लिया है ६६ और कोई कहतेभये कि हे भूपाल आपने सब दिशा जीती है और वह रूपों से देवताओंकी स्त्रियां जीतनेकेलिये स्वर्ग को गई है ६७ तदनन्तर वे मंत्री परस्पर मुखकी शोभा देखकर सब स्तब्ध की नाईं उत्साहरहित और साध्वससमेत होगये ६८ फिर राजा हे सुलोचने! हे पुत्रि! मुझको छोड़कर कहां चली

गई ऐसा कहकर पृथ्वी में मूर्च्छित होकर गिरता भया ६९ हे श्रेष्ठब्राह्मण! बड़े शोकसे राजाको गिरेहुये देखकर तिस नगर में हाहाकार शब्द होताभया ७० तिस रोनेके शब्द को सुनकर और संसारमें देखकर दशो दिशा शब्द करती भईं ७१ धूलिसे धूसर अंगवाले और छूटेहुए बालोंवाले राजाको पकड़कर सब मन्त्री शीघ्रही राजाके महलको जाते भये ७२ तदनन्तर विद्याधर और माधव तिसके पीढ़ेको आलिंगनकर करुणशब्दोंसे रोनेलगे ७३ कि हा प्रिये! हा चंचलकटाक्षवाली! हा सोनेके फूलकी दीप्तिवाली! हा श्रेष्ठमुखवाली! मुझको शोकरूपी समुद्र में गिराकर कहां चली गई ७४ हा प्रिये! हा भद्रे! हा कमल के समान मुखवाली! निर्दोष तूने मेरा क्या दूषण देखाथा क्यों दर्शन नहीं देती है ७५ हे भद्रे! मैं तेरे विना क्षणमात्रभी नहीं जीऊंगा इससे मुझको दर्शन देकर प्राणों की रक्षा कीजिये ७६ हे भद्रे! प्राणों से भी अधिक प्यारी जो तुमको नहीं प्राप्तहूंगा तो धन, जन, मित्र, धन और घरोंसे क्या है ७७ यह और बहुत करुणकरके शोकसे मृत्यु को निश्चयकर गंगासागरके संगमको जाता भया ७८ तहांपर समुद्र के जल मिलेहुए गंगाके जलमें स्नानकर सूर्यजी को अर्घ देकर गङ्गामाताके नमस्कार करताभया ७९ कि हे गंगे देवि! हे संसार की मातः! तुम्हारे निर्मल जल में देह छोड़ता हूं तिस देहको जैसे फिर प्राप्तहूं तैसा कीजियेगा ८० ऐसा कहतेहुए राजाके श्रेष्ठ दूत क्रोधयुक्त होकर वीरवरके समान विधिको प्राप्त करते भये ८१ तब वीरवर उससे बोला कि आप कौन हैं कहांसे आये हैं और कैसे यहांपर देहत्याग करते हैं यह मुझसे कहिये ८२ वीरवरके वचन सुनकर विद्याधर सुननेवालोंको विस्मय देनेवाली तिस सम्पूर्ण कथाको कहता भया ८३ तदनन्तर वीरवर कहता भया कि तुम मूर्खमनुष्योंमें निस्सन्देह श्रेष्ठहो गन्धर्वी, राक्षसी वा सर्पिणी वा किन्नरी ८४ वह शापसे कन्या आई थी तिससे आपही अन्तर्धान होगई वह देवरूपिणी थी इससे देवताओं के स्थानको गई ८५ तिसके साथ फिर कैसे तुमको दर्शनहोगा आकाशमें चंद्रमा

के चकोरोंके पान करने योग्य अमृतको ८६ क्या बलवान् पापी कौवे पासक्ते हैं जो नहीं प्राप्त होने योग्य है वह नहीं मिलती है और जो प्राप्त होने योग्यहै वह मिलती है ८७ तिस जनको जानतेहैं परन्तु कोई मोहको नहीं प्राप्त होताहै किसीसे कन्या दीगई है और किसी करके ग्रहण करलीगई ८८ पूर्वजन्म में जो कन्या है तिसी कन्याको पति प्राप्त होताहै स्त्री पुत्रके प्रयोजनके लियेहै और पुत्र पिण्डके प्रयोजनके लियेहैं ८९ इसीसे बुद्धिमान् मनुष्य स्त्री का ग्रहण करते हैं जैसे स्त्रीसे यहां दियाजाताहै तैसी स्त्री भोग करतेहैं ९० रात्रिमें रोदन करतेहुए यह भँवरा कुमुदिनीको सहता भया स्त्रियोंको अच्छे रूपवालाभी पति संतोषके लिये नहीं होताहै ९१ सूर्यके स्थित होनेमें भी कमलिनीका मधु भौंरा पीताहै स्त्रियोंमें निरन्तर चित्त रहता है और विष्णुजीकी भक्तियोंमें अनादर रहता है ९२ और कोई शोकोंसे देहत्याग करदेते हैं ये तीनों पुरुषोंकी विडम्बना हैं स्त्री, पुत्र, भाई, देश तथा बान्धव ९३ ये सब फिर मिलते हैं परन्तु प्राणफिर नहीं मिलते हैं विषयधर्म तुमने नहीं छोड़ा और न कर्मकिये ९४ हे मूर्ख! वर्तमान के बीतने पर फिर होने वाला जन्म दुर्लभ है मेरामाता, पिता, स्त्री, भाई और धन ९५ और तिसममता से जन्म ये सब निष्फल होजाते हैं इसप्रकार तिसबुद्धिमानों में श्रेष्ठ वीरवरने अच्छेप्रकार समझाया ९६ तब वह दौर्मनस्य को छोड़कर तहांहीं स्थित होताभया तदनन्तर प्रीतिसे हँसती हुई गन्धिनी अपने घरको गई ९७ और वहांजाकर मंचमें सोते हुए माधवजीको देखकर बोली कि हे दुर्बुद्धे! उठो उठो तुम्हारा परिश्रम निष्फल होगया ९८ विवाह के समयमें वह कन्या आपही अन्तर्द्धान होगई इसप्रकार तिसके वचन सुनकर माधव उठे ९९ और बड़े शोकोंसे व्याकुलहोकर पृथ्वीमें लोटकर रोने लगे कि कन्या और विद्याधर का कुछदूषण नहीं है १०० मेराही सबदूषण है जिससे नीचका संगसेवन कियाथा नीचकेसंग करने से पुरुषोंको ब्रह्मा सुखनहीं देते हैं १०१ यह मैंने जानाहै जिससे मेरी यहगति हुई है महान्भी नीचके संगसे कुछ सुखको

नहीं प्राप्त होता है १०२ देखो प्रेतों के संगसे महादेवजी नङ्गे और भूषणोंसे भग्नहैं नीचके संगसे स्त्री और धन आदिकको मनुष्य देखता है १०३ कुछ प्रसंग प्राप्तहोकर नीच दुःखहोकरभी सज्ज-नोंके गुण सुनकर क्लेशको प्राप्तहोता है १०४ और दोष सुनने के लिये सौलुपका होजाता है इससे बुद्धिमान् मनुष्य अपनेकल्याण की इच्छा करे तो नीचोंसे निश्चय न करे १०५ एक क्षणभी बु-द्धिमान् नीचोंसे निश्चय न करे और एक पैगभी नीचोंके संग न जावे १०६ नीच मनुष्य से विश्वास करने में मनुष्य शीघ्रही कष्ट पाताहै और नीच मनुष्य दोष सुननेके लिये यत्नसे प्राप्त होताहै १०७ फिर समयपाकर हँसकर प्रकाश करता है अच्छे मनुष्यों के मन, वचन और कर्ममें एकही एक रहता है १०८ और दुरात्मा-ओंके मनमें और वचनमें और कर्ममें भी औरही रहता है-जो वह राजकन्या विवाहकरेगी १०९ तो मेरे हृदयमें थोड़ाभी शोक न होगा और जो सब लक्षणसंयुक्त कन्या स्वर्ग चलीगई ११० नीच से प्राप्तहुई तो यह शोक हृदयमें दुःसहहोगा मैं उस श्रेष्ठ मुखवाली को लिखित की नाईं देखता हूं १११ और इस जीती हुई आत्मासे बिसराने को मैं नहीं समर्थहूं नीचके क्रोडमें प्राप्तहुई वह साध्वीस्त्री क्षणभरभी न जीवेगी ११२ और विद्याधरभी दारुण शोकोंसे नहीं जीवेगा जैसे माता, पिता और देशको मैंने तिसकी प्राप्ति के लिये छोड़ा ११३ तैसेही इससमयमें निस्सन्देह प्राण त्यागनेयोग्यहैं फिर तिसकी प्राप्तिकेलिये गंगासागरके संगममें प्राणोंको ११४ मैं त्याग करूंगा यह दृढ़कर वह जानेके लिये प्रारम्भ करता भया कि इसी समयमें मुनियोंमें श्रेष्ठ नारदजी से ११५ महाबुद्धिमान् ने पाद-लेप प्राप्त किया फिर कुछ दिनोंमें गंगासागर के संगम को जाता भया ११६ वहांपर गंगासागर के जलमें स्नानकर तुलसीपत्र मा-लाओं से भूषित होकर भगवान् को पूजता भया ११७ और हाथ जोड़कर नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी से बोला कि हे देवि! शोकको प्राप्त होकर तुम्हारे जल में देहको मैं त्याग करताहूं ११८ आने वाले जन्ममें तिस सुन्दर कन्याको मुझे दीजियेगा ऐसा कहकर

तीनों लोककी माता तिन गंगाजी के नमस्कार कर ११९ फिर उनके गहरे जलमें प्रवेश करनेका प्रारम्भ करता भया तब वीरवर पीठमें राजपुत्रको पकड़कर १२० तिस सभामें तिन मनुष्योंसमेत आकर राजपुत्रको देखकर प्रीति और अनिंदित शोभाको प्राप्त होकर १२१ माधवसे पूंछने लगे कि तुम कौनहो और कैसे देह को छोड़तेहो तब माधव वीरवरसे बोले कि मैं विक्रम राजा का पुत्र माधवहूं १२२ सेनासमेत शिकार खेलने के लिये एक समय में घोरवन को गया तो वहां पर नगरके समीप कमलोंसे शोभायमान तालाब था १२३ तहां पर मुझ कामीने अकेली सुन्दर स्त्री को देखा तब चन्द्रकला नाम स्त्री मुझ कामसे व्याकुल से १२४ पृथ्वी में सुलोचना के प्रस्ताव को कहती भई तब मैं घोड़ेपर चढ़ कर समुद्रको नांघकर १२५ प्रचेष्ट नाम नौकर को संग लेकर तिसके पुरको आया तो उसी दिन तिसका उत्तम अधिवासन था १२६ यह सुनकर मैंने अंगूठीसमेत उसके पास पत्र लिखकर भेजा तब मेरेपत्रको उत्तम अंगूठीसमेत देखकर उसने उसपत्रकी पीठपर जो लिखा सो कहताहूं १२७ कि हे अत्यन्तश्रेष्ठ माधवजी! श्रीत्रिविक्रमदेवजीका पुत्र विद्याधरनामहै पिताजी विवाहकर मुझको उनको देंगे १२८ आज अधिवासनकर्महै और कल्ह निश्चय विवाहहै तिसपर भी मैं उपायकहतीहूं जिससे आप मुझको प्राप्त होवें १२९ बायें हाथको उठाकर वरके संमुखमें खड़ीहूंगी और जो मेरे लेजाने में समर्थ होगा वही निस्संदेह मेरा स्वामी होगा १३० यह कन्या पत्रमें लिखकर गान्धिनीके हाथमें देतीभई और तिस गान्धिनीने उस उत्तम पत्रको मुझे दिया १३१ तो उस सङ्केतको प्रचेष्टने मेरे सम्मुख सुना तब सङ्केतके समयमें मैं तो सोगया और प्रचेष्ट घोड़े पर चढ़कर राजकन्या को लेगया १३२ इस व्यथासे फिर तिसकी प्राप्तिके लिये देह छोड़ता था यह सब आपसे विधानसे सुना दिया १३३ यह सुनकर पुरुष की आकार वाली राजकन्या माधव की रक्षामें बहुत से नौकरोंको युक्तकर हँसकर घरके भीतर जाकर १३४ स्त्रीवेष धारणकर अनेकप्रकारके गहनोंसे भूषित हो-

कर अपनी दासी को राजपुत्र माधवजी के लेने के लिये भेजती भई १३५ तव राजपुत्र राजकन्या की आज्ञासे जाकर मूर्तिमती लक्ष्मीजी की नाईं तिस साध्वी राजकन्याको देखतेभये १३६ तव पुलकावलीसे युक्त देह होकर राजकन्या सोनेके आसनसे उठकर राजपुत्र के चरणोंकी वन्दना करती भई १३७ तो कौतुक प्राप्त होकर बुद्धिमान् राजपुत्र तहांहीं गन्धर्वविधिसे विवाह कर १३८ तिसके प्रेमके जल की धाराओं से सींचे जाकर तिसके साथ केलि करतेहुए तिस रात्रिको वहांहीं व्यतीत करतेभये १३९ तदनन्तर निर्मल प्रातःकाल होनेमें यह मृगी के समान नेत्रवाली पतिव्रता राजपुत्री माधवजीसे आदिसे सव वृत्तांत कहती भई १४० फिर सुलोचना साध्वी तिस जयन्ती राजपुत्री और माधवजीको लेकर सुषेणजीकी सभामें जातीभई १४१ तव सुषेण राजा तिसको कन्या सुनकर प्रसन्न होकर सुलोचना और जयन्तीको विवाहकी रीतिसे माधवजी को देताभया १४२ और धर्ममें तत्पर राजा प्रसन्नतासे दाइजेमें अपनी आधीराज्य और सौ सोने देताभया १४३ तव राजपुत्र तिस पुण्यकारी तीर्थमें सुन्दर मन्दिर बनाकर रहनेलगे १४४ तिसबीचमें माधवजी कारागारनिवासी प्रचेष्ट को सभामें बुलाकर चिन्तना करते भये १४५ कि यह पापबुद्धि, क्रूर, स्वामी का विश्वासघात करने वाला, शत्रुओं में श्रेष्ठ, मूर्ख, मुझसे नहीं रक्षा करने के योग्य है १४६ नित्यही वारंवार प्रसाद धन और भोजनों से पालित हुआ भी यह निर्दयी समयपाकर शत्रुका कर्म करता भया १४७ जिसने विपत्तिमें निश्चय चरणों की धूलि हाथसे ली और तिसीने सम्पदा पाकर स्वामीका शिरकाटा १४८ वशमें प्राप्त राजाकी पंक्तियां निश्चयही स्वामी को नाशती हैं गर्म जल भी अग्निको शीघ्रही बुझादेता है १४९ यह मनमें चिन्तना कर तिस राजपुत्रने नष्टचेष्टावाले प्रचेष्टको निकालदिया १५० और तिन दोनों स्त्रियों के साथ राजपुत्र शोक और व्याधिसे वर्जित होकर सुखसे कुछकाल तहांरहतेभये १५१ माधव महात्माके तिससुलोचना में सौ पुत्र और जयन्ती में दोसौ पुत्र होते भये १५२ माधव

के पुत्र शस्त्र शास्त्र के जानने वाले उत्तम सब मनुष्योंकी प्रीतिके लिये धर्ममें तत्पर होतेभये १५३ और जन्मोंसे इकट्ठी की हुई भक्तिसेयुक्त होकर माधवजी एकसमयमें मनसे चिन्तना करतेभये १५४ कि कौन मैं हूं कहां से आया हूं किसका वा किससे रचाहुआहूं फिर कहां जाऊंगा मुझको कहां स्थित होना चाहिये १५५ विषयभोग करते हुए मेराजन्म पुण्यके विनाही व्यतीत होगया तिससे विघ्नके समुद्रमें डूबतेहुए मुझको कौन उद्धार करेगा १५६ इस संसार में जन्म पाकर जिसने भगवान् का आराधन नहीं किया वह सब धर्मों से बाहर किया हुआ आत्मघाती जानना चाहिये १५७ यह सब संसार क्लेश का देनेवाला बड़ा भयानक है इस में वारंवार जन्म और मरण होता है १५८ विष्णुजी की भक्तिके विना जन्म मृत्यु का निवारण नहीं होताहै इससे इससमय में सब छोड़कर भगवान्का पूजन करूंगी १५९ यह मन से चिंतना और वारंवार विश्वासकर विश्वकर्मा को बुलाकर ये वचन बोला १६० कि हे विश्वकर्मन्! हे महाबाहो! मुझको विष्णुजी की पत्थर की सब कामनाओं के फल देनेवाली मूर्त्ति बनादीजिये १६१ तब माधवजी की आज्ञा से कारीगर विश्वकर्माने महाविष्णुजी की पत्थर की मूर्त्ति रचदी १६२ जो कि नवीन मेघों के समान श्यामवर्ण, कमल के समान नेत्रवाली, शंख, चक्र, गदा और कमल के धारण करने हारी, चार भुजावाली १६३ लक्ष्मी और सरस्वती से युक्त, वनमाला से विभूषित, सब लक्षणों से युक्त और सब गहनों से भूषित थी १६४ तब माधवजी विचित्र मण्डप में हरिजी की मूर्त्ति को स्थापित कर कामना देनेवाली और चक्र हाथ में लिये हुई की पूजा करने को प्रारम्भ करतेभये १६५ हे ब्राह्मणों में उत्तम! और तिसी स्थान में अविच्छिन्न शिखावाले दीपको प्रतिदिन जलातेभये १६६ आप प्रातःकाल स्नान कर संमार्जन आदिक करतेभये और रास्तेकी शोभा को कर तहां पर लीपतेभये १६७ गङ्गासागर के जल में स्नान कर पांच महायज्ञों को कर सब से उत्तम उपहारों से विष्णुजी की तीनों संध्याओं में

पूजा करतेभये १६८ चन्दन, धूप,नैवेद्य, पान, धूप,दीप,गीत,बाजाओं के प्रबन्ध,सुन्दर स्तोत्रों के पाठ,१६९ प्रदक्षिणा,नमस्कार, यज्ञ,दक्षिणा,बिना मांसके हविष्य और फलाहारों से पूजा करतेभये १७० और(ॐनमोनारायणाय)इस सब कामनाकेफलकेदेनेवाले महामंत्रको जपतेभये १७१ इस प्रकार महाविष्णु परात्माकी हज़ार वर्ष सब कामना देनेवाली पूजा श्रेष्ठ भक्ति से करताभया १७२ तब तो माधवकी भक्ति से सब देवों के शिरोमणि, तुलसी के फूलकी सी दीप्तिवाले भगवान् प्रसन्न होकर प्रकट होते भये १७३ हरिजी को प्रकटहुये देखकर स्त्रीसमेत माधवजी शिरसे पृथ्वी को आलिंगन कर हरिजी के चरणों की वन्दना करते भये १७४ कि देवों के देव, परमात्मा, परेश, देवताओं के स्वामी, ज्ञान देनेवाले, १७५ परमानन्द, पुरुषोत्तम, केशव, कमलनयन, लक्ष्मीके पति, १७६ बहुत रूपवाले, नीरूप, विचिन्त्य, अविचिन्त्य, दृश्य अदृश्य,१७७ तीनों लोकके स्वामी, संसारके रक्षा करनेवाले, ज्ञानसे प्राप्तहोने योग्य,सर्वशाखी १७८ कंस और कैटभ राक्षसके वैरी,मधु राक्षसके मारनेवाले और विधाता आपके नमस्कारहैं १७९ जिस आपने मत्स्यअवतार धारण कर गहरे समुद्रके जलसे वेदोंको उद्धार कियाहै तिसको मैं भजताहूं १८० जिस आपने कच्छप रूप धारणकर पर्वत, वन और काननोंसमेत पृथ्वीका उद्धार किया है तिस आपके नमस्कार हैं १८१ हे पृथ्वी के स्वामी! जिस शूकर की मूर्तिसे आपने अपने दांतसे पृथ्वी उद्धार की तिस आपके नमस्कार हैं १८२ जिस नृसिंहकी मूर्तिसे आपने क्रोधयुक्त हिरण्यकशिपुको विदारण किया तिस आपके नमस्कारहैं १८३ हे देव! जिस कश्यपजी के पुत्र वामनरूपसे आपने राजा बलिकी यज्ञ ध्वस्त की तिस आपके नमस्कारहैं १८४ जिस आपने क्षत्रियों के रक्तों से पितरों को तर्पित किया और सहस्रबाहु राजा को मारा तिस परशुरामजी के नमस्कारहैं १८५ जिस कौशल्याके पुत्र आपने रावण, मारीच और कुम्भकर्ण को मारा है तिस रामचन्द्रजी के नमस्कार हैं १८६ जिस रेवतीके पति आपने प्रलम्बासुर को

मारा और यमुनाजी को टेढ़ी करदिया तिस बलरामजी के नमस्कार हैं १८७ कृपासमेत जिस आपने पशुओं की हिंसा देखकर वेदोंकी निन्दा की तिस बुद्धजी के नमस्कार हैं १८८ और जिस कल्की की मूर्तिसे आपने सब लोकों के कल्याणके लिये युग के अन्त में म्लेच्छों को नाश कियाहै तिस आपके नमस्कार हैं १८९ हे हरे! हे विष्णो! हे दैत्यजिष्णो! हे नारायण! हे कृपामय! संसाररूपी घोर समुद्र में गिरेहुए मुझको उद्धार कीजिये १९० तदनन्तर माधवजी आनन्दसे हरिजी के चरणोंको धोकर पृथ्वी में सब अपना अंग गिराकर हरिजीसे बोले १९१ कि हे गोविन्द! हे परमानन्द! हे मुकुन्द! हे मधुसूदन! हे कृष्णजी! मुझ पापी की रक्षाकीजिये जिससे आप सब पापोंके नाश करनेवालेहैं १९२ यह माधवजीका स्तोत्र सुनकर भक्तवत्सल भगवान् परमप्रीतिको प्राप्त होकर तिससे ये वचन आपही बोले १९३ कि हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ माधव! भोवत्स! वरदान मांगो ब्रह्मा, शिव और क्या इन्द्रहोना आप चाहतेहैं १९४ तब माधवजी बोले कि हे संसारके स्वामी! मैंने सब कुछ पाया जो देवताओंको भी नहीं देखने योग्य, वरदान देनेवाले प्रभु आपको मैंने देखा १९५ मुक्ति, भुक्ति, धन और ऐश्वर्य सब देने को आप योग्य हैं हे प्रभो! भक्तिके योग्य मैं नहीं हूं परन्तु मुझे भक्तिही दीजिये १९६ तब श्रीभगवान् बोले कि हे वत्स! तुम्हारी इस शक्तिसे मैं निस्संदेह प्रसन्नहूं कौन ऐसी वस्तुहै जिसको देकर आपसे मैं ऋणरहित होऊंगा १९७ तब सूतजी बोले कि हे शौनक! ऐसा कहकर परमप्रसन्न होकर विष्णुजी चारों भुजाओं को फैलाकर जैसे पिता पुत्रको आलिंगनकरै इसप्रकार आलिंगन करते भये १९८ और उससे बोले कि हे भद्र! आलिंगनके प्रभावसे तुमसे मैं ऋणरहित होगयाहूं तुम्हारा निस्संदेह सब शुभही होगा १९९ हे वत्स! कामी आपने सदैव क्रियायोगसे मेरी मूर्त्ति की पूजाकी है तिससे तुमको देहप्रति लेजाऊंगा २०० व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! यह भगवान् माधवको वरदेकर बड़ी चारों भुजाओंसे फिर प्राणोंसे आलिंगनकर तहांहीं अन्तर्द्धान होगये

२०१ तब माधव स्त्रीसमेत तिस विष्णुजी की मूर्त्तिको भक्तिसे उत्तम क्रियायोगोंसे आराधना करता भया २०२ और स्त्री समेत पुत्र और पौत्रोंसे युक्त होकर गंगाजी में मृत्युको प्राप्तहोकर मोक्ष को प्राप्त होजाता भया २०३ सब भक्तिसे इस हरिचरित्रोंसे युक्त और सब पापोंकी राशियोंके नाश करनेवाले अध्यायको जो पढ़ता है वह इस पृथ्वीमें सब भोगोंको भोगकर अन्तसमयमें श्रीवासुदेव भगवान् के धामको प्राप्त होता है २०४॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेगंगासागरसंगममाहात्म्यवर्णनंनाम षष्ठोऽध्यायः ६॥

## सातवां अध्याय॥

### गंगाजीके जलकी बूंदोंका माहात्म्य वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! गंगाजीके उत्तम माहात्म्यको फिर कहताहूं तिसको सुनकर सबमनुष्य सबकामनाओंको प्राप्तहोते हैं १ जिसने संसारकी माता गंगाजीमें स्नाननहीं कियाहै उसका मुखदेखकर शीघ्रही सूर्यके दर्शन करने चाहिये २ प्रातःकाल जो भक्तिसे गंगा इन दो अक्षरोंको स्मरण करताहै तिसकेपाप इस प्रकार नाश होजाते हैं जैसे अरुणके उदय में अन्धकार नाश होजाता है ३ जिसने नदियों में श्रेष्ठ गंगाजीके दर्शन नहीं किये हैं तिसके सब अन्नआदिक और जल नहीं ग्रहण करने के योग्य होते हैं ४ गंगाजी के स्नान करनेवालोंके पाप उनकी देह छोड़कर गंगाजी के स्नान न करनेवालों की देहोंमें आजाते हैं ५ बारंबार बड़ा ही आश्चर्य है कि मूर्ख गंगाजीका नाम स्थित होनेमें भी नरकमें गिरते हैं ६ जो ब्राह्मण भक्तिसे गंगाके जलकी कणिकाको शिरसे धारण करताहै वह ब्रह्महत्यादिक महापापोंसे छूटजाता है ७ जिसके माथे में उत्तम गंगाजी की बालू दिखाई देती है वह पुण्यात्मा सब संसारको निस्सन्देह पवित्र करताहै ८ जो मनुष्य गंगाजी के किनारेसे आतेहुएको बड़े आदरसे देखता है वह हजार अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ९ जो यह कहता है कि मैं

गंगाजी के किनारे जाताहूं तुमभी आवो तिसको प्रसन्नात्मा वि-
ष्णुजी सब कामनाओंको देते हैं १० जो मनुष्य कुंयें के जल में
भी गंगा यह नाम स्मरण कर स्नान करता है वहगंगाजीके स्ना-
नकेफलकोप्राप्त होताहै ११ जो गंगाजीके जलकी सरसों भर बालू
को मृत्युकालमें प्राप्त होताहै वह परमपदको जाता है १२ हे वि-
प्रर्षे जैमिनि! यहांपर पुराने इतिहासको सुनिये जिसके सुननेहीसे
गंगादेवी प्रसन्न होती है १३ त्रेतायुगमें धर्मस्वनाम ब्राह्मणहुए
थे यह धर्मात्मा, शांत, दान्त, दयावान्, वेद वेदाङ्गके पारगामी, १४
सत्यवचन बोलने वाले, क्रोध और हिंसासे रहित, जितेन्द्रिय, स-
बप्राणियोंके हितकी इच्छा करने वाले और योगाभ्यासमें सदैव
रतथे १५ यह वैष्णवजन ब्राह्मण संसारसमुद्र तरने के लिये क्रि-
यायोगसे देवोंके स्वामी केशवजी को पूजन करते भये १६ कदा-
चित् श्रेष्ठ ब्राह्मण मोक्ष होनेकी इच्छा वाले पुण्यकारी दिन
पाकर स्नानकरने के लिये गंगाजीके किनारे जातेभये १७ तहांपर
गंगाजीके जलमें स्नानकर तर्पणआदिक कर गंगाजीके जलकी
बालूको धारणकर घर जानेका मन करते भये १८ हे विप्र! तिसी
कालमें रत्नकर नाम बनियां सम्पूर्ण नौकरों से युक्त वाणिज्यकरके
आताभया १९ और तिसी रत्नकरका एक नौकर कालकल्प नाम
ब्राह्मण सम्पूर्ण पाप करनेवाला दण्ड हाथमें लियेहुये आता भया
२० तदनन्तर रत्नकर का एक बैल राहके परिश्रमसे थककर राह
हीमें सोजाताभया २१ तबराहमें सोतेहुए बैलको देखकर अ-
त्यन्त निर्दयी कालकल्प दण्डसे बहुत मारता भया २२ तब
दण्डकी चोट से उत्पन्न हुए क्रोध से बैलने तीक्ष्ण सींगों से उ-
ठाकर कालकल्पको विदारणकिया २३ तो दोनों सींगोंसे छाती
फटकर कालकल्पकी आंखें निकलआईं तब धर्मस्व ब्राह्मण दया-
युक्तहोकर तिसके पास शीघ्रही जाताभया २४ और उत्तम तु-
लसीदलको कानसे लेकर उस बुद्धिमान् ने गंगाजल की सुन्दर
बूंदों से सींचा २५ फिर प्राणरहित देखकर परमार्थ का जा-
ननेवाला ब्राह्मण विस्मित होकर अपने घरजानेका मन करता

भया २६ तदनन्तर वह बुद्धिमान् गंगाजीके नामों को कीर्तनकर राहमें जानेलगा तो आगे हज़ारों करोड़ यमराजके दूतोंको देखताभया २७ किसी के पांव कटे हैं किसीके एक हाथ कटे हैं कोई२ के कान कटे हैं कोई के एकही नेत्र हैं २८ कोई की नाक कटी है कोई की जीभ कटी हैं कोई के दांत टूटे हैं कोई दांतोंसे वर्जित हैं २९ कोई रक्त की धाराओं से सब देह लिप्त हैं कोई के बाल छूटे हुए हैं कोई सुखसे रहित हैं ३० कोई२ नंगे हैं कोई फटी छातीवाले हैं कोई महातीक्ष्ण बाणोंसे जर्जरहुए अंगवाले हैं ३१ कोई दृढ़फँसरियों से निषिद्धअंगुलिहाथ वाले हैं कोई व्यथा से रोकर भागनेमें परायणहैं ३२ इस प्रकारके यमराजके दूतों को देखकर श्रेष्ठब्राह्मण डरसे कम्पहृदयहोकर स्तब्धकी नाईं होजातेभये ३३ तदनन्तर धैर्य धरकर हरिभक्ति करनेवाले ब्राह्मण मधुर वाणीसे किरात, यमराजके दूतों से यह पूँछते भये ३४ कि आपलोग बुरे आकारवाले, फँसरी और मुद्गर हाथमें लियेहुए, डाढ़ोंसे कराल मुखवाले, अंगारकी सदृश दीप्तिवाले कौनहैं ३५ जोकि बड़े वीर, प्रकाशित अग्निके समान नेत्रोंवाले हैं तिसपरभी आपलोगों की यह दुर्गति किसने की है ३६ तब यमराजके दूत बोले कि हे ब्राह्मण! हम सब यमराजके दूत सदैव यमराजकी आज्ञा करनेवाले हैं यह दण्डसमेत बड़े कष्टके उदयको प्राप्तहोगा ३७ तब धर्मस्वजी बोले कि आपलोग महाबलपराक्रमयुक्त अकस्मात् प्राप्त हुए हैं इतनी यह दुर्गति किसने और कैसे कीहै ३८ तब यमदूत बोले कि हे श्रेष्ठब्राह्मण! डर छोड़कर सब वृत्तान्त सुनो जैसे हम को यह अत्यन्त दुःसह दुःख हुआ है ३९ जो यह बैलके सींगोंसे कालकल्प विदारित हुआहै तिसके लेनेके लिये धर्मराज ने हम सब दूतों को भेजाहै ४० तिनकी आज्ञासे हम सब सम्पूर्ण हथियारोंको हाथों में लेकर तिस पापियों में श्रेष्ठको बाँध कर लेने के लिये यहां प्राप्तहुए हैं ४१ तदनन्तर यह दुष्ट अन्तःकरणवाला कालकल्प बैलके सींगोंसे विदारितहुआहै ४२ यह पापियोंमें श्रेष्ठ दयासमेत गंगाजी के नाम कहतेहुये गंगाजी के जलकी बूँदों से

सींचागयाहै ४३ गंगाजी के जलकी कणिकाओंके सींचने से पाप-
रहित इसको हमलोग फँसरियोंसे दृढ़ बाँध कर लिये जातेथे ४४
कि तिसके लेने के लिये देवोंके स्वामी शरणागतों के पालन करने
वाले भगवान् ने अपने महाबलपराक्रमयुक्त दूतों को भेजा ४५
हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! तब तो नारायणजीकी आज्ञा से उनके दूत
आकर कोपसमेत राह में हमलोगों से बोले ४६ आपलोग म-
हात्मा कौन हैं किसके दूत हैं और कैसे इस महाशयको फँसरी
से बांधकर लिये जातेहो ४७ इस महात्माको छोड़कर सुख-
पूर्वक भाग जावो नहीं तो आप लोगोंके शिर चक्रकी धारासे का-
टे जावेंगे ४८ तिन भगवान्के दूतों के अभिमानयुक्त वचन सुन
कर हम सबलोग बोले ४९ कि हम सब दण्डपाणि यमराजजीके
दूतहैं इस पापियोंमें श्रेष्ठको लेकर यमराजजी के स्थानको जावें-
गे ५० तुम सब महात्मा तुलसी की मालाओं से भूषित फूले हुए
कमलपत्र के समान नेत्रवाले, बलवान्, गरुड़ध्वजावाले, ५१ सु-
न्दर वस्त्र धारण करनेहारे, मयूरके गलेके समान सुन्दर, शङ्ख, चक्र,
गदा और पद्म धारण कियेहुए, चार भुजा वाले ५२ इस प्रकार
के सब, सम्पूर्ण लक्षणोंसंयुक्त कौनहैं इस पापियों में श्रेष्ठको कैसे
लेनेकी इच्छा करतेहैं ५३ तब विष्णुजी के दूत बोले कि हम सब
विष्णुजी के दूत हैं इस समयमें इस पुण्यात्मा मनुष्यको वैकुण्ठ ले
जानेके लिये आये हैं ५४ हे यमराजके दूतो! इस भगवद्भक्त, अप-
ने जन, पापरहितको जल्द छोड़ो जो जीवनेकी इच्छा चाहो ५५
फिर उनके यह सब में प्राप्त वचन सुनकर कोपसे जो हमलोगों
ने कहा तिसको सुनिये ५६ यह दुराचारी, पापी, हजार ब्रह्महत्या
करने वाला, कृतघ्नी, गऊ और मित्रों का मारने वाला और बुरे
आशय वाला है ५७ इस दुरात्माने सुमेरु पर्वतके समान बहुत
सोना चुराया है नित्यही दूसरोंकी स्त्रियां हरी हैं ५८ भो विष्णु-
दूतो! हजार करोड़ जन्तुओंकी इसने बहुधा हत्या और स्त्री-
हत्याभी की हैं ५९ यह न्यासका अपहरण और अपनी माता से
भी भोग करतारहाहै और प्रतिदिन गऊके मांसको खाता रहा है

६० इसने पराई हिंसाकी हैं और दूसरों के घरोंको जलाया है सभामें पराई निन्दाकी है और विधवाओंके गर्भको गिराया है ६१ और यह यवनके सदृश रात्रिमें घरमें आयेहुए अतिथिको धनके लोभसे तीक्ष्ण तलवारोंसे काट डालता भयाहै ६२ ये पाप तथा और भी अगणित बड़े बड़े पाप इस नीच मूर्खने किये हैं थोड़ा भी शुभ देनेवाला नहीं कियाहै ६३ तिससे यह महापापी यातनाघर को जाता है भो श्रेष्ठतमो! पापी धर्मराजके दण्ड देने योग्य जानने चाहिये ६४ जो आप लोग देवोंके देव भगवान्‌के दूत हैं तो कैसे इस पापियोंमें श्रेष्ठके लेजानेकी इच्छा करतेहैं ६५ तब विष्णुदूत बोले कि आप लोगों ने सत्यही कहाहै इसमें सन्देह नहीं है यमराजको सदैव सब पापी दण्डदेने योग्य हैं ६६ यह गंगाके जलके बालूके सींचने से पापोंसे छूटगयाहै तिससे इसको हमसब भगवान्‌के मन्दिरको लेजावेंगे ६७ देहधारियोंके पाप तबतक देहों में स्थित रहते हैं जब तक गंगाजलकी बालू दुर्लभ नहीं स्पर्श होती हैं ६८ जैसे चन्द्रमाकी एक कला से सब अन्धकार नाश होजाता है तैसेही गङ्गाजलकी बालू से पाप नाश होजाता है ६९ गंगाजी के नामोंको स्मरण कर पापी पापसे छूट जाताहै साक्षात् जल देखकर छूटगया तो क्या आश्चर्य है ७० ठण्ढा भी गंगाजी का जल पापरूपी वनमें अग्निकी नाईं होताहै जैसे शीतजल अग्निकी नाईं कमल के वनमें दाह करनेवाला होता है ७१ तिससे यह पुण्यकर्म करने वाला दूसरे केशवजी की नाईं है इससे यमराज के दूतो जो कल्याणकी इच्छा करतेहो तो जावो ७२ तिन भगवान् के दूतोंके ये वचन सुनकर हम लोगों ने जो हँसकर फिर कहा उसको सुनिये ७३ बड़े आश्चर्यकी बात है कि यह पापका घर भी गंगाजीके जलके सींचने से सब पापोंसे छूट गया ७४ अपने हाथ के शुभ वा अशुभ कर्म इकट्ठे किये हुए सौ करोड़ कल्पोंसे भी मनुष्य विना भोग किये नहीं छूटता है ७५ यमराज की आज्ञासे हम सब लोग इसके लेनेके लिये प्राप्त हुए हैं किसके वचन से हम लोग इस पापियों में श्रेष्ठ को छोड़देवें ७६

तब विष्णुदूत बोले कि आप लोग निश्चय पापबुद्धि और ज्ञान से वर्जित हैं जिससे गंगाजीके गुण नहीं जानते हैं ७७ वेदमें निषिद्ध जो कार्य है वह पाप कहाता है और जो वेदसम्मत कार्य है सोई धर्म कहाता है ७८ देव नारायण साक्षात् स्वयंभू हैं यह हम लोगों ने सुनाहै जैसे विष्णुजी हैं तैसेही गंगाजी हैं गंगाजीही सब पाप नाश करनेवाली हैं ७९ अपने हाथके अशुभ वा शुभकर्म हरिही हैं हरिजी के प्रसन्न होनेमें देहधारियों के पाप कहां ठहरते हैं ८० अनेक जन्मों के इकट्ठे किये हुए पापों से आप लोग इस गति को प्राप्त हैं अब भी पापकर्म करनेवाले किसलिये पापकी इच्छा करते हो ८१ गंगाजी तथा विष्णुजी की निन्दा करनेवाले आप लोग हैं इस से आपलोगों को पापी समझकर चक्रकी धारा से नाशकरेंगे ८२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! ऐसा कहकर ते विष्णुजी के दूत क्रोध से लालनेत्रकर हम लोगों से लड़ाई का आरम्भ करते भये ८३ और क्रोधसे यह बोले कि यमराज के दूतोंको मारिये यह वारंवार कहकर हम लोगों को चक्रकी धारसे मारने लगे ८४ फिर लड़ाई में अत्यन्त दारुण, प्रसन्नमन सब विष्णुदूत सहसा से शंखोंको बजातेभये ८५ तदनन्तर हम लोगोंके मेघों के गर्जन की नाईं सिंहनादों और धनुषों के विस्तारों से तीनों लोक व्याप्त होगये ८६ फिर वृक्ष, शिला तथा पर्वतकी वर्षाओं और बाणों से हम लोगोंने विष्णुदूतों को मारा ८७ फिर ऋष्टि, गोफना, बाण, बेड़ना, कुल्हाड़ा, छूरी, दंड, शंकु, ८८ तलवार, शक्ति, तीक्ष्णबाण, गदा, चक्रकी धार और भयानक बाण ८९ इन तथा और विषम वज्रके सदृश अस्त्रों से विष्णुदूतों ने कोपसे बहुत प्रकार लड़ाई में मारा ९० तब अस्त्रोंसे जर्जर होकर हम लोग डरसे भागे और हजारों तो लड़ाईही में प्राणरहित होकर गिरपड़े हैं ९१ तब बलवान् विष्णुजीके दूत भागने में परायण हम लोगों को देखकर आनन्दसे शंखोंको बजाते भये ९२ तदनन्तर कालकल्पके बन्धन को काटकर उसको विमानपर चढ़ाकर भगवान् के पुरको जाते भये ९३ गंगाजीके जलके सींचनेके प्रभावसे अत्यन्त पापी काल-

कल्प भी हरिसालोक्यको प्राप्त होताभया ९४ और वहां सौ कल्प स्थित होकर मनोहर भोगों को भोगकर तहांहीं ज्ञान को प्राप्त होकर परममोक्षको प्राप्तहोगा ९५ हे प्रभो ! गंगाजीके प्रभावों से हम लोगोंको ये दुःख प्राप्त हुएहैं हेब्राह्मण ! तुम्हारा कल्याण होवे तुम प्रसन्न हुए अपने स्थानको जावो ९६ ऐसा कहकर ते यमदूत यमपुरको जातेभये और धर्मस्व प्रसन्नहोकर फिर गंगाजी के किनारे जाताभया ९७ और गंगाजी जोकि संसारकी माताहैं तिनमें स्नानकर हाथ जोड़कर यह ब्राह्मण परमेश्वरीजी की स्तुति करते भये ९८ कि हे गङ्गे ! आप सब संसारकी माता, चलायमान लहरोंवाली, काम आदिक के अत्यन्त पवित्र मस्तककी फूलमाला, कृष्णजी के पवित्र दोनों चरणोंके धूलिकी नाश करनेवाली और पापोंके नाश करनेवालीहैं आपको मैं भक्तिसे नमस्कार करताहूं ९९ हे मातः ! आप सब सुख देनेवाली, नदियों में श्रेष्ठ, व्यासआदिक ब्राह्मणसमूहों के गीतों की समूह, गुणोंसे युक्त, संसार भयानक महासमुद्ररूप तिसके मध्यमें नावरूप हैं आपके पापोंके नाश करनेवाले दोनों चरणोंकी मैं वन्दना करताहूं १०० हे जह्नुकी कन्ये ! हे वर देनेवाली ! जिस आपके जलकी कणिका पाकर सौदास नाम राजा ब्राह्मणों की करोड़ हत्याको दूरकर मुक्तिको प्राप्त होगया है तिस देवताओंको भी अलभ्य आपको मैं शिरसे नमस्कार करता हूं आप प्रसन्न हूजिये १०१ हे देवि ! हे मातः ! हे संसार के पापों की नाश करनेवाली ! नारायण, अच्युत, जनार्दन, कृष्ण, राम और गङ्गाआदिक नामों को कहतेहुए मेरे देहका पात आपके जल में आपही की कृपासे होवे १०२ हे सब की ईश्वरि ! तपस्या, जप, दान और अश्वमेध यज्ञोंसे क्या होता है आपके जलकी शीकर को प्राप्तहोकर अत्यन्त पापीभी मनुष्य देवताओंसे अलभ्य मुक्ति को प्राप्त होजाते हैं १०३ हे परमेश्वरि ! हे सृष्टि, पालन और संहार करनेवाली ! आप देवताओंके समूह और पितृलोकों की तृप्तिके लिये स्वाहा और स्वधा हैं सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणके स्वरूप आपके मैं नमस्कार करताहूं १०४ आपके जलकी

जो मस्तक में धारता है और हे देवि! आपके किनारे की मिट्टीसे सदैव पुण्ड्र धारण करताहै और सब रसोंके धाम आपके नामको भक्तिसे कहता है तिस मेरे आपके चरणों की सब रेणु मस्तक में होवे १०५ हे संसारबन्धन के नाश करनेवाली! हे गंगे! आपके किनारे रहनेका स्थान बनाकर, पापोंके नाश करनेवाले आपके जलको पीकर नामको स्मरणकर और आपकी लहरोंके रसको देखकर कदाचित् मेरा जन्म होवे १०६ हे शुभे! हे मोक्षके देने-वाली! बड़े उल्लासवाले मनुष्य स्वर्गकी अत्यन्त दुर्गम राह मान-कर भयकरते हैं सो यह डर करना उनका व्यर्थहै जिससे कि स्व-र्गके जानेमें आपका जल सीढ़ीरूप है १०७ हे सबकी ईश्वरि! हे मुक्ति देनेवाली! हे नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी! तबतक पाप म-नुष्योंकी देहमें स्थित रहतेहैं जबतक निर्मल आपके जलमें स्नान नहीं करतेहैं १०८ हे परे! जिस आपकी महिमाके पारको अच्यु-त,ब्रह्मा, शिवआदिक और इन्द्रआदिक देवताओंके समूहभी नहीं पासक्ते हैं तिस परममोक्षपदके देनेवाली कोई मोहसे तटिनी क-हते हैं १०९ हे गंगे! हे सब सुख देनेवाली! कुछ आपकी महिमाको भगवान् महादेवजी जानते हैं जिससे ये देवताओं में श्रेष्ठ शिवजी अत्यन्त भक्तिसे संसारकी ईश्वरी आपको सदैव शिरमें धारणकिये रहते हैं ११० हे गंगे! हे संसारकी मातः! हे परमेश्वरि! हे देवि! आप प्रसन्न हूजिये रक्षाकीजिये आपके नमस्कार हैं मुझ सेवककी रक्षा कीजिये १११ हे मोक्षके देनेवाली! अनन्तचित्त में परब्रह्मस्वरू-पिणी,सब लोकोंकी एक माता आपकी क्या स्तुति करसक्ताहूं ११२ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इसप्रकार तिस बुद्धिमान् ब्राह्मण से स्तुति कीगई गंगाजी मूर्त्तिको धारणकर सहसा से प्रकटहो गईं ११३ जो कि दो भुजाधारे, मकर के आसनवाली, कोकाबेलि, चन्द्रमा और शंख के समान उज्ज्वल, सब अलंकारों से भूषित थीं ११४ तिनको आगे देखकर धर्मस्वजी गंगा गंगा यह कीर्तनकर शिरसे पृथ्वी को आलिंगनकर तिनके चरणों की वन्दना करतेभ-ये ११५ हे जैमिनि! तब मुसक्यानिपूर्वक देखने से मोहित कर-

कल्प भी हरिसालोक्यको प्राप्त होताभया ९४ और वहां सौ कल्प स्थित होकर मनोहर भोगों को भोगकर तहांहीं ज्ञान को प्राप्त होकर परममोक्षको प्राप्तहोगा ९५ हे प्रभो! गंगाजीके प्रभावों से हम लोगोंको ये दुःख प्राप्त हुएहैं हेब्राह्मण! तुम्हारा कल्याण होवे तुम प्रसन्न हुए अपने स्थानको जावो ९६ ऐसा कहकर ते यमदूत यमपुरको जातेभये और धर्मस्व प्रसन्नहोकर फिर गंगाजी के किनारे जाताभया ९७ और गंगाजी जोकि संसारकी माताहैं तिनमें स्नानकर हाथ जोड़कर यह ब्राह्मण परमेश्वरीजी की स्तुति करते भये ९८ कि हे गङ्गे! आप सब संसारकी माता, चलायमान लहरोंवाली, काम आदिक के अत्यन्त पवित्र मस्तककी फूलमाला, कृष्णजी के पवित्र दोनों चरणोंके धूलिकी नाश करनेवाली और पापोंके नाश करनेवालीहैं आपको मैं भक्तिसे नमस्कार करताहूं९९ हे मातः! आप सब सुख देनेवाली, नदियों में श्रेष्ठ, व्यासआदिक ब्राह्मणसमूहों के गीतों की समूह, गुणोंसे युक्त, संसार भयानक महासमुद्ररूप तिसके मध्यमें नावरूप हैं आपके पापोंके नाश करनेवाले दोनों चरणोंकी मैं वन्दना करताहूं १०० हे जह्नुकी कन्ये! हे वर देनेवाली! जिस आपके जलकी कणिका पाकर सौदास नाम राजा ब्राह्मणों की करोड़ हत्याको दूरकर मुक्तिको प्राप्त होगया है तिस देवताओंको भी अलभ्य आपको मैं शिरसे नमस्कार करता हूं आप प्रसन्न हूजिये १०१ हे देवि! हे मातः! हे संसार के पापों की नाश करनेवाली! नारायण, अच्युत, जनार्दन, कृष्ण, राम और गङ्गाआदिक नामों को कहतेहुए मेरे देहका पात आपके जल में आपही की कृपासे होवे १०२ हे सब की ईश्वरि! तपस्या, जप, दान और अश्वमेध यज्ञोंसे क्या होता है आपके जलकी शीकर को प्राप्तहोकर अत्यन्त पापीभी मनुष्य देवताओंसे अलभ्य मुक्ति को प्राप्त होजाते हैं १०३ हे परमेश्वरि! हे सृष्टि, पालन और संहार करनेवाली! आप देवताओंके समूह और पितृलोकों की तृप्तिके लिये स्वाहा और स्वधा हैं सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणके स्वरूप आपके मैं नमस्कार करताहूं १०४ आपके जलकी

जो मस्तक में धारता है और हे देवि! आपके किनारे की मिट्टीसे सदैव पुण्ड्र धारण करताहै और सब रसोंके धाम आपके नामको भक्तिसे कहता है तिस मेरे आपके चरणों की सब रेणु मस्तक में होवे १०५ हे संसारबन्धन के नाश करनेवाली! हे गंगे! आपके किनारे रहनेका स्थान बनाकर, पापोंके नाश करनेवाले आपके जलको पीकर नामको स्मरणकर और आपकी लहरोंके रसको देखकर कदाचित् मेरा जन्म होवे १०६ हे शुभे! हे मोक्षके देनेवाली! बड़े उल्लासवाले मनुष्य स्वर्गकी अत्यन्त दुर्गम राह मान कर भयकरते हैं सो यह डर करना उनका व्यर्थहै जिससे कि स्वर्गके जानेमें आपका जल सीढ़ीरूप है १०७ हे सबकी ईश्वरि! हे मुक्ति देनेवाली! हे नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी! तबतक पाप मनुष्योंकी देहमें स्थित रहतेहैं जबतक निर्मल आपके जलमें स्नान नहीं करतेहैं १०८ हे परे! जिस आपकी महिमाके पारको अच्युत,ब्रह्मा, शिवआदिक और इन्द्रआदिक देवताओंके समूहभी नहीं पासक्ते हैं तिस परममोक्षपदके देनेवाली कोई मोहसे तटिनी कहते हैं १०९ हे गंगे! हे सब सुख देनेवाली! कुछ आपकी महिमाको भगवान् महादेवजी जानते हैं जिससे ये देवताओं में श्रेष्ठ शिवजी अत्यन्त भक्तिसे संसारकी ईश्वरी आपको सदैव शिरमें धारणकिये रहते हैं ११० हे गंगे! हे संसारकी मातः! हे परमेश्वरि! हे देवि! आप प्रसन्न हूजिये रक्षाकीजिये आपके नमस्कार हैं मुझ सेवककी रक्षा कीजिये १११ हे मोक्षके देनेवाली! भ्रान्तचित्त मैं परब्रह्मस्वरूपिणी,सब लोकोंकी एक माता आपकी क्या स्तुति करसक्ताहूं ११२ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इसप्रकार तिस बुद्धिमान् ब्राह्मण से स्तुति कीगई गंगाजी मूर्त्तिको धारणकर सहसा से प्रकटहो गईं ११३ जो कि दो भुजाधारे, मकर के आसनवाली, कोकाबेलि, चन्द्रमा और शंख के समान उज्ज्वल, सब अलंकारों से भूषित थीं ११४ तिनको आगे देखकर धर्मस्वजी गंगा गंगा यह कीर्तनकर शिरसे पृथ्वी को आलिंगनकर तिनके चरणों की वन्दना करतेभये ११५ हे जैमिनि! तब मुसक्यानिपूर्वक देखने से मोहित कर-

तीहुई प्रसन्न होकर परमेश्वरीजी ब्राह्मण से बोलीं कि वर मांगिये ११६ तब धर्मस्वजी बोले कि हे मातः! आपके जलके स्पर्श से ब्राह्मण का मारनेवाला भी मोक्षको सेवन करताहै मैंने साक्षात् आपके दर्शन किये हैं इससे और हम को क्या साध्य है ११७ हे परमेश्वरि! हे देवि! तथापि एक वर मैं मांगताहूं कि आपका नाम स्मरण करतेहुए आपही के जल में मेरी मृत्युहोवे ११८ हे ईश्वरि! मेरे कियेहुए स्तोत्र से जो आपकी सदा स्तुतिकरे वह भी सब कामनाओं को भोगकर अन्तमें सद्गतिको प्राप्तहोवे ११९ तब गंगाजी बोलीं कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इस आपकी भक्तिसे मैं प्रसन्न हूं शीघ्रही निस्सन्देह तुम्हारी सब कुशल होगी १२० तुम्हारे कियेहुए इस स्तोत्र को जो मनुष्य तीनों संध्याओं में पढ़ेगा तिसके ऊपर मैं प्रसन्न होकर उत्तम मुक्ति दूंगी १२१ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि श्रेष्ठ ब्राह्मण! इस प्रकार भक्तोंके ऊपर प्यार करनेवाली देवी धर्मस्वको वर देकर तहांहीं अन्तर्द्धान होजातीभई १२२ तब धर्मस्व ब्राह्मण वर पाकर कृतकृत्यसा होजाताभया और तहांहीं गंगाजी के मनोरम किनारे स्थित होताभया १२३ तदनन्तर बहुत काल बीतनेपर निर्मल गंगाजीके जलमें सुखपूर्वक मृत्यु को प्राप्तहोकर उत्तम पद को जाताभया १२४ पापात्मा कालकल्प गङ्गाजी के जल के शीकरों से सींचाजाकर उत्तम मोक्षको प्राप्तहोगया तो औरों की क्या कथा है १२५ विना इच्छा के फलयुक्त गङ्गाजी के जलके स्पर्श से मोक्ष मिलता है तो भक्तिभावसे स्पर्श करनेवालों को क्या होताहै यह मैं नहीं जानताहूं १२६ फिर फिर मैं कहताहूं कि गंगाजीके समान तीर्थ नहीं है जिनके जल की कणिका छूनेसे परमधाम मिलता है १२७ जे भक्तिभावसे गंगाजी के जल की कणिकाको स्पर्श करतेहैं ते निश्चय सब बड़े घोरपापोंसे छूटकर भगवान् के पदको प्राप्तहोतेहैं १२८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेयोगसारेगंगाशीकरमाहात्म्ये

सप्तमोऽध्यायः ७॥

---

# आठवां अध्याय ॥

## गंगाजीकामाहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! जैमिनि ! फिर गंगाजी के उत्तम माहात्म्य को कहताहूं गंगाजीके कथा रूप अमृतके पान की इच्छा जो हो तो करिये १ जिसकी भक्ति गंगाजी में है उसने सब दान दिये सब यज्ञ किये और विष्णुजी को पूजा २ गंगाजी में जितने धर्म किये जाते हैं वे सब उसके नाशरहित होतेहैं ३ जो गंगाजीके बहतेहुए जलको देखकर भक्तिसे उठकर जाता है वह हजार अश्वमेध यज्ञका करनेवाला होता है ४ जो गंगाजलोंके आते भये भक्तिसे नहीं उठता है तिसकी जन्म जन्ममें शाश्वती पशुता मिलती है ५ गंगाजीके जलको प्राप्तहोकर जोभक्ति से नहीं ग्रहण करता है वह करोड़ जन्मकी इकट्ठा की हुई पुण्य को क्षणमात्रमें नाश करदेता है ६ जो गंगाजीके तीर जानेवालेको निषेध करता है वह करोड़कुलसंयुक्त रौरवनरक को जाता है ७ जो गंगाजीके किनारे मूत्र वा विष्ठा करता है उसकी सौ करोड़ कल्पोंमें भी निष्कृति नहीं दिखाई देती है ८ गंगाजीके किनारे जो कफ वा थूंक वा दूषिका वा आंशू वा मल छोड़ता है वह निश्चय नारकी होता है ९ जो गंगाजीके भीतर जूंठन वा कफ छोड़ता है वह घोर नरक और ब्रह्महत्याको प्राप्त होता है १० जो मूर्ख मनुष्य गंगाजीके किनारे पापकरताहै वह निश्चय नाशरहित होता है और तीर्थों में नहीं शान्त होताहै ११ और तीर्थ में कियेहुये पाप गंगाजी में नाश होजाते हैं और गंगाजी में जो कियेजाते हैं वे कहीं पर नाश नहीं होते हैं १२ तिससे शास्त्र जाननेवालों को गंगाजी में पाप न करना चाहिये कर्म, मन और वाणी से धर्मका संग्रहकरना चाहिये १३ देश, पर्वत और वन वे नहीं हैं जहांपर पापोंके नाश करने वाली गंगाजी नहीं स्थितहैं १४ गंगाजीके किनारे को छोड़ कर मुहूर्तमात्रभी और जगह नहीं स्थित होना चाहिये चाहै सैकड़ों कार्य भी हों १५ भिक्षा के अन्नको भी

खाकर गंगाजीके किनारे स्थित होनाचाहिये राज्यभी पाकर और जगह क्षणमात्र न रहनाचाहिये १६ ब्राह्मण का मारनेवालाभी गंगाजीमें देह छोड़कर मुक्त होजाताहै और जगह हज़ार अश्व-मेध का करनेवालाभी मुक्ति नहीं पाताहै १७ गंगाजी के तीर में वसकर जो भगवान् की पूजामें परायण होता है जन्म जन्मान्तर में जिसने कभी हरिजीको नहीं पूजाहै १८ उसकी संसारकी माता गंगाजीमें भक्ति नहीं होती है सब मनुष्यो सुनो वारंवार मैं कह-ताहूं १९ गंगाजी में स्नानकर परमपद जाइये मृत्युकाल में जो मनुष्य गंगा गंगा यह भजताहै २० वह सब पापोंसे छूटकर स्वर्ग में देवताओं के साथ दश हज़ार वर्ष रहताहै हे ब्राह्मण! जिसकी मृत्युके समय में गंगाजीकी कथा का प्रारम्भ होताहै २१ वह सब पापोंसे छूटकर विष्णुजी के मन्दिरको जाता है जो बुद्धिमान् मृत्यु के समयमें मुक्तिके देनेवाले गंगाजी के नाम को स्मरण करता है तिसके ऊपर हरिजी प्रसन्न होतेहैं और जो मृत्युके समयमें उत्तम गंगाजीकी मिट्टी का पुण्ड्र धारण करताहै २२।२३ और गंगाजी के स्नान करनेवाले को देखकर जो देह छोड़ता है वह श्मशान में भी गंगाजी के मरण को प्राप्त होताहै २४ देहधारी के जितने समयतक गंगाजीमें हाँड़ स्थित रहते हैं तितने हज़ार कल्प वह विष्णुलोक में प्राप्त होता है २५ जिसकी राख, हाँड़, नहँ और वाल गंगाजी में डूबते हैं वह बुद्धिमान् विष्णुजीके लोकमें वसता है २६ गंगाजीमें हाँड़ोंके स्थित होनेमें मनुष्य जो कर्म प्राप्त होताहै तिस सब फलको कहताहूं हे ब्राह्मण! और जगह मन न लगाकर सुनो २७ एक समय में कामी भगवान् इन्द्र अनेक प्रकारके अ-लंकारों से भूषित होकर पद्मगंधा स्त्री के साथ क्रीड़ाके स्थान को जाते भये २८ पद्मगन्धा रसके जानने वाली नवीन यौवनको प्राप्त हुई अनेक रसके दानसे सुन्दररस करती भई २९ सौतिकी सोने की शय्या में तिस वालमृगी के समान नेत्रवाली के पांवोंके तले काम से मोहित होकर इन्द्र वसते भये ३० तदनन्तर इन्द्र आपही परम प्रसन्न होकर तिसके गुणोंसे आकृष्टमन होकर सोनेकी चौकी

बनाकर देते भये ३१ इसी समय में श्रेष्ठ सुन्दरी इन्द्राणीजी सब गहनोंसे भूषित होकर आपभी तिसघरको जाती भईं ३२ और सुन्दरलक्षणयुक्त इन्द्राणीजी सब देवों के स्वामी प्रभु इन्द्रजी को तिस प्रकार के देखकर अत्यन्त क्रोधकर बोलीं ३३ कि हे देव! हे सब देवताओं के स्वामी! हे कान्त! क्या करते हो मेरी दासी के स्वरूप को सोनेकी बीड़ी देतेहो ३४ हे प्रभो! सब देवता तुम्हारे चरणों को स्पर्श करते हैं और आप कैसे पद्मगन्धा दासी के चरणों के नीचे हैं ३५ सुगन्धिके भावसे मांगेगये भौंरेके स्थान में तुम्हारा यश है और हे प्रभो! सब रसके जानने वाले आप हैं और तुम सुन्दरी करोड़ पतिवाली हो ३६ हे निर्गुणे! हे पद्मगन्धे! हे दासि! कैसे तू इस प्रकारका निन्दित कर्म करती है दूर यहां से जा ३७ ईश्वरी की शय्या में तू और इन्द्र तेरे पांवों के नीचे हैं तब पद्मगन्धाबोली कि मेरे गुण और दोष को आपही स्वामी निश्चय जानतेहैं ३८।३९ हे निर्गुणे! किस अधिकारसे आकर तुममेरी निन्दा करती हो और तो दो नेत्रों से गुण और दोषों को देखते हैं ४० हे दुष्ट आशय वाली! ये हजार नेत्रों से क्या नहीं देखते हैं जैसे मनुष्योंको दोष तथा गुण न प्राप्तहों ४१ पहले चन्द्रमाका कलङ्क मनुष्यों को गुणकी नाईं दिखाई पड़ता है अनर्थ बोलने वाली, क्रूर, कुत्सितमूर्ति और गुणोंसे वर्जित ४२ जो मैं गुणयुक्त न होती तो पतिकैसे भजते व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! कोकनद के समान नेत्रवाली पद्मगंधा ऐसाकहकर क्रोधसे ४३ बड़ी करुणा करतीहुई सोनेकी शय्यासे उठती भई तब इन्द्र बोले कि हे प्रिये! हे प्राणोंकी ईश्वरि! हे सुन्दरि! हे कान्ते! मुझको छोड़कर कहां जावेगी मैंने क्या तेरा अपराध कियाहै मुझसे वह कहिये मैं निश्चय तेरा दास हूं दासकर्म करता हूं ४४। ४५ दासकी स्त्री दासी होती है क्या तूने वाक्य नहीं सुना है तब तिसके मोहसे आकुलमन होकर इन्द्र उठकर ४६ फिरउस श्रेष्ठ सुन्दरीको कोड़े में बैठा लेते भये तब इन्द्राणी बोलीं कि हे क्रौंचि! तेरा जीवन धन्य है निश्चय मेरा जीवन व्यर्थ है ४७ तू स्वामीको नित्यही सुभगा है

मैं श्रेष्ठस्त्री दुर्भगाहूं जबतक तेरे पुण्यका नाश न होगा ४८ तब तक इन्द्रजीके साथ सुखपूर्वक केलिकरो पुण्य क्षय होनेपर क्रौंच वंशमें उत्पन्न तुम फिर दुःखको भोगकरोगी ४९ हे निर्गुणे! कुछदिन सुखभोगोंसे तेराकुछ न होगा ये इन्द्राणी के अत्यन्त अद्भुत वचनसुनकर पद्मगन्धा ५० द्वन्द्वभावको छोड़कर नमस्कारकर तिन पतिव्रता इन्द्राणीजी से बोली कि हे श्रेष्ठ करिहांववाली इन्द्राणीजी! यह आपने आश्चर्य की बात कही है ५१ मैं क्रौंची कैसीहूं यह मेरे सुननेकी इच्छाहै यत्नसे कहिये कौन मैंहूं कहां स्थितथी और कैसे यहां पतिव्रता मैं प्राप्तहोगई ५२ कितने समयमें मेरा पुण्य क्षीण होजावेगा तब इन्द्राणी बोलीं कि हे पद्मगन्धे! पहले तुम पक्षीसे उत्पन्न क्रौंचीथी ५३ पृथ्वी में स्थितहोकर अपवित्र मांस और कीड़ोंको खातीथी और गंगाजी के मनोरम किनारे एक न्यग्रोधका वृक्षथा ५४ तहां खोलखल बनाकर तुमने रहनेका स्थान बनायाथा एकसमय तिस न्यग्रोधके वृक्षमें कालेसांपने ५५ खोलखलमें प्रवेशकर तुमको काटखाया तो तुम सहसासे मरगई तब तुम्हारे सब बच्चोंको क्रोधसे सर्पने खाडाला ५६ हे श्रेष्ठ मुखवाली! हे भद्रे! तब वहांपर मांसरहित हाँड़ही रहगये किसी समय में बड़ी हवा से ५७ न्यग्रोधका वृक्ष जड़से उखड़कर गंगाजी में गिरपड़ा ५८ तो वे हाँड़ गंगाजी में डूबगये हे उत्तमे! जबतक हाँड़ गंगाजी में रहेंगे ५९ तबतक तुम सदैव स्वामिको सुभगा होगी हे पद्मगन्धे! यह सब मैंने इस समयमें तुमसे कहा ६० जिस पुण्यके प्रभावसे इन्द्र भी तुम्हारे वश में प्राप्त हैं गंगा देवी धन्य हैं जिनके प्रसाद से तू क्रौंची ६१ जो कि चाण्डालों से भी नहीं छूनेवाली थी वह इन्द्र के कोड़ेमें सोतीहै तब इन्द्रने पतिव्रता इन्द्राणी का अपमान किया ६२ तो वे मलिन मुखरूपी कमल को कर जैसे आई थीं वैसेही चलीगईं और श्रेष्ठ स्त्री पद्मगन्धा इन्द्र के कोड़े में हीं स्थित रही ६३ परन्तु इन्द्राणी के वचन तिसके हृदय में जागरूक की नाईं स्थित रहे तदनंतर एक समय में पद्मगन्धा के गुणों में इन्द्र प्रसन्नहोकर ६४ आपही उससे बोले कि हेसुन्दर करिहांववाली!

तू वर मांगे तब पद्मगन्धा बोली कि हे स्वामिन्! हे देवताओं में उत्तम! आप सब देवताओं के स्वामी और करोड़ स्त्रियों के पति हैं तिसपर भी मेरे आधीन हैं तो और वरोंसे क्या है तिसपर भी जो निश्चय आप वरदेनेकी इच्छा करतेहैं ६५।६६ तो मेरे आगे कर्म, मन और वाणीसे प्रतिज्ञा कीजिये तब इन्द्र बोले कि हे सुन्दरि! मुझे आज्ञा दीजिये कि जीवन, धन, राज्य और परिच्छद क्या तुझको दूं मैं सत्यही सत्य कहताहूं इस में सन्देह नहीं है ६७।६८ हे मृगनयनी! जो तुम इच्छा करोगी वह निश्चय दूंगा तब पद्मगन्धा बोली कि हे देवताओं के ईश्वर! जो आप निश्चय प्रसन्नहैं ६९ तो मेरा फिर जन्म हाथीकी योनिमें दीजिये यहीमुझ को वर दीजिये तब इन्द्र बोले कि हे सुन्दरकटिवाली! तुम से प्रतिज्ञा करचुकाहूं इससे मैं तुमको वरदेताहूं ७० हे वरारोहे! तुम को न देखकर क्षणमात्र भी प्रीति न प्राप्त होगी किन्तु मेरे हृदय में बहुत दुःख उत्पन्न होंगे ७१ हे मोटे स्तनवाली! कैसे दुःसह आपके बहुत विच्छेदको सह सहूंगा जो मेरे ऊपर तुम्हारी दयाहो ७२ तो कुछदिन मेरे साथ स्थितरहो तदनन्तर सती पद्मगन्धा इन्द्रकी बहुत सम्पदा कहतीहुई ७३ दशहज़ार वर्ष इन्द्रही के स्थानमें स्थित रही तिसपीछे उनसे बोली कि हे देवताओंके स्वामी! मेरे मनोरथ साधन करने के लिये आज्ञा दीजिये ७४ मैं कर्मभूमिको जातीहूं आपके दोनों चरणोंकी वन्दना करतीहूं तब इन्द्र बोले कि हे चन्द्रमुखी! तुम्हारे प्रेमरूपी समुद्रके मानसे ७५ कुछ दिन स्थित होलूं पीछेसे सुखपूर्वक चली जाइयो तब तो कौतुकके मन्दिरमें इन्द्रके साथ रात्रि दिन ७६ क्रीड़ा करतीहुई पद्मगन्धा तीस हज़ार वर्ष स्थितरही तिस पीछे आनन्दयुक्त होकर इन्द्रसे बोली ७७ कि इस समयमें आज्ञा दीजिये मैं पृथ्वी में जाऊंगी तब इन्द्र बोले कि हे सुन्दर कटिवाली! जड़ता छोड़िये मेरे साथ यहीं रहिये ७८ प्राणोंसे भी अधिक प्यारी तुम्हारे छोड़ने को मैं नहीं समर्थहूं तब पद्मगन्धा बोली कि हे देवताओं के स्वामी! पुण्यके नाश होजानेमें जो मैं पृथ्वीमें जाऊंगी ७९ तो बहुत

काल मेरे साथ आपका विच्छेद होगा जिस विच्छेदमें मैं हेनाथ! फिर पृथ्वी पर जानेकी ८० इच्छा करतीहूं हे इन्द्रजी! जिस उपायसे मैं कर्मभूमिमें जाकर पुण्य इकट्ठाकर फिर स्वर्ग में चली आऊं ८१ यही मैं करना चाहतीहूं जिससे आपके साथ मेरा विच्छेद कभी न हो तब इन्द्र बोले कि हे भद्रे! तुमने जो निश्चय यह कर्म करनेकी इच्छाकी है ८२ तो हे सुन्दरि! जाइये फिर शीघ्रही आइये तदनन्तर नेत्रोंके आंशुओं से देहको सींच कर ८३ तिसको दोनों हाथोंसे आलिंगन कर इन्द्र बोले कि हे प्रिये! जाइये तब इन्द्रकी आज्ञासे वह पतिव्रता कर्मभूमिमें प्राप्त होगई ८४ और हथिनी की योनिमें उत्पन्न होकर जातिकास्मरण बनारहा कुछदिनों में अपना वृत्तान्त स्मरण करती हुई ८५ गंगाजी के किनारे जाकर गंगाजीमें स्नानकर गंगाजीकेकीचड़से भूषित होकर ८६ पर्वत के आकार यह गंगागंगा यह कहती हुई गहरे कुण्डमें प्रवेश कर गई तिस गंगाजीके कुण्ड में जाकर यह हस्तिनी ८७ अपनी जाति को स्मरण करती हुई फिर नाश को प्राप्तहोगई तिसके साहसको देखकर सब देवता हस्तिनीके ऊपर ८८ आनन्दसे कल्पवृक्ष आदिक के उत्तम फूल बरसते भये तदनन्तर सब देवसमूहों से युक्तहोकर इन्द्र तिसके लेनेकेलिये ८९ शीघ्रतासे तिसके बहुत कालके विच्छेदसे जाते भये और सुन्दर देहवाली को विमान पर चढ़ाकर ९० अपनेदुःखोंको कहतेहुए अपने स्थान को प्राप्तहोते भये इन्द्राणी, रंभा, प्रम्लोचा, उर्वशी ९१ तथा और भी इन्द्रकी सुन्दर स्त्रियां आनन्दसे सबकाम छोड़कर तिसके पास आतीभई तबयहश्रेष्ठस्त्री इन्द्रके हृदयके उत्साहको विस्तारित करती हुई ९२ सुभगा और प्रीतिसे प्यारी होतीहुई इन्द्रके पुरमें स्थित होतीभई जिसके जबतक हाड़ गंगाजीमें स्थित होते हैं ९३ तबतक वह सौ करोड़ कुलताई देवताओं के स्थान में स्थित होतीहै स्वर्ग में जेजे राजा तपस्या के बलसे राज्योंमें हुए हैं ९४ तिन तिन की स्नेहभूमि देवोंकी सुन्दरी होती है हे जैमिनि! गंगाजी में हाड़ोंके डूबने से यहफल है ९५ और गंगाजीमें देह छोड़ने वाले के फल

कहनेको मैं नहीं समर्थ हूं गंगाजीमें मृतकशरीर और हाँड़ जब तक स्थित रहते हैं ९६ तबतक सैकड़ों करोड़ कल्पतक देवताओं के स्थानमें वास होताहै और गंगाजीमें मृतक शरीर जो धाराओं से चलित हुआ ९७ देहधारियों का दिखलाई देता है तिसकेफल को सुनिये स्वर्ग में देवताओंकी स्त्रियां डरकर पवित्र चामरकी पवनोंसे ९८ डुलाती हैं और वह देहधारी आनन्दयुक्त सोने की शय्यापरसोताहै गंगाजीकी बालूमें जिसका शरीर मृतक दिखलाई देता है ९९ और सूर्यकी किरणों से तप्त होताहै तिसके कुलको मैं कहताहूं सुन्दर सुगन्धित चन्दनों से लिप्त सब देहहोकर १०० सुन्दर स्त्रियों समेत स्वर्ग में सदैव क्रीड़ा करताहै कौआ, गृध्र और कंकपक्षियों से गंगाजी में १०१ जिसकी देह विदलित दिखाई देती है तिसकाफल सुनिये स्वर्ग में देवताओंकी स्त्रियों के मोटे ऊंचे सुन्दर स्तनों से १०२ आलिंगनयुक्त छाती होकर नित्यही सोते हैं चिउंटी, कीड़े और मक्खियों से आच्छादित १०३ गंगाजी में जिसके गिरे हुये हाँड़ दिखलाई पड़ते हैं तिसके नाशरहित फलको मेरेकहतेहुए सुनिये १०४ प्रणाम करते हुए देवताओंके समूहके शिरके मुकुटके भूषणों से पांवोंकी धूलि नष्टहोकर बहुत समय तक स्वर्ग में इन्द्रकी नाईं आनंद करता है १०५ जिसमनुष्यकी देह विना इच्छाही के गंगाजीमें पतन होजाती है वह सब पापों से छूटकर नारायण होजाता है १०६ जलसे चलित होकर जिसके अंगार गंगाजीमें दिखाई देते हैं वह अंगार की संख्यासे स्वर्ग में सौ कल्प अधिक स्थित होता है १०७ सब पुण्यों का कदाचित् नाशभी दिखाई देता है परन्तु गंगाजी में पतितदेह में पुण्य का नाश नहीं होताहै १०८ बहुत यहां कहने से क्या है निश्चित इस समय में मैंने कहा है गंगाजी में छोड़ीहुई देहकी महिमा मैं नहीं जानता हूं १०९ जो चतुर मनुष्य भक्तिभावोंसे विषम पापोंके राशियोंके नाश करनेवाले गंगाजीके जल को पृथ्वी में कभी स्पर्श करता है वह भयानक समुद्रके जलको नांघकर अपार प्रसन्नतासे पार होजाताहै ११० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारे गंगामाहात्म्येऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥

काल मेरे साथ आपका विच्छेद होगा जिस विच्छेदमें मैं हेनाथ!
फिर पृथ्वी पर जानेकी ८० इच्छा करतीहूं हे इन्द्रजी! जिस उ-
पायसे मैं कर्मभूमिमें जाकर पुण्य इकट्ठाकर फिर स्वर्ग में चली
आऊं ८१ यही मैं करना चाहतीहूं जिससे आपके साथ मेरा वि-
च्छेद कभी न हो तब इन्द्र बोले कि हे भद्रे! तुमने जो निश्चय
यह कर्म करनेकी इच्छाकी है ८२ तो हे सुन्दरि! जाइये फिर शी-
घ्रही आइये तदनन्तर नेत्रोंके आंसुओं से देहको सींच कर ८३
तिसको दोनों हाथोंसे आलिंगन कर इन्द्र बोले कि हे प्रिये! जाइये
तब इन्द्रकी आज्ञासे वह पतिव्रता कर्मभूमिमें प्राप्त होगई ८४ और
हथिनी की योनिमें उत्पन्न होकर जातिकास्मरण बनारहा कुछदिनों
में अपना वृत्तान्त स्मरण करती हुई ८५ गंगाजी के किनारे जा
कर गंगाजीमें स्नानकर गंगाजीके कीचड़से भूषित होकर ८६ पर्वत
के आकार यह गंगागंगा यह कहती हुई गहरे कुण्डमें प्रवेश कर
गई तिस गंगाजीके कुण्ड में जाकर यह हस्तिनी ८७ अपनी
जाति को स्मरण करती हुई फिर नाश को प्राप्तहोगई तिसके सा-
हसको देखकर सब देवता हस्तिनीके ऊपर ८८ आनन्दसे कल्प-
वृक्ष आदिक के उत्तम फूल बरसते भये तदनन्तर सब देवसमूहों
से युक्तहोकर इन्द्र तिसके लेनेकेलिये ८९ शीघ्रतासे तिसके बहुत
कालके विच्छेदसे जाते भये और सुन्दर देहवाली को विमान प
चढ़ाकर ९० अपनेदुःखोंको कहतेहुए अपने स्थान को प्राप्तहोते
भये इन्द्राणी, रंभा, प्रम्लोचा, उर्वशी ९१ तथा और भी इन्द्रकी
सुन्दर स्त्रियां आनन्दसे सबकाम छोड़कर तिसके पास आतीभई
तबयहश्रेष्ठस्त्री इन्द्रके हृदयके उत्साहको विस्तारित करती हुई ९२
सुभगा और प्रीतिसे प्यारी होतीहुई इन्द्रके पुरमें स्थित होतीभ
जिसके जबतक हाँड़ गंगाजीमें स्थित होते हैं ९३ तबतक व
सौ करोड़ कुलताई देवताओं के स्थान में स्थित होतीहै स्वर्ग में
जेजे राजा तपस्या के बलसे राज्योंमें हुए हैं ९४ तिन तिन की
स्नेहभूमि देवोंकी सुन्दरी होती है हे जैमिनि! गंगाजी में हाँड़ोंके
डूबने से यहफल है ९५ और गंगाजीमें देह छोड़ने वाले के फल

कहनेको मैं नहीं समर्थ हूं गंगाजीमें मृतकशरीर और हाँड़ जब तक स्थित रहते हैं ९६ तबतक सैंकड़ों करोड़ कल्पतक देवताओं के स्थानमें वास होताहै और गंगाजीमें मृतक शरीर जो धाराओं से चलित हुआ ९७ देहधारियों का दिखलाई देता है तिसकेफल को सुनिये स्वर्ग में देवताओंकी स्त्रियां डरकर पवित्र चामरकी पवनोंसे ९८ डुलाती हैं और वह देहधारी आनन्दयुक्त सोने की शय्यापरसोताहै गंगाजीकी बालूमें जिसका शरीर मृतक दिखलाई देता है ९९ और सूर्यकी किरणों से तप्त होताहै तिसके कुलको मैं कहताहूं सुन्दर सुगन्धित चन्दनों से लिप्त सब देहहोकर १०० सुन्दर स्त्रियों समेत स्वर्ग में सदैव क्रीड़ा करताहै कौआ, गृध्र और कंकपक्षियों से गंगाजी में १०१ जिसकी देह विदलित दिखाई देती है तिसकाफल सुनिये स्वर्ग में देवताओंकी स्त्रियों के मोटे ऊंचे सुन्दर स्तनों से १०२ आलिंगनयुक्त छाती होकर नित्यही सोते हैं चिउंटी, कीड़े और मक्खियों से आच्छादित १०३ गंगाजी में जिसके गिरे हुये हाँड़ दिखलाई पड़ते हैं तिसके नाशरहित फलको मेरेकहतेहुए सुनिये १०४ प्रणाम करते हुए देवताओंके समूहके शिरके मुकुटके भूषणों से पांवोंकी धूलि नष्टहोकर बहुत समय तक स्वर्ग में इन्द्रकी नाईं आनंद करता है १०५ जिसमनुष्यकी देह विना इच्छाही के गंगाजीमें पतन होजाती है वह सब पापों से छूटकर नारायण होजाता है १०६ जलसे चलित होकर जिसके अंगार गंगाजीमें दिखाई देते हैं वह अंगार की संख्यासे स्वर्ग में सौ कल्प अधिक स्थित होता है १०७ सब पुण्यों का कदाचित् नाशभी दिखाई देता है परन्तु गंगाजी में पतितदेह में पुण्य का नाश नहीं होताहै १०८ बहुत यहां कहने से क्या है निश्चित इस समय में मैंने कहा है गंगाजी में छोड़ीहुई देहकी महिमा मैं नहीं जानता हूं १०९ जो चतुर मनुष्य भक्तिभावोंसे विषम पापोंके राशियोंके नाश करनेवाले गंगाजीके जल को पृथ्वी में कभी स्पर्श करता है वह भयानक समुद्रके जलको नांघकर अपार प्रसन्नतासे पार होजाताहै ११० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारे गंगामाहात्म्येऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥

# नवां अध्याय ॥

## गंगाजीका माहात्म्य वर्णन ॥

जैमिनि बोले कि हे गुरो! फिर उत्तम गंगाजीके माहात्म्य को कहिये मधुरता से गंगाजीकी कथारूप अमृत के पीनेको फिर इच्छा है १ तब व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! जिससे आप गंगा जीके भक्त हैं इससे मैं तुमसे कहताहूं मनुष्यों के वही चरण सफल हैं जो गंगाजीके किनारे के जानेवाले हैं २ वेही कानहैं जो गंगाजीकी कल्लोलके शब्द सुननेवाले हैं वही जिह्वाहै जो गंगाजीके जलके स्वादुके भेदको जानतीहै ३ वही नेत्रहैं जो गंगाजीकी पवित्र लहरियों के दर्शन करतेहैं वही मस्तक कहाताहै जोगंगाजी की मिट्टीका पुण्ड्र धारणकरताहै ४ वेही हाथहैं जो गंगाजीके किनारे भगवान् की पूजा में परायण हैं वही शरीर सफल है जो निर्मल गंगाजीके जलमें ५ पतितहै हे श्रेष्ठब्राह्मण! वहदेह धर्म,अर्थ,काम और मोक्षके फलका देनेवाला है स्वर्ग में स्थित सब पितर गंगाजी के किनारे जातेहुए ६ को देखकर प्रसन्न होकर उसकी प्रशंसा करते और कहते हैं कि पूर्वसमय में सद्गति की प्राप्ति के लिये तीन पुण्य हम लोगोंने की है ७ जो कि नाशरहित होकर यह पुत्र इसप्रकार का हुआ है इससे गंगाजीके जलसे हम लोग इस समयमें तर्पित होकर ८ देवताओं के भी दुर्लभ परमधामको जावेंगे हमारा पुत्र गंगाजीमें जिन द्रव्योंको देगा ९ वे सब हमलोगों के लिये नाशरहित होंगी और सब दुःखसेयुक्त नरक में स्थित पितर १० गंगाजीके किनारे जानेवाले पुत्रको देखकर यह कहते हैं कि हमलोगोंने नरक के क्लेश देनेवाले जितने पाप कियेथे ११ वेपुत्रके प्रसादसे नाशरहित होगये दुस्सह नरकके क्लेशोंसे हम सब छूटगये १२ अब पुत्र के प्रसादसे परमगतिको जावेंगे और जो मनुष्य गंगाजीकी यात्रा करके मोहसे घर लौट आता है १३ उसके सब पितर जैसे आतेहैं वैसेही निराश होकर चले जातेहैं मांस, मैथुन, दोला, घोड़ा, हाथी, १४ जूता और छतुरी गंगाजी की यात्राओं में वर्जितकरै दुष्कर

मार्गके श्रमसे उत्पन्न दुःखको नहीं माने १५ घरमें पद्मसुख को गंगास्नानमें न स्मरणकरे झूठ बोलना, पाखण्डियों का संग १६ दूसरीबार भोजन और लड़ाई गंगाजीकी यात्राओं में छोड़देवे दूसरे की निन्दा, लोभ, अभिमान, क्रोध, मत्सर, १७ अत्यंत हास्य और शोकको भी गंगाजीकी यात्राओं में छोड़े पृथ्वी में सोनेवाली देहको मंचपर सोयेहुए की नाईं चिन्तना करे १८ मनुष्य राह में गंगाजी के सुन्दर नामों को कहता हुआ जावे गंगादेवी के सब पाप नाश करनेवाले सुख और मोक्षके देनेवाले माहात्म्यको राह में कहताहुआ जावे हेगंगे! हे देवि! हेसंसारकी मातः! मुझकोदर्शन दीजिये १९।२० इन कोमल वचनोंसे श्रम निवारणकरे और हा कैसे मैंने स्थान छोड़दिया वा कैसे मैं यहां आया २१ परिश्रमों से यह जो कहताहै तो उसका यह फल सम्पूर्ण नहीं होताहै कहां शय्या, कहांमेरीस्त्री, कहांमेरेमित्र और घरहै २२ प्रांतरभूमिमेंकैसे मैं यहां आकर सोऊंगा धन धान्य आदि वस्तुओं की मेरेघरमें क्यागति होगी २३ कितने दिनों में मैं फिर घरको लौट जाऊंगा इस प्रकार की चिन्तासे व्याकुल होकर जे मनुष्य राह में जाते हैं २४ उनको गंगास्नान का फल सम्पूर्ण नहीं होताहै और हेगङ्गे! आपके किनारे जानेके लिये यह यात्रा मैंने की है २५ हेनदियों में श्रेष्ठ! आपके प्रसादसे निर्विघ्न सिद्धिको प्राप्तहोऊं इसमंत्रको यात्राके समयमें विशेषकर उच्चारण करे २६ प्रसन्न होकर वैष्णवों के साथ स्थानसे जावे न तो बहुत जल्द और न बहुत धीरे धीरेसे जावे २७ चतुर पुरुष गंगाजीकी यात्राओंमें और कर्म न करें गंगाजी के तीर और प्रयाग में वाणिज्य इत्यादिक २८ कार्य जो करता है तिसकी आधी पुण्य नाश होजाती है और जन्म २ के इकट्ठे हुए पाप थोड़े वा बहुत २९ सब गंगादेवी के प्रसादसे नाश को प्राप्त होजावें ऐसा कहकर परमप्रसन्न होकर बुद्धिमान् गंगाजीके किनारे जावे ३० और गंगा माताको देखकर इस मंत्रको कहै कि इस समय में मेरा जन्म सफल हुआ और जीवन भी सुन्दर हुआ ३१ साक्षात् ब्रह्मस्वरूपा आपको नेत्रसे

देखा हे देवि ! आप के दर्शनसे मुझ महापापी के भी ३२ करोड़ जन्मके उत्पन्न पाप नष्ट होगये ऐसा कहकर सब देहको पृथ्वीतल में गिराकर ३३ भक्तिभावसेयुक्त होकर गङ्गादेवी को प्रणाम करै तदनन्तर स्रोतके पास हाथ जोड़कर फिर इस ३४ मंत्रको भक्तिभावसे प्रसन्नहोकर पढ़े कि हे गंगेदेवि ! हे संसारकी मातः! हे शुभे! चरणोंसे आपकेजलको छूताहूं इस मेरे अपराधको प्रसन्न होकर क्षमा करने के योग्यहो आपका जल स्वर्ग के चढ़ने के लिये सीढ़ीरूप है ३५ । ३६ इससे हे गंगेदेवि! चरणोंसे छूताहूं आपके नमस्कार है तदनन्तर भक्तिसे गंगाजी के जलको माथे में धारण कर ३७ बुद्धिमान् मनुष्य गंगा यह नाम कहकर स्नान करने के लिये स्रोतमें प्रवेशकरै हे मातः! आपके अत्यन्त चिकने सब पापके नाशकरनेवाले कीचड़ोंसे ३८ मैंने देह लीपी है हेमातः!मेरे पापोंको नाशकीजिये गंगाके कीचड़से लिप्त अंगहोकर गंगा गंगा यह कीर्तनकर ३९ सब पापनाशिनी गंगाजी में स्नानकरै फिर पहले के कहेहुए मंत्रसे मिट्टीलेकर ४० कहेहुए मंत्रसे भक्तिसे स्नानकरै ४१ हे ब्रह्मस्वरूपे गंगे! आपके निर्मल जलमें मैंने स्नान किया है इससे यथोक्त फल देनेवाली होवो ४२ तदनन्तर हे ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य गंगा और नारायणजी का स्मरण कर अपनी इच्छा से संसार की माता गंगाजी में स्नानकरै ४३ इसप्रकार गंगाजी में स्नानकर देहको कपड़ेसे पोंछकर कपड़ेपहने जलको गंगाजी में न छोड़े ४४ बुद्धिमान् मनुष्य गंगाजी में दतूनि न करै जो मोहसे करै तो गंगास्नान से उत्पन्न पुण्य को नहीं प्राप्त होवे ४५ प्रातःकाल और जगह दतूनि आदिक क्रियाको कर रात्रिवासको छोड़कर गंगाजी में स्नानकरै ४६ बाहर की भूमिमें विना गये जो गंगाजी में स्नान करताहै वह संपूर्ण गंगाजीके स्नान के फलको नहीं पाता है ४७ बुद्धिमान् मनुष्य गंगाजी में स्नान कर स्थान स्थान में मिट्टीके पुण्ड्र को धारण कर फिर स्थिरमन होकर विधिपूर्वक तर्पण आदिक करै ४८ गंगाजीके जलसे जो पितरों को तर्पण करता है तो तिसके पितर सौकरोड़ वर्षतक तृप्त

रहतेहैं ४९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! गंगाजी में जो पितृश्राद्ध करता है तो उस के पितर संतुष्ट होकर स्वर्ग में स्थित होते हैं ५० गंगाजी में स्नानकर्मोंको समाप्तकर व्रत, दान, देवपूजन, जप, तथा और क्रिया जो की जातीहै उनका नाश नहीं होताहै ५१ स्नान-कर्मोंको समाप्तकर गंगाजी में व्रत कर पंचमहायज्ञों को करके गंगाजीकी पूजाकरै ५२ बुद्धिमान् मनुष्य गंगा देवी की तथा श्री विष्णुजी की मूर्त्तिको भक्तिसे नारियल के जलसे स्नान करावै ५३ गंगाजीकी मूर्त्तिके अभावसे नारियल का जल निश्चय कर गंगाजी को हृदय में स्मरण कर गंगाजीके जल में छोड़देवे ५४ सुन्दर चन्दन, घीसे पूर्ण उज्ज्वल दीप, सुगन्धित धूप, अनेक प्रकार के मनोहरफूल ५५ अनेक प्रकार के फल, सुन्दर पकीहुई उत्तम नैवेद्य, पाद्य, अर्घ, आचमनीय, खैरसे युक्त पान ५६ तथा और विशिष्ट भेंट, स्तोत्र और अनेक प्रकार की नैवेद्यों से गंगा और विष्णुजी को पूजन करै ५७ तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य पूजित हुई देवी और विष्णु परमेश्वरजी की भक्तिसे तीन बार प्र-दक्षिणा करै ५८ तिस पीछे दूसरे दिन निराहार स्थित होकर हे नदियोंमें श्रेष्ठ! हे जह्नुकीकन्या! हे पापरहित! मैं भोजन करूंगा मुझको शरण हूजिये ५९ इस प्रकार बुद्धिमान् कर्म्म, मन और वाणीसे संकल्प कर निद्रा जीतकर अत्यन्त हर्षित होकर रात्रिमें जागरण करै ६० और शक्ति न होवे तो फलोंको भोजन करै अ-न्नमात्र न भोजन करै और दोबार भोजन करै ६१ हे जैमिनि! प्रातःकाल गङ्गाजी और विष्णुजीको फिर पूजनकर द्रव्य के अनु-रूप ब्राह्मण को दक्षिणा देवे ६२ हे गंगे! पूजन और जागरण जो आपके आगे किया है वह सब आपके प्रसादसे छिद्ररहित होवे ६३ ऐसा कहकर नित्यकी पूजाकर ब्राह्मण तिनको नमस्कार करै फिर बन्धुओंसमेत आपभी पारणकरै ६४ इस प्रकार गंगाजी के किनारे जो तीर्थव्रत करताहै तिसके पुण्यफलको मैं कहताहूं सु-निये ६५ और जन्मों के इकट्ठे कियेहुए पापोंसे छूटकर विष्णुरूप धारण करनेवाला विष्णुजी के पुरमें प्राप्त होकर विष्णुजी के साथ

पर भी इस प्रकारका दुःख हम लोग कैसे उठावें इस समय गंगा जीमें देह छोड़ने की इच्छाहै १०१ इससे हे कांते ! क्या युक्त है तिस को कहिये दुःख रूपी समुद्र के तरने की इच्छाहै मेढ़की मेढ़क के वचन सुनकर नम्रतायुक्त होकर यह बोली १०२ कि हे स्वामिन् ! दुःख सहने में नहीं समर्थ हैं यह शीघ्रही कीजिये तब दोनों शुभ देनेवाली गंगाजी को स्मरण कर १०३ अत्यन्त प्रसन्न होकर मरने के लिये सहसा से यात्रा करते भये तदनन्तर राह में बहुत काल के भूंखे जाते हुए इनको १०४ पापी भयंकर कालसर्प देखकर बोला कि तुम दोनों पापी मेढ़क और मेढ़की यहां आवो तुम्हारा काल प्राप्त हुआ है १०५ अब निश्चय तुम दोनों मुझ भूंखे करके खाने के योग्य हो तबतो दोनों स्त्री पुरुष दुःख के भागी अत्यन्त डरकर १०६ आगे प्राप्त हुए काल सर्प से भक्तिसे ये वचन बोले कि हे सर्प ! हम दोनों के हृदय में थोड़ा भी मृत्यु का भय नहीं है १०७ मैं पूर्व समय में पृथ्वी में सत्यधर्मा नाम हुआ था और यह विजयानाम मेरी स्त्री स्थित है १०८ मुझ दुरात्मा ने मोह से शरणागत को मारा था तिसी कर्म्म से बहुत समयतक यमराज के यहां दुःख भोगकिया है १०९ अपने कर्म के शेषके भोगकरने के लिये मैं स्त्रीसमेत मेढ़क की योनिमें प्राप्तहुआ हूं पापसे कियाहुआ कर्म नहीं छूटता है ११० हे सर्प! सत्यही हम दोनों परमधामके जानेकी इच्छासे देह छोड़ने के हेतु गंगाजी के तीर को जाते हैं १११ हे सर्प! नरक के क्लेश देनेवाली अज्ञानता को छोड़ो हम दोनों को खाकर आपको कितना सुख होगा ११२ हे सर्प! हम दोनों और आपके हृदयमेंभी भगवान् हैं इससे आपके क्या शत्रुता है ११३ प्राणिहिंसा चतुरों को कभी न करनी चाहिये तिस हिंसाको आपही विधि करताहै ११४ उमर, पुत्र, स्त्रियां, सम्पदा और यशको मनुष्योंकी हिंसादेकर दुष्टविधि आपही हरताहै ११५ जप, तपस्या, दान और यज्ञोंसे क्याहै जिस के हृदयमें सदैव हिंसा ये दो वर्ण रहते हैं ११६ जो प्राणियों का मारनेवाला है सोई भगवान् का मारनेवालाहै क्योंकि सब प्राणि-

योंके शरीर में लक्ष्मीपति भगवान् स्थित रहते हैं ११७ प्राणियों की रक्षा करनेवाले, भगवान् आत्माको अनेकप्रकार की रचकर संसाररूप कौतुक के मन्दिरमें बालककी नाईं आपही क्रीड़ाकरते हैं ११८ देहधारी का शरीर परमात्माजी का स्थान है परमात्मा आपही विष्णुजी हैं इससे हिंसाको छोड़ देवे ११९ पराये प्राणके नाशसे आत्मा की तुष्टि जो होती है १२० तो आत्माकी तुष्टि तो क्षणमात्र के लिये है और दूसरेके प्राण का नाश होगया पृथ्वी में मनुष्योंका यह चरित्र अत्यन्त अद्भुतकी नाईंहै १२१ कि दूसरेको मारकर अत्यन्त यत्नसे आत्माकी तृप्ति करते हैं बुद्धिमान् आत्मका परिज्ञान कभी नहीं करताहै १२२ मैं विष्णुहूं ये विष्णुहैं यह चित्त में भावनाकरै पराये दुःखसे जो दुःखी है और पराई लक्ष्मी से जो सुखीहै १२३ इस संसार में साक्षात् हरि आपही वह जानने के योग्य है और मोहसे ठगेहुए चित्तवाले मनुष्यों का वह सुख धिक्कार है १२४ जो पराई हिंसाके विधान से होताहै सुख वा दुःख जितने प्राणीको दियेजाते हैं १२५ पृथ्वी में थोड़ेही काल में मनुष्य उन को प्राप्त होते हैं तिससे हे सर्प! हिंसाको छोड़कर सुखीहोवो १२६ आपके प्रसन्नहोने में दुःखरूपी महासमुद्र के पारको हम दोनों जावेंगे तब सर्प बोला कि जो पराई हिंसा में निश्चय मुझको अत्यन्तपाप नहीं होता है १२७ तो कैसे ब्रह्मा की सृष्टि में भक्ष्य और भक्षक है तुमने यह सत्य कहा है कि पराई हिंसा न करनी चाहिये १२८ किन्तु सब भक्ष्यों में हिंसा नहीं सम्भावित है और निस्सन्देह नारायण सत्य विश्वरूपहैं १२९ भक्ष्य और भक्षक संज्ञक को आपही रचतेहैं आत्माको आपही रचते, पालते १३० और संहार करते हैं इस प्रकार की हरिजीकी सृष्टि है मैं क्या आपके मारने में समर्थ हूं कालरूपी आपही विधि हैं १३१ इस समय में इस कार्य में आपही भगवान्ने मुझको भेजाहै जो देव तुम दोनोंको रचता है और सदा पालताहै १३२ वही कालरूपी इस समय में मुझ को हेतुबनाकर नाश करताहै व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तदनन्तर तिस सांपने उन दोनों मेढ़क और मेढ़कियों को खालिया

१३३ ये मेढ़क और मेढ़की गंगाकेतीर की यात्रामें पैग पैगमें राहमें बड़ीभूखसे गंगा गंगा यह कहते आये थे १३४ तिससे ये दोनों महात्मा बहुत अश्वमेध यज्ञों के महाफल को प्राप्तहुए १३५ इन दोनों के समान इन्द्र भी नहीं हैं इन्द्र अपने अधिकार से दूसरे को अवलंबनकर १३६ अर्घ्य हाथ में लेकर पैदल चलकर देवतों से युक्त होकर आतेभये तदनन्तर रम्भा, उर्वशी तथा और स्त्रियां प्रसन्न होकर १३७ अपने यौवन से अभिमानयुक्त होकर परस्पर कहतीभईं कि यह पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ, रसका जाननेवाला और अत्यन्त सुन्दर १३८ आता है इसको अपनी सेवासे अपने वशकरेंगी कोई कहतीभई कि मैं सब कलाको जानती हूं १३९ इससे इस राजा की मैं स्त्री हूंगी. कोई कहतीभई कि इन्द्र मेरे वश में हैं तो इस राजा के मेरे वशहोने में क्या आश्चर्य है १४०।१४१ मेरे भर्ता स्वामी और नाथ यही हैं इसप्रकार परमानन्दों से सब सगुण के जाननेवाली सम्पूर्ण स्त्रियां कहतीभईं १४२ तिनका छोटा बड़ासुनकर कोई गुणयुक्त रसके जाननेवाली स्त्री बोली कि यह राजा आपही सौदारुय कांता को सेवता है हे स्त्रियो! लड़ाई करने से क्याहै १४३ तब सब स्त्रियां लड़ाई छोड़कर सब गहनों से भूषित होकर हृदय के उत्साहों से आतीभईं १४४ तदनन्तर पापरहित स्त्रीसमेत श्रेष्ठ राजाको पाद्यादिकों से इन्द्र के कहने से पूजन भी करतीभईं १४५ फिर इन्द्र स्त्रीसंयुक्त राजा को पुष्पक रथ में बैठालेताभया और नगारा, मृदंग, मधुरी, डिंडिम, आनक, १४६ हाथके कंकण, करताल और जयके शब्दों से स्वर्गमें बड़ा शब्द होताभया १४७ देवताओं की स्त्रियां पवित्र हाथों में सफेद चामरकी पवनों से हवा करनेलगीं इस प्रकार स्त्रीसमेत राजा स्वर्गको जाता भया १४८ तदनन्तर शुभ आपही इन्द्र तिस सत्यधर्म राजाको नाशकी शंकासे अपने आसनका आधा देते भये १४९ तब भगवान् की कृपासे यह राजा इन्द्रके साथ सदैव एक आसन पर बैठकर स्वर्ग में इन्द्रभाव करता भया १५० हज़ार करोड़युग स्वर्ग में सबसुख भोगकर रथपर चढ़कर भगवान्की

आज्ञासे वैकुण्ठ को जाताभया १५१ तहांपर मनोरम सब भोग मन्वन्तरपर्यन्त भोगकर स्त्रीसमेत मोक्षको प्राप्त होजाता भया १५२ हे ब्राह्मण! गंगातीर की यात्रामें राहमें देह छोड़ने वालेका इसप्रकार का सब फल मैंने कहा १५३ तत्त्वदर्शी नारदादिक महर्षियोंने गंगातीर के जाने में कालका नियम नहीं कहाहै १५४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जब जब गंगाजीमें स्नान करै तब तब मनुष्य नाशरहित पुण्य को पाता है १५५ गंगा सब पापों को नाश करती है यहवारंवार निश्चय करै और तिसपापको गंगा न पवित्र करेंगी १५६ इस पापबुद्धिको छोड़कर हे मनुष्यो! संसारकी माता गंगाजीमें जो अच्छीगतिकी इच्छा चाहो तो स्नान करो १५७ हे ब्राह्मण! मनुष्योंको जो पुण्य गंगाजीके स्नानसे मिलती है वह कितनेही दुस्तर कर्मोंसे प्राप्त होतीहै १५८ पृथ्वीकी धूलि के कणों की गिन्ती करना तो हो सक्ताहै परन्तु गंगाजी के गुण कहनेको नहीं समर्थ होसक्तेहैं १५९ तुम्हारे सब शास्त्रों को विचारकर मैंने कहा है मनुष्य गंगाजीके जलमें एकबार भी स्नान कर मोक्ष को प्राप्त होजाता है १६० हे ब्राह्मण! जो कुंयें के जलमें भी गंगा और देवताओंके प्रभुको चिन्तनाकर स्नान करता है वह सम्पूर्ण दुःख, शोक, पाप और भयके समूहके नाश करनेवाली श्रीगंगाजी के प्रसाद से सब गऊ और ब्राह्मण की हत्याआदिक पापसमूहों से छूटकर सब सुख देनेवाले विष्णुजीके पुरको जाताहै १६१ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेगंगामाहात्म्येनवमोऽध्यायः ९ ॥

# दशवां अध्याय ॥

चम्पाके फूलकी महिमा वर्णन ॥

जैमिनिबोले कि हे गुरो व्यासजी! आपके प्रसाद से यह गंगाजीका माहात्म्य तो मैंने सुना अब इस समयमें विष्णुजीकी पूजा के फलके सुननेकी इच्छाहै १ तब व्यासजी बोले कि हे वत्स जैमिनि! भगवान्‌के उत्तम पूजाके फल को सुनो जिसको सुनकर सब मनुष्य उत्तम ज्ञानको प्राप्त होतेहैं २ हे ब्राह्मण! माघ आ-

... महीने में सनातन भगवान् जिन विध...
...हैं तिनको मैं कहता हूं सुनिये ३ उत्तम वैष्णव शु...
...न उत्तम माघमासके प्राप्तहोने में मांस और मैथुन को...
...देवे ४ नित्यही प्रातःकाल स्नानकरै तेल, दूसरी बारका भोज...
और पराया अन्न माघमासमें छोड़देवे ५ प्रातःकाल सफेद कपड़े
पहनकर पंचमहायज्ञकर स्थिरचित्त होकर मनुष्य विष्णुजीकीपूजा
को प्रारम्भ करै ६ कुछ,गरम शुद्ध जलोंसे नाशरहित विष्णुजीको
स्नान करावे फिर अत्यन्त श्लथ चन्दनों से विष्णुजी के अंगों को
लेपनकरै ७ और देवोंके देव, चक्रधारी, संसारके स्वामीको पूजन
करै धोये हुए बर्तनों को जलसे हीन करावे ८ कुछ गरमजलसे सं-
सारके नाथ को स्नान कराकर तिनके शरीरको यत्नसे सुन्दर कप-
ड़ेसे पोंछे ६ हेश्रेष्ठ ब्राह्मण ! माघमासमें कुछ गरमजलसे केशवजी
के स्नान करानेके फलको मैं कहताहूं १० जन्म जन्मके इकट्ठे किये
हुए सब पापोंसे छूटकर इसलोकमें सब सुख भोगकर अन्तमें भ-
गवान्के स्थानको जाताहै ११ यत्नसे बर्तनोंको धोकर जलोंसे शुद्ध-
कर जो जगन्नाथजीको पूजनकरताहै तिसकी पुण्य को सुनिये १२
सब व्याधियों से छूटकर इस लोकमें सब कामनाओं को भोगकर

वान् के शीतको सुन्दर कपड़े से नाशकरे १९ जो मनुष्य एक बार भी माघ में भगवान् को नारियल के जल और दूधसे स्नान कराता है तिसके फलको मैं कहताहूं २० वह मनुष्य अपने कर्म से दुस्तर नरकरूपी समुद्र में डूबतेहुए करोड़ पुरुषों को उद्धार कर भगवान् के पदको प्राप्त होता है २१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! माघ मासके शुक्ल और कृष्ण पक्षकी पंचमी और एकादशीमें विशेषकर भगवान् की पूजा करनीचाहिये २२ और देवोंके देव, लक्ष्मीसमेत मुरारिजी को माघमास में दिनदिन में धूप समेत खीरदेनी चाहिये २३ हे वैष्णव जैमिनि! माघमास में जो भगवान् को धूपसमेत खीर देताहै तिसके पुण्यफलको कहताहूं सुनिये २४ अंतकाल में विष्णुजीके पुरको जाकर चार मन्वन्तरपर्यन्त भगवान् के प्रसादसे मनोरम भोगों को भोगकर २५ फिर पृथ्वी में आकर चक्रवर्ती राजा होताहै और बहुत कालतक भोग भोगकर मरकर भगवान् के स्थान को प्राप्त होता है २६ पंचमी वा सप्तमी वा एकादशी में अशक्त वैष्णव श्रेष्ठ अन्न मुरारिजी को देवे २७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! कृष्णपक्ष से शुक्लपक्ष में विशेषता है शुक्लपक्ष में इन तिथियों में मुरारिजी को अन्न देवे २८ जो मनुष्य एक दिन भी दैत्यों के जीतनेवाले विष्णुजी को पुवोंसमेत खीरदेता है तिसको भगवान् दुर्लभ नहीं हैं २९ जो कुछ ब्राह्मण की प्रसन्नता के लिये माघमास में दियाजाता है वह पुरुष का नाशरहित होता है कोई इस में सन्देह नहीं है ३० हे ब्राह्मण! जो कुछ माघमास में शुभ वा अशुभकर्म किया जाताहै तिसका सौ मन्वंतरों में भी नाश नहीं है ३१ माघ में चम्पाके फूल से जो भगवान् को पूजता है वह सब पापों से छूटकर परमधाम को जाताहै ३२ और जितने चम्पाके फूल भगवान् को दिये जातेहैं तितने हजारयुग देनेवाला विष्णुजीके मन्दिर में स्थित होताहै ३३ सुमेरु पर्वत के समान सोना देकर जो फल होताहै वह एकही चम्पाके फूल से भगवान् को पूजनकर होताहै ३४ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! चम्पा का फूल सदैव भगवान् को प्रिय है माघमास में विशेष कर

दिक बारहों महीने में सनातन भगवान् जिन विधानों से पूजने चाहिये तिनको मैं कहता हूं सुनिये ३ उत्तम वैष्णव शुभसब मासोंमें उत्तम माघमासके प्राप्तहोने में मांस और मैथुन को त्याग देवे ४ नित्यही प्रातःकाल स्नानकरै तेल, दूसरी बारका भोजन और पराया अन्न माघमासमें छोड़देवे ५ प्रातःकाल सफेद कपड़े पहनकर पंचमहायज्ञकर स्थिरचित्त होकर मनुष्य विष्णुजीकीपूजा को प्रारम्भ करै ६ कुछ,गरम शुद्ध जलोंसे नाशरहित विष्णुजीको स्नान करावे फिर अत्यन्त श्लथ चन्दनों से विष्णुजी के अंगों को लेपनकरै ७ और देवोंके देव, चक्रधारी, संसारके स्वामीको पूजन करै धोये हुए बर्तनों को जलसे हीन करावे ८ कुछ गरमजलसे संसारके नाथ को स्नान कराकर तिनके शरीरको यत्नसे सुन्दर कपड़ेसे पोंछे ९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! माघमासमें कुछ गरमजलसे केशवजी के स्नान करानेके फलको मैं कहताहूं १० जन्म जन्मके इकट्ठे किये हुए सब पापोंसे छूटकर इसलोकमें सब सुख भोगकर अन्तमें भगवान्‌के स्थानको जाताहै ११ यत्नसे बर्तनोंको धोकर जलोंसे शुद्धकर जो जगन्नाथजीको पूजनकरताहै तिसकी पुण्य को सुनिये १२ सब व्याधियों से छूटकर इस लोकमें सब कामनाओं को भोगकर अन्त में हज़ार युगतक भगवान् के मन्दिर में स्थित होता है १३ प्रातःकाल संसार की संध्या में भगवान् के आगे वैष्णव मनुष्य धूमरहित प्रकाशित अग्नि को स्थापितकरै १४ शीतके निवारण के लिये वैष्णव मनुष्य सायंकाल और प्रातःकाल माघ में विष्णुजीके आगे प्रकाशित अग्निको करता है उसके फलको सुनिये १५ पुत्र और पौत्रोंसे युक्त होकर इस लोकमें सब कामनाओं को भोगकर अन्त में देवताओं से भी दुर्लभ विष्णुजीके पुरको प्राप्त होता है १६ जैसे आत्मा है तैसेही विष्णुजी हैं सन्देह नहीं विद्यमान हैं शय्या के ऊपर सोतेहुए देवदेवोंके स्वामी भगवान् को १७ मनुष्य जैसे अपने शीत के निवारण को करता है तैसेही करै माघमास में जो जनार्दनजी को दूधसे स्नान कराता है तिसको देवोंमें उत्तम विष्णुजी क्या नहीं देतेहैं १८ तैसेही भग-

वान् के शीतको सुन्दर कपड़े से नाशकरे १९ जो मनुष्य एक बार भी माघ में भगवान् को नारियल के जल और दूधसे स्नान कराता है तिसके फलको मैं कहताहूं २० वह मनुष्य अपने कर्म से दुस्तर नरकरूपी समुद्र में डूबतेहुए करोड़ पुरुषों को उद्धार कर भगवान् के पदको प्राप्त होता है २१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! माघ मासके शुक्ल और कृष्ण पक्षकी पंचमी और एकादशीमें विशेषकर भगवान् की पूजा करनीचाहिये २२ और देवोंके देव, लक्ष्मीसमेत मुरारिजी को माघमास में दिनदिन में धूप समेत खीरदेनी चाहिये २३ हे वैष्णव जैमिनि! माघमास में जो भगवान् को धूपसमेत खीर देताहै तिसके पुण्यफलको कहताहूं सुनिये २४ अंतकाल में विष्णुजीके पुरको जाकर चार मन्वन्तरपर्यन्त भगवान् के प्रसादसे मनोरम भोगों को भोगकर २५ फिर पृथ्वी में आकर चक्रवर्ती राजा होताहै और बहुत कालतक भोग भोगकर मरकर भगवान् के स्थान को प्राप्त होता है २६ पंचमी वा सप्तमी वा एकादशी में अशक्त वैष्णव श्रेष्ठ अन्न मुरारिजी को देवे २७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! कृष्णपक्ष से शुक्लपक्ष में विशेषता है शुक्लपक्ष में इन तिथियों में मुरारिजी को अन्न देवे २८ जो मनुष्य एक दिन भी दैत्यों के जीतनेवाले विष्णुजी को पुवोंसमेत खीरदेता है तिसको भगवान् दुर्लभ नहीं हैं २९ जो कुछ ब्राह्मण की प्रसन्नता के लिये माघमास में दियाजाता है वह पुरुष का नाशरहित होता है कोई इस में सन्देह नहीं है ३० हे ब्राह्मण! जो कुछ माघमास में शुभ वा अशुभकर्म किया जाताहै तिसका सौ मन्वंतरों में भी नाश नहीं है ३१ माघ में चम्पाके फूल से जो भगवान् को पूजता है वह सब पापों से छूटकर परमधाम को जाताहै ३२ और जितने चम्पाके फूल भगवान् को दिये जातेहैं तितने हजारयुग देनेवाला विष्णुजीके मन्दिर में स्थित होताहै ३३ सुमेरु पर्वत के समान सोना देकर जो फल होताहै वह एकही चम्पाके फूल से भगवान् को पूजनकर होताहै ३४ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! चम्पा का फूल सदैव भगवान् को प्रिय है माघमास में विशेष कर

पवित्र और भगवान् को प्रियहै ३५ चम्पा के सुन्दर फूलों से जिसने विष्णुजीको नहीं आराधन कियाहै वह रत्न और सुवर्ण आदिकसे जन्म जन्म में हीन होता है ३६ हे श्रेष्ठब्राह्मण! चम्पा फूलका फल मैं विशेषकर कहता हूं उत्तम इतिहाससमेत सुनिये ३७ सुवर्ण नाम राजा बलवान्, सब शास्त्रों का जानने वाला सब आर्यावर्तोंमें हुआ यह तेज ३८ राजलक्ष्मी, विद्या और उमरसे अत्यन्त मतवाला और सदैव पापमें रतथा ३९ इस राजाने पाखण्डी मन्त्रियों के वाक्योंसे विना दोषके भी साधु मनुष्यों को धनके लोभसे दण्ड दिया ४० और गीत और वाद्य आदिकसे युक्त और यज्ञ दान से वर्जित होकर अन्यायसे इकट्ठा की हुई सब द्रव्य को नाश करदिया ४१ न जातिकापालन, न देवता, ब्राह्मणको भोजन और न याचकों को प्रसन्न किया सदैव पापसे मोहित ४२ पापका स्थान और सदैव पापमें परायण होकर अतिथिकी पूजा भी न करता भया और नित्यही स्थान से जाता भया ४३ समर्थ यह सैकड़ों वर्ष अज्ञानियों के बहुत से पाप करता भया जो गिनेही नहीं जा सक्ते हैं ४४ एक समयमें काम से मोहित, दुष्ट आशयवाला यह राजा आधीरात को वेश्याके स्थान में जाता भया ४५ तब उज्ज्वल नाम वाली वेश्या राजाको आते देखकर सहसा से शय्यासे उठकर तिनके चरणोंकी वन्दना करती भई ४६ और उत्तम जलसे उनके दोनों चरणों को धोकर दोनों हाथों से आलिंगनकर मंचमें प्रवेश कराती भई ४७ तबकुतूहली राजा तिस वेश्याके प्रेमरूपी अमृत की धाराओंसे सींचे जाकर तिसी शय्या में तिसके साथ बसते भये ४८ तदनन्तर प्रीतिसे हँसतीहुई नवयौवना वेश्या तिस राजा को आपही चम्पाके फूलोंका माला देतीभई ४९ तब उस फूलकी माला से राजा के हाथ से एक फूल जो कि सुगन्धसे दिशाओं के अन्तर को व्याप्त कियेहुए था वह पृथ्वी में गिरपड़ा ५० तो उस गिरेहुए फूलको देखकर राजा अत्यन्त संभ्रम से ॐ नमोनारायणाय कहताभया ५१ नारायणाय इस वाक्य से चम्पाके फूल के देनेसे तिस राजा के

सब पाप नाश होगये ५२ तदनन्तर गांव के सब मनुष्य तिसीरात्रि में अत्यन्त दुर्जय वेश्या के घर में स्थित राजा को मारडालतेभये ५३ तब क्रोधयुक्त होकर यमराजजी सब पापियों में श्रेष्ठ तिस राजा के लानेकेलिये दूतों को भेजतेभये ५४ तब तो यमराजजीकी आज्ञापाकर फँसरी और मुद्गर हाथ में लेकर क्रोधसे लालनेत्र कर दूत अत्यन्त वेगसे जातेभये ५५ और अपने स्थान के लेजाने के लिये उद्यम करतेभये तदनन्तर नारायणजी के दूत शङ्ख चक्र और गदा को धारण कर ५६ गरुड़ पर चढ़कर तिसी राजा के लेनेके लिये जातेभये वहां पर फँसरीसे बँधेहुए राजा को देखकर भगवान् के दूत ५७ महाबलवान् चक्र और गदाओं से यमराज के दूतों को मारतेभये और सुन्दर रथमें चढ़ाकर अत्युत्तम शंखों को बजातेभये ५८ और तैसेही राजा रथपर चढ़कर तुलसी की माला से भूषित होकर पीलेरेशमी कपड़ोंको पहन,सोने के गहनों से भूषित, ५९ वेद और वेदाङ्ग के पारगामी मुनिसमूहों से स्तुतिको प्राप्त और विष्णुजीके दूतों से युक्त होकर हरिजी की सालोक्यको प्राप्त होताभया ६० तदनन्तर विष्णुजी आपही उठ कर दीर्घ चार भुजाओंसे तिस राजाको आलिंगनकर बोले ६१ कि हे पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ राजन्! कुशल कहिये आपका क्या साध्य है तिसको आज्ञा दीजिये ६२ नमोनारायणाय यह एक बारभी जो कहता है तिसके नित्यही हम अनुपाल्य, वही भाई और मेरा पिता है ६३ कदाचित् जो मनुष्य नारायण यह मेरा नाम स्मरण करता है तो उसके मैं सब कामोंको इसप्रकार सिद्ध करताहूं जैसे पुत्र पिताके कामोंको सिद्ध करता है ६४ हे राजाओं में श्रेष्ठ! तुम मेरे भक्तहो इससे अद्भुत अपने मनोरथ को प्रकाशित कीजिये इस समयमें मैं आपको क्यादूं ६५ तब राजा बोले कि हे दयाके समुद्र! आपने निस्सन्देह सब कुछ दियाहै जो पापीभी मैंने आपके दुर्लभ स्थानको प्राप्त किया है ६६ तिसके इस वाक्यसे भगवान् प्रसन्न होगये और स्नेहसे राजाको निवेशित करतेभये तिसको सुनिये ६७ तब कृपायुक्त भगवान् विश्वकर्माके रचेहुए सोनेके गहनोंसे आपही

तिसका मण्डल करते भये ६८ तदनन्तर अत्यन्त सहनशील विष्णुजीने अनेक प्रकारकी सुन्दर, दुर्लभ भक्ष्योंसे राजाको प्रसन्न किया ६९ इस प्रकार राजा प्रतिदिन विष्णुजीके मन्दिर में स्थित होता भया और धर्म में तत्पर होकर हज़ार मन्वन्तर और नवसौ वर्ष प्रजाओंका पालन करताभया और निरन्तर श्रेष्ठ भक्तिसे भगवान्का पूजन ७०।७१ पवित्र चम्पाके फूल और अनेक प्रकार की नैवेद्योंसे करताभया और उमरके अन्तमें गंगाजी के किनारे मरणको ७२ प्राप्तहोकर भगवान्के प्रसादसे मोक्षको प्राप्तहोजाता भया व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण जैमिनि! चम्पाके फूलका यह प्रभाव कहा ७३ पापी मनुष्यभी चम्पाके फूलोंसे भगवान्को पूजनकर मुक्तहोगये हैं फूलेहुए चम्पाके फूलसे पूजितहुए भगवान् हरि ७४ थोड़ेही समय में परमपद देते हैं जे इच्छा वा विनाही इच्छाके परमेश्वरको पूजन करते हैं ७५ वे भी सब पापोंसे छूटकर परंधामको प्राप्तहोते हैं ७६ भगवान्के प्रसन्न होने में पाप कहां रहते हैं जिससे कि पाप करनेवाला राजाभी भगवान्की कृपासे गंभीर इस संसारसमुद्रको तरकर मोक्षको प्राप्त होजाताभयाहै ७७ जो मनुष्य सुन्दर सुगन्धित चम्पाके फूलोंसे कमलदलके समान विस्तृत नेत्रवाले भगवान्को भक्ति और परम आदरसे पूजन करताहै वह पापोंको छोड़कर मोक्षको प्राप्त होजाताहै ७८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेचम्पकपुष्पमहिमानामदशमोऽध्यायः १०॥

## ग्यारहवां अध्याय॥

भगवान्के पूजनकी विधि वर्णन॥

व्यासजी बोलेकि हे विप्रर्षे! जैमिनि! हे वत्स जिस विधि से सदैव भगवान् पूजने चाहिये तिसको मैं कहताहूं एकाग्र होकर सुनिये १ बुद्धिमान् मनुष्य प्रातःकाल शय्यासे उठकर कपड़ेसे मस्तकको आच्छादितकर लोटेमें जल लेकर बाहरजावे २ तहांपर उत्तर दिशामें मौनहोकर यज्ञोपवीतोंको कानों में चढ़ाकर बैठकर मलमूत्रको त्यागे ३ देवताका स्थान, राह, गोशाला, चौरा-

हा, गांव के भीतरकी राह, जोती भूमि, कुशकी जड़, आंगन, ४ नदीके किनारे, चैत्य के वृक्षकी जड़, वन, ताल और बावली के भीतर मलमूत्रको न त्यागे ५ बुद्धिमान् मनुष्य जब तक मलमूत्र छोड़े तब तक सूर्य, चन्द्रमा, ब्राह्मण, गऊ और दशों दिशाओं को न देखे ६ और मुसरिया आदिकों से खोदीहुई बिलके भीतर की वर्तमान और फालसे जोतीहुई मिट्टीको शौचके लिये न ग्रहण करै ७ जलसे जल लेकर चतुर पुरुष शौचकरे और बुद्धिमान् मनुष्य जलोंमें पांव देकर शौच न करै ८ रात्रिमें दक्षिणमुख होकर वस्त्रसे शिरको आच्छादितकर दिशा फिरे तिस पीछे शौचकरै ९ एक मिट्टी लिङ्गमें, तीन गुदामें, सात बायें हाथमें और दोनों हाथोंमें दश १० और बुद्धिमान् दोनों पांवोंमें छःमिट्टी देवे शौचकी क्रियाकर फिर दतूनिकरै ११ दांतों के आच्छादन आदिकों से जिह्वाको शुद्धकरै दक्षिण तथा पश्चिममुख होकर १२ दतूनि न करै जो करै तो नरकमें जावे मध्यमा अनामिका और वृद्धांगुष्ठसे १३ दतूनिकरै तर्जनी अंगुली से कभी न करै पीपल, बरगद, आंवला और कैथाके वृक्षकी दतूनों से १४ तथा इन्द्रसुरकी दतूनिसे दांतोंको नहीं धोवे नित्यकी क्रिया फल सब उसकी इनवृक्षों की दतूनि करने से नष्ट होजती है १५ हे जैमिनि ! जो स्नानके समयमें दतूनि करता है उसके पितृ, देवता और ऋषि निराशहोकर चले जाते हैं १६ जो दोपहर और तीसरे पहर दतूनि करताहै तिसकी देवता पूजा और पितृ जल नहीं ग्रहणकरते हैं १७ स्नानके समय में जो तलैयामें दतूनिकरता है तो वह जब तक गंगाजी को नहीं देखताहै तब तक चाण्डालही जानने योग्यहै १८ भगवान् सूर्यके उदय में जो दतूनिकरताहै तो पितृ दुःखित होकर दतूनिकी लकड़ीको खाकर चलेजाते हैं १९ व्रतके दिन और पिताकी श्राद्धके दिन दतूनि करनेवाला मनुष्य तिस फलको नहीं प्राप्त होताहै २० प्रातःकाल दांतों को शुद्धकर कपड़ेसे जीभको भी शुद्धकरै फिर बुद्धिमान् जलसे बारह कुल्लेकरै २१ व्रत और पिताकी श्राद्धमें इस विधिसे दतूनि करनेवाला मनुष्य संपूर्ण फलको प्राप्त होताहै २२

इस विधिसे दीर्घदर्शी मनुष्य बाहर दिशा फिरकर अपने घर आकर रात्रिके कपड़ों को त्याग करदेवै २३ तदनन्तर पवित्र बुद्धिमान् मनुष्य देवता के स्थानके द्वारमें बैठकर नारायण, देव, अनंत, परमेश्वरको स्मरण करै २४ हे राम! हे श्यामवर्ण देहवाले! हे विष्णु! हे नारायण! हे दयामय! हे जनार्दन! हे संसारके धाम! हे केशवजी! मेरेपापोंको नाश कीजिये २५ हे पीतांबर धारण करनेवाले! हे अनंत! हे पद्मनाभ! हे जगन्मय! हे वामन! हे प्रणतोंके ईश! हे विभो! आपशरणहूजिये २६ हे दामोदर! हे यदुश्रेष्ठ! हे श्रीकृष्ण! हे दयाके समुद्र! हे कमलनयन! हे देवोंमें श्रेष्ठ! हे वासुदेवजी! कृपा कीजिये २७ हे गरुड़ध्वज! हे गोविन्द! हे विश्वंभर! हे गदाधर! हे शंख, चक्र और पद्म हाथमें धारणकरनेवाले! आपदाओंको नाशकीजिये २८ हे लक्ष्मीविलास! हे वैकुण्ठ! हे हृषीकेश! हे देवताओंमें उत्तम! हे पुरुषोंमें उत्तम! हे कंसकेवैरी! हे कैटभ राक्षसके शत्रु! भयहरिये २९ हे लक्ष्मीके पति! हे लक्ष्मी के धारण करनेवाले! हे विभो! हे लक्ष्मी के देनेवाले! हे लक्ष्मी के करनेवाले! हे लक्ष्मी के पति! हे परंब्रह्म, हे परंधाम! हे नाशरहित! हमको शरण हूजिये ३० इसप्रकार बुद्धिमान् मनुष्य श्री विष्णुजीका स्मरणकर स्थानमें प्राप्त होकर हाथ जोड़कर यह कहे ३१ कि हे ईश्वर! हे लक्ष्मी के पति! हे कृष्ण! हे देवकी के पुत्र! हे प्रभो! हे संसारके नाथ! प्रातःकाल हुआहै निद्राको छोड़िये ३२ तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य निद्रा छोड़कर शय्या में उठे हुएकी नाईं लक्ष्मी समेत भगवान् को अपने चित्तसे चिन्तन करै ३३ तदनन्तर वैष्णव मनुष्य कृतच्छद, जलसे पूरित सुन्दर बर्तन को मुख धोनेके लिये कृष्णजी को देवे ३४ जैसे सेवकवर्तन के लिये ईश्वरको सेवन करते हैं तैसेही बुद्धिमान् परमेश्वरको सेवन करते हैं ३५ हे विप्रर्षे! जो सेवकके रूपसे भगवान्‌को सेवन करताहै तिसका थोड़ेही कालमें वांछित सिद्ध होताहै ३६ जैसे सेवक मालिककी डरसमेत सेवा करते हैं तैसेही बुद्धिमान् सदैव हरि, प्रभुजीकी सेवा करतेहैं ३७ इस अपनी इच्छासे निर्भय मनु-

ष्य विष्णुजीको पूजन करै बुरा सेवक वही है जो भगवान्‌को नहीं पूजताहै इससे बुरा सेवक नहीं होवे ३८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इससे मोक्षकी इच्छा करनेवाले पुरुषको सदैव शीघ्रही भगवान् की पूजन करनी चाहिये ३९ वैष्णव मनुष्य निर्माल्य, रात्रिके वस्त्र और बासी चन्दनको प्रातःकाल भगवान्‌के अंगसे उतार देवे ४० तदनन्तर तिस देवताके स्थानमें बुद्धिमान् मनुष्य आपही बहारी से धीरे धीरे बहारे ४१ तिस स्थानसे जितनी धूलि बाहर चली जाती हैं तितने सौ मन्वन्तर मनुष्य विष्णुजीके मन्दिरमें स्थित होता है ४२ जो ब्राह्मण का मारनेवाला भी भगवान्‌के घरमें झाड़ू देवे तो वह भी परंधामको प्राप्त होवे और बहुत कहनेसे क्या है ४३ तथा ऊर्णक गोबरोंसे लीपे फिर तिस विष्णुजी के घरमें बुद्धिमान् नारायण प्रभुजी को स्मरण करै ४४ जो भगवान्‌के मन्दिर को लीपताहै तिसकी पुण्यको मैं संक्षेपसे कहताहूं हे जैमिनि! सुनिये ४५ हे ब्राह्मणों में उत्तम! तहां पर जितनी धूलि नाश होती हैं तितने हज़ार कल्प मनुष्य सुखपूर्वक विष्णुजी के मन्दिरमें स्थित होता है ४६ मनुष्य विष्णुजी के घरको बहारकर लीपै तो परमधामको प्राप्त होताहै और भगवान्‌की पूजाके फल जाननेसे क्या है ४७ जो आप देवराज विरोधसे न समर्थ होवे तो भगवान् के घरमें अपनी धर्मपत्नीको युक्तकरै ४८ अथवा भक्त, सुन्दर चरित्र वाले पुत्र, भाई, वा बहनको देवस्थानमें युक्तकरै ४९ भगवान्‌के पूजा की वस्तुओंको शुद्धजलोंसे सात वा तीनप्रकार आपही अत्यन्त यत्न से धोवे ५० तांबेके बर्तन खटाई से, कांसेके वर्तन भस्म से, लोहे के वर्तन अग्निसे निस्सन्देह शुद्ध होतेहैं ५१ धनवान् होकर जो लोहेके वर्तनमें स्थित जलोंसे नारायण जगन्नाथजीको स्नान करवाता है तिसके ऊपर भगवान् प्रसन्न नहीं रहतेहैं ५२ वा अज्ञान से जो स्नान लोहेके पात्रमें स्थित जलोंसे करवाताहै तो गंगाजीके स्नान करनेसे शुद्ध होजाता है ५३ विपत्तिमें वर्त्तनका नियम नहीं है यह शास्त्रोंमें निश्चय है और यत्नसे धोया हुआ शङ्ख जो फिर पृथ्वीको स्पर्श करजावे ५४ तब वह शङ्ख सौबार धोये से शुद्ध

होताहै इस प्रकार भगवान्‌की पूजाद्रव्यों को यत्नसे धोकर ५५ स्नानकी वस्तुओं को लेकर स्नानके लिये तालाबको जावे स्नान कर्मोंको विनाकिये जो घरको फिर आताहै ५६ तो तिस दिन पितृ-गण तिसके तर्पणको नहीं प्राप्त होते हैं स्नान वा भोजन करने के लिये जानेवाले को जो मोहसे विघ्न करता है वह निश्चय नरक में जानेवाला होता है और स्नान करने के लिये जो तालाब में जाकर मल और मूत्र करता है ५७। ५८ तो उसके पितृ निस्स-न्देह विष्ठा और मूत्र के भोजन करने वाले होते हैं तदनन्तर विधि पूर्वक स्नान और तर्पण आदिक कर ५९ अपने घरमें आकर बुद्धिमान् मनुष्य नारायणजीको स्मरण करै फिर आंगनमें दोनों चरणों को धोकर ६० पवित्र, ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मनुष्य देवता के स्थान में प्रवेश करै और विना चरण धोये जो मनुष्य देवता के स्थान में प्रवेश करता है ६१ तो सालभर की तिसकी की हुई पुण्य तिसी क्षणमें नाश होजाती है चतुर मनुष्य स्नान कर आं-गनों में आकर ६२ दोनों चरणों को धोकर देवता के स्थान में प्रवेश करै और वहांपर बैठकर बुद्धिमान् बायें हाथ से दोनों चर-णोंको ६३ यत्न से धोकर फिर तैसेही दोनों हाथों को भी धोवे हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो मूर्ख मनुष्य पांवसे पांवको तथा दहने हाथसे पांवको धोताहै तो उसको लक्ष्मीजी निश्चय छोड़ देती हैं तद-नन्तर बुद्धिमान् मनुष्य बैठकर भगवान्‌के पूजनको प्रारम्भ करै ६४। ६५ जो कि सब कामना और फलके देनेवाले हैं अनन्य मनहोकर मृगचर्म के शुद्ध आसन वा व्याघ्रके चर्मके आसन ६६ केवल वस्त्रके आसन तथा कुशमय आसन वा फूलके आसन में बैठकर भगवान् को पूजन करै ६७ विद्वान् ब्राह्मण काष्ठके आसन में बैठकर विष्णुजीका पूजन न करै हे पृथ्वि! तुम विष्णुजीसे धारण की गई हो सब लोक तुमने धारण किये हैं ६८ इससे हे सब सहने वाली! मेरे बसने के लिये उत्तम स्थान दीजिये ऐसा कहकर ना-रायणजीका पूजन करनेवाला मनुष्य आसन बिछाकर बसै ६९ दक्षिणमुख होकर विष्णुजीका पूजन न करै और मंत्रसे पवित्र सु-

गन्धित जलको शंखमें लेकर ७० लक्ष्मीसमेत प्रभु लक्ष्मीपति जीको स्नानकरावै जो मनुष्य शंखसे भगवान् जनार्दनजीको स्नान कराता है ७१ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जैमिनि! तो तिसके तिस फलको कहता हूं सुनिये ब्राह्मण, गऊ, स्त्री और गर्भकी हत्या और मदिरा आदिक पीने के पापोंसे ७२ छूटकर वैकुण्ठ में प्राप्त होकर सब सुखको भोग करता है जो भगवान्को देखकर मनुष्य पूजन करै तो ७३ भगवान् के प्रसादसे तिसतिसको शीघ्रही प्राप्त होता है बुद्धिमान् मनुष्य शंखके अभावमें सुगन्धित जलको ७४ पात्रमें तुलसी मिलाकर रखकर भगवान्को स्नान करावे तदनन्तर स्नान कराकर श्रेष्ठ आसन में स्थापित कर ७५ सुगन्धयुक्त चन्दनों से तिनके सब अंगको लेपनकरै तुलसी के काष्ठके पंकमें जो भगवान् की देहको पालन करता है तिसके ऊपर भगवान् निरन्तर प्रसन्न रहते हैं अपने गन्धसे सुखके देनेवाली यह तुलसीके पत्रकी माला ७६। ७७ हे जगन्नाथजी! तुमको देताहूं आप सदैव प्रसन्न हूजिये इसमंत्र से तुलसीकी पत्रमालासे ७८ अलंकृतमहा विष्णुजी प्रसन्नहोकर क्या नहीं देते हैं तदनन्तर वेदके मंत्रोंसे स्वस्तिवाचन करनाचाहिये ७९ और पौराणिक मन्त्रोंसे दिग्बन्धन करना चाहिये कृष्णजी पूर्वमें रक्षाकरें देवकीके पुत्र आग्नेय कोणमें ८० दक्षिणमें दैत्योंकेवैरी, नैर्ऋत्यकोणमें मधु दैत्य के मारनेवाले, विदिशाओं में श्रीमान्, ऊपर लक्ष्मीके धारण करनेवाले प्रभु, ८१ और नीचे संसारकी आत्मा, कृपामय, कच्छप मूर्ति भगवान् रक्षा करें और पूजाके समयमें जे सब विघ्न करनेवाले होते हैं ८२ वे सब भगवान् के नामरूप अस्त्रसे ताड़ित होकर दूर जावें इस प्रकार दिग्बन्धन कर तिस पीछे हाथ जोड़कर ८३ कहेहुए मंत्रसे दृढ़ संकल्पकरै कि हे देवों के देव! हे जनार्दनजी! मेरी आरंभ की हुई इस पूजाको ८४ निर्विघ्न सिद्धि को प्राप्तकीजिये और हे परमेश्वरजी! प्रसन्न हूजिये तदनन्तर संकल्प करनेवाला और सब तत्वका जाननेवाला वैष्णव ८५ अंगन्यास आदिक कर मनसे नारायण जीको ध्यान करै जो कि

नवीन मेघों के सदृश, कमलके समान नेत्र वाले, ८६ पीताम्बर धारे, देव,मुसकानिसे अत्यन्त पवित्र मुखवाले, कदम्बके फूलकी मालाओंसे भूषित, सुन्दर महाभुजों से युक्त, ८७ मयूरके पंखोंकी पंक्ति से बंधे हुये जूड़े में कुण्डल धारण करनेवाले, वंशीके मधुर शब्दसे दशों दिशाओं को मोहित करते हुये ८८ गोपियों से आच्छादित और पवित्र वृन्दावनमें स्थित हैं इसप्रकार देवोंके स्वामी, सब कामनादेनेवाले गोविन्दजीको चिन्तन कर ८९ फिर भक्तिभावसे वैष्णव मनुष्य आवाहन करे और आवाहन किये हुए, धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले कृष्णजीको ९० पाद्य, अर्घ्य, और आचमनीय देवे बुद्धिमान् मनुष्य कोमल तुलसीके पत्र वा सुन्दर फूलोंसे ९१ सबदेवोंके स्वामी, श्रीकृष्ण देवकीजीके पुत्र को पूजन करै मत्स्य, कच्छप, शूकर, ९२ हरि, वामन, परशुराम, रामचन्द्र, बलराम ९३ कृपासमेत शुद्ध बुद्ध, बहुतमूर्तिवाले कल्की, ९४ नारायण, कृष्ण, गोविन्द, शार्ङ्ग धनुषधारी, दामोदर, देव, देवदेव, ९५ हृषीकेश, शांत, आकाशचरण, लक्ष्मीकेपति, कमलनयन, ९६ अनन्त, गदाहाथमें धारे, गरुड़ध्वज, चक्रहाथमें धारण करनेवाले ९७ कमल हाथमें धारे, अच्युत, दैत्योंके वैरी, सब कामना देनेवाले ९८ लक्ष्मी के पति, देवताओं के स्वामी, विष्णु, परमात्मा, मुकुट और कुण्डलके धारण करनेवाले हरि ९९ भगवान्, गरुड़वाहनजी के सदैव नमस्कार हैं ॐनमः गरुड़ाय इस मंत्रसे गरुड़के चतुर पुरुष नमस्कार करै १०० शंख, चक्र, गदा, पद्म और नन्दक खड्गके नमस्कार हैं १०१ इस प्रकार स्त्री, वाहन और हथियारोंसमेत भगवान् को पूजनकर बुद्धिमान् अष्टाक्षर मंत्रको जपै १०२ अपनी भक्तिसे अष्टाक्षर मंत्रके जपकरने के पीछे गोविन्दजी को अनेक प्रकार की उत्तम नैवेद्य देवे १०३ फिर वैष्णव मनुष्य धूप, दीप, पान तथा और भी उपहार देवदेव विष्णुजी को देवे १०४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो चन्दन और अगरु से सुगन्धित धूपको भगवान् को देताहै तिसका शीघ्रही वाञ्छित सिद्धहोताहै १०५ जो घीसे वासित धूपको हरिजी को देताहै वह

करोड़ों पापों से छूटकर विष्णुजी के मन्दिरको जाता है १०६ गुग्गुलुसे वासित धूपको जो नारायणजी को देता है वह देवताओं से भी दुर्लभ परमधामको जाता है १०७ जो घीसे वा तिलके तेल से दीप देताहै तिसके केशवजी पलभर में सब पाप नाशकर देते हैं १०८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमिनि! कर्पूरसे वासित पानको जो भगवान्को देता है तिसकी मुक्ति होजाती है १०९ जो खैरसेयुक्त पानको देता है वह इसलोक में सब भोगोंको भोगकर अन्तमें भगवान् के पदको प्राप्त होताहै ११० षष्ठी मधुरिका तथा जायफल आदिकों से युक्त पानको भगवान् को देकर मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त होता है १११ हे जैमिने! वैष्णव मनुष्य कहेहुए मंत्रसे शंख में पानी लेकर विष्णुजी की प्रदक्षिणाकरै ११२ कि हे जनार्दन! हे संसारके बन्धु! हे शरणागतके पालन करनेवाले! हे प्रभो! मुझदासको अपने दासोंके दासकी सेवकाई दीजिये ११३ इसमंत्र से जो नारायणजीकी प्रदक्षिणा करता है तिसके पुण्यके फलको संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ११४ जौन जौन ब्रह्महत्यादिक बड़े बड़े पाप हैं वे सब प्रदक्षिणा के पदमें नाशहोजाते हैं ११५ मनुष्य भक्तिसे विष्णुजीकी प्रदक्षिणमें जितने पैग जाताहै तितने हजारकल्प विष्णुजीके साथ आनन्द करता है ११६ मनुष्य भगवान्की प्रदक्षिणामें जितने पद धीरे धीरे जाताहै तितनेही पदपदमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता है ११७ संसारमें जितना सब फल प्रदक्षिणा करने से होताहै तिससे करोड़गुणा फल भगवान् की प्रदक्षिणा करनेसे होता है ११८ जो नारायणजी के आगे अंगकी प्रदक्षिणा करता है वहभी तिस फलको प्राप्तहोता है और बहुत कहनेसे क्याहै ११९ हे ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य महादेव जीकी प्रदक्षिणा करनेमें सोमसूत्रको न लांघै क्योंकि लांघनेसे वह पूजा निष्फल होती है १२० जो प्रदक्षिणाके आकारके भावसे एक वार हरिजीके पास जाताहै वह जन्म जन्ममें निश्चय सब पृथ्वीका राजा होताहै १२१ जो तीन दिनमें दो वार विष्णुजी की प्रदक्षिणा करता है वह निस्सन्देह इन्द्रके पदको प्राप्त होता है १२२

और जो मनुष्य विष्णुजी की प्रदक्षिणा दोबार करता है वह सब पापों से छूटकर भगवान्की देहमें प्रवेश करता है १२३ हे जैमिनि! जो भगवान्के ऊपर जलसमेत शंखको घुमाता है वह अन्त में देवस्थान में जाकर देवताओंसे वन्दित होताहै १२४ जो भगवान्के सात बार पृथ्वी में दण्डवत् प्रणाम करताहै तो उसके शरीर के पाप तिसी क्षणसे भस्म होजाते हैं १२५ जो शिरमें अञ्जलि धरकर भगवान्को प्रणाम करताहै तिसको लक्ष्मीपति विष्णुजी परमपद देते हैं १२६ हे विप्रर्षे! पृथ्वी में सब अङ्गको गिराकर भगवान्के प्रणाम करनेवाले मनुष्योंके पुण्यप्रभावको मैं कहता हूं सुनिये १२७ जितनी पृथ्वीकी धूलियोंसे मनुष्योंकी देह भूषित होतीहै तितनेही हज़ार कल्प वे भगवान्के समीप स्थितहोते हैं १२८ हे जैमिनि! केशवजीकी निर्माल्य को वैष्णवों को देवे तिन वैष्णवोंको कहताहूं सुनिये १२९ शुकदेव, सूत, व्यास, नारद, कपिलमुनि, प्रह्लाद, अम्बरीष, अक्रूर, उद्धव, १३० बिभीषण, हनुमान् तथा और भी वैष्णव सब कामना देनेवाले वासुदेवजी के निर्माल्यको ग्रहण करें १३१ ऐसा कहकर वैष्णव मनुष्य विष्णुजी की निर्माल्यको पृथ्वी में छोड़दे वे तदनन्तर हरिजी के निर्माल्यको भक्तिसे आप भी ग्रहण करें १३२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जिसके मस्तक में उत्तम हरिजी का निर्माल्य दिखाई पड़ताहै वह साक्षात् आपही हरिही जानने योग्यहै १३३ विष्णुजीकी नैवेद्य दुर्लभहै और निर्माल्य पाप नाश करनेवाला है सब देवता ग्रहण करते हैं मनुष्योंकी क्या कथाहै १३४ हे जैमिने! जो वैष्णव तुलसीपत्रको सूंघताहै तो उसके देहके भीतरके स्थित सब पाप नाश होजाते हैं १३५ तुलसीपत्रकी सुगन्ध जिसकी नाकमें प्रवेशकरतीहै तिसके शरीरकी स्थित आपदा शीघ्रही नाशहोजाती हैं १३६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुलसीकी पत्तीको सूंघकर जो प्रशंसा करता है तिसके स्थानमें नित्यही आनन्द होता है १३७ बुद्धिमान् मनुष्य स्तोत्रोंसे जगन्नाथ, लक्ष्मीजीके पति अच्युतजीकी स्तुतिकर हाथ जोड़कर इसमंत्रको पढ़े १३८ हे नारायण! हे संसाररूप! हे संसार

के पति! हे देव! अपने स्थानको जाइये और सदैव प्रसन्न हूजिये १३९ हे देवेन्द्र! हे जगन्नाथ! हे जगन्मय! जो मैंने अपनी शक्ति से यह आपकी पूजाकीहै वह आपके प्रसादसे छिद्ररहितहोवे १४० तदनन्तर बुद्धिमान् मनुष्य महाविष्णु परात्माके सब पाप नाश करनेवाले चरणजल को भक्तिभाव से ग्रहणकरै १४१ हे जैमिनि! जो विष्णुजी के कणमात्र, शुभ, चरणजलको प्राप्त होता है वह सब तीर्थों में स्नानकरचुका यह मैं सत्य कहताहूं १४२ विष्णुजी के चरणजल को छुवे तो गंगास्नान का फल होता है जिससे कि विष्णुजी का चरणजल गंगाजी का जल है १४३ जो केशव महात्माजी के चरणजल को स्पर्श करता है उसको अकालमरण और व्याधियोंसे भयनहीं होताहै १४४ पापरूपी व्याधिनाशनार्थ विष्णुजी का चरणजल औषध है ते पापी भी मनुष्य प्रतिदिन पीवें १४५ हे विप्र! जो वैष्णव मनुष्य विष्णुजी के चरणजलको पीता है तो उस की देहके स्थित पाप क्षणमात्रही में नाश होजाते हैं १४६ जैसे औषध से देहधारी पुरुष के देह में स्थित रोग नाश होजाता है तैसेही सब पाप विष्णुजीके चरणजलसे नाश होजाते हैं १४७ जो तुलसीपत्र से संयुक्त विष्णुजीके शुद्ध चरणजल को शिरसे धारण करता है तिसकी पुण्यको मैं कहताहूं १४८ ब्रह्महत्यादिक सब पापों से छूटकर विष्णुरूप धारण करनेवाला मनुष्य अन्त में विष्णुजीके पुर में जाकर विष्णुजीके साथ आनन्द करता है १४९ सुमेरु पर्वत के बराबर सोना देनेसे जो फल होताहै तिससे अधिक फल विष्णुजीके चरणों के जल के स्पर्श से होताहै १५० करोड़ घोड़ा देनेसे मनुष्योंको सो फल होताहै जो सातोंद्वीप पृथ्वी ब्राह्मणों को देनेसे होताहै १५१ सोई फल मनुष्य विष्णुजीके चरणोंके जलके छूनेसे पाताहै हजार अश्वमेध यज्ञ करनेसे जो फल होताहै १५२ तिससे अधिक फल विष्णुजीके चरणों के जलके छूनेसे होताहै सौ दीर्घिका के दानसे जो पुण्य कहाहै १५३ तिससे भी अधिक पुण्य विष्णुजीके चरणोंके जल के स्पर्श से मिलताहै यहां पर बहुत कहनेसे क्या है संक्षेपसे मैंने कहाहै १५४ हे

ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! मनुष्य विष्णुजीके चरणजलके स्पर्शसे मुक्त होजाताहै फिरफिर दृढ़ मैं कहताहूं १५५ भगवान् के चरणजलको स्पर्श करने से फिर जन्म नहीं होताहै और जो सब पाप नाश करने वाली विष्णुजीकी शेष नैवेद्यको १५६ भक्तिभावसे भोजन करताहै वह परमपदको जाता है हे श्रेष्ठब्राह्मण! दुर्लभ विष्णुजीकी नैवेद्य भोजनकरने से १५७ ब्रह्महत्या आदिक पाप देहको छोड़देते हैं और हरिजीकी नैवेद्य भोजन करनेवाले के दासीकी नाईं वश में प्राप्त, देवताओं से भी दुर्लभ मुक्ति भूमि होजातीहै भगवान् को पूजन कर कुछ नैवेद्य भोजन करनेवाले को १५८।१५९ थोड़ेही समय में विष्णुजी अपनी देह में प्राप्त करलेते हैं महाविष्णुजी की नैवेद्य के गुण क्या हम कहें १६० हे द्विज! हे प्रभो! हे विप्र! जिस नैवेद्य के भोजन करनेवाले के भगवान् भी अधीन होजाते हैं इस विधिसे प्रत्येक महीने में भगवान् की पूजा करनी चाहिये १६१ श्रीलक्ष्मीपतिजी की विधिसे हीन भी जो भक्तिभावसे श्रेष्ठ पूजा करता है वह भी केशवजी का प्यारा होजाता है १६२ विधिका जाननेवाला विधिपूर्वक विष्णुजी को पूजन कर जो फल प्राप्त होता है सो जो भक्ति नहीं स्थित होतीहै और यथोक्त विधिसे बहुत नैवेद्यों से भी भगवान् को पूजन करता है तो भी भगवान् प्रसन्न नहीं होतेहैं जिसकी जितनी देवदेव जनार्दन जी में भक्ति होतीहै १६३।१६४ तितनीही फलकी प्राप्ति भी तिसको निस्सन्देह होतीहै विना भक्ति के जो मनुष्यों करके हरिजीकी पूजा की जातीहै १६५ वह निश्चय पूजा समयही में पूजा होतीहै संसार के पति हरिजीकी भक्ति ज्ञान और भक्ति का मूलहै १६६ हरिजी की पूजा और आराधन मोक्षके वृक्ष की उत्पत्ति में मूल है थोड़ा भी जो श्रद्धा से किया जाताहै १६७ वह सब नाशरहित होता है क्योंकि सब क्रिया श्रद्धायुक्तही करनी चाहिये भक्ति से जो विष्णुजी को जलमात्रसे भी पूजन करता है १६८ वह विष्णुजी के संस्थानको प्राप्तहोताहै जिससे हरिजी भक्तकेवशहैं १६९ हेविप्र! यह सब संसार असारहै इसमें भगवान्का पूजनही सारहै तिससे

अपने मंगलकी इच्छा करनेवाला मनुष्य भक्तिसे अनंतमूर्ति कृष्णजी को पूजनकरै १७० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेहरिपूजाविधिर्नामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

# बारहवां अध्याय ॥

## पीपलके वृक्षका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि ! वैष्णव मनुष्य फाल्गुन में देवताओं से वन्दित श्रीकृष्णजी को भक्तिभावसे प्रतिदिन पूजनकरै १ फाल्गुन महीने में जो घीसे देवकीजी के पुत्रको स्नानकराताहै तिसके फलको मैं कहताहूं अच्छी तरहसे सुनिये २ सब यज्ञ और सब दानके फलको प्राप्तहोकर अन्तमें सब पापोंसे रहित होकर हरिजी के स्थानको प्राप्तहोताहै ३ हज़ार करोड़ युग हरिजीके घरमें भोग भोगकर उत्तम ज्ञानको प्राप्तहोकर तहांहीं मोक्षको प्राप्तहोताहै ४ जो शिशिरऋतु में गोपमूर्ति कृष्णजीको तिलों के सुन्दर लड्डू देताहै वह हरिजीके मन्दिरको जाताहै ५ केशव महात्माजी को जो दुग्ध लड्डू देताहै वह सौमन्वन्तरपर्यन्त स्वर्ग में अमृत पीताहै ६ हरिजीको जो सुंदर खांड़ देताहै तिसकेप्रसन्नात्मा विष्णुजी संसारबन्धनको काटदेते हैं ७ जो भगवान् को विचित्र फलदेताहै वह अन्तमें इन्द्रके पुरमें जाकर देवताओं से वन्दितहोताहै ८ जो भक्तियुक्त मनुष्य निर्मल शक्करको कृष्णजीको देताहै वह वासुदेवजीके प्रसादसे क्या नहीं प्राप्त होता है ९ जो सुन्दर पके मीठे बेरोंको कृष्णजीको देताहै तिसके फलको सुनिये १० वह इस लोकमें पुत्र और पौत्रोंसे युक्तहोकर सब सुखभोगकर अन्तमें सुन्दर रथपर चढ़कर हरिजी के स्थानको प्राप्त होता है ११ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! अज्ञानसे गुणसंयुक्त बेरोंको हरिजीको नहींदेवे और जो देवे तो नरकगामी होता है १२ फाल्गुन महीने में जो हरिजी को सुन्दर अनार के फलको देताहै तिसके फलको मैं कहताहूं सुनिये १३ अनारमें जितने बीज स्थित होते हैं तितने मन्वन्तर भाग्यवान् मनुष्य विष्णुजी के मन्दिरमें स्थित होताहै १४ फाल्गुन म-

हीनेमें जो हरिजी को गुड़पिष्टक देताहै वह हज़ार अश्वमेध यज्ञ
का करनेवाला जानना चाहिये १५ चैत्रके महीने में भगवान्को
जो मनुष्य शहदसे स्नान कराता है वह विष्णुजी के परमपद को
प्राप्त होताहै १६ शहदसे जो रोगरहित नारायणजी को स्नान
कराताहै तिसकी यमराजजी चर्चा नहीं करतेहैं १७ चैत्रमें टेसूके
फूलसे जो लक्ष्मीपति को पूजन करता है तिसका नाम चित्रगुप्त
अपनी बहीमें नहीं लिखते हैं १८ चैत्रमें तिलकके फूलों से भग-
वान्के पूजन करनेवाले का फिर इस पृथ्वीमें जन्म नहीं होता है
१९ कृष्ण अशोकके फूलसे सब देवताओंके शिरोमणि भगवान्को
पूजन करनेसे मनुष्य कहीं पर आपदाओं को नहीं प्राप्त होता है
२० जो प्रसन्नात्मा पुरुष वसन्तऋतुमें चैत्रमें वसंतीके सुगन्धित
फूलोंसे भगवान्को पूजन करताहै वह देवताओंसे भी पूजित होता
है २१ तथा अखण्डित सुन्दर कलियोंसे जो हरिजीको पूजन कर-
ता है तिसकी पीठ आसनवाला भी उठकर आपही वन्दना कर-
ताहै २२ जो नवीन कोमल आंवलेके पत्रोंसे हरिजीको पूजन कर-
ताहै वह मनुष्य थोड़ेही कालमें सब वांछितको प्राप्त होता है २३
जो शांडिल्याके अखण्ड पत्रोंसे धतूरा और मदारके फूलोंसे ईश
विष्णुजी को पूजन करताहै वह संसाररूपी समुद्रके पार होजाता
है २४ हे ब्राह्मण! जो विष्णुजी को उत्तम केलेके फल देताहै उस
की इन्द्रादिक सब देवता दिनरात वन्दना करते हैं २५ गोपाल-
रूपी विष्णुजी को जो चैत्रके महीने में गेहूंका पिष्टक देता है वह
सब पापोंसे छूट जाताहै २६ विष्णुभक्त मनुष्य माधवजीके प्यारे
पवित्र वैशाखके महीनेके आने में मांस, मैथुन और तेलको छोड़
देवे २७ वैष्णव मनुष्य वैशाखमें प्रातःकाल स्नान करै परायेअन्न
और दूसरी बार भोजनको त्याग करै २८ पहले कहीहुई विधि से
प्रातःकाल विष्णुजीको पूजन करै और इस महीने में फूलों से वा-
सित जलसे विष्णुजी को स्नान करावै २९ ठण्ढे जलों से संध्या-
पर्यन्त अच्युतजी को स्नान करावै और तीनों संध्याओंमें भक्ति
से अनेक प्रकारकी नैवेद्योंसे प्रभुजी को पूजन करै ३० वैशाख में

दौनाके मालाओं से अलंकृत कियेगये परमेश्वरजी प्रसन्न होकर क्या नहीं देतेहैं ३१ और यव अन्नको वैशाख के महीने में जो भगवान् को देता है तिसके पुण्योंकी गिनती करनेमें कौन पण्डित समर्थ है ३२ जो कुछ वैशाख के महीने में भगवान् की प्रीति के लिये लक्ष्मीपतिजी को दियाजाता है वह सब नाशरहित होता है ३३ और भी जो कुछ सुकृतकर्म्म वैशाख में भगवान् की प्रीतिके लिये कियाजाताहै तो उसका नाश नहीं होताहै ३४ और जो वैशाखके महीने में भगवान्की प्रसन्नता के लिये पौशाला करताहै वह मनुष्य दिन दिनमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता है ३५ वैशाख दुर्लभ महीना है सब कर्मफलका देनेवाला है तिस में सैकड़ों काम छोड़कर भगवान् पूजने योग्यहैं ३६ एकदिनभी जो वैशाखमें भगवान्की पूजा करताहै वह छःवर्षकी भगवान्की पूजा करनेके फलको प्राप्त होताहै ३७ जो वैष्णव मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफल के हेतु वैशाख महीनेमें नित्यही पीपलके वृक्षरूपी विष्णुजीको ३८ कुल्लामात्र जलसे सेवन करताहै वह करोड़ों पापों से छूटकर श्रेष्ठ स्थानको जाताहै ३९ पीपलकी जड़को जो पत्थर आदिकोंसे बांधताहै उसको पीपलरूपी भगवान् क्या क्या नहीं देते हैं ४० पीपलके वृक्षको देखकर जो प्रणाम करताहै वह श्रेष्ठ स्थान को जाता है और निस्सन्देह उसके उमरकी वृद्धि होती है ४१ हे विप्र जैमिनि! पीपलके वृक्षके नीचे जो धर्म कर्म करताहै तो तिस कर्ममें कुछ कमी नहीं होती है ४२ तहांपर गंगाआदिक सब तीर्थ हैं जहांपर वृक्षोंमें श्रेष्ठ एकभी पीपलका वृक्ष स्थितहै ४३ जो पीपलको पूजताहै सोई विष्णुजी को पूजताहै जिससे पीपलकी मूर्त्ति आपही भगवान् हैं ४४ जो मूढ़बुद्धि मनुष्य अज्ञान से पीपलको काट डालताहै तो संसार में वह कर्म्म नहीं है जिसको करके वह शुद्ध होजावे ४५ यह पीपल वृक्षोंका राजा हरिजी की मूर्ति कहा गयाहै तिससे पीपलके नाश करनेवालोंका कोई रक्षा करनेवाला नहीं है ४६ पीपलके देखने, छूने और प्रणाम करनेसे भगवान् देहके स्थित सब पापोंको नाश करते हैं ४७ पीपलके काटनेवाले

को देखकर जो समर्थ होकर नहीं निषेध करता है तो उसके दोनों नेत्रोंको यमराजजी आपही कटियासे निकाल लेतेहैं ४८ और जो यह नहीं कहता है कि रे मूर्ख! पीपलको मत काटे तिसकी जीभको यमराजजी छूरीसे आपही काटते हैं ४९ जो मनुष्य छोटीभी एक डालको काटता है वह करोड़ ब्रह्महत्याओंके फलको प्राप्त होताहै ५० ब्राह्मणकी हत्या, गुरुजी की स्त्री से भोग, मदिरापान, चोरी, न्यासका चुराना, ५१ गर्भहत्या, गोहत्या, स्त्रीहत्या, पराई स्त्री से भोग,५२शरणागत और मित्रकी हत्या,विश्वास वाक्यके न कहने में, पतिके मारनेकी विधिमें, ५३ पराई निन्दा और एकादशी के भोजनमें जो पाप होताहै उसी घोर पापको मनुष्य पीपलके काटनेसे प्राप्तहोते हैं ५४ विष्णुजीकी मूर्ति पीपलको जो मनुष्य मोह से काटताहै तो उसके बराबर कोई पापी पृथ्वीमंडल में नहीं सुना जाताहै ५५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! हे वत्स! सब पाप नाश करनेवाले पीपलके माहात्म्यको इतिहाससमेत कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनो ५६ पूर्वसमयमें त्रेतायुग में धनंजय नाम ब्राह्मणहुए ये हरिभक्तिके करनेवाले, सब प्राणियोंके कल्याणमें रत,५७जातिकी पूजा और दीपदानमें सदैव रत, सत्य बोलनेवाले, क्रोध जीतनेहारे, हिंसा और दम्भसे वर्जित ५८ और मोक्षकी इच्छा करने वाले थे ये श्रेष्ठभक्तिसे परमेश्वर, प्रभु नारायणजी को पूजन करतेभये ५९ तब भगवान् तिसकी बड़ी दृढ़ भक्ति जानकर किसी हेतुमात्रसे उसके सब द्रव्यको हर लेते भये ६० तिसपरभी वह बड़ा बुद्धिमान् श्रेष्ठब्राह्मण परमभक्तिसे केशवमहात्माजीकी प्रतिदिन पूजा करता भया ६१ दुःखसे इकट्ठा कियाहुआ सब धन नष्ट हुआ देखकर भी तिस ब्राह्मणने अचिन्त्यचित्तसे ६२ भोजन करना छोड़ दिया और परमार्थ के जाननेवाले इस ब्राह्मणने महाविष्णुजीकी पूजामें अपने मनको दृढ़बांधा ६३ फिर तिस ब्राह्मण की भक्ति जानकर अत्यन्त दृढ़ शांतिके देनेवाले भगवान् उसके भाइयों से विच्छेद कराते भये ६४ तिसब्राह्मणके भाई लोग भगवान् की मायासे मोहित होकर सदैव उसके मारने में उतारू रहते भये ६५ तबभी

ब्राह्मण बड़ी भक्तिसे प्रसन्न होकर हठ न छोड़कर पुरुषोत्तम जी की निरन्तर पूजा करता भया ६६ फिर ब्राह्मण भगवान्की पूजन में धनको कुछ कल्पना कर लक्ष्मीपति जगन्नाथ जी को पूजन करते भये और बन्धुओं के शोकको छोड़ते भये ६७ तब कौतुकी महाविष्णुजी कृपासमेत फिर उसके दिनादिनमें पुत्रों को हरलेते भये ६८ तिसपरभी वह श्रेष्ठब्राह्मण पहलेकी दूनी भक्तिसे क्लेशों के नाश करनेवाले विष्णुजीको नित्यही पूजन करता भया ६९ तदनन्तर विष्णुजी की मायासे मोहित और दुःख शोकसे अत्यन्त दुःखित उसकी स्त्रीभी पिताके घरको चलीगई ७० तिसपीछे विष्णुजीकी भक्तिमें परायण अकेला ब्राह्मणभी सुन्दर चित्तसे कभी विपत्ति की न चिन्तना करता भया ७१ एक समय में वह श्रेष्ठब्राह्मण विष्णुजीकी भक्तियुक्तोंमें श्रेष्ठ कंधे में कुल्हाड़ा धरकर लकड़ी लेनेके लिये वनको जाताभया ७२ और कपड़ोंसे हीन यह ब्राह्मण वनसे नित्यही लकड़ी लाकर जाड़ेके आगमन में शीतको निवारण करताभया ७३ कभी यह श्रेष्ठ ब्राह्मण वन जाने में न समर्थ हुआ तो अपने आंगनमें स्थित पीपलके वृक्ष की डाल को काटता भया ७४ इस अन्तर में व्यथासे कष्टयुक्त मनहोकर देवताओंमें श्रेष्ठ महाविष्णुजी पीपलके वृक्षसे निकलते भये ७५ तब ब्राह्मण आगे श्रीविष्णुजी को देखता भया जो कि चारभुजा धारे कमलदलके समान बड़े नेत्रोंवाले पीताम्बर, कुण्डल, सुन्दर बाल और कमल आदिक अपने अस्त्रोंको धारे ७६ विस्तारयुक्त बहती हुई रक्तकी धारा से संध्याओंमें लाल रंग हुए नवीन मेघोंकी नाईं, अग्निरूप, सुख, परेश और देवसमूहों से भी अदृश्य हैं तब ब्राह्मण हर्षके आंशुओंकी धारासे सुन्दर दोनोंनेत्रों को कर कोमल वचनोंसे स्तुति करनेलगा ७७ कि हे हरे! मुरारे, संसारके एकनाथ, गोविन्द, दामोदर, माधव, लक्ष्मीकेपति, केशव, केशीराक्षसके शत्रु, नारायण, अनन्त, हेविभुजी प्रसन्न हूजिये ७८ आपके अवतार को मैं क्याकहूं आपके विना पृथ्वीमें कोई नहीं है क्या गुणोंसे व्याप्त सबलोक आप हैं मित्रों में पर एकतुल्य दया

७९ अपनीको देकर हे विष्णो! हेईश! किसीकी देहमें स्थित भक्ति को आप हररहे हैं और लक्ष्मीको लेलियाहै और बड़ी भारी धन्या भक्ति को मुझे दियाहै इससे मैं आनन्दको प्राप्तहूं ८० हे अनन्त-मूर्ते! मैं निरन्तर पापियों में श्रेष्ठ होकर अपना को महात्मा मानताहूं कि मेरेहीलिये आप के दोनों चरण दिखाई दिये परन्तु यह आश्चर्य है कि पापी आपको नहीं देखता है ८१ यद्यपि मैं दुःखयुक्तों में श्रेष्ठ हूं तथापि इस समय में हे विष्णुजी मैं अपना को इन्द्र की नाईं मानताहूं जिससे कि लोकोंकी आत्मा आपको नेत्रों से देखरहाहूं ८२ हे केशवजी! आपकी थोड़ी भी पूजा को मैं नहीं जानताहूं द्रव्य कभी आपको मैं नहीं देताहूं तिसपर भी आप पूज्य मेरे आगे मूर्तिमान् दिखाई दियेहो ८३ आपने धर्म, अर्थ और काम इन तीनोंसे युक्त यह भक्तिरूपी वृक्ष मुझको दियाहै और आपके दर्शनरूपी वर्षासे सींचागया है हे प्रभो! इस समय में यह वृक्ष मोक्षरूपी फलको धारण करता है ८४ हे केशव! हे देवदेव मेरा मस्तक सब मनुष्यों के मस्तकों में श्रेष्ठ होवे और इस समय में मन संसाररूपी आपके दोनों चरणकमलों में प्राप्तहोवे ८५ व्यासजी बोले कि इस प्रकार ब्राह्मण जगन्नाथ, रोगरहित नारायणजी की स्तुति कर हाथ जोड़कर भक्ति से फिर बोला ८६ कि हे देवोंके देव! हे जगन्नाथ! हे लोकोंके ऊपर दयाकरनेवाले! कशाके प्रहारसे यह देह आपकी रक्तसे भरी हुई है ८७ संग्राममें सब दैत्यों के वंशको आपने नाश करदियाहै हे प्रभो! यह अद्भुतहै कि आप के मारने में कौन पृथ्वी में समर्थ है ८८ तब भगवान् बोले कि हे वत्स! तुमने यह सत्यही कहाहै इसमें सन्देह नहींहै दानव व राक्षस कोईमेरे मारनेमें समर्थ नहींहै ८९ मैं पीपलमूर्तिहूं मुझको कुल्हाड़े से तूने काटाहै इससे हे द्विज! इस समयमें रक्त मेरे बहरहा है ९० व्यासजी बोले कि भगवान्के ये वचन सुनकर वह ब्राह्मण भयसे विह्वलहोकर आत्मासे आत्माको बहुत भांति निन्दा करताभया ९१ कि तत्त्वसे सब पापियोंमें श्रेष्ठ मेरीभाग्यको धिक्कारहै जिस मैंने त्रैलोक्यके स्वामीके हृदयमें बड़ी व्यथाको दियाहै ९२ सब पापके हरने

वाले विष्णुजी को मैंने पीड़ित कियाहै अकेले मैं इस पापके पार नहीं जासक्ताहूं ९३ जिन आपके प्रसन्न होनेमें पापीभी देवताओं से वन्दित होजाते हैं सोई आप मेरी दीहुई व्यथासे व्यथित हुए हैं हा! मैं मारागयाहूं ९४ जिनको ब्रह्मादिक देवताभी अत्यन्त भक्तिसे प्रसन्न कराते हैं तिनके हृदयमें मुझ पापीने पीड़ादी है ९५ तपस्या, जप, घर और मेरे जीनेसे क्याहै धर्म, अर्थ, काम और मोक्षोंके एक दाताको मैंने व्यथासे व्याकुल करदिया है ९६ ऐसा कहकर वह ब्राह्मण विष्णुजी की प्रसन्नता के लिये तिसी फरसे से अपना कण्ठ काटने का मन करताभया ९७ तब तो तिस ब्राह्मण की दृढ़ भक्ति जानकर दयालु भगवान् भक्तों के प्यार करनेवाले शीघ्रता से तिसके हाथसे फरसे को लेलेकर ९८ बोले कि हे वत्स! तू कैसे यह अत्यन्त दारुणकर्म करता है आत्महत्या करनेवाले पुरुषों के ऊपर कभी मैं प्रसन्न नहीं होताहूं ९९ हे सज्जनोंमें श्रेष्ठ! हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुम्हारी भक्तिसे मैं अत्यन्त प्रसन्नहूं डरो नहीं जो तुम्हारे मन में वर्तमान हो वह वरमांगो १०० तब ब्राह्मण बोले कि हे परमेश्वर! हे प्रभो! मैं यह वर मांगताहूं कि मैंने बड़ी भारी यह आपको व्यथा दीहै सो आपके शरीरमें न रहे १०१ तब श्रीभगवान् बोले कि हे ब्राह्मण! हे वत्स! तूने अज्ञानसे यहकर्म कियाहै इससे भारीमें तेरा अपराध हम क्षमा करेंगे १०२ तू भक्तों में श्रेष्ठ है इससे नित्यही तेरी रक्षा करनी योग्यहै हे वत्स! तुम्हारे सदृशों के दोषोंको मैं दिन दिनमें नहीं मानताहूं १०३ तिसपर भी मेरी बड़ीभारी भक्ति तुम्हारे सदैव बढ़ै तिससे हे वत्स! इससमय में तुमसे ऋणहीन होजाने की इच्छा करताहूं १०४ इससे सब भय छोड़कर मेरे आगे वरमांगो तब ब्राह्मण बोला कि हे सब देवताओंमें श्रेष्ठ! हे हरिजी! आपमें मेरी जन्म जन्ममें दृढ़ भक्ति होवे और वरोंसे क्याहै व्यासजी बोले कि भगवान्की नम्रता कहनेवाले ब्राह्मणके ये वचन सुनकर १०५। १०६ प्रसन्न होकर विष्णुजी अपने कण्ठ में स्थित मालाको देकर तिस ब्राह्मण को इस प्रकार अपनी चार लम्बी भुजाओं से आलिंगन करते भये

जैसे पिता पुत्रको आलिंगन करता है फिर उससे कोमल वचन बोले कि हे ब्राह्मण! तुम हमारे भक्तहौ इससे मेरे प्रसादसें १०७। १०८ थोड़ेही समयमें तुम्हारा सब कल्याण होगा हे सज्जनों में श्रेष्ठ! क्रियायोगसे पीपलरूप मुझको नित्यही १०९ आराधन करो तुम्हारे सब वांछितको मैं सिद्धकरूंगा ऐसा कहकर केशवजी तिस श्रेष्ठब्राह्मणको फिर आलिंगनकर ११० सहसासे तहांहीं अन्तर्द्धान होगये तब वैष्णवों में उत्तम ब्राह्मण विष्णुजी के कण्ठकी माला पाकर १११ आत्माको कृतकृत्यकी नाईं मानकर अपने घर में स्थित रहतेभये तदनन्तर तिस ब्राह्मणके घरमें कुबेरजी ११२ भगवान्‌की आज्ञासे आपही बहुत द्रव्य बरसतेभये और विश्वकर्मा कारीगरने महल बनादिया ११३ तहांपर श्रेष्ठ ब्राह्मण नारायणजी की आज्ञासे जयंतकी नाईं दास और दासि... , अनेक वस्तुओंसे भूषित होकर रहतेभये और हाथी... युक्त तिसका मन्दिर शोभित होताभया और तिस... भव फिर प्राप्त होतेभये ११४।११५ और अनादर... तिसकी स्त्री फिर तिसके स्थानमें प्राप्त होती... पुत्रभी भगवान्‌की कृपासे ११६ फिर होतेभये... स्वामीकी भक्तिमें परायणहुई तब ब्राह्मण पुत्र... होकर बहुत काल सब भोगोंको भोगकर ११७... अन्तमें मोक्षको प्राप्त होजाताभया व्यासजी बो... पीपलका वृक्ष साक्षात् आपही विष्णुरूप हैं ११... करनेवाले पुरुषोंका कहीं अशुभ नहीं होता है हे... म! जो विष्णुजीको ध्यानकर पीपलको सेवता... प्रसन्न होकर भगवान् परमपद देतेहैं १२० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारे ... ९

## तेरहवाँ अध्याय ॥

ज्येष्ठ महीनेसे लेकर कार्तिक महीनेतक भगवान्‌के ...

व्यासजीबोले किहे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जैमिनि! ...

वान् जनार्दनजीको भक्तिभावसे ठण्ढे जलोंसे स्नान कराकर पूजन करै १ सुगन्धित उबटन, आंवला और सुगन्ध तेल हरिजी को गरमीके समयमें दिन दिनमें देवे २ सुवासित,ठण्ढे, अत्यन्त मनोरम स्थान में जनों के मण्डपमें प्रतिदिन लक्ष्मीपतिजी को स्थापितकरै ३ हे विप्रेन्द्र! भयानक देश, धूमसमेत इन्धन का स्थान और सवरिके घरमें भगवान्को न स्थापितकरै ४ सफेद,दीर्घ चामरों से ज्येष्ठमास में भगवान् के डुलावे तो प्रसन्न होकर भगवान् क्या नहीं देतेहैं ५ हे सज्जनों में श्रेष्ठ! ज्येष्ठमें मयूरकी पूंछके पंखोंसे डुलायेगये भगवान् थोड़ेही काल में सब मनोवांछितको देते हैं ६ ताड़के पंखेकी हवा और पवित्र कपड़ेकी हवा जिन्होंने ग्रीष्मऋतुमें विष्णुजीकेकी है वे सब स्वर्गको जावेंगे ७ जो गरमी में सुगन्धयुक्त कर्दम और हरिचन्दनसे हरिजीकी देहको लेपनकरता है वह भगवान्की देहमें प्रवेश करताहै ८ गरमीके आगमनमें फूलों, फूलों के बगीचे तथा तुलसी के वनमें धीर पवनवाले देशमें संध्या के समयमें जो विष्णुजी को स्थापित करताहै वह निस्सन्देह मुक्त होजाता है जिसने ज्येष्ठमहीने में पाटल के फूलों से विष्णुजी को अलंकृत किया वह हज़ार अश्वमेध का करनेवाला होता है ग्रीष्म ऋतुमें जो मनुष्य भगवान्को मोतियोंका माला देताहै ९। १०। ११ तो भगवान् उसको जन्म जन्म में राज्य देते हैं जो ग्रीष्मऋतु में श्रीकृष्णजी को मणियों की माला से शोभित करता है १२ तिसके पुण्य के फलको मैं कहताहूं सुनिये जबतक ब्रह्मा इस सब संसार को रचते हैं १३ तबतक मणियों की मालासे भूषित होकर वह विष्णुजीके पुरमें स्थित होताहै सोने तथा चांदीके गहनों से १४ ग्रीष्म में कृष्णजी को जो भूषित करता है वह भी तिसीफलको प्राप्त होताहै जो देवोंके देव हरिजी को गंडूकसमेत विचित्र शय्या देता है वह कभी दुःखी नहीं होताहै ग्रीष्मसमय में हरिजीको गरुयेकपड़े न देने चाहिये पवित्र महीनकपड़े देवे जो हाथ के तोड़े, सुन्दर, सुगन्धित फलोंसे भगवान् का पूजन करता है १५। १६। १७ वह अन्त समयमें इन्द्र के पुरमें जाकर आनन्द

जैसे पिता पुत्रको आलिंगन करता है फिर उससे कोमल वचन बोले कि हे ब्राह्मण! तुम हमारे भक्तहो इससे मेरे प्रसादसे १०७। १०८ थोड़ेही समयमें तुम्हारा सब कल्याण होगा हे सज्जनों में श्रेष्ठ! क्रियायोगसे पीपलरूप मुझको नित्यही १०९ आराधन करो तुम्हारे सब वांछितको मैं सिद्धकरूंगा ऐसा कहकर केशवजी तिस श्रेष्ठब्राह्मणको फिर आलिंगनकर ११० सहसासे तहांहीं अन्तर्द्धान होगये तब वैष्णवों में उत्तम ब्राह्मण विष्णुजी के कण्ठकी माला पाकर १११ आत्माको कृतकृत्यकी नाईं मानकर अपने घर में स्थित रहतेभये तदनन्तर तिस ब्राह्मणके घरमें कुबेरजी ११२ भगवान्‌की आज्ञासे आपही बहुत द्रव्य बरसतेभये और विश्वकर्मा कारीगरने महल बनादिया ११३ तहांपर श्रेष्ठ ब्राह्मण नारायणजी की आज्ञासे जयंतकी नाईं दास और दासियोंसे युक्त, अनेक वस्तुओंसे भूषित होकर रहतेभये और हाथी और घोड़ोंसे युक्त तिसका मन्दिर शोभित होताभया और तिसके नष्टहुए बांधव फिर प्राप्त होतेभये ११४।११५ और अनादर करके चलीगई तिसकी स्त्री फिर तिसके स्थानमें प्राप्त होती भई उसके मरेहुए पुत्रभी भगवान्‌की कृपासे ११६ फिर होतेभये और वह स्त्री भी स्वामीकी भक्तिमें परायणहुई तब ब्राह्मण पुत्र और पौत्रोंसे युक्त होकर बहुत काल सब भोगोंको भोगकर ११७ स्त्रीसमेत आयुके अन्तमें मोक्षको प्राप्त होजाताभया व्यासजी बोले कि वृक्षोंमें श्रेष्ठ पीपलका वृक्ष साक्षात् आपही विष्णुरूप है ११८ तिसकी भक्ति करनेवाले पुरुषोंका कहीं अशुभ नहीं होता है हे मनुष्यों में उत्तम! जो विष्णुजीको ध्यानकर पीपलको सेवता है ११९ तिसको प्रसन्न होकर भगवान् परमपद देतेहैं १२० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारे अश्वत्थमाहात्म्येद्वादशोऽध्यायः १२॥

# तेरहवाँ अध्याय ॥

ज्येष्ठ महीनेसे लेकर कार्तिक महीनेतक भगवान्‌के पूजनका माहात्म्य वर्णन॥

व्यासजीबोले किहे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जैमिनि! ज्येष्ठ महीनेमें भग-

वान् जनार्दनजीको भक्तिभावसे ठण्ढे जलोंसे स्नान कराकर पूजन करै १ सुगन्धित उबटन, आंवला और सुगन्ध तेल हरिजी को गरमीके समयमें दिन दिनमें देवे २ सुवासित,ठण्ढे, अत्यन्त मनोरम स्थान में जनों के मण्डपमें प्रतिदिन लक्ष्मीपतिजी को स्थापितकरै ३ हे विप्रेन्द्र ! भयानक देश, धूमसमेत इन्धन का स्थान और सवरिके घरमें भगवान्को न स्थापितकरै ४ सफेद,दीर्घ चामरों से ज्येष्ठमास में भगवान् के डुलावे तो प्रसन्न होकर भगवान् क्या नहीं देतेहैं ५ हे सज्जनों में श्रेष्ठ ! ज्येष्ठमें मयूरकी पूंछके पंखोंसे डुलायेगये भगवान् थोड़ेही काल में सब मनोवांछितको देते हैं ६ ताड़के पंखेकी हवा और पवित्र कपड़ेकी हवा जिन्होंने ग्रीष्मऋतुमें विष्णुजीकेकी हैवे सब स्वर्गको जावेंगे ७ जो गरमी में सुगन्धयुक्त कर्दम और हरिचन्दनसे हरिजीकी देहको लेपनकरता है वह भगवान्की देहमें प्रवेश करताहै ८ गरमीके आगमनसें फूलों, फूलों के बगीचे तथा तुलसी के वनमें धीर पवनवाले देशमें संध्या के समयमें जो विष्णुजी को स्थापित करताहै वह निस्सन्देह मुक्त होजाता है जिसने ज्येष्ठमहीने में पाटल के फूलों से विष्णुजी को अलंकृत किया वह हजार अश्वमेध का करनेवाला होता है ग्रीष्म ऋतुमें जो मनुष्य भगवान्को मोतियोंका माला देताहै ९। १०। ११ तो भगवान् उसको जन्म जन्म में राज्य देते हैं जो ग्रीष्मऋतु में श्रीकृष्णजी को मणियों की माला से शोभित करता है १२ तिसके पुण्य के फलको मैं कहताहूं सुनिये जबतक ब्रह्मा इस सब संसार को रचते हैं १३ तबतक मणियों की मालासे भूषित होकर वह विष्णुजीके पुरमें स्थित होताहै सोने तथा चांदीके गहनों से १४ ग्रीष्म में कृष्णजी को जो भूषित करता है वह भी तिसीफलको प्राप्त होताहै जो देवोंके देव हरिजी को गंडूकसमेत विचित्र शय्या देता है वह कभी दुःखी नहीं होताहै ग्रीष्मसमय में हरिजीको गरुयेकपड़े न देने चाहिये पवित्र महीनकपड़े देवे जो हाथ के तोड़े, सुन्दर, सुगन्धित फलोंसे भगवान् का पूजन करता है १५। १६। १७ वह अन्त समयमें इन्द्र के पुरमें जाकर आनन्द

से अमृत पीताहै प्रियालों के सुन्दर फलोंसे जो लक्ष्मीपति को पूजन करता है १८ वह भी तिसीफलको प्राप्त होता है और बहुत कहनेसे क्या है ग्रीष्म में जो वैष्णव मनुष्य श्रद्धासे अनेकप्रकारके व्यंजनसंयुक्त अत्यन्त शीतल यवागू हरिजीको देताहै तो वहभी तिसी फलको प्राप्त होताहै हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! आषाढ़ महीने में देवदेव, संसारके गुरुजीको १९।२० पण्डित भक्तिसे दहीसे स्नान कराकर पूजनकरै तो वह फिर माताके स्तन नहीं पीताहै २१ हे विप्रर्षे! आषाढ़में मेघों के समान श्यामवर्ण हरिजीको आराधन कर मनुष्य श्रेष्ठगतिको प्राप्तहोताहै २२ जो कदम्बके फूलोंकी मालाओंसे अग्निके सदृश मण्डप करता है वह अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता है २३ हे ब्राह्मणोंमें उत्तम! सुगन्धित केतकीके फूलोंसे पूजितहुए लक्ष्मीपतिजी मनुष्योंके सबदुःखोंको नाशकरते हैं २४ कटहलके सुन्दर पके और घीसे मिले हुए फलोंसे पूजित हुये भगवान् विष्णुजी उत्तम ऐश्वर्यको देते हैं २५ हे उत्तम ब्राह्मण! वैष्णव मनुष्य आषाढ़के महीने में हरिजीको श्रद्धासे दही अन्न प्रतिदिन मुक्ति की इच्छा करदेवै २६ जो वैष्णव मनुष्य कृष्णजीको माखनदेताहै वह सब पापोंसे शुद्धहोकर ब्रह्मलोकको जाताहै २७ जो मनुष्य शेफालिका और यूथिका के फूलोंसे परमात्माजीको पूजन करता है वहपरमपदको जाताहै २८ फूलीहुई सुगन्धित मालतीके फूलों से जो हरिजीको पूजन करता है तो तिसपुण्य से उसका सो पुण्य होताहै जिससे नहीं होवे २९ मनुष्य पृथ्वी में कन्द और वकुल के फूलों से संसार के बन्धु जनार्दनजी को पूजन कर सब कामनाओं को प्राप्त होताहै ३० महामहा तथा कुरुवक के फूलेहुये फूलों से जो हरिजीको पूजन करताहै उस मनुष्य पर भगवान् सदैव प्रसन्न रहते हैं ३१ जो मनुष्य सैरीयक, प्रसू और करवीर के फूलों से विष्णुजी को पूजन करता है वह भगवान् के समीप प्राप्त होता है ३२ हे विप्रर्षे! जो श्रावण में घीसंयुक्त लाजाओं को हरिजीको देताहै तिसके घर में सर्वतोमुखी लक्ष्मी जी वसती हैं ३३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य भादोंके महीने में रोगरहित, धर्म, अर्थ,

काम और मोक्षके देनेवाले नारायणजी को श्रद्धा से पूजनकरै ३४ सब उपद्रवोंसे हीन, नवीनबनेहुए स्थान में कमलनयन, जनार्दन, भगवान्जी को स्थापितकरै ३५ मनुष्य हरिजीको डांस, मसा और मक्खी आदिकों से युक्त पुराने स्थान में नहीं स्थापितकरै ३६ बुद्धिमान् मनुष्य कीचड़समेत, द्वारगिरेहुए, भीतगलीहुई इस प्रकार के घरमें वर्षाऋतु में परमेश्वरजी को नहीं स्थापनकरै ३७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! जो मनुष्य विष्णुजीके स्थान में विचित्र चन्द्रातप करता है वह विष्णुजीके लोकको जाताहै ३८ पूजा के समय रात्रिमें भगवान् के मन्दिर में अनेकप्रकार की धूपोंसे डांस और मसों को निवारणकरै ३९ वर्षाऋतु में मसारिकाओं से आच्छादित कर मंचपर सोनेवाले विष्णुजी को रात्रिमें सुन्दर मन्दिर में स्थापनकरै ४० भादोंके महीने में मोक्षकी इच्छा करनेवाला मनुष्य नवीन सुगन्धित कह्लारके पत्रोंसे भगवान् को दिनदिन में पूजनकरै ४१ भादोंमें जनार्दनजी को केतकी के फूलोंसे नहीं पूजन करना चाहिये क्योंकि इस महीने में केतकी मदिराके समान होतीहै ४२ जो पकेहुए सुन्दर तालके फलोंसे भगवान् को पूजन करता है वह गर्भवास के महादुःख को फिर नहीं प्राप्त होताहै ४३ जो मनुष्य घी और दूधसे संयुक्त पकेहुए तालके फलको श्रद्धासे भगवान् को देता है वह हरिजीके मन्दिर को जाता है ४४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! वैष्णव मनुष्य भादों के महीने में हरिजी को घीसमेत तालपिष्टक केवल प्रीतिके हेतु देवे ४५ हे विप्र ! मोक्ष की इच्छा करनेवाला वैष्णव मनुष्य भादोंके महीनेमें शाक को न खावे और रात्रिमें भोजन न करै ४६ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ! कुंवारके महीनेमें पूर्वाह्णके समय क्लेश नाशनेवाले भगवान्को जो मनुष्य जलदेतेहैं ४७ उस को लक्ष्मीपतिजी अमृतकी नाईं ग्रहण करते हैं और मध्याह्न में जो चक्रपाणिजी को जल दियाजाता है ४८ उसको भी अमृत ही की समान भगवान् ग्रहण करतेहैं अपराह्ण में जो गोविन्दजी को जल दियाजाता है ४९ वह रक्तके सदृश होताहै इससे हरिजी उस को नहीं ग्रहण करते हैं इससे हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! पूर्वाह्ण में भ-

गवान् को पूजनकरै ५० तो भगवान् की दयासे सब कामनाओं को प्राप्तहोवे हे विप्रेन्द्र! एक कपड़े से हरिजी का पूजन न करै ५१ वा करै तो ऐसी पूजा को केशवजी नहीं ग्रहण करते हैं विना धोये कपड़ेसे जो भगवान् की पूजा करता है ५२ तो वह पूजा विफल होतीहै और विष्णुजी प्रसन्न नहीं होतेहैं जे मनुष्य भगवान् की विना शिखाबांधेहुए पूजा करते हैं ५३ वे पूजा के फलको नहीं प्राप्त होतेहैं यह पूजा बलिग्राह्य होती है और विना संस्कार किये हुए घरमें भगवान् की पूजा कीजावे ५४ तो यह भी पूजा निश्चय बलिग्राह्य होती है स्नान, देवपूजन, दान और पितृपूजन ५५ चतुर मनुष्य तिलक के विना न करै विना तिलक के जो पुण्यकर्म किया जाता है ५६ वह सब भस्म होजाताहै और करनेवाला नरक को जाताहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शंख, चक्र, गदा और कमल से जिसका शरीर चिह्नित दिखलाई देताहै वह आपही भगवान् जानने योग्य है और जो वैष्णव दक्षिणभुजा में शंख और कमल लिखता है ५७।५८ और बाईंभुजा में चक्र और गदा लिखता है वह निस्सन्देह विष्णुही है जो दहिनी भुजा में शंखके ऊपर कमल लिखता है ५९ तिसके सब पाप क्षणमात्रही में नाश होजाते हैं और बाईंभुजा में चक्र के ऊपर जो गदा लिखता है ६० तिसकी इन्द्रादिक देवता वन्दना करते हैं जो पण्डित अपने माथे में भगवान् के दोनों चरणों को लिखता है ६१ तिसको देखकर पापीभी पापसे छूट जाताहै जो श्रेष्ठ वैष्णव अष्टाक्षर महामंत्र,मत्स्य और कच्छपजी को हृदय में लिखता है वह तीनोंलोकोंको पवित्र करता है जिसका शरीर दिनदिन में कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नित होता है ६२।६३ तिसको कृष्ण जगन्नाथजी परमपद देतेहैं कृष्णजीके अस्त्र से चिह्नित देहवाला मनुष्य शुभ वा अशुभ जो कर्म करताहै वह सब नाशरहित होताहै दानव,राक्षस,भूत,वेतालक,६४।६५ पिशाच,सर्प, यक्ष,विद्याधर,किन्नर, गुह्यक, ग्रह,वालग्रह, ६६ कूष्माण्ड,डाकिनी तथा और विघ्नकारकसब डरसे कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नितको देखकर भागजातेहैं ६७ सिंह और सिंहिनियां तथा औरभी वनवासी

कृष्णजी के अस्त्रसे चिह्नित को देखकर डरसे भागजाते हैं ६८ और कामलाआदिक देहके गिरानेवाले महारोगभी भाग जाते हैं जो मनुष्य कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नित देहवाले को भक्तिसे देखता है ६९ वह कृष्णजी के दर्शनके तुल्य फलको प्राप्त होताहै जो कुंवारमें त्रिपत्रीकृत दूबों से हरिजीको पूजन करता है ७० तिसकी दूब की नाईं अविच्छिन्न सन्तान वर्तमान होती है कुंवारके महीने में जो भगवान्को ककंटी के फलको देता है ७१ तिसके हृदयमें कभी शोक नहीं होताहै और सब मासोंमें उत्तम शुभ कार्तिक के महीनेके प्राप्त होनेमें ७२ बुद्धिमान् मनुष्य दामोदर देवदेवजी को भक्तिसे पूजन करै हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! कार्तिक मासमें विष्णुजी की प्रसन्नताके हेतु ७३ यथोक्तविधिसे प्रातःकाल स्नानकरै कार्तिक महीने में जो मांस और मैथुनको त्याग करताहै ७४ वह जन्म जन्मके इकट्ठे कियेहुए पापोंसे छूटकर श्रेष्ठगतिको प्राप्तहोता है हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुलाराशिके सूर्य्यमें प्रातःकाल स्नान ७५ हविष्य-भोजन, ब्रह्मचर्यरहना ये महापापोंको नाश करतेहैं और जो कार्तिक महीने में मांसखाता और मैथुन करता है ७६ वह जन्मजन्म में गांवका सुअर होता है वैष्णव मनुष्य दूसरीबार भोजन, पराया अन्न और तेलको ७७ कार्तिक महीने के प्राप्तहोनेमें यत्न से छोड़देवे आकाशमें भगवान्को जो दीप देताहै ७८ हे ब्राह्मण! तिसके फलको संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ब्रह्महत्यादिकक्लेश देने वाले पापोंसे छूटकर ७९ भगवान्के पुरमेंजाकर करोड़युगपर्यन्त वह मनुष्य स्थित होता है प्रकाशित दीपको इन्द्रादिक देवता आकाशमें ८० देखकर प्रसन्न होकर सब परस्पर यह कहते हैं कि यह पुण्यात्माओंमें श्रेष्ठ, भगवान्के पूजन में तत्परहै ८१ जोकार्तिकके महीनेमें भगवान्को दीपदेताहै तिसके ऊपर हरिजी सदैव प्रसन्न रहतेहैं ८२ जो कार्तिक के महीने में भगवान् के मन्दिरमें अक्षय दीप देताहै वह मनुष्य दिनदिनमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ८३ जो मनुष्य कार्तिक में लाख तुलसीदलोंसे हरिजीको पूजताहै वह एकलाख अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता

गवान् को पूजनकरै ५० तो भगवान् की दयासे सब कामनाओं को प्राप्तहोवे हे विप्रेन्द्र ! एक कपड़े से हरिजी का पूजन न करै ५१ वा करै तो ऐसी पूजा को केशवजी नहीं ग्रहण करते हैं विना धोये कपड़ेसे जो भगवान् की पूजा करता है ५२ तो वह पूजा विफल होतीहै और विष्णुजी प्रसन्न नहीं होतेहैं जे मनुष्य भगवान् की विना शिखाबांधेहुए पूजा करते हैं ५३ वे पूजा के फलको नहीं प्राप्त होतेहैं यह पूजा बलिग्राह्य होती है और विना संस्कार किये हुए घरमें भगवान् की पूजा कीजावे ५४ तो यह भी पूजा निश्चय बलिग्राह्य होती है स्नान, देवपूजन, दान और पितृपूजन ५५ चतुर मनुष्य तिलक के विना न करै विना तिलक के जो पुण्यकर्म किया जाता है ५६ वह सब भस्म होजाताहै और करनेवाला नरक को जाताहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! शंख, चक्र, गदा और कमल से जिसका शरीर चिह्नित दिखलाई देताहै वह आपही भगवान् जानने योग्य है और जो वैष्णव दक्षिणभुजा में शंख और कमल लिखता है ५७।५८ और बाईंभुजा में चक्र और गदा लिखता है वह निस्सन्देह विष्णुही है जो दहिनी भुजा में शंखके ऊपर कमल लिखता है ५९ तिसके सब पाप क्षणमात्रही में नाश होजाते हैं और बाईंभुजा में चक्र के ऊपर जो गदा लिखता है ६० तिसकी इन्द्रादिक देवता वन्दना करते हैं जो पण्डित अपने माथे में भगवान् के दोनों चरणों को लिखता है ६१ तिसको देखकर पापीभी पापसे छूट जाताहै जो श्रेष्ठ वैष्णव अष्टाक्षर महामंत्र,मत्स्य और कच्छपजी को हृदय में लिखता है वह तीनोंलोकोंको पवित्र करता है जिसका शरीर दिनदिन में कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नित होता है ६२।६३ तिसको कृष्ण जगन्नाथजी परमपद देतेहैं कृष्णजीके अस्त्र से चिह्नित देहवाला मनुष्य शुभ वा अशुभ जो कर्म करताहै वह सब नाशरहित होताहै दानव,राक्षस,भूत,वेतालक,६४।६५ पिशाच,सर्प, यक्ष,विद्याधर,किन्नर, गुह्यक, ग्रह,वालग्रह, ६६ कूष्माण्ड,डाकिनी तथा और विघ्नकारकसव डरसे कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नितको देखकर भागजाते हैं ६७ सिंह और सिंहिनियां तथा औरभी वनवासी

कृष्णजी के अस्त्रसे चिह्नित को देखकर डरसे भागजाते हैं ६८ और कामलाआदिक देहके गिरानेवाले महारोगभी भाग जाते हैं जो मनुष्य कृष्णजीके अस्त्रसे चिह्नित देहवाले को भक्तिसे देखता है ६९ वह कृष्णजी के दर्शनके तुल्य फलको प्राप्त होताहै जो कुं-वारमें त्रिपत्रीकृत दूबों से हरिजीको पूजन करता है ७० तिसकी दूब की नाईं अविच्छिन्न सन्तान वर्तमान होती है कुंवारके महीने में जो भगवान्को कर्कटी के फलको देता है ७१ तिसके हृदयमें कभी शोक नहीं होताहै और सब मासोंमें उत्तम शुभ कार्तिक के महीनेके प्राप्त होनेमें ७२ बुद्धिमान् मनुष्य दामोदर देवदेवजी को भक्तिसे पूजन करै हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! कार्तिक मासमें विष्णुजी की प्रसन्नताके हेतु ७३ यथोक्तविधिसे प्रातःकाल स्नानकरै कार्तिक महीने में जो मांस और मैथुनको त्याग करताहै ७४ वह जन्म जन्मके इकट्ठे कियेहुए पापोंसे छूटकर श्रेष्ठगतिको प्राप्तहोता है हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुलाराशिके सूर्य्यमें प्रातःकाल स्नान ७५ हविष्य-भोजन, ब्रह्मचर्यरहना ये महापापोंको नाश करतेहैं और जो का-र्तिक महीने में मांसखाता और मैथुन करता है ७६ वह जन्मजन्म में गांवका सुअर होता है वैष्णव मनुष्य दूसरीबार भोजन, परा-या अन्न और तेलको ७७ कार्तिक महीने के प्राप्तहोनेमें यत्न से छोड़देवे आकाशमें भगवान्को जो दीप देताहै ७८ हे ब्राह्मण! तिसके फलको संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ब्रह्महत्यादिकक्लेश देने वा-ले पापोंसे छूटकर ७९ भगवान्के पुरमेंजाकर करोड़युगपर्यन्त वह मनुष्य स्थित होता है प्रकाशित दीपको इन्द्रादिक देवता आ-काशमें ८० देखकर प्रसन्न होकर सब परस्पर यह कहते हैं कि यह पुण्यात्माओंमें श्रेष्ठ, भगवान्के पूजन में तत्परहै ८१ जोका-र्तिकके महीनेमें भगवान्को दीपदेताहै तिसके ऊपर हरिजी सदैव प्रसन्न रहतेहैं ८२ जो कार्तिक के महीने में भगवान् के मन्दिरमें अक्षय दीप देताहै वह मनुष्य दिनदिनमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ८३ जो मनुष्य कार्तिक में लाख तुलसीदलोंसे हरि-जीको पूजताहै वह एकलाख अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता

है ८४ और जो लाख बिल्वपत्र से नाशरहित विष्णुजीको पूजन करता है वह भगवान्के प्रसादसे परममोक्षको प्राप्त होताहै ८५ जो कुछकार्तिकके महीनेमें विष्णुजीको उद्देश कर दिया जाताहै वह सब नाशरहित होता है यह मैं सत्यही कहताहूं ८६ जो कार्तिक के महीने में घीसे युक्त सुरपत्रको दिनादिनमें वैष्णवको देताहै तिसकी विष्णुजीके पुरमें स्थिति होतीहै ८७ जो सफेद वा कालेफूले कमलके पत्रसे भगवान् को पूजन करता है तिसका पृथ्वीमें क्या दुर्लभ है ८८ जिस श्रेष्ठब्राह्मण ने कार्तिकके महीनेमें दैत्योंके जीतने वाले,हरि, विष्णु जीको कमल न दिया उसने कुछ न किया ८९ एकही कमल लाकर जो भगवान्को देताहै तिसको लक्ष्मीके पति भगवान् विष्णुजी क्या नहींदेते हैं ९० कार्तिक के महीनेमें कमलों से जिसने हरिजीको नहीं आराधन किया तो जन्मजन्ममें उसके घरमें लक्ष्मीजी नहीं स्थित होतीहै ९१ जो केशव महात्माजी को कमलके बीज देता है वह प्रत्येक जन्ममें शुद्धब्राह्मणके कुलमें उत्पन्न होताहै ९२ और ब्राह्मणके कुलमें उत्पन्न होकर चारों वेदों का मित्र, धनवान्, बहुत पुत्रवाला और कुटुम्बों का पालनकरने हारा होताहै ९३ हे जैमिनि! कमलके समान फूलनहीं है जिससे गोविन्दजीको पूजनकर पापी भी मोक्षको प्राप्त होता है ९४ कमल के फूलका माहात्म्य विशेषकर मैंनेकहा अब हे श्रेष्ठब्राह्मण! इतिहाससमेत सावधानहोकर सुनिये ९५ एकप्रजा नाम ब्राह्मण सब शास्त्रका जाननेवाला हुआ जिसकामन भगवान्के चरणकमल में भौंरेकी नाईं सदैव स्थित रहताथा ९६ हे श्रेष्ठब्राह्मण! सदैव वह देवता, ब्राह्मण और गुरुओं की पूजा सैकड़ों कार्यों को छोड़कर करताथा ९७ पराई द्रव्यको विषके समान और पराई स्त्रियों को माताके सदृश और शत्रुकोभी मित्रके समान समझताथा ९८ यह परमार्थका जाननेवाला ब्राह्मण आयेहुए याचक अतिथि श्रेष्ठब्राह्मणको देखकर बड़ेमानको न प्राप्त होताथा ९९ घोर, अपारसंसारसागरके तरने की इच्छा करने वाले तिसने सब यज्ञ और सब व्रत करलिये १०० एक समयमें यह श्रेष्ठ ब्राह्मण भगवान्की भ-

क्ति में परायण होकर चित्तसे अपनी मृत्यु और जाति की चिन्तना करता भया १०१ कि मैं पूर्वमें कौनथा कौन पूर्वसमय में कर्म कियाथा कैसे जन्म प्राप्तहुआ और फिर कहां जाऊंगा १०२ यह चिन्तना कर यह ब्राह्मण वारंवार श्वास लेकर पहले के वृत्तान्त जानने के लिये महादेवजी के क्षेत्र को जाताभया १०३ तहांपर ब्राह्मण हाथ जोड़ परमभक्तिसे युक्तहोकर मधुरवाणीसे देव, शिव, शंकरजीकी स्तुति करनेलगा १०४ हे महादेव, परमेश्वर, शंकर, ईशान, वरदेनेवाले, प्रभु, १०५ ज्ञानरूप, ज्ञान देनेवाले, सब प्राणियोंके हृदयरूप कमलके निवास करनेवाले १०६ संसार के रचनेवाले, पालन करनेवाले, संहार करनेहारे, पशुओंके पति,१०७ अग्निनेत्र, अग्निचक्षु, चन्द्रनेत्र, सूर्यनेत्र, १०८ भस्म से भूषित, कृत्तिवासः, हाड़ोंके मालावाले, नीलकण्ठ, १०९ पांच मुखवाले, शूल हाथमें धारे, कामदेवके अभिमानके नाश करनेवाले, भयानकमूर्त्ति, ११० देवोंके देव, त्रिपुरारि, पार्वतीके पति, भीममूर्ति, १११ बाणासुरकी भक्तिसे अत्यन्त संतुष्टमनवाले, बहुरूप, विश्वरूप,११२ गंगाधर, दक्षकी यज्ञके नाश करनेवाले, प्रेतोंके पति, पिनाकी,११३ ईशान, मनीष, दृश्य, अदृश्य, चिन्त्य, अचिन्त्य आपके नमस्कारहै ११४ देवताओंके एकनाथ ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, सब आर्ति हरनेवाले चन्द्रमा आपही हैं आपके नमस्कारहै और परमेश्वर भी आपही हैं आपके नमस्कार है ११५ तिसकी स्तुतिको सुनकर संसार के कल्याण करनेवाले शंकर परमेश्वरजी प्रसन्न होकर सहसासे प्रकट होगये ११६ सब देवोंसे नमस्कार कियेगये महादेवजी को प्रकटहुए देखकर अत्यन्त भक्तियुक्त वह ब्राह्मण महादेवजी के चरणों में वन्दना करता भया ११७ फिर वह श्रेष्ठ ब्राह्मण आनन्दसे निर्भरमन होकर हाथ जोड़कर वर देने वाले, प्रभु, महादेवजीकी स्तुति करनेलगा ११८ कि जिन देवोंके स्वामीको इन्द्रसमेत देवताभी नहीं देखते हैं तिनको मैं साक्षात् देखताहूं यह मेरी महाभाग्य है ११९ जो परमेश्वर ध्यानमें अवस्थित चित्तसे दिखलाई देते हैं तिनको मैं साक्षात् देखताहूं और

मेरा क्या साध्यहै १२० आपका नाम स्मरण करनेसे महापापी भी परमस्थानको जाते हैं तिन प्रभुको मैं देखताहूं १२१ मैं कृतार्थ और भाग्यवान्हूं हे परमेश्वरजी! आपके नमस्कार हैं प्रसन्न हूजिये १२२ तब महादेवजी बोले हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! हे महाभाग! तुम्हारे इसवाक्यसे मैं प्रसन्नहूं वर मांगो निश्चय मैं वर देनेकी इच्छा करताहूं १२३ तब ब्राह्मण बोला कि हे नाथ! देवताओंसे भी अदृश्य आप परमात्माको मैं साक्षात् देखताहूं और वरोंसे क्या कार्य है १२४ हे महादेव! हे परमेश्वर! तिसपरभी आप वर देना चाहतेहैं तो जो कुछ मैं पूंछताहूं तिसको कहिये १२५ हे देव! हे नाथ! हे प्रभो! पूर्वसमय में मैं कौनथा कहां स्थित और क्या कार्य कियाथा और संसाररूपी समुद्रमें कैसे गिराहूं १२६ कर्मसे देह प्राप्त होताहै देहधारी पापसे लिप्त होता है फिर पापके प्रभाव से विषमगति प्राप्तहोतीहै १२७ हे नाथ! हे शंकरजी! किन कर्मोंके प्रभावसे अनेक प्रकारके दुःख देनेवाले इसजन्मको मैंने पाया है प्रसन्न होकर कहिये १२८ यह जन्म पापका मूलहै जन्म दुःखका कारणहै तिससे मैं अपने पूर्व वृत्तान्तके जाननेकी इच्छा करता हूं १२९ कर्मोंके विपाकसे मूत्र और विष्ठासे युक्त माताकी कोखिमें मैं पेटकी अग्निसे तापित हुआहूं १३० हे प्रभो! हे भक्तोंकी पीड़ा के नाश करनेवाले! गर्भवासके समान दुःख संसार में नहीं मानताहूं तिसको मैंने कैसे अनुभूत कियाहै १३१ इस महाघोर संसार, अनेक दुःखोंसे युक्त, असार, विष्णुजी की मायासे मोहित, पापों के आश्रय, १३२ दुस्तर, वन्धुहीन, काम और क्रोधआदिसे संयुक्त, शोक, रोग, जन्म और मृत्युके देनेवाले १३३ अपार में हे संसार के स्वामी! हे शिव! हे विभुजी! मैं कैसे गिराहूं जो आप की मेरे ऊपर कृपाहै तो यह सब कहिये १३४ तब महादेवजी बोले कि हे श्रेष्ठब्राह्मण! यद्यपि यह अत्यन्तगुह्य, महान् और प्रकाश करने के योग्य है तथापि मैं तुझ भक्त से कहता हूँ १३५ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! पूर्वसमय में तू शवरोंके वंश में उत्पन्न, दण्डपाणि नाम से प्रसिद्ध, अच्छे मनुष्यों के दुःख देनेवाला था १३६

परलोकका भय छोड़कर ज्ञानोंसे हीनहोकर प्रपन्नों को आर्ति और परमक्लेश देनेवाली चोरों की वृत्ति करता था १३७ तुझको चोरों की वृत्तिमें प्राप्त अत्यन्तनिर्दयी देखकर और सब भाईभी चोर होगये १३८ तिन भाइयों के मैं नाम कहताहूँ जिनके साथ पूर्व समयमें तूने चोरी की थी १३९ दण्डी, दण्डायुध, दत्तवान्, दत्तभू, सुदण्ड, दण्डकेतु ये छः भाई तेरे कहेगये १४० तिन महाघोर भाइयोंसमेत तू दयाओं से हीनहोकर नित्यही दण्डसे मनुष्योंको व्याकुल करता भया १४१ तिन दुष्ट भाइयोंसहित तूने धनके लोभसे प्रान्तरवन में हज़ारों मनुष्यों का नाश किया १४२ हे ब्राह्मण! सदैव वन में स्थित होकर तूने तीक्ष्णबाणोंसे गौवोंको मारकर मदिराके साथ मांसको भोजन किया १४३ तदनंतर सब बनियां तेरे डरसे तिस वनमें यानविधिको त्याग करदेतेभये वहांपर अनर्थ सदैव होताभया १४४ तेरे चोरोंके भाव में प्राप्त होने में जिसका द्रव्य था उसका न होताभया जिसका घर था उसका न हुआ जिसकी स्त्री थी उसकी वह न हुई १४५ इसीप्रकार तिन अपने भाइयोंसमेत तिस महावनमें प्राप्त होकर राह के श्रमसे थककर स्नानकरने के लिये तालाबको गया १४६ हे ब्राह्मणों में उत्तम! तहां पर क्षुधायुक्त तूने स्नान किया और तेरे भाइयों ने कमलकी नाल और जलसेवन किये १४७ तदनन्तर हे सज्जनों में अत्यन्तश्रेष्ठ! हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! तूनेभी बहुत फूले हुए कमलके फूलोंको भोजनकिया तिसी समयमें एक वनमेंरहने वाला ब्राह्मण सर्ववेदा नामसे प्रसिद्ध स्नान करने के लिये आता भया १४८। १४९ और तहां स्नानकर वह धर्मात्मा नम्रतायुक्त होकर जनार्दन भगवान्के पूजनेके लिये तुमसे मांगताभया १५० तब हे विप्रेन्द्र! तुमने एक निर्मल कमल परमभक्तिसे भगवान् की पूजाके लिये दिया १५१ तो तुम्हारे दियेहुए कमलसे प्रसन्न होकर वह उत्तम ब्राह्मण तहांहीं सबके करनेवाले विष्णुजीको पूजन करताभया १५२ तिन सब वेदके जाननेवाले ब्राह्मणको भगवान् की पूजा में परायण देखकर तुमभी हँसकर सुन्दर कामना

देनेवाले विष्णुजीको नमस्कार करतेभये १५३ तदनन्तर वह ब्राह्मण परात्मा, धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले भगवान् को यथोक्त विधिसे पूजनकर जैसे आयाथा वैसेही चलागया १५४ हे सज्जनों में श्रेष्ठ! तिसीकमलके देने, प्रणाम करने और विष्णुजी की पूजाके दर्शनसे तुम्हारेसब पापनष्ट होगये १५५ हे उत्तम ब्राह्मण! तब कुछदिनों में तिसी महावनमें कालप्राप्त होकर नाशको प्राप्तहोगये १५६ तब तिसी कर्मसे प्रसन्न होकर दयाके स्थान भगवान् तुमको देवताओंके भी दुर्लभ श्रेष्ठस्थान को देतेभये १५७ तहांपर लक्ष्मीपतिजीकी कृपासे हज़ार और सौमन्वंतर अनेक प्रकारके सुख भोगकर १५८ फिर कर्मके अन्त में इस कर्मभूमि में आकर तिन्हीं पुण्यके फलोंसे ब्राह्मणके यहां उत्पन्न हुएहो १५९हे सत्तम! ब्राह्मणके शुद्धकुलमें जन्म पाकर तुमको सब गुणोंकेआश्रय, अचंचल हरिभक्ति मिली १६० क्रियायोगसे तुमने महाविष्णु प्रभुजी को आराधन किया इससे भगवान् तुमको ज्ञानदेवेंगे और ज्ञानसे मुक्तहोजावोगे १६१ हे ब्राह्मण! तुम प्रसन्न होकर अपने स्थानको जावो तुम्हारा कल्याण होगा मेरे दर्शन तुमने पाये हैं इससे संसार के बन्धनसे मुक्तहो १६२ व्यासजी बोले कि हे विप्र जैमिनि! ऐसा कहकर महादेवजी तहांहीं अन्तर्द्धान होगये और वह ब्राह्मण कृतार्थ होकर अपने मन्दिरको जाताभया १६३ तदनन्तर विष्णु परमेश्वर जीको तीन दिन मनोरम कमलके फूलोंसे स्तुतिके अर्थ यत्नसे आराधन करताभया १६४ बहुत काल कमलके विचित्र सुन्दर फूलोंसे विष्णुजीको आराधनकर ज्ञानको प्राप्त होकर भगवान्के प्रसादसे मोक्षको प्राप्त होजाताभया १६५ विना इच्छा के कमल देनेवाले का इस प्रकार फल है और जो भक्ति से विष्णुजी को देता है तो नहीं जानते कि क्याहोगा १६६ यह सत्य ही सत्य मैं कहता हूं कमलोंसे हरिजीको पूजनकर परमपद प्राप्त होता है १६७ एक ही कमल जो भगवान् को देताहै तो उसका फिर भयदायक संसारमें जन्म नहीं होताहै १६८ जे दयामय, कामना देनेवाले नारायणजी को एक दिन भी फूलेहुए कमलों से पूजते

हैं वे उत्कट पापोंसे युक्त पापी भी मुक्तिको प्राप्त होजाते हैं १६६ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

# चौदहवां अध्याय ॥

भगवान्‌की पूजाका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि ! वैष्णव मनुष्य भक्तिभावसे अगहनके महीने में महालक्ष्मी से युक्त नाशरहित विष्णुजी को पूजनकरै १ म्लेच्छों के देशमें तथा पतितके स्थान में और दुर्गन्धसे युक्त स्थानमें विष्णुजीको न पूजनकरै २ पाखण्डों, महापापियों और झूंठ बोलनेवालों के समीप विष्णुजी का पूजन न करै ३ रोनेवालों, लड़ाई करनेवालों तथा हँसनेवालों के स्थान में भी हरिजी का पूजन न करै ४ प्रतिग्रह में रत, कृपण, परायेद्रव्यकी अभिलाष करनेवाले ५ तथा कपट वृत्तियों के स्थान में विष्णुजी का पूजन न करै नारायणजी के पूजन में श्रेष्ठ भक्ति में परायण होकर ६ और जगहसे चित्तको हटाकर हरिजीके ध्यान में परायण होवे हाहाकार, निश्वास, विस्मय, ७ पाखण्डजनों से भाषण इन सबको छोड़कर भगवान् का पूजनकरै अनन्यमन होकर देवदेव, जगद्गुरुको ८ जो भस्म में भी पुष्प दिया जाता है तो वह भी हरिजी को प्राप्त होताहै और सैकड़ों चिन्ताओं के आगम में थककर शिलाचक्रों में भी ९ जो मनुष्य फूल देता है तिसको प्रभुजी नहीं प्राप्त होते हैं अनन्यमन होकर पण्डित भक्तिसे विष्णुजी को पूजन करै १० भ्रांतचित्त होकर जो कर्म किया जाता है वह निष्फल होता है क्योंकि सब कर्म मन के अधीन है और तीनों लोक भी मनके अधीन हैं ११ तिससे मन को दृढ़कर लक्ष्मीपतिजी को पूजन करै हे उत्तम ब्राह्मण ! जिसकी पूजा और जगह और मन और जगह होताहै १२ तिसका सौकरोड़ कल्पोंमें भी कार्य नहीं फलताहै यत्नसे शौचकर विष्णुजी की पूजामें परायण होकर १३ मनकी शुद्धिसे जो हीनहो तो चाण्डाल की नाईं होताहै हे ब्राह्मण ! विना भक्तिसे जो बहुतकाल विधिपूर्वक

तपस्या कीजाती है १४ वह सब निरर्थक होजाती है केवल देहही का शोधन होताहै सुमेरु पर्वतके प्रमाण सोना कुटुम्बी ब्राह्मणको १५ विना भक्तिके कल्याणके लिये दियाजावे तो वह द्रव्यनाशही के लिये होताहै तिससे एकमन और भक्ति श्रद्धासे युक्त होकर १६ सभामें वैष्णवको सवास्तुक आदि सागदेवे सुन्दर पकाहुआ नारंग का फल जो केशवजी को देताहै वह हमलोगों से भी पूजित होता है यत्नसे भगवान् हरिजी को नवीन वस्तु प्रियहै १७। १८ तिसको अगहन के महीने में भक्तिसे भगवान् को देवे पौषमास के प्राप्त होनेमें श्रीकृष्ण, वर देनेवाले, प्रभु, १९ देवजी को वैष्णव मनुष्य सुन्दर ईखके रसों से स्नान करवावे हे विप्रेन्द्र! जो प्रभु विष्णुजी को ईखके रसोंसे स्नान कराता है २० वह इस लोक में सब सुख भोगकर मरकर ईखके रसके समुद्रमें जाताहै जो देवदेव विष्णुजीको ईखकी नैवेद्य देताहै २१ वहभी तिसी फलको प्राप्त होताहै और बहुत कहनेसे क्याहै पौष महीनेमें सुन्दर दूधकी पृथुक दहीसमेत २२ भगवान्को देकर मनुष्य सब कामनाओं को प्राप्त होताहै सब भगवान्के पुराने कपड़ों को दूरकर २३ लक्ष्मीजीसमेत विष्णुजीको पौषकी संक्रांतिमें शीतके निवारणके लिये नवीन कपड़े देवे २४ और मोक्षकी इच्छा करनेवाला मनुष्य दश वर्ण पीठक देवे जो भगवान्को पूजनकर शङ्ख बजाताहै २५ हे वत्स! तिसके फलको कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनो अगम्या स्त्रियोंमें गमन आदिक सब पापोंसे छूटकर २६ अन्तसमय में विष्णुजीके पुर जाकर वह विष्णुजी के साथ आनन्द करताहै जो भगवान्की पूजाके समयमें गरुड़से चिह्नित घण्टाको बजाताहै तिसकी पुण्य को मैं कहताहूं नहीं भोजनके योग्य वस्तुओंके भोजन करने आदिक सब पापोंसे छूटकर २७।२८ सुन्दर रथपर चढ़कर विष्णुजीके स्थानको जाताहै तहांपर सौकरोड़ कल्प सब कामनाओं को भोग कर २९ फिर वह चारों वेदका जाननेवाला उत्तम ब्राह्मण पृथ्वीमें आकर तहां पर सौ करोड़ कल्प सब कामनाओं को भोगकर ३० फिर विष्णुजीके पुरको जाकर उत्तम मोक्षको प्राप्त होताहै और जो

भगवान् की पूजा के समय में वीणा बजाता है ३१ वह मनुष्य प्रत्येक जन्म में पण्डितों में श्रेष्ठ होता है जो भगवान्‌की पूजा में मृदङ्ग बाजा बजाताहै ३२ तिसको प्रसन्न होकर भगवान् अभीष्ट फल देते हैं और जो डमरु, डिंडिम, झर्झरी, मधुरी, ३३ ढोल, नगारा, काहल, सिंधुवारक, कांस्य, करताल और वंशी को महाविष्णुजीकी पूजाके समयमें बजाताहै तिसकी पुण्यको सुनिये चोरी के पापों से वह मुक्त होकर भगवान् के स्थानको जाता है ३४।३५ और परम ज्ञान प्राप्त होकर तहांहीं मुक्त होजाताहै जो भगवान् की पूजा के समय में मनोहर शब्द करताहै ३६ और मुखसे बाजा बजाताहै तिसकी पुण्य मैं कहताहूं करोड़ करोड़ कुलों से युक्त होकर वह भगवान् के मन्दिर को जाताहै ३७ और तहांहीं ज्ञानको प्राप्त होकर नाशरहित मोक्षको प्राप्त होताहै जो भक्तियुक्त होकर विष्णुजी के स्थान में नाचता है ३८ वह विष्णुजी के परमपद को जाता है जो भक्ति से नारायणजी के आगे गीतगाताहै ३९ वह गन्धर्वों के पुरों में राजा होताहै वैष्णव मनुष्य भक्तिसे स्तोत्रों से जगन्नाथजी की स्तुति करताहै ४० तिसको प्रसन्न होकर भगवान् सब कामनाओं को देते हैं इस विधि से महीने महीनेमें जो हरिजी को पूजन करता है ४१ तिसके ऊपर भगवान् थोड़ेही समय में प्रसन्न होजाते हैं ४२ जे मनुष्य इस अत्यन्त गहरे, सबदुःखों के देने वाले संसाररूपी समुद्र के तरनेकी इच्छा करते हैं वे सब मनोज्ञ,देवताओं के समूहों से सेवने योग्य भगवान् के दोनों चरणकमलों को पूजन करैं ४३ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणे क्रियायोगसारेभगवत्पूजामाहात्म्यंनामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

## पन्द्रहवां अध्याय ॥

रामजी के नामका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ब्राह्मण ! फिर नारायणजी के माहात्म्यको कहताहूं सुनिये जिसके सुननेसे मनुष्य सब पापोंसे छूट जाताहै १ हे उत्तम ब्राह्मण ! यह सब संसार विष्णुजी के अंशसे

उत्पन्नहै तिससे परमार्थी धीर विष्णुमय को देखते हैं २ ब्रह्मा, महादेव और इन्द्रादिक सब देवता विष्णुजी के अंशहैं तिससे सब देवताओंकी पूजा एक विष्णुजीहीको प्राप्त होती है ३ जिस किसी उपायसे सब पापोंके नाश करनेवाले विष्णुजी के नामों के स्मरण करनेवालों का कहीं अशुभ नहीं होताहै ४ सब पापकर्मसे ही कहाताहै और यह विष्णुजी का स्मरण नाशरहित और पाप नाशकरने हारा है ५ मोक्षकी इच्छा करनेवाला वैष्णव मनुष्य सोते, भोजनकरते, कहते, स्थितहोते, उठते तथा चलतेहुए भी अविरत विष्णुजी को स्मरणकरै ६ श्रेष्ठ सब मुनियों ने भगवान् के स्मरण में सब दुःखों का नाश करनेवाला काल का नियम नहीं कहाहै ७ हेविप्रर्षे! भगवान् केशवजी के नाम का प्रभाव इतिहाससमेत संक्षेपसे कहताहूं सुनिये ८ पूर्वसमय सतयुगमें पवित्र, सब गुणोंका पार जानेवाला बनियोंके कुलमें श्रेष्ठ परशु नाम बनियां हुआहै ९ यह दैवयोगसे पहलीही अवस्था में खांसी दमे के रोगसे पीड़ित होकर मरगया १० तब जीवंती नाम तिसकी स्त्री जो कि सुन्दरकरिहांव और नवीन यौवनवाली थी यह स्त्री पतिके मरने के पीछे पिताके घरको चलीगई ११ और वहांपर नवीन यौवनसे अभिमानयुक्तहोकर बांधवों से निषेधको प्राप्तहोकर भी व्यभिचारी पुरुषोंसे भोग करानेलगी १२ व्रतका नियम वा घरके कामको इस नवयौवनाने छोड़दिया व्यभिचारी पुरुषोंमेंही चित्त लगायेरही १३ यह सुन्दर कटि और मोटे स्तनवाली स्त्री कामसे अन्धी होकर धर्ममार्गको कभी न देखतीभई १४ तिसको दुःशीला देखकर तिसी का धर्ममें तत्पर पिता अयशके डरसे डरकर अत्यन्त कोपयुक्त होकर यह बोला १५ कि रेदुष्टे! रेपापिनि! सब दोषोंसे हीन मेरे वंशमें जन्मपाकर क्यों पाप तू करती है १६ रे अभद्रे! जो तेरा चित्त पापहीमें है तो खानेकेलिये नहीं आना स्थानसे जा मेरा घर छोड़ १७ पितासे इसप्रकार कहीहुई वह स्त्री क्रोधसे लालनेत्र होकर पिताके घरको छोड़कर सुखपूर्वक चलीगई १८ फिर अपनी इच्छासे व्यभिचारियों की कांक्षा से घूमती हुई वेश्याओं की वृत्तिकर लज्जा

से हीन होकर स्थित होतीभई १९ पुलिन्द, शबर और चाण्डाल भी तिसके घर में आता तो उससे भी यह दुष्टा आनन्द से क्रीड़ा करती थी २० यह वेश्याकी नाईं कभी भी चित्तसे परलोक के भयको न चिन्तन करती भई २१ हे ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ! कभी तिसकेस्थानमें बहेलिया सुयेके बच्चेकोलेकर बेंचनेके लिये आया २२ तब यह वेश्या परमप्रीति से बहेलिये को धनदेकर उत्तम सुयेके बच्चेको ले लेतीभई २३ और कुतूहल उत्पन्नहोकर सुयेके योग्य भोजनको देकर नित्यही उसका पालन करती भई २४ इस वेश्या के पुत्र नहींथा इससे उससुयेको अपने पुत्रहीकी नाईं मानकर तिसका पालन करतीभई २५ औरवहपक्षी तिसकी आज्ञासे नित्यही जातिकी नाईं चित्तके वात्सल्य के व्यवहार को करता भया २६ तदनन्तर यह लब्धभाव होकर सुआ तिस वेश्यासे सुन्दर अक्षर वाला राम यहनाम निरन्तर पढ़ायागया २७ तब वह सुआ परब्रह्म, सबदेवोंसे अधिक, महत्, सब पापों के नाशकरनेवाले रामनामको सदैव पढ़ताभया २८ रामजीके नामके उच्चारणमात्रही से सुआ और वेश्या दोनोंके सब घोर पाप नाशहोगये २९ कभी वह वेश्या और सुआ दोनों एकही समयमें नाशको प्राप्तहोगये ३० तब सब पापकरनेवाले दोनोंके लेनेके लिये धर्मराजने चण्डादिक दूतोंको भेजा ३१ तब तो अत्यन्त वेगवाले, फँसरी और मुद्गर हाथ में लेकर चण्डादिक सबदूत यमराजजी की आज्ञासे आतेभये ३२ और इन्हीं दोनोंके लेनेके लिये विष्णुजीके समान पराक्रमी सब भगवान्‌के दूतभी आकर दोनोंको फँसरीसे बँधे हुए देखकर ३३ क्रोधयुक्त होकरघोर यमराजके दूतोंसे ये वचन बोले ३४ कि हे यमदूतो! हमने मुखसे बड़ीविचित्र ये वाक्यसुनीहै ३५ कि ये दोनों भगवान्‌के भक्तभी यमराजजीसे दण्डके योग्यहैं आश्चर्यकी बात है कि दुष्टोंकाचरित्र कभी उत्तम नहीं होताहै ३६ जिससे कि निरन्तर सज्जनोंकी भी यत्नसे हिंसा करते हैं पाप करनेवाले दुष्टोंका यह अद्भुत चरित्रहै ३७ पुण्यात्मा तो सब संसारको पापरहितही देखते हैं और पापी सबको पाप कियेही देखतेहैं ३८ पुण्यात्माओं

की पुण्य सुनकर धर्मयुक्त तृप्त होजाते हैं और पापियोंके पापसुन कर पापी मनुष्य तृप्तहोते हैं ३९ पापी पापकी चर्चा सुनकर जैसे तृप्त होते हैं वैसा सौभार सोना पाकर नहीं तृप्त होते हैं ४० आश्चर्य है कि महात्मा महाविष्णुजीकी माया बलवती है कि आत्मा के पीड़ा करने वाले भी पापको करते हैं ४१ व्यासजी बोले कि हेजैमिन! ब्राह्मण! ऐसाकहकर विष्णुजीकी भक्तिमें परायणविष्णुदूत वेश्या और सुयेके बन्धनको चक्रकी धारासे काट देते भये ४२ तब अग्निके समान क्रोधयुक्त यमदूत सहसा से तहांपर जलते हुये अंगारके समूहोंको वर्षने लगे ४३ और दण्डदूत भगवान्के दूतों से बोला कि इस सुये और पापिनी वेश्याके लेनेके लिये मैं आयाथा और आपलोग भी लेनेहीके लियेआयेहैं तो यह अद्भुतही साहुआहै ४४ हे अत्यन्त श्रेष्ठो! निश्चय जो इन दोनोंके लेनेही के लिये इच्छा करते हो तो इस समयमें हमलोगोंके साथ लड़ाई कीजिये ४५ ऐसा कहने पर बलवान्,रामदूत, उद्धत, हथियार धारणकर सब सिंहके शब्दोंसे दिशाओंको पूर्ण करते भये ४६ महात्मा सुप्रतीक आदिक विष्णुजीके दूत सुन्दर ललितशंख के शब्दों से संसारको शब्दमय कर देतेभये ४७ तब यमराजके महादूतों के धनुषोंसे छूटे हुए वाणों से अत्यन्त घोर संग्राम में विष्णुदूत आच्छादित होगये ४८ कोई महायुद्ध में क्रोध से शूल, कोईशक्ति, कोई हज़ारों बाण और कोई चक्रों को छोड़ते भये ४९ यमराज के दूतों के छोड़े हुए बड़े अस्त्रों और वाणों को बड़े देवता विष्णुदूत गदा के प्रहार आदिकों से चूर्ण करतेभये ५० तदनन्तर इन भगवान्के दूतों के चक्रकी धारा से यमराज के दूतों के किसी के चरण किसीके भुजा ५१ किसी के शिर किसी के हृदय कटगये किसी के अत्यन्त घाव हुये कोई के मुख कटकर प्राणरहित होकर गिरे ५२ कोई के एक चरण कोई के एक हाथ कटगये तब यमराजके दूत सहसा से लड़ाई छोड़कर भागते भये ५३ भागने में परायण दूतों को देखकर क्रोधसे चण्ड दूत मुद्गर धारण कर लड़ाई में प्रवेश करताभया ५४ और यमराज के दूतसमूहों में श्रेष्ठ अत्यन्त प्रता-

पी चण्ड सैकड़ों मुद्गरों से विष्णुदूतों को ताड़ित करते भये ५५ तब भगवान् के दूत क्रोधयुक्त होकर तीक्ष्ण आयुधों की वर्षा से अत्यन्त पराक्रमी चण्ड के ऊपर वर्षा करतेभये ५६ फिर रक्त से देहसींची होकर चण्ड मुद्गर से विष्णुदूतों को अलग अलग ताड़ना करता भया ५७ तबतो संग्राममें चण्ड से ताड़ितहुए भगवान् के दूत सत्व त्याग कर सुप्रकाश जी के पीछे प्राप्त होते भये ५८ फिर दुपहरिया के फूलके समान नेत्रवाला सुप्रकाश महाबली गदा हाथ में लेकर रणभूमि में प्रवेश करताभया ५९ और विष्णुजी के समान पराक्रमी इस सुप्रकाश ने अत्यन्त क्रोधकर चण्डके हाथ में मुद्गरमारा तो मनुष्यों के भय देनेवाले चण्ड के हाथ से ६० महाभयङ्कर, पवित्रगंधयुक्त धुआं उठताभया तब वेगयुक्त चण्डने भी सुप्रकाश को मुद्गर से ताड़ित किया ६१ तो सुप्रकाश शीघ्रही अत्यन्त भयदायक चिनगारियों को छोड़ता भया तदनन्तर वह चण्ड क्रोधयुक्त तिस मुद्गरसे ६२ महाबलवान् सुप्रकाश को ताड़ित करता भया तब सुप्रकाश कष्ट को भूलकर कोपयुक्त होकर ६३ गदा से यमराज के दूत चण्ड को ताड़ित करता भया सुप्रकाश से ताड़ित होकर चण्ड रक्त से युक्त होकर ६४ मूर्च्छित हो पृथ्वी में बाल सूर्यकी नाईं गिरताभया तब यमराजके दूत मूर्च्छायुक्त चण्ड को लेकर ६५ युद्ध से डरकर हाहाकार करते हुए भागते भये तब विष्णुजी के सब दूत अत्यन्त प्रसन्न होकर ६६ शंखों को बजाते भये और रक्तके समूह से डूब कर यमराज के दूत ६७ भयसे विह्वल रोते हुए यमराजजीके पास जातेभये ६८ और वहां यमराजजी से बोले कि हे सूर्य के पुत्र! हे महाबाहो! हम लोग आपकी आज्ञा करनेवाले हैं तिसपरभी विष्णुजी के दूतों ने हमलोगों की इस प्रकार की दुर्गति की है ६९ हे प्रभो ! यद्यपि वेश्या और सुआ ये दोनों महापापियोंमें श्रेष्ठ थे तिसपरभी वे राम नाम के प्रभाव से नारायणजीके स्थानको प्राप्तहोगये ७० जे दुरात्मा पाप करनेवाले आपसे दण्ड के पाने के योग्यहैं वे भी! विष्णुपुरको जो जातेहैं तो आपकी क्या प्रभुता है ७१ विष्णुजीके दूतों

ने हम लोगोंका यह अपमान नहीं कियाहै हे नाथ! केवल आपही का कियाहै जिससे हमलोग आपके दूतहैं ७२ तब यमराजजी बोले कि हे दूतो! वे दोनों राम राम इन दोअक्षरों को स्मरण करते थे तिससे मेरे दण्ड के योग्य नहीं थे उनके नारायणही प्रभुहैं ७३ भो दूतो! दृढ़सुनो संसारमें वह पाप नहीं है जो रामजीके स्मरण से शीघ्रही नाशको न प्राप्तहो ७४ हे वीरो! जे मनुष्य प्रतिदिन श्रेष्ठ देवताओं से पूजित भगवान्के पापसमूहों के नाश करनेवाले नाम को भक्तिसे स्मरण करते हैं वे पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ७५ जे पुरुष पृथ्वी में निरन्तर भक्तिसे गोविन्द, केशव, हरे, जगदीश, विष्णो, नारायण, प्रणतवत्सल यह कहते हैं वे अत्यन्त पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ७६ और जे पुरुष पृथ्वी में निरन्तर भक्तार्तिनाशन, सुरेश्वर, दीनबन्धो, लक्ष्मीपते, सकलपापविनाशकारिन् यह कहते हैं वे पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ७७ दामोदर, ईश्वरमुख, अमरवृन्दसेव्य, श्रीवासुदेव, पुरुषोत्तम और माधव ये शब्द जे अपने मुखोंसे कहते हैं तिनको हम प्रतिदिन नमस्कार करते हैं ७८ जिन मनुष्योंका नारायण, संसारके एक स्वामी, मुरारिजी की चर्चाओं में अत्यन्त स्नेहयुक्तचित्त होता है तिनके मैं निरन्तर अधीनहूं क्योंकि वे भगवान् के रूपको सेवनकरते हैं ७९ जे विष्णुजीके पूजन में रत, भगवान् के भक्तोंके भक्त, एकादशीव्रत में रत, कपटसे हीन, विष्णुजीके चरणों के जलको शिरसे धारण करते हैं वे पापी भी मेरे दण्ड के योग्य नहीं हैं ८० जे मधुसूदन भगवान् की सब पापसमूहों की नाश करनेवाली नैवेद्य शेषको भोजन करते हैं और जे कानों और शिरमें तुलसीकी पत्तीको नित्यही धारण करते हैं तिनको मैं प्रणामकरताहूं ८१ जे कृष्णजीके चरणकमलों के पूजन में तत्पर, ब्राह्मण के पूजन में रत, गुण के सेवनकरनेवाले, दीन मनुष्यों के हृदय में अत्यन्त सुखदेनेवाले हैं तिनके मैं निरन्तर अधीनहूं ८२ जे सत्य वाक्य के कहने में सदैव अनुरक्त, लोकोंको प्रिय, शरण में आयेहुए मनुष्यों के पालनेवाले और जे परार्द्ध द्र-

व्यको विषकी नाई देखते हैं वे मनुष्य मेरे दण्ड देनेके योग्य नहीं हैं ८३ जे अन्नके दानमें निरत, जलके देनेवाले, पृथ्वी के देनेहारे, सब मनुष्यों के हितकी इच्छा करनेवाले, जीविकाहीन मनुष्यों के तृप्ति करनेवाले और अत्यन्त शांतहैं वे निश्चय कभी दण्ड देने योग्य नहीं हैं ८४ और जे जातिवालों के पालने में रत, प्रिय बोलनेवाले, दम्भ, क्रोध, मद और मत्सर से रहित चित्तवाले, पापदृष्टि से रहित, इन्द्रियजीतनेवाले हैं तिनकी मैं कभी चर्चा नहीं करताहूं ८५ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इस प्रकार धर्मराजजी ने अपने दूतों को समझाया और संसार के स्वामी हरिजी के अतुलप्रभावको जनाया ८६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! विष्णुजी के नाम सब देवताओं से अधिक हैं तिनके मध्यमें तत्त्वके जानने वाले रामनामको श्रेष्ठ कहते हैं ८७ राम ये दो अक्षर सब मंत्रोंसे अधिकहैं जिनके उच्चारणहीमात्र से पापी श्रेष्ठगतिको प्राप्त होता हैं ८८ रामजीके नाम का प्रभाव सब देवों का पूजन है इसको महादेवही जानतेहैं और नहीं जानता है ८९ विष्णुजी के सहस्रनामों के पढ़नेसे जो फल मिलताहै तिस फलको मनुष्य रामजीके नामके स्मरणही से पाताहै ९० आश्चर्यकी बातहै कि मनुष्यों का यह चरित्र कहाताहै कि दुष्ट आशयवाले वे मुक्तिके देनेवाले राम नामको नहीं स्मरण करतेहैं ९१ कहने में थोड़ाभी परिश्रम नहीं है सुननेमें अत्यन्त सुन्दरहै तिसपरभी दुष्ट आशयवाले राम राम नहीं कहतेहैं ९२ पृथ्वीमें मनुष्योंको अत्यन्त दुःखसे मिलनेवाली मुक्तिहै रामनामही से मिलती है इससे श्रेष्ठ कर्म नहीं है ९३ तब तक देहधारियों की देहों में पाप स्थित रहते हैं जब तक सुखदेने वाले राम रामको नहीं स्मरण करते हैं ९४ श्राद्ध, तर्पण, बलिदान, उत्सव, यज्ञ, दान, व्रत, देवताके आराधन, ९५ तथा और भी वैदिक कार्योंमें जो चतुर मनुष्य तिस फलकी इच्छा करनेवाला भक्तिसे राम राम यह स्मरण करता है ९६ और जो ओंनमो रामाय यह षडक्षर मन्त्र जपता है वह हरिजीकी सायुज्यको प्राप्त होताहै ९७ षडक्षर मन्त्रसे भगवान्‌की पूजा करने वाला मनुष्य

भगवान्‌के प्रसाद से सब कामनाओंको प्राप्त होता है ९८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो मृत्युसमयमें राम राम यह स्मरण करताहै वह अत्यन्त पापी भी मनुष्य परममोक्षको प्राप्त होताहै ९९ जे बुद्धिमान् मनुष्य राम यह नाम यात्रामें स्मरण करते हैं तिनकी निस्सन्देह यात्रामें सब सिद्धि होती है १०० हे ब्राह्मण! वन, प्रान्तर, श्मशान भयानक में रामनाम यह स्मरण करता है तिसके आपदा नहीं विद्यमान होती हैं १०१ राजाके दरवाज़े, किला, बिदेश, चोरों के सम्मुख, दुःस्वप्न देखने, ग्रहोंकी पीड़ा १०२ उत्पातके डर, और वातरोग के डरमें राम नाम स्मरण कर मनुष्य कहीं अशुभ को नहींपाताहै १०३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! रामका नाम सब अशुभका नाशकरनेवाला, काम और मोक्षको देनेहारा है निरन्तर पण्डितों को स्मरणकरनाचाहिये १०४ हे विप्रर्षे! रामका नाम जिसक्षण में नहीं स्मरण कियाजाताहै वह क्षण व्यर्थ होता है मैं सत्यही कहता हूं १०५ हरिके नामों के स्मरण करनेवाले मनुष्य क्लेश नहीं पाते हैं १०६ करोड़ जन्मों के पापों के नाश करनेकी इच्छा करनेवाला मनुष्य पृथ्वी में सम्पदाको प्राप्त होताहै जो भक्तिसे पृथ्वी में निरन्तर विष्णुजी के नाम मोक्षदेनेवाले और अत्यन्त मधुरको स्मरण करता है १०७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपंचदशोऽध्यायः १५॥

# सोलहवां अध्याय॥

भगवान् के माहात्म्य का वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमिनि! फिर महाविष्णु परात्माके सब दुःख नाशकरनेवाले माहात्म्यको कहताहूं सुनिये १ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा और चाण्डालभी जे हरिजी की भक्तिमें युक्त हैं वे निस्सन्देह कृतार्थ हैं २ ब्राह्मण जो हरिजी का भक्त न हो वह चाण्डालसे अधिकहै और चाण्डालभी जो हरिजी का भक्तहो वह ब्राह्मण से अधिक जानने योग्यहै ३ वह कैसे ब्राह्मण है जो हरिजी की भक्तिसे रहित है और वह कैसे चाण्डाल है

जो भगवद्भक्ति में मन लगायेहुए है ४ विना बहाने के जो विष्णुजी चाण्डालसे पूजेजाते हैं तब वह चाण्डाल चारोंवेद के जाननेवाले ब्राह्मण से अधिक देखना चाहिये ५ पूर्वसमय में चक्रिक नाम शबर मनुष्यों के कर्ष करनेवाला, सुन्दरजाति और जीविका से हीन द्वापर युगमें हुआ ६ यह विप्रवादी, क्रोध जीतनेवाला, पराई हिंसासे वर्जित, दयालु, दम्भहीन, पिता और माता में परायण था ७ इसने वैष्णवलापनहीं किया और मोक्षशास्त्र भी नहीं सुना था तिसपर भी उसके चित्तमें चंचलताहीन हरिजी की भक्ति उत्पन्नहुई ८ हरे, केशव, गोविन्द, वासुदेव, जनार्दन इत्यादिक भगवान् के नामोंको नित्यही स्मरण करता था ९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह शबरवंश में उत्पन्न वन के जो फलपाता था उनको पहले अपने मुखमें देता १० और तिनकी मिठाई जानकर फिर मुखसे निकालकर भक्तिसे प्रसन्न होकर प्रतिदिन हरिजीको देता था ११ जूंठा वा नहीं जूंठा इन दोनों को वह नहीं जानता था क्योंकि अपनी जातिका स्वभाव निरन्तर मस्तक में वर्तमान रहता है १२ कदाचित् वह वनके भीतर घूमताहुआ प्रियालवृक्ष के एक फलको पाकर १३ बहुत प्रसन्नहुआ और उसको अपने मुखमें देताभया १४ जो उसने तिसफलको मुखमें दिया तो वह गले में प्रवेशकर गया तिसके फलको सुनिये १५ तबतक उसने बायें हाथ से गलेके छिद्रको बांधा और बायेंही हाथसे सब फलको यत्नसे निकालनेलगा १६ फिर हरिजीकी भक्तिमें परायण चक्रिक चिन्तना करनेलगा कि यह फल जो तिन्न मुरारिजीको मैं नहींदूं १७ तो मेरे समान संसारमें कोई पापी नहीं है इस भांति बहुत हरिजीको चिन्तनकर निकालनेकी बुद्धि करताभया १८ तिसपर भी उसका फल गलेसे नहीं निकला तब यह हरिजीका एकान्तभक्त कुल्हाड़ेसे गलेको काटकर १९ तिसपके फलको लेकर देव विष्णुजीको देताभया और तिन्हीं को हृदयमें चिन्तनकर तिनके समीपजाताभया २० और रक्तसे सब अंगडूबकर पृथ्वी में गिरपड़ताभया तब विष्णु भगवान् तिसको प्राणरहित देखकर व्यथायुक्त होतेभये २१ कि इसके समान मेरा

कोईभक्त नहीं है जिससे कि अपना गलाकाटकर इसनेमेरा संतोषण कियाहै २२ जैसे इसभक्तिमान् ने निश्चय सात्त्विककर्म किया है जिसको देकर मैं इससे ऋणहीन होता ऐसी वस्तु मेरे क्या है २३ यह निस्सन्देह धन्य धन्य और अत्यन्त धन्य है कि इसने प्राणोंको भी त्यागकर मेरा संतोषण किया है २४ ब्रह्मा, शिव वा कृष्णजीकी इसको पदवी दीजावे तब भी इसभक्तसे ऋणहीन नहीं होसक्ता हूं २५ ऐसाकहकर अत्यन्त सन्तुष्ट भगवान् गरुड़ध्वजजी अपने कमलरूपी हाथसे उसके मस्तकको छूते भये २६ तब भगवान्के कमल रूपी हाथके छूनेसे वह शबर, महासत्त्व,नारायणजीमें परायण उठता भया २७ व्यासजी बोले कि हेब्राह्मण जैमिनि! तब तो भगवान् इसश्रेष्ठ भक्तकी अपने कपड़ेसे देहकी धूलि इस प्रकार पोंछते भये जैसे पिता पुत्रकी पोंछताहै २८ फिर मस्तक नवाकर हाथ जोड़कर चक्रिक मूर्तिमान् जनार्दनजी को देखकर मधुर वाणी से स्तुति करने लगा २९ कि हे गोविन्द, केशव, हरे, जगदीश, हे विष्णुजी! यद्यपि आपकी स्तुतिके योग वाक्य को नहींजानताहूं तिसपरभी मेरी जिह्वा आपके स्तुति करनेकी वाञ्छा करती है हे स्वामिन्! प्रसन्न हूजिये और इस बढ़ेहुए दोषको हरिये ३० हे सबके ईश्वर! हे चक्र हाथमें धारण करनेवाले! जे इस पृथ्वी में आपको छोड़कर और को पूजन करते हैं वे मूर्खहैं हे दुरितप्रकरैकधाम! हे देव! जिससे आपने मुझपरभी कृपा किया है ३१ हे देव! हे भवनके एकनाथ! यद्यपि मनुष्योंके संसारबन्धन के नाश करनेवाली भक्तिसे देवता आपको जानते हैं मैं एकान्तपाप शबरके वंशमें जन्म पाकर कैसे जान सक्ताहूं तिसपरभी आप मुझपर अत्यन्त प्रसन्न हैं ३२ हे प्रभो! जिन विदित आप के सुन्दर हाथरूपी कमलके स्पर्शको ब्रह्माइत्यादिक देवसमूहभी नहीं प्राप्त होते हैं वह इससमयमें मुझको प्राप्त हुआ है इससे आपसे कोई दयासमेत अपने सेवकों में नहीं है ३३ जिन देव भगवान् आपने पूर्व समय में सबपाप करनेवाला निमिकापुत्र कंस राक्षस इन्द्रादिक देवसमूहों और मनुष्योंके कल्याणके लिये मारा है तिन

परममंगल देनेवाले आपके नमस्कार हैं ३४ जिनअत्यन्त बलवान्,देवों में उत्तम, वसुदेवजीके पुत्र आपने यमलार्जुनको उखाड़ा और संग्राम में दुष्ट कालयवन और धेनुकासुरको नष्टकिया तिन नवीन मेघोंके समान रंगवाले आपके नमस्कार हैं ३५ हे श्रीकृष्ण! हे दामोदर! हे अनन्त! हे देवताओं के स्वामी! जिन भगवान् परमेश्वर आपने पूर्वसमय में अचल विभूति किया है तिन यदुवंश में श्रेष्ठ आपके नमस्कार हैं ३६ जिन आपने कल्पवृक्ष हरा अखण्डल जीता और लीलापूर्वक महादेवजीकोजीता तिन आपके नमस्कार हैं ३७ जिन आपने भीमसेन को हेतुकर जरासन्ध को गिराया बाणासुर के भुजाकाटे ३८ और शिशुपाल को मारा तिन आपके नित्यही नमस्कार हैं जिन महात्मा आपने पृथ्वी का भार दूर करदिया ३९ और मायासे क्षत्रियों को मारा तिनके नित्यही नमस्कार हैं व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इसप्रकार तिस महात्मा चक्रिकसे स्तुति किये गये भगवान् परमप्रसन्न होकर बोले कि वरमांगो तब चक्रिक बोला कि हे परंब्रह्म! हे परंधाम! हे परमात्मन्! हे कृपामय! ४०। ४१ आपको मैं साक्षात् देखताहूं और वरोंसे क्याहै आपकीमूर्तिको ध्यान और पूजन नहींकिया ४२ नैवेद्य, सुन्दर फूल, सुन्दरधूप और दीपदान नहीं किया और कभी आपके नाम मैंने स्मरण नहीं किये ४३ हे स्वामिन्! आपके चरणों के जलको मस्तक पर नहीं धारणकिया आपकी नैवेद्य को नहीं भोजनकिया आपके व्रतको मैंने नहीं किया ४४ तिसपरभी आपको मैं देखता हूं और वरोंसे क्या करूंगा सबधर्मोंसे बाहर कियाहुआ शबरके वंशमें जन्मलियाहुआहूं ४५ तिसपर भी देवताओंसे दुर्लभ आपके चरणकमलों को इस समयमें मैंने पाया है और वरोंसे मुझको क्याहै ४६ हे लक्ष्मीके पति! तिसपरभी जो आप वरदेना चाहते हैं तो आपकी कृपासे मेराचित्त आपही में स्थित हो डूबे नहीं ४७ तब श्रीभगवान् बोले कि हे महाशय! हे सेवक! तुम्हारे वचनरूप अमृतकी वर्षासे मैंने बड़ी तुष्टि प्राप्त की है ४८ हे वत्स! जो तूने मुझको यह उत्तम कमल दिया है इससे

अत्यन्त तुष्टहूं प्रसन्न होकर भक्ति ग्रहण करता हूं ४९ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! ऐसाकहकर भक्तिके ग्रहण करने वाले, दयामय, भगवान् विष्णुजी तिसभक्तको लम्बी चारों भुजाओंसे आलिंगन करते भये ५० बोले कि हे सज्जनोंमें श्रेष्ठ! वत्स! चक्रिक! तुम्हारी भक्तिसे मैं प्रसन्न हुआहूं जो मैं देताहूं वह निश्चय शीघ्रही होताहै ५१ फिर संसारकी आत्मा और संसारके पालनकरने वाले परमेश्वरजी तिस महाभक्तको आलिंगनकर तहांहीं अन्तर्द्धान होगये ५२ तब हरिजीकी भक्तिमें परायण अत्यन्त संतुष्टचक्रिक पुत्र और स्त्री आदिकों को छोड़कर द्वारका पुरीको जाता भया ५३ वहांप्राप्त होकर आयुके अन्तमें भगवान् की कृपासे देवताओंकेभी दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होजाता भया ५४ तिससे भक्तके वश भगवान् हैं भक्तिमात्रहीसे प्रसन्न होतेहैं स्तोत्र, द्रव्य, तपस्या और जपसे नहीं प्रसन्न होतेहैं ५५ यद्यपि तिसने जूंठे फल दिये तथापि विष्णुजी अचंचल भक्ति जानकर प्रसन्न होगये ५६ तिससे इस संसारमें मोक्षकी इच्छा करनेवालोंके मोक्ष देनेवाले नारायण ही देव हैं ५७ जे मनुष्य इन्द्रादिक श्रेष्ठ देवताओंसे पूज्य, वासुदेवजीके दोनों चरणकमलोंको दृढ़ भक्तिसे निश्चय पूजन करते हैं वे निश्चयही मोक्षको प्राप्त होजाते हैं ५८॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेषोडशोऽध्यायः १६॥

## सत्रहवां अध्याय॥

पुरुषोत्तम क्षेत्रमें भद्रतनुजी को वरका पाना वर्णन॥

जैमिनिजी बोले कि हे गुरो! व्यासजी! फिर भगवान् के माहात्म्य कहिये क्योंकि हरिजी की कथारूप अमृत को पीकर किसको तृप्ति हुईहै १ तब श्री व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तुम्हारे बराबर संसार में कोई सुकृती नहीं है जिससे केशवजीके माहात्म्य को भक्तिसे सुननेकी तुम इच्छा करतेहो २ हे उत्तम ब्राह्मण! नारायणजी की सुन्दर कथा इस प्रकार तीनोंलोकों को पवित्र करती है सुननेवाले, पूछनेहारे और कहनेवाले को पवित्र करती है ३ हे

वत्स ! लक्ष्मीपतिजी के पाप नाशनेवाले और धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफलके देनेहारे माहात्म्य को संक्षेप से कहताहूं सुनिये ४ जो श्रेष्ठ भक्तिसे एक दिन भी विष्णुजी को पूजन करता है तिसके हरिजी करोड़ जन्म के कियेहुए पापों को शीघ्रही नाश करते हैं ५ वह पुण्यात्मा मनुष्य कैसे है जिसने हरिजीको आराधन नहीं कियाहै और वह पापी कैसे है जिसकी भक्ति नारायण प्रभुजी में है ६ सब पुरोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तम नाम पुरहै जो कि सब गुणोंसे युक्त और सब देवसमूहों के आश्रय है ७ वह सब तीर्थों में श्रेष्ठ कहाता है जिस सुन्दर पुरमें साक्षात् केशवजी बसते हैं ८ तहां पर पूर्वसमय में एक भद्रतनु नाम ब्राह्मण हुआ था यह ब्राह्मण सुन्दर, प्रियबोलनेवाला, पवित्रकुल में उत्पन्न, ९ युवावस्था में प्राप्त, कामसे मोहित था यह परलोकका भयछोड़कर वेश्याओं में निरत होताभया १० वेद और सब पुराणों को कभी नहीं पढ़ता था पाखण्डजनों के संगम से उत्तम संज्ञाको त्याग करदेताभया ११ विना यज्ञ करनेवालों के दान का ग्रहण करनेवाला, पराई द्रव्यका चुरानेहारा, धर्म की निन्दा करनेवाला और पाप में तत्पर होताभया १२ यह अधम ब्राह्मण ब्राह्मणों के आचार तथा सत्यभावन और गुरुओं और अतिथियों के पूजन को त्याग करताभया १३ हे जैमिनि ! जो जो अत्यन्त पापकर्म हैं तिनको करताभया कभी भी अत्यन्त पुण्यकर्म को इसने नहीं किया १४ एक समय में पाप करनेवाला, लोक की लज्जा और भयसे युक्त होकर श्राद्ध की भक्तिसे हीन होकर ब्राह्मण श्राद्ध करताभया १५ और रात्रिमें वेश्याके घर जाकर उससे यह बोला कि हे सुन्दर जघनवाली ! मेरे पिता का श्राद्धदिन है १६ तिसपर भी तेरे गुणोंसे बद्धहोकर तुम्हारे स्थान को आयाहूं हे कान्ते ! सब मनुष्यों के भयदेनेवाली इस रात्रिको देखिये १७ आकाश में मेघोंके समूह व्याप्त हैं और नवीन जलसे राहलुप्त होगई है ऐसी रात्रिमें भी तुम्हारे गुणोंसे मन खिंचकर मैं तेरे घर में प्राप्त हुआ हूं मेघ और बिजली के प्रतीप के अर्थके उपदेश करनेवाले काम से १८।१९ हे प्रिये !

रात्रि में मैं तुम्हारे गुणोंके ध्यान के विश्वास में प्राप्त होकर आया हूं तुम को क्षणमात्रभी न देखकर मेरे प्रीति नहीं होतीहै २० हे पतले अंगवाली ! हे कांते ! निश्चय दुःख से तुम्हारे देखने के लिये मैं आयाहूं मुझको तीर्थके जलके अभिषेक से क्या प्रयोजन है २१ तुम्हारे प्रेमरूपी तीर्थके जलसे सींचाजाकर मैं स्वर्ग को प्राप्तहुआहूं परलोक के सुखदेनेवाली सेवाको आराधनकर मुझको क्या फल है २२ तुम्हारे प्रसाद से मैंने जीवतेही स्वर्गपाया है हे कान्ते ! अयश के भयसे मैंने घरमें श्राद्धकर्म किया है २३ इस श्राद्धमें मुझको थोड़ी भी श्रद्धा नहीं है हे सुन्दरि ! तुमहीं मेरा जप, तप और नीतिहो २४ संसार में एक तुम्हारीही सब भावसे सदैव मैं शरणमें प्राप्त हूं आज्ञा दीजिये कि क्याकरूं २५ तब सुमध्यमा बोली कि तुझपुत्रसे तेरा पिता पुत्रहीनकी नाईं हुआहै कि पिताकी श्राद्धके दिनमेंभी जो तुममैथुन करनेकी इच्छा करतेहो २६ हेदुर्बुद्धे ! पिताकी श्राद्धकेदिन जो मैथुन करताहै तो तिसके पितर वीर्यके भोजन करनेवाले होतेहैं २७ और जो मूर्ख मोहसे पिताकी श्राद्धकेदिन मैथुन करता है तो वह श्राद्ध निस्सन्देह राक्षसोंके ग्रहणके योग्य होती है २८ हमसे जिसतरहसे स्नेह से कहताहै तैसेही जो विष्णुजीमें तेरा मन होता तो उस समयमें क्या नहीं पाता २९ देहधारियों का जीवन यमराजके दण्डके भीतर स्थित है रेमूर्ख! तिसपरभी तू सदैव निर्भय होकर पाप करता है ३० मूर्ख जलके बुल्लेकी नाईं क्षणमें नाश होनेवाले जीवन को किसलिये निरन्तर रहनेकी बुद्धिसे सदैव लुरित करता है ३१ जिसके माथेमें मृत्यु ये दो अक्षर लिखे होतेहैं वहकैसे सब क्लेश के देने वाले पापको करताहै ३२ आश्चर्यकी बातहै कि महाविष्णुजीकी एकमाया पृथ्वीमें बलवती है जिससे पापकरनेवाला भी निरन्तर प्रसन्न रहता है ३३ दुराश्रय अपनी देहमें पापकेलिये मुझे स्थान दीजिये बढ़े हुए अग्नि की नाईं जलताहुआ आश्रम को जलाता है ३४ व्यासजी बोले किहे जैमिनि ! तिस सुन्दर वेश्याने दैवप्रेरित पापसे इसप्रकार कहा तब पाप करनेवाला ब्राह्मण मन

से चिन्तना करने लगा ३५ कि मुझमहापाप, मूढ़, पातकियों में श्रेष्ठको धिक्कारहै कि वेश्याके यह ज्ञानहै यहमुझ दुरात्माके नहींहै ३६ मैं ब्राह्मणके शुद्धकुलमें जन्म पाकर नित्यही आत्माके घात करनेवाले बड़े पापोंको करताहूं ३७ जब उत्पन्न होताहै तब उस की निश्चय मृत्यु होतीहै और मरनेपर स्वामी यमराजजी होते हैं तिससे अज्ञानतासे मैं कैसे पापकरताहूं ३८ जप, तप, होम, वेद कापढ़ना, ब्राह्मणोंकाआचार, अतिथिकी पूजा, गुरुकी भक्ति, ब्राह्मणोंकापूजन, ३९ पितृयज्ञआदिक कर्म, भगवान्‌की पूजा मैंने क्योंनहीं की जिससे उत्तम गति होती ४० तबयह ब्राह्मण महात्मा, सब धर्म जाननेवालों में श्रेष्ठ मार्कण्डेयजीके पृथ्वीमें दण्डवत् प्रणामकर वाणीसे स्तुति करने लगा ४१ कि हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ! हे बहुत जीवनेवाले! नारायणकेस्वरूप,महात्मा, ४२ मृकण्डके पुत्र, सब मनुष्योंके हितकी इच्छाकरनेवाले, ज्ञानकेसमुद्र और निर्विकार आपके नमस्कारहै ४३ जब तिस ब्राह्मणसे महातपस्वी मार्कण्डेयजी इसप्रकार स्तुति कियेगये तब परमप्रसन्न सब शास्त्रोंकेअर्थके जाननेवाले मार्कण्डेयजी उससे बोले ४४ कि हे महाभाग! तुम्हारी भक्तिसे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं वरमांगो तुम्हारी अभिलाषको शीघ्रही सिद्धकरूंगा और कुछ न होगा ४५ तब ब्राह्मण बोला कि मैं पापियों में श्रेष्ठ,ब्राह्मणों के आचार से हीन, पराई हिंसासे युक्त,सदैव स्त्री में निरतहूं ४६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! मुझमूर्खने सदैव बड़े पाप किये हैं कभी भी आदरसमेत पुण्य नहीं किया है ४७ घोर, दुःख देनेवाले, अत्यन्त भयङ्कर संसारसमुद्र में मुझ महापापीका कैसे निस्तार होगा ४८ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! पाप करनेवाला भी तू निश्चय पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ है जिस से संसार में दुर्लभ तुम में यह बुद्धि उत्पन्न हुई है ४९ पुण्यात्माओं की पुण्य में दृष्टि प्रतिदिन बढ़ती है और पापात्माओं की दिन दिन में पाप की दृष्टि बढ़ती है ५० पापात्मा भी तुमने पापदृष्टिनिवारण की है इससे तुम को जगन्नाथ प्रसन्न की नाईं दिखाई देंगे ५१ पाप करके भी जो मनुष्य पापसे फिर निवृत्त होजाता है ति-

सको पूर्व जन्म में भगवान् का पूजनेवाला उत्तर मनुष्य कहते हैं ५२ महाविष्णु प्रभुजी अपने भक्तको पाप में रत देखकर अधिक बुद्धि देतेहैं जैसे सद्गतिको वह प्राप्तहोवे ५३ इससे हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुम प्रत्येक जन्मके भगवान्के पूजन करनेवालेहो थोड़ेहीसमयमें तुम्हारा निस्संदेह कल्याण होगा ५४ हे विप्र ! जो जो तुम पूछतेहो तिसको हमसे नहीं सुनपावोगे जिससे कि इस समय में मेरी नित्यकी पूजा का समय वर्त्तमान है ५५ कोई दान्त नाम ब्राह्मण सब अर्थों के तत्त्वके जाननेवाले हैं तुम तिनके आश्रम में जावो वे तिस सबको कहेंगे ५६ तिन बुद्धिमान् मार्कण्डेयजी से उपदेश को पाकर वह ब्राह्मण शीघ्रही पवित्र, अत्यन्त सुन्दर दान्त ब्राह्मण के स्थान को जातेभये ५७ जो स्थान पीपल, चम्पा, बकुल, प्रियक तथा और भी सुन्दर फूलोंसे शोभित और अत्यन्त मनोहर, ५८ फूलेहुए फूलोंके आमोद से दिशाओं के अन्तर व्याप्त, भँवरोंके समूहों से गुंजारयुक्त, फलके शब्दों से अत्यन्त शब्दयुक्त, ५९ मन्द मन्द पवन चलनेवाला, ठण्ढेजलयुक्त, सैकड़ों पक्षियों से तथा शिष्य और उपशिष्यों से युक्त है ६० तिस अत्यन्त मनोहर आश्रम में ब्राह्मण प्रवेश कर तत्त्वके जाननेवाले शिष्यगणों से युक्त दान्तजी को देखतेभये ६१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! फिर नारायणजी की आत्मावाले दान्तजी की उत्तम ब्राह्मण स्तुति कर शिरसे तिन के चरणों की वन्दना करतेभये ६२ तब दान्तजी बोले कि हे भद्र ! तुम कौनहो और यहां किस प्रयोजनके लिये आयेहो और किस हेतुसे इस समय में मेरी स्तुति करते हो यह मुझसे तत्त्वसे कहो ६३ तब भद्रतनु बोले कि हे महाभाग ! मैं ब्राह्मणों के आचार से हीन ब्राह्मण भद्रतनु नाम से प्रसिद्ध सब पाप करनेवाला हूं ६४ हे ब्रह्मन् ! मुझ पापी के संसार का विच्छेद कैसे होगा यह मुझसे कहिये जिससे तुमसब तत्त्वके जानने वाले हो ६५ तब दान्त बोले कि हे ब्राह्मण ! सुनो परमगुह्यको तुम्हारे स्नेहसे कहताहूं जिससे मनुष्योंके संसाररूपी पाशका छेदहोताहै ६६ पाखण्डके संसर्गको छोड़िये और सदैव सज्जनों के

संगको भजिये काम, क्रोध, मोह, लोभ, दर्प, मत्सर, ६७ असत्य, और पराई हिंसाको यत्नसे त्यागकीजिये महाविष्णु महात्माजी के नामोंको निरन्तर स्मरण करिये ६८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! भगवान्के स्थानमें, बहारना, लीपना, मार्गकीशोभा और दीपदान कीजिये ६९ ब्राह्मण और जातिकी सेवा कीजिये अन्न और जलकादान और नित्यही पंच महायज्ञ करिये ७० हे सज्जनोंमें श्रेष्ठ! हरिजीकी कथा सुनिये द्वादशाक्षर मंत्रको जपिये इनसब कर्मोंके करतेहुए ७१ उत्तमज्ञान होगा और ज्ञानसे मोक्षको प्राप्त होगे ७२ तब ब्राह्मण बोला कि हेब्रह्मन्! जो शुभ देनेवाली तुमने कही हैं तिनका विवरण कहिये क्या मोह, दम्भ, मत्सर, ७३ असत्य, हिंसा, दया, शांति, दम, हे समदृष्टि क्या कहातीहै लक्ष्मीपतिजी की पूजा क्या है ७४ दिनरात कौन कहाहै विष्णुजीका स्मरण क्याहै पंचमहायज्ञ कौनहैं और द्वादशाक्षर मंत्र कौनहै ७५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! इन सबका विवरण कहिये तैसेही आपके प्रसादसे परमपदको प्राप्तहूं ७६ तब दांतबोले कि जे वेदके संमत कार्यको छोड़कर और कर्म करते हैं और अपने आचारसे जे हीन हैं ते पाखण्ड कहातेहैं ७७ जे अपने आचार के ग्रहण करनेवाले, वेदके संमत करते हैं और पापकी अभिलाषसे रहितहैं ते सज्जन कहातेहैं ७८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो सदैव स्त्रियों और द्रव्यके इकट्ठाकरने आदिमें अभिलाष वर्तमान होती है वह काम कहाता है ७९ अपनी निन्दा सुनकर जो हृदयमें ताप उत्पन्न होती है वहसब धर्मोंका नाश करनेवाला क्रोध जानना चाहिये ८० पराई द्रव्य आदिक देखकर लेनेके लिये हृदयमें जो अभिलाष उत्पन्न होती है वहलोभ कहाताहै ८१ मेरी माता मेरापिता मेरी स्त्री और घर यह और भी जो ममत्वहै वह मोह कहाताहै ८२ मैं महात्मा धनवानहूं मेरेसमान कोई पृथ्वी में नहीं है यह जो चित्तमें उत्पन्नहोताहै इसको जाननेवाले लोग मद कहतेहैं ८३ मनुष्य सदैवमेरी निन्दा करतेहैं मेरेजीवनको धिक्कार है यह आत्मा को जो कहता है वह धिक्कार, मत्सरहै ८४ जो सब मनुष्योंके सुखदेनेवाला यथार्थ कहना है वह सत्य जानना चाहिये

इसका उलटाहोना असत्य जानने योग्य है ८५ इसके ऐश्वर्य और स्त्री पुत्रआदिक कबनाशको प्राप्तहोंगे यहजो चित्तमें उत्पन्न होती है वह हिंसाकहातीहै ८६ हे श्रेष्ठब्राह्मण! यत्नसेभीजो पराये क्लेश के हरनेकी इच्छारूपी पृथ्वी हृदयमें उत्पन्न होती है वह दयाकहातीहै ८७ जो चित्तमें तुष्टि उत्पन्न होतीहै वहशांति पण्डितों करके कही जातीहै जो निन्दित कर्मसे अलग चित्तका निवारण होता है ८८ वह तत्त्वदर्शी बुद्धिमानों के संमत दम कहाताहै हे विप्रेन्द्र! दुःख सुख तथा शत्रु और मित्रमें जो तुष्टि सदैव वर्तमान होतीहै वह समदृष्टि कहाती है जो पुरुष श्रद्धासे नैवेद्य, चन्दन और फूल आदिकों से भगवान् का ८९।९० पूजन करता है वह पूजा कहाती है दोपहर और रात्रिमें जो लंघन होताहै ९१ वह पहले और पीछे के दिनका भोजन अहोरात्र जानना चाहिये हे अत्यन्त श्रेष्ठ! जो अपना और भगवान् इन दोनों का ९२ एकीकरण होता है वह विष्णुजी का स्मरण कहाता है ब्रह्मयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, देवयज्ञ, ९३ पितृयज्ञ और भूतयज्ञ ये पांच यज्ञ कहाते हैं ओंनमोभगवते वासुदेवाय ९४ इसको तत्त्वके जाननेवाले द्वादशाक्षर महामंत्र कहते हैं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह सब तुम्हारा पूंछा हुआ तुमसे कहा ९५ जिसको जानकर सब मनुष्य उत्तम ज्ञानको प्राप्त होते हैं तिस से हे विप्र! प्रतिदिन हरिजीके एकसौ आठ नामोंको पढ़कर दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होगे तब भद्रतनु बोले कि लक्ष्मीके पति विष्णुजीके एकसौ आठ नामोंको कहिये ९६। ९७ तब दान्त बोले कि हे ब्राह्मण! विष्णु परात्माजी के सहस्रनामसे एकसौ आठनाम सारांश रूप खींचकर कहताहूं सुनिये ९८ एकसौ आठ नाम महापापों के नाश करनेवालेहैं जैसा ध्यानहै वैसे ध्यानकर पढ़ने चाहिये अब मैं ध्यान कहताहूं सुनिये ९९ अलसीके फूलके आकार, फूले कमल के समान नेत्रवाले, गौवोंके चरणोंकी धूलियोंसे सब शरीर भूषित, १०० गऊकी पूंछके बालकी फँसरी से शोभित, उत्तम मस्तकवाले, बांसुरीके शब्दसे पर्न्यिस्त सुन्दर ओष्ठ पुटवाले, प्रभु, १०१ गौवों की शालमें बसनेवाले, स्नेहयुक्त बालकोंसे युक्त, पीताम्बरधारे, काम-

देव के समान उत्तम कृष्णजी के मुखको ध्यानकर १०२ ओंनमोऽस्य कृष्णाष्टोत्तरशतनाम्नांवेदव्यासऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीकृष्णो देवता श्रीकृष्णप्रीत्यर्थेजपेविनियोगः १०३ इस मन्त्रको पढ़कर विनियोग छोड़े फिर कृष्ण, केशव, केशिशत्रु, सनातन, कंसारि, धेनुकारि, शिशुपालरिपु, प्रभुजीको नमस्कार करै १०४ देवकीनन्दन, शौरि, पुण्डरीकनिभेक्षण, दामोदर, जगन्नाथ, जगत्कर्ता, जगन्मय, १०५ नारायण, बलिध्वंसी, वामन, अदितिनन्दन, विष्णु, यदुकुलश्रेष्ठ, वासुदेव, वसुप्रद, १०६ अनन्त, कैटभारि, मल्लजित्, नरकान्तक, अच्युत, श्रीधर, श्रीमान्, श्रीपति, पुरुषोत्तम, १०७ गोविन्द, वनमाली, हृषीकेश, अखिलार्त्तिहा, नृसिंह, दैत्यशत्रु, मत्स्यदेव, जगन्मय, १०८ भूमिधारी, महाकूर्म, वराह, पृथिवीपति, वैकुण्ठ, पीतवासाः, चक्रपाणि, गदाधर, १०९ शङ्खभृत्, पद्मपाणि, नन्दकी, गरुडध्वज, चतुर्भुज, महासत्व, महाबुद्धि, महाभुज, ११० महोत्सव, महातेजा, महाबाहुप्रिय, प्रभु, विष्वक्सेन, शार्ङ्गी, पद्मनाभ, जनार्दन, १११ तुलसीवल्लभ, अपार, परेश, परमेश्वर, परमक्लेशहारी, परत्रसुखद, पर, ११२ हृदयस्थ, अंबरस्थ, मोहद, मोहनाशन, समस्तपातकध्वंसी, महाबलबलान्तक, ११३ रुक्मिणीरमण, रुक्मिप्रतिज्ञाखण्डन, महान्, दामबद्ध, क्लेशहारी, गोवर्द्धनधर, हरि, ११४ पूतनारि, मुष्टिकारि, यमलार्जुनभंजन, उपेन्द्र, विश्वमूर्ति, व्योमपाद, सनातन, ११५ परमात्मा, परब्रह्म, प्रणतार्तिविनाशन, त्रिविक्रम, महामाय, योगवित्, विष्टरश्रवाः ११६ श्रीनिधि, श्रीनिवास, यज्ञभोक्ता, सुखप्रद, यज्ञेश्वर, रावणारि, प्रलम्बघ्न, अक्षय, अव्यय, ११७ हजार नामोंके ये एकसौ आठ नाम विष्णुजीकी प्रीतिकरनेवाले, सब पापोंके नाश करनेहारे ११८ दुःस्वप्न, ग्रहपीड़ा और सब रोग नाश करनेवाले, परमऐश्वर्य देनेहारे ११९ सब उपद्रव नाश करनेहारे और सब कर्मफलके देनेवाले हैं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! वैष्णवोंकी प्रीतिके हेतु मैंने कहा है १२० जो भक्तिसे भगवान्के आगे एकसौआठ नामोंको तीनों संध्याओं में नित्यपढ़ताहै तिसके ऊपर हरिजी सदैव प्रसन्न रहतेहैं १२१

भक्तियुक्त वैष्णव मनुष्य इसको श्राद्धमें पढ़ताहै तो उसके पितरसं-तुष्टहोकर परमपदको जाते हैं १२२ यज्ञसमय, देवताके आराधन, दानसमय और यात्रामें जो पढ़ता है तो वहभी तिसी फलको प्राप्त होता है १२३ इस स्तोत्रके पढ़नेसे पुत्रहीन पुत्रको, धनकी इच्छा करनेवाला धनको और विद्यार्थी विद्याको प्राप्तहोताहै १२४ जे भगवान्के एकसौआठ नामोंको भक्तिसे पढ़तेहैं तिनका पृथ्वीमें कभी अशुभ नहीं होताहै १२५ दान्तजी कहते हैं कि हे ब्राह्मण! जावो तुम्हारा कल्याणहो मेरी कहीहुई विधिसे भक्तिसे हरिजीको आराधनकर परम कल्याण को प्राप्तहोगे १२६ इसप्रकार तिन दान्त परमार्थीसे बोधयुक्त होकर ब्राह्मण तिसी पुण्यकारी क्षेत्रोंमें श्रेष्ठ क्षेत्रमें हरिजीकी पूजामें पर होतेभये १२७ हे जैमिनि! यह ब्राह्मण नित्यही भक्तिसे दांतजीकी कहीहुई विधिसे पांच दिन भगवान्का पूजन करतेभये १२८ तिस ब्राह्मणकी अत्यन्त दृढ़भक्ति जानकर करुणामय हरिजी किरणोंयुक्त करोड़ सूर्यकी नाईं सहसा से प्रकट होजातेभये १२९ तिन संसारके स्वामी, लक्ष्मीके प्रिय भगवान्को देखकर ब्राह्मण तिनके दोनों चरणकमलों में शिरसे वन्दना करताभया १३० तदनन्तर यह श्रेष्ठ ब्राह्मण आनन्दसे निर्भरमन होकर हाथ जोड़कर लक्ष्मीपति जगन्नाथजीकी स्तुति करताभया १३१ हे हरे! मेरी पापमें प्राप्तदृष्टिथी परन्तु आपने कृपायुक्त शुभदेनेवाली अपनी भक्ति देकर अधिक पाप करनेवाले गांवके आदमी मुझको इस समयमें पुरुषकी नाईं करदियाहै १३२ हे परमेश्वर! देवताओंसे वन्दित दोनों चरणवाले आपके अप्रसन्न होने में निश्चय मनुष्यकी दृष्टि पापको प्राप्त होतीहै और आपके प्रसन्नहोनेमें सोई दृष्टि सुकृतको प्राप्त होती है इसको केवल मैंनेही जानाहै १३३ हे नाथ! आपसे आपके स्मरणप्रभाव को कहताहूं जिससे सब इकट्ठा किये हुए पापवाला भी श्रेष्ठ स्थानको देवताओं के मिलनेवाले शुद्ध सुवर्ण जड़ेहुए विमान पर चढ़कर जाऊँगा १३४ आपके चरणकमल को सदैव गुणाढ्य, कनिक सबपाप करनेवाला वहेलिया जानताहै हे संसार के एक नाथ! आपके

मन्दिर के बहारने के फल को देवताओं में वान्दित यज्ञध्वजराजा जानताहै १३५ हे मुरदैत्य के वैरी! हे गरुड़ध्वज! संसारके रचने, पालने और प्रलय करने के कारण ईश्वर आपके मन्दिर के लीपने के फलको तिसका भाई सुमाली किये हुए पापसे भययुक्त होकर जानताहै १३६ हरि आपकी प्रदक्षिणा कर जो फल होताहै तिसको धर्महीं जानताहै और कोई तीनों लोक में नहीं जानता है १३७ हे नाथ! आपके चित्तकी दया कहने को पृथ्वी में कौन समर्थ है क्योंकि बाणों से आपको बेधकर भी व्याध परमपद को प्राप्त हुआहै १३८ हे संसार के नाथ देवताओंके ईश्वर! आपकी निन्दाकर भी शिशुपाल मोक्षको प्राप्तहुआहै तो आपके भक्तकी क्या कथाहै १३९ हे महाविष्णुजी! जिनआपने ब्रह्मरूपसे इससंसारको रचाहै तिस आपमें मेरा मनरमे १४० हे विष्णुजी! इस रुद्ररूप से आपने सब संसार नाश किया है तिस आपको मेरा नमस्कार है १४१ जिससे अत्यन्त छोटा नहीं है और जिससे अत्यन्तबड़ा भी नहींहै और जिन आपसे सब संसार व्याप्तहै तिन आपको नमस्कारहै १४२ जिन देव के नेत्रों से दिवाकर सूर्य्य और मुख से अग्नि उत्पन्न है तिन आपके नमस्कार है १४३ हे देवताओं में श्रेष्ठ! हे केशवजी! जिन के कानसे वायु प्राण उत्पन्न हुएहैं तिन आपको मेरा सदैव नमस्कारहै १४४ जिन श्याम अंगवाले आपके कोड़े में लक्ष्मीजी इसप्रकार रहतीहैं जैसे मेघों में बिजली रहतीहै तिन आपके नमस्कारहै १४५ ब्रह्मादिक देवताभी जिनकी महिमा के पारको नहीं जा सक्तेहैं तिस आपके नमस्कार है १४६ धर्मों के स्थापन और पापियों के नाश करनेके लिये युग युग में जो होता है तिस आपको मेरा नमस्कार है १४७ जिन महात्माने मायासे यह संसार मोहित कियाहै और जो शम्भुजी माया से नाशकरते हैं तिन आपको मेरा नमस्कार है १४८ जो भक्तिमात्रही से प्रसन्न होते हैं धन, स्तोत्र, दान और तपस्या से नहीं प्रसन्न होते हैं तिन आपको मेरा नमस्कार है १४९ जो गऊ, ब्राह्मण और साधुओं का कल्याण और दया करते हैं तिनआप को मेरा नमस्कारहै १५०जो

देव अनाथबन्धु, योगी और दुःखियों के दुःख को हरतेहैं तिनआप को मेरा नमस्कार है १५१ जो मनुष्य देवता और सब हाथियों में समभाव से वर्तते हैं तिन आपको मेरा नमस्कार है १५२ जिनके प्रसन्न होने में पर्वत भी शीघ्रही तृण के समान होजाता है और अप्रसन्न होने में तृण पर्वत के तुल्य होजाता है तिन आपको मेरा नमस्कार है १५३ पुण्य करनेवालों की पुण्यमें,पिताकी जैसे अपने पुत्रमें और पतिव्रता स्त्रियोंकी जैसे पतिमें प्रीति होतीहै तैसे आपमें मेरी निश्चय होवे १५४ युवा पुरुषोंका चित्त जैसे स्त्रियोंमें, लोभियों का जैसे धनमें और भूंखवालों की जैसे अन्न में प्रीति होतीहै तैसे आपमें निश्चय मेरीहोवे १५५ घाम से पीड़ितों की जैसे चन्द्रमामें, शीतसे पीड़ितों की सूर्यमें और प्यास से व्याकुलों की जैसे जलमें प्रीति होतीहै तैसे आप में मेरी निश्चय होवे १५६ जो बुद्धिहीन मैंने गुरुकी स्त्रीमें गमन कियाहै वह पाप आपके देखनेवाले मेरे नाशको प्राप्तहो १५७ माया से मोहयुक्त जो मैंने नहीं मारनेके योग्यों को माराहै वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्तहो १५८ हे परमेश्वर! जो मैंने नहीं पीनेके योग्य का पान कियाहै वह पाप मेरा आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १५९ जलोंमें, योनिमें तथा तोयमें जो वीर्यको छोड़ा है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाशको प्राप्तहो १६० जो गर्भहत्या की है और पृथ्वी में वीर्यको छोड़ा है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाशहो १६१ विनाजाने मायासे जो मैंने विश्वासघात कियाहै वह पाप मेरा आप के दर्शन करनेवालेका नाशहो १६२ जो मैंनेक्षण क्षण में झूठे वचन कहेहैं वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्तहो १६३ जो सज्जनों की निन्दा और सदैव पराई हिंसा मैंने की है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्तहो १६४ जो श्लेष्मा और कफ मुखमें मैंने कियाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १६५ वनस्पति के सोम में प्राप्त होनेमें जो मैंने वृक्ष नाश करादिया है वह पाप मुझ आपके देखनेवाले का नाशहो १६६ राह, देवताके स्थान और गोशालामें जो

मैंने मूलमंत्र किया है वह पाप मुझ आपके देखनेवाले का नाशहो १६७ हे केशवजी! जो पिता और माताकी मैंने नहीं भक्ति कीहै वहपाप मुझआपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १६८ स्नान और भोजनके लिये जातेहुएको जो मैंने निषेधकियाहै वहपाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १६९ हे देवताओंमें श्रेष्ठ! एकादशी में जो मैंने भोजन कियाहै वहपाप मुझआपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७० हे प्रभो! घरमें आयेहुए अतिथिको मैंने नहीं पूजाहै वहपाप मुझ आपके देखनेवालेका नष्टहो १७१ द्वादशी और दशमीमें जो दोबार भोजन कियाहै वहपाप मुझआपके दर्शन करनेवाले कानाशहो १७२ पानी पीनेकेलिये दौड़तीहुई गौवोंको जो मैंने निवारण किया है वहपाप मुझआपके देखनेवालेका नाशहो १७३ जो मैंने व्रतआरम्भ कर छोड़दियाहै वहपाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७४ मित्रोंकी वात्सल्यतासे जो मैंने झूठीगवाही दीहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७५ अपनी स्त्रीमें ऋतुकालमें जो गमन मैंने नहीं कियाहै वह पापमुझ आपके देखनेवाले का नाशहो १७६ विना संस्कार कियेहुये घरमें जो मैंने भोजन किया है वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १७७ हे नृसिंहजी! जो मैंने गांवमें मांगनेकी जीविका कीहै वहपाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७८ हे प्रभुजी! राजाके दण्ड देने में जो मैंने प्रभुताकी है वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १७९ पुराण बांचनेवालेकी कथामें जो मैंने विघ्न कियाहै वह पाप मुझ आपके देखनेवालेका नाशहो १८० आदरसे जो मैंने पराये पापकी कथा सुनी है वह पाप मुझ आपके देखनेवालेका नाशहो १८१ पीपल और आंवलेके वृक्षको जो मैंने काटाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १८२ दही दूध और घी को जो मैंने बेंचाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १८३ जो दूसरोंको आशादेकर मैंने निष्फल कियाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवालेका नाशहो १८४ ब्राह्मणों और याचकोंको मैंने कोपदृष्टिसे देखाहै वह पाप मुझ आपके

देव अनाथबन्धु, योगी और दुःखियों के दुःख को हरतेहैं तिनआप को मेरा नमस्कार है १५१ जो मनुष्य देवता और सब हाथियों में समभाव से वर्तते हैं तिन आपको मेरा नमस्कार है १५२ जिनके प्रसन्न होने में पर्वत भी शीघ्रही तृण के समान होजाता है और अप्रसन्न होने में तृण पर्वत के तुल्य होजाता है तिन आपको मेरा नमस्कार है १५३ पुण्य करनेवालों की पुण्यमें, पिताकी जैसे अपने पुत्रमें और पतिव्रता स्त्रियोंकी जैसे पतिमें प्रीति होतीहै तैसे आपमें मेरी निश्चय होवे १५४ युवा पुरुषोंका चित्त जैसे स्त्रियोंमें, लोभियों का जैसे धनमें और भूखवालों की जैसे अन्न में प्रीति होतीहै तैसे आपमें निश्चय मेरीहोवे १५५ घाम से पीड़ितों की जैसे चन्द्रमामें, शीतसे पीड़ितों की सूर्यमें और प्यास से व्याकुलों की जैसे जलमें प्रीति होतीहै तैसे आप में मेरी निश्चय होवे १५६ जो बुद्धिहीन मैंने गुरुकी स्त्रीमें गमन कियाहै वह पाप आपके देखनेवाले मेरे नाशको प्राप्तहो १५७ माया से मोहयुक्त जो मैंने नहीं मारनेके योग्यों को माराहै वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्तहो १५८ हे परमेश्वर ! जो मैंने नहीं पीनेके योग्य का पान कियाहै वह पाप मेरा आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १५९ जलोंमें, योनिमें तथा तोयमें जो वीर्यको छोड़ा है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाशको प्राप्तहो १६० जो गर्भहत्या की है और पृथ्वी में वीर्यको छोड़ा है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाशहो १६१ विनाजाने मायासे जो मैंने विश्वासघात कियाहै वह पाप मेरा आप के दर्शन करनेवालेका नाशहो १६२ जो मैंनेक्षण क्षण में झूठे वचन कहेहैं वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्तहो १६३ जो सज्जनों की निन्दा और सदैव पराई हिंसा मैंने की है वह पाप मेरा आपके देखनेवाले का नाश को प्राप्तहो १६४ जो श्लेष्मा और कफ मुखमें मैंने कियाहै वह पाप मुझ आपके दर्शन करनेवाले का नाशहो १६५ वनस्पति के सोम में प्राप्त होनेमें जो मैंने वृक्ष नाश करादिया है वह पाप मुझ आपके देखनेवाले का नाशहो १६६ राह, देवताके स्थान और गोशालामें जो

गे २३१ व्यासजी बोले कि इस प्रकार गुरुजी ने जब कहा तो बुद्धिमान्, भगवान्‌की भक्तिमें परायण ब्राह्मण वनमें अपने आश्रमको चलागया २३२ तदनन्तर दूसरे दिनमें इसने जाकर भगवान्‌के साथ गेंदखेला और नम्रतायुक्त होकर दयालु जगन्नाथजीसे कहा २३३ कि हे देवोंमें श्रेष्ठ! हे दयालो! हे लक्ष्मी के पति! मेरे गुरुजी भी आपके दर्शनों की इच्छा करते हैं इसमें आपकी क्या आज्ञाहै सो कहिये २३४ हे कमलके समान नेत्रवाले! हे देवताओंमें श्रेष्ठ! वे ब्राह्मण आपके एकान्त भक्त हैं इससे आप तिनके दर्शन देनेके योग्यहैं २३५ तब श्री भगवान् बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! अनेक जन्ममें तुमने श्रेष्ठ भक्तिसे मेरा पूजन कियाहै इससे मैंने इस समयमें तुमको दर्शन दियाहै २३६ वह बुद्धिमान् ब्राह्मण! कुछदिनों के पीछे मेरीपूजा कर देवताओं से भी नहीं देखने योग्य मुझको देखेगा २३७ हे ब्राह्मण! मेरा वहभी महाभक्त और मेरी पूजामें परायणहै तिससे कभी मेरे दर्शनको प्राप्तहोगा २३८ व्यासजी बोले कि ये भगवान् के वचन सुनकर ब्राह्मण क्लेश नाशनेवाले, लक्ष्मी के पति केशवजी से भक्तिसे फिर बोला २३९ कि हे देवों के स्वामी! हे भक्तवत्सल! हे संसार के स्वामी! जो मुझ में आपकी दया है तो मेरे सम्मुखही दर्शन दीजिये २४० हे देव! हे प्रभो! मेरे गुरुजी आप के दर्शनरूपी दक्षिणा को मांगते हैं इससे उनको दर्शन देकर मेरी रक्षा कीजिये २४१ तब श्रीभगवान् बोले कि निश्चय जो तुमने मेरे दर्शनरूप दक्षिणा उनको दी है तो अपने गुरुजी को लाकर मेरे दर्शन कराइये २४२ इस प्रकार भगवान्‌की आज्ञा पाकर भद्रतनु प्रीतिसे अपने गुरुजी के आश्रम जाकर उनको लातेभये २४३ तिन देनेवालोंमें श्रेष्ठ दान्तजी के आनेपर भगवान् सब लक्षणसंयुक्त आत्माको दिखलाते भये २४४ तब हरिजी की भक्ति करनेवाला ब्राह्मण नेत्रोंमें आंशूयुक्त होकर भगवान्‌को देखकर हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करता भया २४५ कि हे दयालो! हे लक्ष्मीकेपति! हे शरणागतके पालन करनेवाले! आपके नमस्कारहैं २४६ इस समय में जन्म, तपस्या

जी के यशरूप वृक्षको नाश करदेती हैं पापोंसे कभी पुण्यकर्म नहीं शोभित होतेहैं २१५ जैसे मक्खियोंसे सुगन्धि चन्दन नहीं शोभित होता जैसे गदहे मिष्टान्नपान से नहीं तृप्त होते हैं २१६ जैसे धर्मकी चिन्तासे दुर्जन नहीं तृप्त होतेहैं और अयशके डरसे लक्ष्मी और सब कामना देनेवाला धर्म २१७ ये कभी दुष्टको नहीं सेवन करते हैं और जो सेवतेहैं तो नाश होजातेहैं प्रत्येक जन्ममें श्रेष्ठविद्या भाग्य से मिलती है २१८ कभी मिली तो उस समयमें विधि ठीक नहीं होतीहै २१९ तब भद्रतनु बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! आप सत्य कहते हैं मैं शास्त्र में निपुण नहीं हूं मुझ शिष्यसे कहीं भी आपका अयश न होगा २२० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! आपके प्रसादसे मेरा सब अभिलाष सिद्ध होगया जिससे आप एक पृथ्वी में दुर्लभ हैं २२१ तब दान्तजी बोले कि हे ब्राह्मण! क्या तुम्हारा अभिलाष सिद्धि को प्राप्त होगया है सो कहिये थोड़ेही कालमें तपोंका कैसे उद्यापन किया है २२२ तब भद्रतनु बोले कि हे गुरो! थोड़ेही परिश्रमों से मैंने हरिजी के दर्शन पायेहैं जिनकी आज्ञासे मैंने नित्यक्रिया आदिक छोड़ दीहैं २२३ और अपना उत्तरीय कपड़ा, सोनेके दो कलश, अपने हाथका कंकण और अपने मस्तक का मुकुट २२४ अपने पांवकी तुला कोटि और अपनाही मोतियों का माला भगवान् विष्णुजीने प्रसन्न होकर मुझे दियाहै २२५ और सेवकों के दुःख नाशनेवाले विष्णुजी मेरेसंग मित्रता कियेहैं मैं तिनके साथ निरन्तर गेंदखेलताहूं २२६ येवचन मैंने आपकी प्रतीतिसे आपके समीपकहेहैं २२७ तब दान्तजी बोले कि सातहज़ार वर्ष मैंने श्रेष्ठभक्तिसे विभु विष्णुजीको आराधन कियाहै परन्तु उन्होंने दर्शन नहीं दियाहै २२८ आश्चर्यकी बातहै कि पांचादिन तुमने विष्णुजी को आराधन कर देवताओं के दुर्लभ दर्शनको पाया है २२९ इससे तुम धन्य और कृतार्थहो साक्षात् देव तुम्हीं कहाते हो जिससे स्वामीजी ने प्रेमसे तुमसे मित्रता कीहै २३० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो मुझमें तुम्हारा स्नेहहो तो मुझसे कहिये कि दुर्लभ विष्णुजी के दर्शन मुझे कैसेहों-

गे २३१ व्यासजी बोले कि इस प्रकार गुरुजी ने जब कहा तो बुद्धिमान्, भगवान्की भक्तिमें परायण ब्राह्मण वनमें अपने आश्रमको चलागया २३२ तदनन्तर दूसरे दिनमें इसने जाकर भगवान्के साथ गेंदखेला और नम्रतायुक्त होकर दयालु जगन्नाथजीसे कहा २३३ कि हे देवोंमें श्रेष्ठ! हे दयालो! हे लक्ष्मी के पति! मेरे गुरुजी भी आपके दर्शनों की इच्छा करते हैं इसमें आपकी क्या आज्ञाहै सो कहिये २३४ हे कमलके समान नेत्रवाले! हे देवताओंमें श्रेष्ठ! वे ब्राह्मण आपके एकान्त भक्त हैं इससे आप तिनके दर्शन देनेके योग्यहैं २३५ तब श्री भगवान् बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! अनेक जन्ममें तुमने श्रेष्ठ भक्तिसे मेरा पूजन कियाहै इससे मैंने इस समयमें तुमको दर्शन दियाहै २३६ वह बुद्धिमान् ब्राह्मण! कुछदिनों के पीछे मेरीपूजा कर देवताओं से भी नहीं देखने योग्य मुझको देखेगा २३७ हे ब्राह्मण! मेरा वहभी महाभक्त और मेरी पूजामें परायणहै तिससे कभी मेरे दर्शनको प्राप्तहोगा २३८ व्यासजी बोले कि ये भगवान् के वचन सुनकर ब्राह्मण क्लेश नाशनेवाले, लक्ष्मी के पति केशवजी से भक्तिसे फिर बोला २३९ कि हे देवों के स्वामी! हे भक्तवत्सल! हे संसार के स्वामी! जो मुझ में आपकी दया है तो मेरे सम्मुखही दर्शन दीजिये २४० हे देव! हे प्रभो! मेरे गुरुजी आप के दर्शनरूपी दक्षिणा को मांगते हैं इससे उनको दर्शन देकर मेरी रक्षा कीजिये २४१ तब श्रीभगवान् बोले कि निश्चय जो तुमने मेरे दर्शनरूप दक्षिणा उनको दी है तो अपने गुरुजी को लाकर मेरे दर्शन कराइये २४२ इस प्रकार भगवान्की आज्ञा पाकर भद्रतनु प्रीतिसे अपने गुरुजी के आश्रम जाकर उनको लातेभये २४३ तिन देनेवालोंमें श्रेष्ठ दान्तजी के आनेपर भगवान् सब लक्षणसंयुक्त आत्माको दिखलाते भये २४४ तब हरिजी की भक्ति करनेवाला ब्राह्मण नेत्रोंमें आंशुयुक्त होकर भगवान्को देखकर हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करता भया २४५ कि हे दयालो! हे लक्ष्मीकेपति! हे शरणागतके पालन करनेवाले! आपके नमस्कारहैं २४६ इस समय में जन्म, तपस्या

और सब मेरा सफलहै जोकि आपके दर्शन मैंने पाये हैं २४७ हे लक्ष्मीकेपति ! हे प्रभो ! पूर्व में जो जो वचन आलोचितहैं वे करोड़ समुद्रके समान गम्भीर आपके आगे प्रस्तुतहैं २४८ संसार में वह स्तोत्र नहीं है जिससे वाणी और संसार के स्वामी आपके चित्त में प्रीति उत्पन्न कराऊं २४९ हे प्रभो ! हे संसार के पति ! मेरी रक्षा कीजिये और प्रसन्न हूजिये अपने दासों के दासोंके दासोंके दासभावमें मुझको स्वीकार कीजिये २५० व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! तब देवों के स्वामी, भक्तिग्रहण करनेवाले, दयालु भगवान् हँसकर तिसके मस्तकमें कमलरूपी हाथ देकर उससे बोले २५१ कि हे श्रेष्ठब्राह्मण! तुम मेरे भक्तहो मेरे दर्शन तुमने पाये हैं इससे मेरे प्रसादसे तुम्हारा सब कल्याण होगा २५२ व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण ! तब दान्त और भद्रतनुको प्रेमसे परमेश्वरजी आलिंगन कर सहसा से तहांहीं अन्तर्द्धान होगये २५३ फिर दान्तजी तिस पुण्यकारी, दुर्लभ, पुरुषोत्तम श्रेष्ठ क्षेत्रमें क्रियायोगों से भगवान् को देखकर श्रेष्ठ धामको प्राप्तहोतेभये २५४ और भगवान्‌की भक्ति में परायण भद्रतनु ब्राह्मण भी उमरके अन्त में देवताओंके भी दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताभया २५५ जो मनुष्य भक्तिसे एकदिन भी परमेश्वरको पूजताहै उसके बहुत जन्मके पाप नाश होजाते हैं और भगवान् में प्रीति बढ़ती है २५६ हे जैमिनि ! पृथ्वी में अब भी ब्रह्मादिक सब देवता भगवान् के भक्त के प्रभाव को नहीं जानते हैं २५७ हे ब्राह्मण ! यह कर्मभूमि स्वर्गसे भी दुर्लभहै जहांपर मनुष्य विष्णुजी को पूजनकर देवताओं से वन्दना कियेजाते हैं २५८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! इन्द्रादिक सब देवता अच्छी पुण्यके नाशसे डरकर निरन्तर परस्पर यह कहते हैं २५९ कि हमलोग फिर कर्मभूमि में कब जावेंगे और कब वहां भगवान् की पूजा करेंगे २६० ये मनुष्य अत्यन्त धन्य और हमसे भी श्रेष्ठहैं जे दुर्लभ भारतवर्ष में हरि प्रभुजी को पूजन करते हैं २६१ भारतवर्ष के गुण कहने में कौन समर्थ है जहांपर पूर्व्वसमय में हमलोग भगवान् को आराधन कर देवता हुएहैं २६२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! इस प्रकार इन्द्रादिक सब दे-

वता शुभ देनेवाली भारत की पृथ्वी के भाग की नित्यही प्रशंसा करते हैं २६३ तहांपर जन्म पाकर जिसने भगवान् का आराधन न किया तो उसके बराबर संसारमें कोई देखा और सुना नहीं गया है २६४ मैं सत्यही सत्य कहताहूं जे मनुष्य अश्रान्त, विश्वात्मा भगवान् को कर्म्मभूमि में दृढ़भक्तिसे एकबार भी पूजन करते हैं वे सुन्दर हाथों से किये हुए पापों से शीघ्र छूट कर मोक्ष को प्राप्त होते हैं २६५ । २६६ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपुरुषोत्तमक्षेत्रेभद्रतनुवर-
प्रदानंनामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

## अठारहवां अध्याय ॥

पुरुषोत्तमतीर्थका माहात्म्य वर्णन ॥

जैमिनि बोले कि हे गुरो ! जो आपने तीर्थों में श्रेष्ठ पुरुषोत्तम तीर्थको कहा तो यदि मेरे ऊपर आपकी दयाहो तो उसके माहात्म्यको भी कहिये १ तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण जैमिनि ! पुरुषोत्तम तीर्थके माहात्म्यको संक्षेपसे सुनिये इस संसारमें अच्छे प्रकार कहने में विष्णुजी के विना और कोई समर्थ नहीं है २ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! लवण समुद्रके किनारे स्वर्गसे भी दुर्लभ पुरुषोत्तम नाम पुरहै ३ जिससे तिसपुरमें श्रीपुरुषोत्तम भगवान् आपही रहते हैं इससे जाननेवालों ने तिसके नामको पुरुषोत्तम कहा है ४ यह दुर्लभक्षेत्र चारोंओर चालीसकोसहै यहांके रहनेवाले देहधारी पुरुष देवताओं से चारभुजाके दिखलाई पड़ते हैं ५ तिस क्षेत्रमें प्रवेशकर सब विष्णुजीकी मूर्ति होजाते हैं तिससे चतुरों करके तहां पर कुछ विचारणा न करनी चाहिये ६ तहांपर चाण्डालका भी छुआ अन्न ब्राह्मणों के ग्रहण करने के योग्य होताहै जिससे वहांपर चाण्डालभी साक्षात् विष्णुही है ७ तहांपर अन्नके पकानेवाली लक्ष्मीजी हैं और आपही भगवान् भोजन करनेवाले हैं तिससे हे ब्राह्मण ! तहांका भात देवताओंको भी दुर्लभहै ८ जे भगवान् के भोजन से बचेहुए, पृथ्वीमें दुर्लभ, पवित्र अन्नको भोजन करते हैं उनकी मुक्ति

दुर्लभनहीं है ९ ब्रह्मा आदिक सब देवता तिस अत्यन्त दुर्लभ अन्न को नित्यही आकर भोजन करतेहैं मनुष्योंकी तो कथाही क्याहै १० जिसका अत्यन्त दुर्लभ अन्न में चित्त नहीं रमता है तिसको सब महर्षि विष्णुजी का वैरी कहते हैं ११ हे ब्राह्मण! जैसे पृथ्वी में सबजगह गङ्गाजल पवित्रहै तैसेही सबजगह पाप नाश करनेवाला अन्न पवित्र है १२ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! वह अन्न कोमल और यद्यपि सुन्दरहै कृकचके उदरप्रायहै तथापि पाप नाश करनेवाला है १३ जिसके पहले के इकट्ठे कियेहुए पाप नाशको प्राप्त होते हैं तिसकी दुर्लभ अन्नमें भक्ति वर्तमान होती है १४ और जिसका बहुत जन्म का इकट्ठा कियाहुआ पुण्य नाशको प्राप्तहोताहै तिसकी तिस अन्न में भक्तिनहीं उत्पन्न होती है १५ इन्द्रद्युम्नतालाब, मार्कण्डेयकुण्ड, रोहिणी, समुद्र और श्वेत गङ्गाजलों में १६ जे मनुष्य भक्तिभाव से युक्त होकर स्नान करते हैं तिनका फिर इस पृथ्वी में जन्मनहीं होता है १७ हे ब्राह्मण! लवण समुद्र के जलोंसे तर्प्पण कियेहुए पितृ सब दुःखों से छूटकर भगवान् के मन्दिरको जाते हैं १८ तिस से तत्त्वदर्शियों ने इस समुद्र को तीर्त्थराज कहा है तिससे तहां कियाहुआ सब कर्म्म नाशरहित होता है १९ तिस मनोरमक्षेत्रमें पितरोंका पूजन, दान, भगवान् के चरणोंका पूजन, जप, यज्ञ तथा और भी २० जो कर्म मनुष्य विष्णुजी की प्रसन्नता के लिये करताहै वह सब निस्सन्देह नाशरहित होता है २१ बलभद्र, सुभद्रा और कमलनयन कृष्णजी के जे मनुष्य दर्शन करते हैं तिनको कुछ दुर्लभ नहीं है २२ श्रीजगन्नाथ, सुभद्रा और बलदेवजी के विना दर्शन किये मनुष्य सैकड़ों पुण्य करने से भी मोक्षको नहीं प्राप्त होता है २३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तहां वेंतकी चोट से जिसका शरीर लाल होताहै तिसकी इन्द्रआदिक सब देवता वन्दना करतेहैं २४ हे ब्राह्मण! आकाश में इन्द्र आदिक सब देवसमूह स्थित होकर विमानपर चढ़कर प्रसन्न होकर परस्पर यह कहते हैं २५ कि भगवान् हम लोगों को कब मनुष्यदेह देवेंगे तब हम सब मनुष्य की नाईं हरि प्रभुजी के देखने को जावेंगे २६ कब वेंतकी चोट से

श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्रमें हमलोगों के शरीर लाल होंगे २७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तिसवरके देनेवाले क्षेत्रमें इन्द्रआदिक सब देवता सदैव बेंत की चोटोंकी वांछा करतेहैं २८ तहांपर जे मनुष्य भक्तिसे अक्षयवट को देखते हैं ते करोड़जन्मों के इकट्ठे कियेहुये पापोंसे छूटकर श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होतेहैं २९ सुभद्रा, बलभद्र और रोगरहित जगन्नाथ जी, श्वेत देवोंके स्वामी माधवजी, मार्कण्डेयकुण्ड, ३० ज्यामेश्वर, हनुमान् और अक्षयवटको जे मनुष्य भक्तिसे देखतेहैं तिनकी शाश्वती मुक्ति होती है ३१ और जे मनुष्य वहांपर फाल्गुन महीने में गोविन्दजी को भक्तिसे झूलतेहुए देखतेहैं तिनकी पुण्यको सुनिये ३२ वे सब पापोंसे छूटकर अन्तमें भगवान् के मन्दिर को जातेहैं और तहांपर ज्ञानको प्राप्त होकर अत्यन्त दुर्लभ मोक्षको प्राप्तहोतेहैं ३३ हे जैमिनि! जो चैत्रके महीने में वारुणीपर्व्व में जगन्नाथजीके दर्शन करता है वह मरकर जगन्नाथजी की देह में प्रवेश करताहै ३४ और वैशाख के शुक्लपक्ष की तीजको जो जगन्नाथजी के दर्शन करताहै वह मनुष्य मुक्त होजाताहै ३५ जो मनुष्य जगन्नाथजीके महास्नानमें प्रवेश करताहै तिसके सब मनोरथ सिद्ध होतेहैं ३६ भक्तिभावसेयुक्त होकर ब्रह्माआदिक सब देवता जगन्नाथजी के महास्नानको देखतेहैं ३७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! महाज्येष्ठी में रोगरहित जगन्नाथजी को देखकर मनुष्य विष्णुजी के परमपद को प्राप्तहोताहै ३८ आषाढ़ में जगन्नाथजी और बलभद्रजीको जो गुण्डिकामण्डप में जातेहुए देखताहै वह निस्सन्देह मुक्त होजाताहै ३९ जो कमलनयन जगन्नाथजीको रथमेंस्थित देखताहै तिसका सबदुःखदेनेवाले संसारमें फिर जन्मनहीं होताहै ४० जे मनुष्य भक्तिसे रथपरचढ़ीहुई सुभद्राजीको देखते हैं भगवान् तिसके दुःखदेनेवाले संसारबन्धनको काट देते हैं ४१ जो पुत्रहीन स्त्री सुभद्राजी को देखती है तो उसके बहुतपुत्र होते हैं और पुत्र मरनेवाले के पुत्र जीतेहैं ४२ जो दुर्भगा सुभद्राजीको देखतीहै तो वह पतिके सुभगा होतीहै और काकबंध्या के सुभद्राजीके दर्शनकरनेसे निश्चय बहुत पुत्र होतेहैं ४३ जो पुरुष कृष्ण, बलभद्र और सुभद्राजी को गुण्डिकामण्डप में स्थित देखता

है वह परमपद को प्राप्त होता है ४४ हे जैमिनि! रोगी और दुःखी जो गुण्डिकामण्डप में हरिजी को देखता है तो वह सहसा से रोग और दुःखसे छूट जाताहै ४५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो पुत्रहीन मनुष्य गुण्डिकामण्डपमें स्थित जगन्नाथजीको देखताहै वह वैष्णव पुत्रको प्राप्त होता है ४६ विद्यार्थी विद्याको, धनकी इच्छा करनेवाला धन को, स्त्री की इच्छा करनेवाला स्त्रियोंको और मोक्ष की इच्छा करनेवाला मोक्षको प्राप्त होताहै ४७ जो राज्य छूटनेवाला राजा भक्तिसे गुण्डिकामण्डप में हरिजीको देखता है वह अपनी राज्य को प्राप्त होताहै ४८ जो शत्रुओंसे जीता हुआ गुण्डिकामण्डप में हरिजी को भक्तिसे देखताहै उसके वैरी नाश होजाते हैं ४९ जो राजासे पीड़ित होकर गुण्डिका के मण्डप में भगवान् को देखता है वह शीघ्रही राजाको अपने वशमें प्राप्त करताहै ५० सब यात्राओं में गुण्डिका श्रेष्ठ कहीगई है तिससे सैकड़ों कार्य छोड़कर यह यात्रा मनुष्यों को करनी चाहिये ५१ तिस मनोरम क्षेत्रमें शयन और उठने में जो मनुष्य हरिजी को देखताहै वह देवताओंसे भी पूज्य होता है ५२ पुरुषोत्तमजी के माहात्म्य कहने में पृथ्वी में कौन मनुष्य समर्थहै जिसके प्रवेशही मात्रसे मनुष्य नारायण होजाताहै ५३ यहांपर बहुत कहने से क्याहै संक्षेपसे मैंने कहा है सब तीर्थों में पुरुषोत्तम तीर्थ श्रेष्ठ है ५४ जो अत्यन्त गहरे, इस संसाररूपी समुद्र, क्लेश देनेवाले, विषम पापसमूहों के आश्रयको तरना चाहे तो सबसुख देनेवाले पुरुषोत्तमक्षेत्रमें देवताओंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तमजी के दर्शन करै ५५ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपुरुषोत्तममाहात्म्यंनामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

## उन्नीसवां अध्याय ॥

भगवान् के माहात्म्यका वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैमिनि! जे भक्तिसेयुक्त मनुष्य नारायणजी की शरणमें प्राप्त होते हैं तिनका कभी अशुभ नहीं होताहै १ फिर भगवान् के माहात्म्यको कहताहूं जिसको सुन

कर सब मनुष्य परमपदको प्राप्तहोते हैं २ वासुदेवजीकी माहात्म्य सुनकर वैष्णव मनुष्य तृप्त होजाते हैं नरकमें क्लेश सेवनेवाले पाखण्डी नहीं तृप्त होते हैं ३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! पाखण्डियों के समीप उत्तम विष्णुजीका माहात्म्य नहीं कहना चाहिये वैष्णवोंके आगे कहना चाहिये ४ पूर्व्वसमय त्रेतायुगमें उर्वीशु नाम नित्यही पापमें रत, धर्मकी निन्दा में परायण, ५ ब्राह्मणकी निन्दा करनेवाला, पराई स्त्रीके गमनमें उद्यत, गऊके मांसका खानेवाला, मदिरा पीनेहारा, वेश्याके विभ्रममें लोलुप, ६ शरणागतके मारनेवाला, सदैव पराई निन्दा करने हारा, विश्वासघात करने वाला, मित्रके मारनेवाला, जाति की पीड़ा करनेहारा, ७ असत्य बोलनेवाला, क्रूर, पाखण्डीजनों के संग सेवन करनेवाला, ब्राह्मणों की वृत्ति नाश करनेवाला तथा न्यासका चुरानेवाला हुआ ८ इसप्रकारके तिस दुष्ट, पापमें परायणको देखकर कोपयुक्त होकर उसके सब जातिवाले उसके घर में जातेभये ९ और उससे बोले कि रे मूढ़! निर्म्मल कुल में हम लोगोंके पुरुषोंने प्रतिष्ठा बढ़ाईथी उसको तूने नाश करदिया १० धर्ममार्ग छोड़कर सदैव पाप करताहै हमारे वंशके यश नाशनेवाला, जातिवालोंको दुःख देनेहारा हुआ है ११ तुममें ब्रह्माकी सृष्टि अत्यन्त विस्मय देनेवाली हमलोग मानते हैं जिस समुद्र में चन्द्रमा हुआहै तिसी में क्ष्वेडोद्भवभी हुआहै १२ आश्चर्य की बात है कि कुपुत्रों की शक्ति गिनती करने में भी हम लोग नहीं समर्थ हैं अनेक पुरुषों की इकट्ठा की हुई कीर्ति को तिसी क्षण में नाश कर देते हैं १३ उत्तम पुत्र के उत्पन्न होने में अधमभी वंश श्रेष्ठ हो जाता है और अधम पुत्र के उत्पन्न होने में श्रेष्ठ भी वंश हीनता को प्राप्त हो जाता है १४ व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण! ऐसा कहकर क्रोधयुक्त होकर वे सब जाति वाले तिस पापियों में श्रेष्ठ को अयश के डरसे सहसा से छोड़ देते भये १५ जाति वालें से छोड़ा गया और सब मनुष्यों से धिक्कार को प्राप्त होकर सब सम्पदाओं से भ्रष्ट दुःखित होकर वह चोरी करने लगा १६ तिस चोरी के कर्म करने वाले, निर्दयी, पराई हिंसा करने वाले को पकड़ कर सब म-

नुष्य राजा को देदेते भये १७ हे उत्तम ब्राह्मण! तब तिस राजाने पिता के स्नेह से इस दुराचारी को नहीं मारा अपने देश से बाहर कर दिया १८ तब बहुत उद्धत चोरों के साथ यह निर्दयी वन में राह चलनेवालों की द्रव्य हरने के लिये स्थित होता भया १९ कदाचित् वन के घूमने में थककर चोरों के साथ वह स्नान करने के लिये नदी के किनारे जाता भया २० तब यह दुष्टात्मा तिस नदी के किनारे भगवान् की सेवा में परायण बहुत से ब्राह्मणों को देखता भया २१ तदनन्तर वे सब ब्राह्मण भगवान् को आराधन कर अत्यन्त कौतुक से परस्पर यह कहते भये २२ कि इस समय में मैंने चम्पा के फूल छोड़े हैं कोई कहता भया कि मैंने मुरारिजी को पान दिया है २३ इससे जन्ममें कभी मुझे पान न खाना चाहिये मैंने इस समय में उत्तम केले के फल दिये हैं २४ इससे जन्म जन्म में मुझे केले का फल न खाना चाहिये कोई कहता भया कि मैंने हरिजीको अनार का फल दिया है २५ कोई कहताभया कि मैंने उत्तम आम का फल दिया है इस तरह परस्पर कहते हुए तिन लोगों के वचन सुनकर २६ उर्वीशु चिन्तना करता भया कि मैं क्या विष्णुजी को दूं संसार में जितनी वस्तु भोजन करने के योग्य हैं तिनको मैं २७ नहीं छोड़ सक्ता हूं क्या भगवान् को दूं—नित्यही वन के बीचमें रहकर चोरी करता और राजा के डरसे व्याकुल रहताहूं २८ गाड़ी के चढ़ने में मुझे अधिकार कभी नहीं है व्यासजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह वारंवार कहकर उस चोरने २९ धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके देनेवाले हरिजीको गाड़ा देदिया तदनन्तर सब वे ब्राह्मण जैसे आयेथे वैसेही चलेगये ३० और चोरोंके साथ यह चोरभी अपने स्थानको जाताभया एक समयमें तिसी राह से गुडकंडोल ३१ लेकर कोई राह चलने वाला उसी मण्डल में प्राप्त होगया तो इस निर्भय पराई हिंसा करनेवाले चोरने ३२ उस के गुडकंडोल को हरलिया तब सब चोर गुडकंडोल को बांटनेलगे ३३ तो उर्वीशु के भाग में गुडनिर्मित गाड़ा पड़ता भया तब वह गुड़ के गाड़ाकोप्राप्त होकर ३४ मनसे स्मरणपूर्वक इन वचनों को त्रि-

न्तना करताभया कि मैंने पूर्वसमय में भगवान् को गाड़ा देदिया है ३५ तिससे इस जन्ममें कभी भी गाड़ा न ग्रहण करना चाहिये यह गुड़के रचे हुए गाड़ेको मनसे देनेकी चिन्तना कर ३६ भगवान्की प्रीतिकेहेतु किसी ब्राह्मणको देदेतेभये तब तिस महापापी की भक्तिको जानकर ३७ प्रसन्न होकर भगवान् शीघ्रही उसके सब पापों को हर लेतेभये और तिसी दिन क्रुद्ध होकर सब पुरवासियों ने महावन में प्रवेशकर उर्वीशुको मारडाला तब भगवान् उसके लेने के लिये सोनेके बनेहुए विमान ३८।३९ और अनेक प्रकार के गहनोंसे भूषित दूतोंको भेजतेभये तदनन्तर वे भगवान्के दूत पापरहित उर्वीशुको ४० विमान पर चढ़ाकर शीघ्रही भगवान्के पुरको जातेभये तब यह पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ भगवान् के समीप प्राप्त होकर ४१ सौमन्वंतर उनके पास रहकर परमज्ञान पाकर भगवान्की देहमेंप्रवेश कर जाताभया ४२ व्यासजी बोले कि जिस किसी उपायसे भगवान् की भक्ति करनेवाला मनुष्य राजहंस की नाईं संसाररूपी समुद्रके पार जावे ४३ जिस के चित्त में क्षणमात्र भी भगवान्की भक्ति वर्तमान होती है तो वह परमपदको प्राप्तहोताहै जहां पर यह पापी भी प्राप्त हुआहै ४४ एक भी उत्तम वस्तु भगवान् को देकर पीछेसे पापों की शान्तिके लिये आपभी भोजन करै ४५ जो वस्तु भगवान्को देवे तो वही ब्राह्मणको भी देवे बुद्धिमान् मनुष्य कुछ बचेहुएको आप अवश्य भोजन न करै ४६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जितनी मीठी वस्तुहैं तिनको विष्णुजी के दिये विना वैष्णवोंको भोजन न करना चाहिये ४७ हे ब्राह्मण! सब पाप नाशने वाली विष्णुजीकी नैवेद्यके माहात्म्यको इतिहाससमेत फिर कहता हूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये ४८ शुद्धवंशमें उत्पन्न सर्वजनि नाम ब्राह्मणहुआ यह शांत, दान्त, दयायुक्त, गुरु और ब्राह्मणकी पूजा करनेवाला, ४९ हरिजीकी पूजा और स्मरणमें तत्पर, शरणमें प्राप्त हुओंके क्लेशका नाश करनेवाला, सत्य बोलनेहारा, जितेन्द्रिय, ५० प्रातःकाल स्नान करनेहारा, अपने आचार का ग्रहण करनेवाला, हिंसासेहीन, एकादशी के व्रतमेंरत, जातिकी पूजामें परायणथा ५१

कदाचित् इस श्रेष्ठ ब्राह्मणने स्वप्नमें केशवजीको देखा जोकि श्याम-वर्ण, निर्मल कमलके समान नेत्रवाले, सुन्दर मुखवाले, पीलेकपड़े धारे, ५२ सोनेका कुण्डल, मंजीर और मुकुटसे उज्ज्वल देहवाले, कौस्तुभमणि से प्रकाशित छातीवाले, वनमालासे विभूषित, ५३ चार भुजावाले, शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करनेहारे, प्रभु, सब लक्षणों से युक्त, सोनेका जनेऊ पहने हुएथे ५४ इस प्रकार स्वप्न में भगवान् के दर्शन पाकर ब्राह्मण आनन्दसे रोमांचयुक्त देहहोकर हाथ जोड़कर तिनकी स्तुति करने लगा ५५ कि सब संसारके स्वामी, सज्जन मनुष्योंके शोक,डर और रोगोंके नाशकरनेहारे, नारायण, लक्ष्मी के हृदयके प्रिय, धर्म, अर्थ, काम और परम मोक्ष के देनेवाले आपके नमस्कार है ५६ हे मुर दैत्य के वैरी! मुझ मतवाले, मोहके वश में प्राप्तहुए ने सदैव सब पाप किये हैं तिससे संसाररूपी गहरे समुद्रसे डरता हूं इससे अपनी भक्तिरूपी नावदेकर मेरा उद्धार कीजिये ५७ हे हरे ! हे कैटभराक्षसकेवैरी ! यद्यपि मैं मनुष्य होकर पाप को जानताहूं और शीघ्रही मोह को प्राप्त हुआहूं तथापि आनन्द से निरन्तर पापही करताहूं तिस से मूर्ख मनुष्य की नाईं हूं ५८ हे नृसिंह ! हे नाथ ! हे भगवन्! आप पुण्य के वृक्षरूप हैं और सहसाही से सुखफलको धारण करते हैं क्या पाप करनेवाला मैं नहीं जानताहूं परन्तु फूलेहुए वृक्षके अर्पण की विधि में मेरे द्रव्य नहीं है मैं क्याकरूं ५९ हे देव! परम अमृतरूप आपके दोनों चरणकमलों के स्थान को छोड़कर मेरा चित्तरूप यह भौंरा मृत्यु के देनेवाले, निरन्तर कफसे युक्त स्त्री के मुख में कमल के भ्रमसे प्राप्त होताहै ६० हे हरे! मेराहाथ दान से रहित, मुख झूंठबोलनेहारा और कान पाप सुनने के लिये सदैव निपुण हैं इससे मुझ सेवकके इन दोषों को नाश कीजिये जिससे हे नाथ ! आप शरणागत के दोष नाश करनेवाले हैं ६१ हे नृसिंहजी ! संसाररूपी घोर समुद्र में कदाचित् आप की भक्तिरूप नाव अत्यन्त दृढ़ मैंने यहां पर पाई तब भी दैवके वश में प्राप्त मुझ दुरात्मा का निरन्तर दुःख का समय वर्तमान है ६२ हे विष्णो!

संसारके पारजानेके लिये क्या प्रकाशित मार्गहै जो कि सब दुःखोंसे रहित, दयासमेत और प्रसन्नहै और मुझ मोहरूपी बड़े अन्धकार से अंधे कियेहुए की दृष्टि कभी भी आप में नहीं प्राप्त होतीहै ६३ हे मुरारे! हे सब देवताओं से वंदितचरणकमलवाले! हे केशी राक्षस के मारनेवाले! हे विभो! मुझ पापात्मा का यह चित्त नष्ट होगया है जो कि नष्टजनों के कष्ट नाश करनेवाले आपको मैं इस समय स्वप्न में देखता हूं ६४ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! इस प्रकार तिस ब्राह्मण से संसाररूपी समुद्र के तारनेवाले देव, लक्ष्मी-पति, भगवान्, वाक्य के जाननेवाले स्तुति कियेगये तब तो उससे बोले ६५ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुम्हारी भक्तिसे मैं नित्यही प्रसन्नहूं तिससे तुम्हारा थोड़ेही समय में सब कल्याण होगा६६ हे ब्राह्मण! पूर्व समय में तुझ पापी का भी मैंने उद्धार कियाहै इस समय में तो मेरा भक्त है इससे तुझ को विपत्ति न होगी ६७ तब ब्राह्मण बोला कि हे विष्णो! पूर्वसमय में मैं कौन था क्या पाप मैंने कि-या था और मुझ पापी का पहले आपने कैसे उद्धार किया था ६८ हे विभो! इस संसार में आपने कैसे उत्पन्न कियाहै यह सब कहि-ये जिससे आप सदैव दयासमेत हैं ६९ तब श्री भगवान् बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यद्यपि यह छिपाहुआ और प्रकाश करनेके योग्य नहीं है तथापि तुम्हारी वात्सल्यता से कहताहूं सुनिये ७० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! पूर्वसमय में तुम अपने कर्म के विपाकसे पृथ्वी के मार्गों में पक्षियों के वंश में उत्पन्न हुये थे ७१ वहां पर भूंख और प्या-ससे निरन्तर व्याकुल होकर कीड़ों को खाते और झरनों के गर्म जल पीतेहुए भ्रमतेभये ७२ पक्षीकी योनिमें उत्पन्नहुए सदैव अ-नेक प्रकार के दुःखों को भोग करतेहुए पृथ्वी में चार हजार वर्ष तुम स्थितरहे ७३ एक समय में सब तत्त्व के जाननेवाले कुल-भद्रनाम ब्राह्मण नदीके किनारे भक्तिसे नैवेद्य आदिकोंसे मुझको पूजतेभये ७४ और वह श्रेष्ठ ब्राह्मण मेरी पूजाकर नैवेद्यके चावलों को वहीं छोड़कर फिर अपने घरको चलेगये ७५ तब वृक्षसे निक-लकर भूंखे तुझ पक्षीने मेरी नैवेद्यके सब चावल खालिये ७६ और

भोजन करनेहीसे शीघ्रही अत्यन्त घोर पापोंसे छूटगये और कदाचित् समय प्राप्त होनेमें मरगये ७७ तो तुम्हारे लेनेकेलिये मैंने अपने दूतोंको भेजा तो पापरहित तुमको रथमें चढ़ाकर ७८ शीघ्रही सब दूतसमूह परंपदको लेआये तो हज़ार करोड़ युग हमारे समीप तुम स्थितरहे ७९ और देवताओंके भी दुर्लभ सब सुखोंको भोगते रहे तदनन्तर हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शुद्ध ब्राह्मणके कुलमें तुम उत्पन्न हुए ८० तो फिर तहां भी मुझमें अत्यन्त दृढ़भक्ति तुम्हारी उत्पन्नहुई क्रियायोग से नित्यही मुझको आराधनकर ८१ अन्त समय मेरे प्रसादसे मेरे पदको प्राप्त होगे हे ब्राह्मण! जब मैं प्रसन्नहोताहूं तब पापीभी मुक्तिका सेवनकरनेवाला होजाताहै ८२ और कदाचित् जिसके ऊपर अप्रसन्न होताहूं तो पुण्यात्मा भी पापका सेवन करनेवाला होजाता है तिससे हे सुन्दर व्रत करनेवाले ब्राह्मण! तुम मेरे भक्त हो तुम्हारा कल्याणहो ८३ तुमको देवताओंके भी नहीं मिलनेवाले श्रेष्ठ स्थानको मैं दूंगा तब ब्राह्मण बोला कि हे नाथ! आपके प्रसाद से मैंने अपने पूर्वजन्मके वृत्तान्तको सुना ८४ हे प्रभो! हे देवताओंमें श्रेष्ठ! इस समयमें जो कुछ सुनना चाहताहूं तिसको कहिये किसके ऊपर आप प्रसन्न होते और किसपर अप्रसन्न होतेहैं ८५ यह सब बड़ी कृपाकर आप मुझसे कहनेके योग्य हैं तब श्रीभगवान् बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जिस कर्मसे मेरे हृदयमें प्रसन्नता होतीहै ८६ और जिससे क्रोध होता है तिस सबको संक्षेपसे कहताहूं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जो सदैव सब प्राणियोंमें दयावान् ८७ और अहंकाररहित होताहै तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं जो धर्म और भक्तिसे युक्त होकर मेरेलिये कर्म करता है ८८ और मेरेही लिये जो शान्त बोलता है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहता हूं और जो मनुष्य मीठी वस्तु को प्राप्त होकर मुझ को देताहै ८९ और मान अपमान में सदृश है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं जो मनुष्य सब प्राणियों के शरीरमें स्थित मुझ को जानता है ९० और जो पराई हिंसा से हीन है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहता हूं जो वारंवार विचार कर कर्म करता है ९१ और

जो गऊ और ब्राह्मण के कल्याण की इच्छा करता है तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं जो अपने कहेहुए वचन को यत्न से पालन करताहै ९२ और यत्नसे शरणागतको प्राप्तहोताहै तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं हे श्रेष्ठब्राह्मण! अनुपकारियोंको जो दानदेताहै ९३ और जिसका मुझमें सदैव चित्तरहताहै तिसके ऊपर मैं सदैव प्रसन्न रहताहूं जिसकर्मसे मैं प्रसन्नहूं तिसको संक्षेपसेमैंने कहा ९४ अब हे ब्राह्मण! जिसकर्मसे रुष्टहोताहूं तिसको कहताहूं सुनिये जो पराई हिंसामें रत, सब प्राणियोंमें निर्दयी ९५ अभिमानयुक्त और सदैव क्रुद्ध रहताहै वह मुझको शत्रुताको प्राप्त करताहै झूंठबोलनेवाला, क्रूर, पराईनिन्दा में परायण ९६ कविवर्तन विध्वंस करनेवाला जो है वह मुझको शत्रुताको प्राप्तकरता है निर्दोष माता, पिता, स्त्री, भाई, बहनको ९७ जो मूर्ख मोहसे त्याग करदेताहै वह मुझको शत्रुताको प्राप्त करता है और जो मूढ़बुद्धि मनुष्य पितरोंसे भर्त्सन करता है ९८ और गुरुजीका अपमान करता है वह मुझको शत्रुताको प्राप्त करता है जे बगीचे के काटनेवाले तालाब इत्यादिके नाशकरनेवाले ९९ और जे गांवके नाश करने हारे हैं वे मुझको शत्रुताको प्राप्त करते हैं पराई स्त्रीको देखकर जे मनुष्य क्लेशको प्राप्त होतेहैं १०० और पापकी चर्चाको सुनतेहैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्न रहता हूं जे मूर्ख स्वामी से वैर करतेहैं अनाथकी द्रव्य हरतेहैं १०१ और जे विश्वासघात करते हैं तिनकेऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे गऊके वीर्य के नाश करने वाले, शूद्रीकेपति, १०२ और पीपलके काटनेवाले हैं तिन के ऊपरमैं सदैव अप्रसन्नहूं ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजीके बीचमें जे भेद करनेवाले हैं १०३ और पराई स्त्रीमें जे आतिरक्त हैं तिन के ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे पापबुद्धि मनुष्य एकादशीमें लोभ से भोजन करतेहैं १०४ और जे वेदकी निन्दा करनेवाले हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं पापबुद्धिमें जे रत तथा मित्रके द्रोह में रत १०५ और आंवलेके वृक्षको जे काटतेहैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे कामसे मोहित मनुष्य दिनमें मैथुन करतेहैं

१०६ और रजस्वला स्त्रीसे भोग करतेहैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे स्त्रीको ऋतुयुक्त देखकर मोहसे भोग करतेहैं १०७ और व्रतमें स्थित से सदैव भोग करते हैं ते मुझको शत्रुताको प्राप्त करतेहैं जे अमावास्यातिथिमें रात्रि में भोजन करते हैं १०८ और इतवारको दोबार भोजन करते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं जे ब्राह्मण अमावास्या के दिन मांस,मैथुन और तेलको नहीं छोड़ते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं यहांपर बहुत कहनेसे क्याहै संक्षेपसे तुमसे कहताहूं १०९। ११० जे वैष्णवोंकी निन्दा करते हैं तिनके ऊपर मैं सदैव अप्रसन्नहूं व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! ऐसाकहकर भगवान् विष्णुजी सहसासे अन्तर्द्धान होगये १११ और वह ब्राह्मण निद्रा छोड़कर शय्यासे उठकर भगवान्के कहेहुए वाक्यसे भगवान्की भक्ति करनेलगा ११२ और सब कार्य छोड़कर क्रियायोग में रत होजाता भया नारायणजी की नैवेद्य भोजन करने का यह फल है ११३ हरिजीकी पूजाकरनेवालोंका नहीं जानते क्या होताहै हे जैमिनि! संक्षेपसे कहताहूं तुम सुनो ११४ एक बार भी हरिजी की पूजा करने से परमपद प्राप्तहोताहै संसार में मनुष्यजन्म दुर्लभ है तहांपर भगवान्की पूजा ११५ और भक्ति दुर्लभ कहीगईहै ११६ संसाररूपी समुद्र सब दुःखोंसे पूर्णहै जिस पुरुषके चित्तमें उसके तरनेकी इच्छा हो तो वह श्रेष्ठ मनुष्य सब कर्मों में भक्तिसे नित्यही भगवान्की पूजाकरै ११७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेएकोनविंशतितमोऽध्यायः १९॥

## बीसवां अध्याय॥

सब दानोंका माहात्म्य वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ब्राह्मण! विष्णुजी की पूजा का फल तो संक्षेप से मैंने कहा अब इस समय में दानों को कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये १ दान और तपस्या इन दोनों में एक दानही श्रेष्ठ कहाहै तपस्यासे पाप कहाहै दानके कर्म में पाप नहीं है २ सतयुगमें तपस्या श्रेष्ठहै,त्रेतायुग में ध्यान,द्वापरयुग में पूजा

और कलियुग में दान श्रेष्ठ है ३ तिससे परमपद की इच्छा करने वाले बुद्धिमानों करके भगवान्‌की प्रीति के लिये कलियुगमें दान करना चाहिये ४ कला कलासे चन्द्रमाकी कला जैसे बढ़ती है तैसेही बुद्धिमानों ने दान और तपस्या की गति कही है ५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! बुद्धिमान् मनुष्य पलसे द्रव्यका संग्रहकरै और इकट्ठेकिये हुए धनको दानके कर्म में लगावै ६ धनके स्थित होनें में जो मनुष्य न भोजन करता और न देताहै वह दान और भोगसे वर्जित दरिद्र जानना चाहिये ७ द्रव्य किसके साथ आता और किसके साथ जाता है इस लोक में नाश होजाने में पूर्वसमय का दियाहुआही प्राप्तहोताहै ८ जे मनुष्य दान देदेकर सदैव दरिद्री होजाते हैं वे दरिद्री नहीं जानने चाहिये परलोकमें महेश्वर होते हैं ९ हे जैमिनि! जे कृपणता से धनकी रक्षा करते हैं वे अत्यन्तदुःखित जाननेचाहिये अन्तमें तिस सबको छोड़कर निराश होकर जाते हैं १० परलोकमें श्रेष्ठ ब्राह्मण साधु और अच्छेबलसे रहितहोकर निर्द्धन और बन्धुहीन होनेमें दियेहुएको पाताहै ११ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! वैष्णवों करके अपनी भक्तिसे नित्यही भक्ति श्रद्धायुक्त होकर थोड़ाथोड़ा दान देना योग्यहै १२ तत्त्वके जाननेवालोंने सब दानोंमें अन्न और जलका दान अत्यन्त श्रेष्ठ कहाहै १३ देहधारी पुरुषोंके विनाअन्नके देहोंमें प्राण नहीं स्थित होते हैं इससे अन्नका देनेवाला प्राणों का देनेवाला जानना चाहिये और प्राणोंका देनेवाला सब देनेहारा होताहै १४ हे जैमिनि! तिससे अन्नका देनेवाला सब दानोंके फलको प्राप्तहोताहै और अन्नदानही के बराबर जलदान भी है १५ विना जल के अन्न नहीं होताहै इससे जल भी देना चाहिये हे श्रेष्ठब्राह्मण! भूंख और प्यास दोनों बराबर कही गईहैं १६ तिससे बुद्धिमानों ने जल का देना श्रेष्ठ कहा है मनुष्यों का जलही जीवन है जीना जीवन नहीं है १७ इससे बुद्धिमान् मनुष्य जीवन की रक्षाके लिये जलको देवे हे विप्रेन्द्र! जिसने पृथ्वी में अन्न और जल दिये हैं १८ तिसने निस्सन्देह सब दान कियेहैं अन्न और जलके दानके माहात्म्यको सुनिये १९ हास्तिनपुर में कुबेरकी नाईं द्रव्यवान् एक

मनुष्य हुआ है और तिसी पुरमें अप्सराओंके समान वेश्या हुई है २० जिसका रतिविदग्धा नाम था यह सब लक्षणों से संयुक्तथी तहांहीं श्रेष्ठवंशमें उत्पन्न क्षेमकरी नाम ब्राह्मणी हुई २१ यह ब्राह्मणकी कन्या सब गुणोंसे युक्त होकर विधवा होगई तब व्यभिचारी पुरुषोंमें मन लगाती भई २२ और अज्ञानताको प्राप्तहोकर निषिद्धकर्म करती भई और यह ब्राह्मणीभी वेश्या के स्थानमें चली गई २३ दोनों वेश्याकी जीविकाको प्राप्तहोकर स्नेहसे मित्रता करती भईं वेश्या और ब्राह्मणी दोनों एक जगह रहकर दिन दिन में २४ अगणित पापोंको करती भईं तदनन्तर रतिविदग्धा वेश्या और अत्यन्तपापिनी दुःशीला ब्राह्मणीभी वृद्धावस्था को प्राप्तहोगईं तब किसी समयमें रतिविदग्धा वेश्या अपनी ब्राह्मणी सखीसे २५। २६ विस्मय और नम्रतायुक्त होकर बोली कि हे सखि! तुम्हारे साथ मैंने अत्यन्त घोर पाप किये हैं २७ और अबभी मेरी पापमें अत्यन्त दृष्टि वर्तमानहै सुन्दरता और बल सब बुढ़ापेने हरलियाहै २८ इस प्रकार पाप करनेवाली मैंने वृद्धावस्था प्राप्तकीहै और असमर्थ होगईहूं तबभी आशा छोड़ने में नहीं समर्थ हूं २९ इससे मरण समीपही देखतीहूं पापसे जो मैंने द्रव्य इकट्ठा किया है ३० तिसको मुझ पुत्ररहितके मरने के पीछे कौन रक्षाकरेंगे तिससे सब अन्यायसे इकट्ठे कियेहुए द्रव्यको ३१ हे सखि! जो आपकी भी सलाहहो तो ब्राह्मणोंके देनेकी इच्छा करतीहूं तब ब्राह्मणी बोली कि मैंने जितना द्रव्य इकट्ठा किया ३२ तिस सबको नित्यही असत्पात्रों में दे दिया तिससे मैं धनहीनहूं मैं क्या ब्राह्मणको दूंगी ३३ जो आपके पास द्रव्यहै तिसको शीघ्रही दान कीजिये ब्राह्मणीके ये वचन सुनकर वहवेश्या अत्यन्त प्रसन्न होकर ३४ सबद्रव्यसे अन्नदान करती भई और श्रेष्ठ ब्राह्मण, धनवान् हरिशर्माजी अत्यन्त भक्तिसे ३५ निरंतर जनार्दन भगवान्‌जीको पूजन करता भया और जितेन्द्रिय और क्रोधजीत कर हिंसा और दम्भसे वर्जित होकर ३६ भगवान्‌की प्रीतिके लिये बड़ी तपस्या करता भया चन्दन, फूल, बलि, घी, धूप और

दीपोंसे ३७ नित्यही जनार्दन भगवान्को पूजन करता भया यह ब्राह्मण धनवान्भी द्रव्यके नाशकी शङ्कायुक्त रहता भया ३८ चिउंटी और मुसरिया तथा औरभी जन्तु इस कृपणके घरमें नित्यही भूंखे रहतेथे ३९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यहदानके कर्म से हीन ब्राह्मण इकट्ठे कियेहुए सब धनको आपही भोग करता भया ४० मित्र, ब्राह्मण और बान्धवों से यह द्रव्य मांगनेकी शङ्का से कभी बात भी नहीं करता था ४१ हे उत्तम ब्राह्मण! यह अपने स्थान में बहुत द्रव्यों को गिनकर आत्मा को श्रेष्ठ की नाईं मानकर प्रसन्न होता भया ४२ यह अत्यन्त द्रव्यवान् ब्राह्मण, वेश्या और वह ब्राह्मणी भी कदाचित् काल प्राप्त होकर एकही समय में तीनों मरते भये ४३ तदनन्तर देव धर्मराजजी के अत्यन्त भयंकर दूत फँसरी और मुद्गर हाथ में लेकर प्राप्त होते भये ४४ और वे चण्डादिक दूत तिन तीनों को लेकर शीघ्रही दुर्गम राहसे धर्मराज के पुरको जाते भये ४५ तब चण्ड यमराजजी से बोला कि हे जीवितेश! आपकी आज्ञासे हरिशर्मा, वेश्या और ब्राह्मणी को लेआयाहूं इन आपके आगे खड़ेहुओं को देखिये ४६ तिन को देखकर यमराजजी हँसकर सब कार्यों में निपुण चित्रगुप्तसे बोले ४७ कि हे बुद्धिमान् चित्रगुप्त! इनके सब शुभ और अशुभ कर्मोंको मूलसे विचारिये ४८ तब यमराजजी की आज्ञासे निपुण चित्रगुप्त सब शुभ तथा अशुभ कर्मको विचार कर बोले ४९ कि हे देव! यह वेश्या, ब्राह्मणी और हरिशर्माने जो पुण्य तथा पाप किये हैं तिनको कहताहूं सुनिये ५० यह दुराशया रतिविदग्धा नाम वेश्या जितने पाप करतीथी तिनके कहने को मैं नहीं समर्थ हूं ५१ जब इसकी वृद्धावस्था हुई है तब इसने अन्याय से इकट्ठे किये हुए सब द्रव्योंसे अन्नदान करदियाहै ५२ अन्नदानके प्रभाव से यह नरकके वास देनेवाले, करोड़ जन्मोंके इकट्ठे कियेहुए सब पापों से छूटगई है ५३ हे महाराज! जे मनुष्य पृथ्वी में अन्नदान करतेहैं वे पापी भी हों तबभी विष्णुजी के परमपदको जातेहैं ५४ मनुष्य पृथ्वी में जितने अन्न देते हैं तितनी तिनकी ब्रह्महत्या नि-

स्सन्देह नाश होजाती हैं ५५ अन्न देनेवालों के शरीरों को पाप छोड़कर लेनेवालों के शरीरों में शीघ्रही चलेजाते हैं ५६ तिससे चतुर मनुष्य पापियोंके अन्नोंको नहीं ग्रहण करते हैं और जे मूर्ख मोहसे ग्रहण करतेहैं ते पापके भागी होतेहैं ५७ हे प्रभो ! वेश्या के तो शुभ वा अशुभ कर्म मैंने कहे अब ब्राह्मणी के शुभ वा अशुभकर्म्मों को सुनिये ५८ यह क्षेमकरीनाम ब्राह्मणी, शुद्धवंश में उत्पन्न, भद्रकीर्तिकी स्त्री है इसने सब पाप कियेहैं ५९ अपने आश्रमके आचारको छोड़कर अपनेही यौवनसे अभिमानयुक्त होकर अत्यन्त पापिनी यह व्यभिचारी पुरुषोंसे भोग कराती रही है ६० कभी बाल्यावस्थामें बालकोंके साथ खेलतीहुई इसने राह में चारों कोणसे युक्त एक गढ़ा खोदा था ६१ और उसीदिन मेघ जल बरसगये तब इसका खोदा हुआ गढ़ा भी जल से भरगयाथा ६२ तो दोपहरके समयमें एक गौ प्यासी, सूर्यके घामसे तापयुक्त होकर तहांका पानी पीतीभई ६३ तो तिसके जलदानके प्रभाव से सब घड़ेभी पापनष्ट होगये हैं ६४ सब पापों से छूटकर नारायणजी के स्थान को जाती है हे देवों के स्वामी ! यह दुष्ट अन्तःकरणवाली और पाप करनेहारी भी ६५ जलदान के प्रभाव से सब पापों से छूटगई है और यहब्राह्मण देवोंके देव, चक्रधारी भगवान्‌का भक्त है ६६ इसके भगवान्‌ही स्वामी रहेहैं व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! चित्रगुप्तके ये वचन सुनकर यमराजजी ६७ तिस वेश्या, ब्राह्मणी और ब्राह्मण की वन्दना करतेभये और सुन्दर सोनेके गहने और अनेक प्रकारके कपड़ों को ६८ तिन सबको देकर अत्यन्त प्रसन्न होकर हँसकर कोमल अक्षरवाले वचन बोले ६९ कि तुम सब महात्माओं के सबपाप नाश होगये हैं इससे सब सुख देनेवाले लक्ष्मीपति प्रभुजीके स्थानको जावो ७० तिसपीछे यमराजजी सोने के बनेहुये सुन्दर विमानपर तिनको बैठाकर राजहंसयुक्त भगवान् के स्थान को भेजते भये ७१ तब सुन्दर रथपर चढ़कर सब पापरहित होकर सब गहनों से भूषित होकर भगवान् के पुरको जाते भये ७२ वेश्या और ब्राह्मणी सब पापरहित होकर भगवानके स-

मीप बहुत कालतक सुखसे स्थित होतीभई ७३ और जनार्दनजी हरिशर्मा को आते देखकर स्नेहसे सोनेके बनेहुए श्रेष्ठ आसनको देतेभये ७४ फिर श्रेष्ठ आसनपर बैठेहुए श्रेष्ठ ब्राह्मण को आनन्द से भगवान् पाद्य, अर्घ्य और आचमनीय से पूजाकर उससे पूंछते भये ७५ कि हे ब्राह्मण! तुम हमारे भक्तों में श्रेष्ठहो इससे कुशल कहो और सब उपद्रवों से हीन मेरे मन्दिर में बहुत कालतक रहो ७६ तब ब्राह्मण बोले कि हे प्रभो! आपको स्मरण और दर्शनकर कुशल प्राप्त होती है और मैं तो आपके पासही प्राप्तहूं इससे अधिक क्या कुशल होगी ७७ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! भगवान् उसके नम्रवचन सुनकर प्रसन्न होकर तिस ब्राह्मण को अपनाही स्वरूप देतेभये ७८ और लक्ष्मीपति प्रभुजी तिसको सब सुखदेते भये परन्तु तिसकी कृपणता को स्मरण कर भोजनमात्र नहीं देते भये ७९ तब दो दिनके पीछे ब्राह्मण विना भोजन के भूंखसे व्याकुल होकर नम्रतासे भगवान् के नमस्कारकर स्थित होकर देवोंके स्वामी विष्णुजीसे बोले ८० कि हे प्रभो! अनेक तपस्याओंके फलों से आप के स्थान को तो मैंने पाया परन्तु यहां भी भूंखसे विफल कैसेहूं ८१ नवीन युवावस्थावाली, सुन्दर देवताओंकी कन्याओंके समूह मेरे ऊपर मंचोंमें सफेद चामर डुलाती हैं ८२ सुगन्धित फूलोंके बड़े मालाओंसे अलंकृत और चन्दनों से सब अंगलिप्तहोकर श्रेष्ठराजाकी नाईं मैंहूं ८३ हे प्रभो! हे नारायण! आपकी आज्ञासे सुन्दर अंगवाली स्त्रियां मेरे आगे गीतगातीं और नाचतीहैं ८४ और इन्द्रआदिक सबदेवता मेरे चरणोंकी धूलिको मुकुटसेशोभित अपने शिरोंमें नित्यही लगाते हैं ८५ हे देव! हे संसारकेस्वामी! देवर्षि और मुनि नौकरोंकी नाईं नित्यही स्तोत्रों से मेरी स्तुति करते हैं ८६ चारभुजाओंसे युक्त, श्यामवर्ण, शंख, चक्र, गदा और पद्मको धारे, फूलेहुए कमल के समान नेत्रवाला, पीले कपड़े धारे, सुन्दर कुण्डल धारे, ८७ सोने का यज्ञोपवीत, मुकुट और कुण्डलयुक्त मैं देवताओं से दूसरे गरुड़ध्वजकी नाईं दिखाई देताहूं ८८ हे प्रभो! हे परमेश्वर! आपने ये दुर्लभ सुख तो दिये हैं परन्तु भोजन मुझे

क्यों नहीं दिया है ८९ भूंखकी अग्निसे मेरा शरीर इस तरह ज-
लताहै जैसे कोटरमें स्थित अग्निसे वृक्ष जलताहै ९० हे हरे ! हे
केशवजी ! ये सुख तो आपने मुझे दियेहैं परन्तु जलतीहुई पेटकी
अग्निसे विह्वल अंगवाले मुझको नहीं शोभा देते हैं ९१ हे देव !
कर्म, मन और वाणीसे आप जगदीश्वरकोही मैंने पूजाहै और देव
को मैंने नहीं पूजाहै ९२ हे जगन्नाथ ! हे प्रभो ! स्वप्नमें भी और
देवकी मैंने भक्ति नहीं की है फिर किस दोषसे भोजन नहीं देतेहो
९३ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! तदनन्तर कौतुकी भगवान् वि-
ष्णुजी तिस ब्राह्मणसे बोले कि हे ब्राह्मण! तुम्हारा कल्याणहो तुम
शीघ्रही ब्रह्माजी के पास जावो ९४ ये भगवान् के वचन सुनकर
ब्राह्मण शीघ्रही ब्रह्माके पास गये तब ब्रह्मा तिससे तिसकी कृप-
णता दिखलाते हुए बोले ९५ कि दुःखसे कर्म्म इकट्ठे तो तुमने
किये हैं परन्तु ब्राह्मण को अन्न नहीं दियाहै इससे निस्सन्देह तुम
को भोजन नहीं मिलता है ९६ हे ब्राह्मण ! तुम्हारे दुःख का सब
कारण मैंने कहा अब जहांसे तुम आयेहो वहां को जावो तुम्हारा
निस्सन्देह कल्याण हो ९७ तब ब्राह्मण बोले कि आपके प्रसाद से
मैंने अपने कर्म का विपाक तो सुना अब दानों को कहिये कि कौन
दान मनुष्यों को देने योग्यहैं ९८ तब ब्रह्माजी बोले कि हे ब्राह्मण !
बहुत दानहैं तिनको नहीं कहसक्ताहूं संक्षेपसे कहताहूं एकाग्रचित्त
होकर सुनिये ९९ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! सब दानों से उत्तम पृथ्वी का
दानहै जिस पुण्यात्माने यह दान कियाहै उसको सब दानोंका क-
रनेवाला जानिये १०० जो गऊके चमड़ेमात्र पृथ्वीको देताहै वह
सब पापोंसे छूटकर परमस्थानको जाता है १०१ अन्नसंयुक्त पृथ्वी
को जो दरिद्री ब्राह्मण को देता है तिसकी पुण्य को सुनिये १०२
वह सब पापों से छूटकर नारायणजीके पुरको जाताहै और जबतक
चौदहों इन्द्र रहते हैं तबतक वहां सब सुख भोगकर १०३ फिर पृ-
थ्वीमें प्राप्त होकर सब पृथ्वीका राजा होताहै बहुतकाल सब पृथ्वी
भोगकर मनुष्य नारायण होजाता है १०४ जिससे पृथ्वी सैकड़ों
दान छोड़कर ब्राह्मणों को लेनी चाहिये क्योंकि पृथ्वीका देने और

लेनेवाला दोनोंही स्वर्गको जाते हैं १०५ जो मन्दबुद्धि मनुष्य पृथ्वी के दान को छोड़ देताहै वह प्रत्येक जन्ममें अत्यन्त दुःखित होता है १०६ औरसे भी ग्रहणकर जो पृथ्वी का दान करता है तिसके ऊपर अत्यन्त प्रसन्न होकर भगवान् परमपद देते हैं १०७ जो दरिद्री ब्राह्मणको गांव देता वा दिलवाताहै तिसकी पुण्य को सुनिये १०८ जितनी पृथ्वी में रेणु और जितनी वर्षाकी बूंदें होती हैं तितनेही मन्वन्तर वह बुद्धिमान् विष्णुलोक में बसता है १०९ जो बछवा और दूधसमेत गऊको देता है तिस महात्मा की पुण्य को मैं कहताहूं सुनिये ११० अन्नसमेत सातोंद्वीप की पृथ्वी को देकर जो फल मिलता है वह मनुष्य ब्राह्मण को गऊदेकर पाताहै १११ और जो कुटुम्बी ब्राह्मण को बैल देता है वह घोरपापों से छूटकर महादेवजी के लोक को जाता है ११२ जितने तिस बैल के शरीर में रोम होते हैं तितने हज़ार कल्प महादेवजी के साथ वह आनन्द करताहै ११३ जो वेदके जाननेवाले को गऊ देताहै तिसका महादेवजी के लोकसे फिर लौटना नहीं होताहै ११४ जो मनुष्य तिलयुक्त बैलको कृष्णजीको देताहै वह तिलोंकी गिनतीसे महादेवजी के स्थानमें स्थित होताहै ११५ जो तिलभर भी सोना ब्राह्मणको देता है वह करोड़कुलसंयुक्त विष्णुजी के स्थान में जाता है ११६ जो दरिद्री ब्राह्मणको भक्तिसे चांदी देताहै वह चन्द्रमा के लोकमें प्राप्त होकर अमृतपान करता है ११७ जो हीरा, मोती, मूंगा और मणि देता है वह इन्द्रलोक में जाता है ११८ जो महाशय घोड़ा दान करताहै वह निस्सन्देह गधर्वोंका राजा होताहै ११९ जो दोषहीन, जवान हाथीको देताहै वह इन्द्रकी नाईं देवताओंकी राज्य में विभाग पाताहै १२० जो दक्षिणासमेत नरदोलाको ब्राह्मणको देताहै वह इन्द्रपद को पाकर चार कल्प बसता है १२१ जो शालग्रामकी मूर्तिका ब्राह्मण को दान देता है तिसकी पुण्यको संक्षेपसे कहताहूं सुनिये १२२ पर्वत, वन और काननसमेत सातोंद्वीप की पृथ्वी देकर जो फल मिलताहै वह शालग्रामकी मूर्ति देनेवाले को मिलताहै १२३ तुलापुरुष के दानसे जो फल मनुष्यों को मिलता

है तिससे करोड़गुणा शालग्राम की मूर्ति देनेसे मिलता है १२४ जिसने शालग्रामकी मूर्तिदी उसने निश्चय चौदहों भुवन देदिये १२५ जो तुलापुरुष का दान करताहै वह स्वर्ग में सुन्दर वस्त्र धारण करनेवाला राजा होताहै १२६ और माताके पेटमें फिर जन्म नहीं होता है जो उत्तम मनुष्य गहनोंसमेत कन्याको देताहै १२७ वह विष्णुजीके मन्दिरको जाताहै और फिर नहीं लौटताहै और जो मूर्ख मनुष्य मोहसे कन्याको बेंचताहै १२८ वह पुरीषहृद नाम घोर नरकमें जाताहै और बेंची हुई कन्याके जो पुत्र होताहै १२९ वह सब धर्मोंसे बाहर किया हुआ चाण्डालकी नाईं जाननेयोग्यहै शास्त्रका जाननेवाला मनुष्य कन्या बेंचनेवाले पुरुष के मुखको न देखै १३० और जो अज्ञानसे देखलेवे तो सूर्यनारायण के दर्शन करै जो कन्या बेंचनेवाले के आगे जो कुछकर्म शुभकरे वे सब निष्फल होजाते हैं कन्या बेंचने वाले की नरकसे फिर निष्कृति नहीं होती है १३१। १३२ और कन्यादान करनेवाले का स्वर्गसे फिर आगमन नहीं होता है यहांपर बहुत कहनेसे क्याहै संक्षेपसे तुमसे कहताहूं १३३ हीरा, पृथ्वी और कन्याका फल सौसे अधिक होता है जो पृथ्वी में जूता और छतुरी देता है १३४ उसकी पुण्य को संक्षेपसे कहताहूं सुनिये इसलोक में सब सम्पदाओं से युक्तहोकर वह सौवर्ष जीताहै १३५ और मरकर चारसौ कल्पतक इन्द्रके पुर में प्राप्त होताहै और जो नया कपड़ा देताहै वह परमगतिको प्राप्त होता है १३६ जो पुराने कपड़े, चांदी की गऊ और रजस्वला कन्याको देताहै वह सदैव नरकको जाताहै १३७ और फलदेनेवाला मनुष्य देवस्थान को जाता है वहांपर हजारकल्प अमृत के सदृश फलको भोजनकरताहै १३८ सागका देनेवाला भगवान् महादेवजी के पदको जाताहै और वहांपर दो कल्पपर्यन्त देवताओं से दुर्लभ खीरको भोजन करता है १३९ दूध, दही, घी और माठा का देनेवाला हरिभगवान् के आगे अमृत पीनेको पाताहै १४० फूल और चन्दन का देनेवाला मनुष्य फूल और चन्दनसे विभूषितहोकर हजारयुगपर्यन्त देवस्थानमें रहताहै १४१ हे श्रेष्ठ और उत्तम

ब्राह्मण ! जो मनुष्य शय्यादान करता है वह ब्रह्मलोक में आकर बहुतकाल शय्यामें सोताहै १४२ दीप और पीठ का देनेवाला सब पापोंसेहीन होकर सुन्दर सिंहासनमें स्थितहोकर जल और दीपावलीसेयुक्त होताहै १४३ हे राजन् ! पानका देनेवाला पृथ्वी में सब शुभको भोगकर स्वर्ग में देवोंकी स्त्रियों के कोरे में सोकर निश्चय पानोंको खाताहै १४४ और जो विद्यादान करताहै वह विष्णुजी के समीप जाकर दोसौयुगतक स्थित होताहै १४५ फिर वहांहीं ज्ञान पाकर भगवान् के प्रसादसे दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होताहै १४६ जो अत्यन्त दुःखित अनाथ ब्राह्मण को पढ़ाताहै वह विष्णुजी के मंदिर को जाताहै और फिर वहांसे नहीं लौटताहै १४७ कुलीन भी ब्राह्मण विद्या के विना नहीं शोभित होता है तिससे ब्राह्मण के पढ़ानेवाले परमपदको जाते हैं १४८ पृथ्वी में प्रत्यक्ष देवता ब्राह्मण देवताओं के आश्रय और सबवर्णोंका गुरु है इससे विद्याहीन नहीं शोभित होताहै १४९ संसार में जितने सोना आदिक दानहैं तितने तिसने देदिये हैं जिसने ब्राह्मणको पढ़ायाहै १५० जो मनुष्य भक्तिसे युक्त होकर पुस्तकका दान करताहै तिसकी पुण्यको मैं संक्षेपसे तुमसे कहताहूं १५१ तिस पुस्तकमें पत्रे पत्रे में जितने अक्षर होते हैं प्रत्यक्षरमें करोड़ कपिला गऊके दानके पुण्यको देनेवाला प्राप्त होता है १५२ और जितने दिन ब्राह्मण पुस्तक पढ़ते हैं तितनेहीं मन्वन्तर पुस्तकका देनेवाला वैकुण्ठमें स्थित होताहै १५३ इनसे आदि लेकर अनेकों दानहैं इस संसारमें अच्छीतरह कहनेको दोसौवर्ष में भी कोई नहीं समर्थ है १५४ मनुष्यों करके ब्रह्महत्या आदिक जितने पाप किये जातेहैं वे पाप नाश होजाते हैं तिससे दान करना चाहिये १५५ तीनमनुष्यों करके अपनी पुण्यसे जो दान दिया जाताहै तो जितना द्रव्य होताहै तिसदानका फलभी उतनाही मिलता है १५६ मनुष्योंकरके भगवान्की प्रीतिकेलिये जो दान दियाजाता है तिसका निस्सन्देह करोड़गुणा फल मिलताहै १५७ तिससे भक्तिकर्मसे युक्त बुद्धिमान् मनुष्य नारायणकी प्रीति के लिये दानदेवे १५८ तत्त्वदर्शियों ने तपस्यासे भी दानको श्रेष्ठ

कहाहै इससे बुद्धिमान् मनुष्य यत्नसे दानकर्म करै १५६ जो उत्तम मनुष्य निश्चय दान और तपस्या दोनों करताहै तिसके समान इस संसार में कोई नहीं है १६० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेसर्वदानमाहात्म्यंनामविंशोऽध्यायः २० ॥

# इक्कीसवां अध्याय ॥

अन्न और जलके दानका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! ब्रह्माजी के वचन सुनकर हरिशर्म्मा उत्तम ब्राह्मण फिर भक्तिसे ब्रह्माजीके नमस्कार कर बोले १ कि हे प्रभो! आपने जितने बहुत दान कहे हैं वे दान किसको देने चाहिये यह मुझ से आप कहने के योग्य हैं २ तब ब्रह्माजी बोले कि सब वर्णोंका ब्राह्मण परमगुरुहै तिससे भक्ति और श्रद्धासंयुक्तों करके ब्राह्मणहीको दान देने चाहिये ३ क्योंकि सबदेवताओंके आश्रय और पृथ्वी में प्रत्यक्षदेव ब्राह्मणहै यह दुस्तर संसारसागर में दाताको तार देता है ४ तब ब्राह्मण बोले हे देवताओं में उत्तम ब्रह्माजी! आपने सब वर्णोंका गुरु ब्राह्मणको कहाहै तो तिनके बीच में कौन श्रेष्ठहै किसको दान दियाजाताहै ५ तब ब्रह्माजी बोले कि सब ब्राह्मण श्रेष्ठ और सदैव पूजने योग्यहैं हे उत्तम ब्राह्मण! जे चोरी आदि दोषोंसे तप्त ब्राह्मण हैं ६ वे हमारे वैरी हैं दूसरोंके कभी नहीं हैं आचारहीन भी ब्राह्मण पूजने योग्य हैं परन्तु जितेन्द्रिय शूद्र नहीं पूजने योग्य हैं क्योंकि नहीं खानेके योग्योंके खानेवाली भी गौवें माता कहलाती हैं ७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तुम्हारे स्नेहसे विशेष कर ब्राह्मणोंका माहात्म्य कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये ८ क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के ब्राह्मण गुरु हैं परस्पर पृथ्वी के देवता ब्राह्मण गुरु और पूजनेयोग्य हैं ९ हे उत्तम मनुष्य! जो विष्णु की बुद्धिसे ब्राह्मणको पूजन करताहै तिसके उमर, पुत्र, यश और सम्पत्ति बढ़ती है १० जो मूर्ख मनुष्य पृथ्वीमें ब्राह्मणको मारता है तो भगवान् सुदर्शनचक्रसे तिसके मस्तकके काटनेकी इच्छा करते हैं ११ बुद्धिमान् मनुष्य फूल, दूध और देवताओंको हाथमें लियेहुए, तल

देहमें लगायेहुए, १२ जल और देवता के स्थान में स्थित, ध्यान में चित्त लगायेहुए, देवों की पूजा करतेहुए, १३ दिशा फिरतेहुए, भोजन करतेहुए और सामवेदको गातेहुए ब्राह्मणके नमस्कार न करै १४ और जहां पर बहुतसे ब्राह्मण स्थित हों तो बुद्धिमान् मनुष्य प्रत्येक के नमस्कार न करै १५ नमस्कार करतेहुए ब्राह्मणको जो भक्तिसे नमस्कार नहीं करता है वह चाण्डाल के समान जाननेयोग्यहै और कभी नमस्कार के योग्य नहीं है १६ माता पिता प्रणाम करतेहुए पुत्रके नमस्कार नहींकरैं ब्राह्मणों से सब ब्राह्मण प्रणाम करने वाले नमस्कार के योग्यहैं १७ चतुर मनुष्य दोष करने वाले ब्राह्मण और गौवों से वैर नहीं करैं जे मोह से वैर करते हैं तिनके ऊपर भगवान् सदैव अप्रसन्न रहते हैं १८ जो मांगतेहुए ब्राह्मणों को कोपदृष्टि से देखता है तिसके नेत्रों में यमराजजी सुई चुभो देते हैं १९ मूर्ख जिस मुखसे ब्राह्मणों को डाटते हैं तिस मुखमें यमराजजी तपेहुए लोहे के दण्ड को देते हैं २० जिस घर में ब्राह्मण भोजन करता है तिस में आपही भगवान् रहते हैं और सब देवता, पितर और सुरर्षिभी रहते हैं २१ जो बुद्धिमान् मनुष्य कणमात्रभी ब्राह्मण के चरणजलको धारण करताहै तिसकी देहके सब पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं २२ करोड़ ब्रह्माण्ड के बीचमें जितने तीर्थ हैं ते सब ब्राह्मणके दहने चरणमें स्थितहैं २३ जिसका मस्तक नित्यही ब्राह्मणके चरणजलसे सींचाजाताहै वह सब तीर्थोंमें स्नान करचुका और सब यज्ञोंमें दीक्षित होगया २४ और ब्राह्मणके चरणजल के धारण करनेहीसे तिसके ब्रह्महत्यादिक सब घोर पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं २५ और परमक्लेश देनेवाली क्षयआदिक सब व्याधियां शीघ्रही नाशको प्राप्त होजाती हैं २६ ब्राह्मणके चरणोंके जे जल पितरों के लिये दिये जाते हैं तिनसे पितर तृप्तहोकर जब तक चन्द्रमा और नक्षत्र स्थित रहते हैं तब तक वे स्वर्ग में स्थित रहते हैं २७ जो बुद्धिमान् ब्राह्मणके चरणोंको धोकर दूबसे पूजन करता है उससे संसार के स्वामी, सब देवों में उत्तम विष्णुजी पूजे जाते हैं २८ जो मनुष्य ब्राह्मणों के

कहाहै इससे बुद्धिमान् मनुष्य यत्नसे दानकर्म करै १५९ जो उत्तम मनुष्य निश्चय दान और तपस्या दोनों करताहै तिसके समान इस संसार में कोई नहीं है १६० ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेसर्वदानमाहात्म्यंनामविंशोऽध्यायः २० ॥

# इक्कीसवां अध्याय ॥

अन्न और जलके दानका माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! ब्रह्माजी के वचन सुनकर हरिशर्म्मा उत्तम ब्राह्मण फिर भक्तिसे ब्रह्माजीके नमस्कार कर बोले १ कि हे प्रभो ! आपने जितने बहुत दान कहे हैं वे दान किसको देने चाहिये यह मुझ से आप कहने के योग्य हैं २ तब ब्रह्माजी बोले कि सब वर्णोंका ब्राह्मण परमगुरुहै तिससे भक्ति और श्रद्धासंयुक्तों करके ब्राह्मणहीको दान देने चाहिये ३ क्योंकि सबदेवताओंके आश्रय और पृथ्वी में प्रत्यक्षदेव ब्राह्मणहै यह दुस्तर संसारसागर में दाताको तार देता है ४ तब ब्राह्मण बोले हे देवताओंमें उत्तम ब्रह्माजी ! आपने सब वर्णोंका गुरु ब्राह्मणको कहाहै तो तिनके बीच में कौन श्रेष्ठहै किसको दान दियाजाताहै ५ तब ब्रह्माजी बोले कि सब ब्राह्मण श्रेष्ठ और सदैव पूजने योग्यहैं हे उत्तम ब्राह्मण ! जे चोरी आदि दोषोंसे तप्त ब्राह्मण हैं ६ वे हमारे वैरी हैं दूसरोंके कभी नहीं हैं आचारहीन भी ब्राह्मण पूजने योग्य हैं परन्तु जितेन्द्रिय शूद्र नहीं पूजने योग्य हैं क्योंकि नहीं खानेके योग्योंके खानेवाली भी गौवें माता कहलाती हैं ७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! तुम्हारे स्नेहसे विशेष कर ब्राह्मणोंका माहात्म्य कहताहूं एकाग्रचित्त होकर सुनिये ८ क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के ब्राह्मण गुरु हैं परस्पर पृथ्वी के देवता ब्राह्मण गुरु और पूजनेयोग्य हैं ९ हे उत्तम मनुष्य ! जो विष्णु की बुद्धिसे ब्राह्मणको पूजन करताहै तिसके उमर, पुत्र, यश और सम्पत्ति बढ़ती है १० जो मूर्ख मनुष्य पृथ्वीमें ब्राह्मणको मारता है तो भगवान् सुदर्शनचक्रसे तिसके मस्तकके काटनेकी इच्छा करते हैं ११ बुद्धिमान् मनुष्य फूल, दूध और देवताओंको हाथमें लियेहुए, तेल

देहमें लगायेहुए, १२ जल और देवता के स्थान में स्थित, ध्यान में चित्त लगायेहुए, देवों की पूजा करतेहुए, १३ दिशा फिरतेहुए, भोजन करतेहुए और सामवेदको गातेहुए ब्राह्मणके नमस्कार न करे १४ और जहां पर बहुतसे ब्राह्मण स्थित हों तो बुद्धिमान् मनुष्य प्रत्येक के नमस्कार न करे १५ नमस्कार करतेहुए ब्राह्मणको जो भक्तिसे नमस्कार नहीं करता है वह चाण्डाल के समान जाननेयोग्यहै और कभी नमस्कार के योग्य नहीं है १६ माता पिता प्रणाम करतेहुए पुत्रके नमस्कार नहींकरें ब्राह्मणों से सब ब्राह्मण प्रणाम करने वाले नमस्कार के योग्यहैं १७ चतुर मनुष्य दोष करने वाले ब्राह्मण और गौवों से वैर नहीं करें जे मोह से वैर करते हैं तिनके ऊपर भगवान् सदैव अप्रसन्न रहते हैं १८ जो मांगतेहुए ब्राह्मणों को कोपदृष्टि से देखता है तिसके नेत्रों में यमराजजी सुई चुभो देते हैं १९ मूर्ख जिस मुखसे ब्राह्मणों को डाटते हैं तिस मुखमें यमराजजी तपेहुए लोहे के दण्ड को देते हैं २० जिस घर में ब्राह्मण भोजन करता है तिस में आपही भगवान् रहते हैं और सब देवता, पितर और सुरर्षिभी रहते हैं २१ जो बुद्धिमान् मनुष्य कणमात्रभी ब्राह्मण के चरणजलको धारण करताहै तिसकी देहके सब पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं २२ करोड़ ब्रह्माण्ड के बीचमें जितने तीर्थ हैं ते सब ब्राह्मणके दहने चरणमें स्थितहैं २३ जिसका मस्तक नित्यही ब्राह्मणके चरणजलसे सींचाजाताहै वह सब तीर्थोंमें स्नान करचुका और सब यज्ञोंमें दीक्षित होगया २४ और ब्राह्मणके चरणजल के धारण करनेहीसे तिसके ब्रह्महत्यादिक सब घोर पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं २५ और परमक्लेश देनेवाली क्षयआदिक सब व्याधियां शीघ्रही नाशको प्राप्त होजाती हैं २६ ब्राह्मणके चरणोंके जे जल पितरों के लिये दिये जाते हैं तिनसे पितृ तृप्तहोकर जब तक चन्द्रमा और नक्षत्र स्थित रहते हैं तब तक वे स्वर्ग में स्थित रहते हैं २७ जो बुद्धिमान् ब्राह्मणके चरणोंको धोकर दूबसे पूजन करता है उससे संसार के स्वामी, सब देवों में उत्तम विष्णुजी पूजे जाते हैं २८ जो मनुष्य ब्राह्मणों के

चरण धोयेहुए जलको शिरसे धारण करता है तिसकी शाश्वती मुक्ति होती है यह मैं सत्यही सत्य कहताहूं २९ जो उत्तम मनुष्य ब्राह्मणकी प्रदक्षिणा कर वन्दना करताहै उसने सातोंद्वीपके पृथ्वी की प्रदक्षिणा करली है ३० जो ब्राह्मणके चरण धोकर फल और पानदेताहै तो चरण धोनेसे रोगी रोगसे,पापी पापसे और बन्धन से बाँधाहुआ बंधनसे छूटजाताहै नहीं पुत्र होनेवाली स्त्रियों के बहुत पुत्र होतेहैं और पुत्र मरजानेवाली स्त्रियोंके पुत्र जीतेहैं हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! ब्राह्मण के चरणोंके धोनेके सब पाप नाशकरनेवाले माहात्म्यको संक्षेप से तुमसे कहताहूं सुनिये पूर्वसमयमें पवित्रकुलमें उत्पन्न भद्रक्रिय नाम ३१।३४ ब्राह्मण हुआ है यह विष्णुजी की सेवामें परायण, वेदका जाननेवाला, दयासमेत, शांत, पिताकी भक्तिमें परायण, ३५ अतिथि और जातिकी पूजा करनेवाला था एकसमयमें यह श्रेष्ठ ब्राह्मण देहमें तेललगाकर ३६ कपड़ालेकर तालाबमें स्नानकरनेको गया तो वहांपर सब शास्त्रके जाननेवाले, सब मनुष्यों के कल्याण में रत इस श्रेष्ठ ब्राह्मणने स्नानकर तर्पणादिक किया फिर भगवान्के नामोंका कीर्तन करताहुआ३७।३८ अपने घरमें आकर भगवान्की पूजामें परायणहुआ और अत्यन्त ठण्ढे जलों से अपने दोनों चरणों को और हाथों को धोकर सब स्नान की सामग्रियों को द्वारपर स्थापित करदिया ३९।४० तब कोई कुत्ता अग्निके समान गरमी के घामोंसे तापयुक्त होकर वहीं आकर ४१ तिसी अत्यन्त ठण्ढे ब्राह्मण के चरणजल में सोरहा ब्राह्मण के चरणजल के स्पर्श से अत्यन्त पापी कुत्ता ४२ करोड़ जन्म के किये हुए सब पापों से छूटकर मन्दिर के द्वारमें लेटाहुआ प्यास से व्याकुल होकर ४३ जल मांगने लगा तब ब्राह्मणके नौकरोंने उसको मारा तो शीघ्रही कुत्ता वहीं पर मरगया ४४ ब्राह्मण के चरण धोये हुए जल से पापरहित होगया तब उस महात्मा को मूर्तिमान् ईश्वर की नाईं देखकर ४५ नम्रतासे तपस्वी ब्राह्मण नम्र होकर उससे बोले कि हे महाभाग! तुम कौनहो किस कर्मसे दुःखितहो और अनेक प्रकारके दुःखोंसेयुक्त कुत्तेके कुलमें

उत्पन्न हुएहौ ४६ ब्रह्माजी बोले कि तिस श्रेष्ठ ब्राह्मणके वचन सुनकर महायशस्वी कुत्ता अपनेसब वृत्तान्त को मूलसे कहने लगा ४७ कि मैं महाबलवान् शंखनाम सब पृथ्वी का राजाथा चार हज़ार वर्ष मैंने सब पृथ्वीकी पालनाकी है ४८ और सब वैरियोंको जीतकर अपने वशमें करलिया सब दानों को मैंनेदिये और अपनी जातिवालोंको पालन किया ४९ हे महाभाग! एक समयमें मैं कामके बाणोंसे युक्तहोकर किसी मनुष्यकी सुन्दरी स्त्री को बलसे हर लेताभया ५० तो इसी पापके प्रभावसे मेरी लक्ष्मी सब नाशहोगई तब मुझ महाबलीको सब मनुष्योंने निकालदिया ५१ तो राज्यभ्रष्ट होकर मैं वनके बीचमें स्थित होकर भूख और प्याससे व्याकुल होकर नाशको प्राप्त होगया ५२ हे विप्रेन्द्र! फिर मैंने यमराजके पुरमें जाकर सुननेवालों के दुःख देनेवाले बहुत कालतक दुःख भोगकिये तिनको सुनिये ५३ अत्यन्त तपीहुई लोहकी शय्यामें तपीहुई, जलतीहुई अग्निशिखाकी पंक्तिके समान भयानक ताम्रमयी पृथ्वीको रमण करते भये ५४ तदनन्तर यमराजकी आज्ञासे अत्यन्त भयंकर लोहेके खम्भ, जलतीहुई अग्नि से तप्तको आलिंगनकर स्थित होताभया ५५ और शीतकाल में यमराज़के दूतोंने छूराके समान जलकी धाराओं से सींचा तथा और भी बड़े भारी दुःख यमराज के स्थानमें भोगे ५६ तदनंतर वारंवार पापयोनियों में जन्मलेकर मैंने बहुत काल बड़े दुःखोंको भोग किये ५७ अब आपके चरणों के जलके संसर्ग से पापरूपी रस्सीसे छूटकर योगियोंके भी दुर्लभ परमधामको जाताहूं ५८ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! आपही मेरे गुरु हैं महात्मा आपके नमस्कार है आपके प्रसाद से पापोंसे छूटकर मैं हरिजीके पुरको जाताहूं ५९ तब भद्रक्रिय बोले कि हे पूर्वजन्म के राजन्! राजाको सदैव नीतिही करना चाहिये पुत्र भी दुष्टहो तो उसको भी त्यागकरे ६० जो नीतिका ग्रहण करनेवाला राजा होताहै उस को निश्चय विपत्ति नहीं होतीहै वह वहुतकालतक अकण्टक पृथ्वीको भोगकरता है ६१ जिस दुरात्मा राजा को नीति नहीं अच्छी लगती है वह

थोड़ेही कालमें निस्सन्देह लक्ष्मी से हीन होजाता है ६२ उमर, बल, यश, मित्र, विजय और सुखकी इच्छा करनेवाला पण्डित राजा सदैव अच्छे मंत्रियों को रक्खे ६३ बुद्धिमान् मनुष्य दुष्ट राजा का अनादरकर उस को छोड़देते हैं इस पण्डितों से हीन सभा में नीति बलवान् नहीं होतीहै ६४ नीति के नाश होनेमें राजा के शीघ्रही ख़ज़ाना, सेना और वाहनोंसमेत राजलक्ष्मी नाश होजाती हैं ६५ राजा ब्राह्मण, ज्योतिषी, वैद्य तथा बान्धवों से कभी वैर नहीं करैं तबहीं उनके कल्याण होते हैं ६६ ज्योतिषी से वैर करनेवाले राजा की लक्ष्मी नाश होजाती है वैद्यका वैरी आयु से हीन हो जाता है जातिवालों से वैर करनेहारा कुलहीन होजाता है और ब्राह्मण का वैरी सब दुःख सेवन करता है ६७ राजालोग पिता कहाते हैं और देशवासी सब पुत्र कहाते हैं तिससे राजा औरसपुत्रों की नाईं प्रजाओंकी पालना करते हैं ६८ राजा अपने पुत्र की नाईं पुरके मनुष्यों में स्नेह करैं जे अत्यन्त पापी राजा प्रजाओं को पीड़ा देतेहैं ६९ उनके शिरमें विपत्तिस्थित तत्त्वदर्शियों करके जाननी चाहिये ज्ञानी राजा जैसे प्रजाओं को पालन करते हैं ७० तैसेही तिनको देवोंके स्वामी हरिजी निरन्तर पालन करते हैं प्रजाओं का पालन और दण्ड ये दो काम राजाके शुभके देनेवाले हैं ७१ इन दोनों कामों से जे रहित राजाहैं ते अधम राजा जानने चाहिये दुष्टोंको दण्ड और सज्जनों की रक्षा करनेवाले राजा बहुत कालतक पृथ्वी में आनन्द करते हैं राजा न्यायसे इकट्ठे कियेहुए द्रव्यकी यत्नसे रक्षा करै ७२। ७३ दुर्वृत्तराजा विपत्ति में विस्तार नहीं करै कल्याण की इच्छा करनेवाले राजा शुभ अशुभ अपनी राज्य को ७४ नित्यही वेगयुक्त होकर दूतोंके नेत्रसे देखते हैं जबतक परचक्र का डर नहीं आवे तब तक डरकी चिन्तना करै ७५ डरके प्राप्त होनेमें राजा निर्भय रहे जाति, मित्र, पुत्र वा मंत्री में ७६ मुखसे गंभीरता करै मनसे केवल प्रेम रक्खे क्योंकि मंत्री, जातिवाले, पुत्र, प्रजा तथा भाई ७७ गंभीरताहीन राजाको राजा की नाईं नहीं मानते हैं पहले दूर नहीं स्थित होते हैं तथा आगे

भी नहीं होते हैं ७८ गंभीरताहीन राजाके मनुष्य आश्रयकी इच्छा नहीं करते हैं बहुत काल राज्यकी इच्छा करनेवाला राजा सब राज्यमें वृद्धिके लिये एक मंत्रीकरै अधिक नहीं करै अत्यंत बुद्धिवृत्तिवाले दासोंकी सम्पदा को हरै ७९। ८० तिससे राजासभामें दूसरे दासको युक्त करै मूर्ख, स्त्रीसे जीतागया, गीत और बाजाओंमें सदैव रत ८१ और घोड़ों से हीन राजा सहसासे विपत्ति को प्राप्त होताहै आचार का ग्रहण, सत्य, अपने वाक्य की पालना ८२ और गम्भीरता ये राजाओं के लक्षण हैं वह कैसे राजा है जो प्रतापसे हीनहै ८३ और जिसने दूसरेकी पृथ्वी नहीं जीतली है जीतीहुई दूसरे की पृथ्वीमें जितनेपैग राजा चलता है ८४ तो प्रत्येक पैगमें नाशरहित अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त होताहै पराई पृथ्वी के जीतने की आकांक्षा करनेवाला राजा जो लड़ाई में राजाओं से मारागया ८५ तब भी सब पापों से छूटकर परस्थान को जाता है और संग्राम में जीतपानेवाला राजा परमपदको पाताहै ८६ और संग्राम में मृत्यु प्राप्त होनेवाला स्वर्ग में इन्द्र की सम्पदा को प्राप्त होताहै शस्त्र छोड़ेहुए, सत्वरहित, भागने में परायण ८७ योधाको जो राजा मारताहै तो वह नरकमें जाता है हे उत्तम ब्राह्मण! भागनेवाला और भागनेवालेका मारनेवाला ८८ ये दोनों अत्यन्त दुःसह नरक में स्थित होतेहैं और साहसयुक्त योद्धा जो युद्ध करताहै और तिसके मारनेवाला ८९ ये दोनों जबतक चंद्रमा और सूर्य स्थितरहतेहैं तबतक स्वर्गमें स्थित रहतेहैं यहांपर बहुत कहने से क्याहै संक्षेपसे मैंने कहा है ९० प्रजाका पालन करनेवाला राजा कभी कष्ट नहीं पाताहै ब्रह्माजीबोले कि हे ब्राह्मण! पापरहित तिसराजाके इसप्रकार कहनेमें ९१ तिसके ऊपर आकाशसे बड़ीभारी फूलोंकी वर्षाहुई तदनन्तर महात्मा केशवजी के दूत राजहंसयुक्त सुन्दर रथलेकर आये और सोनेके बनेहुए दिव्य रथपर तिसको चढ़ाकर ९२। ९३ विष्णुजीके मन्दिरको जातेभये ब्राह्मणके चरणोंके जलका इसप्रकारका माहात्म्य तुमसे कहा कि जिससे राजा पापरहित होगयाहै ९४ तिसको भक्तिभाव

से सुनकर मनुष्य मोक्षको प्राप्त होताहै यह तुम्हारे जो सुननेको वाञ्छित था वह सबमैंने कहा ६५ हे ब्राह्मण! भगवान्के स्थान को जावो तुम्हारा कल्याणहो तब हरिशर्मा बोलेकि बड़ीभूंखकी अग्निसे मेराशरीर जलाजाताहै ६६ हे भगवन्! हे देवोंके स्वामी! किस उपायसे मेरी भूंखकी शांतिहोगी यह मुझसे कहिये क्योंकि मैं आपका भक्तहूं और आप भक्तवत्सल हैं ६७ मैं नित्यही दग्ध भूंखकी अग्नियोंसे अत्यन्त दुःखको प्राप्तहूं तब ब्रह्माजी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जिस शरीरको तूने निरन्तर भोजनोंसे पुष्ट किया है तिसी शरीरके मांसोंको भोजन कीजिये जे मनुष्य पराये भोजनसे अपनी तृप्ति करतेहैं ते परलोकमें अपने शरीरोंके मांसों को भोजन करते हैं ६८। ६९ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! श्रेष्ठब्राह्मण ब्रह्माजीके निष्ठुर वचन सुनकर फिर कोमल अक्षर वाले वचनोंसे तिन देवकी स्तुति करताभया १०० कि हे देव! हे देवों केस्वामी! हे शरणागतोंके पालन करनेवाले! हे देवताओंमें श्रेष्ठ! प्रसन्न हूजिये और सब दोषोंको क्षमाकीजिये आपके नमस्कारहै १०१ हे प्रभो! मलमूत्रसे युक्त देहोंके धारण करनेवाले मनुष्योंके सब दोषही होतेहैं कुछगुण नहीं होतेहैं १०२ मुझ मोहयुक्तने जो दूषण कियाहै तिसके क्षमा करनेके आप योग्यहैं क्योंकि सज्जन लोग शरणमें आयेहुए मनुष्योंके दोषको नहीं देखतेहैं १०३ हे ब्रह्मन्! अपनी देहके मांस भोजन करनेमें मैं नहीं समर्थहूं देहधारियोंके योग्यको कहिये जिससे संतुष्टि होजावे १०४ जब ब्राह्मण ने भक्तिसे इसप्रकारके वचनकहे तब सब जाननेवाले, दयासमेत, ब्राह्मणोंके प्यारे ब्रह्माजी बोले १०५ कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! शोक मतकरो मेरेशुभवचनको सुनो जिसप्रकार से इस समयमें यहांपर अन्नको प्राप्तहोगे १०६ आत्मासे पुत्र होताहै जैसे आत्मा तैसेही पुत्र होता है तिस से पुत्रके कियेहुए कर्म को निश्चय पितर पातेहैं १०७ तुम बहुतकालतक भगवान्के अत्यन्त सुन्दर स्थानमें स्थित होगे जब ब्रह्माजीने इसप्रकार उससे कहा तब भूंखसे व्याकुल ब्राह्मण १०८ स्वप्नमें पुत्रको दर्शनदेकर उससे बोले कि हे श्रेष्ठपुत्र!

तुम दीक्षायुक्त हो तुम्हारा परमकल्याण होवे १०९ हे सौम्य! हे पुत्र! तुम्हारा मैं पिताहूं मेरे दुःख को सुनिये तपस्या के प्रभाव से मैंने परमधाम पाया है ११० परन्तु भूखकी अग्निसे सदैव क्लेश पाताहूं हे पुत्र! जो मुझ में तुम्हारा पिताका स्नेह इस समय में हो १११ तो हे ब्राह्मण! अन्न और जल मेरे लिये दीजिये जो कुछ पुत्र पृथ्वी में पिताकेलिये देतेहैं ११२ तिसको पितृलोग पातेहैं जिससे कि पुत्र पिताकी देहसे उत्पन्न हैं पूर्वसमय में श्रेष्ठ भक्ति से मैंने भगवान् को पूजा है ११३ गीत, बाजा, नाच, सुन्दर स्तोत्रों केपाठ, चन्दन, धूप, नैवेद्य, घीसे पूर्णदीप,११४ पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, ध्यान और आवाहन आदिकों से हरिजीकी पूजा तो कियाहै परन्तु मुझ कृपणने संसार के स्वामी, पाप हरनेवाले को नैवेद्य में भी कभी अन्न नहीं दिया है और अतिथि की भी जल और अन्न से कभी पूजा नहीं की है ११५।११६ जातिवाले और मांगनेवालों की संतुष्टि मैंने नहीं की हे पुत्र! तिसी कर्मसे नारायण के घरमें भी ११७ भूंखरूपी अग्निसे तप्तहोकर प्रतिदिन क्लेश पाताहूं इससे अन्न और जलको गरीब ब्राह्मण को दान ११८ देकर शीघ्रही प्राणोंकी रक्षा कीजिये अथवा निष्ठुरता जो तुम नहीं करोगे ११९ तो भगवान् के मन्दिर में निश्चय अपने मांसोंको भोजन करूंगा तदनन्तर सूखे कण्ठ, ओष्ठ और तालुयुक्त वह ब्राह्मण १२० दीक्षित पुत्र से यह कहकर सहसा से अन्तर्द्धान होगया तब निर्मल प्रातःकाल सूर्यके उदयहुए में १२१ स्वप्न में जो पिताने कहा था तिसको दीक्षित चिन्तना करनेलगा कि अपने कर्मके दोषसे परलोक में मेरा पिता १२२ भूंखसे सब अंगदग्ध होकर प्रतिदिन क्लेश पाता है मुझ मन्दबुद्धि श्रेष्ठ कृपण मनुष्य को धिक्कार है १२३ हे उत्तम ब्राह्मण! मैंने पिताको पुण्य से कुछ नहीं दियाहै इस प्रकार दीक्षित बहुत प्रकार से चिन्तनाकर १२४ श्रद्धा और भक्ति से युक्त होकर ब्राह्मणों को दान देताभया तिसी पुण्य के प्रभाव से प्यास और भूखसे रहित होकर उसका पिता १२५ भगवान् के स्थान में जितने काल स्थितरहा तिसको सुनिये चारोंयुग जब ह-

जारबार बीतते हैं तब ब्रह्मा का एक दिन होता है १२६ तिसी दिन में चौदह मनु होते हैं और चौदहही इन्द्र होते हैं १२७ ये अपने अपने शुभ विषयों को एकही दिनमें अलग अलग भोग करतेहैं १२८ तिसपीछे चौदहों इन्द्र और मनु नाश होजाते हैं तहां अत्यन्त प्रकाशित, सुन्दर, सब सुखदेनेवाले विष्णुलोक में हरिशर्माजी के स्थित होतेहुए ब्रह्माजी का दिन बीतगया इतने कालतक यह ब्राह्मण मनोरम भोगोंको भोगकर १२९। १३० परमज्ञान पाकर भगवान् की देहमें प्रवेशकर जातेभये व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! अन्न और जलके समान दान संसार में नहीं है १३१ इनके देनेसे सब दानोंका फल मिलताहै इसमें पात्रकी परीक्षा और कालका नियम कुछ नहीं तत्त्वदर्शियोंने कहाहै इससे अन्न और जलके दान सदैव करने चाहिये १३२।१३३ जे मनुष्य परमआदर से अन्न जल तथा ब्राह्मणों के माहात्म्य को पढ़ते हैं ते अन्न और जलके दान के फलको पाकर अन्तसमय में सुखदायी नारायणजी के स्थान को जातेहैं १३४॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारे अन्नजलदानमाहात्म्यंनाम एकविंशतितमोऽध्यायः २१॥

# बाईसवां अध्याय॥

एकादशी का माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनिबोले कि हे गुरो! गंगाजीका शुभमाहात्म्य, विष्णुजीकी पूजाकाफल, अन्न और जलका उत्तम माहात्म्य १ और ब्राह्मणके चरणजलका पाप नाशनेवाला माहात्म्य इतिहाससमेत आपके प्रसादसे सबमैंने सुना २ अब हे मुनिशार्दूल! सब पापोंके नाश करनेवाले एकादशीके सब फलको आदरसमेत सुनना चाहता हूं ३ किससे एकादशी श्रेष्ठहै तिसकी क्या विधिहै कबकरे क्याफल होताहै यह सबमुझसे कहिये ४ हे अच्छेगुणोंके समुद्ररूप! तहांपर कौन देवता अत्यन्त पूज्यहैं और नहीं करनेसे क्या दोष होताहै यहमुझसे आप कहनेके योग्य हैं ५ व्यासजीबोले कि हे श्रेष्ठ ब्रा-

ह्मण! एकादशीके सब फलको नारायणको छोड़कर और कोई समर्थ नहींहै तिससे संक्षेपसे कहताहूं ६ पहले भगवान् स्थावर जंगम संसारको रचकर सबके दमनके लिये पापपुरुषको रचते भये ७ ब्राह्मणोंकी हत्या मस्तक, मदिराका पीना नेत्र, सोनेकाचुरा-ना मुख, गुरुकी शय्यामेंजाना कान, ८ स्त्रीकीहत्या नाक, गऊकी हत्याकादोष भुजा, न्यासका चुराना गर्दन, गर्भहत्या गल, ९ पराईस्त्रीसे भोग बुक्काकाअग्र, मित्र मनुष्योंका मारना पेट, शरणागतकी हत्याआदिक नाभिके छिद्रकी अवधि, करिहांव १० गुरु की निन्दा सक्थिभाग, कन्याका बेचना शोफस, विश्वासवाक्यका कहना गुदाइन्द्रिय, प्रीतिका मारना चरण, ११ उपपातकरोयें जिसके थे इसप्रकार बड़ीदेहवाले, भयंकर, कालेवर्ण, पीलेनेत्रयुक्त, अपने आश्रयोंके अत्यन्त दुःखदेनेवाले १२ अत्यन्तउग्र, पुरुषोंमें उत्तम पापपुरुषको देखकर दयासमेत प्रजाओंके नाशकरनेवाले प्रभुजी चिन्तना करतेभये १३ कि यहदुर्जन, क्रूर, अपने आश्रयोंके क्लेश देनेवालेको प्रजाओंके दमनकेलिये तो मैंनेरचा अब इसके कारण को रचताहूं १४ तदनन्तर भगवान् विष्णुजी आपही यमराजहो-गये और पापियोंके दुःखदेनेवाले रौरवआदिक नरकों को रचते भये १५ जो मूर्ख पापकोसेवन करताहै वह परमपदको नहीं जाता है तहां यमराज की आज्ञा से रौरवआदिक नरकमें जाता है १६ एक समयमें प्रजाओंके दुःखनाशकरनेवाले भगवान् विष्णुजी गरुड़पर चढ़कर यमराजजीके मन्दिरको जातेभये १७ तब यम-राज संसारके स्वामी रोगरहित नारायणजीको देखकर प्रसन्नमन होकर धूपआदिकोंसे उनकीपूजा करतेभये १८ तो यमराजसे पूजित हुए सबलोकोंके नायक विष्णुजी सोनेके बनेहुए पीठपर बैठते भ-ये १९ हे प्रभो! तहांपर दैत्योंके नाशकरनेवाले भगवान् यमराज-जीके साथबैठकर दक्षिणदिशामें रोनेके शब्दको सुनतेभये २० तदनन्तर लक्ष्मीकेपति विस्मययुक्तमन होकर भगवान् यमराज-जीसे बोले कि यहरोनेका शब्द कहां होताहै २१ तब यमराजजी बोले कि हे देव! पापीमनुष्य अत्यन्तदुःख देनेवाले नरकमें अप-

ने हाथसे इकट्ठेकियेहुए दोषसे कष्टपातेहैं २२ हे विष्णुजी! पापरूपीवृक्षकाफल भोगकरना अत्यन्त दुःखदेताहै तिसीसेपापीरोरहे हैं तिन्हींका यहबड़ा शब्दहै २३ जब यमराजने यहकहा तब कमलनयन कृष्णजी सहसासे वहांजातेभये जहांपर पापीलोग रोरहेथे २४ तिन रौरवआदिकनरकोंमें स्थित पापीमनुष्योंको देखकर हृदय में दयाउत्पन्न होकर प्रभुभगवान् चिन्तनाकरतेभये २५ किमैंनेसब प्रजाओं को रचाहै और मेरे स्थित होनेमें अपने कर्मोंके दोषसे वे एकान्त दुःख देनेवाले नरक में क्लेश पातेहैं २६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यह तथा और भी करुणानिधान भगवान् चिन्तनाकर सहसा से तहांहीं आपही एकादशीतिथि होजातेभये २७ तदनंतर तिनसब पापियोंको सुनातेभये तब वे सब पापरहित होकर परंधाम को जातेभये २८ तिससे एकादशी को परात्मा विष्णुजी की मूर्ति जानिये यह सब दुष्कृतियों में श्रेष्ठ व्रतोंमें उत्तम व्रतहै २९ तीनोंलोकों के पवित्र करनेवाली एकादशी तिथिको कर शंकायुक्त पापपुरुष होकर विष्णुजीकी स्तुति करनेको प्राप्त होताभया ३० तदनन्तर पापपुरुष भक्तिसे हाथ जोड़कर लक्ष्मी के पति जनार्दन भगवान्जीकी स्तुति करताभया ३१ तिसकी स्तुतिको सुनकर परमेश्वरजी प्रसन्न होकर उससे बोले कि मैं तुमसे प्रसन्नहूं क्या तुम्हारा अभिमतहै तिसको कहिये ३२ तब पापपुरुष बोला कि हे विष्णुजी! भगवान्ने मुझे रचाहै अपनी अनुग्रह में दुःख देनेवाला मैं हूं सो एकादशीके प्रभावसे इस समय में नाशको प्राप्तहोताहूं ३३ इससंसारमें मेरे मरनेमें सबदेहधारी संसारके बन्धनोंसे छूटजावेंगे ३४ हेप्रभो! सब देहधारियों में श्रेष्ठोंके मुक्त होजाने में आप संसाररूपी कौतुक के मंदिर में किनके साथ क्रीड़ाकरेंगे ३५ हे केशवजी! यदिसंसाररूपी कौतुक के मन्दिर में क्रीड़ा करनेको आपकी वाञ्छाहोतो एकादशी तिथिके डरसे मेरी रक्षा कीजिये ३६ और हज़ारों पुण्य मेरे मारने में नहीं समर्थ हैं परन्तु पुण्यकारी एकादशी मेरे मारने में समर्थ है इससे वरदेनेवाले हूजिये ३७ मनुष्य, पशु, कीड़े तथा और जंतुओंमें, पर्वत, वृक्ष और जलके स्थानोंमें, ३८

नदी, समुद्र और वनके प्रान्तरोंमें,स्वर्ग, मनुष्यलोक,पाताललोक, देवता,गंधर्व और पक्षियोंमें ३९ एकादशीतिथि के डरसे भागता फिरताहूं उससे कहीं भी निर्भयस्थान को नहीं पाताहूं ४० हेदेवदेव! हे सनातन! करोड़ ब्रह्माण्डके बीचमें एकादशी तिथिमें स्थितहोनेको मैं स्थान नहीं पाताहूं ४१ हे प्रभो! मैं एकादशी में कहां निर्भय होकर बसूं हेदेवेशजी! तुमसे अहेतुक मैं रचागयाहूं यह सब मुझ से कहिये ४२ व्यासजीबोले कि हे जैमिनि! पापपुरुष क्लेश नाशनेवाले भगवान् से यह कहकर भूमिमें गिरकर नेत्रोंसे आँसू छोड़कर रोनेलगा ४३ तब मधुकैटभ राक्षस के मारनेवाले भगवान् हँसकर एकादशी के डरसे डरेहुए पापपुरुष से बोले ४४ कि हे पापपुरुष! उठो शोकको छोड़कर आनन्दकरो एकादशी तिथिमें तुम्हारे स्थान को कहताहूं ४५ तीनोंलोकों की पवित्र करनेवाली एकादशीके आनेमें अन्न में स्थितहोना ४६ अन्न में आश्रित होकर स्थितहुए तुम को मेरी मूर्ति यह एकादशी तिथि नहीं मारेगी ४७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! तब तो भगवान् तहाँहीं अन्तर्द्धान होगये और पापपुरुष कृतार्थ होकर जैसे आयाथा वैसेही चला गया ४८ तिससे एकादशी के प्राप्त होनेमें अपने कल्याण की इच्छा करनेवाले सज्जन लोगोंको कभी अन्न न भोजन करना चाहिये ४९ संसार में जितने पाप हैं वे एकादशी के दिन श्री नारायणजी की आज्ञा से अन्न में आश्रितहोकर स्थित होतेहैं ५० सब पाप करनेवालों की नरकसे निष्कृति होतीहै परन्तु जे एकादशीमें अन्न भोजन करतेहैं वे पापियों में श्रेष्ठ जानने चाहिये ५१ हे मनुष्यो! वारंवार मैं दृढ़ कहताहूं सुनिये कभी एकादशी में न भोजनकरना चाहिये ५२ ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा और सब को धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफलकी देने वाली एकादशी रहनी चाहिये ५३ बुद्धिमानोंने अठारहपलकी एककाष्ठा कहीहै और सब अर्थके देखनेवालोंने तीसकाष्ठाओंकी कलाकहीहै ५४ तीसकलाओं का क्षण बारहक्षणोंका मुहूर्त और तीसमुहूर्तोंका दिनरात कहाहै ५५ पन्द्रह दिनरातोंका पक्ष जाननाचाहिये शुक्ल और कृष्ण दो पक्षोंसे

महीना होताहै ५६ हे श्रेष्ठब्राह्मण! तिसमहीनेमें शुक्ल और कृष्ण-पक्षोंमें महापापोंसे युक्तभीजो एकादशीका व्रतकरताहै ५७ वहसब पापोंसे छूटकर विष्णुलोकको प्राप्त होताहै माता माता नहीं कहातीहै एकादशी तिथिही माताहै ५८ माता तो इसीलोकमें रक्षा करतीहै और एकादशीतिथि सबसे रक्षा करतीहै एकादशीकाव्रत छोड़कर जो और व्रतकरताहै ५९ वहमूढ़बुद्धिवाला अपने हाथमें स्थित मणिको छोड़कर लोष्ठको ग्रहण करताहै भक्तिसंयुक्त होकर जिन्होंने एकादशीका व्रत कियाहै ६० तिन्होंने सबयज्ञ और व्रत कियेहैं जे पापीमनुष्य मोहसे एकादशीमें भोजन करतेहैं ६१ चाहे शुक्लपक्षकीहो या कृष्णपक्षकीहो तिनके ऊपरभगवान् सदैव अप्रसन्न रहतेहैं और जिसने एकादशीका व्रतकिया उसनेसब धर्म किया ६२ जैसे सबदेवताओंमें विष्णुजी श्रेष्ठ कहातेहैं तैसेही सब व्रतोंमें एकादशीकाव्रत श्रेष्ठहै ६३ आदित्योंमेंजैसेसूर्य और नक्षत्रोंमें जैसे चन्द्रमाश्रेष्ठहै तैसेही सबव्रतोंमें एकादशीकाव्रत श्रेष्ठहै ६४ वृक्षोंमें जैसे पीपल और वेदोंमें जैसे सामवेद श्रेष्ठ है तैसेही सबव्रतोंमें एकादशीका व्रत श्रेष्ठहै ६५ कवियोंमें शुक्रजी और वर्णोंमें जैसे ब्राह्मण श्रेष्ठ होताहै तैसेही सब व्रतोंमें एकादशीका व्रत श्रेष्ठ कहाहै ६६ जैसे मुनियोंमें व्यासजी और देवर्षियोंमें नारदजीश्रेष्ठहैं तैसेही सबव्रतोंमें एकादशीका व्रतश्रेष्ठकहाहै ६७ जैसे सब दानोंमें अन्नदान श्रेष्ठहै तैसेही सब व्रतोंमें एकादशीकाव्रत श्रेष्ठकहा है ६८ जैसे पुण्यके बराबरमित्र और शास्त्रकेसमान गुरुनहींहै तैसेही तीनोंलोकोंमें एकादशीके समान व्रत नहींहै ६९ बुद्धिमानोंने जैसे इन्द्रियोंमें मनश्रेष्ठ, महीनोंमें कार्त्तिकश्रेष्ठ और पाण्डवों में अर्जुन श्रेष्ठ कहाहै ७० जैसे सबशास्त्रोंमें वेद श्रेष्ठकहेहैं तैसेही सब व्रतोंमें श्रेष्ठ एकादशीका व्रत कहाहै ७१ हेब्राह्मण! वेद, आगम, शास्त्र, पुराण तथा औरोंमेंभी कहींभी बुद्धिमानों ने एकादशीके व्रतके बराबर व्रतनहीं कहाहै ७२ सब मनुष्य पृथ्वीमें एकादशीका व्रत कर निर्भय रहतेहैं कि यमराजजी क्या करेंगे ७३ अच्छे प्रकार एकभी एकादशी व्रत करनेवालोंके यमराज नौकर होजातेहैं तिससे

शुभदेनेवाला एकादशीकाव्रत करना चाहिये ७४ हे सज्जनोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ जैमिनि ! एकादशीके व्रतकी विधि मैं संक्षेपसे कहताहूं एकाग्रमनहोकर सुनिये ७५ दशमीमें प्रातःकाल उठकर दतूनि करना चाहिये फिर अन्नके छोड़नेवालोंकरके तैलकेविना स्नान करना चाहिये ७६ तदनन्तर पाद्य आदिकोंसे संसारके ईश्वर विष्णुजीको पूजनकर भगवान्के ध्यानमें परायणहोकर एकबार भोजनकरे ७७ मांस, नमक, मसूर, बड़े उर्द, साग, ७८ दूसरी बार का भोजन, परायाअन्न, मधु, मैथुन, कांस्यके बर्तनमें भोजन ७९ नींबकीपत्ती, बैंगन, जलाहुआनींबू, घीसेहीन, गव्य, ८० अत्यन्त भोजन, और पानकाखाना दशमीमें छोड़देवे ८१ हे उत्तम ब्राह्मण ! दशमी में जितनी वस्तु निषिद्ध कही हैं वे सब द्वादशीमें भी निस्संदेह निषिद्ध हैं ८२ हे विप्रशार्दूल ! अच्छे प्रकार व्रत के फलकी इच्छा करनेवाला वैष्णव मनुष्य दशमी और द्वादशी में रात को भोजन नहीं करै ८३ इससे व्रत करनेवाला शीघ्रही दशमी में हविष्यकर अपराह्ण में फिर विधिपूर्वक दतूनिकरै ८४ सायंकाल देवता के स्थान में जाकर फूलोंकी अंजली ग्रहण कर मन से केशवजी को ध्यान कर इस मंत्रको पढ़ै ८५ कि हे गोविन्द ! मैंने इस पृथ्वी में आपके आगे व्रत ग्रहण कियाहै इससे आपके चरणोंकी कृपासे निर्विघ्न सिद्धिको प्राप्त होवे ८६ अत्यन्त चंचलचित्त लोभ और मोहयुक्त मनुष्य मैं हूं आपकी कृपाके विना मैं इस व्रत को नहीं करसक्ताहूं ८७ इन दोनों मंत्रोंको पढ़ तिसीफूलों की अंजली को नारायणजी को देकर पृथ्वी में दण्डवत् नमस्कारकरै ८८ फिर भगवान् के स्मरण में तत्पर मनुष्य तिसी विष्णुजीके मन्दिर में कुश से शय्या बनाकर पृथ्वी में सोवे ८९ तदनंतर बुद्धिमान् मनुष्य निर्मल प्रातःकालहुए दतूनि न करै बारह कुल्लों से मुख की शुद्धिकरै ९० नित्यकी क्रिया और भगवान् की पूजा आदिक क्रियाकरै हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! तदनन्तर रात्रिमें सब व्रत के करनेवाले मनुष्य ९१ भगवान् के आगे एक जगह जागरणकरें माता, स्त्री, भाई, पिता ९२ पुत्र और मित्रसमेत हो-

कर हरिजीका जागरणकरै और व्रत करनेवाला बहुत समयतक वि-
ष्णुजीके मन्दिर में स्थित होवे ९३ जो मनुष्य विष्णुजीके मन्दिर
में शंख और चक्रआदिक चित्र लिखता है तिसके बहुत जन्मों
के कियेहुए पापों को भगवान् नाश करतेहैं ९४ और जो चावल
के आटेके पंक वा और वनकी उत्पन्न वस्तुओं से चित्र लिखता है
तिसके फलको सुनिये ९५ पुत्र, पौत्र और प्रपौत्रोंसमेत सब शुभको
वह भोगकर अन्तसमय में विष्णुजीके पुरमें जाकर वहां पर मो-
क्षको प्राप्त होता है ९६ एकादशी के दिन ध्वजारोपण करनेवाला
मनुष्य करोड़ पुरुषों को उद्धार कर नारायणजी के पुरको जाताहै
९७ जो मनुष्य भगवान् के मन्दिर को पताकावलियोंसे युक्त भू-
षित करता है वह प्रत्येक जन्म में राजा होताहै ९८ जब तक प-
वन से पताका फहराती है तब तक उसके सब पाप नाश होजाते
हैं ९९ एकादशी के दिन श्रेष्ठस्थान के इच्छा करनेवाले बुद्धिमा-
नों करके भगवान् के मन्दिर में अनेक वर्णके पताकाओं की पंक्ति-
यां स्थापित करनी चाहिये १०० जो मनुष्य विष्णुजीके शिर में
अत्यन्तपवित्र छत्र धरताहै वह प्रत्येकजन्ममें पृथ्वी में क्षत्री होता
है १०१ एकादशीके दिन फूलोंसे मण्डप करनेवाला मनुष्य प्रत्येक
फूलमें सौ अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्तहोताहै १०२ एकादशी के
दिन बुद्धिमान् मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्षफलकी प्राप्तिके
लिये यत्नसे सुगन्धित फूलोंसे मण्डनकरै १०३ हेश्रेष्ठब्राह्मण! जो
एकादशी के दिन कपड़े का घर बनाताहै वहदेवस्थानमें महलमें ब-
सताहै १०४ जो मनुष्य सफ़ेद वा लाल वा काला कपड़ेका घर ब-
नाकर भगवान्के मन्दिरमें बांधताहै वहभगवान्को प्रिय होता है
१०५ व्रतकरनेवाला मनुष्य तहांहीं शालिग्राम वा भगवान्की
मूर्तिको भक्तिसे पंचामृतसे स्नानकराकर स्थापितकरै १०६ बुद्धि-
मान्मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकेफलकी प्राप्तिके लिये
यत्नसेपहले स्वस्त्ययन और फिर संकल्पकरै १०७ और शास्त्रके
भाषितोंसे अपनी भूतशुद्धिविधानकर फिर एकमनहोकर उत्तम
फूलकोग्रहणकर १०८ हृदयरूपी कमलके वसनेवाले, सोनेकेपीठमें

बैठेहुए तथा मणिमय आसनमें बैठेहुए नारायणदेवको ध्यानकरै १०९ सोनेकेपीठमें बैठेहुए, मणिमय प्रकाशित गहनोंसे शोभित, क्रीड़ाके वेषधारे, लेखाको भी धारे, उज्ज्वलमेघोंके समान दीप्ति वाले, सुन्दरदेहयुक्त, नित्यहीलम्बी चारभुजाओंसे प्रकाशित, सब करलय और हथियारोंसमेत, कमलके समाननेत्रोंसे लक्ष्मीजीके मुखको देखतेहुए,श्रमके दूरकरनेवाले भगवान्को निरन्तर कटाक्ष-दृष्टिसे मैं भजताहूं ११० हे भगवन्! हे देव! हे लक्ष्मीकेप्रिय! आइये इसव्रतमें भक्तिसे मुझको आपकीपूजा करनी चाहिये १११ हे सब लक्षणयुक्त! हे संसारकेगुरु! लक्ष्मीसमेत आप जबतक मैं आपकी पूजाकरूं तबतक इसश्रेष्ठआसनमें स्थितहूजिये ११२ हे सब संसारमेंप्रसिद्ध यशवाले! हे नारायण! हे प्रभो! हे देवताओं से पूजित! आपकी कुशल तो है यहसब मुझसे कहिये ११३ हे दे-वोंकेस्वामी! हे नारायण! सुवासित, दोनोंचरणोंकी धूलिके हरने वाले, पवित्र और अत्यन्त शीतलपाद्यको ग्रहण कीजिये ११४ हे कमलकेसमान नेत्रोंवाले! हे विष्णुजी! दूर्वा और पत्तोंसे युक्त और अखण्ड चावलोंसेभी युक्त अर्घ्यको आपको देताहूं ११५ हे परमानन्द! इस अत्यन्तपवित्र, परमानन्दके बढ़ानेवाली आचम-नीयको आपको देताहूं इसको ग्रहणकीजिये ११६ हे जरासन्धके नाशकरानेवाले! हे लक्ष्मीकेपति! मेरेदियेहुए सुगन्धित चन्दन से आपकीदेह भूषितहोवे ११७ हे देव! हे देवोंकेईश्वर! संसार केआदिकरनेवाले इस आचमनको पवित्रताकेलिये मैं देताहूं तिसको ग्रहण कीजिये ११८ हे देवताओंमेंश्रेष्ठ! इसको पूर्वसमयमें ब्रह्मा-जीने देवताओंकी प्रसन्नताबढ़ानेके लिये रचाहै इसीसे आपको यह धूप मैं देताहूं ११९ हे जनार्दन! हे देव! अन्धकारसमूहोंका नाशकरनेवाला, घीसेपूर्ण यहदीप आपकीप्रीतिके लियेहोवे १२० हे देवोंकेईश! हे संसारके गुरो! वस्ति और करिहांवमें शोभादेने वाले जनेऊसमेत इस उत्तरीयवस्त्रको आपको देताहूं १२१ हे परमेश्वर! स्वादुयुक्त! छःरसोंसेभी युक्त चारप्रकार के अन्नको मैं भक्तिसे आपको निवेदन करताहूं इसको ग्रहणकीजिये १२२ हे मो-

क्षकेदेनेवाले! हे महाबुद्धियुक्त! हे विष्णुजी! मुखकीदुर्गन्धके हरनेवाले कपूर और खैरसेयुक्त पानको ग्रहणकीजिये १२३ इसविधिसे अत्युत्तम भेंटोंसे भक्तिसे युक्त होकर चारोंपहरोंमें भगवान्को पूजनकरै १२४ एकादशी के दिन अनेक प्रकार की भेंटें हरिजीको देवे कर्मोंके फलकी इच्छा करनेवाला वित्तशाठ्य न करै १२५ तदनंतर नारायण में परायण सब व्रतवालों को रात्रिमें नाच, गाना और स्तोत्र आदिकों से जागरण करना चाहिये १२६ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! फिर व्रत में रत मनुष्य प्रदक्षिणा कर सब पाप नाश करनेवाले भगवान् के नामोंको स्मरणकरें १२७ जे मनुष्य प्रत्येक के मुखोंसे हरिजीके नाम की ध्वनिको सुनतेहैं वे बड़ेभारी पापसमूहों से छूटजाते हैं १२८ एकादशी के दिन पाखण्डी मनुष्य से बातचीत न करे क्योंकि उससे वार्तालाप करनेसे सब धर्म नाश होजाता है १२९ प्रत्येक के कण्ठ से निकलेहुए नारायणजी के यशके गीतको सुनकर मूर्खलोग इसप्रकार तृप्त नहीं होतेहैं जैसे वीणाके शब्द को सुनकर कुत्ता तृप्त नहीं होताहै १३० और संतजन सब पाप नाश करनेवाले भगवान् के गीतको सुनकर हर्षको इसप्रकार प्राप्त होते हैं जैसे हरिण वीणाके शब्दको सुनकर प्रसन्न होताहै १३१ लक्ष्मीपति भगवान् के गीतोंको देखकर व्रत करनेवाले उत्तम नाच नाचतेहैं और प्रसन्न होतेहैं १३२ हे ब्राह्मण! जे व्रत करनेवाले भगवान् के मन्दिर में तृप्त नहीं होतेहैं उनकी प्रत्येक जन्म में निरन्तर पशुता होतीहै १३३ जे व्रत करनेवाले एकादशी में गीतों को नहीं गातेहैं वे प्रत्येक जन्म में गूंगे होकर भ्रमते हैं १३४ भगवान् के आगे मृदंग आदिक बाजेबजाने चाहिये जिनसे मधुसूदन भगवान् प्रसन्न होतेहैं १३५ वैष्णव मनुष्य विष्णुजीके जागरणको करें उत्तम वेद वा पुराण को पढ़ैं १३६ एकादशी में रामायण, भागवत, व्यासजीके कहेहुए महाभारत तथा और भी पुराणों को पढ़ना चाहिये १३७ जे एकादशी में विष्णुजीके आगे पढ़ते और जे सुनतेहैं वे प्रत्येक अक्षर में कपिलादान के फलको प्राप्त होतेहैं १३८ वैष्णव मनुष्य आनन्दसमेत निद्रा जीतकर रा-

त्रिमें जागरणकरै और मन से भगवान् को ध्यानकरै १३९ और एकादशी में वारंवार प्रदक्षिणा कर पृथ्वी में दण्ड की नाईं गिर कर भगवान् के नमस्कारकरै १४० तदनन्तर भक्तियुक्त व्रत करनेवाला निर्मल प्रातःकाल हुए पंचमहायज्ञ कर दूधसे भगवान्को स्नानकराकर पूजनकरै १४१ फिर अपनीशक्तिसे व्रतकरनेवाला मनुष्य ब्राह्मणको दक्षिणादेवे फिर द्वादशीमें पारणकरै १४२ जो द्वादशी तिथिको लांघकर पारण करताहै तिसकी करोड़जन्मकी पुण्य इकट्ठीकीहुई नाशहोजातीहै १४३ व्रतकेफलकी इच्छा करने वाले बुद्धिमानोंको द्वादशीतिथिमें पारण करना चाहिये त्रयोदशीमें कभी न करना चाहिये १४४ हे ब्राह्मण ! व्रतके दिनमें व्रतकेफलकी इच्छा करनेवाला वैष्णवमनुष्य यत्नसेरात्रिमें नहींसोवे १४५ निश्चय विना जागरणके व्रत निरर्थक होताहै इससे दोनों पक्षोंमें जागरण करना चाहिये १४६ जे एकादशीके व्रतको इस विधिसे करतेहैं वे सब सत्यही सत्य मोक्षको प्राप्तहोतेहैं १४७ हे जैमिनि ! जन्म और मृत्युके नाशकरनेका एक आदिकारण, भगवान्के दिनकेव्रतका साररूप एकादशीकाव्रत इन्द्रादिक देवसमूहों कोभी करना चाहिये इससे निरन्तर यत्नसे तुमभी करो १४८ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेएकादशीमाहात्म्येद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

## तेईसवां अध्याय ॥

एकादशी का माहात्म्य वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! पूर्व्वसमय में कोचरश नाम राजा पृथ्वी में हुआ है यह शांत, परमधर्म का जानने वाला, राजनीति के जाननेवालों में श्रेष्ठ १ सत्य बोलनेवाला, क्रोधजीतनेहारा, वैरियोंके जीतनेवाला, नारायणजी के पूजन में परायण, हरिजीकी सेवा में रत और पर था २ तिसकी सुप्राज्ञा नाम स्त्री हुई यह प्रिय बोलनेवाली, सब लक्षणों से युक्त, पतिकी सेवामें परायण, ३ एकादशी के व्रत में रत,सब प्राणियों के हितकी इच्छा करनेवाली, जातिस्मरा, महाभाग्ययुक्त, सुशीला और श्रेष्ठ वर्णवाली थी ४

परमार्थ का जाननेवाला यह राजा स्त्रीसमेत दशमीको कर निशीथिनी एकादशी में जागरण करनेको उद्यत था ५ कि उसी अवसर में एक शौरिनाम ब्राह्मण महातेजस्वी तिस राजाके जागरण के मण्डप में आताभया ६ तिन आयेहुए ब्राह्मण की नारायण में परायण, स्त्रीसमेत अत्यन्त प्रसन्नहोकर राजा पाद्य आदिकों से पूजा करताभया ७ यह सब तत्त्वों का जाननेवाला ब्राह्मण तिनके मध्य में बैठकर विष्णुजी की पूजा में परायण बहुत से व्रत करने वालोंको देखता भया ८ कोई अनेकप्रकारके मनोरम फूल, चन्दन, धूप, दीप और अत्युत्तम भेंटोंसे हरिजीको पूजन करते थे ९ कोई आनन्द से गङ्गाजीकी मिट्टी से भूषित और तुलसीजी के पत्रों के माला से अलंकृत होकर हरिजी के आगे नाचतेथे १० कोई भगवान् के प्यारे व्रत करनेवाले करताल को लेकर भगवान्‌के ललित गीतोंको गाते थे ११ कोई अत्युत्तम, सुन्दर अर्थ और कोमल अक्षरवाले स्तोत्रों से रोगरहित, संसार के स्वामी नारायणजी की स्तुति करते थे १२ कोई ठण्ढी श्वेत चामरकी पवन से संसार के स्वामी हरिजी के ऊपर डुलातेथे और बड़ी प्रीतिको करते थे १३ कोई महात्मा सुन्दर, पवित्र, मंगलकारी वीणा आदिक बाजाओंको बजातेथे और कोई भगवान्‌को गाते थे १४ और राजा और रानी भी दोनों अत्यन्त प्रसन्न होकर सुन्दर गीत गाते और उत्तमनाच नाचते थे १५ तब ब्राह्मणों में उत्तम शौरिजी महात्मा, नाच और गीत आदि के करनेवाले राजा और रानीसे मधुरवाणीसे बोले १६ कि हे राजन्! तुमधन्यहौ और तुम्हारी रानीभी धन्यहैं तुमदोनोंके ये मङ्गलकारी चरित्र पृथ्वीमें दुर्लभ हैं १७ जिससे मैंने कोई उत्तम वैष्णव नहीं देखाहै इससे तुमसे कहताहूं तुझ राजासे यहपृथ्वी निस्संदेह धन्य हुईहै १८ हेराजन्! इस पवित्र, भगवान्‌के प्यारे, एकादशीके व्रतको स्त्रीसमेत तुम करते हौ तिससे वैष्णवों में श्रेष्ठ हौ १९ हे राजाओं में उत्तम! स्त्रीसमेत तुम सातोंद्वीपों के एकही स्वामी हौ जिससे प्रीतिसे नारायणजी के आगे नाचते और गातेहौ २० ये तुम दोनों के चरित्र अद्भुत मैंने देखे तुम लोगोंकी यह अत्यन्त

निर्मल बुद्धि कैसे उत्पन्न हुईहै २१ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस शौरिनाम ब्राह्मण के ये वचन सुनकर कुछ मुसकाकर सुप्राज्ञारानी ब्राह्मण से बोली २२ कि हे उत्तम ब्राह्मण! पूर्वकाल में हम दोनों अत्यन्त पापी एकादशीही के प्रभाव से महात्मा यमराजजी से छूटे हैं २३ हे विप्रेन्द्र! जातिस्मृतिके प्रभावसे इससमय में भी परमधामकी कांक्षासे सुन्दर एकादशीके व्रतको करते हैं २४ तब शौरिजी बोले कि हे श्रेष्ठ करिहांव वाली रानी! यदि निश्चय अपनी पहलेकी जातिको जानती हो तो मुझसे कहो मेरे हृदय में सुनने का कौतुकहै २५ पहले तुम कौनथी और तुम्हारे पति कौन थे और तुम दोनों पापियोंको कैसे यमराजजीने छोड़दिया था २६ तब सुप्राज्ञा रानीबोली कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! यद्यपि यह वचन प्रकाश करनेके योग्य नहीं है तिसपरभी प्रकाशित करतीहूं मैं रतिके शास्त्रमें चतुर वेश्याथी २७ और तिस जन्ममें मैंने नरक के क्लेश देनेवाले बहुत घोर पाप किये थे २८ और यह नित्योदय नाम शूद्र अपने आचार से वर्जित, पराई स्त्रीका हरनेवाला, क्रूर, पराई द्रव्यका हरनेवाला, २९ मदिरा पीनेवाला, मित्रका नाश करनेहारा, गर्भहत्या करनेवाला, पराई हिंसाकरनेहारा, अत्यन्त अहंकारयुक्त, सदैव धर्मकी निन्दा करनेहारा ३० एक समयमें अच्छे व्रत करनेवाले जातिवालों से त्याग कियाहुआ वेश्याके विभ्रम में लोलुप होकर नित्योदय मेरे स्थानको आताभया ३१ हे श्रेष्ठब्राह्मण! तब मैंने इस जवान को सुन्दर देखकर प्रीतिको प्राप्तहोकर भोगों से सन्तुष्ट किया ३२ हे तपोधन! फिर मेरे साथ भोगकर यह प्रेमसे नम्रता से युक्त होकर यह बोला ३३ कि मैं सुरतशास्त्र का जाननेवाला और बान्धवों से त्याग कियागयाहूं यदि आप यह योग्य समझें तो आपके साथ मैंभी यहींरहूं ३४ हे ब्राह्मण! उसके ये नम्र वचन सुनकर स्त्रीभावको प्राप्तहोकर उसी के साथ मैंभी स्थित रही ३५ हे ब्राह्मणों में शार्दूल! कदाचित् हरिजीकी एकादशी तिथि में देह देहके टूटनेवाली बड़ी पीड़ासे मैं युक्तहुई ३६ और ज्वरसे जर्जरदेह होकर मैंने डरसे अन्न और जल नहीं पि-

या ३७ और मेरे स्नेहसे युक्तहोकर उसने भी अन्न और जलको न पीकर जन्मसे विषएणकी नाईं होगया ३८ तदनंतर रात्रिमें घीसे दीप जलाकर ज्वरसे अपहृतचित्त होकर मैंने जागरण किया ३९ और हे नारायण ! हे हरे ! हे कृष्ण ! मेरी रक्षा कीजिये यह कह कर वारंवार मैंने और उसने भी रात्रिमें जागरण किया ४० हे ब्राह्मण ! व्रतके प्रभाव और भगवान्‌के नामके उच्चारणसे हम दोनोंके पाप नाश होगये ४१ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! तब निर्मल प्रातःकाल भगवान् सूर्यनारायण के उदयहुएमें मैं ज्वरसे पीड़ित होनेके कारण नाशको प्राप्त होगई ४२ मुझको मरीहुई देखकर सबजनों से निन्दित और पवित्र इसने भी आत्महत्या कर प्राण खोदिये ४३ तब प्रकाशित अग्निके समान नेत्रोंवाले यमराजके दूतोंने दृढ़फँसरीसे बांधकर हम दोनोंको दुर्गमराहसे यमराजके यहां प्राप्त कर दिया ४४ तो यमराजकी आज्ञासे चतुर चित्रगुप्तने हमलोगों के सब शुभ वा अशुभकर्मको मूलसे विचार किया ४५ और यमराजजीसे बोले कि हे महाबाहो ! यद्यपि ये दोनों महापापियों में श्रेष्ठ हैं तथापि एकादशी के व्रतसे पापोंसे छूट गये हैं ४६ जो विना इच्छाके पुण्यकारी एकादशी के व्रतको करताहै वह भी सब पापोंसे छूटकर परमधाम को जाताहै ४७ जब चित्रगुप्तने इस प्रकार कहा तो महायशस्वी धर्मराजजी आसनसे उठकर शीघ्रही हम दोनों की वन्दना करते भये ४८ और पापसे हीन हम दोनों को सुगन्धित चन्दन, सुन्दर धूप, फूल, दीप और सोनेके गहनों से भूषित करते भये ४९ और अमृतके समान मीठे अनेक प्रकार के फलोंसे प्रीतिसे हमलोगों को भोजन कराते भये ५० तदनंतर प्रभु यमराजजी सुन्दर स्तोत्रोंसे स्तुतिकर सुन्दर रथपर हम दोनों को चढ़ाकर हाथ जोड़कर यह बोले ५१ कि तुम दोनों पुण्यवानों में श्रेष्ठ और सब पापों से हीनहो इस समय में जहांपर भगवान् विष्णुजी हैं तहां को जाइये ५२ जब नम्रतायुक्त धर्मराजजी ने यह कहा तो वे दोनों यमराजजी के चरणकमलों में नमस्कार कर यह कहते भये ५३ कि हे देव ! इसतरह से विष्णुजी के परमपद

को नहीं जाने योग्यहूं किन्तु हम दोनों के नरक देखनेकी आपके स्थान में वाञ्छाहै ५४ हे ब्राह्मण! तब यमराजजीने हम दोनों को आज्ञा देदी तो सुन्दर रथपर चढ़कर विस्तारयुक्त, दुःखसे देखने योग्य नरकों को हम लोगोंने देखा ५५ तब ब्राह्मण बोले कि हे पतिव्रते! तहांपर पापियोंकी जो जो व्यवस्था तूने देखी वे सब विस्तारसे हमसे कहनेके योग्य हो ५६ हे सुन्दर करिहांव वाली! पुण्यात्मा और पापात्मा जिस जिस राहसे यमराजजी के स्थानको जाते हैं वह मुझसे विस्तारसे कहिये ५७ पुण्यात्मा प्रभु यमराजजी को किस प्रकार के देखते हैं और पुण्यात्माओं की सुख देनेवाली और पापियों की दुःख देनेवाली कैसी राह है ५८ तब सुप्राज्ञा बोली कि ब्राह्मणों में शार्दूलरूप! पहले मैं सुनने वालों के प्रीति बढ़ाने वाली पुण्यात्माओं की राहको कहताहूं सुनिये ५९ भारी पत्थरोंसे बँधीहुई सुन्दर कपड़ों से आच्छादित, सब उपद्रवोंसे हीन पुण्यवानोंकी राहशोभितहै ६० कहीं गन्धर्वोंकी कन्या अद्भुत गान गातीहैं कहीं कोमल शरीरवाली अप्सरा नाचतीहैं ६१ कहींपर मनोरम वीणाकेशब्दको करतीहैं कहींपर फूलोंकीवर्षा होतीहै कहींठंढी पवन चलतीहै ६२ कहीं ठंढेजलवाला पौसरा चलरहाहै कहींपर भोजनकी शालिका बनीहुईहैं कहीं देवता और गन्धर्व उत्तम स्तोत्रको पढ़ते हैं ६३ कहीं कहीं सुन्दर फूले कमलवाली बावली हैं कहींपर सुन्दर छायावाले फूले अशोक आदिक वृक्षहैं ६४ तहां उसी राहसे पुण्यात्मामनुष्य सुखसे मृत्युपाकर सुखपूर्वक चलेजाते हैं ६५ कोई अनेक प्रकारके गहनोंसे भूषित होकर घोड़ेपरचढ़कर उद्दण्ड सफेद छत्रोंसे मस्तकको आच्छादित करजातेहैं ६६ कोई मनुष्य हाथीपरचढ़े कोई रथपरचढ़े और कोई विमानपरचढ़कर सुखसे यमराजजी के स्थानको जातेहैं ६७ किसी मनुष्योंके ऊपर अप्सरा चामरोंकी हवाकरतीहैं और सुरर्षिलोग स्तुति करतेहैं इसप्रकारसे वे जातेहैं ६८ कोई पुण्यात्मा मनुष्य सुन्दर हथियार धारणकर माला और चन्दनसे विभूषित होकर पानखातेहुए यमराजके स्थानको जातेहैं ६९ कोई जलग्रहनिवासी अपनेशरीरकी

दीप्ति से दशों दिशाओं को प्रकाशित करतेहुए यमराज के स्थान को जाते हैं ७० कोई सुन्दर खीर को भोजन करते हुए तथा और भी सुन्दर भोजन करतेहुए राह में सुखसे जाते हैं ७१ कोई दूध, कोई ईख के रस और कोई माठा पीतेहुए यमराज के स्थान को जाते हैं ७२ कोई दही, कोई अनेक प्रकार के फल और कोई पुण्यवान् शहद पीतेहुए जाते हैं ७३ तदनन्तर तिन बहुतों को आये हुए देखकर प्रीतिको प्राप्त होकर यमराजजी आपही नारायण होजाते हैं ७४ चारभुजायुक्त, श्यामवर्ण, फूलेकमल के समान नेत्रवाले, शंख, चक्र, गदा और पद्मके धारण करनेवाले, गरुड़वाहनयुक्त ७५ सोने का जनेऊ धारे, कामदेव के समान पवित्र महान् मुखवाले, मुकुट, कुण्डल और वनमाला से विभूषित ७६ महाबुद्धिमान् चित्रगुप्तजी होजाते हैं और चण्ड आदिक सब यमराज के दूत भी नारायणजी के आकार मीठे वचन बोलनेवाले होजाते हैं ७७ तब आपही धर्मराजजी परमप्रीतिको प्राप्तहोकर तिनसब उत्तम मनुष्यों की मित्र की नाईं पूजा करते हैं ७८ और तिन पुण्यवान् मनुष्योंको सुन्दर रत्न फलोंसे भोजन कराकर तिन से यमराजजी बोलते हैं ७९ कि तुम सब नरकके क्लेशसे डरे हुए महात्मालोग अपनेही कर्म के प्रभावसे परमपदको जावो ८० जो मनुष्य संसारमें जन्मपाकर पुण्य करताहै वही मेरा पिता, भाई, बंधु, सम और मित्रहै ८१ हे श्रेष्ठब्राह्मण! धर्मराजके इसप्रकारके कहने से वेसबलोग सुन्दर रथपर चढ़कर नारायणजीके पुरको चलेजातेहैं ८२ हेउत्तम ब्राह्मण! पुण्यात्माओंकी गति तो मैंने संक्षेपसेकही अब पापात्माओं की गतिको विस्तारसे कहतीहूं सुनिये ८३ दुष्टात्माओं की राहका सब दुःखोंसे युक्त छियासी हज़ार योजनों का विस्तार कहा है ८४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! कहींपर अग्निकी वर्षा होरहीहै कहीं पत्थरोंकी कहीं पर तपी हुई बालूकी ८५ कहीं कहीं तीक्ष्ण पत्थरों की कहीं तप्त पत्थरोंकी कहीं कहीं शस्त्रों की वर्षा कहीं अंगारों की वर्षा ८६ कहीं अग्निकी नाईं अत्यन्त तपी हुई पवन चलरही है जोकि गम्भीर, अंधकरनेवाली और तृणावर्तमुख हैं ८७ कहीं का-

टोंकी वर्षा बाणमय कांटों से होरहीहै, कहीं पर दुःखसे चढ़नेवाली, सांपोंसमेत पत्थर की सीढ़ियां हैं ८८ तहां पर सूखे कण्ठ, ओष्ठ और तालुवाले पापीलोग जाते हैं इस प्रकार बहुत भांति के क्लेश देनेवाले, छाया और जलसे हीन ८९ राहमें दुःखित पापी लोग जाते हैं नामहींसे बालखोले, प्रेतोंके आकार, भयंकर,९० रक्तके समूह से डूबेहुए कोई और कीचड़से भूषित और कोई कोई श्याम अंगवाले पापी राहमें जाते हैं ९१ कोई कष्टसे रोतेहुए, बहतेहुए आंशुओं से आकुल नेत्रवाले और अपने कर्मोंको कोई शोचते हुए पापी जाते हैं ९२ कोई पापियों के गले में चमड़ेकी फँसरी का बन्धन है कोई कंकालमें बांधे और कोई दोनों पांवों में बांधे हुएहैं ९३ कोई पापियों के सुइयों से चुभे हुए गलेमें क्रोधसे यमराज के दूत दृढ़फँसरी देकर खींचते हैं ९४ कोई कानोंके छेदोंसे भारी पत्थर जोकि राहमें पड़ेहुए हैं तिनको लिये जातेहैं और कोई पापी राहमें लोहे के भारोंको मस्तक में धरेहुए जाते हैं ९५ किसी के भुजाओं में यमदूत फँसरियां बांधकर लिये जाते हैं किसी पापियों के गर्दनों में दृढ़ हाथोंकी चोट देतेहैं ९६ और घसीटते हुए यमराज के दूत लेजाते हैं कोई नीचे को शिर किये और कोई ऊपर को पांव किये जाते हैं ९७ कोई भुजाओं से और कोई एकही पांवसे जाते हैं इस प्रकार बुरे आकारवाले दुःखित शब्द से रोते हुए ९८ और यमराज के दूतों से ताड़ित होकर पापी तिसराह में जाते हैं तिन सब पापियों के आने में क्रोधसे यमराजजी ९९ सुन्दर मूर्तिको छोड़कर अत्यन्त भयानक होजाते हैं और तीस योजनके बड़े अंगवाले, बावली के समान नेत्रवाले, १०० धूम्रवर्ण, महातेजस्वी, अत्यन्त लम्बे, घर्घर शब्दवाले, अत्यन्त बड़े दाँतोंवाले, सूपके समान नहोंकी पंक्तिवाले, १०१ प्रचण्ड भैंसेपर चढ़े, दांतों से ओष्ठों को चबाते हुए, दण्ड हाथमें लिये, चमड़ेकी फाँसवाले, टेढ़ी भौंहयुक्त मुखवाले, १०२ महामायायुक्त, क्रोध से लालनेत्र किये,समवर्त्ती, अट्टाट्टहास करतेहुए चित्रगुप्तजी प्रकाशित होतेहैं १०३ और चण्डआदिक सब दूत फँसरी और मुद्गर

हाथोंमें लियेहुए, क्रोधयुक्त मेघोंकी नाईं गर्जतेहुए भयंकर होजाते हैं १०४ और यमराजके दूत जल्द छोड़ो छोड़ो पापियोंको काटो छेदो बेधो इस प्रकार चारों ओर दौड़तेहुए बकते हैं १०५ तिन सब पापियों, गिरेपड़ेहुओं को कालदण्ड से तर्जन कर हुंकार के शब्दों को छोड़कर धर्मराज प्रभुजी उनसे बोलते हैं १०६ कि रे रे पापी दुराचारियो ! तुमसब अज्ञानियों ने आत्माके पीड़ा करनेवाले पाप कियेहैं १०७ मस्तक के ऊपर स्थित, जीवोंके स्वामी समवर्त्ती मुझको जानकर भी तुमलोगोंने पाप कियेहैं १०८ मैं पुण्यात्माओं का बन्धु और पापात्माओं का वैरी हूं यह कहींपर तुम लोगोंने अपने कानों से नहीं सुना है १०९ नरक अनेक प्रकारके दुःखसंयुक्त दुःसह हैं तिनको पापीलोग भोग करतेहैं यह तुमलोगोंने नहीं सुनाहै ११० तुमलोगोंने मेरी दुराशय चर्चा को झूठही मानकर पापकिये थे इससमयमें सोईअपनी आंखों से देखिये १११ तुमसब सदैव द्रव्यसे अन्ध होकर पापसमूहोंको निरन्तर करतेरहेहो ११२ रेदुष्टो ! पापके फलोंको भोग कीजिये रोनेसे क्याहोगा सुप्राज्ञाबोली कि इसप्रकार यमराजदेव चित्रगुप्तसेबोले ११३ कि हे महाभाग ! इनके पापकर्मोंको विचारिये तब धर्मराजके वचन सुनकर चित्रगुप्तजी तिससमयमें ११४ तिनके जितनेपापथे तितने कहतेभये तब सब पापी रोनेलगे ११५ और चमड़ेकी फँसरी से बँधेहुए डरकर वे लोग यमराजजीसे यह कहतेभये कि हे सूर्यके पुत्र ! हमलोगोंने जितने पापकियेहैं ११६ वा पूर्वसमय में अशुभ वा शुभ कियाहै उसके कौन गवाही स्थितहैं ११७ तथा किसने देखाहै वह हमारे आगेकहे तब हँसकर भगवान् यमराजजी बड़े कोपसे ११८ सब गवाहोंको बुलाकर यह बोलतेभये कि आकाश, पृथिवी, जल, तिथि, दिन, रात्रि, दोनोंसंध्या और धर्म तुम सब इनपापियोंके समीपके गवाहीहो ११९। १२० तिनपापियोंके सब शुभ वा अशुभ कर्मोंको जिस जिसकी वेलामें इन्होंने कियेहैं वे सब कहो १२१ तब वह वह गवाही तिस तिसका यमराजके समीप कहनेलगा तिसको सुनकर पापोंसे खींचेहुए मनवाले सबपापी

१२२ मेघोंको देखकर हरिणोंकी नाईं कँपकँपीयुक्त हृदय होकर स्थित होतेहैं और फिर दांतोंकी पंक्तियोंसे कड़कड़ शब्द करतेहैं १२३ तब धर्मराजजी कालदण्डसे तिनको अलग अलग मारतेहैं तो वे सब पापकर्म करनेवाले धर्मराजसे ताड़ित होकर १२४ रोते और अपराध प्राप्त होकर अपने कर्मोंको शोच करतेहैं तदनंतर तिन सब पापियोंको चण्डआदिक दूत क्रोधसे १२५ यमराजजी कीआज्ञासे रौरवआदिक नरकों में छोड़ देते हैं किसी पापी को तपन नरकमें किसीको अवीचिमें १२६ किसीको संघात,कालसूत्र-महारौरव, तपीहुई बालूकेकुण्डमें और किसी किसी को कुम्भीपा-कमें १२७ तथा कोई कोई पापियोंको निरुच्छ्वास, महाभयानक, प्रमर्दन में किसीको घोर असिपत्रवनमें तथा अनेकप्रकारके भक्षों में १२८ कोई कोई को वैतरणीमें किसी किसीको तुष,अंगार,हाड़, और कांटोंसे पूर्ण,नित्यही तपेहुए भयानक विष्ठाके कुण्डमें कोई कोई को विष्ठाके लेपन तथा विष्ठाके भोजन १२९। १३० और कुत्ताके मांसके भोजनमें छोड़ते हैं कोई कफ और कोई वीर्यको भोजन करते १३१ कोई पापी मूत्र और कोई लोहूपीते हैं किसी किसीके मुखों में सांपों के समान जोंकें १३२ और सांपही भयंकर यम के दूत पूरितकरते और अत्यन्त सन्तप्तों से जीभोंको निकाललेते हैं १३३ निर्दयी यमराज के दूत किसी किसी पापीके कानोंमें तप्त तेलों को छोड़ते हैं १३४ कोई कोई दुरात्माओं के भुजा, चरण, कान आदिक और नाकोंको तलवार की धाराओं से काटलेते हैं १३५ कोई जलतेहुए अंगारके समूह में और कोई बाणके समान कांटोंमें सोतेहैं १३६ यमराजके दूत किसी किसी पापियों के बालोंको खींचकर उनको तपीहुई कीचोंमें छोड़देते हैं १३७ किसी किसी को वमनों में छोड़तेहैं और किसी किसी पापियों की संधियों में तपीहुई हज़ारों सुइयां वारंवार छोड़ते हैं १३८ किसी को तपीहुई लोहके शूलके अग्रमें आरोपित करते हैं तीक्ष्ण कांटोंसे किसी किसी को मारते हैं किसी किसी के मस्तकों को पकड़कर १३९ हाथ और पांवोंमें शाल्मली वृक्षके कांटोंसे क्रोधसे घसीटते हैं तब वे दीन शब्द

कर रोतेहैं १४० यमराजके दूत काहूके गलोंमें पत्थरों को बांधकर रक्त और जलके गड्हों में वारंवार गिराते हैं १४१ और पापी मनुष्यों के शिरोंको तोड़कर वारंवार क्रोधसे पत्थरों से चूर्णकरते हैं १४२ किसी पापियों के रोतेहुए उनकी छातीके बीचों में लोहेकी कीलोंके समूहों को गाड़ते हैं १४३ किसी पापियों के नेत्रोंको कांटिये से निकाललेते हैं और काहू की नाकोंको बीछियों से भरदेते हैं१४४ यमराजके दूत किसी किसी के पांवोंको फँसरियों से वृक्ष की डालोंमें बांधकर नीचे धुयें समेत अग्नि को जलाते हैं १४५ तब पाप करनेवाले नीचेको मुख और ऊपरको पांवोंको कर जबतक चन्द्रमा और नक्षत्र रहते हैं तबतक धुयेंको पीतेहैं १४६ यमराजके दूत मुशल और मुद्गरों से किसीको वारंवार ताड़ितकरते हैं तब वे व्यथा से व्याकुल होकर रक्तको गिराते हैं १४७ कोई पापी पीबकी दुर्गन्ध युक्त अन्धकार समेत घरमें डाँस और मसोंसे क्लेश पाते हैं १४८ कोई भस्म कोई कीड़े कोई दुर्गन्धित मांसों और कोई पूति मिष्ठाको भोजन करते हैं १४९ कोई कुत्ते, व्याघ्र, सियार, वज्रके समान दांत और नहँवालों और रीछोंसे भक्षितहोकर रक्तसे बूड़कर रोतेहैं१५० और कोई निरन्तर घोर विषवाले सांपोंसे भक्ष्यमाण होते हैं कोई की भैंसके सींगोंसे छाती फटजातीहैं १५१ तब वे पृथ्वी को रक्तोंसे सींचतेहुए मूर्च्छितहोकर गिरपड़तेहैं फिर यमराजके दूतोंके धनुषों से छोड़ेहुए सर्पोंकेसमान घोरबाणोंसे १५२ सबदेहजर्जर होकरकोई पृथ्वीमें लोटतेहैं फिर तपीहुई लोहके पिण्डके तथा तपेहुए पत्थर के स्थानमें रहते हैं १५३ और दंशशस्त्रोंसे किसीके वदनोंकोकाट लेतेहैं और यमदूत किसी किसीके मुखों और नाककेछेदोंको १५४ श्वासकीहवा रोकनेकेलिये भरदेतेहैं और किसीके उद्धत, तीक्ष्णधारावाली यमकीशक्तियोंसे १५५ महाबली यमदूत अंगकेचमड़ों को उखाड़लेतेहैं और किसी किसीके बालोंको पकड़कर पृथ्वीमें गिराकर १५६ कीलोंसे सदैव चरणआदिकोंको पीड़ादेतेहैं कोईपापी खारीजलकी धाराओंसे तपतेहैं १५७ और वहुत प्रकाररोकर क्षारजलकोपीते हैं कोईपापी पित्तकोपीते हैं १५८ कोई श्रेष्ठपापी स्नु:

हीकेदूधोंको पीतेहैं यमराजकेदूत पृथ्वीमें सोतेहुए किसी किसीकी छातियोंमें १५९ पर्वतके समान, तपेहुए भारीपत्थरोंको धरदेतेहैं और किसी किसीके गर्दन और गलोंमें दोकाष्ठके टुकड़ोंको देकर उदग्रमुखकर दृढ़फँसरियोंसे बांधदेतेहैं और किसीको वृक्षकी डालोंमें चढ़ाकर पृथ्वीमें गिरादेतेहैं १६० । १६१ और उठाकर फिर पृथ्वीमें छोड़ते हैं इसप्रकार वे सबपापी भूंखेप्यासे होकर १६२ रक्षाकरो रक्षाकरो यहकहतेहुए यातनाके घरमेंरोते हैं फिर युगके कल्पके अन्तपर्यंत नरककेदुःखोंको भोगकर १६३ पापयोनियोंमें उत्पन्न होतेहैं औरवहांपर व्याधियोंसे पीड़ित होतेहैं१६४हीनअंग, अधिकअंगवाले, दुःखयुक्त, पापकेसेवनकरनेवाले, पुत्रहीन, अत्यन्तमूर्ख, पराई हिंसामेंपरायण १६५ थोड़ीउमर और थोड़ीबुद्धि वाले बुरीस्त्रीकेस्वामी होतेहैं और कर्म, मन और वाणीसे नित्यही पापोंको करतेहैं १६६ तो फिर पापके प्रभावसे पहलेकीनाईं नरकको जातेहैं तिससे सज्जनोंको कभी पाप न करनाचाहिये१६७क्योंकि पापकरनेवाले मनुष्योंकी नरकसेंनिष्कृति नहींहोतीहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! संक्षेपसे मैंने पापियोंके दुःखको कहाहै १६८ अच्छेप्रकार कहनेमें सैकड़ों अयुतोंमें कोई समर्थनहींहै तब पापकरनेवाले मनुष्योंकी दुर्गतियोंको देखकर १६९ हमलोग विमानपर चढ़कर नारायणजीके पुरकोजातेभये हज़ार करोड़ कल्प भगवान्‌के घरमें भोगोंको भोगकर १७० इसशुद्धराजवंशमें हम दोनों उत्पन्न हुएहैं यहांपर सबसम्पत्तियुक्त सम्पूर्णभोगोंको भोगकर १७१ सुखसे मृत्युपाकर परमपदजानेकी इच्छाकरतेहैं एकादशीके व्रतके बराबर तीनोंलोकमें और व्रतनहींहै १७२ कि विना इच्छाके जिसको करके हमदोनोंकी इसप्रकारकी गतिहुई है और जे भक्तिभावसे एकादशीके व्रतको करतेहैं १७३ उनका भगवान्‌कीकृपासे मैंनहीं जानतीहूं कि क्याहोताहै हे श्रेष्ठब्राह्मण यह सब तुमसे पूंछेहुएको मैंने कहा १७४ और एकादशीके माहात्म्यको क्यासुननेकी इच्छाकरते हो व्यासजीबोले कि परमार्थका जाननेवाला ब्राह्मणरानीके ये वचनसुनकर १७५ एकादशीके व्रतमें अपने दृढ़चित्तको करताभया

और राजा और उनकी रानी बहुतकाल पृथ्वी को भोगकर १७६ अन्तकाल में विष्णुजीके पुरको जाकर परंपदको प्राप्त होतेभये जे इस व्रतोंमें राजा एकादशी के व्रत के माहात्म्य को सुनते वा पढ़ते हैं १७७ वे पापसमूहों से छूटकर भगवान् के समीप में प्राप्त होतेहैं १७८ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेएकादशीमाहात्म्येत्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३॥

# चौबीसवां अध्याय ॥

## तुलसीजी का माहात्म्य वर्णन ॥

सूतजीबोले कि हे शौनक ! एकादशीके फलको सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होकर जैमिनि हाथ जोड़कर प्रभु, कृष्ण, व्यासजीसे बोले १ कि आपके प्रसाद से विष्णुदेवजी के माहात्म्य को मैंने सुना अब सुननेवालों के पापों के नाश करनेवाले तुलसीजीके माहात्म्य को कहिये २ तब व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मण जैमिनि! यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके फलकी देनेवाली, भगवती, तुलसी इन्द्रादिक सब देवताओं से सेवने योग्य है ३ स्वर्ग, मनुष्य लोक और पाताल में तुलसी सज्जनों को दुर्लभ है धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके फलकी प्राप्ति करनेवाला तिसमें निश्चय भक्तिको करै ४ जहांपर एकतुलसीका वृक्ष स्थित होताहै तहांपर ब्रह्मा, विष्णु और महादेव आदिक सबदेवता स्थित होतेहैं ५ तुलसीपत्तेके बीचमें केशवभगवान् पत्रकेआगे ब्रह्माजी और पत्रके मूलमें शिवजी सदैव स्थित रहतेहैं ६ लक्ष्मी, सरस्वती, गायत्री, चण्डिका तथा और सब देवोंकी स्त्रियां तुलसीके पत्रोंमें वसतीहैं ७ इन्द्र, अग्नि, यमराज, नैर्ऋति, वरुण, पवन और कुबेर तिसकी डालमें वसतेहैं ८ सूर्य आदिक सबग्रह, विश्वेदेवा, वसु, मुनि सबदेवर्षि ९ और पृथ्वीमें करोड़ ब्रह्माण्डोंके बीचमें जितने तीर्थहैं वे सब तुलसीके दलमें आश्रित होकर सदैव वसतेहैं १० जो भक्तिभावसे युक्तहोकर तुलसीको सेवताहै उसने तीर्थ और ब्रह्मादिक सबदेवताओंको सेवन कियाहै ११ जे मनुष्य तुलसीकी जड़में उत्पन्न तृणके समूहोंको

काटडालतेहैं तो उनके शरीरमें स्थित ब्रह्महत्याकोभी भगवान् तिसीक्षण में नाशकरदेते हैं १२ हे श्रेष्ठब्राह्मण! गरमीमें सुगन्धित शीतलजलोंसे तुलसीजीको सींचकर मनुष्य मोक्षको प्राप्तहोताहै १३ गरमियोंमें चँदोवा वा छत्र जो तुलसीजीको देताहै वह विशेषकर सबपापोंसे छूटजाताहै १४ जो मनुष्य वैशाखमें अक्षत धारायुक्त जलोंसे तुलसीजीको सींचताहै वह नित्यही अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्तहोताहै १५ जो अंजलिभर जलसे तुलसीजीको सींचताहै वह सबपापोंसे रहितहोकर स्वर्गको प्राप्त होताहै १६ हे विप्रर्षे! जो उत्तम मनुष्य कदाचित् दूधोंसे तुलसीजीको सींचताहै तो उसके घरमें निश्चल लक्ष्मीजी होतीहै १७ जो मनुष्य गऊके गोबरोंसे तुलसीकी जड़को लीपते और बहारतेहैं तो उसके पुण्य फलको सुनिये १८ तहांपर जितनीधूलि दूरहोजातीहै तितनेही हजार कल्प वह विष्णुजीकेसाथ आनन्द करताहै १९ जो तुलसीजीकेनीचे संध्यामेंदीप जलाताहै वह करोड़कुल संयुक्त विष्णुजीके मन्दिरको जाताहै २० जो गऊ, कुत्ते, गदहे, मनुष्य और बालकोंसे तुलसीजीकी रक्षाकरताहै उसकी भगवान् सदैव रक्षाकरतेहैं २१ जो मनुष्यभक्तिसे तुलसीजीको लगाताहै तो वह मरकर निस्सन्देह परम मोक्षको प्राप्त होताहै २२ जो भक्तियुक्त उत्तम मनुष्य प्रातःकाल तुलसीजिको देखताहै वह विष्णुजीके नाशरहित दर्शनके फलको प्राप्तहोताहै २३ जो भक्तियुक्त मनुष्य तुलसीजीके प्रणाम करताहै उसकी उमर, बल, यश, द्रव्य और संतति बढ़तीहै २४ तुलसीजीके स्मरणसे सबपाप नाशहोजातेहैं और छूनेसे मनुष्योंकी व्याधियांनाशहोजातीहैं २५ जो शुभ, सबपापोंके नाशकरनेवाले तुलसीके पत्रको खाताहै तो उसके शरीरके भीतरके स्थितपाप तिसीक्षण से नाशहोजातेहैं २६ जो मनुष्य तुलसीके काष्ठके मालाको धारण करताहै तो उसके देहमें पापनहीं रहतेहैं यहमैं सत्यही कहताहूं २७ जो तुलसीकेपत्रसे गिरेहुएजलको शिरमें धारण करताहै वह गंगाजीके स्नानके पुण्यको निस्सन्देह प्राप्तहोताहै २८ जो मनुष्य दूब, अक्षत, फूल और नैवेद्योंसे शुभातुलसीजीको आराधनकर चि-

षणुजीकी पूजाकेफलको प्राप्तहोताहै २९ जिसने कभी भगवती तुलसीको नैवेद्य, फूल, श्रेष्ठधूप और घीके दीपोंसेपूजन कियाहै उसको धर्म, अर्थ काम और परममोक्षके देनेवाले विष्णुजीके चरणों के पूजनके प्रयोगोंसे क्याहै कुछभी आवश्यकता नहींहै ३० हे ब्राह्मण! दोष रहित स्थानोंमें जे देवसमूहोंसे सेवनेयोग्य, भगवान्‌की प्रसन्नता करनेवाली तुलसीको लगाते हैं उनको तीनों लोकों के स्वामी, मुरारि भगवान् प्रसन्नहोकर शीघ्रही परमपददेतेहैं ३१ मनुष्य यज्ञ, व्रत, पितृपूजन, भगवान्‌कीपूजा, दान तथा औरभी शुभकर्म जो दोषरहित तुलसीके नीचे करतेहैं वे सब निश्चय नाश रहित होतेहैं ३२ हे श्रेष्ठब्राह्मण! मनुष्य पृथ्वीमें नारायणजीकी अत्यन्तप्यारी तुलसीजीके विना जो धर्म कर्म करताहै तो वहसब निष्फलहोता है और कमलनयन देवोंकेदेव भगवान्‌भी प्रसन्न नहींहोते हैं ३३ जो भक्तिभावसमेत मनुष्य शुभकारिणी, पवित्र तुलसीजीको यात्राओं में देखताहै तिसका भगवान् के प्रसादसे निश्चय शीघ्रही सब यात्राकाफल सिद्धहोता है ये मेरेवचन अत्यन्त दृढ़हैं ३४ संसार के एक स्वामी अनन्त भगवान् कल्पवृक्ष, कुन्द और कमल आदिक सुगन्धित फूलोंको छोड़कर सद्गुण युक्त, पाप समूहों के नाश करनेवाली सखी भी तुलसीको आनन्द से ग्रहण करते हैं ३५ जे पापी पृथ्वीमें अमृतलताकी दीप्ति युक्त आदिकारण तुलसीजीको अज्ञानसे उखाड़कर फेंकदेते हैं तो तुलसीजीके प्रिय भगवान् निरन्तर तिनकी लक्ष्मीको सत्यही हरलेते हैं ३६ जे मनुष्य तुलसीजीके नीचे मूत्र और विष्ठाकरते हैं और निरन्तर मैलारखते हैं तिन देवके आश्रय इकट्ठे कियेहुए पाप वालोंके धनोंको भगवान् शीघ्रही नाशकरते हैं ३७ हे शुभे! हे महाभागे! तुलसीजी! नारायणजी की पूजा के लिये तुमको तोड़ते हैं तुम्हारे नमस्कार है केशव भगवान् सुगन्धित कल्पवृक्ष आदिक फूलोंसे भी तुम्हारे विना प्रसन्न नहीं होतेहैं इससे तुमको तोड़तेहैं क्योंकि तुम्हारे विना सब कर्म निष्फल होताहै ३८।३९ इससे हे तुलसीदेवि! तुमको तोड़ताहूं वरदेनेवालीहोवो हे देवि! तोड़-

नेसे उत्पन्न दुःख जो तुम्हारे हृदयमें हुआहो ४० तो हे संसार की स्वामिनी तुलसीजी उसको क्षमाकीजियेगा तुम्हारे मैं नमस्कार करताहूं हाथ जोड़कर वैष्णव मनुष्य इन मंत्रों को पढ़कर ४१ दो करताल देकर इसतरह से तुलसीदलको तोड़े कि तुलसीजी की डाल न कँपनेपावे ४२ जो तुलसीदल के तोड़ने में डालटूटजाती है तो तुलसीजीके स्वामी विष्णुजीके हृदयमें कष्ट उत्पन्न होताहै ४३ और जो डालके अग्रसे पुराने पत्र पृथ्वी में गिरपड़ते हैं तो उनसे भी मधु और कैटभ दैत्यके नाश करनेवाले गोविन्दजी पूजने चाहिये ४४ कोमल तुलसीदलों से जो अच्युत प्रभुजीको पूजन करताहै तो वह चित्तसे जो जो इच्छा करता है तिस सब को शीघ्रही प्राप्त होताहै ४५ जैमिनिबोले कि हे सत्यवती के पुत्र ! ब्राह्मणों में श्रेष्ठ व्यासजी ! तुलसीके वृक्षके समान कौनवृक्ष है तिस को मैं जानने की इच्छा करताहूं कहिये ४६ तब व्यासजीबोले कि हे ब्राह्मण ! जैमिनि ! जैसे विष्णुजीके निरन्तर तुलसीजी प्यारीहैं तैसेही सब पाप नाश करनेवाला आंवलाभी है ४७ तुलसीके वृक्ष को प्राप्त होकर जौन जौन देवता स्थित होतेहैं वे सब आंवलाके नीचे भी बसते हैं ४८ जहां पर पवित्र, विष्णुजीकी प्यारी धात्री (आंवला) स्थितहोती है तहांहीं गंगा आदिक तीर्थ स्थितहोते हैं ४९ इसके नीचे मनुष्य अशुभ वा शुभ जो कर्म करता है वह सब सत्यही नाशरहित होताहै ५० पवित्र और नवीन आंवला के पत्रोंसे जो भगवान् को पूजता है वह पाप के जालसे छूटकर भगवान् के सायुज्य को प्राप्त होताहै ५१ आंवला और तुलसी जिस स्थान में नहीं स्थित होतेहैं तो वह स्थान अपवित्र होताहै और क्रियाका फल वहां नहीं मिलता है ५२ जिस स्थान में शुभधात्री और आंवला नहीं स्थित होता है तो तिसका कियाहुआ निश्चय सबकर्म्म निष्फल होजाता है ५३ हे ब्राह्मण ! आंवला और तुलसी से हीन जिसका स्थान है वहांपर लक्ष्मी जी नहीं रहती है सबपाप उसने किये हैं और तिसने कलियुग को प्रसन्न किया है ५४ हे श्रेष्ठब्राह्मण ! जिसस्थान में आंवला और तुलसी नहीं

हैं वहस्थान तत्त्वदर्शियोंको श्मशानके समान जाननाचाहिये ५५ आंवला और तुलसी जहां स्थित होते हैं तहांपर सबदेवता स्थितहोते हैं और जहां आंवला और तुलसी का पत्र नहीं होता है तहांहीं सबपाप रहतेहैं ५६ जो पण्डित पाप हरनेवाली धात्री (आंवला) फलकेमालाको धारण करताहै तिसकी देहमें लक्ष्मीजीसमेत विष्णुजी आश्रितहोकर स्थितहोतेहैं ५७ जो बुद्धिमान् मनुष्य आंवलेके काष्ठकीमालाको धारण करताहै तो तिसकी देहमें आश्रितहोकर सब देवता स्थित होतेहैं ५८ आंवलेके फलके माला को ग्रहणकर जो शुभ वा अशुभ कर्म मनुष्यकरता है वह सब नाशरहित कहाताहै ५९ जो सबतत्त्वोंका जाननेवाला मनुष्य आंवलेके फलको भोजनकरताहै तो उसकी देहकेभीतरके सबपाप नाश होजातेहैं ६० हे श्रेष्ठब्राह्मण! जो आंवलेके फलोंकी मालाको धारण करताहै तो उसके सबपाप नाशकरनेवाले श्रेष्ठमाहात्म्यको कहताहूं सुनिये ६१ जो दैवयोगसे श्मशानमेंभी तिसकी मृत्युहो तोभी वहगङ्गाजी के मरणसेउत्पन्न पुण्यको निस्संदेह प्राप्तहोताहै ६२ और तिसको देखकर सबपापी सैकड़ों करोड़जन्मोंके कियेहुए घोरपापसमूहोंसे शीघ्रही छूटजातेहैं ६३ हे विप्रेन्द्र! जो आंवलेके फलके कीचड़को नित्यही ग्रहणकरताहै वह निस्सन्देह दिन दिनमें पुण्यको प्राप्तहोताहै ६४ जो सब देवसमूहों के आश्रय आंवले के वृक्षको काटताहै वहनिस्सन्देह भगवान्के अंगकोकाटताहै६५ धात्री सबदेवमयी और विशेषकर भगवान्को प्यारीहै तिसके अच्छे प्रकार गुणकहनेमें ब्रह्माजीभी नहींसमर्थहैं ६६ जो सबतत्त्वोंका जाननेवाला आंवला और तुलसीकी भक्तिकोकरताहै वह सबभोगोंको भोगकर अन्तसमयमें भगवान्के प्रसादसे मुक्तिकोप्राप्त होताहै ६७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेतुलसीमाहात्म्यंनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

## पचीसवां अध्याय॥

इति हास समेत तुलसी और अतिथिके माहात्म्य का वर्णन॥

जैमिनिजीबोले कि हे महाभाग! व्यासजी! फिर पाप नाश कर-

नेवाले तुलसी और अतिथि के पूजन के माहात्म्य को विस्तारसे कहिये १ सूतजीबोले हे श्रेष्ठ ब्राह्मण शौनक! तब महातेजस्वी व्यासजी सुननेवालों के पाप नाश करनेवाले माहात्म्यके कहने का प्रारम्भ करतेभये २ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! यह साक्षात् महालक्ष्मी, भगवान्की प्यारी तुलसीहै तिससे इसको वृक्षके ज्ञान से नहीं देखते हैं ३ जैसे मनुष्य पृथ्वीमें सदैव तुलसीजी को सेवन करता है तैसेही इन्द्रादिक देवता उसको देवस्थान में सेवन करते हैं ४ यह परब्रह्म की स्वरूपवाली तुलसी जहां स्थित होती है तहांहीं सब कुशल होतीहै यह मैंने सत्यही कहा है ५ जो पापी भी मृत्युसमय में तुलसीके पत्रयुक्त जलको प्राप्त होता है तो वह भी भगवान् के समीप जाताहै ६ जो मृत्युसमय में तुलसीकी मिट्टी के पुण्ड्र को धारण करताहै तो वह सबपापों से छूटकर भगवान् के पुरको जाताहै ७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! मृत्युसमयमें जिसके मुख, शिर और कानोंमें तुलसीपत्र होताहै तिसके स्वामी यमराजजी नहीं होते हैं ८ एक परमार्थ का जानने वाला बुद्धिमान् पवित्र-नाम ब्राह्मण हुआ है तिसकी ब्राह्मणी बहुला नाम हुई है ९ यह अच्छे वंश में उत्पन्न, पतिव्रता, पतिकी सेवा में परायण थी और तहांहीं अनपत्यपति नाम उत्तम ब्राह्मण था १० तिस ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले ब्राह्मणसे यह पवित्र ब्राह्मण मित्रता करता भया तब अनपत्यपति के साथ कथा के लोभ से ११ यह पवित्र ब्राह्मण स्नेह से एक श्रेष्ठ आसन में बैठता भया तिसी अवसर में महातेजस्वी लोमश नाम ब्राह्मण १२ आकर चित्रविचित्र कथा कहतेहुए तिन दोनों ब्राह्मणों को देखते भये तब दोनों ब्राह्मण आसन से उठकर लोमश ब्राह्मणकी १३ पाद्य, अर्घ्य और आचमनीय आदिकों से पूजा करतेभये तब नारायण में परायण लोमशजी तिन दोनोंके ऊपर प्रसन्नहोकर १४ भगवान् को कीर्तन करतेहुए आसनमें बैठते भये आसनमें स्थित महात्मा लोमशजीसे पवित्र और अनपत्यपति दोनों मुनि भक्तिसे हाथ जोड़ कर बोले कि हे भगवन्! हे सब धर्मके जाननेवाले! आपके दोनों च-

रण सज्जन मनुष्योंसे ग्रहण करनेयोग्यहैं तिनसे हम लोगोंका यह स्थान निश्चय पवित्र हुआहै हमलोगोंने मोहसे जितने पाप कियेहैं १५। १७ वे सब आपके दोनों चरणोंके दर्शन से नष्टहोगये आप साक्षात् नारायण और देवताओंसे भी पूजने योग्यहैं १८ क्या आप का अच्छे प्रकार पूजन करने में हम दोनों मनुष्य समर्थ हैं अर्थात् नहीं हैं जो अपनी शक्तिसे हम लोगोंने अतिथि आपकी पूजा कीहै १९ उसीसे आप प्रसन्न होकर हम दोनों के दोषों को क्षमाकीजिये ऐसा कहकर दोनों महात्मा समान उमरवाले गृहस्थ अतिथि लोमशजी के दोनों चरणोंमें गिरतेभये २० व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! तब विद्वानों में श्रेष्ठ ! लोमशजी भक्तिसे संतुष्ट होकर बोले कि तुम दोनों श्रेष्ठ ब्राह्मण नम्रतायुक्तों में श्रेष्ठ और धर्म में तत्परहो २१ तुम्हारी नम्रताकी उक्तियोंसे मैं प्रसन्न हुआ हूं क्योंकि पण्डितों ने अतिथि को साक्षात् ब्रह्मा, शिव और विष्णु कहाहै २२ तिस अतिथिमें तुम लोगोंकी इतनी भक्तिहै इससे तुम्हारा मंगल होवे बड़े भोजनों से मुझ अतिथिकी तुम लोगोंने अच्छे प्रकार आराधना की है २३ व्यासजी बोले कि हे जैमिनि ! तब उठ कर दोनों ब्राह्मण लोमश मुनिके दोनों चरणों में फिर नमस्कार कर बोले २४ कि हे ब्रह्मन् ! अतिथिकी पूजाके माहात्म्य कहनेके आप योग्यहैं जिसको करके मनुष्यों से दुःखसे प्राप्तहोने योग्यभी मुक्ति प्राप्त होतीहै २५ संसारमें कौन अतिथि कहाता है और तिसकी पूजा कैसीहोतीहै अतिथि और अतिथिकी पूजा करने वाला ये दोनों किसगतिको प्राप्तहोते हैं २६ तव लोमशजी बोले कि वानप्रस्थ, ब्रह्मचारी और संन्यासीके पूजनसे चारों आश्रमोंमें घर श्रेष्ठ कहाताहै २७ चारों आश्रमों के मध्यमें गृहस्थ लोग प्रधान कहाते हैं तिन भक्तियुक्त गृहस्थों को अतिथियों की पूजा करनी चाहिये २८ अतिथियोंका पूजन यही गृहस्थोंका परमधर्म कहाहै आश्रमके आचारसे श्रेष्ठ नहींहुए वेही गृहस्थ कहाते हैं २९ यदि गृहस्थ अतिथियों की पूजामें निपुणता करते हैं तो उनको और पुण्यकर्मों से कुछ प्रयोजन नहीं है ३० जिसका नाम, गोत्र और

रहनेका स्थान नहीं सुनाहै और अकस्मात् घरको आवे तो उसीको पण्डित लोगोंने अतिथि कहाहै ३१ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वा शूद्रही जो घरमें आवें तो तत्त्वदर्शी लोग उनकी विष्णुजी की नाईं पूजनकरें ३२ चाण्डाल इत्यादिक औरभी जो हीनवर्ण में उत्पन्न हुएहों वेभी पाद्य, अर्घ्य और बहुत भोजनोंसे विष्णुजीकी नाईं पूजन करने योग्यहैं ३३ अतिथियोंके आनेमें गृहस्थ ब्राह्मण शीघ्रही जाकर पाद्य और अर्घ्य आदिक देवे ३४ कोमल अक्षरवाले वचनों से कुशल पूंछै आनन्दसे सुन्दर भोजनोंसे भोजन करावे ३५ और पण्डित मनुष्य सुख देनेवाले मन्दिरमें सुलावे और प्रातःकाल जानेकी इच्छा देखकर जानेदेवे ३६ यदि कर्मके विपाकसे गृहस्थ द्रव्यवान् होतो जिस आतिथ्यसे अतिथि पूजना चाहिये तिसको मैं कहताहूं ३७ अतिथियोंके आनेमें गृहस्थ भक्तिसे तृण आदिकों को देवे और तृणके अभावमें भक्तिसे यह कहे कि पृथ्वीमें स्थित हूजिये ३८ पांव धोनेके लिये उत्तम जल देवे और मीठीवाणी से कुशल आदिक पूंछै ३९ तदनन्तर भक्तिसे भोजन के हेतु फल आदिक देवे और जो अभाव होतो आनन्दसे बुद्धिमान् मनुष्य प्रकाशित करदेवे ४० और कहै कि हे अतिथे! मैं महापापी और दरिद्रियों में श्रेष्ठहूं आपकी भक्ति करनेकी इच्छा करताहूं परन्तु दैवतंत्रविरोधक है ४१ इस विधि से दीन मनुष्य अतिथिके पूजनको छोड़कर अपने आचारसे पतित नहीं होताहै यथोक्त फलको प्राप्त होताहै ४२ जिस गृहस्थके घरसे विना पूजे अतिथि चलाजाताहै तो उसके करोड़ जन्मकी इकट्ठा कीहुई पुण्य नाश होजाती है ४३ जिसने भक्तिभावसे एकभी अतिथिको पूजा है तो हरिजी उसके करोड़ जन्मके पापोंको शीघ्रही नाश करदेते हैं ४४ यह मैं यत्नसे सत्य, हित और दृढ़ कहताहूं गृहस्थकी विना अतिथिकी पूजाओं के गति नहीं है ४५ यह सत्यही सत्यहै कि अतिथिकी पूजाके विना गृहस्थोंकी गति नहीं है ४६ द्वापरयुगमें ज्ञातिधर्म नामसे प्रसिद्ध गोप सब धर्मोंका जाननेवाला था तिस की श्रीवल्लभा स्त्रीथी ४७ तिस जातिकी सेवा करनेवालेने सब

कर्म किये और तिस स्त्रीसमेत सौराष्ट्रदेश में स्थान किया ४८ तहांपर दुष्ट ग्रह के संचार से इन्द्र बारहवर्ष जल न बरसते भये तो इससे बड़ाभारी दुर्भिक्ष होताभया ४९ तिसभारी दुर्भिक्ष होनेमें तिसके देशके वासी मनुष्य सब दुःखित होकर मर्यादा को भी छोड़ देतेभये ५० और महायोगी ज्ञानभद्र द्वापर युग में दुर्भिक्ष से संपत्ति नाश होकर अत्यन्त दुःखित होता भया ५१ और भूंखसे व्याकुल पुत्र और स्त्रियों को देखकर फल और मूलोंको भोजनके लिये लेनेको पहाड़के नीचे जातेभये ५२ वहांपर बहुत उमरवाले इस भूंख से व्याकुल ने एक कुम्हड़े के फल को पाया ५३ और महायशस्वी यह उस फलको लेकर प्रसन्नतायुक्त होकर शीघ्रता से अपने स्थान को आता भया ५४ इसी अवसरमें मेघोंसे आकाश आच्छादित होकर वर्षा होतीभई ५५ तब इस मुनि की वर्षा से सब देह भीगगई फिर वन से एक वनका रहनेवाला शीतसे व्याकुल होकर इनके घरको आताभया ५६ तब इन्होंने शीतसे पीड़ित अतिथि को देखकर शिरसे वन्दना किया और भक्तिसे तृणका आसन और पाद्य आदिक तिसको दिया ५७ फिरिमीठी वाणीसे तिसी अतिथि के साथ स्वस्थमनहोकर बुद्धिमानी से बातचीत करतेहुए स्थित होतेभये ५८ फिर स्वामी की सेवामें निपुण स्त्रीसमेत गोपने नवीन कुम्हड़ेको यत्नसे पकाया ५९ तब गोप की स्त्रीने इस कुम्हड़े के पाने से प्रसन्नहोकर भाग बनाकर पतिको कुम्हड़ा देती भई तदनन्तर बीस दिनके व्रतसे दुर्बल अतिथिके सत्कार करनेवाले गोपने आनन्द से अपना भाग अतिथिको देदिया तिस पीछे स्वामी की भक्तिमें परायण उसकी पतिव्रता स्त्रीनेभी ६०। ६१ आनन्दसे तिस अतिथिको अपना भी भाग देदिया तब अतिथि उन महात्मा स्त्री पुरुषोंके ६२ दोनों भागों को भोजनकर अत्यन्त प्रसन्न होताभया क्योंकि उन्होंने दृढ़ भक्तिसे विष्णुजीकी नाईं अतिथिको पूजा ६३ तब अतिथि रात्रिमें वहीं विश्रामकर प्रातःकाल जाता भया इस प्रकार व्रतसे इक्कीस दिन उन दोनों महात्मा स्त्री पुरुषों को बीतगये तबतो दोनों नाश

को प्राप्त होगये और तिसी पुण्यके प्रभावसे महाशय स्त्री पुरुष ६४।६५ योगियों के भी दुर्लभ विष्णुसायुज्य को प्राप्त होतेभये तिन दोनों की अतिथिपूजा के पुण्यके प्रभावसे ६६ तिस राज्य में दुर्भिक्ष नष्ट होजाता भया तब मनुष्य अत्यंत सुखी, शोक और व्याधिसे वर्जित ६७ धन धान्यादि से युक्त और धर्म में तत्पर होतेभये चोर नाश होगये राजा मनुष्यों का पालक होताभया ६८ मनुष्य अपने आचार में रतहुए मेघ आवश्यकतापर बरसते भये और उस स्त्रीसमेत गोप के पहले और पीछे के करोड़ पुरुष ६९ तिसी कर्म से पापरहित, निर्दोष, धनयुक्त और सब मनुष्यों से पूजितहोकर मुक्तिको प्राप्तहोगये ७० और शोक और व्याधिसेरहित तिनकी संतति बढ़ती भई लोमशजी बोले कि प्रसन्न तुम दोनों ब्राह्मणों से इतिहाससमेत अतिथिकी पूजाका माहात्म्य मैंनेकहा अब क्या सुनने की इच्छा है व्यासजी बोले कि हे जैमिनि! तिस तपस्वी लोमशजीके इसप्रकार कहनेसे ७१।७२ कालसे ग्रसाहुआ काला मूसा अपने बिलसे निकलताभया तिसको निकलते देखकर क्रोधसे विह्वल ७३ पवित्र ब्राह्मण बारंबार यह कहताहुआ उठा कि यह पापी दुष्ट मूसा रात्रिमें स्थानको ७४ और घरकी द्रव्यको तीक्ष्ण दांतोंके समूहों से गिराताहै सब वर्णोंको कृपा श्रेष्ठ कहीगईहै ७५ वह सबमें करनी चाहिये परन्तु दुष्ट प्राणियोंमें न चाहिये ऐसा कहकर पवित्र ब्राह्मण पापी मूसेको ७६ अत्यन्त तीक्ष्ण बाण से मारतेभये तब वह कालको प्राप्तहुआ मूसा बहतेहुए रक्तकीधाराओं से सब अंगडूबकर ७७ व्यथासे हतचेतन होकर पृथ्वी में गिर पड़ता भया तिस मूसेके गिरनेमें दयालु श्रेष्ठब्राह्मण, ७८ हाहाकार कर शीघ्रही उठकर अपने कानसे उत्तम तुलसीपत्रको लेकर ७९ मूसेके मुख, मस्तक और कानों में देकर बोले कि हे मातः! हे गोविन्दजी को आनन्द करनेवाली! हे तुलसी देवि! ८० आप इस पाप करनेवाले मूसेको उत्तमगति कीजिये ऐसा कहकर सब मनुष्यों के उपकार करनेवाले ब्राह्मण ८१ हरे, नारायण, अनन्त यह ऊंचेस्वरसे शब्द करतेभये तब तो तुलसीपत्रके स्पर्शसे मूसा पाप-

रहित होगया ८२ और भगवान्के नाम सुननेसे संसारके बन्धन से छूटगया तब महाविष्णुजी के सब लक्षणसंयुक्त दूत ८३ तिस पापरहित मूसे के लेनेके लिये शीघ्रही सुन्दर रथोंको लेकर आये तो विष्णुजी के दूतगणोंसे युक्त होकर मूसा सुन्दर रथपर चढ़कर ८४ परमधामको जाताभया और वहां नारायणजी के स्थानमें हज़ार करोड़ युग स्थित होकर ८५ तहांहीं ज्ञानको प्राप्त होकर मोक्षको प्राप्त होगया व्यासजी बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण जैमिनि! हे महाभाग! तुलसीदेवी का माहात्म्य तो तुमसे कहा अब इससमयमें क्या सुननेकी इच्छाहै ८६।८७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपंचविंशोऽध्यायः २५॥

## छब्बीसवां अध्याय॥

युगधर्मनिरूपणपूर्वक पुराणका माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनिजी बोले कि हे व्यासजी! हे महाभाग! अत्यन्त भयानक कलियुगके प्राप्तहोने में सब मनुष्य किसप्रकारके होते हैं यह मुझसे कहिये १ तब व्यासजी बोले कि पहले सतयुग में ब्राह्मण आदिक मनुष्य भगवान्की पूजनमें परायण, शोक और व्याधिसे वर्जित, २ सत्य बोलनेवाले, सब दयासमेत, बहुत समयतक जीनेवाले, धन और धान्यादि से युक्त, हिंसा और दम्भ से वर्जित, ३ पराये उपकार करनेवाले, सब शास्त्रों के जाननेवाले इसप्रकार के सब मनुष्य सतयुगमें थे ४ और राजधर्मके ग्रहण करनेवाले, मनुष्यों के पालन करने हारे राजाथे सतयुगके गुण और यश कहनेमें कोई समर्थ नहीं है ५ जहांपर कोई मनुष्य अधर्मका उच्चारण नहीं करते थे फिर त्रेतायुगमें प्राप्तहोनेमें धर्म एकपांवहीन होगया ६ मनुष्य थोड़े शोकसे युक्त, कुछ पापके आश्रय, विष्णुजी के ध्यान में रत, यज्ञ और दान में परायण ७ वर्ण और आश्रमके आचार में रत, सुखी, स्वस्थचित्तहुए शूद्रलोग खेती करनेवाले और सब ब्राह्मण की सेवाकरनेवाले हुए ८ ब्राह्मण महात्मा, वेद और वेदाङ्गके पारगामी, दाननहीं लेनेवाले, सत्यप्रतिज्ञावाले, जितेन्द्रि-

य, ९ तपस्या और व्रतमें रत, नित्यही दान देने वाले, विष्णुजी की सेवा करने हारे थे और त्रेतायुगके अंत में द्वापर युग के प्राप्त होने में १० धर्म दोपांवहीन होगया मनुष्य सुख और दुःख से युक्त होगये कोई कोई पाप में रत और कोई कोई धर्मात्मा हुए ११ कोई कोई गुणों से हीन और कोई कोई महागुणी हुए कोई अत्यन्त दुःखयुक्त और कोई सुखी हुए १२ कभी ब्राह्मण दान लेनेमें वाञ्छा करता था और कभी धनके लोभ से प्रजाओं को राजा पीड़ा देते थे १३ ब्राह्मण विष्णुजी की पूजा में परायण और शूद्र ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले हुए हे ब्राह्मण! जब युग युगमें धर्म एक पांवहीनता को प्राप्त होतागया १४ तब विष्णुरूपी व्यासजी वेद के भाग कर देते भये हे श्रेष्ठरूपी ब्राह्मण! सब पापों के एक स्थान कलियुग में १५ धर्म एकपांव होगया सब मनुष्य पाप में रत हो गये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पाप में परायण, १६ अत्यन्त कामी और क्रूर कलियुग में होंगे वेद की निन्दा करने वाले, जुवा और चोरी करने हारे, १७ विधवा स्त्रियोंके भोग करने में मग्न होंगे कोई ब्राह्मण जीविका के लिये महाकपटधर्म करनेवाले १८ और सब स्त्री के वश, मादक द्रव्यके सेवन करने हारे, सदैव स्त्रियों की योनि में निरत, पराई द्रव्यों को हरेंगे १९ नित्यही पराये अन्नमें लोलुप, तपस्या और व्रतसे पराङ्मुख, पाखण्डियों के सङ्गमें बँधे हुए कलियुग में होंगे २० ब्राह्मण लाल कपड़े पहनेवाले और शूद्रों कासा धर्म करनेहारे, निकृष्ट और उत्तम नीचता को २१ और नीच धनसम्पन्न और ऊंचे पदको प्राप्त होंगे सब मनुष्य उपकारीको दान देंगे २२ शूद्र यत्नसे ब्राह्मणोंके वर्त्तनको प्राप्त होंगे कलियुगमें मनुष्य मित्रों के स्नेह से झूठी गवाही देंगे २३ अधर्मबुद्धि के कहनेवाले, धर्मबुद्धि के विलाप करनेहारे,परोक्षमें निन्दा करनेवाले, क्रूर और सम्मुखमें प्रिय बोलनेवाले होंगे २४ व्यभिचारिणी स्त्रियां पतिव्रताओं के वादको पतिसे कहेंगी ब्राह्मण पराई स्त्रियोंके मारनेवाले, गोत्रके बेंचनेहारे २५ और कलियुगमें कन्या बेंचनेवाले होंगे सब मनुष्य स्त्रीजित

रहित होगया ८२ और भगवान्के ना
से छूटगया तब महाविष्णुजी के सब
पापरहित मूसे के लेनेके लिये शीघ्रही
तो विष्णुजी के दूतगणोंसे युक्त होकर मूस
र ८४ परमधामको जाताभया और वहां
हज़ार करोड़ युग स्थित होकर ८५ तहां
मोक्षको प्राप्त होगया व्यासजी बोले कि हे उ
हे महाभाग! तुलसीदेवी का माहात्म्य तो तुम
मयमें क्या सुननेकी इच्छाहै ८६।८७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपंचविंशोऽध्यायः

## छब्बीसवां अध्याय॥

युगधर्मनिरूपणपूर्वक पुराणका माहात्म्य वर्णन

जैमिनिजी बोले कि हे व्यासजी! हे महाभाग!
नक कलियुगके प्राप्तहोने में सब मनुष्य किसप्रकारके
मुझसे कहिये १ तब व्यासजी बोले कि पहले सतयुग
आदिक मनुष्य भगवान्की पूजनमें परायण, शोक औ
वर्जित, २ सत्य बोलनेवाले, सब दयासमेत, बहुत समय
वाले, धन और धान्यादि से युक्त, हिंसा और दम्भ से व
पराये उपकार करनेवाले, सब शास्त्रों के जाननेवाले इसप्र
सब मनुष्य सतयुगमें थे ४ और राजधर्मके ग्रहण करनेवाले
ष्यों के पालन करने हारे राजाथे सतयुगके गुण और यश क
कोई समर्थ नहीं है ५ जहांपर कोई मनुष्य अधर्मका उच्चारण
करते थे फिर त्रेतायुगमें प्राप्तहोनेमें धर्म एकपांवहीन होगया
मनुष्य थोड़े शोकसे युक्त, कुछ पापके आश्रय, विष्णुजी के ध्या
में रत, यज्ञ और दान में परायण ७ वर्ण और आश्रमके आचार
में रत, सुखी, स्वस्थचित्तहुए शूद्रलोग खेती करनेवाले और सब
ब्राह्मण की सेवाकरनेवाले हुए ८ ब्राह्मण महात्मा, वेद और वे-
दाङ्गके पारगामी, दाननहीं लेनेवाले, सत्यप्रतिज्ञावाले, जितेन्द्रि-

य, ६ तपस्या और व्रतमें रत, नित्यही दान देने वाले, विष्णुजी की सेवा करने हारे थे और त्रेतायुगके अंत में द्वापर युग के प्राप्त होने में १० धर्म दोपांवहीन होगया मनुष्य सुख और दुःख से युक्त होगये कोई कोई पाप में रत और कोई कोई धर्मात्मा हुए ११ कोई कोई गुणों से हीन और कोई कोई महागुणी हुए कोई अत्यन्त दुःखयुक्त और कोई सुखी हुए १२ कभी ब्राह्मण दान लेनेमें वाञ्छा करता था और कभी धनके लोभ से प्रजाओं को राजा पीड़ा देते थे १३ ब्राह्मण विष्णुजी की पूजा में परायण और शूद्र ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले हुए हे ब्राह्मण! जब युग युगमें धर्म एक पांवहीनता को प्राप्त होतागया १४ तब विष्णुरूपी व्यासजी वेद के भाग कर देते भये हे श्रेष्ठरूपी ब्राह्मण! सब पापों के एक स्थान कलियुग में १५ धर्म एकपांव होगया सब मनुष्य पाप में रत हो गये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पाप में परायण, १६ अत्यन्त कामी और क्रूर कलियुग में होंगे वेद की निन्दा करने वाले, जुवां और चोरी करने हारे, १७ विधवा स्त्रियोंके भोग करने में मग्न होंगे कोई ब्राह्मण जीविका के लिये महाकपटधर्म करनेवाले १८ और सब स्त्री के वश, मादक द्रव्यके सेवन करने हारे, सदैव स्त्रियों की योनि में निरत, पराई द्रव्यों को हरेंगे १९ नित्यही पराये अन्नमें लोलुप, तपस्या और व्रतसे पराङ्मुख, पाखण्डियों के सङ्गमें बँधे हुए कलियुग में होंगे २० ब्राह्मण लाल कपड़े पहनेवाले और शूद्रों कासा धर्म करनेहारे, निर्वृत्त और उत्तम नीचता को २१ और नीच धनसम्पन्न और ऊंचे पदको प्राप्त होंगे सब मनुष्य उपकारीको दान देंगे २२ शूद्र यत्नसे ब्राह्मणोंके वर्त्तनको प्राप्त होंगे कलियुगमें मनुष्य मित्रों के स्नेह से झूंठी गवाही देंगे २३ अधर्मबुद्धि के कहनेवाले, धर्मबुद्धि के विलोप करनेहारे, परोक्षमें निन्दा करनेवाले, क्रूर और सम्मुखमें प्रिय बोलनेवाले होंगे २४ व्यभिचारिणी स्त्रियां पतिव्रताओं के वादको पतिसे कहेंगी ब्राह्मण पराई स्त्रियोंके मारनेवाले, गोत्रके बेंचनेहारे २५ और कलियुगमें कन्या बेंचनेवाले होंगे सब मनुष्य स्त्रीजित

रहित होगया ८२ और भगवान्‌के नाम सुननेसे संसारके बन्धन से छूटगया तब महाविष्णुजी के सब लक्षणसंयुक्त दूत ८३ तिस पापरहित मूसे के लेनेके लिये शीघ्रही सुन्दर रथोंको लेकर आये तो विष्णुजी के दूतगणोंसे युक्त होकर मूसा सुन्दर रथपर चढ़कर ८४ परमधामको जाताभया और वहां नारायणजी के स्थानमें हज़ार करोड़ युग स्थित होकर ८५ तहांहीं ज्ञानको प्राप्त होकर मोक्षको प्राप्त होगया व्यासजी बोले कि हे उत्तम ब्राह्मण जैमिनि! हे महाभाग! तुलसीदेवी का माहात्म्य तो तुमसे कहा अब इससमयमें क्या सुननेकी इच्छाहै ८६।८७॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारेपंचविंशोऽध्यायः २५॥

## छब्बीसवां अध्याय॥

युगधर्मनिरूपणपूर्वक पुराणका माहात्म्य वर्णन॥

जैमिनिजी बोले कि हे व्यासजी! हे महाभाग! अत्यन्त भयानक कलियुगके प्राप्तहोने में सब मनुष्य किसप्रकारके होते हैं यह मुझसे कहिये १ तब व्यासजी बोले कि पहले सतयुग में ब्राह्मण आदिक मनुष्य भगवान्‌की पूजनमें परायण, शोक और व्याधिसे वर्जित, २ सत्य बोलनेवाले, सब दयासमेत, बहुत समयतक जीनेवाले, धन और धान्यादि से युक्त, हिंसा और दम्भ से वर्जित, ३ पराये उपकार करनेवाले, सब शास्त्रों के जाननेवाले इसप्रकार के सब मनुष्य सतयुगमें थे ४ और राजधर्मके ग्रहण करनेवाले, मनुष्यों के पालन करने हारे राजाथे सतयुगके गुण और यश कहनेमें कोई समर्थ नहीं है ५ जहांपर कोई मनुष्य अधर्मका उच्चारण नहीं करते थे फिर त्रेतायुगमें प्राप्तहोनेमें धर्म एकपांवहीन होगया ६ मनुष्य थोड़े शोकसे युक्त, कुछ पापके आश्रय, विष्णुजी के ध्यान में रत, यज्ञ और दान में परायण ७ वर्ण और आश्रमके आचार में रत, सुखी, स्वस्थचित्तहुए शूद्रलोग खेती करनेवाले और सब ब्राह्मण की सेवाकरनेवाले हुए ८ ब्राह्मण महात्मा, वेद और वेदाङ्गके पारगामी, दाननहीं लेनेवाले, सत्यप्रतिज्ञावाले, जितेन्द्रि-

य, ६ तपस्या और व्रतमें रत, नित्यही दान देने वाले, विष्णुजी की सेवा करने हारे थे और त्रेतायुगके अंत में द्वापर युग के प्राप्त होने में १० धर्म दोपांवहीन होगया मनुष्य सुख और दुःख से युक्त होगये कोई कोई पाप में रत और कोई कोई धर्मात्मा हुए ११ कोई कोई गुणों से हीन और कोई कोई महागुणी हुए कोई अत्यन्त दुःखयुक्त और कोई सुखी हुए १२ कभी ब्राह्मण दान लेनेमें वाञ्छा करता था और कभी धनके लोभ से प्रजाओं को राजा पीड़ा देते थे १३ ब्राह्मण विष्णुजी की पूजा में परायण और शूद्र ब्राह्मणों की सेवा करनेवाले हुए हे ब्राह्मण! जब युग युगमें धर्म एक पांवहीनता को प्राप्त होतागया १४ तब विष्णुरूपी व्यासजी वेद के भाग कर देते भये हे श्रेष्ठरूपी ब्राह्मण! सब पापों के एक स्थान कलियुग में १५ धर्म एकपांव होगया सब मनुष्य पाप में रत हो गये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पाप में परायण, १६ अत्यन्त कामी और क्रूर कलियुग में होंगे वेद की निन्दा करने वाले, जुवां और चोरी करने हारे, १७ विधवा स्त्रियोंके भोग करने में मग्न होंगे कोई ब्राह्मण जीविका के लिये महाकपटधर्म करनेवाले १८ और सब स्त्री के वश, मादक द्रव्यके सेवन करने हारे, सदैव स्त्रियों की योनि में निरत, पराई द्रव्यों को हरेंगे १९ नित्यही पराये अन्नमें लोलुप, तपस्या और व्रतसे पराङ्मुख, पाखण्डियों के सङ्गमें बँधे हुए कलियुग में होंगे २० ब्राह्मण लाल कपड़े पहननेवाले और शूद्रों कासा धर्म करनेहारे, निवृत्त और उत्तम नीचता को २१ और नीच धनसम्पन्न और ऊंचे पदको प्राप्त होंगे सब मनुष्य उपकारीको दान देंगे २२ शूद्र यत्नसे ब्राह्मणोंके वर्त्तनको प्राप्त होंगे कलियुगमें मनुष्य मित्रों के स्नेह से झूंठी गवाही देंगे २३ अधर्मबुद्धि के कहनेवाले, धर्मबुद्धि के विलाप करनेहारे,परोक्षमें निन्दा करनेवाले, क्रूर और सम्मुखमें प्रिय बोलनेवाले होंगे २४ व्यभिचारिणी स्त्रियां पतिव्रताओं के वादको पतिसे कहेंगी ब्राह्मण पराई स्त्रियोंके मारनेवाले, गोत्रके बेंचनेहारे २५ और कलियुगमें कन्या बेंचनेवाले होंगे सब मनुष्य स्त्रीजित

होंगे और स्त्रियां अत्यन्त चञ्चल होंगी २६ और कलियुगमें मनु-
ष्य दुष्ट आशयवाले होंगे पृथ्वीमें अन्न थोड़ा पैदा होगा मेघ थो-
ड़ा जल बरसेंगे २७ और अकालमें बरसेंगे हे जैमिनि! इस युगमें
गौवें विष्ठा भोजन करनेवाली और थोड़ादूध देनेवाली होंगी २८
और वह दूध घी से हीन निस्सन्देह होगा मनुष्य अपनी प्रशंसा
और पराई निन्दा में परायण २९ छोटे अङ्गवाले होंगे बालक ब-
हुत अन्न भोजन करनेहारे होंगे ब्राह्मण कलियुग में दम्भके लिये
पितृयज्ञ करेंगे ३० जबतक कार्यसिद्ध न होगा तबतक सब स्नेह
के वचन बोलेंगे धर्ममें पराङ्मुख मनुष्योंको देखकर सब हँसेंगे ३१
अधर्म से मनुष्य बढ़ेंगे तिससे पापमें रत मनुष्य दश बारह वर्ष
में जड़समेत नाश होजावेंगे ३२ जैसे वर्षा में जलकी वृद्धि होती
है तैसेही कलियुगमें मनुष्य गलितयुवावस्थावाले होंगे ३३ पांच
वा छः वर्षमें स्त्री गर्भके धारण करनेवाली होंगी पुरुषों के बहुत
लड़के और अत्यन्त दुःखयुक्त होंगे ३४ सब लेनेकी कामना करेंगे
देनेकी कामना कोई न करेंगे कलियुगमें पापमें तत्पर म्लेच्छ राजा
होंगे ३५ विषयके लिये कलियुगमें मनुष्य एकवर्ण होंगे कलियुग
की प्रथम संध्यामें मनुष्य हरिजीकी निन्दा करेंगे ३६ कलियुगमें
मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भगवान्के नामोंको नहीं
देखेंगे ३७ चारों वर्ण एकवर्ण होंगे हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! जब जब स-
ज्जनोंकी हानि ३८ और पापियोंकी वृद्धिहोगी तब तब कलियुगमें
वृद्धि जाननी चाहिये हे उत्तम ब्राह्मण! यद्यपि मैंने इसको घोरक-
लियुगकहाहै ३९ हे गुणवानों में श्रेष्ठ! तथापि इसका बड़ागुण है
कि सतयुगमें बारहवर्षों में पुण्यका साधन होताहै ४० त्रेतायुगमें
छः वर्षमें द्वापरमें महीने में और कलियुगमें एकही दिन रातमें हो-
ताहै ४१ तिससे कलियुग में मनुष्यों की मृत्युलोक से उत्तमगति
होती है और युगमें बारहवर्षों में भगवान् को पूजनकर जो फल
होताहै ४२ वह फल कलियुग में मनुष्य हरिका नाम उच्चारणकर
पाताहै जो मनुष्य कलियुगमें हरिजीका एकभी नाम कहताहै ४३
उसको सत्य सत्य निस्सन्देह कलियुग नहीं बाधाकरताहै जैमिनि-

जी बोले कि हे व्यासजी ! मनकी शुद्धिके विहीन होनेसे सब कर्म निष्फल होताहै ४४ यह आपने मेरे मनका विस्मय देनेवाला पहले कहाहै कि कलियुग में सब मनुष्य मनकी शुद्धिसे रहित होंगे ४५ हे गुरो ! तिनका जैसे सब कर्म होताहै तिसको कहिये तब व्यास-जी बोले कि हे श्रेष्ठ ब्राह्मण जैमिनि ! मनुष्य कलियुग में जो धर्म कर्मकरे ४६ तिसको भक्तिभावसंयुक्त होकर महाविष्णुजी में अर्पण करदेवे क्योंकि विष्णुजी में अर्पण कियाहुआ सब कर्म नाशर-हित होताहै ४७ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! यह सबवृत्तान्त तुमसे कहा जिस को भक्तिभाव से सुनकर मनुष्य मोक्षको प्राप्त होताहै ४८ सूतजी बोले कि हे शौनक ! इसप्रकार परमात्मा व्यासजी ने जैमिनि को समझाया तब जैमिनि क्रियायोग में रत होकर परमपद को प्राप्त होतेभये ४९ इस क्रियायोगसारखण्डको महात्मा व्यासजीने कहा है जे मोक्षकी इच्छाकरनेवाले मनुष्य भक्तिसे पढ़ते सुनतेहैं ५० वे सब बहुत जन्मोंके इकट्ठे कियेहुए घोर पापों से छूटकर निस्सन्देह परममुक्तिको प्राप्त होते हैं ५१ मोक्षकी इच्छा करनेवाले जे इसको पढ़ते और सुनते हैं उनके भगवान् के प्रसाद से सब मनोरथ पूर्ण होते हैं ५२ मनुष्य एक श्लोक आधा वा चौथाई श्लोक पढ़ और सुनकर वाञ्छितफल को प्राप्त होताहै ५३ जो मनुष्य लिखकर वा लिखा कर इस शास्त्रको पूजन करता है वह विष्णुजी के पूजन के फलको प्राप्त होता है ५४ यह अत्यन्त गुप्त, व्यासजी के मुख से निकला हुआ, वैष्णवों को प्रीति देने वाला अत्यन्त रुचिर पुराण बहुतकाल इन्द्रादिक देवताओं से वन्दित चरणवाले, सब लोकों के स्वामी, चक्रधारी भगवान्की प्रीतिके लिये होवे ५५ ॥

इतिश्रीपद्मपुराणेक्रियायोगसारखण्डेव्यासजैमिनिसंवादेउन्नावप्रदेशांतर्गत-तारगांवनिवासिपण्डितरामविहारीसुकुलकृतभाषानुवादेयुगधर्मनिरूपण-पूर्वकपुराणमाहात्म्यवर्णनंनामषड्विंशतितमोऽध्यायः २६ ॥

इतिक्रियायोगसारखण्डःसमाप्तः ॥

बीच में और भाषा टीका नीचे ऊपर रखकर अत्यन्त शुद्धता से पत्रेनुमा छपा है कागज़ सफ़ेद निहायतउम्दा व टैपनम्बई में छपाहै ॥

तथा कागज़ हिनाई छापापत्थर की ४) पु०

## वामनपुराण भाषा क़ीमत ॥।≈)

पण्डित रविदत्तकृतभाषा है—जिसमें कपालमोचनआख्यान, दक्षयज्ञविनाश, महादेव का कालरूपधारण, कामदेवदहन, प्रह्लाद नारायण युद्ध और देवासुर संग्राम इत्यादि श्रीवामन भगवान्की उत्तमोत्तम कथा सरल भाषामें वर्णित है ॥

## पद्मपुराण भाषा प्रथमसृष्टिखंड व द्वितीयभूमिखंड क़ीमत १॥)पु०

पण्डित महेशदत्त सुकुलकृत भाषा—इसमें पुष्कर का माहात्म्य, ब्रह्मयज्ञविधान, वेदपाठ आदिका लक्षण, दानों और व्रतोंका कीर्त्तन, पार्वतीजी का विवाह, तारकाख्यान, गवादिकों का माहात्म्य, कालकेयादि दैत्योंका वध, ग्रहोंका अर्चन और दान, पिता और माता आदि के पूजन के पीछे शिवशर्म्म और सुव्रत की कथा, वृत्रासुरकावध, पृथुवैन्य का आख्यान इत्यादि अनेक विषय संयुक्तहैं ॥

## पद्मपुराणका तृतीय स्वर्गखण्ड भाषा क़ीमत १॥।) पु०

इसकाभी उल्था पण्डित महेशदत्तजी ने बहुत उम्दाललित इबारतमें किया है इतिहास इसमें बहुत ज्यादाहैं और प्रत्येक धर्म, अर्थ, काम, मोक्षदेनेवालेहैं ॥

## पद्मपुराणका पञ्चम पातालखण्ड भाषा क़ीमत १॥।) पु०

पण्डित महेशदत्तकृत भाषा—इसमें प्रथम रामाश्वमेध की कथामें श्रीरामजी के अभिषेक का वर्णन, अगस्त्यादि ऋषियोंका अयोध्याजी में आगमन, रावणके वंशका वर्णन, अश्वमेध करने का उपदेश, अश्वका छोड़ाजाना और उसका इधर उधर घूमना, नानाप्रकारके राजाओंकी कथा, जगन्नाथजीका अनुकीर्त्तन, वृन्दावनका माहात्म्य इत्यादि अनेक कथायें संयुक्त हैं ॥

## पद्मपुराणका षष्ठ उत्तरखण्ड भाषा क़ीमत २॥) पु०

उन्नावप्रदेशांतर्गत तारगांवनिवासि पं० रामविहारीसुकुलकृतभाषा—इस में नरजीकायश, जालंधरकी कथा, सम्पूर्णतीर्थोंकी महिमा, छब्बीसों

की कथा, भागवत, शालग्राम, भगवद्गीता, कार्तिक, माघ और सबव्रतों का माहात्म्य इत्यादि अनेक विषय वर्णितहैं यह खण्ड सातोंखण्डों में शिरोमणिहै ॥

## जैमिनिपुराण भाषा क़ीमत ॥)

पण्डित शिवदुलारेकृत उल्था—जिसमें राजायुधिष्ठिरने गोत्रहत्यानिवारणार्थ अगस्त्योपदेशसे अश्वमेध घोड़ाछोड़ यौवनाश्व, नीलध्वज, सुरथ, सुधन्वा व अपने पुत्र बभ्रुवाहन इत्यादि राजाओंको श्रीकृष्णचन्द्रकी सहायता से विजय किया इत्यादि कथायें बहुतसी वर्णितहैं ॥

## आदिब्रह्मपुराण भाषा क़ीमत १)

पण्डित रविदत्तकृत-जिसमें ब्रह्माजीसे लेकर सृष्टिके उत्पत्तिका वृत्तांत,राजा पृथुका चरित्र,मन्वन्तरकीर्त्तन,आदित्यउत्पत्ति, सूर्य्यवंश व चन्द्रवंश कथन,राजा ययाति चरित्र और कृष्णवंशकीर्त्तन इत्यादि कथायें वर्णितहैं ॥

## नरसिंहपुराण भाषा क़ीमत ।≡)

भाषा पं० महेशदत्तसुकुल कृत—इसमें संस्कृत नरसिंहपुराण से प्रतिश्लोक प्रतिचरण व प्रतिपद का टीका अति सरल व मधुर भाषा में कियागयाहै—जिसमें सृष्टिवर्णन, सर्गरचना, सृष्टिरचनाप्रकार, पुंसवनोपाख्यान, मार्कण्डेय मुनि का तपोबल से मृत्युको जीतना, यमगीता, यमाष्टकवर्णन, मार्कण्डेयचरित्र, यमीयमसंवाद, ब्रह्मचारी व पतिव्रतासंवाद, एक ब्राह्मणका इतिहास जिसने परमेश्वर कृष्णजीका ध्यानकर देहत्यागकिया और व्यासजी का शुकाचार्य से संसाररूपी वृक्षको वर्णन करना, शिव व नारद करके भवतरने की क्रिया का वर्णन और अष्टाक्षरमन्त्रमाहात्म्य इत्यादि अनेक विषय संयुक्तहैं ॥

## ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा क़ीमत ।)॥

जिसको पण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी ने स्कन्दपुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्ड से देशभाषा में रचा जिसमें अनेक प्रकारके इतिहास और सम्पूर्ण व्रतों के माहात्म्य आदि वर्णितहैं ॥

---